६—दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी, कोटा

आप ओसवाल समाज के धन कुबेरो मे से एक हैं। आपके द्वारा भी इस ग्रन्थ निर्माण में अच्छी सहायता प्राप्त हुई।

७—सिंघवी रघुनाथमलजी बैंकर, हैदराबाद (दक्षिण)

आप सारे ओसवाल समाज मे ऐसे प्रथम व्यक्ति हैं जो व्यक्तिगत रूप से इंग्लिश स्टाइल पर बैंकिंग, व्यापार सफलता पूर्वक कर रहे है। आपका हृदय बडा विशाल और सहानुभूतिपूर्ण है। जितनी प्रसन्नता हमको आपके सहयोग मे रहने से हुई उतनी अन्यत्र कही न हुई। आपकी सहायताएं भी इस ग्रन्थ निर्माण मे बहुमूल्य है।

८—श्री कन्हैयालालजी भण्डारी, इन्दौर

आप भारतवर्ष के मारवाडी ओसवालों मे पहले या दूसरे नम्बर के इण्डस्ट्रियालिस्ट है। आप इन्दौर के "श्रीनन्दलाल भण्डारी मिल" के मैनेजिंग एजंट हैं। आपने भी इस ग्रंथ में अच्छी सहायता प्रदान की है।

९—श्री ईसरचन्दजी चोरडा, गंगा शहर

आप बडे उदार और इतिहास प्रेमी व्यक्ति है। आप कलकत्ते के जूट के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं। आपने भी इस ग्रन्थ मे महत्वपूर्ण सहायता पहुँचाई है।

१०—श्री इन्द्रमलजी लूणिया, हैदराबाद (दक्षिण)

आप हैदराबाद के सुप्रसिद्ध सेठ दीवान बहादुर थानमलजी लूणिया के पौत्र हैं। आप बडे सज्जन व्यक्ति है। आपने भी इस ग्रन्थ मे अच्छी सहायता की है।

११—श्री शुभकरणजी सुराणा, चूरू

आप प्रसिद्ध व्यापारी और साहित्य प्रेमी व्यक्ति हैं। आपने भी इस ग्रन्थ मे सहायता पहुँचाई है।

१२—श्री तिलोकचन्दजी सुराणा, चूरू

आप तेरा पन्थी समाज में गण्यमान्य व्यक्ति हैं। आप कलकत्ते के मारवाडी समाज में प्रतिष्ठित सार्वजनिक कार्यकर्त्ता है। इस ग्रन्थ मे आपने भी सहायता पहुँचाई है।

ग्रन्थ के माननीय सहायक

श्रीयुत मेहता जगन्नाथसिंहजी, लक्ष्मणसिंहजी, उदयपुर
,, लालचन्दजी ढढ्ढा, ढढ्ढा एण्ड कम्पनी, मद्रास
बाबू लक्ष्मीचन्दजी छल्लानी, सिकंदराबाद (दक्षिण)
बाबू सोहनलालजी दूगड, कलकत्ता
सेठ कनकमलजी चौधरी, बडनगर (गवालियर)
सेठ बख्तावरमल मोहनलाल सेठिया पट्टालमखुला, मद्रास
राय साहिब सेठ मोतीलाल बालमुकुन्द मूथा, सतारा
श्रीयुत रोशनलालजी चतुर, उदयपुर
सेठ अचलसिंहजी, आगरा
सेठ हीरालालजी मुल्थान वाले, खाचरोद (गवालियर)
सेठ केशरीचन्द मंगलचन्द भावक, मद्रास
सेठ अगरचन्द मानमल चोरड़िया, मद्रास
सेठ खुशालचंद धर्मचद गोलेछा, टिंडीवरम् (मद्रास)
सेठ हसराज सागरमल खाटेड, ट्रिवल्लूर (मद्रास)
सेठ पृथ्वीराजजी ललवानी, मांडल (खानदेश)
सेठ माणकचद गेंदमल वेद, मद्रास
सेठ रावतमल भेरोंदान कोठारी, बीकानेर
श्री महासिंहराय मेघराज बहादुर मुर्शिदाबाद
श्रीयुत पुखराजजी कोचर, हिंगनघाट
,, सरदारनाथजी मोदी "वकील" जोधपुर.
सेठ बनेचंद जुहारमल दूगड, तिरमलगिरी (हैदराबाद)
लाला रतनचंद हरजसराय वरड, अमृतसर.
सेठ जेठमल श्रीचंद गधइया, सरदार शहर
सेठ चैनरूप सम्पतराम दूगड, सरदार शहर
सेठ निहालचन्द पूनमचन्द गोलेछा, फलोदी
लाला शादीराम गोकुलचन्द नाहर, देहली
श्री जीवनमल चन्दनमल वैगानी, लाडनूं
श्री शिवजीराम खूबचंद चण्डालिया, सरदारशहर

भूमिका

आज हम बडी प्रसन्नता के साथ इस महान ग्रन्थ को लेकर पाठकों के सम्मुख उपस्थित होते है। जिस समय हमने इस विशाल कार्य्य का बीडा उठाया था, उस समय हमें यह आशा न थी, कि यह कार्य्य इतने सर्वाङ्ग रूप में हम लोगों के द्वारा प्रस्तुत हो सकेगा। फिर भी महत्वाकाक्षा और उत्साह की एक प्रबल चिनगारी हमारे हृदयों में प्रदीप्त हो रही थी, और वह हमारे मार्ग को प्रकाशित कर रही थी। उसी की प्रेरणा से ज्यों ज्यों हम इसके अदर घुसते गये, त्यों त्यों सर्वतोमुखी सफलता के दर्शन हमें होते गये। काम बडा कठिन था, परिश्रम भी बहुत बडा था, मगर हमारा उत्साह भी अदम्य था। इसीका परिणाम है, कि हिन्दुस्तान के कोने २ में बडे से बडे शहर और छोटे से छोटे गॉव में घर २ जाकर हम लोगों ने इस महान ग्रन्थ की सामग्री एकत्रित की। हमारी चार पार्टियों ने रेलवे और मोटर को मिलाकर करीब १। लाख मील की मुसाफिरी की। जाडे की कडकडाती हुई रातों और गर्मियों की धधकती हुई दुपहरियों में हमारे कार्य्य-कर्ता अविश्रात भाव से इसकी सामग्री सग्रह में जुटे रहे। इस प्रकार करीब २० महीनों के अनवरत परिश्रम से यह ग्रन्थ इस रूप में तयार हुआ।

इस ग्रन्थ के अन्दर हमने ओसवाल जाति से सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया है। इस जाति का इतिहास कितना महत्वपूर्ण और गौरवमय रहा है, यह बात इस इतिहास से पाठकों को भली भॉति रोशन हो जायगी। ऐसे महत्वपूर्ण इतिहास के प्रकाशन से कितना लाभ हुआ है, इसका निर्णय करना, हमारा नहीं प्रत्युत पाठकों का काम है।

हमें सब से बडी प्रसन्नता इस बात की है, कि भारत भर के ओसवाल गृहस्थों ने हमारी इस योजना का हृदय से स्वागत किया। जहाँ २ हम गये, वहाँ २ के सद्गृहस्थों ने हमारा बडे प्रेम से स्वागत किया, तथा हमें हर तरह से सहायता पहुँचाने की कोशिश की। कहना न होगा, कि यदि इतना प्रबल सहयोग ओसवाल गृहस्थों की तरफ से हमें प्राप्त न हुआ होता, तो आज यह ग्रन्थ कदापि इस रूप में पाठकों की सेवा में न पहुँच पाता।

यद्यपि ग्रन्थ के द्वारा जो सामग्री पाठकों के पास पहुँच रही है, वह बहुत पर्य्याप्त मात्रा मे है, फिर भी इसके अदर जो त्रुटिया शेष रह गई हैं, वे हमारी नजरों से छिपी हुई नहीं है। पहिली त्रुटि जो हमें खटक रही है, वह उन शिलालेखों का न दिया जाना है, जो ओसवाल जाति के सम्बन्ध में हमें प्राप्त हो सकते थे। यद्यपि इसके धार्मिक अध्याय में कई प्रधान २ शिला लेखों का वर्णन कर दिया गया है, फिर भी अनेकों ऐसे छोटे २ शिला लेख रह गये हैं जो अधिक महत्व पूर्ण न होने पर भी इस ग्रन्थ के लिए आवश्यक थे। दूसरी त्रुटि जिन प्रशस्तियों के फोटो हमने इस ग्रन्थ में दिये है, उनके अनुवाद यथास्थान हम नहीं सजा सके, इसका भी हमें अफसोस है। तीसरा यह विचार था कि भारतवर्ष के अदर जितने ओसवाल ग्रेज्युएट्स और रिफार्मर्स हैं, उनका सक्षिप्त परिचय एक स्वतंत्र अध्याय में किया जाय। इसके लिए हमने बहुत पत्र व्यवहार भी किया, मगर खेद है कि उन लोगों के पूर्ण परिचय न आने की वजह से

हमें इस कार्य्य से वंचित रहना पड़ा। ओसवाल जाति के निर्माण करने वाले जैनाचार्य्यों के चित्र देने का भी हमारा विचार था, मगर असली चित्र प्राप्त न होने की वजह से वह विचार भी हमको स्थगित कर देना पड़ा। अगर यह सब त्रुटियाँ पूर्ण हो गई होतीं, तो यह ग्रन्थ बहुत ही अधिक सुन्दर होता। फिर भी जिस रूप में यह प्रकाशित हो रहा है, हमारा दावा है कि अभीतक कोई भी जातीय इतिहास, भारतवर्ष में इसकी जोड़ का नहीं है। और हमें आशा है कि भविष्य में सुंदर जातीय इतिहासों की रचना करने वाले व्यक्तियों के लिये यह ग्रन्थ मार्ग दर्शक होगा। प्रेस सम्बन्धी जो अशुद्धियाँ इस ग्रन्थ के अंदर रह गई हैं, उसके लिये भी हमें बहुत बड़ा दुःख है। पर इतने बड़े कार्य्य के अन्दर जहाँ पचीसों व्यक्ति प्रूफ पढ़ने वाले और मेटर तय्यार करने वाले हों, इस प्रकार की भूलों का होना स्वाभाविक है। दृष्टि दोष से या और किन्हीं अभावों से इस ग्रन्थ के अंदर जो भूलें, त्रुटियाँ और कमियाँ रह गई हों, पाठकों से हमारा निवेदन है कि उनके सम्बन्ध में वे हमें अवश्य सूचित करें, यथा साध्य अगले संस्करण में उनको सुधारने का प्रयत्न करेंगे। इस ग्रन्थ के "ओसवाल जाति की उत्पत्ति, अभ्युदय" इत्यादि एक दो अध्यायों को छोड़ कर जितनी भी राजनैतिक, व्यापारिक और कौटुम्बिक इतिहास की सामग्री एकत्रित की गई है, वह सब ओसवाल गृहस्थों के द्वारा ही हमें प्राप्त हुई है, अतएव उसके सही या गलत होने की जवाबदारी उन्हीं सज्जनों पर है।

इस ग्रंथ के प्रणयन में जिन सज्जनों ने महान सहायताएँ पहुँचाई है उनमें से श्रीयुत राजमलजी ललवानी, सुगनचन्दजी लूणावत, रायबहादुर सिरेमलजी बापना सी० आई० ई०, मेहता फतेलालजी, स्वर्गीय सेठ चांदमलजी ढड्ढा सी० आई० ई०, सेठ बहादुरसिंहजी सिंघी, बाबू पूरनचन्दजी नाहर एम० ए० बी० एल०, दीवान बहादुर सेठ केसरीसिंहजी, सिंघी रघुनाथमलजी बेंकर्स, श्री कन्हैयालालजी भण्डारी, श्री ईसरचंदजी चौपड़ा, श्री इन्द्रमलजी लूणिया एवं श्री शुभकरणजी सुराणा का नामोल्लेख तो हम पहिले संस्करणों के परिचय में कर ही चुके हैं। इनके अलावा मुनि ज्ञानसुन्दरजी, गणी रामलालजी तथा जैन साहित्य तो इतिहास के लेखक, फलौदी निवासी श्रीयुत फूलचन्दजी और श्रीयुत नेमीचंदजी श्रावक, मद्रास के श्रीयुत मगलचंदजी श्रावक, श्रीयुत जसवन्तमलजी सेठिया, हैदराबाद के श्रीयुत किशनलालजी गोठी, देहली के श्रीयुत गोकुलचन्दजी नाहर, अमृतसर के लाला रतनचन्दजी बरड़, जोधपुर के मेहता जसवन्तरायजी, भण्डारी जालमलजी, भण्डारी अखैचन्दजी भण्डारी किशनदासजी, मुहणोत वृद्धराजजी, मुहणोत सरदारमलजी तथा ढड्ढा मनोहरमलजी, कलकत्ते के श्री मोहनलालजी दूगड़, उदयपुर निवासी लेफ्टिनेंट कुँवर दलपतसिंहजी इत्यादि महानुभावों ने इस ग्रंथ के प्रणयन में जो अमूल्य सहायताएँ पहुँचाई हैं, उनके प्रति धन्यवाद प्रदर्शित करना हम अपना परम कर्तव्य समझते हैं। अंत में आदर्श प्रिंटिंग प्रेस अजमेर के संचालक बाबू जीतमलजी लूणिया को भी धन्यवाद देना भूल नहीं सकते, जिनके सौजन्य पूर्ण व्यवहार ने इस ग्रन्थ की छपाई में हर तरह की सहूलियतें दीं।

एक बार फिर हम पाठकों को इस ग्रंथ की सफलता के लिए बधाई देते हैं और त्रुटियों के लिये क्षमा मांगते हैं।

शान्ति मन्दिर, भानपुरा (इन्दौर)
तारीख १-८-१९३८ ईस्वी

भवदीय—
"लेखकगण"

विषय-सूची

विषय	पेज नं०
सिंहावलोकन	१
ओसवाल जाति की उत्पत्ति	१
ओसवाल जाति का अभ्युदय	२१
ओसवाल जाति का राजनैतिक और सैनिक महत्व	३९
धार्मिक क्षेत्र में ओसवाल जाति	१२९
ओसवाल जाति की मुख्य २ संस्थाएँ	१८७
ओसवाल जाति और उसके आचार्य्य	१९३
ओसवाल जाति के प्रसिद्ध घराने—	
गेलडा	१A
बच्छावत	१
बोथरा	२७
दस्साणी	४४
मुहणोत	४६
सिंघवी, सिंघी	७८
भंडारी	११९
वेद मेहता	१६६
बापना	१९७
कोठारी	२१९
लोढा	२४४
ढढ्ढा	२६४
सुराणा	२७६
नाहर	२९७
दुधोरिया	३१२
ललवाणी	३१७
लूणावत	३२८
लूणिया	३३४
बन्दा मेहता	३४०
बागरेचा मेहता	३४६
कांकरिया (मेहता)	३५३
रतनपुरा, कटारिया	३६०
भाण्डावत	३७०
ओसतवाल	३७१
घोलिया	३७४
कावडिया	३७८
चील मेहता	३८०
चतुर (सांभर)	३८६
मुरडिया	३८८
शिशोदिया	३९३
घलूंडिया	३९९
डोसी	४०१
दूगड	४०२
चोपडा	४२७
गधैया	४३९
कोचर	४४६
झाबक	४५९
गोलेछा	४६४
सेठिया, सेठी, रांका	४८०
बाठिया	४९३
नाहटा	४९९
छल्लानी	५०५
बोहरा	५०६
चोरडिया, (रामपुरिया)	५०९
बोरड-बरड	५२२
खींवसरा	५२७
नौलखा	५३१
धाडीवाल	५३३
हरखावत	५३५
पावेचा	५३७
नाढेचा	५३८
छाजेड	५४०
डागा	५४२
पारख	५४७
बरमेचा	५५४
गोटी	५५५
पूँगलिया	५५८

हमें इस कार्य्य से वंचित रहना पड़ा। ओसवाल जाति के निर्माण करने वाले जैनाचार्य्यों के चित्र देने का भी हमारा विचार था, मगर असली चित्र प्राप्त न होने की वजह से वह विचार भी हमको स्थगित कर देना पड़ा। अगर यह सब त्रुटियाँ पूर्ण हो गई होतीं, तो यह ग्रन्थ बहुत ही अधिक सुन्दर होता। फिर भी जिस रूप मे यह प्रकाशित हो रहा है, हमारा दावा है कि अभीतक कोई भी जातीय इतिहास, भारतवर्ष में इसकी जोड़ का नहीं है। और हमें आशा है कि भविष्य में सुंदर जातीय इतिहासों की रचना करने वाले व्यक्तियों के लिये यह ग्रन्थ मार्ग दर्शक होगा। प्रेस सम्बन्धी जो अशुद्धियाँ इस ग्रन्थ के अंदर रह गई है, उसके लिये भी हमें बहुत बड़ा दुःख है। पर इतने बडे कार्य्य के अन्दर जहाँ पचीसों व्यक्ति प्रूफ पढने वाले और मेटर तय्यार करने वाले हों, इस प्रकार की भूलों का होना स्वाभाविक है। दृष्टि दोष से या और किन्हीं अभावों से इस ग्रन्थ के अंदर जो भूलें, त्रुटियाँ और कमियाँ रह गई हों, पाठकों से हमारा निवेदन है कि उनके सम्बन्ध में वे हमें अवश्य सूचित करें, यथा साध्य अगले संस्करण मे उनको सुधारने का प्रयत्न करेंगे। इस ग्रन्थ के "ओसवाल जाति की उत्पत्ति, अभ्युदय" इत्यादि एक दो अध्यायों को छोड कर, जितनी भी राजनैतिक, व्यापारिक और कोटुम्बिक इतिहास की सामग्री एकत्रित की गई है, वह सब ओसवाल गृहस्थों के द्वारा ही हमें प्राप्त हुई है, अतएव उसके सही या गलत होने की जबाबदारी उन्हीं सज्जनों पर है।

इस ग्रंथ के प्रणयन में जिन सज्जनों ने महान सहायताएँ पहुँचाई हैं उनमें से श्रीयुत राजमल जी ललवानी, सुगन्धचन्द्रजी लूणावत, रायबहादुर सिरेमलजी बापना सी० आई० ई०, मेहता फतेलालजी, स्वर्गीय सेठ चांदमलजी ढढ्ढा सी० आई० ई०, सेठ बहादुरसिंहजी सिंघी, बाबू पूरनचन्द्रजी नाहर एम० ए० बी० एल०, दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी, सिंघवी रघुनाथमलजी बैंकर्स, श्री कन्हैयालालजी भण्डारी, श्री ईसरचंदजी चौपड़ा, श्री इन्द्रमलजी लूणिया एवं श्री शुभकरणजी सुराणा का नामोल्लेख तो हम पहिले संरक्षकों के परिचय में कर ही चुके है। इनके अलावा मुनि ज्ञानसुन्दरजी, गणी रामलालजी तथा जैन साहित्य नो इतिहास के लेखक, फलौदी निवासी श्रीयुत फूलचंदजी और श्री युत नेमीचंदजी झावक, मद्रास के श्रीयुत मगलचंदजी झावक, श्रीयुत जसवंतमलजी सेठिया, हैदराबाद के श्रीयुत किशनलालजी गोठी, देहली के श्रीयुत गोकुलचन्दजी नाहर, अमृतसर के लाला रतनचन्दजी बरड, जोधपुर के मेहता जसवंतरायजी, भण्डारी जीवनमलजी, भण्डारी अखेराजजी, भण्डारी बिशनदासजी, मुहणोत वृद्धराजजी, मुहणोत सरदार-मलजी तथा ढढ्ढा मनोहरमलजी, कलकत्ते के श्री सोहनलालजी दूगड, उदयपुर निवासी लेफ्टिनेट कुँवर दलपतसिंहजी इत्यादि महानुभावों ने इस ग्रंथ के प्रणयन में जो अमूल्य सहायताएँ पहुँचाई हैं, उनके प्रति धन्यवाद प्रदर्शित करना हम अपना परम कर्तव्य समझते हैं। अंत में आदर्श प्रिंटिंग प्रेस अजमेर के संचालक बाबू जीतमलजी लूणिया को भी धन्यवाद देना भूल नहीं सकते, जिनके सौजन्य पूर्ण व्यवहार ने इस ग्रन्थ की छपाई में हर तरह की सहूलियतें दीं।

एक बार फिर हम पाठकों को इस ग्रंथ की सफलता के लिए बधाई देते हैं और त्रुटियों के लिये क्षमा मांगते हैं।

शांति मन्दिर, भानपुरा (इन्दौर)
तारीख १-८-१९३४ ईस्वी

भवदीय—
"लेखकगण"

विषय-सूची

विषय	पेज नं०
सिंहावलोकन	१
ओसवाल जाति की उत्पत्ति	१
ओसवाल जाति का अभ्युदय	२१
ओसवाल जाति का राजनैतिक और सैनिक महत्व	३९
धार्मिक क्षेत्र में ओसवाल जाति ...	१२९
ओसवाल जाति की मुख्य २ संस्थाएँ .	१८७
ओसवाल जाति और उसके आचार्य्य .	१९३
ओसवाल जाति के प्रसिद्ध धराने—	
गेलडा ..	1A
बच्छावत .	१
बोथरा . .	२७
दस्साणी	४४
मुहणोत	४६
सिंघवी, सिंघी	७८
भंडारी	११९
वेद मेहता .	१६६
बापना ..	१९७
कोठारी	२१९
लोढा	२४४
ढढ्ढा ..	२६४
सुराणा	२७६
नाहर . ..	२९७
दुधोरिया	३१२
ललवाणी	३१७
लूणावत ...	३२८
लूणिया . .	३३४
बन्दा मेहता ...	३४०
बागरेचा मेहता ..	३४६
काकरिया (मेहता)	३५३
रतनपुरा, कटारिया ...	३६०
भाण्डावत ... ,	३७०
ओसतवाल	३७१
बोलिया	३७४
कावडिया	३७८
चील मेहता	३८०
चतुर (सांभर) ..	३८६
मुरडिया ..	३८८
शिशोदिया ...	३९३
घलूंडिया	३९९
डोसी	४०१
दूगड	४०२
चोपडा	४२७
गधैया	४३९
कोचर	४४६
श्रावक ...	४५९
गोलेछा	४६४
सेठिया, सेठी, रांका .. .	४८०
बांठिया	४९३
नाहटा	४९९
छल्लानी	५०५
बोहरा	५०६
चोरडिया, (रामपुरिया) ...	५०९
बोरड–बरड ...	५२२
खींवसरा	५२७
नौलखा . .	५३१
धाडीवाल	५३३
हरखावत ..	५३५
पावेचा .	५३७
नादेचा ..	५३८
छाजेड . .	५४०
डागा	५४२
पारख .. .	५४७
बरमेचा	५५४
गोटी ...	५५५
पूँगलिया ... ,	५५८

विषय	पेज नं०
बेंगाणी ...	५६१
चढालिया .	५६२
कठौतिया, भूतेडिया ...	५६५
कासटिया ...	५६६
समदड़िया	५६७
खाटेड़	५६९
मम्बइया .	५७२
संचेती, सुचिन्ती, सचेती	५७३
भसाली ...	५७८
यम्ब	५८३
फिरोदिया ...	५८५
बोरदिया	५८६
कीमती ...	५८७
पीतलिया	५८८
जम्मड ..	५९०
नखत . .	५९१
लूँकड	५९३
खजांची	५९५
कोचेटा	५९७
साढ	५९९
भाभू ...	६००
लिगे	६०४
मनिहानी ...	६०६
तातेड .	६०८
पाटनी . ..	६११
मालकस	६१२
नागो	६ ३
गुगलिया ..	६१४
सखलेचा, सखलेचा	६१५
घरड़िया	६१७
धनवट	६२०
घटेर, भडगतिया	६२१
सावला .	६२२
हिंगड .	६२३
पटावरी .	६२४
बम्बोली, श्री श्रीमाल .	६२५
सबदरा ...	६२६
जालोरी	६२६
फलोदिया, धूपिया ..	६२८
मुदरेचा (बोहरा) ...	६३०
बैताला ...	६३१
विनायकया	६३२
माल्लू ..	६३३
मरोठी	६३४
सावण सुखा	६३५
रेदासनी	६३७
नीमानी ..	६३८
घेमावत ...	६३९
देवड़ा ..	६४०
डाँगी .. .	६४१
आंचलिया	६४२
गोधावत ...	६४३
दनेचा (बोहरा)	६४३
बागचार ...	६४४
सालेचा, टांटिया . ..	६४५
आवड़	६४६
ठाकुर	६४७
भाद्राणी .	६४७
पगारिया, भटेवड़ा	६४८
पूनमियाँ, ललँडिया राठौड	६४९
छजलानी, भूरा	६५०
गाँधी	६५१
गड़िया	६५३
रूगवाल	६५४
सीयाल, रायसोनी, कातरेला	६५५
मरलेचा, मडेचा .	६५६
बागमार, कुचेरिया, हड़िया	६५७
धोका .	६५८
परिशिष्ट	६५८

नोट—कई खानदानों के परिचय भूल से यथास्थान छपना रह गये और कई परिवारों के परिचय ग्रन्थ छप चुकने के पश्चात आये। अतएव ऐसे सब परिवारों के परिचय "परिशिष्ट" में दिये गए हैं।

सिंहावलोकन

ओसवाल जाति के इस विशाल इतिहास के द्वारा जो गहरी और गवेषणा पूर्ण सामग्री पाठकों के सामने पेश की जा रही है हमारे खयाल से वह इतनी पर्याप्त है कि प्रत्येक विचारक पाठक के सम्मुख वह ओसवाल जाति के उत्थान और पतन के मूल भूत तत्वों का चित्र सिनेमा फिल्म की तरह खींच देगी। प्रत्येक व्यक्ति, जाति और देश के इतिहास में कुछ ऐसे विरोधात्मक मूल भूत तत्व काम करते रहते हैं जो समय आने पर या तो उस जाति को उत्थान के शिखर पर ले जाते हैं या पतन के गर्भ में ढकेल देते हैं। कहना न होगा कि संसार के अन्तर्गत परिवर्त्तन का जो प्रबल चक्र चलता रहता है वह इन्हीं तत्वों से संचालित होता है। ओसवाल जाति के इतिहास पर भी यदि यही नियम चरितार्थ होता हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

इस जाति के इतिहास का मनोयोग पूर्वक अध्ययन करने से हमें इसमें कई सूक्ष्म तत्व काम करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। हम देखते हैं कि मध्ययुगीन जैना चार्यों के अन्तर्गत सारे विश्व को जैन धर्म के झण्डे के नीचे लाने की एक प्रबल महत्वाकांक्षा का उदय होता है, और उसी महत्वाकांक्षा की एक चिन गारी से ओसवाल जाति की स्थापना होती है। स्थापना होते ही यह जाति वायुवेग के साथ, उन्नति के मैदान में अपना घोड़ा फेंकती है और क्या राजनैतिक, क्या सैनिक और क्या व्यापारिक सभी क्षेत्रों में अपना प्रबल अस्तित्व स्थापित कर देती है। प्रति स्पर्द्धा के मैदान में वह अपने से प्राचीन कई जातियों को पीछे रख देता है। इसकी इस आकस्मिक उन्नति के कारणों पर जब हम विचार करते हैं तो हमें इसमें सबसे पहला तत्व जैनचार्य्यों की बुद्धिमत्ता और उनकी विवेकशीलता के सम्बन्ध में मिलता है। इस जाति की स्थापना के अन्तर्गत जैनाचार्य्यों ने जिन उदार भावनाओं और सिद्धान्तों को रक्खा, उसके उदाहरण इतिहास में बहुत कम देखने को मिलते हैं। इस जाति के संगठन में जातीय, धार्मिक और कौटुम्बिक आदि सभी प्रकार की उन स्वाधीनताओं का अस्तित्व रक्खा गया, जिसके वायुमण्डल में रहकर उसका प्रत्येक सदस्य अपना सांसारिक और नैतिक हर प्रकार का विकास कर सकता है।

सामाजिक दृष्टि बिन्दु से यदि देखा जाय तो इस इतिहास में हमें स्पष्ट दिखलाई देता है कि जैनाचार्य्यों ने जाति पाति के विचार को गौण रख कर प्रतिभा और शक्ति के मान से तेजस्वी पुरुषों को इस जाति में मिलाना प्रारम्भ किया। उन महात्माओं ने इस जाति में उन्हीं पुरुषों को ग्रहण करना प्रारम्भ किया जो या तो अपने मालिक के बल से राज शासन की धुरी को घुमा सकते थे, या जो अपनी भुजाओं के बल से रणक्षेत्र के धोरण को बदल देने में सफल हो सकते थे अथवा जो अपनी व्यापारिक चतुरता से आर्थिक जगत के अन्तर्गत अपना पैर रोक देने की ताकत रखते थे। फिर चाहे वे ब्राह्मण हों, चाहे क्षत्रिय, चाहे वैश्य। उन्होंने हर समय चुने हुए और प्रतिभाशील व्यक्तियों के सगठन का ध्यान रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि इस जाति में जितने भी लोग सम्मिलित हुए वे सब शक्तिशाली और प्राकृतिक विशेषताओं से सम्पन्न थे। एक ओर जहाँ उन्होंने राजनैतिक वातावरण में अपने अद्भुत करिश्मे दिखलाये, दूसरी ओर उसी

जैनाचार्य्यों का सामाजिक दृष्टि बिन्दु

प्रकार सैनिक क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी भुजाओं के बल से काया पलट कर दिया। वे स्वयं चाहे राजा न बने हों, मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने कई राजाओं को बना दिया। इसी प्रकार व्यापारिक लाइन में भी उन्होंने अपना अद्भुत पराक्रम प्रकट किया। सच बात तो यह है, कि वे जिधर झुक गये विजय भी उधर ही हो गई।

जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर आदि रियासतों का इतिहास देखने से पता लगता है कि सोलहवीं शताब्दि से लेकर बीसवीं सदी के आरम्भ तक इन रियासतों के शासन सचालन में ओसवालों का प्रधान हाथ रहा है। जोधपुर स्टेट के अन्तर्गत साढ़े चारसो वर्षों में लगभग १०० दीवान ओसवाल हुए, इसी प्रकार वहाँ की मिलीटरी लाइन में भी उनका काफी प्रभुत्व था।

राजनैतिक प्रतिभा

इसी प्रकार मेवाड़ और बीकानेर में भी हमें पचीसों प्रधान, दीवान और फौजबक्षी (कमाण्डर इन चीफ) ओसवाल दिखलाई देते हैं। इसके साथ ही यह बात भी खास तौर से ध्यान में रखने की है कि वह समय आज की तरह शान्ति और सुव्यवस्था का न था, उस समय भारत के राजनैतिक वातवरण में अशान्ति के भयङ्कर काले बादल मण्डरा रहे थे। मिनिट मिनिट में साम्राज्यनीति और राजनीति में परिवर्तन होते थे। जिसकी वजह से शासकों का अस्तित्व खतरे में था, दीवान और मुसाहबों की तो बात ही क्या, मगर कठिनता की उस काल रात्रि में भी ओसवाल राजनीतिज्ञों ने अपने अस्तित्व को नष्ट न होने दिया। यही नहीं कठिनाइयों की भयङ्कर कसौटी पर कस जाने की वजह से उनका अस्तित्व और भी अधिक प्रकाशित हो उठा, और उन्होंने अपने अस्तित्व के साथ २ अपने मालिकों के अस्तित्व की भी रक्षा की। मुहणोत नैणसी, भण्डारी खींवसी, भण्डारी रघुनाथ, भण्डारी गंगाराम, सिंघवी जेठमल, सिंघवी इन्द्रराज, सिंघवी धनराज, सिंघवी फतेराज, बच्छावत कर्मचंद, मेहता हिन्दूमल, मेहता जालसी, कावड़िया भामाशाह, सिंघवी दयालदास, मेहता अगरचंद, मेहता गोकुलचंद, मेहता शेरसिंह, जोरावरमल बापना इत्यादि अनेकों प्रतापी ओसवाल मुत्सुद्दियों की गौरव गाथाओं से आज राजस्थान का इतिहास प्रकाशित हो रहा है। रियासतों की ओर इन लोगों को प्राप्त हुए रक्कों, परवानों से पता लगता है कि उनकी सेवाओं का उस समय कितना बड़ा मूल्य रहा था।

राजनैतिक क्षेत्र ही की तरह ये लोग धार्मिक क्षेत्र में भी कभी किसी से पीछे नहीं रहे। इस जाति के धार्मिक इतिहास में भी हमें समराशाह, करमाशाह, वर्द्धमानशाह, थीहरूशाह, भैंसाशाह, पेथड शाह, कर्मचन्द बच्छावत, जगत सेठ, जेसलमेर के बापना (पटुवा) बंधु इत्यादि ऐसे २ महानपुरुषों के उल्लेखनीय नाम मिलते हैं जिन्होंने लाखों रुपये खर्च करके बड़े २ संघ निकलवाये, शत्रुंजय आदि बड़े २ तीर्थों का पुनर्निर्माण करवाया, प्रतिमाओं की प्रतिष्ठाएँ कीं, शास्त्र भंडार भरवाये, अकाल पीड़ितों के लिये अन्न के भडार खोल दिये, इत्यादि जितने भी महान और उदारतापूर्ण बातें हो सकती हैं, वे सब हमें इस जाति के इतिहास में देखने को मिलती हैं।

धार्मिक जगत में

धर्म में इतनी गहरी अनुभूति रखने पर हमें यह विशेषता इस जाति के लोगों में देखने को मिलती है कि किसी भी प्रकार की धार्मिक गुलामी और संकीर्णता के चक्कर में ये लोग न फंसे और यही कारण है कि अहिंसा धर्म का पालन करनेवाली इस जाति ने युद्ध के मैदान में हजारों लोगों को तलवार के

घाट उतार दिया, मगर जैन धर्म की अहिंसा कहीं भी उनके मार्ग में बाधक न हुई। इसी प्रकार जब आवश्यकता महसूस हुई तो इस जाति के कई परिवारों ने वैष्णव धर्म को भी ग्रहण कर लिया। मगर उनका जातीय संगठन इतना मजबूत था कि इस धर्म परिवर्तन से उस सगठन को बिल्कुल धक्का न पहुँचा। आगे जाकर तो यह धार्मिक स्वाधीनता और भी व्यापक हो गई, और आज तो हम ओसवाल परिवारों में भिन्न २ धर्मों की एकता के अद्भुत दृश्य देखते हैं। एक ही घर में हम देखते हैं कि पिता जैन है, तो माता वैष्णव है, पुत्र आर्य्यसमाजी है तो पुत्रवधू स्थानकवासी है, मगर इस धार्मिक स्वाधीनता से उनके कौटुम्बिक प्रेम और जातीय संगठन में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आती। इसका परिणाम यह हुआ कि धार्मिक बंधनों की वजह से जातीय संगठन में अभीतक कोई शिथिलता न आने पाई।

इस इतिहास के अन्तर्गत हमें यह बात भी देखने को मिलती है कि इस जाति का मुत्सुद्दी वर्ग जिस समय अपनी राजनैतिक प्रतिभा से राजस्थान के इतिहास को देदीप्यमान कर रहा था। उसी समय उसका व्यापारिक वर्ग हजारों माइल दूर देश विदेश में जाकर अपनी व्यापारिक प्रतिभा से कई अपरिचित देशों के अन्दर अपने मजबूत पैरों को रोकने में समर्थ हो रहा था। कहना न होगा कि उस जमाने में रेल, तार, पोस्ट आदि यातायात के साधनों की बिलकुल सुविधा न थी, यात्राएँ या तो पैदल करनी पड़ती थीं या बैल गाड़ियों और ऊँटों पर। अन्धकार के उस घनघोर युग में ओसवाल व्यापारी घर से एक लोटा डोर लेकर निकलते थे और "घर कूँच घर मुकाम" की कहावत को चरितार्थ करते हुए, महीनों में बंगाल, आसाम, मद्रास इत्यादि अपरिचित देशों में पहुँचते थे। ये लोग वहाँ की भाषा और रीति रिवाजों को न जानते थे और न वहाँ वाले इनकी भाषा और सभ्यता से परिचित थे। मगर ऐसी भयंकर कठिनाई में भी ये लोग विचलित न हुए, और इन्होंने हिन्दुस्तान के एक छोर से दूसरे छोर तक छोटे २ व्यापारिक केन्द्रों में भी अपने पैर अत्यन्त मजबूती से से रोप दिये और लाखों रुपये की दौलत प्राप्त कर अपने और अपने देश के नाम को अमर कर दिया। कहाँ मारवाड़, कहाँ बङ्गाल, कहां उस समय की भयंकर परिस्थिति, और कहाँ लोटा डोर लेकर निकलने वाला सेठ हीरानन्द? क्या कोई कल्पना कर सकता था, कि इसी हीरानन्द के वंशज भारत के इतिहास में "जगत् सेठ" के नाम से प्रसिद्ध होंगे, और वहा के राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक वातावरण पर अपना एकाधिपत्य कायम कर लेंगे? सच बात तो यह है कि प्रतिभा के लगाम नहीं होती, जब इसका विकास होता है तब सर्वतोमुखी होता है। और यही कारण था उसी हीरानन्द के वंशजों के घर में एक समय ऐसा आया जब चालीस करोड़ का व्यापार होता था, और सारे भारत में वह घर प्रथम श्रेणी का धनिक था। लार्ड क्लाइव ने अपने पर लगाये गये इल्जामों का प्रतिकार करते हुए लन्दन में कहा था कि—"मैं जब मुर्शिदाबाद गया और वहाँ सोना चांदी और जवाहरात के बड़े २ ढेर देखे, उस समय मैंने अपने मन को कैसे काबू में रक्खा, यह मेरी अन्तरात्मा ही जानती है।" इस प्रकार इस जाति के और भी हजारों लाखों परिवार अपनी व्यापारिक प्रतिभा के बल से भारत भर में फैल गये। और आज भी उनके वंशज अत्यन्त प्रतिष्ठा के साथ वहाँ पर अपना व्यापार कर रहे हैं।

व्यापारिक क्षेत्र में

ऊपर के अवतरणों से हमें यह बात स्पष्ट मालूम हो जाती है कि किसी जाति को उन्नति के

शिखर पर आरूढ़ करने के लिये जिन २ गुणों और प्रतिभाओं की आवश्यकता होती है वह ओसवाल जाति में थी। इतना होने पर भी इस जाति का अक्षय प्रताप इतिहास के पृष्ठों पर अधिक समय तक टिका न रह सका, और उन्हीं महान् पुरुषों के वंशज धीरे २ गिरते हुए आज ऐसी कमजोर स्थिति में पहुँच गये, इसका कारण क्या? क्या यह केवल भाग्य का फेर है? क्या यह केवल विधि की विडम्बना है? या इसके अन्तर्गत भी कोई रहस्य है? इतिहास स्पष्ट रूप से घोषित करता है कि संसार में बिना कारण के कोई कार्य्य नहीं होता, हर एक छोटी से छोटी घटना के अन्तःकाल में भी उसका मूल भूत कारण विद्यमान रहता है। अगर ओसवाल जाति उत्थान के ऊँचे शिखर पर पहुँची, तो उसकी जड़ में भी कई महत्वपूर्ण तत्व विद्यमान थे और अगर आज वह अपनी स्थिति से इतनी नीचे गिर गई, तो उसके अन्दर भी उतने ही मजबूत कारण हैं। नीचे हम उन्हीं में से कतिपय कारणों पर संक्षिप्त प्रकाश डालने का प्रयत्न करते हैं।

पतन का प्रारम्भ

इस जाति के पतन का पहला कारण जो हमें इतिहास के पृष्ठों पर दिखलाई देता है, वह मुत्सुद्दियों की पारस्परिक फूट है। राजस्थान के ओसवाल मुत्सुद्दी राजनीतिज्ञ थे, वीर थे, स्वामि भक्त थे, अपने स्वामी के लिए हंसते २ अपनी जान पर खेलजाना उनके लिए रोज की मामूली बात थी, इन सब गुणों के होते हुए भी उनमें बन्धु विद्रोह की अगन बहुत जोरों से प्रज्वलित थी, अपने भाइयों के उत्कर्ष को सहन करना उनके लिए बहुत कठिन था, और यही कारण था, कि इन लोगों के बीच में हमेशा भयङ्कर षड्यंत्र चला करते थे। जहाँ कोई एक दीवान हुआ, तो उसको विरुद्ध पार्टी वाले, उसीके भाई, हर तरह से उसका नाश करने की कोशिश में लग जाते थे। ऐसी कई दुःखपूर्ण दुर्घटनाएँ हमें इतिहास में देखने को मिलती हैं, कि राजनैतिक षड्यन्त्रों में पड़कर समय २ पर जिन बड़े २ मुत्सुद्दियों का चूक (कतल) हुआ उन षड्यंत्रों में उन्हीं के सजातीय सब से अधिक लीडिंग पार्ट ले रहे थे। इन्हीं घात प्रतिघातों से इस जाति की उन्नति में बहुत ठेस पहुँची। इसी प्रकार इस जाति के पतन का दूसरा कारण मुत्सुद्दी क्लॉस का नकली आडम्बर और झूठा अभिमान है। घर में बेशक चूहे दण्ड पेलते हों, खाने को फाकाकशी हो, मुत्सुद्दी क्लॉस का व्यक्ति इन सब कष्टों को सहन कर लेगा, मगर व्यापार के द्वारा अपनी आजीविका को उपार्जन करने में अपनी बहुत बड़ी बेइज्जती समझेगा वह दस रुपये की राज्य की नौकरी करना पसन्द करेगा, मगर स्वतन्त्र व्यवसाय की कल्पना भी उसके मस्तिष्क को दुःखदायी होगी। इसका भयङ्कर परिणाम यह हो रहा है कि इन्ही रियासतों में जहाँ पर किसी समय इन लोगों के पूर्वजों ने राजाओं तक को अपने एहसानमन्द बनाए थे, वहीं इन लोगों की बहुत खराब स्थिति हो रही है, और धीरे २ इनकी प्रतिष्ठा और इज्जत भी कम होती जा रही है, और निर्माल्य पदार्थों की तरह ये अपने जीवन को बिता रहे हैं। फिर भी मूँछ पर चावल ठहराने की इनकी नकली ऐंठ आज भी कायम है।

मुत्सुद्दियों की पारस्परिक फूट

इस जाति के पतन का दूसरा जबर्दस्त कारण इसके अन्दर पैदा हुई साम्प्रदायिकता और धार्मिक मतभेद हैं। सच पूछा जाय तो इसी जहरीले कारण ने आज इस जाति को रसातल में पहुँचा दिया है। हम तो स्पष्ट रूप से निःसंकोच और निर्भीक होकर यह घोषित कर देना चाहते हैं कि ओसवाल जाति उत्थान के इतने ऊँचे शिखर पर पहुँची उसका प्रधान कारण भी तत्कालीन जैनाचार्य्य थे और आज

जो वह पतन की इस चरम सीमा पर पहुँच रही है इसका सारा उत्तर दायित्व भी वर्तमान धर्माचार्यों पर ही है। धर्म संस्था मनुष्य की भावुकता का विकास करने वाली संस्था है। इस

धार्मिक मत भेद

भावुकता को यदि उचित मार्ग से संचालित किया जाय तो इसीमे संसार के बड़े से बड़े उपकार सिद्ध हो सकते हैं और यदि इसी को गलत रास्ते पर लगा दी जाय तो ससार के बडे से बडे अनिष्ट भी इससे हो सकते हैं। प्राचीन जैनाचार्य्यों ने जहाँ इस भावुकता का उपयोग लोगों को मिलाने और संगठित करने में किया, वहां आगे के जैनाचार्य्यों ने, अपने २ व्यक्तित्व और अहंकार को चरितार्थ करने के लिए नवीन २ सम्प्रदायों और भेद भावों की गहराई करके उस सङ्गठन के टुकडे करने में ही अपनी शक्तियों का उपयोग किया। इन्हीं लोगों की दया से समाज में कई सम्प्रदायों और मत मतान्तरों का उदय हुआ, और एकता के सूत्र पर स्थापित की हुई ओसवाल जाति फूट और वैमनस्य के चक्कर में जा पड़ी। और आज तो यह हालत है कि ये मतभेद हमारे जातीय संगठन की दीवार को भी कमजोर करने लगे हैं। हमारे पूज्य साधुओं की कृपा से उनके श्रावकों में अब यह भावना भी उदय होने लगी है कि स्थानकवासी, स्थानक वासियों में ही शादी सम्बन्ध करें और मन्दिर मार्गी मन्दिर मार्गियों में ही। ईश्वर न करे यदि यह नियम भी कहीं प्रचलित हो गया, तो फिर इस जाति का अन्त ही निकट समझना चाहिए।

हमें यह मानने में तनिक भी संकोच नहीं हो सकता कि त्याग और तपस्या में आज भी हमारे जैन साधु भारत में सब से आगे बढे हुए हैं। लेकिन इसके साथ ही दुःख के साथ हमें यह भी स्वीकार करना पडता है कि अहभाव और व्यक्तित्व के मोह की मात्रा उनमें क्रमशः अधिक बलवती होती आ रही है। जैन शास्त्रों में इस प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करना सब से कठिन बतलाया गया है, यह ऐसी प्रवृत्ति (उपशम मोहनीय) है कि ग्यारहवे गुण स्थान पर पहुँची हुई आत्मा को भी वापस पतित करके दूसरे गुण स्थान में लाकर पटक देती है। इसी प्रवृत्ति की वजह से ससार में समय २ पर अनेक मतमतान्तरों और सम्प्रदायों का उदय होता है और अशान्ति की मात्रा बढ़ती है। इसी प्रवृत्ति का प्रताप है कि जो व्यक्ति अपने घरबार, धन, दौलत और कुटुम्बी जनों के मोह को मुट्ठी भर धूल की तरह छोड़ कर संसार में विरक्त हो जाते हैं वे अत्यन्त साधारण "पूज्य" और "आचार्य्य" पदवी के लिए ऐसे लड़ते हुए दिखलाई देते हैं कि गृहस्थों तक को आश्चर्य होता है और उनकी लड़ाई को मिटाने के लिए श्रावकों को बीच में पड़ना पड़ता है। अगर ये अपने अहभाव को नष्टकर अपनी महानता के प्रकाश में देखेंगे तो यही पदवियाँ उन्हें अत्यन्त क्षुद्र दिखलाई देंगी।

अगर आज हमारे ये जैनाचार्य्य इस प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करके, समानता के महान् सिद्धांतों का बीडा उठा कर तैय्यार हो जाय तो जाति की धार्मिक, सामाजिक और कौटुम्बिक सभी कमजोरियाँ क्षण भर में दूर हो सकती हैं। इन लोगों के हाथों में आज भी महान् शक्ति केन्द्रीभूत है। जनता आज भी इनके पीछे पागल है।

इधर गृहस्थों का कर्तव्य भी उनके पीछे इस बात का तकाज़ा कर रहा है कि इन लोगों का

अनुकरण करके अब तक वे धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से अपनी काफ़ी बरबादी कर चुके हैं। यदि अब भी ये लोग अपने अहंभाव को तिलाञ्जलि देकर जनता को एकता के सूत्र में बांधे तो बहुत ही अच्छा है वरना इस प्रकार समाज में वैमनस्य का बीज बोने वाले साधुओं की अब समाज को जरूरत नहीं है।

सामाजिक कमजोरियाँ

धार्मिक मतमतान्तरों ही की तरह इस जाति के कलेवर में कई ऐसे सामाजिक दोष भी घुसे हुए हैं, जिनकी वजह से यह जाति दिन प्रति दिन क्षीण होती जा रही है। इन सामाजिक कमजोरियों में हमारा वैवाहिक जीवन, परदा और पोशाक, और सामाजिक फिजूल खर्चियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

हमारा वैवाहिक जीवन

किसी भी जाति की उन्नति का यदि अन्दाज करना हो तो वह उस जाति के वैवाहिक जीवन से भली प्रकार किया जा सकता है। जिस जाति का वैवाहिक जीवन सुन्दर और प्रेमपूर्ण होता है, जिसका नारी अङ्ग सभ्य और स्वस्थ होता है, उस जाति की सन्तानें भी हृष्ट पुष्ट, बलवान्, मेधावी और सुंदर होती हैं। खेद है कि ओसवाल जाति का वैवाहिक जीवन अत्यन्त निराशापूर्ण और अन्धकारमय है। एक ओर तो घोर अशिक्षा और परदे की अमानुषिक प्रथा की वजह से हमारा नारी अङ्ग निर्माल्य और निर्जीव हो गया है, इसकी दूसरी ओर प्रति वर्ष हजारों छोटे २ बालकों का विवाह की वेदी पर बलिदान होता है, तीसरी ओर पचासों उतरी उम्र के बुड्ढे भी समाज के नवयुवकों का हक नष्ट कर समाज की बालिकाओं का जीवन नष्ट कर देते हैं। इन सब बातों से समाज का संयम और सदाचार खतरे में पड़ा हुआ है, नारी अंग के निर्माल्य होने से हमारे समाज की ठीक वही हालत हो रही है जो पक्षाघात से पीड़ित व्यक्ति की होती है। हमारा दाम्पत्य जीवन कलहमय हो रहा है, समाज का वायुमण्डल हजारों बाल-विधवाओं की आहों से धुंवाधार हो रहा है। इन सभी बातों से दिन २ समाज का भविष्य अन्धकार की ओर अग्रसर हो रहा है।

इन सब बातों को दूर कर समाज को स्वस्थ करने के लिए यह आवश्यक है कि समाज के वैवाहिक जीवन को सुंदर बनाया जाय। इसके लिए समाज के नारी अंग को शिक्षित और सुसंस्कृत किया जाय। हर्ष है कि समाज के अगुवाओं का ध्यान इस ओर धीरे २ आकृष्ट होने लगा है और अब स्थान २ पर बहुत सी कन्या पाठशालाएं खुल रही हैं। पर अभी यह प्रयत्न समुद्र में बून्द के तुल्य ही कहा जा सकता है। इस दिशा में बहुत बड़े स्केल पर काम होने की आवश्यकता है।

दूसरा महत्व का प्रश्न वैवाहिक स्वाधीनता का है। कोई भी तर्क और कोई भी दलील इस बात का समर्थन नहीं कर सकती कि पुरुषों को तो साठ २ वर्ष की उम्र तक पाच २ छ २ विवाह करने की समाज की ओर से खुली इजाजत हो और स्त्रियाँ दस वर्ष की उम्र की आयु में विधवा होने पर भी पुनर्विवाह के अधिकार से वञ्चित रक्खी जाँय। इतिहास के न मालूम किस अन्धकार पूर्ण युग में इस कठोर और पक्षपात पूर्ण व्यवस्था का उदय हुआ जिसने भारत के सारे सामाजिक जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर रक्खा है। जब स्त्री और पुरुष में समान मनोविकारों का उदय होता है, तब क्या कारण है कि पुरुषों के मनोविकारों की तो इतनी सावधानी से रक्षा की जाय और स्त्रियों के मनोविकारों की ओर बिलकुल ध्यान ही न दिया जाय। अनेकों वर्ष के वादविवाद और समय की जरूरतों से यह विषय अब इतना स्पष्ट और निर्विवाद हो

गया है कि अब इस विषय पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। विधवा विवाह एक ऐसी औषधि है। जिसका प्रचार होते हो बालविवाह, वृद्धविवाह और वैवाहिक जीवन सम्बन्धी सभी समस्याएं अपने आप हल हो जायगी।

दूसरी जो भयङ्कर कमजोरी हमारे समाज के अन्तर्गत है वह परदा और पोशाक की है। असभ्यता और जङ्गलीपन के किस युग में इस बर्बर प्रथा का जन्म हुआ, यह नहीं कहा जा सकता। मगर यह निश्चय है कि इस प्रथा ने हमारी स्त्रियों को संसार के सम्मुख अत्यन्त हास्यास्पद बना रक्खा है। वैसे तो इस जालिम पृथा का अस्तित्व किसी न किसी अंश में भारत की कई जातियों में है, मगर ओसवाल जाति में इसका रूप इतना भयङ्कर हो गया है कि उसकी नजीर कहीं भी ढूंढे न मिलेगी। हमारी ही जाति वह जाति है जहाँ स्त्रियाँ स्त्रियों से परदा करती हैं, बहू सास से परदा करती हैं, कई बहुएं तो जिन्दगी पर्यंत अपनी सास को मुँह नहीं बतलातीं और बिना बोले रह जाती हैं। हमारी जाति वह जाति है जहाँ सभ्यता का काम परदे से किया जाता है, अमुक के आठ × का परदा है अमुक के चार का परदा है और अमुक के दो का परदा है, जिसके जितना अधिक परदा होता है, वह खानदान उतना ही ऊंचा समझा जाता है। इस प्रकार इस भयंकर प्रथा ने हमारी स्त्रियों को जिन्दगी और प्रकाश की उन सब किरणों से वंचित कर रक्खा है जो उनकी जीवनी शक्ति की रक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। वे संसार की सारी गतिविधि से अपरिचित रहती हैं। अपनी आत्मरक्षा की भावनाओं से वे सर्वथा अपरिचित रहती हैं। आश्चर्य है कि बीसवीं सदी के इस प्रकाश मय युग में भी यह महान जाति अभी तक इस महान बर्बर प्रथा को अंगीकार-किए हुए है। हमारे पास इतना स्थान नहीं कि इस प्रथा के सम्बन्ध में हम कुछ विशेष लिखें। लेकिन यह निश्चय है कि समाज में जब तक इस प्रथा का अस्तित्व है, तब तक जाति सुधार का नाम लेना ही व्यर्थ है।

परदा और पोशाक

परदे के साथ ही पोशाक का भी बहुत गहरा सम्बन्ध है इस समय जो पोशाक ओसवाल महिलाओं ने अङ्गीकार कर रक्खी है वह इतनी भद्दी और अवैज्ञानिक है कि उसको रखते हुए परदा प्रथा को तोड़ना बिलकुल व्यर्थ है। क्या स्वास्थ्य की दृष्टि से, क्या सौन्दर्य की दृष्टि से और क्या सभ्यता की दृष्टि से, सभी दृष्टियों से किसी भी दृष्टि में इस वेष भूषा का समर्थन नहीं किया जा सकता। इस पोशाक में मामूली परिवर्तन होने की आवश्यकता है।

इसके पश्चात् समाज के रीतिरिवाजों की वेदी पर होने वाली फ़िज़ूलखर्चियों का नम्बर आता है। अनेकों परिवारों के इतिहास में हमें कई घटनाएं ऐसी देखने को मिलीं जिनसे उन लोगों ने हजारों लाखों रुपया लगाकर शहरसारणी और ग्रामसारणियें की हैं। उस युग में चाहे ये बातें अच्छी मानी जाती हों, मगर अर्थ समस्या के इस कठिन युग में जब कि दिन २ अर्थ का महत्व बढ़ रहा हो ऐसी बातों का अनुमोदन नहीं किया जा सकता। खेद है कि अदूरदर्शी लोग इस कठिन समय में भी सामाजिक रीतिरिवाजों की वेदी पर अपने आपको बलिदान

फ़िज़ूलखर्ची

× जो स्त्रियाँ आठ स्त्रियों को साथ लेकर निकलती हैं उनके आठ का और जो चार को लेकर जाती हैं उनके चार का परदा कहलाता है।

कर देते हैं। मगर बुद्धिमानी का अब यह तकाजा है कि समाज के आर्थिक वैभव की रक्षा के लिए इस प्रकार की सभी सामाजिक—फिजूल खर्चियों का अन्त किया जाय।

दस्सा बीसा आदि भेद

सम्प्रदाय भेद ही की तरह इस जाति मे समय २ पर कुछ ऐसे सामाजिक भेद भी उत्पन्न हो गये जिसकी वजह से यह जाति कई टुकडों मे विभिन्न होगई। आज इस जाति में बीसा, दस्सा, पांचा, अढैया आदि कई अनेकों भेद हो रहे हैं और कहीं बेटी व्यवहार बन्द है तो कहीं रोटी व्यवहार बन्द है और इन सब भेदों का मनुष्यता के नाम पर समर्थन किया जाता है। इन भेदों के सम्बन्ध मे जो किम्वदन्तियां हैं उनसे पता चलता है कि बहुत साधारण घटनाओं के द्वारा ये भेद प्रभेद अस्तित्व म आये हैं, मगर आज ससार के अन्दर ऐसे युग का प्रादुभाव हो रहा है कि जिसमें मनुष्य से मनुष्य को जुदा करने वाले ऐसे सभी भेदभाव नष्ट हो जाएगे। हमें हर्ष है कि पंजाब के ओसवाल समाज ने इस लाइन में काफी पैर बढ़ाया है, और वहां दस्सों बीसों में शादी विवाह प्रचलित होगये ह, हम आशा है कि सारे भारत का ओसवाल समाज इस भेद भाव को नष्ट करने की ओर अग्रसर होगा।

नवयुवकों से अपील

ऊपर हम इस इतिहास की भली और बुरी दोनों बाजुओं पर काफी प्रकाश डाल चुके हैं। अब अन्त में हम इस जाति के प्रकाशमान युवकों से यह अपील करना चाहते हैं इस समय सारा ससार परिवर्तन के प्रबल चक्र मे पडा हुआ है। राज्य, धर्म, समाज और पूंजी की सभी सस्थाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। मनुष्य, स्वार्थ, जातीयता और राष्ट्रीयता से भी ऊचा उठकर अखिल मानवीयता के समीप पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हो रहा है ऐसी स्थिति म उनके ऊपर भी नवयुवकों का बहुत बडा बोझा आता है। यदि वे ऐसी स्थिति में भी सावधानी के साथ अपने सामाजिक रोगों की चिकित्सा के लिए तय्यार न हुए, तो जाति का जो भयङ्कर नुकसान होगा उसका उत्तरदायित्व उन्हीं पर आवेगा। इस समय उनका पवित्र कर्त्तव्य उन्हें इस बात का तकाजा कर रहा है कि वे अखिल भारतवर्षीय ऐसे ओसवाल नवयुवकों का एक विशाल सगठन करें जो प्रगतिशील और समान विचार वाले हों। जब तक एक बलवान् सगठन की ताकत उनके पीछे नहीं होगी तब तक एक व्यक्तिगत उत्साह और जोश से किये हुये कार्य्यों का कोई भी महत्व और प्रभाव न होगा। सबसे बडी कठिनाई हमारे नवयुवकों के सामने यही आती है, कि जोश और उत्साह में आकर वे जो भी काम करते ह कोई भी मजबूत सगठन उनका समर्थन नहीं करता और इसी कारण चारों ओर से हास्यास्पद बन कर वे निरुत्साही हो जाते हैं। अगर उनके पीछे कोई मजबूत सगठन उन्हें उत्साह प्रदान करने वाला हो तो वे बहुत कुछ कार्य्य कर सकते हैं। इस लिए एक ऐसे बडे सगठन की बहुत बडी आवश्यकता है, और इस समय सारे भारत के ओसवाल नवयुवकों को ऐसे महान् संगठन को बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुटजाना चाहिए।

———

ओसवाल जाति की उत्पत्ति

Origin of the Oswals.

कर देते हैं। मगर बुद्धिमानी का अब यह तकाजा है कि समाज के आर्थिक वैभव की रक्षा के लिए इस प्रकार की सभी सामाजिक—फिजूल खर्चियों का अन्त किया जाय।

सम्प्रदाय भेद ही की तरह इस जाति मे समय २ पर कुछ ऐसे सामाजिक भेद भी उत्पन्न हो गये जिसकी वजह से यह जाति कई टुकड़ों मे विभिन्न होगई। आज इस जाति में बीसा, दस्सा, पांचा, अढ़ैया आदि कई अनेकों भेद हो रहे है और कहीं बेटी व्यवहार बन्द है तो कहीं रोटी व्यवहार बन्द है और इन सब भेदों का मनुष्यता के नाम पर समर्थन किया जाता है। इन भेदों के सम्बन्ध में जो किम्वदन्तियां हैं उनसे पता चलता है कि बहुत साधारण घटनाओं के द्वारा ये भेद प्रभेद अस्तित्व मे आये हैं, मगर आज ससार के अन्दर ऐसे युग का प्रादुर्भाव हो रहा है कि जिसमें मनुष्य से मनुष्य को जुदा करने वाले ऐसे सभी भेदभाव नष्ट हो जाएंगे। हमें हर्ष है कि पंजाब के ओसवाल समाज ने इस लाइन में काफी पैर बढ़ाया है, और वहां दस्सों बीसों में शादी विवाह प्रचलित होगये हैं, हमें आशा है कि सारे भारत का ओसवाल समाज इस भेद भाव को नष्ट करने की ओर अग्रसर होगा।

दस्सा बीसा आदि भेद

ऊपर हम इस इतिहास की भली और बुरी दोनों बाजुओं पर काफी प्रकाश डाल चुके हैं। अब अन्त में हम इस जाति के प्रकाशमान युवकों से यह अपील करना चाहते हैं इस समय सारा ससार परिवर्तन के प्रबल चक्र में पड़ा हुआ है। राज्य, धर्म, समाज और पूंजी की सभी संस्थाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। मनुष्य, स्वार्थ, जातीयता और राष्ट्रीयता से भी ऊंचा उठकर अखिल मानवीयता के समीप पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हो रहा है ऐसी स्थिति में उनके ऊपर भी कार्य्यक्रम का बहुत बड़ा बोझा आता है। यदि वे ऐसी स्थिति में भी सावधानी के साथ अपने सामाजिक रोगों की चिकित्सा के लिए तय्यार न हुए, तो जाति का जो भयङ्कर नुकसान होगा उसका उत्तरदायित्व उन्हीं पर आवेगा। इस समय उनका पवित्र कर्त्तव्य उन्हें इस बात का तकाजा कर रहा है कि वे अखिल भारतवर्षीय ऐसे ओसवाल नवयुवकों का एक विशाल संगठन करें जो समानशील और समान विचार वाले हों। जब तक एक बलवान् संगठन की ताकत उनके पीछे नहीं होगी तब तक एक व्यक्तिगत उत्साह और जोश से किये हुये कार्य्यों का कोई भी महत्व और प्रभाव न होगा। सबसे बड़ी कठिनाई हमारे नवयुवकों के सामने यही आती है, कि जोश और उत्साह में आकर वे जो भी काम करते हैं कोई भी मजबूत संगठन उनका समर्थन नहीं करता और इसी कारण चारों ओर से हास्यास्पद बन कर वे निरुत्साही हो जाते हैं। अगर उनके पीछे कोई मजबूत संगठन उन्हें उत्साह प्रदान करने वाला हो तो वे बहुत कुछ कार्य्य कर सकते हैं। इस लिए एक ऐसे बडे संगठन की बहुत बड़ी आवश्यकता है, और इस समय सारे भारत के ओसवाल नवयुवकों को ऐसे महान् संगठन को बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुटजाना चाहिए।

नवयुवकों से अपील

———

ओसवाल जाति की उत्पत्ति

Origin of the Oswals.

भारतवर्ष के इतिहास की सामग्री इतने अन्धकार में है कि पुरातत्ववेत्ताओं की सैकड़ों वर्षों से लगातार खोज जारी रहने पर भी अभी तक उसका बहुत सा भाग तिमिराच्छन्न है और बहुत-सी महत्वपूर्ण बातों के अभाव से उसके कई अङ्ग अधूरे पड़े हुए है। इस देश में एक तो वैसे ही लोगों की रुचि अपने वैज्ञानिक इतिहास का निर्माण करने की ओर बहुत कम रही, दूसरे जिन लोगों ने इस विषय पर कुछ लिखा भी तो समय के भीषण प्रहारों से, बार-बार होने वाले राज्यपरिवर्तनों और राज्य-क्रान्तियों से वह सामग्री भी रक्षित न रह सकी। फिर भी आधुनिक अन्वेषणाओं से और पुरातत्ववेत्ताओं के सतत प्रयत्नों से जो कुछ भी टूटे फूटे शिलालेख, ताम्रपत्र, प्रशस्तियां वगैरह प्राप्त हुई हैं उनसे भारतवर्ष के राजनैतिक इतिहास और राजपरिवर्तनों पर काफी प्रकाश पड़ने लगा है। मगर जातियों का अलग अलग इतिहास तो अभी भी वैसा ही अन्धकार के गर्क में लीन है।

ओसवाल जाति के इतिहास के सम्बन्ध में भी यही बात सोलह आना सच उतरती है। इस महान् जाति के द्वारा किये गये उज्ज्वल और महान् कार्यों से राजपूताने का मध्यकालीन इतिहास देदीप्यमान हो रहा है और इसके अन्दर पैदा होने वाले महापुरुषों का नाम उस समय के इतिहास के अन्दर स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होता है। इतने पर भी यदि आज पूछा जाय कि राजपूताने के रणांगण में भांति-भांति के खेल दिखानेवाली इस जाति की उत्पत्ति कब, कैसे और कहाँ से हुई तो इतिहासवेत्ता चुप हो जाते हैं। पुरातत्ववेत्ता आँखें बन्द कर लेते हैं और इतिहास अपनी असमर्थता को प्रकट कर देता है। कोई मजबूत आधार नहीं, कोई सन्तोषजनक प्रमाण नहीं, कोई विश्वासनीय लेख नहीं जिसके बल पर इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई निर्विवाद बात बतलाई जासके।

प्राचीन यतियों के शास्त्र भण्डारों में, भाटों की वंशावलियों में, और जैनाचार्यों के जैन ग्रन्थों में ओसवाल जाति की उत्पत्ति के विषय में अनेक दंतकथाएँ, अनेक किम्वदंतियाँ और अनेक काव्य प्राप्त होते हैं। मगर उन सबके ऊपर विचार करने पर इस बात का पता चलता है कि कुछ लोगों ने तो इस जाति

को अधिक-से-अधिक प्राचीन सिद्ध करने के लोभ में, कुछ लोगों ने अपने-अपने गच्छों और अपने अपने आचार्य्यों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के हेतु से, इन सब प्रमाणों के ऊपर पक्षपात का ऐसा गहरा रंग चढ़ा दिया है कि उसमें से आज असलियत को ढूँढ निकालना भी बहुत कठिन हो गया है और बहुत-से इतिहास रसिक और पुरातत्ववेत्ता तो इस प्रकार की अतिशयोक्ति पूर्ण बातों पर विचार तक करने में बुराई समझने लग गये हैं।

ऐसी स्थिति में ओसवाल जाति की उत्पत्ति का समय निर्णय करना किसी भी इतिहासवेत्ता के लिये कितना कठिन, और दुरूह है यह बतलाने की जरूरत नहीं।

फिर भी जो लेखक ओसवाल जाति का इतिहास लिखने के लिये बैठता है उसके लिये सबसे पहला और आवश्यक कर्त्तव्य यह हो जाता है कि इस जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जो अधिक-से अधिक सामग्री उपलब्ध हो, वह पाठकों के सम्मुख उपस्थित करदे। ऐसा किये बिना उसका पवित्र कर्त्तव्य पूरा नहीं हो सकता। इन्हीं सब बातों को मद्दे नजर रखकर इस जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जो महत्वपूर्ण तथ्य हमें प्राप्त हुए हैं वह हम नीचे प्रस्तुत करते हैं।

इस समय ओसवाल जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में तीन मत विशेषतया प्रचलित हैं। उन तीनों मतों पर हम यहाँ अलग-अलग रूप से विचार करते है।

१—पहला मत जैन ग्रंथों और जैनाचार्य्यों का है जिनके मतानुसार वीर निर्वाण संवत् ७० में अर्थात् वि० संवत् से करीब ४०० वर्ष पूर्व भीनमाल के राजा भीमसेन के पुत्र उपलदेव ने ओसिया नगरी (उपकेश नगरी) बसाई और भगवान् पार्श्वनाथ के ७ वें पाटधर उपकेश गच्छीय श्री आचार्य्य रत्नप्रभ सूरि ने उस राजा को प्रतिबोध देकर जैनधर्म की दीक्षा दी और उसी समय ओसवाल जाति की स्थापना की।

२—दूसरा मत भाटों, भोजकों और सेवकों का है, जिनकी वंशावलियों से पता लगता है कि सम्वत् २२२ विक्रमी में उपलदेव राजा के समय में ओसियाँ (उपकेश नगरी) में रत्नप्रभसूरि के उपदेश से ओसवाल जाति के १८ मूल गौत्रों की स्थापना हुई।

३—तीसरा मत आधुनिक इतिहासकारों का है जिन्होंने अपनी अकाट्य खोजों और गम्भीर गवेषणाओं के पश्चात् यह सिद्ध किया है कि विक्रमी सं० ९०० के पहले ओसवाल जाति और ओसियाँ नगरी का अस्तित्व न था। इसके पश्चात् भीनमाल के राजपुत्र उपलदेव ने मंडोर के पड़िहार राजा के पास आकर आश्रय ग्रहण किया और उसी की सहायता से ओसियाँ नगरी को बसाया। तभी से सम्भव है ओसवाल जाति की उत्पत्ति हुई हो।

उपरोक्त तीनों मतों का विस्तृत विवेचन अब हम नीचे करते हैं —

जैनाचार्य्यों के मत से ओसवालों की उत्पत्ति

विक्रम सवत १३९३ का लिखा हुआ एक हस्तलिखित उपकेशगच्छ चरित्र नामक ग्रन्थ मिलता है। उसमे तथा और भी जैन ग्रथो मे ओसवाल जाति और ओसियाँ नगरी की उत्पत्ति के विषय मे जो कथा लिखी हुई है वह इस प्रकार है —

ओसिया नगरी की स्थापना

वि० स० से करीब चार सौ वर्ष पूर्व भीनमाल नगरी में भीमसेन नामक राजा राज्य करता था, जिसके दो पुत्र * थे। जिनके नाम क्रमश श्रीपुञ्ज और उपलदेव था। एक समय युवराज श्रीपुञ्ज और ऊपलदेव के बीच में किसी कारण वश कुछ कहा सुनी हो गई जिस पर श्रीपुज ने ताना मारते हुए कहा कि इस प्रकार के हुकम तो वही चला सकता है जो अपनी भुजाओं के बल से राज्य की स्थापना करे। यह ताना उपलदेव को सहन न हुआ और वह उसी समय नवीन राज्य-स्थापन की प्रतिज्ञा करके अपने मंत्री उहड और उधरग को साथ ले वहाँ से चल पडा। उसने ढेलीपुरी (दिल्ली) के राजा साधु की आज्ञा लेकर मडोवर के पास उपकेशपुर या ओसिया पट्टण नामक नगर बसा कर वहीं अपना राज्य-स्थापित किया उस समय ओसियाँ नगरी का क्षेत्रफल का बहुत लम्बा चौडा था। ऐसा कहते है कि वर्तमान ओसियाँ नगरी से १२ मील पर जो तिवरी गाँव है वह पहले ओसियाँ का तेलीवाडा था तथा जो इस समय खेतार नामक ग्राम है वह पहले यहा का क्षत्रीपुरा था। इसी प्रकार और मुहल्लों के निशानात भी पाये जाते हैं।

ओसवाल जाति की स्थापना

राजा उपलदेव वाममार्गी था और उसकी खास कुलदेवी चामुँडा माता थी। इसी समय में जैनाचार्यों में भगवान पार्श्वनाथ के ७ वें पाटधर आचार्य्य रत्नप्रभसूरिजी अपने उपदेशों के द्वारा जैनधर्म का प्रचार करते हुए आवू पहाड से होते हुए उपकेशपट्टण में पधारे और पास ही लूणाद्री नामक छोटी सी पहाडी पर एक २ मास के उपवास की तपश्चर्या कर ध्यानावस्थित हो गये। इस समय पाँच सौ मुनियों का सघ उनके साथ था। कई दिन होने पर भी जब उन मुनियों के लिये शुद्ध भिक्षा की व्यवस्था उस नगरी

---

* इस विषय में दो मत और पाये जाते हैं पहला यह कि पट्टावली न० ३ में भीमसेन के एक पुत्र श्रीपुँज था जिसके सुरसुन्दर एव उपलदेव नामक दो पुत्र हुए। दूसरा यह कि भीमसेन के तीन पुत्र थे जिनके नाम क्रमश उपलदेव, आसपाल और आसल थे। जिनमें से उपलदेव ने ओसियाँ तथा आसल ने भिनमाल बसाया।

इसके पूर्व चामुडा माता के मन्दिर में आश्विन मास की नव रात्रि के अवसर पर भैंसों और बकरो का बलिदान हुआ करता था। आचार्य्यश्री ने उसको रोककर उसके स्थान पर लड्डू, चूरमा, लापसी, खाजा नारियल इत्यादि सुगधित पदार्थों से देवी की पूजा करने का आदेश किया। इससे चामुडा देवी बडी नाराज हुई और उसने आचार्य्यश्री की आँख में बडी तकलीफ पैदा कर दी। आचार्य्यश्री ने बड़ी शाति से इस तकलीफ को सहन किया। चामुडा ने जब आचार्य्यश्री को विचलित होते न देखा तब वह बड़ी लज्जित हुई और आचार्य्यश्री से क्षमा माँग कर सम्यक्त को ग्रहण किया उसी समय से उसने प्रतिज्ञा की कि आज से माँस और मदिरा तो क्या लालरग का फूल भी मुझपर नहीं चढ़ेगा तथा मेरे भक्त जो ओसियाँ मे स्वयंभू महावीर की पूजा करते रहेंगे उनके दु ख सकट को मै दूर करूँगी। तभी से चामुडा देवी का नाम सचिया देवी पड गया और आज भी यह मंदिर सचिया माता के मंदिर के नाम से मशहूर हे। जहाँ पर अभी भी बहुत से ओसवालों के बालकों का मुण्डन सस्कार होता है।

ऐसा कहा जाता है कि उसी समय उहड मत्री ने महावीर प्रभु का मदिर तैयार करवाया और उसकी मूर्ति स्वय चामुडा देवी ने बालूरेत और गाय के दूध मे तैयार की जिसकी प्रतिष्ठा स्वय रत्नप्रभ सूरि ने मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी गुरुवार को अपने हाथों से की। ऐसा कहा जाता है कि ठीक इसी समय कोरटपुर नामक स्थान मे भी वहाँ के श्रावको ने श्री वीरप्रभु के मन्दिर की स्थापना की जिसकी प्रतिष्ठा का मुहूर्त भी ठीक वही था जोकि उपकेश पट्टण के मंदिर की प्रतिष्ठा का था। दोनों स्थानो पर अपनी विद्या के प्रभाव से आचार्य्य श्री ने स्वय उपस्थित होकर प्रतिष्ठा करवाई। इसके लिए उपकेश चरित्र मे निम्न लिखित श्लोक लिखा है।

सप्तत्य (७०) वत्सराणा चरम जिनपतेर्मुक्तजातस्य वर्षे।
पचम्या शुक्लपक्षे सुरगुरु दिवसे ब्रह्मण सन्मुहूर्ते॥
रत्नाचार्ये सकलगुणयुक्ते, सर्व सघानुज्ञाते।
श्रीमद्वीरस्य बिम्बे भवशत मथने निर्मितेय प्रतिष्ठा॥ १॥

× × × ×

उपकेशे च कोरंटे, तुल्य श्री वीर बिम्बयो।
प्रतिष्ठा निर्मिता शक्त्या, श्री रत्नप्रभसूरिभि॥ १॥

ऊपर हमने ओसवाल जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे जैनाचार्य्यों तथा जैनग्रन्थों का जो मत है उसका विस्तृत रूप से उल्लेख कर दिया है। इस उल्लेख के अन्तर्गत हम समझते है कि बहुत सी बातें

में न हो सकी तब सब लोगों ने आचार्य्य श्री से प्रार्थना की कि "भगवान् यहाँ पर साधुओं के लिये पवित्र भिक्षा * की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है ऐसी स्थिति में मुनियों का इस स्थान पर निर्वाह होना कठिन है। यह सुनकर आचार्य्य श्री ने कहा "यदि ऐसा है तो यहाँ से विहारकर देना चाहिये।' यह देखकर वहाँ की अधिष्टायिका चामुँडादेवी ने प्रगट होकर कहा कि महात्मन्, इस प्रकार से आपका यहाँ से चला जाना अच्छा न होगा, यदि आप यहाँ पर अपना चातुर्मास करेंगे तो संघ और शासन का बड़ा लाभ होगा। इस पर आचार्य्य ने मुनियों के संघ को कहा कि जो साधु विकट तपस्या करने वाले हों वे यहाँ रह जायँ शेष सब यहाँ से विहार कर जायें। इस पर से ४६५ मुनितो आचार्य्य की आज्ञा से विहार कर गये। शेष ३५ मुनि तथा आचार्य्य चार २ मास की विकट तपस्या स्वीकार कर समाधि में लीन हो गये। इसी बीच देवयोग से एक दिन राजा के जामात्र त्रिलोकसिंह † को रात्रि मे सोते समय भयंकर सर्प ने डस लिया ‡। इस समाचार से सारे शहर में हाहाकार मच गया। बहुत से मंत्र, तंत्र शास्त्री इलाज करने के लिए आये मगर कुछ परिणाम न हुआ। अंत में जब उसे स्मशान यात्रा के लिए ले जाने लगे तब किसीने इन आचार्य्य श्री का इलाज करवाने की भी सलाह दी। जब राजकुमार की रथी आचार्य्य श्री के स्थान पर लाई गई तो आचार्य श्री के शिष्य वीर धवल ने गुरू महाराज के चरणों का प्रक्षालन कर राजकुमार पर छिड़क दिया। ऐसा करते ही वह जीवित हो उठा। इससे सब लोग बड़े प्रसन्न हुए और राजा ने आचार्य्य श्री से प्रसन्न होकर अनेकों थाल बहुमूल्य जवाहरातों के भर कर आचार्य्य श्री के चरणों में रख दिये। इस पर आचार्य्यश्री ने कहा कि राजन् हम त्यागियों को इस द्रव्य और वैभव से कोई प्रयोजन नहीं है। हमारी इच्छा तो यह है कि आप लोग मिथ्यात्व को छोड़कर परम पवित्र जैनधर्म को श्रद्धा सहित स्वीकार करे, जिससे आपका कल्याण हो। इस पर सब लोगों ने प्रसन्न होकर आचार्य्य श्री का उपदेश श्रवण किया और श्रावक के बारह व्रतों को श्रवण कर जैनधर्म को ग्रहण किया ×। तभी से ओसियाँ नगरी के नाम से इन लोगों की गणना ओसवाल वंश में की गई।

* कुछ लोगों का मत है कि उस समय आचार्य्य रत्नप्रभसूरि के साथ केवल एक ही शिष्य था और उसे भी जब भिक्षा न मिलने लगी तब उसने जंगल से लकड़ी काट कर लाना और पेट भरना शुरू किया।

† कुछ ग्रंथों में राजा के जामात्र के स्थान पर राजा के पुत्र का उल्लेख है।

‡ कुछ स्थानों पर ऐसा उल्लेख है कि आचार्य्य रत्न प्रभ सूरि ने देवी के कहने से रुई की पूणी का सर्प बना कर भरी सभा में राजा के पुत्र को काटने के लिए भेजा था।

× ऐसी भी किम्वदन्ती है कि उस समय उस नगरी में जितनी जातियाँ थीं। याने ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र सबने मिलकर जैनधर्म स्वीकार किया। इन्हीं की वजह से जैनधर्म में कई ऐसे भी गोत्र पाये जाते हैं जो उन जातियों के नाम के सूचक हैं।

में न हो सकी तब सब लोगों ने आचार्य्य श्री से प्रार्थना की कि "भगवान् यहाँ पर साधुओं के लिये पवित्र भिक्षा * की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है ऐसी स्थिति में मुनियों का इस स्थान पर निर्वाह होना कठिन है। यह सुनकर आचार्य्य श्री ने कहा "यदि ऐसा है तो यहाँ से बिहारकर देना चाहिये।" यह देखकर वहाँ की अधिष्टायिका चामुँडादेवी ने प्रगट होकर कहा कि महात्मन्, इस प्रकार से आपका यहाँ से चला जाना अच्छा न होगा, यदि आप यहाँ पर अपना चातुर्मास करेंगे तो संघ और शासन का बड़ा लाभ होगा। इस पर आचार्य्य ने मुनियों के सघ को कहा कि जो साधु विकट तपस्या करने वाले हों वे यहाँ रह जायँ शेष सब यहाँ से बिहार कर जायें। इस पर से ४६५ मुनितो आचार्य्य की आज्ञा से बिहार कर गये। शेष ३५ मुनि तथा आचार्य्य चार २ मास की विकट तपस्या स्वीकार कर समाधि में लीन हो गये। इसी बीच दैवयोग से एक दिन राजा के जामात्र त्रिलोकसिंह † को रात्रि में सोते समय भयंकर सर्प ने डस लिया ‡। इस समाचार से सारे शहर में हाहाकार मच गया। बहुत से मंत्र, तंत्र शास्त्री इलाज करने के लिए आये मगर कुछ परिणाम न हुआ। अंत में जब उसे स्मशान यात्रा के लिए ले जाने लगे तब किसीने इन आचार्य्य श्री का इलाज करवाने की भी सलाह दी। जब राजकुमार की रथी आचार्य्य श्री के स्थान पर लाई गई तो आचार्य श्री के शिष्य वीर धवल ने गुरू महाराज के चरणों का प्रक्षालन कर राजकुमार पर छिड़क दिया। ऐसा करते ही वह जीवित हो उठा। इससे सब लोग बड़े प्रसन्न हुए और राजा ने आचार्य्य श्री से प्रसन्न होकर अनेकों थाल बहुमूल्य जवाहरातों के भर कर आचार्य्य श्री के चरणों में रख दिये। इस पर आचार्य्यश्री ने कहा कि राजन् हम त्यागियों को इस द्रव्य और वैभव से कोई प्रयोजन नहीं है। हमारी इच्छा तो यह है कि आप लोग मिथ्यात्व को छोडकर परम पवित्र जैनधर्म को श्रद्धा सहित स्वीकार करे, जिससे आपका कल्याण हो। इस पर सब लोगों ने प्रसन्न होकर आचार्य्य श्री का उपदेश श्रवण किया और श्रावक के बारह व्रतों को श्रवण कर जैनधर्म को ग्रहण किया ×। तभी से ओसियाँ नगरी के नाम से इन लोगों की गणना ओसवाल वंश में की गई।

---

* कुछ लोगों का मत है कि उस समय आचार्य्य रत्नप्रभसूरि के साथ केवल एक ही शिष्य था और उसे भी जब भिक्षा न मिलने लगी तब उसने जगल से लकड़ी काट कर लाना और पेट भरना शुरू किया।

† कुछ ग्रंथों में राजा के जामात्र के स्थान पर राजा के पुत्र का उल्लेख है।

‡ कुछ स्थानों पर ऐसा उल्लेख है कि आचार्य्य रत्न प्रभ सूरि ने देवी के कहने से रुई की पूणी का सर्प बना कर भरी सभा में राजा के पुत्र को काटने के लिए भेजा था।

× ऐसी भी किम्वदन्ती है कि उस समय उस नगरी में जितनी जातियाँ थीं। याने ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र सबने मिलकर जैनधर्म स्वीकार किया। इन्हीं की वजह से जैनधर्म में कई ऐसे भी गोत्र पाये जाते हैं जो उन जातियों के नाम के सूचक हैं।

इसके पूर्व चामुडा माता के मन्दिर में आश्विन मास की नव रात्रि के अवसर पर भैंसों और बकरों का बलिदान हुआ करता था। आचार्य्यश्री ने उसको रोककर उसके स्थान पर लड्डू, चूरमा, लापसी, खाजा नारियल इत्यादि सुगंधित पदार्थों से देवी की पूजा करने का आदेश किया! इससे चामुडा देवी बड़ी नाराज हुई और उसने आचार्य्यश्री की आँख मे बड़ी तकलीफ पैदा कर दी। आचार्य्यश्री ने बड़ी शांति से इस तकलीफ को सहन किया। चामुडा ने जब आचार्य्यश्री को विचलित होते न देखा तब वह बड़ी लज्जित हुई और आचार्य्यश्री से क्षमा माँग कर सम्यक्त को ग्रहण किया उसी समय से उसने प्रतिज्ञा की कि आज से माँस और मदिरा तो क्या लालरंग का फूल भी मुझपर नहीं चढ़ेगा तथा मेरे भक्त जो ओसियाँ में स्वयंभू महावीर की पूजा करते रहेंगे उनके दुःख संकट को मैं दूर करूँगी। तभी से चामुडा देवी का नाम सच्चिया देवी पड गया और आज भी यह मंदिर सच्चिया माता के मंदिर के नाम से मशहूर है। जहाँ पर अभी भी बहुत से ओसवालों के बालकों का मुण्डन संस्कार होता है।

ऐसा कहा जाता है कि उसी समय उहड़ मंत्री ने महावीर प्रभु का मंदिर तैयार करवाया और उसकी मूर्ति स्वयं चामुडा देवी ने बालरेत और गाय के दूध में तैयार की जिसकी प्रतिष्ठा स्वयं रत्नप्रभ सूरि ने मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी गुरुवार को अपने हाथों से की। ऐसा कहा जाता है कि ठीक इसी समय कोरटपुर नामक स्थान मे भी वहाँ के श्रावको ने श्री वीरप्रभु के मन्दिर की स्थापना की जिसकी प्रतिष्ठा का मुहूर्त भी ठीक वही था जोकि उपकेश पट्टण के मंदिर की प्रतिष्ठा का था। दोनों स्थानों पर अपनी विद्या के प्रभाव से आचर्य्य श्री ने स्वयं उपस्थित होकर प्रतिष्ठा करवाई। इसके लिए उपकेश चरित्र मे निम्न लिखित श्लोक लिखा है।

सप्तत्य (७०) वत्सराणा चरम जिनपतेर्मुक्तजातस्य वर्षे।
पचम्या शुक्लपक्षे सुरगुरु दिवसे ब्रह्मण सन्मुहूर्ते॥
रत्नाचार्ये सकलगुणयुक्ते, सव सघानुज्ञात।
श्रीमद्वीरस्य विम्बे भवशत मथने निर्मितेय प्रतिष्ठा॥ ॥

× × × ×

उपकेशे च कोरंटे, तुल्य श्री वीर विम्बयो।
प्रतिष्ठा निर्मिता शक्त्या, श्री रत्नप्रभसूरिभि॥ १॥

ऊपर हमने ओसवाल जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जैनाचार्य्यों तथा जैनग्रन्थों का जो मत है उसका विस्तृत रूप से उल्लेख कर दिया है। इस उल्लेख के अंतर्गत हम समझते है कि बहुत सी बातें

ऐसी हैं जो अत्यन्त अतिशयोक्ति और काव्यमय है और विचार स्वातन्त्र्य के इस युग में बुद्धिमान लोगों के मस्तिष्क पर अनुकूल प्रभाव नहीं डाल सकती। फिर भी इसके अंदर जो मूल तत्व है उनपर विचार करना प्रत्येक बुद्धिमान और शोध करने वाले व्यक्ति का कर्तव्य हो जाता है। इसमें से नीचे लिखे हुए खास तत्व निकाले जा सकते है।

(१) ऊपलदेव के द्वारा ओसिया नगरी का वसाया जाना।

(२) रत्नप्रभसूरि के द्वारा ऊपलदेव का मय नगर के सारे क्षत्रियों के जैन-धर्म ग्रहण करना और ओसवाल जाति की स्थापना होना।

(३) मंत्री उहड के द्वारा महावीर मन्दिर का निर्माण किया जाना और स्वय चामुडा देवी के द्वारा वालू एवम् दूध से उस प्रतिमा का बनाया जाना।

(४) इन सब घटनाओं का विक्रम के चार सौ वर्प पूर्व का होना।

उपरोक्त मत का समर्थन जैनमुनि ज्ञानसुन्दरजी ने कई दलीलों और प्रमाणों के साथ किया है। आपने जैन जातियों के इतिहास के सम्बन्ध मे वहुत गहरा परिश्रम और खोज करके "जैन जाति महोदय" नामक एक ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ में आपने जहाँ पौराणिक चमत्कारपूर्ण दन्त कथाओं और किम्वदन्तियों को आश्रय दिया है वहाँ ऐतिहासिक खोज, अन्वेपण और तर्क वितर्क के सम्वन्ध में वहुत मेहनत के साथ वहुत सी ऐतिहासिक सामग्री भी सग्रहित की है आपका यह दृढ़ मत है कि ओसवाल जाति की उत्पत्ति वि० सं० से चार सौ वर्प पूर्व हुई है। आपकी दी हुई दलीलों पर हम आगे चलकर विचार करेगे।

भाटों, भोजकों और सेवकों का मत

दूसरा मत इस जाति के सम्वन्ध में भाटों, भोजकों और सेवकों की वंशावलियों मे पाया जाता है। इन वशावलियों में ओसवालों की उत्पत्ति सवत् २२२ (वीये बाईसा) में वतलाई गई है। समय के भेद के अलावा कथानक और किम्व दतियाँ इनकी और जैन ग्रन्थों की प्राय एक समान ही है। ये लोग भी राजा ऊपलदेव को ओसियों नगरी का वसाने वाला मानते है और रत्न प्रभ सूरि के द्वारा उसका जैन धर्म में दीक्षित होना तथा ओसवाल जाति की स्थापना उसी प्रकार मानते है। इसी दलील की पुष्टि में हम को कई ओसवाल खानदानों के पास ऐसे वश वृक्ष मिले जिनका सम्बन्ध सवत २२२ वि० से मिलाया हुआ था। मगर जब घटनाएं सब एक समान है और आचार्य तथा राजा और स्थान का नाम भी

एक ही समान मिलता है तब उत्पत्ति के सम्बन्ध मे ६२२ वर्ष का अतर किस प्रकार पड गया, यह समझ मे नहीं आता ।

आधुनिक इतिहास कारो का मत

ऊपर हम ओसवाल जाति के सम्बन्ध में जैन ग्रन्थों और भाटों की वंशावलियों के मत दे चुके हैं। अब नवीन इतिहास के प्रकाश में हम यह देखना चाहते है कि ओसवाल जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में उपरोक्त मतों का वैज्ञानिक और तार्किक आधार कितना मजवूत है और सत्य और वास्तविकता की कसौटी पर ये विचार पद्धतिया कहा तक खरी उतरती हैं। यह बात तो प्राय निर्विवाद सिद्ध है कि ओसियां नगरी की स्थापना उपलदेव परमार ने की जो कि किसी कारण वश अपना देश छोड कर मंडोवर के पडिहार राजा की शरण में आया था। यह उपलदेव कहा से आया था इसके विपय मे कई मत हैं। ऊपर हमने जिन मतों का उल्लेख किया है उनमें इसका आना भीनमाल से सिद्ध होता है और कुछ लोगो के मत से इसका आना किराड़ नामक स्थान से पाया जाता है। मगर ये दोनों ही बातें गलत मालूम होती हैं। क्योंकि भीनमाल के पुराने मन्दिरों मे जो संस्कृत लेख पत्थरों पर खुदे हुए मिले है, उनमे से दो लेख कृष्णराज परमार के हैं। एक सवत् ११११ का और दूसरा सवत ११२३ का है। पिछले लेख में कृष्णराज के वाप का नाम धधुक लिखा है। यह धंधुक आबू का राजा था। इसके दो पुत्र थे। एक पूर्णपाल और दूसरा कृष्णराज। पूर्णपाल के समय का एक लेख* सवत १०९८ का सिरोही जिले के एक वीरान गाँव वसन्तगढ से मिला है और दूसरा संवत ११०२ का लिखा हुआ मारवाड के भद्द नामक एक गाँव में मिला है। इन दोनों लेखों से यह बात पायी जाती है कि धधुक का वडा पुत्र पूर्णपाल अपने पिता की गद्दी पर बैठा और कृष्णराज को भीनमाल का राज मिला।

कृष्णराज के पीछे भीनमाल का राज्य १५० वर्ष तक उसके वंश में रहा जिसका उल्लेख सवत् १२३९ के लेख में पाया जाता है जिसमें "महाराजपुत्र जैत्तसिंह" का नाम आया है। नाम के साथ यद्यपि जाति नहीं लिखी हुई है पर ऐसा सभव है कि यह भीनमाल का अतिम राजा या युवराज रहा होगा। क्योंकि इसके पीछे संवत १२६२ के लेख में चौहान राजा उदयसिंह का नाम आता है और उसके पश्चात सवत १२६२ तक के लेखों में चौहान राजाओं के ही नाम आते हैं जिनका कि मूल पुरुप नाडोल

---

* यह लेख अजमेर मे रा व प० गौरीशकर जी ओझा के पास है।

† रोहेड़ नामक स्थान मे रा व प० गौरीशकरजी को दानपत्र मिला है जिसमें उपल राज मे वशावली दी है और उक्त वशावली में धधुक के तीन पुत्र वतलाये हैं। ये तीनों ही अपने पिता के पीछे क्रमश राजा हुए।

के राजा अल्हण देव का पुत्र कीतू था और जिसने पवारों से जालोर लेकर अपना राज्य अलग जमाया था। इसका एक दानपत्र संवत १२१८ का लिखा हुआ इस समय नाडोल के महाजनों के पास है इस दानपत्र से पता चलता है कि उस समय यह अपने बड़े भाई कल्हणदेव के दिये हुए ग्राम 'नाडलाई' में रहता था। संवत १२१८ के पश्चात् इसने जालोर को विजय किया होगा और संभव है जिन पँवारों से यह किला लिया गया वे या तो राजा कृष्णराज के खानदान के होंगे या उसकी आबूवाली बड़ी शाखा के। राजा कीत के पश्चात् उसका लड़का उदयसिंह हुआ। इसीने सम्भव है, कृष्णराज के पोतों से संवत १२२० और संवत १२६२ के बीच किसी समय भीनमाल को फतह किया होगा।

उपरोक्त दलीलों से यह बात सहज ही मालम हो जाती है कि भीनमाल का पहला पँवार राजा कृष्णराज संवत् ११०० के पश्चात् हुआ। उससे पहले भीनमाल उसके पिता धुंधुक के खालसे में होगा। उपलदेव का इन लेखों में पता नहीं है।

दूसरा मत किराड़ू के सम्बन्ध में है। यहाँ पर भी एक लेख संवत् १२१८ का मिला है जो पँवारों से सम्बन्ध रखता है। इस लेख से पता चलता है कि मारवाड़ का पहला पँवार राजा सिंधुराज था। उसका राज्य पहाड़ों में था। उसके वंश में क्रमश सूरजराज, देवराज, सोमराज और उदयराज हुए। उदयराज संवत १२१८ में मौजूद था। यहाँ भी उपलदेव का कुछ पता नहीं लगता।

जैन इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान् बाबू पूरनचन्दजी नाहर एम० ए० कलकत्ता निवासी से जब हमने इस विषय में पूछा तो उन्होंने आबू के लेखों की की हुई खोज को हमें बतलाया। उन्होंने कहा कि पँवारों का जन्म स्थान आबू है। वहाँ के एक लेख में धंधुक से पाँच पुश्त ऊपर उत्पलराज का नाम मिलता है। इन लेखों * में यद्यपि पवारों का मूल पुरुष धूमराज को माना है मगर वंश वृक्ष उत्पल राज से ही शुरू किया गया है। इससे पता चलता है कि सभव है धूमराज के पीछे और उत्पलराज के पहले बीच के समय में कुछ राजनैतिक गड़बड़ हुई हो और उत्पलराज से फिर राज्य कायम हुआ हो। क्या आश्चर्य है इसी कारण उत्पलराज को मंडोवर के पडिहार राजा की शरण में आना पड़ा हो। इससे जहाँतक हमारी समझ है ओसियाँ का बसाने वाला उपलदेव ही आबू का उत्पलराज हो। जैन प्रश्नोत्तर ग्रंथ में भी उपलदेव को उत्पल पवार लिखा है। ज्यादा खोज करने पर यह भी पता चलता है कि विपत्ति के टल जाने पर उत्पलराज वापस आबू को लौट गया और वहाँ का राजा हुआ।

स्थान ही की तरह उत्पलराज के समय या जमाने में भी वही गड़बड़ है। जैन ग्रन्थ में

* ये लेख आबू पर वस्तपाल और अचलेश्वरजी के मन्दिर में खुदे हुए हैं।

वि. स से ४०० वर्ष पहले वीर निर्वाण सवत ७० मे उसका उपकेश नगरी बसाना लिखा है और दूसरी ख्यातों में इस समय से ६०० वर्ष पश्चात् याने सवत २२२ मे ऊपलदेव के सम्मुख ही ओसिया के लोगों का जैनी होना वर्णन किया है। एक ख्यात मे ऊपलदेव का होना सवत १०३५ के पीछे लिखा है जब कि पंवार राठोड़ो से आबू ले चुके थे। मुहता नेणसी ने अपनी ख्यात मे उपलदेव का कोई साल संवत् तो नहीं बतलाया मगर उपलदेव को धारा नगरी के राजा भोज की ७ वीं पुश्त मे माना है *। कहना न होगा कि राजा भोज सिधुराज का बेटा और वाक्पति मुजराज का भतीजा था। मगर यह दलील गलत मालूम होती है। और धूमरिख (धूमराज) के सिवाय सब नाम भी गलत हैं। क्योंकि राजा भोज के तथा उसके वशजों के दानपत्रो में न तो ये पिढ़िया है और न उपलदेव का उनसे कोई सम्बन्ध ही। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक खोजों से भी मारवाड मे राजा भोज की सतानो का राज करना साबित नहीं होता।

हां, इतना अवश्य है कि मारवाड के पवार राजा कृष्णराज तथा सिधुराज मालवे के राजाभोज और उसके पुत्र उदयादित्य के समकालीन थे। पाठकों की जानकारी के लिये हम मालवा और आबू के पंवार राजाओं की वशावली नीचे देते हैं।

मालवा	आबू
उपेन्द्र	उत्पलराज
वैरिसिंह	अरण्यराज
सीयक	कृष्णराज
वाक्पतिराज	अरण्यराज
वैरिसिंह	महीपाल
सीयक हर्ष	धन्धुक
वाक्पति मुंजराज सं १०३१	पूर्णपाल सं० १०९९–११०२
सिन्धुराज (नं० ६ का भाई) ३६--५०	ध्रुवभट्ट
भोजराज (राजा भोज)† १०७८	रामदेव

* राजा भोज (१), राजा विद (२), राजा उदयचद (३), राजा जगदेव (४), राजा हावरिख (५), राजा धूमरिख (६), राजा उपलदेव (७)

† राज मृगांक मे राजा भोज का राज स० १०६६ में भी मालूम होता है।

उदयादित्य स० ११११६	यशोधवल
नरवर्मा स० ११६१	धारावर्ष १२३६–१२५६
यशोवर्मा सं० ११९२–९३	सोमसिंह १२८७
अजयवर्मा	कृष्णराज
विंध्यवर्मा स० १२००	प्रतापसिंह
सुभटवर्मा स० १२३५	जैतकरण स० १३४५
अर्जुनवर्मा सं० १२५६	

उपरोक्त वंशावलियों और उनके संवतों पर विचार करने से यह भी अनुमान किया जा सकता है कि उपेन्द्र और उत्पल दोनो नाम शायद एक ही राजा के हो और अरण्यराज और वैरिसिंह भाई २ हों। जिनमें पहले से आबू एवम दूसरे से मालवे की शाखा निकली हो। ऊपर लिखी हुई दोनों वंशावलियों मे पूर्णपाल का समय करीब संवत् ११०० के निश्चित होता है और उत्पलराज इसके ७ पुश्त पूर्व हुआ है। हर पुश्त का समय यदि २५ वर्ष मान लिया जाय तो इस हिसाब से यह समय याने उत्पलराज का समय करीब वि० सं० ९५० वर्ष का ठहरता है। यही समय वाक्पतिराज और महाराज भोज के शिला लेखों से उपेन्द्र का आता है। यह वह समय है जब कि मंडोवर में पडिहार राजा बाहुक राज्य करता था। इस समय का एक शिलालेख संवत् ९४० का जोधपुर के कोट में मिला है। यही समय ओसियों के बसने का मालूम होता है। इस कल्पना की पुष्टि ओसियाँ के जैन मन्दिर की प्रशस्ति की लिपि से भी होती है। जो संवत १०१३ की खुदी हुई है। पडिहार राजा बाहुक और उसके भाई कक्कुक के शिलालेखों * (संवत ९१८ और संवत् ९४०) की लिपि से भी उक्त प्रशस्ति की लिपि मिलती हुई है। इससे पुरानी लिपि ओसियां में किसी और पुराने लेख की नहीं है। वहाँ एक भी लेख अभी तक ऐसा नहीं मिला है जिसकी लिपि संवत २०० और ३०० के बीच की लिपि से मिलती हो और जिससे यह बात मानी जा सके कि ओसियाँ नगरी संवत २२२ में या इसके पूर्व बसी थी।

एक और विचारणीय बात यह है कि ऊपलदेव ने मंडोवर के जिस राजा के यहाँ आश्रय लिया था उसको सब लोगों ने पडिहार लिखा है लेकिन पडिहारों की जाति विक्रम की सातवी सदी में पैदा हुई ऐसा पाया जाता है। इसका प्रमाण बाहुक राजा के उस शिलालेख में मिलता है जिसमें लिखा है कि ब्राह्मण हरिश्चन्द्र की राजपूत पत्नी,से पडिहार उत्पन्न हुए। हरिश्चन्द्र के चार पुत्र रजिल वगैरह थे जिन्होंने अपने बाहु बल से मंडोवर का राज लिया। मालूम होता है कि यह हरिश्चन्द्र मंडोवर के पूर्ववर्ती राजा का ड्योढीदार

* यह शिलालेख जोधपुर परगने के घटियाले गाँव में है।

रहा होगा। इसी प्रकार उसकी राजपूतनी स्त्री के पुत्र भी प्रतिहार या पडिहार कहलाये। इस लेख से निम्नलिखित दो बातों का और भी पता लगता है।

पहला तो यह कि पवारों ही की तरह पडिहारों की उत्पत्ति भी आबू के अग्निकुंड से मानी जाती है लेकिन वह गलत है। अगर ऐसा होता तो राजा बाहुक अपने आपको हरिश्चन्द्र ब्राह्मण की सतानों मे क्यों लिखता और अपने पुश्तैनी पेशे ड्योढीदारी की महिमा सिद्ध करने के लिये लेख के आरभ मे श्री रामचन्द्रजी के भाई लक्ष्मणजी के प्रतिहार पने की नजीर क्यों लाता।

दूसरा यह कि पडिहारों की उत्पत्ति का समय जो अब से हजारो वर्ष पहले माना जाता है। वह भी इस लेख मे गलत साबित होता है। क्योंकि पडिहार जाति की उत्पत्ति ही राजा बाहुक से १२ पुश्त पहले याने हरिश्चन्द्र ब्राह्मण से हुई है और बारह पुश्तों के लिये ज्यादा से ज्यादा- समय ३०० वर्ष पूर्व का निश्चित किया जा सकता है। राजा बाहुक का समय सवत ८९४ का था। इस हिसाब से हरिश्चद्र का पुत्र रजिल जो मडोवर के पडिहार राजाओं का मूल पुरुष था वह संवत ६०० के करीब हुआ होगा। फिर सवत २२२ में पडिहारों का मंडोर मे होना कैसे संभव हो सकता है। इस दलील से भी ओसिया नगरी की स्थापना संवत ६१० के पीछे राजा बाहुक या उसके भाई कक्कुक के समय मे याने सवत ८०० या ८५० के करीब हुई होगी। इन सब दलीलों से अधिक मजबूत दलील यह है कि आचार्य्य रत्नप्रभ सूरि के उपदेश से जो अठारह राजपूत कौमे एक दिन में सम्यक्त्व ग्रहण करके ओसवाल जाति मे प्रविष्ट हुई थीं उन सबके नाम करीव २ ऐसे हैं जो सवत २२२ मे दुनिया के परदे पर ही मौजूद नहीं थी। उन अठारह जातियों के नाम और उनकी उत्पत्ति का समय नीचे देने की कोशिश करते है।

१	परमार	७	पडिहार	१३	मकवाणा
२	सिसोदिया	८	बोडा	१४	कछवाहा
३	राठोड़	९	दहिया	१५	गौड
४	सोलंकी	१०	भाटी	१६	खरवड़
५	चौहान	११	मोयल	१७	बेरड़
६	सांखला	१२	गोयल	१८	सौंख

परमार—यह जाति ऐतिहासिक दुनिया मे वि० स० ९०० के पश्चात् दृष्टिगोचर होती है। महाराज विक्रमादित्य को कई लोग पवार मानते हैं मगर इसकी ऐतिहासिक तसदीक अभी तक नहीं हो पाई है। इस समय जो सवत विक्रम-सवत के नाम से प्रचलित है उसके पीछे विक्रम का नामाकित करना ही सवत्

एक हजार के करीब से अनुमान किया जाता है। क्योंकि इस सवत के साथ पहले विक्रम का नाम नहीं लगाया जाता था, जैसा कि पढिहारों के दोनों लेखों मे नही है। आबू पर्वत पर जो लेख वस्तुपाल और अचलेश्वरजी के मन्दिरों में है उनमे धूमराज को पंवारों का मूल पुरुष लिखा है और उसकी उत्पत्ति वशिष्ठजी के अग्निकुंड से बतलाई है। यह धूमराज उत्पलराज से पहले था। क्योंकि उत्पलराज को उसके खानदान में लिखा है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि सवत २२२ मे पवारों का अस्तित्व न था।

सिसोदिया—यह गहलोतों की एक शाखा है जो रावल समरसिंहजी के पौत्र राणा राहप के गाँव सिसोद से मशहूर हुई है। रावल समरसिंहजी के समय का एक शिलालेख सवत १३४२ का खुदा हुआ आबू पहाड़ पर है। इससे पता चलता है कि सिसोदिया जाति की उत्पत्ति भी संवत १३४२ के पीछे हुई। सवत २२२ में यह लोग भी नहीं थे।

राठौड़ – राठौड़ों के विषय में यह लिखा जा सकता है कि सवत १००० के करीब मारवाड़ के हथुण्डिया नामक ग्राम में ये लोग बसते थे उनको बीजापुर के सवत ९९६ और सवत ११५३ के लेख मे राष्ट्रकूट और हस्तिकुंडी नगरी का मालिक लिखा है। ये राष्ट्रकूट शायद दक्षिण से आये थे। क्योंकि वहा इनके बहुत से लेख मिले हैं। मगर उनमें कोई भी लेख सवत् ९०० के पूर्व का नहीं है। इनके इधर आने का समय सवत् ७०० के पीछे मालूम होता है। यहाँ आकर पहले ये हथुंडी नामक नगरी में, जो कि इस समय अरवली पर्वत के नीचे वीरान पडी है, बसे थे।

सोलंकी – राष्ट्रकूटों के पश्चात् सोलंकियों का नम्बर आता है। ये लोग पहले दक्षिण मे रहते थे और चालुक्यवंश के नाम से प्रसिद्ध थे। दक्षिण में इनके कई शिलालेख मिलते हैं, मगर उनमें से कोई भी शिलालेख संवत् ६८१ के पूर्व का नहीं है। इनकी विशेष प्रसिद्धि संवत् १००० के पश्चात्, जब कि मूलराज सोलंकी गुजरात में राज्य करने लगा, हुई। इससे पता चलता है कि ये लोग भी राष्ट्रकूटों के ही समकालीन थे। अतएव संवत् २२२ में इनके अस्तित्व का होना भी निराधार है।

चौहान—सोलंकियों ही की तरह चौहानों के लेख भी संवत् १००० के पूर्व के नहीं मिले हैं, अतएव उस समय चौहानों का होना भी विश्वसनीय नहीं माना जा सकता।

साखला – यह परमारों की एक पिछली शाखा है। मुहता नेणसी ने धरणीवराह के पुत्र वाघ की औलाद से इस शाखा की उत्पत्ति लिखी है। अगर यह धरणीवराह वही है जिसका कि नाम बीजापुर के लेख में पाया जाता है तो उसका समय सवत् १०५० के करीब और उसके पौत्र का सवत् ११०० के करीब होना चाहिये। साखलों का राज्य सवत १२०० के करीब किराडू में होना पाया जाता है। अत सवत् २२२ मे इस जाति का अस्तित्व भी सिद्ध नहीं होता।

पड़िहार—पड़िहारों के विषय में हम ऊपर काफी प्रकाश डाल चुके हैं। उस समय मे याने सवत २२२ मे यह जाति भी प्रकट नहीं हुई थी।

भाटी—इस जाति का प्रमाणिक इतिहास सवत १२०० के करीब से प्रकाश मे आता है। इसके पूर्व इसका अस्तित्व नहीं था हा, इतना अवश्य है कि जैसलमेर के दीवान मेहता अजितसिंहजी ने अपने भट्टीनामे मे इनकी उत्पत्ति का समय सवत ३३६ के पश्चात् लाहौर के राजा भट्टी की संतानों मे होना लिखा है। मगर यह वात उस समय तक सच नहीं मानी जा सकती जब तक कि उस समय का कोई शिलालेख प्राप्त न हो जाय। खैर इस सवत से भी भाटी जाति का उत्पन्न होना सवत २२२ के पश्चात ही सिद्ध होता है।

मोयल—मोयल जाति कोई स्वतन्त्र जाति नहीं है यह चौहानों की एक शाखा है। इसका सवत १५०० तक लाडनू नामक स्थान पर राज्य करना पाया जाता है।

गोयल— गोयल जाति भी स्वतत्र जाति न हो कर गहलोतों की एक शाखा है। इसकी उत्पत्ति वाप्पा रावल से हुई है। यह इतिहास प्रसिद्ध वात है कि वाप्पा रावल ने संवत ७७१ के पश्चात् मानराज मोरी से चित्तौड का राज्य लिया था। इन गोयलों का राज्य मारवाड़ के इलाके में था, जिसे कन्नौज से आकर राठौड़ों ने छीन लिया।

दहिया—इस जाति का राज्य चौहानों से पूर्व सवत् १२०० के करीब जालोर में था। ये परमारों के नौकर या आश्रित थे।

मकवाना—यह शाखा परमारों की कही जाती है। ये लोग कभी इतने मशहूर नहीं हुए, जितनी कि इनके पूर्व होने वाली इनकी छोटी शाखा "झाला" के लोग रहे।

कछवाहा—इस जाति का सवत् ११०० के पश्चात ग्वालियर में राज करना पाया जाता है। इसका कारण यह है कि इनके समय का एक शिलालेख सवत ११५० का खुदा हुआ ग्वालियर के किले में मौजूद है। इसमें राजा महिपाल के पूर्व आठ पुश्तें लिखी हुई हैं। प्रत्येक पुश्त यदि २५ वर्ष की मानली जाय तो करीब २०० वर्ष पूर्व अर्थात सवत ८५० तक उनका वहाँ रहना सम्भव हो सकता है। इसके पूर्व का कोई शिला लेख नहीं मिलता। अतएव इस जाति के विषय मे भी मानना पड़ेगा कि यह भी सवत २२२ में ओसिया मे ओसवाल नहीं हुई।

गौड़—इस जाति का पता बगाल में लगता है और वहीं से इसका राजपूताने में आना दिल्लीपति महाराज पृथ्वीराज के समय मे माना जाता है। इसके पूर्व इस जाति के मारवाड़ मे होने का कोई सबूत नहीं मिलता। अतएव यह जाति भी सवत २२२ मे ओसवाल कैसे हुई, समझ मे नहीं आता।

ऊपर हमने ओसवाल जाति की उत्पत्ति के संबन्ध मे उन सब मतों का सक्षिप्त में विवेचन कर दिया है जो इस समय विशेष रूप से सब स्थानो पर प्रचलित है। मगर ये सभी मत अभी तक इतने संशयात्मक हैं कि बिना अनुमान की अटकल लगाये केवल तर्क या प्रमाण के सहारे इस जाति की उत्पत्ति के संबन्ध में किसी निश्चित मत पर पहुँचना कठिन है। प्राचीन जैनाचार्य्यो के मत की पुष्टि मे— जोकि ओसवाल जाति की उत्पत्ति को भगवान् महावीर से ७० वर्ष के पश्चात् से मानते हैं—अभी तक कोई ऐसा मजवृत और दृढ़ प्रमाण नहीं मिलता है जिसके बल पर निर्विवाद रूप मे इस मतकी सत्यता को स्वीकार की जा सके।

दूसरा मत जो संवत् २२२ का है, उसके विषय में कई विद्वानों ने कुछ प्रमाण एकत्रित किए हैं जो हम नीचे देते हैं —

(१) जैन साहित्य के अन्दर समराइच्च कथा नामक एक बहुत प्रसिद्ध और माननीय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की ऐतिहासिक महत्ता को जर्मनी के प्रसिद्ध जैन विद्वान् डा० हरमन जेकोबी ने इसके अनुवाद पर लिखी हुई अपनी भूमिका में मुक्त कंठ से स्वीकार की है। इस ग्रंथ के लेखक सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य्य श्री हरिभद्र सूरि ने सातवीं सदी में पोरवाल जाति का सगठन किया। इसी कथा के सार में एक श्लोक आया है जिसमें लिखा हुआ है कि उएस नगर के लोग ब्राह्मणों के कर से मुक्त है। उपकेश जाति के गुरू ब्राह्मण नहीं हैं। श्लोक इस प्रकार है —

तस्मात् उकेशज्ञाति नाम गुरवो ब्राह्मण नहीं।
उएस नगर सर्वं कर ऋण समृद्धि मत् ॥
सर्वथा सर्व निर्मुक्त मुएसा नगरं परम्।
तत्प्रभृति सजातिविति लोक प्रवीणम् ॥

यहाँ यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि समराइच्च कथा के लेखक आचार्य्य हरिभद्रसूरि का समय पहले संवत् ५३० से संवत् ५८५ के बीच तक माना जाता था, मगर अब जैन साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान जिनविजयजी ने कई प्रमाणों से इस समय को सवत् ७५७ से लेकर सवत् ८५७ के बीच माना है। यदि इस मत को स्वीकार कर लिया जाय तो सवत् ७५७ के समय में उएश जाति और उएश नगर बहुत समृद्धि पर थे, यह बात मालूम होती है और यह मानना भी अनुचित न होगा कि इस समृद्धि को प्राप्त करने में कम से कम २०० वर्षों का समय अवश्य लगा होगा। इस हिसाब से इस जाति के इतिहास की दौड़ विक्रम की पाँचवीं शताब्दी तक पहुँच जाती है।

(२) आचार्य्य बप्पभट्टसूरिजी जैन ससार में बहुत नामाङ्कित हुए हैं। आपने कन्नौज के राजा नागावलोक वा नागभ पढिहार (आम राजा) को प्रति बोध देकर जैनी बनाया था। उस राजा के एक रानी वणिकपुत्री भी थी। इससे होने वाली संतानों को इन आचार्य्य ने ओसवंश में मिला दिया। जिनका गौत्र राजकोष्टागर हुआ। इसी गोत्र में आगे चल कर विक्रम की सोलहवी सदी में सुप्रसिद्ध करमाशाह हुए जिन्होंने सिद्धाचल तीर्थ का अन्तिम जीर्णोद्धार करवाया। इसका शिलालेख संवत् १५८७ का खुदा हुआ शत्रुंजय तीर्थ पर आदिश्वरजी के मन्दिर में है। इस लेख में दो श्लोक निम्न लिखित है.—

इतश्च गोपाह्व गिरौ गरिष्ट श्रीवप्प भट्टी प्रतिबोधितश्च।
श्री आमराजो ऽजति तस्य पत्नि काचित्व भूव व्यवहारी पुत्री ॥
तत्कुक्षिजाता किल राजकोष्टा शाराह्व गौत्रे सुकृतैक पात्रे।
श्री ओस वस विशादे विशाले तस्यान्वयेऽभिपुरुषा. प्रसिद्धा. ॥

आचार्य्य बप्पभट्टसूरि का जन्म संवत् ८०० में हुआ। इस से पता चलता है कि उस समय ओसवाल जाति विशाल क्षेत्र में फैली हुई थी और इसका इतना प्रभाव था कि ,जिस को पैदा करने मे कई शताब्दियों की आवश्यकता होती है।

(३) ओसियों के मन्दिर के प्रशस्ति शिलालेख में भी उपकेशपुर के पढिहार राजाओं में वत्सराज की बहुत तारीफ लिखी है। इस वत्सराज का समय भी विक्रम की आठवीं सदी मे सिद्ध होता है।

(४) सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ स्व० मुशी देवीप्रसाद जी जोधपुर ने 'राजपूताने की शोध-खोज' नामक एक पुस्तक लिखी है। उसमें उन्होंने लिखा है कि कोटा राज्य के अटरू नामक ग्राम में जैन मन्दिर के एक खडहर में एक मूर्ति के नीचे वि० स० ५०८ का भैंसाशाह के नाम का एक शिलालेख मिला है। मुशीजी ने लिखा है कि इन भैंसाशाह और रोडा बनजारा के परस्पर में इतना स्नेह था कि इन दोनों ने मिलकर अपने सम्मिलित नाम से "भैंसरोड" नामक ग्राम बसाया। जो वर्तमान में उदयपुर रियासत मे विद्यमान है। यदि यह भैंसाशाह और जैनधर्म के अन्दर प्रसिद्धि प्राप्त आदित्यनाग गोत्र का भैंसाशाह एक ही हो तो, इसका समय वि० स० ५०८ का निश्चित करने में कोई बाधा नहीं आती। जिससे ओसवाल जाति के समय की पहुँच और भी दूर चली जाती है।

(५) श्वेत हूण के विषय में इतिहासकारों का यह मत है कि श्वेत हूण तोरमाण विक्रम की छठी शताब्दि में मरुस्थल की तरफ आया। उसने भीनमाल को अपने हस्तगत कर अपनी राजधानी वहाँ स्थापित की। जैनाचार्य्य हरिगुप्तसूरि ने उस तोरमाण को धर्मोपदेश देकर जैनधर्म का अनुरागी बनाया। जिसके परिणाम स्वरूप तोरमाण ने भीनमाल मे भगवान ऋषभदेव का बडा विशाल मन्दिर बनवाया।

इस तोरमाण का पुत्र मिहिरगुल जैनधर्म का कट्टर विरोधी शैवधर्मोपासक हुआ। उसके हाथ में राजतंत्र के आने ही जैनियों पर भयंकर अत्याचार होने लगे। जिसके परिणाम स्वरूप जैनी लोगों को देश छोड़कर लाट गुजरात की ओर भगना पडा, इन भगनेवालों में उपकेश जाति के व्यापारी भी थे। लाट गुजरात में जो आजकल उपकेश जाति निवास करती है, वह विक्रम की छठवीं शताब्दी में मारवाड में गई हुई है। अतएव इससे भी पता चलता है कि उस समय उपकेश जाति मौजूद थी।

उपरोक्त प्रमाणों से पता चलता है कि विक्रम की छठवी शताब्दी तक तो इस जाति की उत्पत्ति की खोज में किसी प्रकार खींचातानी से पहुँचा भी जा सकता है मगर उसके पूर्व तो कोई भी प्रमाण हमें नहीं मिलता जिसमें ओसवाल जाति, उपकेश जाति, या उकेश जाति का नाम आता हो। उसके पहले का इस जाति का इतिहास ऐसा अंधकार में है कि उस पर कुछ भी छान बीन नहीं की जा सकती। दूसरे उस समय इस जाति के न होने का सबसे बडा प्रमाण यह है कि ओसवाल जाति के मूल १८ गौत्रों की उत्पत्ति क्षत्रियों की जिन अठारह शाखाओं से होना जैनाचार्य्यों ने लिखा है, उन शाखाओं का अस्तित्व भी उस समय में न था। जब उन शाखाओं का अस्तित्व ही न था तब कोई भी जिम्मेदार इतिहासकार उन शाखाओं से १८ गौत्रों की उत्पत्ति किस प्रकार मान सकता है। इसके अतिरिक्त मूल १८ गौत्रों के पश्चात् अन्य गौत्रों की उत्पत्ति के विषय में जो किम्वदतियाँ और कथाएँ यतियों और जैनाचार्य्यों के दफ्तरों में मिलती हैं, उनमें भी सवत ७०० के पहले की कोई किम्वदंति हमें नहीं मिली। यदि विक्रम से ४०० वर्ष पूर्व इस जाति की स्थापना हो चुकी थी तो उसी समय के पश्चात् से समय २ पर आचार्य्यों के द्वारा नवीन गौत्रों की स्थापना का पता लगना चाहिये था। संवत् ९०० से संवत १४०० तक लगातार जैनाचार्य्यों के द्वारा ओसवाल गौत्रों की स्थापना का वर्णन हमें मिलता चला जाता है। ऐसी स्थिति में विक्रम के ४०० वर्ष पूर्व से लेकर विक्रम की सातवीं शताब्दी तक अर्थात् लगातार ११०० वर्षों में इस जाति के सम्बन्ध में किसी भी प्रमाणिक विवेचन का न मिलना इसके अस्तित्व के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न कर सकता है।

इन सब कारणों की रूप रेखाओं को मिलाकर अगर हम किसी महत्वपूर्ण तथ्य पर पहुँचने की कोशिश करें तो हमें यही पता लगेगा कि विक्रम संवत् ५०० के पश्चात् और विक्रम संवत् ९०८ के पूर्व इस जाति की उत्पत्ति हुई होगी। बाबू पूरणचन्दजी नाहर लिखते हैं कि "जहाँ तक मैं समझता हूँ (मेरा विचार भ्रमपूर्ण होना भी असभव नहीं) प्रथम राजपूतों से जैनी बनानेवाले श्री पार्श्वनाथ सतानीय श्री रत्नप्रभसूरि जैनाचार्य्य थे। उक्त घटना के प्रथम श्री पार्श्वनाथ स्वामी की इस परम्परा का नाम उपकेश गच्छ भी न था। क्योंकि श्री वीर निर्वाण के ९८० वर्ष के पश्चात् श्री देवर्द्धिगणि क्षमासमण ने जिस समय जैनागमों को पुस्तकारूढ किये थे उस समय के जैन सिद्धान्तों में और श्री कल्पसूत्र की स्थविरावलि आदि

प्राचीन ग्रन्थो मे उपकेश गच्छ का उल्लेख नहीं है। उपरोक्त कारणों से सम्भव है कि संवत् ५०० के पश्चात् और संवत् १००० के पूर्व किसी समय उपकेश या ओसवाल जाति की उत्पत्ति हुई होगी और उसी समय से उपकेशगच्छ का नामकरण हुआ होगा।

हमारा खयाल है कि बाबू साहब का उपरोक्त मत तर्क, प्रमाण और युक्तियों से परिपूर्ण है। बाबू पूरणचन्दजी इतिहास के उन विद्वानों में से हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन इन्हीं ऐतिहासिक खोजों के पीछे उत्सर्ग कर दिया है। ऐसी स्थिति में आपके निकाले हुए तथ्य को स्वीकार करने मे किसी भी इतिहासकार को कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

हम जानते है कि हमारे निकाले हुए इस निष्कर्ष से बहुत से ऐसे सज्जनों को जोकि प्राचीनता ही में सब कुछ गौरव का अनुभव करते हैं अवश्य कुछ न कुछ असंतोष होगा। क्योकि भारतवर्ष के कई नवीन और प्राचीन लेखकों की प्राय यह प्रवृत्ति रही है कि वे किसी भी तरह अपनी जाति अपने धर्म और अपने रीति रिवाजों को प्राचीन से प्राचीन सिद्ध करने की चेष्टा करते है। साथ ही उसके गौरव को बतलाने के लिए उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की चमत्कार पूर्ण घटनाओं की सृष्टि करते है, पर हम लोगों का इस प्रकार के सज्जनों से बड़ा ही नम्र मतभेद है। हमारा अपना खयाल है कि शुद्ध इतिहासवेत्ता के सामने शुद्ध सत्य ही एक आदर्श रहता है। वह सब प्रकार के पक्षपातों और सब प्रकार के प्रभावो से मुक्त होकर एक निष्पक्ष जज की तरह अपनी स्वतंत्र खोजों और अन्वेषणाओं के द्वारा सत्य पर पहुँचने की चेष्टा करता है। हम यह मानते हैं कि मानवीय बुद्धि बहुत परिमित है और अत्यन्त चेष्टा करने पर भी सत्य के नजदीक पहुँचने में कभी २ वह असफल हो जाती है, मगर अंत मे सत्य के खोज की पूर्ण लालसा उसे पूर्ण सत्य पर नहीं तो भी उसके निकटतम पहुँचा देने में बहुत सहायता करती है।

दूसरी बात यह है कि दूसरे लोगों की तरह हम लोग अपने सारे गौरव और सारे वैभव की झलक केवल प्राचीनता मे देखने के ही पक्षपाती नहीं। हम स्पष्टरूप से देखते हैं कि संसार की रंग-स्थली मे समय २ पर कई नवीन जातियाँ पैदा होती हैं और वे अपनी नवीन बुद्धि, नवीन पराक्रम, और नवीन प्रतिभा से संसार की सभ्यता और संस्कृति के ऊपर एक नवीन प्रकाश डालती हैं और अपने लिए एक बहुत ही गौरव पूर्ण नवीन इतिहास का निर्माण कर जाती है। हम अहलानिया इस बात को कह सकते है कि किसी भी जाति का गौरव इस बात मे नहीं है कि वह कितनी प्राचीन है या कितनी नवीन, वरन उसका गौरव उसके द्वारा किये हुए उन कार्यों से है जो उसकी महानता के सूचक है और जो मनुष्य जाति को एक नये प्रकार का संदेश देते है।

ओसवाल जाति का गौरव इस बात से नहीं है कि वह विक्रम से ४०० वर्ष पूर्व पैदा हुई थी या

विक्रम के १००० वर्ष पश्चात, बल्कि उसका गौरव उस महान विश्वभाव के सिद्धान्त से है जिसके वश होकर आचार्य रत्नप्रभसूरि ने उसकी स्थापना की थी। उसके पश्चात इस जाति का गौरव उन महान् पुरुषों से है जिन्होंने इस जाति में पैदा होकर क्या राजनीति, क्या धर्मनीति, क्या अर्थनीति इत्यादि संसार की प्रायः सभी नीतियों में अपने आश्चर्यजनक कारनामे दिखलाये और जिन्होंने अपनी प्रतिभा और अपने त्याग के बल से राजपूताने के मध्ययुगीन इतिहास को देदीप्यमान कर रखा है।

ओसवाल जाति का अभ्युदय

Rise of the Oswals.

ओसवाल जाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में हम प्रथम अध्याय में काफ़ी विवेचन कर चुके हैं। अब इस अध्याय के अन्दर हम यह देखना चाहते हैं कि इस जाति का क्रमागत् अभ्युदय किस प्रकार हुआ, किन २ महापुरुषों ने इस जाति की उन्नति के अन्दर महत्व पूर्ण भाग प्रदान किया। बाहर के कौन २ से प्रभावों ने इस जाति की उन्नति पर असर डाला और किस प्रकार अत्यन्त प्रतिष्ठा और सम्मान को साथ रखते हुए यह जाति भारत के विभिन्न प्रान्तों में फैली।

ओसवालों की उत्पत्ति का इतिहास चाहे विक्रम सम्वत् के पूर्व ४०० वर्षों से प्रारम्भ होता हो, चाहे वह सवत २२२ से चलता हो, चाहे और किसी समय से उसका प्रारम्भ होता हो, मगर यह तो निर्विवाद है कि ओसवाल जाति के विकास का प्रारम्भ सवत् १००० के पश्चात् ही से शुरू होता है, जब कि इस जाति के अन्दर बड़े २ प्रतिभाशाली आचार्य्य अस्तित्व में आते हैं। जिनकी विचार धारा अत्यन्त विशाल और प्रशस्त थी। इन आचार्य्यों ने मनुष्य मात्र को प्रतिबोध देकर अपने धर्म के अन्दर सम्मिलित किया और इस प्रकार जैन धर्म और ओसवाल जाति की वृद्धि की।

ओसवाल जाति की उत्पत्ति का सिद्धान्त

श्री रत्नप्रभसूरि ने जिस महान सिद्धान्त के ऊपर इस जाति की स्थापना की, वह सिद्धान्त हमारे खयाल से विश्वबन्धुत्व का सिद्धान्त था। जैनधर्म वैसे ही विश्वबन्धुत्व की नींव पर खड़ा किया हुआ धर्म है, मगर आचार्य्य श्री के हृदय में ओसवाल जाति की स्थापना के समय यह सिद्धान्त बहुत ही जोरों से लहरें ले रहा होगा। आजकल प्राय यह मत अधिक प्रचलित है कि ओसवाल धर्म की दीक्षा केवल ओसियों के राजपूतों ने ही ग्रहण की थी। मगर एक उड़ती हुई किम्वदंती इस प्रकार की भी है कि राजा की आज्ञा से और ओसियाँ देवी की मदद से सारी ओसिया नगरी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब यहाँ तक कि स्वयं ओसियाँ माता तक एक रात में जैनधर्म की दीक्षा ग्रहण कर ओसवाल नाम से मशहूर हुए। हम नहीं कह सकते कि इस किम्वदंती के अन्दर सत्य का कितना अंश है, क्योंकि हमारे पास इस बात का कोई भी पक्का प्रमाण नहीं। मगर इतना हम जरूर कह सकते हैं कि अगर यह किम्वदन्ती सत्य हो

तो इससे उन आचार्य्य श्री की सागरवत गंभीरता और उनके हृदय की विशालता का असर मनुष्य के ऊपर बीस गुना ज्यादा पड़ता है। वे हमको उन दिव्य महात्माओं के अदर दृष्टिगोचर होते हैं जो जाति वर्ण, और प्रान्तीयता की भावनाओं से ऊंचे उठकर मनुष्य मात्र को एक समान और निस्पृह दृष्टि से देखते हैं। इस प्रकार यदि यह किम्बदन्ती सत्य हो तो ओसवाल जाति की उत्पत्ति का सिद्धान्त और भी अधिक ऊँचाई पर पहुँच जाता है।

श्री रत्नप्रभसूरि के पश्चात् और भी अनेक आचार्य्यों ने इस जाति की उन्नति के लिये बहुत ही प्रभाव शाली चेष्टायें कीं। उन्होंने स्थान २ पर मनुष्य जाति को प्रतिबोध दे दे कर नये-नये गौत्रों के नाम से इस जाति में मिलाना शुरू किया। ऐसा कहा जाता है कि इन आचार्य्यों के परिश्रम से ओसवाल जाति के अन्दर चौदह सौ से भी अधिक गौत्रों और उपगौत्रों की सृष्टि हुई। इन गौत्रों के नामकरण कहीं पर स्थान के नाम से, कहीं पर प्रभाव शाली पूर्वजों के नाम से, कहीं पर आदि वंश के नाम से, कहीं व्यापारिक कार्य्य की संज्ञा से और कहीं पर अपने प्रशसनीय कार्य कुशलता के उपलक्ष्य में हुए पाये जाते हैं। इससे पता लगता है कि उन आचार्य्यों का हृदय अत्यन्त विशाल था, जाति और धर्म की वृद्धि ही उनका प्रधान लक्ष्य था। इसके सम्बन्ध में वे किसी भी प्रकार की रूढि या हठ पर अड़े हुए न थे। अस्तु।

जैनाचार्य्यों पर चमत्कारवाद का असर

इस सम्बन्ध में इस सारे इतिहास के वातावरण में हमें एक ऐसे भाव का असर भी दिखलाई देता है जो किसी भी निष्पक्ष व्यक्ति के हृदय में खटके विना नहीं रह सकता। जो शायद जैनधर्म के मूल सिद्धान्त के भी खिलाफ है। इतिहासकार के कठोर कर्त्तव्य के नाते इस भाव पर प्रकाश डालने के लिए भी हमें मजबूर होना पड रहा है। ओसवाल जाति के गौत्रों की उत्पत्ति के इतिहास को जब हम बारीकी की निगाह से देखते हैं तो हमें मालूम होता है कि उन आचार्य्यों ने मनुष्यों को धार्मिक प्रभाव से प्रभावित करके नहीं, प्रत्युत अपने चमत्कारों के प्रभाव से अपने वश कर इस जाति में मिलाया था। कहीं पर किसी साप के काटे को अच्छा कर, कहीं पर किसी को अनन्त द्रव्य की प्राप्ति करवाकर, कहीं किसी को पुत्ररत्न प्रदान कर, कहीं किसी को जलोदर, कुष्ट आदि भयकर रोग से मुक्त कर इत्यादि और भी कई प्रकार से उन्हें अपने वश में कर इस जाति के कलेवर को वढ़ाया था।

यह प्रवृत्ति जैनधर्म के समान उदार धर्म के साधुओं के लिए प्रशंसनीय नहीं कही जा सकती, मगर ऐसा मालूम होता है कि उस समय की जनता की मनोवृत्तियाँ चमत्कारों के पीछे पागल हो रही थीं। वह युग शांति और सुव्यवस्था का युग नहीं था। कई प्रकार के प्रभाव उस समय की जनता की मनो

वृत्तियों में काम कर रहे थे उनमें चमत्कारों का प्रभाव भी एक प्रधान था। जैनाचार्यों ने जब देखा होगा कि जनता साधारण उपदेश से प्रभावित नहीं हो सकती तब संभव है उन्होंने अपने आपको चमत्कारों में निपुण किया होगा और इस प्रकार जनता के हृदय पर विजय प्राप्त करने की कोशिश की होगी। बहुत से ऐसे समय आते हैं जिनमें युग प्रवर्त्तकों को प्रचलित सनातन धर्म के विरुद्ध युगधर्म के नाम से अस्थाई व्यवस्था करना पड़ती है, संभव है उस समय के आचार्य्यों ने यही सोचकर चमत्कारवाद का आश्रय ग्रहण किया होगा।

अब हम यह देखना चाहते हैं कि इस जाति की उन्नति और विकास के इतिहास में किन २ महान् आचार्य्यों ने महत्त्व पूर्ण योग प्रदान किया।

ऐसा कहा जाता है कि शुरू २ में ओसवाल जाति के अन्दर १८ गौत्रों की स्थापना हुई थी और उसके पश्चात् इनमें से अनेक गौत्रों की और २ शाखाएँ निकलती गई। मुनि ज्ञानसुन्दरजी ने अपने ग्रंथ 'जैन जाति महोदय' में इन अठारह गौत्रों की ४९८ शाखाएँ इस प्रकार लिखी हैं।

(१) मूलगौत्र तातेड—तातेड, तोडियाणि, चौमोला, कौसीया, धावडा, चैनावत, तलोवडा, नरवरा, संघवी, डुंगरिया, चोधरी, रावत, मालावत, सुरती, जोखेला, पाँचावत, बिनायका, साढेरावा, नागड़ा-पाका, हरसोत, केलाणी, एवं २२ जातियों तातेडों से निकली यह सब भाई है।

(२) मूलगौत्र बाफणा—बाफणा, (बहुफणा) नाहटा, (नाहाटा नावटा) भोपाला, भूतिया, भाभू, नावसरा, मुंगड़िया, डागरेचा, चमकीया, चौधरी जावडा, कोटेचा, बाला, धातुरिया, तिहुयणा, कुरा, बेताला, सलगणा, बुचाणि, सावलिया, तोसटीया, गान्धी, कोठारी, खोखरा, पटवा, दफतरी, गोडावत, कुचेरिया, बालीया, संघवी, सोनावत, सेलोत, भावडा, लघुनाहटा, पंचवया, हुमिया, टाटीया, ठगा, लघुचमकीया, बोहरा, मीठडीया, मारू, रणधीरा, ब्रह्मेचा, पाटलीया बाहुणा, ताकलीया, योद्धा, धारोला, दुद्धिया, बादोला, शुकनीया, इस प्रकार ५१ जातिया बाफना गोत्र से निकली हुई आपस में भाई हैं।

(३) मूलगौत्र करणावट—करणावट, वागटिया, संघवी, रणसोत, आच्छा, दातलिया, हुना, काकेचा, थंभोरा, गुदेचा, जीतोत, लाभांणी, सखला, भीनमाला, इस प्रकार करणावटों मे १४ साखाएँ निकली वह सब आपस में भाई है।

(४) मूलगौत्र बलाहा—बलाहा, राका, वाका, सेट, सेठिया, छावत, चौधरी, लाला, बोहरा, भूतेडा कोटारी राका देपारा, नेरा, सुखिया, पाटोत, पेपसरा, धारिया, जडिया, सालीपुरा, चित्तोडा, हाका, संघवी, कागडा, कुशलोत, फलोदीया, इस प्रकार २६ साखाएँ बलाहा गोत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(५) मूलगौत्र मोरख—मोरख, पोकरणा, संघवी, तेजारा, लघुपोकरणा, वादोलीया, चुंगा,

लघुचंगा, गजा, चौधरी, गोरीवाल, केदारा, वाताकशा, करचु, कोलोरा, शीगाला, कोठारी इस प्रकार १७ शाखाएँ मोरखगोत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(६) मूलगौत्र कुलहट—कुलहट, सुरवा, सुसाणी, पुकारा, मसांणिया, खोडीया, संघवी, लघु सुखा, बोरड, चोधरी, सुराणिया, साखेचा, कटारा, हाकडा, जालोरी, मन्नी, पालखिया, खूमाणा १८ शाखाएँ कुलहट गोत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(७) मूलगौत्र विरहट—विरहट, भुरंट, तुहाणा, औसवाला, लघुभुरंट, गागा, नोपत्ता, मवी, निबोलिया, हांसा, धारिया, राजसरा, मोतिया, चोधरी, पुनमिया सरा, उजोत, इस प्रकार १७ शाखाएँ विरहट गौत्र से निकली है वह सब भाई हैं।

(८) मूलगौत्र श्री श्रीमाल—श्री श्रीमाल, सववी, लघुसघवी, निलडिया, कोटडिया, झाबांणी, नाहरलांणि, केसरिया, सोनी, खोपर, खजानची, दानेसरा, उद्धावत, अटकलिया, धाकडिया भीन्नमाला, देवड़, मांडलिया, कोटीं, चंडालेचा, साचोरा, करवा इस प्रकार २२ शाखाएँ श्री श्रीमाल गौत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(९) मूलगौत्र श्रेष्ठि—श्रेष्ठि, सिंहावत्, भाला, रावत, वैदमुत्ता, पटवा, सेवडिया, चोधरी, थानावट, चितोडा, जोधावत्, कोठारी, बोत्थाणी, संघवी, पोपवत, ठाकूरोत्, बाखेटा विजोत्, देवराजोत्, गुँदिया, बालोटा, नागोरी, सेखांणी, लाखांणी, भुरा, गान्धी; मेडतिया, रणधीरा, पालावत् शूरना इसी प्रकार ३० शाखाएँ श्रेष्ठि गोत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(१०) मूलगौत्र संचेति—संचेति (सुचति साचेती) ढेलडिया, धमाणि, मोतिया, बिबा, मालोत, लालोत्, चोधरी, पालाणि लघुसचेति, मंत्रि, हुकमिया, कजारा, हीपा, गान्धी बेगाणिया, कोटारी, मालखा, छछा, चितोडिया, दूसराणि, सोनी, मरवा, घरघटा, उदेचा, लघुचौधरी, चोसरीया, बापावत् सघवी, मुरगीपाल, कीलोला, लालोत, खरभंडारी, भोजावत्, काटी, जाटा, तेजाणी, सहजाणी, सेणा मन्दिरवाल, मालतीया, भोपावत्, गुणीया, इस प्रकार ४४ साखाएँ संचेति गोत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(११) मूल गौत्र आदित्यनाग—आदित्यनाग, चोरडिया, सोढाणि, संघवी, उडक मसाणिया, मिणियार, कोठारी, पारख, 'पारखों' से भावसरा, संघवी ढेलडिया, जसाणि, मोल्हाणि, श्रडक, तेजाणि, रूपावत्, चोधरी, गुलेच्छा 'गुलेच्छाओं' से दोलताणी, सागाणि संघवी, नापडा, काजाणि, हुला, सेहजावत्, नागडा, दिस्सोडा, चोधरी, दातारा, मीनागरा, सावसुख 'सावसुखों' से मीनारा, लोला, मीनाणि, केसरिया, सला, कोठारी नादेचा, भटनेराचोधरी 'भटनेराचौधरियों' से कुंपावत्, भंडारी, जीमणिया, इंदावत् सांभरिया, कानुंगा, गदइया 'गदईयों' से गेहलोत, लुगावत् रणशोभा, बालोत्, सघवी, नोपत्ता,

बुचा 'बुचो' से सोनारा, भंडलिया, दालीया, करमोत्, दालीया, रत्नपुरा, चोरड़िया चोरडियोंसे नाबरिया, सराफ, कामाणि, दुद्धोणि, सीपाणि, आसाणि, सहल्लोत्, लघु सोढाणी, देदाणि, रामपुरिया, लघुपारख, नागोरी, पाटणिया छाडोत्, ममइया, वोहरा, खजानची, सोनी, हाडेरा, दफतरी, चोधरी, तोलावत् राव, जौहरी, गलाणि, इत्यादि इस प्रकार ८५ शाखाएँ आदित्यनाग गोत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(१२) मूलगौत्र भूरि—भूरि, भटेवरा, उडक, सिंधि, चोधरी, हिरणा, मच्छा, बोकदिया, बलोटा, बोसूदिया, पीतलिया, सिहावत्, जालोत, दोसाखा, लाडवा, हलदिया, नाचाणी, मुरदा, कोठारी, पाटोतिया इस प्रकार २८ शाखाएँ भूरि गौत्रसे निकली वह सब भाई हैं।

(१३) मूलगौत्र भद्र—भद्र, समदड़िया, हिंगड, जोगड, गिगा, खपाटिया, चवहेरा, बालडा, नामाणि, भमराणि, देलडिया, मर्घा, सादावत, भाडावत् चतुर, कोठारी, लघु समदड़िया लघु हिंगड, साढा, चौधरी, भाटी, सुरपुरिया, पाटणिया, नांनेचा, गोगड, कुलधरा, रामाणि, नाथावत, फूलगरा, इस प्रकार २९ शाखाएँ भद्र गौत्र मे निकली वह सब भाई हैं।

(१४) मूलगौत्र चिंचट—चिंचट, देसरडा, संघवी, ठाकुरा, गोसलाणि, खीमसरा, लघुचिंचट, पाचोरा, पुर्विया, नाराणिया, नौपोला, कोठारी, तारावाल, लाडलखा, शाहा, आकतरा, पोसालिया, पूजारा, वनावत्, इस प्रकार १९ शाखाएँ चिंचटगोत्र से निकली वह सब भाई हैं।

(१५) मूलगौत्र कुंमट—कुमट काजलिया, धनतरी, सुघा, जगावत्, संघवी पुगलिया, कठोरिया कापुरीत, संभरिया, चोक्खा, सोनीगरा, लाहोरा, लाखाणी, मरवाणी, मोरचिया, छालिया, मालोत्, लघुकुंमट, नागोरी इस प्रकार १९ शाखाएँ कुंभटगोत्र से निकली यह सब भाई हैं।

(१६) मूलगौत्र डिंडू—डिड्डू, राजोत्, सोसलाणि, धापा, धीरोत्, खंडिया, योद्धा, भाटिया, भंडारी, समदरिया, सिंधुडा, लालन, कोचर, दाखा, भीमावत्, पालणिया, सिरुरिया, चाका, वढयडा, घादलिया, कानुगा, एव २१ शाखाएँ डिड्डू गौत्रसे निकली वह सब भाई हैं।

(१७) मूलगौत्र कन्नोजिया—कन्नोजिया, वडभटा, राकावाल, तोलिया, धाधलिया घेवरिया, गुगलेचा, वरवा, गटवाणि, करेलिया, राडा, मीठा भोपावत् जालोरी जमघोटा, पटवा, मुसलिया इस प्रकार १९ शाखाएँ कन्नोजिया गौत्रसे निकली यह सब भाई हैं।

(१८) मूलगौत्र लघुश्रेष्टि—लघुश्रेष्टि, वर्धमान, भोभलिया; लुणेचा, बोहरा, पटवा, सिंधी, चितोडा, खजानची, पुनोत्, गोधरा, हाडा, कुबटिया, लुणा, नाऐरिया, गोरेचा, इस प्रकार १६ शाखाएँ लघुश्रेष्टि गौत्र से निकली वह सब भाई हैं।

ऊपर जिन शाखाओं का वर्णन किया गया है, उनमें कई ऐसी हैं जिनका नाम दो २ तीन २

और चार २ बार आया है ऐसी स्थिति में इन शाखाओं के सम्बन्ध में शंका होना स्वाभाविक है सम्भव है दूसरे आचार्यों का भी इससे मतभेद हो। मगर यह निश्चित है कि संवत् १००० के पश्चात् जो आचार्य हुए उनमेंसे बहुतसों ने इन गौत्रों की शाखाओं तथा नवीन गौत्रों की स्थापना की। उनमें से कुछ प्रसिद्ध २ आचार्य्यों का परिचय हम नीचे देने की चेष्टा कर रहे हैं।

आचार्य्य बप्पभट्टसूरि

आचार्य्य बप्पभट्टसूरि का जन्म वि० सं० ८०० मे हुआ। उस समय जावालिपुर में/ पड़िहार वंश का महाप्रतापी वत्सराज नाम का राजा राज्य करता था। इसने गौड प्रांत, बंगाल प्रांत, मालव प्रांत वगैरह दूर २ के प्रदेशों को विजय कर उत्तरापथ में एक महान साम्राज्य स्थापित करने की कोशिश की थी। इसी समय में अणहिलपुर नामक एक छोटा सा ग्राम बसाकर चावड़ा वंशीय राजा बनराज ने अपना राज्य विस्तार करना प्रारम्भ किया था। इसने सारस्वतमण्डल, आनर्त और बागड़ इत्यादि आसपास के प्रान्तों पर अधिकार करके पश्चिम भारत के अन्दर एक बड़ा साम्राज्य स्थापित करने की कोशिश की।

सम्राट् वत्सराज के नागभट्ट नामक एक पुत्र हुआ जो इतिहास मे नागावलोक व आमराजा के नाम से मशहूर है। इसने अपनी राजधानी जावालिपुर से हटाकर हमेशा के लिए कन्नौज में स्थापित की। ग्वालियर की प्रशस्ति से पता चलता है कि इस राजा ने कई देशों को जीतकर अपने राज्य में मिलाया। इसी राजा को आचार्य्य बप्पभट्टसूरि ने जैनधर्म का प्रतिबोध देकर जैनी बनाया। इस राजा के एक रानी बणिक पुत्री थी उसकी संतान ओसवाल जाति में सम्मिलित की गई, जिनका गौत्र राज कोष्टागर या राज कोठारी के नाम से मशहूर हुआ। इसी आम राजा ने कन्नौज में एक सौ हाथ ऊँचा जिनालय बंधवाकर उसमें आचार्य्य बप्पभट्टसूरि के हाथ से महावीर स्वामी की एक सुवर्ण प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई। इसी प्रकार गोपगिरि (ग्वालियर) में भी इन्होंने २२ हाथ ऊँची महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित की। ये आचार्य्य गौड़ (बंगाल) देश की राजधानी लक्ष्णावती में भी गये और वहाँ के तत्कालीन राजा धर्म को उपदेश देकर आम राजा तथा उसके बीच की विद्रोहाग्नि को शांत कर दिया। इन्हीं सूरिजी ने मथुरा में शैव वाक्पति नामक एक योगी को जैनी बनाया। इन्हीं के उपदेश से आम राजा ने संवत् ८२६ के करीब कन्नौज, मथुरा, अणहिलपुर पट्टण, सतारक नगर तथा मोडेरा आदि शहरों में जैन मन्दिर बनवाये। इसी राजा आम का पुत्र भोज राजा हुआ, जिसके दूसरे नाम मिहिर और आदिवराह भी थे। यह सम्वत् ९०० से ९५० तक गद्दी पर रहा। इसी परिवार में आगे चलकर सैकड़ों वर्षों पश्चात् सिद्धाचल का अन्तिम उद्धार कर्त्ता

करमाशाह हुआ, जिसका शिलालेख शत्रुंजय तीर्थ पर आदिनाथजी के मन्दिर में पाया जाता है। इसके अन्दर के दो श्लोक हम यहाँ उद्धृत करते हैं।

> इतश्च गोपाह्व गिरौ गरिष्ट श्री बप्पभट्टी प्रतिबोधितश्च
> श्री आमराजोऽ जनि तस्य पत्नी काचित्व भूव व्यवहारी पुत्री ॥ ८ ॥
> तत्कुक्षिजाता किल राज कोष्टगाराह्व गोत्रे सुकृतैक पात्रं ।
> श्री ओसवंशे विशदे विशाले तस्यान्वयेऽमि पुरुषा प्रासिद्ध ॥ ९ ॥

इन आचार्य्य श्री का स्वर्गवास सम्वत् ८९५ में हुआ।

श्री नेमिचन्द्रसूरि

श्री नेमिचन्द्रसूरि का समय संवत ९५० के आसपास होना पाया जाता है। महाजनवंश मुक्तावली में इनको उद्योतनसूरि के गुरू लिखा है। कहा जाता है कि इनके समय में मालव देश में तवरों का राज्य था। ये आचार्य भी बड़े प्रतिभाशाली एवम् ओसवाल जाति को अभ्युदय प्रदान करनेवालों में से थे। इन्होंने संवत् ९५४ में बरड़िया गौत्र की स्थापना की।

श्री वर्द्धमानसूरि

श्री वर्द्धमानसूरि का समय सवत् १००० से लेकर संवत् १०८८ तक पाया जाता है। इनका एक प्रतिमा लेख कटिग्राम में सवत् १०४५ का लिखा हुआ मिला है। इन्होंने सवत् १०५५ में हरिदचन्द्रसूरि कृत "उपदेश पद" नामक ग्रंथ की टीका रची। ऐसा मालूम होता है कि 'उपमिति भव प्रंपचा नाम समुच्चय" और "उपदेश माला वृहद्" नामक कृतियाँ भी इन्होंने रची थीं। ये चन्द्रगच्छ के थे। इन्होंने सवत् १०२६ में सचेती और संवत १०७२ में लोढ़ा और पीपाड़ा गौत्र की स्थापना की।

श्री जिनेश्वरसूरि

श्री वर्द्धमानसूरि के शिष्य श्री जिनेश्वरसूरि भी बड़े प्रतिभाशाली प्रचारक थे। इनका समय सवत् १०६१ से लेकर संवत् ११११ तक का पाया जाता है। इनके समय में गुजरात के अन्तर्गत राजा दुर्लभराज राज्य करता था, उसका पुरोहित शिवशर्मा नामक एक ब्राह्मण था, जिसको आचार्यश्री ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था। दुर्लभराज के समय में अणहिल्पुर पट्टन में चैत्यवासियों का बड़ा जोर था। श्री जिनेश्वरसूरिजी ने इन्हें भी शास्त्रार्थ में पराजित कर अपनी विजयपताका फह-

राई थी। सवत् १०८० मे इन्हे खरतर' का विरुद प्राप्त हुआ, तभी से इनका गच्छ खरतरगच्छ के नाम से मशहूर हुआ। इन्होने श्रीपत्ति डड्ढा, तिलौरा ढड्ढा और भणसाली नामक गौत्रों की स्थापना की, ऐसा महाजन वंश मुक्तावली से पाया जाता है।

श्री अभयदेवसूरि

श्री अभयदेवसूरि श्री जिनेश्वरसूरिजी के शिष्य और श्री जिनचन्द्रसूरिजी के गुरु भाई थे। आपका जन्म संवत १०७२ मे हुआ था। सवत् १०८८ मे अर्थात जब कि आप केवल १६ वर्ष के थे आपको आचार्य्य पद प्राप्त हुआ था। आपने जैनों के नव आगमों पर संस्कृत टीकाएँ रचीं इससे आप नवांग वृत्तिकार के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप बडे प्रतिभा शाली और विद्वान पुरुष थे। आपने कई उत्तमोत्तम ग्रन्थों की रचना की। आपका स्वर्गवास संवत ११३५ मे कपडवंज मे हुआ। आपने खेतसी, पगारिया और मेड़तवाल नामक गौत्रों की स्थापना की।

श्री मलधारी हेमचन्द्रसूरि

श्री मलधारी हेमचन्द्रसूरि मलधारी श्री अभयदेवसूरि के शिष्य थे। इनके सम्बन्ध मे इन्हीं की परम्परा के मलधारी राजशेखर सवत् १३८७ में लिखी हुई 'प्राकृत द्वयाश्रयवृत्ति' मे लिखते है कि इनका मूल नाम गृहस्थावस्था में प्रद्युम्न था। ये राजसचिव थे। श्री अभयदेवसूरि के उपदेश से इन्होंने अपनी चार स्त्रियों को छोड़कर दीक्षा ग्रहण करली। इनकी प्रतिभा के सम्बन्ध मे इन्हीं के समकालीन शिष्य श्रीचन्द्रसूरि अपने मुनिसुव्रत चरित्र की प्रशस्ति में लिखते है कि इनके व्याख्यानकी मधुरता और उसके आकर्षण से गुणी जनों के हृदय में बड़ी श्रद्धा उत्पन्न होती थी। गुजरात का तत्कालीन राजा जयसिंहदेव या सिद्ध राज स्वयं अपने परिवार के साथ आपके दर्शन करने और आपका भाषण सुनने के लिये उपाश्रय में आता था। इन्हीं आचार्य्य श्री के कहने से उसने अनेकों जैन मंदिरों पर कलश चढ़वाये। धंधुका साचोर वगैरह तीर्थस्थानों में अन्य धर्मियों के द्वारा जिन शासन पर पहुँचाई जाने वाली पीड़ा को उसने दूर किया। पाटन से गये हुए गिरनार के विशाल संघ के साथ आप भी थे। उस समय मार्ग में सोरठ के राजा राव खंगार ने सघ के ऊपर उपद्रव किया और उसको रोक दिया। तब श्री हेमचन्द्रसूरि ने जाकर उसको प्रतिबोध दिया और सघ पर आयी हुई विपत्ति को दूर किया। आपने सांखला, सुराणा, सियाल, साड, सालेचा, पूनमिया वगैरह २ गौत्रों की स्थापना की। आप पण्डित श्वेताम्बराचार्य्य भट्टारक के नाम से प्रसिद्ध थे। अंत में ७ दिन का अनशन करके आप स्वर्गवासी हुए।

श्री जिनवल्लभसूरि

श्री जिनवल्लभ सूरि राजा कर्ण के समय में एक गणि की तरह और उस के पश्चात् सिद्धराज के समय में एक ग्रंथकार और आचार्य की तरह प्रसिद्ध हुए। आपका स्थान खरतरगच्छ के आचार्य्यों में बहुत ऊंचा है। शुरू २ में ये चैत्यवास के उपासक जिनेश्वर नाम के मठाधिपति के शिष्य थे। उन्होंने इन को पाटन में श्री अभयदेवसूरि के पास शास्त्राध्ययन करने के लिए भेजा। वहाँ पर इन्होंने चैत्यवास के मत को छोडकर शास्त्र रीति के अनुसार आचार को ग्रहण किया। इनके उपदेश से जो चैत्य बने वे विधि चैत्य के नाम से मशहूर हुए। इन चैत्यों मे कोई शास्त्रविरुद्ध कार्य न हो इस के लिए आपने कई श्लोकों की रचना कर के वहाँ लगाई। वहाँ से आपने मेवाड में विहार किया। उस समय मेवाड चैत्यवासी आचार्य्यों से भरा हुआ था। चित्तौड में आपने अपने उपदेश से कई लोगों को जैन धर्म में दीक्षित किया। यहाँ पर भी आपने दो विधिचैत्यों की प्रतिष्ठा की। इसके पश्चात् आप वागड़ मे गये। वहाँ जाकर आपने वहाँ के लोगों को प्रतिबोध दिया। वहाँ से चलकर धारा नगरी के राजा नरवर्म्मा की सभा मे आपने बहुत ख्याति प्राप्त की। नागौर में आपने नेमि जिनालय की प्रतिष्ठा की। संवत् ११५६ में आप ने चोपड़ा, गणधर चौपड़ा, कुकडचौपड़ा, बदेर सौंढ वगैरह गौत्रों की तथा संवत् ११६७ मे बाँठिया, ललवानी, घरमेचा, हरकावत, मल्लावत, साह सोलंकी इत्यादि कई गौत्रों की स्थापना की। इसके पूर्व सवत् ११४२ में आप कांकरिया गौत्र की स्थापना कर चुके थे। सवन् ११६४ मे आपने सिंघी गौत्र की स्थापना की। आप का स्वर्गवास सवत् ११६७ में हुआ।

श्री जिनदत्तसूरि

श्री जिनदत्तसूरि खरतरगच्छ में सब से ज्यादा नाँमाकिंत और प्रतिभासम्पन्न आचार्य हुए। आप का जन्म सवत ११३२ में हुआ। आपके पिता श्री का नाम वाछिगमन्त्री तथा माताजी का नाम वाहडदेवी था। आप का गौत्र हुंबड था और आप धन्धूक नगर के निवासी थे। आपका मुख्य नाम सोमचन्द्र था। सवत् ११४१ में आप ने जैन धर्म की दीक्षा ली। सवत ११६९ में चित्तौड नगर में आप को श्री देवभद्र आचार्य्य द्वारा आचार्य्य पद प्राप्त हुआ। जिस समय आप आचार्य्य पद पर प्रतिष्ठित किये गये उस समय आज कल का सा जमाना नहीं था। वह चमत्कारवाद का युग था। चारों ओर चमत्कार की पूजा होती थी। आचार्य श्री भी इस विद्या मे पारङ्गत थे। अतएव कहना न होगा कि आपने अपने अपूर्व चमत्कारों की वजह से तत्कालीन जनता के हृदय पर अपनी गहरी धाक जमाली थी। आपके चमत्कारों से प्रभावित होकर

कई व्यक्ति आप के द्वारा जैन धर्म में दीक्षित किये गये। उस समय आपका प्रताप चारों ओर चमक रहा था। आप उन महानुभावों में से थे जिन का नाम उस समय ही नहीं, आज भी प्रत्येक जैन समाज के व्यक्ति के मुँह पर हमेशा रहा करता है।

आप के द्वारा भिन्न २ समय में भिन्न २ रूप से कई गौत्रों की स्थापना हुई। जिन का थोड़ा सा विवरण महाजन वंशमुक्तावली के अधार से नीचे दिया जा रहा है—

संवत् ११६९ में धाड़ेवा, पाटेवा, टांटियाँ और कोठारी
संवत् ११७५ में बोरड़, खीमसरा, और समदरिया
संवत् ११७६ में कठोतिया,
संवत् ११८१ में रतनपुरा, कटारिया, ललवाणी वगैरह ५२
संवत् ११८१ में डागा, मालू, भाभू
संवत् ११८५ में सेठि, सेठिया, रंक, बाँक रांका, बाँका
संवत् ११८७ में सखेचा, पूँगलिया,
संवत् ११९२ में चोरड़िया, साँवसुखा, गोलेछा, लूनियां वगैरह
सवत् ११९७ में सोनी, पीतलिया, बोहित्थरा, ७० गौत्र
संवत् ११९८ में आयरिया लूनावत, बापना इत्यादि
संवत् ११९६ में भणसाली, चंडालिया
संवत् १२०१ में आभेड़ा, खटोल
सवत् १२०२ में गद्वाणी, भड्गतिया, पोकरण वगैरह

लिखने का मतलब यह है कि आप के द्वारा ओसवाल जाति एवम् जैनधर्म का बहुत उत्थान हुआ। यही कारण है कि समाज में आप दादाजी के नाम से पुकारे जाने लगे। वर्त्तमान में भारतवर्ष भर में जहाँ २ जैन बस्ती हैं वहाँ २ दादा बाड़ियाँ हैं जो प्राय आप के ही स्मारक में बनी हुई हैं और वहाँ आप के चरण स्थापित हैं। आप का स्वर्गवास सवत् १२११ में हुआ।

श्री जिनचन्द्रसूरि

श्री जिनचंद्रसूरि भी जैनधर्म के अन्दर बड़े प्रभावशाली आचार्य्य हुए हैं। ओसवाल जाति का विस्तार करने में आपने बहुत बड़ा भाग लिया है। आप खरतरगच्छ के आचार्य्य थे। आपका जन्म संवत् ११९७ के भाद्रपद शुक्ला ८ को हुआ। आप के पिता का नाम साह रासलक और माता का नाम देल्हण

देवी था। संवत् १२०३ की फाल्गुन वदी ९ को आपने दीक्षा ग्रहण की। आपके गुरु दादाजी श्रीजिनदत्त-सूरिजी थे। संवत् १२११ की बैशाख सुदी ६ को आप आचार्य्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपने संवत् १२१४ में अघारिया, १२१५ मे छाजेड, संवत १२१६ मे मिन्नी खजांची, भूगड़ी, श्रीश्रीमाल, १२१७ मे सालेचा, दूगड, सुघड, शेखाणी, कोठारी, आलावत, पालावत इत्यादि कई गौत्रों की स्थापना की। आप का स्वर्गवास संवत् १२२३ की भादवा बदी १४ को हो गया।

श्री जिनकुशलसूरि

दादाजी जिनदत्तसूरिजी के पश्चात् श्री जिनकुशलसूरि जैन समाज के अन्दर बड़े प्रभाविक एवम् प्रतिभा सम्पन्न आचार्य्य हुए। आपका जन्म संवत् १३३० मे हुआ। आप छाजेड गौत्रीय मंत्री जिल्हागर के पुत्र थे। आपकी माताका नाम जयन्तश्री था। संवत् १३४७ मे आपने दीक्षा ग्रहण की। इनके पश्चात् संवत् १३७७ मे आपको आचार्य्य पद प्राप्त हुआ। आपने बावेल, संघवी, जडिया वगैरह २१ शाखाओं की तथा डागा गोत्र की स्थापना की। आपने पाटन मे साह तेजपाल से नन्दिमहोत्सव करवाया, जिसमें २४०० साधु साध्वी आपके साथ थे। संवत् १३८० में साह तेजपाल ने शत्रुंजय तीर्थ का संघ निकाला उसमें भी आप सम्मिलित हुए। आपने भीमपल्ली नामक नगर में भुवआलकृत एक वीर चैत्य की, जेसलमेर नगर में धवलकृत चिन्तामणि पार्श्वनाथ की तथा जालोर नगर में श्री पार्श्वनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा की। आपके संघ मे १२०० साधु तथा १०५ साध्वियों थी। आप भी अपने गुरु की तरह जैन समाज मे दादाजी के नाम से प्रसिद्ध है। संवत् १३८९ की फाल्गुन वदी अमावस्या को देराउर नगर मे आठ दिनके अनशन के साथ आप स्वर्गवासी हुए।

श्री जिनभद्रसूरि

श्री जिनभद्रसूरि खरतर गच्छ के अन्दर एक प्रभाविक, प्रतिष्ठावान, और प्रतिभाशाली आचार्य्य हुए। आपने जैन शासन को बहुत उत्तेजन प्रदान किया। आपके उपदेश से जैन श्रावकों ने गिरनार, चित्रकूट (चित्तौड) मंडोवर आदि अनेक स्थानों में बड़े २ जिन मन्दिर बनवाये। अणहिल्पुर पट्टन आदि स्थानों में आपने विशाल पुस्तक भंडारों की स्थापना की। मांडवगढ, पाल्हनपुर, तल्पाटक आदि नगरों मे अनेक जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा की। जैसलमेर के तत्कालीन राजा रावल श्री वैरसिंह और त्र्यंबकदास सरीखे प्रतिष्ठित व्यक्ति आपके चरणो मे गिरते थे। आपके उपदेश से साह शिवा आदि चार भाइयों ने संवत् १४९४ मे जैसलमेर मे एक भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया। संवत १४९७ मे आचार्य्य सूरिजी ने

इसमें करीब ३०० जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा की। जिसकी प्रशस्ति आज भी उस मन्दिर में लगी हुई है। इन सूरिजी ने 'जिन सत्तरी प्रकरण, और अपवर्गनाममाला नामक ग्रन्थों की रचना की। इन ग्रन्थों में आपने अपने गुरु का नाम श्रीजिनवल्लभ, श्री जिनदत्त और श्रीजिनप्रिय बतलाया है।

श्री जिनचन्द्रसूरि

श्री जिनचन्द्रसूरि श्री जिनमाणिक्य सूरि के शिष्य थे। आपका जन्म संवत् १५९५ मे हुआ। संवत् १६०४ में आपने दीक्षा ग्रहण की। संवत् १६१२ में आप सूरिपद पर प्रतिष्ठित हुए। आपको बादशाह अकबर ने युग प्रधान का पद प्रदान किया था।

अकबर का दरबार भिन्न २ प्रकार के दर्शन शास्त्रियों, विद्वानों और राजनीति-दक्ष पुरुषों से भरा रहता था। उसकी विद्या रसिकता और धार्मिक स्वाधीनता अतुलनीय थी। बीकानेर के सुप्रसिद्ध बच्छावत कर्मचन्द भी उसके दरबार में आया जाया करते थे। एक दिन अकबर बादशाह ने पूछा कि इस समय जैनियों में सब से प्रभावशाली आचार्य्य कौन है, उत्तर में किसी ने आचार्य्य जिनचन्द्रसूरि का नाम उसको बतलाया और यह भी बतलाया कि कर्मचन्द बच्छावत उनके शिष्य हैं, तब बादशाह ने कर्मचन्दजी को हुक्म दिया कि वे आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरि को लाहौर में लावें। बादशाह की आज्ञा से कर्मचन्दजी आचार्य्य श्री को लाहौर में लाये। बादशाह अकबर ने आपका बहुत सम्मान एवम् स्वागत किया। बादशाह के आग्रह से आचार्य्य श्री ने लाहौर ही में चातुर्मास किया। आचार्य्य श्री के उपदेश का अकबर के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा और आचार्य्य श्री के कहने से उसने द्वारका और शत्रुंजय के सब जैन मन्दिरों की व्यवस्था कर्मचन्दजी बच्छावत् के सिपुर्द करदी और उसका लिखित फ़रमान अपनी मुद्रा से अङ्कित कर आजमखाँ को दिया और कहा कि सब जैन तीर्थ कर्मचन्द को बक्ष दिये हैं, उनकी रक्षा करो। जब अकबर काश्मीर जाने लगा तो उसने पहले मन्त्री के द्वारा श्री जिनचन्द्रसूरिजी को बुलाकर उनसे धर्म-लाभ लिया। इसके उपलक्ष्य में असाढ़ सुदी ९ से लेकर सात दिन पर्यंत सारे साम्राज्य में जीवहिंसा न की जाय इस आशय का फरमान निकाल कर अपने ग्यारह सूबों में भेज दिया। बादशाह के इस हुक्म को सुनकर उसको खुश करने के लिये उसके अधीनस्थ राजाओं ने भी अपने २ राज्य की सीमा मे कहीं पन्द्रह दिन, कहीं बीस दिन और कहीं एक मास तक जीव हिंसा न करने का फरमान निकाला। इसी सिलसिलेमे बादशाह अकबरने इन्हें युग प्रधान का पद प्रदान किया और उनके शिष्य मानसिंह को आचार्य्य पद प्रदान करके उनका नाम जिनसिंहसूरि रक्खा। अकबर के पश्चात संवत १६६९ में जहाँगीर बादशाह ने हुक्म निकाला कि सब दर्शनों के साधुओं को देश मे बाहर निकाल दिया जाय। इससे जैन मुनि मण्डल में बहुत भय हो गया। तब श्री जिनचन्द्रसूरि ने पाटन

से आगरा जाकर बादशाह को समझाया और उस हुक्म को रद्द करवाया। इन्हीं जिनचन्द्रसूरि ने पींचा गौत्र तथा संवत् १६२७ में १८ और गौत्र स्थापित किये। इनका स्वर्गवास संवत् १६७० में हो गया।

श्री हीरविजयसूरि

श्री हीरविजयसूरि—अब हम एक ऐसे तेजस्वी और प्रभापूर्ण आचार्य्य का परिचय पाठकों के सम्मुख रखते हैं जिन्होंने अपनी दिव्य प्रतिभा से न केवल जैन समाज पर प्रत्युत अकबर के समान महान् सम्राट और प्रतापी राजवंशीय सभी पुरुषों पर अपना अखण्ड प्रभाव स्थापित किया था। इन आचार्य्य श्री की प्रतिभा सूर्य-किरणों की तरह तेजपूर्ण और चन्द्रकिरणों की तरह शीतल और जन-समाज को मुग्ध कर देने वाली थी। बादशाह अकबर के ऊपर इन आचार्य्य श्री का कितना प्रभाव था यह नीचे लिखी हुई प्रशस्ति, जो कि शत्रुञ्जय तीर्थ के आदिनाथ मन्दिर में संवत् १६५० की लगी हुई है, से मालूम हो जायगा। पाठकों की जानकारी के लिये हम उस प्रशस्ति को नीचे लिख रहे हैं।

दामेवाखिल भूपमूर्द्धसु निजमाज्ञा सदा धारयन्
श्रीमान् शाहि अकब्बरो नरवरो [देशेष्व] शेषेष्वपि।
षण्मासाभयदानपुष्ट पटहोद्घोषा नघर्वमित
काम कारयति स्म हृष्टहृदयो यद्वाक् कला रंजित ॥ १७॥
यदुपदेशवशेन मुदं दधन् निखिल मण्डलवासि जने निजे।
मृतधन च कर च सुजीजिया भिधमकब्बर भूपति रत्य जत्॥ १८॥
यद् वाचा कतकाभया विमालितस्वातावुपूर कृपा—
पूर्णे शाहिर निन्ध नीतिवनिता क्रोडी कृतात्मात्यजत्।
शुल्कं त्यक्तुमशक्यमन्यधरणीराजाजन प्रीतये
तदवान् नाईज पुज पुण्य पशूश्चामूमुचद् भूरिश ॥ १९॥
यद् वाचा निचयैर्मुधाकृत सुधा स्वादैरमदै कृता—
ल्हाद श्रीमदकब्बर क्षितिपति संतुष्टि पुष्टाशय।
त्यक्त्वा तत्करमर्थ सार्थमतुल येषा मन प्रीतये
जैनेभ्य प्रददौ च तीर्थतिलक शत्रुंजयोर्वीधरन ॥ २०॥
यद्वाग्भिर्मुदितश्चकार करुणा स्फूर्जन्मना पौस्तक
भाण्डागारमपारवाङ्मयमय वेश्मेव वाग्दैवतम्।

यत्सेवेगमेरण भावितमतिः शान्ति पुन प्रत्यह
पूतात्मा बहु मन्यते भगवतां सद्दर्शनो दर्शनम ॥ २१ ॥

इस आचार्य श्री का जन्म पालनपुर नगर मे कुरां नामक एक ओसवाल सज्जन के यहाँ स० १५८१ में हुआ था। इनकी माता का नाम श्री नाथीबाई था। संवत १५९६ में तपेगच्छ के श्री विजयदानसूरिजी के उपदेश से आपने दीक्षा ग्रहण की। मुनि हीर हर्ष ने पहले अपने गुरू के पास तमाम साहित्य और शास्त्र का अध्ययन किया। फिर इनके गुरु ने धर्म सागर मुनि के साथ इन्हें दक्षिण के देवगिरी नामक स्थान पर अध्ययन करने के लिए नैयायिक ब्राह्मण के पास भेजा। यहाँ पर उन्होंने प्रमाणशास्त्र, तर्क परिभाषा, मित भाषिणि, शशधर, माणिकठव, वरदराजि, प्रस्तपद भाष्य, वर्द्धमानेन्दु, किरणावली इत्यादि का अध्ययन करके वापस मरूदेश को अपने गुरूदेव के पास गये। वहाँ नडलाई (नारदपुर) में सवत् १६०७ में गुरुदेव ने इन्हें 'पण्डित' का और फिर सवत् १६०८ में 'वाचक उपाध्याय' का पद दिया। संवत् १६१० में इन्हे सिरोही मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया और हीरविजयसूरि नाम रखा। इनका उत्सव दूधा राजा के जैन मंत्री—धरणाक के वशज रासतपुर के प्रसिद्ध प्रसाद का निर्माण करवानेवाले चांगा नामक सिघवी ने किया। इस उपलक्ष्य में वहाँ के राजा ने अपने राज्य मे होनेवाली हिंसा को बंद करवाया। सवत् १६२१ में इनके गुरू विजयदानसुरि का स्वर्गवास हो गया। उसी समय से ये स्वय तपेगच्छ के नायक हो गये। इसी समय बादशाह अकबर ने फतहपुर सीकरी में मोक्ष साधक धर्म का विशेष परिचय प्राप्त करने की इच्छा से राज-सभा में बडे २ विद्वानों की एक शास्त्र गोष्ठी कायम की थी। इस गोष्ठी में उन्होंने आचार्य हीरविजयसूरि को भी आमंत्रित किया था।

उस समय हीरविजयसूरि का चातुर्मास गंधार बदर में था। अकबर ने गुजरात के सूबे साहिबों को फरमान के द्वारा सूचित किया कि हीरविजयसूरि को बहुत आदर और सम्मान के साथ यहाँ हमारे पास दरबार में भेजो। अतएव कहना न होगा कि हीर विजय सूरि बडे सम्मान और आदर के साथ स्थान २ पर ठहरते हुए फतेपुर सीकरी पधारे। बादशाह के मंत्री अबुलफजल ने उनका सत्कार किया। बादशाह ने स्वयं वहाँ आकर हाथी घोडे इत्यादि की भेंट आचार्यश्री की सेवा में रखी। मगर निस्पृह जैनाचार्य ने उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। तब बादशाह ने कहा कि आपको कुछ न कुछ तो अवश्य स्वीकार करना पडेगा। तब आचार्य ने कैदियों को कैद में से और पिंजर बद्ध पक्षियों को पींजरे से छोड देने और उन्हें आज़ाद

---

* सम्राट ने विविध धर्मों का रहस्य समझ कर सवत् १६३५ में दीने इलाही नामक एक नवीन धर्म को प्रचलित किया था। यह धर्म सुधरे हुए हिन्दू धर्म का ही एक रूप था। सम्राट अकबर कहा करते थे कि जब तक भारतवर्ष में अनेक जातियाँ और अनेक धर्म रहेंगे तब तक मेरा मन शांत न होगा।

कर देने के लिए कहा। बादशाह ने फिर उन्हें अपने लिये कुछ मांगने को कहा। इस पर आचार्य ने कहा कि हमारे पर्युषण पर्व में आठ दिन तक जीव हिंसा न होने पावे। इस पर बादशाह ने अपनी तरफ से और चार दिन मिलाकर बारह दिन के लिये समस्त साम्राज्य में हिंसा बंद करवाई और अपनी सही और मोहर के ६ फरमान अपने साम्राज्य के सब स्थानों पर भेज दिये। उसके पश्चात् डामर तालाब नामक जलाशय जो उन्होंने स्वयं बडे शौक से बनाया था आचार्य श्री के अर्पण कर दिया और वहाँ मछलियाँ मारने की मनाई कर दी। स्वय सम्राट ने भी कभी शिकार न करने की प्रतिज्ञा ली।*

सवत् १६४० नवरोज के अवसर पर सम्राट ने आचार्य्य श्री को जगद्गुरू का विरुद प्रदान किया। इस अवसर पर भी सम्राट ने सारे बंदियों को छुड़वा दिये। डामर तलाव पर जाकर वहाँ के पींजरे में बंद पशुपक्षियों को मुक्त किया।

उसके पश्चात बादशाह के मान्य जौहरी दुर्जनमल ने सूरिजी के पास से जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा करवाई। इसी प्रकार और भी कई स्थानों पर आपने मन्दिरों और मुर्त्तियों की प्रतिष्ठा करवाई। कुछ समय पश्चात वहाँ से विहार कर आपने सवत् १६४५ में पाटन में चौमासा किया। इस समय इनके शिष्य शातिचंद्र उपाध्याय ने, जो कि सूरिजी की आज्ञा से बादशाह के पास रह गये थे, सूरिजी के दर्शनार्थ जाने की इच्छा प्रकट की। तब बादशाह ने अपनी तरफ से सूरिजी को भेंट करने के लिए उनके पास निम्नलिखित फरमान भेजे।

जजिया नामक कर को गुजरात में दूर करने का फर्मान्, पर्युषण के बारह दिनों के अलावा सब रविवार सूफी लोगों के सब दिन, ईद, के दिन, सक्रान्ति की सब तिथियाँ, अपना जन्म जिस मास में हुआ था वह सारा मास, मिहिर के दिन, नवरोज के दिन, अपने तीनों पुत्रों के जन्म दिन, मोहर्रम महिने का दिन, इस प्रकार सब वर्ष में कुल ६ मास और ६ दिन सारे साम्राज्य में कोई भी किसी जीव की हिसा न करें इस प्रकार का फरमान बादशाह ने निकाल कर भेजा।†

---

* आइने अकबरी पृष्ट ३३० और ४०० में अकबर बादशाह कहते हैं कि राज्य के नियम से यद्यपि शिकार खेलना बुरा नहीं है लेकिन जीव रक्षा का ख्याल रखना उससे भी ज्यादा आवश्यक है।

† कट्टर मुसलमान लेखक बदाउनी लिखता है —

In these days (991—1583 A D) new orders were given The killing of animals on certain days was forbidden, as on sundays because this day is sacred to the Sun, during the first 18 days of the month forwarding the whole month of abein (the month in which His Majesty was born) and several other days so please the Hindoos This order was extended over the whole realm and capital punishment was inflicted on every on who acted against the command —Badaoni Page 321,

संवत १६४६ में खम्भात् में जाकर सोमी तेजपाल के बनाए हुए भव्य मन्दिर की प्रतिष्ठा सूरिजी ने की। इसके बाद संवत् १६४८ में सम्राट अकबर ने शत्रुंजय पर लगे हुए कर को बंद करने का और उसके दान का फरमान् भेजा और आचार्य्य विजयसेन सूरि (हीर विजय सूरि के शिष्य) के दर्शनों की इच्छा प्रकट की तब श्री विजयसेन सूरि लाहौर की ओर गये और जेठ सुदी १२ को लाहौर शहर में प्रवेश किया। यहाँ पर बादशाह ने इन्हें खुशफहम (सुमति) का विरुद प्रदान किया। इसके पश्चात सूरिजी के उपदेश से सम्राट ने गाय, बैल, भैंस, और पाडे की हिंसा न करना, मृतक व्यक्ति (लावारिसी) के द्रव्य को सरकार में न लेना इत्यादि ६ फरमान और जारी किये। विजयसेनसूरि ने अकबर की राजसभा मे ३६६ ब्राह्मणवादियों को शास्त्रार्थ में पराजित कियेजिससे खुश होकर सम्राट ने इन्हे 'सवाई' विजयसेन सूरि का विरुद दिया।

इस प्रकार राजा और प्रजा, हिन्दू और मुसलमान सबकोजैन शासन की पवित्र लाईन पर लगानेवाले और जैन शासन का विश्वव्यापी प्रचार करने वाले इन आचार्य्य श्री का स्वर्गवास संवत् १६५२ में हो गया। कहना न होगा कि सम्राट अकबर पर जो जैनधर्म की छाप पड़ी थी, वह आचार्य्य श्री ही की कृपा का फल था।

अन्य आचार्य्य

इसी प्रकार संवत् १४३२ में श्रीजिनराजसूरि और संवत् १४७८ में श्रीभद्रसूरि हुए जिन्होंने भण्डारी गोत्र की स्थापना की। सवत् १५७५ में श्रीजिनभद्रसूरि ने श्रावक, श्रामंक और संबड गौत्र की और संवत् १५५२ में श्री जिनहँससूरि ने गेहलडा गौत्र की स्थापना की। इसी प्रकार श्री (रविप्रभ-सूरि ने लोढा, मानदेवसूरि ने नाहर, और जयप्रभुसूरि ने छजलानी और घोडावत गौत्रों की स्थापना की।

उपरोक्त सारे कथन से इस बात का पता सहज ही लग जाता है कि संवत् १००० से लेकर सवत् १६०० के पहले तक ओसवाल जाति का सितारा बहुत तेजी पर था। इसके अन्दर जितने भी आचार्य्य हुए उन्हों ने इस बात की हरचंद कोशिश की कि अन्य धर्मियों को जैनधर्म की दीक्षा देकर ओसवाल जाति के कलेवर को समृद्ध किया जाय। कहना न होगा कि इन आचार्य्यों की दिव्य प्रतिभा और अलौकिक तेज के आगे बड़े २ राजा, महाराजा और सम्राट् तक नत-मस्तक हुए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि ओसवाल जाति के अन्दर जो २ व्यक्ति सम्मिलित हुए वे प्राय सभी उच्च घरानों के प्रतिभाशाली और हर तरह की जोखिम को उठाने वाले साहसी पुरुष थे। यही कारण है कि एक ओर तो आचार्य्य लोग इस जाति के कलेवर को पुष्ट कर ही रहे थे कि दूसरी ओर इसके अन्दर प्रविष्ट होने वाले महापुरुषों ने अपनी प्रतिभा के बल से क्या राजनैतिक क्या धार्मिक क्या व्यापारिक और क्या साहित्यिक इत्यादि सभी प्रकार की लाईनों में घुसकर अपने तथा अपनी जाति के नाम को अमर कर दिया।

ओसवाल जाति का
राजनैतिक और सैनिक महत्व

Oswals in the
Political and military field.

ओसवाल जाति की उत्पत्ति के विषय मे हम गत पृष्ठों में काफी प्रकाश डाल चुके हैं। अब हम इस जाति के राजनैतिक और सैनिक महत्त्व पर कुछ ऐतिहासिक विवेचन करना चाहते हैं। आज कल कुछ लोगों की ओर से इस जाति की राजनैतिक और सैनिक योग्यता पर संदेह प्रकट किया जा रहा है। उन लोगों का यह कहना है कि ओसवाल एक वणिक जाति है, उसका राजनीति एवम् वीरता से कोई सम्बन्ध नहीं। पर वीर राजस्थान का इतिहास डंके की चोट उनके इस वक्तव्य को भ्रमात्मक सिद्ध कर रहा है।

प्रथम तो ओसवाल जाति की उत्पत्ति प्रायः क्षत्रिय जाति से ही हुई है। इसमे उनके संस्कारों ही में वीरता के तत्व न्यूनाधिक रूप से भरे हुए हैं। दूसरी बात यह है कि ओसवालों ने राजस्थान के राज्यों में बड़े २ उत्तरदायित्व के पदों पर काम किया है इसमे राजनीतिज्ञों मे जिन गुणो व विशेषताओं का होना आवश्यक होता है, वे भी इस जाति में पाये जाते है। हाँ, समय के प्रभाव से उनमें इन गुणों का जैसा विकास होना चाहिये वैसा वर्तमान में नहीं हो रहा है। ओसवाल ही क्यों, यही बात राजपूत और अन्य जातियों के लिए भी लागू हो सकती है। पर इसमे यह मान लेना कि ओसवाल लोगों मे राजनैतिक और सैनिक योग्यता का अभाव है, वास्तविकता पर असत्य का पड़दा डालना है। हमें दुःख है कि भारत सरकार ने इस जाति के लोगों के लिए सेना का द्वार बन्द कर रक्खा है। वह उनकी गिनती सैनिक जाति मे नहीं करती। जिस जाति ने महान् से महान् वीर उत्पन्न किये, जिस जाति के सुयोग्य वीरों ने बड़े २ युद्धों मे योग्यता पूर्वक सेना का संचालन किया, जिस जाति ने मध्ययुग की भयंकर अशांति और गड़बड़ी के नाजुक समय में राजस्थान के कई प्रसिद्ध राज्यों की स्थिति को कायम रक्खा, जिस जाति के मुत्सद्दियों एवम् वीरों की राजस्थान के बड़े २ ऐतिहासिक नरपतियों ने—राज्यों के अमर इतिहासकारों ने—मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है और जिन्हें राजा महाराजाओं के दिये हुए खास रुक्कों मे तथा प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थों में राजस्थान के रक्षक कहा गया है हम नहीं समझते कि उनके वंशजों को सैनिक लोगों की श्रेणी मे क्यों बाहर निकाला गया। यह सरासर गलती है और हम भारत सरकार के अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं। जब ब्राह्मणों तक को सेना मे भरती किया जाता है तब ओसवाल जाति ही इसमे क्यों वंचित रक्खी जाती है इसका हमे बड़ा आश्चर्य्य है।

जिन सज्जनों ने इतिहास के मौलिक साधनों का अवलोकन किया है तथा राजस्थान के राज्यों के

पुराने ऐतिहासिक कागज पत्रों को देखा है, उनमे यह बात छिपी हुई नहीं है कि राजस्थान के कई राज्यों की स्थापना में ओसवाल जाति के वीरों एवं मुत्सद्दियों ने बहुत बडा हाथ बटाया है। इतना ही नहीं, जब जब ये राज्य विपत्ति के घोर बादलों मे तथा निराशा के विपाक्त वायुमण्डल मे आवृत्त हुए हैं, उस समय ओस वाल जाति के वीरों एवम् मुत्सद्दियों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ देकर इनकी रक्षा की है। मध्य युग के का नरेशों ने अपने खास रुक्कों मे उनकी अपूर्व सेवाओं को मुक्तकंठ से स्वीकार किया है, और उन्होंने इन्हें राज्य का रक्षक मानने मे तनिक भी संकोच नहीं किया है। अब हम नीचे की पंक्तियों मे आधुनिक ऐतिहासिक अन्वेष णाओं के प्रकाश में यह दिखलाना चाहते हैं कि ओसवाल जाति के मुत्सद्दियों एवं वीरों ने जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, इन्दौर, किशनगढ आदि राज्यों के राजनैतिक और सैनिक क्षेत्रों मे कैसे २ कमाल कर दिखलाये हैं।

जोधपुर

ओसवाल जाति का सब से प्रधान केन्द्र जोधपुर रहा है। इस जाति के लोगों ने जोधपुर राज्य के लिये जो महान कार्य्य किये हैं वे इतिहासवेत्ताओं से छिपे हुए नहीं हैं। जोधपुर नगर के बसाने वाले राव जोधाजी से हमारे पाठक भली प्रकार परिचित हैं। ईसवी सन् की पन्द्रहवीं सदी मे जब राव जोधाजी का उदय हो रहा था, उस समय राव समरोजी और उनके पुत्र राव नरोजी भण्डारी ने उनको बडा सहयोग दिया था। ये दोनों वीर बडे बहादुर और रण कुशल थे। मूलत ये महाप्रतापी चौहान वंश के थे। जैनाचार्य्य ने इनके पितामह या प्रपितामह को जैनधर्म में दीक्षित किया था। जैनधर्म मे दीक्षित होने के कारण ये लोग ओस वाल भण्डारी के नाम से मशहूर हुए। इन प्रसिद्ध वीरों के पूर्वजों के हाथ में बहुत दिनों तक नाडोल नामक सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान का राज्य रहा। समरोजी भण्डारी नाडोल के चौहान-वंश के राजाओं के वंशज थे। जब राव जोधाजी के पिता राव रिणमलजी चित्तौड में मारे गये और राव जोधाजी अपने ७०० सिपा हियों को लेकर मेवाड से चल पडे उस समय उदयपुर के महाराणाजी ने जोधाजी का पीछा करने के लिये एक बडी सेना के साथ चूण्डाजी नामक एक सिसोदिया सरदार को भेजा। रास्ते में जोधाजी की सेना पर कई आक्रमण किये गये, इससे उनके कई वीर सैनिक काम आये। मारवाड पहुँचते २ जोधाजी के पास केवल सात सिपाही शेष रह गये। वे केवल इन्हीं सात सवारों को लेकर जीलवाडे नामक स्थान पर पहुँचे। उस वक्त राव समराजी भण्डारी उस स्थान पर थे। उन्हें जोधाजी का पक्ष न्याययुक्त जंचा। इसलिए उन्होंने राव जोधाजी का साथ देना अपना कर्त्तव्य समझा। उन्होंने राव जोधाजी से अरज की कि आप मारवाड की ओर पधारिये और मैं राणाजी की फौज को रोक रक्खूँगा। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने पुत्र नराजी भण्डारी को ५० सवार देकर राव जोधाजी के साथ रवाना कर दिया। कहने की आवश्यकता नहीं कि राव जोधाजी और

भण्डारी नरा तो मारवाड़ को रवाना हो गये और पीछे से जब महाराणाजी की फौज आई तब राव समरोजी भण्डारी ने अपने तीन सौ वीर सैनिकों के साथ उसका मुकाबला किया। ये लोग बड़ी बहादुरी के साथ लड़े, लेकिन महाराणाजी की फौज बहुत बड़ी थी। इसलिये विजय की माला इनके गले मे न पड़ सकी। राव समरा भण्डारी बड़ी बहादुरी के साथ युद्ध करते हुए अपने तीन सौ सैनिकों के साथ वीर गति को प्राप्त हुए। इस सम्बन्ध मे मारवाड़ मे एक छप्पय प्रसिद्ध है जिसे हम यहाँ पर उद्धृत करते हैं।

राव जोधो मेवाड़ लूट वालियो खागाबल।
चढे राणा दिवाण पीठ लागो कल हड़कल॥
वेलण गे निरणवार रोक ऊभो दल सारो।
मरण काज मुज लाल राज कुशले पधारो।
राव जोधांर कारणे समेर माजी कीध चढ।
चवाण वेट दिवाण मु नाटले नाडूलगढ॥

इस तरह राव समरा भण्डारी के मारे जाने के बाद महाराणाजी की फौजे आगे बढ़ी। उधर राव जोधाजी ज्यों-त्यों कर मण्डोर पहुँचे और वहाँ रहने का विचार करने लगे। परन्तु मेवाड़ी सेना के पीछे लगे रहने के कारण उन्हे अपना यह विचार स्थगित कर देना पड़ा। राणाजी की फौजे पीछा करती हुई मण्डोर पहुँच गई और वहाँ उसने अपना कब्जा कर लिया। राव जोधाजी थली परगने के किसी एक गॉव मे जाकर रहने लगे। इस समय उन्हे बड़ी विपत्ति में अपने दिन काटने पड़े। राव जोधाजी की इस महा-विपत्ति के समय राव नराजी भण्डारी बराबर उनके साथ रहे। सेना संगठन के कार्य मे राव नराजी ने बड़े उत्साह से कार्य किया। राव जोधाजी ने नरा भण्डारी तथा अपने अन्य वीर साथियों की सहायता से सेना इकट्ठी कर तथा उसका संगठन कर मण्डोर पर ई० सन् १४५३ मे आक्रमण कर दिया। महाराणाजी की सेना और राव जोधाजी की सेना मे तुमुल युद्ध हुआ। इस युद्ध में विजय की माला राव जोधाजी और उनके वीर सैनिकों के गले मे पड़ी। मण्डोर पर जोधाजी की विजय ध्वजा उड़ने लगी और महाराणाजी की फौजें वापस लौट गई। इस विजय मे नराजी भण्डारी का बहुत बड़ा हाथ था। वे राव जोधाजी के खास सेनापतियों मे थे। इसके बाद जब राव जोधाजी ने मेवाड़ पर चढ़ाई की, उस समय भी राव नराजी भण्डारी उनके साथ थे और वे बड़ी बहादुरी के साथ लड़े थे। मारवाड़ की ख्यातों मे और भण्डारियों के इतिहास ग्रन्थो मे नराजी भण्डारी की वीरता की प्रशंसा की गई है। राव जोधाजी ने भी इनकी सेवाओं की कद्र की और इन्हे दीवानगी तथा प्रधानगी के उच्च पदों के साथ (१०१०) की जागीर भी प्रदान की।*

*भण्डारियों की ख्यात में लिखा है कि रोहट, दांसलपुर मजल, [illegible] ये मान गॉव जागीर में दिये गये थे

उपरोक्त घटना ऐतिहासिक है और इससे यह पता लगता है कि आधुनिक जोधपुर के संस्थापक महावीर राव जोधाजी पर जब चारों ओर से विपत्ति के बादल मँडरा रहे थे और जब मारवाड राज्य का अस्तित्त्व खतरे में था उस वक्त जिन २ वीरों ने अपने प्राणों की परवाह न कर अत्यन्त प्रामाणिकता के साथ राव जोधाजी का साथ दिया था उनमें राव नराजी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

इसके आगे चल कर भी भण्डारियों का सितारा खूब चमका। संवत १५४४ मे भण्डारी नाथाजी (नारमलोत) को प्रधानगी का प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुआ। इसके कुछ ही समय बाद भण्डारी उगेजी (नाथावत) को प्रधानगी और दीवानगी प्राप्त हुई।

इनके अतिरिक्त भण्डारी पन्नोजी, भण्डारी रायचन्दजी, भण्डारी ईसरदासजी, भण्डारी भानाजी, सिंघवी शाहमलजी आदि सज्जनों ने भी जोधपुर राज्य के बड़े २ पदों पर काम किया और ये वहाँ के राजनैतिक गगन मण्डल में खूब चमके। हमारे कहने का अर्थ यह है कि राव जोधाजी को अपने राज्य-विस्तार के काम में ओसवाल वीरों एवं मुत्सुद्दियों से बडी सहायता मिली। इसके बाद राव गङ्गाजी तथा राव मालदेवजी के समय में भी ओसवालों एवं कुछ पचोलियों ने दीवानगी और प्रधानगी के काम किये। महाराजा उदयसिंहजी एवं महाराजा सूरसिंहजी के राज्यकाल में भी ओसवाल मुत्सुद्दी बडे २ जिम्मेदारी के पदों पर थे।

इसके आगे चलकर महाराजा गजसिंहजी के समय में ओसवाल जाति के मुत्सुद्दी बडे २ पदों पर रहे। संवत् १६७७ में महाराजा गजसिंहजी को मुग़ल सम्राट् की ओर से जालौर का परगना मिला। उस समय उन्होंने सुप्रख्यात इतिहास लेखक मुणोत नेणसीजी के पिता मुणोत जयमलजी को वहाँ का शासक (Governor) बना कर भेजा। उस समय जालौर परगने की वार्षिक आय २८७७८ थी। इन्होंने अपना कार्य बड़ी ही योग्यता के साथ किया। इस पर महाराजा ने प्रसन्न होकर इन्हे हवेली, बाग और बहुत सी ज़मीन पुरस्कार रूप में दी। संवत् १६७८ के भादवा मास में युवराज खुर्रम ने साचौर का परगना महाराजा गजसिंहजी को दिया। वह भी जालौर में शामिल कर लिया गया और दोनों परगनों के शासक (Governor) जयमलजी नियुक्त हुए। उन्होंने वहाँ बडी कुशलता से शासन किया।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं, कई ओसवाल मुत्सुद्दियों में शासन—कुशलता एव वीरता का बड़ा ही मधुर सम्मेलन हुआ था। मुणोत जयमलजी भी इस श्रेणी के पुरुष थे। आप न केवल सफल शासक ही थे वरन् बड़े वीर तथा परोपकारी महानुभाव भी थे। इसके एक दो उदाहरण हम नीचे देते हैं।

जब महाराजा गजसिंहजी का साचौर परगने पर अधिकार हुआ तब ५००० सिन्धियों ने साचोर पर चढ़ाई कर दी। उस समय जयमलजी वहाँ के शासक थे। उन्होंने बडी बहादुरी से उनका

मुकाबला किया। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। सिंधी हारकर भाग छूटे और विजय श्री जयमलजी मुणोत के हाथ लगी। इस प्रकार उ होने और भी कुछ लड़ाइयाँ लड़ी और उनमे उन्हे सफलता प्राप्त हुई। आपके इन्हीं वीरोचित कार्य्यों एव राज्य-प्रबन्ध से खुश होकर तत्कालीन जोधपुर नरेश ने आपको एक खास रुक्का इनायत किया था जो अब भी आपके वंशज हमारे मित्र श्रीयुत वृद्धराजजी मुणोत के पास मौजूद है।

मुणोत जयमलजी न केवल राजनीतज्ञ और वीर ही थे, पर बड़े लोक सेवी भी थे। संवत् १६८७ मे मारवाड़ मे बड़ा भयकर अकाल पड़ा था, उस समय आपने मारवाड़ के भूखे महाजन, सेवक और अन्य दु खी लोगों को एक वर्ष तक मुफ्त अन्न दान देकर उच्च श्रेणी की सहृदयता और परोपकार वृत्ति का परिचय दिया था। अब हम ओसवाल जाति के महत्व को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने वाले एक दूसरे महानुभाव का परिचय देते हैं। यह महापुरुप मुणोत जयमलजी के सुपुत्र मुणोत नेणसीजी थे।

मुणोत नेणसीजी

एक सुप्रसिद्ध अग्रेज इतिहास वेत्ता का कथन है कि महान पुरुपों के कार्यों का वर्णन ही इतिहास का प्रधान हेतु है। महान् पुरुपों की कार्य्यावली ही ऐतिहासिक घटनाएँ होती है। मुणोत नेणसीजी ओसवाल जाति के एक ऐतिहासिक पुरुप थे। भारतीय इतिहास के गगन मण्डल मे इनका नाम तेजी से चमक रहा है। शासन कुशलता, वीरता, साहित्य-प्रेम एवं विद्या-प्रेम के ये मूर्तिमत अवतार थे। हम ओसवाल जाति के राजनैतिक और सैनिक महत्व दिखाने के उद्देश्य से इनके जीवन पर थोड़ा सा प्रकाश डालना आवश्यक समझते है।

मुणोत नेणसी का जन्म संवत १६६७ की मार्गशीर्ष सुदी ४ को हुआ था। सवत १७१४ मे महाराजा जसवन्तसिहजी ने इन्हे अपना दीवान बनाया। उस समय उनकी अवस्था ४७ वर्ष की थी। उन्होने दीवानगी के काम को बड़ी उत्तमता के साथ सचालित किया।

जिस समय का यह जिक्र है उस समय भारतवर्ष मे सम्राट् औरङ्गजेब के अत्याचारों से तग आकर दक्षिण और पजाब के हिन्दुओं मे अद्भुत जागृति की लहर उठ रही थी। राजस्थान मे राजनैतिक पड्यन्त्रों का जाल बिछाया जा रहा था, राजाओं का पारस्परिक वैमनस्य राजस्थान के भविष्य को अधकाराच्छन्न कर रहा था। ऐसे कठिन समय मे राज्य-शासन का सूत्र सञ्चालित करना कितना कठिन होता है, उसको यहाँ बतलाने की आवश्यकता नहीं। महाराजा जसवन्तसिहजी को अक्सर जोधपुर से बाहर रहना पड़ता था। वे औरगजेब के द्वारा कभी किसी प्रान्त के और कभी किसी प्रान्त के शासक (Governor) बनाये जाते थे। कई वक्त औरगजेब की ओर से उन्हे युद्धो पर भी जाना पड़ता था। इस-

उपरोक्त घटना ऐतिहासिक है और इससे यह पता लगता है कि आधुनिक जोधपुर के संस्थापक महावीर राव जोधाजी पर जब चारों ओर से विपत्ति के बादल मँडरा रहे थे और जब मारवाड़ राज्य का अस्तित्व खतरे में था उस वक्त जिन २ वीरों ने अपने प्राणों की परवाह न कर अत्यन्त प्रामाणिकता के साथ राव जोधाजी का साथ दिया था उनमें राव नराजी का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

इसके आगे चल कर भी भण्डारियों का सितारा खूब चमका । सवत १५४८ मे भण्डारी नाथाजी (नारमलोत) को प्रधानगी का प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुआ । इसके कुछ ही समय बाद भण्डारी ऊदोजी (नाथावत) को प्रधानगी और दीवानगी प्राप्त हुई ।

इनके अतिरिक्त भण्डारी पन्नोजी, भण्डारी रायचन्दजी, भण्डारी ईसरदासजी, भण्डारी भानाजी, सिंघवी शाहमलजी आदि सज्जनों ने भी जोधपुर राज्य के बडे २ पदों पर काम किया और ये वहाँ के राजनैतिक गगन मण्डल में खूब चमके । हमारे कहने का अर्थ यह है कि राव जोधाजी को अपने राज्य-विस्तार के कार्य में ओसवाल वीरों एवं मुत्सुद्दियों से बडी सहायता मिली । इसके बाद राव गङ्गाजी तथा राव मालदेवजी के समय में भी ओसवालों एवं कुछ पचोलियों ने दीवानगी और प्रधानगी के काम किये । महाराजा उदयसिंहजी एवं महाराजा सूरसिंहजी के राज्यकाल में भी ओसवाल मुत्सुद्दी बडे २ जिम्मेदारी के पदों पर थे ।

इसके आगे चलकर महाराजा गजसिंहजी के समय में ओसवाल जाति के मुत्सुद्दी बडे २ पदों पर रहे । संवत् १६७७ में महाराजा गजसिंहजी को मुगल सम्राट् की ओर से जालौर का परगना मिला । उस समय उन्होंने सुप्रख्यात इतिहास लेखक मुणोत नेणसीजी के पिता मुणोत जयमलजी को वहाँ का शासक (Governor) बना कर भेजा । उस समय जालौर परगने की वार्षिक आय २८७७१८ थी । इन्होंने अपना कार्य बडी ही योग्यता के साथ किया । इस पर महाराजा ने प्रसन्न होकर इन्हे हवेली, बाग और बहुत सी ज़मीन पुरस्कार रूप में दी । सवत् १६७८ के भादवा मास मे युवराज खुर्रम ने साचौर का परगना महाराजा गजसिंहजी को दिया । वह भी जालौर में शामिल कर लिया गया और दोनों परगनों के शासक (Governor) जयमलजी नियुक्त हुए । उन्होंने वहाँ बड़ी कुशलता से शासन किया ।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके है, कई ओसवाल मुत्सुद्दियों मे शासन—कुशलता एव वीरता का बड़ा ही मधुर सम्मेलन हुआ था । मुणोत जयमलजी भी इस श्रेणी के पुरुष थे । आप न केवल सफल शासक ही थे वरन् बडे वीर तथा परोपकारी महानुभाव भी थे । इसके एक दो उदाहरण हम नीचे देते है ।

जब महाराजा गजसिंहजी का साचौर परगने पर अधिकार हुआ तब ५००० सिन्धियों ने साचोर पर चढ़ाई कर दी । उस समय जयमलजी वहाँ के शासक थे । उन्होंने बड़ी बहादुरी से उनका

मुकाबला किया। बडी घमासान लडाई हुई। सिंधी हारकर भाग छूटे और विजय श्री जयमलजी मुणोत के हाथ लगी। इस प्रकार उन्होंने और भी कुछ लडाइयाँ लडीं और उनमे उन्हें सफलता प्राप्त हुई। आपके इन्हीं वीरोचित कार्य्यों एवं राज्य-प्रबन्ध से खुश होकर तत्कालीन जोधपुर नरेश ने आपको एक खास रुक्का इनायत किया था जो अब भी आपके वंशज हमारे मित्र श्रीयुत वृद्धराजजी मुणोत के पास मौजूद है।

मुणोत जयमलजी न केवल राजनीतज्ञ और वीर ही थे, पर बडे लोक सेवी भी थे। संवत् १६८७ मे मारवाड़ में बडा भयकर अकाल पडा था, उस समय आपने मारवाड़ के भूखे महाजन, सेवक और अन्य दु खी लोगों को एक वर्ष तक मुफ्त अन्न दान देकर उच्च श्रेणी की सहृदयता और परोपकार वृत्ति का परिचय दिया था। अब हम ओसवाल जाति के महत्व को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने वाले एक दूसरे महानुभाव का परिचय देते हैं। यह महापुरुष मुणोत जयमलजी के सुपुत्र मुणोत नेणसीजी थे।

मुणोत नेणसीजी

एक सुप्रसिद्ध अंग्रेज इतिहास वेत्ता का कथन है कि महान् पुरुषों के कार्यों का वर्णन ही इतिहास का प्रधान हेतु है। महान् पुरुषों की कार्य्यावली ही ऐतिहासिक घटनाएँ होती है। मुणोत नेणसीजी ओसवाल जाति के एक ऐतिहासिक पुरुष थे। भारतीय इतिहास के गगन मण्डल में इनका नाम तेजी से चमक रहा है। शासन कुशलता, वीरता, साहित्य-प्रेम एवं विद्या-प्रेम के ये मूर्तिमत अवतार थे। हम ओसवाल जाति के राजनैतिक और सैनिक महत्व दिखाने के उद्देश्य से इनके जीवन पर थोड़ा सा प्रकाश डालना आवश्यक समझते है।

मुणोत नेणसी का जन्म संवत १६६७ की मार्गशीर्ष सुदी ४ को हुआ था। सवत १७१४ मे महाराजा जसवन्तसिहजी ने इन्हे अपना दीवान बनाया। उस समय उनकी अवस्था ४७ वर्ष की थी। उन्होंने दीवानगी के काम को बडी उत्तमता के साथ सचालित किया।

जिस समय का यह जिक्र है उस समय भारतवर्ष में सम्राट् औरङ्गजेब के अत्याचारों मे तंग आकर दक्षिण और पंजाब के हिन्दुओं मे अद्भुत् जागृति की लहर उठ रही थी। राजस्थान मे राजनैनिक षड्यन्त्रों का जाल बिछाया जा रहा था, राजाओं का पारस्परिक वैमनस्य राजस्थान के भविष्य को अधकाराच्छन्न कर रहा था। ऐसे कठिन समय में राज्य-शासन का सूत्र सञ्चालित करना कितना कठिन होता है, उसको यहाँ बतलाने की आवश्यकता नहीं। महाराजा जसवंतसिहजी को अक्सर जोधपुर मे बाहर रहना पडता था। वे औरंगजेब के द्वारा कभी किसी प्रान्त के और कभी किसी प्रान्त के शासक (Governor) बनाये जाते थे। कई वक्त औरंगजेब की ओर से उन्हे युद्धों पर भी जाना पड़ता था। इस-

लिये जोधपुर का शासन भार वे अपने परम विश्वसनीय प्रधान मुणोत नेणसी के सुपुर्द कर निश्चिंत रहते थे। महाराजा ने मुणोत नेणसी के राज्य को प्राय सब अधिकार दे रक्खे थे। यहाँ तक कि उन्हें जागीर तक देने का अधिकार दे रक्खा था। हाँ, समय २ पर महाराजा साहब इनके नाम पर सूचनाएँ अवश्य भेज दिया करते थे जैसा कि महाराजा जसवतसिहजी के निम्नलिखित पत्र से प्रकट होता है।

"सिध श्री महाराजधिराज महाराजाजी श्री जसवंतसिंहजी वचनातु मु० नेनसी दिये सुप्रसाद बाचिजो। अठारा समाचार भला छे। थाहरो देजो। लोक, महाजन, रेत (प्रजा) री डिलासा किजो। कोई किण ही सो जोर ज्यादती करग न पावे। काठोकोरारो जापतो कीजो। कँवर रे डंलरा पान पार्णारा जतन करावजो"।

"अरज दास थाहरी जोधपुर फिर आई। हकीकत मालूम हुई। थे रुगनाथ लखमी दासोत नु पटो दिये गोव ३ सु भलो कीनो"।

उक्त पत्र मारवाडी भाषा मे है। इसमे महाराजा जसवतसिहजी ने अपने दीवान मुणोत नेणसी को लिखा है:—

"लोक, व्यापारी और प्रजा को तसल्ली देते रहना। कोई किसी से जोर ज्यादती न करने पावे सरहद का प्रबन्ध रखना। राजकुमार के खाने पीने की ठीक व्यवस्था रखना। तुमने राठौड रूगनाथ लक्ष्मी दासोत को जो पटा दिया सो ठीक किया"

उल्लेखनीय कार्य्य

मुणोत नेणसीजी ने दीवान पद पर अधिकारारुढ़ होते ही मारवाड मे शान्ति-स्थापन कार्य आरभ किया। बहुत सी बगावतों को दबाकर उन्हों ने प्रजा मे अमन और चैन पैदा किया। प्रजा के सुख दुख की बातें वे बडे गौर से सुनने लगे। उन्होंने महाराजा जसवतसिहजी से निवेदन कर प्रजा पर लगी हुई कई लागें की माफ करवाया। सवत् १७१८ के पौष मास मे मेडता परगने के कोई दस गाँवों के जाट लोगलागें और बेगार का विरोध करने को आपकी सेवा मे उपस्थित हुए। उन्होंने इन्हे आँसू भरी आँखों से अपने दुखों की कहानी कही। सहृदय दीवान मुणोत नेणसी ने उनकी लागें माफ कर दी और तत्काल ही मेडते के हाकिम भण्डारी राजसी को इस सबन्ध का हुक्म भेज दिया। इस प्रकार के उनकी प्रजा प्रियता के इतिहास मे और भी उदाहरण मिलते हैं। उन्होंने अपनी ख्यात में इन बातों का विस्तृत विवरण लिखा है।

मुणोत नेणसी और मर्दुमशुमारी

कुछ लोगों का कथन है कि मर्दुमशुमारी की पद्धति आधुनिक युग का आविष्कार है। पर दर असल यह बात नहीं है। मौर्य्य साम्राज्य में मर्दुमशुमारी की प्रथा मौजूद थी और इसका जिक्र कौटिल्य ने अपने सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्र में किया है। पर जान पड़ता है कि इसके बाद बीच में यह प्रथा विलुप्त हो गई थी। क्योंकि बीच में कहीं भी इस प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता है।

मध्ययुग में मुणोत नेणसी के द्वारा इस प्रथा का आविष्कार देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। आपने एक पंच वर्षीय रिपोर्ट लिखी थी। हमने इसकी हस्तलिपि आप के वंशज जोधपुर निवासी श्रीवृद्धराजजी मुणोत के पास देखी थी। इसमें उन्हों ने मारवाड़ के परगने, ग्राम, ग्रामों की आमदनी, भूमि की किस्म साखों का हाल, तालाब, कुए विभिन्न जातियों के वृत्तान्त आदि अनेक विषयों का बड़ा ही सुन्दर विवेचन किया है। हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए मुथा नेनसी द्वारा कराई गई मर्दुमशुमारी की कुछ तफसील देते हैं।

सवत् १७२० के कार्तिक वदी १० को मेड़ता नगर की मर्दुमशुमारी की गई जिसका परिणाम इस प्रकार है।

२१५८ महाजन—ओसवाल, महेश्वरी, अग्रवाल, खण्डेलवाल

१३७१ ५५१ १६१ ७५

३५४ भोजग, खत्री, भाट, निरतकाली

२८२ ४० २८ ४

६६९ ब्राह्मण

पोहकर्ण, राजगुर, गुर्जरगौड़, पारीख, दाहिमा, सारस्वत

८२ १३ ४२ १४० ५४ ४४

खण्डेलवाल, शिखवाल उपाध्याय, श्रीमाली, गुजराती, गोड, सनाढ्य

७ १११ १०५ १४ ५० ७

५१ कायस्थ—बीसा, दसामाथुर और भटनागर

४० ७ ४

१९१ खत्री राजपूत

१ १९०

२०० मुसलमान—पठान, तरकस बन्ध तोपची, देशवाली, नवीब
३१ १२४ १२६ ८

२१२५ पवनजात

माली, दर्जी, सुनार, नाई हिन्दू, तुर्क, गिरधी, तेली, नीलगर, छीपे, कलाल
१८२ ११४ ९१ ५६ ३४ ६ ६२ १० ५१ ३१

सिकलीगर, ओडवेलदार, कहार, कसारे ठठेरे, लोहार, ग्वाती, तमोली हिन्दू, तुर्क, मोची हिंद
१२ १० ८ २७ ११ ५१ ११ १२ ८४

तुर्क, सावुगर, कुम्हार, जटिया, घोसी, गाछे, तीरगर, बाजदार, लखारे, मरावे, पिजारे,
५३ २० ३४ ३० ३३ १८ ६ ३१ ११ ११ ५७

मिरावट हिन्दू, तुर्क, धोबी हिन्दू, तुर्क, सौदागर, नालबंध, जुलाहे, मुल्तानी, कस्सार
४ ३४ ४२ ६९ २१ ३ २९३ १०५ ४४

खेराटी, तवाय, कुजड़े, डाकोत, चितेरे, खटीक खालगरों, बलाई, जटिया अघोडी रंगे
६ २ १७ ५० ७ ४५ ४५ २६

नगर नायिका, आचार्य्य मरगा।
२१ १

११ फकीर घरवारी

५८६०

संवत १७१९ में जेतारण की मर्दुमशुमारी की गई जिसकी तफसील निम्नलिखित है।

महाजन, ब्राह्मण, फुटगर जाति के कुल घर आबाद थे।
७२० २६८ ८५० १८३८

संवत १७१६ में सोजत की मर्दुमशुमारी की गई थी जिसकी तफ़सील इस प्रकार है।

महाजन, कायस्थ, कादतकार, राजपूत, मुसलमान, ब्राह्मण, पवन मुतफर्रिक ज
७३८ ८ ३०५ १४२ ७२ ३६४ १२५

कुल २२५४ घर आबाद थे।

संवत् १७२१ मे सिवाणा को मर्दुमशुमारी हुई जिसकी तफसील इस प्रकार है।

महाजन,	ब्राह्मण,	सुनार,	कुम्हार,	भोजग,	सुतार,	तुर्क,	पिंजारा	छीपे,	नाई,
८१	२५	१०	२	४	४	४०	१	२	१

ढेढ,	थोरी,	जागरी,	राजपूत,	कुल २८३ घर आबाद थे।
१६	२	१	९५	

सवत् १७२१ मे जोधपुर के हाट में दुकानों की गिनती लगाई तो उस समय कुल ८१५ दुकानें लगी थीं फलोधी की मर्दुमशुमारी की तफसील इस प्रकार है।

महाजन ओसवाल,	माहेश्वरी,	ब्राह्मण (पुष्करणा),	फुटकर जाति
१२१	१२१	२११	२०४

कुल ६५७ घर आबाद थे।

सवत् १७२१ की आश्विन कृष्णपक्ष दशमी को जोधपुर राज्य के परगनों की कुल मर्दुमशुमारी की गई जिसमें प्रत्येक परगने में कुल कितने गॉव हैं उनमें से कितने आबाद है; कितने वीरान है और कितने चारण भाट आदि लोगों को दान में दे दिये गये हैं। इन सब की तफसील नीचे दी जाती है।

नाम परगना	कुल ग्राम	आबाद	वीरान	सांसण *
१ जोधपुर परगना	११६७	८०२।	२२०॥	१४४
२ सोजत "	२४४	१७९	३२	३३
३ जैतारण "	१५२	१०५	२९	१८
४ फलोदी "	६८	४९	१०	९
५ मेटना "	३८४	२९८॥	४०	४५॥
६ सिवाणा "	१४४	९४	२०	३०
७ पोकरण "	८५	४१	२८	१६
	२२४४	१५६८॥।	३५०॥।	२९५॥

* वे गॉव जो चारण भाटों को दान मे दिये गये थे।

उपरोक्त मर्दुमशुमारी के उक्त अंकों से पाठकों को यह ज्ञात हुआ होगा कि मध्य युग के अशान्तिमय जमाने में भी मुणोत नैनसी ने मर्दुमशुमारी करने की आवश्यकता को महसूस किया था। आपकी हस्तलिखित पचवर्षीय रिपोर्ट मे यह भी प्रतीत होता है कि उन्होंने मारवाड़ मे सम्बंध रखने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का भी विवेचन किया है। वह रिपोर्ट क्या है, तत्कालीन मारवाड़ का जीता जागता चित्र है। जिस प्रकार आधुनिक सरकार अपने २ राज्यों की छोटी से छोटी बातों का रिकॉर्ड रखती हैं, उसी प्रकार मुणोत नैनसीजी ने उस जमाने मे भी रक्खा था। यह एक ऐसी बात है जो तत्कालीन एक ओसवाल राजनीतिज्ञ की उच्च श्रेणी की शासन योग्यता पर अच्छा प्रकाश डालती है। इस प्रकार और भी कई प्रकार के कार्य्य मुणोत नैनसीजी ने किये थे जिनका वर्णन आगे चल कर मुणोतों के इतिहास में किया जायगा।

दीवान मुणोत कर्मसीजी

मुणोत नैनसीजी के बाद उनके पुत्र करमसीजी भी बड़े प्रतापी और वीर हुए। जब संवत् १७११ में महाराजा जसवंतसिंहजी सम्राट् शाहजहाँ की ओर से शाहजादा औरंगजेब के खिलाफ सेना लेकर उज्जैन गये थे उस समय मुणोत करमसीजी उनके साथ थे। आप फतियाबाद के युद्ध में बड़ी बहादुरी के साथ लड़े और घायल हुए। संवत् १७१८ में आप महाराजा जसवतसिंहजी के साथ गुजरात की चढ़ाई पर भी गये थे। जब महाराजा को बादशाह की ओर से हाँसी और हिसार के परगने मिले तब अहमदाबाद मुकाम से महाराजा ने आपको वहाँ का शासक (Governor) नियुक्त कर भेजा। इन परगनों की वार्षिक आय करीब १३०००० की थी, और ये गुजरात के सूबे के बदले में मिले थे। मुणोत करमसीजी सवत् १७२२ तक वहाँ के शासक रहे। इसके बाद नागोर के तत्कालीन नरेश रायसिंहजी ने इन्हे अपना दीवान बनाया और सारा राज्य कारोबार इनके सिपुर्द कर दिया।

मुणोत करमसीजी के बाद मुणोत चन्द्रसेनजी भी अच्छे नामांकित हुए। ये किसी तरह दक्षिण में पहुँच गये और पेशवा के पास नौकर हो गये। यहाँ उसके ताबे में ११०० घुड़सवार थे। नाना फड़नवीस इनसे बहुत खुश थे। उन्होंने इन्हें दिल्ली का वकील बनाकर भेजा था। धार और झांसी की किलेदारी पर भी आप मुकर्रर किये गये थे।

इनके अतिरिक्त मेहता कृष्णदास, मेहता नरहरीदास, भण्डारी ताराचन्द, भण्डारी अभयराज, (रायमल) सुराणा ताराचन्द्र आदि ओसवाल सज्जनों ने भी महाराजा यशवंतसिंहजी के जमाने में राज्य की बड़ी २ सेवाएं की थी। इतना ही नहीं, फतेहाबाद के युद्ध में ये सब लोग बड़ी बहादुरी से युद्ध करते हुए मारे गये थे।

महाराजा अजितसिंह और ओसवाल मुत्सद्दी

महाराजा जसवंतसिंहजी के बाद महाराजा अजितसिंहजी जोधपुर के राज्य सिंहासन पर विराजे। कहने की आवश्यकता नहीं कि जिस समय महाराजा अजितसिंहजी का उदय हो रहा था, उस समय भारत के राजनैतिक गगन मण्डल मे विविध प्रकार के षड्यंत्रों की सृष्टि हो रही थी। बादशाह औरंगजेब की अत्याचार पूर्ण नीति ने मुगल साम्राज्य की नींव खोखली कर दी थी। जब तक औरंगजेब जीवित रहा तब तक मुगल सम्राज्य ज्यों त्यों कर कायम रहा, पर ज्योंही उसने इस संसार से कूँच किया त्योंही उसकी नींव हिलने लगी। सम्राट् औरंगजेब के बाद जितने मुगल सम्राट् हुए वे सब कमजोर और राजनीति मे शून्य थे। वजीर और शक्तिशाली राजाओं ने उन लोगों को अपने हाथ की कठपुतलियाँ बना रखा था। महाराजा अजितसिंहजी ने भी मुगाल सम्राटों की इस कमजोरी से खूब फायदा उठाया और वे बड़े शक्तिशाली बन गये। अगर हम यह कहे तो अत्युक्ति न होगी कि भारत की तत्कालीन राजनीति के मैदान में उन्होंने बढे २ खेल खेले। उस समय उनके पास बड़े २ राजनीति धुरधर मुत्सद्दी थे जिनमे भण्डारी खींवसी और भण्डारी रघुनाथसिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन दोनों महानुभावों ने न केवल जोधपुर राज्य की राजनीति ही मे महत्वपूर्ण भाग लिया वरन् अखिल भारतवर्षीय राजनीति के क्षेत्र में भी बहुत बडे मार्के के काम किये। फारसी और अंग्रेजी के इतिहास ग्रन्थों में इनके कार्य्यों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है।

भण्डारी खींवसी

भण्डारी खींवसीजी बडे सफल राजनीतिज्ञ थे। तत्कालीन मुगल सम्राट् पर उनका बड़ा प्रभाव था। मुगल-साम्राज्य की सरकार के पास जब जब जोधपुर राज्य की हित रक्षा का प्रश्न उपस्थित होता था तब तब आप बादशाह की सेवा में हाजिर होकर बड़ी चतुराई के साथ जोधपुर राज्य सम्बन्धी प्रश्नों का फैसला करवा लेते थे। आपको महीनों नहीं वर्षों तक मुगल सम्राट् के दरबार मे रहना पड़ता था।

इतना ही नहीं उस वक्त के कमजोर मुगल सम्राटों को बनाने और बिगाड़ने का काम तक आपको करना पड़ता था। जब संवत १७७६ मे बादशाह फर्रुखशियर को उसके वजीर सैयद बन्धुओं ने मरवा डाला, उस वक्त महाराजा अजितसिंहजी ने राजा रत्नसिंहजी एव भण्डारी खींवसीजी को दिल्ली के लिये रवाना किया। इन्होंने दिल्ली पहुँचकर नवाब अब्दुल्लाखाँ की सम्मति से शाहजादा मुहम्मदशाह को तख्त पर बिठा दिया। फारसी तवारिखें भी भण्डारी खींवसीजी की तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों का सुन्दर विवेचन करती हैं।

भण्डारी खींवसीजी धार्मिक वृत्ति के महापुरुष थे और इसमें आपने अपने बढ़े हुए प्रभाव का उपयोग प्राय प्रजाहित के कार्यों मे किया। उन्होंने मुगल सम्राट् के द्वारा हिन्दुओं पर लगाये जानेवाले जजिया करको माफ करवाया। यह एक ऐसा कार्य्य था कि जिसके कारण चारों ओर उनकी बडी प्रशंसा हुई।

भण्डारी खींवसीजी जोधपुर के सर्वोच्च प्रधान के पद पर अधिष्ठित थे। ये बडे सत्यप्रिय निर्भीक और अपने स्वामी को सच्ची सलाह देनेवाले थे। महाराजा अजितसिंहजी के साथ एक समय मतभेद होने पर इन्होंने अपना पद त्याग दिया। पीछे संवत १७८१ में महाराजा अजितसिंहजी के पुत्र महाराजा अभयसिंहजी के गद्दी नशीन होने पर इन्हें फिर प्रधानगी का उच्च पद प्राप्त हुआ। संवत १७८२ में फिर किसी कारण वश आप प्रधान पद से जुदा हो गये, पर महाराजा अभयसिंहजी आपका इतना सम्मान करते थे कि आपने आपका प्रधानगी का तमाम लवाजमा ज्यों का त्यों कायम रखा। जब इसी साल जेठ बदी ११ को खींवसीजी का देहान्त हुआ तब महाराजा अभयसिंहजी दिल्ली मे थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि खींवसीजी की मृत्यु का संवाद सुनकर वे बडे दुखित हुए। उनके शोक मे महाराज साहब ने एक वक्त अपनी नौबत बन्द रक्खी तथा आप स्वत भण्डारी खींवसीजी के पुत्र अमरसिंहजी के डेरे पर मातम पुरसी के लिए पधारे। उन्होंने अमरसिंहजी को बडी सान्त्वना दी और उन्हें अपने पिता खींवसीजी की जगह अधिष्ठित कर सिरोपाव, पालकी और हाथी पर बैठने का कुरब प्रदान किया।

खींवसीजी ओसवाल जाति के महापुरुष थे। जोधपुर राज्य से उन्हें ऊँचे से ऊँचा सन्मान प्राप्त था। तत्कालीन मुगल सम्राट् भी उनका बडा आदर करते थे। उनका इतिहास बहुत विस्तृत है, इसे हम आगे चलकर भण्डारियों के इतिहास में देंगे। इस वक्त सिर्फ ओसवाल जाति के राजनैतिक महत्व को दिखलाने के लिये हमने उनके एक दो महान् कार्यों का उल्लेख मात्र किया है।

राय भण्डारी रघुनाथसिंह

महाराजा अजितसिंहजी के राज्य-काल में भण्डारी खींवसीजी की तरह ये भी एक महा शक्तिशाली पुरुष हो गये। ये दीवानगी के उच्चपद पर प्रतिष्ठित थे। इनमें शासन-कुशलता और रण-चातुर्य का अद्भुत सम्मेलन हुआ था। इन्होंने गुजरात में महाराजा की ओर से कई युद्धों में बडी कुशलता से सेना सचालन किया था। महाराजा अजीतसिंहजी ने गुजरात मे की गई इनकी बडी २ करतबगारियों से प्रसन्न होकर, इन्हें कई खास रुक्के (Certificates) प्रदान किये थे। इन रुक्कों मे उनके कार्य्यों की बडी प्रशंसा की गई है और गुजरात विजय का बहुत कुछ श्रेय उन्हें दिया गया है।

इसके अतिरिक्त जिस प्रकार खींवसीजी ने शाही दरबार में महाराज की ओर से बा

श्री भण्डारी खीवसीजी, जोधपुर

रायरायन भण्डारी रघुनाथसिंहजी, जोधपुर
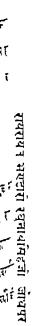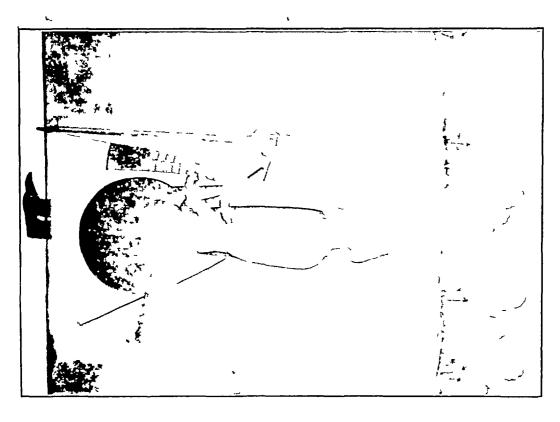
कार्य किये , उसी प्रकार भण्डारी रघुनाथसिहजी ने भी किये । उन्हे कई वक्त जोधपुर राज्य की हित रक्षा के लिये मुगल सम्राट् की कोर्ट मे हाजिर होना पडता था और वे अपने काम को वडी कुशलता से वना लाते थे ।

महाराजा अजितसिहजी का इनकी योग्यता पर वडा विश्वास था । कर्नल वाल्टर साहब का कथन है कि जब महाराजा अजितसिहजी देहली मे विराजमान थे तब भण्डारी रघुनाथसिह ने अपने स्वामी के नाम से कुछ समय तक मारवाड का शासन किया था । यह बात नीचे लिखे हुए दोहे से भी प्रकट होती है ।

"करोडा द्रव्य लुटायो, हौदा ऊपर हाथ ।
अजे दिली रो पातशा राजा तू रघुनाथ ॥"

अर्थात् जिस समय महाराजा अजितसिहजी दिल्ली पर शासन कर रहे थे उस समय मारवाड़ के भण्डारी रघुनाथसिह राज्य के सब कार्यों को करते थे ।

उपरोक्त बात से राय भण्डारी रघुनाथसिहजी का राजनैतिक महत्व स्पष्टतया प्रकट होता है । महाराजा अजितसिहजी ने आपको वडे २ सम्मानों से विभूषित किया था । आपको भी महाराजा साहब ने पालकी, * हाथी आदि पर बैठने का सम्मान प्रदान कर आपकी सेवाओं की कद्र की थी । इसके अतिरिक्त आपको "राय" की सर्वोच्च उपाधि भी प्राप्त थी । राज्य के ऊँचे से ऊँचे सरदारों की तरह महाराजा साहब आपको ताजीम देते थे । एक समय महाराजा अजितसिहजी ने अपने हाथी पर पीछे की बैठक देकर आपका वहुत सम्मान किया था ।

कहने का आशय यह है कि राय भण्डारी रघुनाथसिहजी अपने समय मे जोधपुर राज्य के राजनैतिक गगन मण्डल मे वहुत ही तेजस्विता के साथ चमके थे । इनकी कर्तव्यगारियों का उल्लेख फारसी इतिहास लेखकों ने तथा तत्कालीन मारवाडी ख्यातों के लेखकों ने वहुत ही उत्तमता के साथ किया है । सरकारी कागज पत्रों में भी इनके कामों के जगह २ उल्लेख मिलते है ।

भण्डारी अनोपसिहजी

भण्डारी अनोपसिहजी राय भण्डारी रघुनाथसिह के पुत्र थे । आप वडे वहादुर तथा रणकुशल थे । आप सवत १७६७ मे महाराजा अजितसिहजी द्वारा जोधपुर के हाकिम नियुक्त किये गये । कहने की आवश्यकता नहीं कि उस समय की हुकूमत आजकल की सी शान्तिमय नहीं थी । आन्तरिक इन्तजामी

* उस जमाने मे राजपूताने मे हाथी तथा पालकी का सम्मान सबसे ऊंचा सम्मान माना जाता था ।

मामलों के साथ २ हाकिम को बाह्याक्रमणों से भी अपने नगर की रक्षा के साधन जुटाने पडते थे। दूसरे शब्दों में यों कहिये कि उस समय हाकिम पर सिविल और मिलिटरी (Civil and military) दोनों कामों का उत्तरदायित्व रहता था, भण्डारी अनोपसिंहजी ने अपने इस उत्तरदायत्व का बहुत ही उत्तमता से पालन किया।

भण्डारी अनोपसिंहजी बड़े वीर और अच्छे सिपहसालार थे। जब संवत् १७७२ में मुग़ल सम्राट् की ओर से भण्डारी अनोपसिंहजी को नागौर का मनसब मिला तब महाराजा ने आपको व मेड़ते हाकिम भण्डारी पोमसिंहजी को नागौर पर अमल करने के लिये भेजा। उस समय नागौर पर राठौड़ इन्द्रसिंहजी का शासन था। आप भी सजधजकर इन दोनों हाकिमो का मुकाबिला करने के लिये आगे बढ़े। घमासान युद्ध हुआ जिसके फल स्वरूप इन्द्रसिंहजी की फ़ौज भाग गई और भण्डारी अनोपसिंहजी की विजय हुई। इन्द्रसिंहजी को तब नागौर खाली कर बादशाह के पास देहली जाना पड़ा। नागौर पर संवत् १७७३ के श्रावण कृष्ण सप्तमी को जोधपुर की विजय ध्वजा उड़ाई गई।

संवत् १७७६ में जब बादशाह फर्रुखशियर मारा गया तब महाराजा अजितसिंहजी ने इन्हे फौज देकर अहमदाबाद भेजा था। वहाँ पर भी आपने बड़ी बहादुरी दिखलाई थी। इस प्रकार भण्डारी अनोपसिंहजी ने छोटी-मोटी कई लड़ाइयों में भाग लिया। उन सब के उल्लेख करने की यहाँ पर आवश्यकता नहीं।

भण्डारी रत्नसिंह

राजनैतिक और सैनिक दृष्टि से ओसवाल समाज में रत्नसिंह भण्डारी की गणना प्रथम श्रेणी के मुत्सद्दियों में की जा सकती है। आप बड़े वीर, राजनीतिज्ञ, व्यवहार-कुशल और कर्तव्यपरायण सेनापति थे। मारवाड़ राज्य के लिये इन्होंने बड़े २ कार्य किये। मुग़ल सम्राट् की ओर से संवत् १७९० में मारवाड़ के महाराजा अभयसिंहजी अजमेर और गुजरात के शासक (Governor) नियुक्त हुये थे। तीन वर्ष पश्चात् महाराजा अभयसिंहजी रत्नसिंहजी भण्डारी को अजमेर और गुजरात की गवर्नरीका कार्य सौंप कर देहली चले आये। तब संवत् १७९३ से लगा कर सं० १७९७ तक रतनसिंह भण्डारी ने अजमेर और गुजरात की गवर्नरी का संचालन किया, गवर्नर का कार्य करते हुए इन चार वर्षों में उन्हे अनेक युद्ध करने पडे। कहने की आवश्यकता नहीं कि उस समय देश में चारों ओर अशांति छाई हुई थी। घरू झगड़ों ने मुगल साम्राज्य को पतन के अभिमुख कर रक्खा था। मरहठों का जोर दिन पर दिन बढ़ता जा रहा था। ऐसी विकट परिस्थिति में अजमेर और गुजरात का गवर्नर बना रहना रतनसिंह जैसे चतुर और वीर योद्धा ही का काम था।

भण्डारी पौमसिंह भी अच्छे नामांकित पुरुष हुए। सं० १७७० में जब नवाब सैयद हसनअली मारवाड़ पर चढ़ आया तब आपने जोधपुर के किले की बहुत ही अच्छी तरह किले बन्दी की थी। संवत् १७७६ में भण्डारी अनोपसिंहजी के साथ भण्डारी पौमसिंहजी भी अहमदाबाद गये थे और वहाँ पर आपने अपने रण-चातुर्य्य का अच्छा परिचय दिया।

भण्डारी सूरतरामजी भी महाराजा अभयसिंहजीके समय में बड़े नामांकित पुरुष हो गये हैं। सं० १८०० में जयपुर नरेश जयसिंहजी की मृत्यु के बाद जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी ने भण्डारी सूरतरामजी आलनियावास के ठाकुर सूरजमलजी और रूपनगर के शिवसिंहजी को अजमेर पर अधिकार करने के लिए भेजा। इन्होंने युद्ध कर अजमेर पर मारवाड़ का झण्डा फहरा दिया।

इसी प्रकार महाराजा अजितसिंहजी और महाराजा अभयसिंहजी के राज्य-काल में और भी कई ओसवाल महानुभाव बड़े २ जिम्मेदारी के पदों पर अधिष्ठित हुए और उन्होंने राज्य की बड़ी २ सेवाएँ की।

महाराजा अजितसिंहजी और महाराजा अभयसिंहजी के राज्य काल में होने वाले बड़े २ ओसवाल मुत्सुद्दियों का वर्णन हम गत पृष्ठों में कर चुके हैं। महाराजा अभयसिंहजी के बाद महाराजा रामसिंहजी एवं महाराजा बखतसिंहजी जोधपुर के तख्त पर विराजे। इनके समय में भी ओसवाल मुत्सुद्दियों ने बड़े २ पदों पर काम किया पर इस लेख में हम केवल उन्ही थोडे से महानुभावों का परिचय दे रहे हैं जो राजस्थान के इतिहास के पृष्ठों में अपना नाम चिरस्मरणीय कर गये हैं। इस दृष्टि से उन दोनों नरपतियों के राज्यकाल के ओसवाल मुत्सद्दियों के कार्य्य काल पर प्रकाश न डाल कर हम महाराजा विजयसिंहजी के राज्य-काल में कदम रखते हैं।

महाराजा विजयसिंहजी और ओसवाल मुत्सद्दी

शमशेर बहादुर शाहमलजी—महाराजा विजयसिंहजी के समय में कई बड़े-बड़े ओसवाल मुत्सुद्दी हुए। उनमें सब से पहले हम रावराजा शमशेर बहादुर शाहमलजी लोढा का उल्लेख करते हैं। सम्वत १८४० में आप जोधपुर पधारे। यहाँ आपको फौज की मुसाहिबी (Commander-in-Chief) का प्रतिष्ठित पद मिला। आपने कई युद्धों में सम्मिलित होकर बड़े-बड़े बहादुरी के काम किये। सम्वत् १८४९ में आप गोड़वाड प्रांत में होने वाले एक युद्ध में सम्मिलित हुए। इसी साल जेठ सुदी १२ के दिन महाराजा विजयसिंहजी ने आपके कार्यों से प्रसन्न होकर आपको "रावराजा, शमशेर बहादुर" की

पुश्तैनी पदवी प्रदान की। आपके छोटे भ्राता को भी वंशपरम्परा के लिए राव की पदवी प्रदान की गई। इतना ही नहीं, आपको महाराजा विजयसिंहजी ने १९०००) प्रतिवर्ष के आय की जागीरी और पैरों में सोना पहनने का अधिकार प्रदान किया। आपको हाथी और सिरोपाव का उच्च सम्मान भी प्राप्त हुआ था।

सिंघी जेठमलजी

महाराजा विजयसिंहजी के समय में सिंघी जेठमलजी (जोरावर मलोत) भी नामांकित पुरुष हुए। सम्वत् १८११ में मेडते में मरहठों के साथ महाराजा जोधपुर का जो भीषण युद्ध हुआ था उसमें ये भी बड़ी बहादुरी के साथ लड़े थे। महाराजा विजयसिंहजी ने भी आपकी बहादुरी की बड़ी तारीफ की है। उक्त महाराजा सम्वत १८११ के चैत्र बुदी ७ के रुक्के में सिंघी जेठमलजी को नीचे लिखे समाचार लिख कर उन पर अगाध विश्वास प्रकट करते हैं।

"गढ ऊपर तुरकियो मिल गयो सूँ चैत्र बुदी १ ने बारला हाको कियो मँ निपट मजबूती रायने मार हटाय दिया सूँ चाकरी कठा तक फरमावा"

इसी प्रकार आपने और भी कुछ छोटी-मोटी कई लड़ाइयाँ लड़ीं। सम्वत् १८१७ में चापावत सबलसिंहजी ने २७ सरदारों और ४०० घुड़सवारों सहित जोधपुर राज्य के बिलाड़ा नामक ग्राम पर आक्रमण किया। उस समय सिंघी जेठमलजी बिलाड़े के हाकिम थे। वे सिर्फ ४० घुड़सवारों को लेकर दुश्मन पर टूट पड़े। बड़ा भीषण युद्ध हुआ। बागी सबलसिंह और उसके साथ वाले २२ सरदार मारे गये। जेठमलजी बहुत ही वीरता के साथ युद्ध करते हुए काम आये। आपके लिए यह लोकोक्ति मशहूर है कि 'सिरकट जाने पर भी आप लड़ते रहे।' इसलिए आप जुझार कहलाये। बिलाड़ा तालाब पर आपकी छत्री बनी हुई है जहाँ पर लोग आपकी मूर्ति को जुझारजी के नाम से सम्बोधित कर पूजते हैं। प्रत्येक श्रावण सुदी ५ को उस छतरी पर बड़ा उत्सव होता है।

सिंघी भींवराजजी

महाराजा विजयसिंहजी के शासनकाल में सिंघी भींवराजजी का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। सम्वत् १८२३ की फाल्गुन बुदी १० को महाराजा साहब ने आपको बख्शीगिरी (Commander-in Ch[illegible] के प्रतिष्ठित पद पर अधिष्ठित किया। ये बड़े वीर और रणकुशल सेनाध्यक्ष थे। आपने कई लड़ाइयाँ लड़ीं। आपके वीरोचित कार्यों से प्रसन्न होकर महाराजा साहब ने आपको ६०००) की रेख के गाँव इनायत किये।

संम्वत् १८३४ में जब मरहठों की फौजें ढूँढाड* लूट रही थीं, तब वीरवर भींवराजजी १५००० ना के साथ वहाँ पर भेजे गये। जयपुर और जोधपुर की फौजों ने मिलकर मरहठों को शिकस्त दी। इस द्ध में सिंघी भींवराजजी ने बडी वीरता दिखलाई जिसकी प्रशंसा खुद तत्कालीन महाराजा जयपुर ने की । तत्कालीन जयपुर नरेश ने जोधपुर दरबार को जो पत्र लिखा था, उसमे निम्नलिखित वाक्य थे।

" भीमराजजी और राठौड़ वीर हों और हमारी आम्बेर रहे "

अथात—भींवराजजी और राठोड़ वीरों की ही बदौलत इस समय आम्बेर की रक्षा हुई है।

कहने का अर्थ यह है कि महाराजा विजयसिंहजी के शासन काल मे भी ओसवाल मुत्सुद्दियों ने डे २ कार्य्य किये जिनमे से कुछ के उदाहरण हमने ऊपर की पंक्तियों मे दिये है।

महाराजा मानसिंहजी और ओसवाल

मुत्सुद्दियों की कारगुजारी—महाराजा विजयसिंहजी के बाद संवत् १८५० मे महाराजा भीमसिंहजी ारवाड के राज्य सिहासन पर विराजे। इनके समय का शासन सूत्र भी प्राय. ओसवाल मुत्सुद्दियों के ाथ में था। पर आपके समय में कोई ऐसी घटना नही हुई जिसका इतिहास विशेष रूप से उल्लेख कर ाके। इसलिये हम आपके राज्यकाल को छोडकर महाराजा मानसिंहजी के कार्य्यकाल की ओर अपने पाठकों ा ध्यान आकर्षित करते है।

जिस समय महाराजा मानसिंहजी ने जोधपुर के शासन सूत्र को अपने हाथ में लिया था उस मय सारे भारतवर्ष में अराजकता की ज्वाला सिलग रही थी। मुगल साम्राज्य अपनी अंतिम सांसे ले रहा ा और मरहठा वीर छत्रपति शिवाजी के आदर्शों को छोड कर इधर उधर लूटमार में लगे हुए थे। राजस्थान ा राजागण एकता के सूत्र में अपने आपको बांधने के बजाय एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे। भारत- र्ष की इन बिखरी हुई शक्तियों का फायदा उठाकर ब्रिटिशसत्ता अपने पैर चारों ओर फैला रही थी। हाराजा मानसिंहजी का राज्यकाल एक दु खान्त नाटक है जिसमें हमें हिन्दुस्थान की सारी निर्बलताओं के र्शन होते है जिनसे कि यह भारतवर्ष इस अवस्था को पहुँचा है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसे विकट समय में ओसवाल मुत्सद्दियों ने महाराजा मानसिंह की जो अमूल्य सेवाएं की है वे इतिहास मे सदा चिरस्मरणीय रहेंगी। इन सेवाओं के विषय मे कुछ खने के पूर्व यह आवश्यक है कि तत्कालीन राजस्थान की राजनैतिक परिस्थिति पर भी कुछ प्रकाश ला जाय।

---

* ढूँढाड उस प्रांत का नाम है जहाँ पर वर्तमान में जयपुर राज्य स्थित है।

महाराजा भीमसिंहजी के बाद संवत् १८६१ में महाराजा मानसिंहजी गद्दी पर विराजे। आप महाराजा भीमसिंहजी के भतीजे थे। जिस समय आप गद्दी पर विराजे उस समय महाराजा भीमसिंहजी की एक रानी गर्भवती थी। कुछ सरदारों ने मिलकर उसे तलेटी के मैदान में ला रक्खा। वहीं पर उसके गर्भ से एक बालक उत्पन्न हुआ, जिसका नाम धोकलसिंह रक्खा गया। इसके बाद उन सरदारों ने उसे पोकरण की तरफ भेज दिया पर महाराजा मानसिंहजी ने इस बात को बनावटी मानकर उसका राज्याधिकार अस्वीकार कर दिया।

महाराजा मानसिंहजी ने गद्दी पर बैठते ही अपने शत्रुओं से बदला लेकर उन लोगों को जागीरें दीं जिन्होंने विपत्ति के समय सहायता की थी; इसके बाद उन्होंने सिरोही पर फौज भेजी, क्योंकि वहाँ के राव ने सकट के समय में इनके कुटुम्ब को वहाँ रखने से इंकार किया था। कुछ ही समय में सिरोही पर इनका अधिकार हो गया। घाणेराव भी महाराज के अधिकार में आ गया।

वि० सं० १८६१ में धौंकलसिंहजी की तरफ से शेखावत राजपूतों ने डीडवाना पर आक्रमण किया, परन्तु जोधपुर की फौज ने उन्हें हराकर भगा दिया। इसी बीच में एक नई परिस्थिति उत्पन्न होगई। इतिहास के पाठक जानते है कि उदयपुर के राणा भीमसिंहजी की कन्या कृष्णाकुमारी का विवाह जोधपुर के महाराजा भीमसिंहजी के साथ होना निश्चित हुआ था। परन्तु उनके स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् राणाजी ने उसका विवाह जयपुर के महाराजा जगतसिंहजी के साथ करना चाहा। जब यह समाचार मानसिंहजी को मिला तब उन्होंने जयपुर महाराज जगतसिंहजी को लिखा कि वे इस सम्बन्ध को स्वीकार न करें। क्योंकि उस कन्या का वाग्दान मारवाड के घराने से हो चुका है पर जब जयपुर महाराज ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया तब महाराजा मानसिंहजी ने संवत १८६२ के माघ में जयपुर पर चढ़ाई कर दी। जिस समय ये मेड़ता के पास पहुँचे उस समय इनको पता लगा कि उदयपुर से कृष्णाकुमारी का टीका जयपुर जा रहा है। यह समाचार पाते ही महाराज ने अपनी सेना का कुछ भाग उसे रोकने के लिये भेज दिया। इससे लाचार होकर टीकावालों को वापिस उदयपुर लौट जाना पड़ा।

इस बीच जोधपुर महाराज ने इन्दौर के महाराजा जसवंतराव होल्कर को भी अपनी सहायता के लिये बुला लिया था। जब राठोडों और मरहठों की सेनाएँ अजमेर में इकट्ठी होगई तब लाचार होकर जयपुर महाराज को पुष्कर नामक स्थान में सुलह करना पड़ी। जोधपुर के इन्द्रराजजी सिंघी और जयपुर के रतनलालजी (रामचन्द्रजी) के उद्योग से होलकर महाराज ने बीच में पडकर जगतसिंह की बहिन का विवाह मानसिंहजी के साथ और मानसिंहजी की कन्या का विवाह जगतसिंहजी के साथ निश्चित कर दिया। वि० सं० १८७३ के आश्विन मास में महाराजा जोधपुर लौट आये। पर कुछ ही दिनों के बाद ह

स्वर्गीय श्री सिंघी भींवराजजी फौजबख्शी राज मारवाड़, जोधपुर ।

स्वर्गीय श्री सिंघी अखेराजजी (भींवराजजी के पुत्र) फौजबख्शी, जोधपुर ।

की सिखावट से यह मित्रता भंग हो गई। इस पर जयपुर महाराज ने धोंकलसिंहजी की सहायता के बहाने से मारवाड़ पर हमला करने की तैयारी की। जब सब प्रबन्ध ठीक होगया तब जयपुर नरेश जगतसिंहजी ने एक बड़ी सेना लेकर मारवाड़ पर चढ़ाई कर दी। मार्ग में खंडेले नामक गाव में बीकानेर महाराज सूरजसिंह जी, धोंकलसिंहजी और मारवाड़ के अनेक सरदार भी इनसे आ मिले। पिण्डारी अमीरखाँ भी मय अपनी सेना के जयपुर की सेना में आ मिला।

जैसे ही यह समाचार महाराजा मानसिंहजी को मिला वैसे ही वे भी अपनी सेना सहित मेड़ता नामक स्थान में पहुँचे और वहाँ पर मोरचा बांध कर बैठ गये। साथ ही इन्होंने मरहठा सरदार महाराज जसवंतराव होलकर को भी अपनी सहायतार्थ बुला भेजा। जिस समय होल्कर और अंग्रेजों के बीच युद्ध छिड़ा था उस समय जोधपुर महाराज ने होल्कर के कुटुम्ब की रक्षा की थी। इस पूर्व-कृत उपकार का स्मरण कर होल्कर भी तत्काल इनकी सहायता के लिये रवाना हुए। परन्तु उनके अजमेर के पास पहुँचने पर जयपुर महाराज ने उन्हें एक बड़ी रक्म देकर वापिस लौटा दिया।

इसके बाद गांगोली की घाटी पर जयपुर और जोधपुर की सेना का मुकाबिला हुआ। युद्ध के समय बहुत से सरदार महाराजा की ओर से निकलकर धोंकलसिंहजी की तरफ जयपुर सेना में जा शामिल हुए, इससे जोधपुर की सेना कमजोर हो गई। अन्त में विजय के लक्षण न देख बहुत से सरदार महाराजा को वापिस जोधपुर लौटा लाये। जयपुरवालों ने विजयी होकर मारोठ, मेड़ता, पर्वतसर, नागोर, पाली और सोजत आदि स्थानों पर अधिकार कर जोधपुर घेर लिया। सम्वत् १८६३ की चैत्र वदी ७ को जोधपुर शहर भी शत्रुओं के हाथ चला गया और केवल किले ही में महाराजा का अधिकार रह गया।

इसी समय मारवाड़ के राजनीतिक मंच पर दो महान् कार्य्यकुशल वीर और दूरदर्शी महानुभाव अवतीर्ण होते हैं। ये महानुभाव सिंघी इन्द्रराजजी और भण्डारी गंगारामजी थे। मारवाड़ की यह दुर्दशा उनसे न देखी गई। उन्होंने स्वदेश भक्ति की भावनाओं से प्रेरित होकर मारवाड़ को इन आपत्तियों से बचाने का निश्चय किया। वे उस वक्त जोधपुर के किले में कैद थे। महाराजा से प्रार्थना की कि अगर उन्हें किले से बाहर निकालने की आज्ञा दी जायगी तो वे शत्रु के दाँत खट्टे करने का प्रयत्न करेंगे। महाराजा ने इनकी प्रार्थना स्वीकार करली और इन्हें गुप्त मार्ग से किले के बाहर करवा दिया। इसके बाद ये दोनों वीर मेड़ते की ओर गये और वहाँ पर सेना संगठित करने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने एक लाख रुपये की रिश्वत देकर सुप्रख्यात पिण्डारी नेता अमीरखाँ को अपनी तरफ मिला लिया। इसी बीच बापूजी सिंधिया को भी निमंत्रित किया गया और वे इसके लिए रवाना भी हो गये थे। मगर बीच में ही जयपुरवालों ने उन्हें रिश्वत देकर वापिस लौटा दिया।

इसके बाद सिंघी इन्द्रराजजी भण्डारी, गंगारामजी और कुचामण के ठाकुर शिवनाथसिंहजी ने अमीरखाँ की सहायता से जयपुर पर कूँच बोल दिया। जब इसकी खबर जयपुर महाराज को लगी तब उन्होंने राय शिवलालजी के सेनापतित्व में एक विशाल सेना उनके मुकाबिले को भेजी। मार्ग में जयपुर और जोधपुर की सेनाओं में कई छोटी मोटी लड़ाइयाँ हुई पर कोई अंतिम फल प्रकट न हुआ। आखिर में टोंक के पास फागी नामक स्थान पर अमीरखाँ और सिंघी इन्द्रराजजी ने जयपुर की फौज को परास्त किया और उसका सब सामान लूट लिया। इसके बाद जोधपुरी सेना जयपुर पहुँची और उसे खूब लूटा। जब यह खबर जयपुर नरेश महाराजा जगतसिंहजी को मिली तब वे जोधपुर का घेरा छोड़ कर जयपुर की तरफ लौट चले।

जयपुर की सेना पर विजय प्राप्त कर जब सिंघी इन्द्रराजजी अमीरखाँ के साथ जोधपुर पहुँचे तब महाराजा मानसिंहजी ने उन लोगों का बड़ा आदर किया। आपने इस समय सिंघी इन्द्रराजजी के पास एक खास रुक्का भेजा जिसको हम यहाँ ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं।

"श्री नाथजी"

सिंघवी इंदराज कस्य सुप्रसाद बाँचजो तथा आज पाछली रातरा जेपुर वाला कूचकर गया और मोरचा बिखर गया और आपरे मते सारा कूच कर है इण बात सू थाने बड़ो जस आयो ने थे बडो नामून पायो इण तरारो गसो हुवे ने थे बिखेरियो जणरी तारीफ कठाताई लिखा आज सू थारो दियोडो राज है मारे राठोडा रो बस रेसी ने ओ राज करसी उ थारे घर सू एहसानमद रहसी ने थारे घर सू कोई तरा रो फरक राखसी तो इष्ट धरम सू बेमुख होसी अब थे मारग म हलकारा री पूरी सावधानी राखजो संवत् १८६४ रो भादवा सुद ६

उक्त रुक्का मारवाडी भाषा में है। इसका आशय यह है कि आज पिछली रात को जयपुर वाले कूच कर गये और उनका मोरचा बिखर गया। इस बात में तुम्हें बहुत यश आया और तुमने बड़ा नामून पाया। हम तुम्हारी तारीफ कहाँ तक करें। आज से यह तुम्हारा दिया हुआ राज्य है हमारा राठोडों का वंश जबतक रहेगा और जबतक वह राज्य करेगा तबतक वह तेरे घर का एहसानमद रहेगा। तेरे घर से किसी तरह का फर्क रखेगा तो इष्ट धर्म से विमुख होगा।

इतना ही नहीं जयपुर से वापस लौटने पर सिंघी इन्द्रराजजी को प्रधानगी और जागीरी दी। राज्य शासन का सारा कारोबार इन्हें सौंपा।

स्वर्गीय श्री सिंघी इन्द्रराजजी दीवान राज मारवाड, जोधपुर ।

स्वर्गीय श्री सिंघी फतेराजजी (इन्द्रराजजी के पुत्र) दीवान, राज मारवाड जोधपुर ।

इसके बाद सिंघी इन्द्रराजजी ने १०००० जोधपुर की तथा १० हजार बाहरी फौज लेकर बीकानेर पर चढ़ाई की और उक्त शहर से ५ कोस पर डेरा डाला। तत्कालीन बीकानेर नरेश महाराजा सूरतसिंहजी ने आपसे समझौता कर फौज खर्च के लिये ४ लाख रुपये देने का वायदा किया। इसके बाद सिंघी इन्द्रराजजी अपनी फौज को लेकर जोधपुर चले आये।

इसके बाद सिंघी इन्द्रराजजी ने अपने प्राण देकर भी महाराजा मानसिंहजी को अमीरखाँ के कुचक्र से बचाया और मारवाड़ की रक्षा की। यह घटना इस प्रकार है। जब सिंघी इन्द्रराजजी ने बीकानेर पर फौजी चढ़ाई की थी, तब पीछे से अमीरखाँ ने महाराजा मानसिंहजी से अपनी दी हुई सहायता के बदले में पर्वतसर, मारोठ, डीडवाणा और साभर का परगने अपने नाम पर लिखवा लिये थे। सम्वत १८७२ की आसोज सुदी ८ के दिन अमीरखाँ के कुछ पठान सैनिक जोधपुर के किले पर पहुँचे और वे सिंघीजी से अपनी चढ़ी हुई तनख्वाह और उक्त चारों परगनों का कब्जा माँगने लगे। कहा जाता है कि सिंघी इन्द्रराजजी ने मीरखाँ के आदमियों से महाराजा मानसिंहजी का दिया हुआ चार परगनों का अधिकार पत्र देखने के लिये माँगा ज्योंही उक्त पत्र उनके हाथ आया वे उसे निगल गये। इससे अमीरखाँ के लोग बड़े क्रोधित हुए और उन्होंने सिंघी इन्द्रराजजी को वहीं कत्ल कर डाला। जोधपुर राज्य की रक्षा के लिए इस प्रकार ओसवाल समाज के इस महा सेनानायक और प्रतिभा शाली मुत्सुद्दी का अन्त हुआ।

जब यह समाचार महाराजा मानसिंहजी को पहुँचा, तब वे बड़े शोक विह्वल हुए। उन्होंने इन्द्रराजजी के शव को किले के खास दरवाजे से, जहाँ से सिर्फ राजपुरुषों का शव निकलता है, निकलवाकर उनका राज्योचित सम्मान किया। इतना ही नहीं किले के पास ही उनका दाह संस्कार कराया गया जहाँ अब भी उनकी छत्री बनी हुई है।

सिंघी इन्द्रराजजी की सेवाओं के बदले में महाराजा मानसिंहजी ने उनके पुत्र फतहराजजी को २५ हजार की जागीरी, दीवानगी तथा महाराज कुमार के बराबरी का सम्मान प्रदान किया। इस सम्बन्ध में महाराजा मानसिंहजी ने जो खास रुक्का भेजा था उसकी नकल यह है।

श्री नाथजी

सिंघवी फतेराज कस्य सुप्रसाद वाचजो तथा इन्द्रराज रे निमित्त ११ नोरा ने पायाला दिया ने सरकार री खरखुवा पणे राखणासु मीरखा इन्द्रराज ने काम में लाया ने परगना चार नहीं दिया जणा की कठा ताई तारीफ करां। उनन मारी नासरिया बहुत बहुत दीवी। उणा रे मरणे सु राजने वडो हरज हुओ। परत अब दीवाणगिरी रा रु० २५०००) हजाररो पटो थाने इनायत कियो जावे है सो उणार एवज में काम करजो और थारो कुरब इण

घर म महाराज कुँवार सु ज्यादा रेसी श्रो थारी नौकरियाँ लायक थारे वास्ते का सनक नहीं कियो ने मने आदी मिलला चोथाई तो ढेने खावाला तू कोई तरासु ओर तरे समझमा नहीं थारे तो बाप मे बैठा हाँ कसर पडी तो मारे पटी सवत् १८७२ रा आसोज सुदी १४

सही म्हारी

यह पत्र जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं महाराजा मानसिहजी ने सिघवी इन्द्रराजजी के पुत्र सिघी फतेराजजी को इन्द्रराजजी की मृत्यु के बाद लिखा था। इसका आशय यह है।

"सिघी फतेराज से सुप्रसाद वचना। इन्द्रराज के निमित्त ११ आदमियों को विष के प्याले दिये गये हैं सरकार के खैरख्वाह होने के कारण इन्द्रराज ने अमीरखाँ को चार परगने नहीं दिये जिससे अमीरखाँ ने इन्द्रराज का प्राण ले लिया। इन्द्रराज की इस राजभक्ति के लिये हम कहाँ तक तारीफ करें। उसने हमारी बहुत २ सेवाएँ कीं। उसके मरने से राज्य की बडी हानि हुई है। परन्तु अब तुम्हें दीवानगी और उसके साथ २५०००) का पट्टा इनायत किया जाता है। अब तुम उसके एवज में काम करना। इस घर में तुम्हारा कुरब (दर्जा) महाराज कुमार से अधिकार रहेगा। अगर हमें आधी मिलेगी तो चौथाई तुझे देकर के खावेंगे। तू किसी तरह की दूसरी बात नहीं समझना। तेरे तो बाप हम बैठे हैं। इन्द्रराज के मरने से कसर पड़ी तो हमारे पडी। सवत् १८७२ का आसोज सुदी १४।

महाराजा मानसिंहजी द्वारा दिये हुए उपरोक्त प्रशसा पत्रों से सिघी इन्द्रराजजी की उन महान् सेवाओं पर प्रकाश पड़ता है जो उन्होंने जोधपुर-राज्य की रक्षा के लिये समय २ पर की थीं। सिघी इन्द्रराजजी का नाम मारवाड़ के इतिहास में सदा अमर रहेगा और उन वीरों में उनकी गौरव के साथ गणना की जायगी जिन्होंने स्वदेश रक्षा के लिये अपने प्राणों का बलिदान दिया है। महाराजा मानसिहजी ने इस वीर की प्रशसा में जो दोहे रचे थे, उनमें भी इन्होंने इस महापुरुष की भूरि २ प्रशंसा की है। वे दोहे मारवाड़ी भाषा में हैं जिन्हें हम पाठकों के लिये नीचे देते हैं।

गेट छुटो कर गेड, सिंह जुटो फूटो समद ॥ १ ॥
अपनी भूप अरोड, अहिया तीनु इन्दडा ॥ २ ॥
गेट साकल गजराज, घहैरहो सादुलधीर ॥ ३ ॥

---

* उक्त ग्यारह जनों पर यह सन्देह किया गया था कि उन्होने अमीरखाँ से मिलकर सिघी इन्द्रराजजी को मारने का षड्यंत्र रचा था।

भण्डारी गंगारामजी दीवान, जोधपुर

प्रकटी वाजी वाज, अकल प्रमाणे इन्दडा ॥ ४ ॥
पडता घेरे जोधपुर, अडता दला अथम ॥ ५ ॥
आप डींगता इन्दडा, यें दीयो भुज थम ॥ ६ ॥
इन्दा वे असवारिया, उण चौहट आम्बेर ॥ ७ ॥
धिण मन्त्री जोधाणरा, जैपुर कीनी जेर ॥ ८ ॥
पोडियो किण पोशाक सूं, जगा केडी जोय ॥ ९ ॥
गेह फटे है जीवता, होड न मरता होय ॥ १० ॥
वैरी मारण मीरखा राज काज इन्दराज ॥ ११ ॥
में तो सरणे नाथ के, नाथ सुधारे काज ॥ १२ ॥

हमने सिंघी इन्द्रराजजी के महान् जीवन पर थोडा सा प्रकाश डालने की चेष्टा की है। इससे पाठकों को यह भली प्रकार ज्ञात हो जायगा कि राजस्थान के राजनैतिक और सैनिक रंग मंच पर ओसवाल वीरो ने कितने बडे २ खेल खेले हैं। इन्होंने अपनी वीरता से, अपनी दूरदर्शिता से और अपने आत्मत्याग से मारवाड राज्य को बडे २ संकटों से बचाया है और मारवाड के नरेशों ने भी समय २ पर इनकी बहुमूल्य सेवाओं को मुक्तकंठ से स्वीकार किया है।

भण्डारी गंगारामजी

महाराजा मानसिंहजी के राज्यकाल में सिंघी इन्द्रराजजी की तरह भण्डारी गंगरामजी भी बडे नामांकित पुरुष हुए। गंगारामजी लूणावत भण्डारी थे। संवत् १८६७ के मार्गशीर्ष बदी ७ को इन्हें दीवानगी का उच्चपद प्राप्त हुआ। इसके पहले भी इनके घराने में राज्य के दीवानगी जैसे सर्वोच्च ओहदे रहे थे। ये बडे राजनीतिज्ञ, दूरदर्शी और वीर थे। महाराजा मानसिंहजी को जालौर से जोधपुर लाने में जिन २ महानुभावों का हाथ था उनमें ये प्रधान थे। जयपुर की चढ़ाई में जो महत्वपूर्ण कार्य्य सिंघी इन्द्रराजजी ने किया और वैसा ही इन्होंने ही किया। इन्होंने कई युद्धों में भाग लिया और तत्कालीन मारवाड को बडे २ संकटों से बचाया।

सिंघी गुलराजजी मेगराजजी, कुशलराजजी

इन तीनों सज्जनों ने एक समय में महाराजा मानसिंहजी की बडी २ सेवाएँ की। महाराजा मानसिंह को जालौर के घेरे से सुरक्षित रूप से जोधपुर लाकर उन्हें राज्यासन पर प्रतिष्ठित करने में इनका

बहुत बडा हाथ था । यह बात महाराजा मानसिंहजी ने अपने एक खास रुक्के में स्वीकार की है। हम उस रुक्के की नकल यहाँ पर देते है ।

श्री नाथजी

सिंघवी गुलराज, मेघराज कुशलराज सुखराज कस्य सुप्रसाद वाचजो तथा थे बाबोजी तथा भामेजीरा स्याम धरमी चाकर हो सो हमारे माने जालौर रा किला सुँ शहर पधराया ने जोधपुर रो राज सारो माने करायो श्रो वटगी थारी कदे मूलमा नहीं मारी सदा निरन्तर मरजी रेसी थारी बख्शी गिरी ने सोजत सिवाणा री हाकिमी ने गाव बीजवों वगड ने सुरायतो पटे है जणा मै कदेही तफावत पाडा म ने मारा वसगे हामी थामु ने थारा वस सुँ तफावत करे तथा मैं थाने कैद ही कैद करा तो श्री जलधरनाथ धरम करम बिचे छे श्रो नवासरे राह तावापत्र जूँ इनायेत कियो है थे बडा महाराज तथा माभेजी रा स्याम धरमी हो जणी म श्रणी रुक्का में लिख्यो है जणा में श्राखरी ही श्रोर तरे जणो तो ऐ बिचे लिखी या इष्टदेव लगायत एक बार नहीं सौ बार थे घणी जमाखातर राखजो सवत् १८६० ।'

उपरोक्त पत्र से उक्त महानुभावों की महान् सेवाओं का स्पष्टतया पता लगता है ।

मेहता अखेचन्दजी

मेहता अखेचन्दजी के नाम का उल्लेख भी मारवाड राज्य के इतिहास में कई बार आया है । आपने भी एक समय महाराजा मानसिंहजी की बहुमूल्य सेवाएँ की । जब सवत् १८५७ में तत्कालीन जोधपुर नरेश महाराजा भीमसिंहजी ने मानसिंहजी पर घेरा डालने के लिये जालौर पर अपनी फौजें भेजी और इन फौजों ने जालौर के उस सुप्रसिद्ध किले को जहाँ पर महाराजा मानसिंहजी स्थित थे घेर लिया । उस समय मेहता अखेराजजी ने महाराजा मानसिंहजी की वे सेवाएँ की जिनसे वे इतने दिनों तक अपने विरोधियों के सामने टिक सके । महाराज मानसिंहजी अपने किले में कई दिन तक घिरे रहे । फिर वहाँ पर अन्न और धन की बहुत कमी हो गई । ऐसे विकट समय में मेहता अखेचन्दजी ने एक गुप्त मार्ग द्वारा महाराजा मानसिंहजी की सेवा में रसद और धन पहुँचाना शुरू किया । इससे महाराजा मानसिंहजी को बडी भारी सहायता मिली और वे अधिक दिनों तक अपनी विरोधी फौजों का मुकाबिला कर सके।

जब संवत् १८६० की काती सुदी ४ को महाराजा भीमसिंहजी का स्वर्गवास हुआ और मानसिंहजी के सिवाय राज्य का कोई दूसरा अधिकारी न रहा तब उन्हीं सरदार तथा मुत्सुद्दियों ने जो

घेरा देने मे शामिल थे, महाराजा मानसिहजी से जोधपुर चलकर राज्यासन पर विराजने की प्रार्थना । तदनुसार मार्गशीर्ष वदी ७ को जब महाराजा मानसिहजी किले पर दाखिल हुए तब मेहताअखेचन्दजी उनके साथ थे ।

इसी साल माघ सुदी ५ के दिन जब महाराजा का राजतिलक हुआ तब उन्होंने मेहता अखेचन्द को मोतियो की कठी, कडा, सिरपेच, मन्दील आदि का सिरोपाव तथा ३५००) की रेख का नीमली ामक गाँव उनके नाम पर पट्टे कर उनका सन्मान किया । साथ ही इसी वर्ष मालाई नाम का एक व आपको जागीर में दिया गया ।

जब जयपुर और बीकानेर की फौजों ने जोधपुर को घेर लिया और महाराजा मानसिहजी का अधि र केवल किले मात्र में रह गया, उस समय मेहता अखेचन्दजी ने महाराजा की बडी आर्थिक सेवा की ' घेरा जाने के बाद महाराजा मानसिहजी ने मेहता अखेचन्दजी को जो खास रुक्का दिया, उसमे लिखा है—

"मुहता अखेचन्द करय सुप्रसाद बाचजो तथा थारी बदगी आगे जालोर दोनो घेरा री तो छे ही अबार इण घेरा मे ही बदगी कीवी सो आछी रीत मालम है । ने रुपया ४०००००) चार लाख आसरे कार मे आया सो दिरीज जावसी तू जमा खातर राखे सदा शुभ दृष्टि हे जिणसू सिवाय रहसी संवत् ६४ रा आसोज वदी ९ '

इसके पश्चात जब अमीरखाँ को २ लाख रुपये देने की आवश्यकता हुई तब महाराजा मानसिहजी इन्हे उक्त रुपयों की व्यवस्था करने के लिये निम्न लिखित पंक्तियां लिखीं थीं ।

"अबार दोय लाख अमीरखा ने फौज अटकीजी जो आवा सो अबार को काम थाने किये चाहि- ग आ बन्दगी आद अत ताई भूलसा नही स० १८६४ आसोज वदी १३"

इसी प्रकार अमीरखाँ को पुन रुपया चुकाने की आवश्यता पडने पर महाराजा मानसिहजी मे ता अखेराजजी को एक बार फिर लिखा था जिसकी नकल नीचे दी जाती है।

"हर हुनर कर दोय लाख रो समाधान करणों ओ काम छाती चाटने कीजे तो श्रीनाथजी अबार सहाय करी इसो ध्येन छे जू जालोर दाबियों री जू आ जोधपुर दाबियोंरी सिरारी बन्दगी छे . इत्यादि" । ने का मतलब यह है कि मेहता अखेचन्दजी ने मारवाड राज्य की तन, मन, धन से सहायता पहुँचा कर की बहुमूल्य सेवाएं की है । मारवाड के महाराजा आपकी महत्व के कामों में सलाह लिया करते थे । पुराने के सुप्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार कर्नल जेम्स टाट ने आपके विषय मे अपने मारवाड के इतिहास निम्न आशय के वाक्य लिखे थे ।

"अखेचन्दजी का सामर्थ्य बहुत बढ़ा हुआ था। दरबार को वे ही वे दीखते थे। रियासत
एक समय ये बहुत प्रबल थे।

आपकी इन सब सेवाओं से प्रसन्न होकर महाराजा मानसिंहजी ने आपको संवत् १८
पालकी, सिरोपाव व एक खास रुक्का इनायत कर आपकी प्रतिष्ठा को खूब बढ़ाया था"।

रावराजा रिधमलजी—आप रावराजा शाहमलजी के पुत्र थे। महाराजा मानसिंहजी के स
में आप जोधपुर राज्य के फौज बख्शी हुए। सम्वत् १८८९ मे आप और मुणोत रामदासजी
सवारों को लेकर अजमेर में ब्रिटिश सेना की सहायता करने गये थे। स० १८९८ में इन्हें १६ हजा
जागीरी दी गई। इसके थोड़े ही दिनों बाद आप जोधपुर राज्य के मुसाहिब बनाये गये। महा
मानसिंहजी इनका बड़ा सम्मान करते थे। इन्होंने महाराजा से प्रार्थना कर ओसवाल समाज पर लगने
सरकारी कर को माफ करवाया था। आपने बहुत प्रयत्न करके पुष्करराज के कसाई खाने को बन्द करा
जिसके लिये अब भी यह कहावत मशहूर है—"राव मिटायो रिधमल, पुष्कर रो प्रायश्चित।"

सम्वत् १८९६ में इन्होंने जागीरदारों और जोधपुर दरबार के बीच कुछ शर्तें तय की
व्यवहार अब तक हो रहा है।

महाराजा मानसिंहजी के पुत्र बाल्यकाल ही में गुजर गये थे और उनके दूसरी सन्तान न थी
अतएव राज्य गद्दी के लिये वारिस गोद लाने का विचार होने लगा। इस कार्य में रावराजा रिधमल
बड़ी दिलचस्पी ली और महाराजा तख्तसिंहजी को गोद लाने में आपका खास हाथ था।

महाराजा मानसिंहजी के समय में और भी कई ओसवाल मुत्सद्दियों ने बड़े २ काम किये
सब का विस्तृत विवरण अगले अध्यायों में कौटुम्बिक इतिहास, (Family History) में दिया जायगा

इसके आगे चलकर महाराजा तख्तसिंहजी और महाराजा जसवन्तसिंहजी के जमाने में भी
ओसवाल सज्जनों ने दीवानगिरी और फौज की बक्शीगिरी आदि बड़े २ ओहदों पर बड़ी सफलता के
कार्य किया। इन महानुभावों में मेहता विजयसिंहजी और सींघी बछराजजी का नाम वि
उल्लेखनीय है।

मेहता विजयसिंहजी राजनीतिज्ञ और वीर थे। आपने कई छोटी-बड़ी लड़ाइयों में हि
लिया। सुप्रसिद्ध डूँगरसिंह, जवाहरसिंह को दबाने में आपका प्रधान हाथ था। इस सम्बन्ध में
दरबार ने और तत्कालीन ए० जी० जी० महोदय ने अपने पत्रों में आपकी बड़ी प्रशंसा की है।

सम्वत् १९१४ (ईसवी सन् १८५७) के बलवे का हाल हमारे पाठक भली प्रकार जानते
इस समय भारत मे चारों ओर विद्रोहाग्नि फैल रही थी। मारवाड़ में भी कई जगह यह आग जल

। मारवाड़ के आऊवा नामक स्थान पर विद्रोह हुआ । इस पर मेहता विजयसिंहजी को उक्त स्थान चढ़ाई करने के लिए श्री दरबार का हुक्म हुआ । आपने आज्ञा पाते ही आऊवे पर फौजी चढ़ाई कर । आपकी सहायता के लिये ब्रिटिश सेना भी आ गई । कहने की आवश्यकता नहीं कि आपने वहा विद्रोह को दबा दिया और पूर्ण शान्ति स्थापित कर दी । इसके बाद आपने आसोप, आलणियावास र आदि स्थानों पर चढ़ाई कर वहाँ के ठाकुरों को वश मे किया । इससे आपकी वीरता की चारों तर्फ ी प्रशसा होने लगी ।

आप सिर्फ जोधपुर दरबार ही के द्वारा सम्मानित नहीं हुए । राजस्थान के अन्य नरेश भी पको बहुत मानते थे । सम्वत् १९२० में जयपुर दरबार ने आपको हाथी, सिरोपाव और पालकी प्रदान : आपका बड़ा सन्मान किया ।

सम्वत् १९२१ में आपकी बहुमूल्य सेवाओं से प्रसन्न होकर श्री जोधपुर दरबार ने आपको नागोर ने का राजोद नामक गाँव जागीर में प्रदान किया ।

राजस्थान के नृपतियों के अतिरिक्त तत्कालीन कई बड़े २ अंग्रेजों ने आपकी कार्य-कुशलता की ी प्रशसा की है । जोधपुर के तत्कालीन पोलिटिकल एजण्ट ने आपके लिये लिखा था-"ये एक ऐसे मनुष्य , जिनका निर्भयता से विश्वास किया जा सकता है । मारवाडी अफसरों मे इनके समान बहुत कम आदमी ये जाते है" । इसके बाद ही ईसवी सन् १८६५ की ४ जून को तत्कालीन पोलिटिकल एजण्ट मि० एफ० फ० निकलसन ने लिखा था—

'ये बड़े बुद्धिमान और आदर्श देशी सज्जन है । इन्हे मारवाड की पूरी जानकारी है ।'

मतलब यह कि अपने समय में रायबहादुर मेहता विजयसिंहजी बड़े नामाङ्कित मुत्सद्दी होगये । नका विस्तृत परिचय आगे चलकर आपके इतिहास में दिया जा रहा है ।

आगे चलकर महाराजा जसवन्तसिंहजी और महाराजा सरदारसिंहजी के जमाने मे भी कुछ अच्छे मुत्सद्दी हुए, जिनका विवेचन यथावसर किया जायगा ।

इस लेख के पढ़ने से पाठकों को यह भलीभान्ति ज्ञात हुआ होगा कि जोधपुर राज्य के लिये ोसवाल मुत्सद्दियों ने कितने बड़े २ कार्य किये, राजनीति के मैदान में कितने जबर्दस्त खेल खेले तथा पनी जन्मभूमि की रक्षा के लिये रण के मैदान मे बहादुरी के कितने बड़े २ हाथ बतलाये । मारवाड़ का च्चा इतिहास इनके महान कार्यों के लिये सदा श्रद्धाञ्जली अर्पण करता रहेगा । मारवाड़ के इतिहास ा कोई अध्याय—कोई पृष्ठ—ऐसा नहीं है, जिनमे इनके महान कार्यों की गौरव गाथा न हो ।

उदयपुर

मारवाड की रंगस्थली मे ओसवाल वीरो और राजनीतिज्ञों ने अपने जो अद्भुत कारनामे [illegible]
लाये हैं और राज्य की रक्षा के लिये अपने प्राणो की बाजी लगाकर, स्वार्थ-त्याग के जिन अपूर्व उ[illegible]
को इतिहास में अपनी अमर कीर्ति के रूप मे अंकित कर रहे है उनका थोडा सा परिचय हम ऊपर [illegible]
हैं। आगे हम यह बतलाना चाहते हैं कि ओसवाल नर पुंगवों ने मारवाड की लीला-स्थली के अतिरि[illegible]
भी राजपूताने की भिन्न २ रियासतों में अपने महान व्यक्तित्व को किस प्रकार प्रदर्शित किया था। [illegible]
हम कहना चाहें तो कह सकते हैं कि मारवाड़ के पश्चात मेवाड ही एक ऐसा प्रांत है जहाँ पर ओस[illegible]
जाति ने अपनी दिव्य सेवाओं का खूब प्रदर्शन किया। स्वाधीनता की लीला स्थली वीर प्रसवा मेवाड [illegible]
के इतिहास में ओसवाल जाति के वीरों का नाम भी स्थान २ पर अमर कीर्ति के साथ चमक रहा [illegible]
अपने देश और अपने स्वामी के पीछे अपने सर्वस्व को निछावर कर देने वाले त्याग [illegible]
भामाशाह, सघवी दयालदास, मेहता अगरचद, मेहता सीताराम, इत्यादि महापुरुषों के नाम आज
मेवाड़ के इतिहास में अपनी स्मृति को ताजा कर रहे है। अब नीचे बहुत ही सक्षिप्त में हम इन प्र[illegible]
पुरुषों का परिचय पाठकों के सम्मुख रखने की कोशीश कर रहे हैं।

महाराणा हमीरसिंह और मेहता जालसी

चित्तौड के प्रसिद्ध महाराणा हमीर (प्रथम) उस समय मे अवतीर्ण हुए थे जब कि भारत [illegible]
[illegible]राजनैतिक गगन मण्डल में काले बादल मँडरा रहे थे। चारों ओर अशान्ति का दौर दौरा हो रहा था
राजपूताने के बहुत से राज्य मुसलमानों के शासन मे चले गये थे। ठीक उसी समय मेवाड भूमि [illegible]
खिलजी बादशाह अलाउद्दीन द्वारा फतह की जा चुकी थी। चित्तौड का प्रथम साका समाप्त हो गया था
इस साके मे वीर-प्रसवा मेवाड-मेवाड भूमि के कई नर रत्न अपने अद्भुत पराक्रम और अलौकिक शौर्य [illegible]
परिचय देते हुए, अपने देश अपनी जाति एवम् अपने कुटुम्ब की रक्षा के लिये, अपने प्राणों की आहुति प्र[illegible]
कर चुके थे। केवल केलवाडे के आस पास के प्रान्त को छोड़कर समूचा मेवाड अलाउद्दीन खिलजी [illegible]
अधीनता में जा चुका था और वहाँ का शासन सोनगरा मालदेव कर रहा था। मेवाड निवासी चारों [illegible]
बिखर रहे थे। सगठन का भयकर अभाव हो रहा था। ऐसी भयकर परिस्थिति में महाराणा हमीर[illegible]
को केवल मेवाड–उद्धार की चिन्ता सताया करती थी। वे हमेशा इसी विचार में निमग्न रहा करते थे [illegible]
मेवाड़ भूमि किस प्रकार स्वतन्त्र हो, किस प्रकार उसका उद्धार हो। अस्तु।

गोलेछा जालमचदजी का स्वर्गवास संवत् १९५६ में हुआ। इनके लादूरामजी तथा अगरचद जी नामक २ पुत्र हुए। इनमे लादूरामजी, सेठ बाघमलजी के नाम पर दत्तक गये। आप दोनों सज्जनों का जन्म क्रमशः संवत् १९२६ तथा ३२ मे हुआ। आपका "जयकरणदास बाघमल" के नाम से विजगापट्टम में बैंकिंग व्यापार होता है। वहां आपके चार गाव जागीरी के भी है। लादूरामजी के पुत्र सुगनराज जी और पन्नालालजी तथा अगरचदजी के पुत्र भोमराजजी व्यापार में भाग लेते है। इसी तरह इस परिवार में सागरचंदजी के पौत्र विजयलालजी तथा प्रपौत्र चम्पालालजी, सागरमल सुजानमल के नाम से मेड्रोज स्ट्रीट मद्रास में बैंकिंग व्यापार करते हैं। तथा रूपचन्दजी के पौत्र माणकलालजी लक्ष्मीचन्दजी आदि रूपचन्द छोगमल के नाम से मद्रास में व्यापार करते है। यह परिवार खिचन्द तथा मद्रास प्रांत के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है।

गोलेछा रावतमलजी अगरचंदजी तेजमालजी का परिवार, खिचंद

हम ऊपर बतला चुके हैं कि गोलेछा फतेचन्दजी के ५ पुत्र थे। इनमें तीसरे सुखमलजी थे। इनके बाद क्रमश: चेताजी, पदमसीजी तथा इन्द्रचन्दजी हुए। गोलेछा इन्द्रचन्द्रजी के रावतमलजी, अगरचदजी तथा तेजमालजी नामक ३ पुत्र हुए। गोलेछा रावतमलजी का जन्म संवत् १९१९ में हुआ। १२ साल की वय में ही आप अमरावती चले गये। वहां जाकर आपने नौकरी की। वहां से आप बम्बई गये और तथा वहाँ संवत् १९४४ में गुलराजजी कोठारी के भाग में गुलराज रावतमल के नाम से दुकान की। तथा १९४८ में रावतमल अगरचन्द के नाम से अपना घरू व्यापार आरम्भ किया। आप साधु स्वभाव के पुरुष थे। इस प्रकार मामूली स्थिति से अपनी फर्म के व्यापार को दृढ़ बनाकर आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ। आपके रतनलालजी, दीपचन्दजी, समरथमलजी, हस्तीमलजी, और धनराजजी नामक ५ पुत्र हैं। इनमें सेठ रतनलालजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप शिक्षित तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके यहां "रतनलाल समरथमल" के नाम से कालबादेवी रोड बम्बई में आढ़त का व्यापार होता है। यह फर्म संवत् १९७५ में खुली है।

सेठ अगरचन्दजी का जन्म संवत् १९२३ में तथा स्वर्गवास १९५८ में हुआ। आपके जेठमल जी तथा शंकरलालजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें शंकरलालजी, सेठ तेजमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। और जेठमलजी १९ वर्ष की आयु में १९७१ में स्वर्गवासी हुए। सेठ तेजमलजी संवत् १९७५ में ३४ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। आपने व्यवसाय की उन्नति मे काफी सहयोग दिया था। गोलेछा शंकरलालजी का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप समझदार तथा शिक्षित सज्जन हैं। आप, जेठमलजी के पुत्र मानमलजी के साथ "अगरचन्द शकरलाल" के नाम से मद्रास में बैंकिंग व्यापार करते।

सेठ अमोलकचन्दजी गोलेछा—अपका जन्म संवत् १९५९ मे हुआ। आपकी दुकाने "खुशालचन्द अमोलकचन्द" के नाम से पनरोटी, तिरपापल्लूर, गुडलर, कुणर्जावाडी तथा हैदराबाद के तिरमलगिरी नामक स्थान में है। आप वड़े सज्जन व्यक्ति हैं।

सेठ धरमचन्दजी गोलेछा—अपका जन्म संवत् १९६२ मे हुआ। आप वडे सज्जन तथा शिक्षाप्रेमी पुरुष है। आपकी दुकानें टिडिवरम्, तिरिपापल्लूर तथा पदुमालियम् में है। इन दुकानों पर खुशालचन्द धरमचन्द के नाम से वैंकिंग कारवार होता है। आपने २० हजार रुपयों की रकम "सेठ धर्मचन्द गोलेछा साधारण फण्ड" के नाम से धर्मार्थ निकाली है, इस रकम का उपयोग साधु साध्वी, यात्रा, विद्यादान आदि कार्यों में खर्च होता है। इस फण्ड की तरफ से एक गौशाला, टिडिवरम् मे बनवाई गई है। सेठ पन्नालालजी गोलेछा का स्वर्गवास सवत् १९८४ में हुआ। आपके पुत्र उदयराजजी, सोहनलालजी तथा अमरचन्दजी है। उदयराजजी के पुत्र गुलाबचन्दजी तथा सोहनलालजी के सोभागमलजी है।

सेठ लखमीचन्दजी गोलेछा का परिवार—सेठ लखमीचन्दजी ने अपने नाम पर अपने भतीजे बींजराजजी को दत्तक लिया। आप दोनों सज्जन देश से लगभग सवत् १९०० में नागपुर आये। तथा यहाँ सर्विस की। आपकी होशियारी से प्रसन्न होकर नागपुर दुकान के मालिकों ने इन पिता पुत्रों के जिम्मे एक तोपखाने का बेङ्किग व्यापार सौंपा, तथा पूँजी की सहायता दी। फलत. इन वंधुओं ने सिकंदराबाद तथा बल्लारी में दुकानें खोलीं। तथा सवत् १९२७ में लखमीचन्द बींजराज के नाम से बंगलोर में भी दुकान की गई। सेठ बींजराजजी गोलेछा ने अपने मृत्यु के पूर्व एक वख्शिश नामा किया। जिसमे अपनी पत्नी को १० हजार रुपया और अपने भतीजे खुशालचन्दजी को २२ हजार की रकम दी। इस प्रकार उदारता पूर्वक रकम विभाजित कर गोलेछा बींजराजजी का सवत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। आपके नाम पर मुन्नीलालजी के पहले पुत्र फतेचन्दजी दत्तक आये। आपकी वीरचन्द फतेचन्द के नाम से बंगलोर में प्रतिष्ठित फर्म थी। आपका स्वर्गवास सवत् १९५९ मे ३८ साल की वय में हुआ। आपके स्मरणार्थ बंगलोर में एक छतरी बनवाई गई है। इन्होंने अपने जीवन में कई प्रतिष्ठा पूर्ण कार्य्य किये। आपके सालमचन्दजी तथा पेमराजजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ सालमचन्दजी—अपका जन्म सवत् १९४४ में हुआ। आपका व्यापार संवत् १९८४ तक बगलोर में रहा। इस समय आप गुडलर न्यू टाउन में निवास करते हैं। आपके छोटे भाई पेमराजजी की मृत्यु करीब १९ साल की आयु में १९६७ में हुई। इसी साल इन बंधुओं का कारबार अलग २ हुआ। इस समय पेमराजजी के पुत्र नेमीचन्दजी हैं।

इस परिवार की खिचन्द, फलोदी में अच्छी प्रतिष्ठा है। आप लोगों ने संवत् १९८० में एक लायब्रेरी स्थापित की है। जिसमें २ हजार ग्रन्थ हैं। इसी तरह एक जैन कन्यापाठशाला आपकी ओर से यहा चल रही है।

सेठ अमरचंद अगरचंद गोलेछा, चांदा

इस परिवार का मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले गोलेछा गौत्र के सज्जन हैं। देश से व्यापार के निमित्त सेठ अमरचंदजी गोलेछा, नागपुर आये, और वहा व्यवसाय शुरू किया, उस समय चांदा (उर्फ चादपुर) के गौड राजा का आगमन नागपुर में हुआ करता था, उस समय गौड राजा ने सेठ अमरचन्दजी गोलेछा को पतिष्ठित व्यापारी समझ कर अपनी राजधानी में दुकान खोलने को कहा फलत. सेठ अमरचन्दजी गोलेजा ने करीब ९० साल पहिले चादा में गल्ले की खरीदी फरोख्ती तथा आढ़त की दुकान की। सेठ अमरचंदजी के पुत्र अगरचदजी गोलेछा ने इस दुकान के व्यापार और सम्मान को विशेष बढ़ाया, आपके पुत्र गोलेछा सिद्धकरणजी का जन्म सवत् १९३३ की माघ वदी ११ को हुआ। गोलेछा सिद्धकरणजी का धार्मिक जीवन विशेष प्रशसनीय तथा उल्लेखनीय है। सी० पी० के सुप्रसिद्ध तीर्थ भांदक में मन्दिर तथा धर्मशाला का निर्माण करवाने में आपने बहुत सहायता पहुँचाई। भारत सरकार ने आपको सारे देश के लिय आर्मस एक्ट माफ किया था। इस प्रकार सी० पी० तथा बरार के ओसवाल समाज में नाम एवं यश प्राप्त कर सवत् १९८९ की भादवा वदी ८ को आपका स्वर्गवास समाधि-मरण से (पदमासन लगाये हुए) हुआ। आपके पुत्र चैनकरणजी गोलेछा का जन्म संवत् १९६० में हुआ, आप अपने पिताजी के बाद भादक तीर्थ कमेटी के प्रेसिडेंट हैं तथा सन् १९२७ से ३० तक चादा म्यु० के मेम्बर रहे हैं। आपकी दुकान पर चांदा में ग्रेन शीड्स का व्यापार, लेनदेन, मालगुजारी तथा कमीशन का काम होता है। आपके वृटिश हद में २ तथा मुगलाई में ३ गाँम जमीदारी के हैं। चादा में आपकी दुकान प्रधान मानी जाती है।

सुन्दरलालजी गोलेछा, बी० ए० एल० एल० बी०, बालाघाट

इस परिवार के पूर्वज सेठ उदयचदजी तथा गुलाबचन्दजी बीकानेर से संवत् १८७५ में जबलपुर आये। यहाँ आकर इन भाइयों ने सराफी तथा कपड़े का व्यापार शुरू किया। इनके छोटे भ्राता गुलाबचन्दजी ने व्यापार में लाखों रुपये कमा कर इस परिवार की जमीदारी मकान बंगले आदि सम्पत्ति

गोलेछा हरदत्तजी का खानदान, फलोदी

इस खानदान का खास निवास फलोदी है। सेठ हरदत्तजी गोलेछा के ५ पुत्र हुए, कस्तूरचन्दजी, निहालचन्दजी, बनेचदजी, कपूरचदजी, तथा खूबचदजी। इनमें से कपूरचदजी के कोई सतान नहीं हुई। गोलेछा कस्तूरचन्दजी और निहालचन्दजी फलोदी से हैदराबाद (दक्षिण) गये, तथा वहा चादी सोना गिरवी और जवाहरात का कारबार आरभ किया। कस्तूरमलजी का स्वर्गवास सवत् १९१५ में और निहालचन्दजी का संवत् १९२२ में हुआ। सवत् १९२२ में इन दोनों भ्राताओं का कारबार अलग २ हो गया।

गोलेछा कस्तूरचन्दजी का परिवार—गोलेछा कस्तूरचन्दजी के हरकचदजी तथा छोटमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनके गोलेछा छोटमलजी के हीरालालजी, सुजानमलजी, बिशनचदजी, हस्तीमलजी एवम् लक्ष्मीलालजी नामक पाँच पुत्र हुए। गोलेछा सुजानमलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९३८ में हुआ। आपके पुत्र गोलेछा सोभामलजी वर्तमान है।

गोलेछा सोभागमलजी—आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ। सवत् १९६३ से आपने फलौदी के सार्वजनिक और सामाजिक कामों में सहयोग देना आरम्भ किया। आप बड़े विचारवान, हिम्मतवर और विरोधों की परवाह न कर मुस्तैदी से काम करने वाले व्यक्ति है। सम्वत् १९६३ में आपने फलौदी में जैन श्वेताम्बर मित्र मण्डल नाम की सस्था भी कायम की थी। सन् १९१५ से ३२ तक आप स्थानीय म्युनिसिपेल्टिी के लगातार मेम्बर रहे। आपने फलौदी मे, रेल, तार स्कूल, म्युनिसिपेलिटी आदि के स्थापन होने में उद्योग किया। इस समय आप स्थानीय पाजरापोल व सिंह सभा के ज्वाइण्ट सेक्रेटरी हैं, आपके दत्तक पुत्र भँवरमलजी ओसिया बोर्डिङ्ग में मैट्रिक का अध्ययन कर रहे हैं।

गोलेछा निहालचन्दजी पूनमचन्दजी का परिवार—स० १९२२ में सेठ निहालचन्दजी के पुत्र पूनमचन्दजी अपना स्वतत्र कार बार करने लगे। गोलेछा पूनमचदजी के समय मे धधे को विशेष उन्नति मिली, इनका शरीरावसान सवत् १९३७ में हुआ। इनके पुत्र फूलचन्दजी गोलेछा हुए।

गोलेछा फूलचन्दजी—इनका जन्म सवत् १९२५ की कातिक वदी १० को हुआ। इन्होंने व्यापार की उन्नति के साथ २ बहुत बड़ी २ रकमें धार्मिक कार्यों और यात्राओं के अर्थ लगाकर अपनी मान व प्रतिष्ठा की विशेष वृद्धि की। संवत् १९४९ तथा ५८ में आपने जेसलमेर तथा सिद्धाचलजी के सघ में १० हजार रुपये खरच किये इसी तरह ५ हजार रुपया समोसरण की रचना मे लगाये। ९ सालों तक सिद्धाचलजी की ओली का आराधन किया। इसी तरह आपने फलोदी के रानीसर तालाब के पश्चिमी हिस्से का घाट बनवाया, फलोदी पाजरा पोल, ओशियाँ जीर्णोद्धार, कुलपाक तीर्थ (हैदराबाद) के जीर्णोद्धार, और वर्द्धमान जैन बोर्डिंग हाउस के स्थापन में बड़ी २ मददें दीं। इसी तरह अनेकों धार्मिक कामों में आपने हजा

में वृद्धि की। गोलेछा उदयचन्दजी के गोडीदासजी तथा गोलेछा कस्तूरचन्दजी के माखनलालजी नामक पुत्र हुए। इन दोनों बधुओं का कारबार सवत् १९२२ में अलग २ हुआ। गोलेछा गोडीदासजी का जन्म संवत् १९०० में हुआ। आपने भी व्यापार में तथा इज्जत में अच्छी उन्नति हासिल की। जबलपुर के ओसवाल समाज में आपकी पहिली दुकान थी। आपको दरबारी का सम्मान प्राप्त था। आपका स्वर्गवास संवत् १९४६ में हुआ। आपके पुत्र झुनझुनलालजी का जन्म संवत् १९२८ में हुआ।

गोलेछा झुनझुनलालजी—आप जबलपुर के नामी रईस थे। आप २० सालों तक म्यु० मेम्बर रहे। इसी तरह डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर तथा वाइस प्रेसिडेण्ट भी रहे। दरबारी सम्मान आपको भी प्राप्त था। सन् १९२८ के दिसम्बर मास में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सुन्दरलालजी का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आपने १९२० में बी ए तथा १९२९ मे एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की। इसके बाद आप ३ सालों तक जबलपुर में वकालत करते रहे। और इधर २ सालों से आप बालाघाट में वकालत करते हैं। आप बडे सरल स्वभाव के मिलनसार सज्जन है। जबलपुर में आप का खानदान बहुत पुराना तथा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ जेठमल रामकरण गोलेछा, नागपूर

इस परिवार के पूर्वज सेठ हरकचंदजी गोलेछा अपने मूल निवास स्थान बीकानेर से सवत् १८९५ में कामठी आये। तथा यहाँ गुमाश्त गिरी और व्यापार किया। इनके पुत्र जेठमलजी का कंट्राक्टिंग लाइन में अच्छा अनुभव था। आपने संवत् १९१७ मे कामठी से ३ मील की दूरी पर कैनहाल ब्रिज नामक विशाल ब्रिज बनाने का कंट्राक्ट लिया। आप नागपुर से जबलपुर तक मेल कार्ट दौडते थे। इसी प्रकार आपने आर्मी के ट्रेझरर तथा कंट्राक्टर का काम भी सचालित किया था। सवत् १९२८ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र सेठ रामकरणजी गोलेछा ने सवत् १९३० में "जेठमल रामकरण" के नाम से दुकान स्थापित की। तथा आप सन् १८७२ में बगाल बैंक के ट्रेझरर हुए। आप सवत् १९५१ में स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर सेठ मेघराजजी बीकानेर से दत्तक आये।

सेठ मेघराजजी गोलेछा का जन्म सवत् १९४९ में हुआ। आप सवत् १९६१ में इस फर्म पर दत्तक आये सन् १९२७ तक आपके पास इम्पीरियल बैंक की ट्रेझरर शिप रही। इसके बाद आपने नागपुर सिटी, सदर, मऊ छावनी तथा जयपुर, जोधपुर और साँभरलेक के पोस्ट की ट्रेझरी के ५ साल के लिये कंट्राक्ट लिये। जो इस समय भी आपके पास हैं। आपने अपने व्यापार को अच्छा बढ़ाया है। आपके ६ पुत्र है। जिनके नाम क्रमशः अभयराजजी, सिरेमलजी, उमरावमलजी, सिरदारमलजी, तथा रतनचन्दजी और विनयचन्द हैं। इनमें अभयराजजी व्यापार में भाग लेते हैं। इनकी आयु २० साल की है।

स्व० सेठ फूलचन्दजी गोलेछा, फलोदा.

सेठ नेमीचन्दजी गोलेछा, फलोदी.

सेठ सोभागमलजी गोलेछा, फलोदा.

स्वर्गीय गुलाबचन्दजी गोलेछा, फलोदी.

श्री गुमानचन्दजी गोलेछा का परिवार
(मेसर्स आसकरण-गणेशमल पनरोटी)

इस खानदान के मालिकों का मूल निवास स्थान फलौदी (मारवाड) का है। आप श्वेताम्बर समाज के मन्दिर आम्नाय को माननेवाले हैं। इस परिवार में श्री दुलीचन्दजी हुए।

गोलेछा दुलीचन्दजी के पुत्र गुमानचन्दजी के बहादुरचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनके तीन पुत्रों में से यह खानदान धनसुखदासजी का है। धनसुखदासजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम दीपचन्दजी, रतनलालजी, लक्ष्मीलालजी और जमनालालजी था। आपका जन्म क्रमश संवत् १९१५, १९१८, १९२४ तथा १९३२ में हुआ।

गोलेछा दीपचन्दजी बड़े सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आप संवत् १९४५ में फलौदी से अमरावती गए और वहाँ से संवत् १९५४ में आप बम्बई चले गये और वहाँ पर दीपचन्दजी गोलेछा के नाम से कॉटन मार्केट के व्यवसाय को करने लगे। आपके केशरीचन्दजी और किशनलालजी नामक दो पुत्र हैं। इनमें से किशनलालजी रतनलालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। रतनलालजी अजमेर में धनसुखदास रतनलाल नामक फर्म के मालिक थे। आपका संवत् १९२७ में अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया। केशरीचन्दजी का जन्म सवत् १९३४ का है। आप संवत् १९६३ से बम्बई स्वतन्त्र व्यापार करने लग गये हैं। आपसे संवत् १९८२ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र चम्पालालजी और पानमलजी अपना कार बार बम्बई में चला रहे हैं।

गोलेछा किशनलालजी का जन्म सवत् १९३७ का है। प्रारम्भ में आप दीपचन्दजी के साथ बम्बई में व्यापार करने लगे। तदनतर सवत् १९६३ में आपने अलग होकर स्वतंत्र दुकान स्थापित की। संवत् १९८६ में आपने पनरोटी में आकर वैङ्किग का व्यवसाय चालू किया। आप बडे सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आप फलौदी में अपनी समाज में बड़े अग्रसर और मोअज्जीज व्यक्ति माने जाते हैं। आपके हृदय में बिरादरी की सेवा के भाव बहुत अधिक है। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम आसकरणजी गणेशमलजी और जसराजजी हैं। आपकी फर्म का नाम पनरोटी में "आसकरण गणेशमल" पड़ता है।

जौहरी हमीरमलजी गोलेछा, जयपुर

इस परिवार के पूर्वज जौहरी जवाहरमलजी लगभग एक शताब्दी पूर्व बीकानेर से, जयपुर आए और सेठ सदासुखजी ढड्ढा के यहाँ सर्विस की। आपके पुत्र दुलीचन्दजी भी ढड्ढा फर्म पर मुनीमात

करते रहे। इन दोनों सज्जनों ने जयपुर के व्यापारिक समाज में अच्छा नाम पाया। सेठ दुलीचन्दजी का सवत् १९१० के जेठ मास मे स्वर्गवास हो गया। आपके यहाँ सेठ हमीरमलजी बीकानेर मे सवत् १९४९ मे दत्तक आये। आप सवत् १९६९ से पन्ना का व्यापार करते है। यहाँ से पन्ना तय्यार करवा कर विदेशों में तथा भारत मे भेजते है। इस व्यापार में आपने अच्छी सम्पत्ति व प्रतिष्ठा उपार्जित की है इसके साथ २ धार्मिक कार्मों की ओर आपका बडा लक्ष है। एवं इस काम में आपने हजारों रुपये व्यय किये है। आप स्थानीय जैन श्राविकाश्रम तथा कन्या पाठशाला के कोषाध्यक्ष है। आप जयपुर के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के है। आपने अपने यहाँ दानमलजी गोलेछा के पुत्र मनोहरमलजी को दत्तक लिया है। आप भी कार बार मे भाग लेते है।

सेठ भैरोंदान पूनमचन्द गोलेछा, कलकत्ता

इस परिवार के पूर्व पुरुष तोल्यासर (बीकानेर) के निवासी थे। तोल्यासर में सेठ सुखलालजी तथा उदयचन्दजी हुए। आप दोनों भाई २ थे। आप लोगों ने वहाँ किराना एवम् कपडे का थोक व्यापार किया। आप लोग बीकानेर भी अपना काम काज करते रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। सेठ सुखलालजी के कोई पुत्र न था। सेठ उदयचन्दजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश सेठ नेणचन्दजी एवम् सेठ सागरमलजी थे। आप दोनों भाई भी वहीं बीकानेर तथा तोल्यासर में व्यापार करते रहे। सेठ नेणचन्दजी सेठ सुखलालजी के यहाँ दत्तक गये। आप लोगों का भी स्वर्गवास हो गया। सेठ नेणचन्दजी के एक पुत्र है जिनका नाम सेठ भैरोंदानजी है।

सेठ भैरोंदानजी—आपका जन्म सम्वत् १९३० में हुआ। आप केवल १५ वर्ष की अवस्था में सवत् १९४५ में कलकत्ता व्यापार के लिये गये। तथा यहाँ आकर आपने पहले खेतसीदास तनसुखदास सरदार शहर वालों की फर्म में रोकड़ तथा अदालत वगैरह का काम किया। यह काम आप सम्वत् १९६० तक करते रहे। इसमें आपने बहुत उन्नति की। आपकी ईमानदारी, होशियारी एवम् व्यापार संचालनता को देख कर मालिक लोग आप पर हमेशा प्रसन्न रहा करते थे। आप बड़े होशियार एवम् समझदार सज्जन है। आपने खेतसीदास तनसुखदास के यहाँ से काम छोड़ते ही अपनी निज की फर्म उपरोक्त नाम से गणेशभगत के कटले में स्थापित की। तथा वहाँ कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप डायरेक्ट विलायत से पेचक मँगवाते थे तथा थोक व्यापारियों को बेचते थे। इस व्यापार में भी आपने अपनी व्यापार कुशलता का परिचय दिया एवम् बहुत ज्यादा उन्नति की। यह काम सन् १९२० तक करते रहे। इसके बाद आपने कपड़े का काम बन्द कर दिया। एवम् बंगाल के प्रसिद्ध

मा इद दो लाख रुपये लगाये। आप जैन श्वेताम्बर मित्र मडल के प्रेसिडेंट थे। संवत् १९७२ मे आपने 'निहालचन्द नेमीचन्द' के नाम मे सोलापुर मे कपडे व सराफे की दुकान खोली। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक महत्वपूर्ण धार्मिक जीवन विताते हुए सवत १९६९ की जेठ सुदी १४ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके गोलछा नेमीचदजी तथा गोलेछा गुलाबचदजी नामक २ पुत्र हुए।

गोलेछा नेमीचन्दजी—आपका जन्म सवत् १९४७ में हुआ फलोदी के ओसवाल समाज मे आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते है आपके पुत्र मनोहरचन्दजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया है। आप उत्साही युवक हैं। तथा सोलापुर जैन यूथलीग के प्रेसिडेंट है। इनसे छोटे रतीचदजी जोधपुर हॉई स्कूल में तथा मगलचन्दजी फलोदी में पढ़ रहे है।

गोलछा गुलाबचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५५ में हुआ था। आप वडे विद्या प्रेमी तथा होनहार नवयुवक थे। आपने फलोदी में एक जैन लायब्रेरी का स्थापन भी किया था, दुर्भाग्यवश २१ वर्ष की अल्पायु में आपका शरीरावसान हो गया। आपके पुत्र हीराचन्दजी, तिलोकचदजी एवं अनोपचन्दजी इस समय जोधपुर में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सेठ जीवराज अगरचन्द गोलेछा, फलोदी

गोलेछा बहादुरचन्दजी के जीवराजजी वदनमलजी और सतीदानजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें जीवराजजी का जन्म लगभग सवत् १९११।१२ में हुआ।

गोलेछा जीवराजजी व्यवसाय के निमित्त फलौदी से बम्बई की ओर गये। संवत् १९४० के लगभग आपने बम्बई में दुकान खोली। सवत् १९५९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके अगरचन्दजी, जोगराजजी, रतनचन्दजी और लालचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से अगरचन्दजी का स्वर्गवास सवत् १९७५ में तथा लालचन्दजी का उसी साल आसोज सुदी ७ को (इन्फ्ल्युएन्झा में) हुआ। गोलेछा अगरचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी है।

गोलेछा जोगराजजी का जन्म सवत् १९४६ में हुआ। आपके हाथों से दुकान के कारबार और इज्जत को तरक्की मिली। सवत् १९८८ की फागुन सुदी ३ के दिन आपने जैसलमेर का सघ निकाला। आपके छोटे भ्राता रतनचन्दजी का जन्म सवत् १९४८ में हुआ।

गोलेछा गुलाबचन्दजी, शिक्षाप्रेमी, शातप्रकृति तथा उत्साही नवयुवक है। इधर २ सालों से आप फलौदी म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर है। आपका कुटुम्ब फलौदी के ओसवाल समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। इस परिवार की बम्बई में विट्ठलवाड़ी मे जीवराज अगरचन्द के नाम से तथा उटकमंड में जोगराज समरथमल के नाम से दुकानें है जिन पर बेङ्किग और कमीशन का काम होता है।

स्व॰ भैरोंदानजी गोलेछा (भैरोदान पूनमचन्द) बीकानेर

कुँवर पूनमचन्दजी S/o भैरोंदानजी गोलेछा

कुँवर पूनमचन्दजी S/o भैरोंदानजी गोलेछा
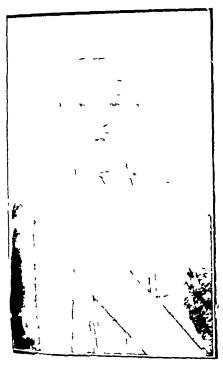
जौहरी हमीरमलजी गोलेछा, जयपुर.

सेठ मूलचन्द सोभागमल गोलेछा, फलोदी

गोलेछा रामचन्द्रजी के कल्याणमलजी, इन्द्रचन्दजी, अमोलकचन्दजी, सरदारमलजी तथा चंदन मलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें से गोलेछा इन्द्रचन्दजी ने सवत् १९१३।१४ में कारजा (वरार) में जाकर दुकान स्थापित की। इन भ्राताओं का कार्य सवत् १९४० तक सम्मिलित चलता रहा। गोलेछा चन्दनमलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५७ में हुआ।

गोलेछा चन्दनमलजी के मूलचदजी, सोभागमलजी, पूनमचन्दजी और दीपचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। मूलचन्दजी का जन्म सम्वत् १९२७ में, सोभागमलजी का १९३८ में, पूनमचन्दजी का १९४२ में और दीपचंदजी का जन्म १९४७ में हुआ। आप लोगों का कारवार कारंजा (वरार) में रामचन्द्र चंदनमल के नाम से और बम्बई में मूलचंद सोभागमल के नाम से होता है। कारंजा में कपड़ा और बेङ्किग व्यापार के अलावा आपने कृषि और जमीदारी का कार्य भी बढ़ाया है। सम्वत् १९६४ में गोलेछा दीपचन्दजी का स्वर्गवास हो गया।

गोलेछा सोभागमलजी के प्रबोध से श्री पूसारामजी कारजा वालों ने ओसिया बोर्डिङ्ग को ५ हजार रुपया नगद दिया तथा पूसारामजी के स्वर्गवासी होने के पश्चात् उनकी सारी सम्पत्ति बोर्डिङ्ग के लिये प्रदान करवाई। इसका मृत्यु-पत्र लिखा लिया है। इस समय सोभागमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी तथा सम्पतलालजी और पूनमचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी हैं।

सेठ प्रतापचंद धनराज गोलेछा, फलोदी

फलोदी निवासी गोलेछा टीकमचदजी के २ पुत्र हुए। उनके नाम क्रमशः हसराजजी तथा वख्तावरचन्दजी गोलेछा थे। गोलेछा हसराजजी का जन्म सवत् १८८७ में हुआ, तथा संवत् १९१८ में वे फलोदी से व्यवसाय निमित्त जबलपुर गये, और वहा हसराज वखतावरचन्द के नाम से वृटिश रेजिडेंट के साथ लेनदेन का कार्य्य आरम्भ किया। पीछे से इनके छोटे भ्राता बखतावरचन्दजी भी जबलपुर गये, तथा इन दोनों भ्राताओं ने अपने धन्धे को वहाँ जमाया। गोलेछा हसराजजी के प्रतापचदजी तथा धनराजजी नामक २ पुत्र हुए, जिनमें से प्रतापचन्दजी, गोलेछा वख्तावरचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। हसराजजी का संवत् १९६० में तथा वखतावरचन्दजी का उनके प्रथम स्वर्गवास हुआ।

गोलेछा प्रतापचन्दजी का जन्म सवत् १९२९ में तथा धनराजजी का संवत् १९३३ में हुआ। गोलेछा प्रतापचन्दजी फलोदी तथा जबलपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इस समय आप जबलपुर सदर बाजार जैन मन्दिर के व्यवस्थापक हैं। आपके छोटे भ्राता धनराजजी गोलेछा जबलपुर कन्टूनमेन्ट बोर्ड के मेम्बर थे, उनका स्वर्गवास सवत १९८२ में हुआ।

सेठ प्रतापचन्दजी गोलेछा (प्रतापचन्द धनराज) फलौधी

स्व० सेठ धनराजजी गोलेछा (प्रतापचद धनराज) फलौधी

[illegible]जी गोलेछा S/o सेठ धनराजजी गोलेछा फलौधी

श्रीगुलाबचन्दजी गोलेछा (जीवराज अगरचन्द फलौधी)

के व्यापार की ओर अपना ध्यान दिया। तथा सम्वत् १९८१ में आपने फारबिसगंज (पूर्णिया) में अपनी एक ब्राच खोली आप बाईस सम्प्रदाय के मानने वाले सज्जन हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश पूनमचन्दजी एवम् घेवरचन्दजी हैं। आप दोनों भाई भी मिलनसार एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आप लोग भी व्यापार संचालन करते है। पूनमचन्दजी के सोहनलालजी एवम् सुगनलालजी तथा घेवरचंदजी के जतनलालजी, माणकचन्दजी एवम् चम्पालालजी नामक तीन पुत्र हैं। आप सब अभी बालक है।

आपका व्यापार इस समय कलकत्ता में गणेशभगत कटला में जूट एवम् आढ़त का होता है। तथा फारबिसगंज में पूनमचन्द घेवरचन्द के नाम से जूट का तथा आढ़त का व्यापार होता है।

श्री समरथमल मेघराज गोलेछा फलोदी

इस परिवार के पूर्वज गोलेछा हीराजी थे इनकी संतानें हीराणी कहलाईं। गोलेछा हीराजी संवत् १७८७ में विद्यमान थे। उनके बाद क्रमश. भोपतसीजी, करमसीजी और मलूकचंदजी हुए। मलूकचन्दजी वजनदार व्यक्ति थे। उनके नाम पर जोधपुर राज से संवत् १७९३ में एक सनद हुई थी। इनके पुत्र सरूपचन्दजी हुए, तथा सरूपचन्दजी के शिवजीरामजी और बनेचंदजी नामक २ पुत्र हुए। शिवजीरामजी के थानमलजी, धनसुखदासजी तथा मालचन्दजी और बनेचन्दजी के उदयचन्दजी तथा सागरचंदजी नामक पुत्र हुए।

गोलेछा धनसुखदासजी की चिट्ठियों से पता चलता है कि संवत् १८६० में इनकी दुकानें उज्जैन और जालना में थीं। गोलेछा थानमलजी के पुत्र नवलचन्दजी और हजारीमलजी हुए। थानमलजी और नवलचन्दजी ने बनारस में दुकान की थी। नवलचन्दजी का संवत् १९५० में अनकाल हुआ। नवलमलजी के पुत्र छोगमलजी और समरथमलजी हुए। छोगमलजी का अतकाल १९७८ में हुआ। इस समय छोगमलजी के पुत्र गोलेछा मेघराजजी मौजूद हैं। इन्होंने हीराचन्द पूनमचन्द छल्लानी सिकन्दराबाद वालों की बालाघाट दुकान पर मुनीमात की तथा संवत् १९७६ से ८२ तक निहालचन्द नेमीचन्द सोलापुर वालों की पार्टनरशिप में काम किया और इस समय १९८३ से सोलापुर में अपना कपड़े का घरू व्यापार करते हैं। गोलेछा समरथमलजी विद्यमान हैं। इन्होंने संवत् १९५५ से ८२ तक निहालचन्द पूनमचन्द हैदराबाद वालों की तथा १९८७ तक भोलाराम माणकलाल की मुनीमात की। आपके पौत्र घेवरचन्दजी का संवत् १९८८ में २० साल की अल्पायु में शरीरावसान हो गया है और दूसरे आसकरणजी मौजूद हैं।

इसी प्रकार मालचन्दजी, उदयचन्दजी तथा सागरचन्दजी के परिवार में क्रमश नेमीचन्दजी [illegible]चन्दजी व कँवरलालजी विद्यमान हैं।

सेठ बाघमलजी गोलेछा, खिचद (मारवाड़)

श्री सम्पतलालजी कोचर, फलोदी (पेज नं० ५४८

सेठ चौथमलजी सेठिया, सरदारशहर (पेज नं० ४८६)

सेठ सोहनलालजी बाठिया, सुजानगढ़ (पेज नं० ११८

सेठ सूरजमल सम्पतलाल गोलेछा, फलोदी

फलोदी निवासी सेठ कपूरचन्दजी गोलेछा के पौत्र सेठ सूरजमलजी (वीरचन्दजी के पुत्र) ने बहुत समय तक बम्बई में कॉटन ब्रोकरशिप का कार्य किया। सम्वत् १९६९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके सम्पतलालजी, नेमीचन्दजी तथा पेमराजजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। इन बन्धुओं में पेमराजजी सम्वत् १९८४ में नीलगिरी आये। तथा सेठ मूलचन्द जेठमल नामक फर्म की भागीदारी में सम्मिलित हुए। आप समझदार सज्जन हैं। आपके पुत्र जेठमलजी, भँवरलालजी, गुलाबचन्दजी तथा अनोपचन्दजी पढ़ते हैं। सेठ सम्पतलालजी तथा नेमीचन्दजी बम्बई में व्यापार करते हैं। सम्पतलालजी के पुत्र सोहनराजजी उत्साही युवक हैं। तथा समाज सुधार के कामों में दिलचस्पी रखते हैं।

नाग सेठिया

नाग सेठिया गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता है कि नाग सेठिया गौत्र की उत्पत्ति सोलंकी राजपूतों से हुई है। मथुरा नगर का राजा नर वाहन सोलंकी को किन्हीं जैनाचार्य्य ने प्रतिबोध देकर जैनी बनाया। तदुपरान्त नेणा नगर में जो वर्त्तमान में गोड़वाड़ प्रान्त के अन्दर नाणावेड़ा के नाम से प्रसिद्ध है उक्त नरवाहनजी को ठाकर संवत् १००१ के लग भग भट्टारक श्री धनेश्वर—सूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिबोध किया। उस समय बारह राजा विद्यमान थे, जिनसे जुदे बारह गौत्रों (ठाकुर, हंस, वग, लूकड, कवाड़िया, सोलंकी सेठिया, धर्म, पचलोढ़ा, तोलेसरा और रिखब) की स्थापना हुई। इसी समय सोलंकी सेठिया गौत्र भी स्थापित हुआ।

यह भी किम्वदन्ति है कि सवत् १४७२ के करीब उथमण गाँव में इस सोलंकी सेठिया वंश में सेठ अर्जुनजी हुए। आपके घर पर एक समय तेले के पारने के दिन जल्दी चूल्हा सिलगाया गया। चूल्हे में नागदेव बैठे हुए थे उन पर अग्नि पड़ी जिससे वे क्रुद्ध हुए। ठीक उसी समय उनकी पुत्र वधू दूध लेकर आ रही थी। आपने नागदेव को अग्नि से सन्तप्त देख कर दूध डाल कर आग को शान्त किया। यह देखकर नागदेव आपसे बहुत प्रसन्न हुए और शुभ आशीर्वाद दिया। इसी समय से नाग सेठिया" गौत्र की उत्पत्ति हुई। और तभी से इस गौत्र म नागदेव की पूजा जारी की गई। कहते हैं की उसी समय से लड़की के व्याह के समय नाग और नागणी को फूल पहराने की प्रथा चालू हुई जो आजतक पाली जाती है। यह गौत्र तीन तरह के पुकारी जाती है। (१) सोलंकी सेठिया (२) नागदा सोलंकी सेठिया (३) नाग सेठिया।

गोलेछा प्रतापचन्दजी के पुत्र सम्पतलालजी तथा मूलचन्दजी एवम् धनराजजी के पुत्र रतनचन्दजी
लालचन्दजी हैं। सम्पतलालजी का जन्म १९५० में रतनचन्दजी का जन्म संवत १९५९ में
मूलचन्दजी और लालचन्दजी का जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप सब भ्राता फर्म के
व्यवसाय संचालन में सहयोग देते हैं। आपका कुटुम्ब मंदिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

गोलेछा रतनचन्दजी सुशील, शांतिप्रिय एव उन्नतिशील नवयुवक हैं, आपकी वक्तृत्व शक्ति
अच्छी है। समाज संगठन की भावनाएँ आपके हृदय मे जागृत हैं। जातीय सम्मेलनों में आप अक्सर
सहयोग लेते रहते हैं।

गोलेछा वाघमलजी का खानदान, खिचंद

जोधपुर स्टेट के सेतरावा नामक स्थान से २५० वर्ष पूर्व आकर गोलेछा फतेचन्दजी ने अपना
निवास खिचद में बनाया। इनके दलीचन्दजी, मानरूपजी, सुखमलजी, रासोजी तथा रायचदजी नामक
५ पुत्र हुए। इन्हीं पाचों भाइयों के लगभग ८० घर इस समय खिचंद में निवास करते है।

गोलेछा फतेचन्दजी के पश्चात् क्रमश दलीचन्दजी, मूलचंदजी और नेतसीजी हुए। नेतसीजी के
जयकरणदासजी तथा नवलचदजी नामक २ पुत्र थे। नवलचदजी का पंच पंचायती में अच्छा मान था।
इनका ७४ साल की आयु में सवत् १९४८ में स्वर्गवासहुआ। गोलेछा जयकरणदासजी के जालमचंदजी,
सागरचदजी, रूपचदजी तथा वाघमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बंधुओं ने लगभग संवत् १९०० में
हैदरावाद में दुकान खोली, और उसके २० साल पश्चात् मद्रास में व्यापार शुरू किया गया। इन
भाइयों में गोलेछा वाघमलजी ज्यादा प्रतापी हुए।

गोलेछा वाघमलजी--आपका जन्म संवत् १८९७ में हुआ। आप बाल्यावस्था से ही अपने
बड़े भ्राता जालमचन्दजी के साथ हैदरावाद गये। धीरे २ आपका वृटिश पल्टन के साथ लेनदेन शुरू
हुआ। और आप फौज के साथ विजगापट्टम गये। आपने इस दुकान की इतनी उन्नति की, कि
आस पास "वाघमल साहुकार" का नाम मशहूर हो गया। कई अंग्रेजों ने आपको सार्टिफिकेट दिये थे।
सन् १९५०—५१ के अकाल में आपने वहाँ गरीबों को काफी इमदाद पहुँचाई थी। इससे प्रसन्न होकर सन्
१८९६ में महाराणी विक्टोरिया ने आपको सनद दी। आपकी जवाहरात में भी अच्छी निगाह थी-जिससे
कई महाराजाओं व अंग्रेजों से आपका काफी व्यापारिक सम्बन्ध था। आपको गुप्त दान का शौक था।
संवत् १९५४ में आप खिचद आगये। यहाँ १९५६ में अकाल के समय लोगों को इमदाद दी। महा-
राजकुमार उम्मेदसिंहजी तथा कर्नल विंढम ने खिचद आकर आपकी मेहमानदारी मजूर की। आपका
स्वर्गवास सवत् १९७१ में हो गया।
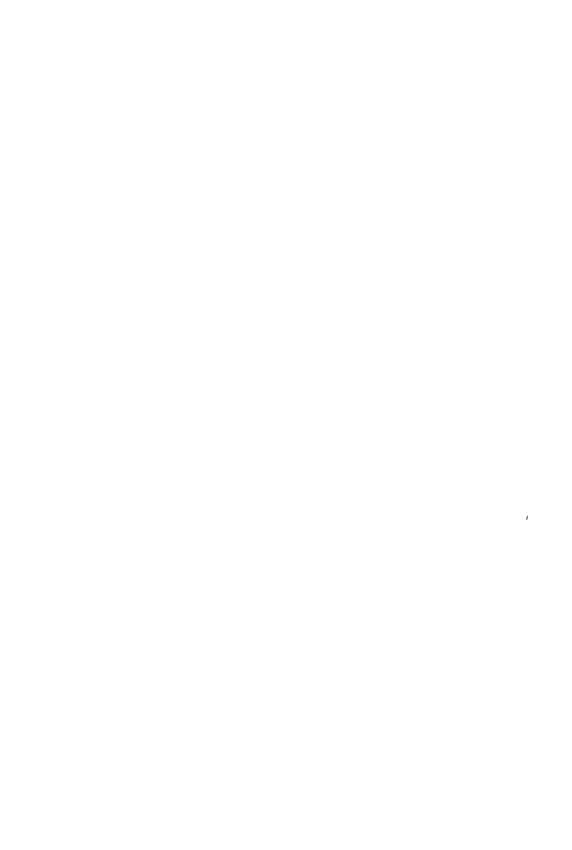
महाराणा हमीर स्वयं बडे वीर एवम् पराक्रमी व्यक्ति थे। उनमे साहस था, वीरता थी और थी कार्य्य करने की अद्भुत क्षमता। उन्होंने सारे मेवाड मे ऐलान करवा दिया था कि "जो व्यक्ति अपने सच्चे हृदय से मेवाड-भूमि का उद्धार करना चाहे, उन्हें चाहिये कि मेवाड के ग्रामों को जन शून्य करके केलवाडा चले आयें। यदि किसी व्यक्ति ने महाराणा की आज्ञा का उलंघन किया तो शत्रु समझा जाकर यम-पुर पहुँचा दिया जायगा।" इस वक्तव्य का मेवाड के वीर निवासियों पर बहुत प्रभाव पडा एवम् वे धीरे धीरे महाराणा के झंडे के नीचे आ खडे हुए। महाराणा का उत्साह चमक उठा, उन्होने शीघ्र ही सेना का सगठन करना प्रारम्भ किया। इसी समय चित्तौड के शासक मालदेव ने अपनी पुत्री का विवाह महाराणा के साथ करने की पार्थना की। कहना न होगा कि महाराणा ने प्रार्थना स्वीकार करली एवम् उनका माल-देव की पुत्री के साथ विवाह होगया। कर्नल टाड साहब का कथन है कि "अपनी नव विवाहिता पत्नि के कहने से महाराणा ने दहेज में जालसी मेहता को मॉग लिया। ये जालसी मेहता बड़े बुद्धिमान एवम् राजनीतिज्ञ पुरुप थे।" ये ओसवाल जाति के भणसाली गौत्रिय सज्जन थे।

जब वीरता एवम् पराक्रम के साथ राजनीति एवम् बुद्धिमानी का सहयोग हो जाता है तब विजय-लक्ष्मी हाथ जोडे हुए सामने खडी रहती है। यहाँ भी यही हुआ।

एक समय का प्रसग है कि महाराणा हमीर के पुत्र लक्षसिंह को, जो आगे चल कर महाराणा लाखा के नाम से प्रसिद्ध हुए, चित्तौड के देवी देवताओं की अप्रसन्नता को मिटाने के लिये पूजा करने चित्तौड जाना पडा। कहना न होगा कि इस अवसर पर चतुर जालसी मेहता भी साथ गये। चित्तौड जाकर मेहता जालसी ने धीरे धीरे वहाँ के सरदारों को मालदेव के खिलाफ उभारना प्रारम्भ किया। जब उसे विश्वास हो गया कि हमारे पक्ष मे बहुत से सरदार हो गये हैं तब उसने महाराणा को खानगी तौर पर चित्तौड आने के लिये लिख भेजा। कहना न होगा कि ठीक अवसर पर महाराणा चित्तौड पहुँचे। युक्ति और योजनानुसार उन्हें चित्तौड का दरवाजा खुला मिला। फिर क्या था, बात की बात में तलवारें चमकने लगी। घनघोर युद्ध प्रारम्भ हो गया। चारों ओर भयकर मारकाट मच गई। अत में विजय श्री महाराणा के हाथ लगी। चित्तौड के वास्तविक अधिकारी का उस पर अधिकार हो गया।

प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता महा महोपाध्याय प० गौरीशंकरजी ओझा अपने राजपूताने के इतिहास मे लिखते हैं कि "चित्तौड का राज्य प्राप्त करने मे हमीर को जाल (जालसी) मेहता से बडी सहायता मिली। जिसके उपलक्ष्य मे उसने उसे अच्छी जागीर दी और प्रतिष्ठा बढाई।"

महाराणा कुम्भ और ओसवाल मुत्सुद्दी

महाराणा हमीर के पश्चात् महाराणा कुम्भ के समय में भी कई ओसवाल मुत्सुद्दी ऐसे हुए जिन्होंने मेवाड़ राज्य की बड़ी २ सेवाएँ कीं। इनमें से वेला भण्डारी गुणराज और रतनसिंह के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। रतनसिंह जी ने गोडवाड़ के राणकपुर नामक स्थान पर सुप्रसिद्ध जैन मन्दिर बनवाया। जिसका उल्लेख धार्मिक प्रकरण में दिया जावेगा।

इसी प्रकार राणा साँगा के समय में सुप्रसिद्ध कर्माशाह के पिता तोलाशाह, उनके पश्चात् राणा रतनसिंह के समय में शत्रुञ्जय के उद्धार कर्ता सुप्रसिद्ध कर्माशाह दीवान रहे। इनका गोत्र राज कोठारी था। इनका भी विशेष परिचय इस ग्रन्थ के धार्मिक प्रकरण में दिया जावेगा।

महाराणा उदयसिंह और ओसवाल मुत्सुद्दी

स्वामिभक्त आशाशाह—राणा साँगा के द्वितीय पुत्र महाराणा रतनसिंह के पश्चात् मेवाड़ की गद्दी पर राणा विक्रमादित्य बैठे। मगर सरदारों के साथ इनकी अनबन रहने से बहुत से सरदारों ने मिलकर इन्हें गद्दी से उतार दिया। इनके पश्चात् इनका भाई दासी पुत्र बनवीर गद्दी पर बैठा, इसकी प्रकृति बहुत कुटिल थी। उस समय मेवाड़ के भावी राणा उदयसिंह बिल्कुल बालक थे। बनवीर ने इन्हें मारने का षड्यन्त्र रचा। जब कुमार उदयसिंह भोजन करके सो गये और उनकी पन्ना नामक धाय उनकी सेवा में रही थी, उसी समय रात्रि में रणवास में घोर आर्तनाद का शब्द सुनाई पड़ा। जिसे सुनकर पन्ना धाय उठी। इतने ही में बारी नामक नाई ने आकर उससे कहा कि बनवीर ने राणा विक्रमादित्य को मार डाला। यह सुनते ही बालक उदयसिंह की अनिष्ट आशंका से धाय का हृदय काँप उठा। उसने तत्काल १५ वर्ष के बालक उदयसिंह को वहाँ से चतुराई पूर्वक निकाल दिया और उसके स्थान पर अपने लड़के को लिटा दिया। इतने ही में बनवीर वहाँ आ पहुँचा और उसने उदयसिंह के धोखे में धाय के पुत्र को कत्ल कर दिया।

इसके पश्चात् पन्ना धाय उदयसिंह को लेकर रक्षा के लिये कई स्थानों पर गई, मगर उस विपत्ति के समय किसी ने राजकुमार को शरण देना स्वीकार न किया। तब वह कुम्भलमेर के किले में ओसवाल जातीय आशाशाह देपरा के पास गई, पहले तो आशाशाह ने शरण देने से इन्कार कर दिया। मगर जब उसकी माता को बात मालूम हुई तब उसने इस कायरता के लिये अपने पुत्र को बहुत फटकारा, और क्रोध में आकर उसे मारने को झपटी तब आशाशाह ने उसके पैर पकड़ लिये, और उदयसिंह को रख लिया

श्री सेठ कन्हैयालालजी सेठिया, मद्रास.

श्री सेठ आसकरणजी सेठिया, मद्रास

श्री स्व० मोहनलालजी सेठिया, मद्रास

श्री सेठ [illegible]जी सेठिया, मद्रास

कारण गिरगई एवम् नष्ट होगई थी। अतएव आपने फिर से उसका निर्माण करवाया। दरबार ने आप को भिन्न २ समयों पर किर्च, बन्दूक, पिस्तौल वगैरह प्रदान कर आपका सम्मान बढ़ाया था। सन् १९०४ में आपको वहा दरबार में फर्स्ट क्लास सीट मिली। इसके पश्चात् फिर सन् १९२१ में आपके सम्मान को विशेष रूप से प्रदर्शन करने के लिये आपको पैरों में सोने का लगर तथा आसासोटा प्रदान किया। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर बा० जयचन्दलालजी दत्तक लिये गये हैं। आप एक उत्साही युवक है। आपको आयुर्वेद का बडा शौक है। आपके प्रयत्न से यहाँ एक नवयुवक मंडल स्थापित है आपके एक पुत्र है जिनका नाम भँवरलालजी है। आपकी फर्म पर कूचविहार में जूट का व्यापार होता है। इस परिवार वालों को कूचविहार स्टेट और बीकानेर स्टेट से समय २ कई खास रुक्के प्राप्त हुए हैं।

सेट ताराचन्दजी सेठिया का परिवार, सरदारशाह

सेठ ताराचन्दजी करीब ८० वर्ष पूर्व तोल्यासर से सरदार शहर में आकर बसे थे। आपका गौत्र सेठिया है। जिस समय आप यहाँ आये आपकी बहुत ही साधारण स्थिति थी। आपका स्वभाव बडा तेज एवम् आत्माभिमानी था। आप गरीबों के बड़े पृष्ट पोषक थे। यहाँ तक कि हमेशा आपका तन मन उनके लिये प्रस्तुत रहता था। इसी कारण से आप यहाँ की जनता के माननीय थे। आपका स्वर्गवास १९४० में हुआ। आपके चुन्नीलालजी नामक एक पुत्र हुए। आप बड़े बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९५३ में हो गया। आपके चार पुत्र सेठ पूरनचन्दजी, रावतमलजी, कालूरामजी और चौथमलजी हैं। सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र दीपचन्दजी और लक्ष्मीचन्दजी आजकल पूनमचन्द जीवनमल के नाम से ३५ आर्मेनियन स्ट्रीट में अलग व्यवसाय करते है।

सेठ रावतमलजी बड़े व्यापार चतुर और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति है। संवत् १९५३ में जब कि आपकी आयु केवल १३ वर्ष की थी, आप कलकत्ता व्यापार के लिये गये। एवम् धीरे २ आपने अपनी व्यापार चातुरी से बहुत सी सम्पत्ति उपार्जित की। आपने अपनी सम्पत्ति का एक नियम बना लिया था उससे ज्यादा पैदा करना आप नहीं चाहते थे, अतएव नियमित सम्पत्ति के पैदा होते ही सब कारबार अपने छोटे भाइयों को १९८३ में देकर आप आजकल सरदार शहर ही में रहते है। आप तेरापन्थी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ कालूरामजी एवम् चौथमलजी दोनों ही भाई वर्तमान में रामलाल जसकरन के नाम से आर्मेनियम स्ट्रीट में कपडे का तथा जूट और कमीशन का तथा चौथमल रामलाल के नाम से सूतापट्टी में कपड़े का व्यापार करते है। सेठ कालूरामजी के रामलालजी, मदनचन्दजी, सतोषचन्दजी और सूरजमल जी तथा चौथमलजी के जसकरनजी, फतेचन्दजी, करनीदानजी एवम् रतनलालजी नामक पुत्र हैं।

सेठ चिमनीराम हुलासचंद सेठिया

इस परिवार के पुरुष तोल्यासर से सरदारशहर आये। पहले इस परिवार की स्थिति साधारण

अर्जुन की कई पीढ़ियों के पश्चात् सेठ उदाजी और इनके पुत्र माँडणजी हुए। आप लोग पहले ...पुर बगड़ी में रहते थे और संवत् १७०७ की वैसाख सुद ७ को आपने बगड़ी से वलूंदा आकर निवास ...र दिया। तभी से इस परिवार वाले वलूँदे में रहते हैं। इनके वंशज तिलोकचन्दजी के वंश में ...राजजी हुए जिनके पुत्र गुलाबचन्दजी से इस परिवार का इतिहास आरम्भ होता है।

सेठ बख्तावरमल मोहनलाल-नाग सेठिया, मद्रास

सेठिया गुलाबचन्दजी के वंशज वलूदे में रहते हैं। आप ओसवाल जैन श्वेताम्बर समाज की ...पंथी आम्नाय को माननेवाले हैं। सेठ गुलाबचन्दजी संवत् १८७५ के लगभग वलूंदे से पैदल रास्ते द्वारा ...ना आये और वहाँ पर अपनी फर्म स्थापित की। इस फर्म पर आप बडी सफलता के साथ सराफी का ...पार चलाते रहे। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम अमरचन्दजी तथा गम्भीरमलजी थे।

गम्भीरमलजी—आप सन् १८४७ में अंग्रेज़ी पलटन के साथ पैदल रास्ते से मद्रास आये। कहते हैं कि इस मुसाफिरी में आपको तीन वर्ष लगे। इस घटना से आपकी जबर्दस्त हिम्मत का पता लग सकता है। श्रीयुत गम्भीरमलजी ने मद्रास में आकर गम्भीरमल एण्ड को० के नाम से १५० स्टॉडस रोड (पहल्म मूला) में अपनी फर्म स्थापित की। प्रारम्भ से ही आपने इस फर्मपर बैङ्किंग का व्यापार शुरू किया था। आप बड़े साहसी, व्यापार कुशल और दूरदर्शी पुरुष थे। आपने अपनो बुद्धिमानी से इस फर्म को बहुत तरक्की दी। आपका स्वर्गवास संवत् १९४६ में हुआ। आपने अपने समय में अनेक जाति भाइयों को मद्रास प्रोन्स में लाकर बसाया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम चौथमलजी, बख्तावरमलजी तथा ...करणजी था। गम्भीरमलजी के पश्चात् इस फर्म के कारभार को आप तीनों भाइयों ने सम्हाला। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९१३, १९१८ तथा १९२३ में हुआ था।

बख्तावरमलजी—आप इस खानदान में बड़े प्रतापी पुरुष हो गये हैं। मद्रास की जनता में ... राजा सावकार के नाम से प्रसिद्ध थे। आप अपने जाति भाइयों को बहुत मदद पहुँचाते रहते थे। उस समय मद्रास में मारवाड़ियों की इनी गिनी दुकानें थी अतः मारवाड़ से शुरू में जो कोई भी व्यक्ति ... की तरफ जाते तो उन्हें आप बड़े प्रेम से अपने यहाँ ठहराते और धंधे लगवाते थे। आपने कई ... को सहायता और सहानुभूति देकर मद्रास में जमाया। आपका स्वर्गवास सवत् १९५६ में हुआ। ... चार पुत्र हुए जिनके नाम शिवलालजी, मोहनलालजी, मग्गूलालजी तथा केवलचन्दजी था। सेठिया ...करणजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः कन्हैयालालजी और आसकरणजी था। बहुत समय ... सब भाई साथ में व्यापार करते रहे फिर संवत् १९६६ के आषाढ़ सुदी १२ को इस फर्म ... नाम स्वतंत्र शाखाएँ—बख्तावरमल मोहनलाल, शुभकरण कन्हैयालाल, तथा शुभकरण आसकरण ... म हो गई।

मोहनलालजी सेठिया—अपका जन्म सवत् १९४१ की मगसर वदी ४ को हुआ। आप भी अच्छे ...त पुरुष हुए। आपका स्वर्गवास सवत् १९७१ की आषाढ़ सुदी ५ को हुआ। आपके स्वर्गवास के ... आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री जसवन्तमलजी की वय बहुत थोडी थी अतः उस समय इस फर्म के सारे कार-

१०१

यार को आपकी मातेश्वरी ने सम्हाला। सेठिया शुभकरणजी के पुत्र कन्हैयालालजी का जन्म संवत् १९४४ तथा आसकरणजी का संवत् १९४९ का है। सेठिया मोहनलालजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम जसवन्तमलजी तथा सोहनमलजी था। इनमें से सेठिया जसवन्तमलजी के छोटे भ्राता सोहनमलजी का पोष सुदी २ संवत् १९८८ को स्वर्गवास हो गया। इस समय उपरोक्त फर्म के मालिक सेठ जसवन्तमलजी हैं।

जसवन्तमलजी सेठिया—आपका जन्म पौष सुद ६ संवत् १९६५ में हुआ। आप बड़े सज्जन, उच्च विचारों के तथा उदार हृदय के व्यक्ति हैं। इस कम उम्र में ही आपने फर्म के काम को बहुत अच्छीतरह से सम्हाल लिया है। आपका विद्या प्रेम बहुत ही सराहनीय है। आपने पट्टालम सूला में दी जैन मोहन स्कूल के नामसे एक स्कूल अपनी ओरसे कायमकर रक्खा है। आप प्राय सभी सार्वजनिक, परोपकारी तथा धार्मिक कार्य्यों में सहायता देते रहते हैं। यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि आप ओसर मोसर आदि सामाजिक कुरीतियों के बहुत खिलाफ़ हैं। आप इस समय मेसर्स बख्तावरमल मोहनलाल के मालिक हैं। आपकी दुकान पट्टालम सूला में सब से बड़ी तथा मद्रास की खास २ दुकानों में गिनी जाती है।

सेठिया शुभकरणजी के पुत्र आसकरणजी का जन्म संवत् १९४९ की जेठ सुदी ५ का है। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः नेमकरणजी तथा सज्जनकरणजी हैं। आप इस समय मेसर्स शुभकरण आसकरण के मालिक हैं।

सेठ हजारीमल केवलचन्द (नाग) सेठिया, मुदरान्तकम् (मद्रास)

इस परिवार का पूर्व इतिहास सेठ बख्तावरमलजी मोहनलालजी के परिचय में दिया गया है। इस परिवार में सेठ कपूरचन्दजी के पुत्र मुगदासजी तथा पौत्र गिरधारीमलजी हुए। सेठ गिरधारीमलजी के हिम्मतरामजी तथा जगरूपमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों का स्वर्गवास संवत् १९२५ तथा ५१ में हुआ। हिम्मतरामजी को बलूंदे ठाकुर ने "नगर सेठ" की पदवी दी थी।

देश से व्यापार के लिये सेठ हिम्मतरामजी तथा जगरूपमलजी संवत् १८७४ में जालना आये तथा पल्टन के साथ लेनदेन का कार्य आरम्भ किया। हिम्मतरामजी के पुत्र हजारीमलजी हुए। इनका स्वर्गवास १९५३ में ५२ साल की आयु में हुआ। आपके हीरालालजी, जसराजजी, केवलचन्दजी, तथा माणिकचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें माणकचन्दजी, जगरूपमलजी के नाम पर दत्तक गये। इस समय जगरूपमलजी का परिवार जालने में जगरूपमल मगनीराम तथा जगरूपमल माणिकचन्द के नाम से व्यापार करता है। मगनीरामजी के पुत्र मोहनलालजी तथा माणकचन्दजी के पुत्र सुगनचन्दजी हैं।

सेठ केवलचन्दजी का जन्म स० १९४६ में हुआ। आप १९६६ में मदुरान्तकम् आये। तथा यहा सराफी व्यापार चालू किया। आप से बड़े भाई हीरालालजी तथा जसराजजी का जन्म क्रमशः १९२६ तथा १९४३ में हुआ। इस परिवार का मदुरान्तकम् में जे० माणिकचन्द तथा हजारीमल केवलचन्द के नाम से त्रिविकोलूर में जसराज पुखराज तथा माणिकचन्द सुगनचन्द के नाम से और बलूंदे में हीरालाल जसराज के नाम से व्यापार होता है। हीरालालजी के पुत्र कनकमलजी तथा पुखराजजी, और सेठ जसराजजी के पुत्र रिखबचंदजी तथा सूरजकरणजी हैं। यह परिवार बलूंदा में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।
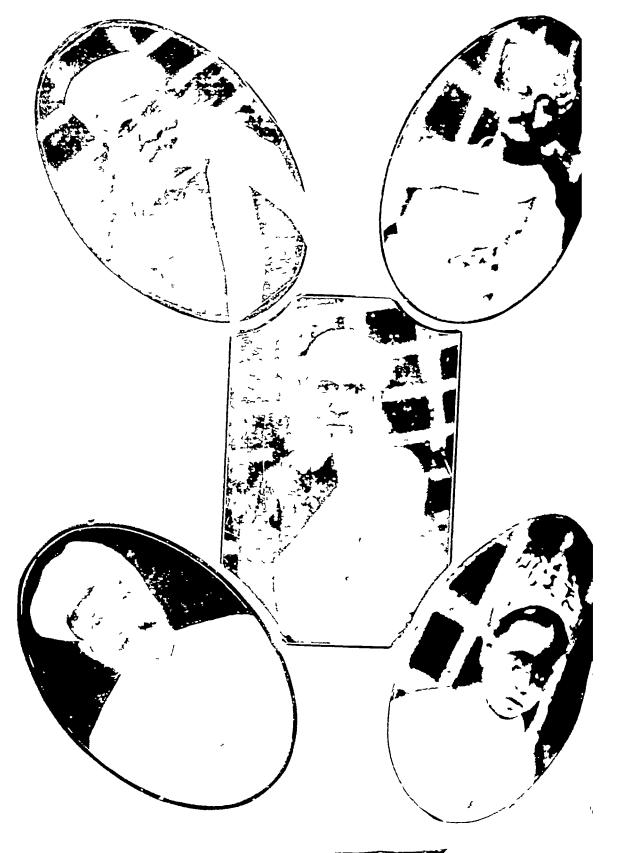
सेठ चिमनीराम हुलासचद सेठिया करकत्ता

मध्य मे—सेठ चौथमलजी सेठिया। ऊपर—(१) बाबू चिमनीरामजी सेठिया (२) बाबू हुलासचदजी सेठिया

नीचे—(१) बाबू आसकरणजी सेठिया (२) बाबू कन्हैयालालजी S/o बा० आसकरणजी सेठिया

सेठ धीरजमलजी सेठिया, मद्रास.
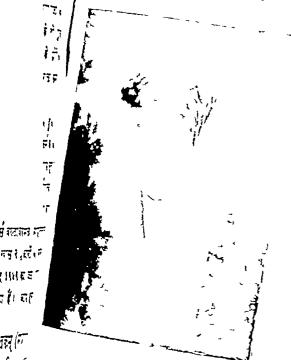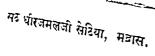
सेठ केवलचन्दजी सेठिया (हजारीमल केवलचन्द) मदुरान्तकम्.

... (चम्पालाल सूरजमलजी) सादड़ी
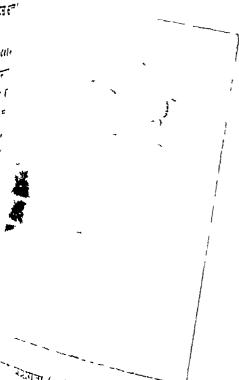
श्री मगुलालजी सेठिया (बख़्तावरमल मोहनलाल) मद्रास

सेठ चौथमलजी देश से चलकर व्यापार के लिये बङ्गाल के धूब्री जिले में गये और वहां पूरनचन्द पूरनचन्द सचेती के यहां नौकरी की। आपके संतान न होने से आपके नाम पर आपके भतीजे आसकरणजी दत्तक लिये गये। चौथमलजी के भाई सेठ चिमनीरामजी कलकत्ते में हरिसिंह सन्तोषचन्द की दुकान पर नौकरी करते रहे। नौकरी से कुछ सम्पत्ति जोड़कर आपने लोगों के साझे में हुलासचन्द आसकरण के नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। इस समय आप इसी नाम से अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सवत् १९७३ से व्यापार का भार अपने पुत्र हुलासचन्दजी को देकर आप रिटायर्ड लाइफ व्यतीत कर रहे हैं। आप सरदारशहर में रहते हैं।

सेठ आसकरणजी और हुलासचन्दजी कलकत्ते में अपनी फर्म का योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। आपकी दुकान १८८ सूता पट्टी में है।

मेसर्स गुलाबचंद धनराज सेठिया रिणी

इस खानदान के लोग रिणी में बहुत समय से रहते हैं। इनमें सेठ रामदयालजी के चार पुत्र हुए इनमें से उपरोक्त वश सेठ गुलाबचन्दजी का है।

सेठ गुलाबचन्दजी का जन्म सवत् १९१२ में हुआ। आप देश से व्यापार के लिये बगाल गये और वहा मैमनसिंह में दुधोरियों के यहां सर्विस की। आपके रावतमलजी, धनराजजी, हीरालाल जी और हुकुमचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ रावतमलजी का जन्म स० १९१७ में हुआ। आप १९४९ में कलकत्ता गये और अपने भाई धनराजजी के साथ रावतमल धनराज के नाम से व्यापर शुरू किया इसके पश्चात् आप दोनों भाई अलग अलग होगये। सेठ रावतमलजी का स्वर्गवास १९६७ में होगया। आपके मोहनलालजी और हनुमानमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ धनराजजी ने अपने भाई से अलग होकर भूरामल धनराज के नाम से व्यापार आरम्भ किया फिर सं० १९६६ से ये गुलाबचन्द धनराज के नाम से व्यापार करने लगे। इस समय आप के यहां इसी नाम से व्यापार होता है। आपके इस समय मंगलचन्दजी, बुधचन्दजी, चम्पालालजी और ताराचन्दजी नामक चार पुत्र हैं।

सेठ रावतमलजी के पुत्र सोहनलालजी भी फर्म के पार्टनर है। आप बड़े योग्य है। हनुमानमलजी दलाली का काम करते हैं। इस फर्म का १२ नारमल लोहिया लेन कलकत्ता में बड़े पैमाने पर देशी कपड़े का व्यापार होता है और हरगोला (बङ्गाल) में इसकी शाखा जूट का व्यापार करती है।

सुजानगढ़ का सेठिया परिवार

इस खानदान का इतिहास सेठ शोभाचन्दजी को प्रारम्भ होना है। उनके पुत्र किशनचन्दजी रतनचन्दजी, बींजराजजी, देवचन्दजी, और चौथमलजी हुए, इनमें से यह खानदान सेठ चौथमलजी का है। सेठ चौथमलजी का जन्म १९२२ में हुआ, पहले आप खेती बाड़ी के द्वारा अपनी गुजर करते थे कुछ

स्व० सेठ अगरचन्दजी सेठिया, बीकानेर

सेठ भैरोंदानजी सेठिया, बीकानेर

पारमार्थिक सस्था भवन (अगरचन्द भैरोंदान) बीकानेर.

समय पश्चात् आप अपने भाई बींजराजजी के पास दिनाजपुर चले गये। दैवयोग से इसी समय दिनाजपुर मे चाडवास वाले चोरडियों की मनिहारी की दुकान में आग लग गई, और उसका जला हुआ गोदाम आपने वहुत सस्ते दामों मे खरीद लिया। इस व्यापार में आपको बहुत बड़ा लाभ हुआ और आपकी स्थिति बहुत अच्छी जम गई। इस प्रकार अपने परिवार की स्थिति जमाकर सेठ चौथमलजी १९७४ में और सेठ बींजराजजी १९९८ में स्वर्गवासी हुए। आप दोनों भाई बडे व्यापार कुशल और धार्मिक व्यक्ति थे। सेठ चौथमलजी के हीरालालजी, लादूरामजी, कुन्दनमलजी एवम् मानिकचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें हीरालालजी बाल्यावस्था में ही स्वर्गवासी होगये शेष तीनों भाई इस समय व्यापार का संचालन कर रहे है। कुन्दनमलजी और माणकचन्दजी बडे देशभक्त सज्जन है।

सेठ प्रेमचंद धरमचंद सेठी, मुलतान (पंजाब)

इस कुटुम्ब का मूल निवास बीकानेर है। वहाँ से १५० साल पूर्व सेठ आत्मारामजी सेठी मुलतान (पजाब) गये और वहाँ जवाहरात का व्यापार शुरू किया। आपके पुत्र प्रेमचन्दजी सेठी के समय में मुलतान दीवान के महलों में जवाहरात की चोरी होगई, और उसका झूठा इलजाम प्रेमचदजी पर लगा, इससे इन्होंने जवाहरात का व्यापार बन्द करके हाथी दात का धन्धा शुरू किया। उसके पश्चात् आपने कपड़े का कारवार भी आरम्भ किया। इस व्यापार में आपने विशेष सम्पत्ति उपार्जित की। आपके धरमचन्दजी तथा नथमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ धरमचद सेठी का परिवार—सेठ धरमचन्दजी के पूनमचन्दजी तथा वलदेवप्रसादजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों की धार्मिक कामों की ओर बड़ी रुचि रही है। इन दोनों भाइयों ने सवत् १९७५ में मुलतान में एक विशाल जैन मन्दिर बनवाया। सेठी पूनमचन्दजी के पुत्र बासुरामजी, तिलोकचन्दजी, सुगनचन्दजी तथा वशीलालजी है। इन बधुओं के यहाँ मुलतान में "धरमचन्द सुगनचन्द" के नाम से व्यापार होता है। सेठी बलदेवप्रसादजी के पुत्र तोलारामजी, कालूरामजी तथा खुशालचन्दजी हुए। इनमें खुशालचन्दजी की फर्म करांची में व्यापार करती है।

सेठी तोलारामजी ने संवत् १९८० में बम्बई में अपनी दुकान की शाखा तोलाराम भँवरलाल के नाम से खोली। तथा १९८१ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र माणकचन्दजी भँवरलालजी तथा संपतलालजी विद्यमान हैं। आप तीनों नवयुवक समझदार व्यक्ति है। माणकचन्दजी का जन्म १९११ में तथा भँवरीलालजी का १९६९ में हुआ। आपके यहाँ मुलतान में प्रेमचन्द धरमचन्द के नाम स कपडे का व्यापार होता है। तथा यह दुकान बडी मातवर मानी जाती है।

सेठ नथमलजी सेठी का परिवार—सेठी नथमलजी की वय ६२ साल की है। आपके पुत्र उत्तमचन्दजी, ठाकरदासजी तथा टीकमदासजी मुलतान में प्रेमचन्द नथमल के नाम से व्यापार करते हैं।

सेठ नथमल वख्तावरचन्द सेठी, नागपूर

इस खानदान का मूल निवासस्थान बीकानेर है। आप ओसवाल जाति के सेठी गौत्रीय

सेठिया

सेठिया गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता कि पाली नगर के पास ग्राम में राका और बांका नामक दो राजपूत कृषि कार्य्य से अपना गुजारा करते हुए रहते थे। आचार्य्य श्री जिन वल्लभसूरि के उपदेश से इन्होंने जैन धर्म अंगीकार किया। इन्हीं में से राका से सेठी और बांका से सेठिया गौत्र की उत्पत्ति हुई। इन्हीं की संतानों से गोरा, देक, काला बोक आदि गौत्रों की उत्पत्ति हुई।

सेठ अगरचद भैरोंदान सेठिया, बीकानेर

अब हम पाठकों के सामने एक ऐसे दिव्य व्यक्ति का चरित्र उपस्थित करते हैं, जिसने अपने जीवन के द्वारा व्यापारी समाज के सम्मुख सफलता और सद् व्यय का एक बहुत बड़ा आदर्श उपस्थित किया है। जिसने व्यापारी जगत् में अपने पैरों पर खड़े होकर लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की है। यही नहीं मगर उसका सुन्दर सदुपयोग भी किया है। यह महानुभाव श्रीभैरूँदानजी सेठिया है।

सेठ भैरोंदानजी—आपका जन्म संवत् १९२३ में हुआ। आपके २ बडे एवम् एक छोटे भाई और थे। जिनके नाम क्रमश सेठ प्रतापमलजी, अगरचन्दजी, और हजारीमलजी थे। जब आप करीब ८ वर्ष के थे तब ही आपके भाइयों ने आपको अलग कर दिया। इस समय आपके पास उतनी ही सम्पत्ति थी जितना कि आपको देना था। अतएव बडी कठिन परिस्थिति का अनुभव कर आपने ५००) के सालियाना में ५ वर्ष तक बम्बई में नौकरी की। मगर इससे आपको संतोष न हुआ। आप कर्मवीर थे। शीघ्र ही आपने बम्बई को छोड कर कलकत्ता प्रस्थान किया। वहाँ जाकर आपने हनुमतराम ... के नाम से साझे में रग का व्यापार करने के लिये फर्म खोली। साथ ही मनिहारी का व्यापार भी करने लगे। दवयोग से यह व्यापार चमक उठा, एवम् इसमें आपने बहुत सफलता प्राप्त की। इसके बाद आपके भाई अगरचन्दजी फिर से आपके साथ शामिल हो गये और आप लोगों का व्यापार ए० ... सेठिया एण्ड को० के नाम से चलने लगा। रग की विशेष उन्नति होते देखकर आपने एक रग का कारखाना दी सेठिया केमिकल वर्क्स के नाम से खोला। यह भारत में पहला ही रंग का कारखाना था। इसके पश्चात् आपका व्यापार वायु-वेग से उन्नति पाने लगा। आपकी बम्बई, मद्रास, कानपुर, देहली अमृतसर, कराची और अहमदाबाद में फर्मे स्थापित होगई। यही नहीं बल्कि आपने जापान में भी अपनी फर्म स्थापित की। मगर कुछ वर्षों पश्चात् बीमारी के कारण कलकत्ता और जापान के सिवा सब स्थानों से आपने अपना व्यवसाय उठा लिया। संवत् १९७९ में आपके भाई अगरचन्दजी का साझा अलग हो गया।

आपका धार्मिक जीवन भी बड़ा सराहनीय है। आपने अभी तक लाखों रुपये सार्वजनिक कार्यों में खर्च किये हैं। आपकी ओर से इस समय निम्नलिखित सस्थाएँ चल रही है। (१)

सेठिया जैन स्कूल, (२) सेठिया जैन श्राविका पाठशाला (३) सेठिया जैन संस्कृत प्राकृत विद्यालय (४) सेठिया जैन बोर्डिंग हाउस (५) सेठिया जैन शास्त्र भंडार (६) सेठिया जैन विद्यालय (७) सेठिया जैन श्राविकाश्रम (८) सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस आदि। उपरोक्त संस्थाओं के खर्च की व्यवस्था के लिये आपने कलकत्ते के चीना बाजार के मकान नं० १६० । १६१ की दुकानें, क्रास स्ट्रीट के नं० ३, ५, ७, ९, १९ के मकान तथा मोहनदास स्ट्रीट के १२३, १२५ नम्बर के मकान की भी रजिस्ट्री करवा दी है। इसके अतिरिक्त आपके भाई और आपकी ओर से बीकानेर में संस्थाओं के लिये २ मकान दिये गये हैं जिनमें संस्थाओं का कार्य्य संचालन होरहा है। इन सब संस्थाओं का सारा कार्य आप ही देखते हैं। आप अखिल भारत वर्षीय श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी कान्फ्रेंस के सभापति रहे थे। इस समय आप म्युनिसिपल मेम्बर, साधु मार्गीय जैन हितकारिणी सभा के प्रेसिडेण्ट और स्थानकवासी जैन ट्रेनिंग कालेज के सभापति हैं। आपके इस समय पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः जेठमलजी, पानमलजी, जुगराजजी और ज्ञानपालजी हैं आपने अपने सब पुत्रों को अलग २ कर दिया है।

कुँवर जेठमलजी—आप बड़े मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका ध्यान भी परोपकार की ओर विशेष रहता है। आप उपरोक्त संस्थाओं के ट्रस्टी हैं। आपने भी अपने हिस्से से ३०।हजार रुपये नक़द और कलकत्ता के फैनिंग स्ट्रीट वाले मकान नं० १११ और ११५ और जकरानलेन का मकान नं० ९ संस्थाओं को दान स्वरूप प्रदान किये हैं। जिनका ब्याज एवम् किराये की करीब २० हजार रुपया सालाना आय संस्थाओं को मिलती है।

सेठ साहब के शेष पुत्रों में से प्रथम दो व्यवसाय करते हैं और छोटे दो विद्याध्ययन करते हैं। श्रीलहरचंदजीने भी एक प्रिंटिंग प्रेस संस्थाओं को दान में प्रदान किया है। आप सब भाइयों का अलग अलग रूप से भिन्न भिन्न प्रकार का व्यवसाय होता है। आपकी फर्म बीकानेर में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ खुशालचंदजी सेठिया का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के लोग संवत् १८९६ में सरदारशहर में आकर बसे। इसके पूर्व पुरुष सेठ खुशालचन्दजी के कालूरामजी, टोडरमलजी, दुरंगदासजी, श्रीचन्दजी और आईदानजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें कालूरामजी, श्रीचन्दजी व आईदानजी नामक तीनों भाइयों ने संवत् १८७८ में पैदल रास्ते से सफर करके रंगपूर, कूच बिहार आदि स्थानों पर अपनी दुकानें खोलीं और कपड़े का व्यापार करने लगे। इसके पश्चात् आपने अमृतसर, बक्षीहाट, भडगामारी, बलरामपुर, चोलाखाना बलाहार आदि स्थानों पर भी अपनी फर्में स्थापित कर व्यापार में अद्भुत सफलता प्राप्त की। संवत् १९५० तक आप तीनों भाइयों का स्वर्गवास होगया और उसी साल आईदानजी के पुत्र मंगलचन्दजी इस फर्म से अलग होगये।

सेठ कालूरामजी का परिवार—सेठ कालूरामजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ भीखणचंदजी, सेठ नथमलजी और सेठ नारायणचन्दजी हैं। इनमें से सेठ नथमलजी अपने काका सेठ श्रीचन्दजी के पुत्र न होने के कारण वहां दत्तक चले गये। शेष दोनों भाई भी अलग २ होगये पृथक्

स्व० सेठ वोरीदासजी राका, मद्रास

देशभक्त पूनमचदजी राका, नागपुर

सेठ छगनमलजी राका, मद्रास.

सेठ हसराजजी राका, नासिक.

... हैं। आप श्वेताम्बर जैन आम्नाय के मानने वाले हैं। सेठ बख्तावरचन्दजी सेठी बीकानेर में बहुत ... व्यक्ति हुए हैं। आपने बीकानेर में सबसे पहले नगर भोजन करवाया जिसे ग्राम सारणी कहते हैं। बीकानेर राज्य में भी आपका बहुत प्रभाव था। धार्मिक कार्य्यों की तरफ भी आपका बहुत लक्ष्य ... तथा इनमें आपने बहुत रुपये खर्च भी किये। आपने इस फर्म को नागपुर में १२५ वर्ष पूर्व ... की थी। बख्तावरचन्दजी के पुत्र करणीदानजी हुए। आपने नागपुर के अन्तर्गत मारवाडी ... में बहुत नाम कमाया। आपका यहाँ की मारवाडी समाज मे बहुत प्रभाव था। आपकी ... नागपुर में अभी तक बडी दुकान के नाम से मशहूर है। करणीदानजी के कोई पुत्र न होने से ... यहाँ श्रीयुत् पूनमचन्दजी दत्तक आये। इस समय आपही इस फर्म के मालिक हैं। आपके इस ... एक पुत्र है जिनका नाम रतनलालजो है। इस समय इस फर्म पर कपडे का व्यापार होता है।

श्री पूनमचंदजी रांका, नागपुर

श्रीयुत पूनमचन्दजी रांका, जामनेर (पूर्व खानदेश) तालुका के तोंडापुर नामक ग्राम के निवासी ढोंगमलजी रांका के मझले पुत्र हैं आप संवत् १९६२ में नागपुर के रांका शंभूरामजी के नाम पर दत्तक लाये गये। रांका शंभूरामजी संवत् १९२० में खींवसर (मारवाड़) से नागपुर आये थे ... आपने कपडे की दुकान की तथा संवत् १९६७ में आप स्वर्गवासी हुए।

रांका पूनमचंदजी का जन्म संवत् १९५६ की मिती आषाढ़ सुदी ४ को तोंडापुर में हुआ, आपका शिक्षण घर पर ही हुआ। संवत् १९७७ तक आप अपना घरू कपडे का व्यापार देखते रहे। ... संवत् १९७७ में नागपुर में राष्ट्रीय कांग्रेस का महा अधिवेशन हुआ, उसमें आप प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए और वहीं से आपके जीवन में सामाजिक सुधार और राष्ट्रीयता का अध्याय आरम्भ हुआ। ... उसी समय आपने अपने समाज को जागृत करने के लिये सन् १९२० में "मारवाडी सेवा संघ" नामक संस्था का स्थापन किया और आपने स्वयं उसके सभापति का स्थान सचालित किया। सन् १९२३ के नागपुर के झंडा सत्याग्रह में आपने विशेष रूप से भाग लिया एवम् दिन दिन सामाजिक एवम् राष्ट्रीय कार्यों में आप नूतन उत्साह से पैर बढ़ाते गये। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती धनवती बाई रांका ने पर्दा प्रथा को तिलांजलि देकर, समाज की स्त्रियों के सम्मुख एक नूतन आदर्श रक्खा है, आप सार्वजनिक सभाओं में भाषण देती है तथा हर एक सार्वजनिक कामों में भाग लेती हैं। इस तरह सेठ पूनमचन्दजी ... सन् १९३० तक राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग लेते रहे। इसी समय आपने समाज सुधार के लिये ... मोसर विरोधक पार्टी भी स्थापित की। इसके भी आप प्रेसिडेंट रहे।

सन् १९३० से आपने अपने घरू कार्यों से सम्बन्ध छोडकर अपना सब समय कांग्रेस की सेवा में लगाना आरम्भ कर दिया तथा इसी साल तारीख ३१।७।३० को राष्ट्रीय महायुद्ध में सम्मिलित ... में आप गिरफ्तार किये गये। दोनों बार आपको ऊँचा क्लास दिया गया। लेकिन जेल में ... दूसरे राजबन्दियों के साथ A B.C इस प्रकार तीन प्रकार के व्यवहार देखकर गवर्नमेंट से सबके ... समान व्यवहार करने की प्रार्थना की लेकिन जब आपकी प्रार्थना पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया तो

१०२
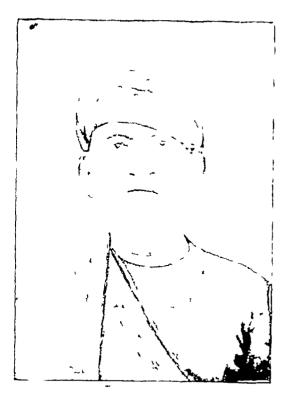
सेठ भीकमचन्दजी सेठिया, सरदारशहर,
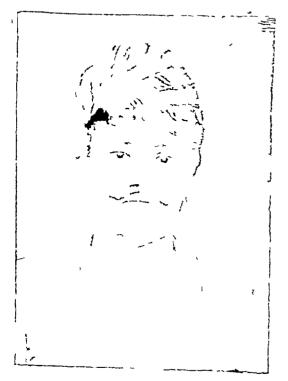
सेठ दुलीचन्दजी सेठिया, सरदारशहर

बाबू भींवराजजी सेठिया, सरदारशहर

सेठ रावतमलजी सेठिया, सरदारशहर.

आपने उपवास आरम्भ कर दिया और इस प्रकार निरन्तर ७२ दिनों तक आपने उपवास की तपस्या की। ता० ९ । ३ । ३१ को गाधी-इरविन पेक्ट के समझौते के मुताविक तमाम राजवन्दी छोड़ दिये गये, इस दिन उपवास की हालत में आप भी जेल से मुक्त कर दिये गये।

इसी प्रकार ९ । १ । ३२ को सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित होने के उपलक्ष में आप पर १० हजार रुपया दण्ड तथा ३ साल ७॥ मास की सजा हुई जो पीछे से घटा कर, १५००) दण्ड के साथ १ साल की करदी गई। इस वार भी आपने गवर्नमेंट से एकसा व्यवहार करने की प्रार्थना की लेकिन फिर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया अतः आपने पुन पूर्ववत् उपवास आरम्भ कर दिया जब लगातार १२ दिनों तक उपवास करते हुए आप बहुत अशक्त होगये तब ता० ४ । ५ । ३३ को सी० पी० गवर्नमेंट ने आपको स्वयं रिहा कर दिया। बाहर आने पर आपको ज्ञात हुआ कि आपके किसी मित्र ने आपकी ओर से १५००) भर दिये हैं वे रुपये आपने उन्हें सधन्यवाद लौटा दिये।

इस प्रकार आपका त्याग और तपस्या का पवित्र जीवन ओसवाल समाज के लिये अभिमान और गौरव का द्योतक है तथा सम्पत्ति के मद में चूर वासनाओं के कीट समाज के नवयुवकों के लिये नवीन मार्ग दर्शक है। अभी आपने देश के हितार्थ घी तथा शक्कर का त्याग कर रक्खा है। इस समय आप नागपुर नगर कांग्रेस कमेटी के प्रेसिडेण्ट हैं। आपके छोटे भ्राता आसकरणजी ने भी परदा प्रथा का त्याग किया है। आपका विवाह बहुत ही सुधरी प्रथा से हुआ था। आपकी धर्मपत्नी सन् १९३० में ४॥ मास के लिये जेल गई थीं इस समय आप सेठ पूनमचन्दजी की कपड़े की दुकान का काम देखते हैं।

श्री सौभागमलजी सेठिया (रांका) का खानदान, मद्रास

इस खानदान का खास निवासस्थान नागौर का है। आप लोग रांका सेठिया गौत्रीय ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। आपके परिवार में श्रीयुत पारसमल जी सेठिया हुए। आप करीब पचास वर्ष प्रथम नागौर से हैदराबाद आये। यहाँ आपने अनाज का व्यापार शुरू किया, आपके एक पुत्र हुए जिनका नाम सौभागमलजी था।

श्री सौभागमलजी सेठिया का जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप भी हैदराबाद में अनाज का व्यापार करते रहे। उसके पश्चात् सं० १९६७ में आप मद्रास आये और यहाँ पर बैंकिंग का व्यवसाय किया। इस फर्म के व्यवसाय में आपको अच्छी सफलता मिली। आपका सवत् १९७१ में स्वर्गवास हो गया। आप के दो पुत्र हुए जिनके नाम सेठ उम्मेदमलजी तथा धीरजमलजी हैं।

सेठ उम्मेदमलजी का जन्म संवत् १९४६ में तथा धीरजमलजी का सवत् १९४९ में हुआ। आप दोनों भाई बड़े होशियार तथा व्यापार दक्ष पुरुष हैं। आप के हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। सवत् १९८० तक आप दोनों शामिल व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् दोनों अलग २ हो गये और सेठ उम्मेदमलजी ने मेसर्स सौभागमल उम्मेदमल के नाम से कागज का व्यवसाय तथा धीरजमलजी ने मेसर्स सौभागमल धीरजमल के नाम से बैंकिंग का व्यवसाय करना शुरू कर दिया।

सेठ उम्मेदमलजी के तीन पुत्र हैं जिनके पानमलजी, भवरलालजी तथा छोटमलजी हैं। इनमें

ना अपना स्वतंत्र व्यापार करने लगे। सेठ भीखणचन्दजी के तीन पुत्र हुए शोभाचन्दजी, दुलीचन्दजी र भीमराजजी। इनमेंसे प्रथम शोभारामजी अलग होगये एवम् अपना स्वतंत्र व्यापार कलकत्ता में मेसर्स भाचद सुमेरमल के नाम से करने लगे। आपका स्वर्गवास होगया है। आप मिलनसार व्यक्ति थे। आपके मेरमलजी एवम् तनसुखरायजी नामक दो पुत्र हैं। आप लोग भी सज्जन एवम् मिलनसार हैं। रे पुत्र दुलिचन्दजी सेठ नथमलजी के पुत्र न होने से वहाँ दत्तक चले गये। अतएव अब तीसरे त्र भीमराजजी ही इस समय अपनी फर्म मेसर्स कालूराम नथमल ताराचन्द दत्त स्ट्रीट का संचालन रते हैं। इसमें नथमलजी के दत्तक पुत्र सेठ दुलिचन्दजी का भी साझा है।

सेठ नारायणचन्दजी इस समय विद्यमान हैं आपकी वय इस समय ६४ वर्ष की है। आपकी फर्म इस समय कलकत्ता में मेसर्स कालूराम शुभकरन के नाम से चल रही है तथा मुगलहाट में भी आपकी एक फर्म है जहाँ पाट का व्यापार होता है। आपके दीपचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आपही आजकल फर्म के व्यापार का सचालन करते हैं। आप योग्य और मिलनसार सज्जन हैं। आपके चार पुत्र हैं जिनमें तीन के नाम क्रमश शुभकरणजी, जसकरणजी, और रिधकरनजी हैं। बड़े पुत्र व्यापार में सहयोग लेते हैं। सेठ टोडरमलजी के कोई संतान न हुई। दुरंगदासजी के परिवार में उनके पुत्र जेठमलजी और किशनचन्दजी हुए। इस समय किशनचन्दजी के पुत्र नेमचन्दजी, मुगलहाट में किशनचन्द मंगतमल के नाम से व्यापार कर रहे हैं।

सेठ श्रीचंदजी का परिवार—आपके कोई पुत्र न होने से आपने नथमलजी को दत्तक लिया। मगर आपका केवल २२ वर्ष को युवावस्था ही में संवत् १९४४ में स्वर्गवास होगया। नथमलजी का गाव में अच्छा सम्मान था। आपके भी कोई पुत्र न होने से दुलिचंदजी आपके नाम पर दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३७ का है। आप पढ़े लिखे, उत्साही, और चतुर पुरुष हैं। आपने अपने स्वर्गीय पिताजी के स्मारक स्वरूप सरदारशाह में एक दातव्य औषधालय स्थापित किया है। यहाँ यही एक सबसे बड़ा औषधालय है। इसमें करीब ५०, ६०, हजार रुपया लगाया गया था। इसके अतिरिक्त इसके साथही एक जैन पुस्तकालय भी है। बाबू दुलिचन्दजी कुंचबिहार में करीब ९ वर्ष तक वहाँ की कौंसिल के मेम्बर रहे। इसके अतिरिक्त बीकानेर हाईकोर्ट ने सर्व प्रथम आपको सरदारशहर में आनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया। लिखने का मतलब यह है कि आपका यहाँ राज्य एवम् समाज में अच्छा सम्मान है। आपका व्यापार कूचबिहार तथा कलकत्ता में मेसर्स कालूराम नथमल के नाम से होता है। जिसमें आपके भाई भींवराजजी का साझा है यह हम ऊपर लिख ही चुके हैं। इसके अतिरिक्त आपके पुत्रों के नाम से कलकत्ता के ताराचन्द दत्त स्ट्रीट में मेसर्स श्रीचंद मोहनलाल के नाम से जूट का व्यापार होता है। आपके दो पुत्र हैं जिनका नाम चम्पालालजी और मोहनलालजी है। कलकत्ते की ताराचन्द दत्त स्ट्रीट वाला बिल्डिंग इन्हीं पुत्रों के नाम से खरीदी हुई है।

सेठ आईदानजी का परिवार—आपके एक मात्र पुत्र सेठ मगलचन्दजी हुए। आपका जन्म संवत् १९२२ का है। जब कि आपकी अवस्था १५ वर्ष की थी उसी समय आप व्यापार के लिये अपनी फर्म पर कूच बिहार गये। आपके पिताजी के द्वारा निर्मित की हुई धर्मशाला संवत् १९५४ में भूकम्प के

मे श्री पानमलजी अपने पिताजी के साथ कागज के व्यवसाय में काम करते हैं तथा शेष दो बच्चे पढ़ते हैं।
सेठ धारजमलजी के दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रम से भीखमचन्दजी तथा मूलचन्दजी हैं।

इन दोनों भाइयों की ओर से धार्मिक, सार्वजनिक तथा परोपकार के कामों में काफी सहायता दी जाता है।

सेठ फौज़मल चोरीदास रांका, मद्रास

इस परिवार का मूल निवास स्थान वगडी-सज्जनपुर (मारवाड़) है। वहाँ से सेठ फौजमलजी रांका लगभग संवत् १९२० में सेण्ट थाम्स् माउण्ट (मद्रास) में आये और लेनदेन का कारबार शुरू किया तथा अल्पकाल में ही आपने अपनी सम्पत्ति की आशातीत उन्नति की। सेंट थाम्स् माउण्ट दुकान के अलावा संवत् १९४५ में आपने चिन्ताद्रिपेठ-मद्रास में भी एक सराफी दुकान खोली। आपके पुत्र सेठ चोरीदासजी रांका शिक्षित और सुयोग्य व्यक्ति थे। आप में अपने पिताजी के सब गुण मौजूद थे। आप संवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके सामने ही आपके पौत्र जीवराजजी तथा अमोलकचन्दजी राँका का अल्पवय में संवत् १९५६ के पहिले शरीरावसान हो गया था। अपनी दुकान की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए सेठ फौजमलजी राँका संवत् १९७२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ फौजमलजी राँका के कोई सन्तान न रहने से आपने श्री छगनमलजी राँका को गोद लिया।

सेठ छगनमलजी राँका का जन्म संवत् १९४८ मे हुआ। मद्रास और वगड़ी के ओसवाल समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है आपने अनेक धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में प्रशंसनीय भाग लिया है।

सेठ छगनमलजी ने अपनी माता की आज्ञानुसार वगडी में अमरे बकरों की रक्षा के लिए एक बाड़ा खोला है, जिसमें २०० बकरों का पालन होता है वगडी की श्मशान भूमि में एक धर्मशाला की बड़ी कमी थी अत एव आपने उक्त स्थान पर धर्मशाला बनवा कर जनता के लिये सुविधा की है। बगड़ी स्टेशन पर भी आपने एक विशाल धर्मशाला बनवाई है। वगडी में अछूत बालकों के सहायतार्थ आपने एक छोटी सी पाठशाला भी खोल रक्खी है। इसके सिवाय आपने श्री जैन पाठशाला वगड़ी, शान्ति पाठशाला पाली, जैन गुरुकुल ब्यावर, जैन ज्ञान पाठशाला उदयपुर को समय समय पर अच्छी आर्थिक सहायता दी है। आप के पुत्र ...राजमलजी १२ साल के तथा रेखचन्दजी १० साल के हैं। ये दोनों बालक होनहार प्रतीत होते हैं तथा शुद्ध खद्दर धारण करते हैं। छोटी वय में इन्होंने कई भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

इस समय इस परिवार का मद्रास के सेठ थामस माउण्ट तथा चिंताद्रि पैट नामक स्थान पर ब्याज का धंधा होता है। यह दुकान यहाँ अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है।

सेठ सूरजमल हंसराज, रांका (सेठिया) नाशिक

इस परिवार का मूल निवास वीज वाड़ा (जोधपुर के पास) है। आप स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। सेठ सूरजमलजी राँका ८० साल पहिले देश से नाशिक जिले के सिंदे नामक

सम्मान के साथ शरण दी, और उसे अपना भतीजा कह कर प्रसिद्ध किया। जब कुमार उदयसिंह होशियार हो गया तब वीरवर आशाशाह ने कई सरदारों की मदद से उसे उसका राज सिंहासन दिला दिया और इस महान् पुरुष ने इस प्रकार से मेवाड के नष्ट होते वंश को बचा लिया।

महता चीलजी

यह घटना उस समय की है जब कि बनवीर ने अपने षडयंत्रों से महाराणा के स्थान पर चित्तौड में अपना अधिकार स्थापित कर लिया था और महाराणा उदयसिंहजी को चित्तौड छोडने के लिये बाध्य होना पडा था। इसी समय चित्तौडगढ़ के किलेदार जालसी मेहता के वंशज चीलजी थे। चीलजी मेहता बडे बुद्धिमान् स्वामिभक्त और वीर प्रकृति के पुरुष थे। इन्हें बनवीर की अधीनता बहुत खटक रही थी। वे कोई सुयोग्य अवसर की प्रतिक्षा में थे कि जिससे फिर चित्तौड पर महाराणा का अधिकार हो जाय।

उधर महाराणा उदयसिंह अर्वली में जाकर एक स्थान को पसंद कर वहीं रहने लगे। यही स्थान आजकल उदयपुर के नाम से प्रसिद्ध है। महाराणा के साथ आने वाले सरदारों के उत्साह से उन्होंने सेना का सगठन करना प्रारम्भ किया। अपने कतिपय सरदारों के साथ कूंच कर रास्ते में बनवीर के कई गाँवों को हस्तगत करते हुए महाराणा चित्तौड पहुँचे। मगर चित्तौड़ के किले को विजय करना ऐसी खेल नहीं था साथ ही इनके पास तोपखाने का भी उचित प्रबन्ध नहीं था। ऐसी परिस्थिति में किले को तोडना कठिन ही नहीं वरन असंभव था। कहना न होगा कि इस समय कुम्भलगढ़ के किलेदार वीर आशाशाह ने चीलजी मेहता को अपनी स्वामि भक्ति के लिये कहा और कहा कि यही समय वास्तविक सेवा का है। अस्तु।

यह हम ऊपर लिखही चुके हैं कि मेहता चीलजी किसी सुयोग्य अवसर की प्रतिक्षा में थे। अतएव फिर क्या था। उन्होंने युक्ति रचकर बनवीर से कहा कि महाराज किले में खाद्य-द्रव्य बहुत कम हो गया है अतएव यदि आज्ञा करें तो रात के समय किले का दरवाजा खोलकर सामग्री मंगवाली जाय। बनवीर को यह युक्ति सोलह आने जँच गई। यह देख मेहता चीलजी ने सारे समाचार गुप्त रूप से प्रसिद्ध स्वामिभक्त आशाशाह को लिख भेजे।

योजनानुसार ठीक समय पर किले का दरवाजा खोल दिया गया। उधर महाराणा के साथी और राजपूत सरदार एवम् योद्धा तैयार थे ही। बस, फिर क्या था, बडी शीघ्रता से ये लोग हजार पाँच सौ भैंसों एवम् बैलों पर सामान लाद कर किले के फाटक में घुस गये। दर्वाजे पर अधिकार कर हमला बोल दिया। चारों ओर घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। बनवीर हक्का-बक्का हो गया। केवल भागने के सिवा

उसके पास और कोई मार्ग उसकी रक्षा का न था। अतएव वह अपने बाल-बच्चों को लेकर लाखोटा बारी से भाग गया। इस प्रकार मेहता चीलजी की बुद्धिमानी एवम् चतुराई से चित्तौड़ पर फिर से शिशोदिया वंश का राज्य कायम हो गाया।

भारमलजी कावड़िया

भारमलजी ओसवाल जाति के कावडिया गौत्रीय सज्जन थे। ये मेवाड उद्धारक भामाशाह के पिता थे। शुरू २ में ये अलवर से बुलाये जाकर रणथम्भोर के किलेदार नियुक्त हुए। राणा उदयसिंह के शासनकाल में ये उनके प्रधान पद पर प्रतिष्ठित हुए। किलेदार से क्रमश प्रधान पद पर पहुँचना इस बात को सूचित करता है कि ये बडे बुद्धिमान, स्वामिभक्त और राजनीति कुशल थे।

सर्वस्व त्यागी भामाशाह

इतिहास प्रसिद्ध त्यागमूर्ति वीरवर भामाशाह का नाम न केवल मेवाड मे प्रत्युत सारे भारतवर्ष में इतना प्रसिद्ध हो गया है कि उनके सम्बंध में कुछ भी लिखना सूर्य्य को दीपक दिखलाने के सदृश निरर्थक है। स्वामि-भक्ति और देश-भक्ति का जो आदर्श उदाहरण इस पुरुष पुंगव ने रखा था वह इतिहास के अन्दर बड़ा ही अद्भुत है। राजस्थान केशरी स्वाधीनता के दिव्य पुजारी प्रात स्मरणीय महाराणा प्रताप के नाम को आज भारतवर्ष में कौन नहीं जानता। माता के इस दिव्य पुजारी ने, स्वाधीनता के सच्चे उपासक ने अपने देश की आजादी के लिये, अपने आत्म गौरव की रक्षा के लिये, अपने राज्य, अपनी दौलत और अपने एशो-आराम को मुट्ठीभर धूल की तरह विसर्जन कर दिया था। आजादी का यह मतवाला उपासक अपने देश की स्वाधीनता के लिये जंगल २ और रास्ते २ की खाक को छानता फिरता था। इन भयंकर विपत्तियों के अन्दर यह वीरात्मा हमेशा पहाड की तरह अटल रहा, मगर सयोग की बात है एक समय ऐसा आया जब कि भयंकर से भयंकर विपत्तियों में भी अटल रहने वाले इस वीर को भी एक छोटी सी घटना ने विचलित कर दिया, इसके हृदय को चूर २ कर डाला। बात यह हुई कि एक दिन जगली घास की रोटियाँ इन लोगों के लिये बनाई गई। इन रोटियों में से प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में एक २ रोटी आधी सुबह और आधी शाम के लिये—आई। राणाजी की छोटी लडकी अपने हिस्से की उस आधी रोटी को खा रही थी कि इतने में एक जंगली बिलाव आया और उसके हाथ से रोटी छीन ले गया। जिससे वह लड़की एक दम चीत्कार कर बैठी और भूख के मारे करुण क्रंदन करने लगी। इस आकस्मिक घटना से महाराणा

स्थान में आये। आपके पुत्र वालारामजी और उनके पुत्र देवीचन्दजी तथा जसराजजी सिंदिया में रहते हैं। तथा रतनचन्दजी के पुत्र नैनसुखजी, माणकलालजी व धनराजजी नाशिक में किराने का व्यापार करते हैं।

सिंदिया से सेठ हसराजजी राँका शके १८२८ में नाशिक आये तथा यहाँ किराने का काम शुरू किया, आपने इस व्यापार मे काफी उन्नति प्राप्त कर फर्म की प्रतिष्ठा व इज्जत को बढ़ाया। आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ आपके पूनमचदजी, चुन्नीलालजी, मोहनलालजी और फतेचंदजी नामक ४ पुत्र हैं। पूनमचन्दजी स्थानीय म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर हैं। चुन्नीलालजी एम० ए० फाइनल और एल० एल० बी० में अध्ययन कर रहे हैं। मोहनलालजी ने मैट्रिक तक शिक्षा पाई है, तथा फतेचन्दजी मैट्रिक में पढ़ रहे हैं। चुन्नीलालजी राँका ओसवाल जैन बोर्डिंग नाशिक के सेक्रेटरी हैं, इसी तरह आप नाशिक जिला ओसवाल सभाके अधिवेशन के सेक्रेटरी थे। मोहनलालजी को राष्ट्रीय कार्मों में भाग लेने के उपलक्ष में सन् १९१२ में ३ मास की जेल हुई थी। यह परिवार नाशिक व आसपास के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

सेठ पूनमचन्द श्रीचन्द रांका, पूना

इस परिवार का मूल निवास स्थान राणी (गोडवाड) है राणी से सेठ पूरनचन्दजी राका ६० साल पहिले पूना आये। थोड़े समय तक आपने रामचन्द हिम्मतमल की भागीदारी में व्यापार किया। पश्चात् अपने साले सादडी (गोडवाड़) निवासी सेठ चत्रींगजी की भागीदारी मे पूना केम्प में संवत् १९४४ में दुकान की। इस दुकान ने अंग्रेज लोगों से लेन देन का व्यापार शुरू किया आपने इस व्यापार में बहुत सम्पत्ति कमाकर अपने मकानात दुकानें बगले आदि बनवाये। इस समय ४६ मालकम टैंक रोड पर पूनमचन्द श्रीचन्द के नाम से इस दुकान पर बैङ्किग तथा प्रापर्टी के किराये का कार्य्य होता है। यहाँ की दुकानों में यह दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ पूनमचंदजी के पुत्र कुदनमलजी तथा चदनमलजी इस समय सादड़ी में रहते हैं।

सेठ चत्रींगजी का परिवार—आपने १८ सालों तक सेठ रामचन्द हिम्मतमल पूना वालों की दुकान पर नौकरी की। तदनतर अपने बहनोई के साझे में पूना में दुकान की। उस दुकान के व्यापार को आपने बहुत बढ़ाया। चतरींगजी सेठ ने सादडी में कई धार्मिक काम किये। आपका जन्म संवत् १९१७ मे हुआ। आपने राणकपुरजी के मेले में ७ हजार आबूजी आदि के संघ में ३५०१) तथा न्यात के नोरे में ३१००) लगाये। आपके पुत्र केसरीमलजी का जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप इस समय व्यापार का संचालन करते हैं। केसरीमलजी के पुत्र सागरमलजी तथा जावतराजजी हैं। सागरमलजी होशियार युवक हैं। आप व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार लुंका गच्छ का अनुयायी है।

सेठ कीरतमल पन्नालाल रांका, चिंचवड़ (पूना)

इस परिवार का मूल निवास स्थान भाद्री (जोधपुर) है। वहाँ से लगभग १०० साल पहिले सेठ तेजमलजी रांका के पुत्र सेठ कीरतमलजी राका चिंचवड आये तथा कपडा व अनाज का व्यापार शुरू किया। आपके पन्नालालजी, निहालचंदजी तथा मूलचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें सेठ पन्नालालजी रांका चिंचवड़ के अग्रगण्य थे। आप स्थानीय फतेचन्द जैन विद्यालय के प्रथम सभापति थे। इस संस्था को
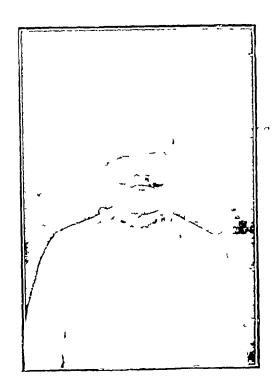
सेठ चांदमलजी वाठिया (वींजराज जोरावरमल), कलकत्ता

लाला सतरामजी जैन (सतराम मगतराम) अम्बाला

कु० पूनमचंदजी वाठिया S/o चांदमलजी वाठिया.

सेठ नथमलजी वाठिया (विरदीचंद नथमल) कलकत्ता

आपने अच्छी सेवा की। संवत् १९८७ की सावण सुदी ११ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भाई ... संवत् १९५५ तथा ७२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में सेठ पन्नालालजी राका के पुत्र हीरालालजी, पूनमचन्दजी तथा बशीलालजी और ...चन्दजी राका के पुत्र लादूरामजी विद्यमान हैं। सेठ हीरालालजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप ... विद्यालय की प्रबंधक कमेटी के मेम्बर और ग्राम पचायत के प्रधान हैं। आप स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले हैं तथा यहाँ के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके यहाँ कीरतमल पन्नालाल के नाम से अनाज का व्यापार होता है।

बांठिया

बाठिया गौत्र की उत्पत्ति

ऐसा कहा जाता है कि संवत् ११६७ में रणथम्भोर के राजा लालसिंह पवार को उसके सात पुत्रों सहित आचार्य्य श्री जिनवल्लभसूरि ने जैन धर्म का प्रतिबोध दिया। उसके बड़े पुत्र का नाम बठयोद्धार था, इन्हीं के वंशज बाठिया कहलाये। इस वंश में संवत् १५०० के लगभग बादशाह हुमायूँ के समय में ...सिंहजी बाठिया नामक बड़े प्रसिद्ध और धनवान व्यक्ति हुए। इन्होंने लाखों रुपये लगाकर कई जैन मन्दिरों का उद्धार करवाया और शत्रुंजयका एक विशाल संघ निकाला जिसमें प्रति आदमी एक अकबरी ... में बाठी।

सेठ मौजीरामजी बाँठिया का खानदान भीनासर

इस परिवार के लोग करीब संवत् १९१० में भिनासर में आकर बसे।

सेठ मौजीरामजी इस परिवार में सब से अधिक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हुए। आप ही ने लगभग ७५ वर्ष पूर्व कलकत्ता जाकर अपने और अपने छोटे भाई सेठ प्रेमराजजी के नाम से फर्म स्थापित की। ... अपनी व्यापारिक कुशलता से फर्म की अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४१ में हो गया। आप मन्दिर मार्गी जैनी थे—आप बड़े धर्म परायण थे। आपके सेठ पन्नालालजी नामक पुत्र हुए।

सेठ पन्नालालजी—आप सरल और शान्ति प्रकृति के पुरुष थे। व्यापार में आप विशेष दिलचस्पी ... थे और अधिकतर अपने देश में ही रहा करते थे। आपके ३ पुत्र हुए सेठ सालिमचन्दजी, हमीरमलजी, और किशनचन्दजी। सेठ किशनचन्दजी कई वर्ष हुए इस फर्म से अलग हो गये हैं। इनमें से सेठ हमीरमलजी बड़े प्रतिभाशाली पुरुष थे। आपकी बुद्धिमत्ता से फर्म ने उत्तरोत्तर उन्नति की। आपका जन्म सं० १९१९ में हुआ था। आप बाईस सम्प्रदाय के जैनी थे और धर्म में आपकी बड़ी निष्ठा थी, ... अपने जीवन काल में बहुत सा रुपया सत्कार्यों में व्यय किया। यही नहीं बल्कि एक ... रकम ५१०००) रु० की एक मुश्त पुण्य खाते निकाल कर अलग फण्ड स्थापित किया और उसमें से समय २ पर अच्छे २ सार्वजनिक कार्यों में व्यय करते रहे। अभी भी इस ... से एक कन्या पाठशाला सुचारूरूप से चल रही है, उसकी देख रेख सेठ सोहनलालजी और चम्पा-

हा। इन्होंने आपको कई प्रशंसा पत्र प्रदान किये हैं। आपको पिपलोदा ठिकाने से वक्षाऊ जागीर मिली हुई है तथा प्रतापगढ़ स्टेट से पेंशन मिल रही है। इस समय आप सीतामऊ में शांतिलाभ कर रहे हैं। आपका धार्मिक जीवन भी अच्छा है। उधर ओसवाल समाज में भी आप प्रतिष्ठित और सम्माननीय व्यक्ति माने जाते हैं। आपके जसवंतसिंहजी नामक एक पुत्र है। आप इस समय सीतामऊ स्टेट में नायब दीवान हैं। आपकी पढ़ाई B A तक हुई है। आपके शेरसिंहजी, सवाईसिंहजी, समरथसिंहजी और विमलसिंहजी नामक चार पुत्र हैं। आप सब लोग स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ भागचन्दजी वांठिया का परिवार, जयपुर

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान बीकानेर था। वहा से चुरू होते हुए करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ भागचन्दजी जयपुर आये। यहां आकर आपने जवाहरात का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। यहां की स्टेट में भी आपका बहुत सम्मन था। आपको यहां सेठ की पदवी मिली हुई थी। आपका स्वर्गवास होगया। आपके छोगमलजी और बींजराजजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ छोगमलजी—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आप जीवन भर तक सरकारी नौकरी करते रहे। आप उस समय में जयपुर स्टेट के कस्टम-विभाग के सबसे बड़े आफिसर थे। आपके यहां सूरजमलजी दत्तक आये। आपका भी स्वर्गवास होगया। इस समय आपके दत्तक पुत्र मोतीलालजी विद्यमान हैं और छोगमल सूरजमल के नाम से जयपुर ही में लेन देन का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र का नाम पन्नालालजी हैं।

सेठ बींजराजजी—आप व्यापार के निमित्त कलकत्ता गये और व्याज का काम करने लगे। आप संवत् १९५० में बङ्गाल बैंक की सिराजगंज और जलपाईगुडी नामक स्थानों के खजांची नियुक्त हुए। आप का स्वर्गवास होगया। आपके जोरावरमलजी, सूरजमलजी, कस्तूरचन्दजी, सौभागमलजी और चांदमलजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें से जोरावरमलजी का स्वर्गवास हो गया। उनके अमरचन्दजी और [illegible]चन्दजी नामक दो पुत्र हैं। सूरजमलजी दत्तक चले गये। कस्तूरचन्दजी जयपुर में मौजूद हैं। सौभागमलजी का तथा आपके पुत्र हीरालालजी दोनों का स्वर्गवास होगया।

सेठ चांदमलजी—आपके समय में यह फर्म पटना, चटगांव, अकियाव आदि स्थानों पर इम्पिरियल बैंक की खजांची नियुक्त हुई। इसके अतिरिक्त आपने वांठिया एण्ड कम्पनी के नाम से [illegible] में भी चांदी सोने का काम करने के लिये फर्म खोली। इस समय आपका व्यापार कलकत्ता, [illegible]गुड़ी और चटगांव में हो रहा है। यह फर्म चाय बागान की मैनेजिंग एजन्ट है। चटगाँव में [illegible] जमींदारी भी है। इस समय आपकी फर्म पर बींजराज जोरावरमल के नाम से व्यापार होता है। अन्यत्र बुलियन कम्पनी लि० के नाम से आप व्यापार करते हैं। आपके पूनमचन्दजी और [illegible]चन्दजी नामक २ पुत्र हैं। इनमें से बड़े व्यापार में सहयोग लेते हैं।

लालजी करते हैं। सेठजी बड़े उदार, दयालु, शान्त स्वभाव तथा धर्म परायण थे। आपका स्वर्गवास फाल्गुन वदी १२ सम्वत् १९८५ को हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश. सेठ कनीरामजी, (जो इनके बड़े भाई सेठ सालिमचन्दजी के दत्तक है) सोहनलालजी, और चम्पालालजी हैं। आजकल आप तीनों भाई अलग २ हो गये हैं और अपना २ व्यापार स्वतन्त्र रूप से करते हैं।

इस परिवार की ओर से सभी सार्वजनिक कार्य्यों मे सहायता प्रदान की जाती है। आपकी ओर से साधुमार्गी श्री श्वेस्था० जैन हितकारिणी संस्था में १९१११) रुपये प्रदान किये हैं। इसके अतिरिक्त भीनासर स्कूल की वर्तमान बिल्डिङ्ग भी इस परिवार तथा से० बहादुरमलजी बाँठिया द्वारा बनाई गई है इसी परिवार की विशेष सहायता से गंगाशहर से भीनासर तक पक्की सड़क बनाई गई थी। इसी प्रकार गाँव की प्रत्येक संस्था पिंजरापोल वगैर में भी आपकी ओर से अच्छी सहायता दी जाती है।

बीकानेर गवर्नमेंट में भी आप लोगों का अच्छा मान है। एच० एच० महाराजा साहिब बहादुर बीकानेर की ओर से एक खास रुक्का सेठ हमीरमलजी कनीरामजी के नाम से मिला हुआ है।

सेठ कनीरामजी—आप बड़े साधु प्रकृति के मिलनसार सज्जन हैं। आपका व्यापार पहिले सेठ मौजीरामजी पन्नालालजी के नाम से सम्मिलित रूप में होता था पर कई वर्षों से कलकत्ते में से० सालिमचन्दजी कनीरामजी के नाम से स्वतन्त्र रूप में चलानी एवम् जूट का होता है।

इस फर्म की भी भिन्न २ नामों से ताम्बाहार (धुवडी) मनमुख (सिलहट) सोनातोला (बुगडा) नामक स्थानों पर और भी शाखायें है। इसके अतिरिक्त दिल्ली मे इण्डोयूरोपियन मैशीनरी कम्पनी के नाम से प्रिंटिंग मशीन एवम् प्रिंटिंग सम्बन्धी सब प्रकार के सामान का व्यापार होता है। इस विषय का बहुत बड़ा स्टाक आपके यहाँ हमेशा मौजूद रहता है। इसकी लाहौर, कलकत्ता, बम्बई में ब्रांचें हैं इसके और भी हिस्सेदार हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश श्रीयुत तोलारामजी, रामलालजी, और भैरोंदानजी हैं। सेठजी के इस समय एक पौत्र भी है जिसका नाम दौलतरामजी है। आपका बीकानेर स्टेट में अच्छा मान सम्मान है। महाराजा साहिब बहादुर बीकानेर की ओर से आपको कैफियत मिली हुई है। आप सामयिक समाज सुधार के भी बड़े प्रेमी हैं।

सेठ सोहनलालजी—आप भी पहले शामिल में ही व्यवसाय करते थे, मगर तीन वर्षों से पृथक ही आप अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

आपका कलकत्ते में, मेसर्स मौजीराम पन्नालाल के नाम से ४५ आर्मीनियन स्ट्रीट में छाते का बड़े स्केल पर व्यापार होता है तथा हमीरमल सोहनलाल के नाम से १० कैनिंग स्ट्रीट में कपड़े की चालानी का काम होता है। आपकी एक ब्राच चटगाव में भी है। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमस सम्पत-लालजी एवम् इन्द्रकुमारजी है।

सेठ चम्पालालजी—आप भी आजकल स्वतन्त्र व्यापार कर रहे हैं। आपका व्यापार कलकत्ता में मेसर्स हमीरमलजी चम्पालाल के नाम से न० २ राजा उडमट स्ट्रीट में होता है। इस फर्म की शाखाएँ कई स्थानों में हैं जहाँ पर जूट की खरीदी का काम होता है। कलकत्ता में आपका जूट मारकेट में अच्छा नाम है। आपने बेलिङ्ग भी पास कराया हुआ है और आप बड़े मिलनसार, उत्साही, विद्याप्रेमी तथा उदार हृदय हैं।

श्री मगनमलजी बांठिया का परिवार, अजमेर

इस परिवार के सेठ मगनमलजी ने कई बडे २ ठिकानों पर मुनीमात की सर्विस की । आपके इस समय चार पुत्र विद्यमान हैं जिनके नाम क्रमश बा० मानकमलजी, कस्तूरमलजी, कल्याणमलजी और इन्द्रमलजी हैं ।

माणकमलजी बांठिया—आपका अध्ययन मेट्रिक तक हुआ । आप करीब ३० वर्षों से रेल्वे में सर्विस कर रहे हैं । आप मिलनसार सज्जन हैं ।

कस्तूरमलजी बांठिया—आपका जन्म संवत् १९५१ का है । आपने बी० काम करने के पश्चात् बिडला ब्रादर्स लिमिटेड कलकत्ता के यहाँ सर्विस की । यहां आपकी होशियारी और बुद्धिमानी से फर्म के मालिक बहुत प्रसन्न रहे । यहा तक कि आपको उन्होंने अपनी लण्डन फर्म दी ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूस कम्पनी लिमिटेड के मैनेजर बनाकर भेजे । इस फर्म पर भी आपने बहुत सफलता के साथ काम किया। वहा आप इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स के वाइस प्रेसिडेण्ट तथा आर्य भवन के सेक्रेटरी रहे थे। आप विलायत सकुटुम्ब गये थे । आजकल आप अजमेर में बांठिया एण्ड कम्पनी के नाम से बुक सेलिंग का व्यवसाय करते हैं । आपको व्यापारिक विषयों का अच्छा ज्ञान है । आपने इस विषय पर 'बहीखाता' 'मुनीमी' इत्यादि पुस्तकें भी लिखी हैं । आप मिलनसार और सरल व्यक्ति हैं ।

कल्याणमलजी बांठिया—आप ने बी० एस० सी० तक शिक्षा पास की । आप कोटे के सेठ समीरमलजी बांठिया के यहा दत्तक चले गये । कोटा स्टेट में आप कई स्थानों पर नाजिम रहे । इस समय आप इन्द्रगढ ठिकाने के कामदार हैं । आपभी मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं।

इन्द्रमलजी बांठिया—आप इस समय अपने बड़े भ्राता कस्तूरमलजी के साथ व्यापार में सहयोग प्रदान करते हैं ।

सेठ बख्तावरमल जीवनमल बांठिया, सुजानगढ़

इस परिवार के लोग बाठडी नामक स्थान के निवासी थे । वहाँ से करीब १०० वर्ष पूर्व सुजानगढ में आये । इन्हीं में सेठ बींजराजजी हुए । आपने पहले पहले बगाल में जाकर शेरपुरा (मैमनसिंह) में साधारण दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया । पश्चात् सफलता मिलने पर और भी शाखाएँ स्थापित कीं । इन सब फर्मों से आपको अच्छा लाभ रहा । आप तेरापन्थी सम्प्रदाय के अनुयायी थे । आपका स्वर्गवास होगया । आपके रूपचन्दजी, बख्तावरमलजी और हजारीमलजी नामक तीन पुत्र हुए । संवत् १९६४ तक इन सबके शामिल में व्यापार होता रहा पश्चात् फर्म बन्द हो गई और आप लोग अलग अलग स्वतन्त्र रूप से व्यापार करने लगे । रूपचन्दजी का स्वर्गवास होगया हजारीमलजी के कोई पुत्र नहीं है । बख्तावरमलजी का स्वर्गवास भी हो गया । आपके जीवनमलजी नामक एक पुत्र है ।

बाबू जीवनमलजी—आपने प्रारभ में कपडे की दलाली का काम प्रारंभ किया । पश्चात् बेगराजजी चोरडिया बिदासर वालों के साझे में कलकत्ता में मोतीलाल सोहनलाल के नाम से व्यापार प्रारम्भ किया । एक वर्ष पश्चात् इसी नाम को बदलकर आपने जीवनमल सोहनलाल कर दिया । सोहनलाल

बनारामजी बांठिया, भीनासर

सेठ बहादुरमलजी बांठिया, भीनासर

रामजी बांठिया, भीनासर.

सेठ बहादुरमलजी बांठिया के पुत्र, भीनासर.

जी, देगानजी के पुत्र हैं। इस समय इस फर्म पर नम्बर ४ दहीहट्टा में चलानी का काम होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्म की खुलना, लालमनीरहार, और मैमनसिंह में भिन्न २ नामों की फर्में हैं जहां पर कपड़े का व्यापार होता है। मैमनसिंह में आपकी चार और ब्रांचें है। उन पर भी कपड़ा एवम् रुइ का व्यापार होता है।

सेठ शोभाचन्दजी बांठिया का परिवार, पनरोठी

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवास स्थान नागौर का है। आप ओसवाल जाति के बांठिया गौत्रीय जैन श्वेताम्बर मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं।

श्री शोभाचन्दजी का जन्म संवत् १९३० का था। आप बडे साहसी और कर्मवीर पुरुष थे। आप संवत् १९५० में पहले पहल नागौर से गुलेजगड गये और वहा अपना फर्म स्थापित किया। वहाँ से सवत् १९७४ में पनरोटी आये और यहा आकर शोभाचन्द सुगनचन्द के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। संवत् १९८८ में आपका स्वर्गवास होगया।

आपके एक पुत्र है जिनका नाम सुगनमलजी हैं। आपका जन्म संवत् १९५२ का है। आप इस समय पनरोटी में बेंकिंग का व्यापार करते है। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम भँवरलालजी, जवेरीलालजी और मगनराजजी हैं। श्री सुगनमलजी ने सवत् १९८९ मे कोलार में मेसर्स सुगनमल जवरीमल के नाम से बेङ्किंग व्यवसाय की दुकान खोली है।

श्रीयुत् शोभाचन्दजी बडे धार्मिक और योग्य पुरुष थे। आपकी ओर से पनरोटी में सदाव्रत चालू है। शोभाचन्दजी का स्वर्गवास होने पर आपके पुत्र सुगनचन्दजी ने ५०००) धार्मिक कार्य्यों में लगाये। इसी प्रकार आपने ओशिया की धर्मशाला में एक कमरा बनवाया और पनरोटी की स्मशान भूमि में एक धर्मशाला बनवाई।

नाहटा

सेठ पूनमचंद ओंकारदास नाहटा, भुसावल

इस परिवार का मूल निवास जेतारण (जोधपुर) है। देश से सेठ हसराजजी नाहटा लगभग १०० साल पहले व्यापार के निमित्त वामणोद (भुसावल) आये। आपके पुत्र अमरचन्दजी नाहटा के हाथों से इस दुकान की काफी तरक्की हुई। आपका संवत् १९५९ में स्वर्गवास हुआ। आपके ताराचन्दजी तथा ओंकारदासजी नामक दो पुत्र हुए इनमें ताराचन्द जी का संवत् १९५९ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र उदयचन्दजी विद्यमान हैं।

ओंकारदासजी नाहटा—आप अमरचन्दजी नाहटा के पुत्र थे। आपने भुसावल तथा आसपास के व्यापारिक समाज में उत्तम प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपके पुत्र सेठ पूनमचन्दजी नाहटा विद्यमान हैं।

पूनमचदजी नाहटा—आप शिक्षा प्रेमी तथा सुधार प्रिय सज्जन हैं। लगभग १२ सालों से आप ओसवाल शिक्षण सस्था के म.ा मन्त्री है। यह सस्था ओसवाल युवकों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आर्थिक सहायता देती है। इस संस्था का तमाम सचालन आप ही के जिम्मे है। आप भुसावल म्युनिसिपैलिटी के वाइस प्रेसिडेंट भी रहे हैं। जातीय सुधार के कामों में आप बडे उत्साह से भाग लेते हैं। आप खानदेश तथा बरार के शिक्षित ओसवाल सज्जनों में वजनदार तथा अग्रगण्य व्यक्ति हैं। आप के यहां पूनमचन्द नारायणदास के नाम से कृषि तथा साहुकारी लेनदेन का काम होता है।

इस प्रकार सेठ उदयचन्दजी नाहटा के जवरीलालजी, मंसुखलालजी तथा सरूपचन्दजी नामक ३ पुत्र हैं। इनमें जंवरीलालजी नाहटा एडवोकेट धूलिया मे प्रेक्टिस करते हैं।

सेठ चांदमल भोजराज नाहटा, मोमासर

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ वीरभानजी करीब १०० वर्ष पूर्व तोल्यासर को छोड़कर मोमासर नामक स्थान पर आकर बसे। आपके ६ पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश हुकमचन्दजी, छोगमलजी, गुलाबचन्दजी, चौथमलजी, केशरीचन्दजी और शेरमलजी था। जिनका परिवार इस समय अलग २ व्यापार कर रहा है। यह फर्म सेठ गुलाबचन्दजी के परिवार की है।

सेठ गुलाबचन्दजी—आपने कलकत्ता आते ही पहले मोमासर निवासी सतीदास उम्मेदमल के यहां नौकरी की। पश्चात् आप महासिंह राय मेघराज बहादुर के यहा रहे। इसके पश्चात् आपने अपनी स्वतन्त्र फर्म स्थापित की। आप बड़े योग्य, व्यापार चतुर और प्रतिभावान व्यक्ति थे। आप के हाथों से फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८७ में होगया। आपके कर्मचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ करमचदजी—आपका जन्म संवत् १९३८ का है। आप भी अपने पिताजी के साथ व्यापार कार्य्य करते रहे। आपने अपनी एक और फर्म नवाबगज में खोली और जूट का व्यापार प्रारम्भ किया। इसके अतिरिक्त आपने शोराक मिल, न्यू शोरोक मिल, सूरतमिल, स्टेंडर्ड मिल, चायना मिल, मफतलाल आईलमिल, अंबिका मिल आदि कई मिलों की दलाली और सोल ब्रोकरी का काम किया। इस व्यवसाय में आपको बहुत सफलता रही। आपका स्वर्गवास आपके पिताजी के चार रोज पश्चात् ही होगया। इस समय आपके आसकरनजी चादमलजी और पनेचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों भ्राता शिक्षित, मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आप बडी होशियारी से अपनी फर्म का सचालन कार्य्य कर रहे हैं। आप श्वेताम्बर तेरापथी संप्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ आसकरणजी के हनुतमलजी, बच्छराजजी, मगराजजी और दौलतरामजी नामक पुत्र हैं। चांदमलजी के पुत्रों का नाम अमिचन्दजी और शुभकरनजी हैं। आप सब लोग अभी पढ़ रहे हैं।

इस फर्म का व्यापार कलकत्ता में उपरोक्त नाम से नं० ४ राजा उडमण्ड स्ट्रीट में होता है। इसकी ब्राच नवाबगज में है। जहा जूट और कमीशन का काम होता है। मोमासर मे यह परिवार बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ पेमराज हजारीमल बाँठिया, भीना र

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवास स्थान भीनासर (बीकानेर) में है। आप ओसवाल जाति स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के सज्जन हैं। कलकत्ते में इस फर्म की स्थापना करीब ८५ वर्ष पहले मोतीराम प्रेमराज के नाम से हुई थी, आप दोनों सहोदर भ्राता थे। उसके पश्चात् सेठ प्रेमराजजी के पुत्र सेठ हजारीमलजी मगलचन्दजी ने उपरोक्त फर्म से पृथक होकर सं० १९३९ में प्रेमराज हजारीमलके नाम स फर्म की स्थापना की। आपके उद्योग से इस दुकान की अच्छी उन्नति हुई। हजारीमलजी का जन्म स० १९१३ में और स्वर्गवास स० १९६९ में हुआ। मगलचन्दजी का जन्म सं० १९२० में हुआ— आपका देहावसान स० १९५० में अल्पावस्था में ही हो गया। आप बडे उदार, तथा सदाचारी, पुरुष थे। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका जन्म १९२७ में और स्वर्गवास सं० १९६१ में हुआ था।

इस समय सेठ रिखबचन्दजी के पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी हैं। आप बडे योग्य, तथा उदार पुरुष हैं। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश श्रीयुक्त तोलारामजी श्यामलालजी और बन्सीलालजी है। फर्म का कार्य आपकी तथा आपके बडे पुत्र की देख भाल में सुचारुरूप से चल रहा है।

इस खानदान की दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर बड़ी रुचि रही है। श्री हजारीमलजी ने अपने जीवन काल ही में एक लाख इकतालीस हजार रुपये का दान किया था जिससे इस समय

सेठ गुलाबचंदजी नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर.

सेठ करमचंदजी नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर

... नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर.

सेठ चांदमलजी नाहटा (चांदमल भोजराज) मोमासर.

बाबू सोहनलालजी बाठिया बिल्डिंग कलकत्ता.

सेठ पेमराज हजारीमल बाँठिया, भीनासर

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवास स्थान भीनासर (बीकानेर) में है। आप ओसवाल जाति के स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के सज्जन हैं। कलकत्ते में इस फर्म की स्थापना करीब ८५ वर्ष पहले मोतीराम प्रेमराज के नाम से हुई थी, आप दोनों सहोदर भ्राता थे। उसके पश्चात् सेठ प्रेमराजजी के पुत्र सेठ हजारीमलजी मंगलचन्दजी ने उपरोक्त फर्म से पृथक होकर सं० १९३९ में प्रेमराज हजारीमलके नाम से फर्म की स्थापना की। आपके उद्योग से इस दुकान की अच्छी उन्नति हुई। हजारीमलजी का जन्म सं० १९१३ में और स्वर्गवास स० १९८९ में हुआ। मंगलचन्दजी का जन्म सं० १९२० में हुआ— तथा देहावसान स० १९५० में अल्पावस्था में ही हो गया। आप बड़े उदार, तथा सदाचारी, पुरुष थे। इनके श्री रिखबचन्दजी दत्तक लिये गये थे। आपका जन्म १९२७ में और स्वर्गवास सं० १९८१ में हुआ था।

इस समय सेठ रिखबचन्दजी के पुत्र श्रीयुत बहादुरमलजी हैं। आप बड़े योग्य, तथा उदार पुरुष हैं। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः श्रीयुक्त तोलारामजी श्यामलालजी और बन्शीलालजी हैं। फर्म का कार्य आपकी तथा आपके बड़े पुत्र की देख भाल में सुचारुरूप से चल रहा है।

इस खानदान की दान-धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की ओर बड़ी रुचि रही है। श्री हजारीमलजी ने अपने जीवन काल ही में एक लाख इकतालीस हजार रुपये का दान किया था जिससे इस समय कई संस्थाओं को सहायता मिल रही है। इसके पहले भी आप अनेकों बार अपनी दानवीरता का परिचय समय २ पर देते रहे हैं। आपकी ओर से भीनासर में एक जैन श्वेताम्बर औषधालय भी चल रहा है। इसके अतिरिक्त यहाँ की पिञ्जरापोल की बिल्डिङ्ग भी आप ही के द्वारा प्रदान की है तथा ओसवाल पंचायती के मकान की भूमि भी आपने ही प्रदान की है।

इसके अतिरिक्त यहाँ के व्यवहारिक स्कूल की बिल्डिङ्ग भी मोतीराम पन्नालाल की फर्म के मालिक श्री हमीरमलजी, कनीरामजी की और आपकी ओर से ही प्रदान की गई है और आपने रु० १९१११) ... जैन हितकारिणी संस्था में दान दिया है।

सेठ बिरदीचन्दजी बांठिया का परिवार, बीकानेर

इस परिवार के लोग बाईस सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इसमें सर्व प्रथम सेठ साहबसिंगजी हुए। आपके पुत्र फूलचन्दजी बीकानेर ही में रहकर व्यापार करते रहे। आपके पुत्र जोरावरमलजी और तिलोकचन्दजी हुए। इनमें से तिलोकचन्दजी का परिवार प्रतापगढ़ चला गया। जिसका परिचय प्रतापगढ़ के बांठिया परिवार के नाम से दिया जा रहा है। सेठ जोरावरमलजी बीकानेर से व्यापार के निमित्त ... गए और वहाँ अंग्रेजों के साथ बैंकिंग व्यापार प्रारंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। ... आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बिरदीचन्दजी और लखमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। लखमीचन्दजी ... आयु ही में स्वर्गवास हो गया।

सेठ बिरदीचन्दजी पहले पहल कलकत्ता आये और अपने पुत्र किशनमलजी के साथ बिरदीचन्द

सेठ मुल्तानचंद चौथमल नाहटा, छापर

इस परिवार के पुरुष सेठ खडगसिंहजी के पुत्र हुकमचन्दजी और मानमलजी के पुत्र जोरावरमल जी और मुल्तानचन्दजी करीब ८० वर्ष पूर्व चाडवास नामक स्थान से छापर में आये। इस समय आप लोगों की बहुत साधारण स्थिति थी। आप लोग पहले पहल बंगाल प्रांत के ग्वालपाडा नामक स्थान पर गये एवम् हुकुमचन्द मुल्तानचन्द के नाम से अपनी फर्म स्थापित की। इसमें जब अच्छी सफलता रही तब आपने इसी नाम से कलकत्ता में भी अपनी एक ब्रांच खोली। इन दोनों फर्मों से आपको अच्छा लाभ हुआ। संवत् १९४९ में आप लोग अलग २ होगये। इसी समय से हुकुमचन्दजी के वंशज अलग अलग व्यापार कर रहे हैं। सेठ जोरावरमलजी का तथा सेठ मुल्तानचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। सेठ जोरावरमलजी के २ पुत्र हुए जिनके नाम सेठ चौथमलजी और तखतमलजी था। इनमें से चौथमलजी सेठ मुल्तानचन्दजी के नाम पर दत्तक रहे। आप दोनों भाइयों ने भी फर्म का योग्यता पूर्वक संचालन किया। इसी समय से इस फर्म पर उपरोक्त नाम पड रहा है। आप दोनों भाई बड़े प्रतिभा सम्पन्न थे। आपने पान बाज़ार, श्यामपुर, कुईमारी औ डंडरू नगर आदि स्थानों पर भिन्न २ नामों से अपनी शाखाएँ स्थापित कीं। सेठ चौथमलजी का स्वर्गवास होगया। आपके पृथ्वीराजजी, [illegible]चन्दजी और कुन्दनमलजी नामक तीन पुत्र हैं। सेठ तखतमलजी इस समय विद्यमान हैं। आपके इस समय ६ पुत्र हैं जिनके नाम मन्नालालजी, पदमचन्दजी, मोतीलालजी वगैरह है। आप सब लोग व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। आप लोगों ने मऊनाट भंजन में एक और ब्रांच खोली हैं। जहां [illegible] बने हुए कपडे का व्यापार होता है। आप लोग मिलनसार और सज्जन हैं। बाबू मोतीलालजी [illegible] में अध्ययन कर रहे हैं। आप करीब तीन साल से ओसवाल नवयुवक के ज्वाइंट सम्पादक हैं। आप कवि भी हैं।

आप लोगों का उपरोक्त स्थानों पर भिन्न भिन्न नामों से बैंकिङ्ग, जूट और कपड़े का व्यापार होता है। आप लोग तेरापन्थी श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ उदयचन्दजी राजरूपजी नाहटा, बीकानेर,

इस परिवार के पूर्व पुरुषों का मूल निवास स्थान कानसर नामक ग्राम था। वहाँ से ये लोग [illegible] होते हुए डाईसर नामक स्थान पर आये। यहाँ से फिर सेठ जैतरूपजी के पुत्र उदयचन्दजी, [illegible], देवचन्दजी और बुधमलजी करीब ५० वर्ष पूर्व बीकानेर आकर बसे।

सेठ उदयचन्दजी का परिवार—सेठ उदयचन्दजी इस परिवार में नामांकित व्यक्ति हुए। संवत् [illegible] के करीब आप ग्वालपाडा (बंगाल) नामक स्थान पर गये एवम् वहाँ अपनी एक फर्म स्थापित की। इसमें [illegible] बहुत सफलता रही। आपने संवत् १९०५ में यहाँ एक जैन मन्दिर भी श्री संघ की ओर से बनवाया। [illegible] अच्छी सहायता भी प्रदान की। आपके पुत्र न होने से आपके नाम पर दानमलजी दत्तक लिये [illegible] विदेश का देश ही में रहे। आप नि. संतान स्वर्गवासी हो गये अतएव आपके नाम पर [illegible] दत्तक आये। आजकल आप ही इस फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। [illegible] हीरोचन्दजी और बसंतलालजी नामक दो पुत्र हैं।

वदनमल के नाम से फर्म स्थापित की। कुछ समय पश्चात् आपके दूसरे पुत्र वदनमलजी भी इसमें शामिल हो गये। आपके व्यवसाय में उतरते ही फर्म की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी। संवत् १९१४ में बिरदी चन्दजी का स्वर्गवास हो गया। आप बड़े धार्मिक प्रवृति के पुरुष थे। आपका समाज में बड़ा आदर, सत्कार था। आपके स्वर्गवास के १० वर्ष पश्चात् आपके दोनों पुत्र अलग २ हो गये। संवत् १९८१ में किशनमलजी का स्वर्गवास हो गया।

इस समय किशनमलजी के पुत्र नथमलजी, मेसर्स बिरदीचँद नथमल के नाम से मनोहरदास कटला में कपडे का व्यापार करते हैं। आप सज्जन पुरुष है। सेठ वदनमलजी भी मनोहरदास के कटले में बिरदीचन्द वदनमल के नाम से कपडे का व्यापार करते हैं। आपकी प्रकृति भी विशेष कर साधु सेवा और धर्म ध्यान की ओर रहती है। बीकानेर की ओसवाल समाज में आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। व्यापार में तो आपने वहुत ज्यादा उन्नति की है।

प्रतापगढ़ का बांठिया परिवार

इस परिवार के प्रथम पुरुष सेठ खूबचन्दजी और सेठ सवलसिंहजी दोनों भाई बीकानेर से प्रतापगढ़ नामक स्थान पर आये। यहा आकर खूबचंदजी तत्कालीन फर्म मेसर्स गणेशदास किशनाजी के यहाँ मुनीम हो गये। आपका स्वर्गवास हो जाने पर सेठ सवलसिंहजी ने यहाँ की महारानी (राजा दलपतसिंहजी की पत्नी) के साझे में बैंकिंग का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। इसी कारण से तत्कालीन महाराजा साहब के और आपके बीच में बहुत घनिष्ठता होगई। आप बड़े कर्मवीर चतुर और वीर व्यक्ति थे। महाराजा आपका अच्छा सम्मान करते थे। कहा जाता है कि जब २ महाराजा देवलिया रहते थे तब २ प्रतापगढ़ का सारा शासन भार आप पर और भोजराजजी दागड़िया तथा आपाजी पंडित पर छोड़ जाते थे। संवत् १९१४ के गदर के समय में आपने अपनी बुद्धिमानी और होशियारी से बागियों से राज्य की रक्षा की थी, जिससे महाराजा बहुत खुश हुए और इसके उपलक्ष्य में आपको एक प्रशंसा सूचक परवाना इनायत किया। आपका स्वर्गवास होगया। आपके सौभागमलजी बिरदीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ खूबचन्दजी के पुत्र का नाम लखमीचन्दजी था।

सेठ लखमीचंदजी के पुत्र गुमानमलजी हुए। आपके यहाँ दानमलजी दत्तक आये। दानमलजी के धरमचन्दजी नामक पुत्र हैं। सेठ सौभागमलजी के वंश में आपके पौत्र मिश्रीमलजी और रूपचन्दजी हैं। रूपचन्दजी के पुत्र का नाम कचनमलजी है। आप सब लोग प्रतापगढ़ में निवास करते हैं।

सेठ बिरदीचन्दजी अपने जीवनभर तक स्टेट के इजारे का काम करते रहे। आपके सुजानमलजी और चन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें चन्दनमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

बांठिया मुंशी सुजानमलजी—आप बड़े योग्य, प्रतिभा सम्पन्न और कारगुजार व्यक्ति हैं। आपका अध्ययन अंग्रेजी और फारसी में हुआ। आप उन व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने अपने पैरों पर खड़े होकर आशातीत उन्नति की है। प्रारंभ में आप साधारण काम पर नौकर हुए और क्रमशः अपनी योग्यता, बुद्धिमानी और होशियारी से कई जगह कामदार और दीवान रहे। आपका तत्कालीन पोलिटिकल आफिसरों से बहुत मेल

सेठ राजरूपजी देवचन्दजी का परिवार—आप दोनों भाई बीकानेर में व्यवसाय करते रहे। आप लोगों का स्वर्गवास होगया। सेठ राजरूपजी के तीन पुत्र लखमीचन्दजी दानमलजी और शकरदानजी हुए। दानमलजी दत्तक चले गये। सेठ लखमीचन्दजी ग्वालपाड़ा का काम काज देखते रहे। आजकल आपके भँवरलालजी नामक एक पुत्र है। आप पढ़े लिखे सज्जन है। सेठ शकरदानजी इस समय विद्यमान हैं। आपने अपने समय में फर्म की और भी शाखाएँ खोलकर उन्नति की। आपके इस समय भैरोंदानजी, अभयराजजी, सुमेराजजी, मेघराजजी और अगरचन्दजी नामक पुत्र हैं इनमें मेघराजजी दत्तक चले गये है। शेष सब लोग व्यवसाय का सचालन करते हैं। सेठ भैरोंदानजी के पुत्र का नाम भँवरलालजी हैं।

श्री अगरचन्दजी तथा भँवरलालजी को इतिहास का काफी शौक है। आपने अपनी निज की एक लायब्रेरी खोलरखी है। जिसमें १००० के करीब हस्त लिखित ग्रथ है। साथ ही आप लोगों ने अभय ग्रंथ माला के नाम से एक सिरीज निकालना भी प्रारम्भ की है।

इस परिवार का व्यापार इस समय कलकत्ता, बोलपुर सिलहट वगैरह २ स्थानों पर होता है।

सरदार शहर का नाहटा परिवार

उपरोक्त नाहटा परिवार के पूर्व पुरुष सेठ हुकुमचन्दजी लाडनू से सरदार शहर में आकर बसे आपके सूरजमलजी हीरालालजी, बुधमलजी और चाँदमलजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ बुधमलजी—आप बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। सवत् १९१० में आपने कलकत्ता में सूरजमल बुधमल के नाम से अपनी फर्म स्थापित की। इसके पश्चात् आप सब भाई अलग २ हो गये। उसके पश्चात् संवत् १९२६ में दो भाइयों की सूरजमल चदाँमल के नाम से और दो की हीरालाल बुधमल के नाम से कपडे की दुकानें स्थापित हुई। इन चारों भाइयों का स्वर्गवास हो गया है और इनके वशज इस समय अलग अलग अपना कार बार करते है।

सेठ सूरजमलजी का फर्म इस समय "सूरजमल धनराज" के नाम से चल रहा है। सेठ सूरजमलजी धनराजजी तथा धनराजजी के पुत्र शोभाचन्दजी स्वर्गवास हो गया है। शोभाचन्दजी के पुत्र बृद्धिचन्दजी वर्त्तमान में इस फर्म के मालिक है। आपके यहाँ १० आर्मेनियन स्ट्रीट में बैङ्किग कारबार होता है आपके एक पुत्र है जिनका नाम जीवनमलजी है।

सेठ हीरालालजी के भैरोंदानजी चुन्नीलालजी और जुहारमलजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोग हीरालाल भैरोंदान के नाम से कपडे का व्यापार करते रहे इन तीनों भाइयों का स्वर्गवास हो चुका है।

सेठ भैरोंदानजी के पुत्र बालचन्दजी इस समय लाइफ और फायर इन्स्यूरेंस की दलाली करते हैं। आप पूर्वीय और पश्चात्य दर्शनशास्त्रों के अच्छे जानकार है। लेखवकला में भी आप दक्ष है। आपके पुत्र का नाम पूनमचन्दजी है। सेठ चुन्नीलालजी के करणीदानजी और करणीदानजी के छगनमलजी नामक पुत्र हैं। जुहारमलजी के पुत्र मोतीलालजी है आप पाट की दलाली करते है। पाट के व्यापारियों में आपका अच्छा सम्मान है। आपके पूसराजजी और शुभकरणजी नामक दो पुत्र है।

महाराणा प्रताप और मेवाड़-उद्धारक भामाशाह
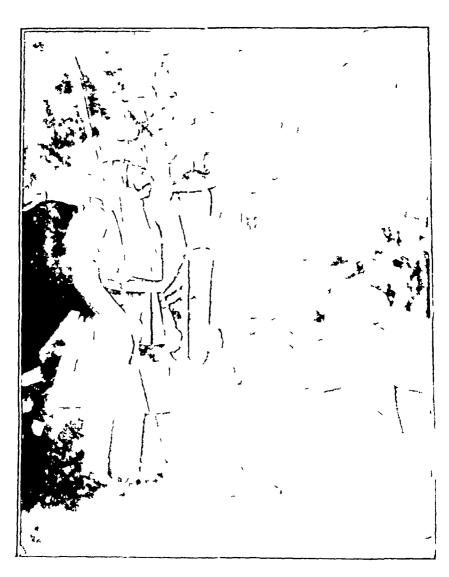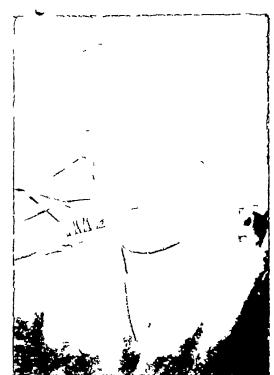
वावू चम्पालालजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर

वावू चन्दनमलजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर

वावू माणकचंदजी नाहटा (नाहटा परिवार) सरदारशहर

वावू पनेचंदजी नाहटा (चांदमल भोमराज) नोखासर
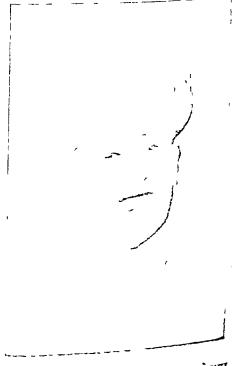
देश सेवा, जाति सेवा एवम् समाज सुधार की ओर रहा है। आप आगरे के एक गण्यमान्य नेता हैं। इस समय आप अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी ओसवाल नवयुवक कान्फ्रेन्स के प्रेसिडेण्ट हैं।

सेठ बुधमल कालूराम बोहरा, (रतनपुरा) लोणार

यह परिवार बडू का निवासी है। लगभग १०० साल पहिले सेठ सलजी बोहरा के पुत्र बुधमलजी, हमीरमलजी तथा गम्भीरमलजी लोणार आये तथा लेन देन का व्यवसाय आरम्भ किया। सेठ बुधमलजी ने अच्छा नाम व सम्मान पाया। संवत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। स्थानीय मन्दिर की नीव डालने वाले ४ व्यक्तियों में से एक आप भी थे। आपके कालूरामजी, विरदीचंदजी, खुशालचन्दजी तथा गुलाबचंदजी नामक ४ पुत्र हुए, जिनमें खुशालचन्दजी मोजूद हैं।

बोहरा कालूरामजी ने आसपास की पंच पचायती में बहुत इज्जत पाई। संवत् १९७९ में गढ़ ठाकुर साहब लोनार आये तब आपको "सेठ" की पदवी दी। संवत् १९८३ में आप स्वर्गवासी हुए। बोहरा गम्भीरमलजी के पुत्र देवकरणजी और पौत्र तेजमालजी हुए, इन्होंने भी अपने समाज में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। तेजमलजी संवत् १९७९ में स्वर्गवासी हुए। आपकी दुकान यहाँ के व्यापारियों में प्रतिष्ठित मानी जाती है।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ खुशालचन्दजी और उनके पुत्र हेमराजजी, गेंदूलालजी, पन्नालालजी तथा बरदीचंदजी के पुत्र वशीलालजी, कन्हैयालालजी एवम् तेजमलजी के पुत्र कतरूमलजी विद्यमान हैं। इनमें हेमराजजी, कालूरामजी के नाम पर और कन्हैयालालजी, गुलाबचन्दजी के नाम पर दत्तक गये हैं। सेठ खुशालचन्दजी आसपास के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। यह परिवार बरदीचन्द खुशालचन्द और तेजमाल कतरूलाल बोहरा के नाम से सराफी, साहुकारी, कृषि तथा कपास का व्यापार करता है। इसी तरह इस परिवार में हमीरमलजी के पौत्र नंदलालजी हीरडव में कारबार करते हैं।

सेठ पेमराज गणपतराज बोहरा, विल्लीपुरम् (मद्रास)

इस कुटुम्ब का मूल निवास मारवाड में जेतारण के पास पीपलिया नामक ग्राम का है। इस परिवार के पूर्वज सेठ उदयचन्दजी के पश्चात् क्रमशः खूबचन्दजी, बच्छराजजी और साहबचन्दजी हुए। साहबचन्दजी इस परिवार में नामी व्यक्ति हुए। जेतारण के आसपास इनका लाखों रुपयों का लेन देन था। संवत् १९३९ में इनका ४१ साल की उमर में स्वर्गवास हुआ। आप बड़े स्वाभिमानी व प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपके पुत्र मगराजजी का जन्म १९२२ में तथा केसरीचन्दजी का १९२५ में हुआ। तथा शरीरान्त क्रमशः संवत् १९७४ तथा १९७३ में हुआ। केसरीमलजी के पेमराजजी तथा हीरालालजी नामक २ पुत्र हुए, जिनमें पेमराजजी, मगराजजी के नाम पर दत्तक आये। हीरालालजी १९६६ में स्वर्गवासी हो गये।

बोहरा पेमराजजी मद्रास होते हुए संवत् १९७३ में विल्लीपुरम् आये और व्याज का काम शुरू किया। आपके हाथों से ही व्यापार को तरक्की मिली। आप सुधरे हुए विचारों के धर्मप्रेमी सज्जन हैं।

सेठ बुधमलजी ने अपने भाइयों से अलग होकर संवत् १९५४ मे बुधमल नथमलके नाम से अपना फर्म स्थापित किया। इस पर कपडे और बैङ्किग का काम होता था आपके हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप बड़े योग्य और व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सं० १९४६ में हुआ। आपके नथमलजी उदयचन्दजी और जयचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से उदयचन्दजी अपने काका चांदमलजी के यहाँ दत्तक चले गये।

नथमलजी तथा जयचन्दजी दोनों भाईपहले 'बुधमल नथमल' के नाम से शामिलात में कारवार करते रहे। पश्चात् सं० १९८२ में अलग २ हो गये और अलग २ नाम से अपना व्यापार करने लगे।

नथमलजी ने अपने शामलात वाले फर्म की बहुत तरक्की की। आपका स्थानीय पंच पंचायती में अच्छा नाम था। आजकल आप देश ही में विशेष रूप से रहते है। आपके पुत्र नेमीचन्दजी फर्म का संचालन करते हैं इस समय आपका फर्म 'नेमीचन्द धर्मचन्द' के नाम से ८ पोर्च्यूगीजचर्च स्ट्रीट में व्यापार करता है। नेमीचन्दजी बड़े सज्जन, मिलनसार एवं खुश मिजाज व्यक्ति हैं। आपके पुत्र का नाम धर्मचन्दजी है। नथमलजी के छोटे पुत्र मानमलजी हैं। आपने सं० १९८४ में अपना अलग फर्म 'बुधमल मानमल' के नाम से स्थापित किया था।

जयचन्दलालजी—आप पहले अपने बड़े भाई नथमलजी के साथ शामलात वाले फर्म में व्यापार करते रहे। पश्चात् जब आप अलग हुए तब 'बुधमल जयचन्दलाल' के नाम से व्यापार करने लगे जो आज भी हो रहा है। आप भी अच्छे मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति थे। आपका ध्यान धार्मिकता की तरफ विशेष रहता था। आपका स्वर्गवास अभी हाल में ही सं० १९९० में हो गया। आपके चम्पालालजी चन्दनमलजी और मानिकचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। चम्पालालजी और चन्दनमलजी तो अपने पिता के स्थापित किए फर्म का कार्य संचालन करते हैं और मानिकचन्दजी अभी बालक हैं। आपके फर्म में इस समय कपड़ा व पाट का व्यापार होता है।

चम्पालालजी—आप बड़े उत्साही, मिलनसार एवं होशियार व्यक्ति हैं। आपने होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान का अच्छा अभ्यास किया है और बाकायदा अध्ययन कर एच० एम० बी० पास किया है। आप रोगियों का इलाज बडी तत्परता व प्रेम से बिना मूल्य लिए करते हैं।

सेठ चांदमलजीने भी पूर्वोक्त फर्म से अलग होकर अपना स्वतंत्र कपडे का व्यापार 'चाँदमल उदयचन्द' के नाम से शुरू किया था। आपका स्वर्गवास होने पर आपके दत्तक पुत्र उदयचन्दजी ने उक्त फर्म की अच्छी उन्नति की। आपके समय में कपडे व व्याज का काम होता रहा। आपका छोटी उमर में ही स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सँसकरणजी कन्हैयालालजी और मूलचन्दजी हैं। आप तीनों भाई सम्मिलित रूप मे इस समय नं० ११२ मनोहरदास के कटरे में कपड़े का व्यापार करते हैं। आपके वर्तमान फर्म का नाम—'उदयचन्द बच्छराज' है। आप शिष्ट, सभ्य और विनम्र स्वभाव के एवं सज्जन व्यक्ति हैं। सँसकरनजी सामाजिकता और पंच पंचायती में विशेष भाग लेते है। आपके पुत्र का नाम बच्छराजजी और मूलचन्दजी के पुत्र का नाम मोहनलालजी है। आप सब लोग (नाहटा परिवार) श्वेताम्बर जैन धर्म के माननेवाले है।

अपनी आय में से दो आना रुपया धर्म और ज्ञान के खर्चों में लगाते हैं। प्रेमाश्रम पिपलिया को आपने बड़ी सहायता दी। आपके पुत्र गणपतराजजी, मोहनलालजी और सम्पतराजजी हैं। इनमें गणपतराजजी व्यापार में भाग लेते हैं। आपकी वय २० साल की है।

सेठ रघुनाथमल रिधकरण बोहरा बम्बई

सेठ रघुनाथमलजी रतनपुरा बोहरा जोधा की पालडी (नागोर) से। कुचेरा तथा वहां से ...पुर आये वहीं उनका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र रिधकरणजी का जन्म संवत् १९३२ में हुआ। संवत् १९४४ में देश से हैदराबाद सिकराबाद गये। तथा वहाँ से बम्बई आकर नौकरी की। ...से आपने कपड़े की दलाली का काम किया। इस प्रकार अनुभव प्राप्त कर आपने आढ़त का कारबार ...किया। तथा अपने अनुभव तथा होशियारी के बल पर काफी उन्नति की। बम्बई के मारवाड़ी ...रियों में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आप इधर १४ सालों से नेटिव्ह मरचेंट एसोशियेसन बम्बई ...करते हैं। आपके यहाँ रघुनाथमल रिधकरण के नाम से विट्ठलवाडी बम्बई में आढ़त का काम होता है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले हैं।

श्री मूलचंदजी बोहरा, अजमेर

अजमेर के ओसवाल समाज में जो लोग समाज सेवा के कार्य्य में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं उनमें श्री मूलचन्दजी बोहरा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कई जातीय और सामाजिक संस्थाओं से आपका सम्बन्ध है गत वर्ष ओसवाल—सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन करने के सम्बन्ध में जो सभा हुई ...उसके सभापति आप ही थे। आप सामाजिक विषयों पर गम्भीरता से विचार करते हैं। बम्बई की ...संस्था ने "ओसवाल जाति की उन्नति" पर निबन्ध लिखने के लिये कुछ पुरस्कार की घोषणा की ...उसमें सबसे प्रथम पुरस्कार आपको अपने निबन्ध के लिये मिला था। सार्वजनिक कार्य्यों में भी ...परिस्थिति के अनुसार आप भाग लेते रहते हैं।

चोरड़िया

चोरड़िया गोत्र की उत्पत्ति

कहा जाता है कि चंदेरी नगर के राजा खरहत्थसिंह राठोर को जैनाचार्य्य जिनदत्तसूरिजी ने ... ने जैनधर्म से दीक्षित किया। इनके बड़े पुत्र अम्बदेवजी ने चोरों को पकड़ा व उनके बेड़ियें ...डाल दिये या चोरों से भिडिये कहलाये। आगे चलकर यही नाम अपभ्रंश होते हुए ...नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सेठ लखमीचन्द तोलाराम नाहटा, राजगढ़

इस परिवार के सेठ ताराचन्दजी, उदयचन्दजी, छतीदासजी और पनेचन्दजी नामक चार भाई सम्वत् १९१८ में कचोर नामक स्थान से राजगढ़ आये। इसके पूर्व ही आप लोगों का व्यापार माठ ता नामक स्थान मे होरहा था। सवत् १९५० तक यह फर्म चलता रहा। पश्चात् सब लोग अलग २ हो गये

सेठ ताराचन्दजी के हरकचन्दजी एवम् गुलाबचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से गुलाब चन्दजी, उदयचन्दजी के यहाँ दत्तक रहे। हरकचन्दजी के इस समय शिवलालजी, नेतमलजी और पूरनमलजी नामक तीन पुत्र हैं जो हरकचन्द पूरनमल के नाम से कलकत्ता में व्यापार कर रहे हैं। सेठ गुलाब चन्दजी के पुत्र जेसराजजी, धनराजजी और तिलोकचन्दजी अन्य २ स्थानों पर व्यापार करते हैं। सेठ पनेचन्दजी के पुत्र खुमानचदजी हुए। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश नथमलजी, सूरजमलजी तेजकरनजी और हंसराजजी है। आप लोगों का व्यापार भी हरकचद पूरनचन्द के साझे में होता है। इसके अतिरिक्त मूँगापट्टी में भी सूरजमल जैचन्दलाल के नाम से इनका कपडे का काम होता है। नथमलजी के पुत्र का नाम जयचन्दलालजी है।

सेठ छतीदासजी के पुत्र लखमीचन्दजी हुए। आपने भी कलकत्ते के अन्तर्गत साझे में कपडे का व्यापार किया। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। आजकल आप व्याज का काम करते हैं। आपके तोलारामजी नामक एक पुत्र है। आजकल आपही व्यवसाय का सचालन करते है। आपके यहाँ लखमीचन्द तोलाराम के नाम से व्यापार होता है।

श्री सूरजमलजी नाहटा, इन्दौर

इस परिवार के पुरुष सेठ डूगरसीजी, फतेचदजी, जीवनमलजी और खुशालचन्दजी आदि पाली आदि स्थानों पर होते हुए उदयपुर आये। यहाँ आकर आपलोगों ने कपडे का व्यापार किया। इसमें अच्छी सफलता रही। कुछ समय पश्चात् खुशालचदजी के पुत्र चन्दनमलजी किसी कारणवश इन्दौर चले आये इनके पाँच पुत्रों में से श्री सूरजमलजी और सरदारमलजी शेष रहे। कुछ समय पश्चात् सरदारमलजी का भी स्वर्गवास हो गया।

नाहटा सूरजमलजी इस समय विद्यमान हैं। आप बडे मिलनसार एवम् धुन के पक्के आदमी हैं पब्लिक कार्यों में आपका हमेशा सहयोग बना रहता है। विद्या की ओर भी आपका अच्छा लक्ष्य है। आप इस समय ग्यारह पचों की दुकान पर काम करते हैं। आप इस समय ग्यारह पचों की कमेटी के कार्यकारी मडल के सेक्रेटरी हैं।

सेठ हीरालाल बालाराम नाहटा, धूलिया

इस परिवार का मूल निवास लहेरा बावडी (मारवाड) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले है। देश से लगभग १०० साल पहिले सेठ रतनचदजी नाहटा के पुत्र दलपतजी और उत्तम चन्दजी नाहटा मालेगाँव ताल्लुके के बाभनगाँव नामक स्थान में आये और वहाँ से धूलिया आकर आपने

शाहपुरा (मेवाड़) का चोरड़िया खानदान

यह खानदान पहिले चित्तौडगढ़ में निवास करता था। वहाँ से चोरड़िया डूगरसिंहजी संवत् १७४५ में शाहपुरा आये। इनके वेणीदासजी तथा फतेचन्द जी नामक २ पुत्र हुए। इनमें वेणीदासजी शाहपुरा स्टेट के कामदार थे। इनको संवत् १८०३ की सावण सुदी १५ को माउलगढ़ और शिवपुरो नामक गाव जागीर में मिला था। इनके नारायणदासजो, खुशालचन्दजी, बरदभानजी, लखमीचन्दजी तथा शिवदासजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में चोरडिया खुशालचन्दजो महाराजा के साथ उज्जैन के युद्ध में तथा विरदभानजी मेडते की लड़ाई में काम आये।

नारायणदासजी चोरडिया का परिवार—शाह नारायणदासजी चोरडिया बडे प्रतापी व्यक्ति हुए। जब शाहपुरा अधिपति महाराजा उम्मेदसिंहजी मेवाड की तरफ से मरहठों से युद्ध करते हुए उज्जेन में काम आये। उस समय उनके पुत्र रणसिंहजी को आपने गद्दी पर विठाया। इसके उपलक्ष में महाराजा रणसिंहजी ने नारायणदासजी को निम्न लिखित परवाना दिया।

> सिद्धश्री महाराजाधिराज श्री रणसिंहजी बचनात सहा नारायणदासजी दसे सुप्रसाद बच्या अप्रंच थें म्हाका श्याम धरमी छो सो रणसिंहजी का बेटा पोता पीढ़ी दरपीढ़ी पाटवी ने सपूत कपूत ने थाल में सू आखी में सू आदी दर अरोगसी थाकी राह मुरजाद श्री महाराज वादी जी सुं सवाई रिया करसी •• सवत् १८२६ का वैशाख सुदी।

कहने का तात्पर्य्य यह कि मेहता नारायणदासजी अपने समय के नामांकित व्यक्ति थे। आपके जयचन्दजी तथा बदनजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों सज्जनों के अजीतमलजो तथा चतुर्भुजजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों को महाराजा अमरसिंहजी ने सवत् १८५८ में कई गाव जागीरी में दिये, साथ ही उदयपुर महाराणाजी ने भी खास रुक्के और बैठक देकर इनको सम्मानित किया। अजीतमलजी के पश्चात् क्रमश खुशालचन्दजी, रघुनाथसिंहजी मुलतानचन्दजी तथा छगनमलजी हुए। ये सब भी रियासत की सेवा करते रहे। चोरड़िया छगनलालजी का स्वर्गवास छोटी वय में सवत् १९५१ में हुआ। आपके नाम पर चन्नणमलजी के पुत्र अमरसिंहजो चोरडिया दत्तक आये है।

अमरसिंहजी चोरड़िया—आपका जन्म सवत् १९४० मे हुआ बहुत समय तक आप राजाधिराज सर नाहरसिंहजी के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे। आप समझदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन है। तथा इस समय राज्य में सर्विस करते हैं। आपके पुत्र नाथूसिंहजी है। इसी तरह इस परिवार में चतुरभुजजी के पौत्र (चन्नणमल्जी के पुत्र) सरदारसिंहजी तथा अखोसिंहजी अजमेर में रेलवे विभाग में सर्विस करते हैं।

शाह बरधभानजी चोरड़िया का परिवार—हम ऊपर लिख चुके हैं कि शाह वर्द्धमानजी चोरड़िया मेड़ते में बहादुरी पूर्वक युद्ध करते हुए मारे गये थे। इनके पश्चात् की पीढ़ियों ने भी कई शाहपुरा राज्य की सेवाएँ की इस परिवार में चोरड़िया जोरावरमलजी शाहपुरा स्टेट के दीवान रहे। समय २ पर इस परिवार को शाहपुरा दरवार से सम्मान एवं खास रुक्के भी प्राप्त होते रहे हैं।

चोरड़िया जोरावरमलजी—आप शाहपुरा स्टेट के दीवान थे। आपके गोवर्द्धनलालजी तथा फूल- नामक दो पुत्र हुए। गोवर्द्धनलालजी शाहपुरा में उच्चपद पर कार्य करते थे। तथा डावला क गाँव भी आपको जागीरी में मिला था। लग भग ५० साल पहिले आप यहाँ से उदयपुर चले आपके किशनसिंहजी तथा मोतीसिंहजी नामक २ पुत्र हुए। मोतीसिंहजी का जन्म संवत् १९२९ आप उदयपुर स्टेट में सर्विस करते रहे और इस समय वहीं निवास करते हैं। आपके श्याम- नी तथा हीरालालजी नामक पुत्र हुए। इनमें हीरालालजी का सन् १९१७ में स्वर्गवास हो गया।

श्यामसुन्दरलालजी चोरड़िया एम० ए०—आपका जन्म सन् १८९८ में हुआ। आपने म्योर कॉलेज इलाहबाद से सन् १९२२ में एम० ए० की डिगरी हासिल की। इस समय अंग्रेज़ी विषय में री युनिवर्सिटी में प्रथम आये थे। तत्पश्चात् आप सन् १९२३ में महाराणा इंटर मिजियेट उदयपुर के प्रोफेसर हुए और इसके कुछ ही दिनों बाद आपकी प्रतिभा की कद्र करके प्राविंशियल में सी० पी० एजूकेशन डिपार्टमेंट ने आपको मोरिस कॉलेज नागपूर में अंग्रेजी का प्रोफेसर निर्वाचित मानित किया। आप अंग्रेजी साहित्य के उच्चकोटि के लेखक हैं। कई अंग्रेजी साहित्य रसज्ञों का रचनाओं की प्रशंसा की है।

उदयपुर के महाराणा साहब आपकी बड़ी कद्र करते हैं, उन्होंने आपको जून १९२३ में दर- पैरक बख्शी है। इस समय आप नागपुर युनिवर्सिटी बोर्ड के मेम्बर, फेकिलिटी आफ ऑर्टस के एव एक्ज़ामिनेशन बोर्ड के मेम्बर हैं। कई वार आप बी० ए० एम० ए० और इंटर के एक्ज़ामि- हैं। आपके पुत्र कुंजविहारीजी मेट्रिक में तथा रोशनलालजी विद्या भवन में पढ़ते हैं।

कुमारी दिनेश नंदिनी—आप श्यामसुन्दरलालजी चोरड़िया की कन्या हैं। आपने नागपुर में तक अध्ययन किया। हिन्दी साहित्य में आपकी बड़ी रुचि है। हिन्दी के गण्य मान्य पत्रों में गम्भीर भावों से परिपूरित गद्य काव्य एवम् हृदय स्पर्शी पद्यावली प्रकाशित होती रहती हैं।

भोपालसिंहजी चोरड़िया—आप बहुत समय तक शाहपुरा अधिपति राजाधिराज नाहरसिंहजी पर्सनल सेक्रेटरी रहे। तथा कलक्टरी में ट्रेझरी आफिसर रहे इस समय आप मेवाड के कानोड़ ठिकाने नदार है आपका परिवार शाहपुरा में ऊँचे दरजे की प्रतिष्ठा रखता है। शाहपुरा दरबार ने समय २ पर आपको सम्मान दिये हैं। आपकी आयु इस समय ६० साल की है। आपके पुत्र रघुनाथसिंहजी रणजीतसिंहजी हैं।

रघुनाथसिंहजी चोरड़िया—आपका जन्म सवत् १९५३ में हुआ। सन् १९२१ में आप पास हुए। सन् १९२३ में आप शाहपुरा कुमार उम्मेदसिंहजी के प्रायवेट सेक्रेटरी निर्वाचित हुए। साथ साथ कई भिन्न २ उच्च पदों पर काम करते हुए इस समय आप डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट तथा मेम्बर के पद पर हैं। आपको दरबार ने तिलक के समय जागीर बख्शी है। आपके पुत्र ...जी तथा सुरेन्द्रकुमारजी हैं। आपके छोटे भ्राता रणजीतसिंहजी स्माल कॉज कोर्ट में ... रहे हैं।

स्वर्गीय सेठ पूनमचंदजी छल्लानी, सिकंदराबाद (दक्षिण)

श्री सेठ लक्ष्मीचंदजी छल्लानी (हीराचंद पूनमचंद) सिकंदराबाद.
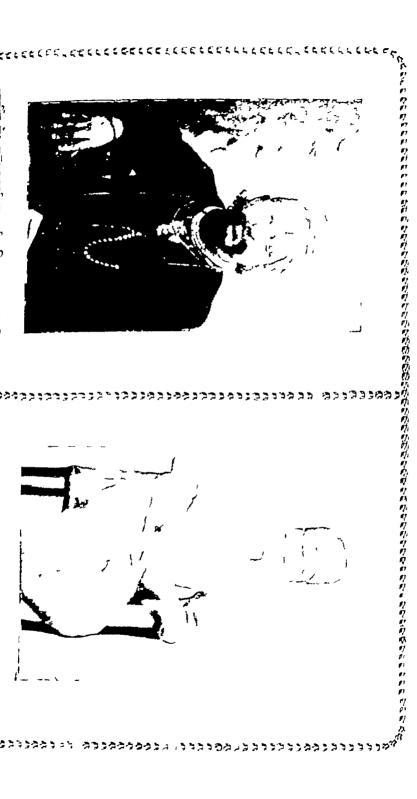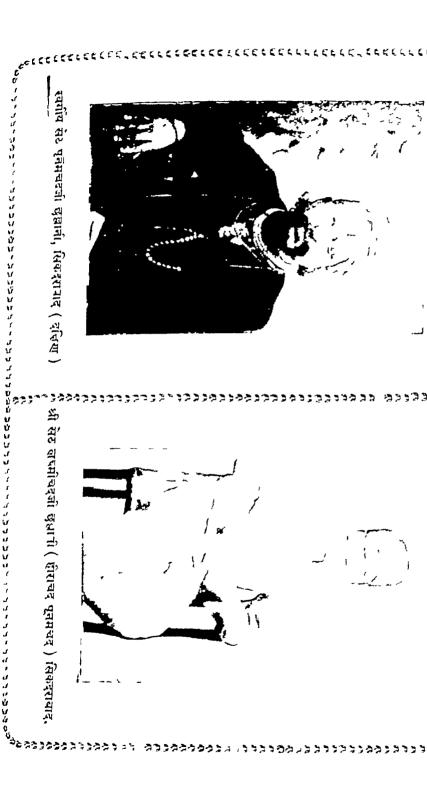
इसी तरह इस परिवार में श्री गणेशलालजी उदयपुर में निवास करते हैं। आपने बी० ए० तक शिक्षण पाया है। फूलचन्दजी वयोवृद्ध सज्जन हैं तथा शाहपुरा में रहते हैं। तथा उदयसिंहजी के पुत्र मोहनसिंहजी शाहपुरा स्कूल में सर्विस करते हैं।

रामपुरिया

रामपुरिया नाम की स्थापना

इस परिवार के सज्जनों का मूल गौत्र चोरडिया है। जिसका विवरण ऊपर दिया जा चुका है। इस परिवार के पूर्व पुरुष रामपुरा (इन्दौर स्टेट) नामक स्थान में निवास करते थे। वहां इस वंश में क्रमश मेहराजजी, लालचन्दजी, नथमलजी, हीराचन्दजी, हरध्यानसिंहजी, और खींवसीजी हुए। खींवसीजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश मानसिंहजी, कुनसिंहजी और जगरूपजी था। जगरूपजी के चार पुत्र हुए, जीवराजजी, रामरूपजी, जसरूपजी और प्रेमराजजी। इनमें से जीवराजजी के ६ पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश शिवराजजी, शेरसिंहजी, विजयराजजी, भींवराजजी, गुणोजी और सुल्तानजी था। इनमें से शेरसिंहजी के भैरोंदानजी नामक पुत्र हुए, शेष नि सन्तान रहे।

सेठ भैरोंदान के चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश सेठ जालमचन्दजी, आलमचन्दजी, केवलचन्दजी, और गम्भीरमलजी था। इनमें से जालमचन्दजी का वंश आज भी रामपुरा में निवास कर रहा है आलमचन्दजी के लिये कहा जाता है कि रामपुरे के चन्द्रावतों की एक कन्या का विवाह बीकानेर के महाराज के साथ हुआ, उसी समय आप बाईजी के कामदार बनाकर बीकानेर भेजे गये। आपके साथ में आपके वंशज आये जिनका खानदान बीकानेर में निवास कर रहा है। आलमचन्दजी को बीकानेर दरबार ने राज्य में काम पर नियुक्त किया। जिसे आज तक आपके खानदान वाले करते आ रहे हैं। रामपुरे से आने के कारण ही आप लोगों के वंशज रामपुरिया कहलाये। और जिस स्थान पर आप लोग काम करते थे वह दफ्तर आप ही के नाम से 'दफ्तर रामपुरिया' कहलाता चला आ रहा है।

सुजानगढ़ का रामपुरिया परिवार

सेठ आलमचन्दजी के चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश बिरदीचन्दजी, गणेशदासजी, चुन्नीलालजी और चौथमलजी था। आप चारों भाई करीब १०० वर्ष पूर्व बीकानेर छोड़कर सुजानगढ़ नामक स्थान पर चले आये। आप लोगों ने मिलकर संवत् १९१२ में मेसर्स चुन्नीलाल चौथमल के नाम कलकत्ता में फर्म स्थापित की। इनमें आपको अच्छी सफलता रही। संवत् १९५० के पूर्व ही चौथमलजी को छोड़ कर शेष भाई स्वर्गवासी होगये। इसके पश्चात् ही आपके वंशज अलग होकर और अपना स्वतंत्र व्यापार करने लगे।

दुकान की। नाहटा दलपतजी के पुत्र नदरामजी और बालारामजी हुए। इनमें बालारामजी, उदयचंदजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ नदरामजी ने इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को विशेष बढ़ाया, आपके पुत्र पन्नालालजी तथा बालारामजी के पुत्र हीरालालजी और नथमलजी हुए। इनमें नथमलजी पन्नालालजी के नाम पर दत्तक गये।

सेठ हीरालालजी नाहटा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपका जन्म संवत् १९३३ की सावण सुदी १२ को हुआ है। आपकी दुकान यहाँ के ओसवाल समाज में प्राचीन मानी जाती है। आपके पुत्र मोतीलालजी, कन्हैयालालजी व मोहनलालजी हुए, इनमें मोतीलालजी का शरीरान्त १९७६ में हो गया, अतः इनके नाम पर मोहनलालजी को दत्तक दिया है। नाहटा कन्हैयालालजी, नथमलजी के नाम पर दत्तक दिये गये हैं। इस परिवार में लेन देन, कृषि और साहुकारी कामकाज होता है।

छल्लानी

मेसर्स हीराचन्द पूनमचन्द छल्लानी सिकन्दराबाद

इस खानदान के वंशज ओसवाल जाति के छल्लानी गौत्रीय सज्जन हैं। आप मन्दिर आम्नाय के मानने वाले हैं। आपका मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड) का है। इस फर्म की स्थापना सिकन्दराबाद में करीब ८०-९० वर्ष पूर्व हुई। सवसे पहले सेठ हीराचंदजी छल्लानी नागौर से यहाँ पर आये। शुरू में आपने यहाँ पर सर्विस की। उसके पश्चात् दी० ब० रामगोपालजी मालानी के साझे में आपने कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। करीमनगर की दुकान भी आप ही के समय में खोली गई। सेठ हीराचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९४० के करीब हुआ।

आपके पश्चात् आपके दत्तक पुत्र श्री० पूनमचन्दजी छल्लानी ने इस फर्म के कार्य को सम्हाला। आप बड़े चतुर और व्यापार दूरदर्शी पुरुष थे। आपके हाथों से इस फर्म के व्यवसाय, सम्मान एवम् प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई। आपने वरंगल, पेद्दापल्ली तथा मंथनी में दुकानें स्थापित कर रुई और एरंडी का व्यापार शुरू किया। पेद्दापल्ली में आपने जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल भी खोली।

व्यवसायिक कार्यों के अतिरिक्त धार्मिक कार्यों में भी आपके हाथ से एक बड़ा स्मरणीय कार्य हुआ। हैदराबाद के समीप कुल्पाकजी तीर्थ के श्वेताम्बर जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार में आपने बहुत परिश्रम किया। एवम् अपनी ओर से भी आपने इस कार्य में बहुत सहायता दी। उक्त मन्दिर की इमारत बनवाने में हैदराबाद के चार प्रतिष्ठित सज्जनों में आपने भी प्रधान रूप से कार्य किया था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ के भादों वदी ८ को हुआ। आपके यहाँ श्री लक्ष्मीचदजी छल्लानी संवत् १९७२ में दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ लक्ष्मीचन्दजी छल्लानी हैं। आपका जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप बड़े शिक्षित, शान्तप्रकृति और विनयशील नवयुवक हैं। इस छोटी उम्र में ही फर्म के व्यापार

का आप बड़ी तत्परता से संचालन करते हैं। कुलपाकजी तीर्थ की ख्याति वृद्धि करने में आपके पिताजी की तरह आप भी सचेष्ट हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज मे बहुत प्रतिष्ठित है।

पीरचन्दजी छल्लाणी का परिवार कोलार गोल्डफील्ड

इस खानदान वाले जैतारण के रहने वाले हैं। आप स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में छल्लानी पीरचदजी हुए जिनके सूरजमलजी, गुलाबचंदजी, घेवरचदजी और प्रतापमलजी नामक चार पुत्र हुए। श्री सूरजमलजी का सवत् १९२१ में जन्म हुआ। आपका धर्मध्यान की तरफ काफी लक्ष्य था। आप बडे साहसी और व्यापारकुशल भी थे। आपने सबसे पहले सवत् १९४१ में बंगलोर में मेसर्स शम्भूमल गगाराम के पार्टनरशिप में चार साल तक व्यवसाय किया। तदनंतर आपने बंगलोर कैण्ट के सूलाबाजार में सूरजमल गुलाबचन्द के नाम से एक स्वतन्त्र फर्म स्थापित की। आपका सम्वत् १९७९ में स्वर्गवास हुआ। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम कन्हैयालालजी और माणकचन्दजी हैं। कन्हैयालालजी के अमरचंदजी और लखमीचन्दजी नामक दो पुत्र तथा अमरचदजी के भँवरलालजी नामक एक पुत्र है। माणकचंदजी के पुखराजजी तथा रिखबचदजी नामक दो पुत्र और पुखराजजी के हरकचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। कन्हैयालालजी, कन्हैयालाल, अमरचंद के नाम से तथा माणकचन्दजी, माणकचन्द पुखराज के नाम से कोलार गोल्ड फील्ड में और माणकचन्द रिखबचन्द के नाम से मैसूर में व्यवसाय करते हैं।

गुलाबचन्दजी का जन्म सवत् १९२८ का है। आपके सुगनमलजी नामक एक पुत्र हैं जिनका जन्म सं० १९७० में हुआ। घेवरचंदजी का जन्म स० १९४० में हुआ। आपने सबसे पहले स० १९५५ में कोलार गोल्ड फील्ड में एक फर्म स्थापित की। तदनन्तर सोने की खदान के पास कोलार गोल्ड फील्ड में तीन फर्मे और स्थापित की जो वर्तमान में भी बड़ी सफलता के साथ चल रही है। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम बख्तावरमलजी, किशनलालजी तथा मोहनलालजी है। इनमें से बख्तावरमलजी के चम्पालालजी और पन्नालालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ प्रतापमलजी का जन्म संवत् १९४५ का है। आपका धर्मध्यान में अच्छा लक्ष्य है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम भीकमचदजी है। आपकी ओर से कोलार गोल्ड फील्ड में प्रतापमल भीकमचन्द के नाम से एक स्वतन्त्र दुकान है।

बोहरा

सेठ अचलसिंहजी का परिवार, आगरा

भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में मारवाड़ी समाज के जो कतिपय शिक्षित, उन्नत विचारों के, जाति सुधारक, देश सेवक और समाज सुधारक व्यक्ति नजर आते हैं, उनमें सेठ अचलसिंहजी का नाम पीछे नहीं रह सकता। ये बोहरा गौत्रीय सज्जन है। आपके पूर्व पुरुष सेठ सवाईरामजी थे। सेठ सवाईरामजी के कोई पुत्र न होने से उन्होंने श्री पीतमलजी चोरड़िया को दत्तक लिये।

स्व० बंसीलालजी रामपुरिया B/o कन्हैयालालजी रामपुरिया

कु० नयचन्दलालजी
s/o कन्हैयालालजी रामपुरिया, सुजा

स्व० सेठ हमीरमलजी रामपुरिया का मकान, सुजानगढ़.
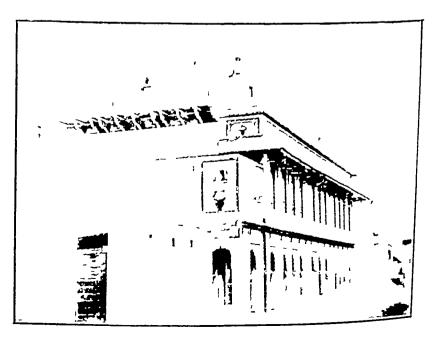
सेठ बिरदीचंदजी का परिवार—सेठ बिरदीचन्दजी के सूरजमलजी, सदासुखजी, और तोलारामजी नामक पुत्र हुए। आप लोगों का स्वर्गवास होगया। सेठ सूरजमलजी के पूनमचन्दजी, हुलासचंदजी, ...मलजी, सुखलालजी और रिधकरनजी नामक पुत्र हैं। इसी प्रकार सेठ सदासुखजी के शोभाचन्दजी तथा सेठ तोलारामजी के सेठ हनुमानमलजी नामक पुत्र है। सेठ पूनमचन्दजी के चार पुत्र हैं जिनके नाम ...करनजी घेवरचन्दजी, तिलोकचन्दजी और श्रीचन्दजी हैं। इनमें से अंतिम दो ग्रेज्युएट हैं। इसी प्रकार और २ भाइयों के भी पुत्र हैं।

सेठ गणेशदासजी का परिवार—आपके मेघराजजी नामक पुत्र हुए। आपने बीदासर के रास्ते एक धर्मशाला तथा कुँआ बनवाया। आपके कोई पुत्र न होने से थानमलजी दत्तक आये। आप ही इस ...वार में बड़े व्यक्ति हैं।

सेठ चुन्नीलालजी का परिवार—सेठ चुन्नीलालजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने व्यापार में ...ों रुपया पैदा किया। आपके हमीरमलजी तथा हज़ारीमलजी नामक दो पुत्र हुए। हमीरमलजी ...चाचा सेठ चौथमलजी के यहां दत्तक चले गये। वर्तमान में इस परिवार में हजारीमलजी ही प्रधान व्यक्ति ...और यहां की म्युनिसिपेलिटी के मेम्बर हैं। आपने भी व्यापार में लाखों रुपया पैदा किया। इस ...मय आप कलकत्ता में अपनी निज की कोठी ढाका पट्टी में चुन्नीलाल हजारीमल के नाम से जूट का ...पार करते हैं। आपके कोई पुत्र नहीं है। अतएव आपने अपने दोहित्र शुभकरनजी दस्साणी को ...पना उत्तराधिकारी नियुक्त किया है।

सेठ चौथमलजी का परिवार—सेठ चौथमलजी के पुत्र न होने से हमीरमलजी दत्तक आये यह ...ऊपर लिख चुके हैं। हमीरमलजी बड़े व्यापार कुशल और राजपूती ढंग के व्यक्ति थे। आपके भी ...कोई पुत्र न हुआ और आप स्वर्गवासी होगये तब सेठ पूनमचन्दजी के पुत्र सूरजमलजी दत्तक लिये ..., मगर आपसी झगड़ों के कारण आपके स्थान पर बीकानेर से कन्हैयालालजी दत्तक आये। वर्तमान ...आप ही इस परिवार के संचालन कर्त्ता हैं। आप बड़े मिलनसार और व्यवहार कुशल तथा सज्जन ...हैं। आपके यहां अभ्रक का व्यापार होता है। आपकी फर्म कोडरमा में है। आपने कोडरमा गिरिडिह में कई अभ्रक की खदानें खरीद की हैं। आजकल आपका व्यापार कोडरमा में कन्हैयालाल ...के नाम से हो रहा है। आपके यहां तार का पता 'kanya' है। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम ... रूपचंदलालजी और सुमेरमलजी हैं। आपके भाई बंसीलालजी बीकानेर ही रहते थे। आप बड़े ...थे। मगर बहुत कम वय ही में आपका स्वर्गवास होगया।

सेठ हजारीमल हीरालाल रामपुरिया, बीकानेर

यह हम ऊपर लिख ही चुके हैं कि इनके पूर्वज रामपुरा नामक स्थान से आये। इन्हीं में आगे ... न्यालचन्दजी हुए। आपकी बहुत साधारण स्थिति थी। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम ... बहादुरमलजी, हजारीलालजी और हीरालालजी हैं।

...बहादुरमलजी—आप बड़े मेधावी और व्यापार चतुर पुरुष थे। आपने केवल १३ वर्ष की ...के निमित्त कलकत्ता प्रस्थान किया। आपको व्यवसाय के लिये कलकत्ता जाते समय रास्ते

देशभक्त सेठ अचलसिंहजी, आगरा.

सेठ प्रेमराजजी बोहरा, विल्लीपुरम् (मद्रास)

सेठ सूरजमलजी बोहरा, राबर्टसन् पेठ.

श्री गणपतराजजी बोहरा, विल्लीपुरम् (मद्रास).

में सैकडों आपत्तियों का सामना करना पडा, मगर फिर भी आप विचलित न हुए। यहाँ आकर आपने मेसर्स चैनरूप सम्पतराम दूगड के यहाँ ८) मासिक पर गुमास्तागिरी की। सात वर्ष के पश्चात् आप अपनी कार्य चतुरता और व्यापारिक बुद्धिमानी से इस फर्म के मुनीम हो गये। सन् १८८३ में आपने अपने भाइयों को हजारीमल हीरालाल के नाम से एक फर्म स्थापित करवा दी और उसपर कपड़े का व्यवसाय प्रारम्भ किया। इस व्यापार में आप लोगों को बहुत सफलता प्राप्त हुई। कुछ समय पश्चात् सेठ बहादुरमलजी भी मुनीमात का काम छोड़कर इस फर्म के व्यापार में सहयोग देने लगे। बहुत ही शीघ्रता और तेजी के साथ इस फर्म की उन्नति होने लगी यहाँ तक कि वर्तमान में यह फर्म बीकानेर और बीकानेर स्टेट के धन कुवेरों में समझी जाती है। इस फर्म का कलकत्ता के इम्पोर्टरों में बहुत ऊँचा स्थान है। सेठ बहादुरमलजी के लिए बंगाल, बिहार और उड़ीसा के इनसाइक्लोपीडिया में इस प्रकार लिखा है—"He is one of the fine products of the business world, having imbibed sound business instincts, copled with courtesy to strangers and religious faith in Jainism" आपही ने अपने जीवनकाल में बहुत सम्पत्ति उपार्जन कर एक कॉटन मिल खरीदा था जो वर्तमान में रामपुरिया कॉटन मिल के नाम से प्रसिद्ध है। आपका यह मिल आज भी चलू है। आपके जसकरणजी नामक पुत्र हुए।

सेठ जसकरणजी—आप बड़े मेधावी और व्यापार चतुर पुरुष थे। आपने भी अपने व्यापार की विशेष उन्नति की। इतना ही नहीं बल्कि आपने मेनचेस्टर तथा लण्डन में भी अपनी फर्में स्थापित कर अपने व्यवसाय को बढ़ाया। चूँकि इन फर्मों का काम आपही देखते थे अत: ये सब फर्में आपकी मृत्यु के बाद उठा दी गईं। बीकानेर दरबार में आपका बहुत सम्मान था। वर्तमान में आपके सेठ भँवरलालजी नामक एक पुत्र हैं। भँवरलालजी बड़े योग्य तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपही रामपुरिया कॉटन मिल के सारे कारबार को बड़ी योग्यता से संचालित कर रहे हैं।

सेठ हजारीमलजी—आप भी बडे कार्य-कुशल और व्यापार में बडे चतुर सज्जन थे। आपने भी अपनी फर्मों का बड़ी योग्यता और बुद्धिमानी से सचालन किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९६५ में हुआ। आपके दो पुत्र विद्यमान हैं जिनके नाम शिखरचन्दजी और नथमलजी हैं।

बा० शिखरचन्दजी—आपका जन्म सवत् १९५० का है। आप बहुत साधारण प्रकृति के और धर्म पर बहुत श्रद्धा रखने वाले सज्जन हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः घेवरचन्दजी, कँवरलालजी एवम् शांतिलालजी हैं। घेवरचन्दजी दुकान के काम में सहयोग देते हैं तथा शेष दो बच्चे हैं।

बाबू नथमलजी—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप बड़े मिलनसार और योग्य सज्जन हैं। आप फर्म के काम में विशेष रूप से सहयोग देते हैं। आपको कपड़े के व्यापार का अच्छा अनुभव है। आपने जापान से डायरेक्ट कपड़े को इम्पोर्ट करने का कारबार शुरू किया जिसमें आपको बहुत सफलता मिली। आपका व्यापार की तरफ बहुत लक्ष्य है। मिल के काम को भी आप देखते हैं। आपके पुत्र सम्पतलालजी अभी पढ़ते हैं।

सेठ पीतमलजी चोरडिया – जिस समय आप यहाँ दत्तक आये उस समय इस खानदान की साधारण स्थिति थी। आपने अपनी व्यापार कुशलता से धौलपुर नामक स्थान पर अपनी फर्म स्थापित कर लाखों रुपये उपार्जित किये। आप बड़े साहसी और अग्रसोची व्यक्ति थे। धौलपुर रियासत में आपका अच्छा सम्मान था। वहाँ से आपको 'सेठ' की पदवी भी प्राप्त थी। आपका स्वर्गवास सन् १९०० में हो गया। आप बड़े उदार एवम् दानी सज्जन थे। आपके तीन पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः जसवंतसिंहजी, वलवंतरायजी और अचलसिंहजी हैं।

सेठ जसवन्तमलजी और वलवन्तरायजी—आप दोनों भाई भी व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने अपने समय में फर्म की अच्छी उन्नति की। आप लोग मिलनसार और सज्जन व्यक्ति थे। सेठ जसवंतमलजी १८ वर्ष तक आगरा म्युनिसिपल के सदस्य रहे। इसके अतिरिक्त आप स्थानीय आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपको इमारतें वनवाने का बड़ा शौक था। यही कारण है आपने आगरा में लाखों रुपयों की इमारतें बनवाई। उनमें से पीतम मार्केट तथा जसवत होस्टल विशेष प्रसिद्ध हैं। आप दोनों भाइयों का स्वर्गवास होगया।

सेठ अचलसिंहजी—आपके दोनों भाइयों के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् फर्म संचालन का सारा भार आप पर आ पड़ा। आरम्भ से ही आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले सज्जन थे। अपने भाइयों की विद्यमानता ही में आप देशसेवा एवम् समाज सेवा की ओर झुक गये थे। इतना ही नहीं इस ओर झुककर आपने इसमें बड़ी दिलचस्पी से काम किया। बचपन से ही आपका जीवन सभा सोसायटियों में व्यतीत होता रहा है। आरम्भ में आपने एथलेटिक क्लब और एक पब्लिक लायब्रेरी की स्थापना की। इसके बाद आपने कई संस्थाओं में योग प्रदान किया। सन् १९२० में आपने मृतप्राय आगरा व्यापार समिति का पुनर्संगठन किया और आप उसके आनरेरी सेक्रेटरी बनाये गये। आपके मित्र श्रीचंदजी दौनेरिया ने जो बीमा कंपनी स्थापित की उसके आप चेअरमेन हैं। आपही के प्रयत्न से आगरा में पीपल्स बैंक की शाखा स्थापित हुई। [illegible] भी आप प्रेसिडेण्ट और डायरेक्टर बनाए गये। इसके पश्चात् आप कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी, आगरा म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर और यू० पी० कौंसिल में स्वराज्य पार्टी की ओर से मेम्बर निर्वाचित हुए। असहयोग आन्दोलन में आप कई वार जेलयात्रा कर आये हैं। आपने समय २ पर कई बार हजारों रुपये एकत्रित कर सार्वजनिक कार्यों में खर्च किये हैं। आप यू० पी० के सम्माननीय देशभक्त और आगरा के प्रमुख नेता हैं। आपका कई सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बन्ध है। आपकी ओर से इस समय [illegible] वाचनालय चल रहा है। स्त्री शिक्षा के लिए भी आपने योग्य व्यवस्था की है। इसी प्रकार अचल सेवा सदन आदि कई सब स्थापित कर आपने आगरे के सार्वजनिक जीवन में एक ताज़गी की लहर पैदा कर दी है।

जब आगरे में हिन्दू मुसलिम दंगा हो गया था। उस समय इन लोगों की चोट को सहन करते हुए भी आपने शांति स्थापन का पूरी २ कोशिश की थी। जब सन् १९२५ में अति वर्षा के कारण आगरा शहर में बाढ़ आ गई थी उस समय भी आपने जनता की रक्षा के लिये काफ़ी पयत्न किया तथा धन, वस्त्र से सहायता पहुँचाई। लिखने का मतलब यह है कि आपका जीवन प्रारम्भ से अभी तक सार्वजनिक सेवा,

[व]ज्र तुल्य हृदय भी द्रवित हो उठा और जिसने विपत्ति के लहराते हुए दरिया में भी अपने आपको [सुर]क्षित रखा था उसने उपरोक्त घटना के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। महाराणा ने इसी समय [मे]वाड़ को छोडने का दृढ सकल्प कर लिया और उसे छोडने की तैय्यारी करने लगे।

इस समय महाराणा के प्रधान के पद पर ओसवाल जाति के कावडिया गौत्रीय वीरवर भामा-[श]ाह प्रतिष्ठित थे। जब भामाशाह ने अपने स्वामी के देश त्याग की बात सुनी और यह भी सुना कि धना-[भ]ाव के कारण ही वे देश त्याग कर रहे हैं तो उनसे न रहा गया और वे अपने जीवन भर के सारे संचित [द्र]व्य को लेकर महाराणा के चरणों में उपस्थित हुए। महाराणा के पैर पकड़ कर उन्होंने उनसे वह धन ग्रहण करने की और देश न छोडने की प्रार्थना की। जब महाराणा को उस धन के ग्रहण करने मे कुछ हिच-केचाहट होने लगी तो उन्होंने अत्यन्त नम्रता के साथ महाराणा से कहा कि "अन्नदाता यह शरीर और यह [ध]न यदि अपने स्वामी और अपने देश के लिये काम आय तो इससे बढ़कर इसका सदुपयोग दूसरा नहीं [ह]ो सकता। इसे आप अपना ही समझे और निःसंकोच हो ग्रहण करे। कर्नल जेम्स टॉड के कथनानुसार [य]ह धन इतना था कि जिससे २५ हजार सैनिकों का १२ वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। कहना न होगा [क]ि इस विशाल सहायता के पाते ही राणा प्रताप ने अपनी बिखरी हुई शक्ति को बटोर कर रणभेरी बजा [द]ी और बहुत शीघ्र अपने खोये हुए राज्य के बहुत बड़े हिस्से को (माण्डलगढ़ और चित्तौड को छोड़कर [स]ारा मेवाड) पुनः अपने अधिकार में कर लिया। इन लड़ाइयों में भामाशाह की वीरता के हाथ देखने [क]ा भी महाराणा को खूब अवसर मिला और उससे वे बड़े प्रसन्न हुए। इसी समय से महात्मा भामाशाह [क]ी गिनती मेवाड़ के उद्धार कर्ताओं में होने लगी।

इस घटना को आज प्राय साढ़े तीन सौ वर्ष होने को आ गये मगर आज भी मेवाड मे भामा-[श]ाह के वंशज उनके नाम पर सम्मान पा रहे हैं। केवल मेवाड में ही नहीं प्रत्युत सारे भारतवर्ष के [इ]तिहास में इस महापुरुष का नाम बड़े गौरव के साथ अङ्कित किया जाता है। मेवाड राजधानी उदयपुर में [भ]ामाशाह के वंशजों को पच पंचायती और अन्य विशेष अवसरों पर सर्व प्रथम गौरव दिया जाता है। [कु]छ वर्ष पूर्व जाति के लोगो ने भामाशाह के वंशजों की इस परम्परागत प्रतिष्ठा को दूर करने की कोशिश [क]ी थी मगर जब यह बात तत्कालीन महाराणा शम्भूसिंहजी को मालूम हुई तो उनको भामाशाह के वंश [ग]ौरव की रक्षा के लिये एक फरमान निकालना पड़ा था जो इस प्रकार है।

श्रीरामो जयति

श्रीगणेशजी प्रसादात्, श्री एकलिंगजी प्रसादात्

(भाले का निशान)

सही

स्वति श्री उदयपुर सुभ सुथानेक महाराजाधिराज महाराणाजी श्री सरूपसिंघजी आदेशात कावडया जैचन्द कुनणों वीरचन्द कस्य अप्रम थारा बडावा सा भामो कावड्यो ई राज म्हे साम प्रमासु काम चाकरी करी जीं की मरजाद ठेठसू म्याह म्हाजना की जातम्हे बावनी तथा चौका कोजीमण वा सीग पूजा हेवे जीम्हे पहेली तलक थारे होतो हो सो अगला नगरसेठ वेणीदास करसो कर्यो अर वे दर्याफ्त तलक थारे नहीं करवा दीदो आवरू सालसी दीमी सो नगे कर सेठ पेमचन्द ने हुकम कीदो सो वी भी अरज करी अर न्यात म्हे हकसर मालूम हुई सो अ- तलक माफक दसतुर के थे थारो करायया जाजो आगा सु थारे वसको होवेगा जीके तलक हुवा जावेगा पचाने वी हुकम कर दीयो है सो पेली तलक थारे होवेगा। प्रवानगी मेहता सेरसींघ सवत् १६१२ जेठ सुद १५ बुंध ×

मतलब यह कि महाजनों की जाति में बावनी (समस्त जाति का भोज) तथा चौके का भो[illegible] व सिंह पूजा में पहला तिलक जो कि हमेशा से भामाशाह के वंशजों को होता आया है उन्हीं के वं[illegible] को होता रहे।

मेवाड़ के अप्राप्य ऐतिहासिक ग्रंथ "वीर विनोद" में पृष्ठ २५१ पर लिखा है कि भामाशाह [illegible] जुरअत का आदमी था। यह महाराणा प्रताप के शुरू समय से महाराणा अमरसिंह के राज्य के ३॥ त[illegible] ३ वर्ष तक प्रधान रहा। इसने कई बडी २ लड़ाइयों में हजारों आदमियों का खर्चा चलाया। यह नामी प्र[illegible] संवत् १६५६ की माघ शुक्ला ११ को ५१ वर्ष और सात माह की उमर में परलोक को सिधारा। इ[illegible] जन्म सवत् १६०४ अषाढ शुक्ला १० (हि० ९५४ तारीख ९ जमादियुल अव्वल ई० स० १५४७ ता[illegible] २८ जून) सोमवार को हुआ था। इसने मरने के एक दिन पहले अपनी स्त्री को एक बही अपने हा[illegible] दी और कहा कि इसमें मेवाड के खजाने का कुल हाल लिखा हुआ है जिस वक्त तकलीफ हो उस स[illegible] यह वही महाराणा की नजर करना। यह खैरख्वाह प्रधान इस वही के लिखे कुल खजाने से महाराणा अ[illegible]

प्रोफेसर श्यामसुन्दरलालजी चोरड़िया एम ए, उदयपुर

सेठ मोहनमलजी चोरड़िया, (अगरचन्द मानमल) मद्रा

श्री अमरसिंहजी चोरड़िया शाहपुरा (मेवाड़)

बाबू न्यालचन्दजी जौहरी, आगरा

होता है। सेठ सुखलालजी १९८६ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र धर्मचन्दजी १९७४ में तथा सुगनचन्द १९६३ में गुजरे। वर्तमान में धर्मचन्दजी के पुत्र शंकरलालजी तथा सुगनचन्दजी के पुत्र नंदलालजी मौजूद हैं। आपके यहाँ "रामलाल सुखलाल" के नाम से व्यापार होता है। आपके ४ गाव माल गुजारी के हैं। सेठ नंदलालजी प्रतिष्ठित सज्जन हैं। धर्मध्यान में आपका अच्छा लक्ष है। आपने एक धर्मशाला भी बनवाई है।

सेठ रतनचन्द दौलतराम चोरड़िया, वाघली (खानदेश)

यह परिवार कुचेरा (जोधपुर) का निवासी है। देश से लगभग १२५ वर्ष पहिले सेठ लक्ष्मीरामजी चोरडिया व्यापार के निमित्त वाघली (खानदेश) आये। तथा दुकान स्थापित की। संवत् १९.. में ७२ साल की वय में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर दौलतरामजी चोरडिया दत्तक लिये गये इनका भी संवत् १९२९ में स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र रतनचन्दजी मौजूद हैं। सेठ रतनचन्दजी स्थानकवासी ओसवाल कान्फ्रेंस के प्रान्तीय सेक्रेटरी हैं। आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ आपका परिवार आसपास के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है। आपके राजमलजी, चांदमल तथा मानमलजी नामक तीन पुत्र हैं। राजमलजी की आयु ३० साल की है।

सेठ जेठमल सूरजमल चोरड़िया, वाघली (खानदेश)

इस परिवार का मूल निवास तीवरी (मारवाड) है। देश से लगभग ७५ साल पहिले रूपचन्दजी चोरड़िया व्यापार के लिये वाघली (खानदेश) आये। इनके पुत्र सूरजमलजी चोरडिया हुए आपका ६० साल की वय में संवत् १९७५ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र जेठमलजी मौजूद हैं।

चोरड़िया जेठमलजी का धर्म के कामों में अच्छा लक्ष है। आपने बडी सरल प्रकृति के निराभिमानी व्यक्ति हैं। आपके यहाँ सराफी काम काज होता है। आप श्वेताम्बर स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। वाघली के जैन समाज में आपको उत्तम प्रतिष्ठा है।

बोरड़—बरड़

बोरड या बरड गौत्र की उत्पत्ति

आंबागढ़ में राव बोरड नामक परमार राजा राज करते थे। इनको खरतरगच्छाचार्य दादा जिनदत्तसूरिजी ने संवत् ११७५ में जैन धर्म से दीक्षित किया तथा उन्हें सकुटुम्ब जैन बनाया। राव बोरड की संतानें बोरड़ तथा बरड़ कहलाई।

सेठ हीरालालजी—आप सेठ बहादुरमलजी के तीसरे भाई और वर्तमान में इस परिवार में प्रमुख वृद्ध सज्जन हैं। आप फर्म के सारे कारबार का संचालन करते हैं। आपके बाबू सौभागमलजी नामक एक पुत्र हैं तथा बाबू सौभागमलजी के जयचन्दलालजी, रतनलालजी आदि पुत्र हैं।

आप लोगों का कलकत्ता में "रामपुरिया काटन मिल" के नाम से एक प्राइवेट मिल है, जिसमें ८०० लग्स काम करते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी फर्म पर विलायत और जापान के कपड़े का इम्पोर्ट बहुत बड़े परिमाण में होता है। कलकत्ते में आपकी बहुतसी बड़ी २ बिल्डिंग्ज़ किराये के लिये बनी हुई हैं। इसी प्रकार आपकी बीकानेर की हवेलियाँ भी दर्शनीय हैं।

सेठ मेघराज तिलोकचन्द रामपुरिया, बीकानेर

ऊपर हम सेठ जीवराजजी के ६ पुत्रों में भींवराजजी का नाम लिख चुके हैं। इन भींवराजजी के [illegible] पमराजजी और जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। जेठमलजी के पाँच पुत्रों में से पदमचदजी भी एक थे। पदमचन्दजी के चुन्नीलालजी और करनीदानजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ चुन्नीलालजी के कोई संतान नहीं हुए। सेठ करनीदानजी ने बम्बई में अपना व्यापार स्थापित किया था। आपके मेघराजजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मेघराजजी ने कलकत्ता में आकर नौकरी की। आपके उदयचंदजी और अमोलकचदजी नामक दो पुत्र हुए। अमोलकचंदजी, सेठ लखमीचन्दजी के यहाँ दत्तक चले गये। सेठ उदयचंदजी इस परिवार में विशेष व्यक्ति हैं। आपने अपनी बहुत साधारण स्थिति को बहुत अच्छी स्थिति में रख दिया। प्रारम्भ में आपने कई स्थानों पर साझे में फर्म स्थापित की। अन्त में संवत् १९८७ से आप उपरोक्त नाम से व्यापार कर रहे हैं। आपका व्यापार शुरू से ही देशी कपड़े का रहा है। इस व्यापार में आपने हजारों रुपए पैदा किये हैं। आपके धार्मिक विचार अच्छे हैं। आपका बीकानेर के मन्दिर सम्प्रदायियों में बहुत अच्छा सम्मान है। आपने कई धार्मिक कार्यों में अच्छी सहायता पहुँचाई है। इस समय आपके [illegible] और जेठमलजी नामक दो पुत्र हैं। आप लोग भी सज्जन और मिलनसार हैं। आपका कपड़े का व्यापार इस समय १५८ क्रास स्ट्रीट में होता है।

सेठ अगरचन्द मानमल चोरड़िया, मद्रास

इस फर्म के मालिकों का निवास स्थान कुचेरा (जोधपुर-स्टेट) का है। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। देश से पैदल मार्ग द्वारा सेठ अगरचन्दजी सन् १८४७ में जालना होते हुए मद्रास आये।

सेठ अगरचन्दजी—आरम्भ में आप सन् १८८० तक रेजिमेंटल बैङ्कर्स का काम करते रहे। यहाँ के [illegible] समाज में एवम् आफीसरों में आप बड़े आदरणीय समझे जाते थे। मारवाड़ी समाज पर आपकी [illegible] रहा करती थी। आपके कोई पुत्र न था अतः आपने अपनी मृत्यु के समय अपनी फर्म का [illegible] अपने बड़े भ्राता सेठ चतुर्भुजजी के पुत्र सेठ मानमलजी को बनाया। आपने ७० हजार रुपयों

का दान किया था जिसका "अगरचन्द ट्रस्ट" के नाम से एक ट्रस्ट बना हुआ है। इस रकम का व्याज शुभ कार्यों में लगाया जाता है। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए सन् १८९१ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ मानमलजी—आप बड़े उग्रबुद्धि के सज्जन थे। यही कारण था कि केवल १९ वर्ष की अल्पायु में ही आप नावा (कुचामण रोड़) में हाकिम बना दिये गये थे। आपको होनहार समझ सेठ अगरचन्दजी ने विल में अपनी फर्म का उत्तराधिकारी बनाया था। लेकिन केवल २८ वर्ष की अवस्था में ही सन् १८९३ में आप बम्बई में स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ सेठ सोहनमलजी (जोधपुर के साह मिश्रीमलजी के द्वितीय पुत्र) सन् १८९६ में दत्तक लाये गये। आपने २५ हजार रुपयों की रकम दान की। तथा मद्रास पांजरापोल और जोधपुर पाठशाला को भी समय २ पर मदद पहुँचाई। व्यापारिक समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। आपका सन् १९१५ में स्वर्गवास होगया। आपके यहाँ नोखा (मारवाड़) से सेठ मोहनमलजी (सिरेमलजी चोरड़िया के दूसरे पुत्र) सन् १९१८ में दत्तक आये।

सेठ मोहनमलजी—आप ही वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आपके हाथों से इस फर्म की विशेष उन्नति हुई है। आपके दो पुत्र हैं जो अभी बालक हैं और विद्याध्ययन कर रहे हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठित मानी जाती है। मद्रास प्रान्त में आपके सात आठ गाँव जमीदारी के हैं। मद्रास की ओसवाल समाज में इस कुटुम्ब की अच्छी प्रतिष्ठा है। इस समय आपके यहाँ "अगरचन्द मानमल" के नाम से साहुकार पैठ मद्रास में बैङ्किग तथा प्रापर्टी पर रुपया देने का काम होता है। आपकी दुकान मद्रास के ओसवाल समाज में प्रधान धनिक हैं।

आगरे का चोरड़िया खानदान

लगभग १५० वर्षों से यह परिवार आगरे में निवास करता है। यहाँ लाला सरूपचन्दजी चोरड़िया ने डेढ़सो साल पूर्व सच्चे गोटे किनारी का व्यापार आरम्भ किया। आपके पुत्र पन्नालालजी तथा पौत्र रामलालजी भी गोटे का मामूली व्यापार करते रहे। लाला रामजीलालका सवत् १९१५ में स्वर्गवास हुआ। आपके गुलाबचन्दजी, छुट्टनलालजी, चिमनलालजी तथा लखमीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला गुलाबचन्दजी चोरड़िया का परिवार—आप अपने भ्राता लखमीचन्दजी के साथ गोटे का व्यापार करते थे। तथा इस व्यापार में आपने बहुत उन्नति की। आप अपने इस लम्बे परिवार में सबसे बड़े तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। संवत् १९८३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके कपूरचन्दजी, चांदमलजी, दयालचन्दजी, मिठ्ठनलालजी तथा निहालचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें लाला मिठ्ठनलालजी को छोड़कर शेष सब विद्यमान हैं। लाला कपूरचन्दजी जवाहरात का व्यापार करते हैं।

लाला चांदमलजी—आपका जन्म सवत् १९३० में हुआ। आपने बी० ए० एल० एल० बी० तक शिक्षण प्राप्त किया। पश्चात् १२ सालों तक वकालत की। आप देश भक्त महानुभाव हैं। देश की पुकार सुनकर आप वकालत छोड़कर कांग्रेस की सेवाओं में प्रविष्ट हुए। सन् १९२१ में आप आगरा कांग्रेस के प्रेसिडेंट थे। आपने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के उपलक्ष में कारागृह वास भी किया है। आप बड़े सरल, शांत एवम् निरभिमानी सज्जन हैं।

होता है। सेठ सुखलालजी १९८६ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र धर्मचन्दजी १९७४ में तथा सुगनचन्द १९६३ में गुजरे। वर्तमान में धर्मचन्दजी के पुत्र शकरलालजी तथा सुगनचन्दजी के पुत्र नंदलालजी मौजूद हैं। आपके यहाँ "रामलाल सुखलाल" के नाम से व्यापार होता है। आपके ४ गाव माल गुजारी के हैं। सेठ नंदलालजी प्रतिष्ठित सज्जन हैं। धर्मध्यान में आपका अच्छा लक्ष है। आपने एक धर्मशाला भी बनवाई है।

सेठ रतनचन्द दौलतराम चोरड़िया, वाघली (खानदेश)

यह परिवार कुचेरा (जोधपुर) का निवासी है। देश से लगभग १२५ वर्ष पहिले सेठ लच्छीरामजी चोरड़िया व्यापार के निमित्त वाघली (खानदेश) आये। तथा दुकान स्थापित की। संवत् १९१ में ७२ साल की वय में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर दौलतरामजी चोरडिया दत्तक लिये गये इनका भी संवत् १९३९ में स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र रतनचन्दजी मौजूद हैं। सेठ रतनचन्दजी स्थानकवासी ओसवाल कान्फ्रेस के प्रान्तीय सेक्रेटरी है। आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ आपका परिवार आसपास के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है। आपके राजमलजी, चांदमल तथा मानमलजी नामक तीन पुत्र हैं। राजमलजी की आयु ३० साल की है।

सेठ जेठमल सूरजमल चोरड़िया, वाघली (खानदेश)

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (मारवाड) है। देश से लगभग ७५ साल पहिले रूपचन्दजी चोरड़िया व्यापार के लिये वाघली (खानदेश) आये। इनके पुत्र सूरजमलजी चोरडिया हुए आपका ६० साल की वय में संवत् १९७५ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र जेठमलजी मौजूद हैं।

चोरड़िया जेठमलजी का धर्म के कामों में अच्छा लक्ष है। आपने बडी सरल प्रकृति के निरभिमानी व्यक्ति है। आपके यहाँ सराफी काम काज होता है। आप श्वेताम्बर स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। वाघली के जैन समाज में आपको उत्तम प्रतिष्ठा है।

बोरड़—बरड़

बोरड या बरड़ गौत्र की उत्पत्ति

आंबागढ़ में राव बोरड नामक परमार राजा राज करते थे। इनको खरतरगच्छाचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी ने संवत् ११७५ में जैन धर्म से दीक्षित किया तथा उन्हें सकुटुम्ब जैन बनाया। राव की संतानें बोरड़ तथा बरड़ कहलाई।

लाला दयालचदजी जौहरी—आपका जन्म सवत् १९२९ में हुआ। आपने १९ साल की ।हां जवाहरात का व्यापार शुरू किया। २५ वर्ष की आयु में आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया, मगर आपने विवाह न कर और नवीन उच्च आदर्श उपस्थित किया। लार्ड हार्डिज, ड्यूक आफ ,न्नान "मेरी" आदि से आपको सार्टीफिकेट प्राप्त हुए। इधर ३२ सालों से आप सार्वजनिक करते हैं। आपने अपने जीवन में लगभग २ लख रुपया भिन्न २ सस्थाओं के लिये इकट्ठा किया। २० हजार रुपया अपनी तरफ से दिये। इस समय आप लगभग २० प्रतिष्ठित संस्थाओं की ग्राहक समिति के मेम्बर प्रेसिडेंट आदि हैं। रोशन मुहल्ला आगरा के वीर विजय वाचनालय, धर्म- ।और मन्दिर के आप मैनेजर हैं। आप दीर्घ अनुभवी और नवयुवकों के समान उत्साह रखने वाले नुभाव है। आपके छोटे भ्राता लाला निहालचन्दजी, लाला मुन्नालालजी के साथ, "गुलाबचन्द नाचन्द्" के नाम से गोटे का व्यापार करते हैं।

लाला लुट्टनलालजी जौहरी का परिवार—आप नामी जौहरी होगये हैं। महाराजा पटियाला पुर और रामपुर के आप खास जौहरी थे। राजा महाराजा रईस और विदेशी यात्रियों को जवाहरात ।क्यूरियो सिटी का माल बेच कर आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। संवत् १९६३ में आपका र्गवास हुआ। आपके मुन्नालालजी तथा हरकचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें मुन्नालालजी विद्य न हैं, तथा गोटे का व्यापार करते हैं।

लाला चिमनलालजी तथा लखमीचदजी का परिवार—लाला चिमनलालजी आगरा सिटी के ाक ऑफिस में हेड सिगनलर थे। इनके पुत्र बाबूलालजी तथा ज्योतिप्रसादजी पेट्रोल एजंट हैं। ा मरह लखमीचन्दजी के पुत्र माणकचन्दजी, मोहनलालजी तथा छन्नूलालजी जवाहरात का काम करते हैं।

यह एक विस्तृत तथा प्रतिष्ठित परिवार है। इस परिवार में पहले जमीदारी का काम भी ा था। इस परिवार ने आगरा रोशन मोहल्ला के श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ के मन्दिर में पच्चीकारी र में तथा पाठशाला वगैरा में करीब ३० हजार रुपये लगाये। लगभग ५०।६० सालों से उक्त का व्यवस्था इस परिवार के जिम्मे हैं।

लाला इन्द्रचंद माणिकचन्द का खानदान, लखनऊ

इस खानदान के लोग श्वेताम्बर जैन मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। यह खान ान सैकड़ों वर्षों से लखनऊ में ही निवास करता है। इस खानदान में लाला हीरालालजी तक ।इस का पता चलता है। लाला हीरालालजी के पश्चात् क्रमशः लाला जौहरीमलजी, लाला ..., और उनके पश्चात् लाला इन्द्रचन्दजी हुए। आपका जन्म संवत् १९०९ का और स्वर्गवास १९... में हुआ। आपके पुत्र लाला मानिकचन्दजी इस खानदान में बड़े बुद्धिमान और दूरदर्शी हैं। आपका जन्म सवत् १९३५ में हुआ। आपने अपनी बुद्धिमानी से इस फर्म के व्यवसाय ...दिया। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम नानकचन्दजी और ज्ञानचन्दजी हैं। ...जी का जन्म सवत् १९५९ का और ज्ञानचन्दजी का जन्म संवत् १९६१ का है।

आप दोनों भाई बड़े बुद्धिमान और सज्जन हैं। लाला नानकचन्दजी के एक पुत्र हे जिसका नाम जयचन्दजी हैं।

इस खानदान का पुश्तैनी व्यवसाय जवाहरात का है। तब से अभी तक जवाहरात का काम बराबर चला आ रहा है। इसके सिवाय लाला मानिकचन्दजी ने यहां पर केमिस्ट और ड्रागिस्ट का व्यापार शुरू किया जो बहुत सफलता से चल रहा है। जिसकी दो ब्रान्चे लखनऊ में और एक बाराबकी में है। लखनऊ के ओसवाल समाज में यह खानदान बहुत अग्रसर तथा प्रतिष्ठित है।

सेठ मांगीलाल धनरूपमल चोरड़िया, निलीकुपम् (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज चोरड़िया चतुर्भुजजी के पुत्र रिखबदासजी मारवाड़ के चाड़वास (डीडवाणा के पास) नामक स्थान में रहते थे। वहाँ से आप टोंक होते हुए संवत् १९०० में नीमच (मालवा) आये। तथा यहाँ लेनदेन का व्यापार आरम्भ किया। आपके चाँदमलजी, मानमलजी, हेमराजजी तथा खेमराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चादमलजी के पुत्र सुगनचन्दजी तथा श्यामलालजी हुए। सुगनचंदजी का स्वर्गवास संवत् १०५२ में ५१ वर्ष की उम्र में हुआ। सेठ सुगनचंदजी के पुत्र मागीलालजी और बिहारीलालजी तथा श्यामलालजी के पुत्र लूणकरणजी हुए।

सेठ मागीलालजी का जन्म संवत् १९२९ में हुआ। आप संवत् १९५८ में नीमच से नागौर आये, तथा वहाँ अपना निवास स्थान बनाया। वहाँ से एक साल बाद रवाना होकर आप हैदराबाद आये तथा सेठ खुशालचन्दजी गोलेछा की फर्म पर २० सालों तक मुनीम रहे, तथा फिर भागीदारी में निलीकुपम् में दुकान की। इधर सन् १९२७ से आप अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। आप समझदार तथा होशियार सज्जन हैं। धन्धे को आपही ने जमाया है। आपके छोटे भाई बिहारीलालजी लश्कर वालों की ओर से शिवपुरी तथा भाण्डेर खजानों में मुनीम हैं। सेठ मागीलालजी के पुत्र सुपारसमलजी का जन्म १९५८ में हुआ। इनसे छोटे सजनमलजी हैं। सुपारसमलजी तमाम काम बडी उत्तमता से सम्हालते हैं। आपके पुत्र धनरूपमलजी हैं। इस दुकान की एक शाखा कलपुरची (मद्रास) में एम० सजनलाल चोरड़िया के नाम से हैं। इन दोनों दुकानों पर व्याज का काम होता है।

चोरड़िया श्यामलालजी के पुत्र लूणकरणजी तथा केसरीमलजी हुए। ये बन्धु नीमच में रहते हैं केशरीचन्दजी, मानमलजी के पुत्र नदलालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। इसी तरह इस परिवार में सेठ चाँदमलजी के तीसरे भ्राता हेमराजजी के पुत्र नथमलजी चोरड़िया हैं। आपका विस्तृत परिचय अलग दिया गया है।

श्री नथमलजी चोरड़िया, नीमच

आपके परिवार का विस्तृत परिचय सेठ माँगीलाल धनरूपमल नामक फर्म के परिचय में दे चुके हैं। सेठ रिखबदासजी चोरड़िया के तीसरे पुत्र सेठ हेमराजजी थे। आपके पुत्र नथमलजी हुए। आप नथमलजी स्थानकवासी समाज के गण्य मान्य सज्जन हैं। आपने अपने व्यापार कौशल तथा कार्य कुशलता से

लाला रतनचन्दजी बरड़, अमृतसर.

[illegible] हरजसरायजी बरड़ B. A., अमृतसर

लाला हंसराजजी बरड़, अमृतसर

श्री शादीलालजी बरड़, अमृतसर

...ति उपार्जित कर समाज में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है। आप मशहूर सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं। ...स्थानकवासी कान्फ्रेन्स, खादीप्रचार तथा अछूत आन्दोलन में आपने बहुतसा हिस्सा लिया है। आपने ...ट्रीय कार्यों में सहयोग लेने के उपलक्ष में कारागृह वास भी किया था। आप अजमेर कांग्रेस के सभापति ...रह थे। इस समय आप ऑल इण्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी हैं। आपने अजमेर ...मु सम्मेलन के समय अपनी ७० हजार की प्रापर्टी का दान, सार्वजनिक कामों में लगाने के लिये घोषित ...या है। आपके पुत्र माधोसिंहजी चोरड़िया का अल्प वय में स्वर्गवास हो गया। आप बड़े होनहार थे। ...इस समय आपके पुत्र सोभागसिंहजी तथा फतेसिंहजी विद्यमान हैं। फतेसिंहजी बनारस युनिवर्सिटी में ...रहे हैं।

सेठ सुगनमल पावूदान चोरड़िया, कुन्नूर (नीलगिरी)

सेठ मेहरचन्दजी के छोटे पुत्र जसराजजी ने संवत् १९५२ में फलौदी से आकर अपना निवास ...में किया। संवत् १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके कुन्दनमलजी, सुगनमलजी, पावूदानजी, ...दासजी तथा बख्तावरमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सुगनमलजी, पावूदानजी और अलसीदासजी ...हैं। सेठ कुन्दनमलजी, मुन्नीलाल खुशालचन्द हैदराबाद वालों की दुकानों पर मुनीम थे। इनका ...१९५६ में स्वर्गवास हुआ। सुगनमलजी भी अपने भ्राता के साथ उन दुकानों पर मुख्त्यारी करते ...पश्चात् इन सब भाइयों ने कुन्नूर (नीलगिरी) में दुकान खोली। संवत् १९७४ में इन बन्धुओं का ...अलग २ हो गया।

सेठ सुगनमलजी का जन्म १९३२ में हुआ। इस समय आपके पुत्र मूलचन्दजी, गुलराजजी, ...राजजी, दौलतरामजी तथा उदयराजजी हैं। आपके यहाँ सुगनमल गुलराज के नाम से कुन्नूर में ...कारबार होता है। सेठ पावूदानजी का जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आपने १९५८ में अलसी- ...चन्द ब्रदर्स के नाम से कुन्नूर में बेंकिंग व्यापार शुरू किया। तथा व्यापार को आपने तरक्की दी है। ...वर्ष से आपने जसराज पावूदान के नाम से कपड़े का अपना स्वतन्त्र व्यापार आरम्भ किया है। ...पुत्र रतनलालजी, मेघराजजी तथा गुलाबचन्दजी हैं। आप बन्धुओं में से बड़े २ व्यापार में भाग ...हैं। सेठ अलसीदासजी के पुत्र कँवरलालजी तथा सुखलालजी हैं। इनके यहां अहमदाबाद में कपड़े का ...व्यापार होता है। यह परिवार फलौदी में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

सेठ गुलाबचन्दजी चोरड़िया का परिवार, भानपुरा

इस परिवार वाले सज्जनों का मूल निवास स्थान मेड़ता था। वहाँ से करीब १२५ वर्ष पूर्व ...चन्दजी भानपुरा (इन्दौर) नामक स्थान पर आये। यहाँ आकर आपने साधारण व्यापार प्रारम्भ ...इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। आपके दो पुत्र हुए, जिनके नाम सेठ अमोलकचन्दजी और ...था। अमोलकचन्दजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ गुलाबचंदजी, फूलचन्दजी ...चन्दजी था। सेठ अमोलकचन्दजी ने अपने पुत्रों के साथ व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। ...स्वर्गवास हो गया। पश्चात् आपके तीनों पुत्र अलग २ हो गये।

लाला रतनचंद हरजसराय बरड़, अमृतसर

इस खानदान के लोग पहिले गुजराज (पजाव) मे रहते थे। उसके पश्चात् यह खानदान ड (स्यालकोट) में आकर बसा। वहाँ से लाला गण्डामलजी के पुत्र लाला सोहनलालजी ाार जमाने अमृतसर में आये। तब से यह खानदान अमृतसर में बसा हुआ है।

लाला सोहनलालजी—आपने अमृतसर में आकर जवाहरात का ज्ञान प्राप्त किया। जवाहरात ाग कर आपने मूगा का व्यापार शुरू किया इस व्यापार में आप साधारणतया अपना काम । आप इन भाग्यवानों में से थे जो अपनी पाचवीं पुश्त को अपने सामने देख लेते हैं। केवल ग्हा आयु में ही कारोबार से मन खींच कर आपने धर्म ध्यान में अपना मन लगाया। आप जैन । के अच्छे विद्वान थे। आपका स्वर्गवास सन् १९०५ में हुआ। आपके लाला उत्तमचन्दजी था लाला हाकमरायजी नामक २ पुत्र हुए। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का माननेवाला है।

लाला उत्तमचन्दजी—आप बडे प्रेमपूर्ण हृदय के तथा उदार स्वभाव के व्यक्ति थे। अमृतसर ाग्त तथा व्यापारिक समाज में आपकी बडी साख तथा व्यापारिक प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास १९०४ म अपने पिताजी के १ मास पूर्व होगया था। आपके छोटे भ्राता लाला हाकमरायजी का ास ना सन् १९०४ में होगया। और इसके थोड़े समय पहिले लाला हाकमरायजी का खानदान । अलग होगया था। लाला उत्तमचन्दजी के लाला जगन्नाथजी नामक १ पुत्र हुए।

लाला जगन्नाथजी—आप शुरू २ असली मूगे का तथा उसके बाद नकली मूंगे का व्यापार रहा। उसके बाद आप व्यापर से तटस्थ होकर धर्म ध्यान की ओर लग गये। आप पंजाब भा तथा लोकल सभा के जीवन पर्यंत मेम्बर रहे। इन सभाओं द्वारा पास होने प्रस्तावों को सबसे व्यवहारिक रूप आपने ही दिया। आपका स्वर्गवास सन् १९३० में हुआ। आपके लाला रतनचंद लाला हरजसरायजी तथा लाला हंसराजजी नामक ३ पुत्र हुए।

लाला रतनचदजी—आपका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आपके हाथों से इस खानदान के का व्यवसाय और आर्थिक स्थिति को बहुत उन्नति मिली। आप बडे व्यापार कुशल और बुद्धिमान व्यापारिक मामलों में आपका मस्तिष्क बहुत उन्नत है। सामाजिक तथा धार्मिक कामों में भी आपकी रुचि है। आप पजाब स्थानकवासी जैन सभा के वाइस प्रेसीडेण्ट रह चुके हैं। अजमेर का पब्लिक्यूटि कमेटी के भी आप मेम्बर थे। अमृतसर के लेस फीता एसोसिएसन के प्रेसिडेण्ट रह चुके है। आपके प्रेसिडेण्ट शिप में अमृतसर में इस व्यापार ने बहुत उन्नति की है। ... सुधारों के क्षेत्र में आप हमेशा अग्रगण्य रहते हैं। आपकी बड़ी कन्या कुमारी ... हाल में 'हिन्दी रत्न" की परीक्षा पास की है। आपके बाबू शादीलालजी, सुरेन्द्रनाथजी ..., ...भूषण, व देशभूषण नामक ५ पुत्र हैं। उनमें बाबू शादीलालजी, फर्म के व्यापार में ...है। आपका जन्म सवत् १९६४ में हुआ। आपके ४ पुत्र हैं। बाबू सुरेन्द्रनाथजी इस ... रहे है। तथा २ स्कूल में अध्ययन कर रहे है।

लाला हरजसरायजी—आपका जन्म सवत् १९५४ का है। सन् १९१९ में आपने बी० ए०

सेठ गुलाबचन्दजी का परिवार—सेठ गुलाबचन्दजी ने व्यापार में बहुत उन्नति की। आपने स्थानीय भलवाड़ा मन्दिर के ऊपर सोने के कलश चढ़वाने में २१००) की मदद दी। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके इस समय धनराजजी और प्रेमराजजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं। आजकल आप दोनों ही अलग २ रूप से व्यापार करते हैं। सेठ धनराजजी वृद्ध पुरुष हैं। आपके मन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी मिलनसार उत्साही एवम् नवीन विचारों के युवक हैं। आपके लालचन्द, प्रसन्नचन्द, विमलचन्द और नरेशचन्द्रजी नामक चार पुत्र हैं। सेठ प्रेमराजजी के हरकचन्दजी और सन्तोषचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। यह परिवार भानपुरा में प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ पन्नालाल हजारीमल चोरड़िया, मनमाड

यह परिवार धनेरिया (मेड़ता के पास) का निवासी है। वहा से सेठ खूबचन्दजी चोरड़िया के पुत्र सेठ जीतमलजी चोरड़िया लगभग १०० साल पूर्व मनमाड के समीप घोटाना नामक स्थान में आये। और यहां लेन देन का धंधा शुरू किया। इनके हजारीमलजी तथा मगनीरामजी नामक पुत्र हुए। सेठ हजारीमलजी ने मनमाड में दुकान खोली आपका स्वर्गवास संवत् १९५९ में तथा मगनीरामजी का १९३६ में हुआ। सेठ हजारीमलजी के पन्नालालजी राजमलजी तथा सेठ मगनीरामजी के पूनमचन्दजी और सरूपचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इन भाइयों में सेठ पन्नालालजी चोरड़िया ने इस कुटुम्ब के व्यापार और सम्मान को विशेष बढ़ाया। आप चारों भाइयों का कारबार संवत् १९५० में अलग २ हुआ। सेठ राजमलजी का स्वर्गवास संवत् १९४८ में तथा पन्नालालजी का संवत् १९७८ में हुआ। सेठ पन्नालालजी के नाम पर राजमलजी के पुत्र खींवराजजी दत्तक आये।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ खींवसीराजजी तथा मूलचन्दजी के पुत्र ताराचन्दजी विद्यमान हैं। सेठ खींवराजजी का जन्म १९५९ में हुआ। आपके यहा "पन्नालाल हजारीमल" के नाम से साहुकारी लेन-देन का काम होता है। आपका परिवार आस पास के व मनमाड के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। आपके पुत्र अमोलकचन्दजी, माणकचन्दजी और मोतीचन्दजी हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय मानता है।

चौधरी पीरचंद सूरजमल चोरड़िया, बुरहानपुर

इस परिवार का मूल निवास पीपाड़ (जोधपुर स्टेट) में है। देश से लगभग ६५ साल पहिले सेठ सूरजमलजी चोरड़िया इच्छापुर (बुरहानपुर से १२ मील) आये। आपके हाथों से धंधे की नींव जमी संवत् १९३१ में आपका शरीरान्त हुआ। आपके पुत्र पीरचन्दजी का जन्म संवत् १९३२ में हुआ। श्री पीरचन्दजी ने संवत् १९७८ में बुरहानपुर में दुकान की यहा आप इच्छापुर वालों के नाम से बोले जाते हैं। पीरचन्दजी चौधरी शिक्षित सज्जन हैं। यह चौधरी परिवार पीपाड़ में नामांकित माना जाता है और वहां मोतीरामजी वालों के नाम से मशहूर है, इस परिवार के पुरुषों ने जोधपुर स्टेट में आफीसरी, हाकिमी आदि के कई काम किये हैं। इच्छापुर में इस परिवार के ५ घर हैं।

की परीक्षा पास की—आप बड़े प्रतिभाशाली व्यापार निपुण तथा नवीन स्प्रिट के व्यक्ति हैं। आपके जीवन का बहुत सा समय पब्लिक सेवाओं मे व्यतीत होता है। खानदान के व्यापार में प्रविष्ट होकर आपने अपने बड़े भ्राता लाला रतनचन्दजी के काम मे बहुत हाथ बंटाया है। आपने जापान मे उ.एरोक्स इम्पोर्ट का व्यापार शुरू किया। आप यहा की "को एज्यूकेशन" की आदर्श सस्था श्री रामाश्रम हा स्कूल के सेक्रेटरी हैं। इसके अलावा आप अमृतसर की लोकल जैन सभा, और बॉयस्काउट सेवा समिति के सेक्रेटरी हैं। लाहौर के हिन्दी साहित्य मण्डल लिमिटेड के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के आप चेअरमैन हैं आपके विचार बड़े मंझे हुए हैं। आपके इस समय २ पुत्र हैं उनमें लाला अमरचंदजी इन्टरमिजिएट में तथा लाला भूपेन्द्रनाथजी मेट्रिक में पढ़ रहे हैं।

लाला हंसराजजी—आपका जन्म संवत् १९५६ का है। सन् १९१५ मे आपने मेट्रिक पास करके व्यापारिक लाइन में प्रवेश किया। आपकी व्यापारिक दृष्टि बहुत बारीक है।

लाला नदलालजी—लाला गंडामलजी के पौत्र लाला नन्दलालजी बडे धार्मिक तथा त्यागी पुरुष हैं। आपके जीवन का अधिकाश समय धार्मिक कामों में ही व्यय होता है। गृहस्थावस्था में रहते हुए भी आपने एक साथ इकतीस इकतीस उपवास किये। छोटी अवस्था में ही आपकी पत्नी का स्वर्गवास होगया था, तब से आप ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण किये है।

इस समय इस परिवार में सोने के थोक एक्सपोर्ट का व्यापार होता है। अमृतसर के सोने व्यापारियों में यह फर्म वजनदार मानी जाती है। इस फर्म की यहाँ पर चार शाखाएँ हैं। जिन पर बैङ्किंग, सोना, चांदी, होयजरी तथा जनरल मर्चेंटाइज़ एवं इम्पोर्टिंग बिजिनेस होता है। इस खानदान ने पंजाब प्रात में ओसवाल समाज के दस्सा तथा बीसा फिरकों में शादी विवाह होने मे बहुत लीडिंग पार्ट लिया है।

लाला श्रद्धामल नत्थूमल बरड़, अमृतसर

इस खानदान में लाला नन्दलालजी के पुत्र लाला राजूमलजी और उनके पुत्र लाला हरजसरायजी हुए। लाला हरजसरायजी के पुत्र लाला श्रद्धामलजी हुए।

लाला श्रद्धामलजी—आपका जन्म सम्वत् १८८० में हुआ। आप बडे विद्वान और जैन सूत्रों के जानकार थे। शुरू २ में आपने अमृतसर में शालों की दूकान खोली और उसकी एक ब्राच कलकत्ते मे स्थापित की। जिस समय आपने कलकत्ते में दूकान खोली उस समय रेलवे लाइन नहीं खुली थी अतएव आपको टमटम, छकड़ा आदि सवारियों पर कलकत्ता जाना पड़ा था। आपके ७ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः हरनारायणजी, निहालचन्दजी, खुशालचन्दजी, गगाबिशनजी, राधाकिशनजी और शालि-रामजी था।

लाला निहालचन्दजी—आपका जन्म सम्वत् १८९९ में हुआ आप भी बड़े धार्मिक पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५९ में हुआ। आपके लाला नत्थुमलजी, लखीरामजी और लालचन्दजी नाम। तीन पुत्र हुए।

...ता सरदारचन्दजी खीवसरा, जोधपुर
(परिचय पेज नं० ५०६)

मेहता उम्मैदचंदजी खीवसरा, जोधपुर
(परिचय पेज नं० ५०६)

...नूरचंदजी बरड़ का परिवार, अमृतसर. (परिचय पेज नं० ५२४)

...रचन्दजी चौधरी के ५ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः वंशीलालजी, मोहनलालजी, रतनलालजी ... तथा माणकलालजी हैं। इन भाइयों में वंशीलालजी ने एफ० ए० तक तथा रतनलालजी और ...जी ने मैट्रिक तक शिक्षा पाई है। वंशीलालजी, हरीनगर श्यूगर मिल बिहार में असिस्टेंट मैनेजर ... इस परिवार के यहां इच्छापुर तथा बुरहानपुर में कृषि जमींदारी तथा लेनदेन का काम काज होता है।

सेठ लखमीचन्द चौथमल चोरड़िया, गंगाशहर

इस परिवार के पूर्व पुरुष जैतपुर के निवासी थे। वहां से सेठ पदमचन्दजी के पुत्र मायाचंद ...र हरिसिंहजी यहां गंगाशहर आये। मायाचन्दजी का परिवार अलग रहता है। यह परिवार ...जी का है। सेठ हरिसिंहजी के छोगमलजी एवम् दानमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ दानमलजी ...मय विद्यमान हैं। आपके गंगारामजी और बनेचन्दजी नामक दो पुत्र हुए हैं।

सेठ छोगमलजी का जन्म संवत् १९१५ का है। आपने अपने जीवन में साधारण रोजगार ...। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में होगया। आपके खूबचन्दजी, लखमीचन्दजी, शेरमलजी, ...जी और रावतमलजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें से प्रथम तीन स्वर्गवासी होचुके हैं। आप ...इयों ने मिलकर तोलगा (बंगाल) में अपनी फर्म स्थापित की। इसमें आपको अच्छी सफलता ...। अतएव उत्साहित होकर आप लोगों ने सिरसागंज में भी आपनी एक ब्रांच खोली। इसके ...बाद एक फर्म कलकत्ता में भी हुई। कलकत्ता का पता ४६ स्ट्रांड रोड है।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ चौथमलजी, रावतमलजी खूबचन्दजी के पुत्र सोहन... और शेरमलजी के पुत्र आसकरनजी हैं। आप लोग योग्यता पूर्वक फर्म का संचालन कर रहे ...मलजी के हाथों से फर्म की बहुत उन्नत हुई।

सेठ रामलाल रावतमल चोरड़िया, बरोरा (सी० पी०)

यह परिवार रूपनगर (किशनगढ़-स्टेट) का निवासी है। देश से सेठ भोमसिंहजी के पुत्र ...जी तथा रावतमलजी लगभग ८० साल पहिले बरोरा आये। तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक व्यापार करके ... लाख रुपयों की सम्पत्ति इन बन्धुओं ने कमाई। व्यापार की उन्नति के साथ आपने धार्मिक कामों ... में भी हाथ बटा दिया। आपने बरोरा के जैन मन्दिर व विट्ठलमन्दिर के बनवाने में सहायताएँ ... दिखलाया। सरकार में भी दोनों भाइयों का अच्छा सम्मान था। सेठ रामलालजी का ...१९५ में स्वर्गवास हो गया। आपके बाद सेठ रावतमलजी ने तमाम काम सम्हाला। सेठ रावतमल ... में बरोरा के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। सन् १९२१ में आपको भारत सरकार ने "रायसाहिब" ... से सम्मानित किया था। संवत् १९८२ में आपका स्वर्गवास हुआ।

सेठ रामलालजी के पुत्र सुखलालजी तथा मॉंगूलालजी हुए, इनमें मॉंगूलालजी, सेठ रावतमल ... के दत्तक गये। इनका संवत् १९८५ में स्वर्गवास हुआ। इनके मदनलालजी, भीकमचन्दजी, ...नलालजी नामक ४ पुत्र हैं। आपके यहाँ रावतमल मांगूलाल के नाम से व्यापार ...

लाला नत्थुमलजी—आपका जन्म संवत् १९२६ में हुआ। आप इस खानदान में बड़े नामी पुरुष हैं। आप जैन साधुओं की सेवा बहुत उत्साह व प्रसन्नता से करते हैं। जाति सेवा में बहुत भाग लेते हैं। पंजाब की सुप्रसिद्ध स्थानकवासी जैन सभा के करीब दस बारह साल तक रहे। इसी प्रकार आल इण्डिया स्थानकवासी कान्फ्रेन्स के भी आप करीब २० साल तक स्थानीय रहे। इस समय भी आप अमृतसर की लोकल जैन सभा के प्रेसिडेण्ट हैं। आप उन पाँच व्यक्तियों में हैं जिन्होंने पंजाब के जैन समाज में सबसे पहिले नवजीवन फूँका। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम लाला उमरावसिंहजी, लाला जमनादासजी, लाला शोरीलालजी हैं। आप तीनों भाई बड़े बुद्धिमान योग्य हैं और अपने व्यापारिक काम को करते हैं। लाला उमरावसिंहजी की शादी जम्बू के सुप्रसिद्ध बहादुर बिशनदासजी की कन्या से हुई। इनके दो पुत्र हैं जिनके नाम मनोहरलाल और सुभापचन्द्र हैं। जमनादासजी के सुरेन्द्रकुमार और सुमेरकुमार और शोरीलालजी के सत्येन्द्रकुमार नामक पुत्र हैं।

लाला लालचन्दजी का जन्म संवत् १९४१ का है। आप भी इस समय दुकान का काम करते हैं। नारायणजी के पुत्र लाला हसराजजी हुए। हसराजजी के पुत्र धरमसागरजी इस समय एफ० ए० में हैं।

लाला गंगाविशनजी के पुत्र लाला मथुरादासजी का स्वर्गवास सन् १९१२ में हुआ। आपके ... लालजी और रामलालजी हैं। बृजलालजी कमीशन एजन्सी का काम करते हैं। आपके ...र, मानसागर और स्वर्णसागर नामक तीन पुत्र हैं। रतनसागर एफ० ए० में पढ़ते हैं। ...जी लखनऊ और मसूरी में फैन्सी सिल्क और गुड्स का व्यापार करते हैं।

लाला बदरीशाह सोहनलाल बरड़, गुजरानवाला

इस खानदान के पूर्वज लाला पल्लेशाहजी और उनके पुत्र टेकचंदजी पपनखा (गुजरानवाला) में थे। टेकचन्दजी के पुत्र लाला दरबारीलालजी सन् १७९१ में गुजरानवाला आये। आप जवाहरात का व्यापार करते थे। आपके पुत्र विशनदासजी तथा पौत्र देवीदत्ताशाहजी तथा हाकमशाहजी हुए। हाकमशाहजी ने सराफी धंधे में ज्यादा उन्नति की। धर्म के कामों में आपका ज्यादा लक्ष था। ... में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके महताबशाहजी, सोहनलालजी, बदरीशाहजी, शंकर-दासजी, जमीताशाहजी तथा वेलीरामजी नामक ७ पुत्र हुए। ये सब भ्राता अपने पिताजी के सामने ही संवत् १९५३ में अलग २ हो गये थे। इन भाइयों में लाला महताबशाहजी का संवत् १९५... में लाला बदरीशाहजी का १९६७ में तथा जमीताशाहजी का १९७८ में हुआ।

इस समय इस विस्तृत परिवार में लाला सोहनलालजी सबसे बड़े हैं। आपका जन्म संवत् ... हुआ। आपका परिवार यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। आपने व्यापार में ... अपने खानदान की प्रतिष्ठा को काफी बढ़ाया है। आपके भाई बदरीशाहजी ने आपके ... "...शाह सोहनलाल" के नाम से सम्वत् १९४७ में आड़त का व्यापार शुरू किया, तथा इस काम ... उन्नति की है। इस खानदान की स्थावर जंगम सम्पत्ति यहाँ काफी तादाद में है। लगभग ... जायदाद आपके पास है। इस परिवार की १२ दुकानों पर सराफी व्यापार होता है।

रह का कई वर्षों तक खर्चा चलाता रहा। मरने पर उसके बेटे जीवाशाह को महाराणा अमरसिंह ने धान का पद दे दिया।" इन्हीं भामाशाह के भाई ताराचन्द हुए जो हल्दीघाटी के युद्ध तथा और भी ई युद्धों मे बडी वीरता के साथ लडे। भामाशाह के पुत्र जीवाशाह और उनके पुत्र अक्षयराज महाराणा मरसिंह और कर्णसिंह के प्रधान रहे।

महाराणा राजसिंह और संघवी दयालदास

मेवाड के इतिहास मे संघवी दयालदास का स्थान राजनैतिक और सैनिक दोनों ही दृष्टियों से त्यन्त महत्वपूर्ण है। दयालशाह का समय, वह समय था, जब रत्नगर्भा भारत वसुन्धरा की छाती पर ौरगजेब के अमानुषिक अत्याचारों का ताडव नृत्य हो रहा था। उसकी धर्मान्धता से चारों ओर हाहाकार चा हुआ था। अबलाओं, मासूमों और बेकसों पर दिन-दहाडे अत्याचार होते थे, धार्मिक मन्दिर जमींदोज ये जाते थे, मस्तक पर लगा हुआ तिलक ज़बान से चाट लिया जाता था और चोटी बलपूर्वक मस्तक से दा कर दी जाती थी। इस अत्याचार को और भी प्रबल करने के लिये उसने हिन्दुओं पर जज़िया कर ाने का विचार किया, जिससे सारे देश का रहा सहा असतोष और भी प्रज्वलित हो उठा। ऐसे संकट समय में मेवाड के राणा राजसिंह ने औरंगजेब को एक पत्र लिखा, जिसमे ऐसा अमानुषिक कार्य्य न रने की सलाह दी।। इससे औरंगजेब का क्रोध और भी भडक उठा और उसने अपनी विशाल सेना के ाथ मेवाड पर आक्रमण कर दिया। उसकी सेना ने वि० स० १७३६ के भाद्रपद शुक्ला ८ के दिन देहली ंच किया। उस समय महाराणा राजसिंह के प्रधान मन्त्री सघवी दयालदास थे। इस युद्ध मे महाराणा जसिंह ने जिस रण कुशलता और चतुराई के साथ औरंगजेब की विशाल सेना को पराजय दी, वह इति- ास के पृष्ठों मे स्वर्णाक्षरोंमे अंकित है। यहां यह बात ध्यान मे रखने योग्य है कि इस सारी रण-कुशलता और तुराई के अन्दर मन्त्री दयालदास कंधे से कंधे महाराणा राजसिंह के साथ मे थे। महाराणा राजसिंह सघवी यालदास की सेवाओं से बडे प्रसन्न हुए और औरंगजेब के द्वारा मेवाड पर की गई चढाई का बदला लेने के ये सघवी दयालदास को बहुत सी सेना के साथ मालवे पर आक्रमण करने के लिये भेजा। वीर दयाल- स ने किस बहादुरी और तेजस्विता के साथ उसका बदला लिया इसका वर्णन कर्नल जेम्स टॉड ने इस ार किया है —

"राणाजी के दयालदास नामक एक अत्यन्त साहसी और कार्य्य चतुर दीवान थे, मुगलों से बदला े की प्यास उनके हृदय मे सर्वदा प्रज्वलित रहती थी उन्होंने शीघ्र चलनेवाली घुडसवार सेना को साथ र नर्मदा और बेतवा नदी तक फैले हुए मालवा राज्य को लूट लिया, उनकी प्रचण्ड भुजाओं के बल के सामने

कोई भी खड़ा नहीं रह सकता था, सारंगपुर, देवास, सरोज, माँड़, उज्जैन और चन्देरी इन सब नगरों को अपने बाहु-बल से जीत लिया, विजयी दयालदास ने इन नगरों को लूटकर वहाँ पर जितनी यवन सेना उसमेंसे बहुतसों को मार डाला, इस प्रकार बहुत से नगर और गाँव इनके हाथ से उजाड़े गये। इनके भय नगर-निवासी यवन इतने व्याकुल हो गये थे, कि किसी को भी अपने बन्धु बाँधव के प्रति प्रेम न रहा, क्या कहें, वे लोग अपनी प्यारी स्त्री तथा पुत्रों को भी छोड़ २ कर अपनी २ रक्षा के लिये भागने लगे, सम्पूर्ण सामग्रियों के ले जाने का कोई उपाय उनकी दृष्टि न आया अन्त में उनमें अग्नि लगाकर चले अत्याचारी औरंगजेब हृदय में पत्थर को बाँधकर निराश्रय राजपूतों के ऊपर पशुओं के समान आचरण करता आज उन लोगों ने ऐसे सुअवसर को पाकर उस दुष्ट को उचित प्रतिफल देने में कुछ भी कसर नहीं की, दयालदास ने हिन्दू-धर्म से बैर करने वाले बादशाह के धर्म से भी पल्टा लिया। काजियों के हाथ पैर बांधकर उनकी दाढ़ी मूँछों को मुंडा दिया और उनके कुरानों को कुए में फेंक दिया। दयालदास का इतना कठोर हो गया था कि, उन्होंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार किसी भी मुसलमान को क्षमा नहीं कि तथा मुसलमानों के राज्य को एक बार मरुभूमि के समान कर दिया, इस प्रकार देशों को लूटने पीड़ित करने से जो विपुल धन उन्होंने इकट्ठा किया, वह अपने स्वामी के धनागार में दे दिया और देश की अनेक प्रकार से वृद्धि की थी।"

"विजय के उत्साह से उत्साहित होकर तेजस्वी दयालदास ने राजकुमार जयसिंह के साथ कर चित्तौड़ के अत्यन्त ही निकट बादशाह के पुत्र अजीम के साथ भयंकर युद्ध करना आरम्भ किया। भयंकर युद्ध में राठोड़ और खीची वीरों की सहायता से वीरवर दयालदास ने अजीम की सेना को प कर दिया, पराजित अजीम प्राण बचाने के लिये रण थंभोर को भागा, परन्तु इस नगर में आने के पह उसकी बहुत हानि हो चुकी थी, कारण कि विजयी राजपूतों ने उसका पीछा करके उसकी बहुत सी सेना मार डाला। जिस अजीम ने एक वर्ष पूर्व चित्तौड़ नगरी का स्वामी बन अकस्मात् उसको अपने हाथ में लिया था, आज उसको उसका उचित फल दिया गया"।*

वीर दयालदास ने इन युद्धों के सिवा और भी कितने ही युद्ध किये। उनकी बहादुरी राजनीति कुशलता से महाराणा राजसिंह बड़े प्रसन्न रहते थे। इन सिंघवी दयालदास के हस्ताक्षरों का राजसिंह का एक आज्ञापत्र कर्नल टाड ने अंग्रेजी राजस्थान के परिशिष्ट नं० ५ पृष्ट ६९७ में अंकित है. जिसका मतलब इस प्रकार है.—

लाला महताबशाहजी के बधावामलजी, दीवानचन्दजी, ज्ञानचन्दजी तथा सरदारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें लाला सरदारीमलजी मौजूद हैं। आपके पुत्र रामलभायामलजी हैं। बधावामलजी के पुत्र प्यारेलालजी तथा रामलालजी हैं। दीवानचन्दजी के पुत्र खजाचीलालजी और ज्ञानचन्दजी के पुत्र कस्तूरीलालजी सराफी का काम काज करते हैं। लाला सोहनलालजी के जसवतरामजी, अमीचन्दजी, मुल्कराजजी बी० ए० तथा कुञ्जलालजी नामक ४ पुत्र हुए। लाला कुञ्जलालजी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आपका तथा आपके बड़े भ्राता अमीचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है। लाला मुल्कराजजी ने सन् १९२२ में बी० ए० पास किया। आप समझदार तथा शिक्षित सज्जन हैं। स्थानीय ब्रदरहुड के आप जीवित कार्यकर्ता हैं।

लाला बदरीशाहजी के दत्तक पुत्र मोतीशाहजी हैं तथा दूसरे शादीलालजी हैं। शादीलालजी ने मैट्रिक तक शिक्षा पाई है। तथा सुशील व होनहार व्यक्ति हैं। लाला शकरदासजी के पुत्र मुशीलालजी बनारसीदासजी, हजारीलालजी तथा विलायतीरामजी हैं। इसी तरह लाला चुन्नीलालजी के देसराजजी, रतनचन्दजी, प्यारेलालजी, बाबूलालजी, जगेरीलालजी तथा रोशनलालजी नामक ६ पुत्र तथा लाला जमीतरामजी के मुनीलालजी, छोटेलालजी, चिरजीलालजी तथा बेलीरामजी के हंसराजजी, जयगोपालजी, नगीनचन्दजी व चन्दनमलजी नामक पुत्र मौजूद हैं।

यह परिवार श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। शादीलाल मुल्कराज के नाम से इस परिवार का गुजरानवाला (पजाब) में आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ धर्मसी माणकचन्द बोरड, सुजानगढ़

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ धर्मसीजी करीब १०० वर्ष पूर्व देशनोक नामक स्थान से चलकर सुजानगढ़ आये। आपके चार पुत्र सेठ माणकचदजी, चुन्नीलालजी, उत्तमचन्दजी वगैरह हुए। इनमें से माणकचन्दजी बड़े नामांकित और व्यापारकुशल सज्जन थे। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। इनमें से केवल सेठ चुन्नीलालजी के मोतीलालजी और भूरामलजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोगों का यहाँ की पच पचायती में अच्छा नाम था। व्यापार में भी आपने बहुत तरक्की की। आप दोनों का भी स्वर्गवास हो गया। सेठ भूरामलजी के लाभचन्दजी और इन्द्रचन्दलालजी नामक पुत्र हुए। लाभचन्दजी का स्वर्गवास हो गया।

इस समय इ.तालालजी ही इस परिवार के व्यापार का संचालन करते हैं। आपने कलकत्ता में भी अपनी एक ब्राच स्थापित कर उस पर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। इसमें आपको बहुत सफलता रही। आप यहाँ की म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर रह चुके हैं। आपके पन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके जैनसुखजी, पृथ्वीराजजी और चम्पालालजी नामक तीन पुत्र हैं। इस समय आपका व्यापार सुजानगढ़, कलकत्ता, सरभोग (आसाम) इत्यादि स्थानों पर भिन्न नामों से जूट, कपड़ा, बैंकिंग और सोना चाँदी का काम होता है। आप लोग तेरापथी सम्प्रदाय के मानने वाले सज्जन हैं

इधर २ साल पूर्व आपने हीराचन्द दलीचन्द के नाम से बम्बई में आढ़त का व्यापार शुरू किया है। डूंगीरामजी के पुत्र माणिकलालजी, मोतीलालजी व्यापार में भाग लेते हैं। तथा हीराचन्दजी के पुत्र बद्रीलालजी, कांतिलालजी तथा दलीचन्दजी के पुत्र बशीलालजी, कन्हैयालालजी और चन्द्रकांतजी पढ़ते हैं। सेठ शिवराजजी के पुत्र शंकरलालजी इनकमटेक्स का कार्य करते हैं।

सेठ हंसराज दीपचंद खींवसरा, मद्रास

इस परिवार का निवास डे (नागौर के पास) है। इस परिवार में सेठ नगराजजी के पुत्र हंसराजजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप उद्योगी व धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष थे। आप संवत् १९२९ में मद्रास आये। तथा सेठ अगरचन्द मानचन्द के यहाँ सर्विस की। और फिर मारवाड़ चले गये। तथा वहाँ संवत् १९७३ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र भीमराजजी तथा दीपचंदजी हुए। इनमें भीमराजजी २८ साल की उम्र में १९५६ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ दीपचन्दजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। संवत् १९५४ में आपने मद्रास के बैंकिंग तथा ज्वेलरी का व्यापार स्थापित किया। तथा अपनी होशियारी और बुद्धिमानी से इस व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की है। इस समय मद्रास में आपकी दुकान बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। दीपचन्दजी खींवसरा का समाज की उन्नति की ओर अच्छा लक्ष्य है। आपने मद्रास स्थानक बनवाने में मदद दी है। तथा इस समय आप मद्रास स्थानकवासी स्कूल के सेक्रेटरी हैं। आप के नाम पर हुक्मीचन्दजी दत्तक आये हैं।

सेठ कनीराम गुलाबचन्द खींवसरा, धूलिया

इस परिवार के पूर्वज जेठमलजी और उनके भाई वेणीदासजी नारसर ठाकुर के कामदार थे। वहाँ से यह परिवार बदलू (मारवाड़) आया। तहाँ वहाँ से लगभग १५० साल पूर्व जेठमलजी के पुत्र कनीरामजी और तिलोकचदजी नालोद (धूलिया के पास) आये। और वेणीदासजी का परिवार साईं खेड़ा (नाशिक) गया। सेठ कनीरामजी के पुत्र गुलाबचदजी तथा प्रतापमलजी और तिलोकचन्दजी के हुक्मी चंदजी हुए। इनमें सेठ गुलाबचदजी और प्रतापचन्दजी का व्यापार धूलिया में स्थापित हुआ। इन दो भाइयों का व्यापार संवत् १९३१ में अलग २ हुआ। तथा सेठ हुकमीचन्दजी के पुत्र कस्तूरचन्दजी फकीर चन्दजी और चौथमलजी नालोद में व्यापार करते रहे। फकीरचंदजी प्रतिष्ठित पुरुष हुए। इनका तथा गुलाबचन्दजी का संवत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। खींवसरा गुलाबचन्दजी के नाम पर जोगीलालजी बाहर से तथा प्रतापमलजी के नाम पर तुलसीरामजी नालोद से दत्तक आये।

खींवसरा जोगीलालजी का जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप सेठ वेणीदासजी के प्रपौत्र हैं। धूलिया में आपकी दुकान सब से प्राचीन मानी जाती है। आप प्रतिष्ठित तथा समझदार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र टीकमचन्दजी, जवरीमलजी तथा सोभागमलजी हैं। आपके यहाँ सराफी व्यापार होता है। खींवसरा तुलसीरामजी के पुत्र रूपचन्दजी, तुलसीराम रूपचन्द के नाम से धूलिया में व्यापार करते हैं। तथा शेष भ्राता छोटे हैं। यह परिवार मंदिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

धर्मसी माणकचन्द बोरड़, सुजानगढ़.

शाह धनरूपमलजी हरकावत, अजमेर.

[illegible] माणकचन्द), सुजानगढ़.

सेठ हीराचन्दजी धाड़ीवाल, रायपुर. (C P)

सेठ नेमीचन्द हेमराज खींवसरा, लोनार (बरार)

इस परिवार का मूल निवास बडी पादू (मेड़ते के पास) है। वहाँ से सेठ गंभीरमलजी के पुत्र संवत् १९४० में लोनार आये तथा देवकरण चांदमल बोहरा की दुकान पर सर्विस की। पीछे से भ्राता पेमराजजी आनन्दरूपजी, नन्दलालजी, देवीचन्दजी तथा चन्दूलालजी लोनार आये तथा इन सम्मिलित रूप में व्यापार आरंभ किया। सेठ पेमराजजी तथा देवीचन्दजी विद्यमान हैं। इनके चन्द प्रेमराज" के नाम से व्यापार होता है। देवीचन्दजी के पुत्र उत्तमचन्दजी हैं।

सेठ आनन्दरूपजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हुआ। आपके पुत्र हेमराजजी का जन्म संवत् हुआ। आपने स्वर्गीय सेठ मोतीलालजी सचेती की निगरानी मे हिन्दू मुस्लिम दंगे को व दंगाइयों न को शांत करने में बहुत परिश्रम किया। आप जातीय कुरीतियों को मिटाने में तथा शुद्धि प्रयत्नशील रहते हैं। आपके यहाँ "नेमीचन्द हेमराज" के नाम से कपड़े का व्यापार होता है।

नौलखा

नौलखा परिवार अजीमगंज

सबसे प्रथम सन् १७५० ई० में इस परिवार के पूर्व पुरुष बाबू गोपालचन्दजी नौलखा अजीमगंज ए वह व्यापार दक्ष थे। अतः थोड़े ही समय में अच्छी उन्नति करली आपने अपने भतीजे बाबू रचन्दजी को दत्तक लिया और बाबू जयस्वरूपचन्दजी ने बाबू हरकचन्दजी को दत्तक लिया।

हरकचन्दजी नौलखा—आप सन् १८५७ में अपने पिता से अलग हो गये और अपने नाम से व्यवसाय आरम्भ किया तथा अल्पकाल ही में इसमें अच्छी उन्नति करली। आपने कलकत्ता लुधियान ज, पुर्णिया, मुर्लीगंज, महाराजगंज और नवाबगंज में अपनी फर्में खोली। बैंकिंग व्यवसाय के जमींदारी खरीदने में भी आपने पूंजी लगाई। फलतः आपकी जमींदारी मुर्शिदाबाद, वीरभूमि जिले में हो गई। आपका स्वर्गवास सन् १८७४ ई० में हुआ। आपके तीन पुत्र हुए चन्दजी नौलखा और दानचन्दजी नौलखा का स्वर्गवास सन् १८४७ में हुआ। आपके तीसरे गुलाबचन्दजी नौलखा थे।

...चन्दजी नौलखा—आपने व्यवसाय और स्टेट को अधिक बढ़ाया। आप मुर्शिदाबाद ... बेंच के १० वर्ष तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपने सन् १८८५ के अकाल ... का कर माफ कर दिया और तीन महीने तक दो हजार प्रपीड़ितों को भोजन देते रहे। ... का प्रसिद्ध "राजे विला" नामक उद्यान बनवाया। आप बहुत ही लोक प्रिय सहृदय ... आपका स्वर्गवास सन् १८९६ ई० के जून मास में हुआ। आपके पुत्र बाबू धनपतसिंह ... और सहृदय सज्जन थे।

...सिंहजी नौलखा—आपने बंगाल सरकार को ११ हजार की रकम अजीमगंज में गुलाब

चन्द नौलखा अस्पताल भवन के लिये दिये। इसी प्रकार २५ हजार की रकम आपने कलकत्ते के शम्भूनाथ हास्पिटल में सर्जिकल वार्ड बनाने के लिये दिये। सरकार ने आपके कार्यों के सम्मान स्वरूप आपको सन् १९१० में "राय बहादुर" की पदवी प्रदान को। इतना ही नहीं सरकार ने आपको कलगी के रूप में खिल्लत दे आपका आदर किया। आपका स्वर्गवास सवत् १९७० में हुआ। आपके दो पुत्र थे जिनके नाम बाबू आनन्दसिंह नौलखा और बाबू इन्द्रचन्द्रजी नौलखा थे। आप दोनों ही क्रमश सन् १९०४ और सन् १९०८ में निसन्तान स्वर्गवासी हुए। अतएव आपके नाम पर बाबू निर्मलकुमारसिंहजी नौलखा सुजानगढ़ से दत्तक आये।

निर्मलकुमारसिंहजी नोलखा—आपने १९७६ में स्टेट का कार भार सम्हाला। आप बहुत होनहार राष्ट्रीय विचारों के शिक्षित नवयुवक हैं। आपको शुद्ध खद्दर से बडा स्नेह है। आप जैन श्वेताम्बर सभा अजीमगंज, जियागज एडवर्ड कोरोनेशन स्कूल के व्हाइस प्रेसिडेण्ट और अजीमगंज के म्युनिसिपल कमीश्नर हैं। १९१६ में आपकी ओर से यहा एक बालिका विद्यालय खोला गया है। इसके अलावा आप बंगाल लैंड होल्डर्स एसोसियेशन, कलकत्ता क्लब, ब्रिटिश इण्डिया अशोसिएसन आदि संस्थाओं के भी मेम्बर हैं। हाल ही में आपने जैन श्वेताम्बर अधिवेशन अहमदाबाद के सभापति का स्थान आपने सुशोभित किया था। शिक्षा एवम् सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ धार्मिक कामों की ओर भी आपका अच्छा लक्ष्य है। सवत् १९८२ में महात्मा गाधीजी अजीमगज आये थे उस समय आपने १० हजार रुपया उनकी सेवा में भेंट किया था उसी साल जैनाचार्य्य ज्ञानसागरजी महाराज को भी ज्ञान भडार में १० हजार रुपया दिया था। श्री पावापुरीजी में गाव के जैन श्वेताम्बर मन्दिर के जीर्णोद्धार में २० हजार रुपया लगाया। आपको पुरातत्व विषयों से भी बहुत स्नेह है। आपने अपने बगीचे में पुरानी वस्तुओं का एक संग्रह कर रखा है। इस समय आपके चरित्र कुमार सिंहजी नामक एक पुत्र हैं। आपकी बहुत से स्थानों पर जमींदारी है। तथा कलकत्ता अजीमगंज, और बड़िया, अकबरपुर, फवाड़ गोला इत्यादि स्थानों पर बैंकिंग, पाट और गल्ले का व्यापार होता है।

नौलखा परिवार, सीतामऊ

कहा जाता है कि जब महाराजा रतनसिंहजी इधर मालवे में आये तब इस खानदान वाले भी साथ थे। उनकी पत्नी यहा रतलाम में सती हुईं, जिनके स्मारक रूप में आज भी चबूतरा बना हुआ है। और आज भी इस परिवार के लोग अपने यहां होने वाले शुभ कार्यों पर पूजा करने के लिये वहां जाया करते हैं। यहीं से करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ धन्नाजी के पुत्र हरीरामजी सीतामऊ आये। वहां आकर आपने स्टेट के खजाने का काम किया। आपके बड़े पुत्र हरलालजी आजीवन स्टेट के हाउस होल्ड आफिसर तथा छोटे पुत्र ख्यालालजी हाकिम रहे। स्टेट में आपका अच्छा सम्मान था।

सेठ हरलालजी के जैतसिंहजी और रामलालजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोग भी स्टेट में सर्विस करते रहे। जैतसिंहजी के नन्दलालजी, खुमानसिंहजी और लालसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें लालसिंहजी, रामलालजी के नाम पर दत्तक रहे। प्रथम दो भाइयों का स्वर्गवास होगया। इस समय नंदलालजी के बख्तावरसिंहजी और किशोरसिंहजी नामक पुत्र विद्यमान हैं।

श्री ला...सिंहजी ने पहले पहल दरबार पेशी का काम किया। पश्चात् तहसीलदार रहे। ... आर स्टेट के रवेन्यू आफिसर हैं। आप मिलनसार शिक्षित एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आपके ... कुंवरसिंह हिम्मतसिंहजी, प्रहलादसिंहजी, गिरिशकुमारजी और सुमतिकुमारजी नामक ६ ... बाबू प्रतापसिंहजी एम० ए० एल० एल० बी० और बाबू कुबेरसिंहजी बी० ए० हैं। आप ... सज्जन और नवीन विचारों के हैं। आप मन्दिर संप्रदाय के मानने वाले हैं। सेठ मन्नालालजी ...सिंहजी नाहरगढ़ नामक परगने के इजारे का काम करते रहे। इनके ४ पुत्रों में से दो का ... हो गया। ... में एक लखपतसिंहजी आगरे में तहसीलदार हैं। तथा दूसरे बिशनसिंहजी ... में सर्विस करते हैं।

धाड़ीवाल

...ल गौत्र की उत्पत्ति

महाजन वंश मुक्तावली में लिखा है कि विभंम पाटन नगर में ढेढूजी नामक एक उरभी वंशीय ... थे। ये इधर उधर धाड़े मारकर अपनी आजीविका चलाते थे। एक बार का प्रसंग है कि उहड ... अपनी लड़की का डोला लेकर शिसोदिया राणा रणधीर के पास जा रहा था। रास्ते में ढेढूजी ... लिया और इसकी लड़की वदन कुँवर को अपने साथ ले आया। इस वदन कुँवर से सोहड़ ... पुत्र हुआ। इसे संवत् ११६९ में श्री जिनदत्त सूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिबोध देकर जैन धर्मा... । इसकी माँ धाड़े से लाई गई थी, अतएव इसका धाड़ेवा गौत्र स्थापित हुआ। कालान्तर में ... धाड़ीवाल के नाम से पुकारा जाने लगा।

सेठ मुल्तानचंद हीरचंद धाड़ीवाल, रायपुर

यह परिवार बगड़ी (मारवाड़) का निवासी है। वहाँ से सेठ सरदारमलजी के बड़े पुत्र मुल... संवत् १९२४ में औरंगाबाद गये। वहाँ से आप संवत् १९२८ में अमरावती होते हुए जबलपुर ... के साथ कपड़े का व्यापार शुरू किया। जबलपुर से आप अपने छोटे भ्राता हीरचंद ... के साथ संवत् १९३५ में रायपुर (सी० पी०) आये। इन दोनों भ्राताओं ने कपड़ा ... में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ मुलतानमलजी का संवत् १९७६ में ... तथा सेठ हीरचंदजी मौजूद हैं। आपका जन्म संवत् १९१९ में हुआ।

... में मुलतानचंदजी के पुत्र लखमीचन्दजी तथा हीरचंदजी के पुत्र नथमलजी तथा उत्तमचंद ... हैं। आपका जन्म क्रमशः संवत् १९५४ सं० १९५३ तथा १९६० में हुआ। आपकी ... प्रधान ... हैं। आपके यहाँ सराफी, बेङ्किग व पुलगाव मिल की एजंसी का काम ... इस परिवार ने एक जैन महावीर पाठशाला खोल रक्खी है। इसमें १२५ छात्र पढ़ते

स्व० सेठ हजारीमलजी मूथा, (हजारीमल वनराज) मद्रास.

स्व० सेठ बनराजजी मूथा, (हजारीमल वनरा

सेठ विजयराजजी मूथा, (हजारीमल वनराज) मद्रास.

कुवर सज्जनराजजी s/o सेठ विजयराजजी मू

हैं। इस पाठशाला को आपने १५ हजार की लागत की एक बिल्डिंग भी दी है। यह परिवार अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। नथमलजी के पुत्र सम्पतराजजी तथा केसरीचंदजी और हुकमचन्दजी के पुत्र सुगनचन्दजी हैं।

सेठ फतेमल अजितसिंह धाड़ीवाल, भीलवाड़ा

सोहड़जी की ३५ वीं पुश्त में मेघोजी नामक व्यक्ति हुए। इनके देवराजजी और हसराज नामक दो पुत्र थे। इनमें से सेठ हसराजजी गुजरात प्रांत छोड़कर सागानेर नामक स्थान पर आ. यहाँ आपके दौलतरामजी और सूरजमलजी नामक दो पुत्र हुए। अपने पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर दोनों भाई अलग हो गये। इनमें दौलतरामजी भीलवाड़ा तथा सूरजमलजी सरवाड नामक स्थान पर गये। सेठ दौलतरामजी के गंभीरमलजी और नथमलजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ गभीरमलजी बड़े कुशल व्यक्ति थे। आपने व्यापार में लाखों रुपये पैदा किये। आपकी उस समय जावद, शाहपुरा, आदि कई स्थानों पर शाखाएँ थीं। सेठ नथमलजी भीलवाडा जिले के हाकिम हो गये थे। आपकी बहुत प्रतिष्ठा थी। आपके नाम पर तिंवरी से नवलमलजी दत्तक आये। सेठ गभीरमलजी के भी कोई न था, अतएव आपके नामपर सर वाड से कल्याणमलजी दत्तक आये। आप लोगों ने भी अपने व्यवसाय अच्छी तरक्की की। संवत् १९२२ में फिर आप लोग अलग २ हो गये।

सेठ कल्याणमलजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः फतेमलजी, जवानमलजी और इ जी हैं। इनमें से फतेमलजी अपने चाचा नवलमलजी के नाम पर दत्तक रहे। जवानमलजी का स्वर्गवास गया। इन्द्रमलजी अपने पुराने आसामी देनलेन के व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। आपके रिखभ और पार्श्वचन्दजी नामक २ पुत्र हैं। प्रथम बी० ए० में पढ़ रहे हैं। सेठ फतेमलजी इस समय पुराने व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। यहाँ की ओसवाल पचायती में आपका बहुत सम्मान है। आपके द्वारा कई फैसले किये जाते हैं। आपके अजीतमलजी नामक एक पुत्र है। आप अभी विद्याध्ययन कर रहे हैं। अजीतमलजी के भँवरलालजी नामक एक पुत्र है।

श्री शिवचंदजी धाड़ीवाल, अजमेर

शिवचन्दजी धाड़ीवाल—आपका जन्म सम्वत् १९२३ में अजमेर में हुआ। सम्वत् १९४३ से २८ सालों तक बीकानेर स्टेट में डिप्टी सुपरिन्टेन्डेण्ट बन्दोवस्त, अफसर कहतसाली, रेलवे इन्सपेक्टर कई जिलों के हाकिम रहे। आपको उर्दू और फारसी का अच्छा ज्ञान है। आपके गोपीचन्दजी तथा चन्दजी नामक २ पुत्र हुए। शिवचन्दजी के छोटे भ्राता हरकचन्दजी एल एम० एस० कई स्थान मेडिकल आफीसर रहे। सम्वत् १९७२ में उनका स्वर्गवास हुआ। उनके नाम पर हरी दत्तक गये।

गोपीचन्दजी धाड़ीवाल—आपका जन्म सवत् १९५२ में हुआ। आपने इलाहाबाद युनिवर्सिटी बी० एस० सी० एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की। फिर २ साल अजमेर में वकालत करने के आप मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड के जूट डि० में नियुक्त हुए। और इस समय आप इस फर्म के आ

खींवसरा

खींवसरा गौत्र की उत्पत्ति

उज्जैन के पवाँर राजा खीमजी एक बार भाटी राजपूतों से हार गये, तब इनको जैनाचार्य जिने-श्वरसूरिजी ने शत्रु वशीकरण मंत्र दिया। इससे शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर इन्होंने खीवसर नामक गाँव बसाया। कुछ समय तक इनका सम्बन्ध राजपूतों से रहा। पश्चात् इनके पौत्र भीमजी को दादा जिन-दत्तसूरिजी ने ओसवाल जाति में मिलाया। कहीं २ खीवजी के वंशज शंकरदासजी को जैन बनाये जाने की बात पाई जाती है। खींवसर में रहने के कारण यह परिवार खींवसरा कहलाया।

सेठ हजारीमल वनराज मूथा, मद्रास

इस परिवार ने खींवसर से बीकानेर, नागौर आदि स्थानों में होते हुए जोधपुर में अपना निवास बनाया। यहाँ आने के बाद खींवसरा नाथाजी के पुत्र अभयराजजी तथा पौत्र अमीचन्दजी राज्य के कार्य करते रहे, अतएव इन्हें "मूथा" की पदवी मिली। अमीचन्दजी के पुत्र सीमलजी तथा मानोजी प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। इन बन्धुओं को जोधपुर महाराज अभयसिंहजी ने संवत् १८०० में चौकडी गाँव में एक बेरा और १५ बीघा जमीन जागीर में दी। इसी तरह मानाजी को संवत् १८०९ की फागुन सुदी ३ के दिन महाराजा रामसिंहजी ने १ बेरा और २० बीघा जमीन जागीरी में इनायत की। थोड़े समय बाद मानाजी नाराज होकर पूना चले गये। तब महाराजा जोधपुर ने रुक्का भेजकर इनको वापस बुलाया उस समय बल्लूंदा ठाकुर इनको अपना "पगडी वदल भाई" बनाकर बल्लूंदे ले गये। तब से यह परिवार वहीं निवास कर रहा है। मूथा सीमलजी के परिवार में इस समय मूथा गणेशमलजी चिंगनपैठ में, [illegible] तथा धरमराजजी बंगलोर में और चम्पालालजी जालना में व्यापार करते हैं।

मूथा मानोजी के मालजी, सिरदारमलजी तथा धीरजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें सिरदारमलजी के [illegible] गंगारामजी हैं तथा धीरजी के परिवार में विजयराजजी और तेजराजजी मूथा हैं। मूथा [illegible] उदयचन्दजी तथा उनके पुत्र हंसराजजी खींवसरा हुए। सेठ हंसराजजी के हजारीमलजी तथा [illegible] नामक २ पुत्र हुए।

[illegible] हजारीमलजी मूथा—आप संवत् १९०७ में बल्लूंदे से पैदल राह चलकर जालना आये। [illegible] संवत् १९१२ में बंगलोर आये और वहाँ दुकान स्थापित की। आप बड़े प्रतापी तथा साहसी [illegible] इसके बाद आपने संवत् १९२५ में मद्रास में अपनी दुकान खोली। तथा इस फर्म [illegible] में आपने उत्तम सफलता प्राप्त की। संवत् १९४० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके [illegible] चन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ वनराजजी मूथा का जन्म संवत् १९२७ में हुआ।

आप बड़े शान्त, अनुभवी तथा मिलनसार सज्जन हैं। सन् १९३० में आप बिड़ला ब्रदर्स की ओर से इण्डिया प्रोड्यूज के डायरेक्टर होकर विलायत गये थे। आपके पुत्र फतहचन्दजी पढ़ते हैं तथा अजमेर में रहते हैं। धाड़ीवाल हरीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५६ में हुआ। आपने एफ० ए० तक अध्ययन किया। कुछ दिन जयाजीराव मिल में सर्विस की, तथा इस समय अजमेर में रहते हैं। यह परिवार अजमेर के ओसवाल समाज में उत्तम प्रतिष्ठा रखता है। इस परिवार में धाड़ीवाल दीपचन्दजी के पुत्र लक्ष्मीचन्दजी धाड़ीवाल एम० ए० एल० एल० बी० प्रोफेसर होल्कर कॉलेज इन्दौर हैं।

सेठ मुलतानमल शेपमल धाड़ीवाल का परिवार, कोलार गोल्ड फील्ड

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान बगड़ी (जोधपुर-स्टेट) का है। आप ओसवाल स्थानकवासी समाज के बाइस सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में सेठ मुलतानमलजी संवत् १९४६ में बंगलोर आये और यहाँ आकर आपने मेसर्स आईदान रामचन्द्र के यहाँ दो साल तक सर्विस की। इसके दो वर्ष बाद आपने बंगलोर में लेन देन की दुकान खोली। सम्वत् १९५७ के लगभग श्री मुलतानमलजी ने कोलार गोल्ड फील्ड के अण्डरसन पेठ में एक दुकान फर्म स्थापित की जो आज तक बड़ी अच्छी तरह से चल रही है। आपका सम्वत् १९३० में जन्म हुआ है। आप बड़े साहसी तथा व्यापारकुशल सज्जन हैं। आपका धर्म ध्यान में अच्छा लक्ष्य है। कुछ सालों से इस फर्म में से मेसर्स आइदान रामचन्द्र का भाग निकल गया है। आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम श्री शेपमलजी, अमोलकचन्दजी तथा केवलचन्दजी हैं। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९६५, १९७१ तथा १९७३ का है। आप तीनों ही बड़े योग्य और नवीन विचारों के सज्जन हैं। श्री केवलचन्दजी इस समय मेट्रिक में पढ़ रहे हैं।

इस परिवार का मुलतानमल शेपमल के नाम से अण्डरसनपेठ में तथा मुलतानमल मिश्रीलाल के नाम से रावर्टसनपेठ में बैंकिंग का व्यवसाय होता है। यह फर्म यहाँ मातवर मानी जाती है।

हरखावत

हरखावत गोत्र की उत्पत्ति

संवत् ५१२ में पँवार राजा माधवदेव को भट्टारक भावदेवसूरिजी ने प्रतिबोध देकर जैन धर्म अंगीकार कराया। संवत् १२४० में इस परिवार के पालेचा सा रतनजी ने शाही फौज के साथ कुवाड़ तोड़े इसलिए इनकी गौत्र "कुवाड़" हुई। संवत् १६४४ में इस परिवार में हरखाजी हुए। इनकी संतानें "हरखावत" कहलाई। इन्होंने सिरोही, जोधपुर तथा जालोर में मंदिर बनवाये, शत्रुंजय का संघ निकाला। इनके पुत्र विमलशाहजी मेड़ते के सम्पत्तिशाली साहुकार थे। आपको बादशाह ने "शाह" की पदवी दी। इनके हुकमसिंहजी तथा सगतसिंहजी नामक २ पुत्र हुए।

आपका स्वर्गवास २७ वर्ष की आयु में हुआ। आपने भी इस फर्म के व्यापार को बढ़ाया। आपके नाम पर सेठ विजेराजजी दत्तक आये।

सेठ बिजेराजजी मूथा— आपका जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आपही इस समय इस दुकान के मालिक हैं। आपने इस दुकान के व्यापार की अच्छी तरक्की की है। आप स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुयायी है। आपके पुत्र सज्जनराजजी १५ साल के तथा मदनराजजी ९ साल के हैं। आपके यहाँ वंगलोर, मद्रास, चिदम्बरम्, त्रिरतुराई पुंडा, वरधाचलम् तथा सीयाली में बेंकिंग व्यापार होता है। इन सब स्थानों पर यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ गंगारामजी की और आपकी ओर से वलूंदे में एक जैन स्कूल और बोर्डिंग हाउस चल रहा है। इसमें आप २ हजार रुपया वार्षिक मदद देते हैं। इसी तरह वहाँ एक अमर वकरों का ठाण है। सेंटथामस माउण्ट में आपने एक मकान स्कूल को दिया है, तथा मद्रास स्थानक, सरदार हाई स्कूल जोधपुर तथा हुक्मीचद जैन मण्डल उदयपुर में भी अच्छी सहायताएँ दी हैं। इस परिवार को जोधपुर स्टेट की तरफ से व्याह शादी के अवसर पर नगारा निशान मिलता है।

सेठ बख्तावरमल रूपराज मूथा, बंगलोर

हम ऊपर लिख चुके हैं कि सेठ हंसराजजी खींवसरा के द्वितीय पुत्र सेठ बख्तावरमलजी थे। आप वलूंदे से बंगलोर आये तथा यहाँ व्यापार स्थापित किया। आपने अपने ओसवाल बन्धुओं को मदद देकर बसाया, आपके समय यहाँ मारवाड़ियों की २।४ ही दुकान थीं। आप बडे प्रतिष्ठित पुरुष हो गये हैं। आपके रूपराजजी तथा कुन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाइयों का स्वर्गवास अल्प वय में हो हो गया। आपके कोई सन्तान न होने से मूथा कुन्दनमलजी के नाम पर चिंगनपेठ निवासी मूथा गणेशमलजी के पुत्र तेजराजजी को दत्तक लिया। आपका जन्म सम्वत् १९५२ में हुआ। आपकी दुकान बंगलोर में अच्छी प्रतिष्ठित तथा पुरानी मानी जाती है। आपके पुत्र सोहनराजजी, मोहनराजजी तथा पारसमलजी है।

सेठ शम्भूमल गंगाराम मूथा, बंगलोर

इस परिवार के पूर्वज वलूंदा निवासी मूथा मानाजी का परिचय हम ऊपर दे चुके हैं। इनके बाद क्रमशः सिरदारमलजी, उत्तमाजी तथा बुधमलजी हुए। बुधमलजी के नाम पर (सीमलजी के प्रपौत्र मूथा चौथमलजी के पुत्र) शम्भूमलजी दत्तक आये। मूथा शम्भूमलजी सम्वत् १९३४ में बगलोर आये तथा बंगलोर कैंट में दुकान स्थापित कर आपने आपनी व्यापार दूरदर्शिता से बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आप का सम्वत् १९७२ में स्वर्गवास हुआ। आपके नाम पर मूथा गगारामजी सम्वत् १९६९ में दत्तक आये। आप ही इस समय इस दुकान के मालिक है। आपने २० हजार के फड से देश में एक पाठशाला खोला है तथा २ हजार रुपया प्रति वर्ष इस पाठशाला के अर्थ आप व्यय करते है। आपने अपने नामपर उगनमलजी को दत्तक लिया है। इनका जन्म सम्वत् १९६९ में हुआ। यह दुकान वगलोर के ओसवाल समाज में सबसे धनिक मानी जाती है। वगलोर के अलावा मद्रास प्रान्त में इस दुकान की और भी शाखाएँ है।

हरखावत कुशलसिंहजी का परिवार, इन्दौर

हरखावत कुशलसिंहजी अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपके परतापसिंहजी, कल्याणसिंहजी परथीसिंहजी, विनयसिंहजी, बहादुरसिंहजी तथा केसरीसिंहजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें सम्वत् १८० में बहादुरमलजी की धर्मपत्नी उनके साथ सती हुई। सम्वत् १८२३ में इस परिवार को १ गाँव जागीर में मिला। उस सम्बन्ध में इनको निम्न परवाना मिला था।

> सिंघवी फतेचन्द लिखावत प्रगणे मेडतारा गावरा माचारणरी बीसणी तर्फ हवेली रा चोधरिया लोकादिसे—तथा गाव सा परतापमल, कल्याणमल कुशलमल विनलदान रे पट्टे हुआ छे सु सवत १८२४ रा साख सावण था अमलदीजो दाण जना खदी बेगेरा बात दरबाँररा छे रेख १००१ इनायत खालसा री संवत १८२३ आषाढ़ वदी ७

उपरोक्त ग्राम अभी तक इस परिवार के अधिकार में चला आता है। हरखावत प्रतापमलजी के उम्मेदमलजी, बख्तावरमलजी, हिन्दूमलजी, ईसरीदासजी तथा जगरूपमलजी हुए। इनमें ईसरदासजी के नाम पर जगरूपमलजी के छोटे पुत्र मगनमलजी दत्तक आये। मगनमलजी के पुत्र सरदारमलजी भानपुरा (इन्दौर-स्टेट) में रहते थे। तथा भानपुरा आदि की सायरों के इजारे का काम करते थे। तथा मालदार साहूकार थे। इनके पुत्र सिरेमलजी भी भानपुरा में एक प्रतिष्ठित पुरुष हो गये हैं। यहाँ की जनता आपका सम्मान करती थी। आप आजन्म कस्टम इन्सपेक्टर रहे। वर्तमान में आपके पुत्र शिवरामलजी इन्दौर स्टेट के गरोठ परगने में सब इक्साइज इन्सपेक्टर हैं। आप बड़े मिलनसार तथा समझदार युवक हैं।

हरखावत सगतसिंहजी का परिवार, अजमेर

शाह सगतसिंहजी के पश्चात् क्रमश शिवदासजी, निहालचन्दजी, बरदीचंदजी तथा प्रभूदानजी हुए। संवत् १९११ में शाह प्रभूदानजी जोधपुर दरबार की ओर से अजमेर दरबार में वकील थे। संवत् १९१४ के गदर में आप रावजी राजमलजी लोढ़ा के साथ फौज लेकर आउवा तथा आसोप बागी फौजों को दबाने के लिये गये थे। जब राजमलजी वहाँ काम आगये तब आप फौज को वापस ले जोधपुर आये। तथा वहीं आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पूनमलजी सवत् १९२७ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र शाह हमीरमलजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आपने ३० साल अजमेर रेल्वे के ऑडिट ऑफिस में सर्विस की। सन् १९१६ में आप रिटायर्ड हुए। आपके पुत्र धनरूपमलजी का जन्म १९४२ में हुआ। आपने सवत् १९६१ में कपड़े तथा गोटे का व्यापार किया तथा इस समय जवाहरात का व्यापार करते हैं। आप अजमेर के प्रतिष्ठित जौहरी माने जाते हैं। आपके पास क्यूरियो तथा जवाहरातका अच्छा सग्रह है।

सेठ मनीरामजी देवीचन्दजी हरखावत, सीतामऊ

करीब १२५ वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ कपूरचन्दजी रतलाम से सीतामऊ आये। यहाँ आकर आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके मनीरामजी नामक एक पुत्र।

...के पुत्र देवचन्दजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हुए। यहा की जनता मे आपका बहुत सम्मान ... आपने जनता पर लगाये गये इनकमटेक्स को सरकार से माफ करवाया था। राज्य दरबार ... अच्छा सम्मान था। आपने यहा मन्दिर में एक रिषभदेव स्वामी की छत्री बनवाई। आपके ... नामक पुत्र हुए। इनके नाम पर सेठ जवाहरलालजी दत्तक आये। वर्तमान में आप ही इस ... व्यवसाय के सचालक है। आप सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके नानालालजी भगवती... और मनोहरलालजी नामक तीन पुत्र है। यह परिवार सीतामऊ मे बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

पावेचा

वडनगर का चौधरी परिवार

इस परिवार वालों का गौत्र पावेचा है। आप लोगों का मूल निवास स्थान सोजत का है। ... वर्षों से इस परिवार के लोग इधर मालवा प्रात में आकर वस रहे हैं। कहा जाता है कि जब ... राठौड़ लोग इधर मालवे में आये तब उनके साथ आपके पूर्वज भी थे। रतलाम, झाबुआ, बदनावर ... पर जब कि राठौड़ों का अधिकार होगया तब इस परिवार वाले झाबुआ में रहे। वहाँ से फिर कुछ ... चले गये और कुछ बदनावर चले आये। उपरोक्त परिवार बदनावर वालों का है। रूनिजा ... खानदान के लोग कामदार वगैरह ऊँची २ जगहों पर रहे। बदनावर में भी आप लोगों ... सम्मान रहा। किसी कारणवश इस परिवार के लोग फिर बदनावर को छोड़कर नौलाई— ... समय बदनगर कहलाता है—नामक स्थान पर आये। इसके पूर्व जब कि आप बदनावर में थे ... वहाँ गल्ले का बहुत बडा व्यापार होता था। अतएव यहा आपकी अनाज की बहुत सी खत्तियां ... थीं। इस समय नौलाई के स्वतन्त्र राजा थे। इसी समय यहा बडा भारी दुष्काल पड़ा। ... के समय में सेठ साहब ने मुफ्त में धान वितरण कर जनता की सहायता की। इससे प्रसन्न होकर ... नौलाई—नरेश ने आपको 'चौधरी' का पद प्रदान किया। तब से आजकल आप के वशज ... चले आ रहे हैं और चौधरायत कर रहे हैं।

आगे चल कर इस परिवार में सेठ माणकचन्दजी हुए। माणकचन्दजी के भैरोंदानजी और ...जी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। यहा की जनता ... बहुत बड़ा सम्मान था। सारी जनता एक स्वर में आपकी आज्ञा मानने को हमेशा तैय्यार ... दरबार में भी आपको बहुत सम्मान प्राप्त था। आप लोगों को कई प्रकार के टैक्स माफ ... के कारण इस शहर की बसावट में वृद्धि हुई तथा कई ओसवाल परिवार यहा आये। ... स्वर्गवास होगया। सेठ भैरोंदानजी के धीचन्दजी और सेठ लखमीचदजी के दुलिचन्दजी ... नामक पुत्र हुए। सेठ दुलिचन्दजी के पौत्र ठाकचन्दजी के पुत्र गेंदालालजी इस समय ... सेठ उदयचन्दजी के कोई सतान नहीं हुई। आप यहा के नामाकित व्यक्ति थे। ... चन्दजी के चार पुत्र हुए। जिनके नाम फतेचन्दजी, बापूलालजी, कस्तूरचन्दजी और

हजारीमलजी था। फतेचन्दजी का कम वय में ही स्वर्गवास होगया। शेष तीनों भाइयों के हाथों से इस फ की अच्छी तरक्की हुई। मगर संवत् १९४२ के बाद ही आप लोग अलग २ होगये और स्वतन्त्र से अपना २ व्यापार करने लगे।

सेठ बापूलालजी बडी सरल प्रकृति के पुरुष थे। यहा की जनता में आपका अच्छा सम्मान था। आप का स्वर्गवास सवत् १९८४ मे होगया। आपके छगनलालजी, सौभागमलजी, कनकमल चादमलजी और लालचंदजी नामक पांच पुत्र है। इनमें से सेठ कनकमलजी अपने चाचा सेठ हजारी जी के यहा दत्तक गये है। शेष चारों भाई शामलात में श्रीचन्द बापूलाल के नाम से व्यापार करते आप लोग मिलनसार सज्जन हैं। आज भी गाव की चौधरायत आप ही के पास है।

सेठ कस्तूरचन्दजी भी योग्य सज्जन थे। आप आजीवन व्याज का काम करते रहे। कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर सूरजमलजी दत्तक लिये गये है। वर्त्तमान में आप श्रीचंद कस्तूर नाम से व्यापार करते हैं। आपके इन्दौरीलालजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ हजारीमलजी ने अपने भाइयों से अलग होकर व्यापार में बहुत तरक्की की। आप व्यापारी थे। आपने अफीम के वायदे के व्यवसाय में लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित की। आप स्वभाव बड़ा आनन्दमय और मिलनसार था। आपके यहां सेठ कनकमलजी दत्तक आये। वर्तमान आप श्रीचंद हजारीमलजी के नाम से ब्याज का काम करते है। आप परोपकारी, शिक्षित और व्यक्ति हैं। आपने हजारों लाखों रुपया सार्वजनिक कार्य्यों में खर्च किया है। आपकी ओर से कन्या पाठशाला, प्रसूतिगृह, पब्लिक लायब्रेरी इत्यादि संस्थाएँ चल रही है। इन सबका खर्च हो उठाते हैं। इसके अतिरिक्त आपने लोगों की सुविधा के लिये स्थानीय स्मशानघाट को पक्का दिया है। मन्दिर में आपने ७०००) की एक चादी की वेदी भेंट की है। आपके पिताजी के नाम आपने नगर चौरासी की उसमें डेढ़ लाख रुपया खर्च किया। इसी प्रकार आपके पुत्र जन्म पर ५० रुपया खर्च हुआ। लिखने का मतलब यह है कि आपने अपने हाथों से लाखों रुपया खर्च किया। इस समय अभयकुमारजी नामक एक पुत्र है। बड़नगर में यह परिवार बहुत प्रति माना जाता है।

सेठ उँकारजी लालचन्दजी नांदेचा (खेत पालिया), मुल्थान (मालवा)

इस परिवार वालों का वास्तविक गौत्र नांदेचा है, मगर बहुत वर्ष पूर्व इस खानदान के खेताजी पर एक बार क्षेत्रपालजी बहुत प्रसन्न हुए थे अतएव तब ही से ये लोग खेतपालिया लगे। इसके बाद करीब २५० वर्ष पूर्व इस परिवार के लोग मालवा प्रात में आकर बसे। सेठ गुमा के पिताजी ने मुलथान में अफीम का व्यापार करना प्रारम्भ किया। इसमें उन्हे अच्छी सफलता आपके बाद सेठ गुमानजी ने फर्म का संचालन किया। आप दबंग व्यक्ति थे। आपका मोधिये लोगों से होता था, अतएव यह परिवार मोधिया वाले के नाम से प्रसिद्ध है। आपके ओ नामक एक पुत्र हुए।

खींवसरा सरदारचंदजी उम्मेदचंदजी का खानदान, जोधपूर

इस परिवार के पूर्वज खींवसरा राणाजी संवत् १६६० में जोधपुर आये तथा यहा अपना [illegible] बनाया। इनकी छठी पीढ़ी में खींवसरा भींवराजजी हुए। आपने जोधपुर स्टेट में कई काम [illegible]। आपके पुत्र दौलतरामजी तथा पौत्र मुकुन्दचन्दजी हुए। खींवसरा मुकुन्दचन्दजी स्टेट सर्विस [illegible] बोहरगत का व्यापार भी करते थे। आपकी आर्थिक स्थिति बडी उन्नति पर थी। कागे में [illegible] श्री मुकुन्द बिहारीजी का मन्दिर बनवाया। इनको स्टेट से कैफियत और मुहर प्राप्त थी। संवत् [illegible] में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र खींवसरा सरदारचंदजी तथा उम्मेदचदजी नामांकित [illegible] हुए।

खींवसरा सरदारचन्दजी जेतारण आदि के हाकिम थे। सवत् १९६९ में आपका स्वर्गवास [illegible]। आपके छोटे भ्राता उम्मेदचंदजी जोधपुर स्टेट की जाच पड़ताल कमेटी के मेम्बर थे। संवत् [illegible] में आपका स्वर्गवास हुआ। आप दोनों बधु सरकारी नौकरी के अलावा अपने बोहरगत के [illegible] चलाते रहे। सरदारचन्दजी के पुत्र सज्जनचन्दजी एवम् वल्लभचन्दजी तथा उम्मेदचन्दजी के [illegible] किशनचन्दजी तथा बलवन्तचन्दजी हैं। इनके किशनचन्दजी का स्वर्गवास होगया है। इनके पुत्र [illegible] हैं। इन बधुओं में इस समय बलवन्तचन्दजी तथा मेघचन्दजी महकमा खास जोधपुर में [illegible] हैं। तथा सज्जनचन्दजी वोहरगत का व्यापार करते है। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आप [illegible] मुहर छाप प्राप्त है। आप लोग जोधपुर के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माने जाते हैं।

सेठ दोंड़ीराम दलीचन्द खींवसरा, पूना

इस परिवार का मूल निवास नाटसर (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ से सेठ जोधराजजी [illegible] पुत्र मूलचन्दजी मूथा लगभग ८० साल पूर्व पूना जिला के मुखई नामक गाव में आये। आप [illegible] के लगभग स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र गुलाबचन्दजी का संवत् १९६१ में तथा शिवराजजी [illegible] १९५९ में स्वर्गवास हुआ। सेठ गुलाबचन्दजी परिंचे (पूना) में व्यापार करते थे। आपके [illegible], हीराचन्दजी, दलीचन्दजी तथा शिवराजजी के शंकरलालजी नामक पुत्र हुए।

[illegible] रामजी खींवसरा—आपका जन्म शके १८११ में हुआ। आपके हाथों से व्यापार की [illegible] हुई। आरम्भ से ही समाज सुधार की भावनाएं आपके मन में बलवती थीं। आपने सन् [illegible] नामक पत्र निकला। सन् १९११ में पूना में एक जैन बोर्डिंग स्थापित करवाया। [illegible] इस समय स्था० जैन बोर्डिंग है। ज्ञान मण्डल स्थापित कर छात्रों को स्कालरशिप दिल[illegible]। औसर मौसर आदि के विरुद्ध आवाज उठाई। संवत् १९७४ में परिंचें नामक [illegible] अपने बन्धुओं के साथ पूना चले आये। तथा यहाँ जरी [illegible] का व्यापार स्थापित कर अपने दोनों छोटे बन्धुओं के सहयोग से इसमें बहुत सफलता [illegible] ओसवाल का विवाह, आपने समाज की कुछ भी परवाह न कर बहुत [illegible] आचरणों का अनुकरण पूना के जैन युवकों में नवजीवन का सचार करता है।

"महाराणा श्री राजसिंह मेवाड़ के दस हजार गाँवों के सरदार, मन्त्री और पटेलों को आज्ञा ा है, सब अपने २ पद के अनुसार पढ़े ।

१—प्राचीन काल से जैनियों के मन्दिरों और स्थानों को अधिकार मिला हुआ है, इस कारण ई मनुष्य उनकी सीमा मे जीव-वध न करे । यह उनका पुराना हक है ।

२—जो जीव नर हो या मादा, वध होने के अभिप्राय से इनके स्थान से गुजरता है वह अमर हो ाता है ।

३—राजद्रोही, लुटेरे और कारागृह से भागे हुए महा अपराधी को भी जो जैनियो के उपासरे शरण ग्रहण कर लेगा, उसको राज कर्मचारी नहीं पकडेगे ।

४—फसल मे कूची (मुट्टी), कराना की मुट्टी, दान की हुई भूमि, धरती और अनेक नगरों उनके बनाए हुए उपासरे कायम रहेंगे ।

५—यह फरमान यति मान की प्रार्थना पर जारी किया गया है, जिसको १५ बीघे धान की ्मि के और २५ बीघे मालेटी के दान किये गये है। नीमच और निम्बाहेड़ा के प्रत्येक परगने मे भी हरएक ती को इतनी ही पृथ्वी दी गई है। अर्थात् तीनों परगनों मे धान के कुल ४५ बीघे और मालेटी के ५ बीघे ।

इस फरमान को देखते ही पृथ्वी नाप दी जाय और दे दी जाय और कोई मनुष्य जतियो ो दुःख नहीं दे, बल्कि उनके हकों की रक्षा करे । उस मनुष्य को धिक्कार है जो उनके हकों का उल्लंघन रता है । हिन्दू को गौ और मुसलमान को सुवर और मुदार्रा कसम है । संवत् १७४९ महा सुदी ५ ० स० १६९३ । शाह दयाल मन्त्री ।

इन्हीं दयालशाहजी ने राजसमंद के पास वाली पहाड़ी पर एक किलेनुमा श्रीआदिनाथजी का ्य मन्दिर बनवाया जिसका विवरण धार्मिक अध्याय मे दिया जायगा ।

मेहता अगरचन्दजी

जिस समय महाराणा अरिसिंहजी और महाराणा हमीरसिंहजी मेवाड के राजनैतिक गगन मे वतीर्ण हुए थे, उस समय भारतवर्ष का राजनैतिक वातावरण धुआंधार हो रहा था । सारे देश के अन्त- र जिसकी लाठी उसकी भैंस (Might is right) वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी। समस्त भारत ा राष्ट्रीयता धूलधानी हो रही थी, सब से बड़े अफ़सोस की बात यह थी कि उस सारे उपद्रव मय वायु- ण्डल के अन्दर उस नैतिकता का एक जर्रा भी बाकी न रहा था। जातियो सब कुछ खो देती है, उनकी

स्वतन्त्रता नष्ट हो जाती है, उनकी राष्ट्रीयता भंग हो सकती है, उनका आत्मसम्मान भी चला जाता है मगर यदि उनके अन्दर नैतिकता का कोई अंश शेष रह जाता है तो वह उस नैतिकता के बल से अपनी खोई हुई चीजों को एक जोरदार धक्के के साथ पुनः प्राप्त कर लेती हैं। मगर जो जाति अपनी नैतिकता को खो चुकती है उसके भविष्य के अन्दर प्रकाश की एक रेखा भी बाकी नहीं रह जाती; उसका सर्वस्व नष्ट हो जाता है। भारतीय जातियों का भी ठीक यही हाल था। वे अपनी नैतिकता को खो बैठी थीं। देश में कोई भी ऐसी बलवान शक्ति का अस्तित्व शेष न था, जो देश के वातावरण को एकाधिपत्य में रख सके। देश की शान्ति स्वप्नवत हो गई थी, राजा लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे औरंगजेब के मरते ही मुगल साम्राज्य के तख्त के पाये जीर्ण हो गये, जिसका लाभ उठा कर दक्षिण में मरहठा लोग शिवाजी के महान् आदर्श को भूल कर अपनी २ स्वार्थ लिप्सा को चरितार्थ करने के लिये लूटमार मचा रहे थे, दूसरी ओर होलकर और सिंधिया अपने २ राज्य विस्तार की चिन्ता में यत्र-तत्र आक्रमण कर रहे थे, तीसरी ओर राजपूताने के राजा अपनी सारी संगठन शक्ति को खोकर प्रतिहिंसा की आग में बावले हो रहे थे; चौथी ओर पिण्डारी दल अपनी भयंकर लूटमार से जनता के अमन आमान को खतरे में डाले हुए था और इन सब से ऊपर इन सब लोगों की कमजोरी और पारस्परिक फूट व वैमनस्यता का फ़ायदा उठा कर बुद्धिमान अंग्रेज अपनी राज्य-सत्ता का विस्तार करने में लगे हुए थे।

ऐसी भीषण परिस्थिति के अन्तर्गत ई० सन् १७६२ में महाराणा अरिसिंहजी सिंहासनारूढ़ हुए। आपका मिजाज बहुत तेज होने के की वजह से आपके विरोधियों की संख्या शीघ्र बढ़ गई। सलूम्बर, बीजौलिया, आमेर तथा बदनोर को छोड़ कर प्रायः मेवाड़ के सारे सरदार इनके खिलाफ हो गये और इन सरदारों ने महाराणा के खिलाफ सिंधिया को निमन्त्रित किया। एक बार तो अरिसिंहजी की सेना ने सिंधिया की सेना को परास्त कर दिया मगर दूसरी बार फिर सिंधिया ने आक्रमण किया और इस बार मेवाड़ की सेना पराजित हुई। अरिसिंहजी ने ६४ लाख रुपया सिंधिया को देने का इकरार करके अपना पिंड छुड़ाया। इस रकम में से ३३ लाख रुपया तो किसी प्रकार महाराणा ने नकद दिया और शेष के लिये जावद, जीरण, नीमच आदि परगने सिंधिया के यहाँ पर गिरवे रख दिये। इसी समय होलकर ने भी निम्बाहेडे का परगना ले लिया। इस प्रकार मेवाड़ का बहुत उपजाऊ और कीमती हिस्सा मेवाड़ से निकल गया। ऐसे विकट समय में मेहता अगरचन्दजी को महाराणा अरिसिंहजी ने अपना दीवान बनाया और एक बहुत बड़ी जागीर के द्वारा उनका सम्मान किया। मेहता अगरचन्दजी बड़े स्वामिभक्त और कर्त्तव्य परायण व्यक्ति थे। जिस प्रकार मिलिटरी लाइन में वे अपनी बहादुरी व सैनिक शक्ति की वजह से प्रसिद्ध हुए उसी प्रकार राजनीति और शासन कुशलता के अन्दर उन्होंने अपने गम्भीर व्यक्तित्व

सेठ सरूपचंदजी नादेचा, खाचरोद.

सेठ प्रतापचन्दजी नादेचा, खाचरोद

सेठ हीरालालजी नादेचा, खाचरोद.

संवत् १९४२।४३ में शरीरान्त हुआ, आपके नाम पर आपके चचेरे भ्राता हमीरमलजी के पुत्र गंभीरमलजी दत्तक आये। डागा गंभीरमलजी धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे संवत् १९५८ की कुँवार सुदी ४ को आपका शरीरान्त हुआ।

डागा गभीरमलजी के यहाँ सरदार शहर से संवत् १९६२ की वैशाख सुदी २ को डागा जसकरण जी दत्तक लाये गये। डागा जसकरणजी का जन्म संवत् १९५५ की मगसर सुदी ५ को हुआ। डागा जसकरणजी के ख्यालीरामजी, छगनमलजी व कुशलचन्दजी नामक ३ भ्राता विद्यमान हैं जो कलकत्ते में ख्यालीराम डागा व कुशलचन्द माणिकचन्द के नाम से अपना स्वतत्र कारबार करते हैं।

डागा जसकरणजी ने एफ० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। सामाजिक तथा देश सेवा के कार्यों की ओर आपकी खास रुचि है स्थानीय दादावाडी को नवीन बनाने में व उसकी प्रतिष्ठा में आपने बहुत परिश्रम उठाया इसके उपलक्ष में यहाँ के ओसवाल समाज ने अभिनदन पत्र देकर आपका स्वागत किया। आपने मारवाड़ी छात्र सहायक समिति नामक सस्था को १ हजार रुपयों की सहायता दी है तथा इस समय आप उसके मंत्री हैं, इसी तरह और भी सामाजिक और सार्वजनिक कामों में आप दिलचस्पी लेते रहते हे। आपके पुत्र सम्पतलालजी पढ़ते हैं। आपके यहाँ भवानीदास अर्जुनदास के नाम से रायपुर में बैङ्किग तथा बर्तनों का थोक व्यापार और अर्जुनदास गभीरमल के नाम से राजिम मे बर्तन तयार कराने का काम होता है। रायपुर की प्रतिष्ठित फर्मों में आपकी दुकान मानी जाती है।

सेठ भीकमचन्द डागा, अमरावती

इस परिवार का मूल निवास स्थान बीकानेर हैं। वहाँ से लगभग १२५ साल पूर्व सेठ हमीरमल जी डागा अमरावती आये तथा यहाँ नौकरी की। इसके बाद आपने किराने का व्यापार किया। आपके पुत्र लखमीचन्दजी, हैदराबाद वाले सेठ पूरनमल प्रेमसुखदास गनेड़ीवाला के यहाँ मुनीम रहे। सवत् १९२८ में आपका स्वर्गवास हुआ। उस समय आपके पुत्र भीकमचन्दजी चार वर्ष के थे आपने होशियार होकर जवाहरात का व्यापार आरम्भ किया तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। आप अमरावती के ओसवाल समाज में समझदार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हे तथा यहाँ की पचपंचायती व धार्मिक कामों में प्रधान भाग लेते है। आपके पुत्र रतनचन्दजी की वय १९ साल की है। इस समय आपके यहाँ जवाहरात, कृषि तथा सराफी का व्यापार होता है।

सेठ तेजमल टकिमचन्द डागा, रायपुर

इस परिवार के पूर्वज डागा तखतमलजी अपने मूल निवास बीकानेर से लगभग ८० साल पहिले रायपुर आये और कपड़े का व्यवसाय शुरू किया, आपके पुत्र चन्दनमलजी ने व्यवसाय को उन्नति दी। सेठ चन्दनमलजी के पुत्र तेजमलजी सवत् १९६२ की कातिक वदी ११ को ३९ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ तेजमलजी डागा के पुत्र टीकमचन्दजी डागा है। आपका जन्म संवत् १९५४ में हुआ है। आप रायपुर के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते है, तथा चादी सोना और सराफी का व्यापार करते है।

सेठ ओंकारजी ने इस फर्म के व्यवसाय में बहुत उन्नति की। आपके पुत्र लालचन्दजी भी ... पुरुष थे। आपने भी काफी उन्नति कर फर्म की वृद्धि की। आप दोनों का स्वर्गवास होगया। ... सेठ लालचन्दजी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र स्वरूपचन्दजी नाबालिग थे। अत- ... का संचालन रामाजी बोरा नामक एक व्यक्ति ने किया। आप भी आपके एक रिश्तेदार थे।

सेठ स्वरूपचन्दजी इस परिवार में खास व्यक्ति हुए। आपने मुल्थान स्टेट के खजांची का ... । आपके समय में ही इस फर्म पर काछी बड़ौदा, रुनिजा, पचलाना, बावनगढ़, दौतरिया ..., ...दिया इत्यादि ठिकानों का काम शुरू हुआ। प्रायः इन सभी ठिकानों में आपका सम्मान था। इनके द्वारा आपको समय २ पर कई प्रशंसा सूचक रुक्के भी प्राप्त हुए थे। धार ... आपको 'सेठ' की पदवी मिलीथी। मुल्थान ठिकाने से आपको जागीर और बैठक का ... मिला हुआ था। जो इस समय भी इस परिवार वालों के पास है। मुल्थान के अलावा ...बाद में भी अपनी एक फर्म स्थापित की, जो इस समय सुचारु रूप से चल रही है। लिखने ... यह है कि आप इस खानदान में बडे प्रभाविक और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपका स्वर्गवास हो ... आपके चार पुत्र हुए, जिनके नाम पन्नालालजी, प्रतापमलजी, गेंदालालजी और कन्हैयालालजी ... इनमें से अंतिम तीनों का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में होगया था। आपके स्वर्गवास होने ... बाद ही आपके चौथे पुत्र का भी स्वर्गवास होगया। इनमें से केवल सेठ प्रतापमलजी के हीरालालजी ... एक पुत्र हुए। जिस समय आप लोगों का स्वर्गवास हुआ उस समय हीरालालजी नाबालिग थे। ... फर्म का संचालन स्वरूपचन्दजी के भानजे सेठ इन्द्रमलजी ने देखा। जो इस समय भी बराबर ... रहे हैं। आप भी बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके द्वारा इस फर्म की बहुत ... हुई है।

सेठ हीरालालजी संवत् १९७८ से व्यापार में लगे। आपके सामाजिक विचार बडे ऊँचे हैं। ... सार्वजनिक कार्यों की ओर भी आपका बहुत ध्यान है। आपने अपने दादाजी के स्मारक ... निकाले हुए दान से एक जैन स्वरूप पाठशाला स्थापित कर रखी है। जिसमें इस समय ... विद्याध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहां एक प्राइवेट लायब्रेरी भी स्थापित ... जिससे यहां की जनता लाभ उठा सकती है। स्थानीय श्री० श्वेताम्बर साधुमार्गीय जैन ... की ओर से यहाँ एक विद्यालय स्थापित है उसमें भी आप २००) माहवार खर्च के लिये प्रदान ... इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्यों में आपकी ओर से सहायता प्रदान की ... मिलनसार, सज्जन और उत्साही व्यक्ति हैं। आपको साहुकारों की दरबारी ... मिला हुआ है आप परगना बोर्ड के भी मेम्बर हैं। आपका व्यापार इस समय ... बड़नगर में बैंकिंग और आसामी लेन देन का हो रहा है।

पारख

पारख गौत्र की उत्पत्ति—बारहवीं शताब्दी के अंतिम समय मे चंदेरी नगरी मे राठौर खरहत्थ-
[illegible] राज्य करते थे। इनके चार पुत्र अम्बदेव, निम्बदेव, भैसासाह और आसपाल हुए। इन चारों पुत्रों के
[illegible] से बहुत से गौत्रों की स्थापना हुई, जिसका अलग २ परिचय स्थान २ पर दिया गया है।
[illegible] आहडनगर में एक प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। इन्होंने शत्रुंजय का एक बहुत बडा संघ निकाला था,
[illegible] वहाँ का जीर्णोद्वार करवाया था। इनके चौथे पुत्र पासूजी को आहडनगर के राजा चन्द्रसेन ने अपना
[illegible] नियुक्त किया था। वहाँ एक बार हीरे की सच्ची परीक्षा करने के कारण राजा द्वारा पारखी की पदवी
[illegible]। आगे चलकर यही पदवी पारख गौत्र के रूप में परिणत हो गई।

लाला दिलेरामजी जौहरी (लाहौरी) का खानदान, देहली

इस खानदान के मूल पुरुष लाला दिलेरामजी हैं। आप देहली के ही निवासी है। आपका
[illegible] यहाँ लाहौरी के नाम से मशहूर हैं। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले है।

लाला दिलेरामजी—आप पंजाब के सुप्रसिद्ध महाराजा रणजीतसिंहजी के खास जौहरी थे।
[illegible] में आप बड़े नामांकित पुरुष हो गये हैं। आपके पुत्र लाला दुलीचन्दजी तथा लाला सरूपचन्दजी
[illegible]। लाला दुलीचन्दजी बादशाह अकबर (द्वितीय) के खास जौहरी थे। आपके हुलासरायजी, गुलाब
[illegible], मानसिंहजी तथा थानसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला हुलासरायजी जौहरी का परिवार—आपके लाला ईसरचंदजी नामक पुत्र हुए। ईसरचंदजी
[illegible] जगन्नाथजी, लाला प्यारेलालजी तथा लाला रोशनलालजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला जगन्नाथजी
[illegible] व्यक्ति हुए। आप राय बद्रीदासजी जौहरी के शागिर्द थे। आपने कलकत्ते में भी अपनी एक
[illegible] थी। आपका स्वर्गवास ५० सालकी आयु में संवत् १९५१ में हुआ। आपके पुत्र लाला
[illegible] का जन्म संवत १९२७ में हुआ। आपने उस समय बी० ए० परीक्षा पास की थी, जिस समय
[illegible] ओसवाल समाज में एक दो ही ग्रेजुएट होंगे। आप भी जवाहरात का व्यापार करते रहे। आपका स्वर्ग
[illegible] संवत् १९५२ में हुआ। आपके नाम पर लाला रतनलालजी जोधपुर से संवत् १९५६ में दत्तक लाये
[illegible]। आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आपकी नाबालगी में आपकी दादीजी तथा लाला प्यारेलालजी
[illegible] काम देखते रहे। इन दोनों सज्जनों का स्वर्गवास क्रमश: १९५६ तथा संवत् १९६४ में
[illegible] है। अब इनकी कोई संतान विद्यमान नहीं है।

लाला रतनलालजी बड़े योग्य तथा मिलनसार व्यक्ति है। आपके इस समय इन्द्रचन्द्रजी,
[illegible], ताराचन्दजी तथा कुशलचंदजी नामक ४ पुत्र हैं। आपका परिवार देहली के ओसवाल समाज
[illegible] प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके यहाँ "लाला पूरनचन्द रतनलाल" के नाम से गली हीरानंद
[illegible] जवाहरात का व्यापार होता है।

लाला मानसिंहजी मोतीलालजी जौहरी का परिवार—लाला मानसिंहजी के पुत्र लाला मोतीरामजी
[illegible]। आपका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में संवत् १९६० में हुआ। आप भी देहली के अच्छे जौहरी थे।

छाजेड़

छाजेड गौत्र की उत्पत्ति—ऐसी किम्बदन्ति है कि सवीयाणगढ़ नामक स्थान में राठोड राजपू धांधल रामदेव के पुत्र काजल निवास करते थे। इन्हे चमत्कारों पर विश्वास नहीं था। अतएव हमेशा इसी खोज में रहते थे एक बार उन्हे श्री जिनचन्द्रसूरि ने इन्हे चमत्कार बतलाया क जाता है कि उन्होंने इन्हें ऐसा वासक्षेप चूर्ण दिया कि जो दीपमालिका की रात्रि में जहाँ डाला जाय व स्थान सोने का होजाय। इन्होंने चूर्ण प्राप्त कर मन्दिर उपाश्रय और अपने घर के छज्जों डाल कर सूरिजी की परीक्षा करनी चाही। कहना न होगा कि सुबह सब छज्जे सोने के हो गये यह चमत्कार देखकर काजल ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। तब ही से इनके वशज छज्जे छजेहड कहलाये। आगे चल कर यही नाम छाजेड रूप मे बदल गया।

रायबहादुर सेठ लखमीचन्दजी छाजेड़ का खानदान, किशनगढ़

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ कल्याणमलजी छाजेड सन् १८४८ में व्यापार के लिए अ निवासस्थान किशनगढ़ से झासी गये और जाकर दमोह तहसील के खजाची हुए। वहाँ के क डी० रास आपको अपने साथ पंजाब ले गये तथा सन् १८४९ में लय्या कमिश्नरी का खजाची बनाय आप वहाँ के दरबारी तथा म्यु० मेम्बर थे। लय्या कमिश्नरी के टूट जाने पर आप सन् १८६० में दे इस्माइलखाँ के खजाची हुए। सन् १८७७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लखमीचन्दजी त रामचन्दजी हुए।

रा० ब० सेठ लखमीचन्दजी छाजेड—अप देहरागाजीखाँ के म्यु० मेम्बर थे। पिताजी के गुज़ पर आप देहराइस्माईलखाँ कमिश्नरी के खजाची बनाये गये साथ ही सब जिलों के म्युनिसिपल ट्रेझरर आप निर्वाचित हुए। आप इक्कीस सालों तक वहाँ ऑनरेरो मजिस्ट्रेट रहे। किशनगढ़ स्टेट ने आपको बारी बैठक और "शाह" की पदवी दी। किशनगढ़ स्टेट ने आपको सन् १९०२ मे देहलीदरबार में भेज १९०१ में फ्राटियर में मासूद ब्लाकेट शुरू हुई, उसमें आपने बहुत इमदाद दी। १९०६ में आपको "र साहिब' का खिताब मिला तथा सन १९११ में देहलीदरबार के समय आप "रायबहादुर" के सम्मान विभूषित किये गये। सन १९१२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके छोटे भ्राता रामचन्द्रजी गा। गाजीखाँ के ट्रेझरर रहे। अभी उनके पुत्र हीराचन्दजी इस खजाने का काम देखते है। सेठ लखमीचन्द किशनगढ़ स्टेशन पर एक धर्मशाला बनवाई। आपके गोपीचन्दजी तथा अमरचन्दजी नामक दो पुत्र हैं

रायसाहब गोपीचन्दजी—आपका जन्म सवत् १९४७ में हुआ। आप अपने पिताजी के स्थ पर देराइस्माईलखाँ, गाजीखाँ, बन्नू और मियावाली के खजाची हुए। वहाँ के आप दरबारी, १५ सालों तक देहरा इस्माईलखाँ में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। वायसराय ने आपको सन् १९१ सेंट जॉनएम्बुलेंस का ऑनरेरी कौंसिलर बनाया। सन् १९२१ में आप शाही दरबारी बनाये गये। इसके २ साल बाद आपको रायसाहिब का खिताब इनायत हुआ। इसी तरह आप वहाँ की कई सरा

आपके लाला शादीरामजी, मुन्नालालजी तथा उमरावसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला शादीरामजी ब योग्य तथा समझदार पुरुष थे। जाति बिरादरी मे आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास ४२ सा की आयु में संवत् १९६४ मे हुआ। आपके पुत्र लाला पन्नालाल जी का जन्म १९४७ में कुन्दनमलजी १९५१ में तथा कुज्जूमलजी का १९५७ में हुआ तीनों भ्राता जवाहरात का व्यापार करते हैं। ला मोतीरामजी के द्वतीय पुत्र मुन्नालालजी छोटी वय में स्वर्गवासी हुए तथा इनके छोटे भाई लाला उमरावसिं जी संवत् १०८४ में स्वर्गवासी हुए। इनके जंगलीमलजी का जन्म संवत् १९२९ का है। आपके ए फतेसिंहजी तथा कुन्दनमलजी के पुत्र कातिकुमारजी हैं। देहली के ओसवाल समाज मे यह खानदान पुरा तथा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ फौजमल आनन्दराम पारख, त्रिचनापल्ली

इस परिवार का मूल निवास पाचला (तींवरी के पास) मारवाड है। इस परिवार के पू सेठ भेरूदानजी पारख के फौजमलजी तथा जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ फौजमलजी के आन रामजी और मगनीरामजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ आनन्दरामजी पारख का जन्म संवत् १९२५ में हुआ। सत्रह वर्ष की आयु में आप पल्टन साथ रेजिमेंटल बैंकिंग का व्यापार करते हुए त्रिचनापल्ली आये। यहाँ आकर आपने थोड़े समय तक सेठ रा मलजी पारख के यहाँ सर्विस की। पश्चात् आपने सुजानमल कोचर की भागीदारी में "आनन्दमल सुजानम के नाम से बैंकिंग व्यापार चालू किया। एक साल बाद इस फर्म में अखेचन्दजी पारख भी सम्मिलित हुए, ए इन तीनों सज्जनों ने अंग्रेजी फौजों के साथ जोरों से ५ दुकानों पर मर्न लेडिंग बिजिनेस चालू किया। अ पल्टन के खजाने के बेंकिंग बिजिनेस को सम्हालते थे। इसलिए रेजिमेंटल बैंकर्स के नाम से बोले जाते हैं इन सज्जनों ने अच्छी सम्पत्ति कमाई और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई। संवत् १९८० मे सुजानमलजी के पु मे तथा १९८५ में अखेचन्दजी के पुत्रों ने अपना भाग अलग कर लिया। सन् १९२३ में सेठ आनन्दराम पारख स्वर्गवासी हुए। आपने त्रिचनापल्ली पांजरापोल को ५०००) की सहायता दी है। इस स आपके पुत्र मूलचन्दजी ११ साल के तथा खेतमलजी ९ साल के हैं। इनकी नाबालगी में फर्म का प्रब ५ मेम्बरों की कमेटी के जिम्मे है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय मानता है तथा लगभग २० सा से फलोदी मे निवास करता है। वहाँ भी फौजमल आनन्दराम के नाम से आपके यहाँ बेंकिंग व्या होता है। यह फर्म त्रिचनापल्ली के मारवाड़ी समाज में सबसे ज्यादा धनिक फर्म है।

सेठ जेठमल अखेचंद पारख, त्रिचनापल्ली

ऊपर सेठ आनन्दरामजी के परिचय में लिखा जा चुका है कि पाचला (मारवाड) निवा सेठ भेरुदानजी के फोजमलजी तथा जेठमलजी नामक २ पुत्र थे। इनमें सेठ जेठमलजी के अखेचन्द धूलमलजी, अचलदासजी तथा रावतमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ धूलचन्दजी तथा अचलदास विद्यमान हैं। सेठ अखेचन्दजी सेठ आनन्दरामजी के साथ व्यापार करते रहे। संवत् १९७४ म अ स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र फूलचन्दजी ने संवत् १९८५ में सेठ आनन्दरामजी पारख से अपना भा

...ादुर स्व॰ लक्ष्मीचन्दजी छाजेड़, किशनगढ़

सेठ कस्तूरचन्दजी छाजेड़, मद्रास

...चन्दजी छाजेड़, किशनगढ़.

बा॰ उत्तमचन्दजी छाजेड़, मद्रास.

किया। आपका जन्म संवत् १९७२ में हुआ। इस समय आप अपने काका अचलदास पचन्दजी उदयराजजी तथा जुगराजजी, के साथ त्रिचनापल्ली में "अचलदास फूलचन्द" के नाम ाते हैं। सेठ अचलदासजी का वय ४५ साल की है।

सेठ धूलमलजी का जन्म १९४२ में हुआ। आपके लालचन्दजी, मोतीलालजी, कंवरीलालजी, , राजमल, मोहनलाल आदि ८ पुत्र हैं। आप के यहां जेठ "धूलचन्द लालचन्द" के नाम से ार होता है। सेठ रावतमलजी का स्वर्गवास २५ साल की अल्पायु में होगया। आपके नहीं है। यह परिवार त्रिचनापल्ली तथा फलोदी मे अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। संवत् १९७८ फलोदी में अपना निवास बना लिया है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय को ना है।

सेठ हजारीमल भीकचंद पारख, त्रिचनापल्ली

यह कुटुम्ब लोहावट (मारवाड़) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज पारख फतेचन्दजी न्दा, रिदमलजी, जयसिंहदासजी, शिवजीरामजी, वख्तावरमलजी, मुकुन्दचन्दजी तथा जी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें सेठ शिवजीरामजी लगभग सौ साल पूर्व देश से आकर बलारी, , कामठी आदि स्थानों में रेजिमेंटल बैंकर्स का काम करते रहे, यहाँ से लगभग ७५ साल पहिले चनापल्ली आये। इन्होंने अपनी उमर में लगभग ५० सालों तक रेजिमेंटल बैंकर्स का काम किया। ाथ व्यापार में रिदमलजी के पुत्र रावतमलजी और रतनलालजी, जयसिंहदासजी के पुत्र चुन्नीलाल मारके पुत्र चांदनमलजी और हजारीमलजी भी सम्मिलित रूप में "शिवजीराम चंदनमल" के व्यापार करते थे। सेठ शिवजीरामजी पारख के स्वर्गवासी होजाने के बाद उनके पुत्र रमल तथा हजारीमलजी ने बेलगाँव (महाराष्ट्र) में दुकान खोली, तथा संवत् १९६१ तक दोनों का सम्मिलित व्यापार होता रहा। सेठ चांदनमलजी की आयु ८० साल की है, और आप लोहा- वट है। आपके पुत्र सुगनचन्दजी का संवत् १९६८ में स्वर्गवास होगया है।

सेठ हजारीमलजी पारख अपने जीवन के अंतिम पन्द्रह साल देश में धार्मिक जीवन बिताते हुए १९७६ में स्वर्गवासी हुए। आपके भीकमचन्दजी तथा खेतमलजी नामक २ पुत्र हुए। आप न्होंने सन् १९१६ में त्रिचनापल्ली में दुकान खोली। इस समय आपके यहां २ दुकानों पर का व्यापार होता है। सेठ भीकमचन्दजी का जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आपके पुत्र ा व्यापार में भाग लेते हैं। खेतमलजी के पुत्र राणूलाल तथा शांतिलाल बालक हैं। का धार्मिक कामों की ओर ज्यादा लक्ष है। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का है।

सेठ रावतमल जोगराज पारख, त्रिचनापल्ली

इस परिवार का मूल निवास लोहावट (मारवाड़) है। हम ऊपर लिख चुके हैं कि सेठ ा के ८ पुत्र थे। इनमें द्वितीय तथा तृतीय पुत्र रिदमल और जयसिंहदासजी से इस

परिवार का सम्बन्ध है। सेठ रिड़मलजी के पुत्र रावतमलजी तथा रतनलालजी और जयसिंहदासजी पुत्र चुन्नीलालजी हुए सेठ चुन्नीलालजी सवत् १९४५ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रावतमलजी बड़े साह पुरुष थे। देश से आप मद्रास आये, और वहाँ रेजिमेंटल बैंकर्स का काम करते रहे। वहाँ से फोजों के साथ बैंकिंग व्यापार करते हुए बलारी, कामठी आदि स्थानों मे होते हुए लगभग सवत् १९ में त्रिचनापल्ली आये। और यहीं अपनी स्थाई दुकान स्थापित करली। आपने इस कुटुम्ब की प्रतिष्ठा बढ़ाई। सवत् १९७३ मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके दो साल बाद आपके छोटे रतनलालजी गुजरे। सेठ रावतमलजी के इन्द्रचन्दजी, जोगराजजी तथा कँवरलालजी नामक ३ पुत्र इनमें जोगराजजी सेठ चुन्नीलालजी के नाम पर दत्तक गये। आपका जन्म सवत् १९४८ में हुआ। 'रावतमल जोगराज" के नाम से येडतरू बाजार त्रिचनापल्ली मे बैंकिंग व्यापार करते ह। तथा के ओसवाल समाज में अच्छे प्रतिष्ठित माने जाते है। धार्मिक कार्मों की ओर भी आपका अच्छा लक्ष आपके पुत्र चम्पालालजी २० साल के है। तथा व्यापार मे भाग लेते है।

सेट इन्द्रचन्दजी के यहा "इन्द्रचन्द सम्पतलाल" के नाम से त्रिचनापल्ली मे व्यापार होता इन्द्रचन्दजी धर्म के जानकार व्यक्ति हैं। आपका जन्म सवत् १९३२ में हुआ। आपके पुत्र सम्पत जो ३० साल के हैं। कँवरलालजी बहुत समय तक जोगराजजी के साथ व्यापार करते रहे। आप समय लोहावट में रहते हैं। रतनलालजी के पुत्र मिश्रीलालजी है। यह परिवार मदिर आम्नाय का

सेठ हजारीमल कँवरीलाल पारख, लोहावट (मारवाड़)

यह परिवार लगभग दो शताब्दि से लोहावट में निवास करता है। इस परिवार के मुलतानचन्दजी पारख के हजारीमलजी तथा रतनलालजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों जन्म क्रमश. संवत् १९१४ तथा सवत् १९२१ मे हुआ। सवत् १९३२ मे इन बधुओं ने धमत दुकान की। संवत् १९६२ में सेठ हजारीमलजी ने बम्बई में दुकान की। इसके १० साल बाद दोनों भाइयों का कारबार अलग २ होगया।

सेठ हजारीमलजी का परिवार—सेठ हजारीमलजी ने इन दुकान के व्यापार तथा सम्मान विशेप बढ़ाया। सवत् १९८४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके शिवराजजी, कँवरलालजी, रेखचन्द मसुखदासजी, तथा विजयलालजी नामक ५ हुए। इनमें सेठ शिवराजजी का स्वर्गवास सवत् १९६ तथा कँवरलालजी का संवत् १९७: में हुआ। शेष बंधु विद्यमान हैं। इन बधुओं के यहाँ "हजार कँवरलाल" के नाम से विट्ठलवाड़ी बम्बई में आढ़त का व्यापार होता है। इस दुकान के व्यापा सेठ शिवराजजी ने उन्नति की। उनके पश्चात् पारख रेखचन्दजी ने कारोबार बढ़ाया। वह पी लोहावट में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। सेठ शिवराजजी के पुत्र दूडमलजी कन्हैयालालजी, सेठ रेखच के पाबूदानजी, सोहनराजजी, सेठ मसुखदासजी के नेमीचन्दजी तथा राणूलालजी और विजयलालजी जमनालालजी तथा पुखराजजी है। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय मानता है।

सेठ रतनलालजीका परिवार—सेठ रतनलालजी के पेमराजजी, कुन्दनलालजी, सतीदा

सभा सोसायटियों व डिपार्टमेंटों के मेम्बर रहे। आपको किशनगढ़ स्टेट ने भी शाह की पदवी तथा दरबारी बैठक दी थी। आपके छोटे भ्राता अमरचन्दजी तमाम कामों मे आपका साथ देते रहे। आप दोनों बन्धु इस समय किशनगढ़ में रहते हैं। गोपीचदजी के पुत्र बालचन्दजी, सुगनचन्दजी, पेमचन्दजी तथा गुलाब चन्दजी हैं। अमरचन्दजी के पुत्र घेवरचन्दजी मेट्रिक पास हैं।

श्री प्रतापमलजी छाजेड़, जोधपुर

प्रतापमलजी छाजेड उन व्यक्तियों मे हैं, जो अपनी बुद्धिमत्ता एव परिश्रम के बलपर साधारण स्थिति से उन्नति कर समाज में एक वजनदार स्थान प्राप्त करने है। आपके पिताजी पचपदरा मे नमक का व्यापार करते थे उनका सवत् १९७२ में स्वर्गवास हुआ। इनके प्रतापमलजी, मीठालालजी तथा मिश्रीमलजी नामक ३ पुत्र हुए।

प्रतापमलजी छाजेड—आपका जन्म संवत् १९४४ मे हुआ। आप सन् १९०२ मे पचपदरा साल्ट डि० की हुकूमत में अहलकार हुए। वहाँ से १९१३ में जोधपुर आये तथा इसके एक साल बाद मारवाड़ की वकीली परीक्षा में प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए। तबसे आप जोधपुर में प्रेक्टिस करते हैं, तथा यहाँ के प्रसिद्ध वकील माने जाते हैं। आपको स्थानीय बार एसोसिएशन ने अपना प्रधान चुनकर सम्मानित किया है। जोधपुर के हिन्दू मुसलमानों के वकरों के सम्बन्ध के झगडे मे तथा दोनों कौमों के ताजिये के झगडों में स्टेट कौंसिल ने इन्हें झगडा निपटाने वाले सदस्यों में निर्वाचित किया था। हाई कोर्ट की वकालत के सिवाय आप कई प्रसिद्ध ठिकानों के वकील भी है। आप जोधपुर राजकुमारी (बाईजीलाल) के विवाह के समय कोटा दरबार के कैम्प के प्रबन्धक मुकर्रर हुए थे। हरएक अच्छे कामों में आप सहायताएँ देते रहते है। जोधपुर के ओसवाल समाज में तथा शिक्षित समाज में आपकी उत्तम प्रतिष्ठा है। आपके पुत्र सोहनलालजी पढ़ते हैं। आपके भाई मीठालालजी "हजारीमल प्रतापमल" के नाम से नमक का व्यापार करते हैं तथा उनसे छोटे मिश्रीलालजी छाजेड जोधपुर के सेकड क्लास वकील हैं।

श्री सरदारमलजी छाजेड़, शाहपुरा

इस परिवार का मूल निवासस्थान जयपुर स्टेट के मालपुरा नामक स्थान में है। वहाँ से छाजेड़ [illegible]चदजी तथा उनके पुत्र कल्याणमलजी व्यापार के लिये मालवे की ओर जा रहे थे तब उन्हें तत्कालीन शाहपुराधीश महाराजा उम्मेदसिंहजी ने अपने यहाँ रोक लिया। तबसे यह परिवार शाहपुरा ही में निवास करता है। कल्याणमलजी के पुत्र बखतमलजी तथा पौत्र जोरावरमलजी शाहपुरा के ऑनरेरी कामदार थे। [illegible]मलजी को राजाधिराज अमरसिंहजी ने देनेपेटे उदयपुर दरबार के यहाँ ओल में रक्खा था। शाहपुरा [illegible] की नाराजी हो जाने से आप अपनी जागीर तथा जायदाद छोड़कर सरवाड चले गये थे, वहाँ से पुन [illegible] दिला कर आप बुलवाये गये। इनके पुत्र नथमलजी तथा पौत्र चांदमलजी हुए। छाजेड़ [illegible] ने महाराजा लछमणसिंहजी तथा नाहरसिंहजी के समय में ७ वर्षों तक कामदारी की। [illegible] उदयपुर स्टेट से कोशिश करके तलवार बधाई की रकम वापस ली। आपके तेजमलजी, सुगतमलजी

तथा राजमलजी नामक ३ पुत्र हुए। तेजमलजी ५० सालों तक मेवाड़ में हाकिम तथा मुंसरीम रहे। संवत् १९७२ में इनका शरीरान्त हुआ। इसी तरह सगतमलजी तथा राजमलजी भी शाहपुरा स्टेट में तहसीलदारी आदि सर्विस करते हुए क्रमशः संवत् १९५७ तथा १९८९ में गुजरे। सगतमलजी के पुत्र सरदारमलजी विद्यमान हैं। आपका जन्म १९४३ में हुआ। आप अठारह सालों तक दीवानी हाकिम तथा बाउंडरी आफीसर और सुपरिटेन्डेन्ट जेल रहे। वर्तमान में आप बाउंडरी अफीसर हैं। आपके खानदान को "जीकारा" प्राप्त हैं आपके पुत्र मोनमलजी मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स की अपरगंज श्यूगर मिल सिहोरा में श्यूगर केमिस्ट हैं। शाहपुरा में यह परिवार बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ बालचन्दजी छाजेड़, इन्दौर

सेठ बालचन्दजी छाजेड इन्दौर में बड़े प्रतिष्ठित और नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आपके पिता सेठ मोतीचन्दजी जावरा में रहते थे। वहीं आपका जन्म हुआ। आपके २ भाई और थे जिनका नाम गम्भीरमलजी और जीतमलजी है। इनमें से सेठ गम्भीरमलजी इन्दौर के सेठ नथमलजी के यहाँ दत्तक आये आपके साथ २ आपके भाई भी इन्दौर आगये। सेठ गम्भीरमलजी का युवावस्था ही में देहान्त होजाने से कारण मेसर्स नथमल गम्भीरमल फर्म का संचालन आपने ही किया। आपने हजारों लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। इतना ही नहीं बल्कि उसका सदुपयोग भी किया। आपने तिलक स्वराज्य फण्ड, पिंजरापोल सोसायटी इत्यादि संस्थाओं को बहुत द्रव्य प्रदान किया। करीब २००००) हजार रुपया लगाकर इन्दौर में आपने श्री आदिनाथजी का एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। जबकि इन्दौर में जोरों का इन्फ्लूएन्जा चला था उस समय आपने ८, १० प्राइवेट औषधालय खोलकर जनता की सेवा की थी। इसमें आपने करीब १००००) रुपया खर्च किया। इसी प्रकार आपने करीब १०००००) से यहाँ एक "सुन्दरबाई ओसवाल महिलाश्रम" के नाम से एक संस्था स्थापित की। इसमें इस समय १२५ लड़कियाँ तथा स्त्रियाँ धार्मिक और व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। आपका स्वर्गवास हो गया है। इस समय आपके भाई जीतमलजी विद्यमान हैं इनके चार पुत्र हैं। बड़े पुत्र श्री सिरेमलजी छाजेड़ बी० ए० एल० एल० बी० हैं और इन्दौर में वकालात करते हैं। आप उत्साही और मिलनसार नवयुवक हैं।

डागा

डागा गौत्र की उत्पत्ति

कहा जाता है कि कि संवत् १३८१ में गोड़वाड़ प्रांत के नागेल नामक स्थान में डूँगरसिंह नामक एक पराक्रमी और वीर राजपूत रहता था। यह चौहान वंशीय था। किसी कारण वश इसने श्री जिन कुशल सूरि द्वारा जैन धर्म का प्रतिबोध पाया। डूँगरसीजी के नाम से इसके वंशज डागा कहलाये। आगे चलकर इसी वंश में राजाजी और पूजाजी नामक व्यक्ति हुए। उनके नाम से इस गौत्र में राजाणी और पूँजाणी नामक शाखाएं हुई इनके वंशज जेसलमेर जाकर रहने लगे। इससे ये लोग जेसलमेरी डागा कहलाये

सेठ अमरचन्दजी पारख (अमरचन्द रतनचन्द) किशनगढ़

सेठ चांदमलजी बरमेचा (मोहनराम

सेठ मोहनलालजी गोठी (बालचन्द गभीरमल) परभणी

सेठ माणिकचन्दजी बरमेचा (सुगन
किशनगढ़.

सेठ हस्तमल लखमीचंद डागा बीकानेर

कई वर्ष पूर्व इस परिवार के व्यक्ति जेसलमेर से बीकानेर मे आकर बस गये। आगे चलकर इस खानदान में क्रमश सुजानपालजी एवम् अमरचन्दजी हुए। अमरचदजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम सेठ रूपचन्दजी एवम् सेठ खूबचन्दजी था। सेठ खूबचन्दजी के परिवार के लोग आज कल अपना स्वतंत्र व्यापार करते है। उपरोक्त वर्तमान फर्म सेठ रूपचन्दजी के वंश की है। सेठ रूपचदजी अपना व्यवसाय बीकानेर ही में करते रहे। आपके चन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। आप बडे होशियार व्यक्ति थे। आपने अमृतसर में शाल दुशाले के व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके हस्तमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ हस्तमलजी—आप सवत् १९२५ के करीब पहले पहल व्यापार के निमित्त कलकत्ता गये। संवत् १९३२ में आपने सेठ अमोलकचन्दजी पारख के साझे में फर्म स्थापित कर उस पर रेशमी कपडे का व्यापार प्रारभ किया। यह फर्म सवत् १९५० तक अमोलकचंद लखमीचंद के नाम से चलती रही। इसके पश्चात् पारखों से आपका साझा अलग हो गया। इसी समय से आपकी फर्म पर हस्तमल लखमीचन्द नाम पड़ने लगा। सेठ हस्तमलजी बड़े बुद्धिमान्, मेधावी एवम् व्यापार चतुर थे। आपके ही कठिन परिश्रम का कारण है कि आज यह फर्म बहुत उन्नतावस्था में चल रही है। संवत् १९७२ के मिगसर में आपका बीकानेर मे स्वर्गवास हो गया। आपके लखमीचंदजी नामक पुत्र थे।

सेठ लखमीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९३७ का था। आप भी अपने पिताजी की तरह बड़े बुद्धिमान एवम व्यापार चतुर पुरुष थे। अपने पिताजी की मौजूदगी ही में आप फर्म का संचालन कार्य करने लग गए थे। इस फर्म में बीकानेर निवासी सेठ भैरोंदानजी चोपड़ा कोठारी का संवत् १९६७ से ही साझा हो गया था जो अभी एक साल से अलग हो गया है। इस समय सेठ भैरोंदानजी के पुत्र अपना व्यापार करते हैं। सेठ लखमीचन्दजी बडे कर्मण्य व्यक्ति थे। आपने संवत् १९६९ में अपनी फर्म पर जापान, जर्मनी आदि विदेशी स्थानों के रेशमी तथा सिल्की कपड़े का डायरेक्ट इम्पोर्ट करना प्रारभ किया। सवत् १९७५ में आपने जसकरनजी सिद्धकरनजी के साझे में यहीं मनोहरदास स्ट्रीट नं० ३ में एक और फर्म खोली तथा इस पर भी वही सिल्क तथा रेशम का व्यापार प्रारंभ किया। सवत् १९७९ में जकरिया मसजिद के पास आपने मेसर्स हस्तमल लखमीचंद के नाम से यही उपरोक्त व्यापार की एक फर्म खोली। इसके २ वर्ष पश्चात् अर्थात् संवत् के १९८१ मिगसर में आपने देहली में केसरीचद माणकचंद के नाम से अपनी एक और ब्रांच खोली। इस पर रेशमी कपडे का व्यापार प्रारंभ हुआ। यह फर्म आपके जीवन काल तक चलती रही। सवत् १९८२ के चैत्र में आपका स्वर्गवास हो गया। इसके बाद देहली एवम बम्बई वाली फर्म उठाली गई। सेठ लखमीचदजी बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। बीकानेर की पचायती में आपका खास स्थान था। आपके केसरीचन्दजी एवम माणकचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। खेद है कि बा० केसरीचन्दजी का युवावस्था ही में स्वर्गवास हो गया। आप एक होनहार युवक थे।

वर्तमान में इस फर्म के सचालक सेठ लखमीचन्दजी के द्वितीय पुत्र बा० माणकचन्दजी हैं।

... मुलराजजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें पेमराजजी १९६२ में तथा कुन्दनमलजी १९९३ ... हो गये हैं। शेष विद्यमान हैं। इस परिवार की धमतरी, तथा जगदलपुर में दुकानें हैं।

सेठ मोतीलाल हीरालाल पारख, सिंगरनी कालरी (निजाम)

इस परिवार का मूल निवास लोहावट (मारवाड़) है। इस परिवार के पूर्वज सेठ रामचन्द्रजी के ... महासिंहदासजी, सालमचन्दजी तथा मुलतानचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ महा-... पारख के पूनमचन्दजी, मोतीलालजी मोहनलालजी व करनीदानजी नामक ४ पुत्र हुए। ... मोतीलालजी अपने पुत्र हीरालालजी को साथ लेकर संवत् १९५५ में सिंगरनी कॉलेरी आये, और आढ़त का कार्य चालू किया। सेठ मोतीलालजी ने इस दुकान के व्यापार को बढ़ाया। ... वास संवत् १९७६ में हुआ। आपके हीरालालजी, चांदमलजी, रेखचन्दजी, कुन्दनमलजी ... नामक ५ पुत्र हुए। जिनमें चांदमलजी संवत् १९७८ में स्वर्गवासी हो गये। यह परिवार ... आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ हीरालालजी का जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप सयाने तथा समझदार व्यक्ति हैं। ... कर्मचन्दजी स्वर्गवासी हो गये हैं। सेठ रेखचन्दजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आपके ... २२ साल के हैं। आप व्यापार में भाग लेते हैं। इनके पुत्र अनोपचन्दजी हैं। सेठ ... का जन्म १९५६ में हुआ। आपके कँवरलालजी, चम्पालालजी तथा खेतमलजी नामक ३ पुत्र ... मुलराजजी के पुत्र भेरोंलालजी हैं। यह परिवार लोहावट के ओसवाल समाज में नामांकित ... जाता है। आपके यहाँ सिंगरनी कॉलेरी तथा वेल्लमपल्ली (निजाम) में बेंकिंग व्यापार

सेठ अमरचन्द रतनचंद पारख, किशनगढ़

इस परिवार के पूर्वज सेठ माणकचन्दजी के पुत्र कुशालचन्दजी लगभग एक सौ वर्ष पूर्व बीकानेर ... आये। आपको दरबार ने इज्जत के साथ किशनगढ़ में बसाया, तथा व्यापार के लिए रियायतें ... पुत्र पूनमचन्दजी पारख हुए।

... पूनमचन्दजी पारख—आप बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। आपने व्यवसाय की बहुत उन्नति ... कर कई दुकानें खोलीं। आप गरीबों की अन्न वस्त्र से विशेष सहायता करते थे। आप गुप्तदानी ... इन विशेषताओं के कारण आप राज्य, जनता एवं अपने समाज में सम्माननीय व्यक्ति हुए। ... पारख अमरचन्दजी विद्यमान हैं।

सेठ अमरचन्दजी पारख किशनगढ़ के ओसवाल समाज में तथा व्यापारिक समाज में अच्छी ... है। राज्य में आपको दरबार के समय कुर्सी प्राप्त है। आपके यहाँ बैंकिंग व्यापार होता है। ... , लखमीचन्दजी तथा उमरावचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। इन सज्जनों में श्री रतनचन्दजी ... में बी० ए० पास किया है, तथा इस समय आप इलाहाबाद में एल० एल० बी० का ... रहे हैं। आप बड़े सज्जन व समझदार व्यक्ति हैं। आपके छोटे भ्राता लखमीचन्दजी मेट्रिक में ... क्लास में पढ़ते हैं।

आपका जन्म संवत् १९७१ के कार्तिक में हुआ। आप बड़ी योग्यता एवम बुद्धिमानी से फर्म के सारे कार्य का संचालन कर रहे हैं। आप नवीन विचारों के शिक्षित सज्जन हैं। यह परिवार बाईस सम्प्रदाय का अनुयायी है।

सेठ हरकचंदजी मंगलचंदजी डागा सरदार शहर

सेठ सावतरामजी के पुत्र पनेचन्दजी घड़सीसर नामक स्थान से चल कर सरदार शहर में आकर बसे। आप डागा गौत्र के सज्जन हैं। यहाँ से फिर आप कलकत्ता गये एवम वहा दलाली का काम प्रारंभ किया। इसके पश्चात् आपने कपड़े की दुकान खोली। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र उदयचन्दजी, छोगमलजी और चौथमलजी हुए।

उदयचन्दजी के पुत्र का दूरामजी हुए। आपका भी स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र बुधमलजी यहीं रहते हैं। चौथमलजी के पुत्र हनुमनमलजी पहले कलकत्ते में कपडे का व्यापार करते रहे। आज कल किशनगंज (पूर्णियाँ) में पाटका व्यापार करते है। आपके पुत्र विरदीचन्दजी और रामलालजी दलाली करते हैं।

सेठ छोगमलजी के जुहारमलजी, उमचन्दजी और हरकचन्दजी तीन पुत्र हुए। जिनमें से प्रथम दो निःसन्तान स्वर्गवासी हो गये। सेठ छोगमलजी की मृत्यु के समय उनके पुत्र हरकचन्दजी की उम्र केवल १४ वर्ष की थी इस छोटी उम्र में ही आपने वडी होशियारी से कटपीस का व्यापार आरंभ किया इसमें आपको बहुत लाभ हुआ। आपने अपने हाथों से लाखों रुपये कमाये। इसके पश्चात् विशेष रूप से आप देश ही में रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आप भी जैन श्वेताम्बर तेरापथी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। आपके मंगलचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ मंगलचन्दजी समझदार, शिक्षित और मिलन सार व्यक्ति हैं। आपके धार्मिक विचार भी हैं। आजकल आप नं० २ राजा उडमड स्ट्रीट कलकत्ता में जूट, कटपीस तथा बैंकिंग का काम कर रहे हैं तथा मंगलचंद डागा के नाम से फारविसगज (पूर्णिमा) में जूट का व्यापार करते हैं। आपके नथमलजी, चम्पालालजी, सुमेरमलजी, और चम्पालालजी नामक पुत्र हैं। नथमलजी व्यापार में सहयोग देते हैं।

सेठ रतनचन्दजी हरकचंदजी डागा का परिवार, सरदार शहर

करीव ९० वर्ष पूर्व जब कि सरदार शहर बसा इस परिवार के पुरुष सेठ लछमनसिंहजी के दानमलजी, कनीरामजी और जीतमलजी तीनों ही भाई घड़सीसर नामक स्थान से चल कर सरदार शहर में आकर बसे। आप तीनों ही भाई सवत् १९०० के करीब नौगाँव (आसाम) नामक स्थान पर गये और फर्म स्थापित कर जूट एवम् दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। इस समय इस फर्म का नाम दानमल कनीराम रक्खा था जो आगे चलकर कनीराम हरकचन्द हो गया। इस फर्म में आप लोगों को अच्छी सफलता रही। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। सेठ कनीरामजी के हरकचन्दजी, और दानमलजी के रतनचन्दजी नामक पुत्र हुए। जीतमलजी के कोई पुत्र न होने से उनके नाम पर हरकचन्दजी दत्तक...

इस परिवार में सेठ माणकचन्दजी के छोटे भ्राता जसरूपजी के पुत्र हरखचन्दजी व्यक्ति हुए, तथा इस समय उनके पुत्र सेठ अगरचन्दजी विद्यमान हैं। आप भी किशनगढ़ के समाज में वजनदार व्यक्ति हैं।

सेठ जेठमल रतनचन्द पारख, रायपुर

इस परिवार के पूर्वज सेठ रावतमलजी पारख एक शताब्दि पूर्व अपने मूल नि बीकानेर से रायपुर आये। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है। सेठ राव बड़े पुत्र आसकरणजी निसतान स्वर्गवासी हुए, तथा छोटे भ्राता जेठमलजी ने अपने परिवार की तथा कृषि के काम को विशेष बढ़ाया, और समाज में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। संवत् आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र रतनचन्दजी हुए।

सेठ रतनचन्दजी पारख—आपका जन्म सम्वत् १९३१ में हुआ। धार्मिक कामे आपकी अच्छी रुचि है। अपने पिताजी के बाद आपने जमीदारी तथा कृषि के कार्य को बढ़ाया है के ओसवाल समाज के आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके धर्मचन्दजी, कर्मचन्दजी, कस्तूरच प्रेमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। धर्मचन्दजी का जन्म संवत् १९६४ में हुआ। इन भाइयों में का सवत् १९८० में १९ साल की वय में स्वर्गवास हो गया। आप बडे होनहार थे। आप सेकंड ईयर में पढ़ते थे। छात्रों को मदद देने की ओर आपकी विशेष रुचि थी। आपने अप लायब्रेरी में डेढ़ हजार ग्रंथों का सग्रह किया था। आपके स्मारक में आपके पिताजी भी छात्रों क देते रहते हैं। सेठ रतनचन्दजी के शेष पुत्र धर्मचन्दजी, कस्तूरचदजी तथा प्रेमचदजी पढ़ते हैं।

सेठ भीकमचन्द रामचन्द पारख, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (जोधपुर स्टेट) है। इस परिवार के पूर्वज सेठ पारख लगभग १५० साल पहिले देश से नाशिक के समीप मखमलाबाद नामक स्थान पर आये पुत्र पारख किशनीरामजी और पौत्र पारख रामचन्द्रजी हुए। आप लोग मखमलाबाद में ही र रहे। सेठ रामचन्द्रजी पारख का स्वर्गवास संवत् १९५२ में हुआ। आपके पुत्र सेठ भीकम छगनमलजी पारख हुए।

सेठ भीकमचन्दजी पारख—आपका जन्म सवत् १९४२ में हुआ। आपने नाशिक में व्यापार चालू किया। जातीय सुधार तथा धर्म ध्यान के कार्यों की ओर आपका अच्छा लक्ष नाशिक जिला ओसवाल परिषद् के सेक्रेटरी थे तथा उसके स्थाई सेक्रेटरी भी आप हैं। ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र लक्ष्मीचन्द्रजी अपनी "पारख ब्रद कपड़े की दुकान का सचालन करते हैं तथा दूसरे पढ़ते है। यह परिवार स्थानकवासी मानने वाला है।

पारख छगनमलजी का जन्म १९४८ में हुआ। आप नदलाल भण्डारी मिल इत्यादि पर कार्य करते हैं। आपके पुत्र देवीचन्दजी व्यवसाय करते है तथा हस्तीमलजी छोटे हैं।

सेठ हरकचन्दजी और रतनचन्दजी भी योग्य निकले। आपने भी फर्म की बहुत उन्नति की तथा अपनी एक शाखा मेसर्स हरकचन्द नथमल के नाम से कलकत्ता में खोली। जिसका नाम आजकल हरकचन्द रावतमल पड़ता है। इस पर जूट कपड़ा तथा चलानी का काम होता है। आप दोनों भाई अलग हो गये तथा आप लोगों का स्वर्गवास भी हो गया।

सेठ रतनचन्दजी के नथमलजी नामक पुत्र हुए। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके चम्पालालजी, और दीपचन्दजी दो पुत्र हैं। सेठ हरकचन्दजी के रावतमलजी एवम् पूनमचन्दजी नामक पुत्र हैं। आजकल उपरोक्त फर्म के मालिक आप ही हैं। आप दोनों भाई मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आप लोगों का कलकत्ता के अलावा सालडागा नामक स्थान पर भी रावतमल मोतीलाल के नाम से जूट का व्यापार होता है। आप तेरापंथी जैन श्वेताम्बर संप्रदाय के हैं।

रावतमलजी के बुधमलजी, मन्नालालजी और माणकचन्दजी तथा पूनमचन्दजी के मोतीलालजी नामक पुत्र हैं।

सेठ शेरसिंह माणकचन्द डागा, बेतूल

इस परिवार का मूल निवास बीकानेर है। देश से सेठ शेरसिंहजी डागा संवत् १८९६ में बदनूर आये, तथा हुकुमराज मगनराज नामक दुकान पर मुनीम हुए। मुनीमात करते हुए सेठ शेरसिंहजी ने माल गुजारी कमाई और अपना घरू व्यापार भी चालू किया। दरबार में इनको कुर्सी प्राप्त थी संवत् १९३९ में सेठ शेरसिंहजी का स्वर्गवास हुआ, आपके पुत्र माणकचन्दजी डागा का जन्म संवत् १९१० मे हुआ। आपने १०।१४० गाव जमींदारी के खरीद किये, आप भी यहाँ के राजदरबार व जनता में अच्छी इज्जत रखते थे। आपने अपनी मृत्यु के समय अपनी कन्या सौ० भीखीबाई को लगभग १ लाख रुपयों की सम्पत्ति प्रदान की। इनके स्वर्गवासी होने के बाद इनकी धर्म पत्नी ने ५ हजार की लागत से मेन डिस्पेंसरी में अपने पति की स्मृति में उनके नाम से १ वार्ड बनवाया, सवत् १९७० में डागा माणकचंदजी का स्वर्गवास हुआ, आपके नाम पर कस्तूरचन्दजी डागा बीकानेर से दत्तक लाये गये।

डागा कस्तूरचन्दजी का जन्म सवत् १९५५ में हुआ आपका कुटुम्ब भी बेतूल जिले का प्रतिष्ठित जमींदार कुटुम्ब है, आपके यहाँ बेतूल में शेरसिंह माणकचद डागा के नाम से जमींदारी तथा सराफी व्यापार होता है डागा कस्तूरचन्दजी के पुत्र हरकचंदजी १० साल के हैं।

सेठ भवानीदास अर्जुनदास, डागा रायपुर

लगभग १०० साल पूर्व बीकानेर से डागा भैरोंदानजी के पुत्र भवानीदासजी रायपुर आये और यहाँ [illegible] कपड़ा तमाखू व घी का व्यापार शुरू किया। डागा भवानीदासजी के जावंतमलजी तथा अर्जुनदास [illegible] दो पुत्र हुए।

लगभग संवत् १९०० से भवानीदासजी के पुत्र भवानीदास अर्जुनदास तथा भवानीदास जावंतमल [illegible] नाम से व्यवसाय करते हैं। सेठ अर्जुनदासजी डागा रायपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे आपका

... रतनचन्दजी पारख, रायपुर (सी पी)

स्व० सेठ आनंदरामजी पारख, त्रिचनापल्ली

... पारख (नारमचन्द रामचन्द) नासिक.

स्व० सेठ अखैचन्दजी पारख, त्रिचनापल्ली.

ड़े सुन्दर कारनामें कर दिखाये। इन्होंने सब से प्रथम मेवाड के सरदारों के बीच लगातार चार वर्षों चली आई लडाई को शात कर मेवाड में पुन शान्ति स्थापित की।

इस प्रकार मेवाड के अन्तर्गत शान्ति स्थापित कर इस वीर योद्धा ने मेवाड के राज्य-विस्तार ओर अपना हाथ बढ़ाया। इन्होंने सबसे प्रथम महाराणाजी की आज्ञा लेकर माँडलगढ़ पर आक्रमण दिया। उस समय मेवाड राज्य के इस किले पर मेवाड के कुछ बागी सरदारो ने अपना अधिकार रक्खा था तथा इस जिले के कुछ गाँवों को छोड कर शेष सारे जिले मे इन बागी सरदारों का अधि- हो गया था। ऐसी परिस्थिति मे मेहता अगरचदजी एक बडी सेना लेकर इन बागी सरदारो की शक्ति तहस नहस करने के लिये माडलगढ़ पहुँचे तथा वहाँ जाकर वीरता पूर्वक लडने के पश्चात् माडलगढ पर ना पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया। इस विजय मे महाराणा साहब आपके ऊपर बडे खुश हुए आपका सत्कार करने के लिये आपके नाम पर एक खास रुक्का इनायत किया जिसकी नक्ल वे दी जाती है।

"रुको मेहता भाई अगरा जोग अप्र परगणो माडलगढ गेर अमली हार श्रीदरबार री हुकम उठाय दीदो जणा थी थाँहे माणा टील जू जाणने मेलो हैं सो दरबार रो सुधरेजूं कीजे सुधारता वीगड जावे तो भी अटकाव रावे मती थारा मनख कबीला मुर्दा बंठ राजे मो भी एकलिंगजी को राज रहेगा जवे ऊ परगणो ता थारा बाप री जाणागा ई मे फरक पाडे जो ने श्री एकलिंगजी पूगसी उठारो निपट जापतो राख अठारी समाल आय कीजे और भी जगा बगावत आर आसामिया भी बसाव खात्री कर दाजे जणी परमाणे नभेगा मारो वचन है दल हाथ राग किला रो निपट जापतो राखजे में भी राजता गाजता किला पर आवा तो किला पर आवा दाज कोई तर ओछ रखिहे तो श्री एकलिंगजी का घर म थागू समभागा सवत १८८२ का कार्ती बुदी १२ बुधवार

इस रुक्के के अन्दर उदयपुर के महाराणा ने मेहता अगरचदजी को उनके माडलगढ़ की फतह बधाई देकर के बडे सत्कार सहित उन्हें माडलगढ का शासक (Governor) नियुक्त किया। इसके हाँ महाराणा जी ने यह भी लिखा कि हम यह माडलगढ का किला तुम्हारे बाप दादों की जायदाद सम्पत्ति) मानेंगे। तुम इस किले की बड़ी चतुराई से रक्षा करना और खुद वहाँ पर बस कर प्रजा को सुविधायें देकर के बसाना।

इस प्रकार रुक्के प्रदान कर महाराणाजी ने मेहता अगरचदजी के प्रति अपना अगाध विश्वास किया। मेहता अगरचन्दजी ने भी आपकी आज्ञा को शिरोधार्य्य कर माडलगढ में निवास करना

आरम्भ कर दिया। आपने धीरे २ शत्रुओं की शक्ति को चूर २ करके सारे जिले के अन्तर्गत पित की। इसके कुछ दिनों पश्चात् आप खवास गुलाबजी को माडलगढ़ का शासक (C नियुक्त कर उदयपुर दरबार में आ दाखिल हुए।

मेहता अगरचंदजी ने उदयपुर दरबार में पुन काम करना आरम्भ कर दिया ऊपर लिख चुके हैं कि आप बड़े कुशल राजनीतिज्ञ थे। इसी समय रत्नसिंह ने राज्य प्राप्ति व कई सरदारों को मिलाकर एक बड़े षड्यंत्र की रचना की और उसमें मरहठा सर को भी आमन्त्रित किया। मेहता अगरचन्दजी निकट भविष्य में आनेवाली इस आप ताड़ गये तथा रावत पहाड़सिंहजी एवं शाहपुरा नरेश राजाधिराज उम्मेदसिंहजी वं षड्यंत्र की सब शक्तियों को नष्ट करने के लिये आक्रमण की तयारी करने लगे। लेकि अपने षड्यंत्र को बहुत मजबूत बना चुका था और इनके युद्ध के लिये तयार हं पहले अपनी पूरी २ शक्ति संचित कर चुका था। उधर मरहठा सरदार सिंधिया भी इन आ पहुँचा। फिर क्या था, अत्यन्त वीरता पूर्वक लड़ने पर भी महाराणा की फौज हार ग पहाड़सिंहजी तथा शाहपुराधीश राजाधिराज उम्मेदसिंहजी वीरतासे लड़ते २ काम आये। उसी अगरचन्दजी भी बड़ी वीरता से लड़ते हुए शत्रु दल द्वारा पकड़े गये। इस प्रकार इस वीरवर य जाने से विरोधी पक्ष को बड़ी प्रसन्नता हुई। उस समय भी मेहता अगरचन्दजी ने अपूर्व स्व परिचय दिया। विरोधी दल वालों ने आपको, इस शर्त्त पर कि आप रतनसिंह को महाराणा मान स्वीकार किया परन्तु आपने निर्भीकता से इसके लिये इन्कार कर दिया। जब ये बातें महाराणा कं तो वे बड़े दुखी हुए और उन्होंने मेहता अगरचन्दजी को इस आशय का एक रुक्का लिखकर भेज स्यामधर्मी नौकर है और उज्जैन के झगड़े के बिगड़ने के कारण तुझे जिन २ कठिनाइयों का स पड़ रहा है उनको जानकार मुझे बड़ी अमूझणी आ रही है। अब तू शत्रु के पंजे से जैसा वे व कह कर तुरंत चले आना। हमारा तुम पर पूरा विश्वास है। उस रुक्के की नकल इस प्रकार है

"स्वस्ती श्री भाई अगरा जोग अपरंची उजीण रो झगड़ो बिगड़ गयो जी री म पूरी अमूझणी है तथा था जसा सपत चाकर मारे है सो या अमूझणी भी श्रीएकलिंगजी मे परन्तु तू पकड़ाय गयो और गनीम था नकासु जबान केवाय छोड़े जणी हेतु तू थारे नहीं थारे नहीं पोत्र म्हारे तो आधा लकड़ी तू है थाथी ही राज करा हा अब वे केवावे जो कहे जीव बचा हजूर हाजर होजे अणी करवा में थारा साम धरमी में फरक जाणा तो श्रीएकलिंग

भणी में आपकी देख रेख मे एक श्री पार्श्वनाथजी का बहुत विशाल और भव्य मंदिर बना है। इस आपकी दुकान पर बैंकिंग सोना चाँदी, कपडा खेतीवडी आदि व्यापार होता है। परभणी में य वहुत प्रतिष्ठित हैं। सेठ मोहनलालजी वडे उत्साही है। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नेमीचंदजी है। आपका संवत् १९६५ का जन्म है।

श्री मनोहरमलजी गोठी, नाशिक

आपका परिवार महामन्दिर (जोधपुर) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज दे व्यापार के लिये नाशिक जिले के घोटी नामक स्थान मे आये। वहाँ सेठ मनीरामजी तथा उन लखमीचन्दजी आसामी लेन देन का काम करते रहे। सेठ लखमीचन्दजी संवत् १९७७ मे स्व हुए। आपके पुत्र मनोहरमलजी हुए।

मनोहरमलजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९५९ में हुआ। अपने पिताजी के स्वर्गवासी वाद आप ११ सालों तक वम्बई में सर्विस करते रहे। जाति हित के कामों में आपकी वहुत रुचि आप वम्वई की ओसवाल मित्र मण्डल, नामक संस्था के सेक्रेटरी रहे। सवत् १९३२ से आपने में 'गोठी ब्रादर्स" के नाम से कपड़े का व्यापार स्थापित किया। आप इस समय नाशिक जिला वाल सभा और जैन वोर्डिंग के सेक्रेटरी है। नाशिक जिले के उत्साही कार्य्य कर्त्ताओं तथा हितैषी व्यक्तियों में आपका नाम अग्र गण्य है।

पूंगलिया

पूंगलिया गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि लोद्रपुर (जेसलमेर के भाटी राजा रावल के ९ वर्षीय पुत्र केलणदे को गलित कुष्ट की विमारी हो गई थी। उस समय राजा के आग्रह से दादा सूरिजी लोद्रपुर आये। तथा राजपुत्र को स्वस्थ्य किया। कुमार केलणदे ने साधुवृत्ति धारण करने की की। तव गुरु ने उसका मुण्डन कराकर सम्यक्त युक्त बारह व्रत उच्चराये। दर्शन और दीक्षा की चा के कारण इनकी गौत्र राखेचाह (राखेचा) हुई। ये अपने निवास पुंगल से उठकर दूसरे स्थल पर इसलिये पूंगलिया राखेचा कहलाये। इस प्रकार पूङ्गलिया गौत्र की उत्पत्ति हुई।

सेठ ताराचन्दजी वीजराजजी पूगलिया, डूगरगढ़

इस परिवार के लोग पूगल से समदसर नामक स्थान पर आये। वहाँ से फिर सवत् १९ सेठ रावतमलजी श्री डूंगरगढ़ आये आप वड़े मेधावी और अनुभवी सज्जन थे। डूगरगढ़ आने के पूर्व ही पूरणी (भागलपुर) नामक स्थान पर अपनी फर्म पर गल्ले का व्यापार प्रारम्भ किया। इस सफलता मिलने पर क्रमश साहबगंज और छत्तापुर में अपनी शाखाएँ खोलीं। सवत् १९५७ में स्वर्गवास हो गया। आपके ताराचन्दजी और वीजराजजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ जुगराज केसरीमल पारख, येवला (नाशिक)

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (जोधपुर स्टेट) है इस परिवार के पूर्वज पारख लूमचंद ... भीमराजजी तथा दईचदजी दोनों भाइयों ने मिलकर संवत् १९६० मे येवले में कपडे की दुकान ... थोड़े समय के बाद दुकान की शाखा नांदगाव में खोली गई। आप दोनों भाइयों ने दुकान ... तथा सम्मान को तरक्की दी। तथा अपनी दुकान की शाखा वम्बई में भी खोली। आप दोनों ... का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ भीमराजजी के पौत्र (कानमलजी के पुत्र) उदयचदजी तथा ... और दईचदजी के पुत्र जुगराजजी विद्यमान हैं। सेठ भींवराजजी के पुत्र कानमलजी का स्वर्गवास ...१९७५ में हो गया है। इस समय सेठ जुगराजजी इस परिवार में बडे हैं। आपका जन्म संवत् ... में हुआ। इस समय आपके यहाँ भीजराज देवीचद के नाम से वम्बई में, भींमराज कानमल के ... नांदगाव में तथा जुगराज केशरीमल के नाम से येवला में कपडे की आढ़त आदि का व्यापार होता ... यह परिवार तींवरी, वम्बई, येवला आदि स्थानों में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। तथा मंदिर ... आम्नाय का मानने वाला है।

मुनीम फतेचंदजी पारख, उज्जैन

संवत् १८९२ में इस परिवार के प्रथम पुरुष सेठ फूलचन्दजी बीकानेर से वजरंगगढ़ नामक ... में आये। यहाँ आकर आपने देनलेन का व्यापार शुरू किया। आपके पुत्र पूनमचन्दजी बडे व्यापार ... और सज्जन व्यक्ति थे। आपने अपने व्यवसाय की उन्नति के साथ २ जमींदारी की खरीद की। ... धार्मिकता की ओर भी अच्छा ध्यान था। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र सेठ ... इन्दौर के प्रसिद्ध सेठ सर स्वरूपचन्द हुकमचन्द की उज्जैन दुकान पर मुनीम हैं। आपका ... मिलनसार है। यहाँ आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने भी बहुत सी जमींदारी खरीद की हैं। ... पंचायती बोर्ड के आप सरपंच रहे थे। उज्जैन की मंडी कमेटी के आप चौधरी रहे। इस ... के तीन पुत्र हैं, जिनके नाम हीराचन्दजी, रतनचन्दजी और इन्द्रचन्दजी हैं। आपकी पुत्री श्री ... ने आचार्या प्रमोद श्री जी के उपदेश से जैन धर्म में साध्वीपन ले लिया है। इस समय उनका ... श्री जी है।

सेठ अजीतमल माणकचन्द पारख, बीकानेर

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ सुल्तानमलजी करीब १५० वर्ष पूर्व बीकानेर आकर बसे थे। ... सेठ अभयचन्दजी ने आगरे में सेठियों की फर्म पर सर्विस की। आपके हमीरमलजी, सुगनमलजी ... और चन्दनमलजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ सुगनमलजी ने कलकत्ता आकर सेठ रिखलाल ... के यहाँ नौकरी की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके फतेचन्दजी और नेमीचन्दजी नामक ... सेठ फतचदजी कुछ महाजनी का हिसाब किताब सीखकर वरोरा नामक स्थान पर चले आये। ...

यहाँ आपने कपड़े और गल्ले का काम करने के लिये फर्म स्थापित की। आपकी बुद्धिमानी से फर्म की तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। इसी प्रकार आपके भाई नेमीचन्दजी का भी स्वर्गवास हो ग आपके पुत्र डालचन्दजी, बीजराजजी और बिरदीचदजी स्वतत्र रूप से भोपाल में व्यापार करते हैं।

सेठ फतेचदजी के आनंदचन्दजी, अजीतमलजी, लालजी तथा मालचन्दजी नामक चार पुत्र आजकल आप सब लोग स्वतत्र रूप से व्यापार करते हैं। सेठ अजीतमलजी बीकानेर के खजाची प्रेमच माणकचंदजी के साझे मे कलकत्ता मे दुकान कर रहे है। आपकी फर्म पर कपडे का थोक व्यापार हो है। आप मिलसार और उत्साही व्यक्ति है आपके पीरूदानजी नामक एक पुत्र है।

सेठ पन्नालाल सुगनचन्द पारख, चुरू

सेठ लालचन्दजी पारख के पूर्वजों का मूल निवास स्थान बीकानेर था। वहाँ से रिणी होते चुरू नामक स्थान पर आकर बसे। चुरू में सेठ जोधमलजी हुए। जोधमलजी के चार पुत्रों से में मु दासजी और अनेचन्दजी के परिवार वाले शामलात में व्यापार करते हैं। मुकन्ददासजी के पश्चात् उनके पुत्र गजराजजी, नवलचन्दजी, पन्नालालजी और सुगनचन्दजी हुए। सेठ अनेचंदजी के बाद घमंण्डीरामजी जवाहरमलजी और लालचन्दजी हुए। सेठ लालचन्दजी बडे व्यापार कुशल और सज्जन है। सेठ सुगनचन्दजी भी मिलनसार और योग्य सज्जन है। आजकल आप दोनों सज्जन मेसर्स पन्ना सुगनचन्द के नाम से क्रास स्ट्रीट कलकत्ता में थोक धोती जोड़ों का व्यापार करते हैं। यह फर्म १८९२ में स्थापित हुई थी। सेठ लालचन्दजी के जयचन्दलालजी नामी एक पुत्र है।

बरमेचा

बरमेचा गौत्र की उत्पत्ति—महाजन वंश मुक्तावली मे लिखा है कि सवत् ११६७ में रण के राजा लालसिंह को अपने सातों पुत्रों सहित मुनि श्री जिनवल्लभ सूरिजी ने जैनधर्म का प्रतिबोध श्रावक बनाया। इन्हीं सातों पुत्रों के नाम से सात गौत्र की उत्पत्ति हुई। इनमें से बड़े पुत्र ब्रह्म बरमेचा गौत्र की स्थापना हुई।

सेठ साहबराम बरदीचंद बरमेचा, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास जोधपुर के समीप दहीजर नामक स्थान है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। देश से व्यापार के निमित्त सेठ साहबरामजी बरमेचा सवत् १९०५ में नाशिक आये, तथा व्यापार आरम्भ किया। आपके मगनमलजी, ज्ञानमलजी, बरदीचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयों में से सेठ बरदीचन्दजी बरमेचा ने सेठ चुन्नीर नवलमलजी कूमठ के साथ साहबराम बरदीचन्द के नाम से किराने का व्यापार किया तथा इस दु व्यापार तथा सम्मान को ज्यादा बढ़ाया। आप अपनी जाति के बड़े शुभचिंतक व्यक्ति थे। आप

सेठ बीजराजजी पुगलिया डूंगरगढ़

सेठ जयचन्दलालजी पुगलिया डूंगरगढ़

बाबू तोलारामजी पुगलिया, डूंगरगढ़

श्री मनोहरमलजी गादी, नासिक

ग़ में ओसवाल हितकारिणी सभा नाशिक के मंत्री थे। संवत् १९५८ में आपका स्वर्गवास हुआ। शिवरामदासजी तथा चांदमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ शिवरामदासजी संवत् १९५४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ चांदमलजी—आपका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आप नाशिक के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। धार्मिक कामों में आप विशेष भाग लेते हैं। आप ओसवाल बोर्डिङ्ग तथा नाशिक ओसवाल सभा के खजांची हैं। तथा जातीय सुधार के कामों में भाग लेते रहते हैं। आप नाशिक के ओसवाल अधिवेशन की स्वागत कारिणी समिति के सभापति थे। इस समय आपके यहाँ "साहबराम चांदमल" के नाम से बैंकिंग, हुंडीचिट्ठी तथा किराने का व्यापार होता है।

सेठ सुगनचन्द माणिकचंद बरमेचा, किशनगढ़

यह परिवार मूल निवासी मेड़ते का है। वहाँ से यह परिवार किशनगढ़ आया। यहाँ इस परिवार के पूर्वज सेठ कजोड़ीमलजी साधारण लेन देन करते थे। इनके पुत्र कस्तूरचन्दजी का जन्म संवत् १९०३ में हुआ। आप संवत् १९३० में व्यापार के लिये दिनजापुर (बंगाल) गये, तथा वहाँ "कस्तूरचन्द फतेचन्द" के नाम से कपड़े का व्यापार चालू किया। आपने इस धंधे में काफी तरक्की और इज्जत पाई। धार्मिक कामों में आपकी अच्छी रुचि थी। संवत् १९५६ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके फतेचन्दजी, सुगनचन्दजी, माणकचन्दजी, किशनचन्दजी तथा बिशनचन्दजी नामक पाँच पुत्र हुए। इन भाइयों में सेठ फतेचन्दजी १९८५ में, किशनचन्दजी १९९९ में तथा बिशनचंदजी १९८४ में स्वर्गवासी हुए। बरमेचा फतेचंदजी ने व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ सुगनचन्दजी का जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपके पुत्र दीपचन्दजी पढ़ते हैं।

सेठ माणकचन्दजी बरमेचा—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप किशनगढ़ के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। धार्मिक कामों में आप अच्छा सहयोग लेते हैं। स्थानीय ज्ञानसागर पाठशाला के आप प्रारम्भ से सेक्रेटरी हैं। आप साधु सम्मेलन अजमेर के समय अथितियों की भोजन व्यवस्था कमेटी के मेम्बर थे। आपके यहाँ दिनाजपुर (बंगाल) में "कस्तूरचन्द फतेचन्द" के नाम से पाट, कपड़ा तथा ब्याज का काम होता है। आपके पुत्र अमरचन्दजी ने इण्टर तक अध्ययन किया है, इनसे छोटे भँवरलालजी हैं। इसी तरह किशनचन्दजी के पुत्र हुलासचन्दजी तथा श्रीचन्दजी पढ़ते हैं।

गोठी

गोठी गोत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ११५२ में मेघा नामक एक व्यक्ति ने अनहिलपुर पट्टन के यवन राजा से पांच सौ मुहर देकर एक जैन प्रतिमा खरीदी, तथा गोडवाड़ प्रदेश में मन्दिर निर्माण करवाकर दादा जिनदत्तसूरिजी से उसकी प्रतिष्ठा कराई। और श्रावक व्रत धारण किया। इनके गौड़ी नामक एक पुत्र हुए। गुजरात के श्रावकों ने गौड़ी को पार्श्वनाथ-प्रतिमा पूजक "गोठी" कहना शुरू किया। यह शब्द गोष्टी का अपभ्रंश है। आज भी गुजरात देश में देव पूजकों को कहीं २ "गोठी" कहते हैं। आगे चल कर गौड़ीजी की संतानें गोठी नाम से सम्बोधित हुईं।

मेरु ताराचन्दजी और बींजराजजी—आप दोनों भाइयों ने भी व्यापार में बहुत तरक्की की। एवम् र का विस्तृत रूप से बढ़ाने के लिये फारबिसगज, डोमार, मुरलीगंज और कलकत्ता आदि स्थानों शाखाएं स्थापित कर जूट का व्यापार शुरू किया। इसमें आप लोगों को बहुत सफलता मिली। का यहाँ की जनता एवम् बीकानेर स्टेट मे अच्छा सम्मान है। संवत् १९८५ में का स्वर्गवास हो गया। आपके शेरमलजी, जयचन्दलालजी, विरदीचन्दजी और जीवराजजी पुत्र हुए। इनमें से शेरमलजी का स्वर्गवास हो गया। शेष बंधु व्यापार सचालन करते हैं। चन्दलालजी मिलनसार और उत्साही व्यक्ति हैं।

मर बींजराजजी के सात पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमश: नेमीचन्दजी, मेघराजजी, धरमचन्दजी, जा, रिधकरनजी, शुभकरनजी और पूनमचन्दजी हैं। इनमें से प्रथम तीन व्यापार संचालन में हैं। आप पढ़ते ह। इस परिवार की डूगरगढ़ में बहुत सी हवेलिया बनी हुई हैं। यह परिवार तेरापंथी सम्प्रदाय का अनुयायी है।

सेठ गोकुलचंद कस्तूरचंद पूंगालिया, डूंगरगढ़

इस परिवार के लोगों का मूल निवास स्थान समंदसर ही था। वहाँ से सवत् १९४२ में सेठ जी के पुत्र सेठ अर्जुनदासजी, शेरमलजी, गोकुलचन्दजी, दुलीचन्दजी और कालूरामजी श्रीडूंगरगढ़ कुछ समय के पश्चात् ये सब भाई अलग २ हो गये। वर्तमान इतिहास सेठ गोकुलचन्दजी के वंश का है। गोकुलचन्दजी ही ने पहले पहल आसाम प्रान्त के गोलकगंज नामक स्थान पर जाकर जूट का व्यापार प्रारम्भ किया। आप बड़े प्रतिभावान् व्यक्ति थे। आपने फर्म की बहुत तरक्की की। में भी आपने हस्तमल कस्तूरचन्द के नाम से फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। १९०१ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके हस्तमलजी, कस्तूरचन्दजी और बेगराजजी नामक तीन आप लोग भी मिलनसार और व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। इस फर्म के मालिक सेठ कस्तूरचन्दजी के पुत्र बा० तोलारामजी हैं। आप उत्साही नवयुवक गौरीपुर में अपनी एक ब्राच खोलकर उसपर जूट का काम प्रारम्भ किया है। आपकी फर्म स्टेट में अच्छा सम्मान है।

सेठ नेमीचंदजी सरदारमल पूंगालिया, नागपुर

इस परिवार का मूल निवास बीकानेर है। इस परिवार के पूर्वज सेठ दौलतरामजी पूङ्गलिया के भैरोंदानजी, सुगनचदजी तथा जवाहरमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से सेठ भैरोंदानजी लगभग १०० वर्ष पूर्व नागपूर आये। थोडे समय बाद आपके छोटे भाई जवाहरमलजी आ गये। आपके मझले भ्राता सुगनचन्दजी पूङ्गलिया अमरावती में सेठ मोजीराम बलदेव की दुकान मुनीम थे। तथा वहाँ वजनदार पुरुष माने जाते थे। सेठ भैरोंदानजी संवत् १९६० में

सेठ प्रतापमल लखमीचन्द गोठी, बतूलवालों का खानदान

इस परिवार का मूल निवास स्थान बावरा (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ लगभग एक श पूर्व सेठ शेरसिंहजी गोठी के पुत्र सेठ प्रतापमलजी तथा साईंदासजी बदनूर आये, तथा यहा से लेनदे व्यापार चालू किया।

सेठ प्रतापमलजी गोठी—आप बडे व्यवसाय कुशल तथा दूरदर्शी पुरुष थे आपने व्यापार उपार्जित की हुई सम्पत्ति से बेतूल जिले मे सवत् १९३१ मे साकादही तथा जामझिरी और १९ बोयगाँव तथा डोलन नामक ४ गाँव खरीद किये। आपको दरबार आदि सरकारी जलसों में कुर्सी होती थी। आप बेतूल के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। सवत् १९४६ मे ६५ साल का आयु में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भ्राता साईंदासजी भी सवत् १९३० मे स्वर्गवासी हुए। सेठ प्रत जी के तिलोकचन्दजी तथा लखमीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें तिलोकचन्दजी का स्वर्गवास १९३१ में २९ साल की अल्पायु मे होगया, अत इनके उत्तराधिकारी सेठ लखमीचन्दजी के ज्ये मिश्रीलालजी बनाये गये।

सेठ लखमीचन्दजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। आप इस परिवार मे प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने अपनी जमीदारी के बढ़ाने की ओर बहुत लक्ष दिया, तथा अपने ह बेतूल तथा होशगाबाद जिले में करीब १०० गाव जमीदारी के खरीद किये। सरकार ने आपको अ मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके लिये बृटिश इडिया में आर्मस लाइसेंस माफ था। अपने स्वर्गवासी होने के १० साल पूर्व अपने सातों पुत्रों के विभाग अलग अलग कर दिये थे। त गाँव पुण्यार्थ खाते निकाले। जिन की आय इस समय सदाव्रत आदि धार्मिक कामों में लगाई जा इसके अलावा प्रधान दुकान और ग्राहस्थ जीवन सम्मिलित चालू रहने की व्यवस्था करदी। इच्छानुसार आपके पुत्रों ने साठ सत्तर हजार रुपयों की लागत से इटारसी स्टेशन पर एक सुदर ध बनवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सवत् १९८१ की काती बदी १० को आप वासी हुए। आपके मिश्रीलालजी, मेघराजजी, धनराजजी, पनराजजी, केशरीचन्दजी, दीपचन्दजी तथा फूलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें धनराजजी स्वर्गवासी होगये।

सेठ मिश्रीलालजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आपही इस समय परिवार मे सबसे बड़े हैं। आप बडे शात तथा समझदार सज्जन हैं। तथा तमाम जमींदारी, और कुटुम्ब की सम्भाल बड़ी तत्परता से करते हैं। आपके पुत्र बदरीचन्दजी १६ साल के हैं, शुद्ध खादी धारण करते है। आप होनहार युवक है। तथा मेट्रिक में अध्ययन करते हैं। से राजजी गोठी का जन्म १९४३ में हुआ। यूरोपीय युद्ध के बाद आपने छिंदवाड़ा डिस्ट्रिक्ट में दो रुपयों की लागत से कोयले की तीन खानें खरीदीं, तथा इस समय उनका सचालन करते हैं। आप अमरचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी है। सेठ धनराजजी गोठी का जन्म सवत् १९४८ में तथा स्वर्गवास में हुआ। आपके पुत्र गोकुलचन्दजी, नेमीचन्दजी, उत्तमचन्दजी तथा समीरमलजी हैं। सेठ पन का जन्म १९४८ में हुआ। आप सराफी दुकान का काम देखते है। आपके मूलचन्दजी तथा मो

स्वर्गवासी हो गये। आपके हाथों से व्यापार को तरक्की मिली। आपके बड़े भ्राता सेठ कनीरामजी के चन्दजी नामक पुत्र हुए। इनका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। लाभचन्दजी पूङ्गलिया नेमीचन्दजी तथा सरदारमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें नेमीचन्दजी (सेठ जवाहरमलजी के छोगमलजी के नाम पर दत्तक गये। इनका स्वर्गवास सवत् १९७२ में हो गया।

सेठ सरदारमलजी पूगलिया—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आपका धार्मिक काम ओर बहुत बडा लक्ष है। आपने नागपुर स्थानक की बिल्डिंग बनवाने में सहायता दी, तथा बहुत पा उठाया। यहाँ आपने कई साधुओं के चातुर्मास कराये। केसरबाई के ४७ दिनों के संथारे का व्यय वृद्धि ऋषिजी की दीक्षा का खरच उठाया, नामली में स्थानक बनवाया। स्थानीय मदिर के कलश वाने में ५ हजार रुपये दिये, इत्यादि कई धार्मिक काम किये। आप नागपुर के जैन समाज में नाम गृहस्थ हैं। आपके यहाँ नेमीचद सरदारमल के नाम से सोना चादी तथा सराफी व्यापार होता है।

सेठ केसरीमल पीरूदान पुंगलिया, चांदा

इस परिवार का मूल निवास स्थान खारा (बीकानेर स्टेट) है। वहाँ से संवत् १९२५ के लगभग यह कुटुम्ब भिनासर (बीकानेर स्टेट) गया, तथा भिनासर से सेठ शिवजीरामजी के लखमीचन्दजी पुङ्गलिया २० साल की उमर में चांदा आये, तथा उन्होंने अमरचन्दजी अगरचन्दजी ग की दुकान पर १९१४ तक मुनीमात की, आपके ६ छोटे भ्राता रावतमलजी, भेरूदानजी, मगलच केशरीमलजी, पूनमचन्दजी तथा पीरूदानजी नाम के और थे, इन भाइयों में से भेरोंदानजी केशा जी तथा पूनमचन्दजी के कोई संतान नहीं है। सेठ लखमीचन्दजी पूङ्गलिया मुनीमी करते रहे, भेरूदानजी ने व्यापार शुरू किया। आपके बाद केसरीमलजी तथा पीरूमलजी काम काज चलाते सवत् १९६४ में लखमीचन्दजी ने अपना घरू चादी सोने का व्यवसाय शुरू किया। संवत् १९ इनका शरीरावसान हुआ।

सेठ रावतमलजी पुङ्गलिया के हमीरमलजी तथा राजमलजी नामक २ पुत्र हुए तथा हमीरम के केवलचन्दजी तथा खेमचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनमें सेठ राजमलजी, पीरूदानजी के नाम पर केवलचंदजी, लखमीचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। पुङ्गलिया मगलचदजी का शरीरान्त सवत् १ में हुआ। इनके ३ पुत्र हुए दीपचन्दजी मूलचन्दजी तथा नेमीचन्दजी। इन भ्राताओं के यहाँ दीप पुङ्गलिया के नाम से चांदा में चादी सोना व सराफी व्यापार होता है।

सेठ राजमलजी पूँगलिया—अपका जन्म संवत् १९४९ के में हुआ, आपने अपने व्यापार की के साथ २ कृषि तथा मालगुजारी के काम को बढ़ाया आपके पास इस समय ४ गाँवों की जमींदारी आप चादा के व्यापारिक समाज में अच्छी इज्जत रखते हैं संवत् १९३० से आप चादा म्युनिसिपैलिटी मेम्बर निर्वाचित हुए है, सार्वजनिक और लोकहित के कार्मो में आप सहायता देते रहते हैं। आ मन्नालालजी, चुन्नीलालजी, उत्तमचन्दजी, रेखचन्दजी तथा गुलाबचन्द नामक ५ पुत्र हैं जिनमें मन्नालाल की वय २० साल की है।

… रतनचन्दजी गोठी बेतूल (प्रतापमल लखमीचन्द)

सेठ मिश्रीमलजी गोठी (प्रतापमल लखमीचद) बेतूल

वैगानी

[illegible] परिवार की उत्पत्ति—कहा जाता है कि जैतपुर के चौहान राजा जैतसिंहजी के पुत्र वंगदेव [illegible]। इनको जैनाचार्य्य से स्वास्थ लाभ हुआ। इससे उन्होंने श्रावक व्रत धारण कर जैन [illegible]लिया। इन्हीं वगदेव की सतानें वैगानी कहलाई।

वैगानी परिवार लाड़नू

इस परिवार वाले सज्जनों का पूर्व निवास स्थान बीदासर था वहाँ से सेठ जीतमलजी किसी [illegible]नामक स्थान पर आकर बसे। जिस समय आप यहाँ आये थे आपकी बहुत साधारण स्थिति [illegible] [illegible]चन्दजी और कस्तूरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ केसरीचन्दजी के तीन पुत्र हुए [illegible] जीवनमलजी, इन्द्रचन्दजी और बालचन्दजी हैं। सेठ बालचन्दजी सुजानगढ़वासी सेठ [illegible] के पुत्र सेठ छोगमलजी के यहाँ दत्तक चले गये। सुजानगढ़ में आपका अच्छा सम्मान है [illegible]नामक एक पुत्र है।

[illegible] जीवनमलजी—सेठ जीवनमलजी ने सम्वत् १९५७ में कलकत्ता जाकर अपनी फर्म सेठ जीवन-[illegible] के नाम से स्थापित की और इस पर जूट का काम प्रारंभ किया गया। आपकी बुद्धिमानी [illegible] से इस व्यापार में सफलता मिली यहाँ तक कि आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित [illegible] के व्यवसाइयों में आपका आसन बहुत ऊँचा था। वहाँ के व्यापारी लोग कहा करते [illegible] ये भाव है और कल का भाव जीवनमल के हाथ है" व्यापार के अतिरिक्त आपका ध्यान [illegible] की ओर भी बहुत रहा। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर जोधपुर नरेश महाराजा सुमेरसिंहजी [illegible] और औलाद पैरों में सोना पहिनने का अधिकार बख्शा। इसके अतिरिक्त आपको और आपके [illegible] की कस्टम की माफी का परवाना भी मिला। इतना ही नहीं दरबार की ओर से पालकी, छड़ी [illegible] का सम्मान भी आपको मिला था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ में जयपुर [illegible] जिस दिन आपका स्वर्गवास हुआ उस दिल कलकत्ते के जूट के बाजार में आपके प्रति शोक प्रकट [illegible] हड़ताल मनाई गई थी। आपके पुत्र चन्दनमलजी, जवरीमलजी, हाथीमलजी, मोतीलालजी [illegible] हुए। सेठ मोतीलालजी का स्वर्गवास हो गया उनके पुत्र हनुमानमलजी विद्यमान हैं।

[illegible] चन्दनमलजी—आपका जन्म सवत् १९३३ में हुआ आप व्यापार कुशल पुरुष हैं आपके छ: [illegible] नाम आसकरणजी, नवरतनमलजी, चम्पालालजी, पूनमचन्दजी, कानमलजी और गुलाबचन्दजी [illegible] आसकरणजी सुजानगढ़ निवासी सेठ बालचन्दजी के यहा दत्तक गये हैं।

[illegible]—आपका जन्म सम्वत् १९३६ में हुआ। आपका ध्यान विशेष कर धार्मि[illegible] आपका स्वर्गवास सम्वत् १९९० में हो गया। आपके सागरमलजी नामक एक पुत्र [illegible] देशभक्त हैं।

[illegible]—आप बचपन से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि के सज्जन रहे। इस फर्म के व्यापार [illegible]

सेठ प्रतापमल लखमीचन्द गोठी, बतूलवालों का खानदान

इस परिवार का मूल निवास स्थान बावरा (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ लगभग एक शताब्दि पूर्व सेठ शेरसिंहजी गोठी के पुत्र सेठ प्रतापमलजी तथा साईदासजी वदनूर आये, तथा यहा से लेनदेन का व्यापार चालू किया।

सेठ प्रतापमलजी गोठी—आप बडे व्यवसाय कुशल तथा दूरदर्शी पुरुष थे आपने व्यापार द्वारा उपार्जित की हुई सम्पत्ति से बेतूल जिले मे सवत् १९३१ में साकादही तथा जामझिरी और १९४० वोरगाँव तथा डोलन नामक ४ गाँव खरीद किये। आपको दरबार आदि सरकारी जलसों में कुर्सी प्राप्त होती थी। आप बेतूल के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। सवत् १९४६ मे ६५ साल की आयु मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भ्राता साईदासजी भी सवत् १९४० में स्वर्गवासी हुए। सेठ प्रतापमलजी के तिलोकचन्दजी तथा लखमीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें तिलोकचन्दजी का स्वर्गवास सवत् १९३१ मे २९ साल की अल्पायु मे होगया, अत इनके उत्तराधिकारी सेठ लखमीचन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र मिश्रीलालजी बनाये गये।

सेठ लखमीचन्दजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। आप इस परिवार में बहुत प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने अपनी जमीदारी के बढ़ाने की ओर बहुत लक्ष दिया, तथा अपने हाथों बेतूल तथा होशंगाबाद जिले में करीब १०० गाव जमीदारी के खरीद किये। सरकार ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके लिये बृटिश इंडिया में आर्मस लाइसेंस माफ था। आप अपने स्वर्गवासी होने के १० साल पूर्व अपने सातों पुत्रों के विभाग अलग अलग कर दिये थे। तथा गाँव पुण्यार्थ खाते निकाले। जिन की आय इस समय सदाव्रत आदि धार्मिक कामों में लगाई जाती है इसके अलावा प्रधान दुकान और ग्राहस्थ जीवन सम्मिलित चालू रहने की व्यवस्था करदी। आपकी इच्छानुसार आपके पुत्रों ने साठ सत्तर हजार रुपयों की लागत से इटारसी स्टेशन पर एक सुदर धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सवत् १९८१ की काती वदी १० को आप स्वर्गवासी हुए। आपके मिश्रीलालजी, मेघराजजी, धनराजजी, पनराजजी, केशरीचन्दजी, दीपचन्दजी तथा फूलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें धनराजजी स्वर्गवासी होगये।

सेठ मिश्रीलालजी गोठी—आपका जन्म सवत् १९३९ में हुआ। आपही इस समय इस परिवार में सबसे बड़े है। आप बडे शात तथा समझदार सज्जन है। तथा तमाम जमींदारी, व्यापार और कुटुम्ब की सम्भाल बड़ी तत्परता से करते हैं। आपके पुत्र बदरीचन्दजी १६ साल के हैं, आप शुद्ध खादी धारण करते है। आप होनहार युवक है। तथा मेट्रिक में अध्ययन करते है। सेठ मेघराजजी गोठी का जन्म १९४३ में हुआ। यूरोपीय युद्ध के बाद आपने छिंदवाड़ा डिस्ट्रिक्ट मे दो लाख रुपयों की लागत से कोयले की तीन खानें खरीदीं, तथा इस समय उनका सचालन करते है। आपके पुत्र अमरचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी है। सेठ धनराजजी गोठी का जन्म सवत् १९४८ में तथा स्वर्गवास १९८ में हुआ। आपके पुत्र गोकुलचन्दजी, नेमीचन्दजी, उत्तमचन्दजी तथा समीरमलजी है। सेठ पनराजजी का जन्म १९४८ में हुआ। आप सराफी दुकान का काम देखते है। आपके मूलचन्दजी तथा मोतीला

में आपका बहुत बड़ा हाथ है। आपका हृदय वायदे के व्यापार के लिये बहुत खुला हुआ है। लाखों रुपयों की हार जीत करना आपके लिये बांयें हाथ का खेल है। जिस समय आपकी खरीदी बिकवाली शुरू होती है उस समय प्राय सारे बाजार की निगाहें आपकी ओर रहती हैं, यहा तक कि कारण बाजार में कई बार बड़ी २ घटा बढ़ी हो जाती है आपके इस समय जसकरणजी नामक एक पुत्र

सेठ सूरजमलजी—आप मिलनसार और खुशमिजाज सज्जन हैं। आपको मकान बना बहुत शौक है। आपने अपने डिजाइन द्वारा एक सुन्दर हवेली का निर्माण करवाया है। यह डि अच्छे २ इञ्जीनियरों के डिजाइन का मुकाबला करने में समर्थ हो सकता है। आपके रणजीत धनपतसिंह और मोहनसिंह नामक तीन पुत्र हैं।

चंडालिया

जयकरणदासजी चण्डालिया का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार वालों का पहले निवास स्थान सवाई (सरदार शहर से ३ मील) नामक था। मगर जब से सरदार शहर बसा उसी समय से इस परिवार के प्रथम व्यक्ति सेठ जयकरनद यहां आये। इनके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से सेठ उम्मेदमलजी सेठ जीतमलजी और सेठ इ जी थे। इनमें से पथम एवम् तृतीय दोनों सज्जनों ने मिलकर कलकत्ता में अपनी फर्म स्थापित तथा कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप लोगों को इसमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई। सेठ उम्मे जी धार्मिक व्यक्ति थे। आपका प्राय. सारा समय धार्मिक कार्य्यों ही में खर्च होता था। सेठ इन्द्र जी इस खानदान में बड़े प्रतिभा सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने यहा की पंच पंचायती में नये कानून बनाये जो अभी भी सुचारू रूप से चल रहे हैं। आपने एक शनीश्चरजी का मन्दिर कुवा भी बनवाया। सरदारशहर के बसाने में आपने बहुत कोशिश की। लिखना यह कि है आप समय के नामांकित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९४३ में होगया।

सेठ उम्मेदमलजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम सेठ कोड़ामलजी सेठ छोगमलजी और पोकरमलजी हैं। तथा सेठ इन्द्रचन्दजी के पुत्र सेठ शोभाचन्दजी चडालिया थे। इस समय लोगों का व्यापार कलकत्ता में मेसर्स शोभाचन्द कोडामल के नाम से होता था। संवत् १९७२ में भाई २ अलग होगये। और अपना अपना व्यापार स्वतंत्र रूप से करने लगे। सेठ कोड़ामलजी छोगमलजी यहां के प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप लोगों ने व्यापार में भी अच्छी सफलता प्राप्त की। शोभाचंदजी भी अपने पिताजी की भांति बडे नामांकित व्यक्ति हुए। आपका यहा की पंच पंचायत बहुत भाग रहा। आपका सारा जीवन एक प्रकार से पब्लिक सेवाओं ही में व्यतीत हुआ। तीनों भाइयों का स्वर्गवास होगया। सेठ पोकरमलजी इस समय विद्यमान हैं आपकी अवस्था समय ७७ वर्ष के करीब है। अपने भाइयों से अलग होते ही आपने कलकत्ता में अपने पुत्रों के ना फर्म स्थापित करदी थी। जिस पर आज कपड़े का व्यापार हो रहा है।

सेठ लखमीचन्दजी गोठी बेतूल (प्रतापमल लखमीचंद)

सेठ मिश्रीमलजी गोठी (प्रतापमल लखमीचद) बेतूल

धर्मशाला इटारसी (प्रतापमल लखमीचद बेतूल)

सेठ पोकरमलजी चण्डालिया (बैठे हुए), सरदारशहर.
बाबू गणपतरायजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० १)
बाबू रामलालजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० २).
जौहरीमलजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० ३)

श्री जसकरणजी चण्डालिया, सरदारशहर

सेठ खूबचंदजी चण्डालिया, सरदारशहर.

कुँ० भँवरलालजी चण्डालिया, सरदारशहर

कुं० पूनमचंदजी चण्डालिया, सरदारशहर.

कुँ० रूद्धकरणजी चण्डालिया, सरदारशहर

...पुत्र हैं। सेठ केशरीचन्दजी गोठी का जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आपने मेट्रिक तक ...है, तथा जमींदारी और दुकानों का कार्य्य देखते हैं।

श्री ...चन्दजी गोठी—आप सेठ लखमीचन्दजी गोठी के छठे पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् ... ...के दिन हुआ। नागपुर कांग्रेस से आपने राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग देना आरंभ ... आपके दयालु व अभिमान रहित स्वभाव के कारण बेतूल जिले की जनता आपसे दिनों दिन ... करने लगी। आप जनता में सेवा समिति आदि का संगठन करते रहे। सन् १९२८ ... "गोंड" नामक जंगली जातियों से शराब मांस आदि छुड़वाने का ठोस कार्य्य आरंभ किया। ... में आपको डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की मेम्बरशिप व एम० एल० सी० का सम्मान प्राप्त हुआ। ... बाद आप कौंसिल से इस्तीफा देकर सत्याग्रह संग्राम में प्रविष्ठ हुए। सन् १९२९ में जंगल ... के उपलक्ष में आपको एक साल का कारावास तथा ५००) जुर्माने की सजा हुई। आप ... के समय आपके प्रेम के वश भूत होकर २५। ३० हजार गौंड जनता उपस्थिति थी। आपके पीछे ... परिवार से गवर्नमेंट ने सत्याग्रह शांत करने के लिये भेजी गई पुलिस के खर्चे के ३४००) ... । आप गांधी इरविन समझौता के अनुसार ७ मास ४ दिन की सजा भुगत कर ... मार्च १९३१ के दिन नागपूर जेल से छूटे। आपकी प्रथम पत्नी श्रीमती सुगनदेवीजी आपके ... के पश्चात् अत्यन्त त्यागमय जीवन विताने लगीं। जिससे उनका शरीर क्षीण होगया ... हो जाने के कारण उनका शरीरान्त ५ सितम्बर १९३१ में होगया इधर ३ सालों से ... डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सेक्रेटरी तथा स्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। आपका प्रेमालु स्वभाव ... है। इतनी बड़ी सम्पत्ति तथा सम्मान के स्वामी होते हुए भी आपको अभिमान छू तक नहीं ...। आपके छोटे भ्राता फूलचन्दजी अपनी मालगुजारी का काम देखते हैं।

यह परिवार सी० पी० के ओसवाल समाज में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखता है। इस समय ... गांवों की जमींदारी इस कुटुम्ब के पास है। इस परिवार की मुख्य दुकान "सेठ प्रतापमल ..." के नाम से बेतूल में है। जिस पर जमींदारी, बेंकिंग तथा चांदी सोने का व्यापार होता ... इस परिवार की भिन्न २ नामों से बेतूल इटारसी तथा जुनरदेव में दुकाने हैं।

सेठ बालचन्द गंभीरमल गोठी, परभणी (निजाम)

इस खानदान के मालिक मूल निवासी विलाडा (जोधपुर-स्टेट) के हैं। आप मंदिर आम्नाय के ... पहले बिलाड़ा से सेठ बालचन्दजी गोठी करीब १२५ बरस पहले परभणी में आये। ... अपनी फर्म स्थापित की। आपको स्वर्गवासी हुए करीब ५० वर्ष हो गये होंगे। आपके ... पुत्र सेठ गम्भीरमलजी गोठी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपके समय में भी फर्म ... होती रही आपका संवत् १९५६ में स्वर्गवास हुआ।

... पश्चात् आपके पुत्र सेठ मोहनलालजी गोठी ने इस फर्म के काम की बहुत तरक्की दी। ... सन् १९२५ में हुआ। आपने मकान, बगीचे वगैरा बहुत सी स्थावर संम्पत्ति बढ़ाई। पर-

रामलजी के मूलचन्दजी नामक पुत्र हुए। मगर उनका स्वर्गवास होगया। वर्तमान में पुत्र मिलापचन्दजी, धनराजजी और मंगलचन्दजी हैं। सेठ छोगमलजी के पुत्र सेदमल लासमलजी और जयचन्दलालजी हैं। सेठ पोकरमलजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम रतायनी, जवरीमलजी और रामलालजी है। आप तीनों ही भाई सज्जन एवं मिलनसार आजकल आप ही लोग अपनी फर्म का सचालन करते है। आपकी फर्म कलकत्ता के में कपड़े का व्यापार करती है। सेठ शोभाचन्दजी के पुत्र सेठ कालूरामजी हैं। पत्र पचायती में बहुत हाथ है। आप समझदार एव बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आप यहाँ समार हैं। आपके चार पुत्र हैं जिनका नाम क्रम से सुमेरमलजी, मोतीलालजी, पूनमचद जी है।

सेठ शिवजीराम खूबचंद चंडालिया, सरदारशहर

तो इस परिवार वालों का मूल निवास स्थान किशनगढ़ नामक स्थान है मगर कई वर्ष पूर्व सवाई होते हुए यहाँ आये अतएव यहाँ सवाई वालों के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ आये ९५ वर्ष हुए। यहाँ आने वाले सज्जन सेठ गगारामजी चण्डालिया थे। आपके चार पुत्र रामना, सेठ गुलाबचन्दजी, सेठ आसकरनजी और सेठ कालूरामजी। आप चारों ही भाई र व्यापार करने लगे। वर्त्तमान इतिहास सेठ कालूरामजी के वंश का है।

कालूरामजी ने कलकत्ता जाकर नौकरी की। आपके संवत् १९१२ में शिवजीरामजी तथा में गजराजजी नामक दो पुत्र हुए। दोनों ही भाइयों ने मिलकर सवत् १९४२ में कलकत्ते स्थापित की। तथा कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। इस व्यापार में आप लोगों के अच्छा लाभ रहा। सेठ शिवजीरामजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न और व्यापार चतुर थे। आपकी वजनदार मानी जाती थी। आप साधु प्रकृति के महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास संवत् होगया। आपके स्वर्गवास होने के कुछ ही दिन पश्चात् इसी साल सेठ गजराजजी का भी गया। आप दोनों भाई अपनी मौजूदावस्था ही में अलग २ होगये थे। सेठ शिवजीरामजी न था। अतएव पाली के पास हिमावस नामक स्थान से बा० खूबचन्दजी को गया।

बा० खूबचन्दजी बड़े मिलनसार, उदार एवम् सहृदय व्यक्ति हैं। व्यापार में भी आपका है। आजकल आपका व्यापार सवत् १९७८ से ही बीकानेर के प्रसिद्ध सेठ भैरोंदानजी के साथ हो रहा है। जिस फर्म का नाम मेसर्स खूबचन्द जुगराज पड़ता है इस नाम से का व्यापार होता है। तथा मेसर्स जुगराज रिधकरण के नाम से ३९ आर्मेनियम का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त खूबचन्द पूनमचन्द के नाम से बीकानेर में ऊन का है। सेठ भैरोंदानजी सेठिया के नाम से ऊन के प्रेस में आपका साझा है। जो है।

रा हजार हजार सोगन है तू माठची राखी है तो थारो जीव हर मारो राज जावेगा जीरो म्हूँ थारो दावणगीर होऊंगा अठा मु सोमिहजी हे मी लिख्यो ह सो ज बणे जू छूट हजूर हाजिर हूजे अणी म ओछ राखी है ता थाहे माणा लाख सूस है सम्वत् १८२५ रो वरस महा सुद १३"

इस रुक्के मे पाठकों को यह स्पष्टत ज्ञात होगा कि मेहता अगरचन्दजी के कार्यों मे महाराणाजी ना विश्वास था और उनकी सुख दुख की दशा मे वे कितनी हमदर्दी प्रदर्शित करते थे। मेहता अगरचंदजी त पत्र को पाते ही शिवचंद्रजी की मदद से शत्रु के पंजे से छूट कर निकल आये और महाराणा की र उपस्थित हुए। महाराजा ने आपका बहुत सम्मान किया और उसी प्रधानगी के उच्च पद पर आपको ष्ठित किया। कहने का मतलब यह है कि महाराणा को आपकी सेवाओं से बडा सतोष रहा जिसकी २ प्रशसा आपने अपने निम्नलिखित रुक्के मे मुक्त कंठ से की है।

सिद्ध श्री माई मेहता अगरा जोग अप्र मे तो था सपूत चाकर थी नचीना हॉ राज थारा बापरा के थाहरी सेवा बदगी म्हारा माथा पर छ निपट तू म्हारो साव धर्मी छ थारी चाकरी तो सपना मे भी भुला नहीं ई राज माहें आधी रोटी होगी जो मी बटका पेली थाने दे र खामा थारा वश का मू उरीण होवा पावा नहीं सीमोठिया होसी जो तो थारा वस काने आख्या की पलका पर हां रावसी फरक पाडगा तो जीणने श्रीएकलिंगजी पूगसी ई राज म्हे तो म्हारा बेटा बच भी थारा बटा रो उर सा वत्तो छ कतराक समाचार धाभाई रुपा रा साह मोतीराम कूल्यारा कागद मू जाणेगा सम्वत् १८२३ वर्षे वैसाख बुदी १० गुर

महाराणा अरिसिहजी के पश्चात सवत १८२९ मे उदयपुर के सिहासन पर महाराणा हमीर जी विराजे। आप भी मेहता अगरचन्दजी की वीरता, कारकर्दी एव स्वामिभक्ति मे बडे प्रसन्न थे। ाणा हमीरसिहजी केवल ४ सालों तक राज्य कर सवत् १८३४ मे स्वर्गवासी हुए। आपके जीवन काल मे कोई विशेष उल्लेखनीय घटना घटित न हुई।

महाराणा हमीरसिहजी के पश्चात् महाराणा भीमसिहजी उदयपुर के राज्यासन पर आरूढ हुए। समय की बात है कि रामपुरा के चन्द्रावतो को मेहता अगरचन्दजी ने अपने यहां पर शरण दी। इस ा से चन्द्रावतों के विरोधी ग्वालियर के सिंधिया को बडा क्रोध आया और उसने लखाजी तथा ाजी के सेनापतित्व मे मेहता अगरचन्दजी को परास्त करने के लिए एक बहुत बडी सेना भेजी। इस था मेवाड की सेना के साथ घमासान युद्ध हुआ और अंत मे मेहता अगरचन्दजी की ही विजय हुई। प्रकार की और कई घरेलू लडाइयों में मेहता अगरचन्दजी ने हमेशा अपने स्वामी महाराणा भीमसिह का लिया और आजीवन तक वे बडी वीरता से युद्ध करते रहे।

मेहता अगरचंदजी वड़े वीर और रणकुशल व्यक्ति ही नहीं थे वरन् एक अच्छे शा
उन्होंने मेवाड़ के इस अशान्ति काल में मांडलगढ़ का शासन वड़ी योग्यता से किया। आप
निवासियों की सुविधा के लिये कई अच्छे २ काम किये तथा सैकड़ों बाहर के लोगों को ला
आपने वहाँ पर सागर और सागरी नामक दो बड़े २ जलाशय बनाये और किले की मरम्मत करवा
के भय से सुरक्षित कर दिया। उदयपुर के तत्कालीन महाराणाजी ने भी आपकी बहुमूल्
प्रसन्न होकर आपको वहाँ की तलेठी में जालेसवार नामक तालाब जागीरी में बख्शा।

इसके बाद की घटना है कि शाहपुरा नरेश ने बलवा करके मेवाड़ राज्य के जहाज
अपने कब्जे में कर लिया। इस पर उदयपुर के महाराणाजी की आज्ञा लेकर मेहता अगरच
बहुत बड़ी सेना के साथ शाहपुरा के राजाधिराज पर आक्रमण कर दिया। इस चढ़ाई में शाह
राजाधिराज तथा मेहता अगरचन्दजी के बीच घमासान लड़ाई हुई। इस लड़ाई में भी मेहता अग
विजय हुई और जहाजपुर का सारा परगना पुनः मेवाड़-राज्यान्तर्गत आगया।

कहने का मतलब यह है कि मेहता अगरचन्दजी बड़े वीर, रणकुशल तथा स्वामिभक्त
आपके जीवन की प्रत्येक घटना में इन बातों का पूरा २ समावेश था। आप बड़े राजनीतिज्ञ त
भी थे। आपने अपने अन्तिम समय में अपने वंशजों के लिए उपदेशों का एक बहुमूल्य संग्रह
आज भी आपके वंशजों के पास है और जिससे आपकी राजनीतिज्ञता और विद्वत्ता का प
मिलता है।

जहाजपुर की लड़ाई में घायल हो जाने से मेहता अगरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत्
असाढ़ कृष्णा चतुर्दशी को हो गया। आपके स्वर्गवास से महाराणा भीमसिंहजी को बहुत दु
आपने इनके कामदार मौजीरामजी के पास मातमपुरसी के लिये एक कागज भेजा, जिस की
दी जा रही है —

> सिद्धश्री मौजीरामजी महता जोग अप्रंच मेहताजी श्रीशिवशरण हुआ श्रीजी म्हा
> घणी बुरी कीधी, म्हाके तो श्री दाजी राज श्री बाई आज देवलोक हुआ है थारे काधे कँवर
> पणो हो थारे तो मूँ हूँ सो कई फिकर करो मती मनख होसुँ तो थारो जतन ही करसुँ घणी
> काई लिखूँ लिख्यो न जाय सारी बात हिम्मत थी काम कीजो नराई मत लावजो सावण बुदी ५
> सोमवार

उपरोक्त सारे विवरण से मेहता अगरचन्दजी की राजनीति कुशलता, और महाराणा
अगाध विश्वास बहुत आसानी से प्रकट हो जाता है। ऐसे कठिन समय में इतनी बुद्धिमानी के स

आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः भंवरलालजी, पूनमचन्दजी और सिरका है। इनमें से भँवरलालजी व्यापार कार्य्य करते हैं। शेष दोनों पढ़ते हैं।

सेठ जसकरन सुजानमल चण्डालिया, सरदारशहर

इस परिवार के प्रथम व्यक्ति सेठ रायसिंहजी सवाई से यहाँ आकर बसे तथा सा दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम उदयचन्दजी और जैतरूपजी १ वर्तमान इतिहास जैतरूपजी के वंशजों का है। जैतरूपजी के चार पुत्र सेठ कस्तूरचन्दजी, तार जी, छतमलजी और सूरजमलजी हुए। आप सब भाई अलग २ होगये एवम् अपना अपना व्र करने लगे। सेठ कस्तुरचन्दजी के मुकनचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सरदार शहर तथा कत्ता मे व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० मे होगया। आपके जुहारमलजी जसकरनजी नामक दो पुत्र हुए। जुहारमलजी का केवल १५ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास होगया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ जसकरनजी तथा आपके पुत्र कुं० सुजानमलजी हैं। फर्म की सारी उन्नति जसकरनजी ही के द्वारा हुई। आप पहले पहल संवत् १९६३ में कलकत्ता अ यहां आकर आपने पहले रावतमल पन्नालाल बोरड के यहां सर्विस की। इसके पश्चात् आपका साझा होगया। फिर संवत् १९७७ की साल से आपने अपनी स्वतंत्र फर्म उपरोक्त नाम से शुरू और स्वदेशी कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। पश्चात् संवत् १९८८ से आप सुजानमल चण्डालिया नाम से व्यापार कर रहे हैं। आपकी गिद्दी कलकत्ता में ३७। ३८ आर्मेनियम स्ट्रीट मे है। तथा हे शाप नार्मल लोहिया लेन में है। आपके सुजानमलजी नामक एक पुत्र है आप भी व्यापार में लेते हैं। आप लोग प्रारम्भ से ही श्री जैन तेरा पन्थी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ आनंदरूप कस्तूरचंद चंडालिया, जालना

इस खानदान के मालिक मूल निवासी गँठिया (जोधपुर स्टेट) के हैं। आप मन्दिर आम्नाय मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान वाले करीब १५० वर्ष पहिले मारवाड से दक्षिण मे आये। आसाई खेडा नामक गाँव में रहे। इन आने वालों में सेठ श्यामदासजी, दुरगदासजी तथा उदयच ये तीनों भाई मुख्य थे। कुछ समय पश्चात् श्यामदासजी के परिवारवालों ने औरंगाबाद में और दुरग जी के परिवार वालों ने जालना म अपनी दुकानें खोली।

दुरगदासजी के पुत्र सेठ आनन्दरूपजी हुए। आप बडे विद्वान और धर्मप्रेमी पुरुष थे। अ अपने यहाँ सैकड़ों शास्त्रों का संग्रह किया जो अभी भी विद्यमान हैं। मुगलाई स्टेट मे आप बड़े नामी सेठ आनन्दरूपजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ के करीब हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र कस्तूरच बहुत प्रख्यात हुए। निजाम स्टेट के अन्दर आपकी बहुत बड़ी इज्जत थी यहाँ तक कि बहुत दिनों केंटुन्मेंट की तरफ से आपके यहाँ सम्मान के लिये १२ जवान और एक हवलदार हमेशा २४ घंटा पहरा थे। आपकी तरफ से दान धर्म और परोपकार भी बहुत होता था। सेठ कस्तूरचन्दजी का संवत् १९३ स्वर्गवास हुआ। आपके कोई पुत्र न होने से केसरीचन्दजी ब्यावर से दत्तक लाये गये। इनका स्वर्गवास सन् १९१९ में हुआ। इस समय आपके पुत्र केवलचन्दजी विद्यमान हैं।

सेठ हसराजजी खाटेड़—आपका जन्म सवत् १९१० में हुआ। आप बड़े बुद्धिमान तथा कुशल पुरुष थे। आप मारवाड से जालना (निजाम) गये। इस मुसाफिरी मे आपको बगडी से तक पैदल रास्ते से आना पड़ा था। थोड़े दिन जालने मे रहकर आप मद्रास आये। और यहाँ आक्र वरम् मे वैंकिंग की दुकान स्थापित की। तदनन्तर आपने पूनवल्ली में अपनी फर्म स्थापित की। १९४० में आपने अपने छोटे भ्राता मुल्तानमलजी को भी बुला लिया। आपकी बुद्धिमानी और दूर से आपकी फर्मों को बहुत शीघ्रता से तरक्की मिलती गई। कुछ समय पश्चात् आप अपने भाई मुल्ल जी और बड़े पुत्र सागरमलजी के जिम्मे व्यापार का काम छोडकर देश चले गये और धर्म ध्यान में समय व्यतीत करते हुए आप सवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भाई मुल्तानमलजी का वास संवत् १९६५ में हुआ। दोनों भाइयों की मृत्यु हो जाने पर आपकी फर्में अलग २ हो गईं। हसराजजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश सागरमलजी, गुलाबचन्दजी, गणेशमलजी चुन्नीलालजी हैं।

सेठ सागरमलजी खाटेड—आपका जन्म संवत् १९३२ मे हुआ। आप बडे योग्य, व्यापारकुशल तथा उदार पुरुष हैं। आपके हाथों से इस फर्म को बहुत तरक्की मिली सवत् १९५९ में और मुल्तानमलजी ने ट्रिवल्लुर में अपनी फर्म का स्थापन किया। जिसमें आपको खूब सफलता मिली सागरमलजी का भी राज्य दरवार में बहुत अच्छा मान है। आप ट्रिवल्लूर लोकल बोर्ड के पाँच सा मेम्बर रहे। इसी प्रकार चिंगनपेठ सेशनकोर्ट के आप जूरी भी रहे। सवत् १९६९ से संवत् १९८ आपके भाई आपसे अलग २ हुए। सेठ सागरमलजी के कोई सन्तान न होने से आपने अपने छो चुन्नीलालजी को अपने नाम पर दत्तक ले लिया। श्री चुन्नीलालजी का जन्म सवत् १९६१ की फाल्गु तृतीया को हुआ। आप बड़े सज्जन, उदार, व्यापारकुशल तथा सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। ट्रिवल पब्लिक और राजदरबार में आपको बहुत अच्छा सम्मान प्राप्त है। आप यहाँ पर ऑनरेरी मजिस्ट्रेट आपको फर्स्ट क्लास के अधिकार प्राप्त हैं। इसी प्रकार यहाँ के क्लबों, सभाओं और सोसायटियों में बड़ी दिलचस्पी से भाग लेते है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री नवरतनमलजी है।

इस परिवार की दान धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि रही है। प्रथम सवत् १९६१ में श्री हसराजजी के हाथों से बगडी के मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई और आपकी त उस पर ध्वजादण्ड चढ़ाया गया। संवत् १९६५ में सुप्रसिद्ध मुरडावा के प्राचीन मन्दिर के जीर्णोद्धार ने में भी बहुत सहायता दी, और उस पर ध्वजादण्ड चढ़ाया गया। इसी प्रकार करमावस और वा मन्दिरों की प्रतिष्ठा भी आपके द्वारा हुई। इसी खानदान की तरफ से चण्डावल स्टेशन पर एक धर्म भी बनाई गई है। श्री सागरमलजी अपने पिता की तरह ही दानशूर और उदार व्यक्ति हैं। मद्र श्वेताम्बर जैन मदिर की प्रतिष्ठा में आपने बहुत बडी रकम दान दी और उसपर ध्वजादण्ड भी आप तरफ से चढ़ाया गया। इसी प्रकार बिलावस (मारवाड़) के मन्दिर की प्रतिष्ठा मे भी आपने बहुत सहायता दी ओर ध्वजा दण्ड चढ़ाया। बगडी के जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार में भी आपने दस हजार प्रदान किये और आपने करीब तीन वर्षों तक परिश्रम करके इस काम को पूरा किया। सवत् १९

...कांटेड़ (हसराज सागरमल) ट्रिवल्लूर,

सेठ चुन्नीलालजी खांटेड़ (हसराज सागरमल) ट्रिवल्लूर

सेठ गुलाबचन्दजी खाटेड़, कांजीवरम् (मद्रास)

श्री जसराजजी कठौतिया, सुजानगढ़,

स्व० सेठ चादमलजी भूतोड़ि

स्व० सेठ बालचन्दजी कठौतिया, सुजानगढ़.

तोलामलजी S/o चादमलजी भूतो[illegible]

सेठ पूनमचन्दजी तथा लक्ष्मीचन्दजी—आपने संवत् १९५२ में केसरियाजी का एक बड़ा निकाला, इसमें आपने ६० हजार रुपये व्यय किये। सवत् १९५४ में मारवाड़ में अनाज महगा हुआ, इन भाइयों ने अनाज खरीद कर पौने मूल्य में गरीव जनता को विक्री किया, इस सेवा के उपलक्ष्य जोधपुर दरबार महाराजा सरदारसिंहजी ने सिरोपाव, कड़ा, दुशाला आदि इनायत किया। इन बन्धुओं ने बहुत से कुए खुदवाये, आप बन्धु बाली के नामांकित व्यक्ति हुए। आपका खानदान यहाँ "सेठ" नाम से पुकारा जाता है। आप दोनों बन्धु क्रमश सवत् १९७३ तथा १९७६ मे स्वर्गवासी हुए। पूनमचन्दजी के पुखराजजी, भागचन्दजी, रतनचन्दजी तथा सन्तोपचन्दजी नामक चार पुत्र हुए तथा लखमीचन्दजी के कपूरचन्दजी, केसरीचन्दजी तथा बख्तावरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें के चन्दजी तथा भागन्दचजी स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष सब विद्यमान है। आप बन्धुओं का "लखमी पूनमचन्द" के नाम से मोरा बन्दर में जमींदारी तथा बैंकिंग का कारवार होता है। पुखराजजी बन्दर की म्युनिसिपल कमेटी के मेम्बर हैं तथा सन्तोपचन्दजी ने गत वर्ष बी० एस० सी० का इम्ति दिया है। आप गोढवाड़ के प्रथम बी० एस० सी० हैं। यह परिवार गोडवाड के ओसवाल समा नामांकित माना जाता है।

मम्बइया

मम्बइया परिवार, अजमेर

हालाकि मम्बइया परिवार का आज अजमेर शहर मे कुछ भी कारवार नहीं है, लेकिन द्वारा बनाई हुई लाखों रुपयों की लागत की हवेलिया, नोहरे, हजारों रुपयों की बनी हुई दादाबाड़ी छतरियां इनके गत गौरव का पता दे रही है। संवत् १९३९ मे लगभग उनका काम कमजोर हुआ, पूर्व १२०-१२५ वर्षों से ये अजमेर शहर के नामी गरामी करोड़पति श्रीमन्त माने जाते थे। उनका व्यवहार अजमेर में मूलचन्द धनरूपमल के नाम से और बाहर अनोपचन्द मूलचन्द के नाम से चलता अजमेर, रतलाम, बदनोर, उज्जैन, छवड़ा, बम्बई कलकत्ता, टोंक, झालरापाटन, जयपुर, कोटा वगैरह में आपकी दुकानें थीं। इस परिवार के आगमन, व्यवसाय के आरम्भ, उन्नति व सार्वजनिक कामों सिलसिलेवार कुछ भी वृत्त मालूम नहीं होता है। कहा जाता है कि सवत् १८९५ मे इनका आ अजमेर हुआ और मरहठा सरदारों व फोजों के साथ सम्बन्ध रखने से इनका अभ्युदय हु मम्बइया अनोपचन्दजी के पुत्र मूलचन्दजी के समय में व्यवसाय का आरम्भ होना माना जाता मूलचन्दजी के पुत्र धनरूपमलजी के समय में इनके व्यापार और जाहोजलाली की बहुत उन्नति अजमेर में पूज्य दादा जिनदत्तसूरिजी की समाधि दादावाडी में इस परिवार की छतरियाँ बनी हुई अजमेर की धर्म सस्थाओ के प्रवन्ध का भार भी आप ही के जिम्मे था।

मम्बइया धनरूपमलजी के पुत्र बाघमलजी हुए और बाघमलजी के नाम पर राजमलजी द भाये। राजमलजी और उनके पुत्र हिम्मतमलजी के समय में इनका काम कमजोर हुआ। हिम्मतम

कठोतिया

कठोतिया गौत्र की उत्पत्ति—कठोतिया गोत्र का मूल गौत्र सोनी है। जिसका विवरण हम पहले ... परिवार के सज्जन कठोति नामक ग्राम में वास करते थे और फिर वहीं से दूसरे गाँवों में ... जाने से कठोतिया कहलाने लगे।

कठोतिया परिवार, सुजानगढ़

... परसरामजी के पुत्र सेवारामजी, ताराचन्दजी और रतनचन्दजी संवत् १८७९ में लाडनू से ... आये। जिस समय सुजानगढ़ वसा उस समय बीकानेर के तत्कालीन महाराजा रतनसिंहजी ने ... बसाने वालों में आगेवान् समझकर वहुतसी जमीन मकानात एवम् दुकानें बनवाने के लिये प्रदान की। साथ ही कस्टम के आधे महसूल की माफी का परवाना मय खासरुक्के के प्रदान किया। ... परिवार वापस लाडनू चला गया। ताराचन्दजी के कोई सन्तान न थी। वर्तमान परिवार ... के दूसरे पुत्र पदमचन्दजी का है। सेठ पदमचन्दजी के वींजराजजी और पूसामलजी नामक ... हुए।

... वींजराजजी और पूसामलजी दोनों भाई बड़े व्यापारी होशियार तथा कष्ट सहन करने ... थे। आपने संवत् १९८८ में बंगाल प्रान्त में जाकर बोडागाडी नामक स्थान पर ... स्थापित की। इसके बाद आपने घोड़ामारा, डोमार और कलकत्ता में भी अपनी फर्म खोलीं। ... स्वर्गवास हो गया।

... पश्चात् फर्म का कार्य सेठ वींजराज के पुत्र जेसराजजी और सेठ पूसालालजी के पुत्र ... ने सम्हाला। आप दोनों भाइयों के परिश्रम से भी फर्म की उन्नति हुई। सेठ बालचंदजी की ... प्रतिष्ठा थी। आप प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके ...मचन्दजी, मोहनलालजी और नथमलजी नामक चार पुत्र हैं। जेसराजजी के पुत्र का नाम ... है। आप सब लोग मिलनसार और उत्साही सज्जन हैं। आप लोग भी व्यापार का संचालन ... लोग श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। आपको बीकानेर दरबार की ओर से ... और कफियत की इज्जत प्राप्त है। सेठ जेसराजजी स्थानीय म्युनिसिपेलटी के वायस प्रेसिडेण्ट ... ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। वर्तमान में आपका व्यापार, डोमार, हल्दीबाड़ी, सिराजगंज और कलकत्ता में जूट, बैंकिंग और कमीशन का होता है। प्राय. सभी स्थानों पर ... सम्पत्ति बनी हुई है।

भूतेड़िया

... गौत्र की उत्पत्ति—ऐसा कहा जाता है कि संवत् १०७९ में जांगलदेश के सरसापट्टन ... नामक एक राजा राज्य करता था। इसको भूतों के डर से मुक्त कर आचार्य श्री ... ने जैन धर्मावलम्बी बनाया। इन्हीं भूत ताडिया से भूतेड़िया गौत्र की उत्पत्ति हुई।

सेठ गंगारामजी भूतोड़िया का परिवार, लाड़नूं

इस परिवार के लोग बहुत समय से लाडनू मे ही रहते है। इस परिवार में सेठ गगारामज मशहूर व्यक्ति हुए। इन्होंने वर्द्धमान (बङ्गाल) में जाकर अपनी फर्म स्थापित की थी। इनके ति चन्दजी, छोटूलालजी और वीजराजजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगों ने व्यापार में बहुत तरक्की आप तीनों पीछे जाकर अलग २ हो गये, एवम् स्वतन्त्र व्यापार करने लगे।

सेठ तिलोकचन्दजी का परिवार—सेठ तिलोकचन्दजी के दूसरे पुत्र सेठ हजारीमलजी वड़े म कुशल व्यक्ति थे। आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आप लाडनूं की पच पचायती मे वान थे। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके जयकरनजी और मालचन्दजी नामक दो पु दोनों ही गूगे और बहरे हैं। आपका वर्द्धमान मे गगाराम तिलोकचन्द के नाम से व्यापार होता

सेठ हजारीमलजी के भाई सेठ मोहनलालजी के परिवार के लोग इस समय वर्द्धम तिलोकचन्द मोहनलाल और राजशाही में मोहनलाल जयचन्द के नाम से व्यापार कर रहे है।

सेठ छोटूलालजी का परिवार—आपके चार पुत्र सेठ हरकचन्दजी, जुहारमलजी, चादमलज शोभाचंदजी हुए। सेठ जुहारमलजी वडे व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने कलकत्ता में मेसर्स छोटूलाल मल के नाम से फर्म स्थापित की। आपका सवत् १९८८ में स्वर्गवास हो गया। आपके सूरजमलजी कुन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई अलग अलग रूप से व्यापार करने लगे। सेठ सूरज उपरोक्त फर्म के नाम से व्यापार करते हैं। आप धार्मिक व्यक्ति है। आपके इस समय पूनमचन्दजी मलजी और लालचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों भाई मिलनसार है। प्रथम दो व्यापार स करते है। तीसरे पढ़ते है। इस फ़र्म का आफिस ३९ क्लाईव स्ट्रीट में है। इस पर व्याज वैंकिंग ओर वेलिंग का व्यापार होता है।

सेठ चांदमलजी ने मेसर्स छोटूलाल चादमल के नाम से कलकत्ता मे फर्म स्थापित की। आपने अच्छा लाभ उठाया। आपका स्वास्थ्य खराब रहने से यह फर्म उठा दी गई। आप वडे च चतुर और बुद्धिमान सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो गया। शेष जीवनमलजी और धनराजी इस विद्यमान हैं। आप दोनों भाई उत्साही और मिलनसार व्यक्ति है। इस समय आपकी फर्म गंगाराम छोटूलाल के नाम से वर्द्धमान में व्याज, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम कर रही है। अ ओर से लाडनू की गौशाला में ४१००) प्रदान किये गये है। तथा एक धर्मशाला बनी हु वर्द्धमान में २०० वर्षों से आपकी फर्म स्थापित है।

कांसटिया

सेठ संतोषचंद रिखबदास कांसटिया, भोपाल

इस खानदान के पूर्वज सेठ ऋषभदासजी कासटिया मेडते में निवास करते थे। आप होते हुए आस्टा (भोपाल स्टेट) आये और यहाँ १०-१५ साल रहकर फिर भोपाल में आपने अपना

बाबू गोविन्दचंदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.

बाबू धन्नूलालजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ

रायसाहब लक्ष्मीचंदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.

बाबू केशरीचंदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.

—[illegible]। आपका संवत् १९१६ में शरीरावसान हुआ, इसी साल मार्गशीर्ष बदी २ को आपके पुत्र [illegible] का जन्म हुआ।

[illegible] [illegible]दासजी कासटिया—आपकी दिन चर्य्या का विशेषभाग धार्मिक विषय की चर्चा, प्रति[illegible] सामायिक करने में व्यतीत होता था। सम्पत्तिशाली होते हुए भी प्रतिदिन अपनी बिरादरी के [illegible] धार्मिक शिक्षा देते थे, नियम पूर्वक प्रतिवर्ष आप जैन तीर्थों की यात्रा करने जाते थे। [illegible] में आपने एक उपाश्रय की लागत के २२०१) देकर उसे श्रीसंघ के अर्पण किया। सं० १९८२ [illegible] धर्मपत्नी श्रीमती मिश्रीबाई के स्वर्गवास के समय आपने ५ हजार रु० शुभ कार्य्यों में लगाने के [illegible]। आप मक्षी तीर्थ के सभासद् और श्वेताम्बर जैन पाठशाला के प्रेसिडेण्ट थे, आपकी धार्मि[illegible] और प्रामाणिकता के कारण ओसवाल समाज व अन्य समाजों में आपका अच्छा [illegible]। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताते हुए आप संवत् १९८६ की वैशाख सुदी ५ को [illegible]। आपकी मौजूदगी में आपके पुत्र अमीचन्दजी कासटिया ने १० हजार रुपयों का दान [illegible] के लिये किया।

[illegible] अमीचन्दजी कासटिया—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपका बाल्य और यौवन [illegible] की देखरेख में गुजरा, अतः आपकी भी धार्मिक कामों की अच्छी रुचि है स्थानीय श्वेताम्बर [illegible] में आपकी ओर से एक धर्माध्यापक रहते हैं। आप ओसवाल समाज के सम्माननीय गृहस्थ [illegible] प्रतिष्ठित व्यापारी हैं, आपकी फर्म पर "संतोषचन्द रिखबदास कांसटिया" के नाम से [illegible], हुंडी चिट्ठी, रहन व सराफी व्यापार होता है।

समदड़िया

समदड़िया गौत्र की उत्पत्ति—समदड़िया गौत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में महाजन वंश मुक्तावली [illegible] कि पद्मावती नगर के समीप सोढा राजपूत समंदसी अपने आठ पुत्रों सहित बड़ी गरीबी [illegible] था। जैनाचार्य्य श्रीजिनवल्लभ सूरिजी के उपदेश से वह धार्मिक जीवन बिताने लगा। [illegible] पासा पोरवाल ने अपना सहधर्मी समझकर व्यापार में अपना भागीदार बनाया, तथा [illegible] पुत्रों को व्यापार के लिए समुद्र पार भेजा। इन्होंने मौक्तिक, विद्रुम, अम्बर आदि के व्यापार [illegible] द्रव्य उपार्जित किया। समंदसी की संतान होने और समुद्र यात्रा करने से इनके वंशज [illegible]। इस प्रकार समदड़िया गौत्र प्रसिद्ध हुआ।

समदड़िया मेहता मुकनमलजी मोहनमलजी का खानदान, जोधपुर

[illegible] परिवार के पूर्वज समदोजी के पौत्र कोजूरामजी, जब राव जोधाजी ने जोधपुर बसाया, तब [illegible]। इनको होशियार समझकर राव जोधाजी ने अपना दीवान बनाया। इनके प्रपौत्र मेहता [illegible] मालदेवजी अपने साथ गुजरात ले गये थे। इनका पुत्र अकबर के साथ वाली लड़ाई में मारा।

... लोढ़ा परिवार में हुआ था। राजमलजी तक कोटा अथवा पाटन में उनकी १५.०) ... आगार थी। सम्वत्या राजमलजी संवत् १९६० तक अजमेर रहे यहाँ से किशनगढ़ गये। ... लगभग १० साल पूर्व शरीरावसान हुआ। हिम्मतमलजी के नाम पर प्रतापमलजी दत्तक ... समय इस परिवार के कोई व्यक्ति छीपा बडौद में निवास करते है, इनका वहाँ जागीरी का ..., ... राजमलजी तक रहा। जब उनकी हवेलियां बिकीं तब जबलपुर वालों ने व लोढ़ों ने ... २ व्यक्तियों के ताबे में उनकी इमारतें व नोहरे उनके नामकी याद दिला रही हैं।

सचेती, सुचिन्ती

...चिन्ती गोत्र की उत्पत्ति—कहते हैं कि देहली के सोनीगरा चौहान राजा के पुत्र बोहित्थ कुमार ... लिया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। जब उसके शव को दाह संस्कार के लिये ले गये, तो ...र्य श्री वर्द्धमान सूरिजी अपने पाचसौ शिष्यों के साथ तपस्या कर रहे थे। आचार्य्य ने ... उसके कुमार को सचेत किया, इससे राजा ने जैन धर्म स्वीकार किया। इनके पुत्र को ... में जैनाचार्य ने सचेत किया, इसलिये आगे चलकर उनके वंशज वाले सचेती या सुचिंती नाम ...ए।

बिहार का सुचिन्ती परिवार

इस परिवार के लोगों का मूल निवासस्थान बीकानेर का है आप मन्दिर आम्नाय के ... इस परिवार में बाबू महताबचंदजी हुए, आपके कोई सन्तान न होने से आपके नाम पर मनेर ... गोत्रीय बाबू रतनचन्दजी को दत्तक लिया गया। बाबू रतनचंदजी के हीरानन्दजी और ... नामक दो पुत्र हुए। इनमें बाबू गोविन्दचन्दजी बड़े नामाङ्कित और प्रतापी व्यक्ति हुए। ... इस खानदान के व्यापार और जमीदारी की बहुत तरक्की हुई, आपका धर्म प्रेम भी बहुत बढ़ा ... संवत् १९६५ की अगहन सुदी १४ को अपने मकान पर राज गिरी के केस के सम्बन्ध में गवाह ... हार्टफेल से आपका देहान्त हो गया। आपके बाबू धन्नूलालजी, रा० सा० बाबू लक्ष्मीचंदजी ... नामक तीनपुत्र हुए।

... धन्नूलालजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप श्री पावापुरी, कुण्डलपुर, गुणावा ... स्थानों के श्वे० जैन मन्दिरों के मैनेजर है। पावापुरी के जल मन्दिर का जीर्णोद्धार और वहाँ के ... भी आप ही के समय में हुआ। इसके सिवाय पावापुरी के गाँव मन्दिर का विस्तार ... ओं का निर्माण आप ही के समय में हुआ। आपके मैनेजर शिप में इस तीर्थ की ... उन्नति हुई। आपके बाबू जवाहरलालजी और ज्ञानचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू जवाहर-... चन्दजी और शान्तिचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

... बाबू लक्ष्मीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप बिहार के ऑनरेरी

गया। इनके पौत्र भगवानदासजी, महाराजा जसवंतसिंहजी के साथ काबुल गये थे। भगवानदास पौत्र गोकुलदासजी ने महाराजा अजीतसिंहजी की विखे के समय बहुत सेवा की। अतः इनको सागासनी ग्राम जागीरी में मिला। संवत् १७६९ में इनको महाराजा अजीतसिंहजी से दीवानगी का सम्मान हुआ। पुनः इन्होंने महाराजा अभयसिंहजी के समय में संवत् १७८१ में दीवानगी का कार्य किया। प्रपौत्र खेमकरणजी मेड़ते के कोतवाल थे और महाराजा विजयसिंहजी के साथ नागोर के घेरे में सम्मि थे। इनके पुत्र मेहता मूलचंदजी तथा मीठालालजी महाराजा भीमसिंहजी तथा मानसिंहजी के स मारवाड़ में लम्बे समय तक कई परगनों के हाकिम तथा कोतवाल रहे। आप दोनों बन्धुओं को ने बरसोंद देकर सम्मानित किया था।

मेहता मूलचन्दजी के पुत्र मोतीचन्दजी तथा पौत्र रामकरणजी हुए। मेहता रामकरण हुकूमातें करते रहे। इनके कानमलजी तथा चादमलजी नामक २ पुत्र हुए। कानमलजी को एक रुपया साल बरसोंद मिलती थी। मेहता चादमलजी के बड़े पुत्र मानमलजी संवत् १९०२ में मे कोतवाल हुए। इनके छोटे भ्राता जवाहरमलजी थे। मेहता जवाहरमलजी के सुकनमलजी तथा मोहनमलजी २ पुत्र हैं। इनमें मेहता सुकनमलजी, मेहता मानमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। मेहता सुकन के पुत्र सोहनमलजी बी० ए० एल० एल० बी० में पढ़ रहे हैं।

सेठ भेरुबक्षजी समदरिया का परिवार, मद्रास

(सुखलालजी, बहादुरमलजी कानमलजी समदरिया)

इस खानदान के मालिक ओसवाल जाति के समन्दरिया गौत्रीय श्वेताम्बर जैन समाज के आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार का मूल निवासस्थान नागौर का है। इस खान भेरूवक्षजी समन्दरिया हुए। आप अपने जीवनकाल में नागौर में ही रहे, आप नागौर में बड़े धा पुरुष हो गये हैं। आपका जन्म संवत् १८९२ का था तथा स्वर्गवास संवत् १९४३ में हुआ।

आपके तीन हुए जिनके नाम क्रम से श्री सुखलालजी, बहादुरमलजी तथा कानमलजी हैं युत सुखलालजी का जन्म सम्वत् १९२३ में हुआ। आप बड़े प्रतिभाशाली और बुद्धिमान पुरुष हैं। संवत् १९४८ में मद्रास आये और यहाँ आकर आपने अपनी बेंकिंग की एक फर्म स्थापित की। बुद्धिमानी और दूरदर्शिता से आपकी फर्म खूब तरक्की करती गई यहाँ तक कि इस समय यहाँ की फर्मों में से यह एक है। श्री सुखलालजी समन्दरिया अपनी जाति की विधवाओं को प्रा बहुत सा रुपया सहायतार्थ देते हैं। मद्रास साहुकार पेठ के मन्दिर की प्रतिष्ठा आपने बहुत उद्योग से एकत्रित कर करवाई। एवं आपने भी उसमें काफी द्रव्य प्रदान किया है। मद्रास की दादावाड़ी जो एक जङ्गल के रूप में थी, आपके ही प्रयत्न से वह अब बहुत ही रमणीक हो गई है। आपने अपने से तथा लोगों से इकट्ठा करके करीब साठ सत्तर हजार रुपया इसमें लगाया। सार्वजनिक तथा कामों में आप बहुत दिलचस्पी से भाग लेते हैं। पचायती तथा जैन भाइयों के झगड़ों को निपटा आप अपने समय का बहुत सा भाग देते हैं। आपके इस समय नौ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः डूंगर

मजिस्ट्रेट, लोकलबोर्ड के चेअरमेन और डिस्ट्रीक्टबोर्ड के मेम्बर हैं। गवर्नमेण्ट से १९३० में आपको राय
की उपाधि प्राप्त हुई। आपके इस समय छ पुत्र हैं। आपके प्रथम पुत्र बाबू इन्द्रचन्दजी बी० ए०
एल० हैं। आप यहां पर वकालात करते हैं। इनसे छोटे बाबू विजयचन्दजी, श्रीचन्दजी प्रेमचन्दजी और
चन्दजी हैं। बाबू इन्द्रचन्दजी के दो पुत्र हैं। जिनमें बडे का नाम रिखबचन्दजी हैं।

बाबू केशरीचन्दजी—आपका जन्म संवत १९४६ में हुआ। आपके इस समय दो पुत्र हैं
नाम क्रम से बाबू सौभाग्यचन्दजी और कपूरचन्दजी हैं। बिहार शरीफ में यह परिवार बहुत प्रसिद्ध
प्रतिष्ठित है। यहाँ पर आपकी बहुत बड़ी जमींदारी है।

सेठ गुलाबचन्द हीराचन्द सचेती, अजमेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान मेडता (जोधपुर स्टेट) में है। इस परिवार के
सेठ जयचंदजी तथा उनके पुत्र अभयराजजी और पौत्र लक्ष्मीचंदजी वहीं निवास करते रहे। सेठ लक्ष्म
जी के रूपचंदजी तथा वृद्धिचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। वहाँ से सेठ रूपचन्दजी व्यापार के लिये अ
तथा वृद्धिचन्द गवालियर गये।

सेठ वृद्धिचन्दजी सचेती—आपकी योग्यता से प्रसन्न होकर गवालियर स्टेट ने आपको
ट्रेझरी का खजाची बनाया। सन् १८५७ के गदर में आपने खजाने की ईमानदारी पूर्वक रक्षा की।
१९१५ में आपने गवालियर से श्री सिद्धाचलजी का सघ निकाला। संवत् १९२४ मे आपने खजाची के
इस्तीफा दिया। इस कार्य्य के साथ २ आप अपना साहुकारी व्यापार भी करते थे। आपकी
दरबार तथा व्यापारिक वर्ग में अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपने गवालियर मदिर मे संगमरमर के अष्टाप
व नदेश्वरजी बनवाये, आपने फलोदी पार्श्वनाथ नामक प्रसिद्ध तीर्थ में मंदिर के चारों ओर विशाल पर
बनवाया। आपके नाम पर गुलाबचन्दजी सचेती उदयपुर से दत्तक लाये गये।

सेठ गुलाबचन्दजी सचेती—आप अपने पिताजी के साथ तमाम धार्मिक कामों मे सहयोग
रहे। संवत् १९४३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सेठ हीराचन्दजी सचेती हुए।

सेठ हीराचन्दजी सचेती—आपके पिताजी ने संभवनाथजी व आदीश्वर के मदिर का व दादा
वगैरा का प्रबंध भार अपने ऊपर लिया। तब से आप लोग इन सस्थाओं के कार्य्य को भली प्रकार संचा
कर रहे हैं। आप इस समय ओसवाल हाई स्कूल के प्रेसिडेंट हैं। इसके स्थापन मे आपका उत्तम
योग रहा है। स्थानीय ओसवाल औषधालय के भी आप प्रेसिडेंट हैं। इसके अलावा आप श्वे०
कान्फ्रेंस के अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त के सेक्रेटरी तथा स्टेंडिंग कमेटी के मेम्बर हैं। सवत् १९१४ में अ
अजमेर स्टेशन के सम्मुख एक सराय बनवाई है, इस समय आपके ५ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू रतनच
जतनचन्दजी, दौलतचन्दजी, कुशलचन्दजी, और इन्द्रचन्दजी हैं। आप सब बधु सुशील, विनम्र तथा
पिता के पूर्ण आज्ञाधारक हैं। सचेती रतनचन्दजी का जन्म सवत् १९६५ में हुआ। आप फर्म के
व्यापार को सम्हालते हैं। आपसे छोटे जतनचन्दजी का जन्म १९६९ में हुआ। आपने गत वर्ष अ
से बी० कॉम की परीक्षा पास की है। बाबू रतनचन्दजी के नजरचन्द्र तथा इन्द्रचन्द्र नामक २ पुत्र हैं।

कांकरिया, भोपाल

सेठ सुखलालजी समदरिया, मद्रास.

समदरिया, मद्रास.

श्री डूंगरलालजी समदरिया,

स्व० सेठ विरदीचन्दजी सचेती, अजमेर

स्व० सेठ गुलाबचन्दजी सचेती, अजमेर

सेठ हीराचंदजी सचेती, अजमेर.

सेठ केवलचंदजी सचेती, सोमासर.

सेठ हणुतमल मोतीलाल संचेती, लोणार

...ार बवायचा (किशनगढ़ के समीप) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज सेठ ... संवत् १९०५ में व्यापार के लिये लोनार आये। आपके हणुतमलजी, हीरालालजी ...मक ३ पुत्र हुए। संवत् १९५२ के करीब इन तीनों भाइयों का व्यापार अलग

...मलजी का परिवार—आपका स्वर्गवास संवत् १९३७ में होगया। आपके मोतीलाल ... नामक दो पुत्र हुए, इनमें पूनमचन्दजी, हीरालालजी के नाम पर दत्तक गये।

...लजी सचेती—आप इस परिवार में बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपका जन्म ...आ। आप आस पास की पंचायती में नामांकित पुरुष तथा लोनार की जनता ...संवत् १९८७ में बुलढाना डिस्ट्रिक्ट के कुलमी मुसलमान तथा मरहठा लोगों ने मिल ...विरुद्ध विद्रोह उठाया। तथा उन्होंने २७ गांवों में मारवाड़ियों के घर लूटे, बहियें ...आग लगा दी। इस प्रकार उनका दल उत्तरोत्तर बढ़ता गया। जब इस दल ने ...की सबसे बड़ी और धनिक बस्ती लोनार को लूटने का नोटिस निकाला। तब लोनार ...बुलढाना डिस्ट्रिक्ट के कमिश्नर व आफीसरों से अपने बचाव की प्रार्थना की। ...जल्दी कोई उचित प्रबन्ध न होते देख सेठ मोतीलालजी संचेती ने सब लोगों को ...के लिये उत्साहित किया, आपने ३०० सशस्त्र व्यक्ति अपने मोहल्लों की रक्षार्थ तयार ...य एवं स्त्रियों को हिम्मत पूर्वक हमले का मुस्तैदी से सामना करने के लिये ढाढस ...२३।१२।२८ को लूटने वाली जनता का दल लोनार के समीप पहुँचा, तो उन्हें ...गा ने पक्का जाब्ता कर रक्खा है, जिससे वे लोग वापस होगये, पीछे से सरकार की ...नससे यह बढ़ती हुई अग्नि, जो सारे बरार में फैलने वाली थी, यहीं शांत होगई।

"धारा" नामक अविराम जलप्रपात पर हिन्दू स्त्रियों तथा पुरुषों के स्नानादि धार्मिक ...जनता अनुचित हस्तक्षेप करने लगी, उस समय आपने ३ वर्षों तक अपने व्यय से ...प्राप्य अधिकार पाने के लिए लड़ाई लड़ी। इसी बीच बाजे का मामला खड़ा ...गाता से चन्द मुसलमानों ने आप पर हमला किया, जिससे आपके सिरमें २१ घाव ...नारों भ रमी आपके प्रति हमदर्दी तथा प्रेम प्रदर्शित करने के लिये अस्पताल में ...हान दगा करने की ठानली। लेकिन आपने उन्हें सांत्वना देकर रोका। इस ...मानों की यह आपसी रंजिश बहुत बढ़ गई, तब सरकार ने बीच में पड कर 'धारा' ...सुलझाया। दंगे के बाद सवा साल तक सेठ मोतीलालजी बीमार रहे। और ...संवत् १९८९ को इस नरवीर का स्वर्गवास हुआ। आपके सम्मान स्वरूप लोनार ...गया था। महाराष्ट्र, प्रजापत्र व केशरी नामक पत्रों ने आपके स्वर्गवास के समा... ...कालिन किये थे। सेठ मोतीलालजी लोनार के तमाम सार्वजनिक कामों में उदा- ...। आपने 'धार' के समीप एक धर्मशाला बनवाई। स्थानीय अठवाड़े बाजार में

...मदनचन्दजी, केवलचन्दजी, सखरूपचन्दजी, लालचन्दजी, मोतीचन्दजी, पदमचन्दजी ...ना हैं।

...बहादुरमलजी का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप संवत् १९५१ में मद्रास आये और ...चुन्नीलालजी के साथ २ व्यवसाय करने लगे आपके इस समय दो पुत्र है जिनके नाम ...तथा समरथमलजी हैं।

...ज्ञानमलजी का जन्म संवत् १९४१ में हुआ। आप संवत् १९५५ में मद्रास आये। ...इस समय चार पुत्र हैं जिनके नाम सरदारमलजी, लक्ष्मीमलजी, कृपाचन्दजी और प्रकाशमलजी हैं।

इस समय आप तीनों भाइयों की स्वतंत्र तीन दुकाने मद्रास में हैं। आप तीनों भाइयों की तरफ ...मकान पर एक धर्मशाला बनी है। इसी के अन्दर एक मंदिर भी बनवाया गया है।

मुनीम भंवरलालजी समदरिया मेहता, उज्जैन

इस परिवार के सज्जनों का मूल निवासस्थान मेडता (जोधपुर) का था। वहीं से सेठ मेहकरन ...पुत्र शिवकरनजी और पूसकरनजी के साथ उज्जैन आये। यहाँ आपने दस्तकारी का काम प्रारंभ ...शिवकरनजी के कोई संतान नहीं हुई। पूसकरनजी के कस्तूरचन्दजी और उनके सीतारामजी ...भंवरमलजी और रतनलालजी नामक चार पुत्र हुए।

सीतारामजी बड़े समझदार वयोवृद्ध पुरुष हैं। आजकल आप मन्नालाल भागीरथ की उज्जैन ...दुकान पर हैं। शेष तीनों भाई इन्दौर ही में व्योपार करते हैं। सीतारामजी के पाँच पुत्र हैं जिनके ...भंवरलालजी, पन्नालालजी, हीरालालजी, माणकलालजी और चान्दमलजी हैं। भँवरलालजी, ...शिवराजचन्द कल्याणमल की उज्जैन वाली फर्म पर मुनीम हैं आपके नरेन्द्रकुमारसिंहजी नामक ...हैं।

खांटेड

श्री कनीरामजी खांटेड़ का परिवार बगड़ी

(सेठ सागरमल चुन्नीलाल ट्रिवल्लूर)

इस परिवार के मालिकों का मूल निवासस्थान बगडी (मारवाड) का है। आप श्वेताम्बर जैन ...सम्प्रदाय को मानने वाले खांटेड गौत्रीय सज्जन हैं। इस परिवार में श्री कनीरामजी हुए ...मगनीरामजी तथा माणिकचन्दजी हुए। सेठ मगनीरामजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम ...और सुल्तानमलजी था।

दो तीन हजार रुपये खर्च कर पानी के पम्प लगाये, राममन्दिर तथा धारातीर्थ में बहुतसी सहा दी। आप शिवपुर जैनतीर्थ की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर थे। इसी तरह के प्रतिष्ठापूर्ण आजीवन करते रहे। आपने ही लोनार में सर्व प्रथम जिनिंग फेक्टरी खोली आपके अखेच उत्तमचन्दजी, लखमीचन्दजी, तथा गेंदचन्दजी नामक ४ पुत्र विद्यमान हैं। इस समय आप चारों ही फर्म के व्यापार का उत्तमता से सचालन कर रहे हैं। आपका परिवार लोनार तथा आस पास के ओस समाज में नामांकित माना जाता है।

सेठ अखेचदजी—आपका जन्म संवत् १९५० मे हुआ। आपके यहाँ "हणुतमल मोतील नाम से बैङ्किग, सराफी, कपडा का व्यापार तथा जिनिंग फेक्टरी का कार्य्य होता है। लोनार में अ दुकान मातवर है। सेठ उत्तमचन्दजी का जन्म सवत् १९६१ में लखमीचन्दजी का जन्म सवत् १९९ तथा गेंदचन्दजी का जन्म सवत् १९६८ में हुआ। गेंदचन्दजी ने एफ० ए० तक शिक्षा पाई। अ हनुमान व्यायाम शाला का स्थापन किया। आप उत्साही युवक है। सेठ अखेचन्दजी के पुत्र न जी तथा रतनचन्दजी पढते हैं। और उत्तमचन्दजी के पुत्र मदनचन्दजी बालक हैं।

सेठ पूनमचन्दजी सचेती का स्वर्गवास अपने बडे भ्राता मोतीलालजी के ८ मास बाद आपके पुत्र माणकचन्दजी का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप 'हीरालाल पूनमचन्द" के ना व्यापार करते हैं। आपके कपूरचन्दजी, तेजमल तथा पारसमल नामक ३ पुत्र हैं। सेठ चुन्नीलालजी के त्रिवकमलजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र खुशालचन्दजी ने दगे के समय ठगाइयों को पकडा पुलिस को बहुत इमदाद दी थी। आपके छोटे भाई गणेशलालजी, मिश्रीलालजी तथा चम्पालालजी हैं।

सेठ थानमल चंदनमल संचेती, चिंगनपेठ (मद्रास)

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान डूडला (मारवाड) का है। आप श्वेत जैन समाज के बाइस सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। सबसे पहिले इस परिवार के सेठ शेषम "मेसर्स पूनमचन्द श्रीचन्द" के साझे में पूना में व्यापार करते थे। आप संवत् १९७६ की जेठ १ को स्वर्गवासी हुए। आपके चार भाई और थे जिनके नाम भीकमचन्दजी, प्रतापमलजी, थानम तथा जेवंतराजजी थे। सेठ शेषमलजी के स्वर्गवास होजाने के बाद सवत् १९६० में थानमलजी ने चि पेठ में "शेषमल थानमल" के नाम से दुकान स्थापित की। श्री शेषमलजी के पन्नालालजी, घेवरच तथा मिश्रीमलजी नामक तीन पुत्र हुए जिनमें से मिश्रीमलजी, भीकमचन्दजी के यहाँ दत्तक रख दिये प्रतापमलजी के हीराचन्दजी तथा हस्तीमलजी नामक दो पुत्र हुए। हीराचन्दजी के भवरीलालजी रिखबचन्द्रजी नामक दो पुत्र हुए। संवत् १९९८ में शेषमलजी तथा थानमलजी दोनों भाई अलग गये। शेषमलजी के पुत्र पन्नालालजी "मेसर्स शेषमल पन्नालाल" के नाम से अलग स्वतन्त्र दु कांजीवरम् में करते हैं।

सेठ थानमलजी की फर्म इस समय चिंगनपेठ में है। आप बडे सज्जन हैं। तथा जाति भाइयों का अच्छा सत्कार करते रहते हैं। आपकी यहा की पंच पंचापतियों की अच्छी प्रतिष्ठा

की जिम्मेवारी को ग्रहण करके उसे अन्त तक निभा ले जाने के उदाहरण इतिहास में बहुत कम हैं।

ीरामजी बोलिया

महाराणा अरिसिंहजी के समय में ओसवाल जाति के बोल्या वंश के साहा मोतीरामजी भी प्रधान
रे सुप्रसिद्ध रंगाजी के वंशज थे, जो कि महाराणा अमरसिंहजी (बड़े) और कर्णसिंहजी के समय में
के पद पर रहे थे, इन्हीं रंगाजी ने बादशाह जहाँगीर और अमरसिंहजी के बीच समझौता करवाकर
से बादशाही थाना उठवाया था। महाराणा साहब ने इनकी सेवाओं से प्रसन्न होकर हाथी पालकी
म्मान और चार गाँव की जागीर (मेवदा, काणोली, मानपुरा भी जामुणियो) का पट्टा इन्हें बक्षा था।
;र की सुप्रसिद्ध घूमटा वाली हवेली आपने ही बनवाई थी।

प्रधान मोतीरामजी भी इस वंश में बड़े सुप्रसिद्ध पुरुष हुए। आपको भी महाराणा साहब से
क प्राप्त हुए। आपके भाई मौजीरामजी भी महाराणा साहब की आज्ञा से जावद, गोड़वाड़, चित्तौड़,
गढ़, माँडलगढ़ इत्यादि कई स्थानों पर सेना लेकर दुश्मनों से लड़ने गये थे। आपके कार्यों से
णा साहब ने प्रसन्न होकर कई खास रुक्के बक्षे थे उनमें से एक की नकल नीचे दी जा रही है—

श्री रामोजयति

श्री गणेश प्रसादात् श्री एकलिंग प्रसादात्

भाले का निशान

सही

स्वति श्री उदयपुर सुथान महाराजधिराज महाराणा श्रीअमरसिंहजी आदेशात् सा०
मोजीराम घस्य १ अप्र गोड़वाड़ तोंहे सावधरमी जाणे भलाई र [illegible] परा [illegible] नक्कर
ऊपर खपजे " (वगैरा) समत १८२२ वष चैत सुदी ६ सोमेर

दूसरी पत्र के हासिये पर खास श्री हस्ताक्षरों से लिखा हुआ है।

तु खात्र जमा वदगी कीजे थारी कोई मार्ची भूंटी केगा तो [illegible] काटना
बिना ओलखवा दा तो म्हाने श्री एकलिंगजी री आण कदी मन में संदे लावे मत ने थने [illegible]
गोड़वाड़ री भलाव्यो र सो सावधरमी व्हे जणा ने दिलासा दिजे न दगा ने कसर गावे
जोन सजा दीजे म्हारो हुकम र तु या जाणजे सो हू तो तेरे लनो हू खरची लागे जो कई
विचार राखे मत थारी दाय आवे जीन तो दीजे ने हम आवे जसो लो लागे

शाह मोतीरामजी के पश्चात् उनके पुत्र एकलिंगदासजी केवल १८ वर्ष की वय में प्र
गये। मगर आपकी उम्र बहुत कम होने से प्रधान का काम आपके काका सहा मौजीरामजी
मगर जब इनका भी स्वर्गवास हो गया तो एकलिंगजी ने प्रधान के पद से इस्तिफा दे दिया।
साहब की आप पर भी बहुत कृपा रही। आपको कई वार फौजें लेकर भिन्न २ स्थानों पर युद्ध क
जाना पड़ा था। आप बहादुर एवम् वीर प्रकृति के पुरुष थे।

महाराणा भीमसिंह और ओसवाल मुत्सुद्दी

सोमचद गाँधी—सन् १७६८ मे उदयपुर के राज्य सिंहासन को महाराणा भीमसिंहजी
सुशोभित कर रहे थे। इनके राजत्व काल में मेवाड़ की बहुत सी भूमि दूसरों के अधिकार
थी। बहुत से सरदार राज्य से बागी हो गये थे। खजाना एक दम खाली हो गया था।
कि राज्य प्रबन्ध का साधारण खर्च चलाना भी मुश्किल हो रहा था। ऐसी परिस्थिति में सोमजी गां
ड्योढ़ी पर काम कर रहे थे। ये सोमजी ओसवाल जाति के गांधी गौत्रीय सज्जन थे। ये
मान, कुशाग्र बुद्धि एवम् समय सूचक व्यक्ति थे।

यह हम ऊपर लिख चुके हैं कि मेवाड़ का खजाना खाली हो गया था। जब कभी
को द्रव्य की आवश्यकता होती तो उन्हें तत्कालीन चूंडावत सरदार रावत भीमसिंहजी वगैरह
ताकना पडता था। इन भीमसिंहजी ने सब प्रकार से महाराणा को अपने वश कर रखा था
समय का जिक्र है राजमाता ने इन्हीं चूंडावत सरदार से महाराणा के जन्म दिन की खुशी में उत्स
के लिये रुपयों की आवश्यकता बतलाई। मगर चूंडावत बडे चालाक थे। उन्होंने रुपया देने
टाल कर दी। इससे राजमाता बहुत अप्रसन्न हुई। ऐसे ही अवसर को उपयुक्त जान सोमजी
रामप्यारी नामक एक स्त्री के द्वारा राजमाता से अर्ज करवाई कि यदि आप मुझे प्रधान बनादें तो
का प्रबन्ध कर सकता हूँ। कहना न होगा कि राजमाता द्वारा सोमजी प्रधान बना दिये गये।

सोमजी बड़े कार्य्यकुशल और योग्य व्यक्ति थे। सब से प्रथम उन्होंने मेवाड़ की पतन
के कारणों को सोचा। उन्होंने सोचा कि जब तक मेवाड़ी सरदारों के आपसी मनमुटाव व वैमनस्य
मिटाया जायगा, तब तक मेवाड का इस प्रकार की शोचनीय दशा से उद्धार पाना कठिन है।
उन्होंने अपने विचारों को कार्य्य रूप में परिणित करने के लिये शक्तावतों से मेल जोल बढ़ाया और
सहायता से कुछ रुपये एकत्रित कर राजमाता के पास भेजे। जब यह बात रावत भीमसिंहजी

... ...जी ... लाणार (बरार)

मेहता विजयसिंहजी खजाची, श्रमीन भानपुरा (पेज न० ४६६)

... ... (बरार)

लाला

का काम होता है। आपके पुत्र मोतीलालजी, हीरालालजी, पन्नालालजी तथा भ्रमरलालजी व्यापार भाग लेते हैं, तथा फूलचन्दजी और मसुखलालजी छोटे हैं। यह परिवार नासिक जिले के ओस समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। मोतीलालजी बम्ब के ४ पुत्र हैं।

लाला निहालचन्द नन्दलाल बम्ब, लुधियाना

यह खानदान लगभग पांच सौ वर्षों से यहा निवास कर रहा है। इस परिवार के लाला सुखामलजी के लाला गुलाबामलजी बूंटामलजी, तथा भवानीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला गुलाबामलजी, के लाला निहालमलजी, नरायणमलजी, सावनमलजी तथा पंजाबरायजी नामक ४ हुए। लाला निहालमलजी बडे धर्मात्मा व्यक्ति थे। आप यहा की ओसवाल समाज में नामी व्यक्ति थे। सवत् १९४९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र नन्दलालजी तथा चन्दूलालजी थे

लाला नन्दलालजी लुधियाना के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, आपका सवत् १९ में स्वर्गवास हुआ। आपके लाला जगन्नाथजी, अमरनाथजी, मोहनलालजी तथा पन्नालालजी नाम पुत्र हुए। इनमें लाला अमरनाथजी मौजूद हैं। इस समय आप अपनी "निहालचन्द नन्दलाल" न फर्म का संचालन करते हैं। आपका परिवार पुश्तहानपुश्त से चोधरायत का काम करता आ रहा आपके पुत्र मदनलालजी हैं।

लाला गुलबामलजी के द्वितीय पुत्र लाला नारायणलालजी के पुत्र लाला खुशीरामजी बडे दूर तथा धर्मात्मा व्यक्ति हुए। आपने यहां एक उपाश्रय भी बनवाया था।

लाला कालूमल शादीराम बम्ब, पटियाला

यह परिवार सौ वर्ष पूर्व दिल्ली से पटियाला आकर आबाद हुआ। इस परिवार में कालूरामजी तथा कन्हैयालालजी नामक २ बंधु हुए। इनमें कन्हैयालालजी के शादीरामजी, गोंदीरा तथा राजारामजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला शादीरामजी के लाला पानामलजी, सुचनरामजी दौलतरामजी नामक पुत्र हुए। इस समय सुचनरामजी के पुत्र मगतरामजी तथा तरसेमचन्दजी दौलतरामजी के पुत्र संतलालजी विद्यमान हैं।

लाला गोंदीमलजी का जन्म संवत् १९१५ में हुआ था। आप पटियाला के ओसवाल स में प्रसिद्ध व्यक्ति थे। आप चौधरी भी रहे थे। सवत् १९७० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके चांदनरामजी, धर्मचन्दजी तथा मातूरामजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला चांदनरामजी का १९७८ में स्वर्गवास हुआ। लाला धर्मचन्दजीका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप पटियाला मशहूर चौधरी हैं, पटियाला दरबार ने आपको दुशाला इनायत किया। आपके यहां जनरल ठेकेदारी काम होता है। आपके पुत्र कश्मीरीलाल तथा वीरूरामजी बालक हैं। लाला मातूरामजी वय ३४ साल की है। आप जनरल मरचेंटाइज का व्यापार करते हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है।

म मानवर और प्रतिष्ठित मानी जाती है । आपके पुत्र चन्दनमलजी बाल्यका में ही इस फर्म की ओर से दान धर्म और सार्वजनिक कामों में सहायताएँ दी जाती है ।

सेठ बालचन्दजी संचेती का परिवार, मोमासर

... वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्व पुरुष डिगरस नामक स्थान से चलकर मोमासर नामक आग चलकर इनके वंश में कुंभराजजी हुए। कुंभराजजी के रघुनाथजी, ताजसिंहजी, ... और सतीदासजी नामक पाँच पुत्र हुए। आप भाइयों ने सम्वत् १९०८ में मेसर्स ... के नाम से कलकत्ते में फर्म स्थापित किया। आप लोगों की व्यापार कुशलता से फर्म ...गया, इस्लामपुर, पटनागोला आदि स्थानों पर आपकी शाखाएँ कायम हो गई। संवत् ... भाई अलग २ हो गये।

...मलजी क पुत्र वालचन्दजी ने अलग होते ही बालचन्द इन्द्रचन्द के नाम से व्यापार । इसमें आपको बहुत सफलता हुई। आपका मोमासर की पंच पंचायती में अच्छा ... इन्द्रचन्दजी, डायमलजी, सुगनमलजी और हीरालालजी नामक चार पुत्र हैं। आजकल ...ग २ हो गये हैं।

...जी "बालचन्द इन्द्रचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। आप बुद्धिमान् एवम् समझ... हाथों से इस फर्म की और भी तरक्की हुई है। आप धर्म में बड़े पक्के हैं। आपके ...ना और पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ डायमलजी और सुगनमलजी दोनों भाई ...र आपका थोड़ी ही उम्र में स्वर्गवास हो गया। डायमलजी के कोई पुत्र न था और ...रामजी एवं केवलचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। गोविन्दरामजी सेठ डायमलजी के यहाँ ...न म आप दोनों ही भाई सुगनमल गोविन्दराम के नाम से चलानी, जूट और ...रते हैं। आपकी दुकान का पता ४२ आर्मीनियन स्ट्रीट है। आप लोगों ने मोमासर में ... मकान बनवाकर सरकार को दिया है। यह परिवार जैन तेरापंथी सम्प्रदाय का

सेठ रूपचन्द छगनीराम संचेती, वैजापुर (निजाम)

...र का मूल निवास टावरा (जोधपुर स्टेट) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन १८५ वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्वज व्यापार के लिये निजाम स्टेट के वैजापुर नामक ...न के बाद तीसरी पीढ़ी में सेठ जयरामजी सचेती हुए। आपके हाथों से इस परि-...स्थान को बहुत तरक्की मिली। आपने आसपास के ओसवाल समाज में अच्छा

...के धनीरामजी, बच्छराजजी तथा किशनदासजी नामक ३ पुत्र हुए। इन ... १८९९ में अलग २ हुआ। सेठ छगनीरामजी ने अपने पिताजी के बाद

-- -- -- (पन्नालाल नारमल), भुसावल

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया बी ए एल,एल. बी, अहमदनगर

-- -- -- -- -- डाक्टर, शाहपुरा

सेठ चन्दनमलजी पीतल्या (चन्दनमल भगवानदास), अहमदनगर

व्यापार को ज्यादा बढ़ाया। आपका शके १८१७ में ७२ साल की आयु में स्वर्गवास हु
आपके पुत्र रूपचन्दजी संचेती का जन्म शके १८१२ में हुआ। आपने अपनी फर्म पर बागायत के
को बहुत बढ़ाया है। इस समय आपके बगीचे में २ हजार झाड मोसुमी के और २ हजार झाड सतरे
इसके अलावा १ हजार झाड नीबू, अंजीर और अनार के हैं। इस प्रकार आपने नवीन कार्य का साह
स्थापन कर अपने समाज के सम्मुख नूतन आदर्श रक्खा है। आपके बगीचे के फल हैदराबाद तथा
भेजे जाते हैं। आपके यहाँ ३ हजार एकड भूमि में कृषि होती है। आप बड़े मिलनसार तथा सरल
के व्यक्ति हैं। औरंगाबाद जिले में आप सबसे बड़े कृषि तथा बागायात का काम करने वाले सज्जन

सेठ बच्छराजजी का स्वर्गवास शके १८१० में हुआ। आपके भीकचन्दजी तथा जेठमलजी
पुत्र हुए। आप दोनों बन्धुओं के क्रमश फकीरचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक पुत्र हैं। इनके या
तथा बागायात का व्यापार होता है। इसी प्रकार सेठ किशनदासजी शके १८२९ में स्वर्गवास
आपके पुत्र पूनमचन्दजी तथा दलीपचन्दजी हुए। इनके यहाँ कृषि का कार्य होता है। सेठ पूनमच
पुत्र उत्तमचन्दजी, लक्खीचन्दजी तथा पेमराजजी हैं।

सेठ भागचन्द जोगजी संचेती, लोनार

यह परिवार बबायचा (मारवाड़) का निवासी है। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज सेठ
८०।९० साल पूर्व लोनार आये। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले स
आपका संवत् १९४८ में स्वर्गवास हुआ। आपके भागचन्दजी, रतनचन्दजी तथा खुशालचन्दजी
३ पुत्र हुए। इनमें सेठ भागचन्दजी विद्यमान हैं।

सेठ भागचन्दजी सचेती का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप लोनार के ओसवाल स
प्रतिष्ठित व हिम्मत बहादुर सज्जन हैं। आपने रुई के व्यापार में बहुत सम्पत्ति कमाई तथा य
आपके पुत्र पुखराजजी तथा भीकमचन्दजी हैं। पुखराजजी की वय १९ साल की है। आपके यहाँ
चन्द रतनचन्द" के नाम से साहुकारी, रुई तथा कृषि का काम होता है। सेठ रतनचन्दजी के पुत्र
जी १२ साल के हैं। यह परिवार लोनार तथा आसपास के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित समझा ज

भँसाली

भसाली गौत्र की उत्पत्ति—संवत् ११९६ में लोद्रपुर पट्टन में यादव कुल भाटी सगर
राजा राज करते थे। उनके कुलधर, श्रीधर तथा राजधर नामक ३ पुत्र थे। राजा सगर ने जै
जिनदत्तसूरिजी के उपदेश से अपने बड़े पुत्र कुलधर को तो राज्य का स्वामी बनाया, तथा शे
जैन धर्म अंगीकार कराया। इन बधुओं ने चिंतामणि पार्श्वनाथजी का एक मंदिर बनवा कर जैना
से उसकी प्रतिष्ठा करवाई। भंडार की साळ में रहने के कारण इनकी गौत्र "भडसाली" हुई। आगे
इन्हीं श्रीधरजी की अठारवीं पीढी में भसाली थाहरूशाह नामक एक बहुत प्रतापी पुरुष हुए।

थाहरूशाह—लोद्रवा मंदिर के "शतदल पद्मयंत्र" नामक शिला लेख से, तथा भारत ... एपी ग्राफिया इण्डिका नामक ग्रंथ से थाहरूशाह के सम्बन्ध का निम्न वृत्त ज्ञात

... में राजा सगर के पुत्र श्रीधर तथा राजधर ने जैन धर्म से दीक्षित होकर लोद्रपुर ... पार्श्वनाथजी का मंदिर बनवाया। राजा श्रीधर ने जो जैन मंदिर बनवाया था, वह ... के हमले के कारण लोद्रवा के साथ नष्ट हो गया। अत संवत् १६७५ में जेसलमेर ... गोत्रीय सेठ थाहरूशाह ने उसका जीर्णोद्धार कराया और अपने वास स्थान में भी देरासर ... संग्रह किया। सेठ थाहरूशाह ने लोद्रवे के मंदिर की प्रतिष्ठा के थोड़े समय बाद एक ... शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करके सिद्धाचलजी में खरतराचार्य श्री जिनराज सूरिजी से संवत् ... में १४५२ गणधरों की पादुका वहाँ की खरतर वशी में प्रतिष्ठित कराई थी।"

... के सम्पत्ति शाली होने के सम्बन्ध में निम्न लोकोक्ति मशहूर है कि थाहरूशाह ... व्यापार करते थे। एक दिन रूपासिया ग्राम की रहने वाली एक स्त्री चित्रावेल की एंडुर ... में घी बेचने आई। थाहरूशाह ने उसका घी खरीदा और तोलने के लिये उसकी मटकी ... , जब घी निकालते २ उन्हें देर हो गई और मटकी खाली नहीं हुई तो उन्हें बड़ा ... उन्होंने यह सब करामात एंडुरी की समझ इसे ले लिया। उस एंडुरी के प्रभाव से ... असंख्यात द्रव्य हो गया। जिससे उन्होंने अनेकों धार्मिक काम किये। इस समय इनके ... विद्यमान नहीं है।

मेहता किशनराजजी (उर्फ मिनखराजजी) का खानदान, जोधपुर

... खानदान के पूर्वज भंसाली बीसाजी जेसलमेर के दीवान थे। ये राव चूंडाजी के समय में ... साथ इन्होंने बीसेलाव तालाव बनवाया। इसके बाद नाडोजी, अखेमलजी तथा वेरी- ... सालजी ... पर युद्ध करते हुए मारे गये। इनकी धर्मपत्नी इनके साथ सती हुई। ... भंसाली अपने बच्चों का वहाँ मुंडन कराते हैं। इन वेरीसालजी की चौथी पीढ़ी में ... ३ पुत्र हुए जिनके नाम भंसाली मेहता तेजसी, रायसी, तथा श्रीचंदजी थे। इनमें ... पीढ़ी में बोहरीदासजी हुए। इनके सादूलमलजी, मुलतानमलजी तथा सुलतान- ... हुए।

मुलतानमलजी लेनदेन का काम करते थे। इनके सावंतमलजी, सुखराजजी, कुशलराज ... नामक ४ पुत्र हुए। भंसाली कुशलराजजी संवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके ... कपूरराजजी, सम्पतराजजी, मुकनराजजी, बिशनराजजी तथा किशनराजजी ... नामक ६ पुत्र हुए। इनमें से भंसाली छगनमलजी सावंतमलजी के नाम पर दत्तक ... तथा पौत्र मगराजजी भंसाली हैं। भंसाली कपूरराजजी कलकत्ते में दलाली ... के पुत्र ... आबकारी विभाग में हैं। सम्पतराजजी के पुत्र कनकराजजी कलकत्ते

फिरोदिया

श्री उम्मेदमलजी फिरोदिया का खानदान, अहमदनगर

...न का मूल निवास स्थान पीपाड़ (मारवाड़) का है। आपकी आम्नाय श्वेता-
...। इस खानदान में श्री उम्मेदमलजी फिरोदिया सबसे पहले अहमदनगर जिले में आये।
...बुद्धिमानी बहुत बढ़ी चढ़ी थी। यहां आकर आपने साहसपूर्वक पैसा प्राप्त किया और
... की, वहाँ से फिर अहमदनगर आये और कपड़े की दुकान स्थापित की। आपके
... नाम खूबचन्दजी और बिशनदासजी थे। अपने पिताजी के पश्चात् आप दोनों भाई
... का व्यापार करते रहे। इनमें से फिरोदिया खूबचन्दजी का स्वर्गवास सन् १९०१ में और
... का सन् १८९७ में होगया।

... बिसनदासजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः शोभाचन्दजी, माणिकचन्दजी
...। आप तीनों भाई भी कपड़े और मनीलेण्डिङ्ग का व्यापार करते रहे। इनमें से
...स्वर्गवास सन १९११ में हुआ। आप बड़े धार्मिक, शांत प्रकृति वाले और मिलनसार
... पुत्र कुन्दनमलजी फिरोदिया हुए।

...मलजी फिरोदिया—आपका जन्म सन् १८९५ में हुआ। आपने सन् १९०७ में बी०
१९१० में एल० एल० बी० की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। आप सन् १९०८ में फर्ग्यूसन कालेज
...। उस समय भारत में ओसवालों के इने गिने शिक्षित युवकों में से आप एक थे।
...क, ..., और समाज सुधारक पुरुष हैं। जैन जाति के सुधार और अभ्युदय
... हैं। अहमदनगर की पांजरापोल के आप सत्रह वर्षों से सेक्रेटरी हैं। आप यहां के
... चेयरमेन, अहमदनगर के आयुर्वेद विद्यालय, अनाथ विद्यार्थी गृह और हाईस्कूल
... मेम्बर हैं। सन् १९२६ में आप बम्बई की लेजिस्लेटिव कौंसिल में
... पार्टी की ओर से प्रतिनिधि चुने गये थे। इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षण संस्था के चेअर-
... नगर कांग्रेस कमेटी के भी आप बहुत समय तक सेक्रेटरी रहे हैं। अहमदनगर के
...मैन हैं। इसी प्रकार जैन कान्फ्रेंस, जैन बोर्डिंग पूना इत्यादि सार्वजनिक
... घनिष्ट सम्बन्ध है। कहने का तात्पर्य्य यह है कि आप भारत के जैन समाज
... हैं। आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम श्री नवलमलजी मोतीलालजी और
... हैं।

...—आपका जन्म सन् १९१० में हुआ। आपने सन् १९३३ में बी०
...। आप बड़े देश भक्त और राष्ट्रीय विचारों के सज्जन हैं। सन् १९३०
... ने आपने कालेज छोड़ दिया। तथा आन्दोलन में भाग लेते हुए ९ मास

मे सर्विस करते हैं। भसाली सुकनराजजी सबइन्स्पेक्टर पोलिस थे, इनका स्वर्गवास हो गया है भसाली विशनदासजी पोलीस विभाग में थे। अभी आप रिटायर हैं।

भसाली किशनराजजी (उर्फ मिनखराजजी)—आपका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। सन् १८९७ से मारवाड राज की सर्विस में प्रविष्ट हुए। तथा महाराजा सरदारसिंहजी के समय प्रा सेक्रेटरी आफिस में क्लार्क हुए। पश्चात् आप संवत् १९६२ मे पोलिस कान्स्टेबल हुए, एव इस विभा अपनी होशियारी से बराबर तरक्की पाते गये सन् १९१२ से १४ सालों तक आप पब्लिक प्रासीक्यूटर तथा सन् १९२६ से आप सुपरिन्टेन्डेन्ट पोलीस के पद पर कार्य्य करते हैं। आपके होशियारी पूर्ण व की एवज में जोधपुर दरबार तथा कई उच्च पदाधिकारियों ने आपको सर्टिफिकेट दिये हैं। आपके ४ पु जिनमें बड़े जवरराजजी बी० ए० एल० एल० बी जोधपुर में वकालात करते है, कुंदनराजजी ने बी० ए० शिक्षा पाई है। इनसे छोटे रतनराजजी व चंदनराजजी हैं।

भंसाली रतनराजजी कुशलराजजी का खानदान, जोधपुर

ऊपर लिख आये हैं कि इस परिवार के पूर्वज भंसाली जगन्नाथजी के तीसरे पुत्र श्रीचंदजी इनके ५ पाँच पुत्र हुए, जिनमें मझले पुत्र माणकचदजी थे। इनके नाम पर मूलचन्दजी तथा उनके पर वच्छराजजी दत्तक आये। इनका स्वर्गवास संवत् १९०५ मे हुआ। वच्छराजजी के पुत्र फतहराजजी इस परिवार के पास सोजत परगने का खांभल गांव पट्टे था। फतहराजजी ने अपने पूर्वजों की एकत्रित हुई सम्पति को खूब खर्च किया। सवत् १९५२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके उदयराजी उम्मेदरा तथा पेमराजजी नामक ३ पुत्र हुए।

भंसाली उदयराजजी नागोर के मुसरफ तथा महाराणीजी (चव्हाणजी) जोधपुर के काम थे। संवत् १९६४ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र फौजराजजी के पुत्र किशनराजजी, मोहनरा सोहनराजजी तथा उगमराजजी हैं।

भंसाली उम्मेदराजजी भी राज्य की नौकरी करते रहे, इनका स्वर्गवास सवत् १९६९ में गया। इनके जोधराजजी, रतनराजजी, देवराजजी, रूपराजजी तथा करणराजजी नामक पाँच पुत्र हु इनमें रूपराजजी के पुत्र कुशलराजजी, रतनराजजी के नाम पर दत्तक आये हैं। भसाली रतनराजजी जन्म सवत् १९२० हुआ था। आप लगभग १२ साल तक खजाने के नायब दरोगा, बारह साल सब इन्स्पेक्टर पोलिस तथा दस साल तक कोर्ट आफ वार्ड्स् के अकाउण्टेण्ट रहे। सन् १९२८ में रिट हुए तथा फिर बिलाडा तथा भँवराणी ठिकाने में २ साल तक मैनेजर रहे। इधर कुछ मास पूर्व आ स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र कुशलराजजी आडिट आफिस जोधपुर में सर्विस है। इसी करणराजजी के पुन मुकुन्दराजजी भी आडिट आफिस में सर्विस करते हैं।

भंसाली पेमराजजी का स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पौत्र भेरूराजजी डाक तथा सुकनराजजी ट्रिब्यूट इन्स्पेक्टर हैं।

की जेल में गये। राष्ट्रीय की तरह सामाजिक स्प्रिट भी आपमें कूट २ कर भरी है। आपने अपने घर परदा प्रथा का वहिष्कार कर दिया है। अहमदनगर के ओसवाल युवकों में आपका सार्वजनिक र बहुत ही अग्रगण्य है। आपके छोटे भाई मोतीलालजी फिरोदिया का जन्म सन् १९१२ में हुआ। इस समय बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आप बड़े योग्य और सज्जन हैं। आपसे छोटे भाई हस्ती हैं। इनकी वय १३ साल की है।

कोरदिया

सेठ अनोपचन्द गंभीरमल, कोरदिया उदयपुर।

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ रखबदासजी नाथद्वारा से उदयपुर आये। आपने यहाँ मह भीमसिंहजी के राजत्व काल में सम्वत् १८८० से १९०७ तक राज्य में सर्विस की। आपके जिम्मे का काम था। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर महाराणा ने आपको परवाने भी बख्शे थे। आपके अम अनोपचन्दजी, रूपचन्दजी और स्वरूपचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। आप लोग अलग अलग हो गये स्वतन्त्र रूप से व्यापार करना प्रारम्भ किया। सेठ अनोपचन्दजी व्यापारिक दिमाग के सज्जन आपने अपनी फर्म की अच्छी उन्नति की। आपके गोकलचन्दजी और गम्भीरमलजी नामक दो पुत्र यह फर्म सेठ गम्भीरमलजी की है।

सेठ गम्भीरमलजी शांत स्वभाव के व्यापार चतुर पुरुष थे। आपके समय में भी फर्म की उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र सेठ फोजमलजी और सेठ जुहार दोनों भाई फर्म का संचालन करते हैं। आप लोग मिलनसार हैं। सेठ फौजमलजी के सुल्तानसिं और जीवनसिंहजी नामक पुत्र हैं। सुल्तानसिंहजी योग्य और मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल अ फर्म का संचालन भी करते हैं। सेठ जुहारमलजी के मालचन्दजी, छोगालालजी, नेमीचन्दजी, चाँद और सूरजमलजी नामक पाँच पुत्र हैं। प्रथम दो व्यापार में योग देते हैं। तीसरे बी० ए० में पढ़ रा इस समय आप लोग उपरोक्त नाम से बैंकिंग हुंडी चिट्ठी कपास वगैरह का अच्छा व्यापार करते हैं।

डाक्टर कुशलसिंहजी चौधरी, कोठियां (शाहपुरा) का खानदान

इस परिवार के पूर्वज मेवाड़ के हुरडा नामक ग्राम में रहते थे। वहाँ से महाराजा उम्मेदसिं शाहपुराधिपति के राजत्वकाल में यह परिवार कोठियाँ आया। उस समय महाराजा के पौत्र कुँवर रणसिं की सेवा चौधरी गजसिंहजी ने विशेष की। इससे प्रसन्न होकर राज्यासीन होने पर रणसिंहजी ने कोठियाँ में कई सम्मान बख्शे। उसके अनुसार वसंत, होली, शीतलाअष्टमी, रक्षाबन्धन, दशहरा, व ग के त्यौहारों पर गाव के पटेल पंच 'चौधरीजी' के मकान पर आते हैं, तथा सदा से बंधे हुए दस्तूरों का करते हैं। होली के एहदे में दमामी लोग किले में दरबार की पीढ़ियों के साथ चौधरीजी की पीढ़ियाँ

त्साह में चौधरीजी की हवेली पर "राम राम" करने जाता है। इत्यादि सम्मान , इतना ही नहीं, इनके वंशजों को गजसिंहपुरा, जयसिंहपुरा, गणपतियापुरा, रा में मिल थे। चौधरी गजसिंहजी को शाहपुरा दरबार ने बहुत से रुक्के बख्शे अभयराजजी तथा उम्मेदराजजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें चौधरी बच्छराजजी का कार्य किया। इनके तीसरे भाई चौधरी उम्मेदराजजी को उदयपुर दरबार ा तथा हुरडा मे जागीर इनायत की। चौधरी अभयराजजी के पौत्र अर्जुनसिंहजी बहुत सरदशाही के काम किये। आप कुंभलगढ़ की हुकूमत पर भी रहे। इनके में कामदार कोछोला तथा कौंसिल के मेम्बर रहे। आपको अपनी जाति की पचायती या था।

राजजी के पुत्र फतहराजजी हुए। इनके पुत्र स्योलालसिंहजी को भी शाहपुरा दरबार य थे। इनके कल्याणसिंहजी, जालमसिंहजी तथा रघुनाथसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। मारवाड परगने में हुकूमतें करते रहे। आपको शाहपुरा दरबार महाराजा माधोसिंहजी । आपके नाम पर रघुनाथसिंहजी दत्तक आये। चौधरी रघुनाथसिंहजी ने स समय कोटडी कोठियाँ की सरहद के फैसले में इमदाद दी इसलिये प्रसन्न होकर के गम्भीरसिंहजी, किशोरसिंहजी, सगतसिंहजी तथा सवाईसिंहजी नामक ४ पुत्र सगतसिंहजी कोठियों में निवास करते हैं। आपने महकमे कारखानेजात तथा । आपको जीकारे का सम्मान प्राप्त है। आपने नौरतनसिंहजी, लछमणसिंहजी ३ पुत्र हुए। इनमें कुशलसिंहजी विद्यमान हैं।

सिंहजी का जन्म सम्वत् १९५९ में हुआ। अजमेर से इंटरमिजिएट की परीक्षा का अध्ययन किया सन् १९२९ में एल० एम० ओ० की डिगरी प्राप्त की। इसके डिप्लोमा भी प्राप्त किया। सन् १९३० से शाहपुरा स्टेट में स्टेट मेडिकल ओफीसर महाराजा ने प्रसन्न होकर जागीरी बख्शी है, आपके कार्यों से पब्लिक बहुत खुश सक एक पुत्र है। इस परिवार में चौधरी जालिमसिंहजी के पौत्र समर्थसिंहजी रहते हैं। इनके पुत्र इन्द्रसिंहजी हैं।

इस कुटुम्ब में समर्थसिंहजी, जोधसिंहजी, वल्लभसिंहजी, सुगनसिंहजी, चाँदसिंहजी, नामक व्यक्ति विद्यमान हैं। इनमें चौधरी वल्लभसिंहजी ने शाहपुरा स्टेट मदारी व हाकिमी की। आपको शाहपुरा पचायती ने "श्री" का सम्मान दिया है।

कीमती

सेठ रतनलाल रामलाल कीमती, हैदराबाद (दक्षिण)

इस परिवार का मूल निवास रामपुरा (इन्दौर स्टेट) है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय इस परिवार में सेठ रायसिंहजी धूपिया रामपुरे में प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये है, यह

सेठ प्रतापमलजी भनसाली, डूँगरगढ

सेठ गोविन्दरामजी भनसाली, बीकानेर

कुँ० हीरालालजी भनसाली, डूँगरगढ़.

कुँ० मिखनचन्दजी भनसाली, बीकानेर.

खानदान पहले धूपिया परिवार के नाम से पहचाना जाता था। आगे चलकर इस परिवार में सेठ लालजी तथा पन्नालालजी कीमती हुए। इन भाइयों में सेठ पन्नालालजी का जन्म सम्वत् १९०१ में रामपुरे से यह खानदान इंदौर तथा मंदसोर गया। तथा यहाँ से सेठ पन्नालालजी सम्वत् १९ हैदराबाद आये। आप बड़े धर्मप्रेमी तथा साधुभक्त पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७३ में आपके जमनालालजी तथा रामलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ जमनालालजी रामलालजी कीमती—सेठ जमनालालजी का जन्म सम्वत् १९३५ में आप दोनों भाइयों ने अपने पिताजी की मौजूदगी में ही हैदराबाद मे जवाहरात आदि का व्यापार कर दिया था, तथा इस व्यापार में आप बन्धुओं ने अच्छी सम्पत्ति उपर्जित की। हैदराबाद में का जमने पर आपने इंदोर में भी अपनी एक शाखा खोली। सेठ जमनालालजी कीमती के एक पुत्र सुखल हुए थे, आप बड़े होनहार प्रतीत होते थे, लेकिन ३-४ साल की अल्पायु में इनका स्वर्गवास हो ग इनके नाम पर मदनलालजी दत्तक लिये गये। रामलालजी कीमती ने रोशनलालजी कीमती को दत्तक था, लेकिन इनका भी शरीरान्त हो गया। सेठ जमनालालजी कीमती ने अपना उत्तराधिकारी अप भाई रामलालजी को बनाया है, तथा रामलालजी ने सम्पतलालजी को अपना दत्तक प्रगट किया है। जमनालालजी तथा रामलालजी ने सुखलालजी के स्मरणार्थ पचास हजार रुपया, तथा रामलालजी की के स्वर्गवासी हो जाने पर १ लाख रुपया धार्मिक कामों के लिये निकाले जाने की घोषणा की है।

इस परिवार ने सेठ पन्नालालजी तथा सुखलालजी के स्मर्णार्थ रामपुरा में "जमनालाल रा कीमती लायब्रेरी" का उदघाटन किया है। आपने हैदराबाद में एक धर्मशाला बनवाई। हैदराबा मारवाडी लायब्रेरी के लिये एक "कीमती भवन" बनवाया, इसी प्रकार यहाँ स्थानक के लिये एक दिया। आप एक जैन ग्रन्थमाला प्रकाशित कर मुफ्त वितरित करते हैं। इन्दोर में आपकी ओर जैन कन्या पाठशाला चल रही है, तथा यहाँ भी शुभ कामों के लिये एक बिल्डिंग दी है। आपकी जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला में एक जैन बोर्डिंग हाउस बनवाया गया है, इसी तरह मदसौर में इन बन्धु एक प्रसूति गृह बनवाया है। इसी तरह के धार्मिक तथा लोकोपकारी कार्यों में आप लोग लेते रहते हैं। इस समय इन कीमती बधुओं के यहाँ सुलतान बाजार रेसिडेंसी हैदराबाद में जमन रामलाल कीमती के नाम से बेंकिंग जवाहरात का व्यापार होता है। तथा यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों फर्म मानी जाती है। हैदराबाद सिकराबाद, इन्दौर आदि में आपके कई मकानात है। आपके यहां खजूरीबाजार में भी बैंकिंग व्यापार होता है।

पीतलिया

सेठ बदीचन्द वर्द्धमान पीतलिया, रतलाम

इस परिवार के बुजुर्गों का मूल निवास स्थान कुम्भलगढ़ (मेवाड) है। वहाँ इस परिवा राज्य की अच्छी २ सेवाएँ की थीं। वहीं से इस परिवार के सज्जन सेठ बीराजी ताल (जावरा स्टेट) म

भंसाली मेहता अर्जुनराजजी का खानदान, जोधपुर

[इस परिव]ार के पूर्वज भंसाली वोहरीदासजी, जोधपुर में लेन देन का व्यापार करते थे। [...], मुल्तानमलजी तथा सुलतानमलजी नामक तीन पुत्र हुए, भंसाली मेहता मुलतान-[मलजी] साहूकार थे, तथा महाराजा मानसिंहजी के समय में सायरात के इजोर का काम [...भी] आपके द्वारा रकमें उधार दी जाया करती थीं। सेठ मुलतानमलजी के गजराजजी, [...]राजजी नामक तीन पुत्र हुए। नगराजजी भी सायरातों के इजारे का काम करते रहे। [...] स्वर्गवास हुआ। गजराजजी के पुत्र दौलतराजजी तथा सज्जनराजजी ज्युडिशियल [...]न रहे। इस समय इनके पुत्र कानराजजी व मानराजजी हैं।

[...]राजजी के पुत्र खींवराजजी तथा भींवराजजी हुए। खींवराजजी २८ साल से ज्युडि-[शियल...] [भीं]वराजजी हैदराबाद में व्यापार करते थे। आप संवत् १९६० में स्वर्गवासी हुए। [आपके पु]त्र अर्जुनराजजी व किशोरमलजी हैं। मेहता अर्जुनराजजी का जन्म संवत् १९६१ में [हुआ। सन्] १९२५ में बी० ए० पास किया। सन् १९२६ से आप रेलवे आडिट आफिस में [...] इस समय इन्स्पेक्टर आप अकाउण्टेण्ट हैं। भंसाली किशोरमलजी की वय २५ साल [...] १९३० में बा० एस० सी० एल० एल० बी० की परीक्षा पास की है। सन् १९३१ से [...]र्मा" के नाम से जोधपुर में इजनियरिंग तथा कंट्राक्टिंग का काम करते हैं।

सेठ प्रतापमल गोविन्दराम भंसाली, कलकत्ता

[इस परि]वार वाले सज्जन मारवाड़ से बीकानेर राज्य के रायसर नामक स्थान पर आये। [कुछ समय] निवास कर यहाँ से रानीसर नामक स्थान में जाकर रहने लगे। इस परिवार में सेठ [...] दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश सेठ रतनचन्दजी एवम् सेठ पूर्णचन्दजी था। [...]न्दजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमश. सेठ पदमचन्दजी, सेठ देवचंदजी एवम् [...]। सेठ पूरणचन्दजी के प्रतापमलजी एवम् मूलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ [...] काल ही में स्वर्गवास हो गया।

[...]—प्रारम्भ में आप देश से सिराजगंज के पास 'एलंगी' नामक स्थान पर गये। [...] का व्यवसाय शुरू किया। इस फर्म में आपने अपनी होशियारी एवम् बुद्धिमानी [...] की। मगर दैव दुर्योग से इस फर्म में आग लग गई और आपकी की हुई सारी [...] गया। इसके पश्चात् आप अपने सारे जीवन भर नौकरी-ही करते रहे। आपका [...] हो गया। आपके गोविन्दरामजी नामक एक पुत्र हुए।

[...]—आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आजकल आपका परिवार बीकानेर [...]न सम्प्रदाय के अनुयायी है। प्रारम्भ में आपने सर्विस की। आप बड़े व्यापार [...] आपकी तबियत उकता गई एवम् आपके दिल में स्वतन्त्र व्यवसाय करने की [...] संवत् १९५६ में यह सर्विस छोड़ दी तथा हनुमतराम तुलसीराम के साझे में

फर्म स्थापित की। यह साझा संवत् १९६३ तक चलता रहा। इसके बाद इसी साल आपने अ
निज की फर्म मेसर्स प्रतापमल गोविन्दराम के नाम से की। तब से आप इसी नाम से अपना व्यवस
कर रहे हैं। आपका जीवन, बड़ा सादा जीवन है। विद्या से आपको बड़ा प्रेम है। करीब तीन र
पूर्व आपने बीकानेर में गोलछों की गवाड़ में श्री गोविन्द सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की।
सब प्रबन्ध आपकी ओर से हो रहा है। आपके बा० भीखनचन्दजी नामक एक पुत्र है। आप उत्
नवयुवक हैं आजकल आप फर्म के कार्य्य में सहयोग दे रहे हैं।

सेठ प्रतापमलजी—आप इस फर्म के भागीदार हैं। आप श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्
के मानने वाले हैं। प्रारम्भ में आपने भी नेलफामारी में केसरीचन्द मोतीचन्द के यहाँ सर्विस
कुछ वर्षों बाद उनकी नौकरी छोड़ दी एवम् अपने भतीजे सेठ गोविन्दरामजी के साथ प्रतापमल गोविन्
के फर्म में साझा कर लिया। जो इस समय भी है। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः हीरालाल
आसकरनजी, सुगनचन्दजी एवम् जैसराजजी हैं। आप लोगों का आजकल देश में निवास र
श्री डूंगरगढ़ है।

हीरालालजी मैट्रिक पास हैं तथा जैसराजजी इण्टर मिजियेट कामर्स की स्टेडी कर रहे हैं।
सब भाई फर्म के कार्य में सहयोग देते हैं। सेठ प्रतापमलजी के भाई मूलचन्दजी का स्वर्गवास हो गया
आपके जेठमलजी एवम् सुमेरमलजी नामक दो पुत्र हैं। जेठमलजी एफ० ए० पास करके डाक्टरी पढ़ रहे
दूसरे दुकान का कार्य्य करते हैं। इस समय इस परिवार की कलकत्ता में भिन्न २ नामों से भिन्न
व्यवसाय करने वाली ३ दुकानें चल रही हैं।

सेठ हनुतमल हरकचन्द भंसाली, छापर

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ खेतसीजी ने करीब १०० वर्ष पूर्व छापर में आकर नि
किया। आपके हनुतमलजी, उमचन्दजी और हरकचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से हनुतम
एवम् हरकचन्दजी का परिवार शामिल में व्यवसाय कर रहा है। सेठ हनुतमलजी करीब ६० वर्ष
घोड़ामारा गये एवम् वहाँ अपनी फर्म स्थापित की। आप दोनों भाई बड़े प्रतिभा सम्पन्न एवम् व्याप
व्यक्ति थे। आपके व्यापार संचालन की योग्यता से फर्म के काम में बहुत सफलता रही। आपने र
व्यवसाय को विशेष रूप से बढ़ाने के लिये डोमार, कलकत्ता, इसरगंज, अनंतपुर उलीपुर, (रंगपुर) इत
स्थानों पर भिन्न २ नामों से फर्में स्थापित की। सेठ हनुतमलजी का स्वर्गवास हो गया। आप के
समय बुधमलजी दत्तक पुत्र हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं। आपके भंवरलालजी नामक एक पुत्र

सेठ हरकचन्दजी इस समय विद्यमान हैं। आपके हाथों से भी फर्म की बहुत उन्नति हु
इस समय आपने अवसर ग्रहण कर लिया है। आपका छापर की पंच पंचायती में अच्छा मान सम
है। आपके बुधमलजी, मालचन्दजी, डालचन्दजी, थानमलजी और माणकचन्दजी नामक पाँच पुत्र
बड़े पुत्र आपके बड़े भाई हनुतमलजी के नामपर दत्तक गये। शेष अपने व्यापार का संचालन करते
आप सब सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं।

ा उ है बहुत बुरा लगा। वे अब हमेशा इसी चिन्ता मे रहने लगे कि किस प्रकार सोमजी गांधी का कंटक ार्ग मे दूर हो।

इधर प्रधान सोमजी गाधी ने राजमाता द्वारा कई बिगडे सरदारों को खिलअत व सरोपाव दिलवा कर उन्हे वश मे करने की कोशिश की। साथ ही भिडर के स्वामी शक्तावत मोहकमसिहजी के ास जो करीब २० वर्षों मे राज्य-वश के विरुद्ध हो रहे थे, महाराणा को भेजकर उन्हें सम्मान सहित उदय-र बुलवाये। इसी प्रकार रामप्यारी को सलूम्बर भेजकर रावत भीमसिहजी को जो शक्तावतों का जोर हो ाने के कारण उदयपुर छोड कर चले गये थे वापस उदयपुर निमंत्रित किया, क्योंकि उन्हे मेवाड राज्य मरहठों को भगाना था। उपरोक्त काम कर लेने के पश्चात इन्होंने जयपुर और जोधपुर के महा-राजाओं को भी मरहठों के विरुद्ध खडा किया। इस प्रकार कार्य्य कर उन्होने राजपूताने मे मरहठों के खिलाफ एक बहुत बडा वातावरण पैदा कर दिया।

चूंडावत सरदार रावत भीमसिंहजी ने यद्यपि ऊपरी तौर पर सोमजी गाधी वगैरह से मेल कर लिया था मगर उनके दिल में हमेशा सोमजी से बदला लेने की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। उन्होंने इसी च और भी कुछ सरदारों को अपनी ओर मिला लिया। अन्त मे एक दिन जब कि सोमजी महलों मे तब कुरावड के रावत अर्जुनसिह और चावंड के रावत सरदारसिंह दोनों व्यक्ति भी महलो मे पहुँचे। ा जाकर उन्होंने सलाह करने के बहाने से सोमजी को अपने पास बुलवाया और यह पूछते हुए कि मुम्हे हमारी जागीरे जप्त करने का साहस किस प्रकार हुआ" इन दोनों सरदारों ने उनकी छाती मे कटारें ोक दीं। तत्काल रक्त का फव्वारा निकल पडा और दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ और कार्य्य कुशल सोमजी का ा अन्त हो गया। महाराणा साहब के कहने से इनका दाह संस्कार पिछोला की बडी पाल पर किया गया ।ा आज भी उनके स्मारक स्वरूप एक छत्री बनी हुई है।

प्रधान सोमजी के पश्चात् महाराणाजी ने इनके छोटे भाई सतीदासजी तथा शिवदासजी को मश प्रधान एवम् सहायक बनाए। ये दोनों अपने भाई का बदला लेने के लिये कोशिश करने लगे। न्होंने भिंडर के सरदार मोहकमसिहजी की सहायता से सेना एकत्रित की और चित्तौड़ की ओर प्रस्थान या। इस समाचार को सुनते ही उधर से भी कुरावड के रावत अर्जुनसिहजी की अधीनता में चूण्डावत रदारों की एक सेना मुकाबला करने के लिये रास्ते मे आ मिली। अकोला नामक स्थान पर दोनों ओर सेना मे घमासान युद्ध हुआ। प्रधान सतीदासजी विजयी हुए। रावत अर्जुनसिंह रणक्षेत्र छोडकर ाग गये और सतीदासजी ने अपने भाई के हत्यारे को मारडाला। इस प्रकार इन वीर बन्धुओंने ओसवा ने वालों के साथ युद्ध कर अपने भाई का बदला चुका लिया।

मेहता मालदासजी ओसवाल समाज के शिशोदिया गौत्र के सज्जन थे। ये बड़े वीर और क्रमी थे। महाराणा भीमसिंहजी के समय मे सारे राजपूताने में मरहट्टों का बहुत प्राबल्य हो रहा इसी समय में सोमजी गाँधी महाराणा के प्रधान थे। उन्होंने मरहट्टों को अपने देश से निकालने के कई उपाय सोचे। अन्त में, जब सं० १२४४ मे लालसोट नामक स्थान पर जयपुर और जोधपुर की द्वारा मरहट्टे पराजित हो चुके, तब उक्त अवसर को ठीक समझ कर सोमजी ने मेहता मालदासजी को एवम् मेवाड की संयुक्त सेना का सेनापति बनाकर मरहट्टों पर हमला करने के लिये भेजा।

वीर सेनापति मालदास बड़े उत्साह से दोनों सेनाओं का नेतृत्त्व ग्रहण कर उदयपुर से र हुए। रास्ते में आने वाले ग्राम निम्बाहेडा, नकुम्प, जीरण आदि स्थानों पर अधिकार करते हुए आप नामक स्थान पर पहुँचे, जहाँ कि सदाशिवराव नामक मरहट्टा सेनापति मुकाबला करने के लिये प से तैयार बैठा था। कुछ दिनों तक दोनों ओर की सेना में मुकाबिला हुआ। अन्त मे सदाशिवरा शर्तों के साथ शहर छोडकर चला गया। इस प्रकार मेहताजी के प्रयत्न से उनके ही सेनापतित्व में सेना ने मरहट्टी सेना पर विजय प्राप्त की।

कहना न होगा कि उपरोक्त समाचार विद्युत वेग से राजमाता देवी श्री अहल्याबाई के पहुँचा उन्होंने शीघ्र ही तुलाजी सिंधिया एवम् श्रीनाई नामक दो व्यक्तियों की अधीनता में अपने ५ सवार सदाशिवराव की सहायतार्थ भेजे। यह सेना कुछ समय तक मंदसोर में ठहर कर मेवाड की बढ़ी। उधर महाराणा ने भी मुकाबला करने के लिये मेहता मालदास की अधीनता मे सादडी के सु सिंह, देलवाडे के कल्याणसिंह, कानोड के रावत जालिमसिंह, सनवाड के बाबा दौलतसिंह आदि स सरदारों तथा सादिक, पूँजू वगैरह सिंधियों को अपनी २ सेना सहित मरहट्टों के मुकाबले क रवाना किया।

वि० स० १८४४ के माघ मास में दोनों ओर की सेना का हरकियाखाल नामक स्थान पर यु हुआ। दोनों ओर के वीर अपनी वीरता और बहादुरी का परिचय देने लगे। इस युद्ध में मेवाड़ के मेहता मालदासजी, बाबा दौलतसिंहजी के छोटे भ्राता कुशलसिंहजी आदि अनेक वीर राजपूत सरदार पूँजू आदि सिंधी लोग वीरता से लड़ अपने स्वामी के लिये, अपने अपूर्व वीरत्व का परिचय दे, वी को प्राप्त हुए।

कर्नल टाड साहब ने मेहता मालदासजी के लिये एनाल्स आफ़ मेवाड़ नामक ग्रन्थ में ए

[illegible] साधारण दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। सेठ चौराजी के पश्चात् सेठ माणकचंद [illegible] ने क्रमशः इस फर्म के कार्य का संचालन किया। आपका ताल की जनता में [illegible]। सेठ [illegible]चंदजी के अमरचंदजी, वच्छराजजी और सौभागमलजी नामक तीन पुत्र [illegible] आप तीनों ही भ्राताओं के वंशज क्रमशः रतलाम, जावरा और ताल में अलग २ अपना [illegible]।

[illegible]—आपने संवत् १९११ में रतलाम में उपरोक्त नाम से फर्म खोली। साथ ही आपने [illegible], मिलनसारी और कठिन परिश्रम से फर्म के व्यवसाय में अच्छी तरक्की प्राप्त की। आप [illegible] प्रम सराहनीय था। आपके द्वारा इन दोनो लाईनों में बहुत काम हुआ। स्थ.नक- [illegible] में आपका अपने समय में प्रधान हाथ रहता था। राज्य में भी आपका बहुत सम्मान [illegible] से आपको 'सेठ' की उपाधि प्राप्त हुई थी। आप बडे प्रतिभा सम्पन्न, कार्य्य कुशल और [illegible]। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके वर्द्धमानजी नामक एक पुत्र हैं।

[illegible]—आप बडे मिलनसार एवम जाति सेवक सज्जन हैं। आपने भी जाति की सेवा [illegible]। आप अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी रहे। [illegible] के भी आप सेक्रेटरी थे। आपका स्थानकवासी समाज में अच्छा प्रभाव एवम [illegible] व्यापार इस समय रतलाम एवम इन्दौर में हो रहा है।

सेठ भगवानदास चन्दनमल पीतालिया, अहमदनगर

[illegible] वालों का खास निवासस्थान रींया (मारवाड) में हैं। आप श्वेताम्बर जैन [illegible] को माननेवाले हैं। रींया (मावाड़) से करीब १५० बरस पहले सेठ भगवान- [illegible] से चलकर अहमदनगर आये और यहाँ पर आकर अपनी फर्म स्थापित की। [illegible] हुए। आपका स्वर्गवास केवल २५ वर्ष की उम्र में ही हो गया। आपके पश्चात [illegible] रम्भाबाई ने इस फर्म के काम को संचालित किया। इन्होंने साधु साध्वियों के [illegible] स्थानक बनवाया। भगवानदासजी के कोई सन्तान न होने से आपके यहाँ चन्दनमलजी [illegible]। चन्दनमलजी का जन्म सं० १९२९ में हुआ। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। [illegible] १९८८ में हो गया। आप बडे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपके स्वर्गवास के [illegible] का दान किये गये। आपके पुत्र मोतीलालजी और भ्रमरलालजी हैं।

[illegible] का जन्म संवत् १९६२ में हुआ। तथा भ्रमरलालजी का जन्म संवत् १९७१ में [illegible] और योग्य व्यक्ति हैं। भ्रमरलालजी इस समय मेट्रिक में पढ़ रहे हैं। इस [illegible] और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी बडी रुचि रही है।

—— नागपुर मगद (परिचय पेज ४४१ में) बा० जोगराजजी S/o सेठ रेखचन्दजी लूँकड़, फलौदी

— ——— लूँकड़, फलोदी, बाबू चम्पालालजी S/o सेठ रेखचन्दजी लूंकड़ फलोदी.

सेठ खेतसीदासजी जम्मड़ का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के लोग जम्मड़ गौत्र के सज्जन हैं। बहुत वर्षों से ये लोग तोल्यासर (बीकाने नामक स्थान पर रहते आ रहे थे। इस परिवार में सेठ उम्मेदमलजी हुए। आप तोल्यासर ही में रहे साधारण लेन तथा खेती वाडी का काम करते रहे। आपके खेतसीदासजी नामक एक पुत्र हुए। तोल्यासर को छोडकर, जब कि सरदार शहर बसा, व्यापार के निमित्त यहाँ आकर बस गये। यहाँ के १२ वर्ष पश्चात् याने संवत् १९०८ में यहीं के सेठ बींजराजजी दूगड, सेठ गुलाबचन्दजी छाजेड और चौथमलजी आचलिया के साथ २ कलकत्ता गये। तथा सब ने मिलकर वहाँ सेठ मौजीराम खेतसीदा नाम से सामलात में अपनी एक फर्म स्थापित की। मालिकों की बुद्धिमानी एवम् व्यापार चातुरी से फर्म की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी। इसके पश्चात् सवत् १९२८ में सेठ बींजराजजी सेठ खेतसीदासजी ने उपरोक्त फर्म से अलग होकर अपनी नई फर्म मेसर्स खेतसीदास तनसुखदास के से खोली। यह फर्म भी ४० वर्ष तक चलती रही। इस परिवार की सारी उन्नति इसी फर्म से हुई। खेतसीदासजी का स्वर्गवास सवत् १९३६ में ही हो गया था। आपके २ पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमश कालूरामजी एवम् सेठ अनोपचंदजी (दूसरा नाम नानूरामजो) है।

सेठ कालूरामजी का जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आपके छोटे भाई सेठ अनोपचंदजी थे। भाई बडे प्रतिमा सम्पन्न और होशियार व्यक्ति थे। आप लोगों ने व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित सामाजिक वार्तो पर भी आपका बहुत ध्यान था। पंच पंचायती के प्राय सभी कार्यों में आप लोग सह प्रदान किया करते थे। सेठ कालूरामजी बडे स्पष्ट वक्ता और निर्भीक समाज सेवी थे। सेठ अनोपचन्दजी अपने भाई को सहयोग प्रदान करते रहते थे सेठ कालूरामजी का स्वर्गवास संवत् १९६८ में तथा सेठ अ चन्दजी का स्वर्गवास सवत् १९८२ में होगया। आप लोगों का स्वर्गवास होने के पूर्व ही सेठ बींजरा अलग हो चुके थे। सेठ कालूरामजी के तीन पुत्र हुए जिनने नाम क्रमश सेठ मंगलचदजी सेठ बिरदीच और सेठ शुभ करणजी हैं। सेठ अनोपचंदजी के कोई संतान न होने से सेठ बिरदीचंदजी दत्तक गये आप तीनों भाइयों का इस समय स्वतंत्र रूप से व्यापार हो रहा है। संवत् १९८६ तक आप लोग श लात में व्यापार करते रहे।

सेठ मंगलचन्दजी की फर्म मेसर्स खेतसीदास मगलचन्दजी के नाम से कलकत्ता के मनोहरद कटला में चल रही है जहाँ कपड़ा एवम बैंकिंग का व्यापार होता है। सेठ मगलचन्दजी मिलन एवम समझदार व्यक्ति हैं। आपके रिधकरनजी और चन्दनमलजी नामक २ पुत्र है।

सेठ बिरदीचन्दजी का जन्म संवत् १९४८ का है। आप मिलनसार एवम उत्साही सज्जन आपका ध्यान भी व्यापार की ओर अच्छा है। आपने अपने हाथ से ही कलकत्ता में एक कोठी खरीद है। सरदार शहर में आपकी आलीशान हवेली बनी हुई है। आपकी फर्म कलकत्ता में ११३ क्रासस्ट्रीट मेसर्स खेतसीदास मिलापचन्द के नाम से चल रही है। आपके मिलापचन्दजी नामक एक पुत्र है।

... रामजी जम्मड़ सरदारशहर

सेठ विरदीचन्दजी जम्मड़, सरदारशहर

... जम्मड़ सरदारशहर

कुँवर मिलापचन्दजी S/o विरदीचन्दजी जम्मड़, सरदारशहर

... गन्चूर आये, तथा वहाँ से बलारी आये और कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप ... चतुर व्यक्ति थे। आपने अपने हाथों से ८-१० लाख रुपयों की सम्पत्ति कमाई। ... स्वर्गवासी हुए। आपके भतीजे सेठ डूंगरचन्दजी भी आपके साथ व्यापार में मदद ... १९६५ के करीब स्वर्गवास हुआ। डूंगरचन्दजी के हजारीमलजी, बस्तीमलजी ... इनमें हजारीलालजी, सेठ चत्राजी के नाम पर दत्तक गये। इनका संवत् १९६५ में ... इनके पुत्र लच्छीरामजी सम्वत् १९८४ में स्वर्गवासी हो गये। सेठ बस्तीरामजी ने प्रतिष्ठा कराई है। आप सम्वत् १९७५ में स्वर्गवासी हो गये।

... समय में इस कुटुम्ब मे बस्तीरामजी के पुत्र आईदानजी तथा लच्छीरामजी के पुत्र ... आपकी दुकान चत्राजी डूगरचन्द के नाम से व्याज का काम करती है। यह दुकान ... फर्मों की मुकादम है। तथा बहुत मातवर मानी जाती है। इस दुकान के ... धारेचा सिवाणा निवासी हैं। आपके परिवार में सेठ भोजाजी सीवाणे के ... पौत्र परशुरामजी संवत् १९४४ में बलारी आये, तथा कपड़े का व्यापार शुरू ... में आप स्वर्गवासी हुए। आसूरामजी "आसूराम" बहादुरमल के नाम से कपडे का ...। आप समझदार तथा होशियार पुरुष हैं। आपके पुत्र बहादुरमलजी १५ साल के हैं।

सेठ मालचन्द पूनमचन्द लूँकड़, चिंचवड़ (पूना)

... मारवाड़ (पीपाड के पास) के निवासी हैं।। वहा से सेठ बरदीचन्दजी ... (चिचवड के पास) आये और यहाँ दुकान की। इनके मालचन्दजी ... पुत्र हुए। मालचन्दजी सवत् १९५० में चिंचवड़ आये। सवत् १९६३ में ... सेठ मालचन्दजी के पूनमचन्दजी और भीकमचन्दजी तथा मगनीरामजी के ... नामक पुत्र हुए। भीकमचन्दजी जातिउन्नति व धार्मिक कामों में सहयोग ... आपका स्वर्गवास हुआ। इस समय इस परिवार में सेठ गुलाबचन्दजी लूँकड़ ... पुत्र रामचन्द्रजी, रघुनाथजी, गणेशमलजी तथा सूरजमलजी एव कालूरामजी के पुत्र ... हैं।

... लूँकड़ शिक्षाप्रेमी सज्जन हैं। आप श्री फतेचन्द जैन विद्यालय चिंचवड के ...। आपके छोटे भ्राता व्यापार में भाग लेते हैं। आप चिंचवड़ के प्रतिष्ठित व्यापारी ... आम्नाय का मानने वाला है।

खजांची

शुभकरणजी जम्मड की हवेली, सरदारशहर

चलकर इसी परिवार के पुरुष जांजणजी जैसलमेर की राजकुमारी गंगा महाराणी के साथ करीब ३५० पूर्व बीकानेर आये। आपके पुत्र रामसिंहजी को तत्कालीन बीकानेर महाराजा ने खजाने का इनायत किया। इसी समय से इस परिवारवाले खजांची कहलाते चले आ रहे हैं।

रामसिंहजी के पुत्र वेणीदासजी का परिवार ही इस समय बीकानेर में निवास कर रह इसी परिवार में आगे चलकर सेठ उदयभानजी हुए। इनके कुशलसिंहजी और किशोरसिंहजी नाम पुत्र हुए। किशोरसिंहजी का परिवार नागोर चला गया। वेणीदासजी के बाद क्रमशः पीरराजजी, दासजी, तखतमलजी, मैनरूपजी, गेंदमलजी, हुए। गेंदमलजी के तीन पुत्र हुए आसकरनजी, धनसुख और मैनचंदजी। इनमें से धनसुखदासजी के बाद क्रमश कस्तूरचंदजी, और हरकचन्दजी हुए। ह जी के चार पुत्र भमरचदजी, आबडदानजी, तेजकरनजी और सूरजमलजी हुए। वर्तमान फर्म सेठ तेज के पुत्र सेठ प्रेमचदजी की है।

सेठ प्रेमचदजी यहाँ के स्टेट जौहरी हैं। आप मिलनसार व्यापार चतुर और पुरुष हैं। आपने अपकी एक ब्राच कलकत्ता में भी जवाहरात का व्यापार करने में लिये खोली। अतिरिक्त अजीतमल माणकचद के नाम में साझे में भी एक कपडे की फर्म खोल कर व्यापार की उन्नति आपने धार्मिक कार्यों में बहुत खर्च किया। आप कई जगह कई सभा सोसाइटियों के सभापति और रहे। आपको बीकानेर श्री संघ ने एक बहुत ही सुन्दर मानपत्र भेंट किया है। जिसमें आपकी उ सहृदयता और धार्मिकता की तारीफ की गई है। आपके इस समय माणकचंदजी, मोतीचन्दज हीराचंदजी नामक तीन पुत्र हैं। माणकचन्दजी व्यापार में भाग लेते है।

खजांची विजयसिंहजी का खानदान, भानपुरा

इस खानदान वाले सज्जनों का पहले निवास स्थान मारवाड था। इनकी उत्पत्ति चौहान पूतों से हुई। ऐसा कहा जाता है कि इस परिवार के पूर्व पुरुषों ने सम्राट अकबर के प्रातिय का काम किया था। अतएव खजांची कहलाये। पश्चात् बादशाहत की हेराफेरी से इस परिवार के पुरु हुए महाराजा यशवतराव प्रथम के राजत्व काल में रामपुरा भानपुरा चले आये।

इस परिवार में आगे चलकर तनसुखदासजी नामक एक बड़े वीर और प्रतिभासपन्न व्यक्ति कहा जाता है कि महाराजा होल्कर की ओर से होने वाली गरासियों की लडाई में वे मारे गये। मुँडकटाई में महाराजा ने प्रसन्न होकर उनके वंशज के लिए रामपुरा भानपुरा जिले के मारडा, और जमूणियां के कुल ग्रामों पर जमींदारी हक्क इनायत फरमाये। इसका मतलब इन स्थानों की सरकारी आमदनी पर २) सैकडा दामी के बतौर आपको मिलने लगा। इसके बा १९०६ में १००० बीघा जमीन भी आपको जागीर स्वरूप प्रदान की। इसके अतिरिक्त भी आप प्रकार के हक्क प्रदान किये। वर्तमान में आपके वंशजों को सरकार से इस जागीर के एवज में नगद मिलते हैं। इस समय इस परिवार में खजाँची विजयसिंहजी हैं। आप इन्दौर स्टेट के निसरपुर स्थान पर अमीन है। आप मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। जहां २ आप अमी वहां २ आप बड़े लोकप्रिय रहे। इस समय आपके अजीतसिंह और बलवन्तसिंह नामक दो पु

...सुभकरनजी का जन्म संवत् १९६५ का है। आप भी आजकल अपना स्वतंत्र व्यापार ...कटरा में मेसर्स खेतसीदास शुभकरन जस्मड़ के नाम से कर रहे है। आप भी ... व्यक्ति हैं। आपकी भी सरदार शहर में एक सुन्दर हवेली बनी हुई है। यह ...परिवार तेरापंथी संप्रदाय का मानने वाला है।

नखत

मुकीम फूलचन्दजी नखत, कलकत्ता

...परिवार के पूर्व व्यक्ति जैसलमेर रहते थे। वहाँ से सेठ जोरावरमलजी बंगाला बस्ती ...(यू० पा०) में आये। आपके पुत्र बख्तावरमलजी ने यहाँ कपड़े का व्यापार प्रारम्भ ... अपनी व्यापारिक प्रतिभा से इसमें अच्छी उन्नति की। धार्मिक क्षेत्र में भी आप ... यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया और श्री जिनकुशल सूरि महाराज की चरण पादुका ...आपके कन्हैयालालजी, मुकुन्दीलालजी और किशनलालजी नामक तीन पुत्र हुए। आप ... हो गया। सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू फूलचन्दजी हुए।

...नखत—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न और तेज नजर के व्यक्ति थे। आप १४ वर्ष ...कलकत्ता आये। यहाँ आपने जवाहरात का व्यापार शुरू किया। इसमें आपको आशातीत ... आपको संवत् १८८० में लार्ड रिपन ने कोर्ट ज्वेलर नियुक्त किया था। आप आजीवन ... सिखाये हुए बहुत से व्यक्ति नामी जौहरी कहलाये। आपका स्वर्गवास संवत् १९४१ ...बड़ा सरल प्रकृति के पुरुष थे। आपका स्थानीय पंच पंचायती में बहुत नाम था। ... नामी जौहरी और प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर ... ब्यावर से दत्तक आये।

...नखत—आपने सर्व प्रथम सेठ लाभचन्दजी के साझे में "लाभचन्द मोतीचन्द" ... का व्यापार किया। आपकी इस व्यापार में अच्छी निगाह है अतएव आपने ...प्राप्त की। इस फर्म के द्वारा "लाभचन्द मोतीलाल फ्री जैन लिटररी और टेकनिकल ...जिसमें आज केवल लिटररी की पढ़ाई होती है। आपने अपने पिताजी की इच्छानुसार ... लेन में फूलचन्द मुकीम जैन धर्मशाला के नाम से एक बहुत सुन्दर धर्मशाला ...। इस धर्मशाला में बहुत अच्छा इन्तजाम है। आपने सम्मेद शिखरजी के मामले में ... बहुत मदद की है। जाति हित की ओर आपका अच्छा ध्यान रहता है। ... को खरीदने में जो रुपया आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी से आया था उसे वापस ... किया गया है। उसमें आपने १५०००) का कम्पनी का कागज उदारता पूर्वक ...है। आप मिलनसार, समझदार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके इस समय फतेचंदजी

कोचेटा

सेठ कुन्दनमल मगनमल कोचेटा, अचरापाकम् (मद्रास)

इस परिवार का मूल निवास जसवन्तावाद (मेडते के पास) है। वहां से इस परिवार के ... कोचेटा लगभग ७० साल पूर्व मुरार (ग्वालियर) गये, तथा व्यवहार स्थापित ... नामी पुरुष थे। आपने ही व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। आपके चन्दनमल ... नामक २ पुत्र हुए। कोचेटा चन्दनमलजी का जन्म संवत् १९१३ में हुआ। आप ... व्यापार करते थे, तथा फिर शिवपुरी में कपडे का व्यापार चालू किया। आप ... तथा आपके पुत्र फतेमलजी सवत् १९८९ में स्वर्गवासी हुए। सेठ कुन्दनमलजी कोचेटा ... में हुआ। आप शिवपुरी में कपडे का व्यापार करते रहे। आप धार्मिक प्रवृति ... १०५८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मगनमलजी कोचेटा हुऐ।

... कोचेटा—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप मेट्रिक तक शिक्षण ... सार्वजनिक कामों में योग देने लगे। आप यहां के सरस्वती भवन के संचालक, ... समिति के सेक्रेटरी थे। वहां की जनता में आप प्रिय व्यक्ति थे। शिवपुरी ... में मद्रास आये, तथा यहां आपने जैन सुधार लेखमाला प्रकाशित कर जैन ... किया, इसी तरह एक जैन पाठशाला स्थापित करवाई। यहां से २ साल बाद ... (चिगनपेठ) आये तथा यहां बैङ्किग व्यापार चालू किया। इस समय आपने ... में लोंकाशाह जैन विद्यालय का स्थापन किया है। आप जैन गुरुकुल ब्यावर के ... कार्य्यालय के सेक्रेटरी हैं। तथा मूथा जैन विद्यालय चल्दा के सेक्रेटरी है। ... समाज के गण्य मान्य व्यक्तियों में हैं। और शिक्षा तथा समाजोन्नति के हरएक कार्य ... लेते रहते हैं। आपके पुत्र आनन्दमलजी बालक है।

सेठ ...लाल लालचंद कोचेटा, चोदवड़ (भुसावल)

... का स्थापन सेठ रघुनाथदासजी ने अपने निवासस्थान पीपलाद (जोधपुर) से ... चोदवड में किया। आपका परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। ... संवत १८९० में हुआ। आपके लालचन्दजी तथा ताराचन्दजी नामक २ पुत्र ... भाइयों का जन्म क्रमश: सवत् १९२० तथा २५ में हुआ।

... कोचेटा—आप बुद्धिमान तथा व्यापार चतुर पुरुष थे, आपने अपनी दुकान ... खामगाव तथा अकोला में खोलीं और इन सब स्थानों पर जोरों ... की इज्जत व प्रतिष्ठा को बढ़ाया। संवत् १९८२ में आपका स्व... भाई ताराचन्दजी निसंतान स्वर्गवासी हुए। सेठ ... माणकचन्दजी तथा सोभागचन्दजी नामक पाँ...

नामक एक पुत्र हैं। आपके बडे पुत्र इन्द्रचन्दजी का स्वर्गवास हो गया, उनके सुरेन्द्रचन्दजी नामक पुत्र आप मन्दिरमार्गीय सज्जन हैं। आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार होता है।

श्री आसकरणजी नखत, राजनांद गाँव

लगभग ७० साल पूर्व मारवाड के भियासर नामक स्थान से आसकरणजी नखत राजनांद आये। तथा व्यापार शुरू किया। धीरे २ आपकी राज्य में प्रतिष्ठा बढी। राजनांदगाँव के र घासीदासजी, सेठ आसकरणजी नखत से बहुत प्रसन्न थे। तथा राज्य के महत्व के मामलों में स लिया करते थे। नखतजीने राजनांदगांव के आदितवारी, बुधवारी, कामठीबाजार, बोहरा लेन आदि बा बसवाये। ओसवाल जाति को राजनांदगाँव में बसाने तथा उसे हर तरह से इमदाद देने में आ पूर्ण लक्ष्य था। राजनांदगांव का व्यापारिक समाज आपके उपकारों का प्रेम पूर्वक स्मरण करता है। रिया में आपकी बहुत बडी प्रतिष्ठा थी। तथा राजा साहिब आपकी सलाहों की बहुत इज्जत करते संवत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके दत्तक पुत्र लखमीचन्दजी भी संवत् १९७८ में गुजर ग अब इस समय लखमीचन्दजी के पुत्र सूरजमलजी मौजूद हैं। इनकी वय १३ साल की है।

सेठ मयकरण मगनीराम नखत, (कुचेरिया) जालना

इस खानदान के लोगों का मूल निवासस्थान बड्डू (जोधपुर स्टेट) का है। आप श्वेता मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। कुचेरे से उठने के कारण आपको कुचेरिया नाम से वि पुकारते हैं। इस खानदान के रघुनाथमलजी करीब सवा सौ वर्ष पहले मारवाड से दक्षिण में आये। अ यहाँ आकर खेडे में अपना व्यापार चलाया, तदन्तर इनके पुत्र मयकरणजी ने जालना में उक्त नाम अपनी फर्म स्थापित की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३५ में हो गया। आपके मगनीरामजी और ध नामक दो भाई और थे। इनमें मगनीरामजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ और धनजी का स्वर्ग संवत् १९२२ में हो गया था। सेठ मयकरणजी और मगनीरामजी के निसतान गुजरने पर सेठ मगनीरा के नामपर सूरजमलजी को दत्तक लिया। सेठ मयकरणजी के स्वर्गवासी होजाने पर सेठ सूरजमलजी फर्म के काम को सम्हाला। आपने इस फर्म की बहुत तरक्की की। आपका स्वर्गवास संवत् १९५६ में हु

इस समय इस फर्म के मालिक श्री सेठ सूरजमलजी के पुत्र मोहनलालजी कुचेरिया हैं। आ संवत् १९३६ में जन्म हुआ। आपके पुत्र न होने से आपनेकिशनलालजी को दत्तक लिया। इस खान की दानधर्म की ओर भी अच्छी रुचि रही है। यहाँ के मन्दिर की प्रतिष्ठा में आपने ५०००) सहायत रूप में प्रदान किये थे। आपकी दुकान पर आढत, रूई, वगैरह का धंधा होता है।

कोचेटा मोतीलालजी— आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। आपने कई वर्षों तक मलकापुर गोरक्षण संस्था का काम देखा। आप ही के परिश्रम से सवत् १९ में मलकापुर में स्थानकवासी सभा का अधिवेशन हुआ, इसकी स्वागत कारिणी के सभापति आप आपने सवत् १९८९ में तमाम सासारिक कार्यों से निवृत होकर दीक्षा गृहण की।

आप के शेष चारों भ्राता अपनी बोदवड, खामगाँव, अकोला, अमलनेर तथा मलकापुर दु का संचालन करते हैं। बरार व खानदेश में यह परिवार अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। सेठ मूलचन्दज पुत्र रतनचन्दजी, भागचन्दजी, भाऊलालजी तथा चम्पालालजी व्यापार में सहयोग लेते हैं। मोतीला के रामलालजी, रिखबदासजी तथा भीमलालजी और हीरालालजी के कान्तिलालजी, मगनमलजी, अजितना व धरमचन्दजी नामक चार पुत्र हैं। कान्तिलालजी ने कांग्रेस आंदोलन में सहयोग लेने के उपलक्ष्य तीन मास के लिये कारावास प्राप्त किया है।

सेठ मानमल चांदमल कोचेटा, भुसावल

यह परिवार पर्वतसर (मारवाड) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज सेठ मानमर चाँदमलजी तथा बृजलालजी नामक तीन भ्राता व्यापार के लिये भुसावल आये तथा लेनदेन का व्य शुरू किया। इन्हीं भाइयों के हाथों से व्यापार को तरक्की मिली। इन तीनों सज्जनों का स्वर्ग क्रमशः १९८२, ७७ तथा सं० १९७४ में हुआ। कोचेटा ब्रजलालजी के पन्नालालजी व केसरीचन्दजी न २ पुत्र हुए। इनमें केसरीचन्दजी, मानमलजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ पन्नालालजी का स्वर्ग सं० १९७१ में हो गया। इनके पुत्र कन्हैयालालजी, चाँदमलजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ पन्नाला के बाद इस दुकान के व्यापार को केसरीचन्दजी तथा कन्हैयालालजी ने ज्यादा बढ़ाया। आपके बोदवड़, फैजपुर, व भुसावल के खेती, आढ़त व लेन-देन का व्यापार होता है। तथा आस पास ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। सेठ चाँदमलजी ने बोदवड़ में एक उपाश्रय बनवाया इसी तरह अमलनेर के स्थानक में भी आपने सहायता दी। अमलनेर में आपके कई मकानात हैं।

श्री कन्हैयालालजी कोचेटा, वणी (बरार)

यह परिवार बड्डू (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज हजारीमलजी कोटेचा लगभ ५० वर्ष पूर्व वणी के पास नादेपेरा नामक स्थान में आये। आपका स्वर्ग संवत् १९८० में हुआ। आपने संवत् १९५० के लगभग वणी में सेठ रायमल मगनमल की भागीदार हीरालाल हजारीमल के नाम से व्यापार शुरू किया तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पति तथा प्रतिष्ठा प आपके पुत्र कन्हैयालालजी विद्यमान हैं।

सेठ कन्हैयालालजी कोचेटा की उम्र ४० साल की है। आप इधर दो सालों से "हीरा हजारीमल" नामक फर्म से अलग हो कर "मूलचन्द लोनकरण" के नाम से कपड़ा तथा सराफी का अ स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। आप तेरा पथी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं, तथा शास्त्रों की अच्छी ज

... ओसवाल समाज में आपका परिवार नामाङ्कित समझा जाता है। आपके पुत्र ...चन्दजी हैं।

सेठ पन्नालाल ताराचंद कोटेचा, वणी (बरार)

इस परिवार का निवास ... (मारवाड) है। देश से सेठ ताराचन्दजी कोटेचा लगभग ३० ... आये, तथा वहाँ से वणी आकर सेठ "हीरालाल हजारीमल" फर्म पर कार्य किया। इधर ... कपड़ा तथा सराफी का अपना घरू व्यापार करते हैं। आपका जन्म संवत् १९३५ में ... ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित सज्जन हैं। तथा मिलनसार एवं समझदार व्यक्ति है। ...लालजी कोटेचा का जन्म सं० १९५९ में हुआ। आप भी तत्परता से व्यापार में भाग ...हारी युवक हैं।

... ताराचन्दजी के भतीजे कालूरामजी कोटेचा सेठ "हीरालाल हजारीमल" नामक फर्म के १० ...ता हैं। आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ है। आप होशियार तथा सज्जन व्यक्ति हैं।

सांढ

...गोत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ११७५ में सिद्धपुर पाटण में जगदेव नामक ... निवास करता था। इसके सूरजी, संखजी, साँवलजी, सामदेवजी आदि ७ पुत्र हुए। ...सूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिवोध दिया। सांवलजी का बड़ा पुत्र बडा मोटा ताजा था अतः ... राजा सिद्धराज ने "सड मुसंड" कहा। फिर इन्होंने राजा के मस्त सांढ को पछाडा, इससे ... हो गई और आगे चलकर यह सांढ गौत्र हो गई। इसी तरह जगदेव के अन्य पुत्रों से ...खा, पुनमियाँ आदि शाखाएँ हुईं।

सांढ तेजराजजी का खानदान, जोधपुर

... परिवार के पूर्वज सांढ भगोतीदासजी मेड़ते में रहते थे। इनके पौत्र शोभाचन्दजी ... पुत्र) ने जोधपुर में आकर अपना निवास वनाया। इनके पुत्र खींवराजजी हुए। ... शताब्दि के मध्य काल में इस परिवार का व्यापार बहुत उन्नति पर था। महाराजा ... जोधपुर राज्य से इस खानदान का लेन-देन का बहुत सम्बन्ध था। स्टेट के बाहरों ... दुकाने थी। इन दुकानों के लिये जोधपुर महाराज बख्तसिंहजी विजयसिंजी तथा ... परिवार को कस्टम की माफी के परवाने बख्शे, तथा अनेकों रुक्के देकर इस खानदान ...।

... सिंघवी इन्द्रराजजी के साथ एक युद्ध में गये थे। इसी तरह डीड़वाने की

सेठ रेखचंदजी लूकड़, आगरा.

स्व० सेठ आसकरणजी नखत, राजनादगा.

श्री मगनमलजी कोचेटा, मदुरांतकम् (मद्रास).

कु० माणकचन्दजी खजाची (प्रेमचन्द माणकचन्

फौज में भण्डारी प्रतापमलजी के साथ और बलूंदे के पास झगडे में सिंघी गुलराजजी के साथ सॉंड खींव-राजजी गये थे। इन युद्धों में सम्मिलित होने के लिए इनको रतनपुरा का ढीवडा और एक बावडी इनाय हुई थी। संवत् १८९७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र शिवराजजी तथा पौत्र तेजराजजी भी रियास के साथ लाखों रुपयों का लेन देन करते रहे। आप लोग जोधपुर के प्रधान सम्पतिशाली साहुकार थे। सं तेजराजजी जोधपुर में दानी तथा प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास १९४८ में हुआ। आ पुत्र रङ्गराजजी तथा मोहनराजजी हुए। सेठ रङ्गराजजी १९५८ में स्वर्गवासी हुए। तथा सेठ मोहनराज विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आपके समय में इस फर्म का व्यापार फैल हो गया तथा इस समय आप जोधपुर में निवास करते हैं। रंगराजजी के नाम पर अमृतराजजी दत्तक हैं।

सेठ केवलचन्द मानमल सांढ, बीकानेर

अठारहवीं शताब्दी में इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ सतीदानजी मेड़ता से बीकानेर आये आपके हुकुमचन्दजी और हुकुमचन्दजी के केवलचन्दजी नामक पुत्र हुए। आपने सम्वत् १८९० में उपरो नाम से गोटाकिनारी की फर्म स्थापित की।। इसमें आपको बहुत सफलता रही। आप मन्दिर संप्र के सज्जन थे। आपके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम सदासुखजी, मानमलजी, इन्द्रचन्दजी, सूरजमलजी व प्रेमसुखजी था। आप सब लोगों का परिवार स्वतन्त्र रूप से व्यापार कर रहा है। सेठ मानमलजी प्रतिभावान व्यक्ति थे। आपने दिल्ली में अपनी एक फर्म स्थापित की थी और आप ऊँटों द्वारा वहाँ म भेजते थे। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। आपके धार्मिक विचार अच्छे थे। आपका स्वर्गवास गया। आपके केसरीचन्दजी नामक पुत्र हुए।

वर्तमान में सेठ केशरीचन्दजी ही व्यापार का सचालन कर रहे हैं। आपके हाथों से इस फर्म व्यापार की ओर भी तरक्की हुई। आपने दिल्ली के अलावा कलकत्ता में भी यही काम करने के f फर्म खोली। इस प्रकार इस समय आपकी तीन फर्में चल रही हैं। आप मन्दिर मार्गीय व्यक्ति आपका स्वभाव मिलनसार और उदार है। आपने स्थायी सम्पत्ति बढ़ाने की ओर भी काफी ध्यान रखा। बीकानेर में कोट दरवाजे के पास वाला कटला आपही का है। इसमें करीब १॥ लाख रु खर्च हुआ। इस समय आपके कोई पुत्र नहीं है।

भाभू

भाभू गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि रतनपुर के राजा ने माहेश्वरी वैश्य समाज के गौत्रीय भाभूजी नामक पुरुष को अपना खजांची मुकर्रर किया। जब राजा रतनसिंहजी को सांप ने और जैनाचार्य्य जिनदत्तसूरि ने उन्हे जीवनदान दिया। तब राजा अपने मन्त्री, खजाची आदि सहित धर्म अंगीकार किया। इस प्रकार खजाची भाभूजी की संताने "भाभू" नाम से सम्बोधित हुई।

सेठ रेखचन्दजी लूंकड़, आगरा

[illegible] का मूल निवास फलोदी (मारवाड) है। संवत् १९०५ में फलोदी से सेठ [illegible] व्यापार के लिये आगरा आये, तथा सेठ लक्ष्मीचन्द गणेशदास के यहाँ मुनीमात का [illegible] १९११ में सेठ सुलतानचन्दजी के पुत्र रेखचन्दजी आगरा आये तथा अपने नाम से [illegible]। और इसकी विशेष उन्नति भी आपके ही हाथों से हुई। आप बड़े व्यापार कुशल सज्जन [illegible] १९८६ में स्वर्गवासी हुए। इस समय आपके पुत्र नेमीचंदजी तथा फतहचन्दजी [illegible] करते हैं। आप की फर्म "रेखचन्द लूंकड़" के नाम से बेलनगंज आगरा में व्यापार करती [illegible] कई मिलों की सूत तथा कपड़े की एजन्सियां हैं। तथा इस व्यापार में आगरे में [illegible] मानी जाती है। फलोदी में भी आपका परिवार प्रतिष्ठा सम्पन्न है।

सेठ सागरमल नथमल लूंकड़, जलगांव

[illegible] परिवार का मूल निवास खेजडली (जोधपुर स्टेट) में है। यह परिवार स्थानकवासी [illegible] है। [illegible] से सेठ सागरमलजी लूंकड़ जलगांव आये, तथा सेठ जीतमल तिलोकचन्द [illegible] व्यापार आरम्भ किया है। आपने अपनी बुद्धिमत्ता एवं होशियारी से व्यापार में सम्पत्ति [illegible] परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाया है। सेठ सागरमलजी ने जलगांव ओसवाल जैन बोर्डिंग [illegible] की सहायता दी है। इस संस्था के तथा स्थानीय पाँजरापोल के आप सेक्रेटरी हैं। [illegible] समाज में आप प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं। आपका हेड आफिस "सागरमल [illegible] जलगांव में है। आपने अपनी दुकान की शाखाएँ इन्दोर, खंडवा, तथा बुरहानपुर में [illegible]। इन सब दुकानों पर कपडे तथा सूत का थोक व्यापार होता है। बुरहानपुर के ताप्ती [illegible] इस फर्म के पास है। इस समय सेठ सागरमलजी के पुत्र नथमलजी, पुखराजजी, [illegible] मलजी हैं। ये चारों बधु पढ़ते हैं।

सेठ प्रतापमल बुधमल लूंकड, जलगांव

[illegible] परिवार के पूर्वज मूल निवासी फलोदी के हैं। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज सेठ महराजजी [illegible] (पाचाद से ५ मील) आये। इनकी छठी पीढ़ी में लूंकड गुमानजी हुए। इनके [illegible] नामक दो पुत्र थे। सम्वत् १८६९ में सेठ सरदारमलजी पैदल मार्गद्वारा [illegible]। पीछे से आपके छोटे भ्राता मूलचन्दजी के पुत्र मोहकमदासजी भी सम्वत् [illegible] सेठ सरदारमलजी के पुत्र सेठ बुधमलजी लूंकड हुए। सेठ बुधमलजी के फौज- [illegible] चन्दजी तथा प्रतापमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से वाँकोदी से सेठ

लाला जगतूमलजी भाभू का खानदान, अम्बाला

... मन्दिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है। आप मूल निवासी धनोर के हैं, अत ... मशहूर हुए। इस खानदान में लाला सुचनमलजी के लाला जेठूमलजी, लाला ... जगतूमलजी तथा लाला रलियारामजी नामक ४ पुत्र हुए।

...—आपका जन्म सन् १८७६ मे हुआ था। अम्बाला की "आत्मानन्द जैनगज" नामक ... के सतत परिश्रम से बनकर तयार हुई। आप यहाँ की स्कूल कमेटी के प्रधान थे। ... संस्थाओं तथा पजाब की जैन संस्थाओं को काफी इमदाद दी। अपनी मृत्यु ... तरह हजार रुपयों का दान किया। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिता कर ... स्वर्गवासी हुए। आपके स्मारक में यहाँ एक "जगतूमल जैन औषधालय" स्थापित ... लाभ उठाते हैं। आपके ४ पुत्र हैं जिनमें लाला सदासुखरायजी, लाला मुन्नीलालजी ...रामजी बी० ए०, लाला रतनचंदजी के साथ व्यापार करते हैं।

...रामजी—आपका जन्म सवत् १९६१ में हुआ। आपने सन् १९२६ में बी० ए० ... आत्मानन्द जैन सभा पजाब के ऑनरेरी सेक्रेटरी व जैन हाई स्कूल अम्बाला की कमेटी ... अलावा आप गुजरानवाला गुरुकुल की कमेटी के मेम्बर, अम्बाला चेम्बर ऑफ कामर्स ... कम्पनी के डायरेक्टर, जैन रीडिंग रूम अम्बाला के प्रेसिडेण्ट, जगतूमल ... तथा हस्तिनापुर तीर्थ कमेटी के मेम्बर हैं। कहने का तात्पर्य यह कि आप प्रतिभाशाली ... लाला सदासुखरायजी के पुत्र केसरदासजी, मुन्नीलालजी के पुत्र ओमप्रकाशजी, विमल... तथा धर्मचन्दजी और रतनचन्दजी के पुत्र फीरोजचन्दजी हैं।

लाला दौलतरामजी भाभू का खानदान, अम्बाला

... मन्दिर आम्नाय का उपासक है। इस खानदान में लाला फग्गूमलजी के लाला ...रामजी, बुलाकामलजी तथा शादीरामजी नामक ४ पुत्र हुए।

...—आपका जन्म सवत् १९१५ में हुआ था। आप बडे नामी और प्रसिद्ध ... आत्मारामजी महाराज के उपदेश को स्वीकार किया था। आपने अपने जीवन ... हस्तिनापुर तीर्थ की सेवा में लगाये, तथा उसकी बहुत उन्नति की। इस काम में ... पास से लगाये। सवत् १९८१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके गोपीचंदजी, ... हरिचन्दजी, इन्द्रसेनजी नामक ५ पुत्र हुए।

...—आपका जन्म सवत् १९४२ में हुआ। आपने गवर्नमेंट की सर्विस व ... उन्नति की। आपने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाने का काफी लक्ष दिया है। ... हाई स्कूल की मेनेजिंग कमेटी के सदस्य तथा आत्मानन्द जैन सभा के मन्त्री हैं। ... दास रिखबदासजी, ज्ञानदासजी, सागरचन्दजी, सुमेरचन्द तथा राजकुमार ... ने सन् १९२४ में बी० ए० तथा १९२६ में एल० एल० बी० की डिग

सतोपचन्दजी सम्वत् १९३४ में तथा सेठ प्रतापमलजी १९४० में जलगांव आये, और यहाँ कपडे व्यापार आरम्भ किया। सम्वत् १९६२ में सेठ फोजमलजी स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भाई बहादुरम के शिवराजजी तथा जुगराजजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें जुगराजजी सेठ प्रतापमलजी लूंकड के पर दत्तक गये।

सेठ शिवराजजी का जन्म सम्वत् १९४९ तथा जुगराजजी का १९५२ में हुआ। आप सज्जन "प्रतापमल बुधमल" के नाम से कपडे का थोक व्यापार करते हैं, तथा जलगाँव के व्यापारिक स में प्रतिष्ठित व्यवसायी समझे जाते हैं। इन्दौर मे भी आपने एक शाखा खोली है।

इसी तरह इस परिवार में सन्तोपचन्दजी के पौत्र (रिखबदासजी के पुत्र) भवरीलालजी वशीलालजी हैं। तथा मोहकमदासजी के पौत्र कन्हैयालालजी आदि वाकोडी में व्यापार करते हैं।

सेठ रेखचन्द शिवराज लूंकड़ का खानदान, फलोदी

इस परिवार का मूल निवास फलोदी है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के माननेवाले हैं। परिवार में सेठ आलमचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी लूंकड फलादी से पैदल चलकर व्यापार के लिये गये तथा वहाँ फर्म स्थापित की। आपके पुत्र चुन्नीलालजी का जन्म सम्वत् १८९५ में हुआ। आपने परिवार की प्रतिष्ठा को विशेष बढ़ाया। आप धार्मिक प्रवृति के पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् में हुआ। आपके अनराजजी, चाँदमलजी, रेखचन्दजी, भोमराजजी तथा सुगनमलजी नामक ५ पुत्र इनमें सेठ अनराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में तथा चाँदमलजी का सम्वत् १९६५ में हुआ। चाँदमलजी के पुत्र माणकलालजी पनरोटी में अपना स्वतंत्र व्यापार करते है।

— सेठ रेखचन्दजी लूकड का जन्म सम्वत् १९२८ में हुआ। आप फलोदी के ओसवाल सम प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं। वृद्ध होते हुए भी आप 'ओसर मोसर आदि कुरीतियों के खिलाफ हैं। आपने १९५९ में बम्बई में "मूलचन्द सोभागमल" की भागीदारी में व्यापार शुरू किया तथा सवत् १९ स्वतन्त्र दुकान की। संवत् १९७२ में आपने पनरोटी (मद्रास) में अपनी दुकान स्थापित की। बदनमलजी, जोगराजजी, शिवराजजी, सोहनराजजी तथा चम्पालालजी नामक पाच पुत्र हुए। बदनमलजी का स्वर्गवास अल्पवय में संवत् १९६४ में हो गया, और इनकी धर्मपत्नी ने दीक्षाग्रहण व लूंकड जोगराजजी ने पनरोटी में अपनी स्वतंत्र दुकान करली है तथा शेप तीन भाई अपने पिताजी के व्यापार करते है। इस दुकान पर पनरोटी तथा मायावरम् में व्याज का काम होता है। लूंकड जोग के पुत्र मांगीलालजी, शिवराजजी के गजराजजी तथा पारसमलजी और सोहनराजजी, के केशरीमल हैं।

सेठ भोमराजजी के पुत्र फकीरचन्दजी है। आप पनरोटी तथा राजमनारकोडी में बैंकिंग करते हैं, आपके पुत्र देवराजजी तथा जसराजजी हैं। सुगनमलजी के पुत्र नथमल तथा ताराचंद हैं।

इस परिवार का व्रत उपवास व धार्मिक कार्यों की ओर बहुत बडा लक्ष है।

सेठ चन्नाजी डूंगरचंद, लूंकड़, बलारी

यह परिवार राखी (सीवाणा-मारवाड) का रहनेवाला है। इस परिवार के पूर्वज सेठ

हासिल की। आप प्रतिभाशाली युवक हैं तथा आत्मानन्द जैन हाई स्कूल कमेटी के मेम्बर हैं। आप बन्धु बाबू ज्ञानदासजी ने सन् १९२८ में बी० ए० सन् १९३० में एम० एस० सी० तथा १९ एल० एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। आपका स्कूली जीवन बहुत प्रतिभापूर्ण रहा है। आप ए तथा एल० एल० बी की परीक्षाओं में सारी पंजाब युनिवर्सिटी में प्रथम आये। इसके लिये गोल्ड तथा सिल्वर मेडल भी मिले। आप आत्मानन्द जैन हाई स्कूल के ओल्ड बॉयज ऐसोसिए प्रेसिडेंट हैं। और भी आपका जीवन बहुत अनुकरणीय है। आपके छोटे बंधु बाबू सागरचन्द ए० के अंतिम वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। आपका भी स्कूली जीवन बहुत उज्वल है। कई ि आप युनिवर्सिटी में प्रथम रहे हैं। आपकी योग्यताओं का सम्मान गवर्नमेंट ने सर्टिफिकेट देक था। इनसे छोटे सुमेरचन्दजी, गुजरानवाला गुरुकुल में पढ़ते हैं।

लाला हरिचन्दजी यहाँ के पंच हैं। आपके टेकचन्दजी तथा दीवानचन्दजी नामक २ इसी प्रकार लाला मुकुन्दीलालजी के पुत्र वीरचन्दजी तथा इन्द्रसेनजी के पुत्र प्रेमचन्दजी हैं।

लाला मसानियामल आलूमल भाभू, अम्बाला

इस खानदान का मूल निवास स्थान थनौर है। इस खानदान में लाला बहादुरमलजी मसानियामलजी हुए। इनका संवत् १९४० में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र आलूमलजी संवत् में स्वर्गवासी हुए। आलूमलजी के लाला छज्जूमलजी लाला धर्मचन्दजी तथा लाला संतलालजी तीन पुत्र हुए।

लाला छज्जूमलजी भाभू—आपका जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आप अम प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। तथा अम्बाला स्थानकवासी समाज के चौधरी हैं। गवर्नमेंट से भी आप बाजार चौधरी रहे हैं। इसी प्रकार स्थानीय गौशाला के भी आनरेरी सुपरिण्टेण्डेण्ट आपने अपने नाम पर अपने भतीजे लक्ष्मीचन्दजी को दत्तक लिया। बाबू लक्ष्मीचन्दजी स्था समाज के मुख्य व्यक्ति हैं। आपकी वय ५० साल की है। आपके पुत्र रामलालजी, चिरंजी जयगोपालजी, विमलप्रसादजी तथा जुगलकिशोरजी हैं। इनमें लाला रामलालजी तथा चिरंजी उत्साही युवक हैं, तथा स्थानकवासी सभा और जैन युवक मंडल के कामों में अग्रगण्य रहते हैं। यहाँ "मसानियामल आलूमल" के नाम से बैंकिंग, बजाजी, ज्वेलरी तथा सराफी व्यापार होता है।

लाला संतलालजी—आप बड़े धर्मात्मा तथा समाज सेवी पुरुष थे। संवत् १९६३ में ४० उम्र में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके बाबूरामजी तथा प्यारेलालजी नामक २ पुत्र हुए। लाला जी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप अम्बाला स्थानकवासी पंचायत के सेक्रेटरी तथा की ओर से असेसर हैं। पंजाब स्था० जैन कान्फ्रेंस के सेक्रेटरी भी आप रहे थे। इस समय उसकी कमेटी के मेम्बर हैं। आपके पुत्र टेकचन्दजी तथा पारसदासजी हैं। आपके यहाँ सूत तथा बेङ्किग व्यापार होता है। लाला प्यारेलालजी भी यही व्यापार करते हैं। इनके पुत्र रोशन अमरकुमारजी तथा श्यामसुन्दरजी हैं।

लिखा है कि "मालदास मेहता प्रधान थे और उनके डिप्टी मौजीराम थे। ये दोनों बुद्धिमान और र थे।" "Maldas mehta was civil member with Maujiram as his Deputy, both men of talent and energy" इत्यादि।

मेहता देवीचन्दजी

मेहता अगरचन्दजी के बाद उनके बड़े पुत्र देवीचन्दजी मेवाड़ राज्य के प्रधान मन्त्री (Prime Minister) के पद पर अधिष्ठित हुए। पर कुछ ही वर्षों बाद जब उन्होंने देखा कि मेवाड़ाधिपति उग्र और प्रजाहित कार्यों में उनकी सलाह पर ध्यान नहीं देते हैं तो वे अपने प्रधान मन्त्री के पद से अलग हो गये। इतना ही नहीं उन्होंने प्रधान मन्त्री का पद स्वीकार न करने की भी सौगन्ध खा ली।

मेहता देवीचन्द जी के कार्य्य काल में किसी दबाव के कारण मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने सुप्रसिद्ध झाला जालिमसिंहजी को माँडलगढ़ का किला प्रदान कर दिया और इस सम्बन्ध में महाराणा ने मेहता देवीचन्दजी को एक पत्र लिखा, जिसका भाव यह है "माँडलगढ़ का किला खालसा तथा जागीर के सब गाँवों समेत जालिमसिंह को दे दिया गया है. सो वे सब उसके सुपुर्द कर देना और तू हुजूर हाजिर होना। तेरी जागीर, गाँव कुआ, खेत आदि पर तू अपना अमल रखना। तेरे घरबार के प्रबन्ध में हम तब हुक्म देंगे जब तू जालिमसिंह के साथ हुजूर में हाजिर होगा। यह परवाना सम्वत १८५९ भादवा सुदी ८ बुधवार के दिन श्री मुख की परवानगी से जाहिर हुआ है।

जब देवीचन्दजी ने यह परवाना देखा तो वे बड़े असमंजस में पड़ गये। जालिमसिंहजी के साथ यद्यपि उनका बड़ा ही मैत्री पूर्ण सम्बन्ध था, पर इससे भी अधिक मेवाड़ के हित पर उनका सारा ध्यान लगा हुआ था। इसलिये उन्होंने किसी बहाने से टालमटूल कर झाला को किला न सौंपा। इस पर फिर महाराणा भीमसिंहजी ने उक्त मेहताजी को जोरदार पत्र लिखा, वह इस प्रकार है —

स्वस्ती श्री मेहता देवीचन्दजी अपरञ्च परगणा माँडलगढ़ किला [illegible]
सुर्दा जालिमसिंहजी भाला है वगणो जणा में अमल करवाने परवानो [illegible]
दियो परन्तु थे अणा से अमल करायो नहीं आर लटवाने नयार [illegible]
गला भाव आर ध्याम खोर होवे तो लख्या मुजब [illegible] अमल कराय दीजे [illegible]
है तो म्हारा हरामखोर होना सवत् १८५८ आसोज सुदी १४ [illegible]

जब इस दूसरे पत्र पर भी देवीचन्दजी ने ध्यान नहीं दिया, तब महाराणा साहब ने एक तीसरा और लिखा। पर देवीचन्दजी जानते थे कि माँडलगढ़ का किला मेवाड़ में सैनिक दृष्टि से बड़े महत्व

मेहता मालदासजी

मेहता मालदासजी ओसवाल समाज के शिशोदिया गौत्र के सज्जन थे। ये बड़े वीर और पराक्रमी थे। महाराणा भीमसिंहजी के समय में सारे राजपूताने में मरहट्टों का बहुत प्राबल्य हो रहा था इसी समय में सोमजी गाँधी महाराणा के प्रधान थे। उन्होंने मरहट्टों को अपने देश से निकालने के लिये कई उपाय सोचे। अन्त में, जब सं० १३४४ में लालसोट नामक स्थान पर जयपुर और जोधपुर की सेना द्वारा मरहट्टे पराजित हो चुके, तब उक्त अवसर को ठीक समझ कर सोमजी ने मेहता मालदासजी को कोटा एवम् मेवाड की सयुक्त सेना का सेनापति बनाकर मरहट्टों पर हमला करने के लिये भेजा।

वीर सेनापति मालदास बड़े उत्साह से दोनों सेनाओं का नेतृत्व ग्रहण कर उदयपुर से रवाना हुए। रास्ते में आने वाले ग्राम निम्बाहेडा, नकुम्प, जीरण आदि स्थानों पर अधिकार करते हुए आप जावद नामक स्थान पर पहुँचे, जहाँ कि सदाशिवराव नामक मरहट्टा सेनापति मुकाबला करने के लिये पहले से तैयार बैठा था। कुछ दिनों तक दोनों ओर की सेना में मुकाबिला हुआ। अन्त में सदाशिवराव शर्तों के साथ शहर छोडकर चला गया। इस प्रकार मेहताजी के प्रयत्न से उनके ही सेनापतित्व में मेवाड़ी सेना ने मरहट्टी सेना पर विजय प्राप्त की।

कहना न होगा कि उपरोक्त समाचार विद्युत वेग से राजमाता देवी श्री अहल्याबाई के पास पहुँचा उन्होंने शीघ्र ही बुलाजी सिंधिया एवम् श्रीनाई नामक दो व्यक्तियों की अधीनता में अपने ५००० सवार सदाशिवराव की सहायतार्थ भेजे। यह सेना कुछ समय तक मंदसोर में ठहर कर मेवाड की ओर बढ़ी। उधर महाराणा ने भी मुकाबला करने के लिये मेहता मानदास की अधीनता में सादडी के सुलतानसिंह, देलवाड़े के कल्याणसिंह, कानोड के रावत जालिमसिंह, सनवाड के बाबा दौलतसिंह आदि राजपूत सरदारों तथा सादिक, पूँजू वगैरह सिंधियों को अपनी २ सेना सहित मरहट्टों के मुकाबले के लिये रवाना किया।

वि० सं० १८४४ के माघ मास में दोनों ओर की सेना का हरकियाखाल नामक स्थान पर मुकाबला हुआ। दोनों ओर के वीर अपनी वीरता और बहादुरी का परिचय देने लगे। इस युद्ध में मेवाड के मन्त्री मेहता मालदासजी, बाबा दौलतसिंहजी के छोटे भ्राता कुशलसिंहजी आदि अनेक वीर राजपूत सरदार एवं पूँजू आदि सिंधी लोग वीरता से लड अपने स्वामी के लिये, अपने अपूर्व वीरत्व का परिचय दे, वीर गति को प्राप्त हुए।

कर्नल टाड साहब ने मेहता मालदासजी के लिये एनाल्स आफ़ मेवाड़ नामक ग्रन्थ में एक स्थान

लाला बाबूलाल बंसीलाल भाभू का खानदान, होशियारपुर

... खानदान के लोग श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान ... (पंजाब) में रहते थे। वहाँ से लाला किशनचंदजी होशियारपुर आये। आपके ... धूमामलजी तथा गनपतरायजी नामक तीन पुत्र हुए। इस खानदान में लाला फोगूमल ... बैंकिंग का काम शुरू किया। तथा इसकी खास तरक्की लाला फोगूमलजी के पुत्र लाला ... । उस समय यह खानदान होशियारपुर में बिजिनेस की दृष्टि से पहला माना जाता था ... प्रतिष्ठा है। लाला फोगूमलजी के तीन पुत्र हुए लाला पिण्डीमलजी, चूकामलजी ...। इनमें से यह परिवार लाला चूकामलजी का है।

... चूकामलजी के दो पुत्र हुए लाला कन्हैयालालजी और लाला रुरुमलजी। लाला कन्हैया... पुत्र लाला बंशीलालजी नामक दो पुत्र हैं। लाला बाबूमलजी के बनारसीदासजी ... नामक तीन पुत्र हैं। लाला बनारसीदासजी के हित कुमारजी नामक एक

... बंसीलालजी—आप होशियारपुर की ओसवाल समाज में बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। ...म्युनिसिपालिटी के कमिश्नर भी रहे हैं आप होशियारपुर की स्थानकवासी सभा के प्रेसिडेंट ...बैंकिंग का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मदनलालजी ने एफ० ए० तक शिक्षा पाई है ... एफ० ए० का अध्ययन करते हैं। तीसरे महेन्द्रकुमारजी हैं।

लाला शिभूमल वजीरामल का खानदान, मलेर कोटला (पंजाब)

... खानदान के लोग जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस ... हुकमचन्दजी हुए। आपके पोलूमलजी, रोडामलजी, सौदागरमलजी एवं हीरामलजी ...। इनमें से यह खानदान लाला रोडामलजी का है। लाला रोडामलजी का स्वर्गवास ...। आपके लाला शिभूमलजी एवं लाला ज्योतिमलजी नामक दो पुत्र हुए। लाला ... संवत् १९०१ में हुआ। ये इस खानदान में बडे नामी व्यक्ति हुए हैं। आपका संवत् ... हुआ। आपके लाला वजीरामलजी नामक एक पुत्र हुए। लाला ज्योतिमलजी का ... स्वर्गवास संवत् १९७६ में हुआ।

... वजीरामलजी का जन्म संवत् १९२३ में हुआ। आपके अमरचन्दजी एवं करमचंदजी ... अमरचन्दजी का जन्म संवत् १९६० तथा करमचंदजी का संवत् १९६२ में हुआ। ... अपनी फर्म का कारबार देखते हैं। आपदोनों बडे सज्जन हैं। लाला अमरचंद ... नामक दो पुत्र हैं। इस परिवार के लोग मलेर कोटला की ओसवाल ... और आप यहाँ की बिरादरी के चौधरी हैं। लाला ज्योतिमलजी के पुत्र ... व्यापार करते हैं। इनके चंदनदासजी, बनारसीदासजी एवं रतनचंदजी ...

लिंगे

लाला जयदयाल शाह गुराताशाह लिंगे, सियालकोट

यह खानदान स्थानकवासी आम्नाय का है। तथा कई पीढ़ियों मे स्यालकोट में नि करता है। इस खानदान के बुजुर्ग लाला गण्डामलजी के पुत्र दीवानचदजी और पौत्र अमीचन्दजी हु लाला अमीरचदशाहजी के गोविंदरामशाहजी, गंगारामशाहजी तथा मुकन्दाशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। इ यह परिवार लाला गंगाराम शाहजी का है।

लाला गगाराम शाहजी—आपका जन्म संवत् १८९० में हुआ। आपने सियाल कोट मे कागज का कारखाना तथा सूसी का कारखाना खोला था। आपका अपने समाज में बड़ा सम्मान सवत् १९५४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके जयदयाल शाहजी, गुराताशाहजी, चूनीशा देवीदयालशाहजी तथा हरदयालशाहजी नामक ५ पुत्र हुए। आप सब बधुजन सम्मिलित रूप में व्या करते थे। तथा सियालकोट के प्रसिद्ध बैंकर माने जाते थे। इन भाइयों में लाला देवीदयाल शा मौजूद हैं। लाला जयदयालशाहजी के पुत्र खजांचीशाहजी तथा गुराताशाहजी के पुत्र शादीलालजी मौजूद

लाला खजाचीशाहजी—अपका जन्म सवत् १९४५ में हुआ। आप सियाल कोट के जैन समा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। तथा डिस्ट्रिक्ट दरबारी हैं। यहाँ के सैंट्रल बैंक के डायरेक्टर तथा कोर्ट के असेसर रहे आप पजाब जैन संघ के खजाची भी रहे थे। कहने का मतलब यह है कि आप यहाँ के मशहूर आ है। आपके पुत्र नगीनालालजी सराफी व्यापार करते हैं तथा शेप मदनलालजी, सिकन्दरपालजी, गोपालजी, तथा सुदर्शनजी है। लाला शादीलालजी अपने चचा खजाची शाहजी के साथ "जयदयाल गुराता शाह" के नाम से बैंकिंग तथा मनीलेंडिग का व्यापार करते हैं। आपके जुगेन्द्रपाल तथा मन पाल नामक २ पुत्र हैं।

लाला काकूशाह जीवाशाह लिंगे का खानदान, रावलपिंडी

इस खानदान के बुजुर्ग लाला हरकरणशाहजी के रामसिंहजी, लालूशाहजी, मन्नाशाह भोलाशाहजी तथा ठाकरशाहजी नामक ५ पुत्र हुए। उनमें लाला मन्नाशाहजी के काकूशाह डोड्डेशाहजी तथा प्रेमाशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें प्रेमाशाहजी मोजूद है।

लाला काकूशाहजी का खानदान—आपका जन्म संवत् १९१२ में हुआ था। आप बडे सादे पुराने खयालों के सज्जन थे। आपने करीब ६० साल पहिले कपड़े का रोजगार शुरू किया। सवत् १९ में आप तीनों भाइयों का रोजगार अलग २ हुआ। सवत् १९७६ में आपका स्वर्गवास हुआ। आ लाला अमीचंदजी, लाला रादूशाहजी, लाला उत्तमचन्दजी तथा लाला फकीरचन्दजी नामक ४ पुत्र हु लाला अमीचंदजी की याद दाश्त बहुत ऊँची है। आपका जन्म सवत् १९२२ में हुआ। इस दुका

लाला काशीरामजी जैन, जम्मू (काश्मीर)
(पेज न० ६०५)

लाला मोहनलालजी पाटनी बी ए एल एल बी
अमृतसर

लाला मस्तरामजी जैन एम ए एल एल बी,
अमृतसर.

लाला नेमदासजी जैन, बी ए अंबाला सि
(पेज न० ६०१)

फाटकी

लाला मोहनलालजी जैन एडवोकेट, अमृतसर

[illegible] लुधियाना (पंजाब) का निवासी है। वहाँ इस खानदान के पूर्वज [illegible] करते थे। आपके पंजाबरायजी तथा खुशीरामजी नामक २ पुत्र हुए। आप भी [illegible] रहे। लाला पंजाबरायजी के पुत्र लाला मोहनलालजी हैं।

[illegible]—आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आपको होनहार समझकर २।३ [illegible] आपके मामा अमृतसर के मशहूर जौहरी लाला पन्नालालजी दूगड़ अमृतसर [illegible] निवास करते हैं। आपने सन् १९२३ में एल० एल० बी० की डिगरी हासिल [illegible] अमृतसर में प्रेक्टिस कर रहे हैं। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर मार्गीय [illegible]। आप पंजाब प्रान्त की ओर से "आनन्दजी कल्याणजी" की पेढ़ी के मेम्बर हैं। [illegible] समाज में आप गण्य मान्य व्यक्ति हैं। आपने सन् १९२७ में श्री आत्मानंद जैन [illegible] अधिवेशन के समय तथा १९२३ में होशियारपुर अधिवेशन के समय सभापति का [illegible] था। अमृतसर जैन मंदिर की व्यवस्था आपके जिम्मे है। तथा आप जैन वाचनालय [illegible] मोहनलालजी एडवोकेट बड़े समझदार तथा विचारवान सज्जन हैं। आपके छोटे भाई [illegible] लुधियाने में अपना घरू व्यापार करते हैं।

को सहायता देते रहते हैं। इसी तरह जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला को वारी देने की ओर अच्छा रखते हैं। यहाँ के जैन समाज में आप सयाने व्यक्ति हैं। आपने रूपचन्दजी महाराज की समाधि शादीरामजी महाराज की एक समाधि बनवाई है। आपने बाबूरामजी तथा झडूरामजी नामक दो स को दत्तक लिया है। आप दोनों बंधु अपनी दुकानों का व्यापार संचालन बड़ी तत्परता से करते हैं। के यहा "उत्तमचन्द बाबूराम" के नाम से शहर में तथा झण्डूमल प्यारेलाल के नाम से मन्डी में पसारी वसाती का व्यापार होता है। लाला बाबूरामजी उत्साही तथा समाज सेवी सज्जन हैं। आप श्री प्रचारक सभा के प्रेसिडेंट हैं।

मालकस

लाला गण्डामलजी का खानदान, जण्डियाला गुरू (पंजाब)

यह खानदान श्री जैनश्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाला है। यह खान सबसे पहले पटियाला में रहता था। फिर वहाँ से महाराजा रणजीतसिंहजी के समय में लाहौ आकर जवाहरात का व्यापार करने लगा इस खानदान में लाला जेठमलजी के पुत्र हरगोपालजी और अनोखामलजी हुए। अनोखामलजी के पुत्र हरभजमलजी और जयगोपाल जी लाहौर मे गदर हो जा कारण अपने ननिहाल जण्डियाला गुरू चले आये। आप लोगों के समय में जण्डियाला गुरू की दु पर जमीदारी और साहुकारा तथा अमृतसर की दुकान पर जवाहरात का व्यापार होता था। लाला हरभज जी के रामसिंहजी, ज्वालामलजी तथा कर्मचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला रामसिंहजी के मेलामल मीतामलजी, कालामलजी और दितमलजी नामक चार पुत्र हुए। लाला मेलामलजी बड़े दयालु तथा व्य कुशल व्यक्ति थे। आपका संवत् १९५९ में ८३ साल की वय में स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन हुए जिनके नाम लाला आत्मारामजी, कोट्टूमलजी तथा सिब्बूमलजी थे। लाला आत्मारामजी का जन्म १९०७ में हुआ था। आप धर्मात्मा पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। आपके गण्डामलजी, गोपीमलजी, तथा खजांचीमलजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला गण्डामलजी—आपका जन्म सवत् १९२६ का है। आप इस परिवार मे बड़े नामी प्रतिष्ठित व्यक्ति है। आपने प्रयत्न करके सन् १९०९ में पंजाब स्थानकवासी जैन सभा की स्थ करवाई। और आप इसके १८ सालों तक ऑनरेरी सेक्रेटरी रहे। लाहोर के अमर जैन होस्टल के स्थ करवाने में भी आपका बहुत बड़ा प्रयत्न रहा है। आप इस समय जण्डियाला गौशाला के प्रेसिडेंट, व म्युनिसिपल कमिश्नर, डिस्ट्रिक्ट हिन्दू सभा अमृतसर के तथा जैन विधवा सहायक सभा पजाब के ऑ सेक्रेटरी है। सारे पंजाब के जैन समाज में आपका नाम प्रसिद्ध है। आपके पुत्र लाला मुन्नीलालजी पढ़ते

लाला गण्डामलजी के छोटे भाई लाला गोपीमलजी का जन्म १९२९ में हुआ। आप इस दान का तमाम व्यापार देखते हैं। तथा इस समय सराफा कमेटी के प्रेसिडेंट हैं। आपके पुत्र चदजी तथा मदनलालजी व्यापार सम्हालते है, तथा रोशनलालजी और मनोहरलालजी पढ़ते हैं।

...पूर्वक भाग लेते हैं। आपके पुत्र अमरनाथजी नेमनाथजी तथा गोरखनाथजी है।
...में भाग लेते हैं। लाला रादूशाहजी संवत् १९८८ में गुजरे। आपके पुत्र
...तथा शोरीलालजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते है।

...—आपका जन्म संवत् १९२८ में हुआ। आप रावलपिंडी के जैन समाज
...। आपने सन् १९२० में कन्याशाला को एक साल का खरच दिया। तथा इस पाठशाला
... हजार रुपये दिये। इस समय आप जैन सुमति मित्र मंडल के सभापति, बजाजा
... प्रेसिडेंट तथा जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला की प्रबंधक कमेटी के मेम्बर हैं। आप बड़े
... प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके छोटे भाई फकीरचंदजी आपके साथ व्यापार में भाग
...के लालचन्दजी, चिमनलालजी तथा रोशनलालजी नाम ३ पुत्र है। इनमे
... में पढ़ते हैं। शेष व्यापार में भाग लेते हैं। फकीरचंदजी के पुत्र वकीलचंदजी
...। इस कुटुम्ब की २ कपड़े की दुकाने मन्नाशाह काकूशाह के नाम से रावलपिंडी
... दुकान अमृतसर में भी है। पंजाब प्रान्त के मशहूर खानदानों मे इस परिवार
...

...का खानदान—आप बिरादरी के मुखिया तथा बहादुर तबियत के पुरुष थे।
... स्वर्गवास हुआ आपके पुत्र लाला जीवाशाहजी हैं।

...—आपका जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आपका स्वभाव बड़ा मिलनसार है।
... और गुसदानी सज्जन हैं। रावलपिंडी के जैन समाज में आप मशहूर व्यक्ति है।
...वाशाह के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। आपके पुत्र लालचन्दजी का संवत्
... हो गया। आपने जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला को १ हजार तथा जैन सुमति मित्र मंडल
... दिये हैं।

लाला तोतेशाह काशीशाह लिगे, जम्बू (काश्मीर)

... लाला दयानतशाहजी को काश्मीर महाराजा गुलाबसिंहजी ने तिजारत
... में बुलाया। तथा मकान और दुकान की जगह दी। आपने सराफी
... पुत्र लाला बूंटाशाहजी भी सराफी व्यापार करते रहे। इनके लाला निहाला
... २ पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों ने व्यापार में तरक्की प्राप्त कर रियासत तथा
...। दोनों का कारबार ४० साल पहिले अलग २ हुआ। लाला तोतेसाहजी
... हुआ। आप उम्र भर म्युनिसिपेलेटी के मेम्बर रहे। आपके पुत्र लाला
...।

...—आपका जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आपका बिरादरी तथा राज
...। आप २० सालों से जम्बू म्युनिसिपेलेटी के मेम्बर है। आपके ब
... बैंकिंग व्यापार होता है, तथा यहाँ के व्यापारिक समाज में आपकी

नामी समझी जाती है। आपके पुत्र प्यारेलालजी B A में पढ़ते हैं तथा दूसरे हीरालालजी तिज में हिस्सा लेते हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का है।

लाला निहालशाहजी के हजारीशाहजी, करमचंदजी तथा धनपतचंदजी नामक ३ पुत्र। इनमें करमचन्दशाहजी मौजूद हैं। आप सराफी तथा साहुकारे का काम करते हैं। आपके पुत्र बन-दासजी तथा कस्तूरीलालजी हैं। लाला हजारीशाहजी के पुत्र नानकचंदजी तथा धनपतचदजी के कपूरचदजी तिजारत करते हैं। नानकचन्दजी के पुत्र किशोरीलालजी तथा शादीलालजी है।

लाला मय्यालाल काशीशाह लिंगे, रावलपिंडी

इस खानदान के बुजुर्ग लाला जीवाशाहजी ने ६० साल पहिले कपडे का रोजगार शुरू कि आप जैन बिरादरी के चौधरी थे। इनके मय्याशाहजी तथा गोविन्दशाहजी नामक दो पुत्र हुए। र शाहजी सवत् १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लाला काशीशाहजी मौजूद है। आप सेवा के कामों में बडी दिलचस्पी लेते हैं। जैन यंगमैन एसोसिएशन, बालटियर कोर और जैन सभा में आप प्रधान हैं। अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने सत्याग्रह किया था। आप राव गौशाला की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। आपके यहाँ कपडे का व्यापार होता है।

मनिहानी

लाला सावनशाह मोतीशाह मनिहानी का खानदान, (सियालकोट)

यह खानदान स्थानकवासी सम्प्रदाय का मानने वाला है। इस परिवार का खास स्थान सियालकोट का ही है। इस परिवार के वंज लाला रामजीदासजी के पुत्र लाला मंगल और पौत्र बहादुरशाहजी हुए। लाला बहादुरशाहजी के रुल्दूशाहजी, मुश्ताकशाहजी और गुलाब नामक पुत्र हुए। लाला रुल्दूशाह के परिवार में लाला खुशीरामजी प्रसिद्ध धर्म भक्त थे। मशहूर व्यक्ति थे। संवत् १९७० में आपका स्वर्गवास हुआ। लाला मुश्ताकशाहजी के लाला शाहजी तथा रामचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला सावनशाहजी—आपका जन्म सवत् १९२० में हुआ। आप इस समय इस में वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपने व्यवसाय में हजारों लाखों रुपये उपार्जित किये। आपकी जवा के व्यापार में बड़ी बारीक दृष्टि है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके इस समय ७ जिनके नाम क्रमश दीपचन्दजी, मोतीलालजी, पन्नालालजी, मुशीरामजी, हीरालालजी, हंसराज रोशनलालजी हैं। लाला दीपचन्दजी संवत् १९५८ से अपने पिताजी से अलग व्यापार क आपके इस समय मुन्नीलालजी और सुदर्शनकुमारजी नामक दो पुत्र है।

सेठ गुलाबचंदजी गूगलिया (गुलाबचंद हीराचंद) मद्रास.

सेठ ज्ञानमलजी नागोरी भीलवाड़ा (मे

श्री हीराचंदजी गूगलिया (गुलाबचंद हीराचंद) मद्रास

श्री मगनमलजी भीलवाड़ा (मेवाड़)

...जी को छोड़ कर शेष सब भाई सम्मिलित काम काज करते है। मोतीलालजी ... के सरक्षक (Pation) तथा इसकी कार्य-कारिणी समिति के सदस्य हैं। ... सभी सार्वजनिक कार्मों में भाग लेते रहते हैं। आप वर्तमान में महावीर जैन ... के मेम्बर, डिस्ट्रिक्ट दरबारी तथा Life Associate of red cross ... मोतीलालजी के जगीलालजी, मनोहरलालजो, शादीलालजी, कपूरचन्दजी एवम् ... पुत्र हैं, लाला पन्नालालजी के शांतिलालजी चेनलालजी, देवराजजी एवम् विमलकुमार ... लाला मुन्शीरामजी के कुनणराजजी एवम् परतमनलालजी नामक दो पुत्र हैं। लाला ...कुमारजी तथा सुदीनकुमार जी और लाला हसराजजी के बच्छराजजो, जगमोहनजी ...मक पुत्र है।

... सियालकोट की ओसवाल समाज में बड़ा प्रतिष्ठित माना जाता है। इस परिवार ... सावनशाह मोतीशाह के नाम से प्रधान फर्म तथा इसी की यहीं पर दो शाखाएँ ... सराफी तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

...गराजजी मनिहानी का खानदान सिड्डोरा (पंजाब)

... का मूल निवासस्थान सिरसा (हिसार) का है। वहाँ से उठ कर यह खानदान ... करीब सात आठ पुश्त पहले आबाद हुआ। यह परिवार जैन श्वेताम्बर ... मानने वाला है। इस परिवार में लाला जौंकीमलजी, दयारामजी और ... भाई थे। लाला मौजीरामजी बड़े बहादुर, दिलेरजंग और पराक्रमी थे। आपने ... लाला जौंकीमलजी के लाला दयामलालजी नामक एक पुत्र हुए। आपने इस खानदान ... को बढ़ाया। आपके लाला नेमदासजी और लाला नेमदासजी के हीरालालजी, चढ़तीमलजी नामक पुत्र हुए। इस खानदान में लाला चढ़तीमलजी और हाकमरायजी बड़े ... है। आपने अपनी जमीदारी और इज्जत को बढ़ाया। लाला हाकमरायजी करीब ... कमिश्नर रहे। चढतीमलजी के बसंतामलजी और मित्रसेनजी नामक दो पुत्र हुए। ... लाला मुकुन्दीलालजी नामक पुत्र हुए।

...—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपने जैन हाई स्कूल अम्बाला ... की धर्मशाला में एक एक कमरा बनवाय। आपके हंसराजजी, लाला सूरजमलजी ... ३ पुत्र हुए। लाला मुकुन्दीलालजी का स्वर्गवास सन् १९२६ में हो

इन्श्यूरंस कम्पनी लि० के डायरेक्टर हैं। आप अछूतोद्धार और विद्या प्रचार के कामों में बहुत भाग ले आपके छोटे भाई सूरतरामजी कॉलेज में तथा दीपचन्दजी हॉई स्कूल में पढ़ते हैं।

लाला मित्रसेनजी के बड़े पुत्र अमीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४२ का है। आप पहले म्युनिसीपल कमिश्नर रह चुके हैं। आपकी यहाँ पर बहुत बड़ी जमींदारी है। आपके रिखबदासजी, रोशन अमरनाथजी नामक तीन पुत्र हैं। लाला बसंतालालजी ने अपने भाई लाला पन्नालालजी की स्मृति में सिह्यौरामें एक विशाल जैन मन्दिर बनवाया है। यह खानदान यहाँ बड़ा प्रतिष्ठित और रईस माना जाता है।

लाला चेतराम नराताराम मुनिहानी, जुगरावाँ (पंजाब)

यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस खानदान के पुरुष लाला जी के यहाँ लम्बे समय से पसारी का होता आया है। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके नरातमरामजी तथा मुनीलालजी नामक २ पुत्र विद्यमान हैं। आप दोनों भाई अच्छे कामों में देते रहते हैं। लाला नरातारामजी के यहाँ चेतराम नरातमराम के नाम से पसारी का व्यापार ह लाला मुनीलालजी जैन प्रचारक सभा के खजाञ्ची हैं। आप गुरुकुल में यारी देते हैं। आपके यहाँ ज थालकराम के नाम से बिसाती का व्यापार होता है।

तातेड़

लाला मुन्नीलाल मोतीलाल ताँतेड़, अमृतसर

इस परिवार का खास निवास लाहौर है। वहाँ से ७५ साल पहिले लाला मेलूमलजी आये। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। लाला मेलूमलजी ने जनरल मर्चें व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पुत्र लाला माहताब शाहजी का जन्म करीब संवत् १' हुआ। अमृतसर के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठितवान सज्जन थे। जाति बिरादरी के कामों में सलाह वजनदार मानी जाती थी। आपने अपने व्यापार को बहुत उन्नति पर पहुँचाया। संवत् आप स्वर्गवासी हुए। आपके लाला मुन्नीलालजी, लाला मोतीलालजी लाला भीमसेनजी त हसराजजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला मुनीलालजी, मोतीलालजी—आपका जन्म क्रमश संवत् १९४७ तथा संवत् हुआ। आपने अपने व्यापार को काफी तरक्की पर पहुँचाया है। आपके दोनों छोटे भाई भी में आपके साथ भाग लेते हैं। आपने अमृतसर में अपनी ३ ब्रांचें फैंसी कपड़ा, होयजरी तथा के थोक व्यवसाय के लिए खोली हैं। आप विलायत से डायरेक्टर कपडे का इम्पोर्ट लाला रतनचन्द हरजसराय की गोल्डशाखा में आप भागीदार हैं। लाला मुन्नीलालजी श्री सोहन अनाथालय के कोषाध्यक्ष हैं। तथा धार्मिक और जातीय कामों में दिलचस्पी लेते रहते हैं। आप

गुगलिया

सेठ गुलाबचन्द हीराचन्द गुगलिया, मद्रास

इस परिवार के पुरुष श्वेताम्बर जैन मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले हैं। इस खान के पूर्व पुरुष सेठ जयसिंहजी देवाली (मारवाड) में रहते थे। वहाँ से इनके पुत्र खूमाजी, चा (मारवाड़) आये। इनके वीरचन्दजी और भूरमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ वीरचन्दजी भूरमलजी गुगलिया—आप दोनों भाइयों में पहले सेठ वीरचन्दजी सन् १८ में व्यवसाय के लिये अहमदाबाद गये। वहाँ से आप कर्नाटक की ओर गये। उधर २ साल रा आपने मद्रास में आकर पैरम्बूर बैरक्स में दुकान की। यहाँ आने पर आपने अपने छोटे भाई भूरमलर्ज भी बुलालिया, तथा अपनी दुकान की एक ब्रांच और खोली। इन दोनों बंधुओं ने साहस पूर्वक व्यापा सम्पत्ति उपार्जित कर अपने सम्मान को बढ़ाया। आपने अपने कई जाति भाइयों को सहायता देकर दु करवाई। सेठ वीरचन्दजी सन् १९०५ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र माणकचन्दजी का चाणोद में। वय में स्वर्गवास हो गया। सेठ वीरचन्दजी के पश्चात् सेठ भूरमलजी व्यापार सह्मालते रहे। सन् १९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके धनरूपमलजी, हीराचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। ! गुलाबचंदजी सेठ विरदीचंदजी के यहा दत्तक गये। तथा धनरूपमलजी का स्वर्गवास छोटी वय मे हो गर

इस समय इस परिवार में हीराचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी गुगलिया विद्यमान हैं। आ जन्म क्रमशः सन् १९०८ तथा १९१३ में हुआ। सन् १९२९ में इन दोनों भाइयों ने अपना कार्य्य पूर्वल अलग २ कर लिया है। आप अपने पिताजी के स्वर्गवासी होने के समय बालक थे। अत फर्म काम वीरचन्दजी की धर्म पत्नी श्री मती जड़ाव बाई में बड़ी दक्षता के साथ सह्माला। आपका धर्म में बड़ा लक्ष्य हैं। आपने शत्रुंजय तीर्थ में एक टोंक पर छोटा मन्दिर बनवाया। गुदौल गाँव में द वाडी का कलश, चढ़ाया। इसी प्रकार जीव दया, स्वामी वात्सल्य पाठशाला आदि शुभ कार्य्यों में सम लगाई। इस समय गुलाबचन्दजी, "वीरचन्द गुलाबचन्द" के नाम के तथा हीराचन्दजी, "भूर हीराचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। मद्रास के ओसवाल समाज में यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती

सेठ गम्भीरमल बख्तावरमल गुगलिया, धामक

इस परिवार का मूल निवास स्थान बलूँदा (जोधपुर) है। आप स्थानकवासी आम्ना माननेवाले सज्जन हैं। जब सेठ बुधमलजी लूणावत ने धामक आकर अपनी स्थित को ठीक किया, उन्होंने अपने जीजा (बहिन के पति) सेठ गम्भीरमलजी को भी व्यापार के लिए धामक बुलाया। गम्भीरमलजी के साथ उनके पुत्र बख्तावरमलजी भी धामक आये थे। इन दोनों पिता पुत्रों ने व्या में सम्पत्ति पैदा कर अपने सम्मान तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि की। सेठ बख्तावरमलजी बड़े उदार पुरुष बरार प्रान्त के गण्य मान्य ओसवाल सज्जनों में आपकी गणना थी। आपकी धर्म पत्नी ने बलूंदे में

...कमेटी के मेम्बर हैं। अमृतसर के ओसवाल समाज में आपका खानदान नामी
...लालजी, रोशनलालजी, तिलकचन्दजी तथा धर्मपालजी हैं। इनमें लाला मनोहरलाल
...न किया है। शेष सब पढ़ते हैं। लाला मोतीलालजी के पुत्र शादीलालजी इंटर
...मन्नूलालजी तथा जितेन्द्रनाथजी हैं। इसी तरह लाला भीमसेनजी के पुत्र
...के पुत्र राजपालजी तथा सतपालजी हैं।

...मस्तरामजी एम० ए० एल० एल० बी० तांतेड़ अमृतसर

...के पूर्वज लाला शिवदयालजी अपने खास निवास लाहौर से कांगडा, होशियारपुर
...आप एक्साइज के कंट्राक्ट का काम करते थे। आप लगभग ५० साल पूर्व स्वर्ग-
...लाला मिलखीमलजी, लाला लछमणदासजी, तथा लाला नन्दलालजी नामक पुत्र
...लछमणदासजी को उनके चाचा लाला महताबसाहजी ७ वर्ष की आयु में लाहौर ले
...भाई भी अमृतसर आ गये। लाला लछमणदासजी इस समय आढ़त का काम
...तक शिक्षा पाई है। आपके पुत्र लाला मस्तरामजी हैं।
...—आपका जन्म संवत् १९५८ में हुआ। आप सन् १९२१ में बी० ए०
...में एम० ए० तथा १९२६ में एल० एल० बी० पास हुए। सन् १९२९ में आप
...प्रोफेसर हुए। इसके अलावा आप यहाँ वकालत भी करते हैं। आपने
...तथा मोतीशाहजी के सहयोग से लाहौर में जैन एसोसिएसन नामक
...। इसके अलावा आप अमर जैन होस्टल के सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा "आफताब जैन"
...। इस समय आप स्थानकवासी जैन सभा पंजाब, ऑल इण्डिया स्थानकवासी सभा,
...तथा अमृतसर की लोकल स्था० सभा की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के मेम्बर और
...की मैनेजिंग कौंसिल तथा बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज के मेम्बर हैं। तथा पब्लिक
...प्रेसिडेण्ट है। कहने का मतलब यह कि आप यहा के जैन समाज में अग्रगण्य
...के बड़े पुत्र हंसराजजी आढ़त का काम करते हैं। तथा छोटे लाला देसराज
...स्वर्गवासी हो गये हैं।

लाला दुनीचंद प्यारेलाल जैन-ताँतेड़, अमृतसर

...सवासौ वर्ष पूर्व लाहौर से अमृतसर आया यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय
...इस परिवार के पूर्वज लाला कन्हैयालालजी के लाला कसूरियामलजी, छज्जूमलजी
...कसूरियामलजी नामी जौहरी थे। लाला छज्जूमलजी धार्मिक प्रवृत्ति के
...१९२९ में स्वर्गवास हुआ। आपके लाला चुन्नीलालजी, दुनीचन्दजी
...हुए। लाला चुन्नीलालजी के पुत्र देवीचंदजी, नगीनालालजी तथा ...
...करते हैं।

लाला दुनीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४० हुआ। आप आरम्भ में जवाहरात का करते थे। बाद आपने बसाती का व्यापार शुरू किया। इस व्यवसाय में आपको अच्छी सफ मिली। धार्मिक कामों में आपकी अच्छी रुचि है। आपके प्यारेलालजी, प्रेमनाथजी, विलायतीरा रतनचंदजी तथा रोशनलालजी नामक ५ पुत्र हैं। लाला प्यारेलालजी का जन्म संवत् १९६० में हु आप अपने व्यापार का उत्तमता से सचालन कर रहे हैं। आप हौजरी तथा मनीहारी का थोक म और इस माल का जापान आदि देशों से डायरेक्ट इम्पोर्ट करते हैं। आपके छोटे भ्राता प्रेमनाथजी विलायतीरामजी व्यापार में भाग लेते हैं। अमृतसर में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता प्यारेलालजी के पुत्र तिलकराज तथा जतनराज हैं।

लाला मुंशीरामजी जैन तॉतड़, लाहोर

इस खानदान के पुरुष स्थानकवासी सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इस परिवार का निवास जयपुर है। वहा से यह परिवार लाहोर आया। इस परिवार में लाला नदलालजी आपके पुत्र लाला शिब्बूमलजी और लाला पन्नालालजी हुए। लाला शिब्बूमलजी ने लगभग ५५ पूर्व क्राकरी मरचेंटस का व्यापार शुरू किया। आप दोनों बंधु बड़े सज्जन व्यक्ति थे। लाला प जी संवत् १९८२ के स्वर्गवासी हुए। आपके लाला मुंशीरामजी, गंडामलजी तथा कपूरचन्दजी ३ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें गंडामलजी लाला शिब्बूमलजी के नाम पर तथा कपूरचन्दजी मोघा में मामा के नाम पर दत्तक गये हैं।

लाला मुशीरामजी—आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आपने मेट्रिक तक शिक्षण सन् १९२१ से आपने देशकी सेवाओं में योग देना आरम्भ किया, तथा उस समय से आप लाहोर के तमाम कामों में दिलेरी से हिस्सा लेते हैं। आप कई सालों तक लाहोर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष कांग्रेस के मेम्बर रहे हैं। सन् १९३० में सरकार ने बग़ावत फैलाने के आरोप पर दफा १२४ में आ साल की सख्त सजा दी, तथा बी क्लास रिकमेंड की। सत्याग्रह के समय आपने १ हजार बा दिये थे। और २ सालों तक वर्द्धमान नामक पेपर भी चालू किय था। आप कई सालों तक मरचेंट एसोशिएसन के मेम्बर रहे। इस समय आप लाहोर ग्राम वेअर एसोशिएसन के १ अछूतोद्धार कमेटी, स्वराज सभा तथा एस० एस० जैन सभा, की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। तरह श्री अमर जैन होस्टल लाहोर की लोकल कमेटी के मेम्बर हैं। आप विधवा विवाह के बड़े हा आपने बीसियों विधवाओं का सम्बन्ध जैनियों से करा दिया है। आपके यहा लाला शिब्बूम अनारकली के नाम से क्राकरी बिजिनेस होता है। लाला गंडामलजी भी "शिब्बूमल गंडामल" के न क्राकरी बिजिनेस करते हैं।

चम्पालालजी जौहरी विद्यमान हैं। वर्तमान में जौहरी महादेवलालजी ही इस परिवार में सब से ब आपको दरबार में कुर्सी प्राप्त है। जौहरी चम्पालालजी के पुत्र उमरावमलजी तथा गुलाबचन्दजी इनमें गुलाबचन्दजी महादेवलालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। श्री उमरावमलजी, समझदार तथा ि सार नवयुवक हैं। आप शांति जैन लायब्रेरी के मंत्री हैं। आपके पुत्र मिलापचन्दजी हैं।

छोटीलालजी जौहरी—आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र मुन्नीलालजी तथा लालजी हुए। इनमें मुन्नीलालजी जौहरी मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। जौहरी मुन्नील स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर, स्थानकवासी जैन सुबोध पाठशाला के ट्रेझरर तथा जैन कन्या शा प्रेसिडेंट तथा ट्रेझरर हैं। आपके पुत्र रतनलालजी व्यवसाय में भाग लेते हैं।

यह खानदान जयपुर के प्रधान जौहरियों में माना जाता है। इस खानदान की फर्म को नायसरायों ने सार्टिफिकेट दिये है। कई भारतीय राजा रईसों के यहाँ आपका जवाहरात जाता है। न लंदन आदि स्थानों पर भी आप जवाहरात भेजते हैं। इस फर्म को लन्दन, कलकत्ता जयपुर आदि ि नियों से गोल्ड सिलवर मेडल तथा सार्टिफिकेट मिले हैं। जयपुर के ओसवाल समाज में यह प नामी माना जाता है। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का अनुयायी है। वर्तमान में इस परिव "जौहरीमल दयाचन्द" के नाम से व्यापार होता है। आपकी एक जीनिंग फेक्टरी, कसरावद (इन्दौर) मे

सेठ रिखबदास सवाईराम संखलेचा, खामगांव

सेठ रिखबदासजी संखलेचा—इस परिवार के पूर्वज रिखबदासजी संखलेचा अपने मूल ि जोधपुर से व्यापार के लिये संवत् १९२१ में खामगांव आये। तथा आपने सेठ "श्रीराम शालिगराम यहाँ २५ सालों तक मुनीमात की। आपका जन्म सवत् १९०२ में हुआ था। इस दुकान पर न करते हुए आप वूल कम्पनी की रुई की आढत तथा अपनी घरू आढ़त का व्यापार भी करते थे। ' आपने २।३ लाख रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। साथ ही आपने राठीजी के व्यापार को भी काफी ' की। इस समय उनकी ३० दुकानों की देखरेख व व्यवस्था आपके जिम्मे थी। आप बड़े रतवेदार वजनदार पुरुष माने जाते थे। संवत् १९१२ में राठी फर्म की ५२ दुकानों का बँटवारा आपही के हाथ हुआ था। संवत् १९४० में मस्जिद के सामने बाजा बजने के सम्बन्ध में बखेड़ा खड़ा हुआ, उसमें अ हिन्दू समाज का नेतृत्व किया, तथा उस समय की निश्चित हुई शर्तें इस समय तक पाली जाती ' संवत् १९२६ में पानी के बंदोबस्त के लिये तालाब बनवाने में तथा नल का कनेक्शन ठीक करवाने में अ इमदाद दी। खामगाँव के काटन मार्केट, म्युनिसिपेलेटी आदि के स्थापनकर्ताओं में आपका नाम अग्रगण्य कहने का तात्पर्य्य यह कि आप खामगाव के नामीगरामी व्यक्ति हो गये हैं।

सेठ रिखबदासजी के शातिदासजी तथा गोडीदासजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों स का जन्म क्रमश १९४९ तथा सवत् १९५७ में हुआ। सेठ शातिदासजी खामगाँव सेवा समाज के वे थे। इसी प्रकार माहेश्वरी महासभा के चतुर्थ वेशन अकोले के समय आप असिस्टेंट हेड केप्टन थे। मध्य प्रांत तथा बरार की ओसवाल सभा के हर कार्यों में उत्साह से भाग लेते है। आप बुलडाणा प्रा

पर लिखा है कि "मालदास मेहता प्रधान थे और उनके डिप्टी मौजीराम थे। ये दोनों बुद्धिमान व
वीर थे।" "Maldas mehta was civil member with Maujiram as his Deputy, bo
men of talent and energy" इत्यादि ।

मेहता देवीचन्दजी

मेहता अगरचन्दजी के बाद उनके बडे पुत्र देवीचन्दजी मेवाड राज्य के प्रधान मन्त्री (Pri
Minister) के पद पर अधिष्ठित हुए। पर कुछ ही वर्षों बाद जब उन्होंने देखा कि मेवाडाधि
राज्य और प्रजाहित कार्यों में उनकी सलाह पर ध्यान नहीं देते हैं तो वे अपने प्रधान मन्त्री के पद
अलग हो गये। इतना ही नहीं उन्होंने प्रधान मन्त्री का पद स्वीकार न करने की भी सौगन्ध खा ली

मेहता देवीचन्द जी के कार्य्य काल में किसी दवाव के कारण मेवाड के महाराणा भीमसि
जी ने सुप्रसिद्ध झाला जालिमसिंहजी को माडलगढ का किला प्रदान कर दिया और इस सम्बन्ध में म
राणा ने मेहता देवीचन्दजी को एक पत्र लिखा, जिसका भाव यह है "माडलगढ का किला खालसा व
जागीर के सब गाँवों समेत जालिमसिंह को दे दिया गया है. सो वे सब उसके सुपुर्द कर देना और तू ह
में हाजिर होना। तेरी जागीर, गाँव कूआ, खेत आदि पर तू अपना अमल रखना। तेरे घरबार
सम्बन्ध में हम तब हुक्म देंगे जब तू जालिमसिंह के साथ हुजूर में हाजिर होगा। यह परवाना सम्वत १८
के भादवा सुदी ८ बुधवार के दिन श्री मुख की परवानगी से जाहिर हुआ है।

जब देवीचन्दजी ने यह परवाना देखा तो वे बडे असमंजस में पड गये। जालिमसिंहजी
साथ यद्यपि उनका बडा ही मैत्री पूर्ण सम्बन्ध था, पर इससे भी अधिक मेवाड के हित पर उनका म
ध्यान लगा हुआ था। इसलिये उन्होंने किसी बहाने से टालमटूल कर झाला को किला न सौंपा। इस
फिर महाराणा भीमसिंहजी ने उक्त मेहताजी को जोरदार पत्र लिखा, वह इस प्रकार है —

स्वस्ती श्री मेहता देवीचन्दजी अपरच परगणो माडलगढ किलो खालसा जागीर
सुदी जालिमसिंहजी झाला है वगशो जणी में अमल करवागे परवानो थाने नाम [illegible] लिख
दियो परन्तु थे अणा से अमल करायो नहीं आर लडवाने तयार हुआ सो म्हारा [illegible]
भलो भाव और स्याम खोर होवे तो लख्या मुजब अणारो अमल कराय दीजो अब आगे [illegible]
हे तो म्हारा हरामखोर होता सवत् १८५६ आसोज बुदी १४ [illegible]

जब इस दूसरे पत्र पर भी देवीचन्दजी ने ध्यान नहीं दिया, तब महाराणा साहब ने एक मं
पत्र और लिखा। पर देवीचन्दजी जानते थे कि मॉडलगढ का किला मेवाड में सैनिक दृष्टि से बड़े म

मेहता मालदासजी

मेहता मालदासजी ओसवाल समाज के सिसोदिया गौत्र के सज्जन थे। ये बड़े वीर और कर्मी थे। महाराणा भीमसिंहजी के समय में मेवाड़ राजघराने में मरहट्टों का बहुत प्राबल्य हो रहा था। इसी समय में सोमजी गाँधी महाराणा के प्रधान थे। उन्होंने मरहट्टों को अपने देश से निकालने के कई उपाय सोचे। अन्त में, जब सं० १२४४ में लालसोट नामक स्थान पर जयपुर और जोधपुर की द्वारा मरहट्टे पराजित हो चुके, तब उक्त अवसर को ठीक समझ कर सोमजी ने मेहता मालदासजी को एवम् मेवाड़ की सयुक्त सेना का सेनापति बनाकर मरहट्टों पर हमला करने के लिये भेजा।

वीर सेनापति मालदास बड़े उत्साह से दोनों सेनाओं का नेतृत्व ग्रहण कर उदयपुर से रवाना हुए। रास्ते में आने वाले ग्राम निम्बाहेडा, नकुम्प, जावद आदि स्थानों पर अधिकार करते हुए जावद नामक स्थान पर पहुँचे, जहाँ कि सदाशिवराव नामक मरहट्टा सेनापति मुकाबला करने के लिये पहले से तैयार बैठा था। कुछ दिनों तक दोनों ओर की सेना में मुकाबिला हुआ। अन्त में सदाशिवराव शर्तों के साथ शहर छोड़कर चला गया। इस प्रकार मेहता मालदास के प्रयत्न से उनके ही सेनापतित्व में मेवाड़ी सेना ने मरहट्टी सेना पर विजय प्राप्त की।

कहना न होगा कि उपरोक्त समाचार विद्युत वेग से राजमाता देवी श्री अहल्याबाई को पहुँचा उन्होंने शीघ्र ही तुलाजी सिंधिया एवम् श्रीभाई नामक दो व्यक्तियों की अधीनता में अपने ५००० सवार सदाशिवराव की सहायतार्थ भेजे। यह सेना कुछ समय तक मन्दसोर में ठहर कर मेवाड़ की ओर बढ़ी। उधर महाराणा ने भी मुकाबला करने के लिये मेहता मालदास की अधीनता में सादड़ी के सुलतानसिंह, देलवाड़े के कल्याणसिंह, कानोड़ के रावत जालिमसिंह, सनवाड के बाबा दौलतसिंह आदि राजपूत सरदारों तथा सादिक, पूँजू वगैरह सिंधियों को अपनी २ सेना सहित मरहट्टों के मुकाबले के लिये रवाना किया।

वि० सं० १८४४ के माघ मास में दोनों ओर की सेना का हरकियाखाल नामक स्थान पर मुकाबला हुआ। दोनों ओर के वीर अपनी वीरता और बहादुरी का परिचय देने लगे। इस युद्ध में मेवाड़ के सेनापति मेहता मालदासजी, बाबा दौलतसिंहजी के छोटे भ्राता कुशलसिंहजी आदि अनेक वीर राजपूत सरदार सादिक पूँजू आदि सिंधी लोग वीरता से लड़ अपने स्वामी के लिये, अपने अपूर्व वीरत्व का परिचय दे, वीरगति को प्राप्त हुए।

कर्नल टाड साहब ने मेहता मालदासजी के लिये एनाल्स आफ़ मेवाड़ नामक ग्रन्थ में एक स्थान

... ...चिरदासजी सवलचा, रामगांव.

श्री ज्वाहरमलजी लूणिया, अजमेर (परिचय पेज नं० ३३७)

... ... रामगांव

श्री गोविंदासजी सवलचा रामगांव

सेठ लखमीचंदजी नाडोल में ही राज का काम करते हैं। आप इस ठिकाने के कामद
सेठ गुलाबचंदजी और सिरदारमलजी का स्वर्गवास हो गया है। आप लोग भी जब त
तब तक बड़ी बुद्धिमानी से फर्म का कारबार चलाते थे। सेठ रिखबदासजी बड़े प्रतिभाशाली व्य
रानी स्टेशन पर आपके यहाँ रिखबदास सिरदरमलजी के नाम से अनाज, किराना, कमीशन आ
व्यवसाय होता है। इसके पश्चात आपने तथा आपके परिवार वालों ने मिलकर कलकत्ता में भी एक
खोली जिसपर भी उपरोक्त नाम पड़ता है। इस फर्म पर विदेश से कपड़े का डायरेक्टर इम्पोर्ट वि
होता है। इसके बाद आपने एक स्वदेशी जूट मिल नामक एक जूट खोला तथा एक छाते की फेक्टरी
वर्त्तमान में आपके कलकत्ता आफिस से मद्रास, कोलम्बो, कोचीन, सीलोन, बम्बई वगैरह स्थानों पर
स्केल में किराने का एक्सपोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त गव्हर्नमेंट फारेस्ट डिपार्टमेंट तथा रक्षित रा
आप हाथीदांत तथा गेंडे के सींगों को कन्ट्राक्ट से खरीदते हैं। तथा बाहर पंजाब, मुल्तान, राजपूतान
स्थानों पर अपना माल भेजते हैं। इस फर्म की एक शाखा नाडोल में सिरदारमल फौजमल के नाम

इस फर्म के कार्य्य को संचलित करने में सेठ रिखबदासजी, पृथ्वीराजजी, राजमलजी, कु
जी, दानमलजी, फतेराजजी, अमरचंदजी, भागचंदजी, सिरेमलजी, अजयराजजी, केशरीमलजी और
जी का बहुत हाथ है। आप सब लोग व्यापार कुशल सज्जन हैं। वर्तमान में कलकत्ता दुकान क
प्रधान तौर से बाबू केशरीमलजी और पुखराजजी देखते हैं। आप दोनों भाइयों को मशीनरी विभ
अच्छा ज्ञान है। इस परिवार के व्यक्तियों का सार्वजनिक कामों की ओर भी बहुत ध्यान है
रखबदासजी ने बरकाणा पार्श्वनाथ बोर्डिंग के लिये लगभग २ लाख रुपये एकत्रित करवाये।

पटावरी

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी का परिवार, भादरा

इस परिवार के लोग भादरा के निवासी हैं। इस परिवार में सेठ चैनरूपजी बड़े बुद्धिमान
प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप तत्कालीन समय में ठाकुर साहब भादरा के कामदार रहे। इसके बाद ऐसा
जाता है कि जब भादरा खालसे हो गया तब आप बीकानेर दरबार की ओर से वहाँ का काम काज
लगे। आपके पुत्र जीतमलजी तथा पौत्र हीरालालजी भी वहीं राज में काम करते रहे। सेठ हीरालाल
शोभाचन्दजी, चतुरभुजजी, लूनकरनजी प्रतापमलजी और छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हैं।

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी अपने जीवन में बड़े क्रान्तिकारी व्यापारी रहे। प्रारम्भ में
कई स्थानों पर गुमस्तागिरी की, फिर पाट की दलाली का काम किया। इसके बाद जब कि कल
पाट का बाड़ा कायम हुआ उस समय आपभी इसमें शामिल हो गये। आप में उत्साह है, साहस है
व्यापार करने की पूरी २ क्षमता भी है। अतएव आप शीघ्र ही इस व्यापार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो
आपने अपने हाथों से वायदे के सौदों में लाखों रुपये कमाये और खोये। आपने अपने हाथों से पा

...ड़े यहाँ रुई, आढ़त का कार्य्य होता है। आपके छोटे बंधु गोडीदासजी आपके ...न हैं।

...ठ रामचन्द्र चुन्नीलाल संखलेचा आर्वी (बरार)

...का आगमन लगभग १५० साल पहिले जेसलमेर से आर्वी हुआ, पहिले इस ...'' के नाम से काम होता था, संखलेचा हुकुमचंदजी के पुत्र रामचंदजी तथा ...लालजी हुए। संखलेचा चुन्नीलालजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए, आपके ३ ...दासजी तथा गोकुलदासजी हुए, इ में से भगवानदासजी २५।३० साल पहिले ...ा संखलेचा अमोलकचंदजी के नाम पर दत्तक गये।

...दासजी का जन्म संवत १९५६ में हुआ। भगवानदासजी के पुत्र सोभागमलजी ...में तथा चिमनदासजी का १९५८ में हुआ। आपके हाथों से दुकान के व्यवसाय को ...द ४० जैन मंदिर की व्यवस्था आप लोगों के जिम्मे है, आपकी फर्म "रामचन्द्र ...ई चांदी सोना तथा लेनदेन का काम काज करती है तथा आर्वी के व्यापारिक समाज ...है। संखलेचा राजमलजी, "अमोलचन्द हीरालाल" के नाम से कार बार करते हैं।

केसरीमलजी संखलेचा, येवला

...निवास तींवरी (जोधपुर) है। देश से सेठ हरकचंदजी संखलेचा व्यापार के ...सेठ भीमराजजी दईचन्दजी की भागीदारी में कपड़े का व्यापार आरंभ किया। ...पका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र केसरीमलजी तथा पूनमचंदजी विद्यमान हैं। ...दईचन्दजी की बम्बई और येवला दुकान के भागीदार हैं। केसरीमलजी का ...आप सज्जन व्यक्ति हैं। तथा येवले के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित हैं।

श्री लक्ष्मीलालजी संखलेचा, जावद

...(मालवा) के एक प्रतिष्ठित परिवार के हैं। आपके पिताजी वहाँ के लक्षाधीश ...लालजी ज्योतिष शास्त्र के अच्छे ज्ञाता हैं। और आपके सामाजिक विचार भी ...समय में आपने कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं। इस समय आप बम्बई ...नों कार्य्य करते हैं। आपके चांदमलजी तथा सोभागमलजी नामक २ पुत्र ...भागीदारी का काम सम्हालते हैं। और सोभाग्यमलजी एफ० ए० में पढ़ते ...नहार युवक हैं।

बरड़िया

...हते हैं—पवार राजवंशीय राजपूतों से बरडिया ओसवालों की उत्पत्ति का ...है कि ...र लाखनसी के पुत्र देरसी को श्री उद्योतन सूरिजी ने उपदेश कर जैन

धर्म का ज्ञान कराया। बड़ के नीचे उपदेश देने से "वरदिया" नाम सम्बोधित हुआ। यही ना चल कर बरडिया गौत्र में परिवर्तित हुआ।

श्री राजमलजी बरड़िया का खानदान, जेसलमेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान जेसलमेर ही है। हम ऊपर बरडिया त्रेरसी का कर चुके हैं। इनके कई पीढ़ियों बाद समराशाहजी हुए। ये जेसलमेर के दीवान थे। इन मूलराजजी ने भी रियासत के दीवान पद पर कार्य्य किया। मूलराजजी की ११ वीं पीढ़ी में भोज हुए, इनसे यह परिवार "भोजा मेहता" कहलाया। इनकी छठी पीढ़ी में मेहता सरूपसिंहजी इनके सरदारमलजी, जोरावरसिंहजी तथा उत्तमसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए।

धनराजजी बरडिया—बरडिया सरदारमलजी के नाम पर बभूतसिंहजी दत्तक आये, तथा पुत्र धनराजजी थे। धनराजजी जेसलमेर स्टेट के प्रतिभा सम्पन्न पुरुष हो गये हैं। आपके ना आपके चाचा विशनसिंहजी के पुत्र केवलचन्दजी दत्तक आये। इनके सोभागमलजी तथा तेजमलजी पुत्र हुए। बरडिया तेजमलजी भी जेसलमेर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप इस समय स्टेट ट्रेझरा

बरड़िया जोरावरसिंहजी का परिवार—आपके बभूतसिंहजी, सगतसिंहजी, विशनसिं जबरचन्दजी, तथा नथमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें बभूतसिंहजी सरदारमलजी के नाम पर गये। सगतसिंहजी के हिम्मतरामजी, ज्ञानचन्दजी, हमीरमलजी, इन्द्रराजजी, बलराजजी नामक ५ हुए। इनमें हिम्मतरामजी का स्वर्गवास हो गया। शेष बन्धु विद्यमान हैं। बरड़िया हमीर उत्तमसिंहजी के पुत्र चन्दनमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। इसी तरह जबरचन्दजी के प्रपौत्र कुम्भ भी विद्यमान हैं। बरड़िया जोरावरसिंहजी के सबसे छोटे पुत्र नथमलजी थे। इनके पूनमचन्दजी रतनलालजी नामक पुत्र हुए। इस समय पूनमचन्दजी के पुत्र राजमलजी तथा रतनलालजी के रामसिंहजी विद्यमान हैं।

राजमलजी बरडिया—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आप जेसलमेर के ओ समाज में समझदार तथा वजनदार पुरुष हैं। यहाँ के करोड़ों रुपयों की लागत के जैन मन्दिरों व्यवस्था का भार श्री संघ ने आपके जिम्मे कर रक्खा है। आप श्वेताम्बर संघ कार्य्यालय के प्रेसिडें इस समय आप जेसलमेर स्टेट में कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। इसके अलावा आप अपना घरू व्यापार भी हैं। आपके पुत्र फतेसिंहजी हैं।

यह परिवार ५६ पीढ़ियों से जेसलमेर स्टेट की सेवा करता आ रहा है। रियासत का से दी गई जागीरी का पट्टा इस परिवार वालों के हाथ से लिखा जाता है। रियासत के कस्टम, बख्शी, खजाना, भंडार आदि मुख्य सीगे हमेशा से इस परिवार के जिम्मे रहते आये हैं। तथा जैस महारावलजी से इस परिवार को समय २ पर रुक्के तथा परवाने मिलते रहे हैं।

बराड़िया गनेशजी का परिवार उदयपुर

करीब १०० वर्ष पूर्व बरडिया गनेशजी करेडा पार्श्वनाथ से उदयपुर आये। उनके मग जी, आलमचंदजी, साहबलालजी और फूलचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें मगनमलजी बड़े प्रा

सेठ लखमीचदजी नाडोल में ही राज का काम करते हैं। आप इस ठिकाने के कामद सेठ गुलाबचंदजी और सिरदारमलजी का स्वर्गवास हो गया है। आप लोग भी जब त तब तक बड़ी बुद्धिमानी से फर्म का कारबार चलाते थे। सेठ रिखबदासजी बड़े प्रतिभाशाली व्यं रानी स्टेशन पर आपके यहाँ रिखबदास सिरदरमलजी के नाम से अनाज, किराना, कमीशन आ व्यवसाय होता है। इसके पश्चात आपने तथा आपके परिवार वालों ने मिलकर कलकत्ता में भी एक खोली जिसपर भी उपरोक्त नाम पड़ता है। इस फर्म पर विदेश से कपड़े का डायरेक्टर इम्पोर्ट ि होता है। इसके बाद आपने एक स्वदेशी जूट मिल नामक एक जूट खोला तथा एक छाते की फेक्टरी वर्त्तमान में आपके कलकत्ता आफिस से मद्रास, कोलम्बो, कोचीन, सीलोन, बम्बई वगैरह स्थानों पर स्केल में किराने का एक्सपोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त गव्हर्नमेंट फारेस्ट डिपार्टमेंट तथा रक्षित रा आप हाथीदांत तथा गेंडे के सींगों को कन्ट्राक्ट से खरीदते हैं। तथा बाहर पंजाब, मुलतान, राजपूतान स्थानों पर अपना माल भेजते हैं। इस फर्म की एक शाखा नाडोल में सिरदारमल फौजमल के नाम

इस फर्म के कार्य्य को संचलित करने में सेठ रिखबदासजी, पृथ्वीराजजी, राजमलजी, कु जी, दानमलजी, फतेराजजी, अमरचंदजी, भागचंदजी, सिरेमलजी, अजयराजजी, केशरीमलजी और जी का बहुत हाथ है। आप सब लोग व्यापार कुशल सज्जन हैं। वर्तमान में कलकत्ता दुकान क प्रधान तौर से बाबू केशरीमलजी और पुखराजजी देखते हैं। आप दोनों भाइयों को मशीनरी विष अच्छा ज्ञान है। इस परिवार के व्यक्तियों का सार्वजनिक कामों की ओर भी बहुत ध्यान है रखबदासजी ने बरकाणा पार्श्वनाथ बोर्डिंग के लिये लगभग २ लाख रुपये एकत्रित करवाये।

पटावरी

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी का परिवार, भादरा

इस परिवार के लोग भादरा के निवासी हैं। इस परिवार में सेठ चैनरूपजी बड़े बुद्धिमान प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप तत्कालीन समय में ठाकुर साहब भादरा के कामदार रहे। इसके बाद ऐसा जाता है कि जब भादरा खालसे हो गया तब आप बीकानेर दरबार की ओर से वहाँ का काम काज लगे। आपके पुत्र जीतमलजी तथा पौत्र हीरालालजी भी वहीं राज में काम करते रहे। सेठ हीरालाल शोभाचन्दजी, चतुरभुजजी, लूनकरनजी प्रतापमलजी और छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हैं।

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी अपने जीवन में बड़े क्रान्तिकारी व्यापारी रहे। प्रारम्भ में कई स्थानों पर गुमस्तागिरी की, फिर पाट की दलाली का काम किया। इसके बाद जब कि कल पाट का बाडा कायम हुआ उस समय आपभी इसमें शामिल हो गये। आप में उत्साह है, साहस है व्यापार करने की पूरी २ क्षमता भी है। अतएव आप शीघ्र ही इस व्यापार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो आपने अपने हाथों से वायदे के सौदों में लाखों रुपये कमाये और खोये। आपने अपने हाथों से पा

-[illegible] कई बार आपस में व्यापारियों की तनातनी में आप साहसपूर्वक खडे रहे एवम बडी [illegible] विजय पाई। वायदे के व्यापार में आपका अनुभव बहुत बढ़ा चढ़ा है। इस समय [illegible] एसोसिएशन के डायरेक्टर हैं। जूट के वायदे के व्यवसाय में आप इस समय प्रधान [illegible] हैं। आपके भाई भी आपको इस व्यवसाय में सहयोग प्रदान करते हैं। आप श्वेताम्बर [illegible] को मानने वाले हैं। आपका आफिस नं० ४ सैनागो स्ट्रीट कलकत्ता में है।

बम्बोली

सेठ सोभाचन्द माणकचन्द बम्बोली, सादड़ी

इस खानदान वाले प्रथम उदयपुर में रहते थे। इस वंश में पीथाजी हुए जो सादडी में [illegible]। पीथाजी के सवजी नामक पुत्र हुए। सवजी के सोभाचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक [illegible]। सोभाचन्दजी संवत् १९३८ में स्वर्गवासी हुए। सोभाचन्दजी के पुत्र नवलचन्दजी हुए। [illegible] केसूरामजी, सांकलचन्दजी संतोषचन्दजी रूपचन्दजी तथा मेघराजजी नामक ५ [illegible] सांकलचन्दजी को माणकचन्दजी के नाम पर दत्तक दिया गया। इस समय इन [illegible] पूना में बैकिंग, तथा सराफी काम करती है। सांकलचन्दजी तथा संतोषचन्दजी [illegible] व्यक्ति थे। संवत् १९६७ में संतोषचन्दजी का स्वर्गवास हुआ।

[illegible] केसुरामजी के पुत्र गुलाबचन्दजी थे। इनके जसराजजी, तेजमलजी, चन्दनमलजी, [illegible] नामक पाँच पुत्र विद्यमान हैं। इनमें से तेजमलजी को सांकलचन्दजी के पुत्र [illegible] नाम पर दत्तक दिया है। बम्बोली संतोषचन्दजी के मयाचन्दजी, चुन्नीलालजी तथा बालचन्द [illegible] पुत्र विद्यमान हैं। जिनमें चुन्नीलालजी, रूपचन्दजी के नाम पर तथा बालचन्दजी, मेघराजजी [illegible] गये हैं।

[illegible] मयाचन्दजी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप स्थानीय शुभ चिंतक जैन समाज [illegible] प्रेसिडेण्ट तथा वरकाणा विद्यालय की मेनेजिंग कमेटी के मेम्बर हैं। सादडी के विद्यालय [illegible] (६०००) छ हजार रुपये दिये हैं। इसी प्रकार सार्वजनिक व धार्मिक कार्यों में आप [illegible] रहते हैं।

श्री श्रीमाल

सेठ जवचन्दजी हिम्मतमलजी श्रीश्रीमाल, सिरोही

[illegible] सिरोही के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। इनके हिम्मतमलजी, फोजमलजी और जवान [illegible] हुए। इनको प्रतिष्ठित व्यापारी समझकर महाराव केसरीसिंहजी ने संवत् १९४० की [illegible] अपना स्टेट ट्रेसरी का ट्रेसरर बनाया। इस स्टेट बैंकर शिप का काम ५० सालों तक [illegible]

यह परिवार करता रहा। ता० १।१०।३२ से स्टेट ने अपनी ट्रेझरी खोल कर यह काम इनकी फर्म से लिया। इन पचास सालों में स्टेट का तमाम खजाना इनकी फर्म पर आता रहा, तथा इनके द्वारा सुवि नुसार हर एक डिपार्टमेंट में पहुँचाया जाता रहा। स्टेट की मीटिंगों में दीवान और रेवन्यू कमिश्नर पश्चात् तीसरी चेयर इनको लगती रही। सेठ हिम्मतमलजी प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यापारी हैं, तथा स्थानीय पंचायती में अग्रगण्य व्यक्ति माने जाते हैं। धार्मिक और सामाजिक कामों में भी आपने अच्छा व्यय कि है। सिरोही स्टेट में आपकी बड़ी इज्जत है। आपकी वफादारी और इमानदारी की कद्र कर स्टेट हर विवाह शादी आदि उत्सवों पर सिरोपाव प्रदान करती है। आपके छोटे भ्राता जवानमलजी विद्यमान हैं। फोजमलजी का अतकाल १९७६ में हो गया है। सेठ हिम्मतमलजी के पुत्र इन्द्रचन्द्रजी हैं। श्रीश्रीमाल-सेठिया बोहरा गौत्र के सज्जन हैं।

सबदरा

सेठ चुन्नीलाल रामचन्द्र सबदरा, मांजरोद (खानदेश)

इस परिवार का निवास आसरडाई (जैतारण के पास) मारवाड़ है। आप लोग स्थानक आम्नाय के मानेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ रायमलजी के पुत्र जीताजी तथा सरदारम हुए। इन बंधुओं में देश से व्यापार के लिये लगभग ८० साल पहिले सेठ सरदारमलजी, खानदे मांजरोद नामक स्थान में आये। तथा मामूली हालत में यहाँ धंधा रू किया। आपके बड़े भ्राता स जीताजी के पुत्र रामचन्द्रजी हुए, आपने आसामी लेनदेन शुरू करके अपने व्यापार की नींव जमाई। स १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आसरडाई से सेठ चुन्नीलालजी दत्तक आये।

चुन्नीलालजी सबदरा—आपका जन्म संवत् १९३२ में हुआ। १२ साल की वय में आप रामचन्द्रजी के नाम पर आये। आपने इन खानदान के व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। खानदे ओसवाल समाज में आप का परिवार प्रतिष्ठित माना जाता है। आप सरल स्वभाव के, गभीर सुखी गृहस्थ हैं। आपके पुत्र पन्नालालजी, मोहनलालजी, चम्पालालजी, दीपचन्दजी तथा वशीलालजी श्री पन्नालालजी का जन्म स० १९५५ में मोहनलालजी का १९५८ में तथा चम्पालालजी का १ में हुआ। आप तीनों भाई फर्म में व्यापार में सहयोग लेते हैं। तथा इनसे छोटे दीपचन्दजी स पूना कॉलेज में बी० ए० के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। आपका विवाह खानदेश के प्रसिद्ध श्री श्रीमान् सेठ राजमलजी ललवानी की कन्या से हुआ है। इनसे छोटे वशीलालजी जलगाँव हाई में पढ़ते हैं। पन्नालालजी के पुत्र शिवलालजी तथा नेमीचन्दजी और मोहनलालजी के पुत्र मानमलज सूरजमलजी तथा चम्पालालजी के पुत्र भँवरलालजी हैं।

जालोरी

श्री तखनमलजी जालोरी, भेलसा (गवालियर)

इस परिवार के पूर्वज जालोरी खुशालचन्दजी तथा उनके पुत्र संतोषचन्दजी अरटिया (री में रहते थे। वहाँ से आपने अपना निवास रुठों को रीयां में बनाया। सेठ संतोषचन्दजी के पुत्र त

[illegible] भाइयों का परिवार अलग २ होगया। सेठ मगनमलजी के पुत्र सेठ [illegible] इस समय अलीगढ़ में अपना २ व्यापार करते हैं।

[illegible] हिसाब के अच्छे जानकार थे। आपके चम्पालालजी और कन्हैयालालजी [illegible] करीब ३५ वर्षों से उदयपुर स्टेट में रेसिडेन्सी सर्जन की आफिस [illegible] यहां आने वाले कई अंग्रेज सर्जनों से अच्छे २ सर्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं। आपके [illegible] परिवार में सर्व प्रथम ग्रेज्युएट हुए हैं। आप मिलनसार और योग्य सज्जन [illegible] मनासा, खरगोन, सनावद, जीरापुर, सेंधवा, हतोद आदि कई स्थानों पर [illegible]। इस समय आप गरोठ में फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट हैं। आप फुटबाल, क्रिकेट वगैरह [illegible]। आपके हीरालालजी और जवाहरलालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ कन्हैयालाल [illegible] व्यापार करते हैं। आपके रतनलालजी, परमेश्वरीलालजी और मनोहरलालजी नामक [illegible] शिक्षित और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपका अध्ययन बी० ए० [illegible] उदयपुर की मशहूर संस्था विद्याभवन में मास्टर हैं।

[illegible] के पुत्र बालूलालजी तथा फूलचन्दजी के पुत्र मोतीलालजी इस समय उदयपुर [illegible] अपना व्यापार करते हैं।

[illegible] जुहारमल मूलचंद बरड़िया, सरदारशहर

[illegible] बहुत समय पहले सिरसा होते हुए अबोहर आये। सिरसा में सेठ [illegible] सिरसा ही में रहकर व्यापार करते रहे। आपके पुत्र छोगमलजी और [illegible] एवम् यहां कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। तथा इसमें अच्छी उन्नति की [illegible] एवम् सेठ जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। प्रथम जुहारमलजी वहाँ से [illegible] और जेठमलजी वहीं रहकर अपना व्यवसाय करने लगे। आपके सुगनचंदजी, [illegible] नामक पुत्र हैं।

[illegible] अबोहर रहते थे, उसी समय कलकत्ता व्यापार के लिये चले गये थे। [illegible] चुन्नीलालजी सरदारशहर वालों के यहां काम करना आरम्भ किया। [illegible] से इस फर्म में साझीदार हो गये। कुछ वर्षों बाद आपने इस फर्म से भी [illegible]। एवम् रघुनाथदास शिवलाल के यहां ५ हजार रुपया सालाना पर [illegible] किया। इस समय आप वयोवृद्ध होने से सरदारशहर में शांतिलाभ कर [illegible], सोहनलालजी एवम् सूरजमलजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। [illegible] मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल १५ वर्षों से आप जूट का वायदे का सौदा [illegible] गति है। आपकी गद्दी १६ चीना फिरंड लेन में है। सूरजमलजी [illegible]। सोहनलालजी अपने चाचा हीरालालजी के साझे में "छोटूलाल सोहन- [illegible] कपड़े तथा गणेश भगत के कटले में धोती का व्यापार करते हैं।

आप रांसे व्यवसाय के लिये भेलसा आये, और यहाँ सर्विस की। संवत् १९२१ में हुए। आपके गुलाबचन्दजी पूनमचन्दजी तथा नथमलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ पूनमचन्दजी ने बांसोदा (भेलसा के पास) में अपना व्यापार शुरू किया, तथा १० जमींदारी की। आप तीनों भ्राता क्रमशः संवत् १९४१ संवत् १९२८ तथा संवत् स्वर्गवासी हुए। सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र रिखबदासजी संवत् १९८१ में स्वर्गवासी होगये सिंगारमलजी तथा सागरमलजी बासोदा में व्यापार करते हैं।

पूनमचन्दजी के अमीरचन्दजी तथा लूणकरणजी नामक २ पुत्र हुए। जालोरी लूणकरण १९११ में भेलसा आये तथा यहाँ ३ गांवों की जमीदारी करके मकानात दुकाने आदि बन- १९८० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र जालोरी तखतमलजी हैं।

तखतमलजी जालोरी—आपका जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आप १८ साल की आयु से में प्रेक्टिस करते हैं। तथा भेलसा और गवालियर स्टेट के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। तीन गवालियर स्टेट प्रीवियस कान्फ्रेंस के सेक्रेटरी थे, तथा इधर २ वर्षों से उसके प्रेसिडेंट गवालियर स्टेट लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर हैं। इसके अलावा अछूतोद्धारक संघ भेलसा संघ खादी भण्डार के संचालक तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट ओकॉफ कमेटी के भेलसा म्यु० के प्रेसिडेण्ट भी आप रह चुके हैं। इसी तरह के हरएक सार्वजनिक लेते हैं। आपके पुत्र राजमलजी इलाहबाद में थर्ड ईयर में पढ़ते हैं। इस अमीरचन्दजी के पुत्र मिलापचन्दजी तथा अमोलकचन्दजी स्वर्गवासी होगये हैं। इस के पुत्र सोभागमलजी भेलसा में खजांची हैं। तथा सूरजमलजी उदयपुर में पढ़ते के पुत्र सरदारमलजी हैं।

सेठ नथमल दुलीचंद जालोरी बोहरा का खानदान, अहमदनगर

इस खानदान का मूल निवास पीपाड (मारवाड) है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के हैं। इस खानदान के पूर्वज सेठ वक्तूरामजी तथा उनके पुत्र मोतीरामजी थे। सेठ के पुत्र हुए। इनमें बड़े दो सेठ तेजमलजी तथा सूरजमलजी लगभग १५० वर्ष पूर्व पैदल अहमदनगर आये, तथा यहाँ सराफी और कपड़े का व्यापार चालू किया। आपके छोटे भाई में ही रहते रहे।

तेजमलजी के पुत्र गणेशदासजी तथा भगवानदासजी थे। इनमें गणेशदासजी के लक्ष्मण- तथा ... नामक ३ पुत्र हुए। और भगवानदासजी के पुत्र पेमराजजी हुए। का स्वर्गवास हो गया है। इस समय लछमणदासजी के पुत्र चुन्नीलालजी तथा पेम विद्यमान हैं।

सूरजमलजी के पुत्र नथमलजी तथा पौत्र दुलीचन्दजी हुए। जालोरी बोहरा दुलीचन्दजी के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आपने पीपाड में एक उपाश्रय तथा भांदकजी में

बा० मूलचन्दजी के श्रीचन्दजी, सुमेरमलजी, चन्दनमलजी, कन्हैयालालजी एवम् मंगल और बा० सोहनलालजी के माणकचन्दजी और रतनलालजी नामक पुत्र हैं। आप तेरापन्थी संप्रदाय

श्री भैरोंलालजी बरड़िया बी० ए० एल० एल० बी० नरसिंहपुर (सी० पी०

इस परिवार के पूर्वज बरडिया परमचन्दजी आपने मूल निवासस्थान फलौदी (जोधपुर से व्यापार के लिये नरसिंहपुर आये। यहाँ आकर आप रीयाँवाले सेठों की दुकान पर मुनीम हुए। संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र दमरूलालजी करीब १५ सालों तक रीयाँवाले दुकान पर प्रधान मुनीम रहे। आपने गोटे गाँव में मानमल मिलापचन्द तथा परमचन्द नंदराम के दुकान खोली। सन् १९२७ में आप स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र भैरोंलालजी तथा मिश्रीलालजी

भैरोंलालजी बरडिया—आपका जन्म संवत् १९५४ में हुआ। आपने सन् १९२३ में तथा १९२६ में एल० एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। सन् १९२७ से आप नरसिंहपुर से प्रेक्टि हैं। यवतमाल के ओसवाल सम्मेलन में आप मध्यप्रान्तीय ओसवाल महा सभा के सेक्रेटरी नि थे। आपको लिखने तथा भाषण देने का अच्छा अभ्यास है। आपने एक "हिन्दी ग्रन्थ माला" भी की थी। आपके छोटे भाई मिश्रीलालजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया है। श्री भैरोंलालजी बरडिय पूनमचन्दजी तथा हुकुमचन्दजी पढ़ते हैं तथा लक्ष्मीचन्दजी और कुशलचन्दजी छोटे हैं।

बनवट

सेठ प्रतापमल फूलचन्द बनवट, आस्टा (भोपाल)

यह कुटुम्ब जोधपुर स्टेट के रास ठिकाना का निवासी है, आप श्वेताम्बर जैन समाज के मार्गीय आम्नाय के माननेवाले हैं। देश से लगभग संवत् १८५१ में सेठ विनेचन्दजी बनवट के पुत्र ना यणदासजी, चन्द्रभानजी तथा नंदरामजी तीन भ्राता भोपाल स्टेट के मगरदा नामक स्थान में आ वहाँ संवत् १८८१ में "नारायणदास नंदराम" के नाम से दुकान स्थापित की गई। सेठ नारायणदा पुत्र चुन्नीलालजी तथा नंदरामजी के पुत्र छोगमलजी हुए। इन भ्राताओं में सेठ चुन्नीलालजी ने तथा लेन-देन के व्यापार में इस दुकान के व्यापार तथा कुटुम्ब के सम्मान को विशेष बढ़ाया। इ सज्जनों का स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९४६ तथा संवत् १९५८ में हुआ। सेठ चुन्नीलालजी के पुत्र मलजी उनकी मौजूदगी में ही स्वर्गवासी हो गये थे। सेठ प्रतापमलजी बनवट के नाम पर बोरज फूलचन्दजी बनवट दत्तक आये तथा छोगमलजी के यहाँ सिरेमलजी, बडू (खानदेश) से दत्तक आप दोनों भाई संवत् १९६२ में अलग २ हो गये।

सेठ फूलचन्दजी बनवट—आपका जन्म संवत् १९४६ में हुआ। आप संवत् १९६६ में मग आस्टा आये। आप ही की हिम्मत के बल पर दिगम्बर जैन प्रतिमा का जुलूस आस्टे में निकालना

एक धर्मशाला बनवाई। अहमदनगर में आपकी फर्म सबसे पुरानी मानी जाती है। आप ६५ इ आयु में, सम्वत् १९७८ में स्वर्गवासी हुए। आपके समरथमलजी, कनकमलजी, सिरेमलजी, हस्ती तथा अमोलकचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। आप सब भाइयों का भी धरम ध्यान की ओर अच्छा लक्ष इनमें सेठ हस्तीमलजी को छोड़कर शेष चार भ्राता निःसंतान स्वर्गवासी हो गये हैं। हस्तीमलजी क सम्वत् १९४८ में हुआ। आप अहमदनगर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबूलाल ४ साल के

फलोदिया

सेठ फतेचन्द मांगीलाल फलोदिया, अहमदनगर

इस परिवार का मूल निवास सेठों की रींया (मारवाड़) है। वहाँ से सेठ खुशाल फलोदिया अपने पुत्र गुमानचन्दजी तथा मोहकमदासजी के साथ लगभग २०० साल पूर्व अहमदनगर के साकूर नामक गाँव में गये। और वहाँ अपनी दुकान खोली। सेठ गुमानचन्दजी के इन्द्रभानजी, मुलतानमलजी नामक २ पुत्र हुए।

इन्द्रभानजी फलोदिया का परिवार—सेठ इन्द्रभानजी का सम्वत् १९२७ में स्वर्गवास ३ आपके हजारीमलजी, भवानीदासजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। फलोदिया भवानीदासज नवलमलजी तथा हरकचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें हरकचन्दजी, सेठ गुलाबचन्दजी के नाम पर गये। इस समय इस परिवार में हजारीमलजी के पुत्र किशनदासजी तथा सूरजमलजी साकूर में व करते हैं। और हरकचन्दजी के पुत्र चुन्नीलालजी वरोरा (सी०पी०) में सूत का व्यापार करते हैं।

मुलतानमलजी फलोदिया का परिवार—आपका सम्वत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। आपके पूनमचन्दजी लगभग ७० साल पहले साकूर से अमरावती आये। तथा "मानमल गुलाबचन्द" के स कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप सम्वत् १९५० में स्वर्गवासी हुए। आपके शोभचन्दज, फतेच तथा माँगीलालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें शोभाचन्दजी सम्वत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

फतेचन्दजी फलोदिया—आपका जन्म सम्वत् १९३७ में हुआ। आप अमरावती के आप समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। सार्वजनिक तथा धार्मिक कामों में आप अच्छा सहयोग लेते हैं। ३ लगभग ५० हजार की लागत से अमरावती के एक जैन मन्दिर बनवाकर सम्वत् १९८० में उसकी प्र कराई। आपके यहाँ "फतेचन्द माँगीलाल" के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। आपके मोहनलालजी २८ साल के हैं।

धूपिया

सेठ हजारीमल विशनदास (धूपिया) का खानदान, अहमदनगर

इस खानदान का मूल निवास स्थान रणसी गाँव (पीपाड) का है। आप श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्वज सेठ पन्नालालजी के पौत्र श्रीयुत हजारीम

[illegible] आपको आस्टे के दिगम्बर जैन समाज ने चाँदी की डिब्बी, सिरोपाव तथा मान [illegible]। आपका आस्टे की जनता में तथा भोपाल राज्य मे अच्छा सम्मान है, आपको [illegible] से मिलने की इजाजत प्राप्त है। तथा आप आस्टे के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। वर्तमान "[illegible] फूलचन्द" बनवट के नाम से साहुकारी तथा आसामी लेन देन होता है।

वढ़ेर

[illegible]ठ कन्हैयालाल चुन्नीलाल वढ़ेर, देहली

[illegible] करीब सात आठ पुश्त से देहली में ही रहता है। आप ओसवाल जाति [illegible]। आप स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इस खानदान में [illegible] पुत्र लाला छजमलजी और छजमलजी के हीरालालजी नामक पुत्र हुए। [illegible] १८८० के करीब हुआ। और सवत् १९५० के ज्येष्ठ मास मे आपका स्वर्ग[illegible] धार्मिक और परोपकारी पुरुष थे सामायिक और प्रतिक्रमण का आपको बड़ा [illegible] पुत्र लाला कन्हैयालालजी इस खानदान में बड़े नामी और प्रतापी पुरुष हुए। [illegible] सम्पत्ति और इज्जत को बहुत बढ़ाया। आप खास कर नीलाम का व्यापार करते थे। [illegible] १९४० में हुआ। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से लाला मांगीलालजी और [illegible]। लाला मांगीलालजी का जन्म संवत् १९३७ का है। आपके तीन पुत्र हुए [illegible], मुन्नालालजी और ऋषभचन्दजी हैं। इनमें से चम्पालालजी का केवल २२ [illegible] स्वर्गवास होगया। लाला चुन्नीलालजी का जन्म संवत् १९४६ का है। आप [illegible] पुरुष हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम जवाहरलालजी और मिलापचंद [illegible] समाज में यह खानदान बड़ा धार्मिक और प्रतिष्ठित माना जाता है।

भड़गातिया

... ...दगाड़िया (फतेचन्द मांगीलाल) अमरावती

सेठ हीरालालजी भलगट (छोगमल हीरालाल) गुलबर्गा

... महता (किसनदास माणकचन्द)
...नगर.

श्री मोतीलालजी भलगट (छोगमल हीरालाल)
गुलबर्गा.

सवत् १९२८ में आप अजमेर से वापस मेडते चले गये। आपके वडे पुत्र कल्याणमलजी का प
अजमेर में तथा सुगनमलजी का परिवार मेडते में निवास करता है।

मडगतिया कल्याणमलजी—आपने अपने व्यापार और मकान, जायदाद आदि स्थाई स
को बहुत बढ़ाया। सवत् १९५७ मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके कस्तूरमलजी तथा जावंतराजजी न
दो पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने अपने पितामह सेठ फतेमलजी द्वारा बनाई गई दादाजीको छत्री में एक
रुपये व्यय करके १९७१ मे प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई। आप दोनों बन्धुओं का लाखों रुपयों का लेनदेन मा
के जागीरदारों में रहा करता था। आप अजमेर के प्रधान, प्रतिभाशाली साहुकारों में माने जा
सवत् १९७३ में दोनों भाइयों का व्यापार अलग अलग हुआ। मडगतिया कस्तूरमलजी विद्यमान
आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति मौज, शौक और आनन्द उल्लास में खरच की। आपके कोई स
नहीं है। सेठ जावन्तराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७६ में हुआ। आपके पुत्र उदयमलजी का
सन् १९०१ में हुआ। आप प्रसन्नचित्त युवक हैं आपके यहाँ कल्याणमल जावतराज के नाम से जो ग
तथा "बालमल उदयमल" के नाम से अजमेर में बैंकिंग तथा जायदाद के किराये का काम होता है।

मड़गतिया सुगनमलजी—आपका परिवार मेडते में निवास करता है। तथा वहाँ के ओर
समाज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन पुत्र हैं।
धनपतमलजी तथा आनन्दमलजी बिड़ला मिल ग्वालियर में सर्विस करते है तथा चन्दनमलजी मेड
निवास करते हैं।

सांखला

साखला गौत्र की उत्पात्ति—कहा जाता है कि सिद्धपुर पाटन के राजा सिद्धराज जयसि
विश्वास पात्र सेवक जगदेवजी के सूरजी, सखजी, सांवलजी, तथा सामदेवजी आदि ७ पुत्र थे। ज
जी, बडे बहादुर पुरुष हुए। इनको श्री हेमसूरिजी ने संवत् ११७५ में जैन धर्म की दीक्षा दी।
प्रकार सखजी जैन धर्म से दीक्षित हुए। इनकी सन्ताने सांखला कहलाई।

सेठ सागरमल गिरधारीलाल सांखला, बगलोर

इस परिवार का मूल निवासस्थान मोहर्रा (जोधपुरस्टेट) है वहाँ से लगभग ६५ साल पहले
गिरधारीलालजी साखला व्यापार के लिये बंगलोर आये। आरम्भ में आपने १० सालों तक मुनीमात
पश्चात् मिलटरी को नाणा, सप्लाय करने के लिये बैंकिंग व्यापार आरम्भ किया। तथा 'साग
गिरधारीलाल" के नाम से फर्म स्थापित की। इसके १० साल पश्चात् आपने सिकराबाद (दक्षिण)
तथा इसके भी साल पश्चात् आपने नीलगिरी में अपनी दुकानें खोलीं। इन सब स्थानों पर यह
ब्रिटिश-छावनी के साथ बैंकिंग बिजिनेस करती है। आपके पुत्र श्रीयुत अनराजजी सांखला बडे बुद्धि
उदार तथा व्यापार कुशल सज्जन है।

लिखा है कि "मालदास मेहता प्रधान थे और उनके डिप्टी मौजीराम थे। ये दोनों बुद्धिमान और थे।" "Maldas mehta was civil member with Maujiram as his Deputy, both n of talent and energy" इत्यादि।

हता देवीचन्दजी

मेहता अगरचन्दजी के बाद उनके बड़े पुत्र देवीचन्दजी मेवाड़ राज्य के प्रधान मन्त्री (Prime nister) के पद पर अधिष्ठित हुए। पर कुछ ही वर्षों बाद जब उन्होंने देखा कि मेवाड़ाधिपति र और प्रजाहित कार्यों में उनकी सलाह पर ध्यान नहीं देते हैं तो वे अपने प्रधान मन्त्री के पद से ग हो गये। इतना ही नहीं उन्होंने प्रधान मन्त्री का पद स्वीकार न करने की भी सौगन्ध खा ली।

मेहता देवीचन्द जी के कार्य्य काल में किसी दबाव के कारण मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने सुप्रसिद्ध झाला जालिमसिंहजी को माडलगढ़ का किला प्रदान कर दिया और इस सम्बन्ध में महा ा ने मेहता देवीचन्दजी को एक पत्र लिखा, जिसका भाव यह है "माडलगढ़ का किला खालसा तथा िर के सब गाँवों समेत जालिमसिंह को दे दिया गया है सो वे सब उसके सुपुर्द कर देना और तू हुजूर ाजिर होना। तेरी जागीर, गाँव कूआ, खेत आदि पर तू अपना अमल रखना। तेरे घरबार के न्ध में हम तब हुक्म देंगे जब तू जालिमसिंह के साथ हुजूर में हाजिर होगा। यह परवाना सम्वत १८५९ ादवा सुदी ८ बुधवार के दिन श्री मुख की परवानगी से जाहिर हुआ है।

जब देवीचन्दजी ने यह परवाना देखा तो वे बड़े असमंजस में पड़ गये। जालिमसिंहजी के थ यद्यपि उनका बड़ा ही मैत्री पूर्ण सम्बन्ध था, पर इससे भी अधिक मेवाड़ के हित पर उनका मन न लगा हुआ था। इसलिये उन्होंने किसी बहाने से टालमटूल कर झाला को किला न सौंपा। इस पर : महाराणा भीमसिंहजी ने उक्त मेहताजी को जोरदार पत्र लिखा, वह इस प्रकार है —

> स्वस्ती श्री मेहता देवीचन्दजी अपरच परगणो माडलगढ़ किला खालसा जागीर सुदी जलिमसिंहजी झाला है वगशो जणी में अमल करवाणे परवानो थने नाम नो लिख दियो परन्तु थे अणा से अमल करायो नहीं और लड़वाने तयार हुआ सो म्हारा नंद को भला भाव और स्याम खौर होवे तो लख्या मुजब ज्यारो अमल ल्यार दीजो अब आगे कदा रे तो म्हारा हरामखोर होना संवत् १८५९ आसोज सुदी १४ नोने

जब इस दूसरे पत्र पर भी देवीचन्दजी ने ध्यान नहीं दिया, तब महाराणा साहब ने एक तीसरा और लिखा। पर देवीचन्दजी जानते थे कि मांडलगढ़ का किला मेवाड़ में सैनिक दृष्टि से बड़े महत्व

की चीज है। अतएव उन्होंने तीसरे पत्र से भी किला सौंपना ठीक नहीं समझा। इस पर झाला जालिमसिं ने जबर्दस्ती से किले पर अधिकार करने का निश्चय किया। उन्होंने मॉडलगढ से १८ मील की दूरी लुहण्डी स्थान पर एक नया किला बनाना शुरू किया और वे मॉडलगढ को हस्तगत करने की युक्ति सो लगे। इतना ही नहीं झालाजी ने मेवाड के तीन गाँवों पर अधिकार भी कर लिया। जब यह खबर चन्दजी को लगी तो उन्होंने झाला पर फौजी चढाई करके उन्हें भगा दिया। कहने की आवश्यकता नहीं एक ओसवाल वीर तथा मुत्सद्दी की कारगुजारी ने एक जबर्दस्त शत्रु के पंजे से मेवाड राज्य की रक्षा की

जब यह खबर महाराणा साहब के पास पहुँची तो वे मेहता देवीचन्दजी पर बडे ही प्रसन्न हु उन्होंने मेहताजी को फिर से दीवानगी पर प्रतिष्ठित करने को कहा, पर मेहताजी अपनी पूर्व प्रतिज्ञा से नहीं चाहते थे। इसलिये उन्होंने प्रधानमन्त्री का पद स्वीकार करने में अपनी असमर्थता दिखलाई। हा, पद के लिये उन्होंने मेहता रामसिंहजी का नाम सूचित किया। महाराणा साहब ने यह बात करली। मेहता रामसिंहजी को दीवान का उच्चपद प्रदान कर दिया गया। देवीचन्दजी सुप्रीमकौंसि (प्रधान सलाहकार) का काम करने लगे।

इसी समय कई बाहरी झगड़ों के कारण देवीचन्दजी ने यह मुनासिब समझा कि मेवाड राज्य ब्रिटिश सरकार के साथ मैत्री सम्बन्ध हो जाय तो अच्छा है। कहने की आवश्यकता नहीं कि मेवाड और ब्रिटिश सरकार के बीच एक सुलह नामा हो गया। इसके बाद जब कर्नल टॉड साहब उदयपुर आये, वे देवीचन्दजी से बहुत प्रसन्न हुए और महाराणा से कहकर उनकी जागीर उन्हे दिलवा दी। कहने का ता यह है कि मेहता देवीचन्दजी बड़े वीर, रणकुशल और शासन कुशल व्यक्ति थे।

मेहता रामसिंहजी

मेहता देवीचन्दजी के बाद उदयपुर के दीवान पद को मेहता रामसिहजी ने सुशोभित किय रामसिंहजी कार्य्य दक्ष, बुद्धिशाली और स्वामि भक्त थे। अपने कार्यों से इन्होंने मेवाड़ में अ ख्याति प्राप्ति की। इन के गुणों पर रीझकर विक्रम सवत् १८७५ में महाराणा भीमसिंहजी ने उन्हें बद जिले का भरना गाँव जागीर में प्रदान किया। उस समय मेवाड का शासन प्रबन्ध महाराणा और अं सरकार दोनों के हाथ में था महाराणा की ओर से कामदार और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की तरफ से चपरा नियुक्त रहते थे। इस द्वैध शासन से तग आकर मेवाड की प्रजा ने ब्रिटिश गवर्नमेंट से शिकायत की वि० सं० १८८१ में मेवाड के तत्कालीन पोलिटिकाल एजंट कप्तान कॉब ने शिवलाल घालण्डिया की ज मेहता रामसिंह को प्रधान पद पर नियुक्त किया।

...द ७५ वर्ष पूर्व अहमद नगर में आये। शुरू में आपने थोडे समय सर्विस की और पश्चात् ... "हजारीमल अगरचन्द" के नाम से भागीदारी में दुकान स्थापित की। संवत् ९४१ में ...म हुआ। आपके धीरजमलजी, अगरचन्दजी, नेमीदासजी और विशनदासजी नामक ४ भाई ...म अगरचन्दजी, नेमीदासजी और विशनदासजी भी मारवाड से अहमदनगर आ गये। आप ... हाथों म इस फर्म की खूब उन्नति हुई। आपका धार्मिक कार्यों की ओर बहुत लक्ष्य था। सम्वत् ...ों भाइयों का व्यापार अलग २ हो गया। मूथा विशनदासजी ने शास्त्रों का पठन पाठन और ... किया था। अगरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५५ में, नेमीदासजी का सम्वत् १९६९ में ...मलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में हुआ।

...था हजारीमलजी के पुत्र मोतीलालजी का जन्म सम्वत् १९३३ में हुआ है। आपके यहाँ ...लाल" के नाम से व्यापार होता है। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आपके पुत्र चुन्नीलालजी हैं।

...था विशनदासजी के माणकचन्दजी और प्रेमराजजी नामक २ पुत्र हैं। आपका जन्म सम्वत् ... म हुआ। आप दोनों भाई सज्जन पुरुष हैं। अहमदनगर के ओसवाल नवयुवकों में आप बडे ...र्मशील हैं। आपने अपने पिताजी के स्वर्गवास के समय २१००) का दान किया था। "विशनदास माणकचन्द" के नाम से व्यापार होता है।

सेठ पूनमचंद मुकुन्ददास मूथा (धूपिया), अहमदनगर

यह खानदान श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस खानदान का ...थान रगी गाव (जोधपुर) का है। इस खानदान में मूथा जेठमलजी देश से अहमद नगर ...ों पर अपनी दुकान स्थापित की। आपके नवलमलजी और मुल्तानमलजी नामक दो पुत्र ...मलजी बडे बुद्धिमान और व्यापार दक्ष पुरुष थे। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत ... आपका स्वर्गवास संवत् १९२९ में हुआ। आपके छः पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से गंभीर-...मलजी, विशनदासजी, मुकुन्ददासजी, रतनचन्दजी और पूनमचंदजी थे। इनमे से केवल ...जी इस समय विद्यमान हैं। विशनदासजी का स्वर्गवास संवत् १९४७ में तथा ... सम्वत् १९३५ में हुआ। इस समय मुकुन्ददासजी के पुत्र प्रेमराजजी तथा मोतीलालजी ... के पुत्र पन्नालालजी, धनराजजी तथा वंशीलालजी विद्यमान हैं। इस समय इस फर्म के ...न सेठ पूनमचन्दजी और मूथा प्रेमराजजी करते हैं। आप दोनों बडे सज्जन और व्यापार ... धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर आपका अच्छा लक्ष्य है। इस समय यह फर्म ... का व्यापार करती है। मूथा पूनमचन्दजी अहमद नगर जिला ओसवाल पंचायत ...सभापति थे।

सेठ छोगमल हीरालाल भलगट, गुलवर्गा

इस परिवार का मूल निवास सेठजी की रीयाँ (मारवाड) में है। वहाँ भलगट अनोपचंदजी

(पूरनचंद कवलचंद) नाशिक स्व० सेठ छजमलजी घेमावत (छजमलजी नथमलजी) सादड़ी

हुकमल) औरंगाबाद.

स्व० सेठ नथमलजी घेमावत

साद

निवास करते थे। आपके कस्तूरमलजी, हजारीमलजी व जीरामलजी तथा बख्तावरमलजी नामक ४ पुत्र हुए हजारीमलजी रीयाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके गाढ़मलजी तथा छोगमलजी नामक २ पुत्र हुए। देश से व्यापार के लिए सेठ छोगमलजी संवत् १९३८ में गुलवर्गा आये। आपके आने के बाद दो दो साल के अन्तर से आपके पुत्र चुन्नीलालजी तथा हीरालालजी भी यहाँ आगये, तथा छोगमल चुन्नीलाल के नाम से व्यापार शुरू किया। संवत् १९६८ में इन दोनों भाइयों का व्यापार अलग २ हो गया। संवत् १९७७ में सेठ छोगमलजी तथा संवत् १९८४ में सेठ चुन्नीलालजी स्वर्गवासी हुए। इनके नाम पर मारवाड़ से गुलाब चन्दजी दत्तक आये हैं। इनके यहाँ "चुन्नीलाल गुलाबचन्द" के नाम से सराफी व्यापार होता है।

सेठ हीरालालजी मलगट—आपका संवत् १९३१ में जन्म हुआ। आपने कपडे के व्यापार में अच्छी सम्पत्ति पैदा की। तथा गुलवर्गा के व्यापारिक समाज में अपनी प्रतिष्टा को बढ़ाया। आपकी यहाँ दुकाने सफलता के साथ कपडे का व्यापार कर रही हैं। तथा गुलबर्गा की दुकानों में मातवर मानी जाती हैं। गुलबर्गा स्टेशन रोड पर आपका महावीर भवन नामक सुन्दर बंगला बना हुआ है। इसी तरह आपके और भी कई मकानात बगले आदि हैं। सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्यों में भी आप अच्छी सम्पत्ति व्यय करते हैं। आपके नाम पर मोतीलालजी बूसी (जोधपुर स्टेट) से दत्तक आये है। इनकी वय ३० साल की है। आपभी तत्परता से अपने कपडे के व्यापार को सह्मालते है। इनके पुत्र शांतिलालजी २ साल के हैं

इसी तरह इस खानदान में सेठ वजीरामलजी के छोटे पुत्र किशनराजजी तथा उन के भतीजे पेमराजजी और धनराजजी कान गाँव (वर्द्धा) में व्यापार करते है।

मुदरेचा (वोहरा)

सेठ सूरजमल दूलहराज मुदरेचा (वोहरा), कोलार गोल्ड फील्ड

इस परिवार की उत्पत्ति चौहान राजपूतों से हुई। इस कुटुम्ब का मूल निवास स्थान ब्यावर राजपूताना है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। सेठ छोगमलजी मुदरेचा अपने बड़े पुत्र सूरजमलजी के साथ सम्वत् १९५२ में बूंटी से बगलोर आए, तथा यहाँ सेठ "बख्तावरमल रूपराज" मूथा के यहाँ ६ सालों तक सर्विस की। इसके बाद सम्वत् १९५९ में सेठ "हजारीमल धनराज मूथा की भागीदारी में बंगलोर में एक दुकान की। इसके २ वर्ष बाद कोलार गोल्ड फील्ड में आपने अपनी स्वतंत्र दुकान खोली। मुदरेचा सूरजमलजी का जन्म सम्वत् १९४६ में हुआ। आप सज्जन तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आप कोलार गोल्ड फील्ड में "सूरजमल दूलहराज" के नाम से बेंकिंग व्यापार करते हैं आपके छोटे भाई श्रीयुत दुलहराजजी का जन्म सम्वत् १९४६ में तथा श्री हरकचन्दजी का स० १९४' हुआ। इन बन्धुओं का व्यापार बंगलोर हलसूर बाजार में "सूरजमल दूलहराज" तथा "छोगमल सूरजमल के नाम से होता है। आप दोनों बन्धु सज्जन व्यक्ति है।

मुदरेचा सूरजमलजी के पुत्र रतनलालजी २० साल के है, तथा व्यापार में भाग लेते है। इनके छोटे हीरालालजी तथा पन्नालालजी बालक हैं। इसी तरह हरकचन्दजी के पुत्र मोहनलालजी १४ साल के हैं

छगनमलजी और माणकलालजी बालक हैं। इस परिवार की ओर से बूंटी में गायों की सुविधा के लिये तथा मेडी कोटा बनवाया गया है। आप शिक्षा के लिये ५००) सालियाना स्कूलों को देते हैं। गोल्ड फील्ड तथा बंगलोर के ओसवाल समाज में इस परिवार की अच्छी प्रतिष्ठा है।

बैताला

सेठ अमरचन्द माणकचन्द बैताला, मद्रास

यह खानदान मूल निवासी डे (मारवाड) का है। मगर इस समय यह खानदान नागौर में है। श्वेताम्बर मन्दिर आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदान में सेठ बालचन्दजी हुए। आपने नागौर में अपनी फर्म स्थापित की। आपके पुत्र अमरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७४ में हुआ। बैताला अमरचन्दजी के कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर माणिकचन्दजी बैताला सम्वत् में दत्तक लिये गये। आपका जन्म सम्वत् १९६५ का है। आप सम्वत् १९८० में मद्रास आये और व्यापार के लिये सेठ बहादुरमलजी समदरिया के पास रहे। उसके पश्चात् आपने अमरचन्दजी के नाम से मनी लेंण्डिंग और ज्वैलरी का व्यापार शुरू किया। उसके बाद सम्वत् १९८८ से स्वतन्त्र व्यापार शुरू कर दिया। इस समय आप मद्रास में डायमण्ड और ज्वैलरी का काम करते हैं। आपने अपनी बुद्धिमानी से व्यापार में अच्छी तरक्की की है।

सेठ घासीराम बच्छराज बैताला, बागलकोट

इस परिवार का मूल निवास स्थान सोवणा (नागोर) है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय मानता है। इस परिवार के पूर्वज सेठ जेठमलजी बैताला मारवाड में रहते थे। इनके बख्तावरमलजी, जेठमलजी तथा छोगमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बंधुओं में सेठ बख्तावरमलजी बैताला १०० साल पूर्व पैदल रास्ते से महाड बन्दर होते हुए बागलकोट आये। तथा "जेठमल बख्तावरमल" के नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। आपने पीछे से अपने भाइयों को भी बागलकोट बुला लिया। छोटे भाई छोगमलजी का सम्वत् १९८३ में स्वर्गवास हुआ। आपके घासीमलजी, हीरालालजी तथा किशनलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें किशनलालजी संवत् १९८६ में गुजर गये। तथा सेठ हीरालालजी, कस्तूरचन्दजी के नाम पर दत्तक गये।

सेठ घासीलालजी का जन्म सम्वत् १९४२ में हुआ। आपने सेठ "गणेशदास गंगाविशन" की फर्म पर सम्वत् १९६० से बेजवाडा तथा बागलकोट में आढ़त की फर्म खोली है। तथा आप बागलकोट के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं। आपके पुत्र बच्छराजजी तथा जसराजजी व्यापार करते हैं। तथा मूलचन्द, तेजमल और मेघराज छोटे हैं। इसी प्रकार से सेठ चंदूलालजी, "[illegible]" के नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं। इनके पुत्र भीमराजजी हैं। हीरालालजी [illegible] तथा किशनलालजी के पुत्र चम्पालालजी सराफी व्यापार करते हैं।

घेमावत

...गोत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ९७२ में बीजापुर (गोड़वाड़) के पास हस्ती ...स्थान में राजा दिगवत् राज करते थे। इनको जैन मुनि श्री बलभद्राचार्य्य ने जैनधर्म ...या। इनके कई पीढ़ियों बाद भांडाजी हुए जिन्होंने गिरनार व शत्रुँजय के संघ निकाले। ...पीढ़ियों बाद संवत् १८०० के लगभग घेमाजी और ओटाजी हुए। इन्होंने बाली में मनमोहन ...का मन्दिर बनवाया। इनका परिवार घेमावत, और ओटावत कहलाता है। यह कुटुम्ब ...र्ही, तथा शिवगंज, सिरोही और सादड़ी में रहते हैं।

सेठ छजमलजी घेमावत का परिवार, सादड़ी

...इस खानदान के पूर्वज दावाजी घेमावत के पुत्र कपूरचन्दजी घेमावत लगभग संवत १९०५ में ...सूरत गये तथा सूरत से ३ मील की दूरी पर भाटे गाँव नामक स्थान में लेनदेन का व्यापार ...संवत १९२१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ छजमलजी हुए।

...छजमलजी घेमावत—आपका जन्म संवत् १८९१ में हुआ। आपने संवत् १९४८ में बम्बई ...दुकान खोली। तथा आपही ने इस खानदान के जमीन जायदाद को विशेष बढ़ाया। आप बड़े ...में श्रद्धा रखने वाले पुरुष थे। संवत् १९७० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नथमलजी, ...मूलचन्दजी, जसराजजी तथा दीपचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बंधुओं में से कस्तूरचन्दजी ...में तथा नथमलजी संवत् १९८८ में स्वर्गवासी हुए। इन पांचों भाइयों ने इस कुटुम्ब के ...तथा सम्पत्ति को बहुत बढ़ाया। इन बंधुओं का कारबार इधर २ साल पूर्व अलग २ हो ...सब भाइयों का बम्बई में अलग २ कपड़े का व्यापार होता है। सादड़ी में आप लोगों ...हवेलियाँ बनी हुई हैं। तथा गोड़वाड़ प्रान्त के प्रतिष्ठित परिवारों में यह परिवार माना जाता ...र में सेठ नथमलजी गोड़वाड़ के प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव थे। तथा इस समय सेठ ...दीपचन्दजी गोड़वाड़ प्रांत के वजनदार पुरुष माने जाते हैं। आप दोनों भाइयों का जन्म ...१९... तथा १९२० में हुआ। इसी तरह आपके मझले बंधु सेठ जसराजजी का जन्म संवत् ...।

...समय में इस कुटुम्ब में सेठ मूलचन्दजी, सेठ जसराजजी, सेठ दीपचन्दजी तथा सेठ नथमलजी ...और सेठ कस्तूरचन्दजी के पुत्र चन्दनमलजी मुख्य हैं। सेठ मूलचन्दजी के पुत्र ...जसराजजी के पुत्र ओटरमलजी, हमीरमलजी तथा जुगराजजी और दीपचन्दजी के पुत्र सहस ...चन्दजी हैं। इसी प्रकार निहालचन्दजी के पुत्र कालूरामजी तथा सागरमलजी के पुत्र ...हैं। और सहसमलजी के पुत्र हरखमलजी हैं।

...खानदान की ओर से सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्यों की ओर उदारता से सम्पत्ति लगाई ...१९८१ में कन्या शाला का मकान बनाया तथा उसका व्यय आज तक आप ही दे

विनायक्या

सेठ जुहारमल शोभाचंद विनायक्या, राजलदेसर

इस परिवार के लोग बहुत वर्षों से राजलदेसर ही में निवास कर रहे हैं। इस परिवार किशोरसिंहजी के पुत्र उमचन्दजी हुए। इनके दो पुत्र किस्तूरचन्दजी और जुहारमलजी हुए। आप दो ही भाई बड़े प्रतिभा वाले और व्यापार कुशल थे। आप लोगों ने गोविन्दगंज (रंगपुर) में जा अपनी फर्म मेसर्स किस्तूरचन्द जुहारमल के नाम से खोली। इसमें आप लोगों को अच्छी सफलता रही।

वर्तमान में इस फर्म के सचालक सेठ किस्तूरचन्दजी के पुत्र शोभाचन्दजी और सेठ जुहारमलज पुत्र मालचन्दजी, जयचन्दलालजी और धनराजजी हैं। आप सब सज्जन और मिलनसार व्यक्ति है आप लोगों ने आर्मेनियन स्ट्रीट कलकत्ता में भी चलानी का काम करने के लिये अपनी एक फर्म खोल इस समय आपकी कलकत्ता और गोविन्द गंज दोनों स्थानों पर फर्मे चल रही है। आपके यहाँ कप चलानी तथा जूट का व्यापार होता है।

सेठ शोभाचन्दजी के मोहनलालजी, पन्नालालजी और दीपचन्दजी, सेठ मालचन्दजी के सं करणजो, सेठ जैचन्दलालजी के मन्नालालजी और धनराजजो के हनुमानमलजी नामक पुत्र हैं।

लाला खेरातीराम पन्नालाल विनायक्या, लुधियाना

यह खानदान जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को माननेवाला है। यह खानदान क सौ सवा सौ वर्षों से यहीं निवास कर रहा है। इस खानदान में लाला जुहारमलजी और रनचन्द नामक दो भाई हो गये हैं। लाला जुहारमलजी के गुलाबमलजी नामक एक पुत्र हुए जो यहाँ के बड़े म हूर चौधरी हो गये हैं। आपका संवत् १९३० में स्वर्गवास हो गया। आपके लाला खैरातीमलजी फकीरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें लाला फकीरमलजी निसंतानावस्था में सवत् १९६७ स्वर्गवासी हुए।

लाला खेरातीमलजी का संवत् १९१९ में जन्म हुआ। आपने अपने भतीजे (लाला पूरनचन्द के प्रपौत्र) लला पन्नालालजी को गोद लिया है। आप इस समय अपने पिता लाला खैरातीमलजी साथ व्यापार करते है। आपके तिलकरामजी नामक एक पुत्र है। इस परिवार का यहाँ पर जन मर्चेंटाइज का व्यापार होता है। तथा यह कुटुम्ब यहाँ प्रतिष्ठित माना जाता है।

लाला रोशनलाल पन्नालाल जैन विनायक्या पटियाला

यह खानदान कई पुश्त पहिले समाना से आकर पटियाले में आबाद हुआ। यह परि स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस परिवार में लाला चैनामलजी तथा उनके पुत्र पूरनचन्द हुए। लाला पूरनचन्दजी के कूड़ामलजी तथा नथुरामलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें से लाल कूड़ामल संवत् १९०२ में स्वर्गवासी हुए। आपके रामकरमदासजी तथा कन्हैयालालजी नामक दो पुत्र हुए।

रहे हैं, आपने एक विद्यालय को २०००) का दान दिया था। संवत् १९७७ में १७ हजार की लागत गांव में एक उपाश्रय बनवाया। इसी प्रकार नथमलजी धर्मपत्नी हीराबाई के नाम मे राणकपुरजी के रास्ते एक हीरा बावडी बनवाई। इस कुटुम्ब ने वरकाणा विद्यालय को १००००) एक बार तथा ४०० दूसरी बार प्रदान किये। इस विद्यालय की मेनेजिंग कमेटी के प्रेसिडेण्ट सेठ मूलचन्दजी हैं। इ अतिरिक्त पालीताना, भावनगर विद्यालय, बम्बई महावीर विद्यालय, आदि स्थानों पर आपकी ओर सहायताएं दी गई हैं। इस कुटुम्ब ने अभी तक लगभग एक लाख रुपयों का दान किया है।

घेमावत उदयभानुजी का परिवार, शिवगंज

हम ऊपर कह आये हैं कि घेमाजी की संतानें घेमावत नाम से मशहूर हुई। इनके देवीच सुखजी, थानजी, तथा करमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। घेमावत करमचन्दजी को बाली से सांडेरा ठाकुर अपने यहाँ ले गये। इनका यहाँ जोरों से व्यापार चलता था। इनके पुत्र उदयभानजी भी स राव में व्यापार करते रहे। उदयभानजी के रतनचंदजी, जवानमलजी, हजारीमलजी, मानमलजी, हि मलजी तथा फतेमलजी नामक ६ पुत्र हुए।

घेमावत रतनचन्दजी का परिवार—रतनचन्दजी ने धार्मिक कार्य्यों में बहुत इज्जत पाई। अ सांडेराव से ऋषभदेवजी तथा आबूजी के संघ निकाले आप संवत् १९२३ में सांडेराव से शिवगंज आ संवत् १९३२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चिमनमलजी आपके स्वर्गवासी होने के समय माह के थे। घेमावत चिमनमलजी का खानदान शिवगंज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता आप आरंभ में सांडेराव में कामदार थे। आप समझदार पुरुष हैं। आपके पुत्र घेमावत धनरा तथा तखतराजजी हैं। घेमावत धनराजजी का जन्म संवत् १९५९ में हुआ। संवत् १९८३ आपने बी० ए० ऑनर्स तथा १९८५ में एल० एल० बी० की परीक्षा पास की। संवत् १९८३ में सिरोही में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट हुए, तथा संवत् १९८६ से आप चीफ मिनिस्टर के ऑफिस सुपरिटेन्डेंट पर कार्य्य करते हैं। आपके छोटे भाई तखतराजजी का जन्म संवत् १९६५ में हुआ। आप इंटर शिक्षा प्राप्त कर मुरादाबाद पोलीस ट्रेनिंग में गये, तथा इस समय जोधपुर में सब इन्सपेक्टर पोलीस धनराजजी के पुत्र सम्पतराजजी तथा खुशवंतराजजी हैं।

घेमावत जवानमलजी का परिवार—आपके पुत्र हीराचन्दजी तथा तेजराजजी हुए। आ स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९५४ तथा ५७ में हुआ घेमावत हीराचंदजी के पुत्र सुन्दरमलजी तथा तेजरा के पुत्र बरदीचंदजी तथा कुशलराजजी हुए। घेमावत सुंदरमलजी का जन्म १९३५ में हुआ। आप शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक सज्जन हैं। आप शिवगंज की कन्या शाला को विशेष सहायता देते रहते आपके मेनेजमेंट तथा कोशिश से पाठशाला की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है। घेमावत हजारीम के पुत्र राजमलजी सांडेराव में कामदार थे। इनके पौत्र देवीचंदजी तथा साहबचंदजी सांडेराव में व्या करते हैं। तथा घेमावत मानमलजी के पौत्र चांदमलजी सिरोही में सर्विस करते हैं।

घेमावत फतेचन्दजी का परिवार—घेमावत फतेचन्दजी गोडवाड़ प्रान्त की पब्लिक व जागीरदारों में सम्माननीय व्यक्ति थे। संवत् १९५९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पुखराज

लाला रामसरनदासजी इस खानदान में नामी व्यक्ति हुए। आप संवत् १९५८ में ... हुए। आपके पुत्र लाला लछमणदासजी ३२ साल की आयु में संवत् १९६२ में तथा ... इनसे चार साल पहिले १९ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। इस समय बाबू रामजी ... हैं। इनके टेकचन्दजी तथा ओमप्रकाशजी नामक २ पुत्र हैं।

लाला कन्हैयालालजी—आपका स्वर्गवास ३० साल की आयु में संवत् १९२६ में हुआ। उस समय पुत्र लाला रोशनलालजी एक साल के थे। लाला रोशनलालजी बडे धर्मात्मा तथा ... हैं। तथा ४० सालों से पटियाला की जैन बिरादरी के चौधरी हैं। आपके पुत्र लाला ... १० साल के हैं। इनके पुत्र श्यामलालजी हैं।

सेठ सवाईराम गुलाबचन्द विनायक्या, जालना (निजाम)

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान रायपुर (जोधपुर स्टेट) का है। आप श्वेताम्बर ... आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। करीब ६४ वर्ष पहले श्री सवाईरामजी ने रायपुर से ... में अपनी दुकान की स्थापित की। आपका संवत् १९५५ में स्वर्गवास हुआ। आपके बाद ... काम को आप के तीनों पुत्रों ने सम्हाला जिनमें से इस समय केशरीमलजी विद्यमान हैं।

केशरीमलजी इस समय दुकान के मालिक हैं। आपकी ओर से दान धर्म तीर्थ यात्रा ... कार्यों में द्रव्य व्यय किया जाता है। आपके पुत्र उत्तमचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं। आपके "सवाईराम गुलाबचन्द" के नाम से कमीशन, तथा कृषि का काम होता है। उत्तमचंदजी के २ पुत्र हैं।

माल्रू

माल्रू गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि रतनपुर के राजा रतनसिंह के दीवान माहेश्वरी वैश्य ... गौत्रीय माल्हदेवजी नामक थे। इनके पुत्र को अर्धांग की बीमारी हो गई थी। अतएव दादा ... ने अपनी प्रतिभा के बल पर माल्हदेवजी के पुत्र को स्वास्थ्य लाभ कराया। इससे मंत्री ... सूरिजी से जैन धर्म का प्रति बोध लिया, इनकी संतानें "माल्र" के नाम से मशहूर हुईं।

सेठ गणेशदास केशरीचंद माल्रू, सिवनी छपारा (सी० पी०)

बीकानेर के समीप गजरूप देसर नामक स्थान से लगभग ७५ साल पूर्व इस परिवार के पूर्वज ... माल्र सिवनी आये तथा यहां सराफी व्यवहार चालू किया। आपका संवत् १९४९ में ... आपके गणेशदासजी, केवलचन्दजी व रतनचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भ्राताओं का कार ... १९५८ में लगभग अलग २ होगया। सेठ गणेशचन्दजी माल्र का जन्म संवत् १९१४ में हुआ। ..., माणिकचन्दजी, सुगनचन्दजी तथा दुलीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। माल्र गणेशचन्दजी ... केशरीचन्दजी और माणिकचन्दजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को उन्नति मिली। माल्र ... संवत् १९२७ में हुआ। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। सुगनचन्दजी माल्र का ... १९८८ में हुआ।

१९०४ में हुआ आप आरंभ में सांडे राव ठिकाने में कामदार रहे। संवत् १९८३ में आप ...न्स सुपरिटन्डेन्ट हुए। तथा इस पद के साथ इस समय आप कंट्रोल हाउस होल्ड और ...आ है। सिरोही दरबार की आप पर अच्छी मरजी है। तथा समय २ पर आपको ...प्रमान को दरबार ने सिरोपाव देकर सम्मानित किया है।

देवड़ा

सेठ बुधमल जुहारमल देवड़ा, औरंगाबाद (दक्षिण)

...है देवड़ा राजवंश से इस परिवार का प्राचीन सम्बन्ध है। वहाँ से ३०० वर्ष पूर्व ...गाम में आकर अपना निवास बनाया। यह कुटुम्ब स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला ...संवत् १८५५ में सेठ ओटाजी के पुत्र बुधमलजी पैदल रास्ते से औरंगाबाद आये। तथा ...के नाम से किराने की दुकान की। आपके पुत्र जुहारमलजी तथा पूनमचन्दजी ...न्न। सेठ जुहारमलजी ने संवत् १९२८ में "पूनमचन्द बख्तावरमल" के नाम से ...ला। इन बंधुओं के बाद सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ बख्तावरमलजी ने तथा सेठ ...पुत्र सेठ जसराजजी ने इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत् ...फर्म "औरंगाबाद मिल लिमिटेड" की बैंकर हुई। और इसके दूसरे ही साल मिल की ...इस फर्म पर आई। इसी साल फर्म की शाखाएं वरंगल, नांदेड़, परभणी, जालना, ...स्थानों में खोली गईं। संवत् १९६८ में इस दुकान की एक शाखा "गणेशदास ...नाम से मूलजी जेठा मारकीट बम्बई में खोली गई। इन सब स्थानों पर इस समय ...व्यापार हो रहा है। तथा सब स्थानों पर यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

...बख्तावरमलजी देवड़ा का स्वर्गवास संवत् १९८७ में ६९ साल की आयु में हुआ। आप ...पुरा नामक गाव के १४ सालों तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। इसी प्रकार आपने ...रहा। सेठ जसराजजी संवत १९८९ में स्वर्गवासी हुए। इस परिवार ने औरंगाबाद ...हजार रुपयों की लागत से एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई। बगडी में ४० सालों से एक ...चला रहे हैं। यहाँ एक समरथ सागर नामक सुंदर बावडी तथा १ धर्मशाला भी बन- ...औरंगाबाद में मन्दिरों तथा धर्मशालाओं में २० हजार रुपये खरच किये। इसी तरह ...इस परिवार ने किये।

...म इस फर्म के मालिक सेठ बख्तावरमलजी के पुत्र शेषमलजी तथा जसराजजी के पुत्र ... तथा पूनमचन्दजी हैं। सेठ मेवराजजी के पुत्र मोहनलालजी भी कारोबार में भाग ...निजाम स्टेट तथा बगडी में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

डाँगी

शाहपुरा का डाँगी खानदान

...परिवार के पूर्वज मेवाड़ में उच्च श्रेणी के व्यापारी तथा बैंकर्स थे। जब महाराणा अमरसिंह

वर्तमान में आप इस फर्म के मालिक सेठ माणिकचन्दजी, दुलीचन्दजी व केशरीचन्दजी के ! देवचन्दजी, नेमीचन्दजी, हरिश्चन्दजी तथा सुगनचन्दजी के पुत्र शिखरचन्दजी हैं। आप सब सज फर्म के व्यापार संचालन में भाग लेते हैं।

माणिकचन्दजी मालू—आपका जन्म संवत् १९४१ में हुआ। आप समझदार पुरुष हैं। आप वर्तमान में सिवनी में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर तथा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के मेम्बर हैं। आपके उद्योग से सन् १९३२ में 'श्री जैन ओसवाल परस्पर सहायक कोष मध्यदेश व बरार" नामक सभा की स्थापना हुई है और आप उसके प्रेसिडेंट हैं। इधर दो सालों से आपकी फर्म के द्वारा एक जैन पाठशाला चल रही है। तथा इस समय स्थानीय जैन मन्दिर की व्यवस्था आपके जिम्मे है। आपके छोटे भ्राता दुलीचन्दजी मालू चांदी सोने के जेवर बनाने के कारखाने का संचालन करते हैं। आपके पुत्र ईश्वरचन्द इन्द्रचन्द्रजी, घेवरचन्द्रजी, कोमलचन्दजी, यादवचन्द्रजी तथा निहालचन्दजी हैं। इसी तरह दुलीचन्द के पुत्र सोभागचन्द्र, ईश्वरचन्दजी के पुत्र खुशालचन्द उत्तमचन्द व नेमीचन्दजी के पुत्र लालचन्द्र प्रेमच हैं। इस परिवार का माणकचन्द्र दुलीचन्द्र के नाम से सराफी व्यवहार होता है। केवलचन्दजी मालू पुत्र भयालालजी अपना स्वतन्त्र कार्य्य करते हैं। यह खानदान सी० पी० के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित है।

सेठ कालूराम रतनलाल मालू का परिवार, मद्रास

इस खानदान के मालिको का मूल निवास स्थान फलौधी (मारवाड) का है। इसके पह आप लोगों का निवासस्थान खिचंद और तिंवरी था। आप लोग स्था० आम्नाय के सज्जन हैं। इस खानदान में लालचन्दजी हुए, आपके देवीचन्दजी, शोभाचन्दजी तथा खुशालचन्दजी नामक तीन पुत्र थे। देवीचन्दजी मालू के पुत्र कालूरामजी बडे प्रतापी तथा साहसी व्यक्ति हो गये हैं। आप अपनी हिम्मत और बहादुरी के सहारे देश से पैदल मार्ग द्वारा नागपुर आये और अपने भाई खुशालचन्दजी की प पर काम करने लगे। वहाँ से आप संवत् १८९१ में पैदल रास्ते चलकर मद्रास में आये। उस सम मारवाड़ियों की मद्रास में दो तीन दुकानें थीं। सेठ कालूरामजी बडे धर्मात्मा और जाति प्रेमी पुरुष थे आपने अपनी जाति के बहुत से पुरुषों को अपने यहाँ रखकर धधे से लगाया। आपने मद्रास के बेपा सूले में श्री चंद्राप्रभु जी का संवत् १९३० में एक बड़ा मन्दिर बनवाया। संवत् १९३७ में आपका स्वर्गवा हो गया। आपके कोई पुत्र न होने से आपने शुगलचन्दजी के पुत्र रतनलालजी को दत्तक लिया रतनलाल मालू का जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप अपने जाति भाइयों पर बडा प्रेम रखते थे। आपका संव १९६१ में स्वर्गवास हो गया। रतनलालजी के कोई संतान न होने से आपने अनोपचन्दजी को दत्तक लिया अनोपचन्दजी का जन्म संवत् १९५२ का है। आपके पुत्र मनोहरमलजी, पूनमचन्दजी तथा गेंदमलजी हैं

मरोठी

सेठ हीरचन्द पूनमचन्द मरोठी, दमोह,

इस परिवार के पूर्वज सेठ चैनसुखजी तथा उम्मेदचदजी नामक दो भ्राता अपने मूल निवा

जी के तृतीय पुत्र सुजानसिंहजी ने शाहपुरा बसाया, उस समय वे इस परिवार के पूर्वज सेठ टेकच को अपने साथ शाहपुरा मे लाये थे। इनके पुत्र सरूपचन्दजी, अनोपचन्दजी तथा मंसारामजी हुए। सरूपचन्दजी तथा अनोपचन्दजी शाहपुरा रियासत के बैंकर थे। आवश्यकता पड़ने पर इन्होंने रियास आर्थिक सहायताएँ दी थीं। "न्याय" का कुल काम इनके घर पर होता था। बनेड़ा स्टेट में ४ परिवार बहुत समय तक बैंकर रहा। एक लड़ाई में मदद देने के उपलक्ष में शाहपुरा दरबार ने अनोपसिंहजी को कठी और मर्यादा की पदवियां देकर सम्मानित किया था। आपके जेष्ट पुत्र हमीरसिं को सम्वत् १८९३ में कर्नल डिक्सन ने ब्यावर में बसने के लिये इज्जत के साथ निमन्त्रित किया था। छोटे भाई चतुरभुजजी, सेठ सरूपचन्दजी डाँगी के नाम पर दत्तक गये। उदयपुर के दीवान मेहता अ तथा मेहता शेरसिंहजी से इस परिवार की रिश्तेदारियाँ थीं। हमीरसिंहजी के ज्येष्ट पुत्र चंदनमल साथ उनकी धर्मपत्नी सम्वत् १९१४ में सती हुई। आगे चलकर डाँगी चतुर्भुजजी के पुत्र बालच और चनणमलजी के दत्तक पुत्र अजीतसिंहजी कमजोर स्थिति में आ गये। जब शाहपुरा दरबार नाह जी की दृष्टि में पुराने कागजात आये, तो उन्होंने इस परिवार की सेवाओं पर खयाल करके डाँगी अजी जी के पुत्र जीवनसिंहजी को "जींकारे" का सम्मान बख्शा। दरबार समय २ आपकी सलाह लेते थे। बड़े विद्याप्रेमी तथा सज्जन पुरुष थे। आपके पुत्र अक्षयसिंहजी डाँगी हैं। डाँगी बालचन्दजी के सोभागसिंहजी बड़े परोपकारी, हिम्मत बहादुर तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। सम्वत् १९५६ के अकाल में गरीब जनता की बहुत मदद की थीं। सन् १९१२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र हरकचन्दजी

श्री अक्षयसिंहजी डाँगी ने बनारस यूनिवर्सिटी से बी० ए० पास किया। थर्ड ईयर में इ मिक्स में प्रथम आने के कारण आपको स्कालर शिप मिली। इसी तरह आप हर एक क्लास में प्रथम रहते रहे। बी० ए० पास करने के बाद आप तीन सालों तक शाहपुरा में सिविल जज रहे। इसके आपने एम० ए० और एल एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। इस समय आप अजमेर मे वकालत कर आपकी अंग्रेजी लेखन शैली ऊँचे दर्जे की है। ओसवाल कान्फ्रेंस के प्रथम अधिवेशन के आप मं सामाजिक सुधारों में आप अग्रगण्य रूप से भाग लेते हैं। आपके पुत्र सुभाषदेव हैं।

आँचलिया

रामपुरा का आँचलिया परिवार

यह परिवार मूल निवासी मारवाड़ का है। वहाँ से कई पुश्त पूर्व यह कुटुम्ब राम आकर आबाद हुआ। इस परिवार में आँचलिया सूरजमलजी तथा उनके पुत्र चुन्नीलालजी कस्टम वि कार्य्य करते थे। कार्य्य दक्ष होने के कारण जनता ने आपको चौधरी बनाया। और तब से इनका प "चौधरी" कहलाने लगा। चौधरी चुन्नीलालजी के चम्पालालजी, रतनलालजी तथा किशनलालजी ३ पुत्र हुए। इनमें चौधरी चम्पालालजी सीधे सादे तथा धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आसामी लेन देन का काम करते थे। सवत् १९७६ में ५१ साल की आयु में आप स्वर्गवासी आपके मोतीलालजी, बसंतीलालजी, बाबूलालजी, कन्हैयालालजी, बहुतलालजी, तथा मदनलालजी

संवत् १९६०-६५ के लगभग व्यवसाय के लिये दमोह आये। तथा यहाँ इन्होंने कुछ मौजे का मालगुजारी और साहुकारी व्यापार चालू किया। मरोठी उदयचन्द का स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सुखलालजी भी जमींदारी का संचालन करते रहे। इनके वंशीधरजी, गिरधीचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों बंधु अपनी फर्म का सचालन करते रहे। संतान नहीं हुई। शेष २ बंधुओं का परिवार विद्यमान है।

तखतमलजी मरोठी का परिवार—सेठ तखतमलजी ६५ वर्ष की आयु में संवत् १९६३ में स्वर्गवासी डालचन्दजी, रतनचंदजी, मूलचन्दजी, हीरचन्दजी तथा कस्तूरचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। संवत् १९७५ में, रतनचन्दजी संवत् १९६० में और हीरचंद का संवत् १९७२ में स्वर्गवासी इस परिवार में सेठ कस्तूरमलजी मरोठी, डालचन्दजी के पुत्र लखमीचन्दजी मरोठी तथा पूनमचन्दजी मरोठी हैं।

पूनमचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आप मिलनसार, शिक्षित तथा हैं। आप स्थानीय म्यु० के मेम्बर रह चुके हैं। तथा इस समय डिस्ट्रक्ट कौंसिल के पके पुत्र पीतमचन्दजी तथा पदमचन्दजी पढते हैं। मरोठी लखमीचन्दजी के पुत्र हरखचंदजी हैं। इस परिवार में प्रधानतया जमींदारी का काम होता है।

डालचन्दजी मरोठी का परिवार—आपका जन्म संवत् १९०५ में हुआ था। आप दमोह के थे। आप यहाँ के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। तथा दरबारी सम्मान भी आपको प्राप्त था। सार्वजनिक संस्थाओं के आप मेम्बर थे। आपके हजारीमलजी सूरजमलजी तथा नेमीचंदजी हुए। जिनमें हजारीमलजी का स्वर्गवास हो गया।

सूरजमलजी मरोठी—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप अपने पिताजी के बाद तमाम और सार्वजनिक कामों में सहयोग देते हैं। इस समय आप दमोह के सेकंड क्लास ऑनरेरी मजि-स्ट्रेट तथा कई संस्थाओं के मेम्बर हैं। सरकार में आपका अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र खुशालचन्दजी तथा गोकुलचन्दजी १५ साल के हैं। आपके यहाँ जमीदारी का काम होता है। सेठ के भ्राता नेमीचंदजी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आपके पुत्र तिलोकचन्दजी बालक हैं।

सावण सुखा

सावण सुखा गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि चंदेरी के राजा खरहत्थसिंह राठोड़ ने अपने दादा जिनदत्तसूरिजी से संवत् ११९२ में जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण की। इनके तीसरे नामा व्यक्ति हुए। भैंसाशाह के ५ पुत्रों में से चौथे पुत्र कुँवरजी थे। इनको ज्योतिष का चित्तौड़ के राणाजी ने इनको पूछा कि कहो "कुँवरजी सावण भादवा कैसा होगा"। बतलाया कि "सावण सूखा और भादवा हरा होगा" जब यह बात सत्य निकली। तब "सावण सुखा" के नाम से प्रसिद्ध हुई। और इस प्रकार यह गौत्र उत्पन्न हुई।

... राय गाधा, जोधपुर (पेज नं० ६९०)

श्री बाबूलालजी चौधरी वकील, गरोठ

... (पेज नं० ...)

श्री कचरमलजी श्रावड़, (छगनमल कपूरचंद)
जालना (पेज नं० ६...)

सेठ गणेशदास जुहारमल सावण सुखा, सरदार शहर

जब सरदारशहर बसा तब इस परिवार के सेठ टीकमचन्दजी, मेघराजजी और हेरामजी तीनों भाई सवाई से यहा आकर बसे। एवम् साधारण खेतीवाडी एवम देन लेन का व्यापार करते रहे। सेठ टीकमचन्दजी के सात पुत्र हुए मगर इस समय उनके परिवार में कोई नहीं है। सेठ हेरामजी के भैरोंदानजी नामक एक पुत्र हुआ जिसका स्वर्गवास होगया। वर्तमान में उनके पुत्र मूलचन्दजी और शोभारामजी रगपुर में अपना व्यापार करते हैं। मूलचन्दजी के भीखनचन्दजी और शोभाचन्दजी के फकीरचन्दजी नामक पुत्र हैं। सेठ मेघराजजी सरदारशहर ही में रहे। आप के सेदमलजी और गणेशदासजी नामक दो पुत्र थे। सेठ सेठमलजी के मूलचन्दजी, जुहारमलजी, नेमिचन्दजी, और हरकचंदज नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से सेठ जुहारमलजी का स्वर्गवास होगया है। मूलचन्दजी के द्वारा इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। आज कल १५ वर्षों से आप सरदारशहर में ही रहते हे। हरकचन्दजी दत्तक चले गये। एवम् आज कल फर्म का संचालन सेठ नेमीचन्दजी ही करते हैं। आप योग्य एवम समझदार सज्जन हैं। आपके बुधमलजी, सुमेरमलजी और चम्पालालजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ गणेशदासजी इस परिवार में नामांकित व्यक्ति हुए। आप ही ने सवत् १९६० में गणेशदास मिलापचन्द के नाम से साझे में फर्म स्थापित की। फिर "गणेशदास जुहारमल" के नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार कर लिया। इसके पूर्व आप नरसिंहदास तनसुखदास आचलिया की फर्म पर काम करते रहे। इसमें आपकी प्रतिभा से बहुत उन्नति हुई। आप व्यापार चतुर थे। आपके मिलापचन्दजी नामक पुत्र हुए। जिनका स्वर्गवास होगया। इनके यहाँ हरकचन्दजी दत्तक हैं। आपके इस समय मोतीलालजी और माणकचन्दजी पुत्र हैं। आपकी फर्म पर १२ नारमल लोहिया लेन में देशी कपड़े का थोक व्यापार होता है। आपका परिवार तेरा पन्थी संप्रदाय का अनुयायी है।

मेसर्स हजारीमल रूपचन्द सावण सुखा का परिवार, मद्रास

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान बीकानेर का है। आप श्वे० जैन समाज मंदिर आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। सब से पहले इस परिवार में से हजारीमलजी सावणसुखा संवत् १९२१ में बीकानेर से मद्रास आये। आपने मद्रास में आकर व्याज की फर्म स्थापित की। आपके हाथों से इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका संवत् १९४९ में स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् आपके नाम पर आपके भाई के पुत्र रूपचन्दजी दत्तक लाये गये। इस परिवार के लोगों ने चन्द्राप्रभुजी के मन्दिर का काम अच्छी तरह से देखा। श्री रूपचन्दजी का संवत् १९५७ में स्वर्गवास हो गया आपके पुत्र चम्पालालजी हुए। इनका जन्म सवत् १९५० में हुआ। आप ही इस समय इस फर्म के कारबार को सम्हाल रहे हैं। आपके पुत्र रतनचन्दजी बालक हैं।

इस परिवार का दान धर्म की ओर विशेष लक्ष्य है। आप ही ने यहाँ की दादावाड़ी का उद्यापन करवाया। साथ ही दादावाडी के एक तरफ का पर कोटा भी इस परिवार की ओर से बनाया गया है। आप ही के द्वारा दादावाड़ी के मन्दिर में सगमरमर के पत्थरों की जुड़ाई हुई है। आपकी मद्रास

... 'फर्म हजारीमल रूपचन्द" के नाम से बैङ्किग की दुकान है। इस फर्म पर डायमण्ड ... भी होता है।

सेठ भीमराज हुकुमचंद सावण सुखा, रतनगढ़

इस परिवार का मूल निवास रतनगढ है। यहाँ सेठ खेतसीदासजी तथा अक्षयसिंहजी नामक ... व्यापार करते थे। इनके कोई संतान नहीं हुई।, अत इनके यहाँ रूणियाँ (बीकानेर) ... आये। सेठ भीमराजजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप यहाँ से कलकत्ता ... "माणकचन्द ताराचन्द" वेद के यहाँ सर्विस की। तथा पीछे "सेठ तेजरूप गुलाबचन्द" की ... का काम शुरू किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पुत्र ..., ...लालजी तथा जयचदलालजी हैं। शोभाचन्दजी रतनगढ़ में रहते हैं। तथा जयचन्दजी ... सर्विस करते हैं। इनके पुत्र मोहनलालजी है।

... भीमराजजी के मझले पुत्र रुघलालजी का जन्म सवत् १९४२ में हुआ। पिताजी के ... पर आप दलाली करने लगे, तथा इधर संवत् १९८३ से रोसडाघाट (दर्भंगा) में रुघलाल ... नाम से दलाली का व्यापार आरम्भ किया। इसके बाद आपने सिंघिया (दरभंगा) में ... तथा टोली (मुजफ्फरपुर) में भीमराज सावणसुखा के नाम से आढ़त का व्यापार शुरू ... पश्चात् सवत् १९८७ में नं० २ राजा उमंड स्ट्रीट में अपनी फर्म स्थापित की। सेठ ... भीमराजजी तथा इन्द्राजमलजी नामक पुत्र हैं। भीमराजजी ने अपने पिताजी के बाद ... में काफी परिश्रम किया है। आपके पुत्र हुकुमचन्दजी हैं।

रेदासनी

सेठ मोतीलाल रामचन्द्र रेदासनी, नसीराबाद (खानदेश)

यह परिवार पीह (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहाँ से लगभग १०० साल पूर्व सेठ शिव... अमरचन्दजी दो भ्राता व्यापार के लिये नसीराबाद (जलगांव के समीप) आये। सेठ शिवचन्द ... १९१५ में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे बंधु अमरचन्दजी के पुत्र मानमलजी तथा पौत्र रामचन्द्रजी ... रामचन्द्रजी ने इस दुकान के व्यापार को बहुत उन्नति दी। आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी हुए।

... मोतीलालजी रेदासनी—आपका जन्म सम्वत् १९३६ में हुआ। आप खानदेश के ओसवाल ... प्रतिष्ठित तथा समझदार पुरुष थे। आप बडे सरल स्वभाव के धार्मिक प्रवृत्ति वाले पुरुष थे। ... सम्वत् १९९० में आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र रंगलालजी, बंशीलालजी, बाबू... ...हैं। रंगलालजी का जन्म सन् १९०५ में तथा बंशीलालजी का सन् १९०९ में ... हुआ। आप अपने व्यापार को सम्हालते हैं। आपके यहाँ आसामी लेन देन का व्यापार होता है।

मातीलालजी रामपुरा में व्यापार करते हैं। इनके पुत्र नानालालजी, तेजमलजी तथा
[illegible] चमनीलालजी रामपुरे के सर्व प्रथम मेट्रिक्युलेट हैं। सन् १९१५ में मेट्रिक पास
[illegible] के सेक्रेटरी नियुक्त हुए, और तब से इसी पद पर कार्य्य कर रहे हैं।
[illegible] चौधरी—आपने इस परिवार में अच्छी उन्नति की। आपका जन्म संवत् १९७९
अध्ययन कर आपने इन्दौर स्टेट की वकीली परीक्षा पास की। आज कल आप गरोठ
तथा रामपुरा भानपुरा जिले के प्रसिद्ध वकील माने जाते हैं। इतनी छोटी वय में
न मे अच्छी दक्षता प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को उन्नत बनाया है। आपके
र में क्लार्क हैं। तथा उनसे छोटे चौधरी बहुतलालजी इस समय एल० एल० बी
चर में पढ़ रहे हैं। इसी तरह इस परिवार में रतनलालजी के पुत्र गेंदालालजी तथा
व्यापार करते हैं। यह परिवार श्वे० जैन स्थानकवासी आम्नाय को मानता है।

गोधावत

सेठ मेघजी गिरधरलाल गोधावत, छोटी सादड़ी

[illegible] के पूर्वज सेठ मेघजी बड़े प्रतिभावान सज्जन थे। आपके पौत्र सेठ नाथूलालजी ने
मर्यादा तथा सम्पत्ति में बहुत उन्नति की। आप बड़े दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष
म आपने सम्पत्ति उपार्जित की थी। आपने सवा लाख रुपयों के स्थाई फंड से
जैन आश्रम" नामक एक आश्रम की स्थापना की थी। सम्वत् १९७६ की ज्येष्ठ
[illegible] हुए। आपके पुत्र हीरालालजी का आपकी विद्यमानता में ही स्वर्गवास हो गया
नाथूलालजी के पौत्र सेठ छगनलालजी विद्यमान हैं। आप सज्जन तथा प्रतिष्ठित
र मालवा तथा मेवाड़ के ओसवाल समाज में प्रधान धनिक माना जाता है। आप
माननेवाले सज्जन हैं। आपके यहाँ सादड़ी में लेनदेन का व्यापार होता है, तथा
[illegible] दुकान और आढ़त का व्यापार होता है।

दनेचा (बोहरा)

नीमानी

सेठ खूबचंद केवलचंद नीमानी, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास फलोधी (मारवाड़) है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मंदि मार्गीय आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ रूपचन्दजी नीमानी (रतनपुरा-बोह के पुत्र खूबचन्दजी नीमानी लगभग १०० वर्ष पूर्व मारवाड़ से मालेगाँव (नाशिक) आये। तथा वहाँ साधा कपड़ा बिक्री का काम किया। पश्चात् आपने नाशिक आकर खुर्दा बेंचने का काम किया। इस प्रकार सा पूर्वक सम्पत्ति उपार्जित कर साहुकारी धधा जमाया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९१८ में हुआ। आ पुत्र केवलचन्दजी का जन्म सम्वत् १८८८ में हुआ। आपने इस फर्म के व्यवसाय तथा स्थिति को बनाया। सम्वत् १९४८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके सेठ अमोलकचन्दजी, सेठ नैनसुखजी तथा बुधमलजी नीमानी नामक ३ पुत्र हुए।

सेठ अमोलकचन्दजी नीमानी—आपने सराफी, कपड़ा किराना आदि का व्यापार कर सम्पत्ति उपार्जित की। इसके साथ २ आपने अपने खानदान की जगह जमीन व लेंडेड प्रापर्टी के स करने में भी विशेष लक्ष दिया। आपके २ पुत्र हुए, इनमें बड़े भोजराजजी सन् १९१७ में स्वर्गवासी गये, तथा उनसे छोटे पृथ्वीराजजी विद्यमान हैं।

सेठ नैनसुखदासजी नीमानी—आपके हृदयों में जातीय संगठन की भावनाओं की बहुत उमंग थी। आपने सम्वत् १९४७ में महाराष्ट्र प्रांत के तमाम ओसवाल गृहस्थों को एकत्रित कर ओसव हितकारिणी सभा का अधिवेशन किया, तथा जातीय सुधार सम्बन्धी २१ नियम बनाये, जिनका पा नाशिक जिले में आज भी कानून की भांति किया जाता है। आप महाराष्ट्र तथा खानदेश के नामीगरा महानुभाव हो गये हैं। आपको सरकार ने आनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके पुत्र रा चन्द्रजी छोटी वय में ही स्वर्गवासी हो गये थे।

सेठ बुधमलजी नीमानी—आपका जन्म सम्वत् १९३१ में हुआ था। आप नाशिक की जनता बड़े विद्वान तथा रुआबदार पुरुष हो गये हैं। आपने अंग्रेजी की इंटर तक शिक्षण पाया था। संस्कृत के आप ऊँचे दर्जे के विद्वान थे। कानूनी ज्ञान आपका बहुत बढ़ा चढ़ा था। आप १६ सालों तक नाशिक फर्स्ट क्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताकर सं० १९८२ में आप स्वर्गवासी हुए

वर्तमान में इस परिवार में श्री पृथ्वीराजजी नीमानी विद्यमान हैं। आपका जन्म सन् १९ में हुआ है। आपका परिवार महाराष्ट्र तथा नाशिक में नामांकित माना जाता है। आप ३ सालों त म्यु० मेम्बर भी रहे थे। इस समय लोकल बोर्ड के मेम्बर हैं। आपके नाशिक तथा धूलिया में बहुत मकानात तथा स्थाई सम्पत्ति है। आपके यहाँ किराया, सराफी तथा टोल कंट्राक्टिंग का काम होता है

के नाम से फर्म स्थापित की। ४० साल सम्मिलित व्यापार करने के बाद संवत् १९५४ में "आ रामचन्द्र" के नाम से अपना घरू बैंकिंग व्यापार स्थापित किया। आपका राज दरबार और पंच पच में अच्छा सम्मान था। संवत् १९५५ में आप स्वर्गवासी हुए। आप के रामचन्द्रजी, हीराचन्दजी प्रेमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। अपने पिताजी के पश्चात् आप तीनों बंधुओं ने कार्य्य संचालित कि आप तीनों सज्जन स्वर्गवासी हो गये हैं। सेठ रामचन्दजी के पुत्र ताराचन्दजी छोटी वय में स्वर्गवासी वर्तमान में इस परिवार में सेठ हीराचन्दजी के पुत्र दुलहराजजी, मिश्रीलालजी तथा फूलचन्दजी व छावनी में सेठ "आईदान रामचन्द्र" के नाम से बैंकिंग व्यापार करते हैं। आप तीनों सज्जनों का क्रमशः १९४८, ५२ तथा संवत् १९५६ में हुआ। सेठ प्रेमचन्दजी के पुत्र मिट्ठूलालजी बगलोर सि कपडे का व्यापार करते हैं। सेठ मिश्रीलालजी बडे सज्जन तथा शिक्षित व्यक्ति हैं। आपकी दुकान बं में सबसे प्राचीन तथा प्रतिष्ठित है। आपके पुत्र भँवरलालजी की वय २० साल है।

बागचार

लाला दानमलजी बागचार, जेसलमेर

लाला अनोलकचन्दजी बागचार - आप जेसलमेर में प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभाव हुए। का परिवार मूल निवासी जेसलमेर का ही है। आप मीर मुन्शी थे। तथा जेसलमेर रियासत के से मोतमिद बनाकर ए० जी० जी० आदि गवर्नमेंट आफीसरों के पास तथा अन्य राजाओं के पास जाया करते थे। महारावल रणजीतसिंहजी आपसे बडे प्रसन्न थे। उन्होंने संवत् १९२० की वदी २ को एक परवाने में लिखा था कि "थूँ बहोत दानतदारी व सचाई के साथ सरकार की बंदगी मुस्तेद व साबत कदम है "सरकार थारे ऊपर मेहरबान है"। इसी तरह पटियाला दरबारने भी सनद दी थी। आपकी मातमपुर्सी के लिये जेसलमेर दरबार आपकी हवेली पर पधारे थे। आप लाला माणकचन्दजी हुए।

लाला माणकचन्दजी बागचार—आप अपने पिताजी के बाद "बाप' परगने के हाकिम इसके अलावा आपने रेवेन्यू इन्स्पेक्टर, कस्टम आफीसर तथा बाउण्डरी सेटलमेंट मोतमिद आदि प भी काम किया। पश्चात् आप जीवन भर 'जज" के पद पर कार्य्य करते रहे। रियासत में आने ब्रटिश आफीसरों का अरेंजमेंट भी आपके जिम्मे रहता था। आपकी योग्यता की तारीफ रेजिडेण्ट एबेट, कर्नल विंडहम तथा मि० हेमिल्टन आदि उच्च पदाधिकारियों ने सार्टिफिकेट देकर की। १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। जेसलमेर दरबार आपकी मातमपुर्सी के लिये आपकी हवेली पर पधारे आपके पुत्र लाला दानमलजी विद्यमान हैं।

लाला दानमलजी बागचार—आप अपने पिताजी के बाद 'ज्वाइन्ट जज" के पद पर हुए। इसके पहिले आप "बाप तथा समखावा" परगनों के हाकिम तथा दीवान और दरबार की पर नियुक्त थे। आपको जेसलमेर दीवान श्रीयुत एम० आर० सपट, ए० जी० जी० आर० ई० हॉलेण्ड कई उच्च आफीसरों न सार्टिफिकेट देकर सम्मानित किया है। संवत् १९८० तक आप सर्विस रहे। आपका खानदान जेसलमेर में प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है।

उक्त कप्तान तथा रामसिंहजी के सुप्रबन्ध से मेवाड राज्य की बिगडी हुई आर्थिक दशा कुछ सुधर
ौर ब्रिटिश गवर्नमेंट के चढ़े हुए खिराज मे से ४०२००० रुपये तथा अन्य छोटे बडे कर्ज अदा कर दिये
रामसिंहजी की कारगुजारी से प्रसन्न होकर महाराणा ने इन्हे विक्रम सवत् १८८३ मे जयनगर,
ल, दौलतपुरा और बलधरखा नामक चार गॉव जागीर मे बक्षे। महाराणा जवानसिंहजी की गद्दीन-
के बाद फिजूल खर्ची की वजह से राज्य की आय घट गई और खिराज के ७००००० रुपये चढ़ गये।
समय महाराणा को किसी ने यह संदेह दिला दिया कि रामसिंहजी प्रतिवर्ष बचत के एक लाख रुपये
कर जाते हैं। इस पर महाराणा ने मेहता रामसिंहजी को अलग कर मेहता शेरसिंहजी को उनके
पर नियुक्त किया। मगर जब उनसे भी खर्च पर नियंत्रण न हुआ तो वापस महाराणा ने रामसिंहजी
पना प्रधान बनाया। इस बार उन्होंने पोलिटिकल एजंट से लिखा पढ़ी करके २ लाख रुपये जो ब्रिटिश
र की ओर से मेवाड के पहाडी प्रदेशों के प्रबन्ध के लिए महाराणा को मिले तथा एजंट के निर्देश के
ार खर्च हुए थे माफ करवा दिये और चढ़ा हुआ खिराज भी चुका दिया। इससे इनकी बडी नेकनामी
ौर महाराणा ने इन्हे सिरोपाव आदि देकर सम्मानित किया।

राजपूताने के तत्कालीन पोलिटिकल एजट कप्तान कॉब का रामसिंहजी पर बडा विश्वास था। वे
क रहे तब तक रामसिंहजी अपने शत्रुओं के षड्यंत्र के बीच भी बराबर अपने पद पर बने रहे। कप्तान
के जाने के बाद रामसिंहजी के शत्रुओं का दाव चल गया और उन्हे अपने पद से इस्तीफा देना पडा।
कॉब रामसिंहजी की कार्य्य कुशलता से भली-भॉति परिचित था। इसलिये उसने कलकत्ते से रामसिंह
अच्छे कामों की याद दिलाते हुए महाराणा से उनकी मान मर्य्यादा के रक्षा करने की सिफारिश की।

मेहता रामसिंहजी बडे राजनीतिज्ञ और गहरे विचारों के व्यक्ति थे। रियासत के भीतरी कार्यों
का मस्तिष्क अच्छा चलाता था। महाराणा भीमसिंहजी के समय मे महाराणा और सरदारों के बीच
और चाकरी के लिए झगडा चला आ रहा था, उसे मिटाने के लिए वि० स० १८८४ मे मेवाड के
ीन पोलिटिकल एजट कप्तान कॉब ने मेहता रामसिंहजी सलाह से एक कौल नामा तय्यार किया। मगर
समय उस पर दोनों पक्षों मे से किसी के हस्ताक्षर न हो सके। तब रामसिंहजी ने वि० स० १८९[illegible]
नर रॉबिन्सन से कहकर नया कौलनामा करवाया। इन्हीं रामसिंहजी के उद्योग से वि० स० १८९० मे
की सेना संगठित किये जाने का कार्य्य आरम्भ हुआ। वि० स १९०३ मे महाराणा को यह संदेह हुआ
ड्यन्त्र बागौर के महाराज शेरसिंहजी के पुत्र शार्दूलसिंह की अध्यक्षता में उनको जहर दिलाने के लिये
जा रहा है जिसमें रामसिंह भी शामिल है। यह सुनते ही रामसिंहजी मेवाड छोड कर अजमेर चले

आये। उदयपुर से चले आने पर उनकी सारी जायदाद जप्त कर ली गई और इनके बाल बच्चों भी वहाँ से निकाल दिया गया।

जब बीकानेर के तत्कालीन महाराजा सरदारसिंहजी को यह बात मालूम हुई तब उन्होंने रामसिंहजी से बीकानेर आने के लिये बहुत आग्रह किया। मगर रामसिंहजी ने महाराजा को धन्यवाद देते हुए लिखा कि महाराणाजी को मेरी सेवाओं का पूरा ध्यान है, वे मेरे शत्रुओं द्वारा झूठी खबर फैला मुझ पर इस समय अप्रसन्न हैं, तो भी कभी न कभी उनकी अप्रसन्नता दूर होगी और वे मुझे फिर से बुलावेंगे। इससे रामसिंहजी की स्वामिभक्ति का गहरा परिचय मिलता है।

जब यह बात महाराणा सरूपसिंहजी को मालूम हुई तब उन्होंने मेहता रामसिंहजी को पीछा बुलाया मगर उसके प्रथम ही मेहताजी का स्वर्गवास हो गया।

मेहता रामसिंहजी को महाराणाजी की तरफ से तथा पोलिटिकल एजंट कप्तान कॉब और राबिन्सन की तरफ से कई रुक्के और परवाने मिले थे, जो हम इनकी फेमिली हिस्ट्री के साथ देने का प्रयत्न करेंगे।

मेहता शेरसिंहजी

मेहता शेरसिंहजी अगरचन्दजी के तीसरे पुत्र सीतारामजी के पुत्र थे। आप भी मेहता रामसिंहजी के समकालीन थे। जब मेहता रामसिंहजी पर महाराणा की नाराजी होती थी तब उनके दीवान आप नियुक्त किये जाते थे और जब आप से महाराणा अप्रसन्न हो जाते थे तब महाराणा मेहता रामसिंहजी को अपना दीवान बना लिया करते थे। इस प्रकार करीब तीन चार बार बारी २ से आप दीवान बनाये गये। आप बडे ईमानदार और सच्चे पुरुष थे। मगर ऐसा कहा जाता है कि प्रबन्ध कुशलता की आप में कुछ कमी थी, जिससे शासन-कार्य्य में आप को विशेष सफलता न हुई। फिर भी आपने उदयपुर राज्य की बहुत सेवाएँ की। आपने कई लडाइयों मे भी बडी वीरतापूर्वक भाग लिया। इन सब का वर्णन हम आगे चल कर इनके परिवार के इतिहास में करेंगे।

सेठ जोरावरमलजी बापना

उदयपुर के ओसवाल मुत्सुद्दियों में सेठ जोरावरमलजी बापना का नाम भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यद्यपि आप व्यापारी लाइन के पुरुष थे फिर भी राजकीय वातावरण पर आपका और आपके बंधु श्री बहादुरमलजी बापना का बहुत अच्छा प्रभाव था।

सेठ गुलाबचंदजी सालेचा, पचपदरा.

सेठ किशनलालजी टाटिया (मिश्रीमल गुलाबचंद)

श्री केशवलालजी श्रावक, चांदवड़ (नाशिक)

बाबू मन्नालालजी रीगल सिनेमा, इन्दौर.

रूणवाल

सेठ पन्नालाल शिवराज रूणवाल, बीजापुर

इस परिवार का मूल निवास स्थान खुडी चंडवारा (मेडते के पास) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ किशनचन्दजी के चतुर्भुजजी, पन्नालालजी रिधकरणजी तथा इन्द्रभानजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चतुर्भुजजी खुडी ठाकुर के यहाँ कामदार का काम करते थे। आपका सम्वत् १९६१ में तथा पन्नालालजी का सम्वत १९४४ में स्वर्गवास हुआ। सेठ चतुर्भुजजी के पूनालालजी तथा सुखदेवजी सेठ पन्नालालजी के शिवराजजी, अभयराजजी तथा चुन्नीलाल और इन्द्रभानजी के कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें पूसालालजी तथा सुखदेवजी स्वर्गवासी हो गये हैं

सेठ पन्नालालजी रूणवाल का परिवार—सेठ पन्नालालजी के बडे पुत्र शिवराजजी का जन्म सम्वत् १९२४ में हुआ। आप सम्वत् १९४० में बागलकोट आये। तथा सर्विस करने के बाद सम्वत् १९६५ 'प्रेमराज भागीरथ" के नाम से बीजापुर में दुकान की। आपके पुत्र प्रेमराजजी, भागीरथजी, जीतमलजी तथा मूलचन्दजी हैं। जिनमें बडे तीन पुत्र अपनी तीन दुकानों का संचालन करते है। श्री प्रेमराजजी के पुत्र भंवरूलालजी, हीरालालजी, अजराज, पारसमल तथा दलीचन्द है। इसी प्रकार भागीरथजी के पुत्र अमृत लालजी तथा मूलचन्दजी के जेठमलजी हैं। शिवराजजी की प्रधान दुकान पर "शिवराज जीतमल" के नाम से रूई तथा अनाज का बडे प्रमाण में व्यापार होता है। सेठ अभयराजजी का जन्म सम्वत् १९१२ में हुआ आपके पुत्र राजमलजी, सेठ चुन्नीलालजी के पुत्रों के साथ भागीदारी में व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजी रूणवाल—आप इस परिवार बडे समझदार तथा प्रतिष्ठित महानुभाव हैं आप सम्वत् १९४४ में केवल ९ साल की वय में अपने बडे भ्राता के साथ जलगाँव आये। तथा वहाँ से आप बागलकोट आये। यहाँ आपने फूलचन्दजी भय्या की दुकान पर सर्विस की। तथा पीछे इस दुकान के भागीदार हो गये। सम्वत् १९६४ में आपने "चुन्नीलाल उत्तमचंद" के नाम से रूई तथा आढ़त का व्यापार चालू किया। इस समय आपकी फर्म पर यूरोपियन तथा जापानी आफिसों की बहुत खरीदी रहा करती है। आप बीजापुर की जनता में बड़े लोकप्रिय व आदरणीय व्यक्ति हैं। सम्वत् १९६१ से लगातार १६ वर्षों तक आप जनता की ओर से म्यु० मेम्बर चुने गये। जब आपने म्यु० के लिये खड़ा होना छोड़ दिया, तब सरकार ने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से सम्मानित किया। और इस सम्मान पर आप अभीतक कार्य्य करते हैं। इसी तरह आप बीजापुर मर्चेंट एसोशिएसन के प्रेसिडेंट हैं। कहने का तात्पर्य यह कि आप बीजापुर के वजनदार व्यक्ति है। आपके उत्तमचन्दजी, दुर्गालालजी, देवीलालजी केशरीमलजी, पुखराजजी, माणकचन्दजी, मोतीलालजी और साकलचन्दजी नामक ८ पुत्र हैं। इनमें बडे तीन पुत्र आपकी तीन दुकानों के व्यापार में सहयोग लेते है। उत्तमचन्दजी भी म्यु० मेम्बर रह चुके हैं।

इसी तरह इस परिवार में सेठ कुन्दनमलजी तथा उनके पुत्र भेरूलालजी और ताराचन्दजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सेठ पुसालालजी के ६ पुत्र हैं, जिनमें छोटमलजी तथा बरदीचन्दजी बागलकोट में सेठ बच्छराज कन्हैयालाल सुराणा के साथ तथा शेष ४ बीजापुर में व्यापार करते हैं।

सालेचा

सेठ गुलाबचंदजी सालेचा, पचपदरा

इस परिवार के पूर्वज सालेचा बजरंगजी गोपडी गांव से संवत् १७३५ में पचपदरा आये। तथा व्यापार शुरू किया। इनकी नवीं पीढ़ी में सागरमलजी हुए। आप बंजारों के साथ तथा कोटे में अफीम की खरीदी फरोख्ती का व्यापार करते थे। इन व्यापारों में कर आपने अपने आस पास की जाति बिरादरी में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा पाई। जोधपुर आपने ६० हजार रुपया कर्ज दिये थे, इसके बदले में पचपदरा हुकूमत की आय आपके यहां संवत् १९३५ में आप स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र हजारीमलजी ४ साल के थे।

हजारीमलजी सालेचा—आप पचपदरा के नामी व्यापारी और रईस तबियत के ठाठबाट। जोधपुर स्टेट व साल्ट डिपार्टमेंट के तमाम ऑफिसरों से आपका अच्छा परिचय था। आप १ लाख मन नमक खरीदने का कंट्राक्ट कई सालों तक लेते रहे। संवत् १९७३ में हुए। आपके नाम पर सालेचा गुलाबचन्दजी भोपाल से दत्तक आये।

गुलाबचन्दजी सालेचा—आपका जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आप बड़े अनुभवी तथा हैं। आपने पचपदरा आने के पूर्व भोपाल, नागपूर आदि में स्कूल खुलवाये। पचपदरा में काम में मदद देते रहे। आपके पास भारत की नमक की झीलों का ६० सालों का कम्पलीट संवत् १९२९ में आपने विलायती नमक की काम्पीटीशन में पचपदरा साल्ट का एक जहाज कलकत्ता रवाना किया, लेकिन बृटिश कम्पनियों ने सम्मिलित होकर वहाँ भाव बहुत इसस आपको उसमें सफलता न रही। नमक के व्यापार में आपका गहरा अनुभव है। प्रधानपंच तथा नाकोडा पार्श्वनाथ के प्रबन्धक हैं। तथा जाति सुधारों में भाग लेते आपके पुत्र लक्ष्मीचन्दजी तथा अमीचन्दजी जोधपुर में और चम्पालालजी पचपदरा में पढ़ते हैं।

टाँटिया

सेठ भोमराज किशनलाल टाँटिया, खिचंद

यह परिवार खिचंद का रहने वाला है। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन परिवार के पूर्वज सेठ हिम्मतमलजी टांटिया, मालेगांव (खानदेश) गये, तथा वहाँ सर्विस फिर आपने चोपड़ा (खानदेश) में दुकान की। अपने जीवन के अन्तिम २५ सालों तक धर्म ध्यान में लीन रहे। संवत् १९७२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके हस्तीमलजी, गम्भीरमलजी तथा भोमराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें हस्तीमलजी टांटिया ने संवत् में दुकान खोली। संवत् १९६९ में आप स्वर्गवासी हुए। आप चारों भाइयों का १९७६ में अलग २ हुआ। सेठ हस्तीमलजी के किशनलालजी तथा राणूलालजी नामक दो राणूलालजी मद्रास दत्तक गये।

किशनलालजी ने अपने काका भोमराजजी के साथ बम्बई में भागीदारी में व्यापार आरंभ

सायाल

सेठ फतेमलजी सीयाल, ऊटकमंड

... परिवार पाली निवासी मन्दिर आम्नाय का मानने वाला है। पाली से सेठ फतेमलजी ... १९६० में आकर नीलगिरी के वेलिंगटन नामक स्थान में व्याज का धंधा शुरू किया। ... हैं तथा विद्यमान हैं। आपने तथा पुखराजजी ने इस दुकान के कारबार को ज्यादा ... परिवार पाली तथा नीलगिरी के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके ...नमल के नाम से वेलिंगटन में तथा रिखबदास फतेमल के नाम से ऊटकमंड में भागीदारी ...पार होता है। आपके नाम पर धरमचन्दजी सीयाल दत्तक आये हैं। आप १२ साल के हैं।

राय सोनी

सेठ सिरेमल पूनमचन्द मूथा (राय सोनी) बेलगांव

... परिवार भाँवरी (पाली) का निवासी है। वहाँ मूथा डायाजी रहते थे। इनके माणकचन्दजी ... २ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, भाँवरी ठिकाने के कामदार थे। इनके पुत्र पूनम-...राजजी हुए। मूथा पूनमचन्दजी के पुत्र सिरेमलजी २२ साल की आयु में सम्वत् १९४५ ... तथा "दानाजी ऊमाजी" की भागीदारी में कपडे का व्यापार शुरू किया। इसके बाद आप ...ार डिस्ट्रिक्ट) में लकडी का कंट्राक्टिंग बिजिनेस करते रहे। इसमें सफलता प्राप्त कर सम्वत् ... कपडे का व्यापार शुरू किया। तथा व्यापार में उन्नति प्राप्त कर सम्मान को बढ़ाया। ... आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आपके चाचा मूथा जसराजजी के पौत्र जीवराजजी ... का भी १७ साल की वय में सम्वत् १९८४ में शरीरान्त हो गया। अत इनके नाम पर ...पौत्र जीवमचन्दजी दत्तक लिये गये। इनका जन्म सम्वत् १९७२ में हुआ। इस दुकान पर ...टारी माणिकराजजी १५ सालों से मुनीम हैं। आप समझदार व्यक्ति हैं। यह दुकान ...रिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। यहाँ कपडे का थोक व्यापार होता है।

कातरेला

सेठ धोंकलचन्द चुन्नीलाल कातरेला, बंगलोर

...नदान के मूल पुरुषों का खास निवास स्थान बगडी (मारवाड) है। आप श्वेताम्बर ... सम्प्रदाय को माननेवाले हैं। इस खानदान में सेठ मनरूपचन्दजी अपने जीवन भर ... इनके पुत्र धोंकलचन्दजी का जन्म सवत् १९०१ में हुआ। आप भी बगडी में ही रहे। ... धर्मनिष्ठ पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सवत १९९८ में हुआ। आपके पुत्र धनराजजी

किया। तथा इधर संवत् १९८१ से बम्बई कालबा देवी में आढ़त का व्यापार "मिश्रीमल गुमानचन्द के नाम से करते हैं। खिचन्द में आपका परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके पुत्र भेरुदा जी, गुमानचन्दजी, देवराजजी तथा समीरमलजी हैं। सेठ भीमराजजी विद्यमान हैं। आपके पु मिश्रीलालजी हैं। इसी प्रकार इस परिवार में सेठ सौभागमलजी और उनके पुत्र कन्हैयालालजी का व्यापा धरनगाँव में तथा गम्भीरमलजी और उनके पुत्र मेवराजजी का व्यापार सारंगपुर (मालवा) में होता है

आवड़

सेठ हरखचन्द रामचन्द आवड़, चांदवड़

यह परिवार पीसांगन (अजमेर के पास) का निवासी है। आप मन्दिर मार्गीय आम्ना को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ हणुवतमलजी के बड़े पुत्र हरखचन्दजी व्यापार के लि संवत् १९३० में चाँदवड़ के समीप पनाला नामक स्थान में आये, तथा किराने की दुकानदारी शुरू की आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। पीछे से अपने छोटे भ्राता मूलचन्दजी को भी बुलालिया, तथा दो बंधुओं ने हिम्मत पूर्वक सम्पत्ति उपार्जित कर समाज में अपने परिवार की प्रतिष्ठा स्थापित की। सेठ मोर्त लालजी का संवत् १९८४ में स्वर्गवास हो गया है, तथा सेठ हरकचन्दजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र राम चन्दजी तथा केशवलालजी हैं। आप दोनों का जन्म क्रमश संवत् १९४६ तथा १९५३ मे हुआ। आ दोनों सज्जन अपनी कपड़ा व साहुकारी दुकान का संचालन करते हैं।

श्री केशवलालजी आवड़—आप बडे शान्त, विचारक और आशावदी सज्जन हैं। चाँदवड़ गुरु कुल के स्थापन करने में, उसके लिए नवीन बिल्डिंग प्राप्त करने में आपने जो जो कठिनाइयाँ झेलीं, उनक कहानी लम्बी है। केवल इतना ही कहना पर्य्याप्त होगा कि, आपने विद्यालय की जमावट में अनेका रुकावटों व कठिनाइयों की परवाह न कर उसकी नींव को दृढ़ बनाने का सतत् प्रयत्न किया। इसके प्रति फल में परम रमणीय एव मनोरम स्थान में आज विद्यालय अपनी उत्तरोत्तर उन्नति करने में सफल हो रह है। तथा अब भी आप विद्यालय की उसी प्रकार सेवाएँ बजा रहे हैं। आप खानदेश तथा महाराष्ट्र सुपरिचित व्यक्ति हैं। आपके बड़े भ्राता रामचन्द्रजी विद्यालय की प्रबंधक समिति के मेम्बर हैं। आप पुत्र शाँतिलालजी ब्रह्मचर्य्याश्रम से शिक्षण प्राप्तकर कपडे का व्यापार सम्हालते हैं। इनसे छो लखीचंद तथा सरूपचन्द हैं। इसी प्रकार केशवलालजी के पुत्र सचियालाल तथा रतनलाल हैं।

सेठ धनरूपमल छगनमल आवड, जालना

इस खानदान का मूल निवास स्थान बीजाथल (मारवाड) है। आप मन्दिर आम्नाय क माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदान में सेठ धनरूपमलजी मारवाड से जालना ८० वर्ष पूर्व आये। तथ यहाँ आकर व्यापार किया। आपका स्वर्गवास हुए करीब ४० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र से छगनमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपके समय में फर्म की अधिक तरक्की हुई। संवत् १९६५ के करीब आपका स्वर्गवास हुआ। धार्मिक कार्यों की ओर आपकी अच्छी रुचि थी। आपके पश्चात आपके पुत्र सेठ कपूरचन्दजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। वर्त्तमान समय में आप ही इस फर्म

रूणवाल

सेठ पन्नालाल शिवराज रूणवाल, बीजापुर

इस परिवार का मूल निवास स्थान खुडी बंडवारा (मेडते के पास) है। आप स्थानकवा आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ किशनचन्दजी के चतुर्भुजजी, पन्नालाल रिधकरणजी तथा इन्द्रभानजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चतुर्भुजजी खुडी ठाकुर के यहाँ कामदार काम करते थे। आपका सम्वत् १९६१ में तथा पन्नालालजी का सम्वत १९४४ में स्वर्गवास हुआ। चतुर्भुजजी के पूनालालजी तथा सुखदेवजी सेठ पन्नालालजी के शिवराजजी, अभयराजजी तथा चुन्नीलाल और इन्द्रभानजी के कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें पूसालालजी तथा सुखदेवजी स्वर्गवासी हो गये हैं

सेठ पन्नालालजी रूणवाल का परिवार—सेठ पन्नालालजी के बड़े पुत्र शिवराजजी का जन्म सम्वत् १९२४ में हुआ। आप सम्वत् १९४० में बागलकोट आये। तथा सर्विस करने के बाद सम्वत् १९६५ 'प्रेमराज भागीरथ" के नाम से बीजापुर में दुकान की। आपके पुत्र प्रेमराजजी, भागीरथजी, जीतमलजी त मूलचन्दजी हैं। जिनमें बड़े तीन पुत्र अपनी तीन दुकानों का संचालन करते है। श्री पेमराजजी के (भंवरूलालजी, हीरालालजी, अजराज, पारसमल तथा दलीचन्द है। इसी प्रकार भागीरथजी के पुत्र अम लालजी तथा मूलचन्दजी के जेठमलजी हैं। शिवराजजी की प्रधान दुकान पर "शिवराज जीतमल" के ना से रूई तथा अनाज का बडे प्रमाण में व्यापार होता है। सेठ अभयराजजी का जन्म सम्वत् १९१३ में हुआ आपके पुत्र राजमलजी, सेठ चुन्नीलालजी के पुत्रों के साथ भागीदारी में व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजी रूणवाल—आप इस परिवार बड़े समझदार तथा प्रतिष्ठित महानुभाव हैं आप सम्वत् १९४४ में केवल ९ साल की वय में अपने बडे भ्राता के साथ जलगाँव आये। तथा वहाँ आप बागलकोट आये। यहाँ आपने फूलचन्दजी भय्या की दुकान पर सर्विस की। तथा पीछे इस दुकान भागीदार हो गये। सम्वत् १९६४ में आपने "चुन्नीलाल उत्तमचन्द" के नाम से रूई तथा आढ़त व व्यापार चालू किया। इस समय आपकी फर्म पर यूरोपियन तथा जापानी आफिसों की बहुत खरीदी रा करती है। आप बीजापुर की जनता में बड़े लोकप्रिय व आदरणीय व्यक्ति हैं। सम्वत् १९६१ से लगात १६ वर्षों तक आप जनता की ओर से म्यु० मेम्बर चुने गये। जब आपने म्यु० के लिये खडा होना छो दिया, तब सरकार ने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से सम्मानित किया। और इस सम्मान प आप अभीतक कार्य्य करते हैं। इसी तरह आप बीजापुर मर्चेंट एसोशिएसन के प्रेसिडेंट हैं। कहने तात्पर्य यह कि आप बीजापुर के वजनदार व्यक्ति हैं। आपके उत्तमचन्दजी, दुर्गालालजी, देवीलालजी केशरीमलजी, पुखराजजी, माणकचन्दजी, मोतीलालजी और साकलचन्दजी नामक ८ पुत्र हैं। इनमें बड़े तीन पुत्र आपकी तीन दुकानों के व्यापार में सहयोग लेते है। उत्तमचन्दजी भी म्यु० मेम्बर रह चुके हैं।

इसी तरह इस परिवार में सेठ कुन्दनमलजी तथा उनके पुत्र भेरूलालजी और ताराचन्दजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सेठ पूसालालजी के ६ पुत्र हैं, जिनमें छोटमलजी तथा बरदीचन्दजी बागलकोट में सेठ बच्छराज कन्हैयालाल सुराणा के साथ तथा शेष ४ बीजापुर में व्यापार करते हैं।

[illegible] आपका संवत् १९२५ में जन्म हुआ है। आप समझदार तथा सज्जन व्यक्ति हैं। आपके [illegible] फर्म की बहुत तरक्की हुई। आपने जालना के मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाने में दो तीन हजार [illegible] इसी तरह के धार्मिक कामों में आप सहयोग लेते रहते हैं। इस समय आपके यहाँ लेन-देन, [illegible] का व्यापार होता है। आपके पुत्र कचरूलालजी व्यापार में भाग लेते हैं तथा उत्साही [illegible] में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

ठाकुर

सेठ देवीचंद पन्नालाल ठाकुर, इन्दौर

इस परिवार के पूर्वज अपने मूल निवास ओशियाँ से कई स्थानों पर निवास करते हुए लगभग [illegible] इन्दौर में आकर आबाद हुए। इन्दौर में इस परिवार के पूर्वज सेठ बिरदीचन्दजी अफीम [illegible] थे। आपके पुत्र नाथूरामजी तथा नगजीरामजी "नाथूराम नगजीराम" के नाम से व्यापार [illegible] दोनों भाइयों के क्रमश देवीचन्दजी, तथा शंकरलालजी नामक एक एक पुत्र हुए। ये [illegible] अलग २ व्यापार करने लगे।

[illegible] देवीचन्दजी का परिवार—आप इस परिवार में बड़े व्यवसाय चतुर तथा होशियार पुरुष [illegible] पुत्र पन्नालालजी तथा मोतीलालजी ने अपनी फर्म पर चाँदी सोने का व्यवसाय आरम्भ किया। [illegible] में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ पन्नालालजी का ९० साल की आयु में संवत् [illegible] स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सरदारमलजी ६० साल के हैं। इनके पुत्र धन्नालालजी, मन्नालालजी [illegible] है। इनमें अमोलकचन्दजी अपने पिताजी के साथ सराफी दुकान में सहयोग देते हैं।

[illegible] धन्नालालजी तथा मन्नालालजी ठाकुर—आप दोनों बन्धुओं ने इन्दौर की शौकीन जनता की [illegible] सन् १९२३ में क्राउन सिनेमा तथा सन् १९२४ में रीगल थियेटर का उद्घाटन किया। [illegible] में "हिन्दी टॉकी" तथा दूसरी में "अँग्रेजी टॉकी" मशीन का व्यवहार किया जाता [illegible] में आप दोनों बन्धुओं का अच्छा अनुभव हैं। धन्नालालजी के पुत्र हस्तीमलजी [illegible] है। मोतीलालजी ठाकुर के पुत्र इन्दौरीलालजी चाँदी सोने का व्यापार करते हैं [illegible] व्यापार में भाग लेते हैं, तथा कालूरामजी छोटे हैं। इसी प्रकार इस परिवार में [illegible] पुत्र भगवानदासजी, सूरजमलजी तथा हजारीमलजी हुए। इनमें हजारीमलजी मौजूद हैं। [illegible] पुत्र [illegible]लालजी तथा हीरालालजी अपने काका के साथ चाँदी सोने का व्यापार करते हैं। [illegible] पुत्र रतनलालजी है।

भादाणी

सेठ दौलतराम हरखचन्द भादाणी, कलकत्ता

[illegible] परिवार श्वे० जैन तेरापन्थी आम्नाय को मानने वाला है। आपका मूल निवास स्थान [illegible] है। इस खानदान के पूर्व पुरुष भादाणी आशकरणजी ने करीब सौ वर्ष पहले

सायाल

सेठ फतेमलजी सीयाल, ऊटकमंड

परिवार पाली निवासी मन्दिर आम्नाय का मानने वाला है। पाली से सेठ फतेमलजी
त् १९६० में आकर नीलगिरी के वेलिंगटन नामक स्थान में व्याज का धंधा शुरू किया।
ते हैं तथा विद्यमान हैं। आपने तथा पुखराजजी ने इस दुकान के कारवार को ज्यादा
। परिवार पाली तथा नीलगिरी के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके
फतमल के नाम से वेलिंगटन में तथा रिखवदास फतेमल के नाम से ऊटकमंड में भागीदारी
ापार होता है। आपके नाम पर धरमचन्दजी सीयाल दत्तक आये हैं। आप १२ साल के हैं।

राय सोनी

सेठ सिरेमल पूनमचन्द मूथा (राय सोनी) वेलगांव

परिवार भाँवरी (पाली) का निवासी है। वहाँ मूथा डायाजी रहते थे। इनके माणकचन्दजी
मक २ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, भाँवरी ठिकाने के कामदार थे। इनके पुत्र पूनम-
सराजजी हुए। मूथा पूनमचन्दजी के पुत्र सिरेमलजी २२ साल की आयु में सम्वत् १९४५
। तथा "दानाजी ऊमाजी" की भागीदारी में कपडे का व्यापार शुरू किया। इसके बाद आप
ार डिस्ट्रिक्ट) में लकडी का कंट्राक्टिंग विजिनेस करते रहे। इसमें सफलता प्राप्त कर सम्वत्
ने कपडे का व्यापार शुरू किया। तथा व्यापार में उन्नति प्राप्त कर सम्मान को बढ़ाया।
में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आपके चाचा मूथा जसराजजी के पौत्र जीवराजजी
नका भी १७ साल की वय में सम्वत् १९८४ में शरीरान्त हो गया। अतः इनके नाम पर
पौत्र भीकमचन्दजी दत्तक लिये गये। इनका जन्म सम्वत् १९७२ में हुआ। इस दुकान पर
भंडारी माणिकराजजी १५ सालों से मुनीम हैं। आप समझदार व्यक्ति हैं। यह दुकान
पारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। यहाँ कपडे का थोक व्यापार होता है।

कातरेला

सेठ धोंकलचन्द चुन्नीलाल कातरेला, बंगलोर

। खानदान के मूल पुरुषों का खास निवास स्थान बगडी (मारवाड) है। आप श्वेताम्बर
मार्गी सम्प्रदाय को माननेवाले हैं। इस खानदान में सेठ मनरूपचन्दजी अपने जीवन भर
। आपके पुत्र धोंकलचन्दजी का जन्म संवत् १९०१ में हुआ। आप भी बगडी में ही रहे।
र और सज्जन पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९९८ में हुआ। आपके पुत्र धनराजजी

कूच विहार में दुकान खोली। धीरे २ आपका काम बढ़ने लगा, और आपकी कूच विहार स्टेट में बहुत जमीदारी हो गई। आपके तनसुखदासजी और गुलाबचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों के से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। डूँगरगढ़ बसाने में भाटाणी तनसुखदासजी ने बहुत मदद दी। भा हरखचन्दजी बीकानेर "राजसभा" के मेम्बर रहे थे। तनसुखदासजी के दौलतरामजी गुलाबचन्दजी के हरकचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनमें से श्री दौलतरामजी का स्वर्गवास सवन् १' में हो गया आपके पुत्र मालचन्दजी विद्यमान हैं। हरखचन्दजी इस समय इस फर्म के खास प्रोप्राइटर आपके पाँचपुत्र हैं जिनके नाम श्री केशरीचन्दजी, पूनमचन्दजी, मोतीलालजी, इन्द्रराजमलजी और स रामजी हैं। करीब बीस वर्ष पूर्व इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता आर्मेनियन स्ट्रीट में खोली गई यहाँ "दौलतराम हरकचंद" के नाम से कमीशन एजंसी का काम होता है।

पगारिया

सेठ सरूपचन्द पूनमचन्द पगारिया, बेतूल

इस परिवार के पूर्वज सेठ छोटमलजी पगारिया, गूलर (जोधपुर स्टेट) से लगभग ७०। पहिले चांदूर बाजार आये, तथा वहाँ से उनके पुत्र सरूपचन्दजी सवत् १९२७ में बदनूर आये तथा प्रतापचन्दजी गोठी की भागीदारी में "तिलोकचन्द सरूपचन्द" के नाम से कपडे का कारबार चालू वि संवत् १९३९ में आपने अपना निज का कपडे का धंधा खोला, व्यापार के साथ २ सेठ सरूपच पगारिया ने २ गाँव जमीदारी के भी खरीद किये, सवत् १९७४ में ६० साल की वय में आपका शरीर हुआ। आपके गणेशमलजी, सूरजमलजी, मूलचन्दजी, चांदमलजी तथा ताराचन्दजी नामक ५ पुत्र इन भाइयों में से गणेशमलजी १९७२ में तथा मूलचन्दजी १९८२ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ सूरजमलजी पगारिया—आपका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप सेठ 'शेरसिंह माणक' की दुकान पर पिताजी की मौजूदगी तक मुनीम रहे। बाद आपने अपनी जमीदारी के काम को बढ़ इस समय आपके यहाँ १० गावों की जमीदारी है, इसके अलावा बेतूल में कपडा तथा मनीहारी काम। हैं। आपके छोटे बधु चांदमलजी का जन्म १९४२ में तथा ताराचन्दजी का जन्म १९४९ में हुआ। गणेशमलजी के पुत्र धरमचन्दजी, सूरजमलजी के पुत्र मोतीलालजी तथा चांदमलजी के पुत्र कन्हैयाला व्यापार में भाग लेते हैं। आप तीनों का जन्म क्रमश सम्वत् १९५४ संवत १९६१ तथा १९६० में हु मूलचन्दजी के पुत्र पुखराजजी, जसराजजी, हंसराजजी और ताराचन्दजी के वसतीलालजी हैं।

भटेवड़ा

सेठ मोतीचन्द निहालचन्द, भटेवडा, बेलूर (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज सेठ मनरूपचंदजी भटेवड़ा अपने मूल निवास स्थान पिपलिया (मारव से व्यापार के लिये जालना आये, तथा वहाँ रेजिमेंटल बैङ्किग तथा सराफी व्यापार किया। आपका परि स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाला है। संवत् १९३४ में ६८ साल की वय में आप स्वर्गवासी हु

चुन्नीलालजी और सुखराजजी विद्यमान हैं। इनमें से धनराजजी ने अपनी फर्म अमरावती में 'धोंकलचन धनराज" के नाम से खोली। सेठ चुन्नीलालजी ने संवत् १९५६ में अपना फर्म बगलोर में "धोंकलचन चुन्नीलाल के नाम से कालीब्रप बाजार में खोली। तथा सेठ सुखराजजी ने संवत् १९७७ में अपनी दुका मद्रास में खोली। आप तीनों भाई बडे धार्मिक और व्यापार दक्ष पुरुष हैं। आप लोगों का जन्म क्रमश संवत् १९३१ संवत् १९३५ तथा १९३८ में हुआ। सेठ धनराजजी के पुत्र बन्शीलालजी हैं। सेठ सुख राजजी के पुत्र अमोलकचन्दजी और अमोलकचन्दजी के पुत्र भँवरीलालजी हैं। भँवरीलालजी को सेठ चुन्नी लालजी ने दत्तक लिया है।

मरलेचा

सेठ धूलचन्द दीपचन्द मरलेचा, चिंगनपेठ (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज सेठ बोरीदासजी मरलेचा कण्टालिया रहते थे। सम्वत् १९२३ में वा के जागीदार से इनकी अनबन हो गई, और जिससे इनका घर लुटवा दिया गया। इससे आप कण्टालिर से मेलावास (सोजत) चले आये। तथा ४ साल बाद वहाँ स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र धूलचन्द व्यवसाय के लिये जालना आये, यहाँ थोडे समय रह कर आप मारवाड गये, तथा वहाँ सम्वत् १९७६ स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र दीपचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५६ में हुआ। दीपचन्दजी मरलेचा मारव से सम्वत् १९६६में अहमदनगर और उसके डेढ़ बरस बाद मद्रास आये। और वहाँ सर्विस की। सम्व १९७६ में आपने बगडी निवासी सेठ धनराजजी कातरेला की भागीदारी में चिंगनपेठ (मद्रास) में ब्याज धंधा "धनराज दीपचन्द" के नाम से शुरू किया आपके पुत्र पारसमलजी तथा चम्पालालजी हैं। आ स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन हैं। श्री धनराजजी कातरेला के पुत्र वंशीलालजी इस फर्म के व्यापार भाग लेते हैं। आप दोनों युवक सज्जन व्यक्ति हैं।

मडेचा

मेसर्स सागरमल जवाहरमल मडेचा,

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान सोजत (जोधपुर-स्टेट) का है। आप श्वे० जै समाज के तेरह पथी आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ जमनालालजी मारवा से जालना आये और यहाँ पर आकर लोहे और किराने की दुकान खोली। आपका स्वर्गवास हुए करीब ३ वर्ष हो गये। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई सेठ सागरमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। साग मलजी सं० १९७० में स्वर्गवासी हुए। आपके चार पुत्र हुए। इनमें जवानमलजी, कुन्दनमलजी त समरथमलजी छोटी २ उमर में गुजर गये, तथा इस समय फर्म के मालिक आपके चतुर्थ पुत्र केशरीमला हैं। आपकी ओर से १००००) दस हजार की लागत से एक बङ्गला सामायिक तथा प्रति क्रमण के लि दिया गया। आपके पुत्र चम्पालालजी तथा मदनलालजी बालक हैं।

[illegible], मानीचन्दजी, छोगमलजी तथा हजारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। भटेवडा जुहारमलजी [illegible] १९५[illegible] में ६४ साल की वय में हुआ। आपके नाम पर आपके भतीजे गुलाबचन्दजी [illegible] इस समय इनके पुत्र केवलचन्दजी तथा घेवरचन्दजी वेल्लूर में व्यापार करते हैं। केवलचंदजी के [illegible] तथा सम्पतराजजी हैं।

[illegible] मानीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९०० में हुआ था। आपने २६ साल की वय में जालना [illegible] दुकान खोली। आप सरल प्रकृति के सज्जन थे। सम्वत् १९३४ में आपका स्वर्गवास [illegible] पुत्र सेठ निहालचन्दजी विद्यमान हैं। आप वेलूर के प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। [illegible] "मोनाचन्द निहालचन्द" के नाम से फर्म स्थापित की। इस समय यह फर्म वेलूर में [illegible] वर्षों बैंकिंग तथा सराफी का काम होता है। सेठ छोगमलजी के पुत्र सूरजमलजी व [illegible]। इनमें गुलाबचन्दजी, अपने काका सेठ जुहारमलजी के नाम पर दत्तक गये, तथा [illegible] पुत्र हीराचन्दजी और वनेचन्दजी वेलूर में अपना २ स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। हीराचन्दजी [illegible] तथा वनेचन्दजी के विजयराजजी तथा सम्पतराजजी हैं। सेठ हजारीमलजी भटेवड़ा के [illegible] विद्यमान हैं। इनके पुत्र चम्पालालजी हैं।

पूनमिया

सेठ ताराचन्द डाहजी पूनमियां, सादड़ी

[illegible] का मूल निवास सादडी है। यहाँ से सेठ इंदाजी लगभग ७५ साल पहले सादड़ी से [illegible] इन्होंने बम्बई में सराफी लेन देन शुरू किया। इनके डाहजी, तेजमलजी तथा गेंदमलजी [illegible] हुए। डाहजी का जन्म सम्वत् १९१९ तथा मृत्युकाल सम्वत् १९७८ में हुआ। ये अपना [illegible] का काम काज देखते रहे। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। आपके पुत्र केसरीमलजी, [illegible] ताराचन्दजी विद्यमान हैं। इनमें केसरीमलजी, तेजमालजी के नाम पर दत्तक गये। इनकी [illegible] सोने की दुकान है। गेंदमलजी के पुत्र रिखबदासजी तथा बालचन्दजी हैं। इनका [illegible]" के नाम से मोती बाजार बम्बई में गिन्नी का बडा कारबार होता है।

[illegible] ताराचन्दजी—आप स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। आप सेठ नवलाजी दीपाजी [illegible] चूड़ियों का इम्पोर्टिंग तथा डीलिंग बिजिनेस करते हैं। आपने देशी चूड़ियों के कारबार [illegible] दी है। ताराचन्दजी शिक्षित सज्जन हैं। आपने स्थानकवासी ज्ञानवर्द्धक सभा के [illegible] सुन्दर मकान बनवाया है। आप अन्य सस्थाओं को भी सहायताएँ देते रहते हैं।

ललूंडिया राठोड़

सेठ पृथ्वीराज नवलाजी, ललूंडिया राठोड, सादडी

[illegible] पूर्वज जाकोडा (शिवगज के पास) में रहते थे। वहाँ इन्होंने एक जैन मन्दिर भी [illegible] के दौलजी के पुत्र राजाजी तथा पौत्र खानूजी हुए। जाकोडा से खानूजी और

बागमार

सेठ जगन्नाथ नथमल बागमार, बागलकोट

इस परिवार का मूल निवास डूंगसरा (कुचेरा के पास) जोधपुर स्टेट है। इस परिवार के ...मन्ना बागमार के पुत्र सेठ थानमलजी बागमार संवत् १९३२ में बागलकोट आये, तथा, ...स्वामी सूत का व्यापार शुरू किया। आप संवत् १९७८ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र ...जी बागमार का जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आपने तथा आपके पिताजी ने ...व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। आप कपडा एसोशिएसन के अध्यक्ष हैं। बागलकोट ...समाज में आपकी दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ जगन्नाथजी के पुत्र नथमलजी का ...१९.१ में हुआ। आप फर्म के व्यापार को तत्परता से सम्हालते हैं। आपके पुत्र हेमराजजी, ...रमराजजी, तथा केवलचन्दजी हैं। आपके यहाँ बागलकोट में सूती कपडे का व्यापार होता है।

कुचेरिया

सेठ खींवराज अभयराज कुचेरिया, धूलिया

यह परिवार बोरावड (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। देश से सेठ गोपालजी कुचेरिया संवत् ...व्यापार के लिये धूलिया आये। आप संवत् १९५० में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र अभयराजजी ...की उन्नति की। आप भी संवत् १९५८ में स्वर्गवासी हुए। आपके खींवराजजी तथा ...नामक २ पुत्र हुए, इनमें खींवराजजी विद्यमान हैं। कुचेरिया खींवराजजी का जन्म संवत् ...हुआ। आपने १९६० में रुई अनाज और किराने की दुकान की। तथा इस व्यापार में अच्छी ...प्रतिष्ठा प्राप्त की। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले हैं, तथा धार्मिक कार्मों ...में रहते हैं आपके पुत्र नेमीचन्दजी तथा वरदीचन्दजी व्यापार में सहयोग लेते हैं।

हड़िया

सेठ दलीचंद मूलचंद हड़िया, बलारी

यह परिवार सीवाणा (मारवाड) का निवासी है। वहाँ से सेठ दलीचन्दजी अपने भ्राता झूठाजी ...संवत् १९२० में बलारी आये। तथा मोती की फेरी लगाकर दस पन्द्रह हजार रुपयों ...उपार्जित की, और संवत् १९४४ में "दलीचद झूठार्जी" के नाम से कपडे का कारबार शुरू ...दोनों बंधु क्रमशः संवत् १९६५ तथा १९६० में स्वर्गवासी हुए। आप दोनों बन्धुओं ...ने ३ लाख रुपयों की सम्पत्ति इस व्यापार में कमाई। सेठ दलीचन्दजी के रघुनाथमलजी, ...भागूरामजी नामक २ पुत्र हुए। सेठ रघुनाथमलजी, १९७७ में गुजरे। इनके बाद ...के नाम से व्यापार कर रही है। इन तीनों भाइयों के नाम पर श्री छोगालालजी दत्तक ...

उनके पुत्र दीपाजी सादड़ी आये। दीपाजी के पुत्र नवलाजी का जन्म १८९९ में तथा भागाजी का १ में हुआ। इन दोनों भाइयों का स्वर्गवास सम्वत् १९६१ में हुआ। नवलाजी के कस्तूरचन्दजी, सतोप जी, पृथ्वीराजजी तथा दलीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयों ने सम्वत् १९४९ में बम्बई में का व्यापार शुरू किया, तथा इस व्यापार में इतनी उन्नति प्राप्त की, कि आज आप बम्बई में सब से बड़ा के व्यापार करते हैं। आपका आफिस "नवलाजी दीपाजी" के नाम से फोर्ट बम्बई में है, तथा आपके चूड़ी का विदेशों से इम्पोर्ट होता है। सेठ कस्तूरचन्दजी सम्वत् १९५४ में तथा दलीचन्दजी १९७ स्वर्गवासी हुए। इस समय सतोपचन्दजी तथा पृथ्वीराजजी विद्यमान हैं। सतोपचन्दजी के पुत्र पुखर व्यापार में भाग लेते हैं तथा दलीचन्दजी के पुत्र फूलचन्दजी पढ़ते हैं।

सेठ पृथ्वीराजजी—आप सादड़ी तथा गोडवाड के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। इस समय "दयाचन्द धर्मचन्द" की पेढ़ी व न्यात के नौहरे के मेम्बर हैं। आपके परिवार ने राणकपुरजी में ८ रुपये लगाये। पंच तीर्थी के संघ में १७ हजार रुपये व्यय किये। सादड़ी में उपासरा बनवाया। न तथा बाँदरा के मन्दिरों में कलश चढ़ाने में मदद दी। नाडलाई मन्दिर में चाँदी का पालना चढ़ाया। तरह के कई धार्मिक कार्यों में आप हिस्सा लेते रहते हैं।

छजलानी

सेठ कोजीराम घीसूलाल छजलानी, टिंडिवरम् (मद्रास)

इस खानदान के मालिकों का मूल-निवासस्थान जेतारण (मारवाड़) का है। आप जैन श्वेत समाज में तेरा पंथी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस परिवार के श्री घीसूलालजी सबसे पहले सम्वत् १ में टिण्डिवरम् आये और गिरवी के लेन देन की दुकान स्थापित की। घीसूलालजी बड़े साहसी और व्य कुशल पुरुष हैं। आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आपके पुत्र बिरदीचन्दजी इस समय दुकान के को संभालते हैं। इस फर्म की ओर से दान धर्म और सार्वजनिक कामों में यथाशक्ति सहायता दी जाती इस समय इस फर्म पर गिरवी और लेन देन का व्यवसाय होता है।

भूरा

सेठ चौथमल चाँदमल भूरा, जबलपूर

इस गौत्र की उत्पत्ति भणसाली गौत्र से हुई है। इस परिवार का मूल निवास देश (बीकानेर) है। वहाँ से सेठ परशुरामजी भूरा अपने पुत्र चौथमलजी तथा करनीदानजी को लेकर सौ वर्ष जबलपुर आये। यहां से करणीदानजी शिवनी चले गये, इस समय उनके परिवार वाले शिवनी में "बहादुर लखमीचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। सेठ चौथमलजी भूरा संवत् १९२३ में स्वर्गवासी हु आपके चाँदमलजी, मूलचन्दजी, मिलापचन्दजी तथा चुन्नीलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चांद जी ने १९ साल की आयु में अपने पिताजी के साथ सवत् १९२९ में सराफी की दुकान स्थापित साथ ही इस फर्म की स्थाई सम्पत्ति को भी आपने खूब बढ़ाया। स्थानीय जैन मन्दिर की व्यव

हैं। आपके पुत्र सम्पतराजजी हैं। सीवाणची में यह परिवार बडा नामी माना जाता है। स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्म मे सीवाणा निवासी कई सज्जनों के हैं। इसी तरह अन्य स्थानों के भी भागीदार हैं।

धोका

सेठ बहादुरमल सूरजमल, धोका यादगिरी (निजाम)

इस कुटुम्ब का मूल निवास स्थान साथीण (पीपाड के पास) है। आप श्वे० जैन स के स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। सेठ जीतमलजी के पुत्र बालचन्दजी धोका दे सवत् १९४१ में यादगिरी आये तथा आपने कपडे का काम काज शुरू किया। आपका सवत् १९५ स्वर्गवास हुआ। आपके नवलमलजी, बहादुरमलजी तथा सूरज्मलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ नवलम धोका के हाथों से इस दुकान के रोजगार और इज्जत को बहुत तरक्की मिली। आपका स्वर्गवास र १९८५ में तथा बहादुरमलजी संवत् १९९१ में हुआ। इस समय इस परिवार में सेठ सूरजमलजी नवलमलजी के दत्तक पुत्र हीरालालजी, बहादुरमलजी के दत्तक पुत्र किशनलालजी तथा सूरजमलजी के ट पुत्र लालचन्दजी मोजूद हैं। सेठ सूरजमलजी का जन्म सवत् १९३४ में हुआ। आप ही इस समय परिवार में बड़े हैं। तथा दान धर्म के कार्मो की ओर आपकी अच्छी रुचि है। आपकी दुकान यादगिरि मातवर दुकानों में है। आपके यहाँ "बहादुरमल सूरजमल" के नाम से आढत सराफी लेन-देन का काम होता है। हीरालालजी के पुत्र पूरनमलजी तथा मदनलालजी हैं।

परिशिष्ट *

सेठ हरचन्दरायजी सुराणा का खानदान, चुरू

इस खानदान का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड) का था। वहाँ से इस परिवार पूर्व पुरुष सेठ सुखमलजी चूरू आकर बस गये। तभी से आपके परिवार के सज्जन, चूरू में ही नि कर रहे हैं। आपके बालचन्दजी, चौथमलजी तथा हरचन्दरायजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें खानदान सेठ हरचन्दरायजी से सम्बन्ध रखता है।

सेठ हरचन्दरायजी—आप बड़े सीधे सादे, मिलनसार एवं धार्मिक वृत्ति के महानुभाव थे। अ देश में ही रह कर साधारण व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास होगया है। आपके उगरचन्द रतीरामजी मुन्नालालजी एवं शोभाचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

* जिन खानदानों का परिचय भूल से छपना रह गया, या जिनका परिचय पुस्तक छपने के पश्चात हुआ, उन परिवारों का परिचय "परिशिष्ट" में दिया जा रहा है।

— १६९० में आपने लिया। तथा उसकी नई बिल्डिंग व प्रतिष्ठा कार्य्य आपही के समय में
—, इसी तरह आपकी प्रेरणा से सिवनी, बालाघाट, कटंगी तथा सदर में जैन मन्दिरों का
— आप बड़े प्रभावशाली पुरुष थे। आपके छोटे भाई आपके साथ व्यापार में सहयोग देते
— १९६९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नेमीचन्दजी, रिखवदासजी तथा मोतीलालजी
—। इनमें नेमीचन्दजी, मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। मिलापचन्दजी के राजमलजी
— हीरालालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी स्वर्गवासी होगये।

इस समय इस परिवार में सेठ राजमलजी, रिखवदासजी, मोतीलालजी, हीरालालजी तथा
— हैं। सेठ मोतीलालजी शिक्षित तथा वजनदार सज्जन हैं। सन् १९२१ से आप
— हैं। जबलपुर की हरएक सार्वजनिक संस्थाओं में आप भाग लेते रहते हैं। सेठ
— हुकमचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं और रतनचन्दजी सेठ नेमीचन्दजी के नाम
— हैं, तथा हंसरचन्दजी व प्रेमचन्दजी छोटे हैं। राजमलजी के पुत्र मगनमलजी एवं
— हीरालालचन्दजी हैं। यह परिवार जबलपुर में प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है।

गाँधी

गाँधी महता डाक्टर शिवनाथचंदजी, जोधपुर

— ख्यातों से पता चलता है कि जालौर के चौहान वंशीय राजा लाखणसी से भण्डारी
— वंशों की उत्पत्ति हुई। लाखणसीजी के ११ पीढ़ी बाद पोपसीजी हुए जो अपने समय
— जानकार थे। कहा जाता है कि उन्होंने संवत् १३२८ में जालोर के रावल सांवन्तसिंह
— व्याधि से आराम किया इससे उक्त रावलजी ने इन्हे "गान्धी" की उपाधि से विभू-
— पोपसीजी के १३ पुश्त बाद रामजी हुए जो बड़े वीर और दानी थे। रामजी की पाचवी
— हुए जो बड़े वीर और नीतिज्ञ थे। आप पोकरण के एक युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ते
— उनके स्मारक में पोकरण ठाकुर साहब ने वहाँ देवालय बनवाया है, जहाँ लोग "जात"
—। आपके पौत्रों में आलमचन्दजी बड़े वीर हुए। आप पोकरण ठाकुर सवाईसिंहजी के
— मुकाम पर अमीरखाँ से युद्ध करते हुए धोके से मारे गये। आपके स्मारक में
— बना हुई है। शोभाचन्दजी के कनिष्ट भ्राता रूपचन्दजी मराठों के साथ युद्ध करते
— हुए। आपके पश्चात् इसी वंश के रतनचन्दजी और अभयचन्दजी पोकरण ठाकुर
— करते हुए काम आये। इस वंश में कई सतियाँ हुई।

— शिवनाथचन्दजी इसी प्रतिष्ठित वंश में हैं। संवत् १९४८ में आपका जन्म हुआ।
— में आपके पिता देवराजजी का देहान्त होगया। आपने इन्दौर में स्टेट की ओर से
— हैं। जोधपुर राज्य के देशी आदमियों में आप सबसे पहले डॉक्टर हुए। इस
— सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। आप जोधपुर की ओसवाल यंगमेन्स सोसायटी के कई वर्ष
— एक लोकप्रिय और निःस्वार्थ डाक्टर हैं, और सार्वजनिक कार्य्यों में उत्साह से
— पुत्र मेहताबचन्दजी बी० कॉम बड़े उत्साही और देशभक्त युवक हैं।

राजवैद्य हीराचंद रतनचन्द रायगाँधी का खानदान, जोधपुर

रायगाँधी देपालजी के पूर्वज गुजरात में गाँधी (पसारी) का व्यापार तथा वैद्यकी का करते थे। इसलिये ये "रायगाँधी" कहलाये। गुजरात से देपालजी नागोर आये। इनके पौत्र राजजी ख्याति प्राप्त वैद्य थे। संवत् १५२५ में इन्होंने देहली के तत्कालीन लोदी बादशाह को अपने से आराम किया। कहा जाता है कि इनकी प्रार्थना से बादशाह ने शत्रुंजय के यात्रियों पर लगा कर माफ किया। इनकी १० वीं पीढ़ी में केसरीचन्दजी प्रतिष्ठित वैद्य हुए। इनको संवत् १८० महाराजा बखतसिंहजी नागोर से जोधपुर लाये, और जागीर के गाँव देकर बसाया, तब से यह खा जोधपुर में "राज्यवैद्य" के नाम से मशहूर हुआ। केशरीसिंहजी के बाद क्रमश बखतमलजी, वर्धम सरूपचन्दजी, पन्नालालजी, तथा मालचन्दजी हुए, उपरोक्त व्यक्तियों को समय २ पर १० गाँव जागी मिले थे। संवत् १८९२ में मालचन्दजी के गुजरने के समय उनके पुत्र इन्द्रचन्दजी किशनचन्दजी तथा मु चन्दजी नाबालिग थे, अत बागी सरदारों ने इनके गाँव दबालिये। इनके सयाने होनेपर दरबार ने की एवज में तनख्वाह करदी। समय २ पर इस खानदान को राज्य की ओर से सिरोपाव भी मिलते गाँधी बखतमलजी के पौत्र गदमलजी तथा मालचन्दजी के छोटे भ्राता प्रभूदानजी प्रसिद्ध वैद्य थे। कि चन्दजी तथा मुकुन्दचन्दजी को वैद्यक का अच्छा अनुभव था। आप क्रमश संवत् १९५१ तथा १ में स्वर्गवासी हुए। मुकुन्दचन्दजी के माणकचन्दजी, हीराचन्दजी तथा रतनचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए,

चाँदमलजी हैं। रायगाँधी चाँदमलजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ इनको स्टेट की ओर से तनख्वाह मिलती है, आपको वैद्यक का अच्छा ज्ञान है। सनातन धर्म सभा ने आपको "वैद्य भूष पदवी" दी है। आपके पुत्र मानचन्दजी कलकत्ता में वैद्यक तथा डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

रायगाँधी रतनचंदजी का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपको भी स्टेट से जाती तनख्वाह मि है आपके पुत्र वैद्य पदमचन्दजी हैं। डाक्टर परमचंदजी वैद्य का जन्म संवत् १९६२ में हुआ, सन् १९२ आपने इन्दौर से डाक्टरी परीक्षा पास की, इस परीक्षा में आप प्रथम गेट में सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुए। आप इसी साल जोधपुर स्टेट में मेडिकल ऑफीसर मुकर्रर हुए इस समय आप बाडमेर डिस्पेंसरी में असिस्टेंट सर्जन के पद पर हैं। सन् १९३० में आपने जोधपुर दरबार के साथ देहली में उनके पर फिजिशियन की हैसियत से कार्य्य किया। आप डाक्टरी में अच्छा अनुभव रखते हैं। डिपार्टमेंट से व उ से आपको कई अच्छे सार्टीफिकेट मिले हैं। नागोर की जनता ने आपको मानपत्र तथा केस्केट भेंट किया

सेठ ताराचन्द वख्तावरमल गांधी, हिंगनघाट

इस परिवार के पूर्वज गांधी ताराचन्दजी नागोर से पैदल मार्ग द्वारा लगभग १०० साल हिंगनघाट आये। तथा यहाँ लेनदेन का व्यापार शुरू किया। आपके वख्तावरमलजी, धनराजजी हजारीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। गांधी वख्तावरमलजी समझदार, तथा प्रतिष्ठित पुरुष थे। हिंगनघाट जनता में आप प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपने व्यापार की वृद्धि कर इस दुकान की शाखाएँ ना कामठी, तुमसर, वर्द्धा, भंडारा तथा चावा आदि स्थानों में खोली। आपका संवत् १९४४ में स्वर्ग

स्व० सेठ गुन्नालालजी सुराना, चूरू.

सेठ तिलोकचंदजी सुराना, चूरू.

कु० हनुतमलजी सुराना, चूरू

कुँ० हिम्मतमलजी सुराना, चूरू.

जिस समय अंगरेज लोग राजस्थान मे राजपूत राजाओं के साथ मैत्री स्थापित करने के प्रयत्न मे
लगे हुये थे उस समय सेठ बहादुरमलजी और जोरावरमलजी बापना का बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर,
उदयपुर, इन्दौर इत्यादि रियासतों पर अच्छा प्रभाव था। इसलिए ब्रिटिश सरकार के साथ इन रजवाड़ों का
मैत्री सम्बन्ध स्थापित करवाने मे आपने बहुत मदद दी। खास कर इन्दौर राज्य के कई महत्वपूर्ण कार्यों
मे जोरावरमलजी का बहुत हाथ रहा। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट और रियासतों के बीच जो अहदनामे हुए उनमे
कई मुश्किल बातों को हल करने मे आपने बड़ी सहायताएँ की।

सन् १८१८ ई० में कर्नल टॉड राजपूताने के पोलिटिकल एजण्ट होकर उदयपुर गये। उस समय
मेवाड़ की आर्थिक दशा बहुत खराब हो रही थी ऐसी विकट स्थिति मे कर्नल टॉड ने महाराणा भीमसिहजी
को सलाह दी कि सेठ जोरावरमलजी ने इन्दौर की हालत सुधारने मे रियासत को बहुत मदद की है इसलिए
यहाँ पर भी उनको बुलाया जावे। इस पर महाराणा ने सेठ जोरावरमलजी को अपने यहाँ आमन्त्रित किया
और अत्यन्त सम्मान के साथ कहा कि आप अपनी कोठी को यहाँ स्थापित करे। महाराणा की आज्ञा
स्वीकार कर सेठ जोरावरमलजीने उदयपुर मे अपनी कोठी स्थापित की, नये गाँव बसाये, किसानों को
सहायताएँ दीं और चोर लुटेरों को दण्ड दिलवाकर राज्य में शान्ति स्थापित की। इनकी इन बहुमूल्य सेवाओं
से प्रसन्न होकर महाराणा ने उन्हें पालकी और छड़ी का सम्मान और "सेठ" की उपाधि बख्शी तथा
कपासन परगने का पारसौली ग्राम भी जागीर में दिया। पोलिटिकल एजेण्ट ने भी आपको प्रबन्ध कुशल
देखकर अंग्रेजी राज्य के खजाने का प्रबन्ध भी आपके सिपुर्द कर दिया।

महाराणा स्वरूपसिहजी के समय में रियासत पर बीस लाख रुपये का कर्ज हो गया था जिसमें
अधिकांश सेठ जोरावरमलजी का था, महाराणा ने आपके कर्ज का निपटारा करना चाहा। उनकी यह
इच्छा देख सन् १८४६ की २८ मार्च को सेठ जोरावरमलजी ने महाराणा को अपनी हवेली पर निमन्त्रित
किया और जैसा महाराणा साहब ने चाहा उसी प्रकार कर्ज का फैसला कर लिया। इससे प्रसन्न होकर
महाराणा साहब ने आपको कुण्डाल गाँव दिया तथा आपके पुत्र चान्दणमलजी को पालकी और पौत्र इन्द्रमल
को भूषण और सिरोपाव दिये। इन्हीं के अनुकरण पर दूसरे लेनदारों ने भी महाराणा की इच्छानुसार
अपने कर्ज का फैसला कर लिया और इस प्रकार रियासत का भारी कर्ज सहज ही अदा हो गया इस बुद्धि
मत्ता पूर्ण कार्य मे आपकी बड़ी प्रशंसा हुई।

इस प्रकार अपनी बुद्धिमानी, राजनीतिज्ञता और व्यापार दूरदर्शिता से सारे राजस्थान मे लोक
प्रियता और नेकनामी प्राप्त कर सन् १८५३ की २६ फरवरी को आप स्वर्गवासी हुए।*

---

* इन्दौर के वर्तमान प्राइम मिनिस्टर रा० बा० सिरेमलजी बापना सी० आई० ई० [illegible] है।

मेहता गोकुलचन्दजी और कोठारी केशरीसिंहजी

महाराणा सरूपसिहजी ने मेहता शेरसिंहजी की जगह देवीचन्दजी के पौत्र मेहता गोकुलच
को अपना प्रधान बनाया। फिर उनके स्थान पर संवत् १९१६ मे कोठारी केशरीसिंहजी को प्रधान बना
वि० सं० १९२० मे मेवाड के पोलिटिकल एजट ने मेवाड रीजेन्सी कौंसिल को तोड कर उसके स्थान
"अहलियान श्री दरबार राज्य मेवाड" नाम की कचहरी स्थापित की और उसमें मेहता गोकुलचन्दजी
पंडित लक्ष्मणराव को नियुक्त किया। वि० सं० १९२६ मे कोठारी केशरीसिंहजी ने प्रधान पद से इ
दे दिया तो उनके स्थान पर महाराणा ने मेहता गोकुलचन्दजी और पडित लक्ष्मणराव को नियुक्त कि
इसी समय बड़ी रूपाहेली और लाविया वालों के बीच कुछ जमीन के बाबत झगडा होकर लडाई हुई, कि
लांविया वालों के भाई आदि मारे गये। उसके बदले मे रूपाहेली का 'तसवारिया' गाँव लाविया
को दिलाना निश्चय हुआ, परन्तु रूपाहेली वालों ने महाराणा शम्भुसिहजी की बात न मानी, इ
गोकुलचन्दजी की अध्यक्षता में तसवारिया पर सेना भेजी गई। वि० स० १९३१ मे महाराणा शम्भुसि
ने मेहता गोकुलचन्दजी और सही वाले अर्जुनसिंहजी को महकमा खास के काम पर नियुक्त कि
मेहता गोकुलचन्दजी इस काम को कुछ समय तक कर माँडलगढ़ चले गये और वहीं पर
स्वर्गवासी हुए।

कोठारी केशरीसिंहजी सब से प्रथम संवत् १९०२ मे रावली दुकान (State Bank) के हा
नियुक्त किये गये। तदनतर सवत् १८७८ में आप महकमा दाण (चुगी) के हाकिम हुए थे। महारा
इष्टदेव एकलिंगजी का मन्दिर-सम्बन्धी प्रबन्ध भी आपके सुपुर्द हुआ। आप महाराणाजी के सलाहकार
रहे। आपकी इन सेवाओं से प्रसन्न होकर महाराणाजी ने आपको नेतावल नाम का गाँव जाग
इनायत किया तथा स्वय महाराणाजी ने आपकी हवेली पर पधार कर आपका सत्कार किया। तद
आप महाराणा के द्वारा मेवाड के प्रधान बनाए गये और बोराव तथा पैरों में पहिनने का सोने के लग
आपको बक्षे गये। जिस समय महाराणा शम्भुसिहजी की बाल्यावस्था मे रीजेंसी कौंसिल स्थापित हुई
उस समय आप भी उस कौंसिल के एक सदस्य थे तथा रेव्हेन्यू के काम का निरीक्षण करते थे।

कोठारी केशरीसिहजी बडे स्पष्टवक्ता एवं स्वामिभक्त महानुभाव थे। आपने रीजेंसी कौं
के अन्दर रह कर मेवाड़ के हित के लिये कई कार्य किये। आपने कई समय कौंसिल के कार्यकर्ताओं
जागीरें-यह कह कर कि जागीरें देने का अधिकार महाराणाजी को है-देने से रोक दिया। इसी प्रकार
कई कार्य्यों मे मेवाड़ के सरदारों के घोर विरोध का सामना करते हुए आपने मेवाड़ का बहुत बड़ा

... उगरचन्दजी का परिवार—सेठ उगरचन्दजी सीधे सादे और धार्मिक प्रकृति के पुरुष थे। ... व्यापार के निमित्त कलकत्ता आये थे। मगर प्राय आप देश में ही रहा करते थे। आपका ... गया है। आपने रतीरामजी के पुत्र धनराजजी को अपने नाम पर दत्तक लिया। सेठ धन- ... साधारण स्थिति में व्यापार करते रहे। आपका भी स्वर्गवास होगया है। आपके स्वर्गवास ... आपकी धर्मपत्नी सिरेकुँवरजी तथा आपके पुत्र श्री सोहनलालजी ने जैन धर्म के तेरापन्थी ... दीक्षा ग्रहण करली। श्रीमती सिरेकुँवरजी का स्वर्गवास होगया है। श्री सोहनलालजी इस ... संस्कृत के विद्वान तथा शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रखते हैं।

... रतीरामजी का परिवार—आप भी देश से कलकत्ता व्यापार निमित्त आये थे। आपने सर्व ... का काम प्रारंभ किया था। कुछ समय पश्चात् आप अपने भाइयों से अलग होकर अपना ... व्यापार करने लगे थे। तभी से आपके परिवार के सज्जन अलग व्यवसाय करते हैं। आपके ..., धनराजजी, खूबचन्दजी तथा हजारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। पहले पहल आपने मेसर्स ... हजारीमल के नाम से धोती जोड़ों का काम शुरू किया। इस फर्म का व्यवसाय सं० १९६० ... नाम में चलता रहा। तदनन्तर आप सब लोग अलग २ व्यवसाय करने लग गये। इस समय ... देश में ही निवास करते हैं। आपके चम्पालालजी, प्रेमचन्दजी, नेमचन्दजी तथा भँवर- ... नामक चार पुत्र हैं। सेठ धनराजजी सेठ उगरचन्दजी के नाम पर दत्तक चले गये। सेठ खूब- ... स्वर्गवास होगया है। आपके सुमेरमलजी नामक एक पुत्र हैं। आप इस समय अपने ... हजारीमलजी के साथ काम करते हैं। सेठ हजारीमलजी बड़े योग्य, मिलनसार तथा धार्मिक ... पुरुष हैं। आप आज कल मेसर्स हजारीमल माणकचन्द के नाम से सूता पट्टी में धोती जोड़ों ... व्यापार करते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी लुक्सलेन में एक छातों के व्यवसाय की फर्म तथा छातों ... भी है। आपके पुत्र बा० माणकचन्दजी इस समय पढ़ रहे हैं।

... मन्नालालजी का परिवार—इस परिवार में सेठ मुन्नालालजी बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। ... उन्नति का सारा श्रेय आप को ही है। आप सबसे पहले संवत् १९२७ में देश से व्यापार ... कलकत्ता आये और दलाली का काम प्रारंभ किया। आप बड़े ही व्यापार कुशल, होनहार तथा ... थे। आपने अपनी व्यवहार कुशलता, व्यापार चातुरी तथा होशियारी से दलाली में अच्छी ... की। आप बड़े परिश्रमी तथा अग्रसोची सज्जन थे। दलाली में धनोपार्जन कर आपने ... उत्थान के हेतु अपने छोटे भ्राता शोभाचन्दजी के साझे में 'मन्नालाल शोभाचन्द सुराणा' के ... १९४० में स्वतन्त्र फर्म स्थापित की और इस पर विलायत से धोती जोड़ों का कारवार चालू ... इस व्यवसाय में आपको बहुत काफी सफलता प्राप्त हुई। आपके व्यवसाय को ज्यों २ ... गये त्यों त्यों उसे बढ़ाते गये और उसमें लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित की। आप ... विलायत से धोती जोड़ों का डायरेक्ट इम्पोर्ट होता था। आप बड़े बुद्धिमान तथा अध्यवसायी ... आप वृद्धावस्था में चुरू में ही रहते रहे। आपको साधु सेवा की भी बड़ी लगन थी। ... जीवन साधु सेवा में ही व्यतीत हुआ। अभी आपका सं० १९९१ में स्वर्गवास हुआ है। आप

इनमें से प्रथम दो भाइयों ने संवत् १८०० के करीब मिर्जापुर जा कर अपनी व्यापार कुशलता
रों से रुई तथा गल्ले के व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त की। आप लोगों का स्वर्गवास हो
ट कस्तूरमलजी के नथमलजी नामक एक पुत्र हुए जिनका युवावस्था में ही देहावसान हो गया।
पर अजमेर से सेठ लाभचन्दजी गेलडा दत्तक लिये गये।

सेठ लाभचन्दजी—आप इस परिवार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो गये है। आप बड़े बुद्धिमान
तथा प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपने करीब ८० वर्ष पूर्व कलकत्ते में जवाहरात का व्यापार किया
ाचन्दजी नवन के साझे में करीब ३५ वर्षों तक "लाभचन्द मोतीचंद" के नाम से जवाहरात का
व्यवसाय किया। यह फर्म बड़ी प्रतिष्ठित और कोर्ट जुएलर रही तथा वाइसराय आदि कई उच्च
से अपाइन्टमेंट भी मिले थे। सन् १९२६ में उक्त फर्म के दोनों पार्टनर अलग २ हो गये।
रामचन्दजी के पुत्र लाभचन्द सेठ के नाम से स्वतंत्र जवाहरात का व्यापार कर रहे हैं।

स फर्म के वर्तमान संचालक लाभचन्दजी के पुत्र सौभागचंदजी, श्रीचन्दजी, अभयचन्दजी, लखमी-
चन्दजी, विनयचन्दजी एवं कीरतचन्दजी हैं। इनमें प्रथम चार व्यवसाय का संचालन करते
। मिलनसार तथा शिक्षित सज्जन हैं। शेष तीन भाई पढ़ते हैं। आप लोगों का आफीस
ए लिन्डसे स्ट्रीट में है जहाँ पर जवाहरात का व्यवसाय होता है। आप लोगों की कलकत्ते में
या सम्पत्ति भी है। आपके पिताजी द्वारा स्थापित किया हुआ। श्री 'लाभचन्द मोतीचन्द' जैन
कूल कलकत्ते में सुचारुरूप से चल रहा है। इसके लिये लाभचन्द मोतीचन्द नामक फर्म
का एक ट्रस्ट भी कायम किया गया था।

बच्छावत मेहता माणकचन्द मिलापचन्द का खानदान, जयपुर

स खानदान के पूर्वज मेहता भैरोंदासजी सं० १८२६ में जोधपुर से जयपुर आये। इनके
सालिगरामजी तथा शेरकरणजी नामक तीन पुत्र हुए। इनको "मौजे मानपुर टीला"
ल) नामक गाव जागीर में मिला जो इस समय तक सवाईरामजी की संतानों के पास मौजूद
जी के पुत्र उदयचन्दजी तथा साहिबचन्दजी हुए। उदयचन्दजी के विजयचन्दजी, माणक-
मिलापचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, साहिबचन्दजी के नाम पर
मेहता उदयचन्दजी राज का काम तथा साहिबचन्दजी गीजगढ ठिकाने के कामदार और
ना व चम्पावतजी के कामदार रहे। इसी प्रकार माणकचंदजी और मिलापचदजी शिवगढ़
ार रहे। मेहता मिलापचंदजी के पुत्र रामचन्द्रजी तथा माणकचंदजी के लक्ष्मीचदजी,
चदजी, गोपीचदजी तथा भागचंदजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें अखेचन्दजी विजय-
म पर तथा गोपीचन्दजी अन्यत्र दत्तक गये। मेहता लक्ष्मीचन्दजी तथा अखेचंदजी ने
का काम किया। इन दोनों का संवत् १९७८ में स्वर्गवास हुआ।

मान में इस कुटुम्ब में मेहता नेमीचदजी, अखेचदजी के पुत्र मंगलचदजी बी० ए०, मिलाप-
रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मीचन्दजी के पुत्र जोगीचंदजी, केवलचन्दजी, उमरावचन्दजी, टगमचंद
जी विद्यमान हैं। मेहता मंगलचन्दजी जयपुर में २७।२८ सालों तक सर्वे सुपरिन्टेन्डेन्ट

छा कलकत्ता व चुरू की ओसवाल समाज में अच्छा सम्मान था। आप चुरू पिंजरापोल के सभापति रह चुके थे। आपके विचार बडे सुधरे हुए थे। आपने अपनी मृत्यु के समय ५००००) का एक दान निकाला है जिसका एक ट्रस्ट भी कायम कर गये हैं। इस दान की रकम का उपयोग विधवाओं सहायता पहुँचाने तथा जात्योन्नति के कार्य्यों मे किया जायगा। इस दान के अतिरिक्त आपने चुरू कलकत्ता की कई संस्थाओं को बहुत द्रव्य दान दिया है। आपके कोई पुत्र न होने से सेठ शोभाच के पौत्र (सेठ तिलोकचन्दजी के पुत्र) बाबू हनुतमलजी आपके नाम पर दत्तक आये हैं। आप मिलनसार एवं उत्साही नवयुवक हैं। आप का इस समय मेसर्स "हरचन्दराय मुन्नालाल" और "मुन्न हनुतमल" के नाम से बैङ्किग तथा किराया का स्वतन्त्र काम होता है। आप ओसवाल तेरापन्थी वि के सेक्रेटरी रह चुके हैं। वर्त्तमान में आप "ओसवाल नवयुवक समित" की ओर से व्यायामशाल खास कार्य्यकर्त्ता हैं।

सेठ शोभाचन्दजी का परिवार—सेठ शोभाचन्दजी भी मिलनसार, समझदार तथा व कुशल सज्जन थे। आप अपने भाई के साथ व्यापारिक कामों से बडी कुशलता और तत्परता से सहयोग प्रदान करते रहे। आपका धार्मिक कार्य्यों की ओर भी अच्छा लक्ष्य था। मगर कम में ही आपका स्वर्गवास होगया। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आपकी धर्मपत्नी श्रीमती नौनाज तेरापन्थी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण करली। आप इस समय विद्यमान हैं। आपके पुत्र तिलोकचन्दज

सेठ तिलोकचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप प्रारंभ से ही व्यापार बुद्धिमान तथा समझदार सज्जन हैं। आप इस समय कलकत्ता व थली प्रांत की ओसवाल समाज प्रमुख कार्य्य कर्त्ताओं में से एक हैं। आप मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्स, मारवाडी एसोसिएशन, श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी विद्यालय, विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय व अस्प मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, मारवाडी ट्रेड एसोसिएशन, चुरू पींजरापोल, ओसवाल सभा, ओस नवयुवक समिति आदि कई संस्थाओं के सेक्रेटरी, उपसभापति व सभापति आदि पदों पर कई काम कर चुके हैं। प्राय. ओसवाल समाज की सभी सार्वजनिक सभाओं में आप पूर्ण रूप से सहायता तथा उसमें प्रमुख भाग लेते हैं। बिहार रिलीफ फण्ड में आपने आर्थिक सहायता पहुँचा कर बहुत ओसवाल नवयुवकों को सेवा कार्य्य के लिये बिहार भेजने में बहुत कोशिश की थी। इसी प्रकार की सार्वजनिक सेवाओं में आप भाग लेते रहते हैं। आपके हनुतमलजी, हिम्मतमलजी, बच्छराजजी तथा राजजी नामक चार पुत्र है। इनमें बाबू हनुतमलजी, सेठ मुन्नालालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। सब भाई मिलनसार सज्जन है। बाबू हिम्मतमलजी एवं बच्छराजजी व्यापार में भाग लेते हैं हंसराजजी पढ़ते हैं। आपका इस समय कलकत्ता में 'हरचन्दराय शोभाचन्द' 'सुराना ब्रदर्स,' 'तिलोक हिम्मतमल' के नामों से जमींदारी, बैङ्किग, जूट बेलिंग व शिपिंग का काम होता है तथा जैपुरहाट (बंगा में आपका एक राइस मिल चल रहा है। यह फर्म कलकत्ते की ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित समझी है। इस फर्म की यहां पर बड़ी २ इमारतें बनी हुई है।

रहे। यहाँ से पेंशन होने के बाद आप वर्तमान में सीकर स्टेट में सेटलमेंट ऑफीसर हैं। आपके गोपालसिंह जी, हरकचदजी तथा सुखचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। इनमें गोपालसिंहजी तो उदयपुर दत्तक गये हैं। शेष दोनों भ्राता घर का कारबार सम्हालते हैं। मेहता उमरावचन्दजी शिवगढ़ ठिकाने के कामदार हैं।

इसी प्रकार शालिगरामजी के प्रपौत्र रूपचन्दजी के पुत्र सरूपचंदजी बालक हैं। इनके कुटुम्ब में भी गीजगढ़ ठिकाने का काम रहा। मेहता शेरकरणजी के पुत्र चौथमलजी जनानी ड्योढी के तहसीलदार रहे। इनके पुत्र गोपीचन्दजी विद्यमान हैं। मेहता भागचन्दजी के पुत्र कानचंदजी सेटलमेंट डिपार्टमेंट में तथा नेमीचंदजी के पुत्र प्रभूचन्दजी इम्पीरियल बैंक में खजाची है। मेहता जोगीचन्दजी के पौत्र (ज्ञानचन्दजी के पुत्र) गुमानचन्दजी एव केवलचन्दजी के पौत्र (उत्तमचन्दजी के पुत्र) अमरचन्दजी हैं।

श्री लच्मीलालजी बोथरा, उटकमंड

लक्ष्मीलालजी बोथरा के दादा शिवलालजी तथा पिता केवलचंदजी खिचंद (मारवाड) में ही निवास करते रहे। केवलचन्दजी सवत् १९५५ में स्वर्गवासी हुए। लक्ष्मीलालजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप संवत् १९६५ में नीलगिरी आये, तथा मिश्रीमलजी वेद फलोदी वालों की भागीदारी में व्यापार आरम्भ किया। इस समय आप ऊटकमंड में "जेठमल मूलचद एण्ड कम्पनी" नामक फर्म पर बैंकिंग फेंसी गुड्स एण्ड जनरल ड्रापर्स बिजिनेस करते हैं। एवम् यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्री लक्ष्मीलालजी सज्जन व्यक्ति है। आपके हाथों से व्यापार को तरक्की मिली है। आपके पुत्र भोमराजजी कामकाज में भाग लेते हैं, तथा रामलालजी और भँवरलालजी पढ़ते हैं।

कोठारी जवाहरचन्दजी दूगड़ का खानदान, नामली

इस परिवार के पूर्वज अमरसिंहजी दूगड ने नागोर से जालोर में अपना निवास बनाया। इनके पश्चात् महेशजी, जेवतजी, भेरूसिंहजी और पचाननजी हुए। पचाननजी ने अनेकों राज्यकीय कार्य्य किये। कहा जाता है कि इनको "रावराजा बहादुर की पदवी" तथा १२ गाँव जागीर में मिले थे और संवत् १७६५ में इन्हें सोने की सांट, हाथी, कडा मोती और पालकी सिरोपाव इनायत हुआ। सम्वत् १७७१ में बिठोर नामक गाँव की एक लडाई में आप काम आये। आपके पुत्र बल्लूजी, सोनगरा राजपूत नायक के साथ मालवा की ओर गये, और उनके साथ नामली में आबाद हुए। तथा वहाँ कोठार और कामदारी का काम करने के कारण "कोठारी" कहलाये। बल्लूजी के पश्चात् क्रमश जीवराजजी और सूर्यमलजी हुए। सूर्य्यमल जी के स्वर्गवासी होने के समय उनके पुत्र गुलाबचन्दजी, जवाहरचन्दजी तथा हीराचन्दजी छोटे थे। कोठारी हीराचन्दजी ऊँचे दर्जे के कवि थे, कवित्व शक्ति के कारण कई दरबारों में आपको उच्च स्थान मिला था।

कोठारी जवाहरचन्दजी—आपका जन्म सम्वत् १८८१ में हुआ। आप बाल्य काल से ही होनहार व्यक्ति थे। नामली ठाकुर के छोटे भ्राता बख्तावरसिंहजी के साथ आप रतलाम दरबार बलवन्तसिंहजी के पास आया जाया करते थे। जब महाराजा बलवन्तसिंहजी के पुत्र भेरूसिंहजी राजगद्दी पर बैठे, तब उन्होंने कोठारी जवाहरचन्दजी को दीवान का सम्मान दिया। तथा इनको कुछ जागीर भी इनायत की। सम्वत् १९२१ में महाराजा के स्वर्गवासी हो जाने पर आप वापस नामली चले गये। सम्वत् १९७२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर कोठारी हीराचन्दजी के बडे पुत्र खुमानसिंहजी दत्तक आये। आपके

...नी तथा वेरीसालसिंहजी विद्यमान हैं। आप दोनों सज्जनों ने जोधपुर में ही शिक्षा पाई। इस ...री दुल्हसिंहजी जोधपुर सायर में कस्टम आफीसर हैं। और कोठारी वेरीसालसिंहजी जोधपुर ...स्टेट आडीटर हैं। आप जोधपुर के शिक्षित समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं। कोठारी ...के पुत्र कुँवर दौलतसिंहजी, देवीसिंहजी, सज्जनसिंहजी तथा रघुवीरसिंहजी हैं। इसी प्रकार ...सिंहजी के पुत्र कुवर कुशलसिंहजी, कोमलसिंहजी, केशवसिंहजी तथा कंचनसिंहजी हैं। ...के पुत्र भंवर स्वतन्त्र कुमार हैं।

...सी तरह इस परिवार में गुलाबचन्दजी कोठारी के पुत्र राजसिंहजी और पौत्र उम्मेदसिंहजी ...सिंहजी हुए। मनोहरसिंहजी के पुत्र धर्मसिंहजी हैं। कोठारी हीराचन्दजी के खुमानसिंहजी, ...जी, सादूलसिंहजी और दलेलसिंहजी हुए। तथा दलेलसिंहजी के तजेराजसिंहजी, नगेन्द्रसिंहजी, ...जी और सूर्यवीरसिंहजी नामक पुत्र हुए।

सिंघी (बावेल) खानदान, शाहपुरा (मेवाड़)

इस परिवार के पूर्वज सेठ ...णजी बावेल"पुर" में निवास करते थे। संवत् १५६५ में आपने ...ला, अत इनका परिवार सिंघी कहलाया। आपकी सोलहवीं पुश्त में देवकरणजी हुए। आप ...हपुरा आये। आपके साथ आपकी धर्मपत्नी लखमादेवीजी संवत् १७६९ में सती हुईं। इनकी ...में नानगरामजी हुए। आप बडे वीर और पराक्रमी पुरुष हुए। कहाजाता है कि संवत् १८२५ ...की ओर से उज्जैन में सिंधिया फौज से युद्ध करते हुए आप काम आये थे। आपको शाहपुरा ...जीम दी थी। आपके पुत्र चतुरभुजजी, चन्द्रभानजी, इन्द्रभानजी और वर्द्धमानजी हुए।

...मदा चतुरभुजजी का परिवार—आप भी अपने पिताजी की तरह प्रतिष्ठित हुए। आपको ...राणाजी ने शाहपुरा दरबार से १५०० बीघा जमीन जागीर में दिलाई। आपने अपनी ...ाट" नामक गाँव बसाया, जो आज "सिंघीजी के खेडे" के नाम से बोला जाता है। आप ...मदार थे। उस समय आपको मोतियों के आखे चढ़ाये थे। आपके गिरधारीलालजी, समर-...जमलजी, अरोमलजी, गाढमलजी और जीतमलजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमे सिंघी समरथ-...राथ व्यक्ति थे। स्थिति की कमजोरी के कारण आपने पुश्तैनी "ताजीम" विनय पूर्वक वापस ...र पुत्र ...तारसिंहजी के सवाईसिंहजी और केसरीसिंहजी नामक २ पुत्र थे। सवाईसिंहजी ने ...हल्दारी का काम बडी होशियारी से किया। संवत् १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। ...के पुत्र इन्द्रसिंहजी, सोभागसिंहजी और सुजानसिंहजी हुए। इनमें इन्द्रसिंहजी, सवाईसिंहजी ...र गये। आप स्टेट ट्रेझर और खासा खजाना के आफीसर थे। आपके नाम पर आपके ...गसिंहजी) के पुत्र मदनसिंहजी दत्तक आये। इस समय आप शाहपुरा में सिविल जज हैं। ...न सुजानसिंहजी का जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आप राजाधिराज उम्मेदसिंहजी के कुँवर ...ट ...आफीसर थे। इस समय आप स्टेट के रेवेन्यूमेम्बर हैं। आपके पास सिंघीजी का ...न के हैं। इसके अलावा दरबार ने आपको १ हजार की रेख की जागीर इनायत की है।

कुं० बच्छराजजी सुराना, चूरू

स्व० सेठ भैरोंदानजी सुराना, पड़िहारा

कुं० हंसराजजी सुराना, चूरू

कुं० सुमेरमलजी बोथरा (रामलाल नथमल) सरदार

(परिचय परिशिष्ट में)

आपके पुत्र चन्दनसिहजो फौजदारी सरिश्तेदार हैं, एवं फतेसिहजी ने इजनियरिंग परीक्षा पास की है। आप दोनों सज्जन व्यक्ति हैं। चन्दनसिंहजी के पुत्र प्रतापसिहजी पढ़ते हैं।

सिंघी इन्द्रभानुजी का परिवार—आपके बदनमलजी तथा बाघमलजी नामक २ पुत्र हुए। सिंघी बाघमलजी इस परिवार मे बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपका जन्म सम्वत् १८४३ में हुआ था। आपने महाराजा जगतसिंहजी के बाल्यकाल मे सम्वत् १८९७ से १९०४ तक कामदारी का काम बडी होशियारी और ईमानदारी से किया। आपके लिये कर्नल डिक्सन ने लिखा था, जिसका आशय यह है कि सब रैयत राज के कामदारे से खुश और राजी है। इलाके का बन्दोबस्त दुरुस्त और खालसे के गाँव आबाद है।..... ता० १७ फरवरी सन् १८४६ ई०। आगरा के लेफ्टिनेंट गवर्नर ने आपके लिये लिखा कि

"सिंघी बागमल की कामदारी से राज्य बहुत आबाद हुआ" ता० १८ अगस्त सन् १८४५ ई०। उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंहजी ने सिंघी बाघमलजी को एक रुक्के में लिखा था कि राजाधिराज होश सभाले, जब तक इसी श्याम धर्मी से बन्दगी करना"... . संवत् १९०२ मगसर सुदी १५। आपने परिश्रम करके शाहपुरा स्टेट की खिराज १० हजार करवाई। आपको उदयपुर महाराणा तथा शाह पुरा दरबार ने खिलत भेंटे कर सम्मानित किया। आपने अपनी बहुत सी स्थाई सम्पत्ति व्यावर में बनाई। पुष्कर की घाटी में भी आपने अच्छी इमदाद दी थी। आपने बूबल बाडी के भीणों पर राणाजी की ओर से फौज लेकर चढ़ाई की, और उनका उपद्रव शांत किया। आपको "बांगूदार" नामक एक गाँव भी जागीर में मिला था। आपने शाहपुरा में रिखबदेव स्वामी का मन्दिर बनवाया। इस प्रकार प्रतिष्ठा मय जीवन बिता कर सं० १९०५ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र केसरीसिहजी २२ साल उम्र मे सं० १९२१ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र सिंघी कृष्णसिंहजी हुए

सिंघी कृष्णसिंहजी का जन्म संवत् १९१६ में हुआ। आपको पठन पाठन का बहुत शौक था। संवत् १९५६ के अकाल में आपने शाहपुरा की ग़रीब जनता की अच्छी सहायता की थी। संवत् १९६० में आपने अपना निवास गोवर्द्धन में भी बनवाया। यहाँ आपने एक अच्छी धर्मशाला बनवाई। एव मथुरा जिले के २ ग्राम एवं १ लाख ४० हजार रुपयों के प्रामिजरी नोट धर्मार्थ दिये, इनकी आय से, औषधालय, अनाथालय, सदावृत, विधवाओं की सहायता और छात्रवृत्तियाँ दिये जाने की व्यवस्था की तथा इसका प्रबन्ध एक ट्रस्ट के जिम्मे कर उसकी सुपरवीज़न लोकल गवर्नमेंट के जिम्मे की। आपने शाहपुरा में रघुनाथजी का मन्दिर बनाया। सवत् १९७९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र फतेसिहजी बाल्यावस्था में ही गुजर गये थे। इनके नाम पर २० हजार की रकम का "साधु और जाति सेवा" के अर्थ प्राइवेट ट्रस्ट किया गया। कृष्णसिंहजी के यहाँ सज्जनसिंहजी बडी सादडी से दस साल की आयु में सवत् १९५८ में दत्तक आये।

सिंघी सज्जनसिंहजी शाहपुरा तथा गोवर्द्धन के प्रतिष्ठित सज्जन है। आप गोवर्द्धन में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर, लोकल बोर्ड के चैयरमैन और डिस्ट्रीक्ट एडवायजरी एक्साइज कमेटी के मेम्बर हैं। अपने पिताजी द्वारा स्थापित धार्मिक व सहायता के कार्यों को आप भली प्रकार संचालित करते हैं। आप वैष्णव मतानुयायी हैं। शाहपुरा की गोशाला के स्थापन में आपने परिश्रम उठाया है। इसी साल आपने ओसवाल सम्मेलन अजमेर के सभापति का आसन सुशोभित किया था। आप गोवर्द्धन के आनरेरी

सेठ रतनचंद जवरीमल सुराना, पड़िहारा

इस खानदान के लोगों का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड) का था मगर बहुत वर्षों से ... सेठ मलूकचन्दजी पडिहारा में आकर बस गये थे। तभी से आपके वंशज वहीं पर ... रहे हैं। आप खेती वगैरह का काम करते थे। आपके पुत्र रतनचन्दजी सबसे पहले देश से ... और साहीगंज में अपनी फर्म स्थापित की। आप बडे सज्जन तथा कुशल व्यापारी थे। ... तथा भैरोंदानजी नामक दो पुत्र हुए।

... दोनों भाई भी देश से व्यापार निमित्त कलकत्ता आये और सबसे प्रथम सदाराम पूरनचंद ... फर्म पर सर्विस की। इसके पश्चात् आपने सरदार शहर निवासी सेठ चुन्नीलाल ... में मेसर्स चुन्नीलाल भेरोंदान के नाम से फर्म खोली। इस फर्म को कुष्टे के व्यवसाय में ... रहा। संवत् १९८ तक इस फर्म पर आपका साझा रहा। तदनन्तर आप लोगों का पार्ट अलग ... निस समय उक्त फर्म साझे में चल रही थी उस समय इस खानदान की सं० १९८१ में ... के नाम से कलकत्ता में एक स्वतन्त्र फर्म खोली गई थी। वर्त्तमान में आप लोग इसी ... व्यापार करते है। सेठ भेरोंदानजी वडे नामी, मिलनसार तथा प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपका ... में स्वर्गवास हुआ। सेठ हरकचन्दजी विद्यमान हैं। आपके धनराजजी नामक एक पुत्र हैं। ... भेरोंदानजी के भँवरलालजी, जवरीलालजी तथा पन्नालालजी नामक तीन पुत्र हैं। इनमें से ... प्रकार व्यापार सचालन करते हैं। तीसरे अभी पढ़ रहे हैं। आप लोग जैन तेरापन्थी ... मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान की कलकत्ता, आलमनगर (रंगपुर), रहिया, शिव ... आदि स्थानों पर फर्में हैं जिन पर जूट का काम होता है। पढिहारे में यह खानदान ... जाता है।

सेठ बच्छराज कन्हैयालाल सुराणा, बागलकोट

... परिवार पी (मारवाड) का निवासी स्थानकवासी जैन समाज का मानने वाला है। इस ... सेठ नथमलजी सुराणा लगभग सवत् १९३० में स्वर्गवासी हुए।

... बच्छराजजी सुराणा—सेठ नथमलजी के पुत्र बच्छराजजी सुराणा का जन्म संवत् १९२९ में ... की वय में आप बागलकोट आये, तथा यहाँ सर्विस की। संवत् १९५५ में आपने ... का व्यापार आरम्भ किया। एवम् १९७० में आपने अपनी स्वतन्त्र दुकान की। ... व्यापार और सम्मान की उन्नति हुई। इस समय आप बागलकोट के ५ सालों से आनरेरी ... सालों से म्युनिसिपल कौंसिलर हैं तथा वहाँ के ओसवाल समाज में नामांकित व्यक्ति हैं। ... ओर आपकी अच्छी रुचि है। आपके पुत्र कन्हैयालालजी का जन्म सम्वत् १९७० में ... युवक हैं, तथा व्यापार में भाग लेते हैं। आपके यहाँ बागलकोट तथा गुलेजगुड में ...” के नाम से रेशमी सूत, खण तथा रेशमी वस्त्रों का व्यापार होता है। गुलेज गुड में ... सालों से है। इसी तरह बागलकोट और बीजापुर में “कन्हैयालाल सुराणा” के नाम ... व्यापार होता है। इन सब स्थानों पर आपकी दुकान प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है।

मगनसिंहजी सिंघी शाहपुरा.

सेठ नेमीचन्दजी सावणसुखा (गणेशदास जुहारमल) कलकत्ता

सेठ महासिंह राय मेघराज बहादुर (चोपड़ा कोठारी) का खानदान, मुर्शिदाब

इस परिवार के पूर्व पुरुषों ने जोधपुर और जेसलमेर राज्य में अच्छे २ काम कर दि
ऐसा कहा जाता है कि, ये लोग वहाँ के दीवानगी के पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। इन्हीं की
किसी कारणवश गैर सर नामक स्थान पर आकर रहने लगी। कुछ वर्षों पश्चात् कुछ लोग तो बीका
गये एवम् सेठ रतनचन्दजी, महासिंहजी और आसकरनजी तीनों बंधु मुर्शिदाबाद आकर बसे। यहां
आप लोगों ने अपनी प्रतिभा के बल पर सम्वत् १८१८ में ग्वालपाडा में अपनी फर्म स्थापित की।
सफलता मिलने पर क्रमश गोहाटी और तेजपुर में भी अपनी शाखाएँ स्थापित कीं। उस समय इस
बैंकिंग, रबर और चायबागान में रसद सप्लाय का काम होता था। सेठ महासिंहजी के पुत्र मेघराज

राय मेघराजजी बहादुर—आपके समय में इस फर्म की बहुत तरक्की हुई और बीसियों स्थ
इसकी शाखाएँ स्थापित की गई। आप बडे व्यापार चतुर पुरुष थे। भारत सरकार ने आपके व
प्रसन्न होकर सन् १८६७ में आपको "राय बहादुर" के सम्मान से सम्मानित किया। आपका सन् १९
स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र बाबू जालिमचन्दजी और प्रसन्नचन्दजी—सन् १९०७ म अलग २ हो

सेठ जालिमचन्दजी का परिवार—सेठ जालिमचन्दजी भी बडे धार्मिक और व्यवसाय कुशल
थे। आपके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश बा० धनपतसिंहजी, लक्ष्मीपतसिंहजी, खडगसिंहजी,
बसन्तसिंहजी और दिलीपसिंहजी हैं। आप सब लोग बडे मिलनसार और शिक्षित सज्जन हैं। वर्त
आप लोग उपरोक्त नाम से व्यवसाय कर रहे हैं। आपकी फर्म इस समय तेजपुर ग्वालवाडा, ग
विश्वनाथ, बडगाँव, उरांग, माणक्याचर, मुर्शिदाबाद, धुलियान, युटारोही, जीयागज, सिराजगंज, वार्ल
पुरानाघाट, नयाघाट, आदमबाड़ी, बुड़ागाव, चुढैया, पामोई, टांगामारी, साकूमाथा, गभीरीघाट, कद
जाजियां, फूलसुन्दरी, झडानी, वासवाडी, सूर्सिया, बडगाँव हाट, पावरी पारा, लावकुवा, गोरोहित इ
स्थानों पर हैं। इन सब पर जमींदारी, जूट और बैंकिंग का व्यापार होता है।

सेठ प्रसन्नचदजी का परिवार—सेठ प्रसन्नचन्दजी ने अलग होने के बाद "प्रसन्नचन्द फतेसिं
नाम से व्यापार प्रारम्भ किया। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके भवरसिंहजी
फतेसिंहजी नामक दो पुत्र हैं, इनमें से भवरसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र कमलपतसिंहजी
बाबू फतेसिंहजी मुर्शिदाबाद में व्यापार करते हैं। तथा कमलपतसिंहजी कलकत्ता में रहते हैं यह प
मन्दिर सम्प्रदाय का अनुयायी है।

चौपड़ा राजरूपजी का खानदान, गंगाशहर

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मण्डोवर का था। वहाँ से इस खानदान
पुरुष का कापटेद, कुचौर तथा देराजसर में आकर बसे थे। तदनंतर सम्वत् १९६७ में इस खानदा
वर्तमान पुरुष श्री छौगमलजी चौपडा गगा शहर जाकर बस गये तभी से आप लोग गंगाशहर में नि
कर रहे हैं। इस खानदान में सेठ राजरूपजी हुए। आपके रतनचन्दजी दुर्गादासजी, करमचन्दजी, हरक
सरदारमलजी तथा ताजमलजी नामक छ पुत्र हुए।

…नराजजी कोठारी बहादुर, मुर्शिदाबाद

स्व० सेठ जालिमसिंहजी कोठारी, मुर्शिदाबाद.

प्रिय महानुभाव है। उदयपुर दरबार ने आपको "ताजीम" बख्शी है। आपके पुत्र कुँवर
र में पढ़ रहे हैं। इनसे छोटे कुँवर मुकुन्दसिंहजी भी पढते हैं। आपका परिवार शाहपुरा
हुत प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है। आपके यहाँ जमीदारी और बैंकिंग का काम होता है।

सुजानगढ़ का सिंघी परिवार

रिवार के पूर्व पुरुष जोधपुर से राव बीकाजी के साथ इधर आये थे। उन्हीं की सन्तानें
स्थानों में वास करती रहीं। चुरू में राजरूपजी हुए। आपके ३ पुत्र हुए। इनमें प्रथम
ही रहे। दूसरे कन्हीरामजी हरासर नाम के स्थान पर चले आये। तीसरे करनीदानजी
ती हो गये। कहा जाता है कि कन्हीरामजी तत्कालीन हरासर के ठाकुर हरोजी के कामदार
णवश अनवन हो जाने के कारण आप सम्वत् १८८९ के करीब सुजानगढ आकर बस
रासर में थे उस समय वहाँ आपने एक तालाब और कुवा बनवाया जो आज भी विद्यमान
र हिम्मतसिंहजी, शेरमलजी, गोविन्दरामजी, पूर्णचन्दजी और अनोपचन्दजी थे। इन सब
जी बडे प्रतिभावान व्यक्ति हुए। आपने मुर्शिदाबाद आकर वहाँ की तत्काकीन फर्म सेठ
द के यहाँ सर्विस की। पश्चात् आप अपनी होशियारी से उक्त फर्म के मुनीम हो गये।
के कई व्यक्तियों का वहुत लाभ हुआ। आपने अपने देश के कई व्यक्तियों को रोजगार से
पतमलजी भी बडे न्यायी और उदार सज्जन थे। सम्वत् १९०५ में आप लोग अलग १
मलजी के परिवार में चेतनदासजी हुए। आपके इस समय बींजराजजी और रावतमलजी
शेरमलजी के कुशलचन्दजी, ज्ञानमलजी और लालचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप सब
और आपके परिवार वाले इस समय स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं।

लचन्दजी का परिवार—सेठ कुशलचन्दजी के तीन पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश जेस·
लजी और पनेचन्दजी हैं। सेठ जेसराजजी शिक्षित और अंग्रेजी पढ़े लिखे सज्जन
भाइयों के शामलात में केरोसिन तेल का व्यापार किया। इसमें आपको अच्छी सफ
के बाद आप लोग जूट बेलिंग का काम करने लगे। इसमें भी वहुत सफलता रही।
य के अनुयायी थे। आपने अपने जीवन में वहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आपका
आपके पुत्र बछराजजी इस समय विद्यमान है। आप मिलनसार सज्जन हैं और
हरिसन रोड में जूट का व्यापार करते हैं। आपके हसराजजी, धनराजजी और
तीन पुत्र हैं।

धारीमलजी अपने चाचा सेठ लालचन्दजी के नाम पर दत्तक चले गये। आपके इन्द्रचन्द
हुए। इस समय आपके भँवरलालजी और नथमलजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।
चन्दजी भी अपने बडे भ्राता की भाँति कुशल व्यापारी हैं। आपने अपनी शामलात
के व्यापार में बडी उथल पथल पैदा कर लाखों रुपये अपने हाथों से कमाये थे। अपनी
र धर्मादे की रकम में से आप लोगों ने सुजानगढ़ में एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण
इस समय बीकानेर स्टेट कौंसिल के मेम्बर हैं। आपको दरबार से कैफियत की इज्जत

प्रदान है। सुजानगढ़ की जनता में आपके प्रति आदर के भाव है। इस समय आप नं ३० काटन में जूट का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र चैनरूपजी और सोहनलालजी व्यापार में सहयोग देते हैं।

सेठ ज्ञानचन्दजी का परिवार—सेठ ज्ञानचन्दजी गोहाटी में तत्कालीन फर्म मेसर्स जोगराज जैसराज यहाँ मेनेजरी का काम देखते थे। आपके तीन पुत्र भैरोंदानजी, जीतमलजी और प्रेमचन्दजी हुए। भैरोंदा कम वय ही में स्वर्गवासी हो गये। शेष दोनों भाई और इनके पुत्र वगैरह सवत १९८७ तक जीत प्रेमचन्द के नाम से जूट का अच्छा व्यापार करते रहे। तथा आजकल अलग २ स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं

सेठ जीतमलजी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने अपने समय में व्यापार में बहुत उन्नति व आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र मालचन्दजी, अमीचन्दजी, हुलासचन्दजी और भिखमचन्द हैं। आप लोग सिरसाबाड़ी में "जीतमल जौहरीमल" के नाम से जूट का व्यापार करते है।

सेठ प्रेमचन्दजी का जन्म संवत् १९३९ है। आप को जूट के व्यापार का अच्छा अनुभव है आपने अपनी साझेवाली फर्म के काम को बहुत बढ़ाया था। साथ ही कई स्थानों पर उसकी शाखा भी स्थापित की थी। इस समय आप प्रेमचन्द माणकचन्द के नाम से १०५ चीना बाजार में जूट का अच्छा व्यापार करते हैं। आप मिलनसार संतोषी और समझदार सज्जन है। आपकी यहाँ और सुजानगढ़ अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके इस समय माणकचन्दजी, धनराजजी और अमोलकचन्दजी नामक तीन पु हैं। इनमें से बा० माणकचन्दजी फर्म के कार्य्य का संचालन करते है। बाबू धनराजजी बी० काम थर्ड ईय में पढ़ रहे है। आप लोगों का व्यापार कलकत्ता के अलावा ईसरगंज, जमालपुर (मैमनसिंह) में भी होता है। आपकी ओर से जमालपुर में जीतमल प्रेमचन्द रोड के नाम से एक पक्का रोड बनवाया हुआ तथा वहाँ के स्कूल के बोर्डिंग की इमारत भी आप ही ने बनवाई है। ओसवाल विद्यालय में भी आपकी ओर से अच्छी सहायता प्रदान की गई है।

सेठ भिखनचन्दजी मालचन्दजी सिंघी, सरदारशहर

इस खानदान के लोग जोगड गौत्र के हैं। मगर संघ निकालने के कारण सिंघी कहलाते हैं। आप लोगों का पूर्व निवास स्थान नाथूसर नामक ग्राम था। मगर जब कि सरदारशहर बसने लगा आपके पूर्वज भी यहीं आ गये। वहाँ सेठ दुरगदास के गुलाबचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। सेठ गुलाबचन्दजी जब कि १५ वर्ष के थे सरदार शहर वाले सेठ चैनरूपजी के साथ कलकत्ता गये। पश्चात् धीरे २ अपनी बुद्धिमानी, इमादारी तथा होशियारी से आप इस फर्म के मुनीम हो गये। इस फर्म पर आपने करीब ५० वर्ष तक काम किया। इसके पश्चात् संवत् १९६६ में आपने नौकरी छोडदी एवम अपने पुत्र भीखनचन्द मालचन्द के नाम से स्वतंत्र फर्म खोली तथा कपडे का व्यापार प्रारभ किया। इस फर्म पर डायरेक्टर विलायत से इम्पोर्ट का काम भी प्रारभ किया गया। इस कार्य में आपको बहुत सफलता रही। आपका संवत् १९८३ में स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र है जिनके नाम करनीदानजी, भीखनचन्दजी एवम् मालचन्दजी हैं। आप तीनों सज्जन और मिलनसार है। करनीदानजी के भूरामलजी और रामलालजी नामक पुत्र हैं। आप लोग भी व्यापार संचालन करते है। भूरामलजी के बुधमलजी नामक

चोपड़ा करमचन्दजी का परिवार—चोपडा करमचन्दजी के पूसराजजी, लाभूरामजी तथा गुमा-[illegible] नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों भाई देश से व्यापार निमित रंगपुर आये और माहीगंज (रंगपुर) [illegible] प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मोजीराम इन्द्रचंद नाहठा के यहाँ सर्विस करते रहे। सेठ पूसराजजी [illegible] बुद्धिमान तथा अच्छे व्यवस्थापक थे। आपको बंगला भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। आप रंगपुर जिले [illegible] हो गये हैं। आप रंगपुर जिले की म्यु० क० के मेम्बर भी थे। आपका स्वदेश प्रेम भी बढ़ा [illegible] था। सन १९०५ की बंगाल स्वदेश मुव्हमेंट में आपने अग्र भाग लिया था तथा तभी से आप [illegible] का उपयोग किया करते थे। आप ही के समय में सम्वत् १९५० में छोगमल तिलोकचन्द [illegible] नाम से माहीगंज से सेठ हरकचन्दजी के पुत्र बीदामलजी के साझे में स्वतंत्र फर्म स्थापित की गई। [illegible] १९८१ में इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता में भी खोली गई थी। सम्वत् १९८७ के पश्चात् सेठ [illegible] व पूसराजजी के परिवार वाले अलग २ हो गये। सेठ पूसराजजी के छोगमलजी तथा रावतमल [illegible] पुत्र हुए।

[illegible] छोगमलजी चोपडा—आपका जन्म सम्वत् १९४० में हुआ। आपने सन् १९०५ में बी० ए० [illegible] १९०८ में एल० एल० बी० की परीक्षाएँ पास कीं। इस समय आप सारे परिवार में समझदार, [illegible] तथा बुद्धिमान सज्जन हैं। आप कलकत्ते की ओसवाल समाज के नामी वकीलों में से एक हैं। आप [illegible] आफ कामर्स, मारवाडी एसोसिएशन, ओसवाल सभा, ओसवाल नवयुवक समिति आदि [illegible] व सेक्रेटरी, मेम्बर तथा प्रधान कार्य्यकर्त्ता रहे हैं। आपके इस समय गोपीचन्दजी, भोजराज [illegible], अजीतमलजी तथा भूरामलजी नामक पाँच पुत्र हैं। इनमें गोपीचन्दजी ने सन् १९३३ में [illegible] बी० पास किया है। शेष सब व्यापार में भाग लेते हैं।

सेठ लाभूरामजी के पुत्र मंगलचन्दजी लाहौर की फर्म पर वलौइज फायर इंश्युरंस कं० स्विट्जर-[illegible] एजन्सी का सब काम देखते हैं। चौपडा गुमानीरामजी के पुत्र इन्द्रचन्दजी, तिलोकचदजी [illegible] फर्म के काम में सहयोग लेते हैं। आप लोगों की एजंसी में उक्त इंन्शुरस कंपनी की [illegible] की जाती है। आप लोगों की "छोगमल रावतमल" के नाम से कलकत्ता में भी एक फर्म है।

सेठ हरकचन्दजी का परिवार—सेठ हरकचन्दजी के दूदामलजी, रामसिंहजी, धनराजजी, बीदामल [illegible] तथा गुमानीरामजी नामक छ पुत्र हुए। सेठ रामसिंहजी व बीदामलजी देश से [illegible] दिनाजपुर आये तथा वहाँ मौजीराम इन्द्रचन्द्र नाहटा के यहाँ सर्विस करते रहे। आप लोग देश [illegible] से आते समय देहली तक का मार्ग पैदल तै करते हुए आये थे। आप यहाँ प्रतिष्ठित [illegible]। आपके पश्चात् सेठ बीदामलजी उसी फर्म पर सर्विस करते रहे। तदनतर आपने सवत् [illegible] में एक फर्म स्थापित की जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। इसी समय दिनाजपुर [illegible] चोपडा के नाम से एक स्वतंत्र फर्म भी स्थापित की थी जिस पर, बैंकिंग वगैरह का [illegible] था। इस फर्म पर इस समय "तिलोकचंद सुगनमल" नाम पडता है। इसके अतिरिक्त [illegible] पृथ्वीराज के नाम से कलकत्ता में एक और फर्म है। सेठ बीदामलजी का संवत [illegible] हो गया है। आपके पुत्र तिलोकचन्दजी, फतेचन्दजी तथा सुगनचन्दजी हैं।

श्री तिलोकचन्दजी बडे प्रतिष्ठित तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ था। आप दिनाजपुर के म्युनिसीपल कमिश्नर भी रह चुके हैं। दिनाजपुर फर्म का आपने बड़ी योग्यता से संचालन किया था। आपका संवत् १९८१ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लालचन्दजी हैं।

श्री फतेचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप चौपडा रामसिहजी के नाम पर दत्तक गये थे लेकिन रामसिहजी की धर्मपत्नी अत्यत तपस्विनी थी अत आप सब के शामिल ही रहते हैं। आप बड़े योग्य, समझदार तथा बुद्धिमान सज्जन हैं। इस समय आप इनकमटैक्स ऑफीसर हैं। आपके रतनचन्दजी, छगनमलजी तथा अमरचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। सुगनचन्दजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा इस समय फर्म के सारे काम को सचालित कर रहे हैं। आपके पृथ्वीराजजी नामक एक पुत्र हैं।

गोठी परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के लोग बहुत समय से सरदार शहर ही में निवास करते चले आ रहे हैं। इस परिवार में सबसे पहले सेठ चिमनीरामजी और आपके भाई चौथमलजी दिनाजपुर गये, एवम् वहाँ सर्विस की। पश्चात् वहाँ से आप लोग जलपाईगोडी चले गये। वहाँ जाकर आपने अपनी फर्म स्थापित की, एवम उसमें बहुत सफलता प्राप्त की। आप ही लोगों ने वहाँ बहुत सी जमींदारी भी खरीद की। सेठ टीकमचन्दजी के ६ पुत्रों में से चिमनीरामजी अविवाहित ही स्वर्गवासी हो गये। शेष के नाम क्रमश जीवनदासजी, चौथमलजी, पांचीरामजी, वख्तावरमलजी और हीरालालजी था। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। आप लोगों के पश्चात् इस फर्म का सचालन आपके पुत्रों ने किया। आप लोगों की जमींदारी बीकानेर-स्टेट, जलपाईगोड़ी, पवना एवम् रंगपुर जिले में हैं। यह जमींदारी अलग २ विभाजित है। संवत १९९१ से आप लोगों का व्यवसाय अलग २ हो गया। इस समय इस परिवार की चार शाखाएँ हो गई जो भिन्न २ नाम से अपना व्यवसाय करती है। जिसका परिचय इस प्रकार है।

चौथमल जैचन्दलाल—इस फर्म के मालिक सेठ विरदीचन्दजी गोठी और आपके पुत्र मदनचन्दजी और जयचन्दलालजी हैं। सेठ विरदीचन्दजी बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

गिरधारीमल रामलाल—इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ रामलालजी गोठी हैं। आपको जूट के व्यापार की अच्छी जानकारी है। अपनी कलकत्ते की सम्मिलित फर्म की सारी उन्नति का श्रेय आप ही को है। आपके चम्पालालजी, छगनलालजी, नेमीचन्दजी, हनुमानमलजी और रतनचन्दजी नामक पांच पुत्र हैं।

गिरधारीमल अभयचन्द—इस फर्म के मालिक सेठ गिरधारीमलजी के पुत्र अभयचन्दजी और सुमेरमलजी हैं। आप दोनों ही मिलनसार और उत्साही नवयुवक हैं।

सरदारमल शुभकरन—इस फर्म के मालिक सेठ सरदारमलजी के वंशज हैं।

जौहरी लाभचन्दजी सेठ (राकां) का खानदान, कलकत्ता

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवास स्थान जयपुर का है। यहाँ पर सेठ अमीचन्दजी बडे नामी व्यक्ति हो गये हैं। आपके कल्लूमलजी, धनसुखदासजी, हाबूलालजी तथा चन्द्रभानजी नामक चार

स्व० लाला फग्गूमलजी, अमृतसर

लाला भगवानदासजी, अमृतसर

श्रीयुत पन्नालालजी जैन, अमृतसर

श्रीयुत विजयकुमारजी जैन, अमृतसर

किया। कोठारी केशरीसिहजी पर इसके कारण बहुत से मेवाड के सरदार अप्रसन्न हो गये और वे उन्हे किसी भी प्रकार से निकालने का उपाय सोचने लगे। अन्त मे तत्कालीन पोलिटिकल एजण्ट के पास कुछ सरदार पहुँचे और कोठारी केशरीसिहजी पर २ लाख रुपये के गबन का अपराध लादकर मेवाड मे उसे निकालने के लिये उकसाया। पोलिटिकल एजण्ट ने बिना जाँच किये ही इस कथन पर विश्वास कर लिया और उन्हे पदच्युत कर मेवाड़ राज्य से निकाल दिया। मगर महाराणा को कोठारी केसरीसिहजी की स्वामिभक्ति पर पूरा विश्वास था, अत उन्होंने इस झूठे दोष की पूरी जाँच की तथा निर्दोष सिद्ध होने पर कोठारी केसरीसिहजी को बडे आदर के साथ वापिस बुलाकर उदयपुर का दीवान बनाया।

वि० संवत १९२५ मे जब मेवाड़ मे बड़ा भारी दुर्भिक्ष पडा तब आपने प्रजा हित के लिए राज्य के बडे बढ़े साहूकारों से मिलकर धान्य वगैरह की योग्य व्यवस्था करदी थी, कोठारी केसरीसिहजी के इस कार्य मे बहुत-सी प्रजा आप पर बडी प्रसन्न हो गई थी। तदनंतर वि० स० १९२६ मे आपने प्रधानगी के पद से इस्तीफा दे दिया।

कोठारी केसरीसिहजी बडे स्पष्ट वक्ता, अनुभवी, स्वामिभक्त, प्रबन्ध-कुशल तथा वीर पुरुष थे। आप अपने इन गुणों के कारण ही अपने बहुत से शत्रुओं के बीच राज्यकार्य करते रहे तथा महाराणा और प्रजा के हितैषी बने रहे। महाराणाजी भी आपका विशेष सत्कार करते थे। साथ ही महत्व के कामों में आपकी सलाह ले लिया करते थे। यह हम ऊपर लिख चुके हैं कि आप बडे प्रबन्ध-कुशल भी थे। एक समय महाराणा ने अपने निरीक्षण मे अलग अलग विभागों की व्यवस्था की और किसानो से अन्न का हिस्सा लेना बन्दकर ठेके के तौर पर नगद रुपया लेना चाहा। महाराणा के इस सुधारकार्य को कार्यान्वित करने के लिए कोई योग्य आदमी न मिला। तब आपने अपने विश्वसनीय स्वामिभक्त कोठारी केसरीसिहजी को इसके प्रबन्ध का कार्य सौंपा जिसे आपने बडी योग्यता से सञ्चालित किया। आपने उन सब विभागों का प्रबन्ध इतने सुचारु रूप मे करके दिखला दिया कि आपका स्थापित किया हुआ प्रबन्ध आपकी मृत्यु के बहुत समय बाद तक बराबर चलता रहा। आपकी सेवाओं से महाराणाजी बडे प्रसन्न हुए और आपका बहुत सत्कार किया। जब आप बीमार पडे तब महाराणाजी स्वयं आपके घर पर पधारे और आपको पूर्णरूप से सात्वना दी। इस प्रकार आप वि० स० १९२८ में स्वर्गवासी हुए।

कोठारी छगनलालजी

कोठारी केशरीसिहजी के बडे भाई कोठारी छगनलालजी भी बडे ही प्रतिभाशाली तथा स्वामिभक्त महानुभाव थे। आपने सवत् १९०० मे खजाने का काम किया और उसके बाद क्रमश: कोठार तथा

फौज का कार्य किया। आप अपने कामों में बड़े ही कुशल थे। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर तत्का महाराणा ने आपको मुरजाई नामक गांव जागीरी में बख्शा। आपके आधीन समय २ पर कई परगने व एकलिंगजी के भण्डार का काम भी रहा। अपने छोटे भाई केशरीसिंहजी की मृत्यु के पश्चात आप महा साल के आफिसर बनाये गये। उसी समय संवत १९३० में महाराणा ने प्रसन्न होकर आपको पैरों पहनने के लिये सोने के कड़े प्रदान किये तथा उसी समय भारत सरकार की ओर से दिल्ली दरबार में आ 'राय' की सम्माननीय पदवी से सम्मानित किया गया। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर तत्कालीन पोलिटि एजण्ट तथा कई महानुभावों ने आपको सार्टिफिकेट प्रदान किये जिनमें से उदाहरणार्थ एक की नकल य पर दी जाती है।

This is to certify that Kothari Chhaganlal has been in charge of t Darbar Treasuary during my tenure of office and has performed his dut in a highly satisfactory manner. He is an intelligent and highly respecta Darbar official and a very good man of his inness and I commend him to t notic of my successor

Udaipur
27th November, 1869

S/d M. Miclon
Political Agent.

पन्नालालजी मेहता

मेहता अगरचन्दजी के खानदान में मेहता पन्नालालजी भी बड़े प्रतिष्ठित और प्रतिभा सम्प व्यक्ति हुए। ये बड़े राजनीतिज्ञ और शासन-कुशल व्यक्ति थे। इनका राजनैतिक दिमाग बहुत ब हुआ था। सबसे पहले आप संवत् १९२६ में महाराणा शम्भूसिंहजी के द्वारा महकमा खास के सेक्रे बनाये गये। यहाँ यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि यह महकमा खास प्रधान का पद तोड़कर बनाया ग था। मेहता पन्नालालजी के महकमा खास में नियुक्त होते ही महकमा खास का काम जो कि पहले ए हालत पर नहीं पहुँच पाया था, इनकी बुद्धिमानी से उत्तरोत्तर तरक्की करने लगा। इसी समय से स्ट इन्तिजामी हालत का प्रारम्भ समझना चाहिये। महाराणा साहब की दिली यह ख्वाहिश थी कि मेवाड़ अनाज बाँट लेने का रिवाज बंद कर दिया जाय और इसके स्थान पर ठेकेबंदी होकर नकद रुपया लि जाय। आपने यह इच्छा कोठारी केशरीसिंहजी पर प्रकट की। कोठारी केशरीसिंहजी ने यह काम अ जिम्मेदारी पर लिया और करीब १० साल पीछे की आमदनी का औसत निकाल कर बड़ी बुद्धिमानी

है। मीवनचन्दजी के पुत्र जयचन्दलालजी और चम्पालालजी है। तथा जयचन्दलालजी के और मालचन्दजी के पुत्र मदनचन्दजी है।

आप लोगों का व्यापार कलकत्ता में ३९ आर्मेनियनस्ट्रीट होता है। इसी स्थान पर ...के नाम से विलायत से तथा उपरोक्त नाम से जापान से डायरेक्ट कपडे का इम्पोर्ट व्यापार ...अतिरिक्त 'जयचन्दलाल रामलाल" के नाम से मनोहरदास कटला में स्वदेशी कपडे का है। आपका परिवार तेरापंथी संप्रदाय का अनुयायी है।

लाला फग्गूमल भगवानदास बावेल, अमृतसर

यह परिवार लगभग १५० वर्ष पूर्व मारवाड से आकर अमृतसर में आबाद हुआ। यह ...जैन स्थानकवासी सम्प्रदाय का मानने वाला है। इस परिवार के पूर्वज लाला धनपतराय ...मुकुन्दामलजी और नदामलजी हुए। लाला मुकुन्दामलजी बसाती का व्यापार करते थे, ...प्रकृति के पुरुष थे। संवत् १९६१ में ७० साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके ...मलजी और लाला फग्गूमलजी नामक २ पुत्र हुए। लाला नंदामलजी भी प्रतिष्ठित ...। संवत् १९५९ में आप निसंतान स्वर्गवासी हुए। लाला कसूरियामलजी सन् १९१२ ...हुए। इनके पुत्र लाला दीनानाथजी तथा लाला अमरनाथजी का भी स्वर्गवास हो गया है।

लाला फग्गूमलजी—आपका जन्म संवत् १९१७ में हुआ। आप वयो वृद्ध और धार्मिक पुरुष ...भाग्यवानों में हैं, जो अपनी चौथी पीढ़ी को अपने सम्मुख देख रहे हैं। आप के पुत्र ...दासजी तथा लाला जगीमलजी हुए।

लाला भगवानदासजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप अमृतसर के ओसवाल समाज ...ष्ठित सज्जन हैं। दान धर्म के कामों में भी आप अच्छा सहयोग लेते हैं। इस समय आप ...जैन सभा अमृतसर के खजांची हैं। आपके पुत्र लाला पन्नालालजी, विलायतीरामजी तथा ...हैं। आपकी कन्या श्रीमती शांतिदेवी ने गत वर्ष "हिंदीरत्न" की परीक्षा पास की है। लाला ...का जन्म १९६१ में हुआ। आप व्यापारकुशल तथा उत्साही युवक है। आपके हाथों से व्यापार ...ति हुई है। धार्मिक कामों मे आपकी अच्छी रुचि है। पूज्य सोहनलालजी महाराज के नाम से ...कन्या पाठशाला के आप सभापति हैं। आपके पुत्र श्री राजकुमारजी पढ़ते है। लाला ...व्यापार में भाग लेते है तथा इनसे छोटे विजयकुमारजी पढ रहे है।

इस परिवार का अमृतसर में ४ दुकानों पर बीड्स, हॉयजरी, मनिहारी और जनरल मर्चेंटाइज ...र होता है। "बी० पी० बावेल एण्ड सन्स" के नाम से विलायती तथा जापानी माल का ...होता है। इसके अतिरिक्त हाल ही में इस परिवार ने "पी० विजय एण्ड कम्पनी" के नाम ...(जापान) में अपना एक ऑफिस कायम किया है, इस पर इम्पोर्ट तथा एक्सपोर्ट ...है। यह खानदान अमृतसर के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है।

(बडेल) हेमराजजी का खानदान, उत्तराण और खेडगांव (खानदेश)

इस परिवार का मूल निवासस्थान भगवानपुरा (मेवाड) है। वहाँ से सिंघी हेमराजजी के छोटे

: भूमि में है। इनमें हजारों मोसम्मी के झाड हैं। इन झाडों से पैदा होने वाली मोसम्मी
बम्बई, गुजरात आदि प्रान्तों में भेजी जाती हैं। इधर आपने लेमनज्यूस तथा ओरेंजज्यूस
ाने का आयोजन किया है और इस कार्य के लिये ६५ एकड भूमि में नीबू के हजारों झाड
तमाम कार्यों में आपके साथ आपके बड़े पुत्र वंशीलालजी सिंघी परिश्रम पूर्वक सहयोग
फलों का बगीचा बम्बई प्रांत में सबसे बड़ा माना जाता है। सेठ माणिकचन्दजी के इस
ी, शिवलालजी तथा शांतिलालजी नामक ३ पुत्र हैं। सिंघी वंशीलालजी का जन्म संवत्
आपने लेमन तथा ओरेंज ज्यूस के लिये पूना एग्रीकलचर कॉलेज से विशेष ज्ञान प्राप्त
ड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपके छोटे भाई शिवलालजी पूना एग्रीकलचर कॉलेज में केमिस्ट
: रहे हैं।

पन्नालालजी भी बरखेड़ी में बागायात का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मिश्रीलालजी,
द्रचदजी, हरकचंदजी तथा भागचदजी हैं। इसी प्रकार पूनमचदजी अमलनेर में व्यापार
चंदजी बरखेडी में तथा रतनचंदजी और रामचंद्रजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं।
परिवार में सेठ चुन्नीलालजी सिंघी के पुत्र मोहनलालजी, बृजलालजी, झूमरलालजी तथा
छोटमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी और नदलालजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं।

सेठ उम्मेदमल रूपचंद बलदोटा, दौंड (पूना)

परिवार का मूल निवास स्थान बारवा (आऊवा के पास) मारवाड़ में हैं। इस परिवार
ारामजी बलदोटा, मारवाड से व्यापार के लिए लगभग ६० साल पूर्व नीमगाँव
आये। तथा वहाँ किराना का धंधा शुरू किया। संवत् १९५० के लगभग आप स्वर्ग
ापके चार पुत्र हुए, जिनमें उम्मेदमलजी का परिवार विद्यमान है। सेठ उम्मेदमलजी ने
अपनी दुकान दौंड में की और व्यापार की आपके हाथों से उन्नति हुई। संवत् १९७२
हुए। आपके पुत्र रूपचन्दजी (उर्फ फूलचन्दजी) का जन्म १९४२ में मोहनलालजी
में एव राजमलजी का सवत् १९६६ में हुआ। इस समय बलदोटा रूपचन्दजी, अपनी
नामक दुकान का कार्य्य दौंड में संचालित करते हैं। आपके पुत्र श्री हरलालजी है।
मोहनलालजी बलदोटा ने सन् १९२० में बी० ए० तथा १९२२ में एडवोकेट परीक्षा पास की।
आप पूना में प्रेक्टिस करते हैं, एवं यहाँ के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आप ४ सालों तक
ंडिया के सेक्रेटरी रहे थे। आपके छोटे बन्धु राजमलजी बलदोटा ने सन् १९३२ में बी०
रीक्षा पास की। तथा इस समय पूना लॉ कालेज में एल० एल० बी० में अध्ययन कर
ी बलदोटा का जन्म सन् १९११ में हुआ। आपने सन् १९२९ में मेट्रिक पास किया तथा
मेडिकल स्कूल के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं।

परिवार ने शिक्षा तथा सुधार के कार्य्यों में प्रशंसनीय पैर बढ़ाया है। श्रीयुत राजमलजी
बलदोटा ने परदा प्रथा को त्याग कर महाराष्ट्र प्रदेश के ओसवाल समाज के सम्मुख एक
दर्शन किया है। आप दोनों युवक अपनी पत्नियों सहित शुद्ध खद्दर का व्यवहार करते

पुत्र हजारीमलजी तथा जुहारमलजी संवत १९०१ में तथा बड़े पुत्र रूपचंदजी संवत् १९०६ में उत्त (खानदेश) आये। तथा यहाँ इन भाइयों ने व्यवसाय आरम्भ किया।

सिंघी रूपचन्दजी का खानदान—आप उत्तराण से संवत् १९०७ में खेडगाँव चले आये तथा आपने अपना कारबार जमाया। आपके मोतीरामजी, वच्छराजजी तथा गोविन्दरामजी नामक ३ पुत्र हु इन तीनों भाइयों के हाथों से इस परिवार के व्यापार तथा सम्मान की वृद्धि हुई। इन बन्धुओं का परि इस समय अलग २ व्यापार कर रहा है। सिंघी मोतीरामजी संवत् १९६० में स्वर्गवासी हुए। आ नाम पर सिंघी चुन्नीलालजी केरिया (मेवाड) से दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३३ में हुआ। ३ खानदेश के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। भुसावल, जलगाँव तथा पाचोरा की जैन शि संस्थाओं में आप सहायता देते रहते हैं। आपके पुत्र दीपचन्दजी तथा जीपरूलालजी हैं। आप दोनों जन्म क्रमश संवत् १९५२ तथा ६२ में हुआ। दीपचंदजी सिंघी अपना व्यापारिक काम सम्हालते हैं, त जीपरूलालजी बी० ए०, पूना में एल० एल० बी० में अध्ययन कर रहे है। आप समझदार तथा विचारव युवक हैं। आपके यहाँ "मोतीराम रूपचंद" के नाम से कृषि, बैंकिंग तथा लनदेन का व्यापार होता है वरखेड़ी में आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। दीपचन्दजी के पुत्र राजमलजी, चादमलजी तथा मानमलजी हैं

सिंघी वच्छराजजी—आप इस खानदान में बहुत नामी व्यक्ति हुए। आपने करीब २० हज रुपयों की लागत से पाचोरे में एक जैन पाठशाला स्थापित कर उसकी व्यवस्था ट्रस्ट के जिम्मे की। आप पाचोरे में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खोलकर अपने व्यापार और सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत् १९७७ आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र तोतारामजी, हीरालालजी स्वर्गवासी हो गये हैं। और कपूरचदजी तथ लखीचंदजी विद्यमान हैं। इन भाइयों का व्यापार १९७७ में अलग २ हुआ। सिंघी कपूरचदजी "कपूरचंद वच्छराज" के नाम से पाचोरे में रुई का व्यापार करते है तथा यहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारी माने जात हैं। आपके सुगनमलजी तथा पूरनमलजी नामक २ पुत्र हैं। इसी तरह तोतारामजी के पुत्र शंकर लालजी, गणेशमलजी, प्रतापमलजी तथा हीरालालजी के पुत्र मिश्रीलालजी, कनकमलजी, खुशालचंदजी और सुवालालजी और सिंघी गोविन्दरामजी के पुत्र छगनमलजी, ताराचंदजी, विरदीचदजी तथा सरूपचन्दजी खेड़गाँव में व्यापार करते हैं।

सेठ हजारीमलजी तथा जुहारमलजी सिंघी का परिवार—इन बन्धुओं का परिवार उत्तराण में निवास करता है। आप दोनों बन्धुओं के हाथों से इस परिवार के व्यापार और सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ किशनदासजी और सेठ हजारीमलजी के सेठ ओंकारदासजी, चुन्नीलालजी तथा छोटमलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ किशनदासजी ख्याति प्राप्त पुरुष हुए। आप बड़े कर्तव्यशील व समझदार सज्जन थे। सम्वत् १९५३ में आपका स्वर्गवास हुआ। सिंघी ओंकारदासजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पन्नालालजी, माणिकचन्दजी, पूनमचन्दजी, दलीचन्दजी, रतनचन्दजी तथा राम चन्दजी नामक ६ पुत्र विद्यमान है। इनमें सेठ माणिकचन्दजी, किसनदासजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

सेठ माणिकचन्दजी सिंघी—आपका जन्म सम्वत् १९४५ में हुआ। आपने सम्वत् १९७२ से साहुकारी व्यवसाय बन्द कर कृषि तथा बागायात की ओर बहुत बड़ा लक्ष दिया। आपका विस्तृत बगीचा

हैं। धार्मिक मामलों से भी आप लोगों के उदार विचार हैं। आपने दृढ़ता पूर्वक परिश्रम कर चचवड़ मे एक अबोध कन्या को दीक्षा दिये जाने के कार्य्य को रुकवाया था। श्री हरलालजी का विवाह सन् १९३२ में अजमेर में वर्द्धमानजी बाठिया की पुत्री श्रीमती दीपकुमारी (उर्फ सरलादेवी) के साथ बहुत सादगी के साथ हुआ। इस विवाह में तमाम फुजूल खर्चिया रोककर लगभग ३००) रुपयों में सब वैवाहिक काम पूरा किया गया। तथा शुद्ध खद्दर का व्यवहार किया गया। श्री दीपकुमारी बलदोटा सन् १९३० में विदेशी वस्त्रों की पिकेटिंग करने के लिये ३ । ४ वार जेल गई। लेकिन १५ वर्ष की अल्पायु होने के कारण आप दो चार दिनों में ही छोड़ दी गईं।

लाला रणपतराय कस्तूरीलाल बम्बेल का खानदान, मलेर कोटला

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान सुनाम का है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी सम्प्रदाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में लाला कानारामजी के पश्चात् क्रमश छज्जूरामजी, मोतीरामजी तथा लाला रणपतरायजी हुए। लाला रणपतरायजी इस कुटुम्ब में बडे योग्य व्यक्ति होगये हैं। आप सौ साल पूर्व मलेर कोटला में सुनाम से आये थे। आपने अपने परिवार की इज्जत व दौलत को बढ़ाया। आपके पुत्र लाला मुकुंदीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९५० में होगया। आपके लाला कस्तूरीलालजी, मिलखीराम जी एव चिरंजीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला कस्तूरीलालजी का जन्म १९४६ का था। आप बडे सज्जन और धार्मिक पुरुष थे। आपका संवत १९७९ में स्वर्गवास होगया है। आपके लाला बचनाराम जी नामक एक पुत्र हैं। लाला मिलखीरामजी का जन्म सवत् १९४८ मे हुआ। आप यहां की बिरादरी के चौधरी हैं। आपका यहाँ के राज दरबार में अच्छा सम्मान है। आपके प्रेमचन्दजी नामक एक पुत्र है। लाला चिरंजीलालजी का जन्म सवत् १९५० में हुआ। आप भी मिलनसार सज्जन है। आपके मनोहरलालजी तथा शीतलदासजी नामक दो पुत्र हैं।

इस परिवार की इस समय दो शाखाएँ होगई हैं। एक फर्म पर मेसर्स कस्तूरीलाल मिलखी राम के नाम से तथा दूसरी फर्म पर चिरंजीलाल मनोहरलाल के नाम से व्यापार होता है।

सेठ फतहलाल मिश्रीलाल वेद, फलोदी

इस परिवार के पूर्वज सेठ परशुरामजी वेद ने फलोदी से ४४ मील दूर रोहिणा नामक स्थान से आकर सम्वत् १९२५ में अपना निवास फलोदी में बनाया। आपके पुत्र बहादुरचन्दजी तथा मुलतानचदजी हुए। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का माननेवाला है। सेठ मुलतानचन्दजी के चुन्नीलालजी, छोगमलजी, हजारीमलजी, आईदानजी तथा सूरजमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ सूरजमलजी तथा आईदानजी ने बम्बई तथा ऊटकमंड में दुकानें खोलीं। सेठ सूरजमलजी फलोदी के स्थानकवासी सम्प्रदाय में नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। सवत् १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। सेठ आईदानजी के जेठमलजी फतेलालजी, विजयलालजी, मिश्रीलालजी तथा कवरलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ मिश्रीलालजी, सूरजमलजी वेद के नाम पर दत्तक गये हैं।

वर्तमान में इन बंधुओं में जेठमलजी, विजयलालजी तथा मिश्रीलालजी विद्यमान है। सेठ जेठमलजी फलोदी में ही रहते है, तथा विजयलालजी और मिश्रीलालजी ने इस कुटुम्ब के व्यापार तथा सम्मान

है। आपने वेलिंगटन, कुन्नूर और ऊटकमंड में दुकानें खोली। बम्बई में आपका "फतहलाल
म से व्यापार होता है। तथा नीलगिरी में आपकी ५ दुकानें हैं। जिनमें लालचन्द शंकर-
अंग्रेजी ढंग से बैंकिंग व्यापार करती है और नीलगिरी में बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है।
बड़े शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक व्यक्ति हैं। आप अपनी फर्म की ओर से आठ साल से २ हजार
नेर के "जैन गुरुकुल" को सहायता दे रहे हैं। एवं आप उस गुरुकुल के प्रेसिडेण्ट भी हैं।
नथमलजी के पुत्र नेमीचन्दजी व शंकरलालजी, सेठ फतेलालजी के पुत्र चम्पालालजी, सेठ
पुत्र कन्हैयालालजी और रामलालजी तथा कंवरलालजी के पुत्र फकीरचन्दजी तथा मूलचन्द
पुत्रों में शंकरलालजी, चाँदमलजी (बहादुरचंदजी के पुत्र) के नाम पर तथा मूलचन्दजी,
नाम पर दत्तक गये। एवं फकीरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में अल्पवय में हो
ना, चम्पालालजी तथा कन्हैयालालजी व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार फलोदी बम्बई
के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

श्री बख्तावरमल नथमल वेद, ऊटकमंड

परिवार के पूर्वज दौलतरामजी वेद के पुत्र शिवलालजी, बींजराजजी तथा जोरावरमलजी वेद
स्थान से आकर अपना निवास स्थान फलोदी में बनाया। सेठ शिवलालजी संवत्
र्गवासी हुए। तथा बींजराजजी व जोरावरमलजी का व्यापार अमलनेर के पास पीपला नामक
सेठ शिवलालजी के बाघमलजी तथा बख्तावरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन बंधुओं ने
में अपना व्यापार शुरू किया। सम्वत् १९५९ में सेठ बख्तावरमलजी ने सेठ सूरजमलजी
की भागीदारी में "सूरजमल सुजानमल" के नाम से साहूकारी व्यापार चालू किया। संवत्
तथा १९८२ में बाघमलजी का स्वर्गवास हुआ।

बख्तावरमलजी के पुत्र नथमलजी का जन्म सम्वत् १९५५ में हुआ। इस समय आप सेठ
फलोदी वालों की भागीदारी में "शिवलाल नथमल" के नाम से ऊटकमंड में बैंकिंग
है। यहाँ के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एवं समझदार व्यक्ति हैं। आपको पठन
प्रेम है। इसी तरह इस परिवार में सेठ जौरावरमलजी के पौत्र भेरूदानजी, वेलिंगटन में
सेठ की भागीदारी में तथा बींजराजजी के पुत्र मोतीलालजी वेद अमलनेर में व्यापार करते हैं

सेठ चुन्नीलाल छगनमल वेद, ऊटकमंड

परिवार के पूर्वज वेद गम्भीरमलजी तथा उनके पुत्र बालचंदजी ठिकाना रास (मारवाड़) में
बालचन्दजी सम्वत् १९६४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चुन्नीलालजी का जन्म सम्वत्
छगनमलजी का १९६० में हुआ। इन बंधुओं ने सम्वत् १९८० में अपना निवास ब्यावर में
दोनों ने सेठ "रिखबदास फतेमल" की भागीदारी में सन् १९१८ में ऊटकमंड में सराफी
किया। इस समय इस दुकान पर कपड़े का व्यापार होता है। आप दोनों सज्जन
स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले हैं। व्यापार को आपने तरक्की दी है।

सेठ माणकचंदजी सिंघी (माणकचंद किशनदास) उत्तराण.

श्री राजमलजी बलदोटा बी. एस. सी., सपत्नीक

सेठ माणकचंदजी सिंघी के पुत्र

श्री हरलालजी बलदोटा सपत्नीक, पूना.

लाला सुखरूपमल रघुनाथप्रसाद भण्डारी, कानपुर

इस परिवार में लाला सुखरूपमलजी के पुत्र लाला रघुनाथप्रसादजी बडे धार्मिक व प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने व्यापार मे लाखो रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित कर कानपुर, सम्मेदशिखरजी तथा लखनऊ में ३ सुन्दर जैन मन्दिर बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा करवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए संवत् १९४८ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर लाला लछमणदासजी चतुरमेहता के पुत्र मेहता सन्तोषचन्दजी दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप भी अपने पिताजी की तरह ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपने कानपुर मदिर में कांच जडवाये, और आसपास बगीचा लगवाया। यह मन्दिर भारत के जडाऊ मन्दिरों में उच्च श्रेणी का माना जाता है। मदिर के सामने आपने धर्मशाला के लिए एक मकान प्रदान किया। संवत् १९८९ के फाल्गुण मास में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र बाबू दौलतचन्दजी भण्डारी का जन्म सवत् १९६४ में हुआ। आप भी सज्जन एवम् प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र विजयचंदजी हैं।

श्री हुलासमलजी मेहता का खानदान, रामपुरा

लगभग ३०० वर्षों से यह परिवार रामपुरा में निवास कर रहा है। राज्यकार्य्य करने के कारण इस परिवार की उपाधि "मेहता" हुई। संवत् १८२५ से राज्य सम्बन्ध त्याग कर इस परिवार ने अफीम का व्यापार शुरू किया और मेहता गम्भीरमलजी तक यह व्यापार चलता रहा। आप बडे गम्भीर तथा धर्मानुरागी थे। संवत् १९५२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चुन्नीलालजी मेहता भी व्यापार करते रहे। इनके भाइयों को मदसोर में "धनराज किशनलाल" के नाम से सोने चाँदी का व्यापार होता है। मेहता चुन्नीलालजी के मोहनलालजी तथा हुलासमलजी नामक २ पुत्र हैं। मोहनलालजी विद्याविभाग में लम्बे समय तक सर्विस करते रहे तथा इस समय पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।

मेहता हुलासमलजी—आप इन्दौर स्टेट में कई स्थानों के अमीन रहे। तथा इस समय मनासामें अमीन हैं। आप बडे सरल तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके ४ पुत्र हैं। जिनमें बडे सज्जनसिंहजी मेहता इसी साल एल० एल० बी० की परीक्षा में बैठे थे। आप होनहार युवक है। आप से छोटे मनोहरसिंहजी बी० ए० में तथा आनंदसिंहजी मेट्रिक में पढ़ रहे। और ललिजसिंह बालक हैं।

मेहता किशनराजजी, मेड़ता

इस परिवार के पूर्वज मेहता जसरूपजी जोधपुर में राज्य की सर्विस करते थे। इनके मनरूप जी तथा पनराजजी नामक २ पुत्र हुए। पनराजजी जालोर के हाकिम थे। इनके रतनराजजी, कुशलराज जी, सोहनराजजी तथा शिवराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बधुओं में केवल शिवराजजी की सतानें विद्यमान है। मेहता शिवराजजी जोधपुर में वकालात करते थे। इनका सवत् १९७४ में ५४ साल की वय में स्वर्गवास हुआ। आपके किशनराजजी तथा रंगराजजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता किशनराज जी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आपने सन् १९१३ में जोधपुर में वकालात पास की। तथा ७-८ सालों तक वहीं प्रेक्टिस करते रहे। उसके बाद आप मेड़ते चले आये। तथा इस समय मेड़ते के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आपके छोटे बंधु रंगराजजी हवाला विभाग में कार्य्य करते हैं।

... एकड भूमि में है। इनमें हजारों मोसम्मी के झाड हैं। इन झाडों से पैदा होने वाली मोसम्मी ... बम्बई, गुजरात आदि प्रान्तों में भेजी जाती हैं। इधर आपने लेमनज्यूस तथा ऑरेंजज्यूस ... बनाने का आयोजन किया है और इस कार्य के लिये ६५ एकड भूमि में नीबू के हजारों झाड ... इन तमाम कार्यों में आपके साथ आपके बड़े पुत्र वंशीलालजी सिंघी परिश्रम पूर्वक सहयोग ... आपका फलों का बगीचा बम्बई प्रांत में सबसे बडा माना जाता है। सेठ माणिकचन्दजी के इस ...लालजी, शिवलालजी तथा शांतिलालजी नामक ३ पुत्र हैं। सिंघी वंशीलालजी का जन्म संवत् ... में हुआ। आपने लेमन तथा ऑरेंज ज्यूस के लिये पूना एग्रीकलचर कॉलेज से विशेष ज्ञान प्राप्त ...। आप बड़े सज्जन व्यक्ति है। आपके छोटे भाई शिवलालजी पूना एग्रीकलचर कॉलेज में केमिस्ट ... प्राप्त कर रहे हैं।

सिंघी पन्नालालजी भी बरखेडी में बागायात का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मिश्रीलालजी, ...लालजी, इन्द्रचंदजी, हरकचंदजी तथा भागचदजी हैं। इसी प्रकार पूनमचंदजी अमलनेर में व्यापार ... और दर्लीचंदजी बरखेड़ी में तथा रतनचंदजी और रामचंद्रजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं। ... प्रकार इस परिवार में सेठ चुन्नीलालजी सिंघी के पुत्र मोहनलालजी, बृजलालजी, झूमरलालजी तथा ... और छोटमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी और नदलालजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं।

सेठ उम्मेदमल रूपचंद बलदोटा, दौंड (पूना)

इस परिवार का मूल निवास स्थान बारवा (आऊवा के पास) मारवाड़ में हैं। इस परिवार ... सेठ गंगारामजी बलदोटा, मारवाड से व्यापार के लिए लगभग ६० साल पूर्व नीमगाँव (...नगर) आये। तथा वहाँ किराना का धंधा शुरू किया। संवत् १९५० के लगभग आप स्वर्ग ... हुए। आपके चार पुत्र हुए, जिनमें उम्मेदमलजी का परिवार विद्यमान है। सेठ उम्मेदमलजी ने ... १९६० में अपनी दुकान दौंड में की और व्यापार की आपके हाथों से उन्नति हुई। संवत् १९७२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रूपचन्दजी (उर्फ फूलचन्दजी) का जन्म १९४२ में मोहनलालजी का ... १९५७ में एवं राजमलजी का संवत् १९६६ में हुआ। इस समय बलदोटा रूपचन्दजी, अपनी ... रूपचन्द नामक दुकान का कार्य्य दौंड में संचालित करते हैं। आपके पुत्र श्री हरलालजी है।

श्री मोहनलालजी बलदोटा ने सन् १९२० में बी० ए० तथा १९२२ में एडवोकेट परीक्षा पास की। ... से आप पूना में प्रेक्टिस करते हैं, एवं यहाँ के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आप ४ सालों तक ... बोर्डिंग के सेक्रेटरी रहे थे। आपके छोटे बन्धु राजमलजी बलदोटा ने सन् १९३२ में बी० ... परीक्षा पास की। तथा इस समय पूना लॉ कालेज में एल० एल० बी० में अध्ययन कर ...। ...लालजी बलदोटा का जन्म सन् १९११ में हुआ। आपने सन् १९२९ में मेट्रिक पास किया तथा ... पूना मेडिकल स्कूल के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं।

इस परिवार ने शिक्षा तथा सुधार के कार्यों में प्रशंसनीय पैर बढ़ाया है। श्रीयुत राजमलजी ... बलदोटा ने परदा प्रथा को त्याग कर महाराष्ट्र प्रदेश के ओसवाल समाज के सम्मुख एक ... उपस्थित किया है। आप दोनों युवक अपनी पत्नियों सहित शुद्ध खद्दर का व्यवहार करते

११५

सेठ घमडसी जुहारमल स्याम सुखा, बीकानेर

हम ऊपर लिख आये हैं कि चदेरी के खतरसिह के पौत्र भैंसाशाहजी के ८ पुत्रों से अलग-गौत्र उत्पन्न हुई। इनमें श्यामसीजी से श्यामसुखा हुए। इनकी नवी पीढ़ी में मेहता । आप बीकानेर दरबार के बुलाने से सवत् १५७५ में पाटन से बीकानेर में आकर आबाद का दसवीं पीढी मे श्यामसुखा साहबचन्दजी हुए आपके संतोषचदजी, सुलतानचन्दजी, सुगाल-घमडसीजी नामक ४ पुत्र हुए।

सेठ घमडसीजी स्यामसुखा जिस समय मरहठा सेना के अध्यक्ष महाराजा होल्कर स्थान २ पर अपना राज्य स्थापन की व्यवस्था में व्यस्त थे, उस समय बीकानेर से सेठ घमडसीजी एवं महाराजा होल्कर की फौजों को रसद सप्लाय करने का कार्य्य करने लगे। कहना न ज्यों ज्यों होल्करों का सितारा उन्नति पर चढ़ता गया। त्यों त्यों सेठ घमडसीजी का व्यापार भी गया। आपने होल्कर एव सिंधिया के जीते हुए प्रदेशों में डाक की सुव्यवस्था की। होल्करी ... के द्वारा वेतन दिया जाता था। तत्कालीन होल्कर नरेश ने आपके सम्मान स्वरूप इन्दोर में ... पौने महसूल की माफी के हुक्म बख्शे। एवं घोडा, छत्री, चपरास व छडी, आदि बख्शकर सम्मानित किया। इसी प्रकार गवालियर स्टेट की ओर से भी आपको कई सम्मान प्राप्त हुए। ... खानदान के प्रतापी पुरुष सेठ जोरावरमलजी बापना का आप से सहयोग हुआ, एवं इन दोनों ने "घमडसी जोरावरमल" के नाम से अनेकों स्थानों में दुकानें स्थापित कर बहुत जोरों से अफीम व्यापार बढ़ाया। तमाम मालवा प्रान्त की अफीम आपकी आढत में आती थी। जब सेठ ... का व्यापार पाँच भागों में विभक्त हो गया, उस समय सेठ घमडसीजी अपने पुत्र जुहारमलजी "घमडसी जुहारमल" के नाम से अपना स्वतन्त्र कारवार करने लगे। सेठ जुहारमलजी सवत् ... स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सूरजमलजी एवं समीरमलजी ने अफीम तथा सराफी व्यापार को ... किया। इन्दौर के ११ पचों में आप भी प्रभावशाली और प्रधान व्यक्ति थे। सेठ समीर-... बीकानेर के सम्माननीय पुरुष थे। बीकानेर दरबार ने आपको केफियत तथा चौकडी ... तरह आपके पुत्र सहसकरणजी को सोने का कडा एव केफियत तथा उनकी धर्म पत्नी को ... पहनने का अधिकार बख्शा था। आपने सिद्धाचलजी आदि मे कई धार्मिक काम करवाये।

... सूरजमलजी के सोभागमलजी एव पूनमचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें सेठ सोभाग-... में गुजर जाने से उनके नाम पर सेठ पूनमचन्दजी दत्तक गये। आपका जन्म संवत् ... । आप बीकानेर के प्रतिष्ठित एव वयोवृद्ध सज्जन है। बीकानेर मे आपको इज्जत, ... चपरास चौकडी आदि का सम्मान प्राप्त हुआ है। देहली दरबार के समय बीकानेर दरबार ... आपको अपने साथ ले गये थे। आपके पुत्र कुँवर दीपचन्दजी का जन्म संवत ... आप दुकानों का कारोबार सम्हालते है। कुँवर दीपचन्दजी के पुत्र टीकमसिहजी, ... एव तेजसिहजी है। कुँवर टीकमसिहजी का जन्म संवत १९६४ में हुआ।

हैं। धार्मिक मामलों से भी आप लोगों के उदार विचार है। आपने दृढता पूर्वक परिश्रम कर चचव मे एक अबोध कन्या को दीक्षा दिये जाने के कार्य्य को रुकवाया था। श्री हरलालजी का विवाह सन १९३२ में अजमेर में वर्द्धमानजी बाठिया की पुत्री श्रीमती दीपकुमारी (उर्फ सरलादेवी) के साथ बहुत सादगी के साथ हुआ। इस विवाह में तमाम फुजूल खर्चिया रोककर लगभग ३००) रुपयों में सब वैवाहिक काम पूरा किया गया। तथा शुद्ध खद्दर का व्यवहार किया गया। श्री दीपकुमारी बलदोटा सन् १९३० मे विदेशी वस्त्रों की पिकेटिंग करने के लिये ३। ४ बार जेल गई। लेकिन १५ वर्ष की अल्पायु होने के कारण आप दो चार दिनों में ही छोड दी गई।

लाला रणपतराय कस्तूरीलाल बम्बेल का खानदान, मलेर कोटला

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान सुनाम का है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी सम्प्रदाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में लाला कानारामजी के पश्चात् क्रमश छज्जूरामजी, मोतीरामजी तथा लाला रणपतरायजी हुए। लाला रणपतरायजी इस कुटुम्ब में बड़े योग्य व्यक्ति होगये है। आप सौ साल पूर्व मलेर कोटला में सुनाम से आये थे। आपने अपने परिवार की इज्जत व दौलत को बढ़ाया। आपके पुत्र लाला मुकुंदीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९५० में होगया। आपके लाला कस्तूरीलालजी, मिलखीराम जी एवं चिरंजीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला कस्तूरीलालजी का जन्म १९४६ का था। आप वडे सज्जन और धार्मिक पुरुष थे। आपका संवत १९७९ में स्वर्गवास होगया है। आपके लाला बचनाराम जी नामक एक पुत्र हैं। लाला मिलखीरामजी का जन्म संवत् १९४८ मे हुआ। आप यहां की बिरादरी के चौधरी हैं। आपका यहाँ के राज दरबार में अच्छा सम्मान है। आपके प्रेमचन्दजी नामक एक पुत्र है। लाला चिरजीलालजी का जन्म सवत् १९५० में हुआ। आप भी मिलनसार सज्जन है। आपके मनोहरलालजी तथा शीतलदासजी नामक दो पुत्र हैं।

इस परिवार की इस समय दो शाखाएँ होगई है। एक फर्म पर मेसर्स कस्तूरीलाल मिलखी राम के नाम से तथा दूसरी फर्म पर चिरंजीलाल मनोहरलाल के नाम से व्यापार होता है।

सेठ फतहलाल मिश्रीलाल वेद, फलोदी

इस परिवार के पूर्वज सेठ परशुरामजी वेद ने फलोदी से ४४ मील दूर रोहिणा नामक स्थान से आकर सम्वत् १९२५ में अपना निवास फलोदी में बनाया। आपके पुत्र बहादुरचन्दजी तथा मुलतानचदजी हुए। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का माननेवाला है। सेठ मुल्तानचन्दजी के चुन्नीलालजी, छोगमलजी, हजारीमलजी, आईदानजी तथा सूरजमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ सूरजमलजी तथा आईदानजी ने बम्बई तथा ऊटकमंड में दुकानें खोलीं। सेठ सूरजमलजी फलोदी के स्थानकवासी सम्प्रदाय में नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। सवत् १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। सेठ आईदानजी के जेठमलजी फतेलालजी, विजयलालजी, मिश्रीलालजी तथा कवरलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ मिश्रीलालजी, सूरजमलजी वेद के नाम पर दत्तक गये हैं।

वर्तमान में इन बंधुओं में जेठमलजी, विजयलालजी तथा मिश्रीलालजी विद्यमान है। सेठ जेठमलजी फलोदी में ही रहते हैं, तथा विजयलालजी और मिश्रीलालजी ने इस कुटुम्ब के व्यापार तथा सम्मान

आप मिलनसार युवक हैं। इस परिवार की इन्दौर एवं उज्जैन में दुकाने हैं। तथा इन्दौर, उज्जैन, सावे और बीकानेर में स्थाई जायदाद है। कुँवर टीकमसिंहजी के पुत्र भँवर दुलीचन्दजी है।

श्री राखेचा मानमलजी मंगलचन्दजी, बीकानेर

इस परिवार के पूर्वज लच्छीरामजी राखेचा बीकानेर में अपने समय में बड़े प्रतापी पुरुष हुए। आप सवत् १८५२-५३ में बीकानेर के दीवान रहे। आपने अपनी अन्तम वय में सन्यास वृत्ति धारण कर एव "अलख मठ" स्थापित कर "अलख सागर" नामक प्रसिद्ध विशाल कूप बनवाया। जो इस समय बीकानेर का बहुत बडा कूप माना जाता है। इनके पुत्र मानमलजी एवं गेंदमलजी माजी साहिबा पुङ्गलियाणीजी के कामदार रहे। मानमलजी के पुत्र राखेचा मगलचन्दजी बडे प्रभावशाली व्यक्ति थे। आप श्री महाराजा गंगासिंहजी के बाल्यकाल में रिजेंसी कौंसिल के मेम्बर थे। इनके दत्तक पुत्र भेरूदानजी कारखाने का कार्य्य करते रहे। इस समय भेरूदानजी के पुत्र गभीरचन्दजी एवं शेषकरणजी विद्यमान है।

सेठ पूनमचन्दजी नेमीचन्दजी कोठारी (शाह) बीकानेर

यह परिवार सेठ सूरजमलजी कोठारी के पुत्रों का है। लगभग १५० साल पहिले सेठ "बालचन्द गुलाबचन्द" के नाम से इस परिवार का व्यापार बडी उन्नति पर था। एवं इनकी दुकानें जयपुर, पूना आदि स्थानों पर थीं। सेठ बालचन्दजी के पुत्र भीखनचन्दजी एव पौत्र हरकचन्दजी हुए। कोठारी हरकचन्दजी के पुत्र नेमीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९०२ में हुआ। आपने जादातर बीकानेर में ही व्याज और जवाहरात का व्यापार किया। सम्वत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके प्रेमसुखदास जी, पूनमचन्दजी तथा आनन्दमलजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों का जन्म क्रमश सम्वत् १९३० सम्वत् १९३८ एव सम्वत् १९४३ में हुआ। सेठ प्रेमसुखदासजी व्यापार के लिये सम्वत् १९४४ मे रगून गये, तथा "प्रेमसुखदास पूनमचन्द" के नाम से फर्म स्थापित की। सम्वत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हो गये। आपके बाद आपके छोटे बंधु सेठ पूनमचन्दजी तथा आनन्दमलजी ने इस दुकान के व्यापार एव सम्मान में अच्छी वृद्धि की। सेठ पूनमचन्दजी कोठारी रंगून चेम्बर आफ कामर्स के पंच थे। एवं वहाँ के व्यापारिक समाज में गण्यमान्य सज्जन माने जाते थे। इधर सम्वत् १९८२ से व्यापार का बोझ अपने छोटे बधु पर छोड कर आप बीकानेर में ही निवास करते हैं। इस समय आप बीकानेर के आनरेरी मजिस्ट्रेट एव म्युनिसिपल कमिश्नर है। यहाँ के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एवं समझदार पुरुष हैं। स्थानीय जैन पाठशाला में आपने ७१००) की सहायता दी है। इस समय आपके यहाँ "प्रेमसुखदास पूनमचन्द" के नाम से रगून में बैंकिंग तथा जवाहरात का व्यापार होता है। आपका परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है। सेठ आनन्दमलजी के पुत्र लालचन्दजी एवं हीराचन्दजी हैं।

कोचर परिवार बीकानेर

सम्वत् १६७२ में महाराजा सूरसिंहजी के साथ कोचरजी के पुत्र उरझाजी अपने ४ पुत्र रामसिंहजी, भाखरसिंहजी, रतनसिंहजी तथा भींवसिंहजी को साथ लेकर बीकानेर आये। तथा उरझाजी के शेष ४ पुत्र फलोदी में ही निवास करते रहे। बीकानेर आने पर महाराजा ने इन भाइयों को अपनी रियासत में ऊँचे २ ओहदों पर मुकर्रर किया। इन बधुओं ने अपनी कारगुजारी से रियासत में अच्छा

... है। आपने वेलिंगटन, कुन्नूर और ऊटकमंड में दुकानें खोली। बम्बई में आपका "फतहलाल ... नाम से व्यापार होता है। तथा नीलगिरी में आपकी ५ दुकानें हैं। जिनमें लालचन्द शंकर- ... अंग्रेजी ढंग से बैंकिंग व्यापार करती है और नीलगिरी में बडी प्रतिष्ठित मानी जाती है। ... बडे शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक व्यक्ति हैं। आप अपनी फर्म की ओर से आठ साल से २ हजार ... व्यावर के "जैन गुरुकुल" को सहायता दे रहे है। एवं आप उस गुरुकुल के प्रेसिडेण्ट भी हैं। ... मलजी के पुत्र नेमीचन्दजी व शंकरलालजी, सेठ फतेलालजी के पुत्र चम्पालालजी, सेठ ... के पुत्र कन्हैयालालजी और रामलालजी तथा कंवरलालजी के पुत्र फकीरचन्दजी तथा मूलचन्द ... में शंकरलालजी, चांदमलजी (बहादुरचंदजी के पुत्र) के नाम पर तथा मूलचन्दजी, ... नाम पर दत्तक गये। एव फकीरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में अल्पवय मे हो ... जी, चम्पालालजी तथा कन्हैयालालजी व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार फलोदी बम्बई ... के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

श्री बख्तावरमल नथमल वेद, ऊटकमंड

... परिवार के पूर्वज दौलतरामजी वेद के पुत्र शिवलालजी, बींजराजजी तथा जोरावरमलजी वेद ... स्थान से आकर अपना निवास स्थान फलोदी में बनाया। सेठ शिवलालजी संवत् ... वासी हुए। तथा बींजराजजी व जोरावरमलजी का व्यापार अमलनेर के पास पीपला नामक ... सेठ शिवलालजी के बाघमलजी तथा बख्तावरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन बंधुओं ने ... में अपना व्यापार शुरू किया। सम्वत् १९५९ में सेठ बख्तावरमलजी ने सेठ सूरजमलजी ... की भागीदारी में "सूरजमल सुजानमल" के नाम से साहूकारी व्यापार चालू किया। संवत् ... तथा १९८७ में बाघमलजी का स्वर्गवास हुआ।

बख्तावरमलजी के पुत्र नथमलजी का जन्म सम्वत् १९५५ में हुआ। इस समय आप सेठ ... फलोदी वालों की भागीदारी में "शिवलाल नथमल" के नाम से ऊटकमंड में बैंकिंग ... । यहां के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एव समझदार व्यक्ति हैं। आपको पठन ... है। इसी तरह इस परिवार में सेठ जोरावरमलजी के पौत्र भेरूदानजी, वेलिंगटन में ... चंद की भागीदारी में तथा बींजराजजी के पुत्र मोतीलालजी वेद अमलनेर में व्यापार करते हैं

सेठ चुन्नीलाल छगनमल वेद, ऊटकमंड

परिवार के पूर्वज वेद गंभीरमलजी तथा उनके पुत्र बालचंदजी ठिकाना रास (मारवाड़) में ... बालचन्दजी सम्वत् १९६४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चुन्नीलालजी का जन्म सम्वत् ... छगनमलजी का १९६० में हुआ। इन बंधुओं ने सम्वत् १९८० में अपना निवास व्यावर में ... ने सेठ 'रिखबदास फतेमल" की भागीदारी में सन् १९१८ में ऊटकमंड में सराफी ... । इस समय इस दुकान पर कपडे का व्यापार होता है। आप दोनों सज्जन ... तेरहपंथी आम्नाय के माननेवाले हैं। व्यापार को आपने तरक्की दी है।

ग। इस समय इन चारों भाइयों की संतानों के लगभग १२५ घर बीकानेर में निवास कर रहे हैं। इस परिवार अधिकतर बीकानेर स्टेट की सेवा ही करता चला आ रहा है राज्य कार्य्य करने से यह मेहता" के नाम से सम्मानित हुआ, आज भी इस परिवार के अनेकों व्यक्ति स्टेट सर्विस में हैं। कोचर परिवार अधिकतर श्री जैन श्वे० मंदिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है।

मेहता रामसिंहजी कोचर का परिवार

कोचर रामसिंहजी, डरसाजी के पाटवी पुत्र थे, बीकानेर दरबार महाराजा सूरसिंहजी चाँदी की कलम एवं दवात बख्श कर लिखने का काम दिया, जिससे इनका परिवार " कहलाने लगा। इस परिवार को स्टेट ने "वीमलू" नामक गाँव जागीर में दिया, जो स परिवार के पाटवी मेहता मंगलचन्दजी के अधिकार में है। मेहता रामसिंहजी के पश्चात् रामजी, भवानीरामजी और माणकचन्दजी हुए। मेहता माणकचन्दजी के पुत्र दुलीचन्दजी तथा ना थे। इनमें मेहता दुलीचन्दजी के परिवार में राय बहादुर मेहता मेहरचन्दजी एवं बख्तावरचन्दजी स्वर्गीय मेहता बहादुरमलजी नामी व्यक्ति हुए।

राय बहादुर मेहता मेहरचन्दजी का परिवार—ऊपर हम मेहता दुलीचन्दजी का नाम लिख आये के पुत्र चौथमलजी एवं पौत्र सुल्तानचन्दजी हुए। मेहता सुल्तानचन्दजी के सूरजमलजी, , चुन्नीलालजी एवं हिम्मतमलजी नामक ४ पुत्र हुए, इनमें मेहता चुन्नीलालजी २२ सालों तक में तहसीलदार रहे। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर दरबार ने आपको सूरतगढ़ में नाजिम का या। आपके लखमीचन्दजी एवं मोतीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें मेहता मोतीचन्दजी, नाम पर दत्तक गये। मेहता लखमीचन्दजी बहुत समय तक बीकानेर एवं रिणी में नाजिम कार्य करते रहे। पश्चात् आप स्टेट की ओर से आबू, हिसार एवं जयपुर के वकील रहे। इसी ता मोतीचन्दजी भी कई स्थानों पर तहसीलदारी एवं नाजिमी के पद पर कार्य्य करते रहे। रचन्दजी मिलापचन्दजी, गुणचन्दजी तथा केसरीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए, इन में मेहरचन्दजी, मोतीचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता मेहरचन्दजी का जन्म सम्वत् १९३२ में हुआ। परिवार में विशेष प्रतिभावान पुरुष हुए। सम्वत् १९५४ में आप रियासत में तहसीलदारी के र हुए। एवं सन् १९१२ में स्टेट ने आपको सूरतगढ़ का नाजिम मुकर्रर किया। आपकी र होशियारी से दिनों दिन जिम्मेदारी के कार्यों का भार आप पर आता गया। सन् १९१३ में जोधपुर, जयपुर एवं बीकानेर के सरहद्दी तनाजों को दूर करने के लिये आपको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। सन् १९१६ में महाराजा श्री गंगासिंहजी बहादुर ने आपको "शाह" का यत किया। इसी तरह से वार आदि कार्यों में स्टेट की ओर से इमदाद में सहयोग लेने के ब्रिटिश गवर्नमेंट ने सन् १९१८ में "रायबहादुर" का खिताब एवं मेडिल इनायत बीकानेर दरबार ने भी आपको "रेवेन्यू कमिश्नर" का पद बख्श कर सम्मानित किया। पूर्ण जीवन बिता कर आप २९ दिसम्बर सन् १९१९ को स्वर्गवासी हुए। आप बड़े थे। आपके अंतिम संस्कारों के लिये दरबार ने आर्थिक सहायता पहुँचाई थी। इनना

लाला सुखरूपमल रघुनाथप्रसाद भण्डारी, कानपुर

इस परिवार में लाला सुखरूपमलजी के पुत्र लाला रघुनाथप्रसादजी बड़े धार्मिक व व्यक्ति हुए। आपने व्यापार मे लाखो रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित कर कानपुर, सम्मेदशिखरजी लखनऊ में ३ सुन्दर जैन मन्दिर वनवाकर उनकी प्रतिष्ठा करवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन हुए सवत् १९४८ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर लाला लछमणदासजी चतुरमेहता मेहता सन्तोषचन्दजी दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप भी अपने पिता तरह ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपने कानपुर मदिर में कांच जड़वाये, और आसपास ब लगवाया। यह मन्दिर भारत के जड़ाऊ मन्दिरों में उच्च श्रेणी का माना जाता है। मदिर के आपने धर्मशाला के लिए एक मकान प्रदान किया। संवत् १९८९ के फाल्गुण मास में आप स्वर्ग हुए। आपके पुत्र बाबू दौलतचन्दजी भण्डारी का जन्म सवत् १९६४ में हुआ। आप भी सज्जन प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र विजयचंदजी हैं।

श्री हुलासमलजी मेहता का खानदान, रामपुरा

लगभग ३०० वर्षों से यह परिवार रामपुरा में निवास कर रहा है। राज्यकार्य्य कर कारण इस परिवार की उपाधि "मेहता" हुई। संवत् १८२५ से राज्य सम्बन्ध त्याग कर इस परिवा अफीम का व्यापार शुरू किया और मेहता गम्भीरमलजी तक यह व्यापार चलता रहा। आप बड़े ग तथा धर्मानुगारागी थे। संवत् १९५२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चुन्नीलालजी मेहता व्यापार करते रहे। इनके भाइयों को मंदसोर में "धनराज किशनलाल" के नाम से सोने चाँदी का व्य होता है। मेहता चुन्नीलालजी के मोहनलालजी तथा हुलासमलजी नामक २ पुत्र हैं। मोहनलाल विद्याविभाग में लम्बे समय तक सर्विस करते रहे तथा इस समय पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।

मेहता हुलासमलजी—आप इन्दौर स्टेट में कई स्थानों के अमीन रहे। तथा इस स मनासामें अमीन हैं। आप बड़े सरल तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके ४ पुत्र है। जिनमें सज्जनसिंहजी मेहता इसी साल एल० एल० बी० की परीक्षा में बैठे थे। आप होनहार युवक हैं। उ से छोटे मनोहरसिंहजी बी० ए० में तथा आनंदसिंहजी मेट्रिक में पढ़ रहे। और ललिजसिंह बालक है

मेहता किशनराजजी, मेड़ता

इस परिवार के पूर्वज मेहता जसरूपजी जोधपुर में राज्य की सर्विस करते थे। इनके मनर जी तथा पनराजजी नामक २ पुत्र हुए। पनराजजी जालोर के हाकिम थे। इनके रतनराजजी, कुशलरा जी, सोहनराजजी तथा शिवराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बधुओं में केवल शिवराजजी की सता विद्यमान हैं। मेहता शिवराजजी जोधपुर में वकालात करते थे। इनका सवत् १९७४ में ५४ साल व वय में स्वर्गवास हुआ। आपके किशनराजजी तथा रगराजजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता किशनरा जी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आपने सन् १९१३ में जोधपुर में वकालात पास की। तथा ७-८ साल तक वहीं प्रेक्टिस करते रहे। उसके बाद आप मेड़ते चले आये। तथा इस समय मेड़ते के प्रतिष्ठित वकील मा जाते हैं। आपके छोटे बंधु रंगराजजी हवाला विभाग में कार्य्य करते है।

ही नहीं आपकी धर्मपत्नी एव २ नाबालिग पुत्रों के लिये खास तौर से पेंशन भी मुकर्रर कर दी। अ स्मारक में आपके पुत्रों ने बीकानेर में कोचरों की गवाड में एक जैन धर्मशाला बनवाई। आपके कृपाचन उत्तमचन्दजी एव मंगलचन्दजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। इन तीनों भाइयों का जन्म क्र सम्वत् १९५१, ६५ तथा सम्वत् १९६७ मे हुआ। मेहता कृपाचन्दजी थोडे समय तक कलकत्ता व्यापार करते रहे, तथा इस समय नौहर मे नायब तहसीलदार हे। आपके पुत्र वीरचन्दजी बालक हैं।

मेहता उत्तमचन्दजी बी० ए० एल एल० बी०—आपने बनारस युनिवर्सिटी से सन् १९२ बी० ए० तथा १९३० एल एल० बी० की परीक्षा पास की। इसके २ वर्ष बाद आपको स्टेट ने सुजान में मजिस्ट्रेट बनाया। इतनी अल्पवय होते हुए भी इस वजनदारी पूर्ण कार्य को आप बडी योग्यता से संचा कर रहे हैं। आप बडे सहृदय, मिलनसार एव लोकप्रिय युवक हैं। आपके पुत्र उपध्यानचन्द बालक आपके छोटे बंधु मेहता मंगलचन्दजी सुजानगढ़ में गिरदावर हैं।

इसी प्रकार इस परिवार में मेहता मिलापचन्दजी भी कई स्थानों पर तहसीलदार एव नाि के पद पर काम करते रहे सन १९२७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पीरचन्दजी भिनासर डाक्टरी करते हैं, मोहनलालजी एफ. ए में तथा सम्पतलालजी मिडिल में पढते हैं। इसी तरह मे मेहरचन्दजी के सब से छोटे भाई मेहता केसरीचन्दजी के पुत्र माणिकचन्दजी बालक हैं।

मेहता बहादुरमलजी कोचर का परिवार—ऊपर हम लिख आये हैं कि मेहता दुलीचन्दजी छोटे भ्राता मेहता बक्तावरचन्दजी थे। इनके पश्चात् क्रमश मेहता तखतमलजी, मुकुन्ददासजी एव छो मलजी हुए। मेहता छोगमलजी बीकानेर स्टेट में सर्विस करते रहे। सवत् १९४२ मे आपका स्वर्गवास हुअ आपके मेहता छगनमलजी, बहादुरमलजी, एव हस्तीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मेहता छगनमल भी स्टेट में सर्विस करते रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके सहसकरणजी एव अभयराजजी नाम २ पुत्र हुए। इनमें अभयराजजी, अपने काका मेहता बहादुरमलजी के नाम पर दत्तक गये।

मेहता बहादुरमलजी इस परिवार में नामी व्यक्ति हुए। आपने सवत् १९४० में सेठ मोज राम पन्नालाल बांठिया भिनासर वालों की भागीदारी में कलकत्ते में छातों का व्यापार आरम्भ किय एव इस व्यापार को उन्नत रूप देने के लिये आपने वहाँ एक कारखाना भी खोला। इस व्यापार सम्पत्ति उपार्जित कर आपने अपने सम्मान मे अच्छी उन्नति की। आप बडे दयालु थे, तथा धर्म के काम में उदारता पूर्वक भाग लेते थे। एव अन्य कामों में भी उदारतापूर्वक सहायता देते थे। बीकानेर ओसवाल समाज में आप गण्यमान्य व्यक्ति माने जाते थे। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताकर सव १९९० की प्रथम वैसाख सुदी १४ को आपका स्वर्गवास हो गया। आपके दत्तक पुत्र मेहता अभयराज का जन्म संवत् १९४० में हुआ। इधर सवत् १९८६ से आपका सेठ मोजीराम पन्नालाल फर्म से भा अलग हो गया है। एव आप "बहादुरमल अभयराज" के नाम से बीकानेर में बैंकिंग व्यापार करते हैं आप बडे सरल एवं सज्जन व्यक्ति हैं। बीकानेर के कोचर परिवार में आप सधन व्यक्ति हैं। ए यहाँ के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। आपके पुत्र भँवरलालजी, अनदमलजी एव दुली चन्दजी हैं।

सेठ माणकचन्दजी सिंघी (माणकचन्द किशनदास) उत्तराण

श्री राजमलजी बलदोटा बी एस सी, सपत्नीक

सेठ माणकचन्दजी सिंघी के पुत्र

श्री हरलालजी बलदोटा सपत्नीक, पूना.

स्वर्गीय मेहता नेमीचन्दजी कोचर, बीकानेर

मेहता मेघराजजी कोचर, बीकानेर

मेहता लूनकरणजी कोचर, बीकानेर.

कुँवर रावतमलजी कोचर, बीकानेर

ल मेवाड में ठेका बाँध दिया। इस काम में मेहता पन्नालालजी ने कोठारी केशरीसिंहजी को बडी मदद दी। ोठारीजी के पश्चात महकमा माल के अफसर कोठारी छगनलालजी एवम् मेहता पन्नालालजी रहे।

इसके पश्चात संवत् १९३० से १९३२ तक इनके जीवन में कई प्रकार की घटनाएं घटीं जिनका वर्णन हम नकी फेमिली हिस्ट्री के साथ करेंगे। संवत् १९३२ की भादवा सुदी चौथ को फिर से उन्हे महकमा खास ा काम सौंपा गया। आपके महकमा खास मे आने के बाद रियासत मे कई नये काम हुए। सवत् १९३५ आपने स्टेट में सेटलमेंट की पद्धति को जारी किया। जो उस समय राजपूताने की सब रियासतों मे हली थी। आपके हाथों से दूसरा महत्व पूर्ण कार्य विद्या के विषय मे हुआ। आपके द्वारा यहाँ के द्या-विभाग को बहुत प्रोत्साहन मिला। आप ही ने मेवाड के जिलों के अन्दर जहाँ पहले स्कूल और स्पिटल नहीं थे, खुलवाये। इसी प्रकार और भी प्राय' सभी विभागो मे आपने अपनी बुद्धिमानी से बहुत धार किया। भारत गवर्नमेंट ने आपको पहले पहल राय की पदवी प्रदान की। उसके पश्चात् ही ापको सी० आई० ई० का सम्माननीय पद मिला। आपके कार्यों की प्राय सभी पोलिटिकल एजण्टस, ा जी० जी० तथा वाइसराय जैसे महानुभवों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की, तथा आपको कई सार्टीफिकेट ान किये। इनमें से हम एक यहाँ दे रहे हैं शेष इनके पारवारिक इतिहास मे देंगे।

> "Rai Pannalal is an intelligent, energetic and hard working officer and has rendered great assistance to the Political Agent in the administration of the state during the minority He is the only person capable of holding the high post, he now Occupies in the state "

यह रका संवत् १८७६ में राजपूताने के तत्कालीन पोलिटिकल एजण्ट द्वारा दिया गया था। ाप लिखते है कि राय पन्नालालजी बडे ही तीक्ष्ण बुद्धिवाले तथा उत्साही पुरुष है। महाराणाजी की नाबा ालिगी के समय में आपने मेवाड के राज्य कार्यों में मुझे बडी सहायता दी। आप बडे परिश्रमी एव इस ऊँचे ओहदे के योग्य महानुभाव है।

मेहता फतेलालजी

आप मेहता पन्नालालजी सी० आई० ई० के पुत्र है। आप बाल्यावस्था से ही बडे विचक्षण और मेधावी है। आपके साहित्यिक और सामाजिक जीवन के विषय में आपके खान-दान के इतिहास साथ प्रकाश डालेंगे। राजनैतिक जीवन के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि आपका जीवन उदय- ु के राजकीय वातावरण में बहुत महत्वपूर्ण रहा है। यद्यपि आप अपने पिता की तरह प्रधान मिनिस्टरी

फौज का कार्य किया। आप अपने कामों में बडे ही कुशल थे। आपके कार्यों मे प्रसन्न होकर तत्का महाराणा ने आपको मुरजाई नामक गॉव जागीरी मे बख्शा। आपके आधीन समय २ पर कई परगने एकलिंगजी के भण्डार का काम भी रहा। अपने छोटे भाई केशरीसिहजी की मृत्यु के पश्चात् आप मा माल के आफिसर बनाये गये। उसी समय सवत् १९३० मे महाराणा ने प्रसन्न होकर आपको पै पहनने के लिये सोने के कडे प्रदान किये तथा उसी समय भारत सरकार की ओर मे दिल्ली दरबार में आ 'राय' की सम्माननीय पदवी से सम्मानित किया गया। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर तत्कालीन पोलि एजण्ट तथा कई महानुभावों ने आपको सार्टिफिकेट प्रदान किये जिनमें से उदाहरणार्थ एक की नक्ल पर दी जाती है।

This is to certify that Kothari Chhaganlal has been in charge of t Darbar Treasuary during my tenure of office and has performed his du in a highly satisfactory manner. He is an intelligent and highly respecta Darbar official and a very good man of his inness and I commend him to t notic of my successor.

Udaipur — S/d M. Miclon

27th November, 1869 — Political Agent.

पन्नालालजी मेहता

मेहता अगरचन्दजी के खानदान में मेहता पन्नालालजी भी वडे प्रतिष्ठित और प्रतिभा स व्यक्ति हुए। ये वडे राजनीतिज्ञ और शासन-कुशल व्यक्ति थे। इनका राजनैतिक दिमाग बहुत हुआ था। सबसे पहले आप संवत् १९२६ में महाराणा शम्भूसिहजी के द्वारा महकमा खास के से बनाये गये। यहाँ यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि यह महकमा खास प्रधान का पद तोडकर बनाया था। मेहता पन्नालालजी के महकमा खास में नियुक्त होते हीं महकमा खास का काम जो कि पहल हालत पर नहीं पहुँच पाया था, इनकी वुद्धिमानी से उत्तरोत्तर तरक्की करने लगा। इसी समय से ए इन्तिजामी हालत का प्रारम्भ समझना चाहिये। महाराणा साहब की दिली यह ख्वाहिश थी कि मेवा अनाज बाँट लेने का रिवाज बद कर दिया जाय और इसके स्थान पर ठेकेबंदी होकर नकद रुपया लि जाय। आपने यह इच्छा कोठारी केशरीसिंहजी पर प्रकट की। कोठारी केशरीसिंहजी ने यह काम अ जिम्मेदारी पर लिया और करीब १० साल पीछे की आमदनी का औसत निकाल कर बड़ी वुद्धिमा

मेहता बहादुरमलजी के छोटे भाई मेहता हस्तीमलजी भी राज्य मे सर्विस करते रहे। आपका ... १९६१ म स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र मेहता शिवबख्शजी, सेठ मोजीराम पन्नालाल बाठिया की ... खानों के कारखाने का संचालन एवं व्यापार करते हैं। तथा अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते ... पुत्र मेवराजजी मेट्रिक मे पढते हैं। इनसे छोटे सम्पतलालजी एव जतनलालजी हैं।

मेहता भींवसिंहजी कोचर का परिवार

कोचर डूगमाजी के तीसरे पुत्र भीवसिंहजी की सतानों में समय २ पर कई प्रतिष्ठित व्यक्ति ... जिन्होंने बीकानेर रियासत की सेवाए कर अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। इस परिवार में मेहता शाहमलजी ... व्यक्ति हुए। आपको बीकानेर दरबार महाराजा सरदारसिंहजी ने संवत् १८६७ में दीवानगी का ... दिया था।

मेहता भीवसिहजी के पुत्र पद्मराजजी थे। इनके चन्द्रसेनजी एवं इन्द्रसेनजी नामक २ पुत्र ... इनमे मेहता चन्द्रसेनजी के परिवार में मेहता मेघराजजी, लूणकरणजी, रावतमलजी एवं चम्पालालजी ... आदि सज्जन हैं। एव चन्द्रसेनजी के परिवार में मेहता शिवबख्शजी हैं।

मेहता मघराजजी, लूणकरणजी कोचर का खानदान—हम ऊपर मेहता चन्द्रसेनजी का नाम लिख ... हैं। आपके पुत्र अजबसिंहजी एव अनोपचन्दजी बडे बहादुर पुरुष थे। आप लोग रियासत की ... भटनेर आदि कई लडाइयों में शामिल हुए थे। मेहता अजबसिहजी के पुत्र कीरतसिंहजी के ... मानचन्दजी एव केसरीचदजी नामक ३ पुत्र हुए। आप बधु स्टेट के ऊँचे २ ओहदों पर कार्य ... । स्टेट ने आप लोगों को कई खास रुक्के बख्शे थे। इन भाइयों में मेहता मदनचन्दजी के पुत्र ... और पौत्र हरखचदजी हुए। मेहता हरकचन्दजी तहसीलदारी के पद पर कार्य करते थे। सवत् ... आपका स्वर्गवास हुआ। आपको तथा आपके बडे पुत्र को राज्य ने "शाह" की पदवी इनायत ... आपके मेहता नेमीचन्दजी एवं मेघराजजी नामक २ पुत्र हुए। इन बन्धुओं मे मेहता मेघराजजी ... । शाह नेमीचन्दजी आफीसर कोर्ट आफ वार्ड तथा आफीसर श्री बडा कारखाना थे। महाराजा ... सिंहजी बहादुर आप पर बडे प्रसन्न थे। आप स्पष्ट वक्ता एव स्टेट के सच्चे खैरख्वाह व्यक्ति थे। ... स्टेट के प्राइवेट जवाहरात कोष की चाबियाँ अन्तिम समय तक रहीं। सवत् १९८९ में आप ... हुए। आपके पुत्र मेहता लूणकरणजी एव विशनचन्दजी विद्यमान हैं। मेहता लूणकरणजी ... संवत १९४५ में हुआ। आप ९ सालों तक महकमा हिसाब तथा १६ सालों तक कन्ट्रोलर आफ दि ... रहे। तथा सवत् १९८९ से अपने पिताजी के स्थान पर आप आफीसर श्री बडा कारखाना ... सरल एव समझदार पुरुष है। आपके छोटे बन्धु विशनचन्दजी खजाने में सर्विस करते हैं।

मेहता मेघराजजी कोचर का जन्म सवत् १९२९ में हुआ। आप वर्तमान महाराजा श्री ... की बाल्या वस्था में उनके प्राइवेट दफ्तर के खजाची रहे। पश्चात् संवत् १९७२ में तहसील ... रहे। इसके बाद आप राजकुमार श्री शार्दूलसिंहजी की चीफ मिनिस्टरी के समय उनके ... । इधर सवत् १९८१ से आप पेंशन प्राप्त कर शांतिलाभ कर रहे हैं। आप बडे सरल एवं ... हैं। आपके पुत्र श्री रावतमलजी कोचर का जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आप इस समय

नकरणजी, मगलचन्दजी—आप लोग वर्तमान में अपनी "शालिगराम लूनकरग दस्साणी" ान संचालक है। यह फर्म नं० ४ राजा उडमंड स्ट्रीट कलकत्ता में व्यापार करती है। ा एवं दर्बार खास आदि अवसरों के समय आप लोग निमंत्रित किये जाते हैं। आपका के ओसवाल समाज में गण्य मान्य एवं प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके छोटे भाई व मदनलालजी पढ़ते हैं। आप लोग श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय आम्नाय को मानने वाले है।

श्री खुशालचंदजी खजांची (चांदा)

परिवार के पूर्वज सेठ हीरालालजी खजाची बीकानेर से लगभग ७० साल पहिले कामठी जेठमलजी रामकरणजी गोलेछा की दुकान पर मुनीम रहे। इनके दुलीचन्दजी तथा मक २ पुत्र हुए। हीरालालजी संवत् १९५३ में गुजरे और इनके स्थान पर इनके पुत्र ामात करने लगे। संवत् १९७६ में कामठी में घासीरामजी का शरीरान्त हुआ। आपके पुत्र लूणकरणजी तथा ताराचंदजी हुए। श्री खुशालचंदजी खजाची १६ साल की वय में संवत् आये। आपका शिक्षण मेट्रिक तक हुआ। सन् १९२२ से आपने सार्वजनिक तथा देश सहयोग देना आरम्भ कर दिया। इसी साल आप जनता की ओर से म्यु० मेम्बर १९२७ में आप डिस्ट्रीक्ट कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। आपकी सेवाओं के कारण म प्रथम बार तथा १०३१ में दूसरी बार म्यु० के प्रेसिडेन्ट बनाये गये। इस पद पर ा कार्य करते है। राजनैतिक कार्यों में भी आप काफी दिलचस्पी से भाग लेते है। दगाल डे" के उपलक्ष में प्रान्तिक डिक्टेक्टर की हैसियत से आप गये थे। इसलिए ८३१ को ७ मास की सख्त कैद तथा २००) जुर्माना हुआ। सन् १९३२ में कारण चांदा में २००) जुर्माना तथा ४ मास की पुन सजा हुई, इस समय आप रा सघ के पेसिडेन्ट हैं। सन् १९३३ के फ्लड के समय आपने गरीब जनता की बहुत की जनता आपको आदर से देखती है आपके पुत्र छगनमलजी हैं। आपके यहाँ "लूणकरण म से कपड़े का व्यापार होता है इसका संचालन लूणकरणजी खजाची करते हैं। तथा तीसरे खजाची नागपुर साइन्स कॉलेज में एफ० ए० में शिक्षण पाते है।

वाल जाति की मर्दुमशुमारी के सम्बन्ध में कुछ जानने योग्य बातें

ादी १९३१ की गणना से	मर्द	स्त्रियां	कुल
र राज्य	१,९४७	१५६११	३७५६८
र राज्य मारवाड़)	४४४३५	५१३६१	९६७९६
(उदयपुर)	२२२१८	२३०९७	४८३१५
[illegible]	३५४३	४६३०	८१६६

बीकानेर में प्रेक्टिस करते है, एव यहाँ के नामी वकील माने जाते है। आप बडे मिलनसार एवं समझ युवक हैं। तथा स्थानीय ओसवाल जैन पाठशाला एव महावीर मंडल की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर है आप शुद्ध खादी पहिनते हैं।

मेहता रतनलालजी, जतनलालजी कोचर का खानदान—हम ऊपर मेहता चन्द्रसेनजी तथा उन पुत्र अजबसिंहजी एव अनोपचन्दजी का परिचय दे चुके है। मेहता अनोपचन्दजी फरासखाने के मुसर थे। आपके आसकरणजी, माणकचन्दजी एवं हठीसिहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मेहता हठीसिंहजी पुत्र रिखनाथजी हुए, जो आसकरणजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता रिखनाथजी राज्य में सर्विस क रहे। आप बड़ी धार्मिक वृति के पुरुष थे। आपके सुजानमलजी, चुन्नीलालजी एवं पन्नालालजी नामक पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने भी स्टेट की अच्छी सेवकाई की। मेहता पन्नालालजी, राव छतरसिंहजी के वे साथ महाजन, बीदासर तथा नौहर की लडाइयों में शामिल हुए थे। आपके अनाडमलजी तथा जसकरण नामक २ पुत्र हुए। मेहता अनाडमलजी ने बीकानेर स्टेट के कस्टम विभाग के स्थापन मे अच्छा सहयोग लि था। आप चतुर एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपके रतनलालजी, जतनलालजी एव राजमलजी नाम ३ पुत्र हुए, इनमें जतनलालजी मेहता जसकरणजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता जसकरणजी का स्व वास संवत् १९७५ में हुआ। मेहता रतनलालजी इस परिवार में बहुत समझदार एव अपने समाज सम्माननीय व्यक्ति थे। सवत् १९८९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे बंधु मेहता जतनलालजी जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप लगभग ३५ सालों से बीकानेर रियासत में सर्विस करते है। ए इस समय कस्टम सुपरिटेन्डेन्ट के पद पर हैं। आपने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाने में अच्छा ल दिया है। आपके पुत्र चम्पालालजी, कन्हैयालालजी एवं शिखरचन्दजी है।

मेहता चम्पालालजी बी० ए० एल० एल० बी०—आपका जन्म संवत् १९६५ में हुआ। स १९२८ में आपने बनारस युनिवर्सिटी से बी० ए० एवं सन् १९३१ में एल० एल० बी० की डिग हासिल की। इसके पश्चात् आप बीकानेर स्टेट में नायब तहसीलदार, तहसीलदार एव इंचार्ज नाजि के पद पर कार्य्य करते रहे, एव इस समय आप असिस्टेंट टू दि रेवेन्यू कमिश्नर बीकानेर है। आप ब सुशील, होनहार एवं उग्र बुद्धि के युवक हैं। इतनी अल्प वय में जिम्मेदारी पूर्ण ओहदों का कार्य्य ब तत्परता से करते हैं। आपके छोटे बंधु कन्हैयालालजी बी० ए० की तयारी कर रहे है। तथा उनसे छो शिखरचन्दजी बनारस युनिवर्सिटी में बी० ए० में पढ़ रहे है। आपके काका मेहता राजमलजी व्यापार कर हैं। इनके बड़े पुत्र सिरेमलजी मेट्रिक में पढ़ते हैं।

मेहता शिवबख्शजी कोचर का खानदान—हम ऊपर लिख आये है कि मेहता चन्द्रसेनजी छोटे भाई इन्द्रसेनजी थे। इनके पश्चात् क्रमश हरीसिंहजी, गाजीमलजी, प्रतापमलजी एव चुन्नीलाल हुए। मेहता चुन्नीलालजी के मलूकचन्दजी एव जेठमलजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों भाई स्टेट में सर्विस करते रहे। इनमें मेहता मलूकचन्दजी सवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए। आपके शिवबख्शजी तथा हीराचन्दजी नामक २ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें हीराचन्दजी, जेठमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं मेहता शिवबख्शजी का जन्म सवत् १९३९ में हुआ। मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर सन् १९०० में आ

५—किशनगढ़ स्टेट	.	८५९	७५७	१
६—प्रतापगढ़	..	६६१	६८९	१
७—नाशिक जिला में	.	३२१८	२७५१	७
योग ७ प्रांतों का		९०८८१	९८८९६	१८९

१—पंजाब में* कुल २३२ गांवों में ३३६६ घर निवास करते हैं। उनमें आबादी संख्या १४२६७

इन प्रान्तों के अलावा ओसवाल जाति की आबादी सी० पी०, बरार, खानदेश, कर्नाटक, अहमदनगर, मद्रास प्रान्त, निजाम स्टेट, बिहार, यू० पी०, बंगाल आसाम आदि प्रान्तों जिनकी आबादी इनमें शुमार करने से इतनी या इससे अधिक संख्या हो जाना सम्भव है।

राजपूताना और अजमेर मेरवाड़ा में ओसवाल आबादी

नाम प्रान्त	सन् १९०१ में	सन् १९११ में	सन् १९२१ में	सन् १९३१
राजपूताना	२०९१८८	२०९९६५	१८०९५४	१९७४६
अजमेर मेरवाडा	९५४७	१४२७८	१२३९६	१३५३

सन् १९३१ की मृदुमशुमारी के अनुसार

	नाम प्रान्त	कंवारे	ब्याहे	विधुर और विधवाएँ	योग
जोधपुर स्टेट	मारवाड़ में मर्द	२४००१	१६९४९	४४४५	४७३९५
	,, औरतें	१६७९५	२१५०२	१३०६४	५१३६१
	योग	४०७९६	३८४५१	१७५०९	९६७५६
उदयपुर स्टेट	मेवाड़ में मर्द	१२४२०	१०१९४	२६ ४	२५२१८
	,, औरतें	७६६४	१०४१४	५०१९	२३०९७
	योग	२००८४	२०६०८	७६२३	४८३१५
जोधपुर तथा मेवाड़ का कुल योग		६०८८०	५९०५९	२५१२७	१४५०६६
नाशिक जिले में†	..	२६९०	२३४३	९३६	५९६९

नोट—यह अवतरण हमें जोधपुर के इतिहास वेत्ता श्री कुँवर जगदीशसिंहजी गहलोत द्वारा प्राप्त हुए। धन्यवाद

*यह संख्या केवल पंजाब के श्वे० स्था० आम्नाय माननेवाले कुटुम्बों की है। इनमें अग्रवाल कुटुम्ब जो स्था० सम्प्र मानते हैं। उनकी गणना भी शामिल है। लेकिन तौभी इस संख्या में विशेष भाग ओसवाल जाति का है। अलावा मन्दिर सम्प्रदाय के भी पंजाब में सैंकड़ों घर हैं। यदि उपरोक्त संख्या में जैन श्वे० मन्दिर आम्नाय के भी जोड़ दें तो पंजाब के ओसवालों की गणना लगभग १० हजार की हो जायगी।

† यह गणना नाशिक जिला ओसवाल सभा के अधिवेशन के समय मई १९३३ में की गई थी।

"सिलवर मेडल घडी" देकर आपकी इज्जत की थी। आप के यहाँ "जेठमल लखमीचन्द" के नाम से बेकिंग व जमीदारी का कार्य्य होता है, एव बीकानेर स्टेट के प्रतिष्ठा प्राप्त परिवारों मे इस कुटुम्ब की गणना है। यह परिवार श्री श्वे० जैन तेरापंथी आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ जेठमल लखमीचन्द फर्म के वर्तमान मुनीम चम्पालालजी चोरडिया है। आपके पितामह सेठ चिमनीरामजी चोरड़िया रिणी से भादरा आये। इनके पुत्र सेठ बींजराजजी चोरडिया सेठ लखमीचंदजी के समय उनके यहाँ मुनीम हुए। तथा मालिकों के कारबार को आपने बहुत बढाया। भादरा की जनता में आप बडे आदरणीय सम्माननीय एव वजनदार पुरुष थे। सम्वत् १९७१ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चम्पालालजी भी प्रतिष्ठित, मिलनसार एव सज्जन व्यक्ति है।

सेठ सतोपचन्दजी सदासुखजी सिंघी, नौहर

जोधपुर के सिंघी परिवार से इस कुटुम्ब का निकट सम्बन्ध था। वहाँ से १७५ वर्ष पूर्व यह परिवार "छापर" आया, एवं वहाँ से "सवाई" में आबाद हुआ। सवाई से सिंघी परिवार सरदारशाह, सुजानगढ़ नौहर आदि स्थानों में जा बसा। सवाई से लगभग १५० साल पूर्व इस परिवार के पूर्वज लाल चन्दजी के पिताजी नौहर आये। सिंघ लालचन्दजी के खेतसीदासजी, मेघराजजी तथा चौथमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें खेतसीदासजो सवा सौ साल पूर्व आसाम प्रान्त के जोरहाट नामक स्थान में गये। कहा जाता है कि आपकी होशियारी से खुश होकर जोरहाट के तत्कालीन अधिपति ने आपको अपनी रियासत का दीवान बनाया। १८ साल में कई लाख रुपयों का जवाहरात लेकर आप वापस नौहर आये। तथा आपने यहाँ सराफे का रोजगार शुरू किया। सवत् १९२५ आप स्वर्गवासी हुए। आपके पूरनमलजी तथा रिखबचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। सेठ पूरनमलजी नौहर के म्युनीसिपल मेम्बर व प्रतिष्ठित पुरुष थे। आप बडे दयालु स्वभाव के थे। संवत् १९५६ में आपने जनता की अच्छी सहायता की थी। सवत् १९८४ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र सेठ संतोपचन्दजी का जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आप भी नौहर के अच्छे प्रतिष्ठित एव शिक्षा प्रेमी सज्जन हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपैलेटी तथा धर्मादा कमेटी के मेम्बर हैं। आपने अपने पुत्रों को शिक्षित करने की ओर काफी लक्ष दिया है। सेठ संतोपचन्द्रजी श्री जैन तेरापथी सम्प्रदाय का अच्छा ज्ञान रखते है। आपके इस समय सदासुखजी, हीरालालजी, रामचन्द्रजी, पांचीलालजी एवं इन्द्रचन्दजी नामक ५ पुत्र है। इन बन्धुओं में सिंघी रामचन्द्रजो बी० ए० पास करके दो साल पूर्व चार्टेड अकाउटेंसी का अध्ययन करने के लिये लदन गये हैं। सदासुखजी, हीरालालजी एव पाचीलालजी का भी शिक्षा की ओर अच्छा लक्ष है। आप तीनों भाई फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। इस समय आपके यहाँ "संतोपचन्द सदासुख" के नाम से ११ आर्मेनियन स्ट्रीट में पाट का व्यापार होता है। श्री सदासुखजी के पुत्र भँवरलाल, जसकरण, हीरालालजी के पुत्र रतनलाल एवं रामचन्द्रजी के पुत्र जयसिंह हैं। नौहर में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। इसी तरह इस कुटुम्ब में सेठ, रिखबचन्दजी के पुत्र कालूरामजी नेपाल में व्यापार करते थे। सवत् १९८० में आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र वेगराजजी कलकत्ते में एफ० ए० में पढ़ रहे है।

के ओहदे पर नहीं रहे फिर भी उदयपुर के राजकीय वातावरण में आपका बहुत अच्छा प्रभाव रहा है। आप यहाँ की महद्राज सभा के मेम्बर हैं। दिल्ली के अंतर्गत् देशी रियासतों का प्रश्न हल करने के लिए एक कमेटी के सम्बन्ध में जो बैठक हुई थी उसमें चेम्बर आफ् प्रिंसेस की तरफ से स्पेशल आर्गेनिझेशन का एक आफ़िस खुला था। उसमें राज्य की ओर से जो कागजात् भेजे गये, उन्हें महाराणा साहब की आज्ञानुसार आप ही ने तैय्यार किये तथा उन्हें लेकर आप ही देहली भेजे गये। इसी प्रकार और भी राजनैतिक बातों में स्टेट में आपका अच्छा प्रभाव है।

सिंघी बछराजाजी

आपका जन्म जोधपुर के सिंघी इन्द्रराजजी के भाई के खानदान में संवत् १९०५ में हुआ। महाराजा जसवंतसिंहजी (जोधपुर) के आप बड़े कृपा पात्र रहे। आपने संवत् १९४६ से संवत् १९५६ तक जोधपुर में बक्षीगिरी (Commander-in-Chief) का कार्य्य किया और वहाँ की स्टेट कौन्सिल के मेम्बर रहे। सिंघवी भीमराजोत खानदान में आपने अच्छा नाम और सन्मान पाया। मुत्सुद्दियों के अंतिम सरदार इन्होंने कई स्थानों पर अपनी बहादुर प्रकृति का अच्छा परिचय दिया। संवत् १९५६ में आपको कई कारणों की वजह से जोधपुर से उदयपुर आना पड़ा। यहाँ रियासत ने आपका बहुत सम्मान किया १०००) एक हजार रुपया मासिक उनके हाथ खर्चे के लिये देकर उन्हें सम्मान पूर्वक यहाँ रखा। संवत् में आप वापस जोधपुर बुलाए गये। उस समय महाराणा फतेसिंह जी ने बछराजजी की दावत स्वीकार की और रवाना होते समय दोनों पैरों में सोना बक्षा। जोधपुर में आपको अंतिम समय तक ६००) मासिक पेंशन मिलती रही।

मेहता भोपालसिंहजी जगन्नाथसिंहजी

मेहता भोपालसिंहजी भी उदयपुर के ओसवाल मुत्सुद्दियों में बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए। केवल १८ वर्ष की अवस्था में राशमी जिले के हाकिम नियुक्त हुए। इसी समय मेवाड राज्य में सेटलमेंट का नया काम जारी किया गया जिसके खिलाफ राशमी जिले के किसानों और जाटों ने बहुत जोरों का आन्दोलन उठाया और उपद्रव करना प्रारम्भ किया। इस समय आपने बहुत बुद्धिमानी से उन लोगों को समझाया तथा सेटलमेंट का कार्य्य शान्ति पूर्वक करवाने में बहुत मदद दी। वहाँ से बदल कर आप माडल जिले में गये। वहाँ जाकर आपने वहाँ की आमदनी को बहुत बढ़ाया। इससे प्रसन्न होकर महाराणा फतेसिंहजी ने आपको पैर क बक्षी। संवत् १९४६ में आप रेव्हेन्यू सेटलमेंट आफिसर नियुक्त किये गये। उस कार्य्य को आ

कर आपको सम्मानित किया। कुछ समय तक आप महकमा देवस्थान और जिला गिरवा के
भी रहे।

आपके पुत्र न होने से आपके यहाँ कुं० दलपतसिंहजी दत्तक आये। आप सन् १९२४ में मिरां
में मुलाजिम हुए। वहाँ करीब ७ वर्ष तक मैजिस्ट्रेट, वकील आव्, असिस्टेन्ट चीफ मिनिस्टर,
मिनिस्टर इत्यादि ऊँचे २ पदों पर काम करते रहे। सन् १९२१ में आपको शाहंशाह हिन्द की
गवर्नमेंटी फौज में (In His Majesty's Land forces) लेफ्टिनेन्ट का काम इनायत
आपको कई अंग्रेज हाई ऑफिसर्स ने कई सार्टिफिकेट दिये हैं जिन्हें हम आपके पारिवारिक इति
साथ देंगे।

मेहता तेजसिंहजी

आप स्वर्गीय मेहता रामसिंहजी के वंशज हैं आप कई वर्षों से उदयपुर के वर्त्तमान
साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी का कार्य्य कर रहे हैं। आप बड़े योग्य, अनुभवी, विद्याप्रेमी एवं मिलनसा
हैं। प्रत्येक सत्कार्य्य में आपकी बड़ी सहानुभूति रहती है। आपके छोटे भाई डाक्टर मोहनसिंहजी
एम० ए० एल० एल० बी० पी० एच० डी० बैरिस्टर एट लॉ उदयपुर राज्य के रेव्हेन्यू कमिश्नर है।
विद्वान, देशभक्त, स्वार्थत्यागी और शिक्षा के बड़े ही प्रेमी है। भारतीय युवकों के हृदयों को सु
प्रकाशित कर उनमें उच्च चरित्र का संगठन करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना कि वे भारत का
भविष्य निर्माण कर सकें यह आपके जीवन का प्रधान लक्ष्य है। सरकारी अफसर होते हुए भी
जीवन सार्वजनिक है। आपने उदयपुर में एक विद्याभवन नामकी संस्था खोल रक्खी है। वह भारत
इनी गिनी आदर्श संस्थाओं में से एक है।

पौत्रों के समय में भी ओसवाल मुत्सुद्दियों का खूब दौर दौरा रहा। महाराजा की अधीनता में वे शासन के प्रधान सूत्रधार रहे।

जैतसिंहजी और ओसवाल मुत्सुद्दी

राव लूनकरनजी के बाद राव जैतसिंहजी बीकानेर के नरेश हुए। आपके समय में वर्सी और उनके पश्चात् उनके पुत्र नगराजजी प्रधान मन्त्री के पद पर अधिष्ठित हुए। आप बड़े राजनीतिज्ञ कुशल शासक थे। तत्कालीन दिल्ली सम्राट की सेवा में भी आपको रहना पड़ा था। वहाँ आपने चतुराई से सम्राट को बहुत खुश कर लिया और बीकानेर का उससे हित साधन करवाया।

इसी समय जोधपुर के प्रतापी महाराजा मालदेव ने जाङ्गल (वर्त्तमान बीकानेर राज्य) पर अधिकार करने की इच्छा प्रदर्शित की। यह बात तत्कालीन बीकानेर नरेश जैतसिंहजी को मालूम होगई पर महाराजा जैतसिंहजी ने नगराजजी को कहा कि मालदेव से विजय प्राप्त करना कठिन है। इसलिए यह है कि उनके चढ़ आने के पहले ही सम्राट शेरशाह की सहायता प्राप्ति का प्रबन्ध कर लिया जाय। न होगा कि नगराजजी सम्राट् शेरशाह की सेवा में पहुँचे और उन्होंने सम्राट को मालदेव के ऊपर करने के लिये उकसाया। लेकिन सम्राट् शेरशाह की सहायता पहुँचने के प्रथम ही मालदेव के सा करते जैतसिंहजी मारे गये और बीकानेर पर मालदेवजी का अधिकार हो गया। इसके कुछ समय बाद शेरशाह एक बहुत बड़ी फौज के साथ मारवाड़ पर चढ़ आया। मारवाड़ के राव मालदेवजी ने बड़ा के साथ उसका मुकाबिला किया। वीर राठोड़ों की बहादुरी के सामने शेरशाह बादशाह किंकर्त्तव्य वि गया। उसके सामने निराशा का अंधकार छागया, वह वापस लौटना ही चाहता था कि वीरमदेव मेड़ता के एक-सरदार के षड़यंत्र और चालाकी से सारा पासा उलट गया। सम्राट शेरशाह की वि गई और इस तरह नगराजजी ने शेरशाह की मदद द्वारा मालदेव से बीकानेर का राज्य छीनकर जैतसिं पुत्र कल्याणसिंहजी को दिला दिया।

राव कल्याणसिंहजी और ओसवाल मुत्सुद्दी

राव कल्याणसिंहजी ने संवत् १६०३ से लेकर संवत् १६३० तक बीकानेर का राज्य किया। समय में भी शासन की बागडोर प्रायः ओसवाल मुत्सुद्दियों के ही हाथ में रही। राव कल्याणमलजी ने पूर्व मंत्री नगराजजी के पुत्र संग्रामसिंहजी को अपना प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। संग्रामसिंहजी ने शत्रुञ्ज तीर्थों की यात्रा के लिये संघ निकाले। जब आप यात्रा करते हुए चित्तोड़गढ़ में आये तब वहाँ के तत्

सेठ थानमलजी मुहणोत, बीदासर (बीकानेर स्टेट)

इस परिवार का मूल निवास तोसीणा (जोधपुर) है। यहाँ से मुहणोत मंगलचंदजी सं० १८९० में बीदासर आये। यहाँ से लगभग स० १९१० में आपके पुत्र कुन्दनमलजी व्यापार कलकत्ता गये। स० १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मुहणोत थानमलजी का जन्म १९२५ मे हुआ। आप भी सं० १९४६ में कलकत्ता गये, तथा सेठ थानसिंह करमचन्द दूगड के यहां मे कारबार करते रहे। सं० १९७२ में आपने तथा बीदासर निवासी सेठ दुलीचन्दजी और सुजानगढ़ के सेठ नेमीचन्दजी डागा ने मिल कर भागीदारी में कलकत्ते में जूट वेलर का व्यापार किया, तथा इस व्यापार में आप सज्जनों ने अपनी होशियारी, चतुराई और बुद्धिमानी से अच्छी सम्पत्ति व सम्मान उपार्जित किया। एव अपनी फर्म की शाखाए रंगपुर, भाँगडिया, नागा आदि जगहों में। इस समय आप तीनों सज्जनों का व्यापार "दुलीचन्द थानमल" के नाम से १०५ पुराना चीना बाजार में होता है। सेठ थानमलजी, बिदासर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको सन् १९३२ मे वीकानेर दरबार ने पैरों में सोना पहिनने का अधिकार बख्शा है। आपके पुत्र कानमलजी एव मागीलालजी हैं।

श्री सेठ कस्तूरचन्द उत्तमचन्द छाजेड़, मद्रास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ उत्तमचन्दजी छाजेड हैं। आप सरल प्रकृति के सज्जन हैं। आप कस्तूरचन्दजी छाजेड के पुत्र हैं। आपका मूल निवास वीकानेर है। आप मद्रास के चांदी सोने के व्यवसायी हैं। एव मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। खेद है कि आपका परिचय न आने से विस्तृत नहीं छपा जा सका। आपके फोटो "छाजेड" गौत्र में छापे गये है।

श्री सुगनचन्दजी गोलेछा, अमरावती

आप शिक्षित सज्जन हैं। एव इस समय अमरावती (वरार) में इनकम टेक्स आफीसर के कार्य करते हैं। वहाँ के सरकारी आफीसरों में एव जनता में सम्माननीय व्यक्ति है। खेद है कि परिचय प्राप्त न होने से जितनी हमारी जानकारी थी, उतना ही लिखा जा रहा है।

श्रीयुत लक्ष्मीलालजी बोरड़िया, इन्दौर

आपका मूल निवासस्थान उदयपुर है। आपने आरम्भ में बांसवाडा राज्य में सर्विस की। आपने इन्दौर में असिस्टेंट गेजेटियर आफिसर, असिस्टेंट प्रेस सुपरिटेन्डेन्ट आदि अनेक पदों पर काम किया। इस समय आप कॉटन ऑफिस में ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर अधिष्ठित है। आप उदार तथा उन्नत विचारों के सज्जन है। आपके ५ पुत्र हैं। सबसे बड़े पुत्र केसरीमलजी इन्दौर कालेज में प्रोफेसर है। और दूसरे पुत्र नन्दलालजी बोरडिया इन्दौर के महाराजा तुकोजीराव अस्पताल में हैं। तीसरे पुत्र नोरतनमलजी इलाहाबाद में बी० ए० में पढ़ते हैं। तथा चौथे पुत्र चन्द्रसिंहजी इन्दौर में शिक्षा पा रहे हैं। आप सभी सज्जन बड़े उन्नत तथा समाज सुधारक विचारों के हैं। उन्नत विचारों वाला है और इन्दौर में इस परिवार ने परदा प्रथा को तिलाजलि देकर समाज के अनुकरणीय आदर्श रक्खा है। आपके प्रथम तीनों पुत्र देशभक्त भी है।

श्री कर्मचन्दजी बच्छावत प्रधान, बीकानेर.

श्री मेहता अगरचन्दजी प्रधान, उद

श्री मेहता देवीचन्दजी प्रधान, उदयपुर.

श्री मेहता शेरसिंहजी प्रधान, उदयपुर

सेठ समीरमल भेरूदान फतेपुरिया, अमरावती

इस परिवार के पूर्वज सेठ भेरूदानजी दूगड ११ साल की आयु में सम्वत् १९११ में अमरावती आये। आपने यहाँ होशियार होकर "धर्मचंद केशरीचद" भेरूदान जेठमल, तथा पूरनमल प्रेमसुखदास नामक दुकानों पर सर्विस की। सम्वत् १९४५ मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ समीरमलजी दूगड का जन्म सवत् १९२७ में हुआ। आप अपने पिताजी के स्थान पर संवत् १९८२ तक "सेठ पूरनमल प्रेमसुखदास" के यहाँ मुनीमात करते रहे। इस समय आपके यहाँ आढत, रुई, दलाली तथा किराये का व्यापार होता है। अमरावती के ओसवाल समाज में आप समझदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन है।

सेठ रावतमल करनीदान गोलेछा, मद्रास

यह परिवार खिचद (मारवाड) का निवासी है, तथा श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। सेठ शोभाचन्दजी गोलेछा के पुत्र करनीदानजी और रावतमलजी हुए। सेठ करनीदानजी ने संवत् १९३८ में मद्रास में दुकान खोली। इसके पूर्व इनका विजगापट्टम तथा बम्बई में व्यापार होता था। संवत् १९४८ में करनीदानजी का स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र जवानमलजी तथा सदासुखजी ने और सेठ रावतमलजी के पुत्र बख्तावरमलजी और अगरचंदजी ने व्यापार को विशेष बढ़ाया। सेठ बख्तावरमलजी ने अंग्रेजों के साथ व्यापार कर बहुत उन्नति प्राप्त की। आप खिचद व आसपास की पंचपचायती मे सम्माननीय व्यक्ति थे। सवत् १९७२ में ४५ साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके ३ साल बाद आपके पुत्र किशनलालजी भी स्वर्गवासी होगये, अत उनके नाम पर विजयलालजी दत्तक आये हैं। आप विद्यमान है।

गोलेछा अगरचंदजी के कँवरलालजी, घेवरचदजी, विजयलालजी, नेमीचन्दजी तथा लालचदजी नामक पुत्र विद्यमान हैं। इसी प्रकार सेठ जवानमलजी के पुत्र राजमलजी, अमरचदजी तथा भँवरलालजी और सदासुखजी के पुत्र जीवनलालजी, माणिकलालजी तथा सुखलालजी विद्यमान है। इनमें विजयलालजी, किशनलालजी गोलेछा के नाम पर दत्तक गये हैं। आप लोगों का मद्रास के "वेपेरी सुला" नामक स्थान में व्याज और बैंकिंग व्यापार होता है।

सेठ चौथमल दुलीचन्द दस्साणी, सरदारशहर

इस परिवार का मूल निवास स्थान अजमेर है। वहाँ से यह परिवार बीकानेर, डाइसर आदि स्थानों में निवास करता हुआ सरदारशहर के बसने के समय यहाँ आकर आबाद हुआ। यहाँ दस्साणी हुकुमचन्दजी आये। आप के सालमचन्दजी, चौथमलजी एव मुलतानचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप वधु सवत् १८८० के लगभग लखनऊ गये। कहा जाता है कि लखनऊ के नवाब से इनका मैत्री का सम्बन्ध था। सन् १९१४ में गदर की लूट होने से आप लोग सरदारशहर चले आये। इन भाइयों में सालमचन्दजी तो बीकानेर दत्तक गये। और सेठ चौथमलजी एव मुलतानचन्दजी संवत् १९१५ में कलकत्ता गये। एवं मुलतानचन्द दुलीचन्द के नाम से कपडे का व्यापार आरभ किया। सवत् १९३५ में इस दुकान पर गरम और रेशमी कपडे का धन्धा शुरू हुआ। आप दोनों भाई क्रमश सवत् १९४९ में तथा १०३४ में स्वर्ग वासी हुए। सेठ चौथमलजी के दुलीचन्दजी, केसरीचन्दजी, सुरजमलजी, मग

श्री कर्मचन्दजी बच्छावत प्रधान, बीकानेर.

श्री मेहता अगरचन्दजी प्रधान, उदयपु

श्री मेहता देवीचन्दजी प्रधान, उदयपुर.

श्री मेहता शेरसिहजी प्रधान, उदयपुर

सेठ कोडामलजी और मुलतानचन्दजी के भैरोंदानजी नामक पुत्र हुए। सेठ चौथमलजी १० साल की उमर में संवत १९२४ में कलकत्ता गये। आपने अपनी दुकान के व्यापार व सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत १९६० में सेठ दुलीचन्दजी का भाग मुलतानचन्दजी से अलग हो गया, तब से दुलीचन्दजी अपने पुत्रों के साथ कारबार करने लगे। इसी साल आप अपनी दुकान का काम अपने भाइयों के जिम्मे कर सरदारशहर में आ गये एवं धार्मिक जीवन बिताते हुए संवत् १९८६ में स्वर्ग वासी हुए। आपने त्याग और तपस्या के बड़े २ कार्य्य किये। अपनी पत्नी के साथ ३१ दिनों के उपवास किये। जीवन के अन्तिम ५ सालों में आप केवल ८ वस्तुओं का उपयोग करते थे। संवत् १९७५ में सेठ दुलीचन्द के सब भ्राताओं का कारबार अलग २ हो गया। सेठ दुलीचन्दजी के सतोपचन्दजी, धनराजजी, मोतीलालजी, नथमलजी, चंदनमलजी, सदासुखजी एवं कुशलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें सतोपचन्दजी को छोड़ कर शेष सब भाई मौजूद हैं। सेठ सतोपचन्दजी ने इस फर्म पर इम्पोर्ट व्यापार शुरू किया। आप बुद्धिमान् एव व्यापार चतुर पुरुष थे। आप सवत् १९७४ में स्वर्ग वासी हुए। आपके पुत्र मानमलजी एव इन्द्रचन्दजी हैं। आपके छोटे भ्राता सेठ धनराजजी ने सवत् १९७५ में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की है।

इस समय सेठ "चौथमल दुलीचन्द" फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी, नथमलजी, चन्दनमलजी, कुशलचन्दजी एवं सेठ कोडामलजी के पुत्र रिधकरणजी हैं। इन भाइयों में मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी तथा रिधकरणजी फर्म के प्रधान सचालक हैं। आप सज्जनों के हाथों से व्यापार की उन्नति हुई है। आप बन्धुओं के साथ अन्य भाई भी व्यापार में सहयोग देते हैं। सेठ मोतीलालजी समझदार सज्जन हैं। आप इस परिवार में सब से बड़े हैं। आपके पुत्र श्री शुभकरणजी को उनके मामा सुजानगढ़ निवासी सेठ हजारीमलजी रामपुरिया ने अपनी सम्पत्ति प्रदान की है। आप होनहार युवक हैं। वर्तमान में आप लोगों के यहाँ कलकत्ते के मनोहरदास कटला और केशोराम कटला में देशी विलायती कपड़े का व्यापार, व देशी मिलों के कपड़े की कमीशन सेलिंग एव बैंकिंग तथा जूट का व्यापार होता है। इसके अलावा [illegible] (बंगाल) में जूट और जमींदारी का काम होता है। यह परिवार सरदारशहर के ओसवाल समाज में बड़ा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ रावतमल प्रेमसुख गुलगुलिया, देशनोक (बीकानेर)

इस परिवार का मूल निवासस्थान नाल (बीकानेर) था। वहाँ से गुलगुलिया रामसिंहजी के पुत्र पीरदानजी तथा रावतमलजी सवत् १९२५ में देशनोक आये, तथा इन बन्धुओं ने यहाँ अपना स्थाई निवास बनाया। सवत १९३६ में सेठ पीरदानजी सिलहट गये और सवत् १९४२ में आपने मोल्वी बाजार (सिलहट) में दुकान खोली। २ साल बाद सेठ रावतमलजी भी मोल्वी बाजार आगये। सं० १९[illegible] में इस फर्म की एक ब्रांच श्रीमङ्गल में भी खोली गई। इन दोनों दुकानों पर "पीरदान रावतमल" के नाम से व्यापार होता था। सम्वत् १९६५ में दोनों बन्धुओं का कारबार अलग २ होगया। तब से मोल्वी बाजार की दुकान सेठ रावतमलजी के भाग में एव श्रीमंगल की दुकान पीरदानजी के भाग में आई। इन दुकानों पर पुराने नाम से ही व्यापार चालू रहा। सम्वत १९७८ में सेठ पीरदानजी स्वर्गवासी

कार्य्य किये जो उक्त धर्म के इतिहास मे सदा चिरस्मरणीय रहेगे। हम उन सब का वर्णन ओसवा धार्मिक महत्व नामक अध्याय मे विस्तार पूर्वक करेगे।

करमचन्दजी की दूरदर्शिता

हम मेहता करमचन्दजी की परम राजनीतिज्ञता और दूरदर्शिता के विषय मे पहले था लिख चुके हैं। इस सम्बन्ध मे उनके जीवन की एक घटना का और उल्लेख कर पाठकों के सामने उनक दर्शिता का जाज्वल्यमान उदाहरण उपस्थित करते हैं।

सम्राट् अकबर पर, जैसा कि हम पहले कह चुके है, मेहता करमचन्दजी का बहुत काफ़ा था। उक्त सम्राट कई वक्त उन्हे अपने दरबार मे बुलाया करते थे। इस समय भी उन्होने महाराज सिंहजी के द्वारा इन्हे अपने दरबार में बुलाया और आपका बडा सम्मान किया। बादशाह ने बडी के साथ आपको सोने के जेवर सहित एक बहुत मूल्यवान घोडा प्रदान किया। इतना ही नहीं, वे इन तरह २ की कृपाएं बताने लगे। इससे इन्होंने अपना शेष जीवन दिल्ली ही में बिताने को निश्चय इसका एक कारण यह भी था कि बीकानेर नरेश रायसिंहजी आपसे किसी कारणवश नाराज हो गा जान पड़ता है कि महाराज रायसिहजी के व्यवहार विशेष से इनकी कोमल आत्मा को धक्का पहुँचा और निराशा के मानसिक वातावरण मे गुजर कर वे देहली पहुँचे होंगे और सम्राट अकबर की इ कारण उन्होंने अपना भावी जीवन देहली में ही व्यतीत करना निश्चय किया होगा। कुछ वर्षों महाराजा रायसिंहजी दिल्ली आये और उन्होंने जब मेहता कर्मचन्दजी की बीमारी का हाल सुना तब वे हवेली में पधारे और आँखों में आँसू भर कर उन्हे कई प्रकार से सान्त्वना देने लगे। व्यवहारिक करमचन्दजी ने भी महाराजा साहब को धन्यवाद दे दिया पर महाराजा साहब के चले जाने पर करमच ने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि महाराज के आँखों में आँसू आने का कारण मेरी तकलीफ नहीं है इसका वास्तविक कारण यह है कि वे मुझे सजा नही दे सके। इसलिये तुम कभी बीकानेर मत जाना।

सूक्ष्मदर्शी राजनीतिज्ञ करमचंदजी की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। सफल राजन मानवी प्रकृति का गंभीर ज्ञाता होता है और करमचन्दजी ने महाराजा की मनोवृत्ति का अध्ययन कर जो वास्तविक सत्य निकाला, वह उनकी परम दूरदर्शितामयी राजनीतिज्ञता पर बड़ा ही दिव्य डालता है।

थोडे ही दिनों मे करमचंदजी का शरीर इस ससार में न रहा। इसके बाद ही संवत राजा रायसिहजी बुरहानपुर में बीमार पड़ गये। उस समय उन्हें अपने बचने की कोई आशा न

सेठ मोतीलालजी हीरालालजी सिंघी, बीकानेर

यह परिवार मूल निवासी किशनगढ़ का है। वहाँ से सिंघी शेरसिंहजी, बीकानेर आये। आपके पुत्र सिंघी कुंदनमलजी व्यापार के लिए बीकानेर से बंगाल गये। तथा ढाका और पटना में गल्ला का व्यापार आरंभ किया। आपके सिंघी बख्तावरचन्दजी तथा सिंघी मोतीलालजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों बंधु भी बंगाल प्रान्त में व्यापार करते रहे। सेठ मोतीलालजी सिंघी से पुत्र हीरालालजी का जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आपने संवत् १९६९ में कलकत्ते में कपड़े की दुकान खोला। आप बीकानेर के ओसवाल समाज में अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। इस समय आप "मोतीलाल हीरालाल" के नाम से कलकत्ते में कपड़े का व्यापार करते हैं।

सेठ शालिगराम लूनकरण* दस्साणी का खानदान, बीकानेर

सेठ हीरालालजी दस्साणी—इस परिवार के पूर्वज सेठ हीरालालजी दस्साणी का जन्म सं० १८८१ में हुआ। आप बीकानेर में कपड़े का व्यापार करते थे। तथा वहाँ की जनता और अपने समाज में गण्य मान्य पुरुष माने जाते थे। बीकानेर दरबार श्री सरदारसिंहजी एवं श्री डूँगरसिंहजी के समय में आप राज्य को आवश्यक कपड़ा सप्लाय भी करते थे। आपके उदयचन्दजी तथा सालिगरामजी नाम के २ पुत्र हुए।

सेठ उदयचन्दजी दस्साणी—आपका जन्म सम्वत् १९१० में हुआ। आप बीकानेर के दस्साणी परिवार में सर्व प्रथम कलकत्ता जाने वाले व्यक्ति थे। बाल्यकाल ही में आपने पैदल राह से कलकत्ते की यात्रा की। एवं वहाँ १२ सालों तक व्यापार कर आप वापस बीकानेर आ गये। तथा यहाँ अल्पवय में सम्वत् १९३९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सुमेरचन्दजी दस्साणी हुए।

सेठ सालिगरामजी दस्साणी—आपका सम्वत् १९२२ में जन्म हुआ। आप बुद्धिमान, व्यापारदक्ष तथा प्रतिभाशाली सज्जन थे। आपने १३ साल की अल्पवय में पैदल राह द्वारा व्यवसायार्थ कलकत्ते की यात्रा की। एवं वहाँ कुछ समय व्यापार करने के अनंतर बीकानेर के माहेश्वरी सज्जन सेठ शिवदासजी गंगादासजी मोहता की भागीदारी में कपड़े का व्यापार चालू किया। तथा बाद में शालिगराम सुमेरमल के नाम से अपनी २ स्वतन्त्र दुकानें भी खोलीं। जिनमें एक पर देशीधोती तथा दूसरी पर विलायती मारकीन का प्रधान व्यापार होता था। इन व्यापारों में आपने कई लाख रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की थी। आप कलकत्ता मर्चेंट कमेटी के सदस्य थे। एवं अपने समय के समाज में प्रभावशाली तथा समझदार व्यक्ति माने जाते थे। सम्वत् १९७४ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लूनकरणजी, मंगलचन्दजी, सम्पतलालजी तथा सुन्दरलालजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ सुमेरमलजी दस्साणी— आप भी कलकत्ते के मारवाड़ी व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते थे। सम्वत् १९७६ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके स्वर्गवासी हो जाने के बाद असहयोग आन्दोलन के कारण उपरोक्त "सालिगराम सुमेरमल" फर्म का काम बंद कर दिया गया। साथ ही सेठ शिवदासजी गंगादासजी की फर्म से भागीदारी भी हटा ली गई। आपके पुत्र सतीदासजी तथा भँवरलालजी हैं।

---

* खेद है कि आपका परिचय समय पर न आने से यथा स्थान नहीं छापा जा सका।

से आगे चल कर जो वंश बढा और उनमे जो महाप्रतापी पुरुष हुए, उनका वर्णन उदयपुर के विभा
दिया गया है ।

जिस प्रकार वच्छराजजी तथा उनके वंशजों ने बीकानेर राज्य की बडी-बडी सेवायें कीं, वे
ओसवाल वंश के महाराव वेद वंश के मुत्सद्दियों ने भी उक्त राज्य की प्रशंसनीय सेवाएँ की । बीकानेर
की उत्पत्ति से लगाकर आगे कई वर्षों तक इस वंश ने जो महान कार्य्य किये हैं, वे बीकानेर के इ
में चिरस्मरणीय रहेगे ।

वेदों की ख्यातों में लिखा है कि जिस समय राव जोधाजी के पुत्र नवीन राज्य स्थापन क
अभिलाषा से जागलू देश (वर्तमान बीकानेर राज्य) में आये थे उस समय राव लाखनसींजी वेद भी
साथ थे । बच्छराजजी की तरह आपने भी बीकानेर शहर बसाने में बडे मार्के का हिस्सा लिया।
जाता है कि पहले-पहल बीकानेर के २७ मुहल्ले बसाये गये, जिनमें १४ मोहल्लों के बसाने में राव लाख
जी का सबसे प्रधान हाथ था ।

राव लाखनसिंहजी के पाँच पुश्त बाद मेहता ठाकुरसिंहजी हुए । आप बीकानेर के
थे । आपने कई युद्धों में बडा ही वीरत्वपूर्ण भाग लिया था । जिस समय तत्कालीन बीकानेर नरेश रा
मुगल सम्राट् अकबर की ओर से दक्षिण विजय के लिये गये थे, उस समय मेहता ठाकुरसिंहजी भी
साथ थे । इस युद्ध में विजय प्राप्त करने से सम्राट् अकबर राजा रायसिंहजी से बहुत प्रसन्न हुए और
कई परगने इनायत किये । इसी समय राजा रायसिंहजी ने मेहताजी के वीरत्व और रण कौशल्य से
होकर उन्हें भटनेर (हनुमानगढ़) नामक गाँव जागीर में देकर आपका सम्मान किया । आपके
आपके बेटे पोतों ने भी राज्य के कई ओहदों पर काम किया । आपकी आठवीं पुश्त मे मेहता म
जी हुए । ये बडे बहादुर और सिपहसालार थे । संवत् १९७० में बीकानेर महाराजा ने चुरु के सा
फौजी चढ़ाई की थी, उसमें आपभी महाराजा के साथ थे । वहाँ आपने बडे वीरत्व का परिचय दिया।
युद्ध में बरछी के घावों से आप घायल हुए । आपके रण कौशल्य से प्रसन्न होकर महाराजा ने आपको
देसर नामक एक गाव गुजारे के लिये दिया । संवत् १९१५ में आपके स्वर्गवास हो जाने पर तत्
बीकानेर नरेश महाराजा रत्नसिंहजी आपके मकान पर पधारे और श्रीमान ने अपने हाथों से सारी रस्में
अदा कीं । कहने का मतलब यह है कि वेद परिवार के कुछ सज्जनों ने सैनिक और राजनैतिक क्षेत्र में
मार्के के काम किये कि जिनके लिये स्वयं बीकानेर नरेशों ने आपका बड़ा आदर सत्कार किया ।

मेवाड़ में ठेका बांध दिया। इस काम में मेहता पन्नालालजी ने कोठारी केसरीसिंहजी को बड़ी मदद दी। ...रीजी के पश्चात महकमा माल के अफसर कोठारी छगनलालजी एवम् मेहता पन्नालालजी रहे।

इसके पश्चात संवत १९३० से १९३२ तक इनके जीवन में कई प्रकार की घटनाएं घटी जिनका वर्णन हम ...की फेमिली हिस्ट्री के साथ करेंगे। संवत् १९३२ की भादवा सुदी चौथ को फिर से उन्हें महकमा खास ...काम सौंपा गया। आपके महकमा खास में आने के बाद रियासत में कई नये काम हुए। संवत् १९३५ ...आपने स्टेट में सेटलमेंट की पद्धति को जारी किया। जो उस समय राजपूताने की सब रियासतों में ...ही थी। आपके हाथों से दूसरा महत्व पूर्ण कार्य विद्या के विषय में हुआ। आपके द्वारा यहां के ...ा-विभाग को बहुत प्रोत्साहन मिला। आप ही ने मेवाड़ के जिलों के अन्दर जहाँ पहले स्कूल और ...स्पटल नहीं थे, खुलवाये। इसी प्रकार और भी प्राय सभी विभागों में आपने अपनी बुद्धिमानी से बहुत ...र किया। भारत गवर्नमेंट ने आपको पहले पहल राय की पदवी प्रदान की। इसके पश्चात ही ...को सी० आई० ई० का सम्माननीय पद मिला। आपके कार्यों की प्राय सभी पोलिटिकल एजन्टस, ...जी० जी० तथा वाइसराय जैसे महानुभवों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की, तथा आपको कई सार्टीफिकेट ...न किये। इनमें से हम एक यहाँ दे रहे हैं शेष इनके पारवारिक इतिहास में देंगे।

> "Rai Pannalal is an intelligent energetic and hard working officer and has rendered great assistance to the Political Agent in the administration of the state during the minority. He is the only person capable of holding the high post, he now Occupies in the state."

यह पत्र संवत १८७६ में राजपूताने के तत्कालीन पोलिटिकल एजण्ट द्वारा दिया गया था। ...न लिखते हैं कि राय पन्नालालजी बड़े ही तीक्ष्ण बुद्धिवाले तथा उत्साही पुरुष हैं। महाराणाजी की नाबा- ...ी के समय में आपने मेवाड़ के राज्य कार्यों में मुझे बड़ी सहायता दी। आप बड़े परिश्रमी एवं इस ...ओहदे के योग्य महानुभाव हैं।

...हता फतेलालजी

आप मेहता पन्नालालजी सी० आई० ई० के पुत्र हैं। आप बाल्यावस्था से ही बड़े विलक्षण और मेधावी हैं। आपके साहित्यिक और सामाजिक जीवन के विषय में आपके परिचय के [illegible] ...राथ प्रकाश डालेंगे। राजनैतिक जीवन के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि आपका जीवन उदय- ...के राजकीय वातावरण में बहुत महत्वपूर्ण रहा है। यद्यपि आप अपने पिता की तरह [illegible]

ईसवी सन् १८४६ की ३ मईको तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड हार्डिञ्ज से आपकी मुला
वाइसराय महोदय आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने आपको खिल्लत बक्षी।

महाराव हिन्दूमल का प्रभाव राजस्थान के कई बडे २ नरेशों पर था। सम्वत् १८
महाराजा रत्नसिंहजी और उदयपुर के महाराणा सरदारसिंहजी लालीनाथजी के मन्दिर से वापिस
मेहताजी की हवेली मे गोठ अरोगने के लिए पधारे तब दोनों दरबारों ने आपको मोतियों का
कर आपका सम्मान किया। इस वक्त महाराणा साहब ने महाराजा रत्नसिंहजी से कहा कि हमारा
रियासत की भोलावन भी महारावजी को दे दी जावे। इस पर बीकानेर नरेश ने हिन्दूमलजी से
'महाराणा साहब की बात तुमने सुनली होगी, इस पर उन्होंने जवाब दिया कि "मैं जैसा बीकान
का सेवक हूँ वैसा ही उदयपुर की गद्दी का भी हूँ। मैं सेवा के लिये हर वक्त तैयार हूँ।"

महाराव हिन्दूमलजी बडे प्रभावशाली पुरुष थे। उन्होंने बीकानेर राज्य की बडी २ स
तत्कालीन बीकानेर नरेश ने बडी उदारता के साथ आपकी इन सेवाओं को अपने खास रुक्कों में
है। हम एक रुक्के की नकल ज्यों की त्यों यहाँ पर उद्धृत करते हैं।

"दसखत खास महाराव हिन्दूमल दीसी तथा म्हारो कूच सुणी ताकीदी मत
करजो उठरो सारो काम रो बनोवसत कर थारो हात वसु काम कर आवजो ताकीदी कर
बीगाड़े आये ना जे उठायो छे सुसारो सिरे चाढ़े ताकीदी की दी तो तेने म्हारी आण छे दू
समाचार मोहतो मूलचन्द रा कागदासु जाणसी श्री पुष्करजी व अजमेर आवजा अध
में मती आवजो मेनत कियोडी गुमाये ना थारी तो मोटी बदगी चाकरी छे पीढ़ी ताई की चा
छे थारो म्हा ऊपर हाथ छे ऊपर हाथ माथे राख चाकरी तै बनायो ने इसी ही चाकरी
देखाई पीढी रा साम धरमी चाकर छो इसी थे चाकरी करी छे तेसु म्हें उसरावण कदे नहु
इसी थे चाकरी करी छे अठे तो थारा बखाण हुए छे पण सुरग में देवता बखाण करसी
बदगी घणीरी हेर्ड छे जेरी कठा ताई लिखा सवत् १८८६ मिती आसोज सुद १० "

उक्त खास रुक्का पुरानी मारवाड़ी भाषा में है। इसका भाव यह है—हमारे
समाचार सुनकर ताकीद मत करना। वहाँ के (बीकानेर-राज्य) सारे काम का बन्दोवस्त कर
काम को अपने हाथ में करके आना। ताकीद करके काम बिगाड कर मत आना। जिस काम
लिया है उसे अच्छी तरह पूरा करना। अगर तेने जल्दी की तो तुझे हमारी सौगध है। दूसरा
मूलचद के पत्र से जानना। श्री पुष्करजी और अजमेर में आना। अपनी की हुई मिहनत

ता एवम बुद्धिमानी से संचालित किया तथा किसानों के साथ पूरी सहानुभूति रक्खी। संवत ६ में अकाल पड़ने से किसानों पर बहुत बकाया रहने लगा, तब आपने उनकी आर्थिक दशा का ख्याल उनको लाखों रुपयों की छूट दिलवाई। संवत १९६१ में आप महकमा खास के प्रधान नियुक्त हुए। काम को भी आपने बड़ी बुद्धिमानी के साथ संचालित किया।

आपके पुत्र मेहता जगन्नाथसिंहजी भी बड़े बुद्धिमान सज्जन हैं। आपके पिता मेहता भोपालसिंहजी स्वर्गवास हो जाने पर महाराणा साहब ने आपको अपनी सेवा का काम सिपुर्द किया। इसके पश्चात १९७१ में आपको तथा पं० शुकदेवप्रसादजी को महकमा खास के प्रधान बनाए। जब संवत १९७५ सिंहजी जोधपुर चले गये तब आप ही अकेले महकमा खास का काम करते रहे। इसके पश्चात संवत ७ में लाला दामोदरलालजी पं० शुकदेवप्रसादजी के स्थान पर आये। संवत १९८८ तक आप ही महकमा खास का काम करते रहे। वर्तमान में आप मेम्बर कौंसिल [illegible] के सर हैं।

री बलवन्तसिंहजी

मेहताजी की इस कारगुजारी की बडी तारीफ की थी। सम्वत् १९३४ में देहली दरबार में राज साहब की आज्ञा से आप गये थे। वहाँ आपको भारत सरकारने खिलअत आदि प्रदान कर सम्मान किया था।

सम्वत् १९३५ मे बेरी और रामपुरा के झगडो को निपटाने के लिये आप जयपुर भेजे गये। वहाँ पर आपने अपने कागजातों से सबूत देकर उक्त मामले को बहुत ही अच्छी तरह तय करवाया। इस समय आपने जिस बुद्धि-कौशल्य का परिचय दिया, उसकी तारीफ जयपुर के तत्कालीन पोलिटिकल एजट कर्नल बेन ने बहुत ही अच्छे शब्दों मे की है। इतना ही नहीं उक्त कर्नल महोदय ने आपकी कार-गुजारी की प्रशंसा में बीकानेर दरबार को भी पत्र लिखा था।

मेहता छोगमलजी बडे कुशल राजनीतिज्ञ और दूरदर्शी सज्जन थे। आप कई वर्षों तक बीकानेर की ओर से आबू पर वकील रहे। इसके अतिरिक्त आपने और भी कई बडे २ ओहदों पर काम किया। आप खास मुसाहिब और कौन्सिल के मेम्बर भी रहे। आपको तनख्वाह के अतिरिक्त सारा खर्च रियासत से मिलता था।

आप की महान् कारगुजारियों से प्रसन्न होकर बीकानेर दरबार ने डूंगराना, सरूपदेसर गाँव आपको जागीरी में प्रदान किये तथा आपके कार्य्यों की प्रशसा में बहुत से खास रुक्के बक्शे। १९४८ की माघ बुदी १० को आपका स्वर्गवास होगया। आपकी मृत्यु के पश्चात् बीकानेर नरेश गंगासिंहजी मातमपुरसी के लिये आपके घर पर पधारे और इस तरह आपकी सेवाओं का आदर किया।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके है, मेहता छोगमलजी को उनकी बड़ी २ कारगुजारियों पर तत्कालीन बीकानेर नरेशों की ओर से कई खास रुक्के (प्रशंसा पत्र) दिये गये थे, जिनमें से एक की नक्ल हम नीचे देते हैं।

१—'रुक्को खास महता छोगमलजी केसरीसिंघ दीसी सुपरसाद बचे तथा थारे घराणो रहू दीवे सू साामधरमी वा रियासत रा खैरखाही चित राख जे जिसी मुनासब चित राख बदगी करो छो तैसै म बोत खुस छा हणे थाने रियासत रा कारवाही वास्ते में मा मदकर मेलिया छे सुजीसो थारो भरोसो छे जिसी मुजब थे बरतो छो आ बदगी पीढीया तक याद रह जिसी छे सू थे सब तरे हिम्मत राख हर तेर जलदी कारवाही करेजा तेमें माहारा मरजी जादे वधसी व थारी बंदगी जादे समभसा अठेरो अवाल छतरसिंघ व हुकुमचंद लिखे तो मुजब जान सो था जीसा दाना समभवार किताहीक छे सू थाने रियासत री सरम व सु कही सू सकसो नहीं जादे काही लिखा सवत् १६४२ असाड़ सुदी ८"

उक्त रुक्के के आरंभिक हिस्से में कुछ खास घरू तौर की बातें हैं जो हमारे पाठकों के अधिक दिलचस्पी की नहीं होंगी। पर इसके अंत में जो कुछ कहा गया है, वह मेहता हरिसिंह प्रभाव को स्पष्ट करता है। वह इस प्रकार है। मेरे तो अब तुम्हीं हो। जो कुछ तुम्हारी गति वही मेरी भी होगी। तुम्हारी सब बातें हम स्मरण रक्खेंगे। चुरू और भादरा के रुक्के माफी तुम्हारी बिना सलाह के नहीं देंगे।

इसी प्रकार इस कुटुम्ब में मेहता केसरीसिहजी, मेहता अभयसिंहजी, मेहता उम्मसिंहजी, राव सवाईसिंहजी आदि आदि कई प्रभावशाली पुरुष हुए जिन्होंने अपने अपने समय में राज्य की सेवाएँ की। इन सबका विस्तृत विवरण हम आगे इनके पारिवारिक परिचय में देंगे।

दीवान अमरचन्दजी सुराणा

महाराजा सूरतसिंहजी के राज्यकाल में जिन ओसवाल मुत्सुद्दियों ने अपने महान कार्यों द्वारा राजस्थान के इतिहास में प्रसिद्धि पाई है उनमें अमरचन्दजी सुराणा का आसन बहुत ऊँचा है। सं० १८६२ (ई० सन् १८०५) में बीकानेर राज्य की ओर से सुराणा अमरचन्दजी जापताखाँ पर आक्रमण करने के लिये भेजे गये। इन्होंने उसकी राजधानी भटनेर को घेर लिया। जापताखाँ भी पाच मास तक बड़ी बहादुरी से लड़ा और अंत में विजय से निराश होकर वह किले से भाग गया। इस वीरता के उपलक्ष में महाराजा साहब ने अमरचन्दजी को दीवान के उच्च पद पर नियुक्त किया।

संवत् १८७२ में सुराणा अमरचन्दजी चुरू के ठाकुर शिवसिंहजी के मुकाबिले पर भेजे गये। आपने चुरू शहर को घेर लिया और उक्त शहर का आवागमन बिल्कुल बन्द कर दिया। इससे चुरू ठाकुर की कठिनाई बहुत बढ़ गई और अधिक समय तक युद्ध करने में असमर्थ हो गये। उन्होंने (चुरू ठाकुर) विजय की आशा छोड़ी और अपने अपमान के बजाय मृत्यु को उचित समझा और आत्मघात किया। बीकानेर के तत्कालीन महाराजा ने अमरचन्दजी की वीरता से प्रसन्न होकर उनको 'राव' की पदवी, एक खिलअत तथा सवारी के लिये एक हाथी प्रदान किया।

राजलदेसर का बेद परिवार

बीकानेर राज्य में राजलदेसर नामक एक गाँव है। कहा जाता है कि बीकानेर बसने के पूर्व यहाँ पर एक स्वतंत्र राज्य था। जिस समय इस स्थान पर राजा रामसिंहजी राज्य कर रहे थे उस समय मेहता हरिसिंहजी बेद नामक एक ओसवाल सज्जन उनके दीवान थे। उक्त बेद परिवार की स्थापना

doubt by our posterity as an historic event of great significance to the welfare of community

This adds another link to the chain which binds you and your family to the ruling House of Kashmir and places it under an obligation which I and my successors will never be able to repay too hight.

अर्थात् राजपूत जाति की एकता के सम्बन्ध मे आपने जो प्रयत्न किया है, उसके लिए में हम अभिमान कर सकते हैं। आपने राजपूत जाति के इस एकता सम्बन्धी आन्दोलन को बढ़ाने कार्य्य किया है वह न केवल मेरे वरन् सारी राजपूत जाति के द्वारा बहुत ही गहरी हार्दिक कृत साथ स्मरण रक्खा जायगा। मुझे इसमें तिलमात्र में भी सन्देह नहीं है कि हमारी सन्तानों आपका यह कार्य्य एक ऐतिहासिक घटना समझी जायगी। इस कार्य्य से काश्मीर राजघराने आपका सम्बन्ध बहुत ही दृढ़तर हो गया है और आपने काश्मीर घराने को इतना कृतज्ञ किया है और मेरी सन्तानें इसका किसी भी रूप में बदला नहीं चुका सकते। इसके आगे चल कर उ पत्र में महाराजा काश्मीर साहिब लिखते हैं कि

"The creation of the State added to the material prosperity of my House but the present success which owes itself to your devoted and strenewous advocacy of the cause is calculated to add still more to our well being"

अर्थात् इस राज्य की सम्पत्ति से हमारे राजघराने का वैभव बढ़ा है पर आपके सतत प्र वर्तमान में हमें जो सफलता हुई है वह हमारे हित को और भी अधिक बढ़ाती है।

इस प्रकार भूत पूर्व महाराज काश्मीर ने दीवान बिशनदासजी को और भी अनेक प्रशं दिये हैं जिनका उल्लेख हम स्थानाभाव के कारण नहीं कर सके।

इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने भी आपकी सेवाओं से प्रसन्न हो कर "रायबहादुर" आई० ई०" तथा सी० एस० आई० के सम्माननीय पदों में विभूषित किया है। आप काश्मीर मिलिटरी सेक्रेटरी, रेवेन्यूमिनिस्टर तथा चीफमिनिस्टर के पद पर रहे हैं तथा इस समय जम्मू (स्टेट) में रिटायर्ड लाइफ बिता रहे हैं।

जोधपुर के शाह उदयकरणजी लोढ़ा और अमरकोट जिले पर मारवाड़ राज्य का अधिकार

ओसवाल जाति के जिन मुत्सद्दियों और सेनापतियों ने अपनी जाति के इतिहास को न्वित किया है, उनमें शाह अभयकरणजी लोढा का भी विशेष स्थान हैं। आपके सेनापतित्व में में उस पर अधिकार करने के लिये सेना भेजी गई थी। हमें जोधपुर के प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता श्री सिंहजी गहलोत की कृपा से तत्कालीन जोधपुर के पोलिटिकल एजन्ट केपटन ल्यूडला (Ca

यह पत्र उमरकोट की ओर के सब ब्रिटिश थानों के फौजी अफसरों के नाम लिखा ग इसका आशय यह है कि "हम यह प्रकट करते हैं कि "शाह उदयकरण" के सेनापतित्व में राइ गवर्नर जनरल की अनुमति से जोधपुर राज्य की सेना उमरकोट के शहर और किले को छोड़कर स पर फिर से अधिकार करने के लिये भेजी गई है, जिस पर कि ऊँची ब्रिटिश फौजों का ताबा है। जिला पहले जोधपुर महाराजा के पूर्वजों के अधिकार में था।

मैंने सिंध के गवर्नर साहब को भी इस सम्बन्ध में लिखा है कि वे इस सम्बन्ध के हु करने की कृपा करें।

इन्दौर

राजस्थान के राज्यों में ओसवाल वीरों तथा मुत्सुद्दियों ने जो महान् कार्य्य किये हैं, उल्लेख हम गत पृष्ठों में कर चुके हैं। हम देखते हैं कि इन्दौर, काश्मीर प्रभृति कई दूरवर्ती रि भी ओसवाल मुत्सुद्दियों ने कई ऐसे मार्के के काम किये हैं जिनका उल्लेख उन रियासतों के पु पत्रों तथा इतिहास में बड़े गौरव के साथ किया गया है। यहाँ हम इन्दौर राज्य के कुछ इतिहास ओसवाल मुत्सुद्दियों का परिचय अपने पाठकों को देना चाहते हैं।

गंगारामजी कोठारी

इतिहास के पाठक जानते हैं कि इन्दौर के भूतपूर्व नरेश तुकोजीराव (प्रथम) के इन्दौर के होलकर वंश का प्रभाव सारे भारतवर्ष में फैला हुआ था। ये तुकोजीराव बड़े सफल महान् राजनीतिज्ञ और महत्वाकाँक्षी नरेश थे। इन्होंने चारों तरफ अपनी तलवार के जौहर दि इन्हीं महाप्रतापी तुकोजीराव के समय में गंगारामजी कोठारी नामक एक बहादुर और दिलेर ओस युवक इन्दौर में पहुँचे। ये गंगारामजी नागौर के निवासी थे और बाल्यावस्था से ही सैनिक और इनकी विशेष रुचि थी। धीरे २ ये इन्दौर की फौज में दाखिल हो गये और करतबगारा नायक के पद पर पहुँचे। महाराजा होलकर की ओर से इन्होंने कई लड़ाइयों में बहुत बड़ा प्रदर्शन किया। इनकी वीरता और कारगुजारियों का वर्णन इन्दौर राज्य के हुजूर फडनीसी के सरजॉन मालकम साहब के मध्य हिन्दुस्तान के इतिहास में, टॉड साहब के राजस्थान के इतिहास अन्य कई अंग्रेजी एवं मराठी के ग्रन्थों में मिलता है। तत्कालीन पार्लियामेन्टरी पेपर्स में भी आ कार्यों का उल्लेख किया गया है।

श्रीमान् महाराजा तुकोजीराव (तृतीय) ने मिस्टर बाउल्जर (Boulger) नामक ए अधीनता में कुछ लोगों को विलायत से इण्डिया ऑफिस (India-office) में रक्खे हुए ह सम्बन्धी कागज पत्रों की व्यवस्थित रूप से नकल करने के लिये नियुक्त किया था। उन लोगों ने वरस काम कर होलकर राज्य सम्बन्धी लेखों तथा कागज-पत्रों की नकलें की। ये कोई तीस या प में पूरी हुई हैं। ये सब जिल्दें टाइप की हुई हैं और इन्दौर के फॉरेन आफिस में सुरक्षित हैं। इनमें

—राणा उदयसिहजी ने आपका बडा सत्कार किया। वहाँ से रवाना होकर जगह २ सम्मान पाते हुए आप नद बीकानेर पहुँच गये। आपके सद्व्यवहार से राव कल्याणसिहजी बडे प्रसन्न हुए।

व रायसिहजी और मेहता करमचन्द

राव कल्याणसिहजी के पश्चात राव रायसिहजी बीकानेर के राजसिहासन पर विराजे। कहने आवश्यकता नहीं कि आपके समय मे भी ओसवाल मुत्सुद्दियों का प्राधान्य रहा। आपने मेहता सग्राम-जी के पुत्र करमचन्दजी को अपना प्रधान नियुक्त किया। ये करमचन्दजी महान् राजनीतिज्ञ, शासन ल, धर्मात्मा और वीर थे। आपके उद्योग से सम्राट् अकबर ने राव रायसिहजी को राजा का खिताब न किया। इसी समय के लगभग नागपुर से मिर्जा इब्राहिम ससैन्य बीकानेर की सीमा पर आ पहुँचा। यह खबर बच्छावत करमचन्दजी को लगी तब वे भी अपनी फौजों के साथ उसके मुकाबिले के लिये चल। दोनों मे युद्ध हुआ और विजय की माला मेहता करमचन्दजी के गले मे पडी। इसके कुछ समय बाद ने मुगल सम्राट् अक्बर की ओर से गुजरात पर चढाई की और वहाँ के शासक मिर्जा महम्मद हुसेन राकर विजय प्राप्त की। आपने कुछ समय के लिये सोजत पर बीकानेर राज्य का झण्डा उडवाया और र के स्वामी को अपने अधिकार में किया। आपने सिध देश के बहुत से हिस्से को बीकानेर राज्य मलाया और वहाँ की नदी मे मच्छियों का मारना बन्द करवाया। आपने इस युद्ध में बिलूचियों को हर विजय प्राप्त की। इस प्रकार अनेक स्थानों पर आपने अपने अपूर्व वीरत्व का परिचय दिया।

मेहता करमचन्दजी का दिल्ली के तत्कालीन प्रतापी सम्राट् अकबर पर भी खूब प्रभाव था। ने सम्राट् अकबर को जैन-धर्म के महान् सिद्धान्तों का परिचय करवाया, आप ही ने सुप्रसिद्ध जैनाचार्य्य जिनचन्द्रसूरिजी से सम्राट् अक्बर की मुलाकात करवाई। सम्राट् अकबर ने उक्त आचार्य्य से जैनधर्म महान् अहिसा सिद्धान्त को श्रवण किया। इतना ही नहीं उन्होंने जैनियों के खास पर्वों के उपलक्ष मे । न करने के आदेश सारे साम्राज्य में भेजे।

ओसवाल जाति के इतिहास मे बच्छावत करमचन्दजी का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। क्या नैतिक दृष्टि से, क्या सैनिक दृष्टि से, क्या धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से मेहता करमचन्दजी अपना प स्थान रखते हैं। स० १६३५ में जब भारतवर्ष मे भयकर दुर्भिक्ष पड़ा था, उस समय मेहता चन्दजी ने हजारों आदमियों का पालन किया था। सैकडों कुटुम्बों को आपने साल २ भर तक अन्न प्रदान कर उनके दुखों को दूर किया था। इस प्रकार आपने जैन-धर्म के लिये भी कई ऐसे महान्

'A pair of Cossids from Ujjain (Oujein) state "Gangaram k[illegible] is at Jaora with two or four thousand men and four guns, the rest o[illegible] troops (ten thousand men and six guns) are in advance at Hatote. Aft[illegible] Dassera, this force will remove to Ratlam for the purpose of routing a b[illegible] Arabs who have been plundering that town."

अर्थात् उज्जैन से आये हुए दो कासीदो (समाचार वाहक,) ने सूचित किया कि [illegible] कोठारी दो या चार हजार आदमियों और चार तोपों के साथ जावरा मे डेरा डाले हुए हैं और उनक[illegible] की फौजें (१०००० आदमी और ६ तोपें) हतोद नामक स्थान पर पहले ही पहुँच गई हैं। [illegible] बाद यह फौज रतलाम की ओर आगे बढ़कर अरबों के उस झुण्ड को, जो रतलाम में लूट मार क[illegible] खदेड़ने का काम करेगी।

उपरोक्त अवतरणों से यह बात स्पष्टत प्रगट होती है कि महाराजा यशवतराव होल्कर [illegible] में कोठारी गंगाराम एक बडे बहादुर सिपहसालार थे और उनकी अधीनता में दस २, पन्द्रह २ ह[illegible] तक उस अशाति के युग में रहती थी। कुशल सेनानायक के अतिरिक्त आप उच्चश्रेणी के शासक भी [illegible] समय की यह बात है वह समय हिन्दुस्तान के लिये भयंकर अशाति का था। चारों तरफ अराजक[illegible] लूट मार मची हुई थी। ऐसे समय में कई बडे २ जिलों का प्रबन्ध करना कोई हँसी खेल नहीं था। [illegible] रामपुरा, भानपुरा, गरोठ आदि परगनों का आपने जिस योग्यता से प्रबन्ध किया था उससे [illegible] सफल शासक होना स्पष्टत सूचित होता है।

गंगारामजी कोठारी ने अपने अधीनस्थ परगनों में शांति स्थापित करने का बडा प्रयत्न [illegible] रामपुरा भानपुरा के पास मेवाड का जिला आ गया है। वहाँ के राजपूत आसपास के पड़ोसी [illegible] बहुत लूट मार किया करते थे। होलकर राज्य के जिले भी इनकी लूट मार से बडे परेशान थे। गंगा[illegible] कोठारी से यह स्थिति नहीं देखी गई। उन्होने इन राजपूतों को दमन करने का निश्चय किया। [illegible] उन्होंने चढ़ाई कर दी और उक्त राजपूतों को बहुत सख्त सजाएँ दी। इतना ही नहीं, उन्होंने [illegible] धांगड़ महू का क़िला भी फतह कर किया।

झाबुआ आदि रियासतों पर भी इन्होंने चढ़ाइयाँ की थी और उनमें इन्हे सफलता हु[illegible] झाबुआ से खिरात वसूल करने के लिये इन्हें ही जाना पडता था।

हम पहले कह चुके है कि गगारामजी कोठारी बडे सफल सेना नायक थे। जब महारा[illegible] कर किसी बड़ी चढ़ाई पर जाते थे तब वे अपने इस बहादुर सेनापति को अपने साथ रखते थे। [illegible]

ाने तब अपने पुत्रों को बुला कर कहा कि करमचन्द तो मर गया, अब तो तुम उसके बेटों को मारना। मारने के षड्यन्त्र मे जो ? लोग शरीक थे उनसे बदला लेना। क्योंकि वे दलपत को राज्य दिलाना ते थे। इस पर सूरसिहजी ने अर्ज की कि यदि मै राजा हुआ तो उन लोगों को अवश्य दण्ड दूंगा। राज रायसिहजी की इस मनोवृत्ति की सूक्ष्म परीक्षा कर परम नीतिज्ञ मेहता करमचंदजी ने पहले ही अपने पुत्रों को भविष्यवाणी कही थी वह सच उतरी और उसकी सच्चाई महाराजा रायसिहजी की समय की उन बातों से स्पष्टत प्रगट होती है जो उन्होंने अपने वारिश सूरसिहजी को मेहताजी के गोतों से बदला लेने के लिये कही थी।

यह तो हुई सिर्फ मनोवृत्ति के सूक्ष्म अध्ययन की बात। अब मेहता करमचन्दजी का भविष्य किस प्रकार सोलह आना सच्चा निकला इसका वृतान्त भी सुन लीजिये।

रायसिहजी के संवत १६६८ में स्वर्गवासी हो जाने पर बादशाह जहाँगीर ने दलपत को बीका का स्वामी बनाया। परन्तु जब वह इससे अप्रसन्न हो गया तो फिर संवत् १६७० मे सूरसिहजी को नेर का राजा बनाया। जब सूरसिहजी बादशाह से रुखसत लेकर देहली से बीकानेर के लिये रवाना लगे तब आपने मेहता करमचन्दजी के दोनों पुत्र भागचन्द और लखमीचन्द्र को अपने पास बुलवा बहुत तसल्ली दी और उन्हें अपने साथ चलने के लिये बहुत समझाया बुझाया। ये दोनों बच्छावत सपरिवार बीकानेर जाने के लिये राजी हो गये। जब ये बीकानेर पहुँच गये तब राजा सूरसिहजी ने दोनों को मंत्री पद पर नियुक्त किया। छ मास तक उन पर ऐसी कृपा दिखलाई कि वे सब पुरानी भूल गये, यहा तक कि एक दफे खुद महाराजा साहब इनकी हवेली पर गये जहां पर उक्त दोनों ओं ने एक लाख रुपये का चबूतरा बनवा कर उस पर महाराजा साहब की पधरावनी की। जब इन शिष्टाचारों में मेहता करमचन्दजी के दोनों बेटे मोहाध हो गये तब महाराणा ने एक दिन कुछ हजार निकों को उन्हे मारने के लिये भेजा। वे भी बहादुर थे। उन्होंने पहले उस समय की क्रूर प्रथा के सार अपनी माता, स्त्रियों एव बच्चों को मार कर राज्य की फौजों का मुकाबिला करने का निश्चय किया। अपने ५०० वीरों सहित लड कर वीरगति को प्राप्त हुए।

जब हम इस घटना की संगति करमचन्दजी की उपरोक्त भविष्यवाणी से लगाते है तब हमें उस नव प्रकृति के अगाध अध्ययन पर सचमुच बडा विस्मय होता है। कहने का मतलब यह है कि करमचंद रे के सारे कुटुम्बीगण मार डाले गये। सिर्फ उनके कुटुम्ब की एक गर्भवती स्त्री ने अपने विश्वसनीय रघुनाथ की सहायता से करणी माता के मन्दिर में शरण लेकर अपनी जान बचाई। इस स्त्री के गर्भ

दूसरी ओर अत्यन्त कठिन परिस्थिति मे अपने जिलों का उत्तम से उत्तम प्रबन्ध करते हुए पाते है। भयकर कोलाहल के समय में रामपुर भानपुर की प्रजा ने जिस सुख और शाति का अनुभव किया थ बहुत कुछ आप ही की कारगुजारी का फल था। श्रीमंत महाराजा होल्कर ने आपकी इन सेवाओं बडी कद्र की और आपको खजूरी और सगोरिया आदि गाँव की जागीरी प्रदान की। इतना ही नहीं आपको पालकी, छत्री, छडी, चँवर आदि ऊच्च सम्मान प्रदान कर महाराजा ने आपका बहुत सत्कार था। राज्य के अत्यन्त सम्माननीय सरदारों मे आपका आसन रक्खा गया। रामपुर भानपुर जिले व महान् प्रभावशाली व्यक्ति का संवत् १९१४ (सन् १८५७) मे भाले की चोट* से गरोठ मुका देहांत होगया। आपके स्मारक में गरोठ और भानपुर में आलीशान छत्रियाँ बनी हुई है जिनमें मूर्त्तिया प्रतिष्ठित हैं। ये छत्रियां कोठारी साहब की छत्रियों के नाम से प्रसिद्ध है।

कोठारी सावतरामजा

कोठारी शिवचन्दजी के स्वर्गवासी होने के बाद संवत् १९१५ में आप मारवाड से दत्त गये और अपने स्वर्गवासी पिताश्री के स्थान पर अधिष्ठित किये गये। आप बडे उदार, प्रजाप्रेमी, और विविध कलाओं के बडे पुरस्कर्ता थे। प्रजा हित को ही आप राज हित का प्रधान अग समझ गरीब किसानों के लिये आपके उदार अंत करण में बहुत बडा स्थान था। जब २ राज्य और किसा स्वार्थ टकराता था तब २ आप श्रीमंत होलकर नरेश के सामने बडे जोरों के साथ किसानों के पक्ष समर्थन करते थे। इससे सारे जिले के लोग आपको पिता की तरह भक्ति की दृष्टि से देखते थे। अपने समय में बहुत ही अधिक लोकप्रिय थे।

विभिन्न कलाओं के आप अनन्य प्रेमी थे। कविगण, गायक आपकी कीर्त्ति सुनकर दूर आते थे और आप से खासा पुरस्कार पाते थे। अपनी २ कलाओं का प्रदर्शन करने के लिये चारों से लोग आप की सेवा में उपस्थिति होते थे और उन्हे आपसे काफी उत्तेजन मिलता था। आपके सम भानपुरा में खासी गति विधि रहती थी और यह कसबा लोगों के लिये एक आकर्षण का केन्द्र हो था। आप को स्वर्गीय महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) और महाराजा शिवाजीराव खूब मानते थ रामपुरा भानपुरा के सरसूबा (Governor) थे।

संवत् १९५० के लगभग आप को किसी कारणवश इन्दौर जाना पडा। वहाँ कुछ समय

* आप भाला लेकर घोडे को फिरा रहे थे कि एकाएक भाला आप के शरीर में घुस गया, जिससे मृत्यु हुई।

ता अबीरचन्दजी

इस खानदान मे आप बडे बहादुर और प्रतापी हुए। जिस समय आप कार्य्यक्षेत्र मे अवतीर्ण थे, वह समय बडा अशान्ति-मय था। राज्य मे डकैतियों की बडी धूम थी। आपने शान्ति स्थापित करने मे बडा परिश्रम किया और बडी दिलेरी से काम किया। आपको कई बार डाकुओं का मुकाबला करना इसमे आपको समय-समय पर अनेक घाव लगे। इसके पश्चात् बीकानेर दरबार ने आपको काम से हटाकर राज्य की ओर से वकील बनाकर दिल्ली भेजा। वहाँ भी आपने बडी बुद्धिमानी से काम ...। आपके कार्य्य से दरबार साहब तथा रेसिडेण्ट दोनों ही खुश रहे। सवत् १८८४ मे आपका उन ...के कारण देहान्त हो गया जो आपको दिल्ली ही में डाकुओं का मुकाबला करते समय लगे थे।

...ा हिन्दूमलजी

इस खानदान में आप बडे बुद्धिमान, प्रतिभा सम्पन्न और ख्यातिवान पुरुष हुए। पहले पहल १८८४ में आप बीकानेर की ओर से वकील की हैसियत से दिल्ली भेजे गये। वहाँ आपने बडी ही ...नी और चतुराई से कार्य्य किया। इस पर तत्कालीन बीकानेर नरेश महाराजा रत्नसिंहजी ने खुश ...आपको अपना दीवान नियुक्त किया और मिस्केदारी की मुहर प्रदान की। अपने नरेश की ...ता में आप राज्य के सारे कारोबार देखने लगे। सम्वत् १८८८ में आप तत्कालीन मुगल सम्राट् के पास ...ये और सम्राट को खुशकर अपने स्वामी महाराजा रत्नसिंहजी के लिये खिलअत और हिन्दू-शिरोमणि की ...लाये। इससे महाराजा साहब पर आपका बडा प्रभाव पडा और उन्होंने आपको "महाराव" का इनायत किया।

मेहता हिन्दूमलजी ने बीकानेर राज्य के हित सम्बन्धी और भी कई मार्के के काम किये। बीकानेर ...र की ओर से भारत सरकार को प्रति साल २२ हजार रुपया फौजी खर्च के लिए दिये जाने का इकरार ...हता हिन्दूमल ने बहुत प्रयत्न कर यह रकम माफ करवाई। इसके अतिरिक्त मेहता साहब के सुयोग्य ...के कारण सरकार ने बीकानेर में अपने पोलिटिकल एजण्ट रखने की भी आवश्यकता नहीं समझी। ...कार एक समय बीकानेर और भावलपुर राज्यों के बीच सरहद सम्बन्धी झगडा खडा हो गया। इस ...आपने बहुत बुद्धिमानी के साथ निपटाया जिससे बीकानेर रियासत का बडा हित साधन हुआ। ...ले में बीकानेर को बडी ही मौके की जमीन मिली। इस जमीन में बहुत से गाँव आबाद हो गये ...र रियासत को लाखों रुपये सालाना की आमद होने लगी।

संकीर्ण और कुचक्रमयी राजनीति मे उनका विश्वास नही। यही कारण है कि वे क्षुद्र राजनीति मे आपको परे रख कर प्रजा कल्याण की विशाल भावनाओं से अपने आपको प्रेरित करते है। आपने शिक्षा, और उद्योग-धंधों की प्रगति मे बडी सहायता पहुँचाई। इन्दौर मे वाटर-वर्क्स की महान् विशाल का निर्माण कर इन्दौर की प्रजा के लिये आपने एक महान् काम किया। कहा जाता है कि इस वर्क्स के समान विशाल योजना ससार भर मे केवल एक दो जगह ही निर्मित की गई है। यह कार्य है जिससे इन्दौर की प्रजा के हृदय मे बापना महोदय का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। इसके शिक्षा संबधी प्रगति में भी आपने काफी सहायता पहुँचाई है। हम आपका विस्तृत परिचय आपके इतिहास में दे रहे हैं। यहाँ पर हम सिर्फ इतना ही कहना चाहते है कि श्री० बापना महोदय भारत रियासतों के प्रधान मन्त्रियों में अपना विशेष स्थान रखते है और नाबालिगी शासन में आपको व्यापक अधिकार दिये गये थे, उतने जहातक हमारा खयाल है, सर प्रभाशङ्कर पट्टनी सरीखे सज्जन को छोड़ कर और किसी प्राइममिनिस्टर को नहीं रहे हैं। हमें हर्ष है कि आपने इन अधि बडा ही सदुपयोग किया और इन्दौर के प्रगतिशील शासन को विकसित कर उसे अत्यन्त सभ्य के शासन के समकक्ष में ला रक्खा। मध्यभारत के भूतपूर्व ए० जी० जी० ने अपने एक व्याख्यान बापना महोदय के शासन की बडी प्रशसा की थी, तथा आखिर में कहा था कि प्रगतिशीलता के किसी भी रियासत के शासन से बापना महोदय का शासन दूसरे नम्बर पर न रहेगा (Second to आपकी शासन योग्यता की प्रशसा कई प्रभावशाली अग्रेजों ने तथा अन्य भारतीय राजनीतिज्ञों ने

राय बहादुर हीराचन्दजी कोठारी

वर्तमान समय में इन्दौर के कोठारी खानदान में रायबहादुर हीराचन्दजी कोठारी राज्य के कई बडे २ पदों पर सफलता के साथ काम किया। ई० सन् १८८९ में आप इन्दौर सर्विस में दाखिल हुए। आरम्भ में आप हाउस होल्ड डिपार्टमेंट (Household Departmen केवल १२) मासिक पर एक मामूली क्लर्क हुए। फिर आप अपनी कारगुजारी से बढ़ते २ अमीन, सूबा, सूबा, रेव्हेन्यू कमिश्नर, रेव्हेन्यू मिनिस्टर और एक्साइज मिनिस्टर हुए। नायब दीवानी और खास मिनिस्टरी का भी काम आपने बड़ी सफलता के साथ किया। जब मि० नरसिंहराव छुट्टी पर तब आपने प्राइम मिनिस्टरी का काम भी किया था। भूतपूर्व ए० जी०जी मि० बोसाकेट तथा सर आपके कार्य से बडे प्रसन्न रहे। आपको इन्दौर रियासत के सम्बन्ध में बहुत जानकारी है। राज्य क तकसे आप परिचित है। रेव्हेन्यू के कार्य में रियासत में आप एक ही समझे जाते है। आपकी और मिलनसारिता प्रशंसनीय है।

देना। तेरी सेवा बंदगी बडी है। यह सेवा पुश्तदर पुश्त की है। तेरा हम पर हाथ है, सिर
थ रखना। तेने हमारी जो सेवाएँ की हैं, उनसे हम उऋण न होंगे। तेरी सेवाओं की तारीफ केवल यही
गी ऐसी बात नही वरन् स्वर्ग मे भी देवता उन सेवाओ की प्रशसा करेंगे। तेने अपने मालिक की
दगी की है, उसकी कहाँ तक तारीफ लिखे। मिती आसोज सुदी १२ सवत् १८९६।

उपरोक्त खास रुक्के मे महाराव हिन्दूमलजी के उस अतुलनीय प्रभाव का पता लगता है जो बीकानेर के राजनैतिक क्षेत्र मे था। कहने का भाव यह है कि ओसवाल मुत्सुद्दियों ने राजस्थान की गीन राजनीति मे महान् कार्य्य किये हैं कि जिन्हे तत्कालीन नरेशों ने भी मुक्त कठ से स्वीकार किया है।

ा छोगमलजी

आप महाराव हिन्दूमलजी के छोटे भाई थे। आपका जन्म सवत् १८६९की माघ बुदी १० को
। आप बडे ही बुद्धिमान एव अध्यवसायी महानुभाव थे। आप महाराजा सूरतसिहजी के प्राइवेट
के पद पर अधिष्ठित थे। यह काम आपने बडी ही खूबी से किया। आपसे महाराजा साहब
सन्न रहते थे। इससे महाराजा साहब ने आपको रेसीडेंसी के वकील का उत्तरदायित्व पूर्णपद
किया।

सम्वत् १९०९ मे जब बीकानेर मे सरहद्द बन्दी का काम हुआ, तब आपने इसे बडे परिश्रम
द्धमानी से किया। आपने सरहद्द सम्बन्धी बहुत से झगडों के बडी कुशलता के साथ फैसले करवा
इसमें आपने बीकानेर राज्य की बडी हितरक्षा की। आपकी की हुई सरहद्द बन्दी मे बीकानेर
ा बडी उन्नति हुई। आपके इस कार्य्य से बीकानेर के तत्कालीन महाराजा सरदारसिहजी इतने
 कि उन्होने आप को अपने गले से कठा निकाल कर पहना दिया।

सम्वत १९१४ (ई० सन १८५७) मे जब सारे भारतवर्ष मे अंग्रेजों के खिलाफ भयकर
ान धधक उठी, तब आप बीकानेर रियासत की ओर से अग्रेजो की सहायता करने के लिये भेजे
उस समय आपने वहाँ बहुत सरगर्मी से काम किया। इस कार्य्य के उपलक्ष में तत्कालीन
धिकारियों ने आप की प्रशसा की।

सम्वत १९२९ मे बीकानेर नरेश महाराजा सरदारसिहजी का स्वर्गवास हो गया। इस
र आपने महाराजा डूगरसिहजी को राजगद्दी पर अधिष्ठित करने मे बहुत सहायता पहुँचाई।
। में अत्युक्ति न होगी कि महाराज डूगरसिहजी को बीकानेर का स्वामी बनाने मे सबसे प्रधान
। था था। स्वय महाराज डूगरसिहजी ने तत्कालीन ए० जी० जी० को जो पत्र लिखा था, उसमे

३—भण्डारी ऊदाजी (नाथाजी के पुत्र) दीवानगी और प्रधानगी साथ में संवत् १५४८ में।
४—भण्डारी गोरोजी (ऊदाजी के पुत्र) राव गाङ्गाजी के समय दीवानगी तथा प्रधानगी साथ
५—भण्डारी धनोजी (डावरजी के पुत्र) राव चन्द्रसेनजी के समय में।
६—भण्डारी मनाजी (डावरजी के पुत्र) मोटा राजा उदयसिंहजी के समय में।
७—भण्डारी हमीरजी " " "
८—भण्डारी रायचदजी (जोधाजी के पुत्र) " " "
९—कोचर मूथा बेलाजी (जाजरजी के पुत्र) महाराजा सूरसिंहजी के समय में।
१०—भण्डारी ईसरदासजी " " "
११—भण्डारी भानाजी .. . सम्वत् १६७६ मे
१२—सिंघवी शहामलजी — ... महाराजा गजसिंहजी के समय में
१३—मुहणोत जयमलजी (नैनसीजी के पिता) .. .. संवत् १६८६ से
१४—सिंघवी सुखमलजी सम्वत् १६९० से सम्वत् १६९७ तक
१५—भण्डारी रायमलजी (लूणाजी के पुत्र)— . सवत् १६९४ से १६९७ की पौष वदी
१६—सिंघवी रायमलजी (शोभाचन्दजी के पुत्र)— सम्वत् १६९७ की पौष वदी ५ से
१७—भण्डारी ताराचन्दजी (नारायणोत) देश दीवानगी .. सम्वत् १७१४ से

१८ { मुहणोत नेणसीजी (जयमलजी के पुत्र) देश दीवानगी
मुहणोत सुन्दरसी (नेणसीजी के छोटे भाई) तन दीवानगी } सम्वत् १७१४ से १७

१९—भंडारी विट्ठलदासजी (भगवानदासजी के पुत्र) संवत् १७६२ से
२०—सिंघवी बख्तारमलजी और तख्तमलजी (सुखमलजी के पुत्र) .. संवत् १७६३ से
२१—भण्डारी विट्ठलदासजी (भगवानदासके पुत्र) १७६५की सावण सुदी १३से १७६६की कार्तिक वदी

२२— { भण्डारी माईदासजी (देवराजजी के पुत्र) तन दीवानगी
भण्डारी खींवसीजी (रासाजी के पुत्र) देश दीवानगी } १७६६ की कार्तिक
सवत् १७६

२३—राय रायन भण्डारी रघुनाथसिंहजी (रायचन्दजी के) . देश दीवानगी, सम्वत् १७६७ से
२४—भण्डारी खींवसीजी (रासाजी के पुत्र) सम्वत् १७६७ के आसोज से १७६९ के फागुन तक
२५—भण्डारी माईदासजी (देवराजजी के पुत्र) — सम्वत् १७६९
२६—समदड़िया मूथा गोकुलदासजी ... सम्वत् १७६९

२७— { भण्डारी खींवसीजी (रासाजी के पुत्र) तन दीवानगी
राय रायन भण्डारी रघुनाथसिंहजी—देश दीवानगी } १७७० के चैत्र से १७८१
फागुन वदी १२ तक

२८—समदड़िया मूथा गोकुलदासजी ... ... सम्वत् १७८१ से
२९—राय रायन भण्डारी रघुनाथसिंहजी . .. सम्वत् १७८२ से सवत् १७८५

श्रीरामजी

२—"रुक्को खास मेहता छोगमलजी केसरीसींघ र व छतरसींघ दी सी सुप्रसाद वचे अपरच थाने गावा जावणा रो हुकुम दियो सु ओ हुकम म्हारी बदगी मे रहा ते सू दार जियो सू थाने गोवाँ नहीं मेले छे म्हाने आज ई रियासत सू उत्तर मिल्यो छे थारो खानदान पीढ़ियों सू सामधरमी छे जिसी तरह थे वदगी म चित राख बदगी करी छो सू थारो वदगी म्हे वा म्हारो पूत पोतो न भूलसा थारा गोत्रॉ व इज्जत मुलाजे म म्ह वा म्हारो पूत पोतो थासू वा थारा पूत पोतो सू कोई तरे रा फरक नहीं डालसी ये बात मे म्हा वा थारे बीच म श्री लक्ष्मीनरायणजी व श्री करणीजी छे थे जमाखातर राखी जो और थारे वास्ते साहब बहादुर ने लिखियो छे घवराजो मती श्री जी सारा सरा आछी करसी संवत् १६४३ रा मिती कातीक सुदी १२ "

महाराव हरिसिंहजी

आप महाराव हिन्दूमलजी के प्रथम पुत्र थे। सम्वत् १८८३ की आसोज सुदी ८ को आपका जन्म हुआ। अपने पूर्वजों की तरह आप भी बड़े बुद्धिमान, दूरदर्शी और प्रभावशाली मुत्सुद्दी थे। राज्य में आपका बड़ा प्रभाव था। संवत् १९२० मे आप मुसाहिब आला बनाये गये तथा आपको मुहर का अधिकार भी प्राप्त हुआ। महाराजा डूंगरसिंहजी की गद्दीनशीनी में आपने अपने चाचा छोगमलजी के साथ बड़ी मदद की। इससे खुश होकर महाराजा डूंगरसिंहजी ने अमरसर और पाल्टा आप को जागीरी मे प्रदान किये। इतना ही नहीं, आप 'महराव' की पदवी, पैरों मे सोना, हाथी, ताजीम आदि उच्च सम्मानों से विभूषित किये गये। आपने भी रियासत में कई मार्के के काम किये जिनकी प्रशंसा राज्य के खास रुक्कों मे की गई है। उनमें से एक रुक्का हम नीचे उद्धृत करते हैं। यह रुक्का महाराजा डूंगरसिंहजी के खास दस्तखत से दिया गया था।

"भाईजी श्री महारावजी हरसिंहजी सु म्हारो सुप्रसाद वचर्सी अपरच हमें ये नामरी थारी काई सलाह छे काल तो सारा रा मन एक छा आज मिनखा रा मन बिगड गया छे मान मन फूल लाले गगाविशन सु मिले छे म्हाने या हु कारो दिया छे सादानसींघ रे बेटे री मुभाईजी म्हारे तो अब थेई छो थागत सू म्हागत छे थासु केई बात सू उसरावणा नहीं हुसु चुर मादगा रा रक्का मागे छे सो थारी सला बिना कोई न रक्का लिख देना नहीं आपरो कान खरच लाग्नी कीजो मिती आनन्द री है।"

५६—*खालसे (काम मेहता अखेचन्दजी देखते थे) संवत् १८७२ कार्तिक सुदी १ से माघ
५७—सिंघवी फतेराजजी† (इन्द्रराजजी के पुत्र) १८७२ माघ सुदी ३ से १८७३ भादवा सुदी
५८—सिंघवी फतेराजजी (इन्द्रराजजी के) संवत् १८७३ की कार्तिक सुदी १२ से वैसाख सुदी
५९—मेहता अखेचन्दजी (सीवसीजी के पुत्र) १८७३ की वैसाख सुदी ५ से १८७४ सावण सु
६०—मेहता लक्ष्मीचन्दजी‡ (अखेचन्दजी के पुत्र) १८७४ सावण सुदी ३ से १८७६ वैसाख सु
६१—खालसे (काम सोजत के मेहता सूरजमलजी करते थे) १८७६ वैसाख सुदी १४ से आषाढ व
६२—सिंघवी फतेराजजी (इन्द्रराजजी के पुत्र) १८७६ की आषाढ वदी ९ से १८८१ की चैत्र सु
६३—खालसे (काम सिंघवी फोजराजजी देखते थे) १८८१ की चैत सुदी ४ से १८८२ की पोष सु
६४—सिंघवी इन्द्रमलजी (जोरावरमलजी के पुत्र) १८८२ की पोष सुदी २ से १८८५ कार्तिक व
६५—सिंघवी फतेराजजी (इन्द्रराजजी के पुत्र) १८८५ की काती वदी १ से १८८६ सावण व
६६—खालसे (काम सिंघवी गुलराजजी के पुत्र फोजराजजी देखते थे) १८८६ सावण वदी ऽऽ से १
६७—सिंघवी फतेराजजी (इन्द्रराजजी के पुत्र) संवत् १८८७ से १८८८ की चैत सु
६८—सिंघवी गंभीरमलजी (फतेमलजी के पुत्र) १८८८ की चैत सुदी ९ से १८८९ की चैत वद
६९—मेहता जसरूपजी × (नाथजी के कामदार) सं० १८८९ चैत वदी १३ से १८९० काती सु
७०—खालसे (भण्डारी लखमीचन्दजी काम देखते थे) १८९० काती सुदी ४ से १८९१ सावण व
७१—भण्डारी लखमीचन्दजी (कस्तूरचन्दजी के पुत्र) १८९१ सावण वदी १४ से १८९२ माघ व
७२—सिंघवी फतेराजजी (इन्द्रराजजी के पुत्र) संवत् १८९२ की माघ वदी १० से वैसाख सु
७३—सिंघवी गभीरमलजी – (फतेचन्दजी के पुत्र) १८९२ वैसाख सुदी १४ से १८९४ सावण व
७४—भण्डारी लखमीचन्दजी (कस्तूरचन्दजी के पुत्र) संवत् १८९४ सावण वदी ४ से आसोज सु
७५—सिंघवी फतेराजजी (इन्द्रराजजी के पुत्र) संवत् १८९४ आसोज सुदी ७ से १८९५ चैत सु
७६—सिंघवी गभीरमलजी (फतेचन्दजी के पुत्र) १८९५ की चैत सुदी १ से १८९७ आसोज व
७७—सिंघवी इन्द्रमलजी (जीतमलजी के पुत्र) संवत् १८९७ की आसोज वदी १२ से वैसाख सु
७८—भण्डारी लखमीचन्दजी (कस्तूरचन्दजी के पुत्र) १८९७ वैसाख सुदी १२ से १८९८ चैत व
७९ – कोचर बुधमलजी (सोजत के मेहता सूरजमलजी के पुत्र) १८९८ चैत वदी १४ से १८९९ की भा
८०—सिंघवी सुखराजजी (वनराजजी के पुत्र) संवत् १८९९ की भादवा सुदी १२ से मगसर व

*इस समय से जोधपुर के राजनैतिक वायु मण्डल में लगभग ३० सालों तक बहुत अधिक स्थान पार्टी वन्दियों रही, अतएव "दीवान" पद भी बहुत जल्द २ परिवर्तन होते रहे।

† "दीवान" पद पर इन्होंने ७ बार कार्य्य किया।

‡ आप ५ बार दीवान हुए।

× इनकी तरफ से इनके कामदार पचोली कालूरामजी इस ओहदे का काम देखते थे।

– इन्होंने ४ बार "दीवान" पद पर काम किया।

नोट—ध्यान रखना चाहिये कि जोधपुर राज्य का राजकीय सम्वत् श्रावण मास में परिवर्तित होता था।

--खा है कि एक बार किसी शत्रु ने राजलदेसर पर चढ़ाई की तब मेहता हरिसिंहजी और राजा रायसिंहजी पुत्र कुँवर जयमलजी बडी बहादुरी के साथ युद्ध करते हुए मारे गये और "जुझार" हुए। जुझार यह शब्द रवाडी भाषा का है जिसका अर्थ सिर कट जाने के बाद भी कुछ समय तक युद्ध करते रहना है। जिस ान पर आपका सिर गिरा था वह स्थान आज भी जुझारजी के नाम से प्रसिद्ध है। आज भी वहाँ के वंश वाले किसी शुभ कार्य्य पर जाते हैं और इनकी कुलदेव स्वरूप पूजा करते हैं। जिस स्थान पर पका शव गिरा था वह स्थान मूथाथल के नाम से प्रसिद्ध है। इसी खानदान में सवाईसिंहजी नामक ; सज्जन राजलदेसर और बीदासर के बीच में जुझार हुए। जिस स्थान पर आप जुझार हुए वहाँ इनके ारक स्वरूप एक चबूतरा बना हुआ है। जो अभी भग्नावस्था मे है।

चुरू का सुराणा खानदान—चुरू बीकानेर स्टेट में एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ के सुप्रसिद्ध ाणा परिवार में कई वीर पुरुष हो गये हैं, जिनमें जीवनदासजी का नाम विशेष प्रख्यात है। कहा जाता कि ये भी किसी लड़ाई में जुझार हुए। आज भी राजस्थान की स्त्रियाँ इनकी वीरता के गौरव गीत गाती । इन्हीं के वंश में वर्तमान में विद्याप्रेमी सेठ शुभकरणजी सुराणा विद्यमान हैं।

बीकानेर राज्य के ओसवाल मुत्सुद्दियो और वीरों का उपरोक्त वृतान्त पढ़ने से पाठकों को यह न अवश्य ज्ञात हुई होगी कि जिस प्रकार जोधपुर, उदयपुर आदि रियासतों के विकास एवं राज्य विस्तार ओसवाल मुत्सुद्दियों का महत्व पूर्ण हाथ रहा है, ठीक वैसा ही हाथ बीकानेर की राजनीति के संचालन रहा है। यहाँ सैनिक तथा राजनैतिक रंगमंच पर ओसवाल वीरों ने बड़े २ खेल खेले हैं जिनके पराक्रमों वर्णन राजस्थान के इतिहास को गौरवान्वित कर रहा है।

काश्मीर

राजपूताने और मध्यभारत के विविध राज्यों में ओसवाल मुत्सुद्दी और सेनापतियों ने जो ले ऐतिहासिक काम किये है। उनका उल्लेख हम यथा स्थान कर चुके है। हम देखते हैं कि काश्मीर ाँ पर ओसवाल जाति के एक मुत्सुद्दी ने अपनी राजनैतिक प्रतिभा का परिचय दिया था।

मेजर जनरल दीवान विशनदासजी दूगड राय बहादुर सी.एम आई सी आई ई जम्बू (काश्मीर) पका पारिवारिक इतिहास हम नीचे दूगड गोत्र में दे चुके है। आपने काश्मीर राज्य की बड़ी २ ाए की काश्मीर के भूत पूर्व महाराजा श्रीमान् प्रतापसिंहजी बहादुर ने आपके कार्य्यों की प्रशंसा ते हुए १८ सितम्बर १९२१ को आपको जो पत्र लिखा था, उसमें लिखा था कि

'The unification of the Rajput community is a matter of which you who have tried to establish it may feel justly proud The part you played in furthering this movement shall be remembered with feelings of intense gratification not only by myself but the Rajputs in general and I have no

१०१—खालसे —(काम मेहता विजयमलजी देखते थे) १९२५ जेठ वदी ७ से १९२६ आसोज सु
१०२—खालसे (काम मेहता हरजीवनदासजी गुजराती मेहता विजयसिंहजी, सिंघवी समरथरा
हरजीवनदासजी एवं दो अन्य जातीय सज्जनों के साथ राज्य व्यवस्था
संवत् १९२९ की कार्तिक सुदी १४ तक
१०३—रा० ब० मेहता विजयसिंहजी—स० १९२९ काती सुदी १४ से १९३१ की फागुन सु
१०४—मेहता हरजीवनदासजी गुजरातवाले—१९३१ की चैत सुदी १५ से १९३२ कार्तिक सु
१०५—रावराजा बहादुर लोढ़ा सिरदारमलजी—संवत् १९३३ की भादवा सुदी ८ से माघ सु
१०६—रा० ब० मेहता विजयसिंहजी—स० १९३३ की माघ सुदी १५ से १९४९ भादवा सु
१०७—मेहता सरदारसिंहजी (विजयसिंहजी के पुत्र) संवत् १९४९ की भादवा सुदी १३ से
समय स० १९५८ की आषाढ़ सु

इस प्रकार "दीवान" के सम्माननीय पद पर सम्वत् १५१५ से सम्वत् १९५८ तक (
में) करीब ८० ओसवाल मुत्सुद्दियों ने लगभग ३०० वर्षों तक १०७ बार कार्य किया। इसी
के सभी बड़े २ ओहदों पर अत्यधिक संख्या में ओसवाल पुरुष कार्य करते रहे। विक्रमी संवत्
अठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताब्दि में जोधपुर के राजनैतिक क्षेत्र में ओसवाल जाति का बड़ा प्राधा

*जोधपुर राज्य के ओसवाल फौजबख्शी (Commander-in-Chief

१—मुहणोत सूरतरामजी—संवत् १८०८ सावण वदी ३ से सवत् १८१३ सावण वद
२—भंडारी दौलतरामजी (थानसिंहजी के पुत्र) सवत् १८१३ की सावण वदी १३ से
३—†सिंघवी भींवराजजी (लखमीचन्दजी के पुत्र) १८२४ की फागुन वदी ११ से
४—सिंघवी हिन्दूमलजी (चन्द्रभाणजी के पुत्र) स० १८३० की चैत बदी १२ से १८३२ भादवा सु
५—सिंघवी भींवराजजी —(लखमीचंदजी के पुत्र) १८३२ की भादवा सुदी १४ से १८४७ जेठ सु
६—सिंघवी अखेराजजी (भींवराजजी के पुत्र) स० १८४७ की जेठ बदी ४ से १८५१ सावण सु
७—भंडारी शिवचन्दजी—संवत् १८५१ की सावण सुदी ११ से १८५५ की सावण व
८—भंडारी भवानीरामजी (दौलतरामजी के पुत्र) १८५५ सावण बदी १४ से १८५६ चैत ब
९—सिंघवी अखेराजजी (भींवराजोत) स० १८५६ की चैत बदी ६ से १८५७ की प्रथम जेठ सु
१०—सिंघवी मेघराजजी—(अखेराजजी के पुत्र) १८५७ प्रथम जेठ सुदी १२ से १८७२ काती ब
११—भंडारी चतुर्भुजजी—(सुखरामजी के पुत्र) १८७२ काती बदी १४ से १८७४ दूजा सावण सु

*आज कल की तरह उपरोक्त जमाना शान्ति का नहीं था। "फौजबख्शी" को ह
सेनाएँ यत्र तत्र युद्ध के लिये ले जाना पड़ती थी। इसी तरह रियासत के सेना विभाग में
विभाग में ओसवाल मुत्सुद्दी बड़े बड़े ओहदों पर प्रचुर प्रमाण में काम करते रहे। जिनकी
स्थानाभाव के कारण हम यहाँ देने में असमर्थ है।

† सिंघवी भींवराजजी तथा उनके पुत्रों, पौत्रों एवं प्रपौत्रों ने लगभग १२५ सालों तक फौज बख्शी का

llow) के पत्र नंबर १८३ ईसवी सन् १८४३ की नकल प्राप्त हुई है। वह हम नीचे देते हैं, जिससे शाह अभयकरण की आज्ञा से उमरकोट पर सेना भेज जाने और उमरकोट पर पहले जमाने में राजा जोधपुर का अधिकार होने की बात पर अच्छा प्रकाश गिरता है।

No 183 of 1843

From

Captain Ludlow,

Political Agent, Jodhpur

To All Officers in command of British Posts and in the direction of Omerkote

Date 2nd June 1843

I have the honour to notify that a Detachment of Jodhpur Troops was despatched hence, under the orders of SHA UBHEE KURN on the 21st Ultimo towards Omerkote to re-occupy, under the authority of the Right Honourable the Governor General of India and on the part of the Maharaja of Jodhpur, all the territories etc, formerly held by his ancestors in the District of Oomerkote, with the exception of Fort and Town, which for the present are to be occupied by British Troops, and over which together with the lands immediately connected with their British Jurisdiction is to be exercised

I have had the honour to address to H E the Governor of Sind on this subject and to request that he would be pleased to issue such orders as he may consider called for by the occassion

I have the honour to be

Gent

Your most obedient servant,

Sd/- J Ludlow,

Political Agent

I have no doubt that you prize those splend traditions I confidently believe that you will always strive to preserve and enhance them i behoves you and your successive generations to se that the high example of duty and loyalty enshri ned in those traditions is not in any way bedimme or blurred in fut

अर्थात् आपने मेरे और मेरे घराने के प्रति जिस राजभक्ति के भाव प्रदर्शित किये हैं। बहुत प्रसंद करता हूँ। आपकी जाति ने मेरे पूर्वजों की जो अमूल्य सेवाएं की हैं वह इस इतिहास में प्रधान और चिरस्थाई स्थान गृहण करेगी। वह भक्ति पूर्ण सेवाओं का एक गौरवशाली है। वास्तव में आपकी सदा स्थिर रहने वाली राज भक्ति और एक मन से की हुई कर्त्तव्य निष्ठा भूतकाल में इस राज्य के लिए बहुमूल्य सम्पत्ति रही है—मुझे उम्मीद है कि भविष्य में भी रहेगी प्रति मैं अधिक से अधिक सम्मान प्रदान करता हूँ।

मुझे संदेह नहीं है कि आप अपने महान गौरवशाली इतिहास का बहुत मान करते हैं। पूरा विश्वास है कि आप हमेशा अपने गौरव पूर्ण इतिहास को सुस्थिर रखने का यत्न करेंगे। और आपकी संतानें इस बात के लिये अवश्य यत्न करेंगी कि आपके इतिहास में कर्तव्य निष्ठा भक्ति का जो प्रकाश है, उसमें भविष्य में किसी भी प्रकार कमी न आवे।

उदयपुर (मेवाड़) के "ओसवाल" प्रधान, दीवान एवं फौज बख्शी

अब हम मारवाड की तरह मेवाड के कतिपय ओसवाल प्रधान, दीवान एव सेनाध्यक्षों देते हैं। मारवाड की तरह मेवाड में भी अनेकों ओसवाल राजनीतिज्ञों और वीरों ने लगातार वर्षों तक कठिन परिस्थितियों में राज्य की महान सेवाए की। हमें खेद है कि इन तमाम ओसवाल हमें सिलसिलेवार पूरे नाम नहीं मिले है अत हम बहुत थोडी नामावली यहाँ दे रहे है।

१—कोठारी तोलाशाहजी—महाराणा सागा के समय में प्रधानगी की।
२—* कोठारी कर्माशाहजी—राणा रतनसिंह के समय में प्रधानगी के पद पर काम किया।
३—निहालचन्दजी बोलिया—सम्वत् १६१० में चित्तौड में महाराणा उदयसिंहजी के समय प्रधान
४—रगाजी बोलिया—वडे महाराणा अमरसिंहजी तथा महाराणा कर्णसिंहजी के समय में प्रधान
५—सर्वस्व त्यागी, वीरवर भामाशाह कावडिया—महाराणा प्रतापसिंहजी के राजत्व काल में आ
अत तक एव उनके पुत्र अमरसिंहजी के समय में सवत् १६५६ की माव सुदी
६—कावड़िया जीवशाहजी (भामाशाह के पुत्र) अपने पिता के बाद महाराणा अमरसिंहजी के सम
७—कावडिया अक्षयराजजी (जीवाशाह के पुत्र) महाराणा कर्णसिंहजो के राज्यकाल में।

* इन्होंने शत्रुंजय का उद्धार किया था। देखिये "धार्मिक विभाग"

-सम्बन्धी बहुत सी नवीन और बहुमूल्य सामग्री है। इन्हीं जिल्दों मे कई स्थानो पर गंगारामजी और उनके सेना संचालन का उल्लेख आया है।

उक्त पत्रों से मालूम होता है कि महाराजा यशवंतराव के समय मे जो प्रभाव अमीरखाँ, गफूरखाँ व्यक्तियों का था वही प्रभाव इस समय गंगारामजी कोठारी का था। अन्तर केवल इतना ही था कि मौका पाते ही बहुत सी जमीन दबा बैठा और उसने अपना स्वतंत्र राज्य कायम कर लिया। जी कोठारी के खून मे स्वामिभक्ति के परिमाणु होने से, उन्होंने ऐसा करना ठीक न समझा। उन्होंने किया वह सब अपने स्वामी इन्दौर नरेश के लिये किया पर तत्कालीन इतिहास ग्रन्थों मे उनके का जो वर्णन है, उनसे उनकी महानता पर बहुत ही अच्छा प्रकाश गिरता है। Abailey macke क तत्कालीन इतिहास लेखक अपने "Chiefs of Central India" नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ३० ट मे लिखते हैं।

"Gangaram Kothari, a Mahajan, was at this time Governor of Jaora s a man of considerable ability and Jaswantrao also employed him as nor of Rampura and several other places"

अर्थात् गंगाराम कोठारी नामक महाजन इस वक्त जावरे के शासक थे। ये अत्यन्त प्रतिभा महानुभाव थे। यशवंतराव होलकर ने इन्हे रामपुरा तथा बहुत से स्थानों का शासक (Governor) दिया।

मि० वाउटजर द्वारा संग्रहीत पार्लमेन्टरी पेपरों मे २५ जनवरी सन १८०६ मे एक संवाद दिया वह इस प्रकार है।

"In the neighbourhood of Malhargarh and Narsinghgarh was a force ging to Gangaram Kothari acting immediately under the authority of ntrao Holkar This force lately has committed Considerable depreda- n the territory of Daulatrao Scindiah

अर्थात् मल्हारगढ और नरसिंहगढ के पास एक फौज पड़ी हुई थी जो गंगाराम कोठारी के सेना- थी। ये गंगाराम कोठारी यशवन्तराव होल्कर की आज्ञानुसार सेना संचालन का कार्य करते इस फौज ने अभी-अभी दौलतराव सिंधिया के मुल्कों मे बहुत लूट मार की।

मिस्टर वाउटजर द्वारा संग्रहीत उक्त पार्लियामेन्टरी पेपरो के पृष्ठ २०८ मे ईसवी सन् १८०९ की अक्टूबर का निम्नलिखित सम्वाद दिया गया है। वह इस प्रकार है।

२—*वेद मेहता राव लाखनसी,—बीकानेर राज्य के आरंभ काल में कार्य्य किया।
३—मेहता करमसी वच्छावत—(वच्छराजजी के पुत्र) संवत् १५७१ मे राव लूणकरणजी के सम
४—मेहता वरसिंहजी वच्छावत (करमसी के छोटे भाई) राव जेतसिंहजी के समय में।
५—मेहता नगराजजी वच्छावत (वरसिंहजी के पुत्र) राव जेतसिंहजी के समय में।
६—मेहता संग्रामसिंहजी वच्छावत (नगराजजी के पुत्र) राव कल्याणसिंहजी के समय में
७—मेहता करमचन्दजी वच्छावत (संग्रामसिंहजी के पुत्र) राव रायसिंहजी के समय में।
८—वेद मेहता ठाकुरसीजी (राव लाखनसी की ५ वीं पीढी में) राव रायसिंहजी के समय में
९—†मेहता भागचन्दजी तथा लक्ष्मीचंदजी वच्छावत (करमचन्दजी के पुत्र) राव सूरसिंहजी के स
१०—वेद मेहता महाराव हिन्दूमलजी—महाराजा रतनसिंहजी के समय में संवत् १८८५ में।
११—मेहता किशनसिंहजी—१९३५ में एक साल तक।
१२—दीवान अमरचन्दजी सुराणा—महाराजा सूरतसिंहजी के समय में १८८३ से
१३—राखेचा मानमलजी—सवत् १८५२-५३ में दीवान रहे।
१४—कोचर मेहता शहामलजी—महाराजा सरदारसिंहजी के समय में सवत् १८६७ में दीवान र

किशनगढ़ स्टेट के दीवान

अब हम किशनगढ़ स्टेट के भी कतिपय ओसवाल दीवानों की सूची दे रहे हैं।

१—मुहणोत रायचन्दजी—महाराज कृष्णसिंहजी के साथ कृष्णगढ राज्य के स्थापन में एवं किशनगढ़ शहर वसाने में बहुत अधिक सहयोग दिया। आपको महाराजा कृष्णसिंहजी ने प्रथम दीवान बनाया। आप लगभग १७२० तक इस पद पर रहे।
२—मेहता कृष्णसिंहजी मुहणोत—महाराजा मानसिंहजी के समय राज्य के मुख्य मन्त्री रहे।
३—मेहता आसकरणजी मुहणोत—महाराजा राजसिंहजी ने १७६५ मे दीवान पद इनायत किया
४—मेहता चैनसिंहजी मुहणोत—महाराजा प्रतापसिंहजी के समय में दीवान रहे।
५—मेहता रामचन्द्रजी मुहणोत—महाराजा बहादुरसिंहजी ने सवत् १७८१ में दीवान बनाया।
६—मेहता हठीसिंहजी मुहणोत—महाराजा बहादुरसिंहजी ने सवत् १८३१ में दीवान पद दिया।
७—मुहणोत हिन्दूसिंहजी—महाराज बहादुरसिंहजी के समय में माईदासजी के साथ दीवानगी क
८—मेहता जोगीदासजी मुहणोत—महाराजा विरदसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी के समय में दीवा

* आप भी राव बीकाजी के साथ जोधपुर से आये थे। बीकानेर शहर को बसाने में वच्छ लाखनसीजी ने बहुत अधिक प्रयत्न किया।

† इन बधुओं को महाराजा सूरसिंहजी ने मरवा डाला। उस समय इनके परिवार में केवल १ गर्भवती स्त्री जिनके कुच मे भाणजी नामक पुत्र हुए। इनकी चौथी पीढी में मेहता अगरचन्दजी हुए। जो मेवाड़ के राजनैतिक चमकते हुए नक्षत्र की तरह भासित हुए। जोधपुर और बीकानेर के बाद इस परिवार के कई पुरुष मेवाड़ प्रधान और दीवान रहे। इस समय इस परिवार में मेहता पन्नालालजी वच्छावत सी आई ई. के पुत्र मेहता फतै

राव होलकर ने उदयपुर पर चढ़ाई की तब गंगारामजी भी उनके साथ थे। वहीं आपका परलोक र हुआ।

कोठारी गंगारामजी की इन कारगुजारियों का महाराजा होलकर ने बडा आदर दिया। आपको की, छत्र, चँवर छडी आदि के सम्मान प्राप्त हुए थे। राजपूताने मे भी आपकी बड़ी इज्जत थी। उदयपुर र ने इन्हे अपने उमराओं मे बैठक देकर इनका सम्मान किया था।

तत्कालीन इन्दौर नरेश ने आपको परगना रामपुरे मे जन्नौर और दुधलाय नामक दो गाँव इस्त- री जागीर में दिये थे। इनके लिये उन्हें सरकार को ९०१) टॉका के देना पड़ते थे।

टारी शिवचन्दजी

कोठारी शिवचदजी कोठारी गगारामजी के बधु एवं भवानीरामजी के पौत्र थे। आप बड़े वीर, हसालार और सफल शासक थे। रामपुरा, भानपुरा, गरोठ आदि परगनों के आप शासक (Governor) ह गये थे। जिस समय की यह बात है उस समय चारों ओर बड़ी अशाति छाई थी, अराजकता और लूट मार का दौरदौर था। आस पास के लुटेरे मीनों और सोंधियों के उत्पात मे परगनों मे त्राहि २मची हुई थी। कोठारी शिवचन्दजी ने इन लुटेरों पर चढ़ाइयाँ कर इन्हे समुचित दिया और रामपुरा भानपुरा परगनों में शाति का साम्राज्य कायम किया। इनकी वीरता की कहानियाँ भी रामपुर भानपुर जिले के लोग बडे उत्साह के साथ कहते है। महामति टॉड साहब ने भी अपने र वर्णन मे इन कोठारी साहब के प्रभाव का वर्णन किया है और भी कई अंग्रेजो ने इनकी बहादुरी और जारियों की बडी प्रशसा की है। कहा जाता है कि उस समय वीरवर शिवचन्दजी का नाम लुटेरे, और बदमाशों को कम्पा देने का काम करता था उस भयकर अशाति के युग मे इन्होंने जैसा अमन और पैदा कर दिया था उससे उनकी ख्याति दूर २ तक फैल गई थी।

सन् १८५७ में जब अंग्रेज सरकार के खिलाफ हिन्दुस्थान मे चारो ओर विद्रोह की आग भड़की और जब पिण्डारियों के दल के दल रामपुर भानपुर जिलों की ओर बढ रहे थे। तब कोठारी शिवचंदजी ने हिकमत अमली से इन लोगों को दूसरी ओर निकाल कर अपने जिलों की रक्षा कर ली थी। इस और भी कई मौकों पर इन्होंने बडे २ काम किये और उन जिलो में अपना नाम चिरस्मरणीय रखा।

जैसा कि हम पहले कह चुके है कोठारी शिवचन्दजी में राजनीतिज्ञता और वीरता का बड़ा ही सम्मेलन हुआ था। एक ओर जहां हम आप को हाथ मे तलवार लेकर युद्ध करते हुए देखते है,

इन्दौर स्टेट के ओसवाल दीवान

१—राय बहादुर सिरेमलजी बापना, बी० एस० सी० एल० एल० बी० एतमाद—वजीर उद्दौला
सन् १९२६ से इन्दौर स्टेट के प्राइम मिनिस्टर एवं प्रेसिडेंट कौंसिल के पद पर अधि
वर्तमान में भारत के ओसवाल समाज में आपही एक महानुभाव इतने उच्च पदपर विरा
२—रा० ब० हीराचन्दजी कोठारी—आप भी कुछ मास तक टेम्परेरी रूप से प्रेसीडेंट कौंसिल तथा मिनि

रतलाम स्टेट के ओसवाल दीवान

१—स्वर्गीय कोठारी जव्हारसिंहजी दूगड नामली—आपने कुछ वर्षों तक स्टेटके दीवान पदपर काम कि

सीतामऊ के ओसवाल दीवान

१—मेहता नाथाजी—महाराजा रामसिंहजी के समय में १७२१ में ।
२—मेहता हीराचन्दजी—महाराजा केशोदासजी के समय मे ।
३—मेहता भिखारीदासजी—महाराजा केशोदासजी के समय में १७६९ में ।

बांसवाड़ा राज्य के ओसवाल दीवान

यहाँ के कोठारी परिवार ने बहुत समय तक दीवान पद पर काम किया। तथा अभी
पूर्व मसूदा निवासी श्री जालिमचन्दजी कोठारी दीवान पद पर काम करते थे।

झाबुआ के ओसवाल दीवान

१—श्री ढड्डा गुलाबचन्दजी एम० ए० जयपुर—आप इस स्टेट के दीवान पद पर कार्य्य कर चुके हैं।

प्रतापगढ़ के ओसवाल दीवान

१—श्रीसुजानमलजी बांठिया प्रतापगढ़—आप कई वर्षों तक इस स्टेट के दीवान रह चुके हैं।

झालावाड़ स्टेट के फौज़बख्शी

१—सुराणा गंगाप्रसादजी—आपको महाराज राणा पृथ्वीसिंहजी ने फौजबख्शी का पद इनायत कि
२—सुराणा नरसिंहदासजी—(गंगाप्रसादजी के पुत्र) अपने पिताजी की जगह फौजबख्शी मुक़र

ाप कौंसिल के मेम्बर हो गये। संवत् १९५७ मे इन्दौर मे आपका स्वर्गवास हो गया। जिस समय ापके स्वर्गवास का समाचार भानपुरा पहुँचा उस समय चारों ओर भानपुर परगने मे हाहाकार सा मच या। इन पक्तियों का लेखक उस समय भानपुर मे था। उसने उस समय भानपुर मे जो शोक की ेर घटा देखी वह उसे सदा स्मरण रहेगी। इसका कारण है। जो व्यक्ति सैकड़ों हजारो आदमियों के सुख खों में साथ देता है, लोग भी उसे अपने पिता की तरह प्रेम और भक्ति भाव से देखने लगते है। कोठारी ावन्तरामजी रामपुर भानपुर परगने के एक विशेष पुरुष थे। वे लोगों से प्रेम करते थे और लोग उनसे ्म करते थे। जब राजसी ठाठ के साथ उनकी सवारी निकलती थी तब सैकडों लोग उनका अभिवादन रने में गौरव अनुभव करते थे। अगर तत्कालीन प्रचलित लोकोक्ति पर विश्वास किया जाय तो कहना गा कि किसानों के हित रक्षा का समर्थन करने के कारण ही आपको भानपुर मे इन्दौर जाना पड़ा था। ने का अर्थ यह है कि ओसवाल समाज मे इन्दौर के कोठारी गगारामजी, कोठारी शिवचन्दजी और ठारी सावतरामजी अपना खास स्थान रखते है।

ाय बहादुर सिरेमलजी बापना

गत पृष्ठों में हम ओसवाल समाज के ऐसे कई ऐतिहासिक महानुभावों का परिचय दे चुके है न्होंने अपने २ समय में राजनैतिक और सैनिक क्षेत्रों मे अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय देकर राजस्थान इतिहास को गौरवान्वित किया है। हम देखते है कि आज भी इस समाज में कुछ ऐसे सज्जन मौजूद है न्होंने अपनी दूरदर्शितापूर्ण (Far sighted statesmanship) राजनैतिक प्रतिभा के कारण भारत शासकों (Administrators) में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है। इनमें सब से प्रथम उदाहरण इन्दौर ज्य के सफल प्राइममिनिस्टर राय बहादुर सिरेमलजी बापना सी० आई० ई० का दिया जाने योग्य है। र्तमान ओसवाल समाज में इस समय सब से अधिक उच्च पद पर आपही हैं।

जिस समय आपने इन्दौर राज्य के शासन की बागडोर सम्हाली थी वह समय इन्दौर राज्य के तिहास मे अत्यत जटिलता मय और कठिन समस्याओं से परिपूर्ण था। ऐसे समय में आपने इन्दौर ाज्य के शासन को जिस अपूर्व नीतिज्ञता के साथ सचालित किया, वह आपके सफल शासक होने का ज्वलंत प्रमाण है। जिन लोगों ने देशी राज्यों की आन्तरिक परिस्थिति का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया है उनमें होने वाले राजनैतिक कुचक्रों और फिरकेबन्दियों से भली प्रकार परिचित होंगे। नाबालिगी शासन इनका और भी प्राबल्य रहता है। ऐसी नाजुक परिस्थिति में इन सब षड्यन्त्रों से ऊपर रह कर विशुद्ध ्य से प्रजाहित की ओर बढते चले जाने ही में उच्च श्रेणी की राजनीतिज्ञता रहती है। श्रीमान बापना ोदय एक विशाल हृदय के मुत्सद्दी है। उनका दृष्टि बिन्दु बहुत व्यापक और दूरदर्शितापूर्ण है।

ओसवाल जाति के प्रधान, दीवान तथा प्रधान सेनापतियों की सूची

हम इस सूची में भारत की कुछ देशी रियासतों के ओसवाल प्रधानों, दीवानों, एवं प्रधान सेना-
ों की सूची दे रहे हैं। इनमे से कई सज्जनों ने अपने महान कार्य्यों से राजस्थान के इतिहास के
को उज्वल किया है।

जोधपुर राज्य के प्रधान ❀ (Presidents)

१—भण्डारी नराजी (समराजी के पुत्र) सं० १५१५ से १६ तक
२—भण्डारी नराजी (समराजी के पुत्र) सं० १९ ६ से ३१ तक
३—भण्डारी नाथाजी (नराजी के पुत्र) स० १५४४ से ४५ तक
४—भण्डारी ऊदाजी (नाथाजी के पुत्र) सं० १५४८ से
५—भण्डारी गोरोजी (ऊदाजी के पुत्र) राव गागाजी के समय मे
६—भण्डारी लूणाजी (गोराजी के पुत्र) सं० १६५१ से ५७ तक
७—भण्डारी मानाजी (डावरजी के पुत्र) सं० १६५४ से ६५ तक
८—भण्डारी लूणाजी (गोराजी के पुत्र) स० १६६५ से ७० तक
९—भण्डारी विट्ठलदासजी सं० १७६६
१०—भण्डारी खींवसीजी स० १७७०
११—भण्डारी भानाजी (मानाजी के पुत्र) सं० १६७१ से ७५ तक
१२—भण्डारी पृथ्वीराजजी स० १६७५ से ७६ तक
१३—भण्डारी लूणाजी (गोराजी के पुत्र) स० १६७६ से १६८१ तक

जोधपुर राज्य के दीवान

—भण्डारी नराजी (समराजी के पुत्र) जोधपुर शहर के स्थापन में राव जोधाजी के साथ सहयोग दिया। एवं संवत् १५१६ में "दीवान" का सम्मान पाया।

—मुहणोत महराजजी (अमरसीजी के पुत्र)—राव जोधाजी के समय में दीवानगी तथा प्रधानगी की।

❀ प्रधानगी का ओहदा दीवान (Primeminister) के ओहदे से ऊँचा समझा जाता था।

• इनके पश्चात लगभग १५० वर्षो तक जोधपुर राज्य के स्थापना राव जोधाजी राव [illegible], राव [illegible], मालदेवजी, रावचन्द्रसेनजी, मोटाराजा उदयसिंहजी, सवाई राजा सूरसिंहजी एवं महाराजा गजसिंहजी के समय में [illegible] पुरुषों ने दीवानगी एवं प्रधानगी के ओहदों पर कार्य्य किये, लेकिन पूर्ण [illegible] प्राप्त नहीं सकने से जितने नाम [illegible] उतने ही दिये जा रहे हैं।

श्री शत्रुञ्जय हिल पालीताना

(श्री बा० पूरणचन्दजी नाहर के सौजन्य
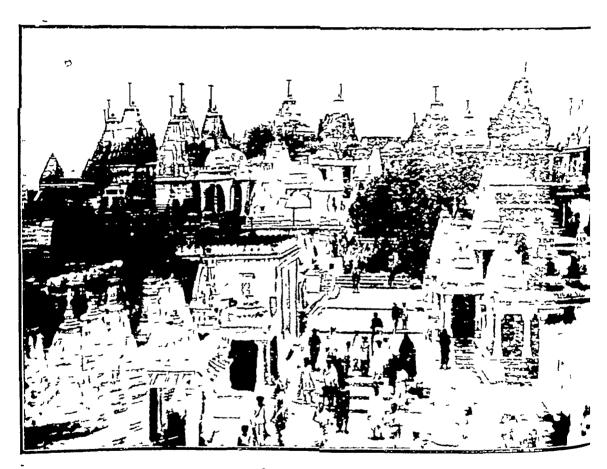
-भण्डारी अमरसिंहजी (खींवसीजी के पुत्र) सम्वत् १७८५ की आषाढ सुदी १४ से १७८८ तक

-सिंघवी अमरचन्दजी (रायमलजी के पुत्र) १७९२ आसोज सुदी १० से १७९४ चैत्र सुदी ७ तक

-भण्डारी अमरसिंहजी (खींवसीजी के पुत्र) सम्वत् १७९९ की कार्तिक सुदी १ से १८०१ के ज्येष्ठ तक

-भण्डारी गिरधरदासजी (रतनसिंहजी के भाई)—सवत् १८०१ के ज्येष्ठ से १८०४ के भादवा तक

-भण्डारी मनरूपजी (पोमसीजी के पुत्र) सम्वत् १८०४ के भादवा से १८०६ के मगसर तक

-भण्डारी सूरतरामजी (मनरूपजी के पुत्र) सम्वत् १८०६

भण्डारी दौलतरामजी (थानसीजीके पुत्र)
भण्डारी सूरतरामजी (मनरूपजी के पुत्र } सवत् १८०६ की सावण सुदी १० से १८०७ की आसोज सुदी १० तक

भण्डारी सवाईरामजी (रतनसिंहोत) १८०७ की आसोज सुदी १० से १८०८ की श्रावण वदी २ तक

सिंघवी फतेचन्दजी (सरूपमलोत) १८०८ की श्रावण वदी २ से १८१८ की आसोज वदी १४ तक

भण्डारी नरसिंहदासजी (मेसदासोत) सवत् १८१९ की जेठ सुदी ५ से १८२० की जेठ सुदी ५ तक

मुहणोत सूरतरामजी (भगवतसिंहोत) १८२० की जेठ सुदी ५ से स० १८२२ आसोज सुदी ९ तक

सिंघवी फतेहचन्दजी* (सरूपमलजी के पुत्र) सम्वत् १८२२ की चैत्र सुदी ५ से १८३७ की—आसोज सुदी १० तक (जीवन पर्यन्त)

खालसे (कामसिंघवी फतेचन्दजीके पुत्र ज्ञानमलजी देखते थे) १८३७से १८४७ मगसर सुदी२ तक

सिंघवी ज्ञानमलजी (फतेचन्दजी के पुत्र) संवत् १८४७ की मगसर सुदी २ से माघ सुदी ५ तक

भण्डारी भवानीदासजी (जीवनदासजी के) १८४७ माह सुदी ५ से १८५१ की वैशाख वदी १४ तक

भण्डारी शिवचन्दजी (शोभाचन्दोत) १८५१ की वैशाख वदी १४से १८५४ की आसोज सुदी १४ तक

खालसे (काम सिंघवी नवलराजजी देखते थे) १८५४ आसोज सुदी १ से १८५५ श्रावण वदी ६

सिंघवी नवलराजजी (जोधराजजी के पुत्र) सवत् १८५५ की सावण वदी ६ से कार्तिक वदी ९ तक

भण्डारी शिवचन्दजी (शोभाचन्दोत) १८५५ की कार्तिक सुदी११ से १८५६ की वैशाख सुदी११ तक

मुहणोत सरदारमलजी (सवाईरामोत) १८५६ वैशाख सुदी ११ से १८५८ की आसोज सुदी ३ तक

खालसे (काम सिंघवी जोधराजजी देखते थे) १८५८ आसोज सुदी ३ से १८५९ भादवा वदी २ तक

भण्डारी गङ्गारामजी (जसराजजी के पुत्र) सम्वत् १८६० मगसर वदी ७ से जेठ वदी ४ तक

मुहणोत ज्ञानमलजी (सूरतरामजी के) १८६० जेठ वदी ४ से १८६२ की आसोज सुदी ४ तक

चर मेड़ता सूरजमलजी (सोजतके) १८६२ आसोज वदी ४ से १८६४ की आसोज सुदी ८ तक

सिंघवी इन्द्रराजजी (भीवराजोत) १८६४ की आसोज सुदी ८ से १८७२ की आसोज सुदी ८ तक

---

* आपने अपने जीवन में २५ सालों तक 'दीवान' पद का सचालन किया।

† जब किसी कारण वश "दीवानगी" का ओहदा दरबार अपने अधिकार में ले लेते थे, उस समय तक [illegible] निर्वाचित नहीं किये जाते थे, यह ओहदा खालसे माना जाता था, और उसके कार्य [illegible] किसी प्रभावशाली व्यक्ति के जिम्मे किया जाता था।

शत्रुंजय तीर्थ

शत्रुंजय तीर्थ और ओसवाल

शत्रुंजय तीर्थ के माहात्म्य के सम्बन्ध में कुछ भी लिखना सूर्य्य को दीपक दिखाना है का प्रत्येक जैन गृहस्थ इस तीर्थ की महानता और माहात्म्य के सम्बन्ध में पूर्णतया परिचित है। श्वेताम्बर जैन समाज के अन्तर्गत तो इस तीर्थ की महिमा खूब ही मानी गई है। इस समाज के प्राचीन और अर्वाचीन काल में जितने भी संघ निकाले गये उनमें से अधिकांश से भी अधिक गिरनार के थे। इस तीर्थ के अन्दर इसके जीर्णोद्धार और इसकी जाहोजलाली के लिये ओसवाल ने कितने महत्वपूर्ण काम किये, वे नीचे लिखे शिलालेखों से भली प्रकार प्रकट हो जायँगे।

शत्रुञ्जय तीर्थ और धर्मवीर समराशाह

शत्रुञ्जय तीर्थ वैसे तो बहुत प्राचीन है मगर समय के धक्कों से हमेशा मन्दिरों में जीर्णता आती ही रहती है, जिसका समय २ पर श्रद्धालु और समर्थ श्रावक पुनरुद्धार मगर वि० सं० १३६९ में इस तीर्थ पर ऐसी भयङ्कर विपत्ति आई जैसी शायद न तो उसके आई थी और न उसके पश्चात ही।

वह समय अलाउद्दीन खिलजी का था—उसी अलाउद्दीन का जिसने महारानी प लालसा में पड़कर चित्तौड़ का सर्वनाश कर दिया था। इस यवन राजा की निर्दयता और सम्बन्ध में इतिहास के पाठक भली प्रकार परिचित हैं। इसी अलाउद्दीन की फौजों ने वि० सं० शत्रुञ्जय तीर्थ पर हमला कर दिया। इन आक्रमणकारियों ने इस महान् तीर्थ को चौप अनेकानेक भव्य मन्दिर और मूर्त्तियां नष्ट कर दी गईं। यहाँ तक कि मूलनायक श्रीआदीश्वर मूर्त्ति भी खण्डित कर दी गई।

उस समय अणहिलपुरपट्टण में ओसवाल जाति के श्रेष्ठि (वैद मुहता) गौत्रीय शाह विद्यमान थे। ये बड़े धर्म भीरू और भावुक व्यक्ति थे। जब इन्होंने शत्रुञ्जय तीर्थ के नाश का तो इन्हें बड़ा दुःख हुआ। इन्होंने अपने प्रतिभाशाली और धार्मिक पुत्र समराशाह से यह हा तब समराशाह ने कहा कि जब तक मैं इस तीर्थराज का पुनरुद्धार न कर लूँगा (१) भूमि

मेहता लखमीचन्दजी (अखेचन्दजी के पुत्र) १८९९ चेत सुदी १ से १९०० की फागुन वदी ३ तक
सिंघवी गभीरमलजी (फतेमलजी के पुत्र) सम्वत् १९०० की फागुन वदी ३ से जेठ सुदी ५ तक
मेहता लखमीचन्दजी (अखेचन्दजी के पुत्र) सम्वत् १९०० की जेठ सुदी से १९०२ कार्तिक सुदी ९
खालसे* काम सिंघवी फौजराजजी, भण्डारी शिवचदजी, मेहता गोपालदासजी तथा २ अन्य जातीय सज्जन देखते थे। सं० १९०२ के कार्तिक सुदी ९ से माघ वदी ९ तक
भण्डारी शिवचन्दजी (लखमीचन्दजी के पुत्र) १९०२ माघ वदी ९ से १९०३ आसोज सुदी ३ तक
मेहता लक्ष्मीचन्दजी (अखेचन्दजी के पुत्र) १९०३ आसोज सुदी ३ से १९०७ आसोज वदी ७ तक
मेहता मुकुन्दचन्दजी (लखमीचन्दजी के पुत्र) १९०७ की आसोज सुदी ७ से कार्तिक वदी ४ तक
राव राजमलजी लोढा—(रावरिधमलजी के) १९०७ चेत वदी १० से १९०८ भादवा सुदी १३ तक
खालसे† (काम मेहता मुकुन्दचन्दजी, सिंघवी फौजराजजी और मेहता विजयसिंहजी आदि ५ व्यक्तियों की कमेटी के द्वारा होता था) स० १९०८ भादवा सुदी १३ से पोष सुदी २ तक
मेहता विजयसिंहजी (कृष्णगढ़ के मेहता करणमलजी के) १९०८ पोष सुदी २ से १९०९ आ० वदी १
मेहता मुकुन्दचन्दजी (लक्ष्मीचन्दजी के पुत्र) १९०९ मगसर वदी १ से १९१० माह सुदी ९ तक
खालसे‡—(काम मेहता गोपाललालजी, मेहता हरजीवनजी गुजराती तथा मेहता शंकरलालजी देखते थे) । स० १९१० की माघ सुदी ९ से वैसाख वदी १३ तक
खालसे (काम मेहता विजयसिंहजी, राव राजमलजी लोढा, और मेहता हरजीवनजी गुजराती देखते थे) सं० १९१३ की कार्तिक वदी ६ से पोष वदी १० तक
मेहता विजयसिंहजी—सवत् १९१३ की पोष सुदी १० से संवत् १९१५ की पोष सुदी ९ तक
मेहता गोपाललालजी और मेहता हरजीवनदासजी गुजरात वाले संवत् १९१५ की जेठ सुदी ११ तक
मेहता मुकुन्दचन्दजी (लक्ष्मीचन्दजी के पुत्र) १९१६ की आषाढ वदी ८ से १९१९ सावन वदी १ तक
+ खालसे (काम मेहता हरजीवनदासजी गुजराती, सिंघवी रतनराजजी तथा दो अन्य जातीय सज्जन देखते थे) स० १९१९ की सावण वदी १ से चैत्र सुदी १ तक
मेहता मुकुन्दचन्दजी (लखमीचन्दजी के) १९१९ चैत्र सुदी १ से १९२२ दूजा जेठ वदी ९ तक
— खालसे—बेद मेहता सेठ प्रतापमलजी अजमेर वाले (गम्भीरमलजी के पुत्र) मेहता मुकुन्दचन्दजी, मेहता गोपाललालजी तथा भण्डारी पचानदासजी (बहादुरमलजी के भाई) काम करते थे। सं० १९२३ कातिक वदी ३ से १९२४ भादवा सुदी ५
मेहता विजयसिंहजी (मेहता करणमलजी के पुत्र) १९२५ कातिक सुदी ५ से मगसर सुदी ५ तक

* इनके साथ ड्योढ़ीदार पेमकरणजी एवं जोशी प्रभुदानजी भी इस पद का कार्य देखते थे।

† इनके साथ जोशी प्रभूलालजी भी दीवान पद का कार्य देखते।

‡ इनके साथ व्यास चतुरकरणजी काम देखते थे।

+ इनके साथ पंचोली मानलालजी और जोशी प्रभुदानजी काम देखते थे।

— आपके साथ जोशी शिवचन्दजी भी दीवान पद का कार्य सम्मिलित करते थे।

भंडारी अगरचन्दजी—(शिवचन्दजी के पुत्र) १८७४ दूजा सावण सुदी ६ से १८७६ दूजा जेठवदी १२ तक
सिंघवी मेघराजजी—(अखेराजोत) १८७६ की दूजा जेठ वदी १२ से १८८२ की माघ सुदी १२ तक
सिंघवी फौजराजजी—(गुलराजजी के पुत्र) १८९३ की सावण सुदी १ से १९१२ की आषाढ़ वदी ३ तक
सिंघवी देवराजजी—(इनके पिता फौजराजजी के गुजरने पर फौजबख्शी देवराजजी के नाम पर हुई लेकिन इनकी ओर से इनके फूफा मुहणोत विजयसिंहजी तथा मेहता कालूरामजी वापना कार्य देखते थे। स० १९ २ आषाढ वदी ३ से १९१६ सावण वदी १ तक
खालसे—(काम सिंघवी देवराजजीकी ओरसे उनके कामदार वापना कालूरामजीके पुत्र मेहता रामलालजी वापना देखते थे।) सम्वत् १९१९ की सावण वदी १ से सम्वत् १९१९ की आसाढ सुदी १४ तक
सिंघवी देवराजजी—(फौजराजजी के पुत्र) स० १९१९ आषाढ सुदी ४ से १९२८ काती वदी ६ तक
सिंघवी समरथराजजी —(सुखराजजी के पुत्र) १९२९ की मगसर सुदी २ से १९३१ चेत वदी ६ तक
सिंघवी करणराजजी—(सूरजराजजी के पुत्र) १९३१ चेत वदी ६ से १९३४ आसोज सुदी ५ तक
सिंघवी किशनराजजी—(करणराजजी के पुत्र) १९३४ आसोज सुदी ५ से १९३५ भादवा वदी ३ तक
सिंघवी बच्छराजजी (भींवराजजी के वंशज) स० १९४५ से स० १९५६ तक

जोधपुर के वर्तमान महाराजा साहिब का वहाँ के ओसवाल समाज के प्रति उद्गार

ओसवालों द्वारा संचालित सरदार हाई स्कूल की नई इमारत के उद्घाटन के समय गत १२ १९३२ को जोधपुर के वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजा उम्मेदसिंहजी साहब ने बड़ा ही महत्त्वपूर्ण दिया था। उसमें आपने ओसवाल जाति के पूर्वजों द्वारा की गई महान राजनैतिक सेवाओं का गौरवशाली वर्णन किया है हम आपके उक्त भाषण का कुछ अंश नीचे उद्धृत करते हैं।

I greatly appreciate the sentiments of loyalty and devotion expressed by you towards me and my house The inestimable services rendered by your community to my ancestors are assured of a conspicuous and abiding place in the history of this great State It is a magnificent record of devoted service Indeed I cannot pay too high a tribute to your unflinching loyalty and single-minded devotion to duty which have been, and I hope should be, very valuable assets to this State, both in the past, and in the future

शिला में खोदा हुआ है। इस शिलालेख में * सबसे पहले कर्माशाह के वंश का वर्णन किया गया है। पता लगता है कि ग्वालियर के अन्दर आम राजा ने बप्प भट्टसूरि के उपदेश से जैन धर्म को ग्रहण उसकी एक स्त्री वणिक कन्या थी। उसकी कुक्षि से जो पुत्र उत्पन्न हुए थे वे सब ओसवाल जाति में लिये गये और उनका गौत्र राज कोष्टागार के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी कुल में आगे चल कर सा नामक एक प्रसिद्ध पुरुष हुए। सारणदेव की ८ वीं पुश्त में तोलाशाह नामक एक व्यक्ति हुए लीलू नामक स्त्री से छ पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटे कर्माशाह थे। आपके भी दो स्त्रियाँ थीं। ए का नाम कपूरदे और दूसरी का कामलदे था। कर्माशाह का राज दरबार में बड़ा सम्मान था। वे एक व्यापारिक पुरुष थे फिर भी राजनैतिक वातावरण के ऊपर उनका बहुत अच्छा प्रभाव था। समय मेवाड़ की राज गद्दी पर राणा रत्नसिंहजी अधिष्टित थे।

कर्माशाह ने अपने गुरु के पास से शत्रुञ्जय तीर्थ का महत्व सुनकर उसके पुनरुद्धार की इच्छा प्रगट की और चित्तौड़ से गुजरात आकर वहाँ के तत्कालीन सुलतान बहादुरशाह के पास उद्धार का फरमान प्राप्त किया। तत्पश्चात् आप वहाँ से शत्रुञ्जय को गये। उस समय सोरठ मजादखाँन के कारभारी रविराज और नरसिंह नाम के दो व्यक्तियों ने कर्माशाह का बहुत आदर उनकी सहानुभूति और सहायता से कर्माशाह ने बहुत द्रव्य खर्च करके सिद्धाचल का पुनरुद्धार कि संवत् १५८७ के वैसाख वदी ६ को अनेक संघ और अनेक मुनि आचार्य्यों के साथ उसकी प्र प्रतिष्ठा की।

शत्रुञ्जय तीर्थ और शाह तेजपाल

कर्माशाह के ६० वर्ष के पश्चात् खम्भात के रहनेवाले प्रसिद्ध ओसवाल धनिक शाह सोनी ने शत्रुंजय के इस महान मंदिर का विशेष रूप से पुनरुद्धार कर फिर से उसे तय्यार करवा तप गच्छ के प्रसिद्ध आचार्य्य हीरविजय सूरि के हाथों से उसकी प्रतिष्ठा करवाई। इसका एक लेख † मुख्य मंदिर के पूर्व द्वार के रंग मण्डप में लगा हुआ है। इस शिलालेख में शुरू २ में तप के आचार्य्यों की पट्टावली और उनके द्वारा किये खास २ कामों का वर्णन किया गया है। उसके उद्धारकर्त्ता का परिचय देते हुए लिखा है।

---

* पूरे शिलालेख के लिए देखिए मुनि जिन विजयजी कृत "जैन लेख संग्रह" भाग २ लेखाङ्क १

† देखिये मुनि विजयजी कृत जैन लेख संग्रह भाग २ लेख १२

सिंघवी दयालदासजी सीसोदिया—महाराणा राजसिंहजी के समय में

मेहता अगरचन्दजी बच्छावत—महाराणा अरिसिंहजी, हमीरसिंहजी तथा भीमसिंहजी के समय मे

मोतीरामजी बोलिया—महाराणा, अरिसिंहजी के राज्यकाल में सं० १८१९ से २६ तक

एकलिंगदासजी बोलिया (मोतीरामजी बोलिया के पुत्र) एकलिंगदासजी की वय छोटी होने से इनके काका मोजीरामजी काम देखते थे

सोमजी गाँधी—महाराणा भीमसिंहजी के समय में

सतीदासजी गाँधी (सोमजी के भाई) महाराणा भीमसिंहजी के समय में

शिवदासजी गाँधी (सोमजी के भाई) महाराणा भीमसिंहजी के समय में

मेहता देवीचन्दजी बच्छावत (अगरचन्दजी के पौत्र) महाराणा भीमसिंहजी के समय मे

मेहता रामसिंहजी—महाराणा भीमसिंहजी के समय मे कई बार दीवान तथा प्रधान रहे।

मेहता शेरसिंहजी बच्छावत (मेहता अगरचन्दजी के पौत्र) महाराणा भीमसिंहजी के समय आप और मेहता रामसिंहजी बारी २ से तीन चार बार दीवान और प्रधान रहे।

मेहता गोकुलचन्दजी बच्छावत (मेहता देवीचन्दजी के पौत्र) महाराणा सरूपसिंहजी के समय मे

कोठारी केसरीसिंहजी—महाराणा सरूपसिंहजी के समय में सं० १९१६ से २१ तक

मेहता गोकुलचन्दजी *—महाराणा सरूपसिंहजी के समय में संवत १९२६ मे प्रधानगी की

मेहता पन्नालालजी बच्छावत सी० आई० ई०—महाराणा शम्भूसिंहजी के समय में

कोठारी बलवन्तसिंहजी—महाराणा फतेसिंहजी के समय में

कटारिया मेहता भोपालसिंहजी—महाराणा फतेसिंहजी के समय में

मेहता जगन्नाथसिंहजी† (भोपालसिंहजी के पुत्र) महाराणा फतहसिंहजी के समय मे

इसी प्रकार मेवाड़ के सेनाध्यक्षों में बोरदिया [illegible], सरदारसिंहजी [illegible] कावड़िया, मेहता [illegible], मेहता चीलजी मेहता नाथजी, मेहता मालदासजी आदि कई नामांकित वीर हुए। जिन्होंने अपनी अपूर्व वीरता से राज्य की अमूल्य सेवाएं कीं। मेहता चीलजी ने मेवाड राज्य के स्थापन में महाराणा हम्मीर को बहुत इमदाद दी।

बीकानेर स्टेट के ओसवाल दीवान

मारवाड एवं मेवाड की तरह बीकानेर राज्य के आरंभ काल से ही ओसवाल पुरुषों ने रियासत [illegible] सेवाओं में सहयोग दिया। अब हम बीकानेर के प्रधानों तथा दीवानों की सूची दे रहे हैं।

‡ बच्छराजजी बच्छावत—संवत् १५४९ से रावबीकाजी के साथ बीकानेर राज्य स्थापन में बहुत कार्य किया।

---

* आपके साथ पंडित लछमणरावजी भी प्रधानगी का काम करते थे।

† आपके साथ संवत् १९७५ तक पं० सुखदेव प्रसादजी एवं इनके बाद संवत् १९७८ तक पं० [illegible] भी राज्यकार्य्य संचालन में सहयोग देते रहे। इस समय आप [illegible] [illegible] हैं।

‡ इसके पूर्व आप राव रिणमलजी एवं राव जोधाजी के समय में [illegible] थे। [illegible] के साथ जांगलू प्रदेश में आये। आपके परिवार ने [illegible] बीकानेर राज्य में [illegible] की।

टोंक पर, हाथी पोल के नजदीक वाले मन्दिर की उत्तर दिशावाली दीवाल पर लगा हुआ है।* भाव इस प्रकार है—

"ओसवाल जाति में, लालण गोत्रान्तर्गत हरपाल नामक एक बड़ा सेठ हुआ। उसके नामक पुत्र हुआ। हरीआ के सिंह, सिंह के उदेसी, उदेसी के पर्वत, और पर्वत के बच्छ नामक हुआ। बच्छ की भार्य्या वाच्छलदे की कुक्षि से अमर नामक पुत्र हुआ। अमर की लिंगदेवी ना से वर्द्धमान, चांपसी और पद्मसिंह नामक तीन पुत्र हुए। इनमें वर्द्धमान और पद्मसिंह बहुत प्र ये दोनों भाई जामसाहब के मंत्री थे। जनता में आपका बहुत सत्कार था। वर्द्धमानशाह की देवी थी, जिसके वीर और विजयपाल नामक दो पुत्र थे। पद्मसिंह की स्त्री का नाम सुजाणदे श्रीपाल, कुँवरपाल और रणमल्ल नामक तीन पुत्र थे। इन तीनों भाइयों ने संवत् १६७१ के वैशा ३ बुधवार को शान्तिनाथ आदि तीर्थङ्करों की २०४ प्रतिमाएँ स्थापित कीं और उनकी प्रतिष्ठा करवाई।

"अपने निवासस्थान नवानगर (जामनगर) में भी उन्होंने बहुत विपुल द्रव्य कैलाश पर्वत के समान ऊँचा भव्य प्रासाद निर्माण करवाया और उसके आसपास ७२ देव कुलि ८ चतुर्मुख मन्दिर बनवाये। शाह पद्मसिंह ने शत्रुञ्जय तीर्थ पर भी ऊँचे तोरण और शिखरों वाला मन्दिर बनवाया और उसमें श्रेयांस आदि तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ स्थापित कीं।"

"इसी प्रकार संवत् १६७६ के फाल्गुन मास की शुक्ला द्वितीया को शाह पद्मसिंह ने से एक बड़ा संघ निकाला और आञ्चलगच्छ के तत्कालीन आचार्य्य कल्याणसागरजी के साथ शत्रु यात्रा की और अपने बनाए हुए मन्दिर में उक्त तीर्थङ्करों की प्रतिमाएँ खूब ठाटबाट के साथ प्रतिष्ठित क

उपरोक्त प्रशस्ति को वाचक विनयचन्द्रगणि के शिष्य पण्डित श्रीदेवसागर ने कहना न होगा कि ये देवसागर उत्तम श्रेणी के विद्वान थे। इन्होंने हेमचन्द्राचार्य्य के "अभिधान चि कोष पर "व्युत्पत्ति रत्नाकर" नामक २०००० श्लोकों की एक बड़ी टीका की रचना की है।

इन्हीं शाह वर्द्धमान और पद्मसिंह के द्वारा बनाया हुआ जामनगर वाला श्रीशान्ति का मन्दिर भी आज वहां पर उनके पूर्व वैभव की सूचना देता हुआ विद्यमान है। इस मन्दिर में लेख लगा हुआ है।†

इन दोनों लेखों से मालूम होता है कि शाह वर्द्धमान और पद्मसिंह दोनों भाई तत्का

---

* पूरा लेख देखिए मुनि जिनविजयजी कृत जैन लेख संग्रह २ य भाग के लेखाङ्क २१ में।

† देखिए मुनि जिन विजयजी कृत जैन लेख संग्रह लेखाङ्क ४५५

-मेहता शिवदासजी मुहणोत—महाराज कल्याणसिंहजी के समय में १८८७ में दीवान रहे।
—मेहता करणसिंहजी मुहणोत—१८७७ से १८९६ तक दीवान रहे। आपके द्वितीय पुत्र मेहता विजयसिंहजी तथा पौत्र सरदारसिंहजी जोधपुर राज्य के ख्याति प्राप्त दीवान रहे।
-मेहता मोखमसिंहजी (मेहता करणमलजी के ज्येष्ठ पुत्र) संवत् १८९६ से १९०८ तक दीवान रहे।

इसी प्रकार किशनगढ़ में मुहणोत परिवार के अलावा बोथरा परिवार में भी कुछ सज्जन दीवान लेकिन खेद है कि इन परिवारों के वर्तमान मालिकों के पास कई बार जाने पर भी हमें परिचय न हो सका, अतएव पूरी सूची नहीं दे सके। इसी प्रकार किशनगढ़ में मेहता उम्मेदसिंहजी, मेहता सिंहजी, मेहता माधवसिंहजी आदि सज्जनों ने भी स्टेट में फौज बख्शी के पदों पर कार्य्य किया।

जयपुर के ओसवाल दीवान

गोलेछा माणिकचन्दजी—प्रधानगी के पद पर कार्य किया।
गोलेछा नथमलजी—संवत् १९३७ से १९५८ तक दीवान पद पर कार्य किया।

काश्मीर के ओसवाल दीवान

जर जनरल दीवान विशनदासजी रायबहादुर सी० एस० आई० सी० आई० ई० जम्मू-भूत पूर्व दीवान काश्मीर, इस समय आप जम्मू में रिटायर्ड लाइफ बिता रहे हैं।

सिरोही—स्टेट के ओसवाल दीवान

इस स्टेट में भी बहुत पुराने समय से ओसवाल समाज का सिंघी परिवार दीवान के पदों पर करता आ रहा है। उन सज्जनों के नाम नीचे उद्धृत करते हैं।

नाम	विवरण
सिंघी श्रीवतजी सिंघी श्यामजी सिंघी सुन्दरजी सिंघी अमरसिंहजी	सिरोही के महाराजा सुल्तानसिंहजी, अखैराजजी, वेरीसालजी दुरजनसिंहजी, तथा मानसिंहजी के समय में दीवान के पदों पर काम किया।
सिंघी हेमराजजी सिंघी कानजी सिंघी पोमाजी	ये तीनों बन्धु ईडर के दीवान सिंघी लालजी के पुत्र थे। इन्होंने सिरोही स्टेट के दीवान पद पर काम किया था इनमें कानजी ३ वार दीवान हुए।

सिंघी जोरजी—आप संवत् १९०६ में दीवान रहे।
दापना चिमनमलजी दबानी वाले—आपने भी स्टेट में दीवान के पद पर कार्य किया था।
सिंघी कस्तूरचन्दजी—आप संवत् १९१९,२५ तथा ३३ में तीन वार दीवान हुए।
राय बहादुर सिंघी जवाहरचन्दजी—आप संवत् १९४८,५५ तथा ५९ में तीन वार दीवान हुए।

शाह मानसिंह, रायसिंह, कनकसेन, उग्रसेन, ऋषभदास इत्यादि ने अपने परिवार सहित अपने गि
आदेशानुसार यह सहस्रकूट तीर्थ बनवाया और अपनी ही प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित किया। तपागच्छा
हरिविजयसूरि की परम्परा में श्री विनयविजयजी ने इसकी प्रतिष्ठा करवाई।

(२) यह लेख संवत १७९१ के वैसाख सुदी ८ का है जो विमलवंश
हाथी पोल की ओर जाते हुए दाहिनी ओर लगा हुआ है। ओसवाल जाति के भण्डारी दीपाजी के पुत्र के
उनके पुत्र उदयकरणजी, उनके पुत्र भण्डारी रत्नसिंहजी * महामंत्री ने—जिन्होंने कि गुजरात में "
का ढिंढोरा पिटवाया—पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित की। जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छ के विजयदयासूरि

(३) इसी प्रकार संवत् १७९४ की असाढ सुदी १० रविवार को ओसवाल वंश के
भानाजी के पुत्र भण्डारी नारायणजी, उनके पुत्र भण्डारी ताराचन्दजी, उनके पुत्र भण्डारी रूपचन्द
पुत्र भण्डारी शिवचंदजी, उनके पुत्र भण्डारी हरकचंदजी ने यह देवालय बनाया और पार्श्वनाथ की एक
अर्पण की तथा खरतर गच्छ के पंडित देवचन्द्रजी ने उसकी प्रतिष्ठा की। यह लेख शत्रुंजय पहाड़ के
टूँक के एक देवालय के बाहर दक्षिण दिशा की दीवाल पर कोरा हुआ है।

(४) संवत् १८८५ की वैशाख सुदी ३ के दिन श्राविका गुलाब बहन के कहने पर
(मुर्शिदाबाद) निवासी दूगड़ गौत्रीय सा बोहित्थजी के पौत्र बाबू किशनचंदजी और बाबू
ने पुण्डरीक देवालय से दक्षिण की ओर एक चन्द्रप्रभु स्वामी का छोटा देवालय बनाया जिसकी प्रतिष्ठा
गच्छाचार्य श्रीजिनहर्षसूरि ने करवाई।

(५) संवत् १८८६ की माघ सुदी ५ को राजनगर वासी ओसवाल जाति के सेठ
खुशालचंद के पौत्र नगिनदास की पत्नी ने अपने पति की शुभ कामना से प्रेरित हो हेमाभाई की
एक देवालय और चन्द्रप्रभु स्वामी की प्रतिमा अर्पण की जिसकी प्रतिष्ठा सागरगच्छ के शांति
सूरिजी ने करवाई।

(६) संवत् १८८७ की वैशाख सुदी १३ को अजमेर निवासी ओसवाल जाति के
गौत्रीय साह तिलोकचंदजी के पुत्र हिम्मतरायजी तथा उनके पुत्र गजमलजी ने एक देवालय सा
टुँक के बाहर उत्तर पूर्व में बनाया तथा कुन्थनाथ की एक प्रतिमा अर्पण की इसकी प्रतिष्ठा स
के भट्टारक जिन हर्षसूरि के द्वारा की गई।

---

* भण्डारी रत्नसिंह ईसवी सन् १७३३ से १७३७ तक गुजरात के सूबा रहे थे। ये महान
कुशल राजनीतिज्ञ थे। महाराजा अभयसिंह के ये अत्यंत विश्वासु और बाहोश प्रधान थे।

धार्मिक क्षेत्र में ओसवाल जाति

Oswals in the Field of Religion.
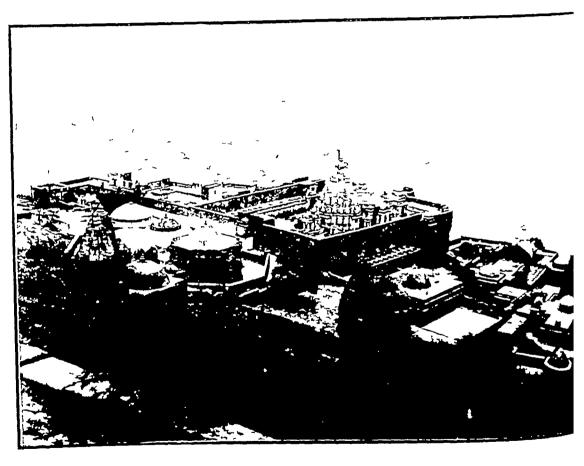
देलवाड़ा मन्दिर

(श्री बा० पूरणचन्द्रजी नाहर के सौज

श्री आबू महातीर्थ *

अब हम पाठकों के सम्मुख जैनधर्म के सुप्रसिद्ध दानवीर पोरवाल जातीय मंत्री वस्तुपा.. की अमरकीर्ति आबू के मन्दिरों का संक्षिप्त परिचय रखते हैं। कहना न होगा कि, क्या .. दृष्टि से, क्या कला के उच्च आदर्श की दृष्टि से, और क्या स्थान की रमणीयता की दृष्टि से आबू के .. न केवल जैन तीर्थों में, न केवल भारतवर्ष में, प्रत्युत सारे विश्व में अपना एक खास स्थान रखते हैं। .. पत्य कला के उच्च आदर्श की दृष्टि से तो शायद सारे भारतवर्ष में एक ताजमहल को छोड़कर दूसरा स्थान नहीं जो इसका मुकाबिला कर सके। ऐसा कहा जाता है कि इन मन्दिरों के बनवाने में .. कोरी करवाने में, तथा इनके प्रतिष्ठा महोत्सव में, इन दोनों भाइयों के हजारों नहीं, लाखों .. करोड़ों रुपये खर्च हुए थे। उन लोगों के साहस, उनके कलेजे की विशालता और उनकी धार्मिक .. इतिहास तक करने में असमर्थ है। अस्तु।

अब हम क्रम से आबू के इन सब खास २ मंदिरों का संक्षिप्त वर्णन करने का .. करते हैं।

देलवाड़ा †

अर्बुदा देवी से करीब एक माइल उत्तर पूर्व में यह देलवाड़ा नामक गाँव स्थित है। .. मन्दिरों में आदिनाथ और नेमिनाथ के दो जैन मंदिर अपनी कारीगरी और उत्तमता के लिये संसार .. अनुपम हैं। ये दोनों मन्दिर संगमरमर के बने हुए हैं। इनमें दण्डनायक विमलशाह का बनाया हुआ .. वसहि नामक आदिनाथ का मंदिर अधिक पुराना और कारीगरी की दृष्टि से अधिक सुन्दर है। .. वि० सं० २८८ में बन कर तयार हुआ था। इसमें मुख्य मंदिर के सामने एक विशाल सभा मण्डप ..

---

* इन मंदिरों के परिचय की सामग्री ललितविजयजी कृत आबू जैन मंदिर के निर्माता नामक पुस्तक ..

† यद्यपि इन जैन मंदिरों के निर्माता वस्तुपाल और तेजपाल पोरवाल जाति के पुरुष हैं मगर इन .. सम्बन्ध सारे श्री संघ के साथ होने की वजह से ओसवाल जाति के इतिहास में इनका परिचय देना .. समझा गया।

ओसवाल जाति के राजनैतिक और सैनिक महत्व के ऊपर गत अध्याय मे हम काफी प्रकाश डाल चुके है। उसके पढ़ने मे किसी भी निष्पक्ष पाठक को यह पता बहुत आसानी लग जाता है कि राजपूताने के मध्ययुगीन इतिहास मे राजपूत राजाओं के अस्तित्व की रक्षा के अन्त जाति के मुत्सुद्दियों का कितना गहरा हाथ रहा है। कई बार इतिहास के अन्दर हमको ऐसी परि- [illegible] देखने को मिलती है, जिनसे लाभ उठाकर अगर ये लोग चाहते तो किसी राज्य के स्वामी हो सकते [illegible]न राज्यों की स्थापना कर सकते थे। मगर इन लोगो की स्वामिभक्ति इतनी तीव्र थी कि जिसकी उन्होंने कभी भी अपने मालिक के साथ विश्वासघात नहीं किया। उन्होंने सैनिक लड़ाइयाँ लड़ी [illegible]लिकों के लिये, राजनैतिक दावपेंच खेले वे भी अपने मालिकों के लिये, जो कुछ किया उसका उन्होंने सब अपने मालिकों को दिया। इस प्रकार राजनीति और युद्धनीति के साथ २ इनकी [illegible]नि का आदर्श भी बहुत ऊँचा रहा है।

अब इस अध्याय में हम यह देखना चाहते है कि इस जाति के पुरुषों ने धार्मिक क्षेत्र के अन्त- [illegible]र महत्वपूर्ण काम किये। उनकी धार्मिक सेवाओं के लिये इतिहास का क्या मत है।

यहाँ पर यह बात ध्यान मे रखना अत्यन्त आवश्यक है कि हर एक युग और हरएक परिस्थिति में धार्मिक आदर्श भिन्न २ होते है। एक परिस्थिति मे जनता जिस धार्मिक आदर्श के पीछे मतवाली [illegible] दूसरी परिस्थिति मे वह उसी आदर्श से उदासीन हो किसी दूसरे आदर्श के पीछे अपना सर्वस्व [illegible]ी है। एक समय था जब लोग अनेकानेक मन्दिरों का निर्माण करवाने मे, बड़े २ संघों को निकालने [illegible]चार्यों के पाट महोत्सव कराने मे धर्म के सर्वोच्च आदर्श की सफलता समझते थे आज के नवीन युग [illegible]त और बुद्धिवादी व्यक्तियों का धर्म के इस आदर्श से बड़ा मतभेद हो सकता है। हमारा [illegible] रखना है, मगर इस मतभेद का यह अर्थ नहीं है कि हम उन महान् व्यक्तियों की उत्तम भावनाओं [illegible]र न करें। उन्होंने अपने महान् आदर्शों के पीछे जो त्याग किया उसकी तो हमें इज्जत करनी होगी, [illegible] आदर्शों से हमारा कितना ही मतभेद क्यों न हो।
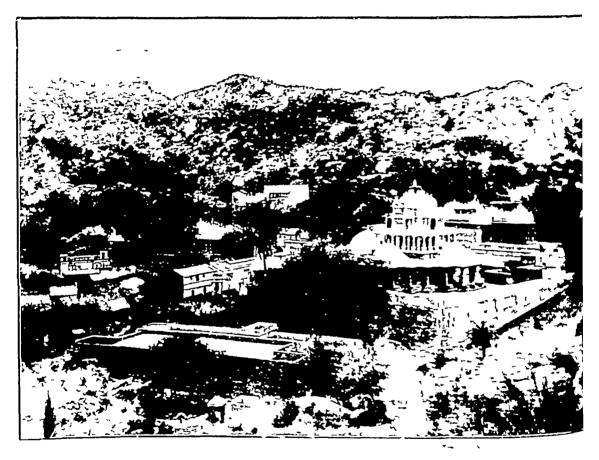
गिरनार पर्वत

(श्री बा० पूरणचन्द्रजी नाहर के सौज
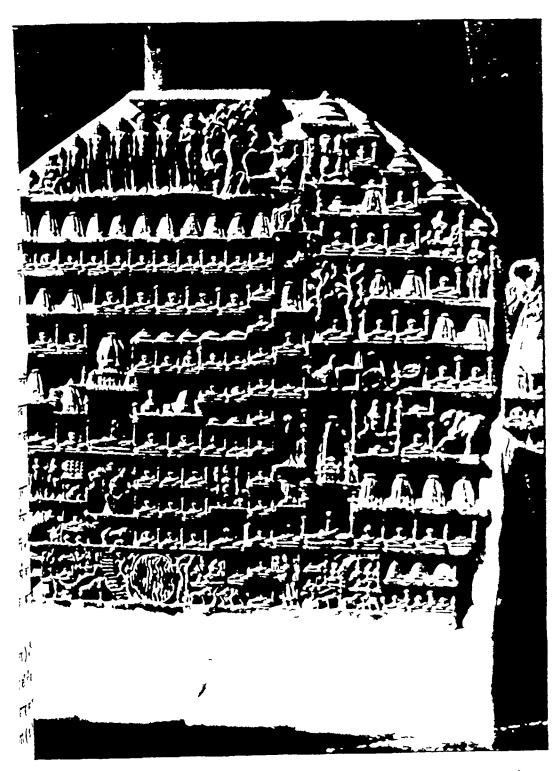
का बनाया हुआ है। ये गुजरात के धौलका प्रदेश के सोलंकी राणा वीरधवल के मन्त्री थे। होगा कि जैन तीर्थ स्थानों के निमित्त उनके समान द्रव्य खर्च करने वाला दूसरा कोई भी पुरुष पृष्ठों पर नहीं है। यह मन्दिर मन्त्री वस्तुपाल के छोटे भाई तेजपाल ने अपने पुत्र लूणसिंह तः स्त्री अनुपमादेवी के कल्याण के निमित्त अटूट द्रव्य लगाकर वि० सं० १२८७ में बनवाया था। दूसरा मन्दिर है जो कारीगरी में उपरोक्त विमलशाह के मन्दिर की समता कर सकता है।

भारतीय शिल्प सम्बन्धी विषयों के विशेषज्ञ फर्ग्युसन साहब अपनी ' Pictures Il ions of Ancient architecture in India' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि "इस मन्दि सगमरमर का बना हुआ है अत्यन्त परिश्रम सहन करने वाली हिन्दुओं की टाँकी से फीते जैसी साथ ऐसी मनोहर आकृतियाँ बनाई गई हैं कि अत्यन्त कोशिश करने पर भी उनकी नकल बनाने में मैं शक्तिवान नहीं होसका।"

यहाँ के गुम्मज की कारीगरी के विषय में कर्नल टॉड * लिखते हैं कि—

"इसका चित्र तयार करने में अत्यन्त कुशल चित्रकार की कलम को भी महान् पड़ता है।"

गुजरात के प्रसिद्ध ऐतिहासिक रासमाला के कर्त्ता फारबस साहब लिखते हैं कि—

"इन मदिरों की खुदाई के काम में स्वाभाविक निर्जीव पदार्थों के चित्र बनाये हैं। नहीं, किन्तु सांसारिक जीवन के दृश्य व्यवहार तथा नौका शास्त्र सम्बन्धी विषय एवं रणखेत चित्र भी खिंचे हुए हैं।" इन मन्दिरों की छतों में जैन धर्म की अनेक कथाओं के चित्र भी खुदे

यह मन्दिर भी विमलशाह के मन्दिर के ही समान बनावट का है। इसमें मुख्य मन्दिर, गुम्मजदार सभा-मण्डप और उनके अगल बगल पर छोटे २ जिनालय तथा पीछे की ओर हस्तीशाला मन्दिर में मुख्य मूर्त्ति नेमिनाथ की है। और छोटे २ जिनालयों में अनेक मूर्त्तियाँ हैं। यहा पर दो बड़े

---

* कर्नल टाड के विलायत पहुँचने के पीछे 'मिसेज विलियम हण्टर वेर' नाम की एक अंग्रेज अपना तयार किया हुआ वस्तुपाल तेजपाल के मंदिर के गुम्मज का चित्र टॉड साहब को दिया। उस चित्र उनको इतना हर्ष हुआ कि उन्होंने अपना ट्रेवलर्स इन वेस्टर्न इण्डिया नामक पुस्तक उसी अंग्रेज महिला को दी और उससे कहा कि तुम आबू नहीं गई प्रत्युत आबू को यहां ले आई हो। वही सुन्दर चित्र पुस्तक के आरम्भ में दिया है।

) दिन में एक बार भोजन करूँगा (३) ब्रह्मचर्य्य से रहूँगा (४) श्रृङ्गारद्रव्यों का प्रयोग न करूँगा (५) छ विषय में प्रतिदिन केवल एक विषय का सेवन करूँगा। धर्म वीर समराशाह की इस प्रतिज्ञा को सुनकर तत्कालीन आचार्य्य श्री सिद्धसूरिजी बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने समराशाह की ता की मनोकामना की।

सबसे पहले समराशाह ने गुजरात के तत्कालीन अधिकारी अलपखान का पुनरुद्धार के लिए और शाहीफर्मान प्राप्त किया। उसके पश्चात् मूर्ति निर्माण के लिए आरासण खान से संगमरमर की मँगवाई। उस समय आरासणखान का अधिकारी महिपालदेव था जो त्रिसङ्गमपुर में राज्य करता इस राजा के मंत्री का नाम पाताशाह था। जब समराशाह के भेजे हुए सेवक बहुमूल्य भेटों को महिपालदेव के सम्मुख पहुंचे तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने वे सब भेटे आदर पूर्वक वापस कर र स्वयं समराशाह के सेवकों को लेकर संगमरमर की खान पर गया, और स्फटिक मणि के निर्दोष, सुन्दर फलही निकलवाकर समराशाह के सेवकों को देदी। इस फलही से उस समय के शिल्पशास्त्रियों ने मूर्त्ति बनाकर तैय्यार की। इधर जो देवमन्दिर देवकुलिकाएँ, और मण्डप क्षत विक्षत हो गये थे, वे भी सब तैय्यार करवाकर नये बना लिये गए। इसके अतिरिक्त देसलशाह के आकार का एक नया मन्दिर और बनवाया।

सब काम हो जाने पर देसलशाह ने प्रतिष्ठा महोत्सव का मुहूर्त्त निकाला और सारे श्री संघ २ तक निमंत्रण भेजेगए। इस प्रकार बड़ी धूम धाम से लाखों रुपये खर्च करके धर्मवीर देसल और समराशाह ने जिन बिम्ब की प्रतिष्ठा करवाई। इस प्रतिष्ठा के समय में बहुत बड़ा उत्सव गया।

जय तीर्थ और धर्मवीर कर्माशाह

ओसवंश के सुप्रसिद्ध आभू सेठ के कुल में शिवराज सोनी नामक एक पुण्यशाली सेठ हुआ। ; पश्चात क्रमश सीधर, परबत, काला, बाघा और बच्छिया की पाँच पुश्ते और हुई। बच्छिया के सेनी नामक स्त्री से तेजपाल नामक महाप्रतापी पुत्र हुआ। शाह तेजपाल हीरविजयसूरि और उनके विजयसेनसूरि का परम भक्त था। इन आचार्य्य श्री के उपदेश से उसने जिन मन्दिरों के बनाने में सव भक्ति के करने में विपुल द्रव्य खर्च किया। सवत १६४६ में उसने अपने जन्मस्थान खम्भात में र्श्वनाथ तीर्थङ्कर का भव्य चैत्य बनाया। संवत् १५८७ में आनन्दविमल सूरि के उपदेश से कर्माशाह त्रुंजय तीर्थ के इस मन्दिर का पुनरुद्धार किया था। मगर अत्यत प्राचीन होने की वजह से थोड़े ही में यह मूल मन्दिर फिर से जर्जर की तरह दिखाई देने लग गया। यह देखकर शाह तेजपाल ने फिर न मंदिर का पुनरुद्धार प्रारभ किया और सवत् १६४९ में यह मदिर बिलकुल नया बना दिया गया इसका नन्दिवर्द्धन नाम स्थापित किया। साथ ही प्रसिद्ध आचार्य श्री हीरविजय सूरि के हाथों से प्रतिष्ठा करवाई जिसमें उसने विपुल द्रव्य खर्च किया। शत्रुञ्जय के ऊपर इस प्रतिष्ठा के समय न मनुष्य एकत्र हुए थे। गुजरात, मेवाड, मारवाड, दक्षिण और मालव आदि देशों के हजारों यात्री के लिये आये हुए थे, जिनमें ७२ तो बड़े २ सघ थे। स्वय हीरविजयजी के साथ में उस समय करीब हजार साधुओं का समुदाय था। कहना न होगा कि इन सब लोगों के लिये रसोई इत्यादि की व्यवस्था तेजपाल की तरफ से की गई थी।

[श]त्रुञ्जय तीर्थ और वर्द्धमानशाह

वर्द्धमानशाह ओसवाल जाति के लालण गौत्रीय पुरुष थे। ये कच्छ प्रान्त के अल्साणा नामक में रहने वाले थे। ये बड़े धनाढ्य और व्यापार निपुण पुरुष थे। संयोगवश इस अल्साणा के ठाकुर की कन्या का सम्बध जामनगर के जाम साहब से हुआ, जब विदाई होने लगी तब उस ने दहेज में, वर्द्धमानशाह और उनके सम्बन्धी रायसीशाह को जामनगर में बसने के लिये मागा। पर ये दोनों ओसवाल जाति के बहुत से अन्य लोगों के साथ जामनगर में आ बसे।

जामनगर में रहकर ये दोनों लक्ष्मीपति अनेक देशों के साथ व्यापार करने लगे, और वहाँ की में बड़े लोकप्रिय हो गये। वहा इन्होंने लाखो रुपये खर्च करके सवत १६७८ में बड़े बड़े विशाल मन्दिर निर्माण करवाये। इसके पश्चात वर्द्धमानशाह ने शत्रुञ्जय तीर्थ की यात्रा की और वहां भी मन्दिर बनवाये इनका जामनगर के राजदरबार में बहुत मान था और जाम साहब भी प्रत्येक महत्व कार्य में इनकी सलाह लेते रहते थे। इन वर्द्धमानशाह का एक लेख शत्रुञ्जय पहाड़ पर विमलवसहि

कुटुम्ब भर का इस प्रकार स्मारक चिह्न बनाने का काम यहां के किसी दूसरे पुरुष ने नहीं किया मन्दिर शोभनदेव नाम के शिल्पी ने बनाया था। मुसल्मानों ने इसको भी तोड़ डाला जिस जीर्णोद्धार पेथड़ (पीथड़) नाम के संघपति ने करवाया था। जीर्णोद्धार का लेख एक स्तम्भ हुआ है परन्तु इसमें संवत् नहीं दिया है। वस्तुपाल के मन्दिर से थोड़े अंतर पर भीमशाह को लोग भैंसाशाह कहते हैं, बनवाया हुए मन्दिर है जिसमें १०८ मन की पीतल की सर्वधातु की आदिनाथ की मूर्त्ति है जो वि० सं० १५२५ के (ई० सन् १४६९) फाल्गुन सुदी ७ को गुर्जर श्री के मंत्री मण्डल के पुत्र मंत्री सुन्दर तथा गदा ने वहां पर स्थापित की थी।

इन मंदिरों के सिवाय देलवाड़े में श्वेताम्बर जैनों के दो मंदिर और है। चौमुखजी का मंदिर, शान्तिनाथजी का मंदिर तथा एक दिगंबर जैन मंदिर भी है इन जैन मंदिरों से कुछ बाहर कितने ही टूटे हुए पुराने मंदिर और भी हैं। जिनमें से एक को लोग रसियावालम का मंदिर हैं। इस टूटे हुए मंदिर में गणपति की मूर्त्ति के निकट एक हाथ में पात्र धरे हुए एक पुरुष की मूर्त्ति है जिसको लोग रसियावालम की और दूसरी स्त्री की मूर्त्ति को कुँवारी कन्या बतलाते हैं। कोई २ रसियावालम को ऋषि वाल्मीकि अनुमान करते हैं। यहाँ पर वि० सं० (ई० सन् १३९५) का एक लेख भी खुदा हुआ है।

अचलेश्वर के जैन मंदिर

अचलेश्वर में महाराव मानसिंहजी के शिव मंदिर से थोड़ी दूर पर शान्तिनाथ का मंदिर स्थित है। इसको जैन लोग गुजरात के सोलंकी राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ बतलाते हैं। तीन मूर्त्तियाँ है जिनमें से एक पर वि० सं० १३०२ (ई० १२४५) का लेख है।

कुथुंनाथ का जैन मंदिर

अचलेश्वर के मंदिर से थोड़ी दूर पर जाने से अचलगढ़ के पहाड़ के ऊपर चढ़ने का मार्ग चढ़ाई गणेशपोल के यहाँ से शुरू होती है। मार्ग में लक्ष्मीनारायण का मंदिर तथा फिर कुंथुनाथ का मंदिर आता है। इसमें कुंथुनाथ स्वामी की पीतल की मूर्त्ति है जो वि० सं० १५२७ में बनाई। पर एक पुरानी धर्मशाला तथा महाजनों के थोड़े से घर भी हैं। इसके ऊपर पार्श्वनाथ, नमिनाथ आदिनाथ के जैन मंदिर स्थित हैं।

प्रधान थे। ये विपुल द्रव्य के स्वामी थे और इन्होंने धर्मप्रभावना और उसकी जहोजलाली के लिए ये खर्च किये।

शत्रुंजयतीर्थ और थीहरुशाह भंसाली

जैसलमेर के सुप्रसिद्ध थीहरुशाह भंसाली का नाम उनकी धार्मिकता और उनकी उदारता की आज भी मारवाड़ के बच्चे २ की जिव्हा पर अंकित है। इस थीहरुशाह भंसाली ने शत्रुंजयतीर्थ पर तीर्थङ्करों के १४५२ गणधरों के चरण युगल एक साथ स्थापित किये। उसका लेख शत्रुञ्जय खरतरवसही टोंक की पश्चिम दिशा में स्थित मन्दिर में उत्तर की ओर खुदा हुआ है। इसका स प्रकार है।

"आदिनाथ तीर्थङ्कर से लेकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थङ्करों के सब मिलाकर १४५२ ए हैं। इन सब गणधरों के एक साथ इस स्थान पर चरणयुगल स्थापित किये गये हैं। जैसल-री ओसवाल जातीय भंडसाली गोत्रीय सुश्रावक शाह श्रीमल (भार्या चांपल्दे) के पुत्र थीहरुशाह ने लोद्रवा पट्टन के प्राचीन जैन मन्दिरों का जीर्णोद्धार किया था और चिन्तामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा की थी, प्रतिष्ठा के समय प्रति मनुष्य एक २ सोनेकी मुहर लाण में दी थी। इसके अतिरिक्त के करने योग्य देव पूजा, गुरु उपासना साधर्मी वात्सल्य इत्यादि सभी प्रकार के धार्मिक कार्य और शत्रुंजय की यात्रा के लिए एक बड़ा संघ निकालकर संघपति का तिलक प्राप्त किया था—इन्होंने दि १४५२ गणधरों का भार्षं पादुका स्थान अपने पुत्र हरराज और मेघराज सहित पुण्योदय के या और संवत् १६८२ की जेठ वदी १० शुक्रवार के दिन खरतरगच्छ के आचार्य जिनराजसूरि ने तिष्ठा की।

इस प्रकार उपरोक्त लेखों को ध्यान पूर्वक मनन करने से पता चलता है कि इस महातीर्थ के रक्षा और जाहोजलाली के काम में ओसवाल जाति के नर रत्नों का कितना गहरा हाथ रहा है। इन इस महातीर्थ के लिए समय २ पर लाखों रुपये खर्च किये।

ऊपर हम खास २ बड़े २ दानवीरों के द्वारा किये हुए कामों का वर्णन कर चुके हैं। इनके सिवाय कई लेख शत्रुंजय तीर्थ पर ओसवालों के द्वारा किये हुए कामों के सम्बन्ध में पाये जाते हैं।

(१) यह लेख संवत १७१० का है, जो बड़ी टोंक में आदीश्वर के मुख्य प्रासाद के दक्षिण द्वार र सहस्रकूट मंदिर के प्रवेश द्वार के पास खोदा हुआ है जिससे पता लगता है कि संवत् १७१० सुदी १० गुरुवार को आगरा शहर निवासी ओसवाल जाति के कुराड़ गोत्रीय शाह वर्द्धमान के पुत्र

लालचन्द्र भगवानदास ने उक्त ग्रन्थ प्रकाशित किया। इसमें विभिन्न जैन ग्रन्थागारों और नि
का विवरण है। आपने बाईस शिलालेखों की नकलें लीं, जिनमें एक शिलालेख लक्ष्मीकान्तजी
मन्दिर में लगा हुआ है और शेष शिलालेख जैन मन्दिरों में लगे हुए हैं। सुप्रसिद्ध जैन विद्वा
पूरणचन्द्रजी नाहर भी सन् १९२५ में जैसलमेर पधारे थे। आप वहाँ पर लगभग दस दिन रह क
लमेर के अतिरिक्त लोद्रवा, अमरसागर और देवीकोट आदि स्थानों को भी गये। आपने इन स्था
के शिलालेखों, प्रशस्तियों, मूर्तियों और ग्रंथागारों का अवलोकन किया। आपको अमरसागर में ए
शिलालेख मिला जिसे आपने अपनी टिप्पणी सहित पूना के जैन साहित्य-संशोधक नामक त्रैम
प्रकाशित किया। इतना ही नहीं आपने जैसलमेर, लोद्रवा, अमरसागर के जैन मन्दिरों, शिला
प्रशस्तियों का बहुत ही सुन्दर संग्रह भी प्रकाशित किया, जिसका नाम "Jain Inscription
mer" है।* इस ग्रंथ में जैसलमेर के जैन मन्दिरों और शिलालेखों पर बहुत ही अच्छा प्रकाश डाला

हम आप ही की खोजों के प्रकाश में जैसलमेर के मन्दिरों, शिलालेखों, मूर्ति पर खुदे
आदि का ऐतिहासिक विवेचन करते हैं।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

जैसलमेर में यह मन्दिर सबसे प्राचीन है। बारहवीं शताब्दी के मध्य में जैसलमेर
नींव डाली गई। इसके पहले भाटियों की राजधानी लोद्रवा में थी। उस नगर में भी जैनियों
बड़ी बस्ती थी। जब लोद्रवा का नाश हुआ तब राजपूतों के साथ जैन ओसवाल भी जैसलमेर
वे उस समय अपने साथ भगवान पार्श्वनाथ की पवित्र मूर्ति को ले आये। सं० १४५९ में
गच्छाधीश श्री जिनराजसूरि के उपदेश से श्री सागरचन्द्रसूरि ने एक जैन मन्दिर की नींव
संवत् १४७३ में श्री जिनचन्द्रसूरिजी के समय में इसकी प्रतिष्ठा हुई। यह मन्दिर श्री पार्श्व
मंदिर के नाम से मशहूर है। ओसवाल वंश के सेठ जयसिंह नरसिंह रांका ने इसकी प्रतिष्ठा करा
साधु कीर्त्तिराजजी नामक एक जैन मुनि ने उक्त मंदिर में एक प्रशस्ति लगाई। श्री जयसागर ग
प्रशस्ति का संशोधन किया और धन्ना नाम के कारीगर ने इसे खोदा था। इस प्रशस्ति में उक्त म
प्रतिष्ठा तथा अन्य उत्सवों का उल्लेख है। यह अधिकांश में गद्य में है। इसके अतिरिक्त इसमें
की वंशावली है जिन्होंने इसकी प्रतिष्ठा करवाई थी। ये सेठ उकेश वंशीय रांका गौत्र के थे। इस

* यह ग्रंथ बाबू पूरणचन्दजी नाहर एम० ए० बी० एल० ४८ इण्डियन मिररस्ट्रीट कलकत्ता से प्राप्त हो सकता

(७) संवत् १८९३ की माघ वदी ३ को खम्भनगर वासी ओसवाल जातीय सा हीराचन्द के सा लक्ष्मीचन्द ने हेमाभाई टोंक पर एक देवालय बंधवाया और श्री अजितनाथ की प्रतिमा अर्पण की।

(८) संवत १९०५ की माह सुदी ५ को नर्भानपुर निवासी ओसवाल जाति लघुशाखा के गौत्रीय सा० हीरजी और वीरजी ने खरतरवासी टोंक पर एक देवालय बंधवाया और चन्द्रप्रभु सरे तीर्थङ्करों की ३२ प्रतिमाएं स्थापित कीं। इसके अतिरिक्त पालीताणा के दक्षिण बाजू पर १२० गज और ४० गज चौड़ी एक धर्मशाला और आचलगच्छ के निमित्त एक उपाश्रय बनवाया। यह सब इन्होंने अञ्चलगच्छीय मुक्तिसागरसूरि के उपदेश से किया।

(९) अहमदाबाद निवासी ओसवाल जाति के शिशोदिया गौत्रीय सेठ वखतचंद, उनके पुत्र ाई और उनके पुत्र अहमदाबाद के नगर सेठ प्रेमाभाई ने अपनी टोंक में श्री अजितनाथ का देवा नवाया।

(१०) संवत १९०८ के चैत वदी १० को बीकानेर निवासी ओसवाल जाति के मुहता पचा य कुंवर के पुत्र वृद्धिचंदजी ने मुहता मोतीवसी की टुंक में एक देवालय बनाया जिसकी प्रतिष्ठा के पं० देवेन्द्रकुशल ने की।

(११) संवत १९१० के चेत सुदी १५ को अजमेर निवासी ओसवाल जाति के समंधा गौत्रीय रमलजी ने एक देवालय बनवाया तथा उसमें श्री आदिनाथ, नेमिनाथ, सुमतिनाथ, शान्तिनाथ, थ इत्यादि तीर्थङ्करों की प्रतिमाएं स्थापित कीं, इसकी प्रतिष्ठा खरतर गच्छ के श्री हेमचन्द्र से करवाई।

इसी प्रकार और भी पचीसों लेख ऐसे ओसवाल श्रावकों के मिलते हैं जिन्होंने अपनी श्रद्धानुसार र्थङ्करों की खाली प्रतिमाएँ अर्पण कीं। स्थानाभाव से उन सब का यहाँ पर उल्लेख नहीं किया कता।

श्री सभवनाथ मदिर तपपट्टिका जैसलमेर

(श्री बा० पूरणचन्द्रजी नाहर के सौजन्य)

देलवाड़ा प्रशस्ति

विक्रम सम्वत् १४९१ (ईस्वी सन् १४३४)

(श्री बा० पूरणचन्दजी नाहर के सौजन्य से)

श्री शांतिनाथजी और अष्टापदजी के मंदिर

ये दोनों मंदिर एक ही अहाते में हैं। ऊपर की भूमि में श्री शान्तिनाथजी का और अष्टापदजी का मंदिर बना हुआ है। निम्नतल के मंदिर में सत्रहवें जैन तीर्थङ्कर श्री कुंथनाथजी मूलनायक रूप से प्रतिष्ठित हैं। इन दोनों मन्दिरों की प्रशस्ति एक ही है और जैनी हिन्दी में लि संवत् १५३६ में जैसलमेर के संखवालेचा और चौपड़ा गोत्र के दो धनाढ्य सेठों ने इन मंदिरों करवाई। संखवालेचा गौत्रीय खेता और चौपड़ा गौत्रीय पाचा में वैवाहिक सम्बन्ध था। इन दो कर दोनों मंदिर बनवाये थे। खेताजी ने सहकुटुम्ब शत्रुंजय, गिरनार, आबू आदि तीर्थों की यात्रा बड़े धूमधाम के साथ की। सम्वत् १५८१ में इनके पुत्र वीदा ने मंदिर में एक प्रशस्ति लगाई सब बातों का उल्लेख है। मंदिर के बाहर दाहिनी तरफ पाषाण के बने हुए दो बड़े २ सुन्दर हा हैं। इन दोनों पर धातु की मूर्त्तियां हैं जिनमें एक पुरुष की और दूसरी स्त्री की है। खेताजी ने संवत् १५८० में अपने माता पिता की ये मूर्त्तियाँ प्रतिष्ठित की थीं। इनमें से केवल एक खुदा हुआ है। इस समय जैसलमेर की गद्दी पर महारावल देवकरणजी थे। सम्वत् १५ इस मंदिर की प्रतिष्ठा हुई उस समय खरतर गच्छ के श्री जिनसमयसूरिजी उपस्थित थे।

श्री चन्द्रप्रभूस्वामी का मंदिर

संवत् १५०९ में ओसवालवंशीय भणशाली गौत्रीय शाह वीदा ने इस मंदिर की प्र थी। इस मंदिर के द्वितल की एक कोठड़ी में बहुत सी धातुओं की पंचतीर्थी और मूर्त्तियां हैं।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर

यह मंदिर ओसवाल वंशके डागा गौत्रीय सेठों का बनवाया हुआ है। यहाँ की पट्टिका के १४७९ में इन्हीं डागों द्वारा इसकी प्रतिष्ठा करवाई जाने का उल्लेख है। इस मंदिर में कोई प्रशस्ति

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर

इस मंदिर की मूर्त्तियों पर जो लेख हैं उनसे ज्ञात होता है कि यह मंदिर ओसवाल गणाधर चौपड़ा गौत्रीय शाह धन्ना ने बनवाया था, और उसीने खरतरगच्छीय आचार्यों के प्रतिष्ठा करवाई थी। इसकी मूर्त्ति संख्या लगभग ६०७ है।

रफ छोटे २ कई एक जिनालय है। इस मंदिर में मुख्य मूर्ति ऋषभदेव की है जिसकी दोनों तरफ खड़ी हुई मूर्ति है। और भी यहां पर पीतल तथा पाषाण की मूर्त्तियाँ हैं जो सब पीछे की बनी हुई मुख्य मंदिर के चारों ओर छोटे २ जिनालय बने हुए हैं जिनमें भिन्न २ समय पर भिन्न २ लोगों ने स्थापित की थीं, ऐसा उन मूर्त्तियों पर अंकित किये हुए लेखों से प्रतीत होता है। मंदिर के सम्मुख ला बनी हुई है जिसमें दर्वाजे के सामने अश्वारूढ़ विमलशाह की पत्थर की मूर्त्ति है। हस्तिशाला के बने हुए दस हाथी हैं जिनमें से ६ विक्रम संवत् १२०५ की फाल्गुन सुदी १० के दिन नेढक्, ह्, पृथ्वीपाल, धीरक्, लहरक् और मीनक् नाम के पुरुषों ने बनवा कर यहाँ रक्खे थे। इनके लेखों में ा को महामात्य अर्थात् बड़ा मन्त्री लिखा है। बाकी के हाथियों में से एक पवार ठाकुर जगदेव ने और हामात्य धनपाल ने विक्रम संवत् १२३७ की आषाढ़ सुदी ८ को बनाया था। और दो हाथियों के संवत् पढ़ने में नहीं आते।

हस्तिशाला के बाहर चौहान महाराव लुण्डा और लुम्बा के दो लेख हैं। एक लेख विक्रम संवत् ा व दूसरा १३७३ का है। इन लुम्बा और लुण्डा ने आबू का राज्य परमारों से छीन कर अपने कर लिया था।

इस अनुपम मंदिर का कुछ हिस्सा मुसलमानों ने तोड़ डाला था जिसका जीर्णोद्धार लल्ल और ामक दो साहूकारों ने चौहान राजा तेजसिंह के समय में करवाया ।

यहाँ पर एक लेख बघेल (सोलंकी) राजा सारंगदेव के समय का वि० संवत् १३५० का एक में लगा हुआ मिलता है।

इस मंदिर की कारीगरी की प्रशंसा शब्दों के द्वारा किसी भी प्रकार नहीं हो सकती। स्तंभ, गुम्बज, छत, दरवाजे इत्यादि जहाँ भी कहीं देखा जाय, कारीगरी का कमाल पाया जाता है कर्नल टॉड है कि हिन्दुस्थान भर में कला की दृष्टि से यह मंदिर सर्वोत्तम है और ताजमहल के सिवाय ारा मकान इसकी समानता नहीं कर सकता।

नेमिनाथ का मन्दिर

देरासरों के अतिरिक्त जैसलमेर में कई उपासरे हैं जिनमें वेगड-गच्छ उपासरा, ... गच्छ उपासरा, तपगच्छ उपासरा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

लोद्रवा के जैन मंदिर

अभी तक हमने जैसलमेर के किले तथा शहर के जैन मंदिरों का उल्लेख किया है। ... के जैन मंदिरों पर कुछ ऐतिहासिक प्रकाश डालना चाहते हैं। लोद्रवा एक प्राचीन ... है। प्राचीनकाल में यह स्थान लोढ़ नामक राजपूतों की राजधानी थी। वर्तमान में इन ... संवत् ९०० के लगभग रावल देवराज भाटी ने इन लोढ़ा राजपूतों से लोद्रवा छीनकर वहाँ ... धानी कायम की। उस समय यह नगर बड़ा समृद्धिशाली था। इसके बारह प्रवेश द्वार ... काल से ही यहाँ पर श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर था। रावल भोज देव के गद्दी बैठने के पश्चात् ... जैसल ने महम्मद गौरी से सहायता लेकर लोद्रवा पर चढ़ाई की। इस युद्ध में भोज देव ... लोद्रवा नगर भी नष्ट हो गया। पश्चात् राव जैसल ने लोद्रवा से राजधानी हटाकर ... जैसलमेर नाम का दुर्ग बनाया।

ओसवाल वंशीय सुप्रख्यात् दानवीर सेठ थीहरूशाहजी ने, श्री पार्श्वनाथजी के ... जो लोद्रवा के विध्वंश के साथ नष्ट हो गया था, पुनरुद्धार करवाकर खरतरगच्छ के श्री ... उसकी प्रतिष्ठा करवाई। यह मंदिर भी अत्यन्त भव्य और उच्चश्रेणी की कला का उत्तम नमूना ... मंदिर के कोने में चार छोटे २ मंदिर हैं। उनमें से उत्तरपूर्व के तरफ के मंदिर में एक शिलालेख ... है। इसका कुछ अंश टूट गया है। इसकी लम्बाई चार फीट और चौड़ाई डेढ़ फीट से ... है। सुप्रख्यात् पुरातत्वविद् बाबू पूरणचन्दजी नाहर एम० ए० बी० एल० का कथन है कि आज तक ... लेख उनके दृष्टिगोचर हुए हैं तथा जितने अन्यत्र प्रकाशित हुए हैं उनमें से किसी में भी अपना ... शिलालेख देखने में नहीं आया है। इस शिला लेख में श्री महावीरस्वामी से लेकर श्री देवर्द्धिगणि ... तक के आचार्य्य गण और उनके शिष्यों के चरण सहित नाम खुदे हुए हैं। श्री महावीर स्वामी ... के पश्चात् ९८० वर्ष व्यतीत होनेपर श्री देवर्द्धिगणजी ने जैनागम को लेख बद्ध किया था। ... में श्रीकल्पसूत्रादि में जो कुछ संक्षिप्त परिचय मिलता है, उससे अधिक अद्यावधि कोई ... ज्ञात नहीं हुआ है। इस शिलालेख में कुल चरणों की समष्टि १०९ है, परन्तु देवर्द्धिगण के नाम ... ७, ९० खुदा हुआ है, वह संकेत समझ में नहीं आया। इसके सिवाय शिलालेख के आदि में ...

जिनमें एक धौलका के राणा वीरधवल के पुरोहित तथा कीर्तिकौमुदी, सुरथोत्सव आदि काव्यों
ा प्रसिद्ध कवि सोमेश्वर का रचा हुआ है। उसमें वस्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन, भरगो-
ाकर वीरधवल तक की नामावली, आबू के परमार राजाओं का वृतान्त तथा मन्दिर और हस्ति
वर्णन है। यह ७४ श्लोकों का एक छोटा सा सुन्दर काव्य है। इसीके पास के दूसरे शिला-
ो बहुधा गद्य में लिखा है, विशेष कर इस मन्दिर के वार्षिकोत्सव की जो व्यवस्था की गई थी, उस
है। इसमें आबू पर के तथा उसके नीचे के अनेक गाँवों के नाम लिखे गये है, जहाँ के महाजनों
ं नियत दिनों पर यहाँ उत्सव करना स्वीकार किया था। इसी से सिरोही राज्य की उस
उन्नत दशा का बहुत कुछ परिचय मिलता है।

कला का सचित्र परिचय दिया है। हम भी इस ग्रंथ में जैसलमेर के कुछ जैन मंदिरों के चित्र दे
इनसे पाठकों को वहाँ की शिल्पकला की उत्कृष्टता का थोडा परिचय अवश्य होगा। इसमें वि
इस बात की है कि जैसलमेर जैसे दुर्गम स्थान पर भारत के शिल्पकला विशारदों ने जो भव्य मंदि
हैं, वे तत्कालीन जैन श्रीमानों की धर्म-परायणता और शिल्प-प्रेम के ज्वलंत उदाहरण हैं।

इन मंदिरों में पाषाण में जिस कौशल्य से शिल्पी मूर्त्तियाँ बनाई गई हैं, वह उस
कारीगरी पर बहुत ही अच्छा प्रकाश डालती हैं। आप शान्तिनाथजी के मंदिर को ले लीजि
मंदिर के ऊपर का दृश्य क्या ही सुन्दर है। इसे देखकर शिल्प-विद्या-विशारद यह कहे बिना
इसमें शिल्पकला की सर्व प्रकार की श्रेष्ठता विद्यमान है। मंदिर के ऊपर खुदे हुए मूर्त्तियाँ
बहुत ही बारीक अनुपात से बनाये गये हैं। यही कारण है कि ऊपर से नीचे तक के
चित्ताकर्षक हैं। कहीं भी सौन्दर्य की कमी नहीं मालूम होती।

इसके अतिरिक्त इसमें यह भी एक विशेषता है कि बहुत सी मूर्त्तियों के रहने पर
कर अथवा सघन नहीं दिखाई पड़ते। इस मंदिर पर की गई अद्भुत शिल्पकला के
जावा के सुप्रसिद्ध बोरोबोडूर नामक स्थान के प्राचीन हिन्दू मंदिर का स्मरण हो आता है क्योंकि
के ऊपर का दृश्य और मूर्त्तियों के अनुपात भी प्रायः इसी प्रकार के हैं।

जैसलमेर के श्रीपार्श्वनाथजी के मंदिर की कारीगरी भी अपने ढंग की अपूर्व है।
मूर्त्तियों में भारतीय कला की श्रेष्ठता झलकती है। उनमें सौन्दर्य और गम्भीर्य दोनों का
अमर सागर में भी वर्त्तमान शताब्दी की कारीगरी का उज्ज्वल उदाहरण दिखाई देता है। उ
शिल्प-कौशल्य को देखने से उसके निर्माता के अगाध शिल्प प्रेमका परिचय मिलता है।

श्री पार्श्वनाथ मन्दिर प्रशस्ति जैसलमीर (श्री बा० पूरणचन्द्रजी नाहर के सौजन्य से)

जैसलमेर

शत्रुंजय आदि तीर्थ स्थानों मे ओसवाल सज्जनों ने जैन मन्दिरों की प्रतिष्ठा तथा पुनरुद्धार के किये हैं, उनके सम्बन्ध मे हम गत पृष्ठों मे लिख चुके है। इसी प्रकार अन्य कई स्थानों में भी गों मे ऐसे २ सुन्दर और विशाल मंदिर बनवाये है या उनका पुनरुद्धार करवाया है, जिनकी बड़े २ र शिल्पकारों ने बड़ी प्रशंसा की है और शिल्पकला की दृष्टि से उन्हे अपने ढंग का अपूर्व स्थापत्य itecture) माना है। इनमें से कुछ जैन मन्दिरों मे प्राचीन जैन ग्रन्थों का बड़ा ही सुन्दर संग्रह बी ओर संसार के कई नामी पुरातत्ववेत्ताओं का ध्यान आकर्षित हुआ है। ओसवालों के बनाये हुए के जैन मन्दिर, उनमें लगे हुए विविध शिलालेख तथा प्राचीन पुस्तक भण्डार भी पुरातत्ववेत्ताओं ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही मूल्यवान सामग्री उपस्थित करते हैं। फिर भी यहाँ का जैन ो बड़ी ही अपूर्व चीज है। जैसलमेर किले के अन्दर जो जैन मन्दिर हैं उनमें एक महान ग्रन्था- इसके विषय मे बहुत समय तक हम लोग घोर अन्धकार मे थे। इस ग्रन्थागार में ताड़ पत्र leaves) पर लिखे हुए सैकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ हैं, जिनकी विस्तृत सूची बनाने में भी कई वर्षों आवश्यकता होगी।

हुई है। चाहे जो हो पर इन पत्थरों को देखने मे यह पता तो आसानी से लग जाता है कि पहिले बहुत अधिक देवालय बने हुए थे।

कुभारिया मे खास कर के ६ मन्दिर है जिनमे पाँच जैनियो के और एक हिन्दुओं का इन मन्दिरों की समय समय पर मरम्मत होती रही है जिसमे नया और जूना काम मेल-मेल हो गया है। इन मन्दिरों के स्तम्भ द्वार तथा छत मे जो काम किया गया है, वह बड़ा ही सुन्दर और उत्तम है।

नेमिनाथ का मन्दिर

जैन मन्दिरों के समूह में सब से बड़ा और महत्वपूर्ण मन्दिर श्रीनेमिनाथ का है। इसके द्वार से लेकर रंगमण्डप तक एक चबूतरा बना है। देवगृह मे एक देवकुलिका, एक गूढ मण्डप और परसाल बनी है। देवकुलिका की दीवारें पुरानी है, पर उसका शिखर और गूढ मण्डप के ऊपर का भाग नया बना हुआ है। इस मन्दिर का शिखर तारंगाजी के जैन मन्दिर जैसा है। इसकी परसाल के स्तम्भ पर एक लेख है, जिससे पता चलता है कि ईसवी सन् १२५३ मे आसपाल नामक किसी व्यक्ति ने इसे बँधाई थी। रंगमण्डप की दूसरी बाजू पर ऊपर के दरवाजे में तथा अन्त के २ थम्भो के बीच के भाग पर मकराकृति के मुखों से शुरू करके एक सुन्दर तोरण कोरा गया है जोकि देलवाड़ा के विमलशाह वाले मन्दिर के तोरण के समान हैं। मन्दिर के दोनों ओर मिलाकर ८ [illegible] हैं। दाहिनी बाजू वाली देवकुलिका में आदिनाथ की और बाई बाजूवाली देवकुलिका में पार्श्वनाथ की भव्य मूर्तियां विराजमान हैं। इस मन्दिर मे कई शिलालेख हैं। एक शिलालेख इस मन्दिर की नेमिनाथ स्वामी की खास प्रतिमा के आसन के नीचे खुदा हुआ है। जिसका भावार्थ यह है। संवत् १६७५ के माघ सुदी ४ को शनिवार के दिन ओसवाल जाति के बोहरा गोत्रीय [illegible] ने श्री नेमिनाथ के मन्दिर में नेमिनाथ का बिम्ब स्थापित किया, उसकी प्रतिष्ठा हीरविजयसूरि के पट्टधर आचार्य श्री विजयसेनसूरि के शिष्य श्री विजयदेवसूरि ने पण्डित कुशल सागर गणि आदि साधुओं के साथ करवाई। इसी प्रकार एक शिलालेख श्रीमाल ज्ञाति के शाह रगा का और एक पोरवाल जाति के [illegible] का भी खुदा हुआ है।

महावीर का मन्दिर

नेमिनाथ के देवालय के पूर्व की ओर यह मन्दिर बना हुआ है। बाहर की दो [illegible] आच्छादित दरवाजे में प्रवेश किया जाता है, जो अभी नया बना है। यह मन्दिर भी बड़ा सु[illegible]

सेठों के पूर्वजों की तीर्थ यात्राओं का साल सम्वत् सहित उल्लेख है। इसमें खरतर गच्छ के आचार्य कुशल सूरि से लगाकर जिनराज और जिनवर्द्धन सूरि तक की पट्टावली भी दी गई है।

सम्भवनाथजी का मंदिर

यह भी एक ऐतिहासिक मंदिर है। सुप्रसिद्ध जैनाचार्य्य श्री जिनभद्रसूरि के उपदेश से संवत् में ओसवाल वंश के चौपड़ा गौत्रीय शाह हेमराज ने इस मंदिर को बनवाना आरंभ किया। आप उसी वर्ष बड़ी धूमधाम के साथ इसकी प्रतिष्ठा करवाई। इस मंदिर की ३०० मूर्त्तियों की प्रतिष्ठा श्री जिनभद्रसूरिजी के हाथ से हुई थी और जैसलमेर के तत्कालीन नरेश महारावल बैरीसालजी स्वयं के शुभ अवसर पर उपस्थित रहते थे।

इस मंदिर मे पीले पाषाण मे खुदा हुआ तपपट्टिका का एक विशाल शिला लेख रक्खा हुआ है। ऊपर की तरफ से टूटा हुआ है। इसकी लम्बाई २ फुट १० इंच और चौड़ाई १ फुट १०½ । इसमे बाएँ तरफ प्रथम २४ तीर्थङ्करों के च्यवन, जन्म, दीक्षा और, ज्ञान चार कल्याणक की तिथियाँ वदी से आश्विन सुदी तक महीने के हिसाब से खुदी हुई है। इसके बाद महीनेवार के हिसाब से ों के मोक्ष कल्याणक की तिथियाँ भी दी गई है। दाहिनी तरफ प्रथम छ तपों के कोठे बने हुए हैं नके नियमादि खुदे हुए है। इसके नीचे वज्र मध्य और यव मध्य तपों के नकशे है। एक तरफ श्री र तप का कोठा भी खुदा है। इन सब के नीचे दो अंशों में लेख है।"

इस मंदिर के एक दूसरे शिला लेख मे जैसलमेर नगर और उसके यदुवंशी राजाओं की वर्णा दी गई है। इसमें उक्त राज्य वंश के महारावल जयसिंहजी तक की वंशावली भी दी गई है। अतिरिक्त यहाँ के शिला लेखों में श्री जिनभद्रसूरि के चरित्र और गुणों की बहुत प्रशंसा की गई है। या है कि उनके उपदेश से उनके स्थान पर जगह २ मंदिर बनवाये गये, अनेक स्थानो में मूर्त्तियाँ र की गई और कई स्थानों में ज्ञान भण्डार प्रस्थापित किये गये। तत्कालीन जैसलमेर नरेश महारावल हजी द्वारा उक्त आचार्य्य श्री जिनभद्रसूरि के पैर पूजे जाने का भी उल्लेख है।

श्री जिन सुखसूरिजी के मतानुसार इस मंदिर की मूर्त्तियों की संख्या ५५३ है। पर श्री वृद्धि- इस संख्या को ६०४ बतलाते हैं।

उसकी फौजें पहुँची थी और मूर्त्तियों का तोडना प्रारम्भ कर दिया था। कुछ परिकर और तोर रूप मे अभी भी यहाँ पाये जाते हैं। जिनको लोगो की किम्वदन्ति औरंगजेब के द्वारा तोड़े हु है। आगे चलकर यह किम्वदन्ति यह भी कहती है कि जिस रात्रि मे उसने इनको तोडने का किया उसी रात को वादशाह और उसकी बेगम दोनों बीमार पडे और बेगम को स्वप्न मे ऋषभ की मूर्त्ति को देखा, यह देखकर ओरंगज़ेब ने मूर्त्तियों का तोडना बंद कर दिया। इसी मंदि ईदगाहें भी बनी हुई है। ऐसा कहते हैं कि जब उसने तोड फोड का काम आरम्भ किया ता ईदगाहें भी बनवा डाली। यह किम्वदन्ति सच है या झूठ, औरंगजेब इस मन्दिर में आ यह बात निश्चय पूर्वक नही कही जा सकती पर यह बात तो निश्चित है कि मुसलमानों ने इ नुकसान पहुँचाया और तोरण गुम्मच वगैरा की तोड फोड की, तथा ३ ईदगाहें बनाकर का रोक दिया।

ऐसा कहा जाता है कि इस देवालय के निर्माण कर्त्ता धन्नासा और रतनासा का वि मंजिला बन वानेका था, जिसमें से ४ मजिल तो बनाये जा चुके थे और तीन मंजिलों के लिय ग गया जो अभी तक नहीं बन सका। इसके लिये रत्नाशाह के वंशज अभी तक उस्तरे से हजामत नहीं क

सादड़ी ग्राम से पूर्व ३ मील की दूरी पर निर्जन स्थान में यह मन्दिर अवस्थित है। शास्त्रों में वर्णित नलिनी गुल्म विमान के आकार का बनाया गया है। इसमे १४४४ स्तम्भ घर हैं। संवत् १४९६ में श्री सोमचन्द्रसूरिजी ने इस मन्दिर की प्रतिष्ठा कराई। अभी थो सेठ आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी ने उक्त राणकपुर के मन्दिर की लागत आकने के लिय ए इंजिनियर को बुलाया था उस इंजिनियर ने इस विशाल मन्दिर की लागत १५ करोड़ रुपया इससे पाठकों को ज्ञात हो जायगा कि गोडवाड प्रान्त में जैन समाज की यह एक मूल्यवान स है। इस मन्दिर के आसपास नेमिनाथजी व पार्श्वनाथजी के दो मन्दिर है।

इस मन्दिर की व्यवस्था पहिले सेठ हेमाभाई हठीसिंह रखते थे जब उनकी प्र कमजोर हो गई तब यह बीड़ा सादड़ी के जैन संघ ने उठाया और इधर सवत् १९५३ से आ कल्याणजी की पेढ़ी इसका प्रबन्ध करती है। इस पेढ़ी का आफिस सादडी में है, यात्रियों प्रकार की व्यवस्था कराने में अ फिस के व्यक्ति बडे प्रेम का व्यवहार करते है।

---

* इस समय प्राग्वाट कुल श्रेष्ठ रत्नाशाह के वंशजों के ५२ घर घाणेराव में निवास करते हैं।

महावीरस्वामी का मंदिर

इस मंदिर मे लगे हुए शिलालेख से ज्ञात होता है कि ओसवंश के बरडिया गौत्रीय शाह दीपा न्होंने इस मंदिर की प्रतिष्ठा कराई थी। संवत १४७३ मे यह मंदिर बना था। जिनसुखसूरिजी के अनुसार इस मंदिर की मूर्त्तियों की संख्या २३२ है।

उपरोक्त सब मंदिर किले के अंदर है। इसके अतिरिक्त शहर में भी कुछ मंदिर और देरासर है। कुछ का उल्लेख हम नीचे करते हैं।

पार्श्वनाथजी का मंदिर

ऊपर हमने जिन मंदिरों का उल्लेख किया है, वे सब श्वेताम्बर समाज के खरतरगच्छ सम्प्रदाय के हैं। इस मंदिर की प्रतिष्ठा तपगच्छीय श्रावकों की ओर से संवत् १८६९ में हुई। इसमे एक प्रशस्ति है। उससे ज्ञात होता है कि इसकी प्रतिष्ठा करानेवाले तपगच्छ के प्रसिद्ध आचार्य हीरविजयसूरि के मुनि नगविजयजी थे तथा उन्होंने ही उक्त प्रशस्ति भी लिखी थी। इस प्रशस्ति की रचना युक्त पाण्डित्य पूर्ण क्लिष्ट संस्कृत भाषा मे है।

मल्लिनाथजी का मंदिर

इस मंदिर के मूलनायकजी की प्रतिमा के लेख से ज्ञात होता है कि संवत् १६६६ मे तपगच्छा जयसेनसूरिजी के हाथ से इसकी प्रतिष्ठा हुई थी।

थिरूशाहजी का देरासर

जो ख्याति मेवाड में भामाशाहजी की है, वही ख्याति जैसलमेर में थिरूशाह जी की है। भणसाली गौत्र के थे। आपका विशेष परिचय गत पृष्ठों में दिया जा चुका है। लोद्रवा के वर्त्तमान आप ही ने जीर्णोद्धार करवाया था। उक्त देरासर आपकी हवेली के पास है।

इसके अतिरिक्त सेठ केसरीमलजी, सेठ चांदमलजी, सेठ अक्षयसिंहजी, सेठ रामसिंहजी तथा सेठ के देरासर हैं। पर वे विशेष प्राचीन नहीं है।

श्री नाडोल तीर्थ

मारवाड़ के गोदवाड़ प्रान्त में यह एक प्रसिद्ध ऐतहासिक स्थान है। जैन लोग इसे ग तीर्थों में शुमार करते हैं। पुराने समय में यह चौहानों का पाट नगर था। इस गाँव में पद्मप्रभु न एक भव्य और सुन्दर मंदिर है। इस मंदिर के गूढ़ मण्डप के दोनों ओर भगवान नेमिनाथ और न शान्तिनाथ की दो प्रतिमाएँ है। उनके ऊपर सवत् १२१७ की वैसाख सुदी १० का लेख है। [से यह मालूम होता है कि बीसाड़ा नामक स्थान के मंदिर मे जसचन्द्र, जसदेव, जसधवल और [नामक श्रावकों ने इन मूर्त्तियों को बनवाई और पद्मचन्द्र गणि के हाथ से इनकी प्रतिष्ठा करवाई।

उक्त मन्दिर के अतिरिक्त वहाँ पर और कई प्राचीन जैन मन्दिर विद्यमान है। इन मं शिलालेखों में कई स्थानों पर ओसवाल जाति के बहुत से महानुभावों के नामों का उल्लेख मिल भगवान नेमिनाथ का मन्दिर भी बड़ा प्राचीन तथा सुन्दर बना हुआ है।

श्री वरकाणातीर्थ

यह तीर्थ स्थान राणी स्टेशन से २ मील की दूरी पर है। यहां पर भगवान पार्श्वना एक बहुत बड़ा और प्राचीन मन्दिर विद्यमान है। इसके अतिरिक्त यहां पर दो धर्मशालाएँ त श्रीपार्श्वनाथ जैन विद्यालय भी है।

श्री सोमेश्वर तीर्थ

उक्त तीर्थ स्थान नाडलाई तीर्थस्थान से छ मील की दूरी पर विद्यमान है। यहाँ प के चार मन्दिर हैं जिसमें शातिनाथजी का मन्दिर सुन्दर, भव्य और अत्यन्त प्राचीन है। इस मं अनेक शिलालेखों में ओसवाल जाति के सज्जनों का उल्लेख पाया जाता है। यहा पर कुआ, बगीचा एक विशाल धर्मशाला भी बनी हुई है।

इस तीर्थस्थान के दो मील की दूरी पर घाणेराव नामक गाँव विद्यमान है। इस गाँव म सुन्दर जिनालय तथा एक धर्मशाला बनी हुई है।

श्री मुच्छाला महावीर तीर्थ

यह तीर्थ स्थान घाणेराव से २ मील की दूरी पर स्थित है। इसमें एक बहुत पुराना मन्दिर विद्यमान है। यहा पर एक धर्मशाला भी बनी हुई है।

मन्दिर और भी है और कहा जाता है कि इसका जीर्णोद्धार भी मुणोत जयमलजी ने करवाया था कसवे के तपा गच्छा मुहल्ले में एक जैन मन्दिर और तपेगच्छ का उपाश्रय अभी तक विद्यमान है। तलेटी में एक जागोड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर है। उसे आहोर निवासी मेहता अभेचन्दजी ने मानसिंहजी के समय मे बनवाया।

साचोर

सांचोर भी मारवाड का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। पर बहुत पुराना बसा इस नगर की उत्पत्ति और विकास का वृत्तान्त मुणोत नैनसीजी ने अपनी ख्यात में बड़ी साव लिखा है। यहा पर भी कई जैन मन्दिर और उपाश्रय है जो प्राय ओसवालों के बनवाये हुए हैं। जयमलजी ने भी इस स्थान पर सवत १६८१ की प्रथम चैत्र वदी ५ को एक जैन मन्दिर बना प्रतिष्ठा करवाई।

खुड़ाला (मारवाड़) के जैन मंदिर

जोधपुर राज्य के गोडवाड़ प्रात में खुडाला नामक एक ग्राम है—इस गाँव के जैन मूर्तियों पर कई लेख हैं, इस मंदिर की धर्म नाथजी की प्रतिमा पर से प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता भ कर साहब ने एक लेख का उतारा लिया था, वह लेख सवत् १२४३ की मार्गवदी ५ का था, पर बहुत कुछ खंडित हो जाने से इसका विशेष स्पष्टी करण न हो सका। श्रीयुत भंडारकर महोदय संग्रह में इसी ग्राम के एक दूसरे जैन लेख का उल्लेख किया है, यह लेख सवत् १३३३ की आ १४ सोमवार का है। इस लेख में प्रथम भगवान महावीर की स्तुति की गई है और कहा भगवान महावीर स्वयं श्रीमाल (भीनमाल) नगर में पधारे थे इसके बाद उक्त लेख में तत्कालीन परिस्थिति पर भी कुछ प्रकाश डाला गया है, उससे ज्ञात होता है कि सवत् १३३३ के लगभग श्र में महाराजा कुल श्री चाचिकदेव, राज करते थे, और उनके मत्री गजासिह थे। इन्हीं महाराज का एक बड़ा लेख, जोधपुर राज्य के यशवतपुरा गाँव से १० मील की दूरी पर सुँधा नामक ग चामुँडा देवी के मंदिर में मिला है, इस प्रशस्ति लेख की रचना श्रीदेवसूर्य के प्रशिष्य और राम के शिष्य जयमगला चार्य्य ने की थी। सुप्रख्यात पुरातत्व विद् प्रोफेसर किल्होर्न ने ईसवी सन् एपीग्रफिया इण्डिका में यह लेख प्रकाशित किया है।

ाग में तीन कोष्ट मे अष्ट माङ्गलिक खुदे हुए है, और मध्य मे तीन कोष्टक में नद्यावर्त्त और ‌। परन्तु इस लेख मे कोई सवत् मिति अथवा प्रतिष्ठा करनेवाले आचार्य्य या करानेवाले श्रावक दनेवाले का नाम अथवा प्रतिष्ठा स्थानादि का उल्लेख नहीं है। *

ागर का मंदिर

यह स्थान जैसलमेर से पाँच मील की दूरी पर है। यहाँ तीन जैन मंदिर हैं। इनमें से दो बापना वशीय सेठों के बनवाये हुए हैं। छोटा मंदिर श्री सवाईरामजी बापना ने संवत् १८९७ ा मंदिर श्री सेठ हिम्मतरामजी बापना ने संवत् १९२८ में बनाया था। इन दोनों मंदिरों की रतरगच्छाचार्य्य जिनमहेन्द्रसूरिजी के हाथ से हुई है। इनमें से बड़ा मंदिर बहुत ही सुन्दर और । इसके सन्मुख बड़ा ही सुरम्य उद्यान है। इस मंदिर में शिल्प कला का बड़ा ही सुन्दर है। यह देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य्य होता है कि ऐसी विशाल मरुभूमि में मकराने के पत्थर शिल्पकला का कितना बढ़िया काम हुआ है।

इनके अतिरिक्त जैसलमेर के पास देवी कोट, ब्रह्मसर आदि स्थानों में भी छोटे मोटे जैन मंदिर ा दादाजी का स्थान भी ऐतिहासिक है।

के जैन मंदिर और शिल्पकला

हमने गत पृष्ठों में जैसलमेर के विविध ऐतिहासिक जैन मंदिरों और शिलालेखों का विवेचन अब हम इन मंदिरों की शिल्पकला के सम्बन्ध में भी दो शब्द लिखना आवश्यक समझते है। कुछ विशारदों ने इन मंदिरों की अपूर्व कारीगरी की बड़ी प्रशंसा की है। पुरातत्व विषयक सुप्रख्यात त्रिका की ५ वीं जिल्द के पृष्ट ८२ ८३ में जैसलमेर के जैन मंदिरों और वहाँ के श्रीमान् लोगों अट्टालिकाओं की प्रशंसा में एक विद्वत्तापूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है। जैसलमेर के स्टेट इञ्जीनी- मे हाल ही में स्थापत्य शिल्प नामक प्रबंध प्रकाशित किया है। इसमें उन्होंने वहाँ की शिल्प-

---

* Jain Inscriptions Jaisalmer (By B. Puranchand Ji Nahar M. A., Page 177.

चंडालिया था। इन्होंने ही, जैसा कि ऊपर कहा गया है, पाली के नौलखा मन्दिर का करवाया था ।

इन सब लेखों से यह स्पष्टतया प्रतीत होता है कि पाली का नवलखा मन्दिर अत्यन्त है। मूल में वह महावीरजी का मन्दिर कहलाता था पर पीछे से नवलखा नामक कुटुम्ब ने उसका करवाया, इससे वह नवलखा प्रासाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अन्त में डूँगर, भाखर नामक बन्धुओं ने उसका पुनरुद्धार करवाकर उसमें मूल नायक के रूप में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा

गोड़ी पार्श्वनाथ का मन्दिर

गोड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर बड़ा ही प्रसिद्ध मन्दिर है। यह मन्दिर तेरहवीं हुआ है। इसकी प्रतिष्ठा करने वाले विजयदेव सूरि नाम के जैनाचार्य्य थे। मेड़ता नगर निवासी ओसवाल जाति के कुहाड़ा गौत्र वाले साह हरषा तथा उनकी भार्य्या जयवन्तदे के पुत्र जसवन्त ने निर्माण करवाई थी।

वेलार के जैन मन्दिर

मारवाड़ राज्य के देसूरी प्रान्त के प्रसिद्ध नगर घाणेराव के पास वेलार नाम का एक वहाँ भगवान आदिनाथ का एक प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिर में ५ लेख मिले हैं जो महत्व प्रथम लेख संवत् १२६५ के फाल्गुन वदी ७ का है, उस से मालूम होता है कि धाधलदेव के समय में नाणकीय गच्छ के आचार्य्य शांतिसूरि ने वधिलदे[1] के चैत्य में रामा और गोसा ने बनाया। रामा यह धर्कट[2] वंश के ओसवाल श्रावक परिवार के पार्श्व नामक पुरुष का पुत्र था अथवा गोसाक यह आसदेव का पुत्र थांथा का पुत्र था।

मेड़ता के मन्दिर

मेडता मारवाड का अत्यन्त प्राचीन और प्रख्यात् नगर है। प्राचीन काल में यह नगर समृद्धिशाली था। अकबर जहांगीर और शाहजहा बादशाहों के राज्य काल में यहा जैन कौम

(१) वधिलदे यह वेलार का प्राचीन नाम है।

(२) यह ओसवाल जाति का एक गौत्र है। इस वक्त इस धरकट गौत्र का रूप बदल कर गया है। मारवाड़ में इस गौत्र के बहुत से घर हैं।

ही नहीं, उन्होंने ठेठ गजनी तक जैन धर्म के महान् सिद्धान्त-जीव दया का प्रचार किया था। जहांगीर ने उन्हे "युग प्रधान" की पदवी समर्पण की थी।

इस नगर मे लोढों का एक मन्दिर है जिसमे चिंतामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। प्रतिमा पर संवत् १६६९ की माघ सुदी ५ शुक्रवार का एक लेख खुदा हुआ है। उसमे ... कि महाराजाधिराज सूर्य्यसिहजी के राज्यकाल मे ओसवाल जाति के लोढा गौत्रीय शाह राय... लखा ने पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा तैयार करवाई तथा खरतरगच्छ आदि शाखा वाले ... शिष्य जिनचन्द्रसूरि ने उसकी प्रतिष्टा की। इस प्रकार वहाँ के कई मन्दिरों की कई मूर्तियों ... लेख हैं उन सब का स्थानाभाव के कारण हम वर्णन नही कर सकते। हम सिर्फ एक लेख के सम्बन्ध में ही कुछ प्रकाश डालना चाहते है।

मेडते के नये मन्दिर की मूर्ति पर जो लेख है उसमे कुछ गडबड हो गई है। आ... पंक्तियों के साथ अन्त की चार पक्तियों का वरावर सम्वन्ध नहीं मिलता। अनुमान किया ... कि इसमें जुदे २ लेखों का सम्मिश्रण हो गया है। पर इसके पिछले भाग मे जिनचन्द्रसूरि ... जिसमें कहा गया बादशाह अकबर ने उक्त सूरिजी को "युग प्रधान" की पदवी प्रदान ... कहने से बादशाह ने प्रतिवर्ष आषाढ़मास के शुक्ल पक्ष के आखिरी आठ दिनों में जीव हिंसा ... आदेश प्रसारित किया था। इतना ही नही स्तम्भन तीर्थ (खम्भात) के सागर में मछली ... सख्त मनाई कर दी थी। शत्रुंजय तीर्थ का कर बंद कर दिया गया था। सब स्थानों में ... की आज्ञा प्रसारित की गई थी।

फलौदी पार्श्वनाथ का जैन मन्दिर

मारवाड का सुप्रख्यात् तीर्थ फलौदी पार्श्वनाथ का नाम सारे जैन जगत् में प्रख्यात है। ... पर बड़ा ही विशाल, भव्य और सुन्दर जैन मन्दिर है। यहा पर प्रति वर्ष मेला लगता है। ... की पट्टावली के अनुसार सुप्रसिद्ध आचार्य्य देवसूरिजी ने विक्रम सवत् १२७४ में इस मन्दिर ... की थी। इस मन्दिर के द्वार के दोनों वाजुओं पर दो लेख खुदे हुए हैं। पहला लेख सवत् ... मार्गशीर्ष ६ का है, जिससे ज्ञात होता है कि पोरवाल जाति रोपिमुरसी और भं० दशाढ ने ... मन्दिर को जरी से भरा हुआ चन्दरवा चढाया।

दूसरा लेख तीन श्लोकों में समाप्त हुआ है। उससे ज्ञात होता है कि श्रेष्ठी (सेठ) ... ने फलौदी पार्श्वनाथ के मन्दिर में एक अद्भुत् उत्तानपट्ट बनवाया और इसने नरवर गाँव के मन्दिर ...

श्री आरासन तीर्थ

आबू पर्वत से थोडी दूरीपर कुम्भारिया नामक एक छोटा सा गाँव बसाहुआ है। इसी का
म आरासन तीर्थ है। इस तीर्थ में जैनियों के ५ बहुत सुन्दर और प्राचीन मन्दिर बने हुए हैं।
ी कारीगरी और बधाई बहुत ही ऊँचे दरजे की है। सभी मन्दिर सफेद आरस पत्थर के बने हुए
ा स्थान का पुराना नाम आरासनकर है, जिसका अर्थ आरस की खदान होना है। जैनग्रन्थों को
इस बात का पता तुरन्त लगजाता है कि पहिले इस स्थान पर आरस की बहुत बडी खदान थी।
ात में मूर्ति निर्माण के लिये यहीं से पत्थर जाता था।

दानवीर समराशाह ने भी शत्रुंजय तीर्थ का पुनरुद्धार करते समय यहीं से आरस की फलही
। विमलशाह, वस्तुपाल, तेजपाल, इत्यादि महान् पुरुषों ने आबू पर्वत के ऊपर जो अनुपम
वाले आरस के मंदिर बनाये है, वह सब आरस भी यहीं का था। सौभाग्य-काव्य से पता चलता
ङ्गा पर्वत पर ईडर के संघपति गोविंद सेठने वहाँ के महामन्दिर में अजितनाथ स्वामी की जो विशाल
तमा प्रतिष्ठित की थी उसकी फलही ही भी यहीं से लेजाई गई थी, मतलब यह कि अधिकांश
ामाए इसी आरस खान के पत्थरों से बनाई जाती थीं।

आर्कियालॉजिकल सर्वे आफ वेस्टर्न इण्डिया सरकल की सन् १९०५।६ की रिपोर्ट में कुम्भारिया
न्दिरों के सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक लिखा हुआ है। उसका भाव इस प्रकार है।

"कुम्भारिया में जैनियों के बहुत सुन्दर मन्दिर बने हुए है, जिन की यात्रा करने के लिये प्रति
जैनी आते है। इन मन्दिरों के सम्बन्ध में जो दंत-कथा प्रचलित है वह इस प्रकार है कि
ाह ने ३६० जैन मन्दिर बँधाये थे और इस काम में अम्बिका माता ने उन्हें बहुत दौलत दी थी
अम्बिका देवी ने उससे पूछा कि तुमने किसकी मदद से ये देवालय बंधाये तो उत्तर में उसने कहा
गुरुदेव की कृपा से" देवी ने ३ बार इस प्रश्न को दोहराया, मगर विमलशाह ने तीनों बार वही
ा। इस कृतघ्नता से क्रोधित होकर देवी ने उससे कहा कि अगर जीना होतो भाग जा। तब
देवालय के तह घर मे घुस गया और आबू पर्वत पर निकल गया। उसके पश्चात् माताजी ने ५
को छोड़ कर बाकी सब देवालयों को जला डाला जिनके जले हुए पत्थर अभी भी वहाँ चारों ओर
ए नजर आते है। फारबस साहब का कथन है कि यह घटना किसी ज्वालामुखी पर्वत के फटने से

आगरा मन्दिर प्रशस्ति

विक्रम सम्वत् १८१८ (ईस्वी सन १७६१)

(श्री बा० पूरणचन्द्रजी नाहर के सौजन्य से)

"सिरोही राज्य के वासा से २ मील की दूरी पर कालगरा नामक एक गांव था ... एक पार्श्वनाथ का मन्दिर भी था। परन्तु अब उस गाव और मन्दिर का कुछ भी अंश नहीं ... कहीं कहीं घरों के निशान मात्र पाये जाते हैं। वहा से विक्रमी सम्वत १३०० (ईस्वी सन् ... एक शिलालेख मिला है, जिससे पाया जाता है, कि उक्त सम्वत् मे चन्द्रावती का राजा आल्ह... उक्त गांव तथा मन्दिर का पता भी उसी लेख मे चलता है।"

कायंद्रा का जैन मन्दिर

सिरोही राज्य के कीवरली के स्टेशन से करीब चार माइल की दूरी पर कायन्द्रा नाम... यह एक अत्यन्त प्राचीन स्थान है। शिलालेखों मे इसे कासहृद नाम से सम्बोधित ... ग्राम के भीतर एक प्राचीन जैन मन्दिर है जिसका थोडे वर्षों पहले जीर्णोद्धार हुआ था। उसमें ... चौतरफ के छोटे-छोटे जिनालयों में से एक के द्वार पर वि० स० १०९१ (ई० सन् १०३४) ... यहा पर एक दूसरा भी जैन मन्दिर था जिसके पत्थर आदि यहा से लेजाकर रोहेडा के नव... मन्दिर में लगा दिये हैं। यह मन्दिर भी ओसवालों का बनाया हुआ है।

वैराट के जैन मन्दिर

जयपुर राज्य में वैराट स्थान अत्यन्त प्राचीन है, जहाँ पर पाण्डवों ने अपने अज्ञात... बिताये थे। यहा पर अशोक और उससे भी पहले के सिक्के पाये गये हैं। पुरातत्ववेत्ताओं ... द्वारा यह निश्चित किया है कि यह नगर प्राचीन मत्स्यदेश की राजधानी था। ईसवी सन् ... प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनसांग यहा आया था तो उसे यहाँ आठ बौद्ध मठ (Buddhist Mon... थे। यहीं पर सम्राट् अशोक ने बौद्ध साधुओं के लिए आदेश निकाला था। यह शिला... बंगाल की ऐशियाटिक सोसाइटी के दफ्तर में मौजूद है। ईस्वी सन् की ११ वीं शताब्दी ... गजनवी ने वैराट पर आक्रमण किया जिसका वर्णन आइने अकबरी में किया गया है।

इस नगर में पुरातत्व की दृष्टि से जो वस्तुएँ देखने योग्य हैं उनमें पार्श्वनाथ का ... भीम की डूँगरी विशेष उल्लेखनीय है। पार्श्वनाथ का मन्दिर हाल में दिगम्बर जैनियों के हा... इस मन्दिर के लेखों से यह स्पष्टतया प्रकट होता है कि यह मंदिर मूलत श्वेताम्बर सम्प्रदाय वालों ... देवालय के नजदीक के कम्पाउण्ड की एक भींत में वि० संवत् १६४४ (शक स० १५०९, ई० सन् ... का एक लेख खुदा हुआ है। उस समय भारत में सम्राट् अकबर राज्य करते थे और जैनमुनि ... तत्कालीन प्रसिद्ध जैनाचार्य्य थे। सम्राट् अकबर ने वैराट में इन्द्रराज नामका एक अधिकारी ...

इसके अन्दर महावीर देव की एक भव्य मूर्ति है। जिसके ऊपर ईस्वी सन् १६१८ का एक
ा जाता है, पर जिस बैठक के ऊपर उस प्रतिमा को बैठाया गया है वह बैठक पुरानी है और उस
सन् १०६१ का लेख पाया जाता है। इस देवालय मे मूल नायक के स्थान पर महावीर देव की
प्रतिष्ठित है उसकी पलथी पर सम्वत् १६७५ विक्रमीय का एक लेख है जिससे पता चलता है कि
ाश के (ओसवाल वंश के) सा नानिया नामक श्रावक ने अरासन नगर में श्री महावीर का
ापित किया और उसकी प्रतिष्ठा श्री विजयदेवसूरि ने की। एक लेख इसी स्थान पर मूर्ति की
ीचे खोदा हुआ है, यह संवत् १११८ के फाल्गुन सुदी ९ सोमवार का है। मगर खण्डित
ी वजह से इसमे लिखने वाले के नाम का पता नहीं चलता।

उपरोक्त दोनों मन्दिरों की तरह पार्श्वनाथ का मन्दिर शांतिनाथ का मन्दिर तथा सम्भवनाथ का
र है। इन देवालयों की कारीगरी और बनावट थोड़े फेर-फारों के साथ प्राय उपरोक्त मन्दिरो
सलिए इनके विषय मे विशेष विवेचन की आवश्यकता नहीं। इनके ऊपर जो लेख पाये जाते
र का लेख का सम्वत् ११३८ और एक का ११४६ है। चार गोखड़ों पर भी लेख खुदे हुए है
सन् १०८१ के है।

राणकपुर

राणकपुर या राणपुर गोडवाड प्रान्त की पंचतीर्थियों में १ प्रमुखतीर्थ है। मारवाड़ देश में
ीन जैन मन्दिर है उनमे राणपुर का मंदिर सब से कीमती और कारीगरी की दृष्टि से सब से
। इसके सम्बन्ध मे सर जेम्स फर्ग्यूसन ने लिखा है कि "इसके सभी स्तम्भ एक दूसरे से भिन्न
म अच्छी तरह से सगठित किये हुए है।" इस प्रकार १४४४ विशाल प्रस्तर स्तम्भों पर यह मंदिर
। इनके ऊपर भिन्न २ ऊँचाई के अनेकों गुम्मच लगे हुए है जिनसे इसकी बनावट का मन के
प्रभावशाली असर होता है, वास्तव मे मन के ऊपर इतना अच्छा असर करनेवाला स्तम्भों का
सगठन सारे भारत के किसी भी देवालय मे नहीं है। यह मंदिर ४८००० वर्ग फीट जमीन पर
। है इस मंदिर के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि इसे संवत् १४३४ में नादिया ग्राम निवासी
र रतनासा नामक पोरवाड़ जाति के दो सेठों ने बनवाया था।

ऐसा कहा जाता है कि जब ओरंगजेब ने राजपूताने पर चढ़ाई की थी तब इस देवालय पर भी

गोंधाणी का प्राचीन जैनमंदिर

गोंधाणी ग्राम जोधपुर से उत्तर दिशा में ९ कोस पर है, वहाँ के तालाब पर एक मंदिर है, उक्त मंदिर में एक सर्व धातु की श्री आदिनाथ भगवान की मूर्ति है, जिस पर एक लेख खुदा हुआ है। उक्त लेख का संवत् ९३७ आषाढ़ मास है। इसमें उद्योतनसूरि आया है, जिसमें कहा गया है कि उन्होंने उक्त संवत् में आचार्य पद को प्राप्त किया। इन सूरिजी के स्वर्गवास का संवत् ९९४ मिलता है। इस लेख में किसी गच्छ विशेष का है, इससे यह पाया जाता है कि विक्रम की दसवीं सदी में किसी प्रकार का गच्छ भेद नहीं था सिक दृष्टि से उक्त लेख बड़े महत्व का है।

चित्तौड़ की श्रृंगार चावड़ी

राजस्थान के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल चित्तौड़ के किले में श्रृंगार चावड़ी नामक है। चित्तौड़ के किले में जो प्रसिद्ध स्थान है उनमें इसकी गणना है। महामति टॉड से तक जिन २ पुरातत्व वेत्ताओं ने इस किले का वर्णन किया है, उनमें इस मंदिर का भी उल्लेख लॉजिकल सर्वे ऑफ वेस्टर्न सर्कल के सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० हेवर कॉउसेन्स अपनी ईसवी सन् प्रोग्रेस रिपोर्ट में इस मन्दिर के विषय में लिखते हैं।

"श्रृंगार चावड़ी नाम का एक पश्चिमाभिमुख जैन देवालय है। उसके फर्श एक ऊँचा चौरस चौतरा बना हुआ है, और उसके चारों कोनों में चार खम्भे है। ये खम्भे सम्भाले हुए हैं। इसके नीचे चौमुख प्रतिमा विराजमान है। महामति टॉड साहब को एक लेख मिला था जिसमें लिखा था कि राणा कुम्भ के जैन खजाँची ने इस मन्दिर को बनवाया

यह जैन मंदिर ई० सन् ११५० के लगभग का मालूम होता है।

श्री नाडलाई तीर्थ

मारवाढ के गोढवाड प्रान्त के देसूरी जिले मे यह गाव अवस्थित है। ऐतिहासिक दृष्टि से वडा महत्व है। गोढवाड प्रान्त के प्रमुख जैन तीर्थों मे से यह एक है। इस गाँव मे ११ जैन है। इसमें मे ९ गाँव मे तथा २ पास के पर्वत पर है। इन पर्वतों को लोग शत्रुंजय और गिर- नाम से पहचानते है।

इस ग्राम में बहुत से जैन लेख मिले है, उन शिलालेखों मे इस गाँव को नन्दकुलवती, नडडु- १डइल ड.निगा आदि नामों मे सम्बोधन किया गया है। ऐतहासिक रासस‌ग्रह के दूसरे भाग मे डुभपुर नाम से भी पुकारा गया है।

इस ग्राम में भगवान आदिनाथ का एक प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर मे पत्थर पर खुदे हुए त्र है, एक लेख सवत् ११८६ की माव सुदी ५ का है इसमें चहामान (चौहान) वंश के महाराजा- रायपाल के पुत्र रुद्रपाल तथा अश्वपाल तथा उनकी माता मानल देवी द्वारा मदिर मे चढ़ाई गई : उल्लेख है। इसके अलावा समस्त ग्रामीणों के सर पच भण्डारी नागसीजी, लक्ष्मणसी आदि ालों का उल्लेख है।

उक्त आदिनाथ मदिर के रंग मडप के बाएँ बाजू की दीवार पर एक और लेख खुदा हुआ है। ख मे मेवाड के राजाओं की वशावली दी गई है। यह वशावली विशेष विश्वसनीय होने के कारण तेहास वेत्ताओं ने अपनी पुस्तकों तथा रिपोर्टों में इसका उल्लेख किया है। इसके बाद इस लेख मे उकेश ओसवाल जाति) के भण्डारी गौत्रीय सायर सेठ के वश में शकर आदि पुरुषों द्वारा श्रीआदिनाथ तेमा की स्थापना करने का उल्लेख है। यह लेख सवत् ११७४ का है इसी प्रकार सवत् १२०० की ; वदी ७ का दूसरा लेख है। इस लेख में जो कुछ लिखा है, उसका आशय यह है—

"महाराजाधिराज रायपालदेव के राज्य में उनके दीवान ठाकुर राजदेव के समक्ष नाडलाई के महाजनों ने (ओसवालों) मिलकर इस मदिर के लिये घी, तेल, नमक, धान्य, कपास, लोहा, शक्कर, मजीठ आदि चीजों को भेंट करने का निश्चय किया।

कहने का अर्थ यह है कि नाडलाई तीर्थ स्थान में भी ओसवाल दानवीरों के धार्मिक कार्यों के २ पर उल्लेख पाये जाते है।

श्री पावापुरी तीर्थ

जैनियों के चौबीसवें तीर्थङ्कर भगवान महावीर आज से लगभग २४६० व[ा]
परम पवित्र पांवापुरी नगरी मे निर्वाण को प्राप्त हुए थे। इसलिये यह स्थान जैनि[यों]
पवित्र तीर्थस्थान माना जाता है। यद्यपि इस तीर्थ स्थान की स्थापना ओसवालों की उत्पत्ति[*]
हो चुकी थी। पर कोई एक हजार वर्ष के पूर्व से इस तीर्थ स्थान का सारा कारोबार [श्वे]
पूजक ओसवालों के हाथ मे रहता आया है। वे ही इस पवित्र पावापुरी तीर्थ की रक्षा
बराबर करते आ रहे हैं। इतना ही नहीं वहाँ पर जितने मदिर और धर्मशालाएँ हैं उनमें
छोडकर प्राय. सब की प्रतिष्ठा व पुनरुद्धार ओसवालों ने ही करवाये हैं। अब हम श्री
विभिन्न जैन मदिरों का कुछ ऐतहासिक विवेचन करना चाहते हैं जिससे पाठकों को हमारे उ[क्त]
सचाई प्रगट हो जाय।

गावमंदिर

यह मदिर पाँच भव्य शिखरों से सुशोभित है। विक्रम सवत् १६९८ की वैसाख
सोमवार को खरतरगच्छाचार्य श्री जिनराजसूरिजी की अध्यक्षता में बिहार के श्रीश्वेताम्बर
मदिर की प्रतिष्ठा कराई थी। उस समय कमल लाभोपाध्याय एव प० लब्धकीर्ति आदि कई
की मण्डली उपस्थित थी कि जिनका उक्त मदिर में लगी हुई प्रशस्ति मे उल्लेख मिलता है।
यह प्रशस्ति श्याम रग की शिला पर बड़े ही सुन्दर अक्षरों में खुदी हुई है। इस प्रशस्ति की
फूट और चौडाई १ फूट है। सुप्रख्यात पुरातत्व विद् बाबू पूरणचन्द नाहर एम० ए० बी०
प्रशस्ति का पुनरुद्धार किया और अपने जैन लेख संग्रह भाग प्रथम के पृष्ठ ४६ मे उसे प्रका[शित]
इसके बाद आप ही ने उक्त प्रशस्ति की शिला को बडी सावधानी के साथ वेदी मे निकलवा [कर]
दीवार पर स्थापित कर दी।

मूल मदिर के मध्य भाग में मूलनायक श्री महावीरस्वामी की पाषाण मय
विराजमान है, दाहिने तरफ श्री आदिनाथ की एवं बाई तरफ श्री शातिनाथ की श्वेत पाषा[ण]
हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ कई धातु की पच तीर्थियाँ और छोटी २ मूर्तियाँ रक्खी हुई है। मूल

* जिस समय इस तीर्थस्थान की उत्पत्ति हुई उस समय जैनियो में आज की तरह कोई भेद नहीं

लोर (मारवाड)

मारवाड के दक्षिण भाग मे जालोर नाम का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है। मारवाड की
ी जोधपुर से यह ८० माईल की दूरी पर सूकडी नामक नदी के किनारे बसा हुआ है। प्राचीन
ौर ग्रन्थों में यह नगर जवालीपुर के नाम से प्रसिद्ध था। सुप्रसिद्ध श्वेताम्बर आचार्य्य श्री जिने-
 ने वि० संवत् १०८० में श्री हरिभद्राचार्य्य रचित अष्टक संग्रह नामक ग्रन्थ की विद्वत्तापूर्ण टीका
 की थी। और भी अनेक ग्रन्थों मे इस नगर का नाम मिलता है। इस पर मे यह स्पष्ट ज्ञात
, कि प्राचीन काल में यह नगर जैन संस्कृति से प्रकाशमान था। वहां के संवत् १२४२ के
 से मालूम होता है कि उस देश के तत्कालीन अधिपति चहामान (चौहान) श्री समरसिंघ देव
ा से भण्डारी पासू के पुत्र भण्डारी यशोवीर ने कुँवर विहार नामक मन्दिर का पुनरुद्धार किया।

इसके अतिरिक्त जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंहजी के मन्त्री जयमलजी ने यहां पर कुछ जैन
और तपेगच्छ के उपाश्रम बनवाये। जालौर के किले पर जो जैन मन्दिर विद्यमान है उसका जीर्णो-
 आप ने करवाया। उस मन्दिर में प्रतिमा पधरा कर आप ही ने उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

राजा कुँवरपाल के समय का बना हुआ जैन मन्दिर गिर गया था। उसकी नींव मात्र शेष रह
। उसी स्थान पर जयमलजी ने मन्दिर बनवाकर संवत् १६८१ के चैत्र बदी ५ को प्रतिष्ठा कर-
 इनके पश्चात् इनके पुत्र नैनसीजी ने इसी मन्दिर के सामने मण्डप बनवाकर उसमें अपने पूज्य
ी जयमलजी की मूर्त्ति संगमरमर के बने हुए श्वेत रंग के हाथी के हौदे पर स्थापित की। यह मूर्त्ति
रजी की प्रतिमा के सन्मुख हाथ जोडे हुए विराजमान है। इस मन्दिर का द्वार उत्तर की ओर
ा है। यह किले की ऊपर की अंतिम पोल के नैऋत्य कोण में थोडी ही दूर पर अवस्थित है।
न्दिर महावीर स्वामी के नाम से मशहूर है। इस मन्दिर की मूलनायक की प्रतिमा के नीचे एक
ुदा हुआ है जिसमें शाह जैसा की भार्य्या जेवतदे के पुत्र शाह जयमलजी और तत्पुत्र मुणोत नैनसी
 सुन्दरदासजी का उल्लेख है।

महावीरजी के मन्दिर की तरह यहां पर एक चौमुखाजी का मन्दिर है। यह किले के ऊपर
म पोल के पास किलेदार की बैठक के स्थान मे थोडी दूर पर मस्कारखाने के मार्ग पर बना हुआ
मन्त्री जयमलजी ने इस मन्दिर में संवत् १६८१ के प्रथम चैत्र वदी ५ को श्री आदिनाथ स्वामीजी
ा को पधराई, जिसका लेख इस प्रतिमाजी पर खुदा हुआ है। इसी किले में एक तीसरा जैन

सूरि ने प्रतिष्ठा की थी। दाहिनी वेदी पर श्री महावीर स्वामी के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वा
बाई पर पंचम गणधर श्री सुधर्म स्वामी की चरण पादुकाएँ विराजमान हैं।

मंदिर के बाहर दोनों तरफ दो क्षेत्रपाल की मूर्त्तियां है। तथा नीचे की प्रथम प्रद
और ब्राह्मी, चन्दनादि सोलह सतियों का विशाल चरण पट और दूसरी ओर जैन मुनि श्री
गणि की पादुका अवस्थित है। बाहर की प्रदक्षिणा में श्री जिनकुशलसूरिजी की पादुका
की उत्तर दिशा मे सरोवर में उतरने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई है।

श्री समवसरणजी

श्री पांवापुरी ग्राम के पूर्व की ओर सुन्दर आम्र उद्यान के पास एक छोटा सा स्
है। कहा जाता है कि इस स्थान में भगवान महावीर का प्रचीन समवशरण था। यह स्थान
होने के कारण श्वेताम्बर श्रीसंघ ने सरोवर के तट पर ही समवशरणजी की रचना की है तथा
बनवाये हैं। गोलाकार हाते के चारों ओर रेलिंग लगी हुई है और भूमि से प्राकारमय का भाव
बीच में एक अष्टकोण सुंदराकृति मंदिर बना हुआ है। सम्वत् १९५३ में विहार निवासी बाबू
सुचंती ने श्वेताम्बर श्रीसंघ की ओर से इसकी प्रतिष्ठा करवाई थी। उक्त मंदिर के बीच में
वेदी है जिस पर सवत् १६४५ की वैसाख शुक्लपक्ष ५ का प्रतिष्ठित श्री वीरप्रभु का चरण यु
समवशरणजी के मन्दिर के समीप पश्चिम दिशा मे सुप्रसिद्ध पुरातत्व बाबू पूरणचन्द्रजी नाहर
मातेश्वरी श्रीमती गुलाब कुमारी की दुमंजली धर्मशाला है। इसके उत्तर की तरफ रायबहादुर
दुधोरिया की धर्मशाला है।

बाई महताब कुँअर का मंदिर

यह मन्दिर श्री महावीर स्वामी का है। इसकी मूलवेदी पर श्री महावीर स्वामी
के साथ और कई पाषाण व धातु की मूर्त्तियाँ है। कहा जाता है कि अजीमगंज निवासी श्रीम
कुँअर बाई ने अपनी देख रेख में यह मन्दिर बनवाया और संवत् १९३२ में उसकी प्रतिष्ठा कराई

श्रीपावापुरीजी का तीर्थ बड़े ही रम्य स्थान में है। यहा पर जाते ही हृदय में अनु
का पवित्र अनुभव होने लगता है। भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि पर यहाँ एक
लगता है जिसमें दूर २ से सैकड़ों हजारों यात्री आते है। इस मेले के प्रसंग पर आस पास
अतिरिक्त दूर २ से कुष्टादि रोगों से पीड़ित, चक्षु विहीन तथा अन्य व्याधियों से ग्रसित हजारों

पाली का नवलखा मन्दिर

मारवाड मे पाली नाम का एक प्रसिद्ध और प्राचीन नगर है। वहाँ पर नवलखा मन्दिर नाम का भव्य और ५२ जिनालय वाला प्राचीन देवालय है। इस मन्दिर की दो प्रतिमाओं पर दो लेख है। पहिले लेख का भाव यह है—"सवत् १२०१ के ज्येष्ठ वदी ६ रविवार के दिन पल्लिका पाली नगर के महावीर स्वामी के मन्दिर मे महामान्य आनन्द के पुत्र महामान्य पृथ्वीपाल ने अपने कल्याण के लिये दो तीर्थङ्करो की मूर्त्तिया बनवाई, उनमे से यह अनतनाथ की प्रतिमा है"।

दूसरी प्रतिमा पर भी इसी प्रकार का लेख खुदा हुआ है, पर उसके अतिम वाक्य मे "अनत" 'विमल' का उपयोग किया गया है। उससे ज्ञात होता है कि उक्त प्रतिमा भगवान विमलनाथ।

इसी मन्दिर में रक्खी हुई एक प्रतिमा के सिंहासन पर निम्न लिखित आशय का लेख खुदा हुआ वत् ११८८ की माघ सुदी ११ के दिन अजित नाम के एक गृहस्थ ने शातिनाथ की मूर्ति बनायी गी गच्छीय देवाचार्य ने उसकी प्रतिष्ठा की। उक्त मन्दिर मे श्री आदिनाथ भगवान की मूर्त्ति के सन के ऊपर एक लेख खुदा हुआ है जिसका सार यह है "सवत् ११७८ की फाल्गुन सुदी वार को पाली के वीरनाथ के महान् मन्दिर मे उद्द्योदनाचार्य के शिष्य महेश्वराचार्य और उनके याचार्य के साहार नामक श्रावक के दो पौत्र देवचन्द्र तथा हरिश्चन्द्र ने मिल कर देवचन्द्र की सुंधरी के पुण्यार्थ ऋषभदेव तीर्थङ्कर की प्रतिमा निर्माण करवाई। इसके अतिरिक्त इस मन्दिर के भंडार की वेदिका पर विराजमान तीन प्रतिमाओं पर तीन लेख खुदे हुए है। ये लेख सवत १६८६ ख सुदी ८ के है। पहिले और अतिम लेख मे जो कुछ लिखा गया है उसका साराश यह है कि हाराजाधिराज गजसिंहजी जोधपुर मे राज्य करते थे और महाराज कुमार अमरसिंहजी युवराज पद भोग और जब उनका कृपा पात्र चौहान वशीय जगन्नाथ पालीनगर की हुकूमत कर रहा था, उस समय र के निवासी श्रीमाली जाति के सा डूँगर तथा भाखर नाम के दो भाइयों ने अपने द्रव्य मे नोलखा न्दिर का जीर्णोद्धार कराया और उसमे पार्श्वनाथ तथा सुपार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित कीं।"

पाली नगर मे "लोटा रो वास" एक मोहल्ला है, उसमे शातिनाथ के मन्दिर की मूल नायकजी मा पर एक लेख खुदा हुआ है। उक्त लेख मे यह ज्ञात होता है कि उक्त मूर्तियों की प्रतिष्ठा कराने र और भाखर दोनों भाई थे। ये ओसवाल जाति के थे, और उनका वश श्री श्रीमाल तथा गोत्र

संवत् १८५६ की वैसाख सुदी ३ को खरतर गच्छाधिराज श्री जिनलाभसूरि पट्टलिंक्षा श्री संघ के श्रेय के लिये श्री शांतिनाथ जिन बिम्ब की प्रतिष्ठा की। इसीदिन श्री जिनच वासुपूज्य स्वामी के बिम्ब-प्रतिष्ठा कराई गई। प्रतिष्ठा का प्रबन्ध कराने वाले ओसवाल गोलेछा गौत्र के कोई सज्जन थे। इस प्रकार इसी तारीख को भगवान विमलनाथ और जि की पादुकाओं की प्रतिष्ठा की गई।

इस प्रकार और भी विभिन्न तीर्थङ्करों के बिम्ब और पादुका की प्रतिष्ठा कराये जाने वहाँ के पत्थर पर खुदे हुए लेखों मे पाये जाते हैं। इनमें प्रतिष्ठाचार्य्य जैन श्वेताम्बर आचा प्रतिष्ठा के लिये धन व्यय करने वाले ओसवाल धनिक थे। इन लेखों मे दूगड सरूपचन्द हुलासचन्द, प्रतापसिंह, राय लक्ष्मीपतसिंह बहादुर, राय धनपतसिंह बहादुर तथा कुछ ओसवालों नाम हैं, जिन्होंने उक्त बिम्बों की प्रतिष्ठा करवाने में सब से अधिक भाग लिया था। बिम्बों यहाँ की धातु की प्रतिमाओं पर भी कई लेख हैं। संवत् १५०९ के ज्येष्ठ सुदी में साहस नाम ओसवाल श्रावक ने श्री नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई। संवत् १५७१ में ओस सिंघाडिया गौत्र के शाह चम्पा, शाह पूजा, शाह काजा, शाह राजा, धन्ना आदि ने श्री आदिना की मूर्ति की प्रतिष्ठा पूज्य श्री जिनहंससूरि द्वारा करवाई। इस प्रकार यहाँ की मूर्तियों पर ओ ओसवाल सज्जनों के नामों का उल्लेख मिलता है। यहाँ के कई मन्दिर भी ओसवाल सज्जनों हुए तथा प्रतिष्ठित किये हुए हैं। कहने का अर्थ यह है कि चम्पापुरी के महा तीर्थ राज पर भी महानुभावों के जैन धर्म प्रेम के चिह्न स्थान २ पर दृष्टि गोचर होते हैं।

राजगृह

मगध देश में राजगृह (राजगिरी) अत्यन्त प्राचीन नगर है। बीसवे तीर्थङ्क व्रत स्वामी का यह जन्म स्थान बतलाया जाता है। इतना ही नहीं, उक्त तीर्थङ्क दीक्षा ली थी और यहीं पर वे मोक्ष गामी हुए थे। बाइसवें तीर्थङ्कर श्री नेमिनाथ के समय में य की राजधानी थी। चोबीसवें तीर्थङ्कर श्री महावीर स्वामी के समय में भी यह नगर संस्कृति औ के ऊँचे शिखर पर चढ़ा हुआ था। भगवान बुद्धदेव की भी यह लीला भूमि थी। प्रसेनजित, श्रेणिक तथा श्रेणिक पुत्र कोणिक यहाँ के राजा थे। भगवान महावीर स्वामी ने यहाँ पर चौम किये। जम्बू स्वामी, धन्नासेठ तथा शालिभद्रजी आदि बडे २ विख्यात् पुरुष यहा के निवासी स्थान बहुत ही रमणीक और नयन मनोहर है। यहाँ पर जो पहाड है उनके नीचे ब्रह्म कुण्ड,

ाबादी थी। यहां पर कई लक्षाधीश और कोट्याधीश जैन गृहस्थ थे। तपेगच्छ और खरतरगच्छ ा बड़ा प्राबल्य था। तपेगच्छ के सुप्रख्यात् आचार्य्य हरिविजयसूरि, विजयसेन और विजयदेव तथा च्छ के जिनचन्द्र, जिनसिंघ और जिनराज आदि आचार्य्यों ने यहां पर कई चातुर्मास किये। इस ाल में १२ जैन मन्दिर हैं। इन मन्दिरों की कई प्रतिमाओं की वेदियों पर कई लेख खुदे हुए हैं। में से पहले तीन लेख वहा के नये मन्दिर की प्रतिमा के ऊपर खुदे हुए हैं। उनमें से एक लेख ६९ का है। उससे मालूम होता है कि स्तम्भ तीर्थ (खम्भात) के ओसवाल जाति के शाह ने अपने कुटुम्ब के साथ सुमतिनाथजी की प्रतिमा पधराई। इसकी प्रतिष्ठा तपेगच्छ के सुमति के पट्टधर श्री हेमविमलसूरि थे। इनके साथ महोपाध्याय अनन्त हंसगणि आदि का शिष्य था।

दूसरा लेख संवत् १५०७ की फाल्गुन वुदी ३ बुधवार का है। उससे मालूम होता है कि जाति के बोहरा गौत्र के एक सज्जन ने अपने पिता के कल्याणार्थ शान्तिनाथ की प्रतिमा बनवाई रगच्छ के श्री जिनसागरसूरि से उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

इस नगर में 'चौपड़ों का मन्दिर' नामक एक देवालय है जिसकी प्रतिमाओं पर कुछ लेख खुदे एक लेख संवत् १६७७ की ज्येष्ठ वदी पंचमी का है। उससे मालूम होता है कि उस समय पर मुगल सम्राट् जहांगीर राज्य करता था और शाहजादा शाहजहां युवराज पद पर था। जाति के गणधर चौपड़ा गौत्र के सिंघवी आसकरण ने अपने बनाये हुए संगमरमर के पत्थर के द्वार में तीर्थङ्कर शान्तिनाथजी की मूर्ति की स्थापना की और उसकी प्रतिष्ठा बृहद् खरतरगच्छ के जिनराजसूरि ने की। इस लेख में उक्त सिंघवी आसकरणजी के पूर्वजों तथा कुटुम्बियों का वंश दिया हुआ है। इन्हीं सिंघवी आसकरणजी ने आबू और शत्रुंजय के लिये संघ निकाले थे जिनके हें संघपति का पद प्राप्त हुआ था। इन्होंने जिनसिंहसूरि की आचार्य पदवी के उपलक्ष्य में नन्दी किया था। *

इसी प्रकार इन्होंने और भी कई धार्मिक कार्य्य किये। इसी लेख में प्रतिष्ठाकर्त्ता आचार्य्य ली भी दी गई है जिसमें प्रथम जिनचन्द्रसूरि का नाम है। ये वे ही जिनचन्द्रसूरि हैं जिन्होंने बर को प्रतिबोध दिया था और उक्त सम्राट् ने उन्हें "युग प्रधान" की पदवी प्रदान की थी। छे जिनसिंहसूरि का नाम दिया गया है। इन्होंने काश्मीर देश में प्रवास किया था। इतना

* क्षमाकल्याण गणि की खरतरगच्छ पट्टावली के अनुसार यह महोत्सव संवत् १६५४ की फाल्गुन सुदी ा गया था।

सुदी ७ सोमवार का है। उसमें ओसवाल समाज के दूगड गौत्र के शाह उदयसिंह, मूल र नगराज आदि नामों के उल्लेख हैं। दूसरा लेख संवत १४९२ का है जिसमें ओसवाल समाज गौत्र के शाह सोहड़ और उनकी भार्य्या हीरादेवी द्वारा श्री आदिनाथ बिम्ब की प्रतिष्ठा का उल्लेख है। तीसरा लेख संवत् १५०८ का है इस लेख में ओसवाल वंश के शाह रेता इ श्री धर्मनाथ भगवान की बिम्ब प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख है। इस प्रकार यहां पर कई एक ओसवाल सज्जनों के नामों का जगह २ पर उल्लेख किया गया है।

श्री सम्मेदशिखरजी

जैनियों का यह अत्यंत प्रख्यात तीर्थ स्थान है। क्योंकि इस महान तीर्थराज प तीर्थङ्कर निर्वाण पद को प्राप्त हुए है। इस पवित्र पहाड के बीस टोंक में से उन्नीस टोंक प चरण पादुका विराजमान है और श्री पार्श्वनाथ स्वामी की टोंक पर मन्दिर है। तलैटी के मदुर और धर्मशाला बने हुए हैं। यहां से चार कोस पर ऋजुबालुका नदी बहती है जिसके समीप भगवान् को केवलज्ञान हुआ था। यहां पर चरण पादुका है।

इस नदी के तट पर की छतरी पर संवत् १९३० की वैसाख शुक्ल १० का एक ले ज्ञात होता है कि मुर्शिदाबाद निवासी प्रतापसिंहजी और उनकी भार्य्या महताव कुँवर तथा लक्ष्मीपतसिंह बहादुर और उनके छोटे भाई धनपतसिंह बहादुर ने उक्त छतरी का जीर्णोद्धार इसी प्रकार यहा पर तथा टोंको पर बीसों लेख है जिनमें ओसवाल सज्जनों के पुनरुद्धार तथा कार्य्यों के उल्लेख हैं। यहां पर ओसवाल समाज की तरफ से बडी २ धर्मशालाएँ बनी हुई स्थान का सारा प्रबन्ध ओसवालों के हाथ में है।
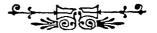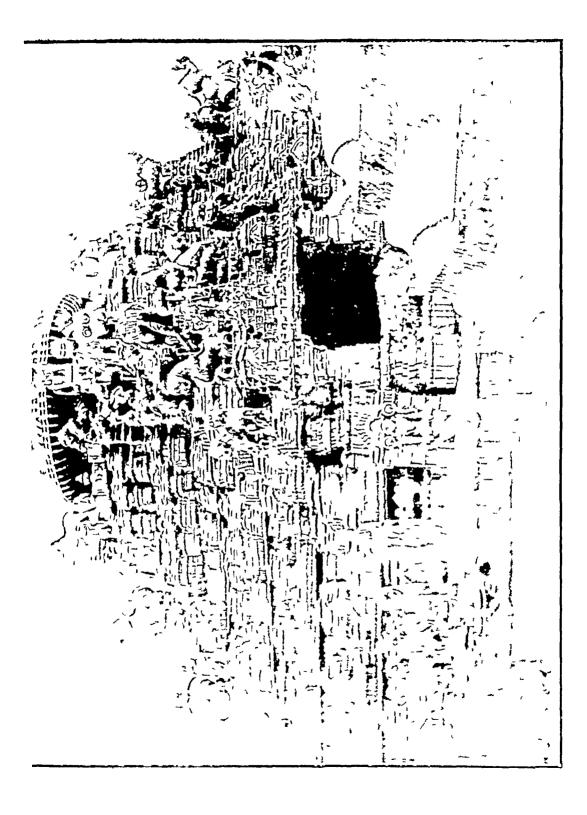
खम्भात का पार्श्वनाथ का मन्दिर

खम्भात का प्राचीन नाम स्तम्भनपुर है। वहाँ पर पार्श्वनाथ का एक प्राचीन मन्दिर
मंदिर की एक शिला पर एक लेख खुदा हुआ है, जिसे बड़ौदा की सेन्ट्रल लायब्रेरी के संस्कृत ग्र
के निरीक्षक स्वर्गीय श्री चिम्मनलाल डायाभाई दलाल एम० ए० ने प्राप्त किया था। उक्त लेख
इस प्रकार है।

संवत् १३६६ के साल में जब स्तम्भनपुर (खम्भात) में पृथ्वीतल को अपने
देनेवाला अल्लाउद्दीन बादशाह का प्रतिनिधि अल्फखान राज्य करता था, उस समय जिन प्रबो
श्री जिनचन्द्रसूरि के उपदेश से उकेश (ओसवाल) वंशीय शाह जैसल नामक सुश्रावक ने
सहित अजितदेव तीर्थङ्कर का भव्य मंदिर बनवाया। शाह जैसल जैन धर्म का प्रभावि
उसने बहुत से याचकों को विपुल दान देकर उनका दरिद्र नाश किया था। बड़े समारोह
शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थों की संघ के साथ यात्रा की थी। उसने पट्टन में भगवान
विधि-चैत्य और उसके साथ पौषधशाला बनवाई थी। उसके पिता का नाम शाह केशव था।
मेर में पार्श्वनाथ भगवान का सम्मेद शिखर नामक विधि-चैत्य बनवाया था।

इसी खम्भात नगर में भगवान कुंथुनाथ का जैन मंदिर है। इसमें एक शिलालेख है
साल संवत् नहीं दिया गया है। इस शिला लेख में १९ पद्य हैं। पहले पद्य में भगवान
है। दूसरे और तीसरे में तेइसवें तीर्थङ्कर भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति है। चौथे पद्य में
से सब तीर्थङ्करों की प्रशंसा है। पांचवें और छटे पद्य में चौलुक्य वंश की उत्पत्ति का वर्णन
और आठवें पद्य में उक्त वंश के अर्णोराज राजा की प्रशंसा है। और नौवें श्लोक में अर्णोराज
देवी नामक रानी का उल्लेख है। दसवें, ग्यारहवें तथा बारहवें पद्य में उनके पु
का वर्णन है। तेरहवें श्लोक में उनकी स्त्री मदनदेवी का उल्लेख है। इसके बाद के चार
पराक्रमी पुत्र वीरधवल का वर्णन है और अठारहवें श्लोक में उनकी रानी वैजलदेवी का नाम
गया है। उन्नीसवें काव्य में विसलदेव राजा के गुण वर्णित है।

इसी खम्भात नगर में चिंतामणि पार्श्वनाथ का एक प्राचीन मंदिर है। उसमें एक
पत्थर पर एक लेख खुदा हुआ है जिसका सारांश सुप्रख्यात् पुरातत्वविद् मुनि जिनविजयजी ने
प्रगट किया है।

"प्रारंभ के चार श्लोकों में भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति की गई है। पांचवें श्

तैयार करवाया और अजमेर के महावीर स्वामी के शिखर वाले चौबीस मन्दिर (छोटे मन्दिर)
।

ल का जैन मंदिर

जोधपुर राज्य में जस्सोल नाम का एक ग्राम है। वहा शातिनाथजी का एक प्राचीन मन्दिर है। लेख खुदे हुए हैं। उनमे पहला लेख सं० १२४६ की कार्तिक वदी २ का है, जिसमे ज्ञात होता है देवाचार्य्य (वादीदेवसूरि) के गच्छ वाले खेट गॉव के महामन्दिर मे श्रेष्ठी सहदेव के पुत्र सोनीगेय युग अर्थात् दो थंभे बनवाये। उक्त लेख से यह प्रतीत होता है कि जस्सोल का पुराना नाम खेड स्कृत में) था तथा उक्त मन्दिर मूल मे महावीर स्वामी का था जो वर्तमान मे शान्तिनाथजी के नाम से प्रसिद्ध है।

नी का जैन मंदिर

यह गॉव सिरोही से १४ माइल की दूरी पर और पींडवाडा स्टेशन से २ माइल वायव्य कोण हा पर एक प्राचीन जैन मन्दिर है जो आज कल शान्तिनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। यह मन्दिर मन्दिरों की तरह एक कम्पाउण्ड से घिरा हुआ है और उसके आस पास देव कुलिकाएँ तथा है। आगे के भाग के देवगृह में एक बडी शिला जडी हुई है जिस पर एक लेख खुदा हुआ है। सवत् १२५५ की आसोज वदी ७ बुधवार का है। इस लेख से पाया जाता है कि परमार राजा की रानी श्रृंगारदेवी ने उक्त मन्दिर को एक वाडी भेंट की थी। इस देवालय के अन्दर का भाग सुन्दर और नयन-मनोहर है। इसके बाहर का द्वार उदयपुर राज्य के करेडा गॉव के पार्श्वनाथ के समान तथा उसके स्तम्भ और उसके कमान आबू के विमल शाह के देवालय की तरह हैं।

इसके आगे परसाल में एक दूसरा शिला लेख है जो संवत् १२२६ की फाल्गुन वदी चतुर्थी का समें श्री देवचन्द्रसूरि द्वारा की गई ऋषभदेव की प्रतिमा की प्रतिष्टा का उल्लेख है। इसी गॉव म एक सुन्दर पुरानी बावडी है जिसमें वि० सवत् १२४२ का एक टूटा हुआ लेख है। इसमे ार धारावर्ष की पटरानी गीगादेवी का नाम है।

ा जैन मन्दिर

इस मन्दिर के विषय मे सुप्रख्यात् पुरातत्त्वविद् राय बहादुर महामहोपाध्याय पं० गौरीशङ्करजी खते है —

ाह जाति का श्रीमाली था। यह भी ज्ञात होता है कि सम्राट् अकबर के वजीर टोडरमल इसके तावे मे और भी गांव दिये थे।

इसी इन्द्रराज ने इस मन्दिर को बनवाया और इसका नाम महोदयप्रासाद या इन्द्रविहार रक्खा। न्दर की एक शिला पर चालीस पंक्ति का एक लेख है जिसकी भाषा गद्यात्मक संस्कृत है। इस म्राट् अकबर की बड़ी प्रशंसा की गई है। इसमे हीरविजयसूरि और सम्राट् की मुलाकात का ाट् के जीव रक्षा सम्बन्धी फरमानो का उल्लेख भी किया गया है।

इसके आगे चल कर वैराट नगर के तत्कालीन अधिकारी इन्द्रराज तथा उसके कुटुम्ब का व ा बनाये गये मन्दिर का उल्लेख किया गया है।

हीरविजयसूरि के जीवन सम्बन्धी लिखे हुए प्रत्येक ग्रन्थ मे इन्द्रराज तथा उसके द्वारा किये गये ोत्सव का उल्लेख किया गया है।

पंडित देवविमल गणि रचित हरिसौभाग्य महाकाव्य के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उक्त र्य अकबर बादशाह की मुलाकात लेने के बाद जब आगरा से वापस गुजरात जा रहे थे तब ४२ में उन्होंने नागोर में चातुर्मास किया था। चातुर्मास समाप्त होने पर वे विहार करके पीपाड़ में आये। वहाँ वैराट नगर से इन्द्रराज के प्रधान पुरुष आपके स्वागत के लिए उपस्थित हुए ने इन्द्रराज द्वारा बनाये गये वैराट नगर के जैन मन्दिर की प्रतिष्ठा करने की प्रार्थना की। इस पर जी महाराज ने तो वहाँ जाने से इंकार किया पर उन्होंने अपने प्रभावशाली शिष्य महोपाध्याय जयजी को वैराट जाने की आज्ञा दी। कहना न होगा कि उक्त कल्याणविजयजी अपने शिष्य सहित पीपाड से विहार कर वैराट पधारे और उन्होंने इन्द्रराज के मन्दिर की प्रतिष्ठा की। महोत्सव बडे धूमधाम के साथ हुआ। हाथी, घोडा आदि का बडा भारी लवाजमा इस उत्सव था। इस समय इन्द्रराज ने गरीबों को बहुत दान दिया और लगभग ४००००) चालीस हजार महोत्सव में खर्च किया।

हरिविजयसूरि के पट्टधर आचार्य्य विजयसेन के परमभक्त खम्भात निवासी कवि ऋषभदास ने 'जयसूरी रास' नामक ग्रन्थ मे इस प्रतिष्ठा महोत्सव का उल्लेख किया है।

महोपाध्याय कल्याणविजयजी के शिष्य जयविजयजी ने संवत १६५५ मे 'कल्याणविजय रास' थ रचा था। उसमे भी उन्होंने उक्त प्रतिष्ठा महोत्सव का सविस्तार वर्णन किया है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट प्रगट होता है कि वैराट् का उक्त मन्दिर दिगम्बर नहीं वरन् , तथा किसी प्रभाव विशेष से वह दिगम्बरियों के अधिकार में चला गया है।

(सचेती) गौत्र के साहा भीकू के पुत्र साहा नान्हा ने अपने माता पिता के श्रेय के लिये श्री बिम्ब स्थापित किया और उपकेश गच्छ के ककुदाचार्य्य ने उसकी प्रतिष्ठा की।

नवराई का जैनमंदिर

यह स्थान फैजाबाद से १० मील और सोहावल स्टेशन से अन्दाज ? मील पर है। यह प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरी' कहलाता है। यहाँ पंद्रहवे तीर्थंकर श्री धर्मनाथस्वामी का दीक्षा तथा केवल ज्ञान ये चार कल्याणक हुए हैं। यहाँ की पंचतीर्थियों और पाषाण की धातु तथा पाषण की मूर्तियों पर कुछ लेख खुदे हुए हैं। इनमें पुराने लेखों की सख्या बहुत एक लेख संवत् १५१२ की माघ सुदी ५ का है, जिसमें श्री सिद्धसूरि द्वारा श्री सुविधिनाथ का प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख है। दूसरा लेख १५६७ की वेशाख सुदी १० बुधवार का है। वाल जाति के हासा नामक एक सज्जन द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान के बिम्ब के स्थापित किये उल्लेख है। तीसरा लेख सम्वत् १६१७ की जेठ सुदी ५ का है। इसमें ओसवाल जाति के गौत्र कहाना के द्वारा पद्मप्रभुनाथ का बिम्ब स्थापित किये जाने का वर्णन है और प्रतिष्ठा में तपगच्छ के श्री विजयदानसूरि का नाम दिया है।

चन्द्रावती का जैन मंदिर

यह तीर्थ बनारस से ७ कोस पर गंगा किनारे अवस्थित है। जैन लिखा है कि आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभू स्वामी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान में हुए। दुःख है कि इसमें जितने शिलालेख है वे सब नवीन हैं उन्नीसवीं सदी के शिलालेख यहाँ नहीं मिलता।

मधुवन

यह स्थान विहार में है तथा जैन शास्त्रों में स्थान स्थान पर इसका उल्लेख आया है। जैन श्वेताम्बर मन्दिर की पच तीर्थियों पर कई लेख खुदे हुए हैं। एक लेख संवत् आषाढ़ सुदी ९ का है। यह लेख खंडित होने से पूरा नहीं पढा गया। दूसरा लेख संवत् वैशाख सुदी ३ बुधवार का है। इसमें श्री पूर्ण भद्र सूरि के द्वारा श्रीपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा किये जाने का उल्लेख है। तीसरा लेख सवत् १२४२ की वैशाख सुदी ४ का है, जिसमें प्रा

कोरटा तीर्थ

कोरटा का दूसरा नाम कोरट नगर तथा कोरट है। यह कसबा जोधपुर रियासत के बाली
। राजपूताना मालवा रेलवे के एरनपुरा स्टेशन से १२ माइल पश्चिम में आबाद है। इस कसबे
ओर प्राचीन मकानों के खँडहर पड़े हुए हैं। उन्हें देखने से अनुमान किया जा सकता है कि
मय यह नगर बड़ा शहर होगा। इस नगर से आधा मील की दूरी पर भगवान महावीर स्वामी
भव्य मन्दिर है, जिसके चारों ओर एक पक्का कोट बना हुआ है और इसके भीतरी दालान में बड़ा
लघर है। यह तलघर बहुत ही प्राचीन प्रतीत होता है।

इस अति प्राचीन मन्दिर का निर्माण तथा प्रतिष्ठा श्री रत्नप्रभाचार्य्य द्वारा हुई है, जैसा कि
ल्पिका टीका के स्थविरावली अधिकार में लिखा है,

"उपकेश वंश गच्छे श्रीरत्न प्रभु सूरि येन उसियनगरे कोरटनगरे च समकाल प्रतिष्ठा कृता रूप
एन चमत्कारश्च दर्शित"

अर्थात् उपकेश वंश गच्छीय श्रीरत्न प्रभाचार्य्य हुए जिन्होंने ओसियां और कोरटक (कोरटा)
एक ही लग्न से प्रतिष्ठा की, और दो रूप करके चमत्कार दिखलाया।

धाराधिपति सुप्रख्यात महाराजा भोज की सभा के नो रत्नों में पंडित धनपाल नाम के एक
। वि० सं० १०८१ के आस पास उन्होंने 'सत्यपुरीय श्री महावीर उत्साह' नामक प्राकृत
एक ग्रन्थ बनाया था। उसकी तेरहवीं गाथा के प्रथम चरण में 'कोरिंट-सिरिमाल धार आहुड़-
आदि पद हैं जिनमें अन्य तीर्थों के साथ साथ कोरटा तीर्थ का भी उल्लेख है। इससे यह पाया
कि ग्यारहवीं शताब्दी में इस तीर्थ स्थान का अस्तित्व था। तपेगच्छ के मुनि सोमसुन्दरसूरि के
न कवि मेघ ने संवत् १४९९ में तीर्थमाला नामक एक ग्रन्थ रचा जिसमें "कोरटऊँ" नामक तीर्थ
है। कवि शील विजयजी ने संवत् १७३६ में तीर्थ माला पर एक दूसरा ग्रन्थ बनाया जिसमें
तीर्थ स्थान का विवेचन किया गया है।

इससे यह जान पड़ता है कि ग्यारहवीं शताब्दी से लगाकर अठारहवीं शताब्दी तक यहाँ अनेक
यात्री, श्रावक तथा श्राविकाएँ यात्रा के लिए आते थे और यह स्थान उस समय में भी तीर्थ स्वरूप
ना था। कहने का अर्थ यह है कि यह तीर्थ प्राचीन है और इसका निर्माण, पुनरुद्धार आदि सब
सवालों के द्वारा हुए हैं।

सुप्रख्यात् पुरातत्वविद् रायबहादुर महामहोपाध्याय पं० गौरीशङ्करजी ओझा के मतानुसार आठवीं सदी की है ।

हस्तिकुण्डी के जैन मन्दिरों के लेख

हस्तीकुण्डी मारवाड के गोडवाड प्रांत में अत्यन्त प्राचीन स्थान है । यहा के एक मैं बहुत ही प्राचीन शिलालेख है । उन्हे जोधपुर निवासी पण्डित रामकरणजी ने 'एपिग्राफिया इ दसवें भाग मे प्रकाशित किये है ।

ये शिलालेख पहले पहल केप्टन बर्क को मिले थे । इसके बाद वह राजापुर धर्मशाला में भेज दिये गये । इसके बाद वह अजमेर के म्युजियम मे लाये गये ।

प्रथम लेख में सब मिल कर ३२ पंक्तिया है । इसका कुछ भाग घिसा हुआ है और मिट गये हैं । इसकी लिपि नागरी है । प्रोफेसर किलहार्न ने प्रगट किया है कि यह लि सम्वत् १०८० के विग्रह राज वाले लेख से मिलती जुलती है । भाषा पद्यात्मक संस्कृत है । एक लेख में दो जुदे-जुदे लेख खुदे हुए है । पहला लेख ४० पद्यों में समाप्त हुआ है और वह वि० स का है और दूसरा लेख २१ पद्यों का है । वह सवत् ९९६ का है । पहले लेख मे २१ पं दूसरे में १० पंक्तिया है । पहले लेख की रचना सूर्य्याचार्य्य नामक किसी जैन साधु इसके प्रारम्भ के दो काव्यों में जिन देव की स्तुति की है । तीसरे काव्य मे राजवंश का वर्ण दुर्भाग्य से उनका नाम घिस जाने से पढ़ा नहीं जाता । चौथे काव्य मे राजा हरिवर्म्मा का मैं विदग्धराज का वर्णन है । विदग्धराज, जैसा कि शिलालेख के दूसरे भागो मे कहा गया है, का था । छठे पद्य में वासुदेव नामक आचार्य के उपदेश से हस्ती कुण्डी में विदग्धराज द्वारा बनवाये जाने का उल्लेख है । सातवें श्लोक में अपने शरीर के वजन के बराबर उक्त राजा द्वारा किये जाने का उल्लेख है । आठवें पद्य में विदग्धराज राजा की गादी पर मंमट नामक राजा के बैठ फिर उसकी गद्दी पर धवलराज के बैठने का उल्लेख है । धवलराज के यश और शौर्य्यादि गुणों दस काव्य लिखे गये है । दसवें श्लोक में लिखा है—" जब मुजराज ने मेदपाट (मेवाड) नामक स्थान पर चढाई की और उसका नाश किया और जब उसने गुर्जर नरेशको भगा दिया तब ने उनकी सैन्य को आश्रय दिया था। ये मुंजराज प्रोफेसर किलहॉर्न के मतानुसार मालव के प्रसि मुंजराज थे। क्योंकि वे वि० संवत १०३१ से १०५० तक विद्यमान थे । यद्यपि उक्त लेख में मेवाड़ नरेश का नाम नहीं दिया गया है पर उस समय मेवाड़ में खुमाण नामक प्रसिद्ध राजा राज्य

वेदी में संवत् १६४५ की वैशाख शुक्ला ३ गुरुवार का प्रतिष्ठित एक विशाल चरणयुग भी विराज
। मूल गभारे के दक्षिण की दीवाल के एक आले में संवत १७७२ की माह सुदी १३ सोमवार की
श्री पुण्डरीक गणधर की चरण पादुका है तथा मूल वेदी के बाईं तरफ की वेदी पर श्री वीर भगवान
गणधरों की चरण पादुका खुदी हुई है। यह चरण पादुका मंदिर के साथ संवत् १६९२ से प्रतिष्ठित
इसी वेदीपर संवत् १९१० की श्री महेन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठित श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण की पहिले
की सुन्दर मूर्ति रक्खी हुई है। मूल मंदिर के बीच में वेदीपर एक अति भव्य चरण पादुका
न है जिस पर १६९८ का लेख है।

मंदिर के चारों कोनों में चार शिखर के अधो भाग की चारों कोठरियों में कई चरण और मूर्त्तियाँ
न पर के जिन लेखों के सम्वत् पढ़े जाते है, उन सबों की प्रतिष्ठा का समय विक्रम की सत्रहवीं
से वर्त्तमान शताब्दी तक पाया जाता है। इन मूर्त्तियों के अतिरिक्त उक्त मंदिर में दिक्पाल, (भैरव)
वी आदि भी विराजमान है। प्राचीन मंदिर का सभा मण्डप संकुचित था। उसे अजीमगंज के
ओसवाल जमींदार बाबू निर्मल कुमारसिंहजी नौलखा ने विशाल बनवा दिया है।

...न्दर

यह बड़ा ही भव्य मंदिर है। कई विद्वान यात्रियों ने अपने प्रवास वर्णन में इसके आस-पास
मनोहर दृश्यों का बड़ा सुन्दर विवेचन किया है। वर्षाऋतु के प्रारंभ में जब जल से लबालब भरे
सरोवर में कमलों का विकास होता है उस समय वहां का दृश्य एक अनुपम शोभा को धारण करता
...दि कोई भावुक अपनी शुद्ध भावना और आत्म चिंतवन के लिये इस जलमंदिर में जाकर अनन्त के
...थ हो जाय, तो वह इस दुखमय संसार की अशांति को भूल जाता है। यह मंदिर एक
...रोवर के बीच में बना हुआ है। उस सरोवर में सुन्दर कमल खिले हुए है और मत्स्यगण बड़ी
...से उसमें विचरण करते है।

इस मंदिर में यद्यपि कोई शिखर नहीं है पर उसका गुम्मज बहुत दूर २ तक दिखाई पड़ता है।
भीतर कलकत्ता निवासी सेठ जीवनदासजी ओसवाल की बनाई हुई मकराने की सुन्दर तीन वेदियाँ
...च की वेदी में श्री वीरप्रभु की प्राचीन छोटी चरण पादुका विराजमान है। इस चरण पट्ट पर
... दिखलाई नहीं पड़ता। ये चरण भी अति प्राचीन होने की वजह से घिस गये है। इस वेदी पर
...रस्वामी की एक धातु की मूर्त्ति रक्खी हुई है, जिसकी संवत १२६० में आचार्य श्री अभयदेव-

इसके बाद एक पंक्ति गद्य में लिखी हुई है कि जिसमें उक्त मन्दिर की प्रतिष्ठा का समय माघ सुदी १३ पुष्य नक्षत्र का बताया गया है। इसी दिन इस मन्दिर के शिखर के ऊ... भी किया गया था।

इसके बाद दूसरा लेख शुरू होता है। इस लेख में कुल २१ पद्य हैं। यह लेख कुछ ऊपर के लेख से मिलता जुलता है। इस लेख के पहले श्लोक में जैन धर्म की प्रशंसा, दूसरे श्लोक में हरिवर्म राजा का, तीसरे में विदग्ध राजा का और चौथे में मम्मट राजा का वर्णन है। यह भी लिखा गया है कि बलभद्र आचार्य्य के उपदेश से विदग्ध राज ने हस्तीकुण्डी में एक मन्दिर बनवाया और उक्त मन्दिर के खर्च के लिये आवक जावक माल पर कुछ कर लगाने का उल्लेख है। राजा का यह आदेश संवत् ९७३ के आषाढ मास का है। इसके बाद संवत् ९... बदी ११ को मम्मट राज ने फिर उसका समर्थन किया था। इस लेख के आखिरी में यह प्रार्थना है कि जब तक पृथ्वी पर पर्वत, सूर्य्य, भारतवर्ष, गंगा, सरस्वती, नक्षत्र, पाताल और स... रहें तब तक यह शासन पत्र केशवसूरि की संतति में चलता रहे।

बामनवाडजी का जैन मन्दिर

सिरोही राज्य में पिंडवाडे के स्टेशन से करीब चार माइल उत्तर पश्चिम में बा... प्रसिद्ध और विशाल महावीर स्वामी का जैन मन्दिर है जहाँ पर दूर २ के लोग यात्रा के लिये... यह मन्दिर कब बना, इसका पता नहीं लगता। परन्तु इसके चौतरफ के छोटे २ मन्दिरों में संवत् १५१९ का लेख है। इस से यह मालूम होता है कि मुख्य मन्दिर उक्त संवत् से पूर्व का है। इस मन्दिर के पास एक शिवालय भी है, जिसमें परमार राजा धारावर्ष के समय का वि० सं... लेख है। यहाँ पर फाल्गुन सुदी ७ से १४ तक मेला होता है।

पिंडवाडा का जैन मन्दिर

पिंडवाडा यह एक पुराना कसबा है। यहा पर एक प्राचीन महावीर स्वामी का मन्दिर है। इसकी दीवाल में वि० सं० १४६५ का एक शिलालेख लगा हुआ है। उक्त लेख में इसका नाम पिंडरवाटक लिखा है।

वसतगढ का जैन मन्दिर

सिरोही राज्य में अजारी से करीब तीन माइल दक्षिण में वसतगढ है। इसको ...

इन लोगों के ठहरने के लिये बाबू पूर्णचन्द्रजी नाहर की स्वर्गीया पत्नी श्रीमती कुन्दन कुमारी की स्मृति में दीनशाला बनवाई गई है, जिसका उद्‌घाटन कुछ वर्ष पूर्व आगरा के सुप्रसिद्ध देशभक्त श्रीयुत चांदमलजी नाहर के करकमलों द्वारा हुआ। आज कल इसी दीनशाला में पटना डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की तरफ से एक आयुर्वेद औषधालय भी खोला गया है जहाँ से रोगियों को बिना मूल्य औषधि दी जाती है। पावापुरी में भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा को बड़े धूम धाम से रथोत्सव मनाया जाता है।

चम्पापुरी

पाठक जानते हैं कि चम्पापुरी जैनियों का महा पवित्र और प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। जैन शास्त्रों के अनुसार यहाँ पर इनके बारहवें तीर्थङ्कर श्री वासुपूज्य स्वामी के पंच कल्याणक हुए हैं। इसके अतिरिक्त और भी कई दृष्टि से यह स्थान महत्व पूर्ण है। राजगृह के सुप्रसिद्ध श्रेणिक राजा का बेटा कोणिक, जिसे अजातशत्रु व अशोकचन्द्र भी कहते हैं, राजगृह से अपनी राजधानी उठाकर यहाँ लाया था। जैन शास्त्र कथित सुभद्रासती भी इसी नगर की रहनेवाली थी। भगवान महावीर ने यहाँ तीन चौमासे किये थे। उनके मुख्य श्रावकों में से कामदेव नामक श्रावक यहीं का निवासी था। जैनागम का दश वैकालिक सूत्र भी श्री शय्यंभवसूरि महाराज ने इसी नगर में रचा था। जैनियों के बारहवें तीर्थङ्कर श्री वासु पुज्य स्वामी का च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल-विज्ञान और मोक्ष आदि पांच कल्याणक इसी नगर में हुए। इस कारण यह स्थान बड़ा पवित्र समझा जाता है।

इस महा पवित्र तीर्थ स्थान में भी धार्मिक ओसवालों ने कई मन्दिर तथा बिम्ब बनवाये तथा चरणपादुकाओं की स्थापना की। इस सम्बन्ध के पत्थरों पर खुदे हुए कई लेख वहाँ पर मौजूद हैं। संवत् १६६८ में मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध जगत सेठ के पूर्वज साह हीरानंदजी ने १५ वे तीर्थङ्कर श्री धर्मनाथ स्वामी का बिम्ब स्थापित किया जिसकी प्रतिष्ठा श्री जिनचन्द्रसूरि ने की। संवत् १८२४ के वैसाख सुद ११ को तपागच्छ के आचार्य श्री वीर विजयसूरि ने श्री वासु पुज्य स्वामी के बिम्ब की प्रतिष्ठा की। संवत् ... की वैसाख मास की शुक्लपक्ष की तृतीया को तीर्थाधिराज चम्पापुरी में श्री वासुपूज्य स्वामी का जिन बिम्ब श्वेताम्बर संघ की ओर से गणचन्द्र कुशलकार ने स्थापित किया जिसकी प्रतिष्ठा श्री सर्व सूरि ने की। संवत् १८५६ के वैसाख मास के शुक्लपक्ष की तीज को श्री अजितनाथ स्वामी के बिम्ब की प्रतिष्ठा की गई। इसके प्रतिष्ठाचार्य श्री जियचन्द्र सूरि थे। इसी दिन बीकानेर निवासी कोठारी अनूपचन्द के परिवार ने श्री चन्द्रप्रभू के जिन बिम्ब की खरतर गच्छाचार्य श्री जिनचन्द्र सूरि के द्वारा प्रतिष्ठा करवाई।

गई उष्ण कुण्ड हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ विपुलगिरी, रत्नागिरी, उदयगिरी, स्वर्णगिरी और
गेरी नामक कई पर्वतमालाएं हैं। इन पर्वतों पर बहुत से जैन मन्दिर बने हुए हैं। बहुत सी मूर्त्तियां
। इधर उधर विराजमान हैं।

यहाँ के पत्थर पर खुदे हुए विभिन्न लेखों के पढ़ने से ज्ञात होता है कि इस तीर्थ स्थान पर
ल सज्जनों के बनाये हुए कई मन्दिर, प्रतिष्ठा करवाई हुई कई मूर्त्तियाँ, बिम्ब तथा चरण पादुका
इन लेखों में बच्छराजजी, पहराजजी धर्मसिंहजी, बुलाकीदासजी, फतेचन्दजी, जगत सेठ के मह-
ाजी आदि ओसवाल महानुभावों के नाम मिलते हैं।

..लपुर

इस नगर का आधुनिक नाम बड़गाव है। जैन शास्त्रों में इस नगर का कई जगह उल्लेख आया
गवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी का यह जन्मस्थान है। नालंद का
। बौद्ध विश्वविद्यालय इसी के निकट था। इसके चारों तरफ प्राचीन कीर्तियों के चिह्न
हैं। सरकार के पुरातत्व विभाग की ओर से भी इसकी खुदाई हो रही है। आशा है यहां
महत्व के निशान मिलेंगे। यहा का सब से पुराना शिला लेख संवत् १४७७ का है। संवत
हे वैसाख सुदी १५ का एक दूसरा पाषाण पर खुदा हुआ लेख है जिससे मालुम होता है कि
तेत्र के ठाकुर विमलदास के पौत्र ठाकुर गोवर्धनदास ने यहाँ गौतम स्वामी के चरणों को प्रतिष्ठित
। इस प्रकार के यहाँ पर और भी लेख हैं।

(पाटलिपुत्र)

हम ऊपर लिख चुके हैं कि राजगृह के राजा श्रेणिक ने चम्पानगरी को अपनी राजधानी बनाया
णिक के पुत्र राजा उदई ने पाटलिपुत्र नामक नवीन नगर बसा कर उसे अपनी राजधानी बनाई।
श्चात् यहा पर नवनन्द, सम्राट चन्द्रगुप्त, सम्राट अशोक आदि बड़े २ साम्राज्याधिकारी नृपति
ा चाणक्य, ऊमास्वामी, भद्रबाहु, महागिरी, सहस्थि, वज्र स्वामी सरीखे महान पुरुषों ने भी
र की शोभा को बढ़ाया था। आचार्य्य श्री स्थूलभद्र स्वामी और सेठ सुदर्शनजी का भी यहां स्थान
ा जैन मन्दिर बहुत जीर्ण हो गया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह मन्दिर ओसवालों
ा हुआ है।

यहां धातुओं की मूर्तियों पर कई लेख खुदे हुए हैं। इनमें पहला लेख संवत् १४८६ की वैसाख

इस मन्दिर में कुछ शिलालेख भी हैं जिनमें से पहला शिलालेख वि० स० १३३१, दू
और तीसरा १७५४ का है।*

श्री कापरडा पार्श्वनाथ का मन्दिर—जोधपुर राज्य में कापरडा पार्श्वनाथ का मन्दि
दर्शनीय वस्तु है। यह बडा ही सुन्दर और भव्य मन्दिर है। शिल्पकला का बढ़िया नमूना
जेतारण के ओसवाल जाति के भण्डारी अमराजी के पुत्र भानाजी ने बनवाया था। उक्त मन्दि
१६७८ के वैशाख सुदी पूर्णिमा का एक लेख है जिससे मालम होता है कि भण्डारी अमराजी के
पौत्र ताराचन्दजी ने पार्श्वनाथ के उक्त चैत्य की जैनाचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी से प्रतिष्ठा करवा

कुलपाक तीर्थ—यह तीर्थस्थान दक्षिण हैदराबाद से ४५ मील की दूरी पर बसा हुआ है
बहुत बडा भव्य मन्दिर तथा माणिक्य स्वामी की प्रतिमा विराजमान है। यह मन्दिर तथा
ही प्राचीन बतलाई जाती है। यह स्थान बडा भव्य तथा रमणीय बना हुआ है। यहाँ पर कई शि
प्राप्त हुए हैं जो आज भी एक कमरे में सुरक्षित रक्खे हुए हैं। कई शिलालेखों के बीच में कहीं
नष्ट हो गये हैं जिनके कारण बहुत सा अर्थ समझ में नहीं आता। यहाँ पर एक शिलालेख
के भादो वदी ४ का भी मिला है जो मारवाडी लिपि में लिखा हुआ है। ऐसा मालूम होता है
यात्री ने उसे खुदवा कर लगा दिया होगा। कुछ भी हो इस शिलालेख से तो यह अवश्य हो
है कि यह मंदिर सं० १३३३ के पहिले का बना हुआ है। इसके पश्चात् के तो कई शि
मन्दिर तथा प्रतिमा का उल्लेख आया है। यहाँ की प्रतिमा बडी प्रतिभावान, भव्य त
प्रतीत होती है।

श्री मान्दक पार्श्वनाथ तीर्थ—यह तीर्थस्थान वर्धा से ६० मील की दूरी पर जी०
रेल्वे के भान्दक नामक स्टेशन के पास है। लगभग बीस वर्ष पूर्व चतुर्भुज भाई, हीरालाल
सिद्धकरणजी गोलेछा ने पार्श्वनाथ की विशाल सात फूट की पद्मासनमय मूर्ति खोज निकाल
पूर्वक हजारों रुपये एकत्रित कर एक बडा विशाल मंदिर बनवाया, तथा इसकी प्रतिष्ठा पंन्या
जी और जयमुनिजी के द्वारा हुई। उपरोक्त सज्जनों के बाद सेठ छोटमलजी कोठारी ने इस
को खूब बढ़ाया। इस स्थान पर एक भद्रावती जैन गुरुकुल भी स्थापित है जिसकी देख रेख
निरीक्षण आजकल नथमलजी कोठारी करते हैं। इस तीर्थ में एक देरासर नागपुर के प्रसिद्ध जौहरी
एवं महेन्द्रकुमारसिंहजी चोरडिया ने बनवाया है।

सुजानगढ़ का जैन मन्दिर—सुजानगढ़ का यह प्रसिद्ध जैन मन्दिर यहाँ के सुप्रसि
परिवार द्वारा बनाया गया है। यह मन्दिर बड़ा ही भव्य, रमणीय तथा दर्शनीय है। यहाँ
व कारीगरी को देखकर दर्शक मुग्ध हो जाते हैं। इस मदिर के बनवाने में लाखों रुपये व्यय हु

में उदयपुर के सुप्रख्यात बापना वंशीय सेठ बहादुरमलजी एवं सेठ जोरावरमलजी ने मन्दिर के प्रथम द्वार
बनवाकर वर्तमान ध्वजा दण्ड चढ़ाया।

* इस लेख के पूर्वांश के लिखने में रा० ब० महामहोपाध्याय प० गौरीशंकरजी ओझा
का इतिहास नामक ग्रन्थ से बहुतसी सहायता मिली है।

कलकत्ते का जैन मन्दिर

यह जैन मदिर नगर के उत्तर में मानिकतल्ला स्ट्रीट मे है। यहाँ पर सर्क्युलर रोड से आसानी जा सकता है। वास्तव मे यहाँ तीन मन्दिर हैं, जिनमे मुख्य मन्दिर जैनियो के दशवे तीर्थंकर जी का है। ये मन्दिर राय बद्रीदास बहादुर जौहरी द्वारा सन् १८६७ ई० मे बनवाये

टेम्पल स्ट्रीट के द्वार मे घुसते ही बडा सुन्दर दृश्य सामने आता है। स्वर्ग सदृश भूमि पर न्दिर बडा ही भव्य मालूम पडता है। भारत की जैन शिल्पकला का यह ज्वलंत उदाहरण है। सामने संगमरमर की सीढ़ियाँ बनी हैं और इसके तीन ओर चित्ताकर्षक बरामदे बने हुए हैं। रंग बिरंगे छोटे २ पत्थर के टुकडे जडे हुए है और दालान तथा छत इस खूबी मे बनाये गये हैं र से आँख हटाने को जी नहीं चाहता। शीशे और पत्थर का काम भी उतना ही नयनाभिराम के मध्य में एक बडा भारी फानूस टँगा है। मदिर के चारों तरफ सुन्दर बगीचा बना हुआ है। या से बढ़िया फव्वारे, चबूतरे आदि बने है। बगीचे के उत्तर में शीशमहल है, जिसमे दीवाल, छत, र्सियाँ इत्यादि सभी वस्तुएँ शीशे ही की है। इसके भीतर का भोजनागार सबसे अधिक देखने ये मन्दिर और बगीचा अवश्य ही किसी चतुर शिल्पी के कार्य है।

ा के जैन मन्दिर

भारत मे ऐसा कौन इतिहासज्ञ होगा कि जिसने अजण्टा की ऐतिहासिक गुफा का नाम न सुना य मन्दिर मे अत्यन्त प्राचीन बौद्ध मदिर तथा तत्सम्बन्धी अनेक ऐतिहासिक चित्र है। सैकड़ों वर्ष र आज भी उनकी सुन्दरता और रंग बराबर ज्यों के त्यों बने हुए है। इस गुफा में जैन मन्दिर अभी भग्नावस्था मे है। उनमे से एक का फोटो ईसवी सन १८६६ मे प्रकाशित ' Architec ure ıadabad ' नामक ग्रन्थ मे प्रकाशित हुआ है। यद्यपि इस मदिर का शिखर नष्ट हो गया है पर ता है कि वह बहुत बड़ा और मिश्र देश के सुप्रख्यात पिरामिड के आकार का था। इस मन्दिर अति विशाल था। इसके खम्भो पर बडी ही सुन्दर कारीगरी का काम हो रहा है। यह मन्दि ी का प्रतीत होता है।

इधर १।२ वर्ष पूर्व से हाईस्कूल हो गया है। वर्तमान में यह हाईस्कूल बहुत संगठित रू कर रहा है एवं इन्दौर की एज्यूकेशन संस्थाओं में अपना खास स्थान रखता है।

श्री महावीर हॉईस्कूल देहली—इसका सचालन देहली के जैन समाज द्वारा होता है। भी बहुत उन्नति के साथ अपना कार्य्य कर रही है।

श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरानवाला—इस गुरुकुल की स्थापना जैनाचार्य श्री वल्लभ सूरिजी ने अपने गुरू आत्मारामजी महाराज के स्मारक में माघ सुदी ५ संवत् गुजरानवाला में की। इस गुरुकुल में इस समय विभिन्न प्रांतों के ३७ छात्र पढ़ते हैं। (विनीत परीक्षा) तक पढाई होती है। संस्था का सालियाना व्यय १५ हजार का है। के गणमान्य एवं शिक्षित ७ ट्रस्टियों के जिम्मे संस्था की व्यवस्था का भार है। इस समय पास २। लाख रुपयों का स्थाई फंड है तथा २१ हजार की जमीन है। यहाँ से साहित्य मंदिर पास करनेवाले विद्यार्थी को "विद्या भूषण" की पदवी दी जाती है। संस्था के सभापति सेठ मा

श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पचकूला—गिरिराज हिमालय के अचल में शिमला के रम्य मार्ग के समीप अत्यंत शांतिमय, प्राकृतिक एवं मनोहारी स्थान में यह गुरुकुल स्थापित है। इसके ५ जल श्रोत्र अहर्निशि प्रवाहित होते रहने के कारण संस्था का नाम "पंचकूला", उद्घोषित कि स्थापन कर्ता स्वामी धनीरामजी एवं उनके शिष्य पंडित कृष्णचन्द्रजी हैं। स्वामी धनीरामजी विचारों के जैन साधु हैं, एवं गुरुकुल की उन्नति में अपना सारा समय प्रदान कर रहे हैं। हजार रुपया सालियाना का व्यय है जो आसपास के जैन समाज की सहायता से चलता है। संस्था के पास ६० हजार की बिल्डिंग एवं १५ हजार स्थाई कोष में हैं। यहाँ ७६ छात्र अव और छठी तक पढ़ाई होती है। इसके वर्तमान प्रेसिडेन्ट लाला रूपलालजी जैन फरीदकोट निवा

श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा (मारवाड)—गोडवाड तथा जालोर प्रान्त के जैन समाज को जागृत करने के उद्देश से आचार्य्य श्री विजयवल्लभसूरिजी एवं उनके शि ललित विजयजी महाराज ने मिलकर श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय की स्थापना वरकाणा में की। संवत् १९८३ की माघ सुदी ५ से पन्यासजी महाराज ने कुछ विद्यार्थियों को स्वयं प्रारंभ किया। विद्यालय की स्थापना करवाने में श्रावक सिंघी जसराजजी घाणेराव वालों ने की जनता से सम्पत्ति एकत्रित करने में बहुत परिश्रम उठाया। स्कूली एव धर्मिक शिक्षा के साथ शारीरिक एवं मानसिक विकास को दृढ़ बनाने का भी यहाँ समुचित प्रयत्न किया जाता है। गोडवाड़ प्रांत के छात्र यहाँ निवास करते हैं। गोडवाड की धार्मिक जनता ने विद्यालय को लाखों यतार्थ दिये हैं। कुछ गण्य मान्य व्यक्तियों की कमेटी के जिम्मे संस्था की व्यवस्था का भार है।

श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन बालाश्रम उम्मेदपुर—गोडवाड प्रान्त की जैन जनता के लिये विद्यालय के पश्चात् माघसुदी १३ सवत् १९८७ के दिन पन्यासजी महाराज ने उम्मेदपुर में बालाश्रम पना की। इस बालाश्रम में इस समय १४० छात्र निवास करते है। VII तक पढ़ाई होती है।

अर्द्ध पद्मासन मूर्ति
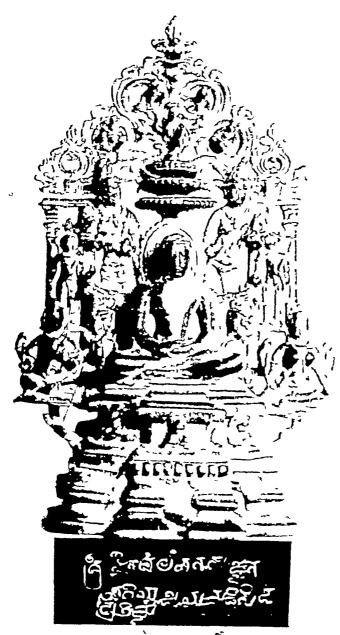
(श्री बा० पूरणचन्द्रजी नाहर के सौजन्य से)

सुचारु रूप से संचालित की जा रही हैं। इस संस्था की स्थाई सम्पत्ति में "आमानन्द"— जिसकी किराये की आय से संस्था का व्यय चलता है। अम्बाला के शिक्षित सज्जनों के जिम्मे इस संस्था का सारा प्रबन्ध भार है।

श्री नाथूलाल गोधावत जैन आश्रम सादड़ी—इस संस्था को स्व० सेठ नाथूलाल सवालाख रुपये के आदर्श दान द्वारा छोटी सादड़ी में स्थापित किया। वर्तमान में मा० छगनलालजी गोधावत उक्त संस्था को सुचारु रूप से संचालित कर रहे हैं।

श्री जैन गुरुकुल ब्यावर—यह संस्था ओसवाल जाति के कई विद्या प्रेमी सज्जनों ने १९८५ में ब्यावर में स्थापित की गई है। इसके अन्तर्गत प्राचीन एवं अर्वाचीन पद्धतियों करके विद्यार्थियों (ब्रह्मचारियों) को धार्मिक, व्यवहारिक, मानसिक व शारीरिक शिक्षा से दी जाती है। यह गुरुकुल, ब्यावर से करीब डेढ़ मील की दूरी पर बड़े ही अच्छे स्थान है। यह पहले बगड़ी में जैन बोर्डिंग के नाम से प्रख्यात था। इस संस्था का प्रबन्ध वेद आदि ५ ट्रस्टियों द्वारा होता है। इसकी वार्षिक आय करीब तेरह हजार की है और के लगभग होता है। यहाँ से "कुसुम" नामक मासिक समाचार पत्र भी निकलता है। प्रबन्धक श्री धीरजमलजी तुरकिया योग्य व्यवस्थापक सज्जन हैं। इस संस्था को १० हजार रुपये प्रतिवर्ष स्थायी सहायता देते हैं।

श्री अमर जैन होस्टल लाहौर—इस संस्था का स्थापन श्वेताम्बर स्थानकवासी ने सन् १९१६ में किया। पंजाब के कॉलेज शिक्षा प्राप्त करनेवाले जैन छात्रों के लिए शुद्ध का प्रबन्ध करने के उद्देश्य से यह संस्था खोली गई। संस्था की भव्य बिल्डिंगें लागत की हैं। पंजाब के गण्यमान्य शिक्षित सज्जनों की एक कमेटी के जिम्मे इस संस्था की व्यवस्था

श्री खानदेश ओसवाल शिक्षण संस्था, भुसावल (एज्युकेशन सोसायटी)—इस संस्था ओसवाल जाति के उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले युवकों को आर्थिक सहायता देना है। इस खानदेश के नामी श्रीमंत सेठ राजमलजी ललवाणी ने २० हजार रुपये देकर किया था, एवं सभापति हैं। इस सोसायटी के सेक्रेटरी श्रीयुत पूनमचन्दजी नाहटा का संस्था की बड़ा सहयोग रहा है। संस्था के पास लगभग ५२ हजार का फंड है, तथा अभी तक विद्यार्थियों को यह संस्था वितरित कर चुकी है।

श्री सेठिया परमार्थिक संस्थाएँ बीकानेर—इन संस्थाओं को स्थापन बीकानेर के प्रसिद्ध भैरोंदानजी ने किया, एवं आपके परिवार के सज्जनों ने कलकत्ते के ११ मकानात, दुकानें एवं संस्था के स्थाई प्रबन्ध के लिये दिया, जिनके किराये तथा व्याज की आय लगभग २११ संस्था को होती है। इतना ही नहीं स्वयं सेठ भैरोंदानजी एवं उनके सुपुत्र कुँवर जेठमल संस्थाओं का संचालन करते हैं। इस संस्था के आधीन जैनस्कूल, श्राविक पाठशाला, जैन विद्यालय, जैन बोर्डिङ्ग हाउस, शास्त्र भण्डार, जैन विद्यालय, श्राविकाश्रम एवं प्रिंटिंग प्रेस संचालित की जा रही है।

ी ज्येष्ठ वदी ७ सोमवार की मिती दी गई है। शायद यह मिती मंदिर के नींव डलवाने के हो। छ से १० वें श्लोक तक गुजरात के राज्यकर्त्ता चौलुक्य (चालुक्य) वंश के आखिरी ी वंशावली दी गई है जो इतिहास में बघेल वंश के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद अर्णोराज ; वंशजों का उल्लेख है।"

खम्भात नगर में इस प्रकार के और भी जैन मंदिर हैं और उनमें शिलालेख भी हैं। लेकिन ोष ऐतिहासिक महत्व न होने से यहां पर उन्हें हम देना ठीक नहीं समझते।

कुंड

लच्छवाड ग्राम से १ कोस दक्षिण पर एक छोटे से ग्राम में यह स्थान है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय चौवीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का च्यवन, जन्म तथा दीक्षा ये तीन कल्याणक इसी मानते हैं। वहाँ के लोग इसे "जन्मस्थान" कह कर पुकारते हैं। पहाड की तलहटी में २ छोटे उनमें श्री चंद्रप्रभ की श्यामवर्ण की पाषाण की मूर्तियाँ हैं। पहाड पर के मंदिर में भी श्याम मूर्तियाँ हैं। मंदिर के पास ही एक प्राचीन कुंड का चिन्ह वर्तमान है। इसकी पंचतीर्थी पर संवत् १५५३ की महा सुदी ५ का खुदा हुआ है जिसमें पारलेचा गौत्र के किसी ओसवाल सज्जन ाथ का बिम्ब स्थापित किये जाने का उल्लेख है।

ा के जैनमंदिर

यह अत्यंत प्राचीन नगरी है। जैन शास्त्रों में इसके महत्व का जहाँ तहाँ वर्णन किया गया है। प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी के च्यवन, जन्म और दीक्षा ये तीन कल्याणक यहाँ हुए। दूसरे ी अजितनाथजी, चतुर्थ तीर्थंकर श्री अभिनंदनजी, पाँचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथजी तथा चौदहवें । अनन्तनाथजी के च्यवन जन्म दीक्षा और केवल-ज्ञान ये चार कल्याणक इसी नगरी में हुए थे। र स्वामी के नवें गणधर श्री अचल भ्राता इसी अयोध्या नगरी के रहने वाले थे। रघुकुल रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मणजी इसी नगरी के राजा थे।

इस नगरी में श्री अजितनाथजी के मंदिर की पाषाण मूर्तियों पर कई लेख खुदे हुए हैं। उनमें । नवीन हैं, और कुछ पन्द्रहवीं सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी के हैं। पंचतीर्थियों पर खुदा हुआ १४९५ की मार्ग वदी ४ गुरुवार का है। इससे यह ज्ञात होता है कि ओसवालजाति के सुचिन्ती

श्री आत्मानन्द जैन सभा, आगरा
स्थानकवासी ज्ञान वर्द्धक सभा, सादड़ी
जैन श्वे० तेरापन्थी पुस्तकालय, चुरू
ओसवाल विद्यालय, सुजानगढ़
अमर जैन यूनियन, सियाल कोट
महावीर जैन लायब्रेरी, सियालकोट
जैन कन्या पाठशाला, सियालकोट
जैन श्वे० तीर्थ कमेटी, अम्बाला
आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी, सादड़ी
दयाचन्द धर्मचन्दजी की पेढ़ी, सादड़ी
शांति वर्द्धमान पेढ़ी, सोजत
कुन्दन कन्या पाठशाला, ब्यावर
गणपति औषधालय, ब्यावर
जैन सेवा समिति औषधालय, ब्यावर
जैन कन्या पाठशाला, अलवर
आत्मानन्द जैन लायब्रेरी, जण्डियाला (पंजाब)
पाँजरापोल, होशियारपुर
प्राचीन जैन ग्रंथ भण्डार, होशियारपुर
आत्मवल्लभ जैन सेन्ट्रल लायब्रेरी, सादड़ी
आत्मानंद जैन मिडिल स्कूल जंडियाला, (पंजाब)
गुलाबकुँवर जैन कन्या पाठशाला, अजमेर
श्रमणोपासक जैन पाठशाला, अजमेर
ओसवाल नवयुवक मण्डल, धामक
महावीर मण्डल, अहमदनगर
वर्द्धमान जैन पाठशाला, शिवनी-छपारा
जैन कन्या पाठशाला, फरीदकोट (पंजाब)
श्वे० जैन पाठशाला, जयपुर
श्वे० जैन पाठशाला, भोपाल
जैन स्कूल, घाणेराव
जैन श्वेताम्बर वर्द्धमान पाठशाला, नागौर
महावीर जैन वाचनालय, सोजत
जैन महावीर मण्डल, हिंगनघाट
जैन कन्याशाला, सादड़ी
स्था० जैन कन्याशाला, सादड़ी
ओसवाल स्कूल, बीकानेर
ओसवाल हितकारिणी सभा, सरदारशहर
ओसवाल हितकारिणी सभा, सुजानगढ़
महावीर जैन युवक मण्डल, वाली।
स्था० जैन लायब्रेरी, अजमेर
महाराष्ट्र जैन युवक संघ, नाशिक
शांति जैन पुस्तकालय, जबलपुर
जैन ओसवाल वाचनालय, भोपाल
जैन प्रचारक सभा, जुगरावां (पंजाब)
श्री सोहनलाल जैन कन्या पाठशाला, अमृतसर
श्री आत्माराम जैन लायब्रेरी, अमृतसर
उदयचंद जैन लायब्रेरी, कसूर (पंजाब)
आत्मानन्द जैन लायब्रेरी, जीरा (पंजाब)
आत्माराम जैन पाठशाला, होशियारपुर
हित हेम लायब्रेरी, घाणेराव
श्री महावीर वाचनालय, इन्दौर
ओसवाल हितकारिणी सभा, लाडनू

ख है। चौथा लेख संवत् १४९६ की जेठ सुदी १० बुधवार का है जिसमें श्रीमाल जाति के सेठ तथा उनकी भार्या मटकू के पुत्र द्वारा अपने कुल के श्रेय के लिए श्री कुंथुनाथ का बिम्ब प्रतिष्ठित ने का उल्लेख है। पाँचवा लेख संवत् १५५३ की वैशाख सुदी ११ शुक्रवार का है इसमें ओस- ोय सा पनरवद और उनकी भार्य्या मानू के पुत्र सा वदा के पुत्र कुँवरपाल, सोनपाल के द्वारा श्री । बिम्ब प्रस्थापित किये जाने का उल्लेख है। प्रतिष्ठाचार्य्य खरतर गच्छ नायक श्री जिनसमुद्र — छठा लेख संवत् १५७० की माघ वदी १३ बुधवार का है। इसमें लिखा है कि ओसवाल वंशीय ोत्र के सा केशव के पौत्र पृथ्वी मल ने महाराज करमसी धरमसी के सहयोग से श्री अजितनाथ के बिम्ब को बनवाकर माता पिता के पुण्य के अर्थ प्रतिष्ठित करवाया। इसके प्रतिष्ठा चार्य्य श्री गच्छ के भट्टारक श्री नंदवर्द्धन सूरि थे। यहाँ की चौवीसी पर भी कुछ लेख खुदे है, जिनमें ख संवत् १२२७ तथा दूसरा लेख संवत् १५०७ का है।

ादिनाथ की धातु प्रतिमा

यह प्राचीन मूर्त्ति भारत के वायव्य प्रांत से बाबू पूरणचन्द्रजी नाहर को प्राप्त हुई है। यह मूर्ति गा कर बैठी हुई है और इसके आस पास की मूर्त्तियां कायोत्सर्ग के रूप में खड़ी है। सिंहासन नवग्रहों के चित्र और वृषभ युगल है। इससे यह मूर्त्ति बड़ी सुन्दर और मनोज्ञ हो गई है। अभी पथ से अधिक प्राचीन जैन मूर्त्तियां मिली है उनमें से यह एक है। इस मूर्त्ति के पीछे जो लेख है वह इस प्रकार है।

'पज्जक सुत श्रग्वदेवेन ॥ सं० १०७७॥'

इससे यह मालूम होता है कि यह मूर्त्ति संवत १०७७ के साल की है।

सदी की जैन मूर्त्ति

उदयपुर के पास के एक गांव से बाबू पूरणचन्द को एक जैन मूर्त्ति मिली थी। वह मूर्त्ति अभी पास है। इस मूर्त्ति के ऊपर कर्नाटकी लिपि में एक लेख खुदा हुआ है। वह इस प्रकार है।

'श्री जिनवलभन सज्जन नजीय वय नदिनिद प्रतिन,

श्री जिन वल्लभन सज्जन चेटिय नय नडिनिद प्रति नो'

इस मूर्त्ति के नीचे नवग्रहों के चित्र है और सिर पर तीन छत्र और शासन देव तथा देवी है।

उक्त लेख में मेवाड के जिस अघाट स्थल का नाम आया है उसका वर्तमान नाम आहड़ नगर है
पुर की नई स्टेशन से बहुत थोडी दूरी पर है। ग्यारहवे काव्य मे धवलराज द्वारा महेन्द्र नामक
दुर्लभ राज के पराजय से बचाये जाने का उल्लेख है। प्रोफेसर किलहार्न इस दुर्लभराज को चौहान
ग्रह राज का भाई बतलाते हैं। बिजोलिया और किनसरी के लेखो मे भी आपका वर्णन आया है।
महेन्द्रराज उक्त प्रोफेसर किलहोर्न के मतानुसार नाडोल के चौहानों के लेख मे वर्णित लक्ष्मण का
विग्रहपाल का पुत्र था। बारहवे काव्य मे कहा गया है कि जब मूलराज ने धरणीवराह पर
र उसके राज्य का नाश किया था तब अनाश्रित धरणीवराह को धवल ने आश्रय देकर उसकी रक्षा
उक्त लेख में वर्णित मूल राज नि सन्देह रूप से चौलुक्य वंश का मूलराज ही है। पर यह
ह कौन था, इस बात का निश्चित रूप से अभी तक कोई पता नहीं लगा है। शायद यह
श का या दंतकथानुसार नौकोटि—मारवाड का राजा होगा। तेरह से अट्ठारह तक के
धवल के गुणों की प्रशंसा की गई है। उन्नीसवे श्लोक मे वृद्धावस्था के कारण धवल राज
के पुत्र बालप्रसाद को राज्य भार सौंपने का उल्लेख है। बीसवे और इक्कीसवे श्लोक भी प्रशंसा
लिखे गये है। बाइसवे श्लोक से सताइसवे श्लोक तक इस राजा की राजधानी हस्तिकुण्डी का
र उसकी अलंकारिक भाषा में प्रशंसा की गई है।

अट्ठाइसवें श्लोक में लिखा है कि समृद्धिशाली और प्रसिद्ध हस्तिकुण्डी नगर मे शान्ति भद्र
क प्रभावशाली आचार्य्य रहते थे जिनका बड़े २ नृपति गौरव करते थे। २९ वें श्लोक मे इन्हीं
ो प्रशंसा की गई है। तीसवें काव्य मे शांति भद्र सूरि को वासुदेवसूरि द्वारा आचार्य्य पदवी
का उल्लेख है। ये वासुदेव उक्त छठे काव्य मे वर्णित विग्रहराज के गुरु थे। ३१ वें तथा ३२
मे शांतिभद्रसूरि की प्रशंसा की गई है। तेतीसवे श्लोक मे उक्त सूरि महोदय के उपदेश से गोष्ठी
ों द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव के मन्दिर का पुनरुद्धार किये जाने का उल्लेख है। इसके बाद दो श्लोकों
मन्दिर का अलंकारिक वर्णन है। छत्तीसवे और सैंतीसवें काव्य मे कहा गया है कि उक्त मन्दिर
ग्ध राजा ने बनवाया था। इसके जीर्ण हो जाने से इसका पुनरुद्धार किया गया। जब मन्दिर
फिर तैयार हो गया तब संवत १०५३ की माघ सुदी १३ को श्री शान्ति सूरिजी ने उसमें प्रथम
की सुन्दर मूर्ति प्रतिष्ठित की।

अड़तीसवे पद्य मे विदग्धराज द्वारा स्वर्णदान किये जाने का उल्लेख है। ३९ वें पद्य में उक्त
लिये जब तक चन्द्रमा और सूरज रहे तब तक उसके स्थिर रहने की प्रार्थना की गई है। आखिरी
काव्य में प्रशस्ति-कर्त्ता सूर्य्याचार्य्यजी की प्रशंसा की गई है।

"वादि कुञ्जर केशरी" की उपाधि से विभूषित किया। इसके बाद आचार्य्य महोदय ने शैवमन के ... नामक योगी को जैन बनाया। आम राजा पर इन आचार्य्य महोदय का अप्रिहत धार्मिक प्रभाव ... इससे संवत् ८२६ मे इन्होंने कन्नोज, मथुरा, अनहिलपुर पट्टण, सनारक नगर, मोढेरा आदि नगरों में ... बनवाये, उसने शत्रुजय तथा गिरनार की तीर्थ यात्रा की। उस समय गिरनार तीर्थ के अधिकार के ... दिगम्बर तथा श्वेतांबर समुदाय मे झगडा पड गया था। श्री वप्पभट्टसूरि के प्रभाव से उक्त ... श्वेताम्बर तीर्थ माना गया। श्री वप्पभट्टसूरि के शिष्य नन्नसूरि तथा गोविंदसूरि के उपदेश से, आ... के पौत्र भोज राजा ने आम राजा से भी अधिक जैन धर्म की प्रभावना की। इस भोजदेव का दू... मिहिर तथा आदि बरहा था। वह सवत् ९०० से लगाकर ९३८ तक गद्दी पर रहा। किसी २ इतिहा... के मतानुसार संवत् ९५० तक उसने राज्य किया।

शिलाचार्य्य

आप निवृत्ति गच्छ के मानदेवसूरि के शिष्य थे। संवत् ९२५ में आपने दस हजार प्राकृत ... में "महापुरुषचर्य्य" नामक एक गद्यात्मक ग्रन्थ रचा, जिसमे ५४ महापुरुषों का चरित्र है। उसका ... लेकर सुप्रख्यात् जैनाचार्य हेमचन्द्रसूरि ने 'त्रिशष्ठिशलाका पुरुष चरित्र' संस्कृत में रचा। इन्हीं ... देव ने (शिलाचार्य्य या शिलागाचार्य्य) सवत् ९३३ में आचारांग सूत्र और सूयगडाग सूत्र पर ... में वृत्ति रची। उन्होंने इन दो सूत्रों के सहित ग्यारह अगों पर भी टीका रची।†

हाल में उनकी रची हुई आचाराग सूत्र तथा सूयगडाग सूत्र नामक दो अगों की टीकायें ... हैं। उन टीकाओं के अवलोकन से यह प्रतीत होता है कि इनके पहले श्रीगंधहस्तिसूरिजी ने इन पर ... टीका की थी। शीलाचार्य्य को इन टीकाओं के करने में श्री वाहरी गणी से बड़ी सहायता मिली ... बात को वे अपनी टीकाओं में स्वीकार करते हैं।

---

* आम राजा तथा भोजदेव के लिये श्रीमान् ओझाजी कृत राजपूताने के इतिहास के प्रथम खंड ... १६१ तथा १६२ देखिये। उक्त पैरेग्राफ में लक्षणावती नामक नगर का वर्णन आया है, उसका आधुनिक ना... है। गौड़ाधिपति धमराज बंगाल के इतिहास में धर्मपाल के नाम से प्रसिद्ध है। वह पाल वंश का प्रतिष्ठा... सवत् ७६५ से ८३८ सवत तक उसने राज्य किया।

† जैन साहित्य नो इतिहास पृष्ठ १८१

(पश्चात् भाग) श्रीपार्श्वनाथ मंदिर लोद्रवा (जैसलमेर) (श्री बा० पूरणचन्द्रजी नाहर के सौजन्य से)
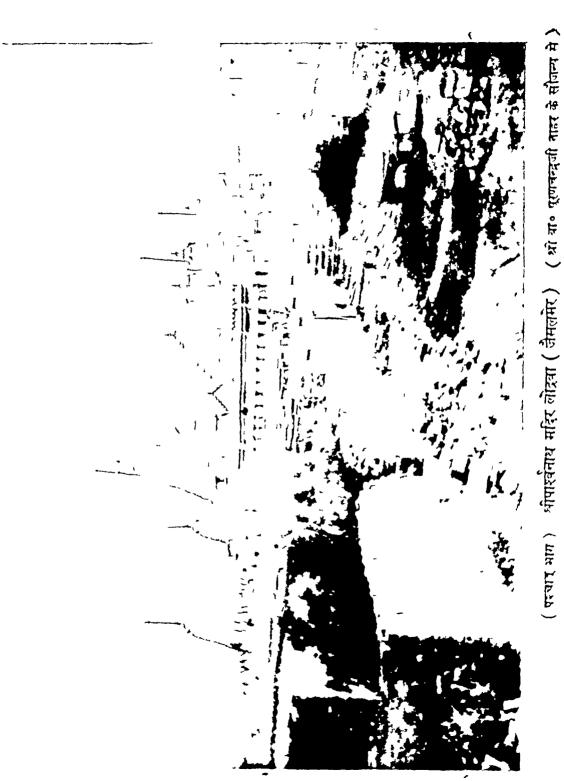
उपरोक्त वाक्यों से यह प्रतीत होता है कि यद्यपि हरिभद्रसूरि सिद्ध ऋषि के साक्षात गु‑ थे पर उनके परोक्ष धर्मोपदेशक थे। श्री सिद्ध ऋषि ने इस महान् ग्रन्थ की रचना मारवाड के भा‑ नगर के एक जैन देरासर में की थी और श्री दुर्गस्वामी की गणा नाम की शिष्या ने इस ग्रन्थ की प्रति लिखी थी।

यह ग्रंथ संस्कृत भाषा का एक अमूल्य रत्न है। आन्तरिक वृत्तियों का सूक्ष्म इतिहास जैसा ग्रन्थ में मिलता है वैसा दूसरे किसी ग्रन्थ में नहीं मिलता। एक विद्वान का कथन है कि भारतीय धर्म‑ नीति के लेखकों में सिद्धऋषि का आसन सर्वोपरि है।

आचार्य्य सिद्धऋषि ने और भी कई महत्पूर्ण ग्रन्थ लिखे थे। चन्द्रकेवली… नामक प्राकृत ग्रन्थ का आपने सस्कृत में अनुवाद(१) किया था। वि० स० ९७४ में उन्होंने धर्मनाथ गणी कृत उपदेशमाला की संस्कृत टीका लिखी, जो अतीव महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है। श्री सिद्धसेन दिवाकर न्यायावतार ग्रन्थ पर भी आपने एक बहुत ही उत्तम वृत्ति लिखी है। तत्वार्थाधिगम नामक सूत्र पर सिद्ध ऋषि की एक वृत्ति है पर ये सिद्धऋषि उक्त सिद्धऋषि से जुदे मालूम पडते हैं।

श्री प्रभावक चरित्र में श्री सिद्ध ऋषि, उनकी गुरु परपरा तथा हरिभद्रसूरि के साथ का उन सम्बन्ध आदि बातों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। कहने का अर्थ यह है कि श्री सिद्ध ऋषि आप जैन साहित्य के प्रकाशमान रत्न थे और उनकी उपमिती भवप्रपंच कथा मानवीय हृदयों को जीवन उच्चातिउच्च क्षेत्र में लेजाकर शान्ति के अलौकिक वायु मण्डल से परिवेष्टित कर देती है।

आचार्य्य जम्भूनाथ

आप बडे विद्वान् जैन ग्रन्थकार थे। विद्वत्समाज में आपका बडा गौरव था। संवत् १००५ आपने मणिपति चरित्र नामक ग्रन्थ की रचना की। इसके बाद आपने जिनशतक काव्य बनाया, जिस संवत् १०२५ में साव मुनिने इसपर विस्तृत टीका लिखी। मुनी जम्भूनाथ ने दूत काव्य नामक एक काव्य-ग्रन्थ भी रचा था।

मुनी प्रद्युम्नसूरि

चन्द्रगच्छ में प्रद्युम्नसूरि नामक एक जैन साधु हो गये। आप वैदिक शास्त्र के बडे पारं‑

* इस ग्रंथ की मूल प्रति श्री कांति विजयजी के बडौदे के भण्डार में मौजूद है।

(१) वस्वङ्केषु मिते वर्षे श्री सिद्धर्षिरिदं महत्।
प्राक् प्राकृत चरित्राद्द्धि चरित्रं संस्कृतं व्यधात्॥

। यह सिरोही राज्य के बहुत पुराने स्थानों में से यह एक है। अब तक इस राज्य के जितने शिला-
लेख हैं उनमें सब से पुराना वि०स० ६८२ का यहीं से मिला है। मेवाड़ के सुप्रसिद्ध महाराणा कुम्भ
की पहाड़ियों पर एक गढ़ बनवाया था। जान पड़ता है कि इसी से बसंतपुर के स्थान में बसंतगढ़
गपित हुआ। यहाँ के एक टूटे जैन मन्दिर में वि० स० ७४४ के समय की मूर्तियां भी मिली हैं।

केशरियाजा तीर्थ—यह जैनियों का अत्यन्त प्रख्यात तीर्थ स्थान है। उदयपुर से लगभग ४०
ो दूरी पर धुलैवा नामक गाँव में श्री ऋषभदेव स्वामी का एक बड़ा ही भव्य और विशाल मन्दिर
मा है। उक्त मन्दिर में बड़ी ही प्रभावोत्पादक ऋषभदेवजी की मूर्ति है। यह मूर्ति बहुत प्राचीन है।
हले यह प्रतिमा डूंगरपुर राज्य की प्राचीन राजधानी बड़ौद (वटपद्रक) नामक जैन मन्दिर में थी।
हता है कि किसी विशेष राजनैतिक परिस्थिति के कारण उक्त मूर्ति बड़ौद से यहाँ लाकर पधराई गई।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं ऋषभदेवजी की उक्त प्रतिमा बड़ी भव्य और तेजस्वी है। इसके
विशाल परिकर में इन्द्रादि देवताओं की मूर्तियाँ बनी हुई हैं और दो बाजुओं पर दो नग्न काउस
सर्ग स्थिति वाले पुरुष) खड़े हुए हैं। मूर्ति के चरणों के नीचे छोटी २ नौ मूर्तियाँ हैं जिनको लोग
या नवनाथ बतलाते हैं। उक्त नवग्रहों के नीचे कुछ सपने खुदे हुए हैं।

इस मन्दिर के मण्डप में तीर्थङ्करों की बाइस और देव कुलिकाओं की चौपन मूर्तियाँ विराजमान
कुलिकाओं में वि० सं० १७५६ की बनी हुई विजयसागरसूरि की मूर्ति भी है और पश्चिम की
काओं में से एक में करीब ६ फीट ऊँचा ठोस पत्थर का मन्दिर बना हुआ है, जिसपर तीर्थङ्कर की
छोटी २ मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इसको लोग गिरनारजी का बिम्ब कहते हैं। उक्त ७६ मूर्तियों में से
र्यों पर लेख खुदे हुए हैं। ये लेख वि० स० १६११ से लगाकर वि० स० १८६३ तक के हैं और
के इतिहास के लिए बड़े उपयोगी हैं।

इस मन्दिर में केशर बहुत चढ़ती है। इसीसे तीर्थ का दूसरा नाम केशरियानाथ भी है।
लोग यहाँ पर केशर की मानता करते हैं। कोई २ जैन तो अपने बच्चों के बराबर केशर तौल कर
पर चढ़ा देते हैं। जैनियों के सिवाय भील आदि भी इस मूर्ति पर केशर चढ़ाते हैं। इस मूर्ति का
ला होने से भील लोग इसे कालाजी के नाम से पुकारते हैं। वे इन्हें अपना इष्टदेव समझते हैं।
न्दिर में कई बातें बड़ी विचित्र हैं। यहाँ पर ब्रह्मा और शिव की मूर्तियाँ भी विराजमान हैं और
नकुण्ड भी बना हुआ है। जहाँ पर नवरात्रि के दिनों में दुर्गा का हवन होता है। पर जान पड़ता
े सब बातें पीछे से उक्त मन्दिर में जोड़ दी गई हैं। इस मन्दिर की मूर्ति पर सोने, चांदी और
त की अंगी चढ़ाई जाती है जिनमें कुछ अंगियों की कीमत एक लाख से भी ऊपर की है। हाल में
र के भूतपूर्व महाराणा फतेसिंहजी ने कोई ढाई लाख की कीमत की अंगी चढ़ाई थी। इस मन्दिर
श्वेताम्बर विधि से पूजा होती है क्योंकि अंगी, केशर आदि का चढ़ना ये सब बातें श्वेताम्बर विधि
सम्मिलित हैं। गत तीन सौ वर्षों के विभिन्न प्रकार के लेखों से यह प्रतीत होता है कि इस मन्दिर में
विधि से पूजा होती आई है।*

* संवत् १८६३ में विजयचंद गांधी ने इस मन्दिर के चारों तरफ एक पक्का कोट बनवाया। वि० स० १८८८

पर मत के महाकवियों की और उनकी कृतियों की बड़ी प्रशंसा की है। इन्द्रभूति, गगरा, वाल्मीकि, व्यास, गुणाढ्य, (बृहत्कथाकार) प्रवरसेन पाद लिप्त कृत तरंगवती, जीवदेवसूरि, कालिदास, बा,— हरिभद्रसूरि, भवभूति, वाक्पति राज, यपभट्ट, राजशेखर कवि, महेन्द्रसूरि, रुद्रकवि आदि अनेक महाकवि बड़ी प्रशंसा की है। महाकवि धनपाल का तिलक मजरी ग्रंथ संस्कृत साहित्य का एक अमूल्य र यह ग्रंथ बड़ा ही लोक प्रिय है। इसकी समग्र कथा सरल और सुप्रसिद्ध पदों में लिखी गई है। गुण से वह अलंकृत है। हेमचन्द्राचार्य्य सरीखे प्रकाण्ड विद्वानों ने इस ग्रन्थ को उच्चकोटि का प्रय उन्होंने अपने काव्यानुशासन मे उसका बहुत कुछ अनुकरण करने की चेष्टा की है। यह कथा काव्य से परिपूर्ण है। प्रभावक चरित्रकार का कथन है, कि उक्त कथा को जैनाचार्य्य शान्तसूरि धित किया था। संवत् ११३० की लिखी हुई इसकी १ प्रति इस समय भी जैसलमेर के भण्डार मान है। इसके अतिरिक्त महाकवि धनपाल ने प्राकृत भाषा मे श्रावकविधि, ऋषभ पचाशिका, "श्रीमहावीर उत्साह" नामक ग्रन्थ रचे, जिनमे अतिम ग्रथ स्तुति काव्य पर है, और उसमें कुछ ऐतिहासिक जानकारी है।

आचार्य्य शन्तिसूरिजी

आप प्रभावशाली तथा विद्वान थे। आपने ७०० श्रीमाली कुटुम्बों को जैन बनाया था। बडगच्छ के थे। महाराजा भोज ने आपको अपनी राजधानी धार मे निमंत्रित किया था। वहाँ विद्वत् सभा में आपने अपनी अलौकिक प्रतिभा का परिचय दिया, इससे महाराजा भोज ने आपको "वादि की उपाधि से विभूषित किया। आपने जैनियों के सुप्रसिद्ध उत्तराध्ययन "सूत्र पर बडी ही सुन्दर की। उसमे प्राकृत भाषा का बाहुल्य होने से उसका नाम" "पाईय टीका" रक्खा गया। सवत् १० आपका स्वर्गवास हुआ।

आचार्य्य वर्द्धमानसूरि

सवत् १०५५ में आपने हरिभद्र कृत उपदेश पद की टीका की। इसके अतिरिक्त उपदेश माला बृहद् वृत्ति नामक ग्रन्थ लिखा। विक्रम सवत् ९४५ का कटिग्राम में एक प्रतिमा ले हुआ है, जिसमें आपके नाम का उल्लेख है। संवत् १०८८ में आपका स्वर्गवास हुआ।

ओसवाल जाति की कुछ खास खास संस्थाएँ

श्री संघ सभा और सरदार हॉईस्कूल जोधपुर—वर्तमान संस्कृति एवं सभ्यता के युग में उन्नति भावना से प्रेरित होकर जोधपुर शहर के गण्यमान्य ओसवाल पुरुषों ने ता० १६ जुलाई सन् दिन "श्री संघ सभा" की स्थापना की एवं, २० हजार रुपयों का चंदा एकत्रित किया। इस कार्य्य : दरबार महाराजा सुमेरसिंहजी बहादुर ने ९ हजार प्रदान कर अपनी राजभक्त प्रजा का सम्मान :स श्रीसंघ सभा के सभापति स्व० मेहता सरदारचंदजी दीवान सभापति और उपसभापति भण्डारी ी चुने गये, एवं अन्य १७ मुत्सुद्दियों की एक व्यवस्थापक कमेटी बनाई गई। इस ता० २९ अगस्त सन् १८९६ के दिन दरबार की आज्ञा से महाराजा सर प्रतापसिंह "सरदार हॉईस्कूल" का उद्‌घाटन करवाया। यह हॉईस्कूल अपनी दिन दूनी और रात न्नति करता गया और इस समय जोधपुर की शिक्षा संस्थाओं में अपना खास स्थान रखता इ हॉईस्कूल की उन्नति में शाह नौरतनमलजी भांडावत, मेहता बहादुरमलजी गधैया, शाह जी सराफ आदि सज्जनों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस समय हॉईस्कूल की निजकी एक ल्डिंग है।

श्री आत्मानन्द जैन हॉईस्कूल अम्बाला—इस संस्था की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व विजयवल्लभसूरिजी के उपदेश से हुई। सन् १९२६ में यह हॉईस्कूल बन गया। यह पंजाब प्रान्त के प्रसिद्ध हॉईस्कूलों में माना जाता है। इस संस्था की शानदार नयी हाल ही में तैयार हुई है। "आत्मानन्द जैनगंज" नामक बाजार के किराये की आय, गवर्नमेंट र अन्य सहायता से हॉईस्कूल का व्यय चलता है। संस्था का कार्य्यवाहन अम्बाले के १६ न्य सज्जनों की एक कमेटी के जिम्मे है।

श्री ओसवाल हॉईस्कूल अजमेर—इस संस्था की स्थापना अजमेर में छोटी सी संस्कृत पाठ रूप में संवत् १९५६ में हुई। तदनन्तर संवत् १९७५ में यह संस्था मिडिल स्कूल के रूप में हुई। इस संस्था की आरंभिक उन्नति का प्रधान श्रेय श्री धनराजजी कांसटिया को है। कहना कि अजमेर की जनता के उत्साह प्रदर्शन से तथा कार्यकर्त्ताओं की कार्य चातुरी से यह संस्था ी गति से उन्नति की ओर अग्रसर होती गई, तथा संवत् १९८६ से यह मिडिल स्कूल से हो गया। यह हॉयस्कूल इस समय राजपूताना एज्युकेशन बोर्ड से रिकगनाइज हो गया है। यह बहुत रूप से संचालित किया जा रहा है। इसमें हायस्कूल की अन्य क्लासों के साथ २ कामर्स क्लास की ा दी जाती है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य की ओर भी काफी ध्यान ता है। इस हायस्कूल के प्रेसिडेन्ट सेठ हीराचन्दजी सचेती और मंत्री श्री धनराजजी कांसटिया हैं।

सेठ नन्दलाल भण्डारी हाईस्कूल—इस हॉयस्कूल को इन्दौर के प्रसिद्ध मिल ओनर श्री कन्हैया भण्डारी ने अपने पिताजी के स्मारक में "नन्दलाल भण्डारी विद्यालय" के नाम से खोला है। च व्यवस्थापिका शक्ति एवं योग्य निरीक्षण के कारण विद्यालय दिनों दिन तरक्की करता गया और

आचार्य्य नेमीचन्द्रसूरिजी

आपका दूसरा नाम देवेन्द्रगणि था। आप बडगच्छ के आम्रदेवसूरि के शिष्य थे। वि० ११२९ में आपने उत्तरा ययन सूत्र पर टीका की। आपने पर वचन सारोद्धार आख्यान तथा वीर चरित्र आदि ग्रन्थ रचे हैं। आपको सैद्धान्तिक शिरोमणि की उपाधि भी प्राप्त थी।

आचार्य्य जिन वल्लभसूरि

जैन धर्म के आप महान् प्रतिभाशाली, कीर्तिमान और प्रख्यात् आचार्य्य थे। आप ... के जन्मदाता कहे जाते हैं। चित्रकूट में आपने अपने उपदेश से सैकडों आदमियों को जैन धर्म में ... किया और २ विधि चैत्य की प्रतिष्टा की। इसके बाद आप ने बागड प्रान्त के लोगों को जैन धर्म ... बोध दिया और वहाँ भगवान महावीर की धर्मध्वजा उडाई। इसके बाद आप धारा नगरी पधारे, ... राजा नरवर ने आपका बडा आदरातिथ्य किया। इसके बाद आपने नागोर में नेमिजिनालय ... नरवरपुर में विधि-चैत्य की प्रतिष्टा की।

अभयदेव सूरि के आदेश से देवभद्राचार्य्य ने आपको सूरि का पद प्रदान किया। ... अभयदेव सूरि के पट्ट-धर शिष्य हो गये। इसके ६ मास बाद संवत् ११६७ में आपका स्वर्गवास ... आपने कई ग्रथ रचे, जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार है। (१) पिंड विशुद्धि प्रकरण (२) ... सार्धशतक (३) आगमिक वस्तु विचारसार (४) पौषध विधि प्रकरण (५) संघ पट्टक ... समाचारी (६) धर्म शिक्षा (७) धर्मोपदेशमय द्वादश कूलकरूप प्रकरण (८) प्रश्नोत्तर शतक ... शृंगार शतक (१०) स्वप्नाष्टक विचार (११) चित्रकाव्य (१२) अजित शांति स्तव (१३) ... वारण स्तोत्र (१४) जिनकल्याणक स्तोत्र (१५) जिन चरित्रमय जिन स्तोत्र (१६) महावीर ... वीरस्तव आदि आदि॥

कहा जाता है कि संवत् ११६४ में जिन वल्लभसूरिजी ने अपनी कृतियाँ ... संघ पट्टक और धर्म शिक्षा आदि को चित्रकूट, नरवर, नागोर, मरुपुर आदि के स्वप्रतिष्ठित विधि ... प्रशस्ति रूप से खुदवाये।

कक्क सूरिजी

आप उकेशगच्छ के देवगुप्त सूरि के शिष्य थे। आपने श्री हेमचन्द्राचार्य्य तथा कुमार...

...क, नैतिक एवं धार्मिक जीवन को उच्च बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया जाता है। संस्था को व्यवस्थित ...चालित करने के लिये पन्यासजी ललित विजयजी महाराज अपना पूर्ण समय दे रहे हैं। ...ी सुंदर व्यवस्था एवं भव्य इमारतें दर्शनीय हैं।

श्री नेमिनाथ ब्रह्मचर्याश्रम चांदवड (नाशिक)—इस गुरुकुल की स्थापना संवत् १९८३ में ...ैन पाठशाला के रूप में हुई थी। श्रीमान् सुमति मुनिजी के उपदेश से इस संस्था ...रूप दिया गया। चांदवड के समीप बम्बई आगरा रोड पर प्राचीन डिस्पेंसरी की भव्य बिल्डिंग ...ने में इस संस्था के सेक्रेटरी श्री केशवलालजी आवड ने बहुत परिश्रम उठाया। इस संस्था का ...देश तथा महाराष्ट्र प्रान्त के गण्यमान्य सज्जनों की एक कमेटी के जिम्मे है। सेठ मेघजी भाई सोज... निवासी आश्रम में एक मंदिर भी बनवा रहे हैं। श्री राजमलजी ललवाणी, सुगन्धचन्द्रजी ...इन्द्रचन्द्रजी लूणिया आदि सज्जनों ने संस्था में अच्छी सहायता पहुँचाई है। इस संस्था के ...ने विभिन्न प्रकार की शारीरिक कसरत एवं योगासनों में उत्कृष्ट जानकारी रखने के कारण बहुत ...र की है। संस्था में सातवीं क्लास तक पढ़ाई होती है।

श्री फतेचन्द जैन विद्यालय चिंचवड़ (पूना)—संवत् १९८४ में पेमराजजी महाराज के उपदेश ...था की स्थापना हुई। पूना, चिंचवड तथा लोनावला के ५ गृहस्थों के एक ट्रस्ट के जिम्मे संस्था ...गार है। संस्था से २०० छात्र अभी शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ महाजनी, धार्मिक प्रवेशिका ...V तक पढ़ाई होती है। इस समय ८१ छात्र पढ़ते हैं, तथा २० छात्रों के रहने का प्रबंध ...के जिम्मे है। इस संस्था के अध्यक्ष चिंचवड के सेठ रामचन्द्र पूनमचन्द्र लुकड़ हैं।

...नारसिंह हॉल कलकत्ता—यह संस्था भारतवर्ष की उन प्राइवेट संस्थाओं में से एक है जो अपने ढंग ...स आदर्श उपस्थित करती हैं। इसके अन्तर्गत प्राचीन वस्तुओं का, शिलालेखों का, मूर्तियों का, ...तथा इसी प्रकार अन्य कई प्राचीन ऐतिहासिक सामग्रियों का अत्यंत ही अनूठा एवं मनोमुग्ध ...है। बात यह है कि यों तो भारतवर्ष के अन्तर्गत प्राचीन ऐतिहासिक संग्रहालयों का अभाव ...किन यह एक प्राइवेट संस्था है और एक ही व्यक्ति के द्वारा बहुतसी प्राचीन सामग्रियों से सजाई गई ...त हृदय सम्राट महात्मा गांधी, देशरत्न पं० जवाहरलालजी नेहरू आदि पूज्य महानुभावों ने मी ...कंठ से प्रशंसा की है। इस प्राचीन संग्रहालय के संग्रहकर्ता प्रसिद्ध जैन पुरातत्ववेत्ता श्री पूरण ...हर एम० ए० बी० एल हैं। आपकी सुरुचि पूर्ण ऐतिहासिक संग्रह शक्ति ने आपके नाम को अमर है।

...सुराणा पुस्तकालय चुरू—चुरू के सुराणा परिवार की यह प्राइवेट लायब्रेरी है जो बड़ी ही ...ई जैन प्राचीन शास्त्रों से परिपूर्ण भरी है।

...आत्मानन्द जैन सभा अम्बाला—यह सभा संवत् १९१२ में धार्मिक एवं शिक्षा की उन्नति के ...ऐश्वर स्थापित हुई। इस संस्था की उन्नति में अम्बाला के सुप्रसिद्ध एडवोकेट लाला गोपीचंदजी ...ी बहुत योग दिया। वर्तमान में अम्बाला में इस संस्था द्वारा श्री आत्मानंद जैन हॉयस्कूल, ...कूल, कन्या पाठशाला, रीडिंग रूम, ट्रेक्ट सोसायटी, ग्रंथ भण्डार, जैन स्कूल आदि २ संस्थाएँ

पाण्डित्य और अनुकरणीय दूरदर्शिता से सिद्धराज नरेश और उनका मन्त्रि मण्डल बहुत ही प्रभावित हुआ। आपने जैनधर्म के सिद्धान्तो को इतनी खूबी के साथ राजा और उनकी विद्वन्मण्डली के सम्मुख रक्खा कि सब लोग आप की अकाट्य दलीलो पर वाह २ करने लगे। पहिले कहा जा चुका है कि महाराज जयसिंहदेव विद्या के अनन्य प्रेमी व विद्वानो के भक्त थे तथा इसके कुछ ही समय पहिले जयसिंह ने सुप्रख्यात् विद्याप्रेमी मालवाधिपति राजा भोज पर विजय प्राप्त की थी। मालवे की राजधानी धारा का समग्र समृद्धि तथा भोज राजा का विशाल पुस्तक भंडार पाटण में लाया गया था। विजयलक्ष्मी से सुशोभित होकर जब महाराजा पाटन मे आये, तब अनेक पंडित उन्हे आशीर्वाद देने के लिये उनके सम्मुख उपस्थित हुए। कहने की आवश्यकता नहीं कि हेमचन्द्रसूरि भी राजा को आशीर्वाद देने पधारे। इस समय आपने महाराजा भोज के ग्रन्थ भण्डार का निरीक्षण किया। भण्डार के रक्षकों ने उस समय भण्डार से एक ग्रन्थ निकाल कर राजा की सेवा मे भेट किया, उस पर राजा ने आचार्य्य देव से पूछा कि "यह कौन ग्रन्थ है।" तब आचार्य्यदेव ने जवाब दिया, "यह भोज व्याकरण नाम का शब्द शास्त्र है" इसके बाद भोज की प्रशंसा करते हुए आचार्य्य देव ने महाराजा जयसिंह से कहा कि "मालव नरेश भोज विद्वानों के शिरोमणि थे।" उन्होंने शब्द शास्त्र, अलंकारशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, तर्कशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, नीतिशास्त्र, तत्वशास्त्र, वास्तुलक्षण, अंकगणित शकुन विद्या, अध्यात्म शास्त्र, स्वप्नशास्त्र, सामुद्रिक आदि अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया था। यह सब सुन कर सिद्धराज जयसिंहदेव बोले, "क्या हमारे भण्डार में इस प्रकार का सर्व शास्त्र, निर्माता पंडित नहीं है?" इस समय सब उपस्थित विद्वानों की दृष्टि श्री हेमचन्द्र पर पड़ी। राजा ने हेमचन्द्र से विनय की कि आप 'शब्द व्युत्पत्ति' शास्त्र पर कोई ग्रन्थ रच कर हमारे मनोरथ को सफल करें। आपके सिवाय इस कार्य्य को पूरा करने वाला कोई विद्वान् नहीं है। मेरा देश और मैं धन्य हूं, कि जिसमे आप सरीखे अलौकिक विद्वान् निवास करते हैं।

श्री हेमचन्द्राचार्य्य ने राजा की अभिलाषानुसार "सिद्ध हेम व्याकरण" नामक महान ग्रन्थ रचा। राजा को उक्त ग्रन्थ बहुत पसन्द आया, और उन्होंने अपने देश मे उसके अध्ययन और अध्यापन का प्रारम्भ किया। इतना ही नहीं उन्होंने अपने मित्र राजाओं को भी लिख कर अंग, बंग, कलिंग और कर्नाटक आदि देशों मे भी उसका प्रचार करवाया और उसकी २० प्रतियाँ काश्मीर भेजीं। उसकी प्रतियाँ अपने राजकोष मे भी रक्खीं। जो लोग इस व्याकरण का अध्ययन करते थे, उन्हे राज्य की ओर से उत्तेजन मिलता था। काकल नामक अष्ट व्याकरण का एक विद्वान कायस्थ इस व्याकरण का अध्यापन करने के लिये रक्खा गया। ज्ञान पंचमी आदि दिनों मे इसकी पूजा अर्चना होने लगी। (श्री प्रभावक चरित्र श्लोक ९५—११०) इतना ही नहीं यह ग्रन्थ स्वयं राजा की सवारी करने के हाथी पर रख कर राज

ी जैन ओसवाल परस्पर सहायक कोष मध्यप्रदेश एण्ड बरार—यह संस्था ओसवाल जैन कुटुम्बों
ृयु के अनंतर या ५५ वर्ष के पश्चात् सहायता पहुँचाने के उद्देश से सन् १९३२ में स्थापित
का आफिस सिवनी छपरा (सी० पी०) में है। इसके प्रेसिडेंट सेठ माणिकचन्दजी माल्हू हैं।
ी जैन सुमति मित्र मंडल, रावलपिंडी—इस संस्था की स्थापना २१ साल पूर्व स्वामी धनीरामजी
ी। संस्था के पास इस समय ३५ हजार रुपयों का फंड है, और रावलपिंडी के २४
मेटी के जिम्मे समिति का प्रबंध भार है। समिति के अंदर में शास्त्र भंडार, ट्रेक्टमाला,
ला, एजूकेशन बोर्ड आदि संस्थाएं चलती हैं। सुदूर पंजाब प्रांत में यह संस्था हिन्दी भाषा का
कार्य्य कर रही है। इसके प्रेसिडेंट लाला उत्तमचन्दजी जैन हैं।
श्री स्थानकवासी जैन बोर्डिंग पूना—यह संस्था भी कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्रों
न एवं निवास की सुव्यवस्था के उद्देश्य से स्थापित हुई है। इसका प्रबन्ध महाराष्ट्र प्रान्त
य सज्जनों की एक कमेटी के जिम्मे है।
श्री सोहनलाल जैन अनाथालय, अमृतसर—इस संस्था की स्थापना युवाचार्य्य काशीरामजी
ी। स्थापना के समय संस्था को ४० हजार की सहायता के वचन मिले थे। इस संस्था के
मय ११ हजार रुपयों का फण्ड है। इसके प्रधान कार्य्य संचालक लाला मस्तरामजी
L.B, लाला हरजसरायजी वरड B A एवं लाला मुन्नीलालजी हैं।
श्री केशव विजय जैन लायब्रेरी, जालोर—इस लायब्रेरी की बेल्यू लगभग १ लाख रुपयों की है।
पास १० हजार का फंड है। तथा ताड़ पत्र पर हस्तांकित एवं अन्य ग्रन्थों का अच्छा संग्रह
के सेक्रेटरी श्रीयुत भेरूमलजी गधैया योग्य एवं उत्साही सज्जन हैं।

उपरोक्त संस्थाओं के अतिरिक्त ओसवाल समाज की ऐसी कई संस्थाएँ हैं जिनका स्थानाभाव
रेचय न देकर हम नाम ही दे रहे हैं।

ीय श्वे० जैन स्थानकवासी ओसवालसभा	मूलचन्द जवाहरमल औषधालय, वार्शी
रवर्षीय मन्दिर मार्गीय श्वेताम्बर जैन सभा	गिरधारीलाल अन्नराज विद्यालय, ब्यावर
जैन सभा पंजाब, लाहौर	श्री आत्मानन्द जैन विद्यालय, सादड़ी
ापन्थी सभा, कलकत्ता	ओसवाल बोर्डिंग हाउस, जलगांव
ा ओसवाल सभा, नासिक	भद्रावती जैन गुरुकुल, भादक तीर्थ
पाथर्डी (अहमदनगर)	शांति जैन मिडिल स्कूल एण्ड काम० इन्स्टीट्यूट ब्यावर
न बोर्डिंग हाउस, नासिक	सिंघी हरिसिंह निहालचन्द संस्था बोलपुर (बंगाल)
ाक-प्रकाशक समिति, रतलाम	शम्भूमल गंगाराम जैन विद्यालय, [illegible]
षधालय जीरा (पंजाब)	नथमल [illegible] औषधालय, सरदारशहर
ाक प्रकाशक समिति, रतलाम	घेवरचन्द पुस्तकालय सुजानगढ़
्षधालय, अजमेर	पूनमचन्द जैन कन्या पाठशाला, जोधपुर

श्री हेमचन्द्राचार्य ने कई काव्य ग्रन्थ भी लिखे हैं। आपका द्वाश्रय महाकाव्य अति म ऐतिहासिक ग्रन्थ है। उसमें विशेष कर चालुक्य वंश तथा सिद्धराज जयसिंह का दिग्विजय व आपका दूसरा काव्य कुमारपाल चरित्र है, वह भी काव्य चमत्कृति का एक नमूना है। आपका योग भी अपने विषय का अपूर्व ग्रन्थ है। इस विषय को आपने बड़ी ही सरलता के साथ समझाया है और यो योग क्रियाओं का अनुभवपूर्ण वर्णन किया है। इसी प्रकार दर्शन शास्त्रों पर भी आपने बहुत कु हे। आपका काव्यानुशासन ग्रन्थ साहित्यशास्त्र का एक अमूल्य रत्न है। इसी प्रकार आपका छन्दानु ग्रन्थ छन्द शास्त्र में अपना उच्च स्थान रखता है। आपने ४ कोष ग्रन्थ भी लिखे हैं जो भारतीय स के बहुमूल्य रत्न हे। इस प्रकार सैकड़ों ग्रन्थ लिख कर आपने साहित्य संसार में अमर कीर्ति पाई।

सुप्रख्यात् विद्वान् आचार्य्य आनन्दशंकर ध्रुव का कथन है कि "ईसवी सन् १०८९ से ल ११७३ तक का समय कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य्य के तेज से दैदीप्यमान हो रहा था।" इन प्रतिभा आचार्य्य देव का स्वर्गवास स० १२२९ में हुआ।

रामचन्द्रसूरि

आप श्री हेमचन्द्राचार्य्य के पट्टधर शिष्य थे। सिद्धराज जयसिंह ने आपको "कवि क नामक उपाधि प्रदान की थी। आपने अपने रघुविलास, कौमुदी, आदि ग्रंथों मे अपने आपको प्रबन्ध काव्यतन्द्र, विशीर्ण काव्य निर्माण तन्द्र, आदि विशेषणों से युक्त किया है। आपमें समस्या पूर्ति क अद्भुत् शक्ति थी। शब्द शास्त्र, काव्य शास्त्र तथा न्यायशास्त्र के आप बड़े पण्डित थे। यह बात अपने नाट्य दर्पण विवृत्ति नामक ग्रंथ में भी प्रगट की है। महाकवि श्रीपाल कृत, "सहस्र लिंग स की प्रशस्ति में काव्य दृष्टि से आपने कई दोष निकाल कर सिद्धराज को बतलाये थे। जिसका उल्लेख प्र चिंतामणि नामक ग्रन्थ मे किया गया है। जयसिंह कृत कुमारपाल चरित्र में लिखा है कि जब १२२ श्री हेमचन्द्राचार्य्य का स्वर्गवास हुआ और कुमारपाल को महाशोक हुआ तब रामचन्द्रसूरि ने अपने मय उपदेशामृत से उक्त राजा को बड़ी सान्त्वना दी थी।

रामचन्द्र सूरि ने स्वोपज्ञ वृत्ति सहित द्रव्यालङ्कार और विवृत्ति सहित नाट्य दर्पण न ग्रन्थों की रचना की। पहला ग्रन्थ जैन दर्शन से सम्बन्ध रखता है और उसमें जीव-द्रव्य, पुद्गल धर्म, अधर्म, आकाश, आदि का बहुत ही सूक्ष्म विवेचन किया है। दूसरा ग्रन्थ नाट्य शास्त्र सम्ब इसमें नाटक, नाटिका, प्रकरण, प्रकरणी, व्यायोग, समवकार, भाण प्रहसन डिम, अंक, आदि १२ रूप

* प्रभावक चरित्र श्लोक १२८ से १३७ तक।

ओसवाल जाति और उसके आचार्य्य

Oswals & their Acharyas

रत्नप्रभसूरि

आप महान आचार्य्य श्री वादिदेवसूरिजी के शिष्य थे। संवत् १२३३ में आ... आपने प्राकृत भाषा मे नेमिनाथ चरित्र नामक ग्रन्थ रचा। संवत् १२३८ में आपने भडौंच ... धर्मदासकृत उपदेशमाला पर टीका की। इसके अतिरिक्त आपने श्री वादीदेवसूरि रचित "स्याद्वाद... की अत्यन्त गहन रत्नाकर अवतारिका नामक टीका की। इसके अलावा आपका इस समय ... उपलब्ध नहीं हो रहा है।

महेश्वरसूरि

आप भी वादिदेव सूरि के शिष्य थे। आपने पाक्षिक सप्तति नामक ग्रन्थ पर सुख प्र... नामक टीका रची, जिसमें आपको वज्रसेन गणि से भी बहुत मदद मिली थी।

आसड

आप जैन साहित्य के महान् कवि और श्रावक थे। आप श्रीमाल वंश के कटुक राजा के पु... उक्त राजा की जैन दर्शन मे पूर्ण श्रद्धा थी। आपने जैन सिद्धान्त का बहुत गम्भीर अध्ययन किया... आप "कवि सभा श्रृंगार" नामक उपाधि से विभूषित थे। इसके अतिरिक्त आपने कालिदास, ... पर और अनेक जैन स्तोत्रों पर टीकाएं रचीं। आपने उपदेश कंदली नामक एक ग्रंथ भी ... आपका "बाल सरस्वती" नामक प्रख्याति पाये हुये विद्वान पुत्र का तरुणावस्था मे देहान्त हो ग... इससे आप पर शोक का बहुत जोरों का प्रादुर्भाव हुआ। ऐसे समय में श्री अभयदेव सूरि ने ... धर्मोपदेश देकर सान्त्वना दी। उन्हीं उपदेशों को ग्रथित करके आपने विवेक मञ्जरी नाम... प्रकाशित किया।

बालचन्द्रसूरि

आप संस्कृत साहित्य के महान् कवि थे। आपने वसन्त विलास नामक एक ग्रन्थ ... काव्य रचा। इस काव्य का रचना काल संवत् १२७७ से ८७ के मध्य तक अनुमान किया जाता है। ... पहिले आपने आदि जिनेश्वर नामक स्तोत्र भी रचा था।

जिन आचार्यों ने ओसवाल जाति के सामाजिक, धार्मिक, कौटुम्बिक और राजनैतिक जीवन पर प्रभाव डाला, उनका थोडा सा परिचय देना भी आवश्यक प्रतीत होता है। इनमें से ाचार्य्य स्वयं ओसवाल जाति के थे और उन्होंने जैन संस्कृति के विकास में बहुमूल्य सहायता पहुँचाई इसके विपरीत कई आचार्य्य यद्यपि दूसरी जातियों के थे पर उनका इस जाति के साथ इतना निकट य था कि उसके जीवन के विविध पहलुवों पर इन आचार्य्यों ने बहुत ही गम्भीर संस्कार डाले थे। हेले कह चुके है कि ओसवाल जाति की उत्पत्ति आठवीं तथा नवमी सदी के बीच (८०० से ९०० तक) समय में हुई है, अतएव हम उसी समय से अब तक के खास २ ऐसे आचार्य्यों की जीवनी पर और कार्य्यों पर प्रकाश डालना आवश्यक समझते है, जिन्होंने इस जाति के जीवन को बनाने में सबसे परिश्रम किया था।

वप्पभट्टि सूरि

इस सम्बन्ध में सबसे पहिले श्री वप्पभट्टिसूरि का नाम उल्लेखनीय है। आप का जन्म विक्रम ८०० की भादवा सुदी ३ को हुआ था, अर्थात् जिस समय ओसवाल जाति की उत्पत्ति हुई थी उसी इस महान आचार्य्य का उदय हुआ था। ये महान् विद्वान तथा प्रतापी आचार्य थे। दीर्घ तपश्चर्या ा इन्होंने अपनी आत्मिक शक्तियों का उच्च विकास किया था। इन्होंने कन्नौज के राजा आम को ध देकर उन्हें भगवान महावीर के पवित्र झण्डे के नीचे बैठाया था। ये आम राजा बड़े प्रतापी थे। यर की प्रशस्ति के अनुसार इन्होंने अनेक देशों पर अपनी विजय पताका फहराई थी, इन्होंने कन्नौज मन सोने की भगवान महावीर की प्रतिमा बनवाकर अपने आचार्य्य वप्पभट्ट के द्वारा उसकी वरवाई थी। इन्होंने गोपगिरी (गवालियर) में भी २३ हाथ ऊँची महावीर की प्रतिमा स्थापित की इन महान आचार्य्य महोदय ने गौड (बङ्गाल) देश की राजधानी लक्षणावती के राजा धर्म को उपदेश देकर उसके तथा आम राजा के बीच के वैर भाव को दूर किया और उनके आपस में मैत्री का सम्बन्ध स्थापित किया। इतना ही नहीं, श्रीवप्पभट्टसूरि ने वर्द्धन कुंजर नामक एक विख्यात बौद्ध पण्डित न पर सारे देश में अपने प्रभाव की छाप डाली। इससे उक्त गौडाधिपति धर्मराज ने आपके

यात्रा की थी उस समय यह काव्य रचा गया था। वस्तुपाल ने अपने बनाये इन्द्र मण्डप के पर इस काव्य को खुदवाया था। इसमे काव्यत्व के ऊँचे गुणों के साथ २ बहुत महत्वपूर्ण ज्ञान भी भरा हुआ था। इसमे वस्तुपाल की वंशावली के साथ २ चालुक्य वंश के राजाओं का दिया गया है। इसके अतिरिक्त उक्त सूरिजी ने और भी बड़े २ ग्रंथ रचे है। आपने धर्म शा और संघाधिपति चरित्र नामक महाकाव्य रचे। आरंभ सिद्धि नामक आपने ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ बनाया। इसके अतिरिक्त संस्कृत नेमिनाथ चरित्र भी आप की कृति का फल है।

प्रभाचन्द्रसूरि

आप विक्रम संवत् १३३४ में विद्यमान थे। आपने प्रभाविक चरित्र नाम का एक ऐतिहासिक ग्रंथ लिखा है।

वज्रसेनसूरि

आप तपेगच्छ की नागपूरिय शाखा के श्री हेमतिलक सूरि के शिष्य थे। आपने मलधारी को मुनिचन्द्र सूरिजी कृत, "आवश्यक सप्तती" की टीका रचाने में बडी मदद की थी। आपने नामक एक जैन मंत्री के द्वारा बादशाह अलाउद्दीन से मुलाकात की थी और उस पर प्रभाव डाल शासन के अधिकार के लिए आपने बहुत से फरमान लिये थे।

जिनप्रभसूरि

आप खरतरगच्छ के स्थापक श्री जिनसिंहसूरिजी के शिष्य थे। आपने संवत् १३ अयोध्या मे भयहर स्तोत्र और नंदी षेण कृत "अजित शांति स्तव" पर टीका रची। इसके अतिरिक्त ने सूरिमंत्र प्रदेश विवरण, तीर्थ कल्प, पंच परमेष्टिस्तव, सिद्धान्तागमस्तव, द्वया श्रेय महाकाव्य अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनका यह नियम था कि जब तक वे एक नवीन स्तोत्र नहीं बना तक आहार पाणी नहीं करते थे। उनकी कवित्व शक्ति तथा विद्वता अद्भुत थी। यह ग्रंथों के अवलोकन से स्पष्टतया प्रकट होती है। इसके अतिरिक्त आप ने श्री मल्लिषेणसूरि को हेम चन्द्राचार्य कृत, 'अन्य योग व्यवच्छेदिका" नामक ग्रंथ पर टीका रचने में बडी मदद की थी।

सिद्धऋषिसूरि

आप महान जैनाचार्य थे। आपने 'उपमिती भव प्रपंच कथा' नाम का एक विशाल महारूपक ग्रन्थ रचा कि जो न केवल जैन साहित्य का सबसे पहला रूपक ग्रन्थ था वरन् समस्त भारतीय साहित्य के रूपक ग्रन्थों मे वह शिरोमणि गिना जाता है। उसका साहित्यक मूल्य महान् है। सुप्रख्यात डॉ० याकोबी अपनी 'उपमिती भव प्रपच कथा' की अंग्रेजी प्रस्तावना मे लिखते है—

I did find something still more important The great literary value of the U. Katha and the fact that it is the first allegorical work in Indian Literature

अर्थात् मुझे और भी अधिक महत्व की वस्तु मालूम हुई है। उपमिति भव प्रपंच कथा का साहित्यक मूल्य महान् है और यह भारतीय साहित्य का प्रथम रूपक ग्रन्थ है। ९

यह ग्रथ सम्वत् ९६२ की ज्येष्ट सुदी पचमी को समाप्त हुआ था। उपरोक्त सिद्धऋषिसूरि के ग्रन्थ में विभिन्न ग्रथों में कुछ ऐतिहासिक विवरण है। उससे यह प्रगट होता है कि लाटदेश अर्थात गुजरात में सूर्याचार्य नामक एक जैन आचार्य हुए।† उनके शिष्य के शिष्य दुर्गस्वामी थे। वे मूल मे बड़े धनवान, शक्तिशाली तथा ब्रह्म गौत्र विभूषण ब्राह्मण थे। पीछे मे उन्होंने जैन साधु की दीक्षा ली थी। इनका मारवाड के भीनमाल नगर मे स्वर्गवास हुआ। श्री सिद्धऋषि इन्हीं दुर्गस्वामी के शिष्य थे।

दुर्गस्वामी सिद्धऋषि के गुरु थे और सिद्ध ऋषि ने उनकी अनुकरणीय धर्मवृत्ति की बड़ी प्रशंसा की है। इन दोनो गुरु शिष्यों को गर्गस्वामी ने दीक्षित किया था। ये गर्गस्वामी सवत ९६२ म विद्यमान थे। उन्होंने 'पासक केवली' तथा 'करम विपाक' नामक ग्रन्थों की रचना की थी।

आचार्य्य सिद्धऋषि ने अपने ग्रन्थ में श्री हरिभद्रसूरि की बड़ी स्तुति की है। आपने कहा है कि मै "इस प्रकार के हरिभद्रसूरि के चरण की रज के समान हूँ"। इसके आगे चल कर फिर आपने कहा है कि "मुझे धर्म मे प्रवेश कराने वाले धर्मबोधक आचार्य हरिभद्रसूरि हैं। श्री हरिभद्रसूरि ने अपनी अचिन्त्य शक्ति द्वारा मुझ मे से कुवासना-मय विष को दूर करने की कृपा की और सुवासना रूप अमृत मेरे लाभ के लिये ढूंढ निकाला। ऐसे हरिभद्रसूरि को मेरा नमस्कार है।

---

* सवतसर गत नव के द्विषष्टि सहिते [illegible] ज्येष्ठे [illegible] पंचम्या पुनर्वसौ [illegible]

† १ ये श्री प्रभावकचरित्र मे सूराचार्य कहा है।

आपकी विद्वता देख कर खम्भात के तत्कालीन राजा ने आप को 'बाल सरस्वती' की उपाधि प्रदान की। आपके समय में वि० संवत् १५०८ में स्थानकवासी मत की उत्पत्ति हुई जिसका वर्णन हम अन्य अध्याय में करेंगे।

हेमविमलसूरि

आप भी बड़े विद्वान जैनी साधु थे। आपके समय में जैन साधुओं का आचार शिथिल हो गया था। पर आप के उपदेश से बहुत से साधुओं ने शुद्ध मुनि व्रत को फिर से स्वीकार किया।

आनन्दविमलसूरि

आप श्री हेम विमलसूरि के शिष्य थे। आप ने स्थान २ पर उपदेश देकर शुद्ध जैन धर्म का प्रचार किया। आप ने दुर्गासिंह नामक एक महान् धनवान को जैन धर्म में दीक्षित किया। सूरिजी ने जल की तंगी के कारण जैसलमेर आदि स्थानों में साधुओं का विहार करना बन्द करा दिया था। आपने उसे फिर शुरू करवा दिया। आप के बाद महोपाध्याय श्री विद्यासागरजी आदि जैन मुनि हुए जिनके समय में कोई विशेष घटना न हुई।

हरिविजयसूरि

मध्ययुग के जैनाचार्यों में श्री हीरविजयसूरि का आसन अत्यन्त ऊँचा है। आप अत्यन्त प्रतिभाशाली, अपूर्व विद्वान और अपने समय के अद्वितीय कवि थे। अपने समय में आप की कीर्ति भारतवर्ष में फैल रही थी। आप के अलौकिक तेज और अगाध पाण्डित्य का प्रभाव न केवल जैनियों पर वरन् मुगल सम्राट तक पर पड़ा था। आपकी तेजस्विता से तत्कालीन मुगल सम्राट तक प्रभावित हो गये थे।

इस अलौकिक महापुरुष का जन्म पालणपुर के कुँरा नामक ओसवाल के यहाँ पर मार्गशीर्ष में हुआ था। आपकी माता का नाम नाथीबाई था। जब आप तेरह वर्ष के थे तब आप के माता पिता का देहान्त हो गया था।* एक समय आप पट्टन में अपनी बहन के यहाँ गये हुए थे कि वहाँ पर विजयदानसूरि के उपदेश से आपने संसार त्यागने का निश्चय किया। इस पर आपकी बहन ने

* जगद्गुरु काव्य में लिखा है कि इनके माता पिता इनके दीक्षा लेने तक विद्यमान थे। आप सकुटुम्ब पाटण में थे। आपने अपने माता पिता की आज्ञा से दीक्षा ली।

[illegible]न् थे, उन्होंने अल्ल (२) की राजसभा मे दिगम्बरियों को परास्त किया था। इसके अलावा उन्होंने [illegible]दलक्ष, त्रिभुवनगिरि आदि राजाओं को जैन धर्म मे दीक्षित किया था। ये बड़े जबर्दस्त तर्कवादी थे। [illegible]के शिष्य समुदाय के माणिकचन्द्रसूरि ने अपने पार्श्वनाथ चरित्र की प्रशस्ति मे आपके गुणों का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है।

[illegible]नी न्यायवनसिंह

आप प्रद्युम्नसूरि के शिष्य थे। सुप्रख्यात आचार्य अभयदेवसूरि सिद्धसेन दिवाकर कृत [illegible]मति तर्क नामक ग्रंथ पर आपने तत्वबोध विधायनी टीका रची, जो "वाद महार्णव" नाम से प्रख्यात् है।

इस पर से आपकी अगाध विद्वत्ता का पता चलता है। यह अनेकान्त दृष्टि का दार्शनिक ग्रंथ [illegible]और उसमें अनेकांत दृष्टि का स्वरूप और उसकी व्याप्ति तथा उपयोगिता पर बहुत ही अच्छा प्रकाश [illegible]ला गया है। इसमें सैकड़ों दार्शनिक ग्रंथों का दुहन करके जैन धर्म के गूढ़ातिगूढ़ दार्शनिक सिद्धान्तों [illegible] बहुत ही उत्तमता के साथ समझाया गया है।

[illegible]हाकवि धनपाल

सुप्रख्यात् विद्याप्रेमी महाराजा भोज मालवाधिपति की सभा मे जो नवरत्न थे, उनमें महाकवि [illegible]पाल का आसन अपना विशेष स्थान रखता था। बाल्यावस्था से ही महाराजा भोज और धनपाल म[illegible] मैत्री का सम्बन्ध था। महाराज ने इनकी अगाध विद्वत्ता से प्रसन्न होकर इन्हें "सरस्वती" की उपाधि से विभूषित किया था। महाकवि धनपाल पहिले वैदिक धर्मावलम्बी थे पर पीछे से अपने [illegible] सोभनमुनि के संसर्ग से उन्होंने जैनधर्म स्वीकार किया। इतना ही नहीं, उन्होंने महेन्द्रसूरि नामक [illegible]न [illegible]रु के पास से स्याद्वाद् सिद्धान्त का अध्ययन कर जैन दर्शन में गम्भीर पारदर्शिता प्राप्त की थी। महाकवि [illegible]पाल के इस धर्म परिवर्तन से महाराजा भोज को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने धनपाल से इस मत्र [illegible] शास्त्रार्थ किया। पर इसमें महाकवि धनपाल ने जैन धर्म के महत्व को महाराजा भोज पर अंकित किया।

महाकवि धनपाल बड़े प्रतिभाशाली कवि और ग्रन्थकार थे। आपकी लिखी हुई 'तिलक मंजरी' [illegible] ही उच्च श्रेणी का ग्रंथ है। इसमें जैन सिद्धान्तों का गम्भीर तथा सुन्दर विवेचन है।

इस ग्रन्थ के अवलोकन से महाकवि धनपाल के उदार हृदय का पता लगता है, [illegible]

---

(२) अल्ल से शायद मेवाड़ के अल्लट नरेश का बोध होता है। [illegible] [illegible] है कि वह मेवाड़ के आहड़ (आघाट) प्रान्त में राज करता था

वे सम्राट के निकट पधार कर उन्हें दर्शन दें। इस पर गुजरात के सूबे साहिबखान ने अहमदाबाद खास श्रावकों को बुलाया और उनसे सम्राट अकबर के फरमान की बात कही। इस पर ... गण आचार्यजी के पास उपस्थित हुए और बड़े विनीतभाव से सम्राट के निवेदन का ... निवेदन की।

आचार्य हीरविजयसूरि बड़े दूरदर्शी थे। उन्होंने सम्राट् अकबर जैसे ... उपदेश देने में जैन धर्म का गौरव समझा और वे सम्राट् से मिलने के लिये रवाना हो गये।

आचार्यवर विहार करते हुए मही नदी उतर कर अहमदाबाद पहुँचे। ... आपको अत्यन्त आदर के साथ बुलाया और अकबर के फर्मान का आपके सन्मुख जिक्र किया। यह भी कहा कि द्रव्य, रथ, हाथी, अश्व, पालकी आदि सब आपके लिये तैयार हैं। जो आप ... में करने के लिये प्रस्तुत हूँ। इस पर आचार्य देव ने जवाब दिया कि जैन साधु का ... तमाम वस्तुओं से मोह हटा कर वीतराग होकर आत्मकल्याण करना है। उन्हें सांसारिक वैभव ... कार नहीं। इस बात का उक्त सूबेदार पर बहुत असर पड़ा। इसके बाद सूरीश्वर श्री हीरविजय... पास जाने के लिए फतहपुर सीकरी को रवाना हो गये। क्योंकि इस समय अकबर का मुकाम वहीं ... इस विहार में आपके साथ बादशाह के कुछ दूत भी थे। वीसलपुर, महिसाणा पाटन, ... आदि कई स्थानों में विहार करते हुए आप सरोतरा नामक गाँव में आये। वहाँ भीलों के मुखि... दार अर्जुन ने आपसे उपदेश ग्रहण किया और उसने अपने सब भील साथियों में अहिंसा ... किया। इस स्थान में पर्युषण करने के बाद आप आबू पर वहाँ के सुप्रसिद्ध मन्दिर के दर्शन ... पधारे। वहाँ से आप शिवपुरी (सिरोही) आये। आइने अकबरी के प्रथम भाग में लिखा है ... के राजा सुरताण ने आपका बड़े धूमधाम के साथ स्वागत किया। जगद्गुरु काव्य भी इस ... करता है। वहाँ से आप सादड़ी पधारे और राणकपुर की यात्रा कर मेड़ता चले आये। ... समय मुसलमानों का अधिकार था। वहाँ के सादिल सुलतान ने आपका बड़ा आदरातिथ्य ... बाद आप फलौदी पार्श्वनाथ के दर्शन करने के लिये गये। इस स्थान पर आपको विमलहर्ष नामक सज्जन मिले जिन्हें आपके पास सम्राट् अकबर ने भेजा था।

विमलहर्ष ने लौट कर बादशाह अकबर से सूरिजी के प्रयाण का समाचार ... इस पर बादशाह की आज्ञा से स्थानसिंह आदि सज्जनों ने बड़े समारोह के साथ सूरिजी ... किया और ठाट बाट के साथ उन्हें फतेहपुर सीकरी ले गये। आचार्य श्री संवत १६३९ के ...

ार्य अभयदेवसूरिजी

आप बड़े प्रभावशाली जैन आचार्य थे। सुप्रसिद्ध गुर्जराधिपति राजा सिद्धराज जयसिंह ने ो "मलधारी" की उपाधि से विभूषित किया था। सौराष्ट्र के राजा खेंगार ने भी आपका बड़ा ाया था। आपने एक हजार से अधिक ब्राह्मणों को जैन धर्म में परिवर्तित किया। आपके उपदेश नपाल राजा ने जैन मन्दिर में पूजा करने वालों पर लगने वाला कर माफ किया था। शाकंभरी र) के राजा पृथ्वीराज ने आपके उपदेश से रणथंभोर नगर में जैन मन्दिर बनवा कर उस पर स्वर्ण चढ़वाया। आपके प्रतिबोध से सिद्धराज ने अपने राज में पर्युषण पर्व पर हिंसा करने की मनाही थी। विक्रम संवत् ११४२ की माघ सुदी ५ को अतरीक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति की आपने प्रतिष्ठा उक्त अतरीक्ष पार्श्वनाथ का तीर्थ आज दिन भी प्रसिद्ध है। श्री भावविजय गणीजीने अपने महात्म्य में आपकी इस प्रतिष्ठा का सविस्तृत उल्लेख किया है।

आपने अपने जीवन के अन्तिम काल में अनशनव्रत धारण किया और इसीसे आप अजमेर नगर ग्राम पधारे। आपका अग्निसंस्कार बड़े धूमधाम के साथ हुआ। रणथंभोर के जैन मन्दिर के लालेख में लिखा है कि 'अजमेर के तत्कालीन राजा जयसिंहराज अपने मन्त्रियों सहित आपकी साथ श्मशान तक गये थे"। इतना ही नहीं प्रति घर एक एक आदमी को छोड़ कर अजमेर नगर की सारी जनता आपके अग्नि संस्कार के समय उपस्थित थी।

ार्य जिनदत्तसूरिजी

आप आचार्य जिनवल्लभसूरिजी के पट्टधर शिष्य थे। आपने हजारों राजपूतों को प्रतिबोध दे जैन श्रावक अर्थात् ओसवाल बनाया था। आप बड़े प्रभावशाली और विद्वान आचार्य थे। ाज यद्यपि आपका शरीर इस संसार में नहीं है पर आज भी आप सारे जैनसमाज में दादा नाम ात हैं। संवत ११६९ में आपको सूरिपद प्राप्त हुआ। संवत १२११ में अजमेर में आपका स्वर्गवास ां आपका स्मारक अभी तक विद्यमान है जो दादा वाड़ी के नाम से विख्यात है। आपने अनेक ों रचना की, जिनमें निम्नलिखित ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं। (१) गणधर सार्धशतक प्राकृत गाथा देव दोलावली (२) गणधर सप्तती (४) सर्व धिष्ठायि स्तोत्र (५) सुगुरु पारतन्त्र (६) विघ्न स्तोत्र (७) अवस्था कुलक (८) चैत्य वन्दन कुलक, आदि आदि।

उत्तर दिया कि जैन मुनि निस्पृह होते हैं। वे संसार के बडे से बडे वैभव की तनिक भी [illegible]
करते। इस पर फिर सम्राट् ने निवेदन किया कि आप कुछ भेंट तो स्वीकार कीजिये। [illegible]
देव ने कहा कि आप कैदियों को बन्धन मुक्त कीजिये और पींजरे के पक्षियों को छोड दीजिये।
अतिरिक्त पर्युषण के आठ दिनों में अपने साम्राज्य में हिंसा बन्द कर दीजिये। कहने को आवश्यकता
कि सम्राट ने कैदियों को मुक्त किया, पींजरे से पक्षी छोडे गये और कई तालावों में, सरोवरों में [illegible]
मारने के आदेश किये गये। इसी समय अर्थात् संवत् १६४० मे आचार्य्यवर श्री हीरविजयसूरि
की उच्च उपाधि से विभूषित किये गये।

इसके बाद थानसिंह ने आप के द्वारा कई जैन बिम्बों की प्रतिष्ठा करवाई। इसी समय
अपने शिष्य शांतिचन्द्र को उपाध्याय का पद प्रदान किया। जौहरी दुर्जनमल ओसवाल ने [illegible]
श्री से कई जैन बिम्बों की प्रतिष्ठा करवाई। इस प्रकार बहुत से धार्मिक कार्यों [illegible]
संवत् १६४० में आप को फतहपुर सीकरी ही में चातुर्मास करना पडा। इस चातुर्मास के [illegible]
बावन गज ऋषभनाथजी की यात्रा के लिये पधारे। संवत् १६४२ मे आप ने आगरा मे चातुर्मास [illegible]
इसके बाद गुजरात से विजयसेनसूरि आदि मुनि संघ का आप को निमन्त्रण मिला। आप सम्राट के
अपने शिष्य शांतिचन्द्र उपाध्याय को छोड कर गुजरात के लिए रवाना हुए। शांतिचन्द्रजी ने भी [illegible]
पर बहुत अच्छा धार्मिक प्रभाव डाला और कई मद्य माँस के भक्षकों के बुरे खान पान को भी [illegible]

आचार्य्य श्री हीरविजयसूरि बिहार करते हुए नागौर पहुँचे। वहाँ पर संवत् १६४३ [illegible]
ने चातुर्मास किया। वहाँ के तत्कालीन राजा जगमाल के वणिक मन्त्री मेहाजल ने आप की [illegible]
की। इस समय अनेक देशों से अनेक धार्मिक संघ आचार्य्य श्री के दर्शनों के लिये आये। [illegible]
के वैराट नगर से वहाँ के अधिकारी इन्द्रराज का आप को निमन्त्रण मिला जहाँ आप ने अपने [illegible]
ध्याय कल्याणविजयजी को प्रतिष्ठा करवाने के लिये भेजा। इसके बाद आप आबू यात्रा क[illegible]
वहाँ तत्कालीन सिरोही नरेश ने सिरोही में चातुर्मास करने का आप से बडा आग्रह किया। [illegible]
यह भी प्रार्थना की कि अगर आचार्य्य श्री मेरे राज्य में चातुर्मास करेंगे तो मैं प्रजा के बहुत [illegible]
कर प्रजा के कष्टों का निवारण करूँगा और सारे राज्य में जीव हिंसा न करने का आदेश निकाल[illegible]
पर संवत् १६४४ में हीरविजयसूरि ने वहाँ पर चौमासा किया। श्री वृषभदास कृत 'हीरवि[illegible]
नामक ग्रन्थ से पता लगता है कि उक्त राजा ने अपने वचन का बराबर पालन किया।

हीरविजयसूरि विहार करते २ गुजरात के पाटन नगर में पहुँचे और संवत् १६[illegible]
वहाँ पर चातुर्मास किया। जैसा कि हम ऊपर कह चुके है कि हीरविजयसूरि अपने शिष्य [illegible]

ग ने क्रियाहीन चैत्यवासियों को हराकर गच्छ से बाहर किये। ये महान् विद्वान् और प्रभावशाली उन्होंने पंच प्रमाणिका, तथा जिन चैत्य-वंदन विधि आदि बहुत से ग्रन्थ रचे। संवत् ११५४ में देहान्त हुआ।

द्रसूरिजी

आप संवत् ११६८ मे विद्यमान थे। आपने अनेक ग्रंथ रचे जिनमे पार्श्वनाथ चरित्र, संवेग ग, वीरचरित्र तथा कथा रत्न कोष आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जिस वक्त आपने भड़ौच में श्री थ चरित्र रचा था उस समय वहां मुनि सुव्रतस्वामी का स्वर्ग गुम्मज वाला जैन मन्दिर न था।

हेमचन्द्राचार्य्यजी

जैन साहित्याकाश मे श्री हेमचन्द्राचार्य्य का नाम शरद् पौर्णिमा के पूर्ण चन्द्र की तरह आलो रहा है। संसार के अत्यन्त प्रकाशमान विद्वानों, कवियों और तत्वज्ञों में हेमचन्द्राचार्य्य का आसन चा है। श्री हेमचन्द्राचार्य की विद्वत्ता अलौकिक और अगाध थी। उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। विविध विषयों पर महान् ग्रन्थ रचे जो आज भी संस्कृत साहित्य के लिये बड़े गौरव की वस्तु हैं।

इन महाप्रतिभाशाली आचार्य्यदेव का जन्म संवत् ११४५ की कार्तिक पौर्णिमा के दिन हुआ। र बिरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत इनपर पूर्ण रूप से लागू होने लगी। थोड़ी ही अवस्था ने देवचन्द्र सूरि से जैनधर्म की दीक्षा ली। आप पूर्व जन्म के सुसंस्कार से कहिये तथा आपकी तीव्र शक्ति या धारणा शक्ति से कहिये, आपने जैन शास्त्रों का गंभीर ज्ञान प्राप्त कर लिया। उत्कट सयम, इन्द्रिय दमन, वैराग्य वृत्ति से आजन्म तक आपने नैष्टिक ब्रह्मचर्य्य व्रत सेवन किया। पहिले नाम सोमचन्द्र था, पर संवत ११६२ मे आप के गुरू ने मारवाड़ के नागोर नगर में आपको आचार्य्य विभूषित किया और आप का नाम सोमचन्द्र से बदल कर हेमचन्द्र रक्खा। धीरे २ आप की का प्रकाश बढ़ती हुई चन्द्रकला की तरह चमकने लगा। आप विविध ग्रामों में घूमते हुए गुज- के महान राजधानी अणहिलपुरपाटण मे पधरे। उस समय वहाँ महाराज सिद्धराज जयसिंह करते थे। ये बड़े पराक्रमी, प्रजाप्रिय और विद्वानों का बड़ा सत्कार करनेवाले थे। हेमचन्द्राचार्य्य की ति सारे नगर से फैल गई। राजा ने आप को अपनी सभा में निमन्त्रित किया। आचार्य्यवर के प्रतिभा से सारी सभा मे संस्कृति का प्रकाश चमकने लगा। श्री हेमचन्द्राचार्य्य के अगाध

स्वर्ण मुद्राओं को आचार्य्य श्री ने अस्वीकार कर दिया। इसी समय जामनगर के तत्कालीन ... के साथ उनके मन्त्री अब्जी भंसाली ऊना पहुँचे और उन्होंने आचार्य्य देव की ... पूजा ... मुद्रा से की। इसी समय आचार्य्य देव ने ऊना के अधिकारी खानमहम्मद से ... हुआ। १६५२ के वैसाख मास मे आपने ऊना में एक मन्दिर की प्रतिष्ठा की और इसी साल के भादवा सु... गुरुवार के दिन आपका स्वर्गवास हो गया।

आचार्य्य वर हीरविजयसूरि का संक्षिप्त परिचय हम ऊपर दे चुके है। जैन इतिहास ... आपके महान् कार्य्यों का उल्लेख बडे अभिमान और गौरव के साथ करेंगे। आपने भगवान स्वामी के अहिंसा सिद्धान्त की सारे हिन्दुस्थान में दुन्दुभी बजाई। तत्कालीन मुगल सम्राट ... भारत के कई राजा महाराजा और दिग्गज विद्वान आपके अलौकिक तेज के आगे सिर झुकाते थे। ... अलौकिक विभूति थे और उस समय आपने अपने आत्मिक प्रकाश से सारे भारतवर्ष को ... था। अबुलफजल आदि कई मुसलमान लेखकों ने भी आपकी अपने ग्रन्थों मे बडी प्रशंसा की है।

जिनचन्द्रसूरि

आप भी जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय के एक बडे प्रख्यात आचार्य्य हो गये है। आप ... के बडे प्रकाण्ड पंडित थे। एक समय सम्राट अकबर ने मेहता करमचन्द से पूछा कि इस समय ... का सबसे बडा पण्डित कौन है। तब करमचन्दजी ने आचार्य्य जिनचन्द्रसूरि का नाम बतलाया ... समय उक्त सूरिजी गुजरात के खम्भात नगर में थे। उन्हें सम्राट की ओर से निमंत्रित किया गया। ... पर आप बादशाह की मुलाकात के लिये रवाना हो गये। अहमदाबाद, सिरोही होते हुए ... पहुँचे और वहाँ पर आप ने चातुर्मास किया। वहाँ से मगसर मास मे विहार कर मेडता, नागौर, ... नेर, राजलदेसर, मालसर, रिणपुर, सरसा आदि स्थानों मे होते हुए फाल्गुन सुदी १२ को ... पहुँचे। उस समय सम्राट अकबर लाहौर में थे और उन्होंने आचार्य्य श्री का बडा सन्मान किया। ... के आग्रह से आप ने लाहौर में चातुर्मास किया। इस वक्त जयसोम, रत्ननिधान, गुणविनय और ... आदि जैन मुनि आप के साथ थे।

कहने की आवश्यकता नहीं कि जिनचन्द्रसूरि ने बादशाह अकबर पर बड़ा ही ... डाला। सूरिजी ने सम्राट से कहा कि द्वारिका में जैन और जैनेतर मन्दिरों को नौरंगखाँ न... है, आप उनकी रक्षा कीजिये। इस पर सम्राट अकबर ने जवाब दिया कि "शत्रुंजय आदि सब ... मंत्री करमचन्द के सुपुर्द कर दूँगा तथा मैं तत्सबंधी फर्मान अपनी निजी मुद्रा से ...

ध राज दरबार में लाया गया। जब हाथी पर इस ग्रन्थ की सवारी निकल रही थी तब दो सुन्दरियाँ र चँवर डुला रही थी। इसके बाद राजसभा मे विद्वानों द्वारा इसका पठन करवाया गया। यह रण भारतवर्ष के विद्वानों मे अत्यधिक विश्वसनीय और माननीय समझा जाता है। पाणिनी और शाक- । को छोड़कर इस व्याकरण के बर बर किसी भी अन्य सस्कृत व्याकरण का आदर नहीं है।

श्री हेमचन्द्राचार्य्य ने लोक-कल्याण में अपने जीवन को समर्पित कर दिया था। वे महा वशाली पुरुष थे। उन्होंने कोई ३॥ लाख मनुष्यों को जैनधर्म का अनुयायी बनाया। उन्हीं के उपदेश मारपाल ने जैनधर्म की बडी ही प्रशंसनीय प्रभावना की। जिस प्रकार आचार्य्य श्री ने सिद्धराज के ए मे सिद्ध हेम व्याकरण रचा उसी प्रकार आपने कुमारपाल के लिए योगशास्त्र, वीतराग स्तोत्र, ष्टि शलाका पुरुष चरित्र नामक ग्रन्थ रचे। इनके अतिरिक्त द्वयाश्रय, छंदोनुशासन, अलंकार, नाम , आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ भी निर्मित किये। श्री हेमचन्द्राचार्य्य के जीवन को जगत में शाश्वत प्रकाशित वाला उनका अगाध ज्ञान और उनके अलौकिक ग्रन्थ हैं। उन जैसे सकलशास्त्रों में पारंगत विद्वान वे इतिहास में बहुत ही कम मिलेंगे। अपने अपरिमित ज्ञानही के कारण वे कलिकाल सर्वज्ञ कहलाये। ख्यात् पाश्चात्य विद्वान पिटर्सन ने उन्हे ज्ञान का सागर (Ocean of knowledge) कहा है। कहा है कि उन्होंने ३॥ करोड श्लोकों की रचना की।

यद्यपि अभी तक आचार्य्य हेमचन्द्र का इतना साहित्य उपलब्ध नहीं है, पर जो कुछ भी उपलब्ध है इतना विशाल है कि जिसे देखकर आचार्य्य श्री की अगाध विद्वत्ता का पता मिलता है।

मचन्द्राचार्य्य की साहित्य सेवा

श्री हेमचन्द्राचार्य्य की साहित्य सेवा का थोडा सा परिचय हम ऊपर दे चुके है। ार्य्य श्री के व्याकरण के सम्बन्ध में यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि उक्त व्याकरण अति प्रामाणिक ध, सरल और विश्वसनीय है। पूर्व समय के आपिशली, यास्क, शाकटायन, गार्ग्य, वेद मित्रशाकल, ोर्ग्य, शेषभट्टारक, पतञ्जली, पाणिनि, देवनंदी, जयादित्य, विश्रात, विद्याधर, विश्रान्तन्यासकार, शाकटायन, दुर्गसिंह, श्रुतपाल, क्षीर स्वामी, भोज, नारायण कठी, द्रमिल, शिक्षाकार, उत्पल, न्यास- , पारायण कार, आदि अनेक प्रसिद्ध पूर्वगामी व्याकरणों का उल्लेख आपके व्याकरण में मिलता है। ने अपने व्याकरण मे इन सब वैयाकरणों के मतों का बडे ही विवेक के साथ उपयोग किया है और र उनकी समालोचना भी की है। इससे आपका व्याकरण भारतीय साहित्य के इतिहास में एक अलौकिक हो गया है।

मुनि भानुचन्द्र

आपका भी सम्राट् अकबर पर बड़ा प्रभाव था। आप उन्हें हर रविवार को 'सूर्य-सहस्रनाम' सुनाते थे। सुप्रख्यात इतिहास वेत्ता बदौनी लिखता है कि ब्राह्मणों की तरह सम्राट् अकबर प्रातः पूर्व दिशा की तरफ मुख करके खड़ा रह कर सूर्य्य की आराधना करता था और वह संस्कृत में सूर्य के सहस्र-नाम भी सुना करता था।

मुनि सिद्धचन्द्र

आप मुनि भानुचन्द्रजी के शिष्य थे। आपसे भी सम्राट् अकबर बड़े प्रसन्न थे। शत्रुंजय तीर्थ में नये मन्दिर बनवाने की बादशाह की ओर से जो निषेधाज्ञा थी उसे आपने मंसूख करवाया। सिद्धिचन्द्रजी फारसी भाषा के भी बड़े विद्वान थे। सम्राट ने आप को 'खुश फहेम' की पदवी दी थी। एक समय अकबर ने बड़े स्नेह से आपका हाथ पकड़ कर कहा कि मैं आपको ५००० का मन्सब और जागीर देता हूँ, इसे आप स्वीकार कर साधुवेष का परित्याग कीजिये। पर यह सिद्धि-चन्द्रजी ने स्वीकार न की। इससे बादशाह और भी अधिक प्रभावित हुए। इस वृतान्त को सिद्धिचन्द्रजी ने अपनी कादम्बरी की टीका में लिखा है।

विजयसेन

आप भी बड़े प्रभावशाली जैन मुनि थे। विजय प्रशस्ति नामक ग्रन्थ में लिखा है कि सूरत में चिंतामणि मिश्र आदि पण्डितों की सभा के समक्ष भूषण नामक दिगम्बराचार्य्य को शास्त्रार्थ में निरूत्तर किया था। अहमदाबाद के तत्कालीन सूबे खानखाने को अपने उपदेशामृत से खुश किया था। आप बड़े विद्वान थे और आप की विद्वता का एक प्रमाण यह है कि आपने योग शास्त्र के प्रथम श्लोक के कोई ७०० अर्थ किये थे। विजय प्रशस्ति काव्य में लिखा है कि श्री विजयसेनजी ने गंधार, अहमदाबाद, खम्भात, पाटन आदि स्थानों में लगभग चार लाख जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा की। इसके अतिरिक्त आप के उपदेश से तारगा, शंखेश्वर, सिद्धाचल, पंचासर, राणपुर, आरासण और बीजापुर आदि स्थानों के मंदिरों के पुनरुद्धार किये गये।

विजयदेवसूरि

आप उपरोक्त विजयसेनसूरि के पट्टधर शिष्य थे। संवत् १६७४ में सम्राट जहाँगीर ने मांडव-गढ़ स्थान में आपकी तपश्चर्या से मुग्ध हो कर आपको 'जहाँगिरी महातपा' नामक उपाधि से विभूषित किया। आप बड़े तेजस्वी और तपस्वी थे।

प दिखलाया गया है और उसके निरूपण में लगभग ५५ नाटकादि निवन्धों के उदाहरण दिये हैं।

प्रबन्ध चिन्तामणि नामक ग्रन्थ में रामचन्द्रसूरि को प्रबन्धशतकर्त्ता के नाम से सम्बोधित किया है। इसमें कितने ही विद्वानों ने यह अनुमान किया है कि उन्होंने सब मिला कर सौ ग्रन्थों की न की होगी। पर फिल हाल उनके इतने ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। फिलहाल उनके जो जो ग्रन्थ उपलब्ध वे निम्न लिखित हैं। सत्य हरिश्चन्द्र नाटक, कौमुदी मित्रानंद, निर्भय भीम व्यायोग, राघवाभ्युदय, ाभ्युदय, यदुविलास, रघुविलास, नवविलास नाटक, मल्लिका मकरन्द प्रकरण, रोहिणी मृगांक प्रकरण, ाला नाटिका, कुमार विहारशतक, सुधाकलश, हैम बृहद् वृत्ति न्यास, युगादिदेव द्वात्रिंशिका, प्रसाद िंशिका आदिदेवस्तव, मुनिसुव्रतस्तव, नेमिस्तव, सोलाजिनस्तव, तथा जिन शास्त्र। इन तमाम ग्रन्थों चना मौलिक है और उसमें लेखक के महान् व्यक्तित्व की छाप जगह २ पर प्रकट होती है।

हेन्द्रसूरि

रामचन्द्र सूरि के अतिरिक्त हेमचन्द्राचार्य्य के गुणचन्द्र, महेन्द्रसूरि, वर्द्धमानसूरि, सोमप्रभसूरि बड़े शिष्य थे। गुणचन्द्रसूरि ने, रामचन्द्रसूरि के साथ मिल कर कुछ ग्रंथों की रचना की थी। महेन्द्रसूरि ने १२४१ में श्री हेमचन्द्राचार्य्य कृत कैरवा कर कोमुदी नामक ग्रन्थ की टीका की। श्री वर्द्धमान ने कुमार विहार प्रशस्ति काव्य नामक ग्रन्थ की रचना की। उक्त तीनों मुनी राजों का प्रतिबंधक ख्यान राजा कुमारपाल ने सुनाया। हेमचन्द्र के एक दूसरे शिष्य देवचन्द्र ने एक 'चन्द्रलेखा विजय' व ग्रन्थ रचा। कहने का अर्थ यह है कि श्री हेमचन्द्राचार्य्य के बाद भी उनके शिष्यों का गुजरात के ालीन नरेशों पर अच्छा प्रभाव था।

यह कहने में तनिक भी अतिशयोक्ति न होगी कि हेमचन्द्राचार्य्य अपने युग के प्रवर्तक थे। साहित्य के इतिहास में वह युग "हेमयुग" के नाम से प्रसिद्ध है। जैन शासन और साहित्य के यह युग वैभव, प्रताप तथा विजय से देदीप्यमान युग था। उसका प्रभाव सारे गुजरात पर पड़ा आज भी उस युग को लोग हेम-मय, स्वर्णमय युग कहकर स्मरण करते हैं।

लवाटी आचार्य्य

आप भी जैन साहित्य के अच्छे विद्वान् थे। आपने धर्मोतर टिप्पणक नामक प्राकृत भाषा का ग्रन्थ ताड़ पत्र पर लिखा, जिसकी मूल कापी अब भी पाटन के भण्डार में मौजूद है।

पातंजल योग के चौथे मोक्ष पद पर वृत्ति, योग विंशिका, हरिभद्रसूरि कृत शास्त्र समुच्चय पर स्याद्वाद कल्पलता नामक टीका, हरिभद्रसूरि कृत शोडशक पर योगदीपिका नामक उपदेश रहस्य सवृत्ति, न्यायालोक, महावीर स्तवन सटीक, ऊपरनाय न्याय खण्डन पद्य प्रका रहस्य सटीक, तत्वार्थवृत्ति प्रथमाध्याय विवरण, वैराग्य कल्पलता, धर्मपरीक्षा सवृत्ति, चतुर्विंशति जि परीक्षा सवृत्ति, परम ज्योति पंच विंशतिका, प्रतिमा स्थापन न्याय, प्रतिमा शतक पर स्वोपज्ञ, मत अनेकांत मत व्यवस्था, समंतभद्र कृत आप्त परीक्षा पर टीका, स्याद्वाद मंजूसा, आकर, मंगलवा वाद, वादमाला, त्रिसूत्र्यालोक, द्रव्यालोक, प्रमारहस्य, स्याद्वाद रहस्य, वाद रहस्य, ज्ञानार्णव, इ विशदी करण, अलंकार चूडामणि की टीका, छंद चूडामणि की टीका, काव्य प्रकाश की टीका ब बिंदु, तत्वालोक विवरण, वेदांत निर्णय, वैराग्य रति, सिद्धान्त तर्क परिहार, सिद्धांत मंजरी टीका नाम उल्लेखनीय हैं।

उपरोक्त सूची के देखने से पाठकों को आचार्य्य श्री यशोविजयजी की अगाध विद्वत्ता का हो जायगा। आपकी विद्वत्ता की छाप न केवल जैन समाज ही पर वरन् अन्य समाजों पर भी गह अंकित थी। काशी विद्वानों ने आपको 'न्याय विशारद' के पद से विभूषित किया था। उस समय कीर्ति सारे साक्षर भारत में फैली हुई थी। इस समय में भी काशी मे श्री यशोविजय जैन पा आपके स्मारक रूप में बना हुआ है।

समयसुन्दरजी

आप साकलचन्दजी गणी के शिष्य थे और १६८६ में विद्यमान थे। इन्होंने "र ददत सौख्य" इस वाक्य के ८ लाख जुदा २ अर्थ करके ८० हजार श्लोकों का एक प्रामाणिक ग्र था। इसके अलावा इन्होंने गाथा सहस्री विषयवाद शतक, तथा दश वैकालिक सूत्रम् आदि रची थीं।

विजय सेन सूरि

आप हीरविजयसूरि के पट्ट शिष्य थे और बहुत प्रभावशाली मुनि थे। आपके शि और परमानन्द ने जहाँगीर बादशाह को जैन धर्म का महत्व बतलाकर धार्मिक लाभ के लिए प्र हासिल किये थे। इसी प्रकार धर्म की और भी तरक्की इनके हाथों मे हुई।

रचन्द्रसूरि

आप संस्कृत साहित्य के वडे ही नामांकित विद्वान् थे। आप के ग्रंथों की कीर्ति न केवल माज मे वरन् ब्राह्मण समाज मे भी फैली हुई थी। ब्राह्मणों में उनके वालभारत और कवि कल्पलता शेष प्रख्यात् है। आप ने कवि कल्प लता पर 'कवि शिक्षा" नाम की टीका भी रची। इसके क आपने छंदो रत्नावली, काव्य कल्प लता परिवल, अलंकार प्रवोध, स्याद्वाद समुच्चय, पद्मानंद आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रथ रचे। आप के पद्मानद काव्य मे २४ तीर्थङ्करों का चरित्र अंकित किया । इसी से उसका दूसरा नाम जिनचरित्र भी है।

अमरचन्द्रसूरि वडे मेधावी और प्रतिभावान कवि थे। वस्तुपाल जैसे महान् पुरुष उनके पैरों र झुकाते थे। राजा विसलदेव भी उन्हे वहुत मानते थे।

सिंहसूरि

आप वीरसूरि के शिष्य और भडोंच के मुनि सुव्रत स्वामी के मन्दिर के आचार्य थे। एक मंत्री तेजपाल यात्रा करते हुए उक्त मन्दिर में पहुँचे। तब उक्त सूरिजी ने एक काव्य के द्वारा आप ति की और उक्त मंत्री महोदय से सोने का ध्वजा दंड चढ़ाने का आग्रह किया। मंत्री तेजपाल रजी के इस आग्रह को स्वीकार किया और उन्होंने मन्दिर पर सोने का ध्वजा डंड चढ़ा दिया। इस पर ने वस्तुपाल तेजपाल नामक दोनों भाइयों की प्रशंसा में एक सुंदर प्रशस्ति काव्य रचा, और उसे मन्दिर की भींत मे खुदवा दिया। इस काव्य मे मूलराज से वीरधवल राजा तक की वंशावली तक का लिक वर्णन दिया गया है। इसके सिवाय आपने हम्मीरमद मर्दन काव्य नामक एक नाटक ग्रथ यह एक ऐतिहासिक नाटक है और इसमें वस्तुपाल तेजपाल द्वारा मुसलमानों के आक्रमणों को किये जाने का मधुर वर्णन है। इस नाटक की ताडपत्र पर लिखी हुई सवत् १२८६ की एक मिली है।

प्रभसूरि

आप वस्तुपाल के गुरु तथा विजयसेनसूरि के शिष्य थे। आप को वस्तुपाल ने सूरिपद से अलंकृत था। आपने सुकृति कल्लोलिनी नामक प्रशस्ति काव्य की रचना की, जिस में वस्तुपाल तेजपाल के भाइयों और दान का गुणानुवाद किया गया है। संवत् १२७८ में जब वस्तुपाल ने शत्रुंजय की

विनय विजय उपाध्याय

ये श्री यशोविजय के समकालीन और उनके बड़े विश्वास पात्र थे। अपने समय के प्रतिभाशाली और नामाङ्कित विद्वान थे। हीरविजयसूरि के शिष्य कीर्तिविजयसूरि इनके गुरु थे। कल्पसूत्र पर ६५८० श्लोक की कल्प सुबोधिका नामक टीका रची। इसी प्रकार नयकर्णिका और प्रकाश नामक २० हजार श्लोक की एक विशाल पद्यबद्ध ग्रन्थ की रचना की। इसी प्रकार आपने भी कई बहुमूल्य ग्रन्थों की रचना की।

श्री मेघविजय उपाध्याय

ये भी श्री हीरविजयसूरि की परम्परा में यशोविजय के समकालीन थे। न्याय, व्याकरण, ज्योतिष और अध्यात्म विषय के ये प्रकाण्ड पण्डित थे। इन्होंने संवत् १७२७ में देवानन्दाभ्युदय काव्य सादडी में रचकर तैयार किया। इसका प्रत्येक श्लोक महाकवि माघ रचित माघ काव्य के प्रति श्लोक का अन्तिम चरण लेकर प्रारम्भ किया गया है और बाद की तीन २ लाइनें उन्होंने अपनी ओर से बनाई। इस ग्रंथ में सात सर्ग हैं। इसी प्रकार मेघदूत समस्या नामक एक १३० श्लोक का काव्य भी इन्होंने बनाया है इसमे भी मेघदूत काव्य के प्रत्येक श्लोक का अन्तिम चरण कायम रखकर इन्होंने उसे पूर्ण किया है। इसी प्रकार श्री विजय प्रभसूरि के जीवनचरित्र को प्रकाशित करने वाला एक दिग्विजय महाकाव्य रचा है जिसमे आचार्य्य श्री के पूर्वाचार्य्य का संक्षिप्त वर्णन और तपागच्छ की पट्टावलि दी है। इसी प्रकार इन्होंने अपने शान्ति-नाथ चरित्र मे भी अपनी काव्य प्रतिभा का पूरा चमत्कार बतलाया है। इसमें श्री हर्ष रचित नैषधीय महाकाव्य के श्लोक का एक २ चरण लेकर उसे अपने तीन चरणों के साथ पूर्ण किया है। मगर इनकी काव्य प्रतिभा का सबसे अधिक चमत्कार इनके "सप्त सधान" नामक ग्रंथ में दिखलाई देता है। यह काव्य नवसर्गों में विभक्त है। उसमें प्रत्येक श्लोक ऋषभदेव, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर ये पाँच तीर्थङ्कर तथा रामचन्द्र और कृष्ण वासुदेव इन सात महापुरुषों के सम्बन्ध मे है। इसमें का प्रत्येक श्लोक इन सातों महापुरुषों के सम्बन्ध में एक ही प्रकार से भिन्न २ घटनाओं का उल्लेख करता है। इस काव्य पर इन्होंने स्वयं ही टीका भी रची है।

इसी प्रकार आपकी पच तीर्थ स्तुति, पंचाख्यान (पंचतंत्र) लघुत्रिषष्ठि चरित्र नामक (त्रिषष्टि शलाका पुरुष) चन्द्रप्रभा हेमकोमुदी नामक व्याकरण, उदयदीपिका, वर्ष प्रबोध, मेघमहोदय, रमलशास्त्र इत्यादि ज्योतिष ग्रन्थ और मातृ का प्रसाद, तत्वगीता, ब्रह्मबोध नामक आध्यात्मिक ग्रंथों की रचना की। प्राकृत भाषा में आपने युक्ति प्रबोध नामक ४२०० श्लोक के एक विशाल ग्रंथ की रचना की। मतलब यह कि आपकी प्रतिभा सर्वतो मुखी थी।

सुन्दरसूरि

आप बड़े योगाभ्यासी और मंत्र तंत्रों के ज्ञाता थे। निमित्त शास्त्र के भी आप पारगामी विद्वान कुछ राजाओं पर भी आपका प्रभाव था। संवत् १४२० में आप को सूरिपद प्राप्त हुआ। आप के शिष्य थे।

सुन्दरसूरि

आप उपरोक्त देवसुन्दरसूरि के शिष्य थे। आप के कोई ढाईसौ शिष्य थे। कहा जाता है समय किसी द्वेषी मनुष्य ने आप का वध करने के लिये कुछ आदमियों को लालच देकर के भेजा। लोग आप को मारने के उद्देश्य से आप के पास पहुँचे तब आप की परम शांतिमय मुद्रा को देख कर विस्मित हुए और मन में विचार करने लगे कि अहिंसा और शांति के परमाणु वरसाने वाले इस परम राज को मार कर हम किस भव में छूटेंगे। यह विचार कर वे आचार्य्य श्री के पैरों पड़ कर क्षमा- ा करने लगे। श्री सोमसुन्दरजी महाराज बहुत प्रभावशाली साधु थे। आप संवत् १४५० में मान थे।

नेसुन्दरसूरि

आप श्री सोमसुन्दरसूरि के पाट पर विराजमान हुए। आप महान् विद्वान् थे। संवत् १४७८ प को आचार्य्य का पदवी मिली। उपदेश रत्नाकर, अध्यात्म कल्पद्रुम आदि कई ग्रंथ आप की अगाध ा के परिचायक हैं। आप सरस्वती की उपाधि से भी विभूषित थे। गुजरात का सुलतान मुजफ्फर- आपको बहुत मानता था। उसने भी आप को कई सम्मानपूर्वक उपाधियाँ प्रदान की थी। आप पे यह कहा जाता है कि आप नित्य प्रति १००० श्लोक कण्ठस्थ कर लेते थे। आपके उपदेश से राजाओं ने अहिंसा धर्म को स्वीकार किया था। बड़नगर के देवराजशाह नामक श्रावक ने कोई १००) खर्च करके आप को सूरिपद प्राप्त होने के उपलक्ष में महोत्सव किया था।

नशेखरसूरि

आप मुनि सुन्दरसूरि के शिष्य थे। आप भी महान् विद्वान और प्रतिभाशाली साधु थे। आप द्धप्रतिक्रमण वृत्ति, श्राद्धविधि सूत्र वृत्ति लघुक्षेत्र समास तथा आचार प्रदीप आदि कई ग्रंथ रचे थे।

उच्च वक्ता हैं। आपकी युक्तियाँ अकाट्य रहती हैं। ज्योतिष, वैद्यक आदि विषयों के भी आप ज्ञा
आपके पाटवी शिष्य आचार्य उदयसूरिजी एव आचार्य्य विजयदर्शनसूरिजो धर्मशास्त्र, व्याक
न्याय के प्रखर विद्वान हैं। आप महानुभावों ने भी अनेकों ग्रन्थों की रचनाएँ की हैं। आचार्य
के शिष्य आचार्य्यविजयनंदन सूरिजी भी प्रखर विद्वान हैं। आपने भी अनेकों ग्रन्थों की रचनाएँ की

श्री आचार्य्य विजयशान्ति सूरिश्वरजी—अपने प्रखर तेज, योगाभ्यास एवं आत्म
कारण आप वर्तमान समय में न केवल भारत के जैन समाज में प्रत्युत ईसाई, वैष्णव आदि अन
धर्मियों में परम पूजनीय आचार्य्य माने जाते हैं। आपका जन्म मणादर गांव में संवत् १९४
सुदी ५ को हुआ। आपने मुनि धर्मविजयजी तथा तीर्थविजयजी से शिक्षा ग्रहण कर संवत् १९
माघ सुदी २ को मुनि तीर्थविजयजी से दीक्षा ग्रहण की। सोलह वर्षों तक मालवा आदि प्रान्तों में
कर सवत् १९७७ में आप आबू पधारे। संवत् १९९० की वैशाख वदी ११ पर बामनवाड़ी में
सम्मेलन के समय १५ हजार जैन जनता ने आपको "जीवदया प्रतिपाल योग लब्धि सम्पन्न राजरा"
पदवी अर्पण कर अपनी भक्ति प्रगट की। यह पद अत्यंत कठिनता पूर्वक जनता के सत्याग्रह करने पर
स्वीकार किया। इसके कुछ ही समय बाद "वीर-वाटिका" में आपको जैन जनता ने "जगत गुरु" पद से
किया। इसी साल मगसर महीने मे आप "आचार्य्य सूरि सम्राट" बनाये गये। हालाँकि उपरोक्त
पदविएँ आपके तेज व प्रताप के सम्मुख नगण्य है, लेकिन श्रद्धालु जनता के पास इससे बढ़कर
वस्तु नहीं थी, जो आपके सम्मान स्वरूप अर्पित की जाती। आपने लाखों मनुष्यों को अहिंसा का
देकर माँस व शराब का त्याग करवाया। आबू में पशुओं के लिए "शान्ति पशु औषधालय"
स्थापना कराई। यह ओषधालय लींबडी नरेश तथा मिसेज ओगिल्वी की संरक्षता में चलता रहा है।
कुछ ही दिन पूर्व आपको उदयपुर में नेपाल राजवंशीय डेपुटेशन ने अपनी गवर्नमेंट की ओर से "नेपाल
गुरु" की पदवी से अलकृत किया। कई उच्च अंग्रेज व भारत के अनेकों राजा महाराजा आपके
भक्त हैं। आपके प्रभाव से लगभग सौ राजाओं और जागीरदारों ने अपने राज्य में पशु बलिदान की
प्रथा बन्द की है। आप अधिकतर आबू पर विराजते हैं।

श्री आचार्य विजयवल्लभसूरिजी—आपका शुभ जन्म विक्रमी संवत् १९२७ की कार्तिक
को वीसा श्रीमाली जाति में बडोदा निवासी शाह दीपचद भाई के गृह में हुआ, एव आपका नाम
छगनलाल रक्खा गया। बाल्यकाल से आप बडी प्रखर बुद्धि के थे। आपने सवत् १९४३ में आत्मा
रामजी महाराज से राधनपुर में दीक्षा ग्रहण की और श्री हर्षविजयजी के आप शिष्य बनाये गये
आपका नाम मुनि श्री विजयवल्लभजी रक्खा गया। आपने संस्कृत, प्राकृत, मागधी का ज्ञान प्राप्त कर
ज्योतिष, दर्शन और आगम शास्त्रों का अध्ययन किया। आपकी प्रखर बुद्धि एव गंभीर विद्वत्ता
आत्मारामजी जैसे प्रकाड विद्वान भी मोहित थे। अनेकों स्थानों में आपने शास्त्रार्थ करके विजय प्राप्त की
है। सम्वत् १९८१ में लाहौर में भारत के जैन संघ ने आपको मगसर सुदी ५ के दिन 'आचार्य'
सुशोभित किया। आपने अपने प्रभावशाली उपदेशों से कई गुरुकुल एव जैन शिक्षा संस्थाएँ,
ज्ञान भण्डार वगैरा स्थापित करवाये, जिनमें श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल गुजरानवाला, श्री आत्मा

...ने समझाया और आप से संसार में रहते हुए धर्म पालन का अनुरोध किया। पर आप अपने ...य से तिल भर भी न डिगे और आपने संवत् १५९६ में उक्त सूरिजी के पास से दीक्षा ली। मुनि ...जी से आपने समग्र साहित्य का अध्ययन किया। इसके बाद आप गुरु की आज्ञा लेकर धर्म-... नामक एक मुनि के साथ दक्षिण के देवगिरी नामक एक स्थान में नैयायिक ब्राह्मण के पास न्याय का अध्ययन करने के लिये गये। वहाँ पर आपने तर्क परिभाषा, मितभाषिणी, शषधर, मणिकण्ठ, ...पद भाष्य, वर्द्धमान, वर्द्धमानेन्दु, किरणावली आदि अनेक ग्रंथों का गंभीरता से अध्ययन किया। ...न करने के बाद आपने अपने पंडितजी को अच्छा पारितोषिक दिलवाया। इसके बाद आपने ...ण, ज्योतिष, सामुद्रिक और रघुवंशी आदि काव्यों में पारदर्शिता प्राप्त की। आप के सारे अध्ययन ...व जैन संघ तथा सेठ देवसी और उनकी पत्नी देती थी। जब आप विद्याध्ययन कर सं० १६०७ में ...गुरु के पास नडूलाई (नारदपुर) नामक स्थान पर पहुँचे तब आपको उन्होंने पंडित की पदवी ...दी। इसके एक वर्ष बाद संवत् १६०८ में आप के गुरु ने आप को उपाध्याय नामक पद से ...न किया। इसके दो वर्ष बाद अर्थात् संवत् १६१० में आप आचार्य्य की उच्च उपाधि से ...त किए गये। इस समय दूधाराज के जैन मंत्री चांगा सिंघी ने बड़ा भारी उत्सव किया। यह ...रणपुर के सुप्रसिद्ध मन्दिर बनवाने वाले सिंघवी धरनाक का वंशज था। इस समय सिरोही के ...न नरेश ने अपने राज्य में हिंसा बन्द करदी।

इसके बाद दोनों आचार्य्य देव पाटण गये और वहाँ के सूबेदार शेरखाँ के सचिव समर्थ भंड-...ने आपके सन्मान में गच्छानुज्ञा महोत्सव किया। यहाँ से आप सूरत और वहाँ से वरडी नामक ...में गये। इस ग्राम में संवत १६२१ में श्री विजयदानसूरि का स्वर्गवास हो गया। इससे हीर ...सूरि तपागच्छ नायक हो गये। संवत् १६२८ में आप विहार करते हुए अहमदाबाद पधारे और वहाँ ...न विजयसेन मुनि को आचार्य्य पद प्रदान किया। यहीं लुंका गच्छ के मेगजी कवि ने मूर्तिनिषेधक ...याग कर अपने तीस साधुओं सहित हीर विजयसूरि का शिष्यत्व ग्रहण किया और उन्होंने अपना ...उद्योतविजय रक्खा। इस बात का उत्सव सम्राट अकबर के राजमान्य स्थानसिंह नामक ओसवाल ...ने किया। ये स्थानसिंह इस समय सम्राट अकबर के साथ आगरे से गुजरात आये थे।

धीरे २ हीरविजयसूरि के अलौकिक तेज की बात सारे देश में फैल गई। उनकी कीर्ति की ...तत्कालीन सम्राट अकबर के कानों तक पहुँची। कहने की आवश्यकता नहीं कि सम्राट अकबर ...ने महा अलौकिक पुरुष के दर्शन करने का निश्चय किया। सम्राट ने अपने गुजरात के सूबे साहिब ...को फरमान भेजा कि वे बड़ी नम्रता और अदब के साथ श्री हीरविजयसूरिजी से यह प्रार्थना करें कि

एवं स्थानीय विद्वान तथा श्रीमंतों की उपस्थिति में आप "शास्त्र विशारद" तथा जैनाचार्य से विभूषित किये गये। इस पदवी का समर्थन भारत के अतिरिक्त विदेशीय विद्वान डाक्टर ... प्रोफेसर जहनस हर्टल डॉक्लेन ने मुक्त कंठ से किया था। आपका कई विदेशी विद्वानों से स्नेह है। शिष्य आचार्य्य श्री इन्द्रविजयजी, न्यायतीर्थ मंगल विजयजी, श्रीमुनि विद्याविजयजी, न्याय... विजयजी, न्यायतीर्थ हेमांशुविजयजी आदि हैं। आप सब प्रखर विद्वान एवं अनेकों ग्रन्थों के रचयिता हैं।

श्री आचार्य्य विजयकेशर सूरिश्वरजी—आपका जन्म सम्वत् १९३३ की पोष सुदी ... माधवजी भाई के गृह मे पालीताना तीर्थ में हुआ। आपका नाम उस समय केशवजी था। आपको १९५० की मगसर सुदी १० के दिन बडौदा में आचार्य्य विजय कमलसूरिश्वरजी ने धूमधाम के साथ दी, तथा आपका नाम केशर विजयजी रक्खा गया। गुरुजी के पास से आपने अनेकों शास्त्रों का ... किया। आपने अनेको तीर्थों के संघ निकलवाये। सम्वत् १९६३ की कार्तिक बदी ६ को आप 'गणि' ... सम्वत् १९६४ की मगसर सुदी १० के दिन पन्यास पदवी से विभूषित किये गये। आपने ... योगाश्रम एव पाठशालाएं स्थापित करवाई। सम्वत् १९८३ की काती बदी ६ को आप आचार्य ... विभूषित किये गये, तथा सम्वत् १९८५ की श्रावण वदी ५ को आप स्वर्गवासी हुए।

मुनि वर्य्य श्री कर्पूर विजयजी—आपका जन्म भावनगर निवासी अमीचन्द भाई नामक ...वाल गृहस्थ के गृह में संवत् १९२५ की पोष सुदी ३ के दिन हुआ। सम्वत् १९४७ की वैशाख ... के दिन आपने वरदीचन्दजी महाराज से दीक्षा गृहण की। आपने मेट्रिक तक अध्ययन किया। जैन समाज में धार्मिक ज्ञान के प्रसार में विशेष भाग लिया। आप बडे गम्भीर, गुणज्ञ तथा त्यागी थे।

श्री आचार्य जिन कृपाचन्द्र सूरीश्वरजी—आपका जन्म चामू (जोधपुर) निवासी बापना के गृह में संवत् १९१३ में हुआ। सवत् १९३६ में अमृतमुनिजी ने आपको ...दाय में दीक्षा दी। आपने खेरवाडे के जिन मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई। आपने मालवा, मारवाड़, काठियावाड, बम्बई में कई चातुर्मास कर जनता को सदुपदेश दिया। आप सम्वत् १९७२ में ... "आचार्य्य" पद से विभूषित किये गये। आपने कई पाठशालाएं, कन्याशालाएं एव लायब्रेरियाँ ... आप न्याय, धर्मशास्त्र एवं व्याकरण के अच्छे ज्ञाता हैं, तथा खरतर गच्छ के आचार्य्य हैं।

श्री आचार्य्य सागरानन्द सूरिजी—आपका जन्म कपडवन्ज निवासी प्रसिद्ध धार्मिक ... मगनलाल गाँधी के गृह में सम्वत् १९३१ में हुआ। आपके बड़े भ्राता मणिलाल गाँधी के साथ आपने शिक्षा प्राप्त की। प्रथम आप के भ्राता ने दीक्षा गृहण की एवं उनका मणिविजय नाम रखा ... आपके दीक्षागृहण करने के विरोध में आपके श्वसुर ने कोर्ट से रोक की। लेकिन आपने परवाह न ... १९४७ मे जवेर सागरजी से दीक्षा गृहण की, और आपका नाम आनन्दसागर जी रक्खा ... सम्वत् १९६० में आपको "पन्यास" एवं "गणीपद" प्राप्त हुआ। आपके विद्वत्ता पूर्ण ... भाषणों मे जैन जनता को प्रभावित किया। आपने एक लाख रुपयों की लागत से सूरत में ... लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फन्ड कायम कराया। बम्बई में जैन जनता को संगठित करने ... "सागरानन्द" के नाम से मशहूर हुए। सम्वत् १९७४ में आपको आचार्य विभूषित ...

रसीकरी में जगनमल कछुआ के महल में ठहराये गये। जगनमल कछुआ तत्कालीन जयपुर नरेश
। के छोटे भाई थे।

इस अलौकिक महापुरुष के तेज से सम्राट् अकबर बहुत ही प्रभावान्वित हुए। आचार्य्यवर ने
त्मिक प्रकाश से सम्राट् अकबर के हृदय को प्रकाशित कर दिया। शत्रुंजय के आदिनाथ मंदिर
ी हुई संवत् १६५० की प्रशस्ति में लिखा है कि आचार्य्यवर के संसर्ग से सम्राट् का अंतःकरण
हो गया और उन्होंने लोक प्रीति संपादित करने के लिये बहुत से प्रजा के कर माफ कर दिये और
े पक्षियों तथा कैदियों को बन्दीखाने से मुक्त किया। इन्होंने सरस्वती के गृह के समान एक महान्
लय का उद्घाटन किया। इस प्रकार अकबर ने और भी कई परोपकारी कार्य किये।

सम्राट् अकबर के दरबार में बड़े २ उत्कृष्ट विद्वान् रहते थे। शेख अबुलफजल सरीखे अपूर्व
उनके दरबार की शोभा को बढ़ाते थे। कहना न होगा कि अबुलफजल और सूरिजी के बीच में बड़ी
शुर धार्मिक चर्चा हुई और अबुलफजल आपके अगाध ज्ञान से बड़े प्रभावित हुए। इसके बाद
ने अपने शाही दरबार में सूरिजी को निमन्त्रित किया। जब सूरिजी दरबार में पहुँचे तब सम्राट्
ने दरबारियों सहित खड़े होकर उनका आदरातिथ्य किया। जब सम्राट् अकबर को यह मालूम
क सूरीश्वर गधार से ठेठ सीकरी तक पैदल आये हैं, और जैन मुनि अपने आचार के लिये पैदल ही
करते ह, तथा शुद्धाहार और विहार द्वारा अपनी आत्मा को पवित्र रखते हैं और तपस्या के द्वारा
। को जीत कर सकल विश्व के सभी जीवों के प्रति विशुद्ध प्रेम की वर्षा करते हैं, तब उनके आश्चर्य्य
र न रहा। इसके बाद आचार्य्य देव ने उक्त दरबार मे संसार और लक्ष्मी की अस्थिरता, देव गुरु
ा स्वरूप, मुनिजनों के अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य्य और अपरिग्रह आदि पाँच व्रतों का बहुत ही
सार्ली ढग से विवेचन किया। अकबर और उसके विद्वान् दरबारी लोग सूरिजी के व्याख्यान से
त ही विस्मित हुए। तदनतर अकबर ने उन्हे अपने जन्मग्रह का फल बतलाने के लिये कहा पर सूरिजी
से जवाब दिया कि मोक्ष पंथ के अनुयायी इन बातों की ओर ध्यान भी नहीं देते।

इसके बाद श्री हीरविजयसूरिजी नाव द्वारा यमुना पार कर आगरे के पास के शौरीपुर के तीर्थ
मे गये और वहां दो प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कर आगरे चले आये। आगरे में आपने श्री चिंतामणि
नाथ की प्रतिष्ठा की। तदनन्तर शेख अबुलफजल के निमन्त्रण पर आप फतेहपुर सीकरी के लिये
न कर गये।

फतहपुरसीकरी पहुँचने पर सम्राट अकबर ने आपका बडा भारी स्वागत किया। सम्राट् ने
ही हाथी, घोड़े आदि की भेंट स्वीकार करने की प्रार्थना की। पर आपने सम्राट् को साफ शब्दों में

जी उक्त पाट पर विराजे। श्री रतनचन्दजी के शिष्य श्री नृपचन्दजी वर्त्तमान में इस पाट पर विराजमान हैं।*

इसी तरह गुजराती लोंकागच्छ के आचार्य्य जीवाजी के दूसरे शिष्य श्री वरसिंहजी के ... आपके पाट पर श्री छोटेसिंहजी, श्री यशवतसिंहजी, श्री रूपसिंहजी, श्री दामोदरजी, श्री ... श्री तेजसिंहजी, श्री कहानजी श्री तुलसीदासजी, श्री जगरूपजी, श्री जगजीवनजी, श्री मेघराज... शोभाचन्दजी, श्री हर्षचन्दजी, श्री जयचन्दजी, तथा श्री कल्याणचन्दजी नामक आचार्य्य विराजे। कल्याणचन्दजी के शिष्य श्री खूबचन्दजी वर्त्तमान में इस पाट पर विराजमान हैं।

गुजरात लोंकागच्छ में से श्री कुँवरजी पक्ष के आचार्य्य श्री नृपचन्दजी की गद्दी जा... वरसिंहजी के शिष्यों में प्रसिद्ध आचार्य्य श्री केशवजी पक्ष के शिष्य आचार्य्य श्री खूबचन्दजी ... बड़ौदा में तथा धनराजजी पक्ष के श्री विजयराजजी की गद्दी जैतारण (मारवाड) में विद्यमान हैं।

धर्म सुधारक श्री धर्मसिंहजी—आप नयानगर निवासी दस्सा श्रीमाली वैश्य श्री जिनदास... पुत्र थे। आपकी माता का नाम शिवा था। आप बड़े तीक्ष्ण बुद्धिवाले तथा धार्मिक सज्जन थे। ... उमर मे ही आप जैनाचार्यों के व्याख्यान बड़े ध्यान से सुनते थे। आपने १५ वर्ष की आयु में ... श्री रत्नसिंहजी के शिष्य श्री देवजी से नयानगर में ही यति वर्ग की दीक्षा ग्रहण की। तदनन्तर ... जैन शास्त्रों तथा सूत्रों का अध्ययन कर उनका अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया और अपने श्रावकों को जैन ... का उपदेश देने लगे। आप बड़े त्यागी, साहसी, निडर तथा साधु के सयम आदि नियमों को पूर्ण... पालते थे। आपने उस समय के साधुओं की आचार शिथिलता से उन्हें सावधान किया तथा ... लोंकाशाहजी के सिद्धान्तों का प्रचार कर जैन जगत में नवीन स्फूर्त्ति पैदा करदी। आपके व्याख्यानों ... लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। आपके अनुयायी दरयापुरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने ... लिखे थे। आप संवत् १७२८ में स्वर्गवासी हुए।

धर्म सुधारक श्री ऋषि लवजी—आप सूरत निवासी एक धनाढ्य श्री माली वैश्य श्री ... वोहरा के पुत्र थे। आपने संवत् १६९२ में खम्भात में जैन धर्म के साधु की दीक्षा ग्रहण की। ... जैन शास्त्रों के व सूत्रों के ज्ञाता तथा साधु के आचार विचार के नियमों को अक्षरशः पालन करने... आचार्य थे। आपका त्याग व आपकी क्षमता बहुत बढ़ी चढ़ी थी। आपने जैन धर्म के सिद्धान्तों... प्रचार करने में सैकड़ों आपत्तियों का बड़े धीरज के साथ सामना किया था। आपके पश्चात् ... आचार्य्य श्री सोमजी तथा कहानजी का नामोल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। वर्त्तमान में आपके ... शिष्य श्री अमोलख ऋषिजी महाराज विद्यमान हैं। आपका परिचय आगे दिया जायगा।

धर्म सुधारक श्री धर्मदासजी—आप अहमदाबाद जिले के सरखेच नामक गाव के निवासी ... कालिदासजी भावसार के पुत्र थे। आपने संवत् १७१६ में अहमदाबाद के बाहर बादशाही ... दीक्षा ली थी। प्रारम्भ से ही आपकी एकलपात्री साधुपर श्रद्धा थी। आप धर्म सुधारक श्री ...

* उक्त आचार्यों के विशेष परिचय के लिये वाड़ीलाल मोतीलाल शाह लिखित "ऐतिहासिक ... पुस्तक को देखिये।

...थ को बादशाह के पास छोड़ आये थे। वहाँ आप बादशाह को 'कृपा रस कोष' नामक काव्य ...थे। शान्तिचन्द्रजी को आचार्य्य देव से मिलने की इच्छा हुई और उन्होंने भानुचन्द्रविबुद्ध नामक ...जन को बादशाह के पास रख कर बादशाह से आचार्य्य श्री के पास जाने की अनुमति मांगी। ...ह ने सूरि के पास भेट के रूप मे स्वमुद्रांकित एक फर्मान भेजा जिसमें गुजरात में हिन्दुओं पर लगने ...जिया नामक कर की माफी का आदेश था। इसके अतिरिक्त पर्युषण आदि बहुत से बड़े दिनों में ...न करने का भी उसमे आदेश था। हीरविजयसूरि के आग्रह से साल भर में कई पवित्र दिनों के ... में बादशाह ने जीव हिंसा को बिलकुल बन्द कर दिया था। सुप्रख्यात इतिहास वेत्ता बदौनी ...ा है —

"In these days (991 1583 A D) new orders were given. The killing of animals ...rtain days was forbidden, as on sundays because this day is sacred to the sun ...g the first 18 days of the month of Farwardin, the whole month of abein (the ...n in which His majesty was born) and several other days to please the Hindoos ... order was extended over the whole realm and capital punishment was inflicted ...ery one who acted against the command."

कहने का अर्थ यह है कि आचार्य्य हीरविजयसूरि ने सम्राट् अकबर पर अपने अलौकिक आत्मतेज ...ऐसा दिव्य प्रकाश डाला था कि सम्राट् अकबर ने मुसलमान होते हुए भी जीव हिंसा-निषेध के लिये ...आदेश प्रसारित किये थे *।

श्री हीरविजयसूरि पाटन मे चातुर्मास कर पालीताना के लिये रवाना हुए और आप यथा समय ...र पहुंचे। वहाँ पाटन, अहमदाबाद, खम्भात, मालवा, लाहौर, मारवाड़, सूरत, बीजापुर आदि अनेक ... से लगभग दो सौ संघ आये जिनमें लाखों यात्री थे। संवत् १६५० की चैत्र सुदी पूर्णिमा को वहाँ ...भारी उत्सव हुआ। सेठ मूलाशाह, सेठ तेजपाल और सेठ रामजी तथा सेठ जसु ठक्कर आदि धनिकों ...बनवाये गये उक्त जैन मन्दिरों की आपने बड़े समारोह के साथ प्रतिष्ठा की। वहाँ से आप ऊना ...स्थान मे पधारे और वहीं पर चातुर्मास किया। यहाँ तत्कालीन गुजरात का सूबा आजमखाँ, आचार्य्य ...की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने आपको १००० स्वर्ण मुद्राएँ (सोने की मुहरें) भेंट की। इन

* इस सम्बन्ध की अधिक जानकारी के लिये हम सुप्रख्यात मुनि विद्याविजयजी कृत 'सूरीश्वर अने सम्राट्' ... पढ़ने के लिए अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं। इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद भी हो गया है जिसका ... ... और सम्राट् है।

ओसवाल जाति के तांतेड़ गौत्रीय श्री बुद्धसिंहजी के पुत्र थे। आपका जन्म सम्वत् १८१२ में हुआ। आप बड़े कान्तिवान और तेज पुञ्ज थे। आपने सम्वत् १८९८ में देहली में श्री रामलालजी के पास महाव्रतों की दीक्षा ली थी तथा सम्वत् १९१३ में आप आचार्य्य पदवी से विभूषित किये गये। आपने ३२ साधु एवं १३ साध्वियों को दीक्षित किया। आप बड़े विद्वान तथा जैन धर्म के ज्ञाता थे। आपने पंजाब की जैन समाज में एक नवीन धार्मिक संगठन कर तथा उन्हें अपने अमूल्य व्याख्यानादि सुनाकर उनमें एक नवीन स्फूर्ति पैदा कर दी थी। आप सम्वत् १९३६ में अमृतसर में ही निर्वाण पद को प्राप्त हुए। आपके पश्चात् अलवर के ओसवाल जातीय लोढ़ा गौत्र के सज्जन श्री रामबगसजी उक्त गद्दी पर विराजे। आपका जन्म सं० १८८३ में हुआ था। आपने सम्वत् १९०८ में जयपुर में दीक्षा ली थी। ... मास तक आचार्य्य रह कर सम्वत् १९३९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् लुधियाना जिले के ... निवासी मुसद्दीलालजी खत्री के पुत्र श्री मोतीरामजी उक्त गद्दी पर विराजे। आपका जन्म ... १८८० में हुआ था। सम्वत १९१० में आपने पाँच महाव्रत धारण किये थे। आप को सम्वत १९३९ में आचार्य्य पदवी मिली थी। आप सम्वत १९५८ में स्वर्गवासी हुए।

पूज्य जवाहरलालजी—आप सुप्रख्यात आचार्य्य श्री श्रीलालजी महाराज के प्रधान शिष्य हैं। जैन साधुओं में आप अत्यंत प्रभावशाली, प्रतिभा सम्पन्न एवं विद्वान आचार्य्य हैं। देश की सामयिक आवश्यकता की ओर आपका पूर्ण ध्यान है। जहाँ आप आपने अपूर्व उपदेशों के द्वारा हजारों लोगों के हृदयों को धर्म की दिव्य भावनाओं से परिप्लुत करते हैं वहाँ आप देश भक्ति और समाज सुधार के मार्ग से भी जनता को प्रगति शील बनाते हैं। आपके व्याख्यान बड़े ही स्फूर्तिदायक होते हैं और उनमें जीवन के भाव कूट २ कर भरे रहते हैं। पतितोद्धारक के लिए भी आप अपने व्याख्यानों में बड़ी जोरदार अपील करते हैं और जनता के हृदय को हिला देते हैं। विश्व बन्धुत्व का आदर्श रखते हुए इस देश भारत के लिए आपके हृदय में बड़ी लगन है और इसके धार्मिक, सामाजिक उत्थान के लिए आप ... ढंग से प्रयत्न करते हैं। आपके उपदेशों से न केवल जैन जनता ही लाभ उठाती है वरन् सभी लोग आपके अपूर्व व्याख्यानामृत को पानकर बहुत शांति लाभ करते हैं।

पूज्य श्री मन्नालालजी—आपका जन्म संवत् १९२६ में हुआ। आपके पिता का नाम अमरचन्दजी एवं माताजी का नाम श्रीमती नादीबाई था। आप ओसवाल जाति के सज्जन थे। आपने अपने पिताजी के साथ संवत् १९३८ में श्री रतनचन्दजी ऋषि से दीक्षा गृहण की। आप आसन्न ... द्वेष रहित, प्रखर बुद्धिवाले एवं बड़े सुशील थे। आप संवत् १९७५ में आचार्य्य पद पर आरूढ़ किये गये तथा उसी समय आपको शास्त्र विशारद की उपाधि भी दी गई। आप शास्त्रों के बड़े ... अच्छे वक्ता एवं सच्चरित्र सज्जन थे। आपका त्याग भी प्रशंसनीय था। *

श्री अमोलक ऋषि जी†—आप मेडते निवासी श्री केवलचन्दजी कासटिया के पुत्र थे। आप...

* आपके विशेष परिचय के लिए आदर्श मुनि नामक ग्रंथ देखिये।

† आपके विस्तृत परिचय के लिए आप का द्वारा लिखित जैन तत्व प्रकाश में श्री कल्याणऋषि लिखित आपकी जीवनी देखिये।

...नों के पास भेज देता हूँ। आप निश्चिन्त रहिये, अब शत्रुंजय की भली प्रकार रक्षा हो जायगी।"

जब सम्राट् अकबर काश्मीर जाने की तयारी करने लगे तब आप ने करमचन्द मंत्री द्वारा जिन...सूरिजी को अपने पास बुलवाया और उन से "धर्मलाभ" लिया। इसी समय उक्त सूरिजी को प्रसन्न ...के लिये सम्राट् ने अपने सारे साम्राज्य में सात दिन तक जीव हिंसा न करने के फरमान जारी किये। फरमानों की नकलें हिन्दी की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका सरस्वती के १९१२ के जून मास के अंक में ...शित हुई है। उक्त फरमान देशी राज्यों में भी भेजे गये जहाँ पर उनका भली प्रकार अमल ...रामद हुआ।

कहने का अर्थ यह है कि जिनचन्द्रसूरि ने भी अपनी प्रखर प्रतिभा का प्रकाश सम्राट अकबर ...डाला था। सम्राट अकबर ने आप को "युग प्रधान" की पदवी से विभूषित किया और उनके शिष्य ...सह को आचार्य्य पद प्रदान किया। इसी समय फिर मंत्री करमचन्द की विनती से सम्राट् ने कुछ ...न तक जीव हिंसा न करने की सारे साम्राज्य में घोषणा की। इसके अतिरिक्त सम्राट ने खम्भात के ...र में एक वर्ष तक हिंसा न करने का फरमान भेजा।

सम्वत् १६६९ में सम्राट जहाँगीर ने यह हुक्म दिया कि सब धर्मों के साधुओं को देश निकाला ...दिया जाय। इससे जैन मुनि मण्डल में बड़ा भय छा गया। यह बात सुन कर जिनचन्द्रसूरिजी ...न से आगरा आये और उन्होंने बादशाह को समझा कर उक्त हुकुम रद्द करवा दिया।

मुनि शान्तिचन्द्र

आप हरिविजयसूरि के शिष्य थे। आपने सम्राट् अकबर की प्रशंसा में कृपा रस कोष नाम ...काव्य रचा। आपका भी बादशाह अकबर पर अच्छा प्रभाव था। आपने उनके द्वारा जीव दया, ...जिया कर की माफी आदि अनेक सत्कृत्य करवाये। यह बात शान्तिचन्द्रजी के शिष्य लालचन्द्रजी की ...लिखित में स्पष्टत लिखी हुई है।

मुनि शान्तिचन्द्रजी बड़े विद्वान और शास्त्रार्थ कुशल थे। सम्वत् १६३२ में ईडरगढ़ के महा...राजा नारायण की सभा में आपने वहाँ के दिगम्बर भट्टारक वादिभूषण से शास्त्रार्थ कर उन्हें परास्त ...किया था। वागड़ देश के घाटशील नगर में वहाँ के राजा के सामने आपने गुणचन्द्र नामक दिगम्बरा...चार्य को शास्त्रार्थ में पराजय किया था। आप शतावधानी भी थे। इससे सम्राट् और राजा महा...राजाओं पर आप का बड़ा प्रभाव था।

तेरापन्थी संप्रदाय

तेरापन्थी संप्रदाय की स्थापना—इस पंथ के प्रवर्तक स्वामी भिक्खनजी महाराज थे। ... जाता है कि आप पहले स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुयायी थे, मगर जब आपने उस संप्रदाय के ... के क्रिया-कर्म में कुछ फर्क देखा तब आपने नवीन विचारों के अनुसार कुछ अपने अलग अनुयायी ... एक बार आपके १३ अनुयायी आपके सिद्धान्तानुसार एक पडत दुकान में पोषध कर रहे थे, ठीक उस ... जोधपुर के तत्कालीन दीवान सिंघवी फतेचंदजी उधर निकले। श्रावकों को स्थानक में पोषध न ... कारण पूछने पर उन्हें मालूम हुआ कि कुछ धार्मिक सिद्धान्तों का मत भेद हो जाने के कारण वे लोग ... सिद्धान्तानुसार यहां पोषध कर रहे हैं। इसी समय स्वामी भिक्खनजी महाराज अपने १३ साधु ... को साथ लेकर उक्त स्थान पर पधारे। उस समय उन्होंने अपने नवीन सिद्धान्त दीवानजी के सामने ... जिससे दीवान साहब बहुत प्रसन्न हुए। इसी समय पास में खड़े हुए एक सेवक ने तेरह साधु और ... ही श्रावकों को देखकर निम्न लिखित पद कह सुनाया, तभी से इस संप्रदाय का नाम ... संप्रदाय हुआ।

> "आप आपको गिल्लोकर, ते आप आप को मत।
>
> देखो रे शहर के लोगा—"तेरापथी तन्त॥"

जब उपरोक्त बात स्वामी जी को विदित हुई तो उन्होंने भी इस नामको सफल करने के ... से अपने सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए पांच महाव्रत, पाच समिति और तीन गुप्ति का मन ... पालन करने का सिद्धान्त बनाया। जो कोई साधु और श्रावक इसका पालन करे वह तेरापंथी सा... तेरापथी श्रावक कहलावे। इस प्रकार इन तेरह सिद्धान्तों से तेरापथी मत की स्थापना हुई। ... इस संप्रदाय में कई साधु एवम् साध्वियाँ दीक्षित हुई। वर्तमान समय तक इसमें ८ आचार्य हुए। आगे हम इन्हीं आठों आचार्यों का सक्षिप्त जीवन चरित्र लिख रहे हैं।

सम्प्रदाय के स्थापक श्री स्वामी भिक्खनजी महाराज—आपका जन्म संवत् १७८३ के आषाढ ... १३ को मारवाड़ राज्यांतर्गत कटालिया नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता शाह बल्लूजी ... बीसा ओसवाल जाति के सज्जन थे। आपकी माता का नाम श्रीमती दीपाबाई था। स्वामीजी ... से ही साधु सेवाओं से बडा प्रेम था। अतएव आप साधुओं के पास जाया आया करते थे। ... आपने गच्छ वासी सम्प्रदाय के व्याख्यान सुने, पश्चात् पोतिया बंध सम्प्रदाय ने आपका ध्यान आकर्षित ... जब यहाँ भी आपको सच्ची शान्ति का अनुभव न हुआ तब आपने बाईस सम्प्रदाय की एक शाखा ... श्री रघुनाथजी महाराज के पास जाना प्रारंभ किया। आपके उपदेशों से प्रभावित होकर स्वामी ... का मन जैन धर्म के साधु बनने के लिये उतावला हो उठा। भाग्यवशात् इन्हीं दिनों आपकी ... भी स्वर्गवास हो गया। आपके पिताजी का स्वर्गवास पहले ही हो चुका था। अतएव माताजी ... आपने साधु होना निश्चित किया। कहना न होगा कि अपने जीवन सर्वस्व एक मात्र आधार ... होने की आज्ञा प्रदान करना माता के लिये कितना कष्ट साध्य है, मगर फिर भी तेजस्वी माता ...

आनन्दघनजी

जैन साहित्य के इतिहास में आनन्दघनजी का नाम प्रखर सूर्य्य की तरह प्रकाशमान हो रहा आप अध्यात्म शास्त्र के पारगामी और अनुभवी विद्वान थे। आत्मा के गूढ़ से गूढ़ प्रदेशों में आप रते थे। श्वेताम्बर जैन समाज के अत्यन्त प्रभावशाली साधुओं में से आप थे। आप के बनाये अध्यात्म शास्त्र के गूढ़ रहस्यों को प्रकट करते हैं। भव्य जनों के लिये मोक्ष का मार्ग आपने र किया है। आपके दो ग्रंथ बहुत मशहूर हैं जिन के नाम आनन्दघनचौबीसी और आनन्दघन है। ये ग्रन्थ मिश्र हिन्दी गुजराती में हैं। ये मार्मिक शास्त्रदृष्टि और अनुभव योग से भरे हैं। अध्यात्मिक रूपक, अन्तर्ज्योति का आविर्भाव, प्रेरणामय भावना और भक्ति का उल्लास आदि अध्या- वषयों का बहुत ही मार्मिकता से विवेचन किया है।

विजयजी

आप हेमचन्द्राचार्य्य के बाद बड़े ही प्रतिभावान और कीर्तिवान आचार्य्य हो गये हैं। आप यायिक, तर्क शिरोमणि, महान् शास्त्रज्ञ, जबरदस्त साहित्यक श्रष्टा, प्रतिभावान समन्वयकार, प्रचण्ड र तथा बड़े दूरदर्शी आचार्य्य थे। श्री हेमचन्द्राचार्य्य के पीछे आप जैसा सर्व शास्त्र पारंगत, सूक्ष्म र बुद्धिनिधान आचार्य्य जैन श्वेताम्बर समाज में दूसरा न हुआ। आपका संक्षिप्त जीवन आप के लीन साधु कीर्तिविजयजी ने 'सुजश वेली' नामक गुजराती काव्य कृति में दिया है जिसकी खास २ म नीचे देते हैं।

आप तपेगच्छ के साधु थे। आप सुप्रख्यात आचार्य्य हीरविजयसूरि के शिष्य तर्क विद्या द उपाध्याय कल्याणविजयजी के शिष्य सकल शब्दानुशासन निष्णांत लाभविजयजी के शिष्य नय- जी के शिष्य थे। आपका जन्म सवत् १६८० के लगभग हुआ। आपने अपने गुरू नयविजयजी स ग्यारह वर्ष तक अध्ययन किया। आपने काशी आगरा आदि शहरों में भी विभिन्न शास्त्रों का न किया। आपने न्याय, योग, अध्यात्म, दर्शन, धर्मनीति, धर्मसिद्धान्त, कथाचरित्र आदि विषयों पर कई ग्रन्थ लिखे। आपके ग्रंथों में अध्यात्म सार, देव धर्म परीक्षा, अध्यात्मो- द, अध्यात्मिक मत-खण्डन सटीक, यतिलक्षण समुच्चय, नयरहस्य, नय प्रदीप, नयोपदेश, जैन परिभाषा और दस ज्ञान बिंदु, द्वात्रिंशत द्वात्रिंशिका सटीक, ज्ञानसार, अस्पृशद गतिवाद, दाव विनिश्चय, सामाचारी प्रकरण, आराधक विराधक चतुर्भंगी प्रकरण, प्रतिमाशतक,

दीक्षित किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५४ की कार्तिक कृष्णा ३ को सुजानगढ़ में ७१ वर्ष की अवस्था में हो गया है।

श्री स्वामी डालचन्दजी—स्वामी डालचन्दजी महाराज का जन्म उज्जैन में कनीरामजी के यहाँ सवत् १९०९ की आषाढ़ शुक्ला ४ को हुआ। इन्दौर में आप दीक्षित हुए, एवम् लाडनूं में आचार्य्य पद प्राप्त हुआ। आपने अपने समय में ३६ साधु और १२६ साध्वियों को दीक्षित किया। ५७ वर्ष की आयु में लाडनू नामक स्थान में सवत् १९६६ की भाद्रपद शुक्ला १२ को आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान आचार्य श्री कालूरामजी—आपका जन्म सम्वत् १९३३ की फागुन शुक्ला २ को छापर में हुआ। सम्वत् १९४४ में आचार्य मघराजजी द्वारा आप बीदासर में दीक्षित किये गये। सम्वत् १९६६ के भाद्रपद मे आप आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपने अभी तक १२८ साधु और साध्वियों को अपने धर्म में दीक्षित किये हैं। इस समय सब मिलाकर १३१ साधु और २९१ साध्वियां आपके अधिकार मे हैं। आप प्रारम्भ से ही बडे प्रतिभासम्पन्न और उग्र तपस्वी रहे हैं। प्रचण्ड अपूर्व तेज आपके मुँह पर दैदीप्यमान हो रहा है। आपकी प्रकृति बडी सौम्य, गम्भीर और शान्त है। आप जैन शास्त्रों, दर्शनों और जैन सूत्रों के अच्छे जानकार है। संस्कृत साहित्य के भी आप अच्छे ज्ञाता हैं। इस सम्प्रदाय के सस्कृत साहित्य में आपने बहुत तरक्की की है। इस समय इस सम्प्रदाय के कई साधु संस्कृत के और जैन सूत्रों के अच्छे विद्वान हैं। आपकी सङ्गठन और व्यवस्थापिका शक्ति तो अद्भुत है। आपने अपने सम्प्रदाय का सङ्गठन बहुत ही मजवूत और सुन्दर ढंग से कर रक्खा है। दूसरे सम्प्रदायों के साधुओं में जो आपसी झगडे खडे हो जाते हैं वे इस सम्प्रदाय में कतई नहीं होते। यह सब आपकी संगठन शक्ति को है। सम्प्रदाय के सब साधु और साध्वियाँ एक स्वर से आपकी आज्ञा का पालन करते हैं। कहा जाता है कि इस समय सारे भारतवर्ष में इस सम्प्रदाय के करीब २ लाख अनुयायी हैं। सङ्गठन को सुचारु रूप से चलाने के लिये इस सम्प्रदाय में हर साल माघ शुक्ला ७ को मर्यादा महोत्सव नाम से एक उत्सव चलाया है, जिसमें प्राय सभी साधु सम्मिलित होते हैं। साथ ही श्रावक गण भी हजारों लोगों के दर्शनार्थ उपस्थित होते है। इस अवसर पर इस प्रकार एक सम्मेलन सा हो जाता है जिससे विचार विनिमय का अच्छा मौका मिलता है। इसका श्रेय भी आपकी व्यवस्थापिका शक्ति का है।

इस सम्प्रदाय के साधु और साध्वियों की तपस्या भी बडी कठोर होती है। रामजीलालजी महासती श्री मुखाँजी ने २७७ दिन तक केवल आछ के सहारे तपस्या की थी। इसी प्रकार और साधुओं ने लगातार ७ २ सात २ माह तक की उग्र तपस्या की है।

न्दरगणी

आप तपगच्छ की नागपुरीय शाखा के पद्म भेस के शिष्य थे। इन्होंने रायमल्लाभ्युदय महा धातु पाठ पार्श्वनाथ काव्य, जम्बू स्वामी कथानक वगैरा ग्रन्थों की रचना की थी। इन्होंने अकबर ार में धर्म विवाद मे एक महा पंडित को पराजित किया था, जिससे प्रसन्न हो र बादशाह ने हार, ाय व सुखासन वगैरा वस्तुएँ आपको भेंट दी थीं। ये १६६० में विद्यमान थे।

सिंहसूरि

आप आचार्य्य जिनराजसूरिजी के शिष्य थे। इनका जन्म १६११ मे, दीक्षा १६२१ में, सूरिपट म तथा स्वर्गवास सवत् १६१४ मे हुआ। इनको संवत् १६४९ में देहली के बादशाह की ओर से सम्मान मिला। जोधपुर दरबार महाराजा सूरसिंहजी और उनके प्रधान कर्मचन्द्रजी इन्हे बहुत थे।

राजसूरि

आप खरतरगच्छ में हुए हैं और बहुत प्रतिभाशाली माने जाते थे। इन्होंने शत्रुंजयतीर्थ मे प्रतिमाएं स्थापित कीं॥ इसके अलावा आपने नैषधीय चरित्र पर "जिनराजी" नामक टीका रची १६९९ मे पाटन मे आपका स्वर्गवास हुआ।

न्दघनजी महाराज

ये प्रख्यात अध्यात्म ज्ञानी महाराज लगभग सवत् १६७५ में विद्यमान थे। वैराग्य तथा र विषय पर इन्होंने गटन पदों की रचना की थी।

ाणसागरसूरि

आप अचलगच्छ के आचार्य धर्ममूर्ति सूरि के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १७१६ में जामनगर र धनाढ्य वर्धमानशाह द्वारा बनवाये हुए जिनालय में जिन बिंब प्रतिष्ठित किये थे। उक्त जिनालय लालेख से ज्ञात होता है कि यह जिनालय सूरिजी के उपदेश से ही बनाया गया था।

श्री जैन मूर्ति पूजक आचार्य

श्री आचार्य विजयानन्द सूरिजी (प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी महाराज)—आप उन्नीसवीं सदी ...त प्रख्यात् जैनाचार्य्य थे। आप उन महात्माओं की श्रेणी में हैं, जिन्होंने जैनागम की कठिन समस्या पर प्रकाश डालकर अपने योग बल के प्रभाव से भारत भूमि में आत्मज्ञान की पीयूषधारा को ...त किया है। आप वेद वेदांग और दर्शनादि शास्त्रों में पूर्ण पारंगत थे। आपने अनेकों ग्रन्थों की ...एँ कीं। पंजाब देश में आपने अत्यधिक विचरण एवं उपकार किया। आपके स्मारक में पंजाब प्रान्त ...कों मंदिर, भवन, सभाएँ, पाठशालाएँ एवं पुस्तकालय स्थापित हैं। सिद्धाचल तथा होशियारपुर में ...ी भव्य प्रतिमाएँ स्थापित हैं। विक्रमी संवत् १८९३ की चैत सुदी १ को आपका जन्म हुआ। बाल्य में पिताजी के स्वर्गवासी हो जाने से १४ साल की आयु में आप जीरा चले आये। यहाँ आने पर ...वर्ष की आयु तक आपने स्थानक मत के तमाम स्तोत्रों को कंठस्थ कर लिया। इसके पश्चात् आपने ...रण और साहित्य का अध्ययन कर न्याय, सांख्य, वेदान्त और दर्शन ग्रंथ पढ़े। धीरे २ आपके मन में ...पूजा के विचार दृढ़ होते गये, और आपने संवत् १९३२ में अपने १५ साथियों सहित मुनिराज ...विजयजी से मंदिर सम्प्रदाय की दीक्षा गृहण की। तब आपका नाम "आनन्द विजय" रक्खा गया। ... आप "आत्माराम" के नाम से ही प्रसिद्ध रहे। गुजरात से आप पंजाब पधारे। पंजाब प्रान्त ...आपके प्रखर भाषणों ने नवजीवन फूँका। संवत् १९४३ में आपके पालीताना के चातुर्मास में भारत के ... प्रान्तों की ३५ हजार जैन जनता ने आपको "सूरिधर" और "जैनाचार्य्य" की पदवी से विभूषित ...। केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी आपकी प्रखर बुद्धि की गूँज हो गई थी। कई बार आपके पास ...ों से भी निमंत्रण आये। आपने जीवन के अंतिम ३ वर्ष पंजाब प्रान्त में भ्रमण करते हुए व्यतीत किये। संवत् १९५३ की ज्येष्ठ सुदी अष्टमी की रात्रि में अपनी कीर्ति कौमुदी को इस असार संसार में छोड़ ...स्वर्गवासी हुए। आपके गुरु भाई प्रवर्तक कान्तिविजयजी महाराज वृद्ध एवं विद्वान महात्मा हैं। आपकी ...१ साल की है तथा आप पाटण गुजरात में विराजते हैं। आचार्य्य विजयवल्लभसूरिजी आपको बड़ी पूज्य ...से देखते हैं। आपकी सेवा में मुनि पुण्य विजयजी रहते हैं।

श्री आचार्य्य विजय नेमिसूरिजी—आपका जन्म माहुवा (मधुमती नगरी) में संवत् १९२९ की ... सुदी १ को सेठ लक्ष्मीचन्द भाई के गृह में हुआ। संवत् १९४५ की जेठ सुदी ७ को आपने गुरु ...चन्दजी महाराज से दीक्षा गृहण की। संवत् १९६० की कार्तिक वदी ७ को आपको "गणीपद" एवं ...र सुदी ३ को आपको "पन्यास पद" प्राप्त हुआ। इसी प्रकार संवत् १९६४ की जेठसुदी ५ के दिन ...नगर में आप "आचार्य्य" पद से विभूषित किये गये। आपने जैसलमेर, गिरनार, आबू, सिद्धश्रेय आदि ...संघ निकलवाये, कापरड़ा आदि कई जैन तीर्थों के जीर्णोद्धार में आपका बहुत भाग रहा है। आपने कई तीर्थों ...मंदिरों की प्रतिष्ठाएँ करवाईं। आप न्याय, व्याकरण एवं धर्मशास्त्र के प्रखर ज्ञाता हैं। आपने अहमदाबाद ...जैन हायर पद" की स्थापना करवाई। आप ही के पुनीत प्रयास से अ० भा० श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ...सम्मेलन का अधिवेशन अहमदाबाद में सफल हुआ। आप धर्म शास्त्र, न्याय व व्याकरण के उच्च... के विद्वान तथा तेजस्वी और प्रभावशाली साधु हैं। आपने अनेकों ग्रन्थ की रचनाएँ कीं। आप

वहाँ से चल कर आप बिहार होते हुए बंगाल को आये। आपके छ पुत्र और पु-
इनमें से आपके चौथे पुत्र सेठ माणिकचन्दजी से हमारे जगत सेठ के खानदान का प्रारम्भ हुआ।
से निस्सहाय निकले हुए हीरानन्द का यह पुत्र बंगाल और देहली राजतन्त्र में एक तेजस्वी नक्षत्र
प्रकाशमान रहा। बडे २ नबाब, दीवान, सरदार और अंग्रेज कम्पनी के आगेवान उसकी
कृपा के लिये हमेशा लालायित रहते थे। ये दो हजार सेना हर समय अपनी रक्षा और सम्मान
निजी खर्च से अपने पास रखते थे। अठारहवीं सदी के बंगाल के इतिहास में जगत सेठ
का कोई भी दूसरा पुरुष दिखलाई नहीं देता। गरीब पिता का यह कुबेर तुल्य पुत्र
बङ्गाल, बिहार और उडीसा का भाग्यविधाता बना हुआ था।

नवाब मुर्शिदकुलीखाँ और सेठ माणिकचन्द

उस समय बङ्गाल की राजधानी ढाका के अन्तर्गत थी। जिस समय सेठ माणिकचन्द
कोठी को ढाके के अन्तर्गत स्थापित किया उस समय भारत के सारे राजनैतिक जगत मे भूकम्प की
पैदा हो रही थी। मुगल साम्राज्य के अन्तिम प्रभावशाली बादशाह औरङ्गजेब का प्रताप धीरे धीरे
होता जा रहा था और स्थान २ के सरदार अपनी २ ताकत के अनुसार विद्रोहाग्नि को प्रज्व-
थे। उस समय बङ्गाल का नवाब अजीमुश्शान था जिसकी राजधानी ढाका मे थी। उसके
जगह पर औरंगजेब ने मुर्शिदकुलीखाँ को भेजा था। इस मुर्शिदकुलीखाँ और सेठ माणिकचन्द
भाइयों से भी अधिक प्रेम था। ये दोनों बडे कर्मवीर और साहसी थे। सेठ माणिकचन्द
और मुर्शिदकुलीखाँ के साहस ने मिलकर एक बडी शक्ति प्राप्त करली थी।

मुर्शिदकुलीखाँ की प्रबल इच्छा थी कि वह बङ्गाल की नवाबी को प्राप्त करे। सेठ मा-
ने उसकी इस इच्छा को सफल करने में बहुत सहायता दी। उन्होंने उससे कहा कि यदि
उन्नति चाहते हो तो ढाके की इस पाप भूमि को छोड दो और अपने नाम से मुर्शिदाबाद नामक
शहर की स्थापना करो। फिर देखो कि माणिकचन्द की शक्ति क्या खेल करके दिखाती है। यह
एक रोज बंगाल की राजधानी बनेगा, गंगा के तट पर एक टकसाल स्थापित होगी, अंग्रेज,
लोग तुम्हारे पैरों के पास खडे होकर कॉर्निस करेंगे और दिल्ली का बादशाह तो रुपये का
इस समय महसूल के एक करोड तीस लाख रुपया भेजा जा रहा है वहाँ हम लोग उसका
और बतलायेंगे कि मुर्शिदकुलीखाँ के ही प्रताप से बङ्गाल की समृद्धि दिन पर दिन बढ़ती जा रही

इस प्रकार माणिकचन्द सेठ ने नवाब मुर्शिदकुलीखाँ को उत्साहित करके

कुल अम्बाला, श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा और उम्मेदपुर, श्री आत्मानंद विद्यालय सादडी, लनपुर जैन बोर्डिंग, आत्मवल्लभ केलवणी फण्ड पालनपुर, महावीर जैन विद्यालय बम्बई आदि २ हैं। इतना ही नहीं आपने अनेकों संघ निकलवाये, प्रतिष्ठाएँ, अंजनशलाकायें कराईं। आप बड़े तेजस्वी एवं प्रतिभा सम्पन्न आचार्य्य हैं। इस समय आप जैन कॉलेज और युनिवर्सिटी खोलने का उद्योग कर रहे हैं। आपके उपदेश से पाटन में ज्ञान मन्दिर तयार हो रहा है। आपके शिष्य ललितविजयजी शान्त एवं विद्वान जैन मुनि हैं।

श्री आचार्य्य विजयदान सूरिश्वरजी—आपका जन्म विक्रमी संवत् १९१४ की कार्तिक १४ के दिन झींझुवाढा नामक स्थान में दस्सा श्रीमाली जातीय जुठाभाई नामक गृहस्थ के गृह में और आपका नाम दीपचन्द भाई रक्खा गया। संवत् १९४६ की मगसर सुदी ५ के दिन गोधा म पर आत्मारामजी महाराज के शिष्य वीरविजयजी महाराज से आपने दीक्षा गृहण की, एवं आपका दानविजयजी रक्खा गया। आपके जैनागम तथा जैन सिद्धान्त की अपूर्व जानकारी की महिमा सुनकर नरेश ने सम्मान पूर्वक आपको अपने नगर में आमंत्रित किया। संवत् १९६२ की मगसर सुदी ११ पौंणिमा के दिन आपको क्रमशः गणीपद तथा पन्यास पद प्राप्त हुआ, और संवत् १९८१ की र सुदी ५ के दिन श्रीमान् विजय कमलसूरिजी ने आपको छाणी गाँव में आचार्य्य पद प्रदान किया, तब से आप "विजयदान सूरिश्वर महाराज" के नाम से विख्यात् हैं। नेत्रों के तेज की न्यूनता होने भी आप अनेको ग्रन्थों के पठन पठनादि कार्यों में हमेशा संलग्न रहते हैं। आपके शिष्य सिद्धान्त धि महा महोपाध्याय प्रेमविजयजी एवं व्याख्यान वाचस्पति पन्यास रामविजयजी महाराज भी उच्च न हैं। रामविजयजी महाराज प्रखर वक्ता हैं। आपकी विषय प्रतिपादन शक्ति उच्चकोटि की है।

श्री आचार्य्य विजयधर्मसूरिजी—आप अन्तराष्ट्रीय कीर्ति के आचार्य्य थे। आपका जन्म संवत् १९२४ सा श्रीमाली जाति के श्रीमंत सेठ रामचन्द भाई के यहाँ हुआ था। उस समय आपका नाम मूलचन्द रक्खा गया था। बाल्यकाल में आप पढ़ने लिखने से बड़े घबराते थे। अतः आपके पिताजी ने आपको साथ दुकान पर बैठाना शुरू किया। यहाँ आप सट्टा और जुगार में लीन हो गये। जब इन में से आपका मन फिरा तो आपने सम्वत् १९४३ की वैशाख वदी ५ को मुनि वृद्धिचन्दजी महाराज क्षा गृहण की, और आपका नाम धर्मविजयजी रक्खा गया। धीरे २ आपने अपने गुरू से अनेकों का अध्ययन किया। आपने संस्कृत का उच्च ज्ञान देने के हेतु बनारस में "यशो विजय जैन पाठशाला" "हेमचन्द्राचार्य्य जैन पुस्तकालय" की स्थापना की। आपने बिहार, बनारस, इलाहाबाद, कलकत्ता, तथा , गुजरात, गोडवाड आदि अनेकों प्रान्तों में चातुर्मास कर अपने निष्पक्षपात तथा प्रखर ख्यानों द्वारा जैन धर्म की बड़ी प्रभावना की। आपके कलकत्ता के चातुर्मास में जैन व अजैन श्रीमंत, में रईस एवं विद्वानों ने आपके उपदेशों से जैन धर्म अंगीकार किया था। इलाहाबाद के कुंभोत्सव के जगद्गुरु के श्रीमत् शंकराचार्य्य के सभापतित्व में आपके उदार भावों से परिपूरित प्रखर भाषण सभा में एक अपूर्व हलचल पैदा की थी। संवत् १९६३ में आपने गुरुधारी दीक्षा ग्रहण की। संवत् १४ की श्रावण वदी १४ के दिन बनारस में काशी नरेश के सभापतित्व में अनेकों बंगाली तथा गुजराती

ने उनको फिर छोड़ दिया। इन सब घटनाओं का परिणाम धीरे-धीरे बढ़ते बढ़ते पलासी के युद्ध तक हुआ, जिसमें मीरजाफ़र के घोर विश्वासघात से सिराजुद्दौला की भयङ्कर पराजय हुई और जीवन का नाटक अत्यन्त दु:खान्त रूप से समाप्त हुआ।

जाफर और जगत् सेठ

पलासी के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध के पश्चात् नये नवाब का चुनाव करने के निमित्त जगत् सेठ के घर लगातार तीन दिन तक मन्त्रणा चलती रही। लोगों का खयाल था कि जगत् सेठ अवश्य जाफर को नवाब चुनने के लिए अपना मत देंगे क्योंकि उसने उन्हें सिराजुद्दौला की कैद से छुड़ाया था। लोगों का ख्याल गलत निकला। जगत् सेठ ने स्पष्ट कह दिया कि जिस राजनीति के साथ असंख्य के हिताहित का सम्बन्ध है उसमें व्यक्तिगत सम्बन्ध को महत्व नहीं दिया जा सकता। वे अपनी नीति से रत्ती भर भी टस से मस न हुए। इस अवसर पर राजशाही की महारानी भवानी की तरफ़ जो कि सारे प्रान्त में अर्द्ध बङ्गेश्वरी की तरह पूजनीय मानी जाती थी—जो सन्देश आया था वह भी इतिहास के पृष्ठों पर कुन्दन की तरह चमक रहा है—

"बङ्गाल का भाग्य विदेशी व्यापारियों के हाथ में देने की जो सलाह दे, उसे इस पत्र के साथ है सिन्दूर, चुदड़ी और बगड़ी (चूड़ी) मेरी तरफ से भेंट में देना।"

अस्तु, मन्त्रणा के ये तीन दिन तीन वर्षों के समान बीते और अन्त में कई अन्तरङ्ग प्रभावों के मीरजाफर ही बङ्गाल का नवाब चुना गया।

मीरजाफर के बङ्गाल की मसनदपर आते ही बङ्गाल का भरा पूरा खजाना खाली होना प्रारम्भ हुआ। कहा जाता है करीब छ: करोड़ रुपये का चूरा हो गया। जिसमें से अधिकांश विदेशी व्यापारियों को चला गया। अभागे अमीचन्द को सम्भवत: कुछ भी न मिला और वह अन्त समय में पागल मरा।

इसके कुछ समय पश्चात् ही मीरजाफर ने अंग्रेज व्यापारियों को टकसाल खोलने का भी हुक्म। जिसका भाव इस प्रकार था।

"कलकत्ते में एक टकसाल खोलने की और उसमें सोने चांदी के सिक्के ढालने की परवानगी आज अंग्रेज कम्पनी को दी जाती है। अंग्रेज कम्पनी मुर्शिदाबाद की टकसाल के बराबर वजन के सिक्के की छाप से ढाल सकेगी। बंगाल, बिहार और उड़ीसे में उनका चलन होगा, खजाने में भी उनका लिया जा सकेगा। इन सिक्कों के लिए जो कोई बट्टा व कसर लेगा वह सजा का पात्र होगा"।

कहना न होगा कि इस आर्डर का सारा भीषण असर जगत सेठ की कोठी पर पड़ा। उसी दिन

चार्य्य पद प्रदान किया। आपका स्थापित किया हुआ सूरत का 'श्री जैन आनन्द पुस्तकालय' बम्बई प्र में प्रथम नम्बर का पुस्तकालय है। इसी तरह आगम ग्रन्थों के उद्धार के लिए आपने सूरत, राम, कलकत्ता, अजीमगञ्ज, उदयपुर आदि स्थानों में लगभग १५ संस्थाएं स्थापित कीं। इन्हीं गुणों कारण आप "आगमोद्धारक" के पद से विभूषित किये गये। इस समय आप सूर्य्यपुरी में निवास करते हैं। आपने बाल दीक्षा के लिए बड़ोदा सरकार से बहुत वादविवाद चलाया था।

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आचार्य्य

इस सम्प्रदाय के प्रधान प्रचारक श्री लोंकाशाहजी एक मशहूर साहूकार थे। आप सोलहवीं शताब्दी के अन्तर्गत अहमदाबाद नगर के एक प्रतिष्ठित तथा धनिक सज्जन थे। प्रारम्भ से ही आप तीक्ष्ण बुद्धि वाले, बुद्धिमान तथा धर्म प्रेमी महानुभाव थे। आपके अक्षर बड़े ही सुन्दर थे। उस समय छापखानों आदि का आविष्कार न हो पाया था। अतः जैन धर्म के कई शास्त्रों को आपने स्वयं अपने हाथ से लिखा जिससे आपको जैन शास्त्रों के अध्ययन का शौक क्रमशः लग गया और कालान्तर से आप बड़े विद्वान तथा जैन तत्वों के पण्डित होगये। तदनन्तर आपने अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग कर जैन शास्त्रों को लिखवाना आरम्भ करा दिया। इस प्रकार जैन साहित्य को संग्रहित करने के विशाल कार्य्य से आपको जैन धर्म के तत्वों का विशेष ज्ञान होगया और उसी समय से आपने जैन जनता को जैन तत्वों का उपदेश देना प्रारम्भ कर दिया। धीरे २ आपका नाम जैन समाज में फैल गया और दूर २ से सैकड़ों हजारों व्यक्तियों के झुण्ड के झुण्ड आपके व्याख्यान को सुनने के लिये आने लगे और आपके प्रभावशाली व्याख्यान को सुन कर हजारों की संख्या में आपके अनुयायी होगये। सर्व प्रथम आपने संवत् १५३१ में ४५ साधुओं को दीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा दी। इसके पश्चात् इस सम्प्रदाय का प्रचार बड़ी तेजी से होने लगा और थोड़े ही समय में हजारों श्रावकों ने इस धर्म को अंगीकार किया और बहुत से गृहस्थों ने सांसारिक सुखों को छोड़ छोड़कर इस सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की।

लोंकाशाहजी के पश्चात् ऋषि श्री भाणजी, श्री भीदाजी, श्री नूनाजी, श्री भीमाजी, श्री गजमल जी, श्री सरवाजी, श्री रूप ऋषिजी, श्री जीवाजी नामक आचार्य्य धर्म प्रचारक श्री लोंकाशाहजी के पाट पर क्रमशः विराजे। आप सब आचार्य्यों ने जैन सिद्धान्तों का सर्वत्र प्रचार किया और लाखों की संख्या में इसके अनुयायियों को बनाया। इसी समय तत्कालीन आचार्य्यों में मतभेद होजाने के कारण इस सम्प्रदाय की तीन शाखाएं होगईं—(१) गुजराती लोंकागच्छ (२) नागोरी लोंकागच्छ तथा (३) उत्तरार्ध लोंकागच्छ। लोंकागच्छ के आचार्य्य श्री जीवाजी ऋषि के तीन मुख्य शिष्य थे श्री कुँवरजी, श्री वरसिंहजी तथा श्री श्रीमलजी। इनमें से श्री कुँवरजी, और उनके पश्चात् श्री श्रीमलजी उक्त पाट पर बैठे। आपके पश्चात् श्री रत्नसिंहजी, श्री केशवजी, श्री शिवजी, श्री संघराजजी, श्री सुखमलजी, श्री भागचन्दजी, श्री बालचन्दजी, श्री माणकचन्दजी, श्री मूलचन्दजी, श्री जगतसिंहजी तथा श्री रतनचन्द

शेष बचा रहा। उनके पुत्र जगतसेठ खुशालचंद को भी बादशाह शाहआलम ने जगतसेठ की पदवी दी थी तथा लार्ड क्लाइव ने भी उनको कम्पनी का बैंकर बनाया था। मगर एक तो खुशालचंद की कम होने से और दूसरे द्रव्य की कमी आजाने से वे जैसी चाहिये वैसी व्यवस्था नहीं कर सकते थे। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिये उन्होंने लार्डक्लाइव को एक निवेदन पत्र लिखा था जिसका उत्तर ने जिस कठोरता के साथ दिया उसका भाव नीचे दिया जाता है।

"तुम्हारे पिता के साथ मैं कितनी मेहरबानी रखता था और उनको कितनी सहायता पहुँचाता यह तुम भली प्रकार जानते हो। तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के साथ मैं वैसा ही आंतरिक सम्बन्ध हूँ, पर खेद की बात है कि तुम अपनी प्रतिष्ठा और जवाबदारी का कुछ भी खयाल नहीं रखते। बीच में यह समझौता हो चुका है कि तिजोरी की तीन चाबिएँ भिन्न २ स्थानों पर रहेंगी। पर बदले तुम सब पैसे अपने पास ही रख लेते हो। इजारे भी तुम बहुत कम दरों में दे देते हो, राज्य कर्जा पहले वसूल करने के बदले तुम अपने व्यक्तिगत कर्जे को जमींदारों से पहले वसूल करते हो। र इस व्यवहार का किसी भी रीति से समर्थन नहीं हो सकता। आज भी तुम पहले ही के समान शाल हो, अधिक लोभ की वजह से तुम्हें असंतोष रहता होगा पर तुम अपनी जवाबदारियों से नीचे जा रहे हो और तुम्हारे पर से हमारा विश्वास दिन २ उठता जा रहा है।"*

इसके कुछ समय पश्चात् क्लाइव ने जगतसेठ से कहलाया कि यदि प्रतिवर्ष तीन लाख रुपये क तुम स्वतंत्र होना चाहते हो तो हम प्रतिवर्ष इतना रुपया देने के लिये तैयार हैं। मगर खुशाल- ने उत्तर दिया कि यदि मैं अपने खरच को अधिक से अधिक घटाऊँ तो भी तीन लाख रुपये में मेरा नहीं पड़ सकता।

इसके पश्चात् वारेन हेस्टिंग्ज के जमाने में जगतसेठ की स्थिति और भी बिगड़ी और उन्होंने ग्ज को भी एक पत्र लिखा। उस समय हेस्टिंग्ज राजधानी से बहुत दूर था। उसने कलकत्ता स लौटकर इस विषय का संतोषजनक जबाब देने का आश्वासन दिया मगर दुर्भाग्य से उसके कलकत्ता स लौटने के पहिले ही खुशालचन्दजी का स्वर्गवास हो गया।

जगतसेठ खुशालचन्द बड़े धार्मिक पुरुष थे। तीर्थराज सम्मेदशिखर पर इन्होंने कितने जैन मन्दिर भी बनवाये। वहाँ के शिला लेखों में कई स्थानों पर खुशालचन्द का नामोल्लेख मिलता ऐसा कहा जाता है कि जिस जगतसेठ ने लगभग १०८ तालाब बनवाये थे वे ये खुशालचन्द ही थे। के अतिरिक्त उन्होंने अपने मकान के पास खुशाल बाग नाम का एक बगीचा निर्म्माण किया था। शालचन्दजी के कोई संतान न होने से उनके भतीजे हरकचंदजी उनके यहाँ पर दत्तक आये। इनके य में इस खानदान की दशा और भी अधिक बिगड़ गई। इन्हीं के समय में इस खानदान का धर्म जैन से बदल कर वैष्णव हो गया। ऐसा कहा जाता है कि हरकचंदजी के कोई संतान न होने से एक सन्यासी ने इन्हें संतान का लालच देकर वैष्णव धर्म में दीक्षित किया। इन्होंने अपने मकान के स एक वैष्णव मंदिर का निर्माण भी करवाया।

---

* Hunter's statistical account of Murshidabad page 203

ा लवजी ऋषि के सम्प्रदायों से पूर्ण संतुष्ट न हुए और अपना एक अलग सम्प्रदाय स्थापित किया। स्थानकवासी सम्प्रदाय के विषम व्रत आदि को उचित नीति व ढंग से लिखा जिनमें से प्राय बहुत न तक पूर्ववत् ही पाले जाते हैं। आपके कुल ९९ शिष्य हुए जिनसे आगे जाकर मारवाड, मेवाड, , लींबडी, बोटाद, सायला, ध्रागध्रो, चुडाकच्छ, गोंडल आदि सघ बने। इनके अतिरिक्त आपके श्री रघुनाथजी के शिष्य श्री भिक्खनजी ने वर्तमान भारत प्रसिद्ध श्री तेरापन्थी धर्म की भी ना की जिसका पूर्ण इतिहास अन्यत्र दिया जा रहा है। श्री धर्मदासजी के प्रधान शिष्य मूलचंदजी जरात में ही रहे, के श्री गुलाबचन्दजी, पचाणजी, वनाजी, इन्दरजी, बनारसीजी तथा इच्छाजी नामक ों से निम्न लिखित सघ स्थापित हुए।

श्री पचाणजी के शिष्य श्रीरतनजी तथा श्री डुंगरसीजी स्वामी गोंडल गये तब से आपका गोंडल स्थापित हुआ। आपके अनुयायी गोंडल संघाडा के नाम से प्रसिद्ध हैं। श्री वनाजी के शिष्य ाहानजी स्वामी बरवाले गये तब से आपके संघ का नाम बरवाल संघ पडा। श्री इन्दरजी के शिष्य णस्वामी ने कच्छ में आठ कोठी समुदाय का प्रचार किया अत आपके संघ वाले कच्छ आठ कोठी ाय वाले प्रसिद्ध हैं। श्री बनारसीजी के शिष्य श्री जयसिंहजी तथा श्री उदयसिंहजी स्वामी चुडा गये से आपका समुदाय चुडा समुदाय के नाम से प्रसिद्ध है। इसी प्रकार श्री इच्छाजी स्वामी ने सवत् १५ में लीम्बडी में लीम्बडी समुदाय की गद्दी स्थापित की। तब से आपका समुदाय लीम्बडी समुदाय ाम से मशहूर है। आपके शिष्य श्री रामजी ऋषि लीम्बडी से उदयपुर आये और आपने उदयपुर में ‘पुर समुदाय स्थापित किया।

आचार्य्य श्री अजरामरजी—श्री मूलचन्दजी के ज्येष्ठ शिष्य श्री गुलाबचन्दजी के क्रमश ालजी, श्री हीराजी स्वामी तथा श्री कहानजी नामक शिष्य हुए। इन कहानजी के शिष्य श्री ामरजी हुए। आपका जन्म सवत् १८०९ में हुआ था। आप जामनगर जिले के पडाणा नामक के बीसा ओसवाल सज्जन थे। आप बडे विद्वान तथा जैन सूत्रों के ज्ञाता थे। आपने सवत् १८१९ न धर्म में दीक्षा ग्रहण की और संवत् १८४५ में आचार्य्य पदवी से विभूषित किये गये। आपने र्य समुदाय को खूब प्रसिद्ध किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १८७० में हुआ। आपके पश्चात् के शिष्य देवराजजी ने सम्वत् १८४७ में कच्छ में विहार किया तथा वहाँ पर छ कोठी के समुदाय का ार किया। आप विद्वान थे। अत आपके इस समुदाय का बहुत प्रचार हुआ। आप सम्वत् १८७९ र्गवासी हुए। आपके पश्चात् श्री भाणस्वामी गद्दी पर विराजे। आपने सम्वत् १८५५ में दीक्षा तथा सम्वत् १८८१ में निर्वाण पद को प्राप्त हुए। फिर देवजी स्वामी गद्दी पर विराजे। आपने सं० १८ मे दीक्षा ग्रहण की व सम्वत् १८८६ में गद्दी पर विराजे। श्री दीपचन्दजी बडे विद्वान और शात-ार्दी हो गये हैं। आपने सम्वत् १९०१ में लीम्बडी सम्प्रदाय में दीक्षा ली तथा संवत् १९२७ में ार्य पद पाया। आप भी जैन धर्म की सेवा कर स्वर्गवासी हो गये।

आचार्य्य श्री अमरसिंहजी—श्रीलोंकाशाहजी द्वारा जिन सज्जनों को साधु होने की आज्ञा दी गई थी ारसियों में से श्रीभानूलणाजी की २५वीं पीढी में श्री अमरसिंहजी पंजाबी हुए। आप अमृतसर निवासी

करने में बहुत बड़ी सहायता दी। इतिहास लेखक सरफखां की उच्छृंखल प्रवृत्तियों का वर्णन बतलाते हैं कि जगत सेठ के साथ वैर बाधकर सरफ़खां ने बंगाल के सुख और शांति को नष्ट कितनी मदद की। यही वह समय था जब सुप्रसिद्ध कातिल नादिरशाह की लूटमार से भारतवर्ष त्राहि २ मची हुई थी। इस बात की बड़ी जबरदस्त सम्भावना की जाती थी कि बंगाल का मुल्क उसके कातिल हाथों से नहीं बचाया जा सकता। नवाब सरफखां उसका मुकाबिला करने में था। बगाल के दूसरे ज़मीदार और शासक छोटे २ अनेक टुकड़ों में विभक्त हो रहे थे और उनकी इतना नहस नहस हो रही थीं कि वे किसी भी प्रकार उस काली घड़ी से देश को बचाने में असमर्थ र प्रान्त में आतँक छाया हुआ था और शाम को आनन्दपूर्वक सोने वाले लोग सोते समय ईश्वर से की प्रार्थना करते थे कि किसी तरह उनका सवेरा सुखपूर्वक उदय हो। ऐसे आतंक के समय में सारे निगाह जगत सेठ की ओर लगी हुई थी। जगत सेठ का सुप्रसिद्ध मकान, जो आज गंगा के गर्भ में हो गया है, उस समय प्रांत के तमाम जमींदारों और जिम्मेदार आदमियों का मंत्रणागृह बना हुआ था। के महाराज तिलोकचन्द, ढाका के नवाब राजवल्लभ, राय आलमचन्द तथा हाजी अहमद भी इस में शामिल रहते थे। ऐसा कहा जाता है कि इस भयंकर समस्या का निपटारा भी जगतसेठ के तिनाक ने आसानी के साथ कर दिया। कहा जाता है कि जगतसेठ की टकसाल में एक लाख सिक्के नादिरशाह के नाम के ढलवा कर उसको भेंट में भेजे गये जिससे वह बड़ा प्रसन्न हुआ और गाल लूटने का विचार बन्द कर दिया। इस प्रकार जगत सेठ की राजनीति कुशलता से इस महान् का अंत हुआ।

हम ऊपर कह आये हैं कि सरफराज की विषयांधता ने उस प्रांत में एक बड़ा असंतोष मचा था। दुर्योग से उसकी इस प्रवृत्ति के कारण एक ऐसी घटना घटी कि जिसने जगत सेठ की दृष्टि पूरी तरह से गिरा दिया और संभवतः इसी कारण उसे नवाबी से भी हाथ धोना पड़ा। बात कि जगतसेठ के महिमापुर के एक मुहल्ले में एक बड़ी सुन्दर कन्या रहती थी जिसका सम्बन्ध जगतसेठ के पुत्र से होने वाला था। सरफखां की विषय लोलुप दृष्टि उस पर पड़ी और विषयो- होकर उसने उसके सतीत्व को नष्ट करना चाहा। जगतसेठ को यह बात मालूम पड़ी और उन्होंने पर पहुँच कर उस दुष्ट से उस निर्दोष बालिका की रक्षा की और उसी समय उन्होंने उसको पद करने का निश्चय कर लिया। उन्होंने बंगाल के लोकमत को जो कि सरफखां के प्रति पहले ही हो रहा था प्रज्वलित कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप बहुत ही शीघ्र सरफखां का पतन हुआ स्थान पर नवाब अलीवर्दीखां नवाब की पदवी पर अधिष्ठित हुआ।

-् १०२४ में १० वर्ष की आयु में श्री मुनि चैनऋषिजी से दीक्षा ली। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक -क आपके पिता एवं पितामह भी जैन धर्म में दीक्षित हो गये थे। श्री अमोलक ऋषिजी पर का बड़ा प्रभाव पड़ा था। आपने जैन धर्म में दीक्षित होने के पश्चात् अपने ज्ञान को बढ़ाया तथा न जैन शास्त्रों का अध्ययन कर कई ग्रंथों की रचना की। आप बड़े विद्वान, वक्ता एवं जैन शास्त्रों तत्वों के अच्छे ज्ञाता हैं। आपकी लिखी हुई कई पुस्तकें एवं बड़े-बड़ेग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं —जैन तत्त्व प्रकाश आदि २।

श्री सोहनलालजी— पंजाब के आचार्य्य श्री मोतीरामजी के पश्चात् आप ही उक्त गद्दी पर विराजे। सियालकोट जिले के सम्बड़याल गाँव वासी ओसवाल जातीय मथुरादासजी गधैया के पुत्र हैं। आपकी ...जी का नाम श्री लक्ष्मी देवी था। आपका जन्म संवत् १९०६ में हुआ। आपने अमृतसर नगर में ... १९३६ में दीक्षा ग्रहण की थी। आपके गुरु श्री धर्मचन्दजी आपके साहस, परिश्रम, ज्ञान तथा तर्क ...से प्रसन्न थे। आप संवत १९५१ में युवाचार्य्य तथा सम्वत् १९५८ मे आचार्य्य पदवी से विभूषित ...गये हैं। आप बड़े तेजस्वी, गम्भीर एवं बाल ब्रह्मचारी हैं। युवावस्था में आपकी आवाज बड़ी ...थी। आपको जैन शास्त्रों में जो ज्योतिष का वर्णन आया है, उसका बहुत अच्छा ज्ञान है। आप समय ८३ वर्ष के हैं। आप ४० वर्षों से निरतर एकांतर वास कर रहे हैं तथा इस समय स्वाध्याय पठन पाठन में अपना सारा समय व्यतीत करते हैं। जैन शास्त्रों के ज्योतिष में आपका बहुत विश्वास आपके सम्प्रदाय में इस समय कुल ७३ मुनि एव ६८ आर्य्याजी विद्यमान हैं। पूज्य श्री सोहनलालजी ...वस्था होने के कारण अमृतसर में ही स्थायी रूप से निवासकरते हैं। संवत् १९६९ में आपने अपने ...य श्री काशीरामजी को युवाचार्य्य के पद से विभूषित किया। युवाचार्य्य श्री काशीरामजी का ... संवत १९५० में पसरूर (पंजाब) में हुआ है। आप दूगड़ गौत्रीय ओसवाल सज्जन हैं। आप बड़े ...र्सी तथा योग्य साधु हैं। पंजाब की स्थानकवासी जैन जनता को आप से बहुत बड़ी आशा है।

शतावधानी प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी—आपका जन्म संवत् १९३६ में कच्छ मुन्द्रा के भारोरा ...व गांव निवासी वीरपाल भाई ओसवाल के यहाँ हुआ। आप की माता का नाम श्री लक्ष्मीबाई है। ...का नाम उस समय रायसी भाई था। आप बड़े तीक्ष्ण बुद्धिवाले, कार्य्य शील एवं धार्मिक सज्जन ... आपने अपनी नवपत्नी के स्वर्गवास के वियोग में १८ वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण करली। वर्त्तमान ...आप जैनों के अग्रगण्य विद्वानों में गिने जाते हैं तथा आप अवधान निपुण होने के अतिरिक्त संस्कृत, ...व एवं गुजराती भाषाओं के लेखक, कवि तथा अच्छे वक्ता हैं। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। *

---

* ... विस्तृत परिचय के लिए 'अवधान प्रयोग नामक पुस्तिका में 'अवधान कर्त्ता का जीवन परिचय' ... १५५ ... ।

करने में बहुत बड़ी सहायता दी। इतिहास लेखक सरफखां की उच्छृंखल प्रवृत्तियों का वर्णन
; बतलाते हैं कि जगत सेठ के साथ वैर बांधकर सरफ़खां ने बंगाल के सुख और शांति को नष्ट
कितनी मदद की। यही वह समय था जब सुप्रसिद्ध कातिल नादिरशाह की लूटमार से भारतवर्ष
त्राहि २ मची हुई थी। इस बात की बड़ी जबरदस्त सम्भावना की जाती थी कि बंगाल का
मुल्क उसके कातिल हाथों से नहीं बचाया जा सकता। नवाब सरफखा उसका मुकाबिला करने में
था। बंगाल के दूसरे जमींदार और शासक छोटे २ अनेक टुकड़ों में विभक्त हो रहे थे और उनकी
इतनी तहस नहस हो रही थीं कि वे किसी भी प्रकार उस काली घड़ी से देश को बचाने में असमर्थ
रे प्रान्त में आतंक छाया हुआ था और शाम को आनन्दपूर्वक सोने वाले लोग सोते समय ईश्वर से
। की प्रार्थना करते थे कि किसी तरह उनका सवेरा सुखपूर्वक उदय हो। ऐसे आतंक के समय में सारे
। निगाह जगत सेठ की ओर लगी हुई थी। जगत सेठ का सुप्रसिद्ध मकान, जो आज गंगा के गर्भ में
होगया है, उस समय प्रांत के तमाम जमींदारों और जिम्मेदार आदमियों का मंत्रणागृह बना हुआ था।
के महाराज तिलोकचन्द, ढाका के नवाब राजवल्लभ, राय आलमचन्द तथा हाजी अहमद भी इस
में शामिल रहते थे। ऐसा कहा जाता है कि इस भयंकर समस्या का निपटारा भी जगतसेठ के
मस्तिष्क ने आसानी के साथ कर दिया। कहा जाता है कि जगतसेठ की टकसाल में एक लाख
सिक्के नादिरशाह के नाम के ढलवा कर उसको भेंट में भेजे गये जिससे वह बड़ा प्रसन्न हुआ और
गाल लूटने का विचार बन्द कर दिया। इस प्रकार जगत सेठ की राजनीति कुशलता से इस महान्
का अंत हुआ।

हम ऊपर कह आये हैं कि सरफराज की विषयांधता ने उस प्रांत में एक बड़ा असंतोष मचा
।। दैवयोग से उसकी इस प्रवृत्ति के कारण एक ऐसी घटना घटी कि जिसने जगत सेठ की दृष्टि
ो बुरी तरह से गिरा दिया और संभवत. इसी कारण उसे नवाबी से भी हाथ धोना पड़ा। बात
कि जगतसेठ के महिमापुर के एक मुहल्ले में एक बड़ी सुन्दर कन्या रहती थी जिसका सम्बन्ध
जगतसेठ के पुत्र से होने वाला था। सरफखा की विषय लोलुप दृष्टि उस पर पड़ी और विषयो-
ंकर उसने उसके सतीत्व को नष्ट करना चाहा। जगतसेठ को यह बात मालूम पड़ी और उन्होंने
के पर पहुँच कर उस दुष्ट से उस निर्बोध बालिका की रक्षा की और उसी समय उन्होंने उसको पद
ने का निश्चय कर लिया। उन्होंने बंगाल के लोकमत को जो कि सरफखा के प्रति पहले ही
हो रहा था प्रज्ज्वलित कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप बहुत ही शीघ्र सरफखां का पतन हुआ
सके स्थान पर नवाब अलीवर्दीखा नबाब की पदवी पर अधिष्ठित हुआ।

ाण के लिये अपने पुत्र को जैनधर्म के बाईस संप्रदाय में दीक्षित होने की सम्मति प्रदान कर दी। इस ानुसार सवत् १८०८ में आप महाराजा रघुनाथजी द्वारा जैन साधु दीक्षित किये गये। इसके पश्चात् बरस तक लगातार गुरु की सेवा में रहते हुए आपको अनुभव हुआ कि जिस मार्ग का अवलम्बन कर व कालयापन कर रहे हैं यह ठीक नहीं। अतएव इसी समय से आपने अपने नवीन सिद्धान्तों द्वारा एक ा संप्रदाय की नींव डाली। यह समय सम्वत् १८१७ को आषाढ़ सुदी १५ का था। आपका स्वर्गवास त् १८६० की भाद्रपद शुक्ला १३ को ७७ वर्ष की अवस्था में मारवाड राज्य के सिरियारी नामक ग्राम आ। आपने अपने समय में ४९ साधु और ५६ साध्वियों को अपने धर्म में दीक्षित किया था। इस य आपके कई ग्रहस्थ लोग भी अनुयायी हो गये थे। आप इस संप्रदाय के एक विशेष आचार्य्य थे।

श्री स्वामी भारीमलजी—स्वामी भिक्खनजी के स्वर्गारोहण हो जाने के पश्चात् आप पाटधारी चार्य्य हुए। मेवाड राज्य के केलवा नामक स्थान पर आपका दीक्षा सस्कार हुआ। आपके पिताजी नाम श्रीकृष्णामलजी लोढ़ा था। सिरियारी नामक ग्राम में आपका पाट महोत्सव हुआ। आपने अपने य में ३८ साधु और ४४ साध्वियों को दीक्षित किया। आपकी प्राकृति गम्भीर और शान्त थी। आपका वास सवत् १८७८ की माघ कृष्णा ६ को मेवाड के राजनगर नामक ग्राम में ७५ वर्ष की आयु में हुआ।

श्री स्वामी रायचन्दजी—तीसरे आचार्य्य स्वामी रायचन्दजी हुए। आपका जन्म रावलिया वाड) में हुआ। आपके पिता चतुर्भुजजी बम्ब थे। रावलिया ही में आपका दीक्षा संस्कार हुआ, राजनगर में आपका पाट महोत्सव हुआ। आपने अपने समय में ७७ साधु और १६८ साध्वियों को क्षित किया था। आपके जन्म स्थान ही में सम्वत् १९०८ की माघ कृष्णा १४ को ६२ वर्ष की आयु में का स्वर्गवास हुआ।

श्री स्वामी जीतमलजी—चौथे आचार्य्य स्वामी जीतमलजी का जन्म सम्वत् १८६० को त (मारवाड) नामक स्थान में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री आईदानजी गोलेछा था। का दीक्षा सस्कार जयपुर में तथा पाट महोत्सव बीदासर में हुआ। आप अच्छे विद्वान तथा प्रतिभा- ली आचार्य्य थे। आपने 'शुभ विध्वंसनम्' आदि बहुत से ग्रंथों की रचना की। आपने अपने जीवन में ५ साधु और २२४ साध्वियाँ बनाईं। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९३८ के भादवा कृष्ण १२ को जयपुर १८ वर्ष की आयु में हो गया है।

स्वामी मघराजजी—आप इस सम्प्रदाय के पाँचवे आचार्य थे। आपका जन्म चैत्र शुक्ला सम्वत् १८९७ में बीदासर (बीकानेर) में हुआ। आपके पिता श्री पूरनमलजी बैंगानी थे। आपकी क्षा लाडनूं में हुई थी एवम् जयपुर मे आप आचार्य्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपने अपने समय में साधु और ८३ साध्वियों को दीक्षित किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४९ की चैत्र कृष्णा ५ को वर्ष की आयु मे सरदारशहर मे हुआ।

स्वामी मानिकलालजी—स्वामी मानिकलालजी महाराज का जन्म श्री हुकुमचन्दजी खारड श्रीमाल) के यहाँ जयपुर में सम्वत् १९१२ की भाद्रपद कृष्णा ४ को हुआ। लाडनूं में आप क्षित हुए एवम् सरदारशहर मे आप आचार्य्य बनाए गये। आपने १६ साधु और २३ साध्वियों को

ओसवाल जाति के प्रसिद्ध घराने

ading Families Of Oswals

के सम्मुख होना निश्चित हुआ। दूसरे दिन जगत्सेठ नवाब अलीवर्दीखां को लेकर भास्कर के पास गये, बात चीत का सिलसिला आरम्भ हुआ, ऐसा कहा जाता है कि उसी समय अवसर बाव अलीवर्दी ने अचानक मियान में से तलवार निकाल कर विजली-वेग से भास्कर पण्डित का मार लिया। यह कार्य्य इतनी शीघ्रता से हुआ कि बाहर के लोगों की कौन कहे, मगर पास बैठे त् सेठ तक को एक क्षण पश्चात् सब घटना समझ में आई, वे किकर्त्तव्यमूढ़ हो गये, वे अकस्मात् अलीवर्दीखा यह भयङ्कर विश्वासघात" ? अलीवर्दीखा ने नीची गर्दन करके उत्तर दिया "मुर्शिदाबाद का बदला "। जगत् सेठ ने अत्यन्त दुखित होकर कहा 'बगाल के सर्वनाश का प्रारम्भ !" दोनों अत्यन्त दु:खी होकर चुपचाप घर चले आये।

इस घटना के पश्चात् जगतसेठ का दिल राजनैतिक चालों और दाव पेंचों से बहुत अधिक फट उन्होंने इस सम्बन्ध में मौन रहना ही उचित समझा। कुछ ही समय पश्चात् उनका और अलीवर्दीखा का स्वर्गवास हो गया और इनके पश्चात् ही बङ्गाल की पतन लीला जोर शोर से हो गई।

सिराजुद्दौला और जगत् सेठ महताबचन्द

अलीवर्दीखा के पश्चात् उसका दौहित्र सिराजुद्दौला बङ्गाल की नवाबी मसनद पर आया और गत् सेठ फतेहचन्द के पश्चात् उनके पौत्र महताबचन्द जगत् सेठ की गद्दी पर आये। उस समय े डूबती हुई शाहनशाहत की कब्र पर अहमदशाह और आदिलशाह जुगनूं की तरह चमक रहे थे। मदशाह ने भी महताबचन्द को जगत् सेठ की पदवी से और उनके भाई सरूपचन्द को "महाराजा" वी से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त बङ्गाल के सुप्रसिद्ध जैनतीर्थ "पारसनाथ टेकरी" का स्वामित्व भी शाही फ़रमान के द्वारा इन दोनों भाइयों को दिया। जगत् सेठ महताबचन्द ने भारत ही की तरह दक्षिणी भारत में भी बहुत बड़ी व्यापारिक प्रतिष्ठा प्राप्त की।

नबाब सिराजुद्दौला के सम्बन्ध में इतिहासकारों के अन्तर्गत बहुत गहरा मतभेद पाया जाता है। तहासकार उसे अत्यन्त कुशल और राजनीतिज्ञ व्यक्ति होने का सम्मान प्रदान करते हैं। कोई कि सिराजुद्दौला अंग्रेजों का विरोधी था इससे अङ्गरेजों ने उसे एक भयङ्कर मनुष्य की तरह चित्रित है। कुछ लोगों का यह विश्वास है कि जगत सेठ और इसके जमींदारों के स्वार्थ सिराजुद्दौला के सद न होने से इन लोगों ने उसे बदनाम करने की कोशिश की। इसके विपरीत कई इतिहासकारों अत्यन्त क्रूर, नराधम, विषयान्ध और पाशविकवृत्ति वाला भी चित्रित किया है।

कुछ भी हो, मगर इस बात के लिए बहुत से इतिहासकार प्रायः एकमत है कि वह

गैलड़ा गौत्र

जगत सेठ का इतिहास

अब हम पाठकों के आगे ऐसे खानदान का परिचय उपस्थित करते है जो सारी ओसवाल जाति [illegible] मे सितारे की तरह नहीं प्रत्युत सूर्य्य के प्रकाश की तरह जगमगा रहा है। जगत सेठ का [illegible] इन खानदानों मे सबसे पहला है जिन्होंने अपनी अपूर्व प्रतिभा और साहस के बल पर सारी [illegible] मुख उज्ज्वल किया है। राजनैतिक, व्यापारिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में इस खानदान के पुरुषों ने ऐसे विचित्र खेल खेले हैं जो किसी भी जाति के इतिहास को महानता की श्रेणी में लेजा देने के लिये पर्य्याप्त है।

जगत सेठ के पूर्वज ओसवाल जाति के गैलड़ा * गौत्रीय सज्जन थे। इस खानदान के पूर्वजों का [illegible] स्थान नागोर (मारवाड़) का था। पहले इस खानदान की आर्थिक स्थिति बहुत गिरी हुई [illegible] शोचनीय थी। यहाँ तक कि इनके पूर्वज सेठ हीरानन्दजी को आर्थिक कठिनाई के मारे देश [illegible] बाहर जाने की जरूरत पड़ी। यह किम्बदन्ति मशहूर है कि वे अपने जीवन मे हमेशा एक जैन [illegible] सेवा किया करते थे। इन जैन यति की इन पर बड़ी कृपा थी। जब ये देश छोड़ने के लिये तैयार [illegible] मुहूर्त निकलवाने के लिये उन यतीजी के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि महाराज कोई ऐसा [illegible] निकालिये जिससे मेरे सब मनोरथ सिद्ध हो जायँ। तब यती ने देख सुन कर उन्हें योग्य मुहूर्त [illegible] दिया। उसके अनुसार दूसरे रोज प्रात काल वे यात्रा के लिये रवाना हुए मगर थोड़ी ही दूर जाने [illegible] देखा कि एक भयंकर काला नाग उनके सामने से हो कर जा रहा है। इस अपशकुन से डर कर [illegible] लौट गये और यति के पास आकर सारा समाचार कह सुनाया तब यति ने नाराज होकर कहा [illegible] आपने बड़ी गलती की जो इतने प्रभावशाली शकुन को छोड़ कर वापिस चले आये। अगर [illegible] चले जाते तो अवश्य वहीं न वहाँ के छत्रपति होते, मगर खैर अब भी तुम इसी वक्त चले [illegible] छत्रपति नहीं तो पत्रपति (अरब पति) तो अवश्य हो जाओगे। कहना न होगा कि सेठ [illegible] उसी समय अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये विदेश को चल पड़े।

कुछ झांकी

बारहवीं शताब्दी की बात है कि जिस समय सिरोही और जालोर के देवड़ा वंश का सगर नामक एक वीर और प्रतापशाली व्यक्ति देलवाडा* नामक स्थान पर करता था। इसके पराक्रम की चारों ओर धूम मची हुई थी। इसी समय चित्तौड़ाधिपति रतनसी पर मालवे के अधिपति महमूद ने चढ़ाई की। इस विपत्ति के समय में महाराणा ने सगर से परिचित हो कर उन्हें अपनी सहायतार्थ युद्ध का निमन्त्रण दिया। सगर अपनी चतुरङ्गिणी सेना णा की सहायतार्थ आ पहुँचे। सगर की वीरता के आगे बादशाह को हार खानी पड़ी। वह पराजित ाग खड़ा हुआ। सगर ने उसका पीछा किया फलस्वरूप मालवे पर सगर का अधिकार हो गया।

कुछ समय पश्चात् गुजरात के मालिक बहिलीम जातअहमद बादशाह ने राना सगर से कहला तुम मुझे सलामी दो और हमारी नौकरी मजूर करो, नहीं तो मालवा प्रांत तुम से छीन लिया जायगा।

उपरोक्त बात स्वीकार न करने पर सगर और गुजरात के स्वामी दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। सगर अपना अपूर्व वीरत्व प्रदर्शित करते हुए विजयी हुए। बादशाह हारकर भाग गया। इस गुजरात पर भी सगर का अधिकार हो गया। कुछ समय के पश्चात् फिर गौरी बादशाह ने राणा पर आक्रमण किया। (सम्वत् १३०३) इस बार भी महाराणा ने सगर को याद किया। सगर पाते ही राणाजी की सहायतार्थ आ पहुँचे। इस बार सगर ने राणाजी तथा बादशाह को समझा

---

*देलवाड़ा नाम के दो स्थान हैं—पहला गुजरात में और दूसरा मेवाड़ में। हमारा खयाल है कि सम्भवत यह वाड़ वाला ही हो। इसके दो-तीन प्रमाण हैं। पहला यह कि उदयपुर के मुख्य द्वार का जिसे आजकल देवारी कहते नविक नाम देवड़ा बारी है। यहाँ पर आज भी देवड़ा वशीय राजपूत लोगों की चौकी है। सभव है इसी स्थान आस पास के स्थानों पर देवड़ा वशियों का राज्य रहा हो कि जिससे इसका नाम देवलवाड़ा पड़ा हो। दूसरा यहाँ जैन मंदिर हैं, इसलिए इसका नाम देवलवाड़ा या देवल पट्टम पड़ा हो, और देवड़ा वशियों का राज्य रहा हो म देश के राना सगर महाराणा की सहायतार्थ युद्ध में गये हों। तीसरा यह भी प्रसिद्ध है कि महाराणा उदयसिंहजी ह देवड़ा वशीय राजपूतों के यहाँ हुआ था, जिनसे कुछ जमीन लेकर वहाँ एक तालाब बनवाया जो वर्तमान समय में गर नाम से प्रसिद्ध है। उपरोक्त प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि देवड़ा राजपूतों का स्थान यही देलवाड़ा है।

गये, एक बार तो मरहठों ने उसकी कोठी को निर्दयतापूर्वक चूस ली फिर भी उसकी समृद्धि अखण्ड बनी रही।

सेठ माणकचंद के दो स्त्रियाँ थीं। पहली माणिकदेवी और दूसरी सोहागदेवी। से ही उनको कोई सन्तान न हुई। माणिकदेवी उम्र में बड़ी थी। वह परमभद्र, धार्मिक श्रद्धा-सम्पन्न महिला थी। इन्होंने सेठ माणकचंद के सन्मुख एक भव्य और अत्यन्त सुन्दर बनवाने की इच्छा प्रगट की। सेठ माणकचंद को पैसे की कमी तो थी ही नहीं, उसी समय कुशल से कुशल शिल्पियों को निमन्त्रित करके मंदिर की योजना तैयार की गई। भागीरथी बहुमूल्य कसौटी पत्थर का सारा मंदिर बनवाया गया। ऐसा कहा जाता है कि इस कसौटी संग्रह करने में उनको इतना मूल्य खर्च करना पड़ा कि जितने में शायद सोने और चांदी तयार हो सकता था।

गगा के विशाल प्रवाह में वह मन्दिर यद्यपि बहगया है फिर भी उसका भग्नावशेष से जोड़ जाड़ कर ठीक कर लिया गया है आज भी जगत सेठ की अमर कीर्त्ति को घोषित कर रहा है।

बादशाह फर्रुखसियर के पश्चात दिल्ली के रङ्ग मंच पर बादशाह महम्मदशाह अवतीर्ण उसने माणिकचन्द सेठ को जगत सेठ के नाम से दूसरी बार सम्बोधित कर सम्मानित किया। लेखक इस बात को मानते हैं कि मुगल दरबार ने सबसे पहले जगत सेठ को ही इस तरह की पदवी से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त उनको नवाब की गादी पर बाईं ओर बैठने मिला। उस जमाने के रिवाज के अनुसार मोती के कुण्डल, हाथी, और पालकी भी सल्तनत उन्हें बक्षी गई। बङ्गाल के नवाबों को सम्राट की ओर से इस बात की खास सूचना रहती थी कि अनुमति के बिना राज्यशासन का कोई भी महत्वपूर्ण काम न होना चाहिए। इस प्रकार गौरव बिताते हुऐ सेठ माणिकचन्द का स्वर्गवास हुआ और उनके स्थान पर उनके भाणज उनकी गादी पर आये।

इधर बंगाल की नवाबी के अधिकार पर मुर्शिदकुलीखाँ के पश्चात् उनके जमाई शुजाउद्दीन के पश्चात् उनका पुत्र सरफखाँ बैठे।

सरफखा और जगतसेठ फतेचन्द

मुर्शिदकुलीखाँ ने जिस शान्ति और सुव्यवस्था की जड़ बङ्गाल में जमाई तथा शुजाउद्दीन ने अपनी योग्यता और साहस के बल पर जिसे नष्ट होने से बचा लिया। सरफखाँ ने मंच पर आते ही अपनी बेवकूफी, उतावलेपन और विषयान्धता की प्रवृतियों से उस सुव्यवस्था पर कुल्हाड़ा चलाना प्रारम्भ किया। दिल्ली की डूबती हुई बादशाहत ने भी बंगाल की शांति और

त्र चारों राजकुमार व्याख्यान के समय आवेंगे और जिनधर्म का प्रतिबोध प्राप्त करेंगे। निदान ऐसा हुआ। प्रातःकाल चारों ही भाई गुरु के व्याख्यान में पधारे। उस समय गुरु महाराज दया-धर्म का देश कर रहे थे। उपदेश को सुनकर चारों के दिलपर बड़ा गहरा प्रभाव हुआ। उन्होंने उसी समय श्रावक बारह गुणों का व्रत धारण किया। आचार्य्यश्री ने उनको महाजन वंश में सम्मिलित कर लिया एवम् हित्थ के वंशज होने से बोहित्थरा गौत्र की स्थापना की जिसका अपभ्रंश नाम अब बोथरा है।

श्रावक हो जाने के पश्चात् चारों भाइयों ने धार्मिक कार्यों में रुपया लगाना प्रारंभ किया। इन्होंने आर्य्य श्री को साथ लेकर सिद्धाचलजी का एक बडा संघ निकाला मार्ग में उन्होंने अपने साधर्मी भाइयों एक मुहर और सुपारियों से भरा हुआ एक थाल लहान में दिया। इससे लोग इन्हें फोफलिया ने लगे। इसी समय से बोहित्थरा गोत्र से फोफलिया शाखा प्रकट हुई। इस यात्रा में चारों भाइयों ने खोल कर खर्च किया। जब लौट कर वापस घर आये तब लोगों ने मिल कर समधर को संघपत्ति का दिया। समधर की रानी का नाम जयती था।

समधर के तेजपाल नामक एक पुत्र हुआ। समधर स्वयं विद्वान् था अतः उसने अपने को खूब विद्याध्ययन करवा कर विद्वान बना दिया। जिस समय तेजपाल २५ वर्ष के थे तब समधर का वास हो गया। कुछ समय पश्चात् तेजपाल ने गुजरात के तत्कालीन राजा से गुजरात को ठेके पर लिया। ी बुद्धिमानी, अपने प्रभाव एवम् अपनी योग्यता से तेजपाल ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। इन्होंने १३७७ के ज्येष्ठ मास में पाटन नगर में तीन लाख रुपया लगाकर जैनाचार्य श्री जिनकुशल सूरि का महोत्सव करवाया तथा उक्त महाराज को लेकर शत्रुंजय तीर्थ का संघ निकाला। इसके पश्चात् और भी सा रुपया उन्होंने धार्मिक कार्यों में खर्च किया। इस अवसर पर सब संघ ने मिल कर माला पहिना जपाल को भी संघाधिपति का पद प्रदान किया। तेजपाल ने भी सोने की मुहर, एक थाली और ५ का एक लड्डू अपने साधर्मी भाइयों को लहाण स्वरूप बँटवाये। एक समय सम्मेदशिखरजी की यात्रा समय इन्हें रास्ते में म्लेच्छों ने रोका था उस समय ये म्लेच्छों को परास्त कर आगे बढे और यात्रा इस प्रकार कई शुभ कार्यों को करते हुए ये स्वर्गवासी हुए। इनकी स्त्री बीनादेवी से इन्हें बील्हा क एक पुत्र हुए। यही तेजपाल के उत्तराधिकारी हुए। ये बड़े धार्मिक पुरुष थे। इन्होंने भी य तीर्थ का एक संघ निकाल कर एक मोहर एक थाल तथा एक लड्डू लहान स्वरूप बटवाया। इनके पुत्र हुए, जिनके नाम कडूवा, धारण और नंदा था। इनमें से कडवा अपने पिता के उत्तराधिकारी हुए।

कडूवा नाम तो वास्तव में कडवा है मगर वे ठीक इसके विपरीत अमृत के समान थे। एक र का प्रसंग है कि ये अपने पूर्वजों की भूमि मेवाड देश के चित्तौड़ नामक स्थान में आये। वहां पर

से जगत सेठ का वैभव सूर्य्य अस्ताचल-गामी होने लग गया। इन्हीं दिनों एक बार हा वेल नाम के मुख्य अंग्रेज कर्मचारी ने जगतसेठ से कुछ रकम मांगी। जिसको देने में जगतसेठ ने इन्कार कर दिया। इस पर भयकर रूप से क्रुद्ध होकर उसने जगतसेठ के सर्वनाश की प्रतिज्ञा की। उसने तारीख . . सन् १७६० को वारन हेस्टिंग्ज को एक पत्र लिखा जिसमें जगतसेठ के लिये निम्नाङ्कित शब्द थे—

A time may come when they stand in need of the company's protection, in which case they may be assured, they shall be left to satan to be buffeted

अर्थात्—ऐसा भी समय आवेगा जब जगतसेठ को कम्पनी का आश्रय लेना पड़ेगा। उस समय उसे शैतान के हाथ में पड़कर भारी पीड़ा भोगना पड़ेगी।

चारों ओर ऐसी भयंकर परिस्थितियों को देखकर जगतसेठ का मन बहुत उचट गया और मन को शान्त करने के लिए अपनी दो हजार सेना सहित, वे सम्मेदशिखर की यात्रा को निकल गये।

मीरकासिम और जगतसेठ

मीरजाफर का प्रताप भी बहुत कम समय तक टिका, उसकी बेवकूफी ने उसे बहुत शीघ्र शासन के अयोग्य सिद्ध कर दिया और शीघ्र ही उसके स्थान पर उसका दामाद मीरकासिम गद्दी मसनद पर आया। मीरकासिम बड़ा साहसी, बुद्धिमान और राजनीतिज्ञ व्यक्ति था। मगर उसकी किस्मत और उसकी परिस्थिति उसके बिलकुल खिलाफ थी। उसकी प्रकृति इतनी शङ्काल थी कि अत्यन्त विश्वासपात्र व्यक्ति को भी वह हमेशा सन्देह की दृष्टि से देखता था। उसने जगत्सेठ महताबचंद और महाराजा सरूपचद को भी इसी शङ्काल प्रकृति की वजह से मुंगेर मे बुलाकर नजरबन्द कर दिया और जब वह "उधूयानाला" के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध मे बुरी तरह से हार गया तब केवल इसी भय के मारे कि कहीं जगत्सेठ अंग्रेजों से मिलकर अपना काम न जमा ले उसने जगतसेठ और महाराजा सरूपचद को गगा के गर्भ मे डूब जाने का आदेश किया। उसी दिन ये दोनों प्रतापी पुरुष इस भयंकर बलिवेदी पर गगा के गर्भ में समा गये और इस प्रकार इस खानदान के एक अत्यन्त प्रतापी पुरुष का दुःखान्त हुआ।

जगतसेठ खुशालचद

जिस दुःखान्त नाटक का प्रारम्भ जगतसेठ महताबचंद के समय में हुआ और जिसकी मृत्यु के साथ इसका अन्त हुआ उसका उपसहार जगतसेठ खुशालचद के समय में पूरा हुआ। महताबचद के साथ ही जगतसेठ के खानदान की आत्मा प्रयाण कर गई। केवल उसका ढांचा मात्र

चारों राजकुमार व्याख्यान के समय आवेंगे और जिनधर्म का प्रतिबोध प्राप्त करेंगे। निदान ऐसा हुआ। प्रात काल चारों ही भाई गुरु के व्याख्यान में पधारे। उस समय गुरु महाराज दया धर्म का देश कर रहे थे। उपदेश को सुनकर चारों के दिलपर बड़ा गहरा प्रभाव हुआ। उन्होंने उसी समय श्रावक बारह गुणों का व्रत धारण किया। आचार्य्यश्री ने उनको महाजन वंश मे सम्मिलित कर लिया एवम् हेत्थ के वशज होने से बोहित्थरा गौत्र की स्थापना की जिसका अपभ्रंश नाम अब बोथरा है।

श्रावक हो जाने के पश्चात् चारों भाइयों ने धार्मिक कार्यों मे रुपया लगाना प्रारंभ किया। इन्होंने चार्य्य श्री को साथ लेकर सिद्धाचलजी का एक बडा सघ निकाला मार्ग में उन्होंने अपने साधर्मी भाइयों एक मुहर और सुपारियो से भरा हुआ एक थाल लहान में दिया। इससे लोग इन्हे फोफलिया ने लगे। इसी समय से बोहित्थरा गोत्र से फोफलिया शाखा प्रकट हुई। इस यात्रा मे चारों भाइयों ने खोल कर खर्च किया। जब लौट कर वापस घर आये तब लोगों ने मिल कर समधर को संघपति का दिया। समधर की रानी का नाम जयती था।

समधर के तेजपाल नामक एक पुत्र हुआ। समधर स्वयं विद्वान् था अत. उसने अपने को खूब विद्याध्ययन करवा कर विद्वान बना दिया। जिस समय तेजपाल २५ वर्ष के थे तब समधर का वास हो गया। कुछ समय पश्चात् तेजपाल ने गुजरात के तत्कालीन राजा से गुजरात को ठेके पर लिया। नी बुद्धिमानी, अपने प्रभाव एवम् अपनी योग्यता से तेजपाल ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। इन्होंने १३७७ के ज्येष्ठ मास में पाटन नगर में तीन लाख रुपया लगाकर जैनाचार्य श्री जिनकुशल सूरि का महोत्सव करवाया तथा उक्त महाराज को लेकर शत्रुजय तीर्थ का संघ निकाला। इसके पश्चात् और भी सा रुपया उन्होंने धार्मिक कार्यों में खर्च किया। इस अवसर पर सब संघ ने मिल कर माला पहिना तेजपाल को भी सघाधिपति का पद प्रदान किया। तेजपाल ने भी सोने की मुहर, एक थाली और ५ का एक लड्डू अपने साधर्मी भाइयों को लहाण स्वरूप बँटवाये। एक समय सम्मेदशिखरजी की यात्रा समय इन्हें रास्ते में म्लेच्छों ने रोका था उस समय ये म्लेच्छों को परास्त कर आगे बढ़े और यात्रा इस प्रकार कई शुभ कार्यों को करते हुए ये स्वर्गवासी हुए। इनकी स्त्री बीनादेवी से इन्हें बील्हा एक पुत्र हुए। यही तेजपाल के उत्तराधिकारी हुए। ये बड़े धार्मिक पुरुष थे। इन्होंने भी जय तीर्थ का एक सघ निकाल कर एक मोहर एक थाल तथा एक लड्डू लहान स्वरूप बटवाया। इनके पुत्र हुए, जिनके नाम कडूवा, धारण और नन्दा था। इनमें से कडवा अपने पिता के उत्तराधिकारी हुए।

कडूवा नाम तो वास्तव में कडवा है मगर वे ठीक इसके विपरीत अमृत के समान थे। एक र का प्रसग है कि ये अपने पूर्वजों की भूमि मेवाड देश के चित्तौड़ नामक स्थान में आये। वहां पर

हरकचंदजी के पश्चात उनके पुत्र इन्द्रचन्द्रजी हुए और उनके पश्चात् उनके पुत्र गोबिन्द जी जगतसेठ की गादी पर आये। ये इतने उड़ाऊ थे कि इन्होंने अपने घर के गहने और कपड़ों का बेच डाला। अत मे जब आजीविका का सवाल उपस्थित हुआ तब उन्होंने अंग्रेज सरकार की शरण बहुत मिहनत के पश्चात् सरकार ने इनको १२००) मासिक जीवन भर देने का निश्चय किया। यहाँ सेठ गुलाबचन्दजी दत्तक आये जिनके पुत्र फतेचन्दजी इस समय विद्यमान है।

इस प्रकार जिस स्थान पर एक दिन वैभव और अधिकार का प्रखर सूर्य अपना गौरवमय किरणों से देदीप्यमान हो रहा था, परिवर्तन के प्रबलचक्र मे पड़ कर वहाँ साधारण प्रकाश भी कठिनता से दृष्टिगोचर होता है। इतना होने पर भी जगतसेठ के नाम के साथ जिस गौरव और भव्यता की कड़ियें बँधी हुई है, करालकाल उनको नष्ट नहीं कर सका। व्यक्ति मर गये उसका गौरव, उसकी कीर्ति और उसका बल महान् है, चिराराध्य है, अजर अमर है।

सेठ पूनमचन्द ताराचन्द गेलड़ा, मद्रास

इस खानदान के पूर्व पुरुष नागोर में निवास करते थे। ऐसा कहा जाता है कि करीब सौ वर्ष पूर्व यह खानदान नागोर से उठकर कुचेरा चला गया। आप लोग ओसवाल गेलड़ा स्थानकवासी सज्जन हैं। इस खानदान में श्रीयुत् कालूरामजी हुए। आपके चार पुत्र हुए जिनका नाम मुल्तानमलजी, शम्भूमलजी, अमरचन्दजी और छगनमलजी था। इनमें से श्रीयुत् अमरचन्दजी सर्व प्रथम करीब १२५ वर्ष पहले पैदल रास्ते कुचेरा से चलकर जालना होते हुए मद्रास आये। आप कर्मवीर और साहसी पुरुष थे। आपने यहाँ पर आकर पहले पहल कुछ समय तक सर्विस की। कुछ समय पश्चात् यहा के अंग्रेज अफसरों के उत्साहित करने पर आपने रेजीमेण्टल बैंकर्स का काम किया। इसमें आपको खूब सफलता मिली। संवत् १९५२ मे आपका स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से पूनमचन्दजी, हीराचन्दजी और रामबक्षजी था। पूनमचन्दजी का जन्म संवत् १९२१ मे हुआ। आप अपने पिता के बड़े योग्य पुत्र थे। आपने सहृदयता और मिलनसारी से बहुत नामवरी और यश प्राप्त किया। जब तक आप जीवित रहे तब सब भाई और कुटुम्ब शामिल ही काम करते रहे। आपका स्वर्गवास ४२ वर्ष की उम्र में संवत् ने हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से श्रीताराचन्दजी, किशनलालजी और इन्द्रचन्द्रजी था। इनमें से इन्द्रचन्द्रजी अमोलकचन्दजी के यहाँ दत्तक चले गये।

श्रीयुत् ताराचन्दजी का जन्म संवत् १९४० का है आप बड़े योग्य, सज्जन और अमनपसन्द है। आपके तीन पुत्र है। श्रीयुत भागचन्दजी, नेमीचन्दजी और खुशालचन्दजी। श्री भागचन्दजी शिक्षित और स्वदेश-प्रेमी सज्जन है। आपके श्री अबीरचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

ब्यावर गुरुकुल, मद्रास महावीर औषधालय, ब्यावर जैनपाठशाला, जैनज्ञान पाठशाला और दुर्लभचन्द मण्डल रतलाम इत्यादि संस्थाओं में आप काफी सहायता पहुँचाते रहते हैं। मद्रास के ओसवाल समाज में यह खानदान बहुत अग्रगण्य है।

कुछ समय पश्चात् चित्तौड़ के राणा कुम्भाजी और राव रणमलजी के पुत्र जोधाजी में किसी
र वश अनवन पैदा हो गयी। इसी अवसर के लगभग राव रणमलजी और मन्त्री वछराजजी राणा
ाजी से मिलने के लिए चित्तौड गये। प्रारंभ में तो राणाजी ने आपका अच्छा सम्मान किया, परन्तु
जाता है कि पीछे उन्होंने धोखे से राव रणमलजी को मरवा डाला। इस अवसर पर मन्त्री
ाजजी अपनी चतुराई से निकल कर वापस मंडोवर आगये।

राव रणमलजी के स्वर्गवासी होजाने पर उनके पुत्र जोधाजी पाट नशीन हुए। उन्होंने भी
ाजजी को सम्मान देकर पहले की तरह उन्हे अपना मन्त्री बनाया। जोधाजी ने अपनी वीरता से
के देश को उजाड़ कर दिया और अंत मे राणाजी को भी अपने वश मे कर लिया। राव जोधाजी के
ानिया थीं। पहली का नाम नवरंगदे था जो कि जंगलू देश के साखलों की पुत्री थी और दूसरी का
जसमादे था जाकि हाडा वंश की थी। नवरंगदे की रत्नगर्भा कोख से वीकाजी और बीदाजी नामक
त्र रत्न पैदा हुए तथा जसमादे से नींवाजी, सुजाजी, और सातलजी नामक तीन पुत्र पैदा हुए।

वीकाजी छोटी अवस्था ही में वडे चंचल और बुद्धिमान थे। उनके पराक्रम, तेज और बुद्धि को
र हाड़ी रानी को कुछ द्वेष पैदा हुआ। उसने मनमें विचार किया कि वीका की विद्यमानता में मेरे
को राज्य मिलना वड़ा कठिन है। यह सोचकर उसने कई युक्तियों से राव जोधाजी को अपने वश में
उनके कान भर दिये। राव जोधाजी भी सब वातों को समझ गये।

एक दिन दरवार में जवकि सब भाई वेटे वैठे हुए थे कुँवर वीकाजी भी अपने चाचा कांधलजी के
बैठे थे। ऐसे ही अवसर को उपयुक्त जान राव जोधाजी ने कहा कि जो अपनी भुजा के बलपर पृथ्वी
कर उसका भोग करता है वही सुपुत्र कहलाता है। पिता के राज्य को पाकर उसका भोग करनेवाले
की संसार में कीर्ति नहीं होती। यह वात कुंवर वीकाजी को चुभ गई। वे उसी समय अपने काका
लजी, रूपाजी, मांडणजी, मण्डलाजी, नाथूजी, भाई जोगायतजी, बींदाजी, सांखला नापाजी, पड़िहार बेलाजी,
ला लाखमजी, कोठारी चौथमलजी, पुरोहित विकमसी, साहुकार राठी सालाजी, मंत्री बछराजजी आदि
य स्नेही जनों को साथ लेकर जोधपुर से रवाना हो गये।

जोधपुर से रवाना होकर ये लोग शाम को मंडोवर पहुँचे। वहा गोरे भेरूजी का दर्शन कर
जी ने प्रार्थना की कि महाराज आपका दर्शन अब आपके हुक्म से होगा, हम तो अब बाहर जा रहे
इस प्रकार के भावों की प्रार्थना कर वे रातभर मंडोवर ही में रहे। ज्योंही प्रातःकाल वे उठे त्योंही
भैरवजी की मूर्त्ति वहेली मे मिली। इसे शुभ शकुन समझ वीकाजी उस भैरवजी की मूर्ति को लेकर
ही वहां से रवाना हो गये। वहा से वे काऊनी नामक स्थान पर गये। वहा के भूमियों को वश

हरकचंदजी के पश्चात उनके पुत्र इन्द्रचन्द्रजी हुए और उनके पश्चात् उनके पुत्र [illegible] जी जगतसेठ की गादी पर आये। ये इतने उड़ाऊ थे कि इन्होंने अपने घर के गहने और कपड़ों [illegible] वेच डाला। अत में जब आजीविका का सवाल उपस्थित हुआ तब उन्होंने अंग्रेज सरकार से [illegible] बहुत मिहनत के पश्चात् सरकार ने इनको १२००) मासिक जीवन भर देने का निश्चय किया। [illegible] यहाँ सेठ गुलाबचन्दजी दत्तक आये जिनके पुत्र फतेचन्दजी इस समय विद्यमान है।

इस प्रकार जिस स्थान पर एक दिन वैभव और अधिकार का प्रखर सूर्य अपना [illegible] गौरवमय किरणों से देदीप्यमान हो रहा था, परिवर्तन के प्रबलचक्र मे पड़ कर वहाँ साधारण [illegible] प्रकाश भी कठिनता से दृष्टिगोचर होता है। इतना होने पर भी जगतसेठ के नाम के साथ जिस [illegible] गौरव और भव्यता की कड़ियें बँधी हुई है, करालकाल उनको नष्ट नहीं कर सका। व्यक्ति [illegible] उसका गौरव, उसकी कीर्ति और उसका बल महान् है, चिराराध्य है, अजर अमर है।

सेठ पूनमचन्द ताराचन्द गेलड़ा, मद्रास

इस खानदान के पूर्व पुरुष नागौर में निवास करते थे। ऐसा कहा जाता है कि [illegible] सौ वर्ष पूर्व यह खानदान नागोर से उठकर कुचेरा चला गया। आप लोग ओसवाल गेलड़ा [illegible] स्थानकवासी सज्जन हैं। इस खानदान में श्रीयुत् काल्रामजी हुए। आपके चार पुत्र हुए जिनका नाम [illegible] मुल्तानमलजी, शम्भूमलजी, अमरचन्दजी और छगनमलजी था। इनमें से श्रीयुत् [illegible] सर्व प्रथम करीब १२५ वर्ष पहले पैदल रास्ते कुचेरा से चलकर जालना होते हुए मद्रास आये। [illegible] कर्मवीर और साहसी पुरुष थे। आपने यहाँ पर आकर पहले पहल कुछ समय तक सर्विस की। कुछ समय पश्चात् यहा के अंग्रेज अफसरों के उत्साहित करने पर आपने रेजीमेण्टल बैंकर्स का काम [illegible] किया। इसमें आपको खूब सफलता मिली। संवत् १९५२ में आपका स्वर्गवास हो गया। [illegible] तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से पूनमचन्दजी, हीराचन्दजी और रामबक्सजी था। [illegible] का जन्म संवत् १९२१ में हुआ। आप अपने पिता के बड़े योग्य पुत्र थे। [illegible] सहृदयता और मिलनसारी से बहुत नामवरी और यश प्राप्त किया। जब तक आप जीवित रहे [illegible] सब भाई और कुटुम्ब शामिल ही काम करते रहे। आपका स्वर्गवास ४२ वर्ष की उम्र में संवत् [illegible] में हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से श्रीताराचन्दजी, किशनलालजी और [illegible] चन्द्रजी था। इनमें से इन्द्रचन्द्रजी अमोलकचन्दजी के यहाँ दत्तक चले गये।

श्रीयुत् ताराचन्दजी का जन्म संवत् १९४० का है आप बड़े योग्य, सज्जन और [illegible] हैं। आपके तीन पुत्र हैं। श्रीयुत भागचन्दजी, नेमीचन्दजी और खुशालचन्दजी। श्री [illegible] शिक्षित और स्वदेश-प्रेमी सज्जन है। आपके श्री अबीरचन्दजी नामक एक पुत्र है।

ब्यावर गुरुकुल, मद्रास महावीर औषधालय, ब्यावर जैनपाठशाला, जैनज्ञान [illegible] दुर्लभचन्द मण्डल रतलाम इत्यादि संस्थाओं में आप काफी सहायता पहुँचाते रहते हैं। [illegible] ओसवाल समाज में यह खानदान बहुत अग्रगण्य है।

), और वनीलजी वगैरह पुत्र उत्पन्न हुए। आगे चलकर इनमें से लूनकरनजी वड़े पुत्र होने के
ीकानेर की गद्दी पर बैठे।

मन्त्री बछराजजी के करमसीजी, वरसिंहजी, रतनसिंहजी और नाहरसिंहजी नामक चार पुत्र हुए।
ज़ी के छोटे भाई देवराजजी के दस्सुजी, तेजाजी और भूंणजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से
के वंशज दस्साणी कहलाये।

राव बीकाजी के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् उनके पाट पर राव लूनकरनजी बैठे। आपने
। करमसीजी को अपना मन्त्री वनाया। करमसीजी ने अपने नाम से करमसीसर नामक एक गाव
। आपने राव लूनकरनजी की शादी चित्तौड़ के महाराणा की पुत्री से करवाने का प्रयत्न किया। इसके
, आपने वहुत से स्थानों के लोगों को बुलवाकर उनका एक संघ निकाला तथा वहुतसा रुपया खर्च कर
ाहंससूरि महाराज का पाट महोत्सव किया। संवत् १५७० में वीकानेर नगर में आपने श्री नेमी
ामी का एक बडा मन्दिर वनवाया जोकि इस समय मे भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त आपने
गिरनार और आबू नामक तीर्थों की यात्रा के लिए एक बड़ा संघ निकाला तथा अपने पूर्वजों की
र्ग में अपने साधर्मी भाइयों को एक मुहर, एक थाल और एक मोदक लहाण में बांटा। आप नार-
नन्दिगोकल-जैसलमीर) के लोदी हाजीखां के साथ युद्ध कर उसी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

राव लूनकरनजी के पश्चात् उनके पुत्र राव जेतसीजी बीकानेर की गद्दी पर बैठे। आपकी
ी का नाम काश्मीरदेवी था। आपने वच्छावत करमसी के छोटे भाई वच्छावत वरसिंहजी को अपना
नाया। वरसिंहजी के मेघराजजी, नगराजजी, अमरसीजी, भोजराजजी, डूंगरसीजी और हरराजजी
पुत्र हुए। इनमें से डूंगरसीजी के वंशज डूंगराणी कहलाये। वरसिंहजी के द्वितीय पुत्र नग-
के संग्रामसिंहजी नामक पुत्र हुए। संग्रामसिंहजी के पुत्र का नाम कर्मचन्दजी था।

वरसिंहजी भी शत्रुंजय आदि तीर्थों की यात्रा करने के लिए गये। जहां ये चांपानेर के बादशाह
के पास भी गये। बादशाह ने इनका अच्छा स्वागत किया तथा छः माह तक उन्हें वहीं रक्खा। और
आपको किलेदार वनाया। आपने गिरनार आबू आदि तीर्थों का संघ निकाला तथा रास्ते के
ों को छुड़वाया। आपने एक धर्मशाला भी वनवाई।

वरसिंहजी के पश्चात् इनके दूसरे पुत्र नगराजजी मन्त्री हुए। इसी समय जोधपुर के राजा
ने जागलू देश को अपने अधिकार मे करने की इच्छा की। यह जानकर राव जैतसीजी ने
ी को कहा कि मालदेव से विजय प्राप्त करना कठिन है। जब तक मालदेव यहां चढ़ न आवे तब

* कुछ लोग संग्रामसिंहजी को अमरसीजी का पुत्र होना वतलाते हैं।

नवाब अलीवर्दीखा और जगतसेठ

जगतसेठ का हाथ पकड़ कर अलीवर्दीखां बंगाल की मसनद पर आया। इतिहास ... उसके (अलीवर्दीखां) धार्मिक जीवन के प्रभाव से मुर्शिदाबाद का राजमहल पवित्र तपोवन ... गया था और बंगाल के वातावरण मे शाति और पवित्रता की एक हलकीसी लहर फिर से ... मगर बंगाल का प्रचण्ड दुर्भाग्य, जो कि सर्वनाश का विकट अट्टहास कर रहा था, अलीवर्दीखा ... रुका। अलीवर्दीखा को अपने शासनकाल में राज्य व्यवस्था पर शातिपूर्वक विचार करने के ... क्षण का समय भी न मिला। उसके राज्यकाल का एक २ क्षण बाहरी आतताइयों से ... करने में ही खर्च हुआ। बंगाल की गद्दी पर उसके पैर रखते ही मरहठों की फौज ने ... इरादे से आक्रमण करना शुरू किये। एक तरफ से बालाजी और दूसरी तरफ से राघोजी ... करने के इरादे से आकर उपस्थित हो गये। बंगाल के इतिहास में "बरगी का तूफान" एक ... महत्वपूर्ण घटना समझी जाती है। बादशाह औरंगजेब पहाड़ी चूहा कह कर जिन मरहठों ... करता था समय पाकर उन्हीं मरहठों ने दिल्ली की बादशाहत को जड़ से हिला दिया। ... बंगाल, बिहार और उड़ीसा को भी अपना शिकार बना लिया।

जब नवाब अलीवर्दीखा को इस आक्रमण की बात मालूम हुई तो उसने जगत्सेठ ... गाड़ी नामक सुरक्षित स्थान पर चले जाने की सलाह दी और मुर्शिदाबाद की रक्षा ... पर लिया। उसने मीर हबीब नामक एक विश्वसनीय सेनाध्यक्ष को जगतसेठ की कोठी और ... की रक्षा का भार सौंप कर स्वय मराठों की फौज पर आक्रमण कर दिया। मगर ठीक अवसर ... मीरहबीब बदल गया और उसने मरहठों को जगत् सेठ की कोठी लूटने का अवसर दे दिया। ... जगत् सेठ की कोठी की इतिहास-प्रसिद्ध लूट हुई, जिसमें मरहठों ने सारी कोठी को तहस नहस ... और करीब दो करोड़ की सामग्री को लूट लेगये। अलीवर्दीखा के हृदय पर इस घटना का ... असर पड़ा और उसने मन ही मन मराठों से इस घटना का बदला लेने का सङ्कल्प किया।

इस घटना को एक वर्ष भी न बीता होगा कि इतने ही में बालाजी और भास्कर ... मरहठे सरदारों ने फिर से बगाल पर चढ़ाई करदी। इनमें से बालाजी को तो दस ... किसी प्रकार वहाँ से विदा किया गया और भास्कर पण्डित को समझाने का भार जगतसेठ ... मानकरा के मैदान मे जहाँ भास्कर पण्डित की सेना पड़ी हुई थी, जगत् सेठ उससे मिलने ... गये। वहाँ उन्होंने समझौते की बात चीत की। इस बात चीत का निर्णय दूसरे दिन ...

हुई कि बीकानेर के तत्कालीन राव कल्याणसिंहजी ने एक समय मन्त्री कर्मचन्दजी के सामने ।प्रकट की कि मैं किसी तरह जोधपुर के गोखड़े पर बैठ जाऊँ। इस इच्छा की पूर्ति के लिये ी सम्राट् अकबर की सेवा में भेजे गये। जिस समय आप दिल्ली पहुँचे, उस समय सम्राट् तरंज खेल रहे थे। उनकी शतरज की चाल रुकी हुई थी। जो चाल वे चलते थे, उसी में ।। कहा जाता है कि कर्मचन्दजी ने बादशाह को शतरञ्ज की ऐसी चाल बताई कि जिससे वे हो गये। इस पर बादशाह बहुत खुश हुआ। बादशाह की इस प्रसन्नता का कर्मचंदजी ने मी के लिए फायदा उठा लिया। उन्होंने बादशाह से अपने स्वामी के लिये जोधपुर के गोखड़े समय के लिये बैठने का परवाना ले लिया।

इस सेवा से प्रसन्न होकर रावजी ने आपकी मागी हुई नीचे लिखी बातों को स्वीकार कर स्वयं ओर से ४ गाव का मुहरदार पट्टा प्रदान किया।

(१) चार माह चौमासे में कुम्हार, तेली, तम्बोली वगैरह अगता पालें।

(२) वैश्यों से माल का कर न लिया जाय।

(३) भेड के व्यापार में माल का जो चौथाई कर लिया जा रहा है, वह न लिया जाय।

राव कल्याणसिंहजी के पश्चात् राव रायसिंहजी बीकानेर के स्वामी हुए। आपने भी अपने मंत्री र कर्मचन्दजी को ही रक्खा। कहना न होगा कि कर्मचन्दजी ने अपने नरेश की बड़ी-बड़ी सेवाएँ के उद्योग से सम्राट् अकबर की ओर से रायसिंहजी को राजा का खिताब मिला। कर्मचन्दजी ने सम्राट् को भी बहुत सेवाएँ की थीं। आपने कुँवर रामसिंहजी के साथ दिल्ली पर आक्रमण करनेवाले ब्राहिम से युद्ध कर उसे हराया। सम्राट् की मदद के लिये गुजरात पर चढ़ाई की तथा मिर्जा हुसैन को हरा कर उस पर विजय प्राप्त की। इन सेवाओं से प्रसन्न होकर सम्राट् अकबर ने र्मचन्दजी की स्त्रियों को सोने के नुपूर पहनने का अधिकार दिया और आपका बड़ा सत्कार किया। समय ओसवाल जाति में हिरन गौत्रीय स्त्रियों के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों को पैरों में सोना पहनने का र न था।)

मन्त्री कर्मचन्दजी ने सोजत को बीकानेर राज्य के आधीन किया, जालोर के अधिकारी को किया तथा तुरमखां नामक व्यक्ति को मुहरें देकर उसके द्वारा कैद किये कुछ महाजनों को मुक्त ा, सिंध देश को बीकानेर में मिलाया तथा वहाँ की नदियों में मच्छी मारना बंद करवाया। नामक स्थान में बिलूचियों को परास्त किया। इस प्रकार आपने कई समय अपनी वीरता एवम् ा का परिचय दिया था।
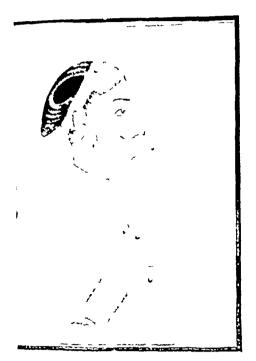
स्व० जगत सेठ गुलाबचंदजी गेलड़ा महिमापुर
(मुर्शिदाबाद)

जगत-सेठ फतेचंदजी गेलड़ा महिमापुर
(मुर्शिदाबाद)

श्री कर्मचन्दजी बच्छावत प्रधान बीकानेर

श्री मेहता अगरचन्दजी प्रधान, उदयपुर

श्री मेहता देवीचन्दजी प्रधान, उदयपुर.

श्री मेहता शेरसिंहजी प्रधान, उदयपुर.

उतावले स्वभाव का, स्वच्छन्दी और विलास प्रिय पुरुष था। एक ओर उसकी मौसियों के
अधिकारी और अलीवर्दीखा के दूसरे रिश्तेदार उसे हटाकर किसी दूसरे को नवाब बनाने
दूसरी ओर जगत् सेठ, जमीदार और व्यापारियों के दिल भिन्न भिन्न कारणों की वजह से
इसी बीच मे सिराजुद्दौला ने एक दिन, दिनदहाड़े मुर्शिदाबाद के बाजार मे हुसेनकुलाखां
सरदार का खून करवा डाला। जानकीराम नामक अपने एक प्रतिनिधि का खुले आम
मोहनलाल नामक एक गृहस्थ की बहन को—जो कि उस समय सारे बंगाल में सबसे
मानी जाती थी—अपने अन्त पुर में दाखिल कर लिया और मोहनलाल को रुपयों के जोर मे
दिया। इतिहास प्रसिद्ध रानी भवानी की विधवा पुत्री तारा को शय्यासहचरी बनाने के लि
जाल रचा, जिसके परिणाम स्वरूप उस निर्दोष बालिका को जीते जी चिता मे भस्म होजाना पड़ा।
घटनाओं से सारे बंगाल की प्रजा मे वह बहुत अप्रिय हो गया था, और इधर अंग्रेज-कम्पनी
उसकी शत्रुता दिन प्रतिदिन बढ़ती जारही थी।

इसी समय मे बगाल के राजनैतिक वातावरण में दो प्रभावशाली पुरुष और दृष्टिगोचर
एक उमाचरण जो इतिहास के पृष्ठों पर अमीचन्द के नाम से प्रसिद्ध है। जो वास्तव मे पंजाब
वाला था और व्यापार के लिए कलकत्ते मे आकर बस गया था। कितने ही व्यक्ति इसी अमी
जगत् सेठ मानकर, जगत सेठ फतेचन्द और महतावचन्द के निर्मल जीवन पर देश के प्रति
करने की कलङ्क कालिमा लगाने का प्रयत्न करते है, और कितने ही अमीचन्द के मित्र "माणिक
जगत् सेठ मानकर जैन जाति के सेठ माणिकचन्द के सम्बन्ध मे निराधार अपवाद फैलाते है।
जगत् सेठ माणिकचन्द नहीं प्रत्युत अलीनगर का एक फौजदार था जो पीछे से अंग्रेजों के पक्ष मे
था। यह माणिकचन्द प्राचीन ग्रन्थों मे "महाराज" माणिकचन्द के नाम से प्रसिद्ध था।

उमाचरण अथवा अमीचन्द के सम्बन्ध मे जो प्रमाणभूत बातें मिलती है उनसे
कि यह कोई मामूली या राह चलता व्यापारी न था। फ्रेंच मुसाफिर ओर्म लिखता है
विशाल मकान एक राजमहल की तरह था जिसमें सैंकड़ों कमरे थे, उसके पुष्पोद्यान मे
के वृक्ष खिले हुए थे, उसके मकान के आस-पास दिन-रात हथियारबन्द प्रहरी पहरा
मे अंग्रेजों ने भी उसे एक महाराज की ही तरह माना था, मगर बाद मे यह अंग्रेजों के
यह अमीचन्द जगत् सेठ महतावचन्द से भी इस उद्देश्य से मिला था कि वह सिराज
अंग्रेजों के पक्ष में करदे। कहा जाता है इसी बात की खबर सिराजुद्दौला को मिल जाने से
सेठ को अंग्रेजों का पक्षपाती समझ एक बार कैद कर दिया। मगर मीरजाफर के

निर्माण किया था। यह उपाश्रय आज भी बीकानेर के रागणी के चौक मे विद्यमान है। इसमें देखने योग्य क प्राचीन पुस्तकालय है जिसमें कर्मचन्दजी का चित्र भी लगा हुआ है।

मंत्री कर्मचन्दजी के दो पुत्र थे—भाग्यचन्द्रजी और लखमीचन्दजी। राजा रायसिंहजी के भी पुत्र थे—भूपतसिंहजी तथा दलपतिसिंहजी। ऐसा कहा जाता है कि राजा रायसिंहजी निम्न लिखित कारणों कर्मचन्दजी पर नाराज हो गये थे, अतएव कर्मचन्दजी अपने पुत्र परिवार को लेकर मेड़ता चले गये थे।

(१) रायसिंहजी के छोटे पुत्र दलपतिसिंहजी को राजा बनाने की चेष्टा करना।

(२) कर्नल पावलेट ने बीकानेर-गजेटियर में लिखा है कि, "जिस समय बादशाह कर्मचन्दजी से शतरञ्ज खेलते थे उस समय कर्मचन्दजी तो बैठे रहते थे लेकिन बीकानेर नरेश खडे रहते थे।" यह भी उनकी नाराजी का एक कारण था।

कर्मचन्दजी मेड़ता जाकर अपना धार्मिक जीवन बिताने लगे। इसी समय बादशाह ने बीकानेर ेश द्वारा इन्हें बुलवाया था। इसके बाद कर्मचन्दजी बादशाह से अजमेर मिलने गये और वे देहली कर रहने लगे। वहा बादशाह ने आपका यथोचित सत्कार किया तथा एक सोने के जेवर सहित शिक्षित ाथी प्रदान किया। बादशाह के पुत्र जहांगीर के मूल नक्षत्र में पैदा होने पर बादशाह ने सब र्मों में गृहों की शान्ति करवाई। उसी सिलसिले मे जैन धर्म की रीत्यानुसार शान्ति करवाने का ार कर्मचन्दजी पर छोड़ा था जिसे उन्होंने पूरा किया।

कर्मचन्दजी जब देहली में बीमार पड़ गये उस समय राजा रायसिंहजी उन्हें सांत्वना देने के िये पधारे थे। वहा जाकर उन्होंने बहुत खेद प्रगट किया और आंखो में आंसू भरलाये। रायसिंहजी चले जाने पर कर्मचन्दजी ने अपने पुत्रों को कहा कि महाराज की आँखों में आसू आने का कारण मेरी ीमारी नहीं है किन्तु इसका वास्तविक कारण यह है कि वे मुझे सजा नहीं दे सके। इसलिये तुम बीकानेर भी मत जाना।

कर्मचन्दजी की मृत्यु होजाने के पश्चात् राजा रायसिंहजी ने बुरहानपुर में अपनी रुग्णावस्था में पने पुत्रों से कहा कि "कर्मचन्द तो मरगया अब तुम उनके पुत्रों को मारना। मुझे मारने के षड्यंत्र में १ २ लोग शामिल थे उन्हे भी दण्ड देना। सूरसिंहजी ने इस बात को स्वीकार किया।

रायसिंहजी की मृत्यु के पश्चात् बादशाह जहांगीर ने दलपत को बीकानेर का स्वामी बनाया। रन्तु पीछे संवत् १६७० में बादशाह उनसे नाराज होगये और उन्होंने सूरसिंहजी को बीकानेर का स्वामी ोषित किया। सूरसिंहजी बादशाह से दिल्ली मिलने गये और आते समय कर्मचन्दजी के पुत्रों को ासल्ली देकर सपरिवार अपने साथ लिवा लाये। आपने कर्मचन्दजी के इन दोनों पुत्रों को मंत्री पद पर

कर परस्पर मेल करवा दिया तथा बादशाह से दंड लेकर गुजरात तथा मालवा उसे वापस कर दिया। इस प्रकार सगर ने अपने जीवन काल में कई वीरत्वपूर्ण कार्य कर दिखाये। सगर के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः बोहित्थ, गंगादास और जयसिंह थे।

सगर के पश्चात उनके पुत्र बोहित्थ देवलवाडा में रहने लगे। आप भी अपने पिता की तरह शूरवीर, बुद्धिमान एवम् पराक्रमी पुरुष थे। आप ११०० महावीरों के साथ चित्रकूट नगर (चित्तौड़) में राणा रतनसी के शत्रु के साथ होने वाले युद्ध में अपूर्व वीरता प्रदर्शित करते हुए काम आये। आपकी स्त्री का नाम बहरंगदे था, जिससे श्रीकरण, जैसो, जयमल, नान्हा, भीमसिंह, पद्मसिंह, सोमसिंह और पुष्पपाल नामक आठ पुत्र तथा पद्मा नामकी एक कन्या हुई थी। इनमें से बड़े पुत्र श्रीकर्ण के समधर, वीरदास, हरिदास, उद्धरण नामक चार पुत्र हुए थे।

श्रीकर्ण बड़े शूरवीर थे। इन्होंने अपनी भुजाओं के बल पर मच्छेन्द्रगढ़* को फतह किया। कहा जाता है कि इसी समय से ये राणा कहलाने लगे। एक समय का प्रसंग है कि बादशाह का खजाना कहीं जा रहा था, उसे राना श्रीकर्ण ने लूट लिया। जब यह समाचार बादशाह के पास पहुँचा तो वह बड़ा क्रोधित हुआ और उसने अपनी सेना मच्छेन्द्रगढ पर चढाई करने के लिये भेजी। राणा और बादशाह दोनों की सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में अपनी अपूर्व वीरता प्रदर्शित कर श्रीकर्ण इस युद्ध में काम आये। बादशाह का मच्छेन्द्रगढ़ पर अधिकार हो गया। श्रीकर्ण की स्त्री रतना दे अपने पति को काम आया जान अपने पुत्र समधर आदि को साथ ले अपने पिहर खेड़ी नगर† को चली गई। वहाँ जाकर उसने अपने पुत्रों को खूब विद्याध्ययन करवाया, उन्हें उचित सैनिक शिक्षा दी तथा सब कलाओं में निपुण बना दिया।

संवत् १३२३ के आषाढ मास के पुण्य नक्षत्र में गुरुवार के दिन खरतरगच्छाचार्य श्री जिनेश्वरसूरिजी महाराज खेड़ी नगर पधारे। नगर में प्रवेश करते समय मुनिराज को शुभ शकुन हुआ। इस पर सूरिजी ने अपने साथियों से कहा कि "इस नगर में अवश्य जैनधर्म का उद्योत होगा।" चौमासा समीप था, अतएव महाराज ने वहीं चौमासा व्यतीत करने का निश्चय किया और वहीं रहने लगे।

बोहित्थरा गौत्र की स्थापना

एक दिन रात्रि में पद्मावती जिन शासनदेवी ने महाराज से कहा कि कल प्रातःकाल

*अनुमान है कि यह स्थान वर्तमान अलवर स्टेट के अन्तरगत माचेड़ी नामक स्थान हो।

†अनुमान है कि यह स्थान गुजरात प्रांत के अन्दर ईडर के पास खेड़ब्रह्मा नामक स्थान हो।

लिया की आज्ञानुसार उनके नायक गणेशपंत ने शक्तावतों का पक्ष करना छोड़ दिया तथा प्रधान तीदास और सोमचन्द गाधी के पुत्र जयचन्द उनके द्वारा कैद किये गये उस समय महाराणा भीमसिंहजी फिर अगरचन्दजी मेहता को अपना प्रधान बनाया। जब सेंधिया के सैनिक लकवादादा और आंबाजी लिया के प्रतिनिधि गणेशपंत के बीच मेवाड मे लडाइयाँ हुई और गणेशपंत ने भागकर हमीरगढ़ में ग ली तो लकवा उसका पीछा करता हुआ वहाँ पर भी आपहुँचा। लकवा की सहायता के लिये राणा ने कई सरदारों को भेजा जिनके साथ अगरचन्दजी भी थे।

संवत् १८१८ से लगाकर सवत् १८५६ तक ये अपने स्वामी के खैरख्वाह रहे। ये कभी भी अपने लिक के नुकसान में शरीक न हुए। ये अपने चारों पुत्रों को हमेशा यह उपदेश करते थे कि "मै ख्वाही के कारण छोटे दरजे से बडे दरजे पर पहुँचा हूँ। इसलिये तुम लोगो को भी चाहिये कि चाहे ी भयंकर तकलीफें क्यों न उठानी पडे, हमेशा अपने मालिक के खैरख्वाह बने रहना। इसी में हमारी नामी और इज्जत है।" अगरचन्दजी ने बड़ी २ तकलीफें उठाकर माडलगढ़के किले को गनीमों के हाथ बचाया। आप समय २ पर उस परगने के राजपूत और मीणा-लोगों की बड़ी२ जमायतें लेकर हाराणा की खिदमत में हाजिर होते रहे। ये स्वामी भक्त मुसाहिब प्रधान का ओहदा मिलने व इससे अलग किये जाने पर अर्थात् दोनों अवस्थाओं में, अपने मालिक के पूरे खैरख्वाह बने रहे। महाराणा भी इनके खानदान की इज्जत बढ़ाने तथा बक्शीश देने में किसी बात की कमी न की आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर महाराणा साहब ने आपको कई रुक्के बक्षे जो हम ओसवालों के राजनैतिक महत्व नामक अध्याय में दे चुके है। आपका स्वर्गवास सवत् १८५७ में माडलगढ़ में हुआ।

मेहता देवीचन्दजी

अगरचन्दजी के पीछे उनके ज्येष्ठ पुत्र देवीचन्दजी मंत्री बने और जहाजपुर का किला इनके अधिकार मे रक्खा गया। इस किले का प्रबंध इनके हाथों में रहने से मेवाड़ को बहुत लाभ हुआ। कारण इस खैरख्वाह वश के वंशज देवीचन्दजी ने बड़ी बुद्धिमानी से इसकी रक्षा कर शत्रुओं का पूर्णदमन किया और इस सरहद्दी किले को सुरक्षित रक्खा। उन दिनों आंबाजी इंगलिया के भाई बालेराव शक्तावतों तथा सतीदास प्रधान से मिलकर महाराणा के भूतपूर्व मत्री देवीचन्दजी को चूँडावतों का तरफदार समझ कर कैद कर लिया। परतु महाराणा ने उन्हें थोड़े ही दिनों में छुड़वा लिया। झाला जालिमसिंह ने बालेराव आदि को महाराणा की कैद से छुडवाने के लिये मेवाड पर चढ़ाई की जिसके खर्च के लिये उसने जहाजपुर का परगना अधिकार मे कर लिया। इसके अतिरिक्त वह मांडलगढ़ का किला

कर परस्पर मेल करवा दिया तथा बादशाह से दंड लेकर गुजरात तथा मालवा उसे वापस कर दिया। इस प्रकार सगर ने अपने जीवन काल में कई वीरत्वपूर्ण कार्य कर दिखाये। सगर के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः बोहित्थ, गंगादास और जयसिंह थे।

सगर के पश्चात उनके पुत्र बोहित्थ देवलवाड़ा में रहने लगे। आप भी अपने पिता की तरह शूरवीर, बुद्धिमान एवम् पराक्रमी पुरुष थे। आप ११०० महावीरों के साथ चित्रकूट नगर (चित्तौड़) में राणा रतनसी के शत्रु के साथ होने वाले युद्ध में अपूर्व वीरता प्रदर्शित करते हुए काम आये। आपकी स्त्री का नाम बहरंगदे था, जिससे श्रीकरण, जैसो, जयमल, नान्हा, भीमसिंह, पद्मसिंह, सुमन तथा पुष्पपाल नामक आठ पुत्र तथा पद्मा नामकी एक कन्या हुई थी। इनमें से बड़े पुत्र श्रीकर्ण के समधर, वीरदास, हरिदास, उद्धरण नामक चार पुत्र हुए थे।

श्रीकर्ण बड़े शूरवीर थे। इन्होंने अपनी भुजाओं के बल पर मच्छेन्द्रगढ़* को फतह किया। कहा जाता है कि इसी समय से ये राणा कहलाने लगे। एक समय का प्रसंग है कि बादशाह का खजाना कहीं जा रहा था, उसे राना श्रीकर्ण ने लूट लिया। जब यह समाचार बादशाह के पास पहुंचा तो वह बड़ा क्रोधित हुआ और उसने अपनी सेना मच्छेन्द्रगढ पर चढ़ाई करने के लिये भेजी। श्रीकर्ण और बादशाह दोनों की सेनाओं मे घमासान युद्ध हुआ। अन्त में अपनी अपूर्व वीरता प्रदर्शित कर श्रीकर्ण इस युद्ध में काम आये। बादशाह का मच्छेन्द्रगढ़ पर अधिकार हो गया। श्रीकर्ण की स्त्री रतना दे अपने पति को काम आया जान अपने पुत्र समधर आदि को साथ ले अपने पिहर खेड़ा नगर† चली गई। वहाँ जाकर उसने अपने पुत्रों को खूब विद्याध्ययन करवाया, उन्हें उचित सैनिक शिक्षा दी तथा सब कलाओं में निपुण बना दिया।

संवत् १३२३ के आषाढ मास के पुण्य नक्षत्र में गुरुवार के दिन खरतरगच्छाचार्य श्री जिनेश्वरसूरिजी महाराज खेड़ी नगर पधारे। नगर में प्रवेश करते समय मुनिराज को शुभ शकुन हुआ। इसपर सूरिजी ने अपने साथियों से कहा कि "इस नगर में अवश्य जैनधर्म का उद्योत होगा।" चौमासा समीप था, अतएव महाराज ने वहीं चौमासा व्यतीत करने का निश्चय किया और वहीं रहने लगे।

बोहित्थरा गौत्र की स्थापना

एक दिन रात्रि में पद्मावती जिन शासनदेवी ने महाराज से कहा कि कल प्रातःकाल ...

---

*अनुमान है कि यह स्थान वर्तमान अलवर स्टेट के अन्तरगत माचेड़ी नामक स्थान हो।

†अनुमान है कि यह स्थान गुजरात प्रांत के अन्दर इडर के पास खेड़ब्रह्मा नामक स्थान हो।

हे गये। मेहता शेरसिंहजी के भाई मोतीरामजी जो पहले जहाजपुर के हाकिम और मेहता शेर- के प्रधानत्व में शामिल थे, शेरसिंहजी के साथ ही रसोडे मे कैद किये गये थे, कुछ दिनों बाद ास महल के कई मजिल ऊपर से गिरजाने के कारण उनका प्राणात हो गया। यह वह जमाना था ड़ में धींगाधींगी मच रही थी और रियासत के कुल सरदार महाराणा के खिलाफ हो रहे थे।

जब महाराणा सरूपसिंहजी का राज्य की आमद और खर्च उचित प्रबन्ध करने का विचार हुआ ी रामसिंहजी पर अविश्वास हुआ तब उन्होंने मेहता शेरसिंहजी को मारवाड़ से बुलवा कर फिर से ाधान बनाया। इसके कुछ समय पश्चात् ही मेहता रामसिंहजी का एक इकरार नामा आया। ार-नामे के आने के बाद ही अंग्रेजी सरकार की खिराज के रुपये बाकी रह जाने के कारण मेहता जी की भी शिकायतें हुई। लेकिन महाराणा के दिल पर इनका कुछ भी असर न पड़ा। इसका ह था कि वे पहले भी अजमेर के जलसे, और तीर्थों की सफर में होनेवाले लाखों रुपये के खर्च का हिसाब ा शेरसिंहजी के पास था देख चुके थे। वह मेहताजी की इमानदारी का काफी सबूत था। ात यह थी कि शेरसिंहजी बहुत मुलायम दिल एवम् मित्रता के बड़े पक्के थे। यही कारण था कि ालाफ बहुत लोग न थे। तीसरी बात यह थी कि ये खैरख्वाह अगरचन्दजी के वंशज थे।

महाराणा ने अपने सरदारों की छटून्द चाकरी का मामला तय कराने के लिए मेवाड़ के पोलिटिकल र्नल राबिन्सन से सं० १९०१ में एक नया कौल-नामा तैयार करवाया, जिसपर शेरसिंहजी सहित कई के हस्ताक्षर थे। शेरसिंहजी ने प्रधान बनकर महाराणा की इच्छानुसार व्यवस्था की और कर्ज- फैसला भी योग्य रीति से करवाया।

लावे (सरदारगढ़) का दुर्ग महाराणा भीमसिंहजी के समय में शक्तावतों ने डोडियों से अपने अधिकार में करालिया था। महाराणा सरूपसिंहजी के समय वहाँ के शक्तावत रावत ह के काका सालमसिंह ने राठोड़ मानसिंह को मार डाला तब उक्त महाराणा ने उनका ाँव जप्त कर लिया और चतरसिंह को आज्ञा दी कि वह उसे गिरफ्तार कर ले। चतरसिंह ने महाराणा की तामील न कर सालमसिंह को पनाह दी। इस पर महाराणा ने वि० सं० १९०४ (ई० सन्) में शेरसिंहजी के दूसरे पुत्र जालिमसिंहजी * को ससैन्य लावे पर अधिकार करने के लिये भेजा। उन्होंने

* जालिमसिंहजी मेहता अगरचन्दजी के दूसरे पुत्र उदयरामजी के गोद रहे, परन्तु उनके भी कोई पुत्र न था उन्होंने मेहता पन्नालालजी के तीसरे भाई तख्तसिंहजी को गोद लिया। तख्तसिंहजी गिरवा व कपासन के प्रान्तों ाम रहे तथा महकमा देवस्थान का भी काम कई वर्षों तक इनके सुपुर्द रहा। महाराणा सज्जनसिंहजी ने इन्हें इज- ास और महद्राज सभा का सदस्य बनाया। ये सरल प्रकृति के कार्य कुशल व्यक्ति थे।

इनका चित्तौड के तत्कालीन महाराणाजी ने बहुत सम्मान किया। तथा उनसे वहीं रहने का आग्रह कि

कुछ समय व्यतीत होने के पश्चात् माण्डवगढ़ (मालवा) का सुलतान किसी कारण वश सेना लेकर चित्तौड पर चढ़ आया। यह जानकर राणाजी ने कडुवाजी से कहा कि पहले भी आप ने हमारी बहुत सी उत्तम २ सेवाएँ की हैं, अतएव इस बार भी आप हमें हमारे कार्य में सा दीजिये। कडूवाजी ने महाराणा की बात स्वीकार की। अन्त में इन्होंने (कडूवाजी) अपना ब्रि एवम् चातुर्य्य से बादशाह को समझा बुझा कर उसकी सेना को वापस लौटा दिया। जिससे रा इनसे प्रसन्न हुए। महाराणाजी ने प्रसन्न होकर बहुत से घोड़े आदि प्रदान कर इन्हें अपना प्रधान बनाया। इनके मन्त्रित्व काल में इन्होंने अपने गौत्री भाइयों का कर छुडवाया। अपने सद्व्यवहार से इन् वहां उत्तम यश उपार्जन किया, पश्चात् राणाजी से आज्ञा लेकर ये वापस गुजरात प्रा हिल पट्टण नामक स्थान में आये। वहा के राजा ने भी इनका बड़ा सम्मान किया और इनके प्रसन्न हो कर पाटन इनके अधिकार में करदी।

कडूवाजी ने बहुत सा रुपया धार्मिक कार्यों में खर्च किया। गुजरात देश में जीव हिंसा बन्द करवाया। संवत् १४३२ के फाल्गुन माह में खरतरगच्छाचार्य्य श्री जिनराजसूरि महाराज का पाट महो करवाया। इसमें करीब १$\frac{1}{4}$ लाख रुपया खर्च हुआ। इसके अतिरिक्त इन्होंने भी अपने पूर्वजों श्री शत्रुंजय तीर्थ का संघ निकाला तथा वहीं मोहर, थाल और पाँच सेर का लड्डू लहान में बांटा। प्रकार अतुल सम्पत्ति खर्च करते हुए आप स्वर्गवासी हुए।

कडुवाजी के पुत्र का नाम मेराजी था, आपकी धर्मपत्नी का नाम हर्षनदेवी था। मेराजी ने तीर्थों के करों को माफ करवाया। इनके मांडणजी नामक पुत्र हुए, जिनकी भार्य्या का नाम था। मांडणजी अपने परिवार सहित गुजरात की भूमि को छोड कर काठियावाड के ग्राम में चले गये। वहा इनके उदाजी नामक एक पुत्र हुए। उदाजी की भार्य्या का नाम इनके दो पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से नरपाल और नागदेव था। इनमें से नागदेव के अपनी से दो पुत्र रत्न पैदा हुए। जिनका नाम क्रमशः जैसलजी और वीरमजी था। जैसलजी की भार्या जसमादेवी था।

जैसलजी के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमश बछराजजी, देवराजजी और हंसराजजी इनमें से ज्येष्ठ पुत्र बछराजजी अपने भाइयों को साथ लेकर मंडोवर नगर में राव श्रीरणमलजी के रहे। राव रणमलजी ने बछराजजी की बुद्धि के अद्भुत चमत्कार को देखकर उन्हें अपना नियुक्त किया।

मेहता प्रतापसिंहजी वच्छावत, उदयपुर

श्री मेहता लक्ष्मीलालजी वच्छावत, उदयपुर.

मेहता गोकुलचन्दजी प्रधान, उदयपुर.

श्री मेहता मोतीरामजी वच्छावत, उदयपुर.

मे कर उन्होने वहा अपनी दुहाई फेर दी। वही तालाब के किनारे उत्तम जगह को देखकर गांग्रा की मूर्ति को स्थापित किया तथा वही रहने लगे। आगे चलकर इसी स्थान का नाम कोड़मदसर नाम हुआ। यह स्थान अभी भी वहा वर्तमान है और बीकानेर के राजकुमारों का मुडन सस्कार यहीं होता है। यहा पर राजमहल भी बने हुए है। संवत् १५४१ मे राव बीकाजी ने रातीघाटी नामक पहाड़ पर किला बनवाकर नगर बसाया जो वर्तमान मे बीकानेर के नाम से प्रसिद्ध है। मत्री बछराजजी ने बीकानेर के पास अपने नाम से बच्छासर नामक एक गाव बसाया।

बच्छावत गौत्र की स्थापना

कुछ समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् बछराजजी ने शत्रुञ्जय और गिरनार की तीर्थयात्रा के हेतु एक बड़ा सघ निकाला। मार्ग मे सब साधर्मी भाइयों को वरपति एक मुहर एक थाल और एक लड्डू की लहान बाटी तथा संघपति की पदवी को प्राप्त की। इसके बाद आप श्री जिनकुशल सूरि महाराज के साथ देवराज नगर (जो वर्तमान मे मुल्तान के पास है) मे यात्रा करने के लिये गए। आपके वशज इसी समय से आपके नाम से बच्छावत कहलाने लगे। राव बीकाजी ने आपकी कार्यकुशलता से प्रसन्न होकर आपको 'परभूमि पंचानन' के खिताब से सुशोभित किया।

एक समय की बात है जब कि बछराजजी राव बीकाजी के कोठारी थे उसी समय एक दिन महल में खीर बनी थी। उस दिन ब्राह्मण खीर मे शक्कर डालना भूल गया। इससे रावजी ने एक दासी (नौकरानी) को बछराजजी के पास भेज कर शक्कर मँगवाई। बछराजजी ने भूल से शक्कर के बदले नमक भेज दिया। नमक डालने से खीर खारी हो गई जिससे रावजी उसे न खा सके। इससे नाराज होकर उन्होंने कोठारी बछराजजी को बुलवाया तथा नमक भेजने के लिये भला बुरा कहा। इस पर बछराजजी ने अपनी भूल को छिपा कर बडी बुद्धिमानी से उत्तर दिया कि महाराज हमेशा जो डावड़ी सामान लेने के लिए आती है कल वह नहीं आई थी। उसके स्थान पर दूसरी डावड़ी थी इसलिए मैंने जानबूझ कर नमक भेजा था। इसका कारण यह था कि सभव है वह शक्कर में कुछ मिला कर आपको दे दे। नमक भेजने से मैंने यह सोचा था कि जिसमे आप नमक डालेंगे वह वस्तु खारी हो जायगी और आप न खा सकेंगे, जिससे यदि उसमें कोई वस्तु भी मिला दी जायगी तो अमगल नहीं होगा। यदि आप हमेशा आने वाली डावड़ी को भेजते तो मै नमक न भेजता।" बछराजजी का यह उत्तर सुनकर राव बीकाजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बछराजजी की और भी तरक्की की तथा उन्हें और भी अधिक विश्वासपात्र समझने लगे।

राव बीकाजी के रगादेवी नामक स्त्री थी। जिसकी कोख से लूनकरनजी, नरसीजी, [illegible]

सेना के साथ वहाँ पर चढ़ाई की। इसमें मेहता शेरसिंहजी अपने पुत्र सवाई सिंहजी सहित शामिल
जब निम्बाहेड़े पर कप्तान शार्वस ने अधिकार कर लिया तब शेरसिंहजी सरदारों की जमियत सहित
प्रबन्ध के लिये नियत किये गये।

महाराणा ने शेरसिंहजी को अलग तो कर ही दिया था अब उनसे भारी दण्ड भी लेना चाहा। इसकी
पाने पर राजपूताने का एण्जट गवर्नर जनरल जार्ज लारेन्स वि० सं० १९१७ (ई० सन् १८६०)
दिसम्बर को उदयपुर पहुँचा और शेरसिंहजी के घर जाकर उसने उनको तसल्ली दी।
णा ने जब पोलिटिकल एजण्ट के सम्मुख शेरसिंहजी की चर्चा की तब। पोलीटिकल एजण्ट ने
दण्ड लेने का विरोध किया। इसी प्रकार मेजर टेलर ने भी इस बात का विरोध किया जिससे
णा और पोलिटिकल एजण्ट के बीच मन मुटाव हो गया जो उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। महाराणा ने
हजी की जागीर भी जब्त करली परन्तु फिर महाराणा शम्भुसिंहजी के समय में पोलिटिकल ऑफ़िसर
लाह से उन्हें वह वापिस लौटा दी गई।

महाराणा सरूपसिंहजी के पीछे महाराणा शंभुसिंह के नाबालिग होने के कारण राज्य प्रबन्ध के
मेवाड़ के पोलिटिकल एजण्ट मेजर टेलर की अध्यक्षता में रीजेंसी कौंसिल स्थापित हुई जिसके शेर-
ी भी एक सदस्य थे। महाराणा सरूपसिंहजी के समय शेरसिंहजी से जो तीन लाख रुपये दण्ड के
गये थे वे रुपये इस कौंसिल द्वारा, शेरसिंहजी की इच्छा के विरुद्ध, उनके पुत्र सवाईसिंहजी को वापिस
गये। इसके कुछ ही वर्ष बाद शेरसिंहजी के जिम्मे चित्तौर जिले की सरकारी रकम बाकी रह जाने की
यत हुई। वे सरकारी तोजी जमा नहीं करा सके और जब ज्यादा तकाजा हुआ तो सलूम्बर के रावत की
में जा बैठे। यहीं पर इनकी मृत्यु हुई। राज्य की रकम वसूल करने के लिए उनकी जागीर राज्य के
कार में करली गई। शेरसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र सवाईसिंहजी उनकी विद्यमानता में ही मर गये थे अतएव
तसिंहजी इनकी गोद गये पर ये भी निःसंतान रहे तब माँडलगढ़ के चतरसिंहजी उनके गोद गये जो
वर्षों तक माँडलगढ, राशमी, कपासन और कुम्भलगढ़ आदि जिलों के हाकिम रहे। उनके पुत्र संग्राम-
जी इस समय महद्राज सभा के असिस्टेंट सेक्रेटरी हैं। आपने बी० ए० की परीक्षा पास की है। आप
मिलनसार और योग्य व्यक्ति हैं।

हता गोकुलचन्दजी

हम यह प्रथम लिख ही चुके हैं कि मेहता गोकुलचन्दजी महाराणा सरूपसिंहजी द्वारा प्रधान
ये गये थे। फिर वि० सं० १९१६ (ई० सन् १८५९) में महाराणा ने उनके स्थान पर कोठारी
रसिंहजी को नियत किया। महाराणा शम्भूसिंहजी के समय वि० सं० १९२० (ई० सन् १८६३)

तक सब प्रबन्ध कर लेना ठीक है। तब मन्त्री नगराजजी ने शेरशाह बादशाह के पास सहा-यता मागी। सहायता मिलने के पहले ही मालदेव ने जागलू पर चढ़ाई कर दी। इस युद्ध में काम आये और मालदेव का जागलू पर अधिकार हो गया, पर नगराजजी ने शेरशाह की ... मालदेव को परास्त कर जांगलू का राज्य वापस जैतसीजी के पुत्र राव कल्याणसिंहजी को दिलाया ... सारस्वत नगर से लाकर राज्य गद्दी पर बिठाया। नगराजजी ने धार्मिक कार्यों में भी ... किया। आपने भी यात्राओं का संघ निकाला। आपकी पत्नी का नाम नवलदेवी था। ... नाम से नागासर नामक एक गांव बसाया था जो वर्तमान में भी विद्यमान है।

राव जैतसीजी के युद्ध में काम आजाने के पश्चात् उनके पुत्र राव कल्याणसिंहजी गद्दी पर विराजे। उन्होंने मन्त्री नगराज जी के पुत्र सग्रामसिंहजी को अपना मन्त्री बनाया। ... वीर पराक्रमी और बुद्धिमान थे। आपने भी श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी को साथ लेकर शत्रुंजय ... यात्राओं का एक संघ निकाला था। जिसमें प्रत्येक साधर्मी भाई को एक रुपया, एक थाल ... लड्डू लहान में बांटा था। मार्ग में आप चित्तौडपति उदयसिंहजी की सेवा में उपस्थित हुए ... महाराणा ने आपका बहुत सम्मान किया था।

बच्छावत करमचन्दजी

आप बीकानेर के प्रधान मेहता सग्रामसिंहजी के पुत्र थे। आप बड़े प्रतिभाशाली, ... एवं परम राजनीतिज्ञ थे। आप अपने समय के महापुरुष और प्रसिद्ध मुत्सद्दी थे। आपकी ... और कार्य्य कुशलता से प्रसन्न होकर बीकानेर के तत्कालीन महाराजा कल्याणसिंहजी ने आपको प्रधान मन्त्री नियुक्त किया था। जिस समय की यह बात है, उस समय सम्राट् अकबर भारत के सिंहासन पर विराजमान थे। कहना न होगा कि कर्मचन्दजी ने न केवल बीकानेर के राजनैतिक ... न केवल राजस्थान के राजनैतिक मैदान मे वरन् ठेठ शाही दरबार मे अपने महान् व्यक्तित्व की ... राजनैतिक योग्यता की छाप डाली थी। सम्राट् अकबर पर आपका बड़ा प्रभाव था और ... भारतीय राजनीति के गूढ़तम प्रश्नों कि सुलझाने में और अपनी शासन नीति के निर्माण में, आपकी ... लिया करते थे। फारसी के तत्कालीन ग्रन्थों में तथा जयसोम कृत "कर्मचन्द्र प्रबन्ध" में उनके ... महान जीवन के विविध पहलुओं पर और उनके तत्कालीन प्रभाव पर बहुत ही अच्छा प्रकाश डाला ...

एक इतिहासज्ञ का कथन है कि कभी कभी छोटी छोटी घटनाएँ भी महान् ऐतिहासिक ... को जन्म देती हैं। मन्त्री कर्मचन्दजी का एक मामूली-सी घटना ने सम्राट् पर प्रभाव ...

आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। आपने न केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही अपितु धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत कार्य किये थे। आपने सम्राट् अकबर को जैनधर्म के तत्वों के लिए जैनाचार्य श्रीजिनचन्द्रसूरिजी को खम्भात से बुला कर सम्राट् से उनका परिचय कराया और महत्वपूर्ण व्याख्यान करवाया। अकबर पर उनका अच्छा प्रभाव पड़ा तथा अकबर ने उनके अहिंसा के तत्व को समझ कर कई पर्व के पवित्र दिनों में हिंसा न करने के आदेश सारे साम्राज्य में

काश्मीर के युद्ध मे सम्राट् अकबर अपनी धर्म जिज्ञासा के लिये महाराज के शिष्य को साथ ले गया था। अकबर का जैनधर्म पर बहुत प्रेम हो गया था। कर्मचन्द्जी की दान शीलता बढ़ी-चढ़ी थी आपने एक समय श्रीजिनचन्द्रसूरि महाराज के आगमन की बधाई सुनाने वाले को बहुत द्रव्य प्रदान किया था इसका वर्णन करते हुए मल्ल नामक कवि ने इस प्रकार लिखा है:—

नव हाथी दीने नरेश, मद सों मतवाले।
नवे गॉव बगसीस, लोक आवे हित हाले॥
परा की सौ पाच सुतो, जग सगळो जाणे।
सवा करोड को दान, मल्ल कवि सत्य बखाने॥
कोई रावत राणा न करि सके, संग्राम नदन तें किया।
श्री युगप्रधान के नाम सुज, कर्मचद इतना दिया॥

इसके अतिरिक्त जब सम्राट् ने कर्मचन्दजी के कहने से जिनसिंहसूरि को आचार्य पद प्रदान की तब इसके महोत्सव में कर्मचन्दजी ने सवा करोड रुपये खर्च किये थे।

(प्राचीन जैन लेख संग्रह)

मत्री कर्मचन्दजी ने सामाजिक क्षेत्र में भी बहुत काम किया था। आपने पुराने का सशोधन किया तथा जाति की उन्नति के लिये कई नये कानून बनाए। वर्तमान समय में जो ४ बांटी जाती है वह उन्हीं के द्वारा प्रचारित की गई थी। सवत् १६३५ के दुर्भिक्ष में आपने का प्रतिपालन किया तथा अपने साधर्मी भाइयों को १२ माह तक अन्न-वस्त्रादि प्रदान किया था पर सबको मार्ग व्यय एवम् खेती आदि करने के लिये कुछ द्रव्य देकर अपने २ स्थान पर तुरंनखा को सिरोही की लूट में भिन्न २ धातुओं की जो एक हजार प्रतिमाएँ मिली थीं, उनमें आपने श्रीचिंतामणि स्वामी के मंदिर के तलघर में रखवा दी जो अब तक मौजूद हैं।

कर्मचन्दजी के बनवाये हुए एक विशाल उपाश्रय में एक बार महाराज जिनचन्द्रसूरि

पुराने ढंग से बाहिर जानेवाली अफीम को रोक दिया, जिससे सारी अफीम उदयपुर होकर अहमदाबाद ने लगी। इस काम मे पन्नालालजी ने बहुत हाथ बटाया। इससे राज्य की आमदनी भी खूब बढ़ी। पकी इन सेवाओं से प्रसन्न होकर आपको पहिले की जागीर के अतिरिक्त तीन गाँव अच्छी आमदनी के र प्रदान किये और 'शम्भुनिवास' में इन्हें सोने का लगर पहनने का सत्कार प्रदान किया। इनकी इस ओर बढती हुई हालत को देखकर इनके बहुत से विरोधियों ने महाराणा को इनके खिलाफ सिखाया और बड़े २ ऑफिसरों से यात्रा के रुपये माँगने को कहा। इसी सिलसिले में इनसे १२०००) एक बीस हजार रुपयों का रुक्का भी लिखवा लिया था। परंतु पीछे से महाराणा ने ४०००) चालीस र रुपयों के अलावा सब छोड़ दिये।

मेहता पन्नालालजी ने अपनी परिश्रम शीलता, प्रबध कुशलता एवम् योग्यता से महाराणा ब को समय २ पर हानि लाभों को बतलाते हुए राज्य की नीव बहुत मजबूत करदी। ऐसा करने में तों के स्वार्थों पर आघात पहुँचा और उन्होंने फिर इनके विरुद्ध शिकायतें शुरू करदीं। उन्होंने महा-ा को रुग्णावस्था में यह कह कर बहकाया कि ये तो रिश्वत खाते हैं और आप पर जादू कर रक्खा है। बातों में आकर महाराणा ने इन्हें वि० सं० १९३१ भाद्रपद वदी १४ को कर्णविलास में कैद किया। तहकीकात करने पर ये उक्त दोनों बातों से निर्दोष ठहरे लेकिन इनके इतने शत्रु हो गये थे जो प्राण लेने को तयार थे। ऐसी परिस्थिति में पोलिटिकल एजंट की सलाह से आप कुछ समय के लिये अजमेर कर रहने लगे।

मेहता पन्नालालजी के कैद हो जाने पर महकमा खास का काम राय सोहनलाल कायस्थ के पुर्द हुआ। परन्तु उनसे काम न होता देख यह काम मेहता गोकुलचन्दजी और सही वाले अर्जुनसिंहजी दिया। मेहता पन्नालालजी के अजमेर चले जाने के पश्चात् से महकमा खास का काम ठीक तरह से चलता देख कर महाराणा सज्जनसिंहजी के समय पोलिटिकल एजट कर्नल हर्बट ने वि० सं० १९३२ में उन्हें अजमेर से बुलवा कर फिर महकमा खास का काम सुपुर्द किया।

आपने महकमा खास के भार को सम्हालकर कई नवीन काम किये। आपने संवत् १९३५ पहले पहल स्टेट में सेटलमेंट जारी किया तथा इससे अप्रसन्न जाट-बलाइयों को बड़ी बुद्धिमानी एवम् होशियारी से इसके हानि-लाभ समझा बुझाकर शात किया। साथ ही सेटलमेंट को पूर्ववत् ही जारी रक्खा। इन्होंने शिक्षा विभाग में भी सुधार किया। यहाँ के हॉयस्कूल युनिवर्सिटी से सम्बन्धित किये गये और महाराणा की मृत्यु पर बाँटे जाने वाले १०) प्रति ब्राह्मण की पद्धति को कम कर १) प्रति ब्राह्मण कर त बड़ी रकम स्कूल, अस्पताल आदि अच्छे कामों में खर्च करने के लिए बचाली। जिलों में स्कूल और

० मेहता मुरलीधरजी वल्लावत, उदयपुर

स्व० राय पन्नालालजी मेहता सी आई ई, उदयपुर.

मेहता फो[illegible]लालजी, उदयपुर

नियुक्त किया। करीब छ मास तक उनपर ऐसी कृपा बतलाई कि मानो वे पुरानी सभी बातों को भूल गये। एक समय स्वयं राजा साहब इनकी हवेली पर भी पधारे जहाँ पर इन दोनों ने एक लाख रुपये का ... बनवा कर उनको बिठाया। इस प्रकार छ: मास के बाद एक समय राजाजी ने बहुत से वीर राजपूतों को इन दोनों के मारने के लिये भेजा। ये दोनों भी बड़े वीर थे। आपने अपने परिवार के सभी ... को मार कर अपने ५०० वीरों सहित लड़कर शत्रुओं का सामना किया और अंत में वीर गति को प्राप्त हुए।

इसी अवसर पर रघुनाथ नामक एक सेवक इनके कुटुम्ब की एक गर्भवती स्त्री को लेकर ... माता के मन्दिर में शरण चला गया। उस समय के करणीमाता के मन्दिर के नियमानुसार ये बच गये तथा आगे चलकर इन्हीं के पुत्र भाण हुए जिनसे आगे का वंश चला। उस सेवक के वंशज भी बच्छावतों के सेवक हैं उसके वंश में हाल ही में गंगाराम और गिरधारी हुए हैं जिन्हें राज्य से ... प्राप्त था। इनका पुत्र पृथ्वीराज अब भी मौजूद है।

भाण के पुत्र जीवराजजी हुए। उनके पुत्र लालचंदजी और उनके प्रपौत्र पृथ्वीराजजी ... आप लोग पहले बीकानेर से अजमेर और फिर घासा ग्राम (मेवाड) में आरहे। घासा ग्राम में पहले पहल ये देवारी दरवाजे के मोसल मुकर्रर हुए और फिर जनानी ड्योढी पर मोसल हुए। ... दरबार के खास रसोड़े के आफिसर बने। इस प्रकार धीरे २ इनकी राणा जी तक पहुँच हो ... इनके २ पुत्र हुए—अगरचन्दजी और हंसराजजी।

मेहता अगरचंदजी

मेहता अगरचंदजी और उनके भाई हंसराजजी दोनों ही राज्य में ऊँचे पदों पर रहे। महाराणा अरिसिंहजी ने अगरचन्दजी को मांडलगढ़ की क़िलेदारी पर तथा उक्त जिले की हुकुमत पर नियुक्त किया। तभी से मांडलगढ़ के किले की किलेदारी इस वंश के हाथ में चली आरही है। ये पहले महाराणा के सलाहकार और फिर दीवान बनाये गये। महाराणा अरिसिंहजी द्वितीय की माधवराव सिंधिया के साथ वाली उज्जैन की लडाई में मेहता अगरचन्दजी भी लडे थे। जब माधवराव सिंधिया ने दूसरी बार ... डाला उस समय के युद्ध में भी महाराणा ने इनको अपने साथ रक्खा। महापुरुषों के साथ हुए टोपल मगरी और गगार की लडाइयों में भी ये महाराणा के साथ रहकर लड़े थे।

महाराणा हमीरसिंहजी (दूसरे) के समय में मेवाड़ की विकट स्थिति सम्हालने में बड़वे अमरचन्दजी के बड़े सहायक रहें। जब शक्तावतों और चूँडावतों के झगड़ों के पश्चात् ...

नोट—ओझाजी भाण को भामाशाह की पुत्री का लड़का होना लिखते हैं। मगर मेहताओं की तवारीख में ... भोजराज का पुत्र होना लिखा है।

perfection and let them not become merely nominal Remember that the great aim of life is to succeed, not to commence a good werk and leave it unfinished"

With best wishes and kind regards

इसी प्रकार मि० जी० एच० ट्रेन्हर ए० जी० जी० राजपूताना ने लिखा है.—

"Rai Pannalal Mehta C I E has been the chief official of the Odeypore Darbar for, I believe, about twenty five years and, has been highly praised for 'his abilities by successive Residents He now retires from the office having been held in High Estimation by the Government and the regret of many friends in Mewar

My best wishes attends. I trust he will find pease and repose after his long distinguished career

जब महाराणा सज्जनसिंहजी का स्वर्गवास हुआ तबतक उन्होंने किसी को भी अपना उत्तरा ारी बनाने की इच्छा प्रगट नहीं की। मेवाड में ऐसा नियम चला आता है कि गद्दी खाली न रहे। समय जरा कठिनाई का था लेकिन पन्नालालजी की कार्य दक्षता के कारण महाराणा फतेसिंहजी उसी राजगद्दी पर विराज गये। इस बात की प्रशंसा गवर्नर जनरल ने भी की थी।

श्रीयुत पन्नालालजी ने अपने पिताजी की यादगार में नाथ द्वारा में एक सदाव्रत खोला। जिससे व लोगों को सीधा (पेट्या) दिया जाता है। आपने वाड़ी के नाम से उदयपुर में एक मशहूर बगीचा ाया, एक वावडी और धर्मशाला भी बनवाई। वहाँ के शिला लेख से प्रतीत होता है कि आपने उदयपुर र की वाड़ी नाथ द्वारा के मन्दिर को भेंट की है। आपका धार्मिक कार्यों पर भी पूरा लक्ष्य था। ाने चारों धामों की यात्रा की थी। आप पूरे पितृभक्त थे। आपके पुत्र फतेलालजी तथा भतीजे र्सिंहजी के विवाहों पर महाराणा साहब स्वयं जनाने सहित आपकी हवेली पर पधारे थे और दोनों समय आपके पुत्र तथा भतीजे को पैरों में पहनने को स्वर्ण देकर सम्मानित किया था।

ऐसे बहुत कम अवसर आते है कि एक व्यक्ति अपने ही समय मे चार पुश्तों को देख सके। ार यह सौभाग्य भी आपको प्राप्त था। आपके समय में आपके प्रपौत्र भी मौजूद थे। जिस समय पके प्रपौत्र हुए उस समय आप सोने की निसरनी पर चढ़े और उस निसरनी के टुकड़े कर वितरण ा दिये थे। इसी समय उदयपुर की समग्र ओसवाल जाति मे भी पीलिये ओढ़ने बटवाये थे।

भी अपने अधिकार मे करना चाहता था। महाराणा भीमसिंहजी ने उसके दबाव में आकर मांडलगढ़ किला उसे लिख तो दिया लेकिन तुरंत एक आदमी के हाथ मे ढाल और तलवार देकर उसे मांडलगढ़ देवीचन्दजी के पास भेज दिया। देवीचन्दजी ने इस बात से यह अनुमान किया कि महाराणा ने मुझे जालिमसिंह से लड़ने का आदेश किया है। इस पर उन्होंने किले का प्रबंध करवाया और वे अपने सामन्तों सहित लड़ने को तयार होगये। इससे जालिमसिंह की मनोकामनाएँ पूरी न होसकीं। जिस समय कर्नलटॉड ने उदयपुर की राज्यव्यवस्था ठीक की उस समय संवत् १८७५ के भाद्रपद शुक्ला ११ को पुन मेहता देवीचन्दजी को प्रधान का खिलअत दिया गया। यद्यपि ये प्रधान बनने से इन्कार कर रहे तिसपर भी महाराणा ने इनकी विद्यमानता में दूसरे को प्रधान बनाना उचित न समझ इन्हें ही इस पद पर रक्खा। इस समय प्रधान तो येही थे लेकिन कुल काम इनके भतीजे शेरसिंहजी देखते थे। आपकी दो शादियाँ हुई थी, जिनमें से दूसरी शादी मेहता रामसिंहजी की बहन से हुई थी। इनके साले मेहता रामसिंहजी बडे होशियार और महाराणा के सलाहकारों मे से थे। उस समय कुँअर अमरसिंहजी के साह शिवलालजी विश्वसनीय नौकर होने के कारण अपना ढंग अलग ही जमाने लगे उस समय इस गड़बड़ तफरी को देखकर मेहता देवीचन्दजी ने यह प्रधान का पद अपने साले रामसिंहजी को दिलवा दिया।

मेहता शेरसिंहजी

अगरचन्दजी के तीसरे पुत्र सीतारामजी के बेटे शेरसिंहजी हुए। महाराणा जवानसिंहजी के समय अंग्रेज़ी सरकार के खिराज के ७ लाख रुपये चढ़ गये जिससे महाराणा ने मेहता रामसिंह के स्थान पर शेरसिंहजी को प्रधान बनाया। मगर कप्तान काफ साहब के द्वारा रामसिंहजी की सिफारिश आने से एक ही वर्ष के पश्चात् उन्हें अलगकर रामसिंहजी को पुन प्रधान बनाया। वि० स० १८८८ (ई० सन् १८३१) में शेरसिंहजी को फिर दुबारा प्रधान बनाया। महाराणा सरदारसिंहजी ने गद्दी पर बैठते ही मेहता शेरसिंहजी को कैद कर मेहता रामसिंहजी को प्रधान बनाया। शेरसिंहजी पर यह दोषारोपण किया गया कि महाराणा जवानसिंहजी के पीछे वे महाराणा सरदारसिंहजी के छोटे भाई शेरसिंहजी के पुत्र शार्दूलसिंह को गद्दी पर बैठाना चाहते थे। यद्यपि शेरसिंहजी अपने पूर्वजों की तरह राज्य के खैरख्वाह थे पर ऐसी हालत में शेरसिंहजी पर सख्ती होने लगी तब पोलिटिकल एजण्ट ने महाराणा से उनकी सिफारिश की किन्तु उनके विरोधियों ने महाराणा को फिर भड़काया कि अंग्रेजी सरकार की हिमायत से वह आपको दबाना चाहता है। अंत में दस लाख रुपये देने का वायदा कर शेरसिंहजी कैद से मुक्त हुए। परन्तु उनके शत्रु उनको मरवा डालने के उद्योग में लगे जिससे अपने प्राणों का भय जानकर वे मारवाड़ की ओर अपना रास्ता

दिया हो। इसके बाद भी आपने कई अवसरों पर अत्यन्त सफलता के साथ महाराणा साहब से भाषण दिये।

आपके साहित्यक जीवन का एक नमूना आपकी वृहद् लायब्ररी व आपकी चित्र शाला है। इस में आपने कई हस्तलिखित प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों का तथा कई नवीन और प्राचीन अंग्रेजी, हिन्दी की ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनैतिक इत्यादि सभी विषय की पुस्तकों का संग्रह किया है। जिसके को बहुत धन और श्रम खर्च करना पड़ा। इसी प्रकार आपकी चित्रशाला मे मेवाड़ के महा-ा से लेकर अब तक के करीब २ सभी महाराणाओं के तथा आपके पूर्वजों में करमचन्दजी बच्छावत अभी तक के बहुत से चित्र आइल पेंट किये हुए टंग रहे हैं।

साहित्यिक जीवन की तरह आपका धार्मिक जीवन भी बड़ा अच्छा रहा है। आप श्री वल्लभ के अनुयायी हैं। मगर फिर भी आप को किसी दूसरे धर्म से रागद्वेष नहीं है। योगाभ्यास में भी आपकी अच्छी जानकारी है। आप के योगाभ्यास को देख कर आर्क्यालॉजिकल डिपार्टमेंट रर जनरल बहुत मुग्ध हुए थे।

आपका राजनैतिक जीवन भी उदयपुर के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। उदयपुर के राज-वरण में आपकी बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा है। सब से पहले आप गिरवा जिले के हाकिम बनाये उसके पश्चात् आप क्रमश महकमा देवस्थान और महकमा माल के अफसर रहे। फिर महद्राज मबर हुए, जो अभी तक हैं। दिल्ली के अन्दर देशी रियासतों का प्रश्न हल करने के लिये बटलर सम्बन्ध में चेम्बर ऑफ प्रिन्सेस की ओर से जो स्पेशल ऑर्गेनिझेशन् हुआ था, उसमें मेवाड़ तरफ से जो कागजात भेजे गये थे, उनको महाराणा की आज्ञानुसार आप ही ने तयार किये थे। ों को लेकर आपही रियासत की तरफ से देहली गये थे। महाराणा साहब ने आपको मे सोना, कई खिलअतें व पोशाकें, दो सुनहली मूठ की तलवारें, एक सोने की छडी, पगडी में माझे की इज्जत, बैठक की प्रतिष्ठा, बलेणा घोड़ा इत्यादि कई सम्मानों से सम्मानित किया।

आपका विवाह संवत् १९३७ में शाहपुरा में हुआ। इस विवाह से आपको दो पुत्र हुए जिन ुंवर देवीलालजी और कुँवर उदयलालजी हैं। देवालालजी ने बी० ए० पास किया है। आप देवस्थान के हाकिम रहे। उदयलालजी ने एफ० ए० पास किया और उसके पश्चात मेवाड़ के जिलों के हाकिम रहे। देवीलालजी के कन्हैयालालजी और गोकुलदासजी दो पुत्र हैं। कन्हैयालालजी पास करके बेरिस्टरी पास करने विलायत गये हैं। कुँवर गोकुलदासजी एफ० ए० में पढ़ रहे प दोनों भाइयों को भी दरबार ने बैठक की इज्जत बख्शी है।

ऊपर मेहता फतेलालजी का परिचय बहुत ही संक्षिप्त में लिखा गया है। आपका साहित्य प्रेम ा हुआ है कि उसका पूरा वर्णन किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक तयार हो सकती है। देशी और भाषा के कई पत्रों मे कई अवसरों पर आपके जीवन पर नोट निकले हैं। एक रूसी और इटली पुस्तक में भी आपके जीवन पर टिप्पणी निकली हुई है। जब हम लोग आपके कुटुम्ब का इति-खने को आपके पास गये तो आपने पुराने कागज पत्रों के दफ्तर खोल दिये, जिन्हें देख कर हम गये। इतनी बड़ी खोजपूर्ण सामग्री सिवाय बाबू पूरणचन्द्रजी नाहर के हमें और कहीं भी देखने

गढ़ पर हमला किया परन्तु अपने ५०, ६० आदमियों के मारे जाने पर भी गढ़ को कुछ भी नुकसान न पहुँचा सके। तब महाराणा ने प्रधान शेरसिंहजी को वहा पर भेजा। उन्होंने वहाँ जाकर उसे गिरफ्तार कर लिया और चतुरसिंह को महाराणा के सामने हाजिर किया। महाराणा ने इनकी इस सेवा से प्रसन्न होकर इन्हे कीमती खिलअत, सीख के समय बीड़ा तथा ताजीम की इज्जत प्रदान करना चाहा पर इन्होंने खिलअत और बीड़ा तो स्वीकार कर लिया परन्तु ताजीम लेने से इन्कार किया।

जब महाराणा सरूपसिंहजी ने सरूपशाही रुपया बनवाने का विचार किया उस समय शेरसिंहजी ने कर्नल राबिन्सन से लिखा पढ़ी कर इसकी परवानगी मँगा ली थी। जिससे वह सिक्का बनने लगा।

वि० सं० १९०७ मे (ई० सन् १८५०), वितख आदि पालों की भील जाति तथा वि० सं० १९१२ (ई० सन् १८५५) में पश्चिमी प्रान्त के कालीवास आदि स्थानों भील जाति को सजा देने के लिये शेरसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र सवाईसिंहजी भेजे गये, जिन्होंने इन्हे सख्त सजा देकर सीधा किया।

वि० सं० १९०८ में लुहारी के मीनों ने सरकारी डाक लूट ली जिसकी गवर्नमेंट में शिकायत होने पर महाराणा की आज्ञा से शेरसिंहजी के पौत्र (सवाईसिंहजी के पुत्र) अजितसिंहजी को जो उस समय जहाजपुर के हाकिम थे, भेजा। जालंधरी के सरदार अमरसिंह शक्तावत के साथ इन्होंने मीना जाति का दमन किया और बड़ी बहादुरी के साथ लड़कर छोटी बड़ी लुहारी पर अपना अधिकार कर लिया। मीने भागकर मनोहर गढ़ तथा देवका खेड़ा में जा छिपे किन्तु इन्होंने वहाँ भी उनका पीछा किया। मीनों के कई सहायक जयपुर, टोंक और बूँदी इलाकों से आ पहुँचे। दोनों में घमासान युद्ध हुआ, अजितसिंहजी के बहुत से सैनिक खेत रहे, तथा बहुत से घायल हुए। इस पर महाराणा की आज्ञा से ... सिंहजी ने आकर मीनों का दमन किया। वि० सं० १९१३ में (१८५६) महाराणा ने शेरसिंहजी के स्थान पर उनके भतीजे गोकुलचन्द्रजी को प्रधान नियुक्त किया। सिपाही विद्रोह के समय ... सरकारी सेना ने भी बागी होकर छावनी जला दी और खजाना लूट लिया। डाक्टर मरे आदि ... वहाँ से भागकर मेवाड के केसूंदा गाँव में पहुँचे। वहाँ भी बागियों ने उनका पीछा किया। ... ने यह खबर पाते ही महाराणा की सेना सहित नीमच की तरफ प्रस्थान किया। महाराणा ने ... सरदारों को भी उक्त कप्तान के साथ कर दिया। इतना ही नहीं किन्तु ऐसे नाजुक समय में ... मंत्री का साथ रहना उचित समझ कर महाराणा ने शेरसिंहजी को प्रधान की हैसियत से उक्त ... एजण्ट के साथ कर दिये और विद्रोह के शान्त होने तक शेरसिंहजी भी बराबर सहायता करते रहे।

निम्बाहेड़े के मुसलमान अफसर के बागियों से मिलजाने की खबर सुनकर ...

बोथरा

हम ऊपर बच्छावतों के इतिहास के बोथरा गौत्र की उत्पत्ति का विवरण प्रकाशित कर चुके हैं।
गौत्र में से बच्छावत गौत्र की उत्पत्ति हुई है। यहाँ हम पाठकों की जानकारी के लिए बोथरा
तेहासिक प्रकाश डालने वाली कुछ सामग्री याने उनके कुछ शिलालेख प्रकाशित करते हैं।
पहला शिलालेख नागौर के दफ्तरियों के मोहल्ले में श्री आदिनाथजी के मन्दिर में लगा है।
दूसर शिलालेख बीकानेर के आसानियों के मोहल्ले मे बाठियों के उपासरे के पास पंच तीर्थियों
श्वर पार्श्वनाथजी के मन्दिर में है। जिसकी नकल निम्न प्रकार है।

(१) संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने उपकेशवंशे बोथरा गौत्रे शा० जेसा पु० थाहा
भा० सुहागदे पुत्र देल्हा मानी वाकि युतेन माता लखी पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिम्ब करिते प्रतिष्ठितं
च्छे श्री जिनचन्द्रसूरि पट्टे श्री० जिनचन्द्रसूरि भि

(२) सवत् १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने उकेश......रा गौत्रे सा दूल्हा पुण्यार्थं पुत्र
राज तद् मातृ ली • पुतेन श्री नेमीनाथ बिम्ब का० प्र० श्री खरतरगच्छ श्री जिनभद्रसूरि
नचन्द्र सूरि भि — ॥श्री॥

उपरोक्त लेखों से पाठकों को उस समय के आचार्य्य और बोथरा वंश के पुरुषों के नाम का
जाता है। इसी प्रकार और भी कई शिलालेख इस वंश के मिलते हैं जो स्थानाभाव से यहाँ
गये। अब हम इस वंश के वर्तमान समय के प्रसिद्ध परिवारों का परिचय दे रहे हैं।

श्रीलालचंद अमानमल बोथरा गोगोलाव

करीब २५० वर्ष पूर्व इस परिवार के पुरुष बीकानेर आये। वहा वे ५० वर्ष तक रहे।
फिर वहां से भगू में, जिसे बडागाव भी कहते हैं, आये। इसके ७५ वर्ष बाद याने आज से करीब
र्ष पूर्व गोगोलाव नामक स्थान में आकर बसे, तबसे आप लोग वहीं रह रहे हैं।
वालों ने भगू में एक कुआ बनवाया था, जो आज भी बोथरा कुआ कहलाता है। खेमराजजी

में मेवाड़ के पोलिटिकल एजण्ट ने सरकारी आज्ञा के अनुसार रीजेंसी कौंसिल को तोड़ कर "अहलियान श्री दरबार राज्य मेवाड़" नामक कचहरी स्थापित की तथा उसमें मेहता गोकुलचन्द पण्डित लक्ष्मणरावजी को नियत किया। वि० सं० १९२२ में महाराणा शम्भूसिंहजी को राज्याधिकार और इसके एक वर्ष बाद ही उक्त कचहरी तोड़ दी गई, तथा उसके स्थान पर खास कचहरी की। उस समय मेहता गोकुलचन्दजी माण्डलगढ़ चले गये। वि० सं० १९२६ (ई० सन् १८६९) में केशरीसिंहजी ने प्रधान पद से इस्तीफा दे दिया तो महाराणा ने वह कार्य फिर मेहता गोकुलचन्द पण्डित लक्ष्मणराव को सौंपा। बड़ी रूपाहेली और लांबा वालों के बीच कुछ ज़मीन के बाबत लड़ाई हुई जिसमें लांबा वालों के भाई आदि मारे गये। इसके बदले में रूपाहेली का तसराय लांबा वालों को दिलाने की इच्छा से रूपाहेली वालों को लिखा गया, पर रूपाहेली वालों ने पर गोकुलचन्दजी की अध्यक्षता में मेवाड़ की सेना ने रूपाहेली पर आक्रमण कर दिया। वि० सं० (ई० सन् १८७४) में मेहता पन्नालालजी के कैद किये जाने पर महकमा खास के काम पर गोकुलचन्दजी तथा सही वाला अर्जुनसिंहजी की नियुक्ति हुई। इस कार्य को मेहता गोकुलचन्द समय तक करते रहे। यहीं पर संवत् १९३५ में आपका स्वर्गवास हुआ।

मेहता पन्नालालजी

मेहता पन्नालालजी, मेहता अगरचन्दजी के छोटे भाई हंसराजजी के वंश में मुरलीधरजी के पुत्र थे। आप बड़े राजनीतिज्ञ, समझदार तथा योग्य व्यक्ति थे। आप अपने पूर्वजों की तरह बड़े यशस्वी रहे। आप वि० सं० १९२६ (ई० सन् १८६९) में महाराणा शम्भुसिंहजी द्वारा महकमा खास के सेक्रेटरी बनाये गये। इसके पूर्व खास कचहरी में असिस्टेण्ट सेक्रेटरी का काम कर चुके थे। महकमा खास के स्थापित होने के थोड़े समय पश्चात् प्रधान का पद तोड़ कर सब काम महकमा खास के सुपुर्द किया।

पन्नालालजी ने महकमा खास में अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए इसकी व्यवस्था अच्छी तरह से की तथा आपकी वजह से प्रति दिन इसकी उन्नति होने लगी। महाराणा की इच्छानुसार राज्य में अनाज बांटने के काम को बंद कर ठेकेबंदी द्वारा नगद रुपये लिये जाने के लिये इन्होंने कोठारी केसरीसिंहजी की सलाह से दस साल पीछे की आमदनी का औसत निकाल कर बड़ी बुद्धिमानी से तीन साल का ठेका बाँध दिया। कोठारी केसरीसिंहजी के पश्चात् माल महकमा के ऑफिसर कोठारी आनन्दसिंहजी और मेहता पन्नालालजी रहे।

महाराणा ने पोलिटिकल एजेन्ट की सलाह से उदयपुर में कोटा कायम कर मेवाड़ के

ारा बड़ी बुद्धिमानी और होशियारी से निपटा दिया। एक बार बंगाल सरकार ने भी आपके कार्यों की शंसा में प्रमाण पत्र दिया था। आपके स्मारक स्वरूप इस कुटुम्ब ने पावांपुरी, चम्पापुरी एवम् बादा ामक तीर्थ स्थानों पर कोठडियाँ बनवाई हैं। सेठ अमानमलजी के दुलिचन्दजी, छोगमलजी, भैरों- ानजी, मुकुनमलजी, रिखबचन्दजी और हीराचन्दजी नामक छ, पुत्र हैं। सेठ मेघराजजी के सुगनमलजी, ापचन्दजी और अमरचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप सब लोग सज्जन और व्यापार कार्यकर्ता हैं। ाप लोगों की ओर से गोगोलाव में सार्वजनिक कार्यों की ओर अच्छी सहायता प्रदान की जाती रहती है। स कुटुम्ब के व्यापार का हेड आफिस चीलमारी में है। इसके अतिरिक्त कलकत्ता, चीलमारी ब्रॉंच, ाणक्यावर, सुनामगंज, बक्षीगंज, दाताभांगा, काली बाजार, उलीपुर, रामइमरतगंज इत्यादि स्थानों पर भिन्न भिन्न नामों से फर्मे खुली हुई है। इन सब पर बैंकिग जूट, कपडा, व्याज, गिरवी और जमींदारी का ाम होता है। कलकत्ता का तार का पता Gogolawbası है।

सेठ रावतमल मुलतानमल बोथरा नागोर

बोथरा सवाई रामजी के पूर्वज बदलू (मारवाड) में रहते थे, वहाँ से यह कुटुम्ब अलाय (नागौर े समीप) आया और वहाँ से बोथरा सवाईरामजी के पुत्र रावतमलजी तथा मुलतानमलजी संवत् १९६१ में नागोर आये।

बोथरा सवाई रामजी के रावतमलजी, मुलतानमलजी, जवाहरमलजी, परतापमलजी तथा मोती- चन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में से ५०।६० साल पहिले सेठ जवाहरमलजी चीलमारी (बंगाल) और रावतमलजी रंगपुर (बङ्गाल) गये, तथा वहाँ पाट का व्यापार शुरू किया। धीरे २ संवत् १९६६ में आपकी कलकत्ता तथा बंगाल में कई स्थानों पर दुकानें खुलीं। इन बन्धुओं के स्वर्गवासी होने ार बोथरा सुगनमलजी ने इस कुटुम्ब के व्यापार को अच्छी तरह संभाला। सेठ रावतमलजी का स्वर्ग १९६४ में, मुल्तानमलजी का १९८६ की कार्तिक सुदी ४ को, जवाहरमलजी का १९७६ में, मोतीचन्दजी का १९६९ में तथा परतापमलजी का १९५२ में हुआ। सेठ मुलतानमलजी नागौर मे धर्मध्यान में तथा परोपकार मे जीवन बिताते रहे, आप यहाँ के इज्जतदार व प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। बोथरा रावतमलजी ने रंगपुर में व्यापार के साथ २ सरकारी आफिसरों में इज्जत व नाम पाया, आप ओसवाल भाइयों पर विशेष प्रेम रखते थे।

वर्तमान में इस परिवार में रावतमलजी के पुत्र गोपालमलजी तथा सुगनमलजी, मुलतानमलजी के पुत्र मुकुन्दमलजी, उदयचन्दजी, चन्दनमलजी और लक्ष्मीचन्दजी, बोथरा जवाहरमलजी के पुत्र अमोलख-

मेहता तख्तसिंहजी बच्छावत, उदयपुर

मेहता नवलसिंहजी बच्छावत, उदयपुर

मेहता उदयलालजी बच्छावत, उदयपुर

मेहता जोधसिंहजी बच्छावत

कर बस गया। इस परिवार मे सेठ मदूमलजी हुए। आपकी आरंभिक स्थिति साधारण थी। आप अपनी योग्यता से पैसा कमाया और समाज में अपनी प्रतिष्ठा भी स्थापित की। आपका सवत् १९१७ अंतकाल हुआ। आपके सेठ ब्रजलालजी नामक पुत्र हुए।

सेठ ब्रजलालजी का जन्म संवत् १९५६ मे हुआ। आप बाड़मेर के व्यापारिक समाज मे मातवर व्यक्ति। आपकी यहाँ पर तीन चार दुकाने हैं और मालानी के जागीरदारों के साथ आपका लेन देन सम्बन्ध है। आपके पुत्र भगवानदासजी व्यापारिक कामों में भाग लेते रहते हैं।

इस परिवार की तरफ से बाड़मेर में एक धर्मशाला भी बनी हुई है।

मेहता गोपालसिंहजी का खानदान, उदयपुर

मेहता भगवतसिंहजी के पिता किशनगढ़ नामक स्थान पर निवास करते थे। वहाँ से आप हाँ उदयपुर आये। यहाँ आकर आपने सरकार मे सर्विस की। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर महाराणा साहब ने आपको मगरा जिले में 'ढाकलडा' नामक एक ग्राम जागीर स्वरूप बक्षा। आप यहाँ पर ाय के कारखाने (सिविलकोर्ट) के हाकिम रहे। आपके बलवन्तसिंहजी नामक एक पुत्र हुए। आप ी प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आप मगरा जिला और खेरवाडा आदि स्थानों पर हाकिम रहे। आपके हता मनोहरसिंहजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म संवत १९१९ में हुआ। बचपन से ही आप हे बुद्धिमान और प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। एक बार का प्रसंग है जब कि आप स्कूल में विद्याध्ययन करते , महाराणा सज्जनसिंहजी स्कूल का निरीक्षण करने के लिये पधारे। आपका ध्यान तुरंत मेहता साहब ी ओर आकृष्ट हो गया। और आपने उसी दिन से मेहताजी को सेटलमेंट आफिसर के पास काम सीखने लिये भेज दिया। जब आप केवल १६ वर्ष के थे आपको राजनगर की हुकुमत बक्षी गई थी। तब आप बराबर राजनगर, सादड़ी, जहाजपुर, चित्तौड़ और गिरवा में हाकिम के पद पर रहे। गिरवा में ाकिमी के साथ साथ आपको वहाँ के खजाने का भी काम मिला। इसके पश्चात् आप स्पेशल ड्यूटी में गूँ भेजे गये। वहाँ जाकर आ ने बागी रिआया को शात किया। इसी प्रकार बसीसी में भी आपने जाकर ाति स्थापित की। आप इतने लोक-प्रिय होगये थे कि जब शाहपुरा-स्टेट के काछोला नामक परगने में जा बागी होगई थी उस समय शाहपुरा दरबार ने ए० जी० जी के मार्फत आपको वहाँ शांति स्थापनार्थ ोगा था, वहाँ भी आपने शाति स्थापित की।

मेहता मनोहरसिंहजी के कोई पुत्र न होने से पहले तो किशनगढ़ के मेहता [illegible] सोहनसिंहजी दत्तक लिये गये, मगर आपका स्वर्गवास चार पाँच वर्षों ही में, जब कि [illegible]

हास्पिटल खोले। इनके खर्च के लिये वहाँ के किसानों पर पाव आने से लेकर एक आना प्रति हिसाव से कुल आमदनी पर कर बैठाया। इस प्रकार के आपने कई काम किये।

यद्यपि मेहता गोकुलचन्दजी के बाद प्रधान का पद किसी को नहीं मिला परन्तु महाराणा की ओर से प्रधान के समान ही इज्जत प्रदान की गई थी। भारत गवर्नमेंट ने . की पदवी दी। वि० सं० १९३७ में आप नवीन स्थापित महद्राज सभा के सदस्य बनाये गये। समय आपको भारत सरकार की ओर से C I E की पदवी प्रदान की गई। आपसे क्या पोलिटिकल एजंट, क्या वाइसराय, क्या ए० जी० जी० सभी प्रसन्न रहा करते थे। तथा समय पर उक्त उच्च पदाधिकारियों ने कई सर्टिफिकेट आपको दिये हैं। इन में से हम कुछ यहाँ पर जानकारी के लिये देते हैं।

पोलिटिकल एजंट ने १७ दिसम्बर सन् १८८७ के टाइम्स ऑफ इन्डिया में लिखा है —

"Rai Pannalal is an intelligent, energetic and hard working officer and has rendered great assistance to the Political Agent in the administration of the State during the minority He is the only person capable of holding the high post, he now occupies in the State'

१—एक और सम्माननीय ऊँचे अफसर आपके विषय में लिखते हैं —

"He has fully justified the high op nion thus expressed of him, he is undoubtedly very able He is thoroughly acquainted with the people of the Country, aud they in return have considerable confidence in him.

इसी प्रकार कर्नल हचिंसन अडल की होटल से सन् १८७३ की ता० २२ मई को लिखते हैं

"I must send you a line before I leave Ind'a to tell you that in my opinion, you discharged the wonderous and important duties, entrusted to you by His Highness the Maharana, faithfully and well I trust you will continue the merit and the confidence of His Highness and that you will remember that your acts are watched by both friends and enemies, any failing therefore, will pain the one and give the other the opportunity which they will not be slow to use against you I also hope that you will endeavour to bring the measures introduced during my incumbency to

म्मान था। आपको तत्कालीन बीकानेर नरेश ने प्रसन्न होकर एक गाँव जागीर में बक्षा था। आप
ऊजी नामक एक पुत्र हुए। आपभी मुकीमात का काम करते रहे। कुछ समय पश्चात् आप
र ने खजाने का काम सौंपा। तब से खजाने का काम आप ही के वंशजों के हाथ में है। खजाने
ाम करने के कारण आपके परिवारवाले खजाची कहलाते हैं।

सेठ जैतमालजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश भोमजी, चतुर्भुजजी और शेरजी था। वर्त-
चय सेठ भोमजी के परिवार का है। शेष भाइयों के परिवार के लोग अलग २ रूप से अपना
ह करते है। सेठ भोमजी के छोगजी और मानमलजी नामक दो पुत्र हुए। दूसरे पुत्र मानमल
चले गये। छोगजी के बागजी नामक एक पुत्र हुए। आप दोनों ही पिता पुत्र अपने पूर्वजों के
काम को करते रहे। बागजी के सतान न होने से मेघराजजी दत्तक लिये गये।

सेठ मेघराजजी का जन्म सवत् १९१५ मे हुआ। जब आप केवल १० वर्ष के थे तब से ही
के काम का सचालन कर रहे है। इस समय आपकी आयु ७६ वर्ष की है। इतने वृद्ध होने पर
महाराजा साहब बीकानेर आपको अलग नहीं करते है। आपके कार्यों से दरबार बड़े प्रसन्न है।
दरबार की ओर से साह की सम्मान सूचक पदवी प्राप्त है। साथ ही गाँव की जागीर के अलावा
अलाउस तथा घोडे की सवारी का खर्च मिलता है। आप समझदार और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।
ार पुत्र है जिनके नाम क्रमश॰ पूनमचदजी, अभयराजजी, मुन्नीलालजी और धनराजजी हैं। इन
मचदजी और मुन्नीलालजी का स्वर्गवास हो गया है। आप दोनों ही क्रमश अपने पिताजी के
ाने का तथा कलकत्ते की फर्म का सचालन करते रहे है। यह फर्म संवत् १९६४ में कलकत्ते में
हुई थी। इसका नाम मेसर्स मुन्नीलाल धनराज है। पता ११२ क्रास स्ट्रीट है। यहाँ कपड़े
ापार होता है। इस समय इसका सचालन अभयराजजी कर रहे है और धनराजजी स्टेट बैंक
रहे है।

बा० पूनमचन्दजी के माणकचदजी तथा धनराजजी के शिखरचन्दजी नामक एक २ पुत्र है।
चन्दजी अपने दादाजी के साथ खजाने का काम करते है।

इस परिवार की बीकानेर मे अच्छी प्रतिष्ठा है। इस समय चूरू परगने का 'बूंटिया' नामक
व इस परिवार की जागीर मे है।

हंसराजजी के दूसरे पुत्र भेरूदासजी और तीसरे पुत्र भवानीदासजी हुए। आप लोग चित्तौड़ गढ़ के पाटवण पोल नामक स्थान पर मोसल नियुक्त हुए। वहाँ आप लोग आजन्म तक वह काम करते रहे। इस वंश मे भाणजी हुए उनके पुत्र शकरदासजी के वशज इस समय उदयपर में विद्यमान हैं। मि० मेहता भोपालसिंहजी को राज से जागीर दी गई है।

मेहता फतेलालजी

मेहता फतेलालजी अपने योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। आपके जीवन के अतर्गत में ऐसी विशेषताएँ हैं जो प्रत्येक नवयुवक के लिये उत्साह वर्द्धक है। आप बाल्यकाल से ही बड़े प्रतिभा सम्पन्न हैं। आपका जन्म संवत् १९२४ की फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी को हुआ था। केवल १२ वर्ष की उम्र में आपकी अंग्रेजी योग्यता को देखकर मेवाड के तत्कालीन सेटलमेंट अफसर मि० ए० विगेट साहब मुग्ध हो गये थे और उन्होंने आपको एक अच्छा सर्टिफिकेट दिया था। आपका प्राथमिक शिक्षण बनारस के पं० जगन्नाथजी झाड़खण्डी के संरक्षण में हुआ था। केवल १३ वर्ष की उम्र मे महाराणा साहब ने आपको पैरों में सोना बख्शा।

आपका साहित्यिक जीवन भी बड़ा उज्वल रहा है। केवल तेरह वर्ष की आयु म आपने उदयपुर में बुद्धि प्रकाशिनी सभा की स्थापना की। जब भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र उदयपुर पधारे थे, उस समय आप ने उनके स्मारक में हरिश्चन्द्र आर्य्य विद्यालय की स्थापना की जो अभी तक अच्छी तरह चल रहा है। आपने हिंदी और अंग्रेजी में कुछ पुस्तकें भी लिखी है जिनमें सज्जन जीवन चरित्र और Hand Book of Mewar उल्लेखनीय हैं। Hand Book of Mewar के विषय में बहुत से अंग्रेज और दूसरा विद्वानों ने यहाँ तक कि ड्यूक ऑफ केनॉट, लार्ड डफरन, लार्ड लेन्स डाउन, भारतवर्ष के सेनापति लार्ड राबर्ट्स, बम्बई के गवर्नर लार्ड रे आदि सज्जनों ने सर्टिफिकिट प्रदान किये है। विलायत के कई समाचार पत्रों में इसकी आलोचना भी छपी है। श्रीमान ड्यूक ऑफ केनॉट जब उदयपुर पधारे तब आपकी सेवाओं से बड़े प्रसन्न हुए और उसके लिये उन्होंने आपको एक रत्नजटित लॉकेट उपहार में दिया।

सन् १८९४ के दिसम्बर मास में आप जब बनारस गये तब काशी नागरी प्रचारिणी सभा के विशेष अधिवेशन में आप सभापति बनाये गये। इस सम्मान को आपने बड़ी योग्यता से निभाया।

जब उदयपुर में वॉल्टर हास्पीटल का बुनियादी पत्थर रखने के लिये लार्ड डफरिन और लेडी डफरिन आये तब आपने महाराणा की तरफ से वाइसराय महोदय को अंग्रेजी मे भाषण दिया। यहाँ पर यह बतलाना जरूरी है कि यह पहला ही समय था जब मेवाड़ के एक नागरिक ने ऐसे बड़े मौके पर अंग्रेजी

सेठ फतेचन्द, चौथमल, करमचन्द बोथरा, राजलदेसर (वीकानेर)

करीब १५० वर्ष पूर्व इस परिवार के पुरुष राजलदेसर मे १० मील की दूरी वाले ग्राम छोटड़िया । राजलदेसर में सर्व प्रथम आने वाले व्यक्ति गिरधारीमलजी के पुत्र सेठ फतेचन्दजी थे। १८६७ में आप व्यापार के निमित्त बंगाल प्रांत के रंगपुर नामक स्थान पर गये। वहाँ जाकर फतेचन्द पनेचन्द के नाम से एक फर्म स्थापित की। जिस समय आपने फर्म स्थापित की उस आज कल जैसा सुगम मार्ग नहीं था, अतएव बडे कठिन परिश्रम से आप करीब ६ माह में राजलदेसर र में पहुँचे थे। वहाँ जाकर आपने अपनी एक फर्म स्थापित की। आप व्यापार-चतुर पुरुष थे। व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आप के चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश' बालचन्दजी, जी, चौथमलजी, और हीरालालजी हैं। आप चारों ही भाई पहले तो शामलात मे व्यापार करते ार फिर अलग अलग हो गये। बालचन्दजी का व्यापार इसी फर्म की सिराजगज वाली ब्रांच पर शेष भाइयों का व्यापार रंगपुर ही में रहा।

सेठ बालचन्दजी के हजारीमलजी, पृथ्वीराजजी और भैरोंदानजी नामक तीन पुत्र हुए। आप ा स्वर्गवास हो गया। हजारीमलजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम अमोलकचन्दजी और हरकचन्दजी पृथ्वीराजजी के पुत्र मालचन्दजी हुए जो सेठ भैरोंदानजी के यहाँ दत्तक रहे। अमोलकचन्दजी के त्र दीपचन्दजी, चम्पालालजी, रायचन्दजी और शोभाचन्दजी इस समय विद्यमान हैं। हरकचन्दजी समय हुलासमलजी और आसकरनजी नामक दो पुत्र हैं। इसी प्रकार मालचन्दजी के भी सात जिनके नाम क्रमश हुलासमलजी, धरमचन्दजी, छगनमलजी, जवरीमलजी, इन्द्रचन्दजी, नेमीचन्दजी रामलजी हैं।

सेठ पनेचन्दजी के पुत्र कालूरामजी का स्वर्गवास हो गया। आपके चन्दूलालजी नामक पुत्र देसर ही मे रहते है। आपके भीखमचन्दजी और मोहनलालजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ चौथमलजी इस परिवार में प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने व्यापार में अच्छी सफलता ा। आपके प्रतापमलजी नामक पुत्र हुए। आप मिलनसार है। आपके धार्मिक विचार तेरापंथी ताम्बर सम्प्रदाय के है। प्राय आपने सभी हरी छोड रखी है। आजकल आप व्यापार के कलकत्ता बहुत कम आते जाते है। आपके सम्पतमलजी नामक एक पुत्र हैं। आप ही अपने र का सचालन करते हैं। आपके भँवरीलालजी और कन्हैयालालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ प्रतापमलजी पुत्रियों ने जैन श्वेताम्बर तेरापथी सम्प्रदाय में दीक्षा ले रखी है। आपका व्यापार इस समय ता मे सम्पतमल भँवरीलाल के नाम से १५ नारयल लोहिया लेन में जूट और हुंडी चिट्ठी का होता है।

को नहीं मिली। इस प्रकार आपका जीवन क्या साहित्यिक, क्या धार्मिक और क्या [illegible] दृष्टियों से बड़ा महत्व पूर्ण रहा है।

सेठ हीरालालजी पन्नालालजी वच्छावत, कुन्नूर (नीलगिरी)

इस परिवार का निवास फलोदी (मारवाड) है। आप जैन मदिर मार्गीय आम्ना। वाले हैं। इस परिवार के सेठ धीरजमलजी और उनके पुत्र दुलीचन्दजी फलोदी में ही रहते रहे। [illegible] के पुत्र सेठ खींवराजजी मारवाड़ से व्यापार के निमित्त सवत् १९६५ में एक लोटा डोर [illegible] लिए बाहर निकल पड़े, और साहस तथा परिश्रम पूर्वक हजारों मील का रास्ता तय करके आप [illegible] ओर आये, और वहाँ व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। वैद्यक का भी आप अच्छा ज्ञा[illegible] संवत् १८७५ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ खींवराजी वच्छावत के पुत्र मुलतानचन्दजी का जन्म सवत् १८६७ में हुआ। [illegible] सेठ चन्दनमल धनरूपमल की इन्दौर तथा उज्जैन दुकानों पर मुनीमात करते थे। [illegible] वैद्यक का आपको ऊँचा ज्ञान था। सवत् १९६५ मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके [illegible] लालजी, तेजकरणजी, चौथमलजी, हीरालालजी और सुगनचन्दजी नामक ६ पुत्र हुए। इन [illegible] मोतीलालजी ने उज्जैन में, चौथमलजी ने खामगाँव में तथा सुगनचदजी ने अमरावती में दुकानें [illegible] तेजकरणजी रीयाँवालों की दुकानों पर मुनीमात करते रहे।

सेठ मोतीलालजी बच्छावत के छोगमलजी, माणिकलालजी और दीपचंदजी नामक पुत्र [illegible] छोगमलजी, चुन्नीलालजी के नाम पर दत्तक गये। इस समय आप बन्धुओं के यहाँ मोतीला[illegible] नाम से उज्जैन में व्यापार होता है। छोगमलजी के पुत्र फूलचन्दजी लालचन्दजी, राजमलजी, राजमलजी कोयम्बटूर में कपड़े का व्यापार करते हैं।

सेठ चौथमलजी वच्छावत खामगाँव के माहेश्वरी, अग्रवाल और ओसवाल समाज में [illegible] पुरुप हुए, आपके छोटे भ्राता हीरालालजी के पन्नालालजी तथा चाँदमलजी नामक २ पुत्र हुए, [illegible] लालजी, चौथमलजी के नाम पर दत्तक गये। पन्नालालजी का जन्म सवत् १९४७ में हुआ।

सेठ चौथमलजी के गुजर जाने बाद सेठ पन्नालालजी ने खामगाँव से दुकान उठा [illegible] रामजी पोद्दार कलकत्ते वालों के यहाँ ६ सालों तक श्यूगर विभाग में नौकरी की। पश्चात् [illegible] फलोदी निवासी सेठ मिश्रीमलजी वेद, जेठमलजी झाबक तथा आपने मिलकर मेसर्स लालचन्द एण्ड कपनी के नाम से कुन्नूर (उटकमड) में बेङ्किग कार-बार खोला, और इस फर्म ने [illegible] होशियारी तथा व्यापार चतुराई के बल पर अच्छी उन्नति प्राप्त की, इस समय नीलगिरी [illegible] में यह नामाङ्कित फर्म मानी जाती है। इस फर्म का विजिनेस अंग्रेजी ढग के बेङ्किग सिस्टम [illegible] कुन्नूर तथा ऊटकमंड के बड़े २ डाक्टर्स, एजिनियर्स एवं अंग्रेज आफीसरों से इस फर्म का [illegible] सेठ पन्नालालजी वच्छावत व्यापार चतुर और दियानतवाले व्यक्ति है, आपने अपने छोटे भ्राता [illegible] पुत्र बालचदजी को दत्तक लिया है। आपकी वय २७ साल की है। श्रीबालचन्दजी [illegible] योग्य व्यक्ति हैं, आप कुन्नूर म्यूनिसिपेलिटी के मेम्बर हैं। आपके पुत्र निहालचदजी होनहार [illegible]

सेठ रुक्मानंदजी बोथरा (रुक्मानंद सागरमल) कलकत्ता

सेठ सागरमलजी बोथरा (रुक्मानंद सागरमल) कलकत्ता

कुं० जयचंदलालजी बोथरा (रुक्मानंद सागरमल) कलकत्ता

कुँ० हुलासचंदजी बोथरा (रुक्मानंद सागरमल) कलकत्ता

भग्गू में रहे, इनके पुत्र भीमराजजी वहाँ से गोगोलाव आये। भीमराजजी के पुत्र मोतीचन्दजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ लालचन्दजी, गुलाबचन्दजी, पीरचन्दजी, और पनराजजी थे। यह परिवार सेठ लालचन्दजी के परिवार का है।

सेठ लालचन्दजी का जन्म संवत १८८१ का था। जब आप २५ वर्ष के थे, उस समय व्यापार के लिये बंगाल प्रान्त के चीलमारी नामक स्थान पर गये। वहाँ जाकर टोडरमलजी नामक सज्जन के साझे में लालचन्द टोडरमल के नाम से साधारण फर्म स्थापित की। यह फर्म ६ वर्ष तक इस व्यापार करती रही। पश्चात् आप दोनों ही भागीदार अलग अलग हो गये। सेठ लालचन्दजी ने अलग होते ही अपने पुत्र अमानमलजी के नाम से सवत् १९२१ में लालचन्द अमानमल के नाम से अपनी फर्म खोली। इस बार इस फर्म में बहुत लाभ रहा। अतएव उत्साहित होकर संवत् १९४५ में चीलमारी ही में एक ब्रांच और मेघराज दुलीचन्द के नाम से स्थापित की और उस पर कपड़े का व्यापार किया। इसके पश्चात् संवत् १९५२ में आपने अपने व्यापार को विशेष उत्तेजन प्रदान किया और कलकत्ते में लालचन्द अमानमल के नाम से अपनी एक फर्म और खोली। इस फर्म पर चलानी का काम प्रारम्भ किया गया। लिखने का मतलब यह कि आपने व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की। आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। यही नहीं बल्कि उसका सदुपयोग भी अच्छा किया। आपने संवत् १९३६ में श्री सम्मेद शिखरजी का एक संघ निकाला था। आपका स्वर्गवास संवत् १९४[illegible] में हो गया। आपके सेठ अमानमलजी और मेघराजजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ अमानमलजी और मेघराजजी दोनों भाई भी अपने पिताजी की भाँति योग्य और होशियार रहे। आप लोगों के समय में भी फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप लोगों ने संवत् १९[illegible] में माणक्याचर नामक स्थान पर उपरोक्त नाम से अपनी फर्म की एक शाखा खोल कर जूट और व्याज का काम प्रारम्भ किया। इसी प्रकार संवत् १९६१ में भी सुनामगज में इसी नाम से फर्म खोल कर उपरोक्त व्यापार प्रारम्भ किया। इसी प्रकार संवत् १९७१ मे राम इमरतगज (मैमनसिंह) में, संवत् १९८० में वक्षीगज (रंगपुर) में, संवत् १९८१ में कालीबाजार (रगपुर) में अपनी फर्म की शाखाएं खोलीं और इन सब पर जूट व्याज और गिरवी का काम प्रारम्भ किया। जो इस समय भी हो रहा है। सेठ अमानमलजी का स्वर्गवास सवत् १९८४ में हो गया। सेठ मेघराजजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ अमानमलजी बड़े कुशल व्यापारी और प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। जोधपुर स्टेट की प्रजा में आपका बहुत सम्मान था। एक बार का प्रसग है कि गोगोलाव के जाटों का मामला कोर्ट तक हो आया मगर उसका कोई संतोषजनक फैसला नहीं हुआ। इस मामले को आपने

ने नाम से इम्पोर्ट करना शुरू कर दिया। कपड़े के इस इम्पोर्ट व्यवसाय में आपको बहुत सफलता
। हुई। स्वदेशी वस्त्रान्दोलन के समय से आप लोगों ने कपड़े का इम्पोर्ट बिजिनेस बन्द कर दिया है।
समय आपकी फर्म पर सराफी जूट और जमीदारी का काम होता है।

सेठ रुक्मानन्दजी के जयंचदलालजी नामक एक पुत्र हैं। आपका जन्म सवत् १९४९ में हुआ।
। इस समय फर्म के व्यापार कार्य्य मे भाग लेते हैं। आपके बालचन्दजी, शुभकरणजी, बच्छराजजी और
हैयालालजी नामक चार पुत्र हैं।

सेठ सागरमलजी के हुलासचन्दजी, मदनचन्दजी, पूनमचन्दजी एवं इन्द्रचन्द्रजी नामक चार
हुए हैं। बाबू हुलासचन्दजी बडे उत्साही तथा फर्म के काम में सहयोग लेते है। आपके हेमराजजी
ताराचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

इस परिवार की ओर से चूरू (बीकानेर स्टेट) में मुसाफिरों के आराम के लिये स्टेशन के पास
नोहरा बनवाया गया है जिसमें करीब बीस हजार रुपया लगा होगा। आप लोग इस प्रकार के अन्य
र्यों में भी भाग लेते रहते हैं। आपका व्यापार इस समय कलकत्ता मे 'रुक्मानन्द सागरमल' के नाम
२०१ हरिसन रोड मे व्याज, जूट और बैङ्किग का होता है। आपके तार का पता 'Bitrag' और
फोन नं० 4165 B. B. है। इसके अतिरिक्ति 'जयचंदलाल हुलासचद' के नाम से दीनाजपुर
(हाट) में एक चांवल का मिल है और डाबवाली मंडी (हिसार) में मे० बालचन्दजी बोथरा के
। से किराने व आढ़त का काम काज होता है। कलकत्ता में आप लोगों के तीन मकानात हैं जिनसे
ये की आमदनी होती है तथा देश में भी आपकी सुन्दर हवेलियाँ बनी हुई हैं।

सेठ चुन्नीलाल प्रेमचन्द बोथरा सरदारशहर

इस परिवार वालों का मूल निवास राजपुरा (बीकानेर) का है। करीब ४५ वर्ष पूर्व इस
वार के सेठ उमचदजी बहुत साधारण स्थिति में यहाँ आये। आपके सेठ चुन्नीलालजी और सेठ प्रेम-
दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ चुन्नीलालजी का जन्म सवत् १९०९ में हुआ। आपका विवाह मलानियां निवासी सेठ
चदजी सेठी की सुपुत्री तुलसी बाई के साथ हुआ जिनका स्वर्गवास संवत् १९८७ में हो गया। सेठ
लालजी बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने पहले पहल कलकत्ता जाकर सदाराम पूरनचन्द
गेशन भसाली के यहाँ नौकरी की। पश्चात् संवत् १९६० में आपने अपने हाथों से अपनी निज की

श्री अमरचन्दजी बोथरा (लालचन्द अमानमल) गोगोलाव

स्वर्गीय सेठ मुलतानमलजी बोथरा, नागौर

। गोपालसिंहजी बोथरा, उदयपुर.

श्री लक्ष्मीलालजी बोथरा, उदयपुर

ताराचन्दजी गेलड़ा (पूनमचंद ताराचंद) मद्रास.

सेठ आसकरणजी बोथरा (चुन्नीलाल प्रेमचंद) सरदारशहर.

...मलजी बोथरा (चुन्नीलाल प्रेमचंद) सरदारशहर

सेठ बुधमलजी बोथरा (चुन्नीलाल प्रेमचंद) सरदारशहर.

चन्दजी, मोतीचन्दजी के पौत्र (विजयमलजी के दत्तक पुत्र) हस्तीमलजी और परतापमलजी ... मगराजजी हैं। विजयमलजी का १९७५ में केवल १९ साल की वयमें शरीरान्त हुआ इनके नाम हस्तीमलजी को दत्तक लिया है। यह कुटुम्ब सम्मिलित रूप में कार्य्य करता है।

बोथरा गोपालमलजी का जन्म १९४४ की फागुन सुदी ४ को सुगनमलजी का १९... मुकुन्दमलजी का १९४९ की भादवा वदी १० उदयचन्दजी का १९५४ माघ वदी ९ चन्दनमलजी का १९५८ लक्ष्मीचन्दजी का १९६१, अमोलकचन्दजी का १९५२ पौष वदी ७, और मगराजजी का १९... में हुआ। यह परिवार नागोर के ओसवाल समाज में मुख्य धनिक कुटुम्ब है। आपकी यहाँ ... हवेलियाँ बनी हुई हैं, बंगाल प्रान्त में आपकी दुकानें तथा स्थाई सम्पत्ति है। आप लोग ... व अच्छे कामों में सहायताएँ पहुँचाते रहते हैं। नागौर की श्वेताम्बर जैन पाठशाला में इस परिवार ... विशेष सहायता रहती है श्री चन्दनमलजी शिक्षित व्यक्ति हैं।

गोपालमलजी के पुत्र जसवन्तमलजी मुकुन्दमलजी के पुत्र बस्तीमलजी, लाभचन्दजी व ... हैं। इसी तरह इस परिवार के लड़कों में केवलचन्दजी हीराचन्दजी हुलाशचन्दजी और ...

सेठ लक्ष्मणराजजी बोथरा-बाड़मेर

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान बीकानेर का है। इस परिवार में देदाजी हुए। आपके सेठ नरसिंहजी, जोराजी तथा शिवदानजी नामक पुत्र हुए। सेठ देदाजी और नरसिंहजी ... की आगमन के समय मोदी खाने का काम करते थे। सेठ नरसिंहजी के सरदारमलजी, मदूमलजी तथा बसकमाजी नामक पुत्र हुए। जोराजी के रूपाजी नामक पुत्र हुए।

सेठ सरदारमलजी के परसुरामजी तथा सागरमलजी नामक पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों ने अपना व्यापार अलग २ कर लिया। परसरामजी के पुत्र जुहारमलजी अपना स्वतन्त्र कारबार करते हैं। सेठ सागरमलजी के लक्ष्मणराजजी, जेकचन्दजी तथा हीरालालजी नामक पुत्र हुए। इनमें हीरालालजी जोधाजी के नाम पर दत्तक गये।

सेठ लक्ष्मणराजजी ने सन् १९१७ से २३ तक जोधपुर में वकालत की। वर्तमान में आप बाड़मेर में प्रेक्टिस कर रहे हैं। यहाँ पर आप प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं।

सेठ मदूलाल ब्रजलाल बोथरा बाड़मेर

इस परिवार के लोगों का मूल निवास स्थान बीकानेर था। कालांतर से यह कुटुम्ब ...

को इस समय इन्दौर राज्य से पूरी पेंशन मिलती है। इस समय आप कोयले के व्यवसाय
Coal Business) में लगे हुए हैं।

सेठ कालूराम अमरचंद बोथरा, नवापारा (राजिम)

इस कुटुम्ब का खास निवास समराऊ (जिला जोधपुर) में है। संवत् १९३४ में बोथरा
रचंदजी देश से ऊँटों के द्वारा राजनाँद गाँव होते हुए ३॥ मास में राजिम आये तथा यहाँ उन्होंने रघु-
दास बालचन्द चौपड़ा लोहावट वालों की दुकान पर मुनीमात की। संवत् १९२८ में आपने अपना घरू
र काज शुरू किया। तथा व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई। आप रायपुर डिस्ट्रिक्ट
सल और लोकल बोर्ड के २० सालों तक मेम्बर रहे। नागपुर के चीफकमिश्नर ने १९१६ में आपको
सार्टिफिकेट दिया। रायपुर प्रांत के आप गण्यमान्य व्यक्ति थे। आपके पुत्र भीकचन्दजी, हस्तीमलजी
ताराचन्दजी का जन्म क्रमश १९५०,५३ तथा ६२ में हुआ।

बोथरा अमरचन्दजी राजिम के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। आप बन्धुओं ने, अपनी बहिन के स्वर्गवास
के बाद उनकी रकम ओशियाँ जैन बोर्डिंग को दी। समराऊ गाँव तथा स्टेशन के मध्य में एक
बनवाया, इसी तरह धार्मिक कामों में सहयोग लिया। आपके यहाँ उपरोक्त नाम से माल गुजारी
व्यापार होता है।

बोथरा अमरचन्दजी के छोटे भ्राता अलसीदासजी के पुत्र जीवनदासजी बोथरा उत्साही युवक हैं।
राष्ट्रीय कार्य करने के उपलक्ष में १९३० तथा ३२ में छह-छह मास के लिये २ बार जेल यात्रा कर
है।

सेठ मोतीचन्द मनोहरमल बोथरा, इगतपुरी (नाशिक)

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवासस्थान तापू (ओशियाँ के समीप-मारवाड़) का है।
प लोग श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय को माननेवाले हैं। इस परिवार में सेठ थानमलजी
। आपके साहबचन्दजी तथा साहबचन्दजी के आसकरणजी, मोतीचन्दजी और मनोहरमलजी नामक
हुए। इनमें से सेठ मोतीचन्दजी और मनोहरमलजी संवत् १९३४ में व्यापार निमित्त इगतपुरी आये।
प दोनों भाइयों ने अपनी व्यापार चातुरी से एक फर्म स्थापित की और उसकी बहुत उन्नति की। सेठ

रहे थे, हो गया। अतएव आपने फिर संवत् १९७५ में जयपुर के मेहता मंगलचन्दजी वाउण्ड्री सुपरिं टेण्डेण्ट के सबसे बड़े पुत्र मेहता गोपालसिंहजी को सोहनसिंहजी के नाम पर दत्तक लिया। मेहता नाहरसिंहजी का स्वर्गवास सन् १९२३ में जब कि आप बेगूं के प्रजा आन्दोलन को दबाने के लिये भेजे गये। वहीं हार्टफेल के कारण हो गया। उदयपुर में यह कायदा है कि जो भी मुत्सुद्दी जागीरदार अपने यहां किसी को दत्तक रखे तो पहले उन्हें दरबार में महाराणा को नजराना कर आज्ञा प्राप्त करना पड़ता है, ऐसा नहीं करने से वह जागीर के स्वत्वों से वंचित रहता है। पहले तो यहाँ भी यही हुआ। इसका कारण यह था कि आपकी माताजी के और आपके बीच में झगडा चल गया था। करीब ७ साल के पश्चात् महाराणा फतेसिंहजी के स्वर्गवास हो जाने पर वर्तमान महाराणा साहब श्री भोपालसिंहजी के सामने आपका अंगपत्र मंजूर कर लिया और आपकी प्रायवेट सम्पत्ति पर से कुडकी हटाली।

वर्तमान में इस परिवार में गोपालसिंहजी ही प्रधान हैं। आपका विद्याभ्यास एफ० ए० तक ही हुआ। प्रारम्भ में आप महाराज कुँवार की ओर से पानरवा (भोमर) ठिकाने के मैनेजर नियुक्त हुए। इस बाद आप सादड़ी नामक स्थान पर मैनेजर बनाए गए। इसके पश्चात् भोमर परगने के सबसे बड़े ठिकाने जवास के रावजी के मेयोकालेज में गार्जियन बनाए गये। यहाँ आपने जुडिशियल लाइन की शिक्षा भी प्राप्त करली। जब जवास रावजी को अधिकार मिल गया, तब आप वहाँ के एडवाइजर नियुक्त हुए। इस समय भी आप उसी काम पर हैं। आप बुद्धिमान, और समाजसुधारक विचारों के सज्जन हैं। आपने अपने पिताजी का मोसर न करके—लोगों के विरोध की कुछ भी पर्वाह न करते हुए—उनके स्मारक में ७०००) उदयपुरी लगा कर स्थानीय विद्याभवन में एक हाल बनवाया है। आपने अपना दूसरी शादी के समय में किसी प्रकार के पुराने रिवाजों का पालन व जल्से आदि नहीं किये। यहाँ तक कि जिस दिन शादी करने जा रहे थे उस दिन भी आपको देखकर कोई नहीं कह सकता था कि आप शादी करने जा रहे हैं। लिखने का मतलब यह है कि आप सुधार-प्रिय सज्जन हैं।

आपके प्रथम विवाह से दो पुत्र हैं जिनका नाम क्रमश कुँवर जसवन्तसिंहजी और दलपतसिंहजी है।

साह मेघराजजी खजांची का परिवार बीकानेर

इस परिवार का इतिहास सवाईरामजी से शुरू होता है। आप बीकानेर स्टेट में मुकातब का काम याने स्टेट में तमाखू वगैरह सप्लाय करने का काम करते थे। अतएव इस परिवार वाले मुकीम बोथरा कहलाये। सेठ सवाईरामजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न और कारगुजार व्यक्ति थे। आपका स्टे

लाला रूपलालजी जैन, फरीदकोट

इस खानदान के पूर्वज लम्बे समय से फरीदकोट मे ही निवास करते है। आप लोग श्री जैन समाज के स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस परिवार मे लाला मोतीरामजी हुए। ोिरामजी के लाला सोभागमलजी नामक पुत्र हुए। आप लोग फरीदकोट में ही व्यापार करते रहे।]जी के लाला रूपलालजी नामक पुत्र हुए।

लाला रूपलालजी का जन्म सवत् १९२९ मे हुआ। आपने सन् १९०० में फरीदकोट ा का इम्तहान दिया और फिर नौकरी करने लगे। आप वर्तमान मे फरीदकोट नरेश के रीडर है। इसके अतिरिक्त आप स्थानीय जैन सभा के प्रेसिडेन्ड, श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला की मेनेजिग प्रेसिडेण्ट, स्थानीय जैन कन्या पाठशाला के मैनेजर, एस० एस० जैन सभा पंजाब के मेम्बर तथा टेंपरस सोसाइटी के व्हाइस प्रेसिडेण्ट हैं। आपका स्वभाव बड़ाही सरल है।

लाला रूपलालजी के देवराजजी और हसराजजी नामक दो पुत्र है। लाला देवराजजी इस वर्ष बी. ए. ाजजी इस समय मेट्रिक की परीक्षा मे बैठे है। लाला रूपलालजी बारह व्रतधारी श्रावक है, एवं ा का आपको नियम है।

बोथरा परिवार फरीदकोट

बोथरा खानदान के व्यक्तियों मे बोथरा गुजरातीमलजी सवत् १८४५-४६ में रियासत की ओर ि सेना को मुद्की की पहली लड़ाई के समय हाथियों पर रसद पहुँचाते थे। उस समय स्टेट ने ब्रिटिश सेना को इमदाद पहुँचाई थी। इस सम्बन्ध मे ऑनरेबुल नाएब्राड वंश हिस्सा नं० २ के पृष्ट ५४४ स्टर हिस्ट्री मे लिखा है कि "इ डेंट के मुताबिक तमाम जिसें फिलफोर हाथियों और ऊँटों पर लदवा तीमल साहुकार के मार्फत मौका जरूरत पर पहुँचा दी गई।" इसी तरह इस ख्यात के पृष्ट लिखा है कि "अगरचे खजाची भावडा*कौम में से इंतखाब करके खजाना और तोसाखाना के तह- ये हुए थे"। इससे मालूम होता है कि यहाँ के बोथरा जैन समाज ने लम्बे समय तक स्टेट के ा काम किया था। इनमे मुख्य लाला मूलामलजी, लाला शिब्बूमलजी, लाला देवीदासजी, लाला र्जी बोथरा, आदि है। इसी प्रकार लाला भीकामलजी गधैयाजी स्टेट खजाने का काम करते रहे।

* पंजाब प्रान्त मे ओसवाल आदि जैन मतावलम्बियों को "भावड़ा" के नाम से बोलते हैं।

सेठ कोड़ामल नथमल बोथरा, लूनकरणसर (बीकानेर)

इस परिवार के पुरुष करीब ४०० वर्ष पूर्व मारवाड से चलकर लूनकरणसर नामक आकर बसे। इसी परिवार मे सेठ मोतीचन्दजी हुए। मोतीचन्दजी के पुत्र आसकरनजी में रहकर व्यापार करते रहे। सेठ आसकरनजी के हरकचन्दजी और कोड़ामलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ हरकचन्दजी और कोड़ामलजी दोनों ही भाई सम्वत् १९३३ के साल बंगाल में जाकर वे प्रथम नौकरी करते रहे। इसके पश्चात् सम्वत् १९४५ में आप लोगों ने कालिमपोंग में फर्म मेसर्स हरकचन्द कोड़ामल के नाम से स्थापित की और इस पर किराने का व्यापार प्रारम्भ आप दोनों ही भाई व्यापार-कुशल और मेधावी सज्जन थे। आपकी व्यापार-कुशलता से फर्म की तरक्की हुई। आप लोगों का व्यापार भूटानी, तिब्बती, नेपाली और साहब लोगों से होता है। दोनों भाइयों का स्वर्गवास हो गया। हरकचन्दजी के कोई पुत्र न हुआ। कोड़ामलजी के तीन पुत्र जिनके नाम क्रमशः जेठमलजी, ठाकरसीदासजी और नथमलजी हैं। इनमें से तीसरे पुत्र नथमलजी चाचा सेठ हरकचन्दजी के नाम पर दत्तक रहे।

वर्तमान में आप तीनों ही भाई फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप तीनों ही बड़े व्यापार कुशल हैं। आप लोगों ने भी फर्म की अच्छी उन्नति की। आपके समय में ही इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता नगर में भी खुली। इस फर्म पर कोड़ामल नथमल के नाम से खरीद तथा बिक्री का काम होता है। कालिमपोंग मे आजकल कोड़ामल जेठमल के नाम से कस्तूरी, ऊन और गल्ले का व्यापार होता है।

इस समय सेठ जेठमलजी के दो पुत्र हैं जिनके नाम गुमानमलजी और साहबचन्दजी हैं। ठाकरसीदासजी के पुत्रों का नाम नारायणचन्दजी और पूनमचन्दजी है। सेठ नथमलजी के पुत्र मालचन्दजी, दुलिचन्दजी, धर्मचन्दजी और सम्पतरामजी हैं। अभी ये सब लोग बालक हैं।

इस परिवार के सज्जन श्री० जैन तेरापंथी श्वेताम्बर धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। आपने अपने पिताजी, माताजी, दादाजी और दादीजी के नाम पर लूनकरनसर मे शहर सारणी की, आपने बहुत रुपया खर्च किया। लूनकरनसर मे इस परिवार की अच्छी प्रतिष्ठा है। वहाँ के शहर में आपकी सुन्दर हवेलियां बनी हुई हैं।

सेठ प्रतापमलजी बोथरा, राजलदेसर

बाबू सम्पतमलजी बोथरा राज

हवेली (हुकमचन्द सागरमल बोथरा) चूरू
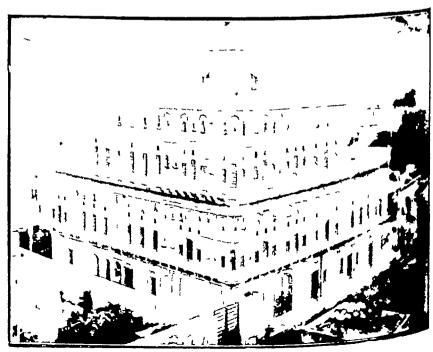
। सेठ बख्तावरमलजी के घीसूलालजी नामक एक पुत्र हैं। आप की फर्म पर मेसर्स केशरीमल नाम पड़ता है।

रायबहादुर सेठ लखमीचंदजी बोथरा, कटंगी (सी. पी.)

इस दूकान का स्थापन संवत् १८९५ में सेठ गोकुलचन्दजी बोथरा ने अपने निवास स्थान की देशनोक (बीकानेर-स्टेट) से आकर कटंगी में किया। आप कपड़े का कामकाज करते हुए ४२ की पोष सुदी १४ को स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लखमीचन्दजी हैं।

बोथरा लखमीचन्दजी बालाघाट डिस्ट्रिक्ट के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप बालाघाट डिस्ट्रिक्ट बोर्ड लल बोर्ड के ४० साल तक मेम्बर रहे, ४० सालों तक कटंगी सेनीटेशन कमेटी के प्रेसिडेण्ट रहे। ०३ से आप कटंगी-बेंच के सैकण्ड क्लास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आप के मकान पर ही कोर्ट तथा आपके सिवाय कटंगी में दूसरे मजिस्ट्रेट नहीं है। आपने यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया न् १९०० में आप से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने आपको रायबहादुर का सम्मान बख्शा है हाँ काश्तकारी तथा मालगुजारी का काम होता है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत ी है।

सेठ नथमल जुगराज, बोथरा दुर्ग (सी. पी.)

इस दुकान के मालिक तीवरी (मारवाड) के निवासी हैं। लगभग १८ साल पहिले मलजी बोथरा ने इस दुकान का स्थापन किया, तथा व्यापार को आपके ही हाथों उन्नति प्राप्त हुई। परिश्रम करके दुर्ग में मारवाडी हिन्दी स्कूल बनवाया और अपनी ओर से भी काफी इमदाद पहुचाई मददगार पुरुष थे। संवत् १९९० के ज्येष्ठ मास में आपका शरीरावसान हुआ।

वर्तमान समय में इस दूकान के मालिक सेठ नथमलजी के पुत्र जुगराजजी तथा हणुतमलजी हैं। यहाँ कपड़ा, चांदी, सोना और साहूकारी व्यवहार होता है।

इसी फर्म की एक ब्रॉंच यहाँ मूंगापट्टी में और है जहाँ प्रतापमल बोथरा के नाम से वनजो ... है। इसी प्रकार रंगपुर—माहीगंज—में फतेचन्द प्रतापमल और नवाबगंज में ... से वर्तन, जूट, और जमींदारी का व्यापार होता है। मेमनसिंह में आपके मकानात बने हैं।

सेठ हीरालालजी भी पहले तो अपने भाई के साथ व्यापार करते रहे, मगर ... अतः अलग-अलग हो गये। आपके कर्मचन्दजी और मगराजजी नामक दो पुत्र हुए। ... फर्म का संचालन करते रहे। सेठ कर्मचन्दजी के मिर्जामलजी और सोहनलालजी नामक ... सेठ मिर्जामलजी सम्वत् १९९० के साल अलग हो गये और गायबंधा में जूट का ... आपके चन्दनमलजी और जयचन्दलालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ मगराजजी के पुत्र ... पाटकी दलाली का काम करते हैं। इस परिवार के लोग तेरापंथी श्वेताम्बर जैन धर्मानुयायी हैं।

सेठ रुक्मानन्द सागरमल, चूरू (बीकानेर)

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवासस्थान जालोर (मारवाड़) का है। ... श्वेताम्बर सम्प्रदाय के तेरापंथी आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार वाले ... कोड़मदेसर, बीकानेर आदि स्थानों में होते हुए रिणी में आकर बसे। इस परिवार में वहाँ ... हुए। सेठ पनराजजी के सुलतानचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई संवत् १८८० में ... गये और वहीं अपनी हवेलियाँ वगैरह बनवाईं।

सेठ सुलतानचन्दजी के गणेशदासजी और गणेशदासजी के मिलापचन्दजी नामक पुत्र हुए ... लोग भोपाल नामक स्थान पर सराफी का कारबार करते रहे। आप सब लोगों का ... है। सेठ मिलापचन्दजी के सेठ रुक्मानन्दजी एव सागरमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ रुक्मानन्दजी का जन्म सवत् १९२२ में और सागरमलजी का सवत् १९१९ ... आप ही दोनों भाइयों ने अपने हाथों से हजारों रुपये कमाये हैं। प्रारम्भ में आपकी स्थिति ... आप दोनों भाई क्रमश सवत् १९४९ तथा सवत् १९५१ में कलकत्ता व्यापार निमित्त ... आपने पहले पहल गुमास्तागिरी और फिर कपड़े की दलाली का काम किया। इन ... को काफी सफलता मिली और स० १९६५ में आपने कलकत्ता में 'रुक्मानन्द सागरमल' के नाम ... की दुकान स्थापित की। सवत् १९७० में इस फर्म पर 'मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द' ... और इंग्लैण्ड से कपड़े का डायरेक्ट इम्पोर्ट करना प्रारम्भ किया। तदन्तर सवत् १९८१ ...

सेठ अबीरचन्दजी के बीजराजजी तथा चांदमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोग भी व्यापार शल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास क्रमश: संवत् १९५३ व १९७५ में हुआ। सेठ चांदमलजी के दीप- न्दजी नामक एक पुत्र हुए। आप बाल्यावस्था में ही स्वर्गवासी हुए। आपकी धर्मपत्नी श्री इन्द्रकुँवर जैन स्थानकवासी सम्प्रदाय में सं० १९६७ में दीक्षा ग्रहण की।

सेठ चांदमलजी के कोई पुत्र न होने से आपने अपने भाई मुन्नीलालजी के पुत्र नथमलजी को त्तक लिया। आप नवयुवक विचारों के पढ़े लिखे सज्जन हैं। आप बड़े सरल स्वभाव वाले तथा लनसार हैं। आपके भँवरलालजी नामक एक पुत्र है।

आपकी फर्म पर आठनूर (बदनूर-बेतूल) में बीजराज चांदमल के नाम से जमींदारी, हुंडी चिट्ठी, किंग, सोना चांदी का तथा कलकत्ते में चांदमल नथमल के नाम से ५९ सूता पट्टी में विलायती धोती का गपार होता है।

फूँदराजजी का परिवार

सेठ फूंदराजजी के शुभकरनजी, (कोडामलजी) जोरावरमलजी और मदनचन्दजी नामक तीन त्र हुये। सेठ मदनचन्दजी के हीरालालजी, माणकचन्दजी, हरकचन्दजी, सुगनचन्दजी, मूलचन्दजी, वलचन्दजी तथा सर्वसुखजी नामक सात पुत्र हुए। सेठ केवलचन्दजी का परिवार गरोठ (इन्दौर स्टेट) तथा अन्य सभी भाइयों का परिवार बीकानेर में ही निवास करता है।

सेठ कोडामलजी का परिवार रायपुर (सी० पी०) में है। सेठ जोरावरमलजी ने मदनचन्दजी दूसरे पुत्र माणकचन्दजी को दत्तक लिया। आपके नथमलजी, बागमलजी और मेघराजजी नामक पुत्र । इनमें बागमलजी का स्वर्गवास होगया है। आपके पुत्र दुलीचन्दजी नथमलजी के यहाँ गोद गये । मेघराजजी के जोगीलालजी तथा डूँगरमलजी नामक पुत्र हैं।

सेठ हरकचन्दजी के मुन्नीलालजी व भेरोंदानजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से प्रथम दत्तक ल गये। आपके रतनलालजी नामक पुत्र हैं। भेरोंदानजी के जेठमलजी, पूनमचन्दजी, भँवरलालजी व सम्पतलालजी नामक पुत्र हैं। सेठ सुगनचन्दजी के परिवार में इस समय कोई नहीं है। सेठ मूल- न्दजी के बुलाखीचन्दजी नामक पुत्र हैं। आप धार्मिक प्रकृति के पुरुष हैं। आप अपने कलकत्ते के व्यवसाय को वयोवृद्ध होने के कारण समेट कर बीकानेर में शांति लाभ कर रहे हैं। आपके सोहनलाल नामक एक पुत्र हुए जिनका स्वर्गवास हो गया है।

और (२) भोजराजजी। महेशजी के देवीचन्द्र और लालचन्द नामक दो पुत्र थे। देवीचन्द्रजी के
: क्रम से शार्दूलसिहजी और देवीदासजी हुए, जिनके समय मे कोई महत्व पूर्ण घटना नहीं हुई।

...तसिंहजी

आप संवत् १४५४ मे राव चुन्डाजी के राज्यकाल मे मारवाड़ की पुरानी राजधानी मण्डोवर
। ख्यातों में लिखा है कि आपने मारवाड राज्य की स्थापना तथा विस्तार मे राव चुण्डाजी का
त साथ दिया था।

...हराजजी

आप राव जोधाजी के समय मे मण्डोवर से जोधपुर आकर बसे। ख्यातों में लिखा है कि
प जोधाजी के समय में प्रधान के पद पर रहे। सम्वत् १५२६ में आपने किले के पास हवेली बनवाई।
पके बाद श्रीचन्द्रजी, भोजराजजी, कालुजी, वस्तोजी, मोहनजी (द्वितीय) सामन्तजी, नगाजी, और
गाजी हुए जिनका विशेष वृतान्त नहीं मिलता है।

...चलाजी

आप सूजाजी के पुत्र थे। जब राव चन्द्रसेनजी ने विपतिग्रस्त होकर जोधपुर छोड़ दिया था
र सम्वत् १६२७ मे मारवाड के सीवाणे के जंगल में रहे थे, तब अचलाजी भी आपके साथ थे। इसके
द सम्वत १६३१ मे जब चन्द्रसेनजी मेवाड़ परगने के मुराडा * गाँव में जाकर रहे थे, तब भी अचलाजी
प के साथ थे। वहाँ से रावजी सिरोही इलाके के कोरटे ग्राम में डेढ़ वर्ष तक रहे। वहाँ भी अचला
आपकी सेवा मे बराबर रहे। इसके पश्चात् रावचन्द्रसेनजी डूँगरपुर के राजा के पास गये। वहाँ
होंने आपको गलियाकोट नामक ग्राम दिया जहाँ रावजी लगभग ३ वर्ष तक रहे। यहाँ भी राजभक्त
चलाजी ने आपके साथ विपति के दिन बिताए। इसके पश्चात् रावजी के पास मारवाड़ के सरदारों का
देश आया कि मारवाड का राज्य खाली है। आप तुरन्त पधारिये। तब रावजी मारवाड़ के सोजत
र की ओर गये। कहना न होगा कि अचलाजी भी आपके साथ आये। इसी समय फिर बादशाह
बर ने चन्द्रसेन पर फौज भेजी। सम्वत् १६३५ के श्रावणबद ११ को सोजत परगने के सवराड़ गाँव

* यह ग्राम इस वक्त मारवाड़ के बाली परगने मे है। यह गाव राव चन्द्रसेनजी की राणी को उदयपुर राणाजी
की ओर से दायजे मे मिला था।

एक फर्म स्थापित की तथा इसे बहुत उन्नति पर पहुँचाया। साथ ही भैरादानजी वाली फर्म पर आप उसमें मुनीमात का काम करते थे सारी उन्नति आप ही के द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास संवत् में हो गया। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमश: बा० जसकरनजी, जेठमलजी और हैं। आप तीनों ही भाई समझदार एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आप लोगों का व्यापार सामलात में में १९ सेनागोग स्ट्रीट में जूट तथा आढ़त का होता है। तार का पता "Free holder" है।

सेठ प्रेमचंदजी भी पहले अपने भाई के साथ व्यापार करते रहे मगर आपके स्वर्गवास पर आपके पुत्र फर्म से अलग हो गये एवम् अपना स्वतंत्र व्यापार करने लगे। आपके पुत्रों भैरोंदानजी एवम् सेठ हीरालालजी हैं। आप भी मिलनसार व्यक्ति हैं। सेठ भैरोंदानजी के पुत्र झूमरमलजी, विरदीचन्दजी और कन्हैयालालजी नामक चार पुत्र हैं। आप लोगों का व्यापार (भागलपुर) बरेडा (पूर्णियाँ) में जूट का होता है।

यह परिवार जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय का मानने वाला है।

श्री नथमलजी बोथरा इन्दौर

श्रीयुत नथमलजी का संवत् १९४२ में जन्म हुआ। आप इन्दौर के सुप्रसिद्ध रा० गुलाबचंदजी के भानेज हैं। उक्त कोठारीजी ने ही बाल्यावस्था से आपका लालन पालन किया और स्थावर, जङ्गम जायदाद का आपको स्वामी बनाया।

श्रीयुत गुलाबचंदजी कोठारी का आप पर बड़ा प्रेम था और आप ही ने आपको हिन्दी और अंग्रेजी की शिक्षा दिलवाई। उक्त कोठारी साहब उस समय इन्दौर राज्य के खजांची थे। अपने भाणेज श्री बोथराजी को अपने पास रख कर उन्हें आफीस के काम में होशियार कर दिया। का अनुभव प्राप्त करने के कुछ वर्ष बाद श्रीयुत बोथराजी इन्दौर राज्य के डेप्यूटी खजांची नियुक्त हुए। कार्य्य को आपने बड़े ही उत्तमता के साथ किया जिसकी प्रशंसा उच्च अफसरों ने की। कई वर्ष पद पर काम करने के बाद आप इंदौर राज्य के डेप्यूटी अकाउन्टेन्ट जनरल हुए। वहाँ भी आपने अच्छी कार्य्य कुशलता दिखलाई। इसके बाद लगभग ईसवी सन् १९२७ में आप २५०) मासिक पर मिलिटिरी सेक्रेटरी हुए। इन्दौर राज्य के फौजी विभाग को आपने इतनी उत्तमता के साथ किया कि जिसकी प्रशंसा तत्कालीन कमान्डर इन-चीफ तथा अन्य उच्च अफसरों ने की। आपने विभाग में नवीन जीवन सा डाल दिया। ईसवी सन् १९३३ में आपने अपने पद से अवसर प्राप्त किया

। जैनमन्दिर और उपाश्रय बनवाये। उन सब का हाल उपलब्ध नहीं है। पर जिन जिन का
ता है उन पर थोडा सा प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है।

(१) जालोर मारवाड़ का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। जयमलजी यहा के शासक रह
। इस किले पर जो जैन मन्दिर हैं, उनका जीर्णोद्धार जयमलजी ने करवाया और उनमे प्रतिमाएं
१ करवाई। इसके सिवा आपने उक्त नगर मे तपागच्छ का उपाश्रय भी बनवाया।

इसके अतिरिक्त यहीं आपने चौमुखजी के मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई थी, जिसका सविस्तार
म जालार के मन्दिरों के प्रकरण में कर चुके है।

इनके अतिरिक्त सम्बत् १६८३ मे आपने शत्रुजयजी मे एक जैन मन्दिर बनवाया। आपने मेड़ता,
, फलोदी आदि नगरों मे भी जैन मन्दिर और उपाश्राय बनवाये।

सम्वत् १६८३ मे आपने शत्रुजय, आबू और गिरनारजी की यात्राएँ की और बड़े-बड़े संघ
ये। सम्वत् १६८६ मे जयमलजी ने जोधपुर मे चौमुखजी का मन्दिर बनवाया।

सम्वत् १६८७ में आपने हजारों भूखों और अनाथों को अन्न और वस्त्र दान दिया। एक वर्ष तक
दान देते रहे। आपकी दानवीरता दूर दूर तक प्रसिद्ध थी।

ठाकुर मुहणोत नेणसी—जिन महापुरुषों ने राजस्थान के राजनैतिक, सैनिक और साहित्यिक
। को गौरवान्वित किया है, उनमें मुहणोत नेणसी का आसन बहुत ऊँचा है। आपकी कीर्ति
न तक ही परिमित नहीं है, पर वह सारे भारतवर्ष के साहित्य संसार में फैली हुई है। आप
और तलवार के धनी थे। अर्थात् आप वीर और विद्वान् दोनों ही थे। आपका सारा जीवन राज्य
दश सेवा, विद्यानुराग, और परोपकार वृति में लगा। आपने राजस्थान का एक अमूल्य इतिहास
खा, जिससे आज के बड़े २ दिग्गज इतिहासवेत्ता प्रकाश ग्रहण करते हैं। आपने मारवाड़ के ग्रामों
मर्दुमशुमारी की और प्रत्येक गाव की जन सख्या, कुंओं, जमीन और आय आदि का पूरा हाल अपने
१ लिया। आपने महाराजा जसवन्तसिंहजी के समय में दीवान पद पर रह कर कई मार्के के बड़े २
किये। अब हम आपकी महान् जीवनी पर थोड़ा सा प्रकाश डालना चाहते है।

आप, जैसा कि हम ऊपर कह चुके है, जयमलजी के पुत्र थे और आपका जन्म जयमलजी की
पत्नी सरूपदे से हुआ था। आपका पहला विवाह भडारी नारायणदासजी की पुत्री से और दूसरा
। महता भीमराजजी की कन्या से हुआ। दूसरी पत्नी से कर्मसीजी, वेरीसीजी और समरसीजी हुए।

नेणसी जी के सैनिक कार्य—नेणसीजी बड़े बहादुर सैनिक थे। आपको अपने जीवन में कई

१०

आसकरणजी का स्वर्गवास सं० १९८५ मे, सेठ मोतीचन्दजी का सवत् १९७५ म तथा सेठ मनोहरमल
का संवत् १९५९ मे हुआ।

सेठ आसकरणजी के दौलतरामजी तथा दौलतरामजी के वस्तीमलजी नामक पुत्र हुए। से
दौलतरामजी का सवत् १९६३ मे स्वर्गवास हो गया है। सेठ मोतीचन्दजी के लादूरामजी एवं मूलचन्द
नामक दो पुत्र हुए। इनमें से लादूरामजी अपने काका मनोहरमलजी के यहाँ पर गोद गये।

सेठ लादूरामजी का जन्म सवत् १९४५ मे हुआ। आप समझदार और प्रतिष्ठित व्यक्ति
आपकी नाशिक व खानदेश की ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके चम्पालालजी तथा रतनलाल
जी नामक दो पुत्र हैं। चम्पालालजी दुकान के काम को सभालते है। सेठ मूलचन्दजी का जन्म सं
१९५४ में हुआ। आप भी प्रतिष्ठित व्यक्ति है। सेठ वस्तीमलजी के गणेशमलजी नामक पुत्र है। आप
लोगों का मेसर्स मोतीचंद मनोहरमल के नाम से लेन-देन का काम काज होता है।

लाला शिब्बूमलजी जैन-चोथरा का खानदान, फरीदकोट

यह खानदान करीब २०० वर्ष पहले से ईसेखा के कोट (फरीदकोट) से फरीदकोट में आ
निवास करने लगा। इस खानदान में लाला मयमलजी हुए। आप फरीदकोट स्टेट के खजानी रहे। आपके
लाला शिब्बूमलजी और नंदूमलजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला शिब्बूमलजी बड़े लोकप्रिय सज्जन थे। आप यहाँ की स्टेट के ट्रेझरर भी रहे है। आप
यहाँ के तत्कालीन महाराजा विक्रमसिंहजी की बड़ी कृपा रहा करती थी। आपके स्वर्गवासी होजाने पर
सवत् १९६१ में आपका शव किले के दरवाजे के अदर लाया गया, और उस समय आपका फोटो
वहाँ के महाराजा ने खुद आकर फोटो लिवाया। आपके लिये, ऑइनाए ब्रॉड बंश फरीदकोट एन्ड हिस्ट्री
६९७ में लिखा है कि "कदीमों की कदर आफजाई में यहाँ तक बदिले इल्तफात फरमाया कि अगर
कोई आलिमे जावदानी को चल बसा तो उनके जनाजे की वो इज्जत की जिसकी तमन्ना निर्दे हुआ करे
करे"। लाला शिब्बूमलजी के लाला देवीदासजी नामक पुत्र हुए। आप भी फरीदकोट स्टेट के तोशाखाने का काम
संवत् १९७० तक करते रहे। आपका सवत् १९८९ मे स्वर्गवास हुआ। इस समय आपके पुत्र जगन्
पालजी, कृष्णगोपालजी, विष्णुगोपालजी उर्फ प्यारेलालजी विद्यमान है। लाला कृष्णगोपालजी
स्टेट में मुलाजिम हैं। आप होशियार तथा मिलनसार सज्जन है।

लाख लखारॉं नीपजे, वड पीपल री साख ।
नाटियो मूँतो नैणसी, ताँबो देण तलाक़ ॥ १ ॥
लेसो पीपल लाख, लाख लखारॉं लावसो ।
ताँबो देण तलाक, नटिया सुन्दर नैणसी* ॥ २ ॥

नैणसी और सुन्दरदास के दण्ड के रुपये देना अस्वीकार करने पर वि० सं० १७२६ माघ वदी
ार कैद कर दिए गए और उन पर रुपयों के लिये सख्तियाँ होने लगी। फिर कैद की हालत में ही
ों को महाराज ने औरंगाबाद से मारवाड को भेज दिया। दोनों वीर प्रकृति के पुरुष होने के कारण
ाहाराज के छोटे आदमियों की सख्तियाँ सहन करने की अपेक्षा वीरता से मारना उचित समझा।
। १७२७ की भाद्रपद वदी १३ को इन्होंने अपने पेट में कटार मारकर मार्ग में ही शरीरांत कर दिया।
ार महा पुरुष नैणसी की जीवन लीला का अंत हुआ और महाराज की बहुत कुछ बदनामी हुई।

नणसीजी की साहित्य सेवा—जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं मुहणोत नैणसी बडे विद्वान्,
सेवी और इतिहास-प्रेमी थे। वीर कथाओं से आपका बडा अनुराग था। राजस्थान के इति-
ं आपने एक बडा ही प्रमाणिक और महत्पूर्ण ग्रन्थ लिखा जो 'मुहणोत नैणसी की ख्यात' के नाम से
है। इस ग्रन्थ-रत्न में राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड
ध्य भारत आदि के इतिहास से सम्बन्ध रखनेवाली बड़ी ही बहुमूल्य सामग्री भरी हुई है।
ाने के इतिहास के लिये तो यह ग्रन्थ अमूल्य है।

इस ग्रंथ रत्न की सामग्री इकट्टा करने में नैणसीजी ने बड़ा परिश्रम किया। जहाँ २ से आपको
मिली वहाँ से आपने संग्रह की। इससे यह ग्रंथ इतिहास वेत्ताओं के लिये बड़ा ही उपयोगी और
न हो गया। वि० स० १३०० के बाद से नैणसी के समय तक के राजपूतों के इतिहास के लिये
सल्मानों की लिखी हुई फारसी तवारीखों से भी नैणसी की ख्यात कहीं २ विशेष महत्व की है।
ाना के इतिहास में कई जगह जहाँ प्राचीन शोध से प्राप्त सामग्री इतिहास की पूर्ति नहीं कर सकती,
णसी की ख्यात ही कुछ कुछ सहायता देती है। यह इतिहास का एक अपूर्व संग्रह है। स्वर्गीय
र्गाप्रसादजी तो नैणसी को "राजपूताने का अब्दुलफज़ल" कहा करते थे, जो अयुक्त नहीं हैं। ख्यात
ापा लगभग २५५ वर्ष पूर्व की मारवाड़ी है, जिसका इस समय ठीक २ समझना भी सुलभ नहीं है।
ो ने जगह जगह राजाओं के इतिहास के साथ २ कितने ही लोगों के वर्णन के गीत, दोहे, छप्पय आदि

* राय बहादुर ओझाजी के लेख से।

लाला गोकुलमलजी व रघुनाथदासजी फरीदकोट महाराजा बलवीरसिंहजी के प्राइवेट ... आप दोनों मौजूद हैं। चौधरी हरभजमलजी स्थानीय म्यु० के वाइसप्रेसिडेंट थे। लाला ... चौधरी हैं। इसी तरह लाला परमानंदजी, पालामलजी व उत्तमचन्दजी का स्टेट बनाने में ...

बाबू किशोरीलालजी जैन, बोथरा-फरीदकोट (पंजाब)

लाला जातीमलजी साहुकारे का काम करते थे। इनके हरभजमलजी वसतामल, ... मलजी व चांदनरायजी नामक ४ पुत्र हुए। लाला हरभजमलजी फरीदकोट म्यु० के वाइस प्रेसि... शहर के चौधरी थे। उमर भर आप सरकारी कामों में सहयोग देते रहे। १९१३ के युद्ध में भरती कराने में आपने इमदाद दी। १९८२ में आप गुजरे। आपके भाई ... हैं।

लाला सोनामलजी के पुत्र लाला किशोरीमल जी जैन बी० ए० से सन् १९२१ में ... बी० की डिगरी हासिल की। आप गुरुकुल पंच कूला में १॥ साल तक अधिष्ठाता रहे। ... से ६ सालों तक आफ़ताब जैन के सहायक सम्पादक तथा सम्पादक रहे।

सेठ नथमल जीवराज बोथरा, मद्रास

इस परिवार के पूर्व पुरुष पहले पहल खेजडले में रहते थे। वहाँ से आप लोग ... फिर आउआ ठाकुर के प्रयत्न से चकपटिया (सोजत) में लाये गये। वहाँ पर आप लोगों ... पदवी देकर उक्त ठाकुर साहब ने सम्मानित किया। आप श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के माननेवाले हैं।

इस खानदान में सेठ आकाजी हुए। आपके मुकनाजी और मुकनाजी के नथमलजी ... हुए। आप लोग वहाँ के ठिकाने के कामदारी का काम करते रहे। सेठ नथमलजी के पुत्र ... हुए।

सेठ जीवराजजी का जन्म संवत् १९२६ में हुआ था। आप संवत् १९५८ में मद्रास ... यहाँ आकर पट्टालमसूला गैन्सरोड में अपनी फर्म स्थापित की। आप संवत् १९११ में ... स्वर्गवासी हुए। आपके केशरीमलजी, बख्तावरमलजी तथा पन्नालालजी नामक तीन पुत्र हैं। ... भाइयों का जन्म क्रमशः संवत् १९४७, १९४८ और १९५९ का है। आप तीनों ... सम्मिलित रूप से ही व्यापार करते हैं। आप लोगों ने अपनी फर्म की ठीक उन्नति की है।

लाख लखारॉं नीपजे, वड पीपल री साख ।

नाटियो मूँतो नैणसी, ताँबो देण तलाक ॥ १ ॥

लेसो पीपल लाख, लाख लखारॉं लावसो ।

ताँबो देण तलाक, नटिया सुन्दर नैणसी* ॥ २ ॥

नैणसी और सुन्दरदास के दण्ड के रुपये देना अस्वीकार करने पर वि० सं० १७२६ माघ वदी
र कैद कर दिए गए और उन पर रुपयों के लिये सख्तियाँ होने लगी । फिर कैद की हालत में ही
को महाराज ने औरंगाबाद से मारवाड को भेज दिया । दोनों वीर प्रकृति के पुरुष होने के कारण
हाराज के छोटे आदमियों की सख्तियाँ सहन करने की अपेक्षा वीरता से मारना उचित समझा ।
१७२७ की भाद्रपद वदी १३ को इन्होंने अपने पेट में कटार मारकर मार्ग में ही शरीरांत कर दिया ।
महा पुरुष नैणसी की जीवन लीला का अंत हुआ और महाराज की बहुत कुछ बदनामी हुई ।

नैणसीजी की साहित्य सेवा—जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं मुहणोत नैणसी बडे विद्वान्,
सेवी और इतिहास-प्रेमी थे । वीर कथाओं से आपका वडा अनुराग था । राजस्थान के इति-
आपने एक वडा ही प्रमाणिक और महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा जो 'मुहणोत नैणसी की ख्यात' के नाम से
। इस ग्रन्थ-रत्न में राजपूताना, गुजरात, काठियावाड, कच्छ, बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड
य भारत आदि के इतिहास से सम्बन्ध रखनेवाली बड़ी ही बहुमूल्य सामग्री भरी हुई है ।
ने के इतिहास के लिये तो यह ग्रन्थ अमूल्य है ।

इस ग्रंथ रत्न की सामग्री इकट्ठा करने में नैणसीजी ने वडा परिश्रम किया । जहाँ २ से आपको
मिली वहाँ से आपने संग्रह की । इससे यह ग्रंथ इतिहास वेत्ताओं के लिये वड़ा ही उपयोगी और
हो गया । वि० सं० १३०० के बाद से नैणसी के समय तक के राजपूतों के इतिहास के लिये
लमानों की लिखी हुई फारसी तवारीखों से भी नैणसी की ख्यात कहीं २ विशेष महत्व की है ।
ना के इतिहास में कई जगह जहाँ प्राचीन शोध से प्राप्त सामग्री इतिहास की पूर्ति नहीं कर सकती,
णसी की ख्यात ही कुछ कुछ सहायता देती है । यह इतिहास का एक अपूर्व संग्रह है । स्वर्गीय
देवीप्रसादजी तो नैणसी को "राजपूताने का अब्बुलफजल" कहा करते थे, जो अयुक्त नहीं है । ख्यात
लगभग २७५ वर्ष पूर्व की मारवाडी है, जिसका इस समय ठीक २ समझना भी सुलभ नहीं है ।
ने जगह जगह राजाओं के इतिहास के साथ २ कितने ही लोगों के वर्णन के गीत, दोहे, छप्पय आदि

* रायबहादुर ओझाजी के लेख से ।

रा० ब० सेठ लखमीचंदजी बोथरा, कटगी

स्व० सेठ अमरचन्दजी बोथरा, नशाना

रूपलालजी जैन बोथरा, फरीदकोट.

बा० किशोरीलालजी जैन, B A LL

दीवान कर्मसीजी

आप सुप्रख्यात् दीवान नैणसीजी के प्रथम पुत्र थे। सम्वत् १६९० के वैसाख सुदी २ को ा जन्म हुआ। आपका शुभ विवाह कोठारी जगन्नाथसिंहजी की पुत्री से हुआ, जिनसे आपको सिंहजी और संग्रामसिंहजी नामक दो पुत्र हुए।

सम्वत् १७१४ की भाद्रपद सुदी १० को तत्कालीन मुगल बादशाह शाहजहाँ दिल्ली में बीमार ा। इससे वह मार्गशीर्ष बदी ५ को आगरे चला आया। बादशाह की बीमारी का समाचार युवराज दाराशिकोह को छोड़ कर दूसरे सब शाहजादे बादशाहत लेने के लिए अपने अपने सूबों से । हुए। जब यह बात बादशाह को मालूम हुई तब उसने औरङ्गजेब और मुराद को (जो दक्षिण के र थे) रोकने के लिए महाराजा यशवन्तसिंहजी को २२ बादशाही उमरावों के साथ रवाना किए। र् १७१४ की माघबदी ४ को आप लोग उज्जैन पहुँचे। जब महाराजा को उज्जैन में यह सूचना मिली ाहजादा मुरादबख्श उज्जैन आ रहे हैं तो आप लोग भी मुकाबले के लिए खाचरोद मुकाम पर पहुँचे। ो मुराद पीछा फिर गया और वह औरङ्गजेब के शामिल होगया। इस पर महाराजा ने खाचरोद से र उज्जैन से पाँच कोस के अन्तर पर चोरनराणा (वर्तमान में इसे फतियाबाद कहते हैं) गाँव में म किया। औरङ्गजेब भी अपनी फौज सहित वहाँ आ पहुँचा। बादशाह के २२ उमरावों में से १५ जेब के साथ मिल गये। इससे महाराजा यशवन्तसिंह की स्थिति बड़ी कमजोर हो गई। फिर भी राजा ने औरङ्गजेब से युद्ध किया। इस युद्ध में करमसीजी भी बड़ी बहादुरी से लड़कर घायल हुए थे। के अतिरिक्त इस युद्ध में महाराजा के १४२ सरदार, ७०१ राजपूत और ३०१ घोड़े मारे गये। बहुत ादमी घायल भी हुए। इस युद्ध में महाराजा की हार हुई। वे कुछ घायल भी हुए। उन्हें लौट कर पुर आना पड़ा।

संवत् १७१८ में कर्मसीजी महाराजा के साथ गुजरात में थे। जब महाराजा को बादशाही ाँसी हिसार के परगने मिले तो अहमदाबाद के मुकाम से उन्होंने इनको संवत् १७१८ के मार्गशीर्ष बदी ा वहाँ के शासक नियत कर भेजे। ये परगने (तेरह लाख की आमदनी के) गुजरात के सूबे की ज में मिले थे। कर्मसीजी हाँसी-हिसार में संवत् १७२३ तक रहे। संवत् १७२७ में इनके पिता

कर्मसीजी के अतिरिक्त इस लड़ाई में और भी कई ओसवाल मारे गये तथा घायल हुए जिनमें मुहता कृष्णदास, ता सदरिदास, नराणा नारायणचंद, भण्डारी ताराचंद नारणोत (दीवान) भण्डारी अभयराज रायमलोत के नाम उल्लेखनीय हैं।

दस्साणी

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मंडोवर का था। वहाँ से आप [illegible] आकर बसे। उस समय इस परिवार में सेठ नागरपालजी के पुत्र नागदेवजी थे। आप [illegible] कोडमदेसर से बीकानेर ले गये। सेठ नागदेवजी के वच्छराजजी, पासूजी, नूणोजी, [illegible] डूंगरसीजी, चौवसीजी, दासुसाजी, और अजवोजी नामक नौ पुत्र हुए। इनमें से यह [illegible] के वंशज होने से दस्साणी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बीकानेर का दस्साणी परिवार

सेठ दासुजी के खेतसीजी, चादमलजी, पदमसीजी, और माडणजी नामक चार पुत्र [illegible] परिवार पदमसीजी से सम्बन्ध रखता है। पदमसीजी के नेणदासजी और अगरसेनजी नामक [illegible] हुए। नेणदासजी के बाद क्रमश तिलोकचन्दजी, सावन्तरामजी व हसराजजी हुए। हसराज[illegible] मल व जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ सूरजमलजी के सतोपचन्दजी, रायसिंहजी, [illegible] मलजी और सवाईसिंहजी नामक पाँच पुत्र हुए।

सेठ ज्ञानमलजी का परिवार

आपके जीवनदासजी तथा अबीरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों [illegible] क्रमश. सं० १८६१ व १८६४ का था। आप लोग व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप लोग [illegible] बिदनूर, बेतूल आदि स्थानों को गये। वहाँ पर आपने पहले पहल सर्विस की और फिर [illegible] फर्म मेसर्स जीवनदास लखमीचन्द तथा अबीरचन्द बीजराज के नाम से स्थापित की। इन [illegible] साय में आप लोगों के हाथों से खूब वृद्धि हुई। सेठ जीवनदासजी संवत् १९४० के [illegible] अबीरचन्दजी संवत् १९४७ के कार्तिक में स्वर्गवासी हुए। सेठ जीवनदासजी के [illegible] एवं मुन्नीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से आपके प्रथम दो पुत्रों का स्वर्गवास [illegible] तथा १९७२ में होगया। सेठ लखमीचन्दजी के फतेचन्दजी नामक पुत्र हुए।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ मुन्नीलालजी प्रधान व्यक्ति हैं। आप व्यापार कुशल [illegible] सार सज्जन हैं। आपके नथमलजी नामक पुत्र हैं जो अबीरचन्दजी के परिवार में दत्तक [illegible] फतेचन्दजी के अभयराजजी तथा सोभाचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

वैरसीजी (नैणसीजी के द्वितीय और तृतीय पुत्र) मालवे की ओर से आकर रहे थे। सिहवी विट्ठलजी ने कुँवरजी से निवेदन कर अपने दौहित्र टोडरमल (सुन्दरदासजी के पौत्र और तेजमालजी के पुत्र) स्त्रियों और बाल बच्चों सहित मारने से बचाया।

मुहणोत संग्रामसिहजी

आप करमसीजी के पुत्र और दीवान नैणसी के पौत्र थे। आपका विवाह मुहता कालूरामजी की पुत्री से हुआ जिससे आपको भगवतसिहजी और सिहोजी नामक पुत्र हुए।

करमसीजी के दीवाल मे चुनाये जाने का तथा उनके कुटुम्बियों के मारे जाने का हाल हम पहले लिख चुके है। ऐसे कठिन समय में नागोर से फूला नामक एक विश्वसनीय धाय बालक संग्रामसिहजी को लेकर कृष्णगढ़ चली आई। तब से आप वही रहने लगे। कृष्णगढ़ महाराना ने इन पर बड़ी कृपा की और इन्हे कुए, खेत आदि प्रदान किये।

कुछ वर्ष व्यतीत होने पर भण्डारी खींवसीजी (प्रधान) और भण्डारी रघुनाथजी (दीवान) ने तत्कालीन जोधपुर नरेश महाराजा अजितसिंहजी से निवेदन किया कि संग्रामसिहजी और वैरीसिहजी के पुत्र सामन्तसिहजी जोधपुर बुला लिये जावें। महाराजा ने यह बात स्वीकार करली। आप लोग जोधपुर बुला लिये गये। इतना ही नहीं संग्रामसिंहजी को सात परगनों की हुकूमत दी गई। आपने बडे २ जिम्मेदारी के पदों पर भी कार्य्य किया।

सम्वत १७३६ मे जब बाहरी शत्रुओं के घेरे के कारण राज्य परिवार ने जोधपुर किला खाली कर दिया था, तब माजी साहबा वाघेलीजी तथा दूसरे जनाना सरदारों ने मुहणोतोंकी *हवेली में निवास करने की इच्छा प्रकट की। तदनुसार कुछ दिनों तक राज्य कुटुम्ब की महिलाएँ मुहणोतों की हवेली में रहीं।

सम्वत् १७८२ मे महाराजा अभयसिहजी ने संग्रामसिंहजी को मेडता में बाग बनवाने के लिये ४० बीघा जमीन इनायत की, जो अभी तक उनके वंशजों के अधिकार में है। यह बाग मुहणोतों के बाग के नाम से मशहूर है।

भगवतसिहजी

आप संग्रामसिहजी के पुत्र थे। आपका विवाह मुहता श्रीचन्द्रजी की पुत्री से हुआ। आपके तीन पुत्र थे, जिनका नाम सूरतरामजी, साहिबरामजी और अणदरामजी था। इनमें साहिबरामजी के

* यह हवेली किले के पास ही है।

मुहणोत

मुहणोत गोत्र की उत्पत्ति—मुहणोतों की उत्पत्ति राठौड वश से हुई है। मुहणोतों की ख्यातों में लिखा है। जोधपुर के राव रायपालजी के तेरह पुत्र थे। इनमें बडे पुत्र कन्हपालजी तो राज्याधिकारी हुए और ... मोहनजी मुहणोत या मोहनोतकुल के आदि पुरुष हुए। भाटों की ख्यातों में लिखा है कि एक समय मोहनजी शिकार खेलने गये थे। आपकी गोली से एक गर्भवती हिरनी मर गई। इसी बीच म उसके गर्भ से बच्चा ... हुआ और वह अपनी मरी हुई माता का स्तन पीने लगा। यह करुणापूर्ण दृश्य देख कर मोहनजी का ... हृदय पसीज गया। उन्हे अपने इस हिंसाकाण्ड से बडी घृणा हुई। उनके सामने उक्त हरिनी ... उसके बच्चे का करुणापूर्ण दृश्य नाचने लगा। वे बडे गम्भीर विचार में पड गये और खेड ग्राम की ... बावडी के पास बैठ गये। इतने ही में जैनाचार्य्य यति शिवसेनजी ऋषिश्वर उधर से निकले और ... मोहनजी से जल छानकर पिलाने को कहा। इस पर मोहनजी आनन्द से गद् गद् हो गये। ... ऋषिश्वर को जल पिला कर अपने आपको धन्य समझा। इसके बाद मोहनजी ने बडी दीनता के ... उक्त यतिजी से निवेदन किया कि अगर आपकी मुझ पर कुछ भी दया है तो इस हिरनी को ... दीजिये। इस पर ऋषिश्वर ने उक्त हरिनी पर अपने हाथ की लकडी फेरी जिससे वह जीवित हो ... यह देखकर मोहनजी बडे ही प्रसन्न हुए उनकी आत्मा को बडी शाति मिली। उन्होंने ऋषिश्वर शिव... जी को अपना गुरु स्वीकार कर सम्वत् १३५१ की कार्तिक सुदी १३ को खेड नगर में जैनधर्म का अव... लम्बन लिया।

उपरोक्त घटना वर्णन में कुछ अतिशयोक्ति हो सकती है, पर यह निश्चय है कि किसी ... त्पादक घटना से प्रभावित होकर मुहनोतवश के जनक मोहनजी ने यति श्री शिवसेन ऋषिश्वर से जैन ... स्वीकार किया और तब से ओसवाल जाति में उनकी गणना होने लगी।

सपटसेनजी

आप मोहनजी के पुत्र थे। आपका दूसरा नाम सुभटसेनजी भी था। भाटों की ... लिखा है कि आप जोधपुर नरेश राव कन्हपालजी के समय में प्रधानगी के पद पर रहे। सम्वत् ... में आप मौजूद थे। आपके पीछे आपकी पत्नी श्रीमती जीवादेवी सती हुई। आपके दो पुत्र थे—(१, ...

रीते भेजे उनकी असली नकलें हमारे पास है। उनमे मेवाड की तत्कालीन निर्बल अवस्था पर मुन्दर प्रकाश गिरता है।

सम्वत् १८३० की फाल्गुन सुदी ३ को महाराजा ने सुरतरामजी को मुसाहिवी, 'राव' की पदवी भग ३०००) रुपयों की लागत का बहुमूल्य सिरोपाव प्रदान किया। इसके अतिरिक्त आपको र्मों की प्रशसा मे कई खास रुक्के प्रदान किये।

सम्वत् १८३१ के द्वितीय वैशाख सुदी ८ को राव सूरतरामजी को कर्णमूल नामक रोग हुआ मे दो दिन के बाद आपका स्वर्गवास हो गया। आपकी दाह क्रिया नैणसीजी के बाग मे हुई। ाथ दो सतियाँ हुई। आपकी वेकुण्ठी तेरह खण्डी बनी थी। आपकी स्मशान यात्रा में सब प्रसिद्ध र जागीरदार और लगभग ५००० मनुष्य थे।

सवन १८३१ के ज्येष्ट वदी १४ को राव सूरतरामजी के मकान पर स्वयं जोधपुर नरेश विजयसिहजी पधारे और आपके पुत्र सवाईरामजी और ज्ञानमलजी को वड़ी तसल्ली दी और ोक प्रकट किया।

मुहणोत खानदान में राव सूरतरामजी वड़े प्रभावशाली, वीर और कार्य्यकुशल मुत्सद्दी हुए। धान सेनापति, दीवान, प्रधान आदि वड़े २ पदों पर वड़ी सफलता के साथ काम किया। जोधपुर ने आपको बडे २ सम्मान प्रदान किये थे। अन्य वड़े २ महाराजा भी आपका वड़ा आदर करते त्कालीन वून्दी नरेश ने आपको उठकर ताजीम देने का, तथा वांह पसार कर मिलने का कुरव प्रदान ा। कोटा नरेश ने भी आपको इसी प्रकार का उच्च सम्मान प्रदान किया था। बीकानेर दरवार र आपकी नजर लेते थे। जैसलमेर, कृष्णगढ़, इंदौर और गवालियर के नरेश आपको दीवान श्रीसूरतरामजी" लिखा करते थे।

मुहणोत ठाकुर सवाईरामजी—मुहणोत सूरतरामजी की मृत्यु के बाद उनके वडे पुत्र मुहणोत मजी विक्रम सम्वत् १८३१ मे जोधपुर के मुसाहिव आला (Prime minister) वनाये गये। समय मे २०००० रेख की जागीर बरावर चलती रही। सम्वत् १८४९ में बीकानेर नरेश राजसिंहजी और उनके कुँवर के बीच झगड़ा हो गया। इस समय जोधपुर दरबार ने एक वड़ी सेना सवाईरामजी को बीकानेर भेजा। आपने वहा पहुँच कर पिता पुत्र के बीच मेल करवा दिया।

दीवान मुहणोत ज्ञानमलजी—मुहणोत वंश में आप वड़े प्रतापी, राज्य कार्य कुशल और वीर हो गये। आपका जन्म सम्वत १८१६ के चैत्र वदी १२ शुक्रवार को हुआ।

जोधपुर नरेश महाराजा विजयसिहजी ने केकड़ी नरेश राजा अमरसिंहजी को कृष्णगढ़ के पास

मे उक्त फौज से रावजी का युद्ध हुआ। वहाँ अन्य वीरों के साथ अचलाजी भी वीरगति को प्राप्त हुए। इनके स्मारक मे उक्त ग्राम मे एक छत्री बनवाई गई जो अब तक विद्यमान है।

जयमलजी

मुहणोत वंश मे आप बडे प्रतापशाली पुरुष हुए। आपका जन्म सम्वत् १६३८ की माघ सुदी ९ बुधवार को हुआ। आपका पहला विवाह वेद मुहता लालचन्द्रजी की पुत्री स्वरूपादे मे हुआ, जिससे नैणसीजी, सुन्दरसीजी, और आसकर्णजी हुए। दूसरा विवाह सिंहवी विड्दसिंहजी की पुत्री सुहागदे से हुआ, जिनसे नृसिंहदासजी हुए।

जयमलजी बड़े वीर और दूरदर्शी मुत्सद्दी थे। महाराजा सूरसिंहजी ने आपको बड़नगर (गुजरात) का सूबा बना कर भेजा था। इसके बाद जब सम्वत् १६७२ मे फलोदी पर महाराजा सूरसिंहजी का अधिकार हुआ तब मुहणोत जयमलजी वहाँ के शासक बनाकर भेजे गये। महाराजा सूरसिंहजी के बाद महाराजा गजसिंहजी जोधपुर के सिंहासन पर विराजे। सम्वत् १६७७ के वैसाख मास में गजसिंहजी को जालोर का परगना मिला। उस समय जयमलजी वहाँ के भी शासक बनाये गये। महाराजा गजसिंहजीने आपको हवेली, बाग, नौहरा और दो खेत इनायत किये। जब सम्वत् १६७१ में शाहजादा कुर्रम ने महाराजा गजसिंहजी को साचोर का परगना प्रदान किया, तब जयमलजी अन्य परगनों के साथ साथ साचोर के शासक भी नियुक्त किये गये।

सम्वत् १६८४ में जयमलजी ने बाड़मेर कायम कर सूराचन्द्, पोहकरण, राऊदड़ा और नगर के बागी सरदारों से पेशकशी कर उन्हे दण्डित किया।

विक्रम सम्वत १६८३ मे महाराजा गजसिंहजी के बड़े कुँवर अमरसिंहजी को नागोर मिला इस वक्त जयमलजी नागोर के शासक बनाये गये।

जयमलजी की वीरता—हम ऊपर कह चुके है कि मुहणोत जयमलजी बड़े वीर पुरुष थे। सम्वत् १६७१ मे जब महाराजा गजसिंहजी को साचोर का परगना जागीर में मिला तब कोई ५००० काछी साचोर पर चढ़ आये। उस समय जयमलजी यहाँ के हाकिम थे। इन्होंने काछियों के साथ बहादुरी से युद्ध किया और उन्हें मार भगाया। इसी प्रकार आपने जालोर में विहारियों से लड़ कर आपने गढ़ पर अधिकार कर लिया था। सम्वत १६८६ में आपको दीवानगी का प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुआ।

जयमलजी के धार्मिक कार्य—जयमलजी मूर्तिपूजक जैनश्वेताम्बर पथ के थे। आपने भी

जैन पुरुषों का हाथ था, उनमें मुहणोत ज्ञानमलजी भी एक प्रधान पुरुष थे। इसके लिये मानसिंहजी ने आपको कई खास रुक्के दिये जो अब भी आपके वंशज श्रीयुत वृद्धराजजी और ामलजी मुहणोत के पास हैं। खास रुक्कों के अतिरिक्त आपको मुसाहिब आला का पद और ागीर भी दी गई।

सम्वत् १८६१ में जयपुर राज्य के शेखावतों से डिडवाना लूटा और उसपर अपना अधिकार ा। महाराजा ने ज्ञानमलजी को उनके मुकाबले पर सेना देकर भेजा। आपने शेखावतों को वहाँ ड कर न केवल डिडवाना ही पर वरन् उनके शाहपुरा गाव पर भी अधिकार कर लिया। आपके चित कार्य्य के लिये श्री दरबार ने एक खास रुक्के में आपकी बडी प्रशंसा की है।

सम्वत् १८६२ में मारवाड़ पर चढाई करने के लिये किशनगढ़ राज्य के तिहोद नामक गांव में केया। इस चढ़ाई को रोकने लिये ज्ञानमलजी से कहा गया। आपने बडी बुद्धिमानी से इस किया। सम्वत् १८६३ में जब जयपुर की फौजों ने जोधपुर पर घेरा डाला तब ज्ञानमलजी ने र मुत्सद्दियों के साथ राज्य रक्षा के लिये बडे-बडे प्रयत्न किये, जिनकी जोधपुर नरेश ने अपने खास बड़ी प्रशंसा की है।

नवलमलजी और प्रतापमलजी—आप ज्ञानमलजी के इकलौते पुत्र थे। आपका जन्म सं० १८३६ । आप भी अपने पिताजी की तरह वीर और कुशल सेना नायक थे। सम्वत् १८६१ में आपने को विजय किया और उस पर मारवाड़ का झण्डा उडाया। आपकी सेवाओं की तत्कालीन नरेश ने अपने दो खास रुक्कों मे बड़ी प्रशंसा की है। आपके प्रतापमलजी नामक पुत्र थे। ा मानसिंहजी के समय में आपने बड़े-बड़े ओहदों पर काम किया। सम्वत् १९०८ में मारवाड़ के ारों के आपसी झगडों को कुशलता पूर्वक निपटाने के उपलक्ष्य में आपको पाली परगने में उटावन गाव जागीर मे मिला। सम्वत् १९२० में आपने महाराजा तखतसिंहजी की आज्ञा से तखतपुरा गाव बसाया। ब्रिटिश सरकार के साथ जोधपुर राज्य की सन्धि करवाने में आपका प्रधान हाथ था। मलजी के जोरावरमलजी और गणेशराजजी नामक दो पुत्र हुए। जोरावरमलजी ने जालोर और सोजत हुमतों का काम किया। आपने और भी अनेक पदों पर काम किया। सीमा सम्बन्धी कई झगड़ों लता पूर्वक फैसला किया। आपके छोटे भाई गणराजजी ने मारवाड़ राज्य के खजांची का काम । आपने कई परगनों की सायरों पर काम किया।

जोरावरमलजी के पुत्र पूहडमलजी हुए। दरबार ने पैपाक प्रदान कर आपका न किया था। सम्वत १९४३ मे राय मेहता पन्नालालजी के निमन्त्रण से आप उदयपुर गये और

स्व० मुहणोत नैणसी दीवान राज्य मारवाड़, जोधपुर

स्व० मुहणोत सुन्दरसी दीवान

वृद्धराजजी मुहणोत, जोधपुर

स्व० सेठ लछमणदासजी मुहणोत

।चन्दजी का बडा सम्मान किया। सवत् १७१६ मे महाराजा आपके घर पधारे तथा वहीं भोजन या। सवत् १७१७ में उक्त महाराजा साहब ने आपको पालड़ी नामक एक गाँव की जागीर प्रदान की। ।न १७२३ मे आपका स्वर्गवास हो गया।

वृद्धमानजी— आप महाराजा मानसिहजी के तन दीवान थे इस कारण आपको हमेशा उनके साथ रहकर सेवा करनी पडती थी। संवत् १७६५ में आपका स्वर्गवास हो गया।

कृष्णदासजी—आप महाराजा मानसिंहजी कृष्णगढ़ नरेश के राज्य मे मुख्य मंत्री रहे। महाराजा हब तो विशेष कर बादशाह औरंगजेब के पास उसकी सेवा मे रहते थे, इस कारण राज्य के सब काम ज आपही के हाथ में थे। सवत् १७५० में महाराज ने आपके कामों से प्रसन्न होकर आपको 'बुहास' मक जागीर का पट्टा प्रदान किया। वह आपकी विद्यमानता तक बना रहा। सवत् १७५६ में । अबदुल्लाखाँ अपनी फौज लेकर कृष्णागढ़ मे बादशाही थाना जमाने के लिए आया, उस समय आपने सै युद्ध कर पराजित किया। आपका संवत् १७६३ में स्वर्गवास हो गया।

आसकरणजी आप महाराज राजसिंहजी के समय में कृष्णगढ़ मे संवत् १७६५ में दीवान प्रत किये गये। आपने सवत् १८१९ में कृष्णगढ़ के दक्षिण की तरफ एक आस्तिक माता का मन्दिर वाया था जो वर्तमान मे भी वहाँ मौजूद है। आपके २ पुत्र हुए बड़े देवीचन्दजी तथा छोटे रामचन्द्रजी मान वश रामचन्द्रजी का है।

रामचन्द्रजी—आपने सवत् १७८१ के वर्ष से कृष्णगढ के महाराज श्री बहादुरसिंहजी के समय दीवानगी का काम किया। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमश हठीसिंहजी, सूर्य्यसिहजी, ।र बाघसिहजी था।

हठीसिंहजी—आपको कृष्णगढ़ महाराजा बहादुरसिंहजी साहब ने १८२१ में दीवानगी काम प्रदान किया था। इसके साथ ही ताजीम तथा हाथी और सिरोपाव प्रदान किया। जिसमें ार और कटार देने की विशेष कृपा थी। बाघसिंहजी इसी समय में फौज बक्षी का काम करते थे।

सूर्य्यसिंहजी—आप भी उपरोक्त महाराजा साहब के समय में जागीर बक्षी का काम करते रहे। ।नके ६ पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमश पृथ्वीसिंहजी, हिन्दूसिंहजी, हमीरसिहजी उम्मेदसिंहजी, लसिहजी आर श्यामसिहजी थे।

इन बन्धुओं मे हिन्दूसिहजी, हमीरसिंहजी तथा नवलसिहजी के कोई सतान नहीं रही तथा उम्मेद-हजी और श्यामसिहजी का परिवार उदयपुर गया, जिनका परिचय नीचे दिया गया है। सबसे बड़े पृथ्वीसिहजी का परिवार किशनगढ़ मे निवास करता रहा, इनके पुत्र भीमसिंहजी हुए।

मुहणोत हठीसिहजी नामाङ्कित व्यक्ति हो गये हैं, आजकल आपके नाम से किशनगढ़ का

लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी। सम्वत् १६८८ मे मगरे के मेवों (मीनों) ने बड़ा उत्पात मचाया था। से इन्होंने प्रजा को बड़ा तग कर रखा था। महाराजा गजसिहजी की आज्ञा मे [illegible] चढ़ाई की और मेवों का (मीनों) दमन कर वहाँ शान्ति स्थापित की।

वि० स० १७०० मे महेचा महेसदास बागी होकर राडधरे के गाँवों में बिगाड़ करने [illegible] पर महाराज जसवन्तसिह ने नैणसी को राडधरे भेजा। उसने राडधरे को विजय कर [illegible] (शहरपनाह) और मकानों को गिरवा दिया तथा महेचा महेसदास को वहाँ से निकाल कर [illegible] फौज के मुखिया रावल जगमल भारमलोत (भारमल के पुत्र) को दिया। स० १७०२ में [illegible] (नारायण) सोजत की ओर के गाँवों को लूटता था, जिससे महाराज ने मुहणोत नैणसी [illegible] छोटे भाई सुन्दरदास को उस पर भेजा। उन्होंने कूकडा, कोट, कराणा, माँकड आदि गाँवों [illegible] दिया। वि० सं० १७१४ में महाराज जसवन्तसिह (प्रथम) ने मियाँ फरासत की जगह नैणसी [illegible] दीवान बनाया। महाराज जसवन्तसिंह और औरंगजेब के बीच अनबन होने के कारण वि० स० [illegible] में जैसलमेर के रावल सबलसिंह ने फलोदी और पोकरण जिलों के १० गाँव लूट, [illegible] अहमदाबाद जाते हुए, मार्ग से ही मुहणोत नैणसी को जैसलमेर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। [illegible] वह जोधपुर आया और वहाँ से सैन्य सहित चढ़कर उसने पोकरण मे डेरा किया। इस पर [illegible] पुत्र अमरसिह, जो पोकरण जिले के गाँवों मे था, भागकर जैसलमेर से तीन कोस की दूरी के गाँव में जा ठहरा। परन्तु जब रावल किला छोड़ कर लडने को न आए, तब नैणसी आसणी [illegible] लौट गये।

नैणसी की मृत्यु—संवत् १७२३ में महाराज जसवन्तसिह औरंगाबाद में [illegible] नैणसी तथा उसका भाई सुन्दरदास दोनों उनके साथ थे। किसी कारण वशात् महाराज उनसे [illegible] होरहे थे, जिससे पौष सुदी ९ के दिन उन दोनों को कैद कर दिया। महाराज के अप्रसन्न [illegible] कारण ज्ञात नहीं हुआ। परन्तु जनश्रुति से पाया जाता है कि नैणसी ने अपने रिश्तेदारों [illegible] पर नियत कर दिया था और वे लोग अपने स्वार्थ के लिये प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। [illegible] के जानने पर महाराज उससे अप्रसन्न हो रहे थे।

वि० सं० १७२५ में महाराज ने एक लाख रुपया दड लगाकर इन दोनों [illegible] दिया, परन्तु इन्होंने एक पैसा तक देना स्वीकार न किया। इस विषय के नीचे लिखे हुए [illegible] में अब तक प्रसिद्ध है—

---

१ मगरा—पहाड़ी प्रदेश, सोजत और जैतारण परगने में अर्वली पहाड़ की श्रेणी को कहते हैं।

ासजी कृष्णसिहजी, फोजसिहजी हुए। नरसिहजी कारखाने जात का काम करते रहे फोजसिंहजी तथा किशनगढ़ स्टेट के हाकिम रहे। अभी फोजसिहजी के पुत्र उदयसिहजी विद्यमान है।

राय वहादुर मेहता विजयसिहजी का खानदान जोधपुर

इस प्रतिष्ठित कुटुम्ब का विस्तृत परिचय ऊपर किशनगढ़ के इतिहास मे दे चुके है। इसी परिवार ा आसकरणजी के पुत्र मुहणोत देवीचन्दजी रूपनगर महाराजा के दीवान थे। इनके पुत्र चैन- , महाराजा प्रतापसिहजी किशनगढ़ के दीवान रहे। इनके पुत्र करणसिंहजी सवत् १८६१ से७७ शनगढ़ राज्य के मन्त्री और १८९६ तक दीवान रहे। अपने समय मे इन्होने मरहठा, सिंधिया जमेर के इस्तमुरारदारों से कई युद्ध किये। सवत् १८९६ में आपका शरीरान्त हुआ।

मेहता करणसिहजी के मोखमसिहजी, विजयसिंहजी तथा छतरसिहजी नामक ३ पुत्र हुए। मोखमसिहजी सवत् १८९६ से १९०८ तक किशनगढ़ स्टेट के दीवान रहे।

मरता विजयसिंहजी—आपका जन्म संवत् १८६३ की पौष वदी ५ को हुआ। बाल्यावस्था से ही ड़े होनहार प्रतीत होते थे। सवत् १८८७ में भीमनाथजी महाराज ने जोधपुर नरेश से इनका । कराया। महाराजा ने इन्हे होनहार जान अपने पास बुला लिया, तव से मेहता विजयसिंहजी (रहने लगे।

संवत् १८८८ मे वगडी ठाकुर जैतसिंहजी व शिवनाथसिहजी दरवार के विरोधी हो गये, उनको के लिए फौज के साथ विजयसिहजी भेजे गये, वहाँ इन्होंने अच्छी वहादुरी दिखाई, इसलिये लौटने रबार ने इन्हे जेतारण परगणे का आरसलाई गोव इनायत किया।

संवत् १९०३ मे मेहता विजयसिहजी ने कणवाई (डीडवाना) के डाकुओं को तथा धनकोली ःवाणा) के विद्रोही ठाकुर को वडी बहादुरी से दवाया इसी साल आपने खाटू (नागोर) पर चढाई ोधसिह की जगह भीमसिह को गद्दी पर बिठाया। कुछ ही दिनों बाद इसी साल शेखावाटी प्रांत बड़े जोरावर लुटेरे डूँगरसिह और जवाहरसिंह आगरे के किले से भाग गये और नसीराबाद छावनी जाना लूट कर मारवाड प्रात मे आगये जब ए० जी० जी० ने महाराजा को उन्हे पकड़ने के लिये पत्र तब महाराजा जोधपुर ने मेहता विजयसिहजी, सिंघवीकुशलराजजी और किलेदार अनाडसिंहजी को देकर डाकुओं के पकड़ने के लिये भेजा। थोड़े समय वाद ए० जी० जी० ने अपने नायब ई० एच० मोक- । और कप्तान हार्ड केसल को मारवाड़ की सेना के साथ भेजा इस फौज के साथ मारवाड़ के और भी

लडाइयाँ लड़नी पड़ी। सम्वत् १६८८ मे मगरे के मेवों (मीनों) ने बड़ा उत्पात मचाया था। से इन्होंने प्रजा को बड़ा तंग कर रखा था। महाराजा गजसिंहजी की आज्ञा से आपने इन पर चढ़ाई की और मेवों का (मीनों) दमन कर वहाँ शान्ति स्थापित की।

वि० सं० १७०० मे महेचा महेसदास बागी होकर राडधरे के गाँवों में बिगाड़ करता था पर महाराज जसवन्तसिंह ने नैणसी को राडधरे भेजा। उसने राडधरे को विजय कर गढ़ (शहरपनाह) और मकानों को गिरवा दिया तथा महेचा महेसदास को वहाँ से निकाल कर राज्य फौज के मुखिया रावल जगमल भारमलोत (भारमल के पुत्र) को दिया। सं० १७०२ में नरा (नारायण) सोजत की ओर के गाँवों को लूटता था, जिसमे महाराज ने मुहणोत नैणसी तथा छोटे भाई सुन्दरदास को उस पर भेजा। उन्होंने कूकडा, कोट, कराणा, माँकड आदि गाँवों [illegible] दिया। वि० सं० १७१४ में महाराज जसवन्तसिंह (प्रथम) ने मियाँ फरासत की जगह नैणसी [illegible] दीवान बनाया। महाराज जसवन्तसिंह और औरंगजेब के बीच अनबन होने के कारण वि० सं० [illegible] में जैसलमेर के रावल सबलसिंह ने फलोदी और पोकरण जिलों के १० गाँव लूट, जिस पर [illegible] अहमदाबाद जाते हुए, मार्ग से ही मुहणोत नैणसी को जैसलमेर पर चढाई करने की आज्ञा दी। [illegible] वह जोधपुर आया और वहाँ से सैन्य सहित चढ़कर उसने पोकरण मे डेरा किया। इस पर [illegible] पुत्र अमरसिंह, जो पोकरण जिले के गाँवों मे था, भागकर जैसलमेर से तीन कोस की दूरी के गाँव [illegible] में जा ठहरा। परन्तु जब रावल क़िला छोड़ कर लड़ने को न आए, तब नैणसी आसणी [illegible] लौट गये।

नैणसी की मृत्यु—संवत् १७२३ में महाराज जसवन्तसिंह औरंगाबाद में थे उस [illegible] नैणसी तथा उसका भाई सुन्दरदास दोनों उनके साथ थे। किसी कारण वशात् महाराज उनसे [illegible] होरहे थे, जिससे पौष सुदी ९ के दिन उन दोनों को क़ैद कर दिया। महाराज के अप्रसन्न [illegible] कारण ज्ञात नहीं हुआ। परन्तु जनश्रुति से पाया जाता है कि नैणसी ने अपने रिश्तेदारों [illegible] पर नियत कर दिया था और वे लोग अपने स्वार्थ के लिये प्रजा पर अत्याचार किया करते थे। [illegible] के जानने पर महाराज उससे अप्रसन्न हो रहे थे।

वि० सं० १७२५ में महाराज ने एक लाख रुपया दंड लगाकर इन दोनों [illegible] दिया; परन्तु इन्होंने एक पैसा तक देना स्वीकार न किया। इस विषय के नीचे लिखे हुए [illegible] में अब तक प्रसिद्ध है—

१ मगरा—पहाड़ी प्रदेश, सोजत और जैतारण परगने में अरवली पहाड़ की श्रेणी को कहते हैं।

जोरावरसिंह को मूदवे में महाराज के पास हाजिर किया । फिरखाट्ट पर चढ़ाई करके ...र को भगा दिया । इससे प्रसन्न हो दरबार ने इनको खास रुक्का दिया । सवत् १९२९ से ३१ ...गी का कार्य फिर मेहताजी के पास रहा ।

सवत् १९२९ की माघसुदी १५ को जब महाराजा तख्तसिंहजी स्वर्गवासी हुए और उनके स्थान ...ा यशवन्तसिंहजी गद्दी पर बैठे उन्होंने भी मेहताजी की दीवान पदवी कायम रक्खी और उन्हे ...पाद भूषण और ताजीम दी । संवत् १९३३ की माघ सुदी १५ को दरबार ने मेहताजी को ...ा अधिकार सौंपा जिसे आप आजन्म करते रहे । संवत् १९३४ की चैत वदी १४ को ... प्रसन्न होकर आपको रायबहादुर का सम्मान दिया ।

सवत् १९३६ मे परगने जोधपुर के बीरडावास और बिरामी नामक गाँव जो संवत् १९३२ में ...गये थे पुन इन्हें जागीरी में मिले । इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन विताते हुए आप ...४९ की भादवा वदी १२ को स्वर्गवासी हुए । आप अपनी आमदनी का दशाश धर्म कार्य्यों में ... । दरिद्र तथा बाल विधवाओं को गुप्त सहायता पहुँचाया करते थे । आप विशिष्टाद्वैत वैष्णव ...के अनुयायी थे । आपने फतेसागर के उत्तरी तट पर श्री रामानुज कोट का मन्दिर बनवाया ...कूप तथा कूपिका बनवाई इसके अलावा आपने फतहसागर को गहरा तथा मजबूत करवाकर उसका ...ागढ़ी के पहाड़ों से तथा गुलाब सागर में आनेवाले बरसाती पानी से करा दिया । १९४६ में ...कोट मे आपने दिव्य देश नामक मन्दिर बनवाया । इस मन्दिर की सुव्यवस्था के लिये स्थायी ...नो एक कमेटी द्वारा सचालित होता है ।

मेहता सरदारसिंहजी—आपका जन्म संवत् १८७५ की कातीवदी १३ को हुआ । संवत् ...म आपको दरबार ने जालोर की हाकिमी और मोतियों की कंठी तथा कडा भेंट किया । सवत् १९२० के ...सुदी ४ को आप नागोर के हाकिम बनाये गये । संवत् १९२८ में जब स्वयं महाराजा तथा पोलिटिकल ...एजण्ट नागौर पर चढे थे, उस समय उन्होंने उस परगने की हुकूमत आपको दी थी रायबहादुर मेहता ...हजी के स्वर्गवासी होजाने पर उनके स्थान पर सवत् १९४९ की भादवासुदी १३ को आप दीवान ...ाये इस प्रतिष्ठित पद पर आप जीवन भर काम करते रहे । आपका स्वर्गवास आषाढ़सुदी ४ सवत् ...५१ हुआ । जोधपुर स्टेट के ओसवाल समाज में सबसे अतिम दीवान आप ही रहे ।

सन १८७८ मे जब श्री सिंह सभा की स्थापना हुई उस समय जोधपुर के ओसवाल समाज की ...आपको उस सभा के प्रथम सभापति का सम्मान प्राप्त हुआ था आपने उसके लिए २४००) की सहायता ...की थी ।

भी उद्धृत किये है, जो डिंगल भाषा में है। उनमें से कुछ तो ३०० वर्ष से भी अधिक पु
उनका समझना तो कहीं-कहीं और भी कठिन है।

मुहणोत सुन्दरसीजी

आप जयमलजी के तीसरे पुत्र और नैणसीजी के भाई थे। सम्वत् १६६८ की ...
शनिवार को आपका जन्म हुआ। महाराजा यशवन्तसिंहजी ने स० १७११ में आपको "तन ...
(Private Secretary) का पद प्रदान किया। सम्वत् १७२३ तक आप इस पद पर रहे।

सम्वत् १७१३ में सिधलवाग पर महाराजा जसवन्तसिंहजी ने फौज भेजी। उ...
अपनी फौज सहित लडने को तैयार बैठा था। महाराजा की फौज में ६९१५ पैदल थे, जिनके ...
किये गये। पहले विभाग का सेनानायकत्व राठौड लखधीर विट्ठलदासोत को दिया गया। दूसरे ...
जिसमें ३३७२ सैनिक थे, सञ्चालन भार मुणोत सुन्दरसी पर रखा गया। सिंधलों और महाराजा ...
में लड़ाई हुई, जिसमें महाराजा की फौजों की विजय हुई। सवत् १७२० में महाराजा ...
की सेनाने बादशाह औरङ्गजेब की ओर से प्रातःस्मरणीय छत्रपति शिवाजी पर चढ़ाई की। ...
लड़ाई हुई। इस युद्ध में सेना के आगे रह कर मुहणोत सुन्दरसी बडी बहादुरी से लड़े थे। ...
में जखमी हुए। पर इसमें गढ़ पर से महाराजा की फौज पर इतने भयङ्कर गोले बरसे कि उ...
को पीछे हटना पड़ा।

सम्वत् १७१४ में पाचोंटा और कंवला के सरदारों ने महाराजा के खिलाफ विद्रोह किया, ...
सुन्दरसीजी ने दवाया।

सम्वत् १७१६ में महाराजा जसवन्तसिंहजी गुजरात के सूबे पर थे। वहाँ से उन्होंने ...
कुमार श्री पृथ्वीसिंहजी को बादशाह के हुजुर में भेजे। उनके साथ सुन्दरसीजी और राठौड़ ...
गोपालदासोत को भेजे।

महाराजा जसवन्तसिंहजी की कई पासवानें औराङ्गाबाद थीं। उन्हें लेने के लिये महाराजा ...
पूने के मुकाम से सम्वत् १७२० की अषाढ़ वदी ५ को सुदरसीजी को भेजा और उनके साथ ३११ ...
दिये। मार्ग में शिवाजी के ५०० सवार इनके साथवाली बैलों की जोड़ियाँ पकड़ ले गये। मुहणोत ...
उनका पीछा किया। लड़ाई हुई और सुंदरसीजी ने बैलों की जोड़ियाँ छुड़ाली।

सम्वत् १७२३ की पौष सुदी ९ को महाराजा यशवन्तसिंहजी ने किसी कारणवश नाराज ...
सुदरसीजी से "तन दीवानगी" का पद लेलिया। सम्वत् १७२७ में आप अपने भाई नैणसीजी ...
पेट में कटारी खाकर वीरगति को प्राप्त हुए, जिसका उल्लेख नैणसीजी के वृतान्त में दिया गया है।

जब महाराणा जवानसिंहजी गद्दी पर विराजे तो आप भी मेहताजी पर बहुत प्रसन्न रहे। मव आप जहाजपुर मे हाकिम बना कर भेजे गये। इसके १½ साल पश्चात् आप वापस उदयपुर लिये गए एवम् न्याय के महकमे का काम आपके सिपुर्द किया गया। इसके बाद आप डोली के के) काम पर नियुक्त हुए। इसी समय आपको सिरोडी नामक गाव जागीर मे बक्षा गया। इसके आप वापस महकमा न्याय मे नियुक्त हुए। आपको दरबार मे बैठक और जीकारा आदि बक्षे। आपका स्वर्गवास सवत् १९०४ मे हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सिंहजी, दौलतसिंहजी और मोतीसिंहजी थे। इनमे से मोतीसिंहजी मेहता श्यामसिंहजी के पुत्र जी के नाम पर दत्तक चले गये।

मेहता रघुनाथसिंहजी पर महाराणा स्वरूपसिंहजी की बडी कृपा रही। आपकी सेवाओं से प्रसन्न महाराणा साहिब ने आपको गाव प्रदान किया। आप जहाजपुर के पांच परगना-मगरा, खेरवाड़ा जलों मे हाकिम रहे। आपने महाराणा शंभुसिंहजी के समय मे अहलियान दरबार (मिनिस्टरशिप) किया। संवत् १९२५ के चैत्र मास में आपने महाराणा साहब की पधरावनी की। इस अव- महाराणा साहब ने प्रसन्न होकर आपको पैरों मे पहनने के लिए सोने की कड़ा जोड़ी प्रदान कर त किया। दरबार ने आपके पुत्र माधोसिंहजी को कंठी तथा आपके छोटे भाई दौलतसिंहजी और हजी तथा भतीजे अर्जुनसिंहजी को कठी और पौंचे बक्षकर सम्मानित किया। मेहता रघुनाथसिंहजी ई जिलों में रहकर सरहद के झगडों का निपटारा किया, जिलों की तहसील की आपने वृद्धि की और दरबार को प्रसन्न रखा। महाराणा साहब ने भी प्रसन्न होकर समय २ पर कई पट्टे, परवाने, रुक्के, जीकारा, आदि बक्ष कर आपका सम्मान बढ़ाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९२८ में । आपके नाम पर बावनी की गई थी उसमे महाराणा साहब ने २५००) प्रदान किये थे।

मेहता माधोसिंहजी भी अपने पिताजी की ही भांति मगरा, खेरवाड़ा, कुम्भलगढ़, खमनोर, आदि स्थानों पर हाकिम रहे। सवत् १९३१ मे आप फौजबक्षी नियुक्त हुए। आपके कामों से होकर दोनों ही महाराणाओं ने आपको जीकारा, बैठक, मासा, तथा पैरों में सोना बक्षा। इसी समय पालखेड़ा नामक ग्राम जागीर स्वरूप मिला। जिस प्रकार उदयपुर के महाराणा साहब की र बहुत कृपा रही, उसी प्रकार किशनगढ़ नरेश श्री पृथ्वीसिंहजी और शार्दूलसिंहजी की भी आप पर पा रही। आप लोग भी आप की हवेली पर पधारे थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९४६ में हो गया। भाई पुत्र न होने से किशनगढ़ से मेहता पृथ्वीसिंहजी के पौत्र मेहता बलवन्तसिंहजी को आपने लिया।

नणसीजी और काका सुन्दरदासजी की मृत्यु घटना मे श्री महाराजा ने इन्हें तथा इनके भ्राता सम-
समरसीजी, और सुन्दरदासजी के पुत्र तेजमालजी, मोहनदासजी को छोड़ दिए थे, परन्तु उन
महाराजा के पास इनके शत्रुओं का जोर बहुत होने से इनको यही आशंका बनी रही कि कहीं फिर
लोगों को भय का सामना करना न पडे। इसी से करमसीजी नागौर के राजा रायसिंहजी* के पास
चले गए। इनको इसी संवत् में राजाजी ने 'दीवानगी' और जागीर' इनायत की।

संवत् १७३२ के अषाढ़ वदी १२ को शोलापुर (दक्षिण) में राव रायसिंहजी केवल नाम
बीमार रह कर देवलोक हो गए। सरदार मुत्सुद्दी आदि ने जो इनके साथ थे, वहाँ के वैद्य से उनकी
अकस्मात मृत्यु का कारण पूछा, तो उसने, अपनी साधारण भाषा मे कहा कि "कर्मानो दोष छे" अर्थात्
की गति ऐसी ही थी। परन्तु उन सरदार आदि ने यह समझ लिया कि इस कर्मा अर्थात् क
(मोहनोत) ने कुछ ऐसा षड्यन्त्र किया कि जिसमे इनकी मृत्यु हुई है। उस समय सिंहवी सुन्दरदास
दीवान थे, और उनको करमसीजी का नागोर में (राजाजी के समीप) रहना बहुत अखरता था, इन्होंने
भी कर्मसीजी के खिलाफ बहुत जहर उगला। समय अनुकूल देख कर करमसीजी को तो वहीं (दक्षिण
में) भीत में चुनवा कर मरवा दिये और इनके परिवार वालों को भी मरवा देने के लिए नागौर
कुँवर इन्द्रसिंहजी से विनती की। इस पर नागोर में नीचे लिखे इनके कुटुम्बी मरवाये गये।

(२) सुन्दरदासजी के पुत्र मोहनदासजी और तेजमालजी।

(१) करमसीजी के ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसिंहजी।

(१) मोहनदासजी के साले हरिदासजी।

(३) मोहनदासजी के पुत्र गोकुलदासजी, जो केवल २४ वर्ष की वय के थे, और दो पुत्र थे।

(१) कल्ला का पुत्र नारायणदास, जो करमसीजी के साथ में था, वहीं मारा गया।

८

इस प्रकार निर्दोष हत्याएँ कर राज्य को कलंकित किया गया। किन्तु ईश्वर की महिमा
अपरम्पार है। इस कहावत के अनुसार कि "जिनको रक्खे साँईया, मार सके नहि कोय। उस ईश्वर
को इस कुटुम्ब की जड फिर भी हरी रखना स्वीकार थी। करमसीजी के द्वितीय पुत्र संग्रामसिंहजी और
नैणसीजी के द्वितीय पुत्र समरसीजी के द्वितीय पुत्र सामन्तसिंहजी को 'फूला' नामक धाय और एक
'डावड़ी' (नौकरानी) लेकर नागोर से छिपे तौर से निकल कर कृष्णगढ़ चली आई जहाँ कि सुनार

* नागोर का राज्य उस समय जोधपुर राज्य से स्वतंत्र था।

न साल से आप दरबार की ओर से उदयपुर बुलवाये गये। वर्तमान समय मे आप यहाँ ओवर पद पर काम कर रहे हैं।

मेहता सुकनराजजी मुहणोत, जोधपुर

मुहणोत हरीसिंहजी के पुत्र दीपचन्दजी संवत् १८८८ मे जोधपुर मे हाकिम थे। दीपचन्दजी के ी, धनराजजी, शिवराजजी और उदयराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमे से मुहणोत धनराजजी , जालोर, साचोर तथा भीनमाल के हाकिम रहे। संवत् १९०२ मे जोधपुर दरबार युवराज श्री जसवन्तसिंहजी के अध्यापक बनाकर अहमदनगर भेजा। संवत् १९१६ मे आप कोतवाल और फिर बाईसाहिबा के इजाफे के गाँवों के प्रबन्धक बनाये गये। ये महाराजा सिंहजी की महाराणी राणावतजी के कामदार थे। इनके विजयराजजी, रूपराजजी तथा जी नामक ३ पुत्र हुए।

मुहणोत रूपराजजी जयपुर के महाराजा सवाई रामसिंहजी के यहाँ संवत् १९३२ से ४१ तक था ऐन कोटार के दारोगा रहे। पश्चात् जागीरदारों के इंतजामी सीगे मे जोधपुर मे मुलाजिम हुए ाना कुड़की तथा पाचोता के पट्टों का काम करते रहे। संवत् १९५४ मे इनका शरीरान्त हुआ। टे भाई फोजराजी बाई साहिबा के इजाफे के गाँवों का काम करते रहे।

मुहणोत रूपराजजी के सोहनराजजी तथा सुकनराजजी नामक दो पुत्र हुए। मुणोत सुकनराजजी संवत् १९४१ की पोष वदी ८ को हुआ। आप बडे योग्य और मिलनसार सज्जन हैं। ओसवाल के हितसम्बन्धी कार्यों में आप बड़ा भाग लेते हैं। आप श्री सिंह सभा की मैनेजिंग कमेटी के था फूलचन्द कन्यापाठशाला के सेक्रेटरी हैं। आप राजपूताना इन्शोरेन्स कंपनी के डायरेक्टर हैं समाज मे अच्छी प्रतिष्ठा है। सन् १९०२ से आप पी० डब्ल्यु० डी० और ऑडिट मे सर्विस करते रहे। इधर १३ सालों से आप जोधपुर स्टेट इलेक्ट्रिक कारखाने में स्टोर कीपर पकी स्टेट मे ३१ सालों की सर्विस है। आपके भ्राता सोनराजजी कस्टम इन्स्पेक्टर थे।

इसी प्रकार इस परिवार मे विजयराजजी के पुत्र कुशलराजजी ने ३५ सालों तक पुलिस विभाग मे की। इनके पुत्र विशनराजजी जनानी ड्योढ़ी पर नौकर हैं, मुणोत फोजराजजी के पुत्र गुमानराजजी न्स्पेक्टर हैं। इसी प्रकार मुणोत जीवराजजी के पश्चात क्रमशः पृथ्वीराजजी और चन्द्रराजजी हुए। त्र चन्द्रराजजी के पुत्र हसराजजी जालोर मे वकालत करते हैं। मुणोत उदयराजजी के प्रपौत्र जी पी० डब्ल्यू० डी० वाटर वर्कस मे हैं।

औलाद नहीं हुई और अणदरामजी की कुछ पीढ़ियों तक वंश चल कर कुछ समय बाद उसका
हो गया।

रावजी सुरतरामजी

आप भगवतसिंहजी के पुत्र थे। मुहणोत खानदान में आप भी बड़े प्रतापी और बहादुर
महाराजा बखतसिंहजी के राज्य काल में सम्वत् १८०८ में आप फौज बख्शी के उच्च पद
पर नियुक्त किये गये। आपने यह कार्य्य बड़ी ही उत्तमता के साथ किया। महाराजा ने आपका सेवा
प्रसन्न होकर आपको ३००० रेख के लुनावास और पालु नामक दो गाँव जागीर में दिये। आपने युद्ध
में प्रधान सेनापति की हैसियत से सेना संचालन किया था। दरबार आपकी बहादुरी और कार्य्य कुशलता
बहुत प्रसन्न हुए और आपको दीवानगी तथा १५०००) प्रतिसाल की रेख के गाँव और पालकी तथा
शिरोपाव देकर आपकी प्रतिष्ठा की।

सम्वत् १८२२ में दक्षिणी खानू मारवाड़ पर चढ़ आया। महाराजा के हुक्म से सुरतराम
इसके मुकाबले के लिये गये। युद्ध हुआ और इसमें सुरतराम को सफलता मिली। उन्होंने शत्रुओं
सामग्री छीनली। खानू तो अजमेर की ओर तथा उसके सहायक चपावत सरदार सांभर भाग
इस युद्ध को जीत कर वापस आते समय आपने पीह नामक ग्राम में मुकाम किया। वहाँ से पर्बतसर
के बसी नामक गाँव में जाकर घेरा डारा। वहाँ के सरदार मोहनसिंहजी ने सामना किया।
गये। सुरतरामजी मोहनसिंह से दण्ड वसूल कर जोधपुर लौट आये, जहाँ महाराजा ने आपकी
की। वे आपके साहस पूर्ण कार्य्यों से बड़े प्रसन्न हुए।

इसी अर्से में उदयपुर के महाराणा राजसिंहजी का देहान्त हो गया और उनके स्थान
राणा अरसीजी राज्य सिंहासन पर बैठे। ये बड़ी निर्बल प्रकृति के थे। सरदारों ने इनके खिलाफ
का झण्डा उठाया। महाराणाजी घबराये और उन्होंने जोधपुर के महाराजा बिजयसिंहजी से सहायता
और इसके बदले में गोडवाड़ का परगना देने का वचन दिया। इस पर महाराजा विजयसिंहजी
महाराणाजी की सहायता के लिये सेना भेजी। राणाजी की मनोकामना सिद्ध हुई और उन्होंने
का परगना महाराजा विजयसिंहजी को लिख दिया। महाराजा ने सेना भेजकर गोडवाड़ पर अधिकार
लिया। इस गोडवाड़ के देसूरी नामक कस्बे में जोधपुर दरबार पधारे और महाराणा अरसीजी
महाराजा से मिले। यहाँ यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि गोडवाड़ के मामले में
सब से प्रधान हाथ मुहणोत सुरतरामजी का था। इस समय महाराणा अरसीजी ने महाराजा विजयसिं

सेठ हमीरमलजी—मुहणोत रामदासजी अजमेर मे और लछमणदासजी कुचामण में निवास करने रामदासजी के पुत्र हमीरमलजी हुए। इनकी सिंधिया दरबार मे बैठक थी। संवत् १९११ मे दरबार ने इन्हें पुन सेठ की पदवी और पालकी, सिरोपाव, दरबार मे बैठने का सम्मान तथा व्यापार के लिये महमूल की माफी का आर्डर और उनके घरू व्यवहार के माल पर पूरी चुङ्गी माफ रहने का हुकुम दिया। जब सेठ हमीरमलजी अपने पंजाब के खजानों की देख-भाल करने गये, तब फायनेंस कमिश्नर और कमिश्नर जालंधर डिविजन ने तहसीलदारों के नामपर सेठ हमीरमलजी की पेशवाई के लिए पर हाजिर रहने के हुक्म जारी किये थे। सेठ हमीरमलजी के धीरजमलजी, चंदनमलजी और चांद- नामक तीन पुत्र हुए, इन तीनों भ्राताओं का कारबार संवत् १९३४–३५ मे अलग-अलग होगया। ...लजी के कनकमलजी तथा धनरूपमलजी नामक दो पुत्र हुए, इनमें से धनरूपमलजी, चंदनमलजी के ...र दत्तक चले गये। इस समय कनकमलजी के पुत्र सागर मे तथा धनरूपमलजी लश्कर में व्यापार ...है।

राय साहिब सेठ चांदमलजी—सेठ चांदमलजी का जन्म संवत् १९०५ में हुआ। संवत् १९२१ में ...र ने पुन इनको "सेठ" की पदवी दी। इनके समय में कोहाट, कुर्रम, मरदान, पेशावर, जालंधर, ...रपुर, भागमू, सागर और मुरार, सांभर, पचपदरा, डीडवाना के बृटिश खजाने इनकी फ़र्म के अधिकार में थे ...म्बई, जबलपुर, नरसिंहपुर, मिरजापुर, धर्मशाला, पेशावर, गवालियर, जोधपुर, सागर, अजमेर, भेलसा, ...झांसी, मेमिन और आजमगढ़ में दुकानें और यू० पी०, सी० पी० में जमींदारी थी।

रायसाहब सेठ चांदमलजी लोकप्रिय पुरुष थे। संवत् १९२५ तथा ३४ के राजपूताने के घोर ...रों के समय आपने गरीब प्रजा की बहुत सहायता की थी। आप जबान के बड़े पक्के जीवदया और ...गार के कामों मे उदारतापूर्वक सम्पत्ति खर्च करनेवाले व्यक्ति थे। आप स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के ...ता और जनरल सेक्रेटरी थे तथा उसके मोरवी के प्रथम अधिवेशन का प्रमुख स्थान आपने सुशोभित किया। इसी तरह उसके अजमेर वाले चौथे अधिवेशन के समय में भी आपने हजारों रुपये व्यय किये थे। १८६८ में आप म्युनिसिपल कमिश्नर और १८७८ में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट दर्जा दोयम बनाये गये। सन् ...७ के देहली दरबार म आप निमंत्रित किये गये, उस समय लार्ड लिटन ने आपको राय साहिब का ...ब, स्वर्णपदक तथा सार्टिफिकेट दिया था। सन् १८७८–७९ मे जब काबुल का युद्ध आरम्भ हुआ आपने गवर्नमेंट को १ करोड़ रुपये खजाने से दिये थे इससे प्रसन्न होकर पंजाब गवर्नर ने सेठजी के एजट ...लअत और दुपट्टा इनायत किया था। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताकर १९७१ में आपका देहावसान ...। आपके देहावसान के समय एक बड़ी रकम धरमादा खाते निकाली गई थी। आपके घनश्याम-

का रूपनगर नामक गाव इनायत कर दिया। इस नगर पर अधिकार करने के लिये जोधपुर से सींघी अक्षयदासजी, भण्डारी गंगारामजी और मुहणोत ज्ञानमलजी को सेना द्वारा [illegible] मास तक बराबर युद्ध होता रहा। अन्त में रूपनगर पर महाराजा जोधपुर का अधिकार [illegible] किशनगढ़ के महाराजा प्रतापसिंहजी ने हार मानकर तीन लाख रुपया देना स्वीकार [illegible] जोधपुर आकर वहां के दरबार से मुजरा किया। सम्वत् १८४७ में माधवजी सिन्धिया [illegible] चढ़ आया। इसके मुकाबिले के लिये मुहणोत ज्ञानमलजी, सिंघवी भीमराजजी, कोचरमुहता [illegible] लोढ़ा साहसमलजी और भण्डारी गंगारामजी आदि भेजे गये, मेड़ते मुकाम पर सम्वत १८४७ [illegible] वदी १ को भारी लड़ाई हुई। जोधपुरी सेना ने इस युद्ध में इतनी वीरता का प्रदर्शन [illegible] जिसकी प्रशंसा सिन्धिया के सेनापतियों ने अपने पत्रों में और अंग्रेजी और मराठी लेखकों ने [illegible] में की है। दैव राठौड़ों के अनुकूल नहीं था। इससे उनके हाथों से सैनिक दृष्टि से कई भूलें [illegible] इसके अतिरिक्त मराठी फौजें सुप्रख्यात् फ्रेञ्च सेनापति डी० बोइने के कुशल सञ्चालन में थीं। [illegible] अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित थीं। इससे उनकी विजय हुई। पर इस समय जोधपुरी फौजों [illegible] अतुलनीय पराक्रम का परिचय दिया, उसे देख कर महादजी का फ्रेञ्च सेनापति डी० बोयने [illegible] चकित होगया। उसने देखा कि जोधपुरी सेना के अधिकाश मनुष्य धराशायी हो गये हैं और [illegible] मुट्ठी भर वीर केसरिया पहन कर मराठी सेना पर टूट पडते हैं और अपनी जानकी कुछ भी पर्वाह न [illegible] में हाहाकार मचा देते है। मराठी और अंग्रेजी के लेखकों ने जोधपुरी सेना की अपूर्व [illegible] प्रशंसा की है। मराठी सेना के एक अफसर ने अपने एक खानगी पत्र में लिखा था "यह [illegible] मेरी लेखनी में शक्ति नहीं है कि केसरिया पोशाक वालों ने अपनी जान हथेली में रख कर [illegible] दुरी दिखलाई। मैंने देखा कि उस समय लैन टूट चुकी थी। पन्द्रह या बीस मनुष्य [illegible] पर टूट पड़े थे। उस असंख्य मराठी सेना के सामने इन्होंने जान झोंक कर युद्ध किया और [illegible] वीरता का परिचय दिया कि इतिहास में जिसके उदाहरण मिलना मुश्किल है। आखिर [illegible] उड़ा दिये गये। इस युद्ध में सूर्य्यमलजी आदि कुछ ओसवाल सेनानायक भी मारे गये। [illegible] मराठों की विजय हुई। जोधपुर नरेश ने क्षति पूर्ति के लिये साठ लाख रुपया देने का वादा [illegible] पिण्ड छुड़ाया। इन रुपयों में से कुछ तो नकद, कुछ परगने और कुछ मनुष्यों को ओल में दि[illegible] ओल में दिये जाने वाले लोगों में मुहणोत ज्ञानमलजी भी थे।

सम्वत् १८६० में जब महाराजा भीमसिंहजी का देहान्त हुआ, तब आपने महाराजा [illegible] के जोधपुर आने तक, किले का बड़ी योग्यता से प्रबन्ध किया। महाराजा मानसिंह को [illegible]

सेठ नारतनमलजी रीया वाले, अजमेर

मेहता सोहनसिंहजी मुणोत, किशनगढ़.

[illegible]

मेहता मोहनसिंहजी मुणोत उदयपुर.

कुम्भलगढ़ के हाकिम बनाये गये। गणराजजी के भीमराजजी, वृद्धराजजी और [illegible] हुए। श्री वृद्धराजजी बडे योग्य और देश भक्त सज्जन है। आपने बडौदे के कला भवन में [illegible] सीखा और वहाँ की परीक्षा पास की। इसके बाद आपने मारवाड की वकालत परीक्षा [illegible] की। अब आप चीफकोर्ट मे वकालत करते है। आपको राज्य मे अपने कुटुम्ब के [illegible] मान सम्मान प्राप्त है

धूहडमलजी के गम्भीरमलजी और गम्भीरमलजी के सरदारमलजी नामक पुत्र हुए। मलजी को इतिहास का प्रेम है। आपके पास जोधपुर राज्य के इतिहास की अच्छी सामग्री है।

मुहणोत परिवार, किशनगढ

हम ऊपर जोधपुर के मुणोंत परिवार मे इस वंश के पूर्व पुरुषों का इतिहास लिख [illegible] मोणजी की १८ वीं पुस्त में मेहता अर्जुनजी हुए। इनके पुत्र रोहीदासजी किशनगढ़ चले गये। इन[illegible] के लोग आज भी किशनगढ़ में निवास करते है। मेहता रोहीदासजी के रायचन्द्रजी नामक पुत्र [illegible]

रायचन्द्रजी—जोधपुर के राजा शूरसिंहजी के छोटे भाई का नाम कृष्णसिंहजी था। राज्य से दूदोद आदि १२ गाँवों की जागीर का पट्टा मिला था। सवत् १६५४ में आपको [illegible] अली (जो अजमेर का तत्कालीन सूबेदार था) के द्वारा बादशाह अकबर के दरबार में पहुँच हुई। [illegible] आपके व्यवहारों से प्रसन्न होकर संवत् १६५५ में हिन्डोन आदि सात परगने प्रदान किये। इस[illegible] साल बाद आपने अपने नाम से एक नया नगर बसाकर उसका नाम कृष्णगढ़ रखा। [illegible] एक स्टेट है।

जब महाराजा कृष्णसिंहजी ने जोधपुर से प्रयाण किया था उस समय रायचन्द्रजी [illegible] भाई शंकरमणिजी दोनों साथ थे। कृष्णगढ़ बसाने तक आप दोनों भाइयों ने महाराज की [illegible] सेवाएँ कीं। जिनसे प्रसन्न होकर महाराज ने रायचन्द्रजी को अपना मुख्य मन्त्री नियुक्त किया। आप दोनों भाईयों के रहने के लिये बडी २ दो हवेलियाँ बनवादी। आज वे बडी पोल और [illegible] नाम से प्रसिद्ध है।

रायचन्द्रजी ने सवत् १७०२ में एक जैन मन्दिर श्री चिन्तामणी पारर्वनाथजी [illegible] प्रतिष्ठा करवाई। यह मदिर अभी भी किशनगढ़ में मौजूद है।

महाराजा कृष्णसिंहजी के बाद उनके उत्तराधिकारी महाराजा मानसिंहजी हुए। [illegible]

सेठ लछमणदासजी मुहणोत रीयावालों का परिवार, कुचामण

इस परिवार का मूल निवास स्थान रीयां है। रीयाँ के नगरसेठ जीवनदासजी अपने समय के ा धनिक थे। आपका विस्तृत परिचय ऊपर दिया जा चुका है। सेठ जीवनदासजी के गोवर्द्धन-ुनाथदासजी तथा हरजीमलजी नामक तीन पुत्र हुए। संवत् १८६९ में सेठ हरजीमलजी के न लछमणदासजी रीयाँ से देवगढ़, किशनगढ आदि स्थानों में होते हुए कुचामण आये और ा अपना निवास बनाया।

मुहणोत रघुनाथदासजी के पौत्र रामदासजी तथा लछमणदासजी पर जोधपुर दरबार महाराजा ा बड़ी कृपा रखते थे। राज्य के साथ इनका लेनदेन उस समय बड़े परिमाण में होता था ारी से खुश होकर दरबार ने इन्हें कई खास रुक्के भी इनायत किये थे। जोधपुर दरबार ने सिरोपाव, कड़ाकंठी, मोती, दुपट्टा, कीनखाव वगैरा समय-समय पर प्रदान कर इस परिवार की थीं। साथ ही इन आसामियों के लिये मारवाड में बहुत सी लागें भी बंद कर दी थीं।

इसी प्रकार रामदासजी तथा लछमणदासजी को भी उदयपुर दरबार से व्यापार करने के लिये आधे ी माफी के पत्र मिले थे। इस परिवार ने मेवाड़ प्रान्त में भी अपनी दुकानें स्थापित की थी। ७७ की कार्ती वदी १३ को रामदासजी तथा लछमणदासजी का कारबार अलग-अलग हुआ। र प्रतिष्ठामय जीवन बिताते हुए सेठ लछमनदासजी का संवत् १८९९ की जेठ सुदी ४ को स्वर्गवास सेठ लछमणदासजी के पुत्र फतेमलजी संवत् १९०९ की आसोज सुदी १० को गुजरे।

सेठ फतेमलजी के नाम पर नीमाली से सेठ धनरूपमलजी मुहणोत दत्तक लाये गये, इनके समय ा, जयपुर तथा सांभर में दुकानें रहीं। संवत् १९५३ की माघ सुदी १० को इनका शरीरान्त इनके सूरजमलजी, पन्नालालजी तथा तेजमलजी नामक तीन पुत्र हुए, इनमें सेठ सूरजमलजी संवत् में गुजरे। सेठ पन्नालालजी ने ५ साल पहिले हिंगनघाट में तथा २ साल पहिले बम्बई में ा। सेठ सूरजमलजी के पुत्र कल्याणमलजी, पन्नालालजी के पुत्र उम्मेदमलजी तथा तेजमलजी ्‍रतापमलजी, सरदारमलजी और इन्द्रमल हैं। इस कुटुम्ब के लिये कुचामण में कई ाँव हैं तथा यह परिवार यहाँ "सेठ" के नाम से व्यवहृत होता है। आपके यहाँ तथा जोहरात का व्यवसाय होता है।

मुहणोत परिवार "हटीसिहोत" कहलाता है मुणोत हटीसिहजी के जोगीदासजी शिवदासजी तथा शम्भू जी नामक ३ पुत्र हुए। जोगीदासजी ने कृष्णगढ़ महाराजा विरदसिहजी तथा प्रतापसिहजी के समय में राज्य की दीवानगी काम किया। तथा किशनगढ़ दरबार प्रतापसिंहजी का जोधपुर महाराजा विजयसिंह के साथ मित्रता कराने में आपने एव आपके चचेरे भाई हमीरसिंहजी ने बहुत श्रम किया, इस अर्थ में य कार्य्य होने से जोधपुर दरबार ने सवत् १८४९ की द्वितीय वैसाख वदी १० को ताजीम मोती, कड़ा सोने की जनेऊ प्रदान की। इसी तरह किशनगढ़ दरबार ने भी ताजीम जीकारा और दरबार में सिरे हाथी सिरोपाव और जागीरी प्रदान की। हिन्दूसिंहजी ने महाराजा वहादुरसिंहजी के राज्य काल में ... दासजी के साथ दीवानगी की।

शिवदासजी – आप भी १८८७ में महाराजा कल्याणसिंहजी के समय दीवान रहे। ... दरबार ने आपको जागीरी के गाँव दिये जो अब तक आपके परिवार के तावे में हैं।

मेहता शंभूदासजी के महेशदासजी तथा शिवदासजी के गगादासजी और भवानीदासजी नामक पुत्र हुए। महेशदासजी के पुत्र छगनसिंहजी कृष्णगढ़ महाराजा मदनसिंहजी की भगिनी और ... नरेश की महाराणी के कामदार थे। आपको अलवर तथा किशनगढ दरबारों ने सोना तथा ताजीम ... यत की थी। आपके पुत्र नारायणदासजी बी० ए० आगरे में डिप्टीकलेक्टरी का अध्ययन कर रहे हैं। भापकी वय २७ साल की है। मेहत गंगादासजी, महाराजा मोहकमसिंहजी के समय में राज्य के ... कोषाध्यक्ष रहे। इनके पुत्र गोविंदसिंहजी कई स्थानों के हाकिम रहे और इससमय गोविंदसिंहजी के दत्तक पुत्र सवाईसिहजी किशनगढ़ स्टेट में हाकिम है। भवानीदासजी के पश्चात् क्रमश भगवानदासजी, रामसिंहजी तथा सोहनसिंहजी हुए। इनके पुत्र सवाईसिहजी, मेहता गोविंदसिंह, के नाम पर दत्तक गये हैं।

मेहता पृथ्वीसिंहजी किशनगढ़ स्टेट में हाकिम रहे इनके भीमसिंहजी हुए। एव भीमसिंहजी के पुत्र सोभागसिंहजी, अजीतसिंहजी, जसवन्तसिंहजी और अनोपसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए। ... सोभागसिंहजी के पुत्र जेतसिंहजी और सालमसिंहजी तथा पौत्र मदनसिहजी और फूलसिंहजी हुए मदनसिंहजी उदयपुर तथा किशगढ़ स्टेट में हाकिमी करते रहे। अभी मदनसिंहजी के पुत्र बुधसिंहजी और फूलसिंहजी के पुत्र रणजीतसिंहजी मौजूद हैं।

मेहता सूर्यसिंहजी के छोटे भाई बाघसिंहजी महाराजा बहादुरसिंहजी के समय फौजबक्षी रहे। इनके प्रतापसिंहजी व धीरजमलजी पुत्र हुए। मेहता प्रतापसिंहजी, महाराजा श्री प्रतापसिंहजी के कृपापात्र थे। धीरजमलजी सरवाड़ के हाकिम रहे। मेहता धीरजसिंहजी के बाद क्रमशः गावर्द्धनदास ...

रते है। इन्होंने सन् १९२७ मे एक साल तक महकमा बन्दोबस्त मे माफीयात आफीसर का
ा था। आपके छोटे भाई पढ़ते हैं।

सेठ मिश्रीमलजी मुहणोत, ब्यावर

यह परिवार स० १९०१ तक तीन पीढ़ियों से जोधपुर मे उदयचन्द बरदीचन्द के नाम से
रता रहा। वहाँ से इसी साल उम्मेदराजजी मेघराजजी दोनों भ्राता पाली चले गये, तथा वहाँ
रने लगे। इनके पुत्र कुन्दनमलजी तथा जसवन्तरायजी हुए। कुन्दनमलजी का जन्म संवत्
मे हुआ। आप १९२८ मे पाली से ब्यावर चले आये। पाली मे आपका कपडे का व्यापार था
ी भी वहाँ इस परिवार के मकान है। कुन्दनमलजी का शरीरावसान् १९५२ की अषाढ़ सुदी १२
जसवन्तरायजी का वेशाख वदी १४ सवत् १९८० मे हुआ।

मुहणोत कुन्दनमलजी के जवानमलजी मिश्रीमलजी तथा केसरीमलजी नामक ३ पुत्र हुए, इनमे
जी, जसवन्तराजजी के नाम पर दत्तक गये। मुहणोत मिश्रीमलजी का जन्म सवत् १९३६ की
सुदी ३ को हुआ। आपने बहुत सट्टा किया, १९५२ में कपडे की दुकान की, पर सवत् १९७६ तक
विशेष लाभ न हुआ। १९७६ मे पन्नालालजी काकरिया की भागीदारी मे १ लाख रुपया सट्टे में
। इस समय भी आपके यहाँ प्रधानतया सट्टे का ही काम होता है।

मुहणोत मिश्रीमलजी की धार्मिक व परोपकारी कामों की ओर अच्छी निगाह है। आप ब्यावर के
समाज मे अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। आपके बडे पुत्र गुलाबचन्दजी २१ साल के है। शेष
जी, लखमाचन्द तथा केवलचन्द हैं।

सेठ छोगमल हजारीमल मुहणोत इटारसी

यह परिवार नागोर (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहाँ से सेठ छोगमलजी मुहणोत संवत्
मे इटारसी आये, तथा अनाज किराना और सराफी कारबार चालू किया। सवत् १९५५ मे आपका
न हुआ। आपके पुत्र सेठ हजारीमलजी मुहणोत का जन्म सवत् १९१७ मे हुआ। सेठ हजारीमलजी
ने इस दुकान के व्यापार मे तथा खानदान की इज्जत आबरू मे तरक्की की। आपके नाम पर सेठ

कई ठाकुर और सरदार थे। इस हमले में मेहता विजयसिंहजी ने कप्तान हार्डकेसल के साथ ... डाकू को पकड़ने में सफलता प्राप्त की। इसकी खुशी में दरबार ने उनको एक ... रुक्का दिया। कप्तान ने भी एक पत्र द्वारा आपके चतुराई, दृढ़ता और साहस की प्रशंसा की।

संवत् १९०४ में उक्त डाकुओं के हिमायती सीकर रावराजा के पुत्रों को दबाने के लिये ... के लेफ्टिनेण्ट के साथ गये, उसमें भी उक्त एजंट ने इनके साहस की बहुत प्रशंसा की। संवत् १९०... दरबार ने प्रसन्न होकर इन्हें एक मोतियों की कंठी प्रदान की। इसी साल इनको दरबार ने ... वकील बनाया। इनके लिये जोधपुर का पोलिटिकिल एजंट लिखता है कि "ये एक ऐसे मनुष्य हैं जिन... निर्भय विश्वास किया जा सकता है इनके समान मारवाड़ी अफसरों में बहुत कम आदमी पाये जाते हैं।" उन्हीं दिनों इन्हें दरबार ने दीवानगी के काम पर कई सज्जनों के साथ में नियुक्त किया और एक ... मासिक वेतन कर दिया। इनकी स्वामिभक्ति, सत्यता, वीरता आदि से दरबार इतने प्रसन्न हुए कि ... १९०८ में इन्हें दीवानगी प्रदान की। संवत् १९१३ की पौषसुदी ११ को दरबार ने आपको २ गाँव प्रदान कि...

संवत् १९१४ में मेहताजी ने अन्य मुत्सुद्दियों के साथ आउवे पर चढ़ाई की। इनकी सहायता ... लिये बृटिश सेना भी आई थी। संवत् १९१६ में आसोप-आलणियावास, गूलर और ... के ... ठाकुरों पर चढ़ाई कर उन्हें दबाया। संवत् १९२० में जयपुर दरबार ने उन्हें हाथी सिरोपाव और ... का सिरोपाव दिया। संवत् १९२१ की माघसुदी ११ के दिन दरबार ने प्रसन्न होकर राजोद (... नामक गाँव जागीर में दिया।

मेहता विजयसिंहजी दरबार के ही कृपापात्र नहीं थे प्रत्युत पोलिटिकल एजंट और अन्य ... आफीसर भी समय २ पर कई सार्टिफिकेट देकर उनकी योग्यता को सरहते रहे हैं। सन् १८३५ ... को पोलिटिकल एजंट एफ० एफ० निक्सन लिखते हैं, कि "यह एक बुद्धिमान और आदर्श ... हैं, इन्हें मारवाड़ की पूरी जानकारी है, इत्यादि"।

१० सितम्बर १८७१ को भूतपूर्व ऑफिशिटिग पोलिटिकल एजंट जे० सी० ब्रुक लिखते हैं कि "मैं मेहता विजयसिंहजी को बहुत अरसे से जानता हूँ ... ये एक योग्य तथा कुशल ... हैं, ये उन थोड़े पुरुषों में से एक हैं जो राज्य के कार्य्य करने की योग्यता रखते हैं"।

संवत् १९२८ में द्वितीय महाराजकुमार जोरावरसिंहजी ने खाटू, आगूंता तथा ... ठाकुरों की सलाह से नागोर पर कब्जा कर लिया। इसके लिये युवराज को समझाने के लिये ... मेहताजी भेजे गये। मेहताजी ने नागोर के किले पर घेरा डाला, इसी अरसे में स्वयं दरबार और ... टिकल एजंट भी बहुत सी सेना लेकर पहुँच गये, और एजंट सहित कई मुसाहिबों ने कुमार ...

सेठ हनुतमल अमरचन्द मुहणोत रालेगाँव (बरार)

यह परिवार हरसोर (पीपावला—अजमेर के पास) नामक स्थान से लगभग १०० साल पूर्व
आया। सेठ हनुतमलजी मुहणोत ने हिंगनघाट आकर व्यवसाय शुरू किया, यहाँ से आपने
(हिंगनघाट से १२ कोस पर) नामक गाँव में कृषि का काम बढ़ाया और लगभग ३० साल पूर्व से
गाँव में ही निवास करने लग गये। आपने मुहणोत अमरचन्दजी को पीपाड़ से दत्तक लिया।
मरचन्दजी मुहणोत ने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आपका संवत् १९७७ में स्वर्गवास हुआ।
पुत्र रतनचन्दजी का जन्म संवत् १९४० में हुआ। सेठ रतनचन्दजी मुहणोत ने कारबार को और
बढ़ाया। आपके यहाँ मालगुजारी, कृषि और साहुकारी लेन-देन का व्यापार होता है। बरार
प्रधान स्थानीय ओसवाल सज्जनों में आपकी गणना है।

सेठ रतनचन्दजी मुहणोत स्थानकवासी आम्नाय पालते हैं। आपके कोई पुत्र नहीं है। आप
नेक जानकारी अच्छी है।

सेठ केसरचन्द गुलाबचन्द मुहणोत, अहमदनगर

यह कुटुम्ब बुजकुला (मेवाड़) का निवासी है। बापूलालजी मुहणोत मेवाड़ से व्यापार के
अहमदनगर जिले के अन्तर्गत नेवासा ग्राम में आये। इनके पुत्र केशरीचन्दजी का जन्म १९२२
गुलाबचन्दजी का १९३२ में हुआ। केशरीचन्दजी ने इस दूकान के धन्धे को ज्यादा बढ़ाया तथा
एक ब्रांच अहमदनगर में खोली। गुलाबचन्दजी का संवत् १९७५ में शरीरावसान हुआ।

सेठ केशरीचन्दजी के पुत्र मोतीलालजी का जन्म १९५० में, चन्दनमलजी का जन्म १९६० में
न्दजी का १९६४ में तथा चाँदमलजी का १९६७ में हुआ। इन बन्धुओं में से दो बड़े बन्धु
की दूकान का तथा छोटे भाई अहमदनगर की दूकान का काम देखते हैं। सेठ गुलाबचन्दजी के
माणिकचन्दजी का जन्म संवत् १९५८ में हुआ।

वर्तमान में इस दूकान पर नेवासा में खेती तथा साहुकारी और अहमदनगर में गल्ला,
और तेल का व्यापार होता है। मोतीलालजी के कनकमलजी, धनराजजी, पन्नालालजी, प्रेमराजजी
सूरजमलजी नामक पाँच पुत्र हैं, जिनमें धनराजजी, माणिकचन्दजी के नाम पर दत्तक गये हैं।
चन्दजी के पुत्र शांतिलालजी हैं।

मेहता कृष्णसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९३४ में हुआ, आप प्रतापगढ़ के मेहता ... जी के पुत्र हैं। संवत् १९४५ में रायबहादुर मेहता विजयसिंहजी ने आपको दत्तक लिया। ... में आपको दरबार से कान के मोती भेंट मिले। संवत् १९४७ में आपको कड़ा, दुपट्टा, मदील, खीनखाब प्राप्त हुआ। सन् १९२१ में आप होममेम्बर जोधपुर के परसनल असिस्टेंट ... उसके बाद आप स्टेट ट्रेझरी के आफिसर रहे। जब ट्रेझरी इम्पीरियल बैंक में रहने लगा तब से ... में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हुए। रा० ब० मेहता विजयसिंहजी को जो बिरामी और ... जागीरी में मिले थे उनका आप इस समय भी उपभोग करते हैं। जोधपुर के मुत्सुद्दी समाज में ... एक वजनदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप भी वैष्णव धर्मानुयायी हैं। आपके पुत्र गोविन्दसिंहजी तथा गोपालसिंहजी पढ़ते हैं।

मेहता लछमनसिंहजी मुहणोत का परिवार, उदयपुर

हम ऊपर जोधपुर और किशनगढ़ के मुहणोत परिवार का काफी परिचय दे चुके हैं। ... पढ़कर पाठकों को भली-भाँति विदित हो गया होगा कि इस परिवार वाले सज्जनों ने दोनों ही ... किस-किस प्रकार के कार्य्य सम्पन्न कर अपनी प्रतिष्ठा एवम् सम्मान को बढ़ाया और इतिहास में नाम अमर किया। अब हम इसी वंश की किशनगढ़ शाखा से निकले हुए मेहता सूर्य्यसिंहजी के ... उम्मेदसिंहजी और छोटे पुत्र श्यामसिंहजी के परिवार का परिचय देते हैं। आप ... चलकर उदयपुर में निवास करने लग गये थे।

मेहता उम्मेदसिंहजी महाराणा भीमसिंहजी के राज्यकाल में याने संवत् १८६१ में ... आये। यहाँ आकर आप प्रथम कस्टम के काम पर नियुक्त हुए। उस समय आपको ... वेतन मिलता था। इससे गुजारा न होने के कारण आप महाराणा की ओर से मरहट्टा शाही में ... कुछ समय पश्चात् किशनगढ़ के तत्कालीन महाराजा मेहता उम्मेदसिंहजी को वापस किशनगढ़ ... लेकिन थोड़े ही समय पश्चात् महाराणा साहब ने इन्हें खास रुक्का भेजकर वापस उदयपुर ... अतएव आप संवत् १८८० में वापस उदयपुर आये। इस समय महाराणा ने आपको तनख्वाह ... कुँए जागिर में प्रदान किये। इसी समय से महाराणा साहब ने आपके पुत्र रघुनाथसिंहजी को भी ... सेवा में बुलवा लिया।

पच्चाणजी—इनसे बागमलोत हुए जिनके घर पर्वतसर में है।

पारसजी—इनसे सुखमलोत, रायमलोत, रिड़मलोत, परतापमलोत, जोरावरमलोत, हिन्दूमलोत, मलचदोत, धनरूपमलोत तथा हरचदोत हुए। इनके परिवार जोधपुर, सोजत, नागोर, मेड़ता, पीपाड़, रेणा, लाडनू, डीडवाना, पाली, सिरियारी, चाणोद, कालू आदि स्थानों में है।

गोपीनाथजी—इनसे भागमलोत हुए। यह परिवार गुजरात में है।

मोहणजी—इनका परिवार कुचेरा में है।

सिंघवी भींवराजोत

ऊपर हम सिंघवियों की पाँचों खापों का सक्षिप्त विवेचन कर चुके हैं। वैसे तो जोधपुर के र में इन पाचों ही शाखाओं के महापुरुषों ने बड़े २ महत्वपूर्ण कार्य्य करके दिखलाये हैं और अपनी ा हथेली पर रखकर राज्य की रक्षा और उन्नति में सहयोग दिया है फिर भी जोधपुर के राजनैतिक स में भींवराजोत शाखा का नाम सबसे अधिक प्रखर प्रताप के चमकता हुआ दिखलाई देता है।

इतिहास खुले तौर से इस बात की साक्षी दे रहा है कि महाराज मानसिंहजी के समय में जबकि र का राजसिंहासन भयकर संकट ग्रस्त हो गया था और उसका अस्तित्व तक खतरे में जा गिरा था मय जिन वीरों ने अपनी भुजाओं के बल पर उस गिरते हुए वैभव को रोका था उसमें भींवराजोत के सिंघवी इन्द्रराज सबसे प्रधान थे। जोधपुर के इतिहास में सिंघवी इन्द्रराज का नाम एक तेज-क्षत्र के तुल्य चमक रहा है। स्वय महाराजा मानसिंहजी ने स्पष्ट शब्दों में सिंघवी इन्द्रराज को लिखा 'आपरू थारा दियोड़ा राज है। म्हारे राठोडा रो वंश रेसी ने ओ राज करसी उओ थारा घर सु एहसान ली'' * इसी प्रकार इनके भाई गुलराजजी इनके पुत्र फतेराजजी आदि व्यक्तियों ने भी जोधपुर के राज इतिहास में अपना विशेष स्थान प्राप्त किया था। नीचे हम इसी गौरवशाली वश का सक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न करते हैं।

सिंघवी भींवराजजी

इस शाखा का प्रारम्भ सिंघवी भींवराजजी से होता है। सिघवी भींवराजजी अपने समय के प्रसिद्ध पुरुष थे। जोधपुर पर आने वाली कई राजनैतिक विपत्तियों का मुकाबिला आपने बड़ी बहा-

* ... ओसवालों के राजनैतिक महत्व नामक अध्याय में पृष्ठ ६० पर देखिए।

मेहता बलवन्तसिंहजी पर महाराणा फतेसिंहजी की बड़ी कृपा रही। आपके पिता स्वर्गवास हो जाने पर आपको पुश्तैनी फौजबक्षीगिरी का काम मिला। आपको भी बैठक और बक्षा हुआ था। आपका स्वर्गवास बहुत शीघ्र ही हो गया। आपके एकमात्र पुत्र लछमनसिंहजी हैं।

मेहता लछमनसिंहजी उस समय नाबालिग थे जब कि आपके पिताजी का स्वर्गवास हुआ अतएव आपकी पुश्तैनी बक्षीगिरी का काम आपके नामसे मेहता दौलतसिंहजी देखते थे। बालिग पर संवत् १९६३ में आपको रंग भवन की खिदमत दी गई। सवत् १९७२ म आपको फिर से दी गई। सवत् १९७९ में आप ट्रेझररी आफ़िसर नियुक्त हुए। महाराणा भूपालसिंहजी भी आप पर बड़ी कृपा है। दरबार जागीर के अलावा आपके लिए खास तौर पर तनख्वाह भी फरमाई तथा नाव की बैठक भी बक्षी। आपके केसरीसिहजी नामक एक पुत्र हैं।

कुँवर केसरीसिहजी की पढ़ाई एल एल. बी., तक हुई। आपको वर्तमान महाराणा साहब ने स्वरूपसाही रुपयों तथा पाटों को गलवाकर उनके स्थान पर नये चित्तौडी रुपये ढलवाने कलकत्ता मिंट में भेजा। सन् १९३२ में आप वहाँ से पौने दो करोड़ रुपये ढलवाकर उदयपुर लाये। काम को आपने बड़ी होशियारी से किया। इससे प्रसन्न होकर महाराणा साहब ने आपको ... इनाम स्वरूप प्रदान किये तथा आपके लिये स्थायी वेतन का भी प्रबन्ध कर दिया। आपके तुना नामक एक पुत्र हैं।

मेहता श्यामसिहजी के पुत्र रामसिंहजी के कोई पुत्र न होने से मेहता उम्मेदसिंहजी के पुत्र कुँवर मोतीसिहजी दत्तक लिये गये। आप बुद्धिमान और होशियार व्यक्ति थे। आप संवत् ... मे फौजी के सेनापति रहे। आपने अपने समय मे कई कार्य्य किये। इसके अतिरिक्त हुरड़ा जिले में अपने नाम से मोतीपुरा नामक एक ग्राम बसाया। पहाड़ी जिले म, जिसे आजकल देवरिया भी कहते हैं, आप ही ने आबाद किया। आप सहाड़ी, हुरड़ा, माण्डलगढ़ जिलों में हाकिम रहे। आपके कामों से प्रसन्न होकर तत्कालीन महाराणा शम्भुसिंहजी ने ... उर्फ मोतीपुरा नामक ग्राम आपको जागीर मे बक्षा। आपको दरबार में बैठक का सम्मान ... आपका स्वर्गवास हो गया। आपके दो पुत्र हुए, जिनके नाम मेहता सोहनसिहजी और मोहनसिंहजी सोहनसिंहजी किशनगढ़ में रामसिंहजी मेहता के यहा दत्तक गये।

मेहता मोहनसिंहजी अपने जीवन मे बड़े उद्योगी व्यक्ति रहे। आपने कई स्थानों में किया। आप हैदराबाद, जोधपुर, भावनगर, अलवर, इन्दौर आदि कई स्थानों पर काम

हजार और भींवराजजी १२ हजार फौज लेकर उससे मिलने गये और एक लाख रुपयों की हुण्डी उसको रवाना किया। बादशाह ने प्रसन्न होकर इनको "तखत का पाया" कहकर सम्मानित और सिरोपाव, तलवार, तथा मकना हाथी इनायत किये। जयपुर दरबार ने भी इन्हें घोड़ा और व बख्शे।

राजनीति ही की तरह सिंघवी भींवराजजी का धार्मिक जीवन भी बहुत उत्कृष्ट रहा। सोजत का बनाया हुआ भींवसागर नामक कुआ अभी भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त आपने श्री नर- और रघुनाथजी के भव्य मन्दिर भी बनवाये। आपका स्वर्गवास संवत् १८४८ में हुआ।

आपके छ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश अभयराजजी, अखेराजजी, इन्द्रराजजी, बनराजजी र्जा तथा जीवराजजी था। इनमें से अभयराजजी और जीवराजजी का वंश आगे नहीं चला।

वी अखेराजजी

सिंघवी अखेराजजी को संवत् १८४७ में बख्शीगिरी का पद मिला। जब किशनगढ़वालों ने जी इगलिया को बहका कर सात हजार फौज के साथ मारवाड़ पर चढ़ाई की उस समय सिंघवी ाजजी ने भण्डारी गगारामजी और सिंघवी अखेराजजी को उनका सामना करने को भेजा। इस लड़ाई ोक पर उखड़ गये, इसपर सिंघवीजी ने बीकानेर से खर्च के लिये तीन लाख रुपये लेकर किशनगढ़ पर वर दा। संवत् १८५२ मे देसूरी के पास लड़ाई करके उन्होंने गोडवाड तथा जालौर इत्यादि स्थानों ाल वसूल की। संवत १८५५ में आपने जालौर का घेरा दिया इसी साल आप जालौर में कैद र गये और फिर मुक्त होकर संवत् १८५६ की चैत वदी ६ को पुन बख्शीगिरी के पद पर नियुक्त इस प्रकार आपके जीवन का एक-एक क्षण राजनैतिक घटनाओं और युद्धों में गुंथा हुआ रहा, आपकी री और साहस के सबूत कदम कदम पर मिलते रहे। आपका बनाया हुआ अखेतलाव इस समय भी मान है। आपका स्वर्गवास संवत् १८५७ मे हुआ। आपके कोई सन्तान न होने से आपने अपने भतीजे ाजी को दत्तक लिया।

संवत १८५७ मे अभयराजजी के स्वर्गवासी हो जाने पर सिंघवी मेघराजजी को बख्शीगिरी का प्त हुआ। संवत १८८२ तक वे उस पद पर काम करते रहे। संवत् १९०२ में इनका स्वर्गवास । इनके पश्चात् इनकी संतानों में क्रमश शिवराजजी, प्रयागराजजी और उगमराजजी हुए। उगम- के पुत्र ५९ छत्रराजजी अभी विद्यमान है। अपने पूर्वजों की महान सेवाओं के उपलक्ष में इन्हें स्टेट से मिलता है। इनके जसवतराज और दलपतराज नामक दो पुत्र है। सिंघवी शिवराजजी संवत्

रीयावाले सेठों का खानदान अजमेर

राजा धूहड़जी के पश्चात क्रमशः रायपालजी, मोहणजी, महेशजी, खेतसीजी, रहुजी, [illegible] जयमलजी और डोलाजी हुए। डोलाजी की सन्तानें डोलावत मुणोत कहलाईं। इनके पश्चात् [illegible] तेजसिंहजी, मिहमलजी और जीवनदासजी हुए।

नगर सेठ जीवनदासजी—मुहणोत जीवनदासजी कई पीढ़ियों से रीया (मारवाड़) में निवास करते थे। सेठ जीवनदासजी अथवा इनके पिताजी रीया से दक्षिण प्रांत में गये और [illegible] वाओं के खजाची मुकर्रर हुए तथा पूने में इन्होंने दुकान स्थापित कर काफी सम्पत्ति और [illegible] उपार्जित की। आपके समय से ही यह खानदान प्रसिद्धि में आया। कहते हैं कि एक बार [illegible] महाराजा मानसिंहजी से किसी अंग्रेज ने पूछा कि मारवाड़ में कितने घर हैं, तो दरबार ने कहा कि "[illegible] हैं, एक घर रीया के सेठों का, दूसरा बीड़लाडे के दीवानों का और आधे में सारा मारवाड़ है।"

कहने का तात्पर्य यह है कि उस समय यह परिवार ऐसी समृद्धि पूर्ण अवस्था में था। [illegible] दरबार महाराजा विजयसिंहजी ने संवत् १८२९ में सेठ जीवनदासजी को नगर सेठ की उपाधि तथा [illegible] तक कैद में रखने का अधिकार बख्शा था। रीया में इनकी उत्तम ठग्री बनी हुई है। मारवाड़ में यह [illegible] प्रसिद्ध है, कि एक बार जोधपुर दरबार को द्रव्य की विशेष आवश्यकता हुई और दरबार [illegible] होकर रीयां गये, उस समय यहां के सेठों ने एक ही सिक्के के रुपयों के ढेर की रीया में [illegible] लगवा दीं। इससे रीयां गाव, सेठों की रीया के नाम से विख्यात हुआ। इस प्रकार की कई बातें [illegible] दासजी के सम्बन्ध में प्रचलित हैं। जोधपुर राज्य की ख्याति के अलावा पेशवा राज्य में [illegible] दबदबा था। उस समय ये करोड़पति श्रीमंत माने जाते थे। पूना तथा पेशवाई हद में इनकी [illegible] थीं, इसके अलावा अजमेर में भी उन्होंने अपनी एक ब्रांच खोली थी। इनके गोवर्द्धनदासजी [illegible] तथा हरजीमलजी नामक तीन पुत्र हुए। मुहणोत गोवर्द्धनदासजी के खींवराजजी तथा हरचन्ददासजी, [illegible] दासजी के शिवदासजी और हरजीमलजी के लक्ष्मनदासजी नामक पुत्र हुए। इनकी दुकानें [illegible] राजपूताने के अनेकों स्थानों में थीं। शिवदासजी के पुत्र रामदासजी हुए।

मुहणोत रामदासजी तथा लक्ष्मणदासजी—आप पर जोधपुर महाराजा मानसिंहजी का [illegible] दरबार ने इन दोनों सज्जनों को समय समय पर पालकी, सिरोपाव, कड़ा कण्ठी, कीनखाब, माला और [illegible] किये थे। महाराज मानसिंहजी और उदयपुर दरबार से इन्हें कई परवाने मिले थे। [illegible] मुणोत लछमणदासजी का देहान्त हुआ। इस समय इनका परिवार कुचामण में बसता है। [illegible] पन्नालालजी, तेजमलजी, सुजानमलजी वगैरा इस समय विद्यमान हैं।

र और बीकानेर की एक लाख फौज को चढ़ा लाये। इस विशाल सेना ने जोधपुर पर घेरा डालकर धौंकलसिंह की दुहाई फेर दी, मानसिंहजी का अधिकार केवल गढ़ ही में रह गया। जोधपुर के में यह समय ऐसा विकट था कि यदि पूरी सावधानी के साथ इसका प्रतिकार न किया जाता तो के इतिहास के पृष्ठ ही आज दूसरी तरह से लिखे जाते। अस्तु, ऐसी भयंकर विपत्ति के समय में ने सिंघवी इन्द्रराजजी और भण्डारी गंगारामजी को कैद से बुलाकर इस विपत्ति से मारवाड़ की रक्षा कहा। इस स्थान पर इन दोनों मुत्सुद्दियों की उच्च स्वामिभक्ति का आदर्श देखने को मिलता है। कष्ट इन लोगों को मिले थे उन्हें देखते हुए यदि ये लोग ऐसे समय पर उदासीनता भी बतलाते तो कार इन्हें बुरा नहीं कहते, मगर इन दोनों खानदानी पुरुषों ने सब बातों को भूलकर, उस विपत्ति के र भी सच्चे हृदय से सेवा की। शुरू २ में तो इन्होंने धौंकलसिंह के तरफदार पोकरन ठाकुर महजी से समझौते की बातचीत की, मगर जब उसमें कामयाबी न हुई तो उन्होंने मीरखाँ पिण्डारी पांच लाख रुपये देने का वादा कर अपनी ओर मिला लिया और अपनी तथा उसकी फौज के साथ को लूटते हुए जयपुर की ओर कूँच किया। रास्ते में इन्होंने जयपुर के बख्शी शिवलाल को लूट तथा इस घटना की खबर बारहट साइदान के साथ महाराजा मानसिंहजी को भेजी, बारहट ने केन दोहा महाराजा के पास भेजा था —

फागजुध पाई फ़ते, लूट लियो शिवलाल।
वे कागद म आणिया, मान विजाही मान॥

कहना न होगा कि जयपुर पहुँचकर सिंघवी इन्द्रराजजी और मीरखां ने अपनी लूट शुरू कर दी। खबर जब जयपुर की फौज को जोधपुर में लगी तो उसने घबरा कर संवत् १८६४ की भादवा सुदी ३ जोधपुर का घेरा उठा दिया और अपने अपने राज्यों की ओर प्रस्थान कर दिया।

जब जयपुर की विजय की खबर महाराज मानसिंहजी को मालूम हुई तो वे बड़े खुश हुए, उन्होंने एक बड़ा महत्वपूर्ण रुक्का सिंघवी इन्द्रराजजी को बख्शा जो इस ग्रन्थ के राजनैतिक महत्व नामक प में दिया गया है। इसी समय इन्द्रराजजी को प्रधानगी का पद बख्शा गया।

संवत १८६५ में सिंघवी इन्द्रराजजी और मुहणोत सूरजमलजी ने १० हजार जोधपुर की तथा हजार बाहरी फौज लेकर बीकानेर पर आक्रमण किया। उस समय बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी ने ... र रुपये देने का वादा किया तथा पांच गांव देवनाथजी को जागीर में दिये। जिस समय सिंघी ... फौज के साथ बीकानेर गये थे उस समय पीछे से महाराजा मानसिंहजी ने मीरखां को उसकी ... खर्च के लिए पर्वतसर, मारोट, डीडवाणा और साम्भर नावा का परगना लिख दिया था।

दासजी, रा० ब० छगनमलजी, मगनमलजी और प्यारेलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भ्राताओं में घनश्यामदासजी का कारबार संवत् १९७३ के श्रावण मास में अलग हो गया। सेठ ... छोड़कर और भ्राताओं के कोई सन्तान नहीं हुई।

सेठ घनश्यामदासजी—आपका जन्म संवत् १९११ में हुआ। आपका शरीरावसान ... की फागुन वदी ९ को हुआ। आपके नौरतनमलजी तथा रिखबदासजी नामक २ पुत्र हुए।

राय बहादुर सेठ छगनमलजी का जन्म सवत १९४३ में हुआ। स्था० कान्फ्रेंस ... अजमेर में थी, तब आप उसके सेक्रेटरी थे। आप अजमेर के म्युनिसिपल कमिश्नर और ऑनरेरी मजिस्ट्रे- शिप के सम्मान से सम्मानित हुए थे। भारत सरकार ने आपके गुणों से प्रसन्न होकर आपको रायबहादुर का खिताब इनायत किया। ७ वर्ष तक आप श्वे० जैन कान्फ्रेंस के ऑनरेरी सेक्रेटरी रहे। आपने ... से एक हुन्नरशाला चलाई थी। आपका देहावसान सवत् १९७४ की चैत सुदी ४ (ता० २१ मार्च सन् १९१७) को केवल ३१ साल की वय में हो गया।

सेठ मगनमलजी का जन्म १९४५ मे हुआ। आपकी धार्मिक कार्यों मे विशेष रुचि थी ... शांतवृत्ति के पुरुष थे आपका अंतकाल १९८२ की मगसर सुदी ८ को हुआ। सेठ प्यारेलालजी का जन्म १९५१ की माघ सुदी २ को हुआ। आप इस समय विद्यमान है। आप दोनों भ्राताओं ने सार्वजनिक लोकप्रिय कार्यों में बहुत-सा सहयोग लिया। पुष्कर गौशाला, अहिंसा पचारक, बगलोर गौशाला, ... जीवदया मंडल आदि संस्थाओं को आपने बहुतसी सहायतायें दी हैं। आपके विचार सात्विक हैं। ... बड़े भ्राता मगनमलजी, अजमेर के म्युनिसिपल कमिश्नर और आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आप स्था० ... के जनरल सेक्रेटरी और सुखदेव सहाय जैन प्रेस के ऑनरेरी सेक्रेटरी थे।

सेठ नौरतनमलजी रीया वाले का जन्म सवत् १९५८ की आसोज सुदी १ को हुआ। आपका कारबार कई स्थानों पर फैला हुआ है, धार्मिक और सामाजिक कार्यों में आप खूब भाग लेते हैं।

सेठ रिखबदासजी का जन्म संवत् १९६४ के श्रावण पौर्णिमा को हुआ था। ... इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा पाई थी, इनका विवाह कोटे में बडी धूमधाम से हुआ था। १९८४ की आसोज वदी ७ को अचानक पति पत्नी का एक साथ अतकाल हो गया। इस समय ... कोई सतान नहीं है।

ुर और बीकानेर की एक लाख फौज को चढ़ा लाये। इस विशाल सेना ने जोधपुर पर घेरा डालकर धौंकलसिंह की दुहाई फेर दी, मानसिंहजी का अधिकार केवल गढ़ ही में रह गया। जोधपुर के ा में यह समय ऐसा विकट था कि यदि पूरी सावधानी के साथ इसका प्रतिकार न किया जाता तो के इतिहास के पृष्ठ ही आज दूसरी तरह से लिखे जाते। अस्तु, ऐसी भयंकर विपत्ति के समय में ा ने सिंघवी इन्द्रराजजी और भण्डारी गंगारामजी को कैद से बुलाकर इस विपत्ति से मारवाड की रक्षा ा कहा। इस स्थान पर इन दोनों मुत्सुद्दियों की उच्च स्वामिभक्ति का आदर्श देखने को मिलता है। कष्ट इन लोगों को मिले थे उन्हें देखते हुए यदि ये लोग ऐसे समय पर उदासीनता भी बतलाते तो ्रकार इन्हें बुरा नहीं कहते, मगर इन दोनों खानदानी पुरुषों ने सब बातों को भूलकर, उस विपत्ति के ें भी सच्चे हृदय से सेवा की। शुरू २ मे तो इन्होंने धौंकलसिंह के तरफदार पोकरन ठाकुर सिंहजी से समझौते की बातचीत की, मगर जब उसमें कामयाबी न हुई तो उन्होंने मीरखाँ पिण्डारी ्-पाँच लाख रुपये देने का वादा कर अपनी ओर मिला लिया और अपनी तथा उसकी फौज के साथ को लूटते हुए जयपुर की ओर कूँच किया। रास्ते मे इन्होंने जयपुर के बख्शी शिवलाल को लूट तथा इस घटना की खबर बारहट साइदान के साथ महाराजा मानसिंहजी को भेजी, बारहट ने ्कित दोहा महाराजा के पास भेजा था —

फागेनुव पाई फते, लूट लियो शिवलाल।
वे कागद में आणिया, मान बिजाही मान॥

कहना न होगा कि जयपुर पहुँचकर सिंघवी इन्द्रराजजी और मीरखां ने अपनी लूट शुरू कर दी। ाबर जब जयपुर की फौज को जोधपुर मे लगी तो उसने घबरा कर संवत् १८६४ की भादवा सुदी ३ ोधपुर का घेरा उठा दिया और अपने अपने राज्यों की ओर प्रस्थान कर दिया।

जब जयपुर की विजय की खबर महाराज मानसिंहजी को मालूम हुई तो वे बड़े खुश हुए, उन्होंने एक बडा महत्वपूर्ण रुक्का सिंघवी इन्द्रराजजी को बख्शा जो इस ग्रन्थ के राजनैतिक महत्व नामक ाय में दिया गया है। इसी समय इन्द्रराजजी को प्रधानगी का पद बख्शा गया।

संवत् १८६५ में सिंघवी इन्द्रराजजी और मुहणोत सूरजमलजी ने १० हजार जोधपुर की तथा हजार बाहरी फौज लेकर बीकानेर पर आक्रमण किया। उस समय बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी ने लाख रुपये देने का वादा किया तथा पाँच गाँव देवनाथजी को जागीर में दिये। जिस समय सिंघी राजजी फौज के साथ बीकानेर गये थे उस समय पीछे से महाराजा मानसिंहजी ने मीरखां को उसकी ः के खर्च के लिये पर्वतसर, मारोट, डीडवाणा और साम्भर नावा का परगना लिख दिया था।

सेठ नौरतनमलजी रीया वाले, अजमेर

मेहता सोहनसिंहजी मुणात, किशन

मि गीलालजी मुणात, ब्यावर.

मेहता मोहनसिंहजी मुणात,

सेठ लक्ष्मीचंदजी मुहणोत उज्जैन

इस परिवार का इतिहास रीया के सेठों से शुरू होता है। उसी खानदान के ... पुत्र प्रतापमलजी करीव १०० वर्ष पूर्व भेलसा नामक स्थान पर व्यापार के निमित्त ... आप साधारण लेनदेन का व्यापार करते रहे। आपके क्रमशः सेठ नवलमलजी और किशनमल दो पुत्र हुए। आप दोनों ही भेलसा से जबलपुर गये और वहाँ राजा गोकुलदासजी के यहाँ ... लगे। पश्चात् अपनी होशियारी से नवलमलजी जबलपुर की बंगाल बैंक शाखा के ... आपने अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। आपके पुत्र न होने से आपके भाई किशनमलजी के ... एक लक्ष्मीचदजी को दत्तक लिया तथा दूसरे पुत्र फूलचदजी अपने पिताजी के पास ही रहे।

बाबू लखमीचंदजी बड़े योग्य, होशियार और समझदार व्यक्ति हैं। पहले तो आपने गोकुलदासजी के यहाँ काम किया पश्चात् आप उज्जैन के विनोद मिल में एकाउन्टन्ट हो गये। ... आप बीमा की एजसी का काम करते हैं। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट तथा चेम्बर ऑफ ... सेक्रेटरी हैं। आपके समीरचंदजी नामक एक दत्तक पुत्र है। आपने अपने पिताजी के स्मारक ... भवन का नाम 'कृष्ण निवास' रखा है।

मुहणोत हस्तीमलजी, जोधपुर

मुहणोत सोभागमलजी जालौर मे निवास करते थे तथा वहाँ के कोतवाल थे। उनका ... काल लगभग संवत् १९५६ में हुआ। इनके पूर्वजों का राजकुमार पाल के समय का बनाया हुआ ... जालौर के किले में विद्यमान है।

मुहणोत सौभागमलजी के २ पुत्र हुए। मिश्रीमलजी तथा हस्तीमलजी। मिश्रीमलजी का ... १९५७ में अन्तकाल हो गया। मुहणोत हस्तीमलजी का जन्म सवत् १९३४ में हुआ। ... जालौर में हिन्दी तथा उर्दू का ज्ञान प्राप्त किया और सवत् १९५५-५६ से जोधपुर में ... वकालत शुरू की। इस समय आप जोधपुर मे फर्स्ट क्लास वकील माने जाते हैं।

मुहणोत हस्तीमलजी के मांगीलालजी, मोहनलालजी तथा रूपमलजी नामक तीन ... मांगीलालजी का भादवा सुदी ७ संवत् १९६१ में जन्म हुआ। आपने सन् १९३१ में ... युनिवर्सिटी से बी ए एल. एल. बी पास किया, तथा वर्तमान में आप बालोतरा (जोधपुर ...

हेमराजजी मुहणोत नागोर मे दत्तक लाये गये । आपके दत्तक आने पर पञ्चों ने फैसला कर,
मलजी मुहणोत की कन्या मैना बाई तथा आपके हिस्से मे १० हजार रुपया मन्दिर बनवाने को
फलतः सेठ हेमराजजी मुहणोत ने सवत् १९७८ में एक श्वे० जैन मन्दिर का निर्माण कराया।
दुकान के व्यापार तथा प्रतिष्ठा को अच्छी उन्नति प्रदान की । सवत् १९८७ में आपने नागौर में
उपना तथा साध्वीजी रतनश्रीजी का चतुर्मास कराया । इस समय आपके यहाँ हमीरमल
हजारीमल मुहणोत के नाम से सराफी तथा बेङ्किंग कारवार होता है ।

सेठ रतनचन्द छगनमल मुहणोत, अमरावती

लगभग सवत् १९२० मे सेठों की रीया नामक स्थान से व्यापार के निमित्त सेठ
मुहणोत के पुत्र मानमलजी, गुलाबचन्दजी, तखतमलजी और बख्तावरमलजी ने दक्षिण प्रान्त
(रत्नागिरी) नामक स्थान में जाकर दूकान की । थोड़े समय बाद सेठ मानमलजी और
दोनों भाइयों ने लछमनदासजी मुहणोत की भागीदारी मे अमरावती मे दूकान की । सेठ
मुहणोत सवत् १९३३ में रीयाँ से अमरावती आये ।

सेठ मानमलजी के नवलमलजी तथा धनराजजी नामक दो पुत्र हुए, इनमें
गुलाबचन्दजी के नाम पर दत्तक दिया । मुहणोत नवलमलजी ने सवत् १९५१ में बम्बई तथा
दूकानें कीं । इनके रतनचन्दजी, चादमलजी तथा सूरजमलजी नामक तीन पुत्र हुए, जिनमें
तखतमलजी के नाम पर दत्तक गये । मुहणोत धनराजजी के पुत्र पनराजजी और मगनमलजी
रतनचन्दजी के पुत्र छगनमलजी और फतेचन्दजी हुए । इन भ्राताओं मे सेठ मगनमलजी और
का व्यापार सम्मिलित है । मुहणोत भीकमचन्दजी ने रीया मे एक धर्मशाला और कबूतरखाना
आप लछमनदासजी के नाम पर दत्तक आये है । इस समय सेठ मगनमलजी तथा फतेचन्दजी
अमरावती में रतनचन्द छगनमल के नाम से, गुलेजगुड मे धनराज मगनमल के नाम से,
(रत्नागिरी मे मानमल गुलाबचन्द के नाम से तथा केलसी (रत्नागिरी) में नवलमल
से होता है ।

सिंघवी

ओसवाल जाति के इतिहास मे सिंघवी वंश बड़ा प्रतापी और कीर्तिमान हुआ। सिंघवी नरपुङ्गवो के गौरवशाली कार्यों से राजस्थान का इतिहास प्रकाशमान हो रहा है। इन्होंने राजस्थान की महान् सेवाएँ की और उन्हे अनेक दुर्भेद्य आपत्तियों से बचाया। राजनीतिज्ञता, और स्वामिभक्ति के उच्च आदर्श को रखते हुए इन्होंने एक समय मे मारवाड़ राज्य का उद्धार अब हम इस गौरवशाली वंश के इतिहास पर थोड़ा सा ऐतिहासिक प्रकाश डालना चाहते है।

सिंघवी गौत्र की स्थापना

जिस प्रकार ओसवाल जाति के अन्य गौत्रों का इतिहास अनेक चमत्कारिक दन्त कथाओं आवृत है, ठीक वही बात सिंघवी गौत्र की उत्पत्ति के इतिहास पर भी लागू होती है। सिंघवियों के मे, इस गौत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे जो कुछ लिखा है, उसका आशय यह है—"नानवाणा ब्राह्मण मे देवजी नामक एक प्रतापवान पुरुष हुए। उनके पुत्र को साप ने काटा और एक जैनमुनि ने उस कर दिया। इस समय से इनका इष्टदेव पुण्डरिक नाथदेव हुआ। लगभग २३ पीढ़ी तक ना वाणा बोहरा ही रहे। इसके बाद सम्वत् ११२१ में उक्त बोहरा वंशीय आसानन्दजी के पुत्र विजयम ने सुप्रख्यात् जैनाचार्य्य श्री जिनवल्लभसूरि के उपदेश से जैन धर्म को स्वीकार किया। इन विजय के कुछ पीढ़ियों के बाद श्रीधरजी हुए। इनके पुत्र सोनपालजी ने सम्वत् १४८३ मे शत्रुंजय का भारी संघ निकाला, जिससे ये सिंघवी कहलाये।"

यह तो हुई सिंघियों की उत्पत्ति की बात। इसके आगे चल कर सोनपालजी के भगाजी, रायोजी, जसाजी, सदाजी तथा जोगाजी नामक छ पुत्र हुए।

इनमे से सिहाजी जसाजी तथा रायोजी का परिवार जोधपुर मे तथा भागाजी, सदाजी, जोगाजी का परिवार गुजरात मे है। उपरोक्त ६ भाइयों में से बड़े भ्राता सिहाजी के चापसीजी, गोपीनाथजी, मोंडणजी तथा पठाणजी नामक ५ पुत्र हुए, इन पाँचों भाइयो से सिंघवियों की खापें निकली—

(१) चापसीजी—इनसे भीवराजोत, धनराजोत, गाढ़मलोत, महादसोत शाखाएँ निकली। जोधपुर, चंडावल तथा खेरवामे है।

गये। सं० १८९८ मे इन्हें दीवानगी का पद इनायत हुआ। इन्हें पालकी और सिरोपाव का न मिला था। सवत् १९०३ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके समर्थराजजी, सांवतराजजी, मगनराजजी ग्गनराजजी चार पुत्र हुए।

सिंघवी कुशलराजजी के पुत्र सिंघवी रतनराजजी परवतसर और मारोठ के हाकिम रहे इनका ास सवत् १९२० की काती वदी ४ को हुआ। इनके पुत्र सिंघवी जसराजजी मेड़ते के हाकिम थे पैरों में सोना था। इनके यहाँ भभूतराजजी दत्तक आये हैं। सोजत परगने का शेखावास गाँव जागीर में है।

सिंघवी सुखराजजी के पुत्र सिंघवी समरथराजजी सवत् १८९४ से १९२५ तक हाकिम रहे, में ये जोधपुर के वकील की हैसियत से एजण्ट के पास भी रहे थे। संवत् १९२९ में ये फौजबख्शी इन्होंने सवत् १९१० मे जयपुर में अपने पिता की छतरी की प्रतिष्ठा की। इनके सूरजराजजी सुलहराजजी नामक दो पुत्र हुए। सोजत जिले का धूँधला गाव इनकी जागीर में था वह अब भी वशजों के पास है। महाराज तखतसिंहजी ने आपको पैरों में सोना, ताजीम और हाथी बख्शा था। पुत्र सूरजराजजी का देहान्त इनकी मौजूदगी में हो गया।

सिंघवी करणराजजी सिंघवी सूरजराजजी के पुत्र थे। संवत् १९३१ में इन्हें बख्शीगिरी त हुई और सवत् १९३४ में इनका स्वर्गवास हो गया। इनको भी महाराज जसवन्तसिंहजी ने , ताजीम और सिरोपाव बख्शा था। इनके गुजरने पर इनके दत्तक पुत्र किशनराजजी को भी वही मिली। किशनराजजी को संवत् १९३५ में बख्शीगिरी मिली। बाद में संवत् १९४९ से आप सर और नागौर के हाकिम रहे। नागौर से इनके पुत्र हंसराजजी और परवतसर में इनके भतीजे राजजी हुकूमत का काम करते थे और आप दोनों स्थानों पर निगरानी रखते थे। आपका स्वर्गवास १९७३ में हुआ। आपके पुत्र सिंघवी हसराजजी हुए जो सिंघवी अमृतराजजी के नाम पर गये।

सिंघवी सुखराजजी के दूसरे पुत्र मगनराजजी के नाम पर समरथराजजी के छोटे लड़के सुलह-जी दत्तक लिये गये। इनका स्वर्गवास सवत् १९६१ की काती सुदी ४ को हुआ। इनके पुत्र रूप-जी कालिया और साचोर के हाकिम थे। इन्हें भी पालकी और सिरोपाव हुआ। संवत् १९८७ में का स्वर्गवास हुआ, इनके पुत्र दूल्हराजजी अभी विद्यमान हैं।

सिंघवी सुखराजी के तीसरे पुत्र सावतराजजी का स्वर्गवास सवत् १९२६ में हुआ। इनके सिंघवी राजजी और अमृतराजजी दो पुत्र हुए।

दुरी और साहस से किया था। सवत् १८२१ के आश्विन मास में उज्जैन के सिन्धिया ने मारवाड़ पर आक्रमण करने के इरादे से कूच किया। जब यह समाचार जोधपुर में सिंघवी भींवराजजी को मिला उन्होंने तत्काल मन्दसोर आकर सिन्धिया को तीन लाख रुपये देकर युक्ति पूर्वक वापिस लौटा दिया। इसी प्रकार जब दक्षिण के सरदार खान् ने मारवाड पर चढ़ाई की, उस समय भी सिंघवी भींवराजजी ने उसका सामना करने के लिए मुहणोत सूरतरामजी तथा दूसरे कई सरदारों के साथ सेना लेकर मारोठ पर कूच किया। इस लड़ाई में खान् बहुत बुरी तरह पराजित होकर अजमेर भाग गया और उसका सब माल सिंघवी भींवराजजी ने लूट लिया। इसके पश्चात् आपने वसी नामक स्थान पर घेरा डाला और वहां के ठाकुर मोहनसिंह से १०००० जुर्माना लेकर उसे फौज में शामिल कर लिया।

सवत् १८२४ में उदयपुर के राणा अरिसिंहजी और उनके भतीजे रतनसिंहजी में किसी कारण वश झगड़ा हो गया। उस समय राणा अरिसिंहजी ने महाराजा जोधपुर के पास अपना वकील भेज कर सहायता की याचना की। इस पर महाराज ने सिंघवी इन्द्रराजजी और सिंघवी फतेराजजी (रायमल) को सेना देकर उदयपुर भेजा जब रतनसिहजी को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने इन्हें सब वापिस कर दिये। संवत् १८२७ में महाराणा अरिसिंहजी ने जोधपुर दरबार को गोड़वाड़ प्रान्त दिया, उस समय सिंघवी भींवराजजी तथा मुहणोत सूरतरामजी ने ही बाली जाकर उस आर्डर पर अमल किया। संवत् १८२९ में जयपुर के महाराजा रामसिंहजी स्वर्गवासी हो गये उस समय सिंघवीजी ने सांभर के हाकिम मनरूपजी को साम्भर पर अधिकार करने के लिये लिखा और पीछे से फौज लेकर आने का आश्वासन दिया।

संवत् १८२४ की फाल्गुन वदी १० को महाराजा विजयसिंहजी ने सिंघवी भींवराजजी को बख्शीगिरी इनायत की जो सवत् १८३० तक चलती रही। उसके पश्चात् सवत् १८३२ में दुबारा आपको बुलाकर पुन: बख्शीगिरी का खिताब इनायत किया। आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर महाराजा ने छ हजार की आमदनी के चार गाँव आपको जागीर में दिये। आपके भ्राता इतिहास प्रसिद्ध सिंघवी धनराजजी भी अजमेर फतेह करते समय काम आये।

सवत् १८३४ में जब अम्बाजी इंगालिया की फौज ढूंढाड (जयपुर स्टेट) को लूट रही थी सिंघवी भींवराजजी पन्द्रह हजार फौज लेकर जयपुर की मदद को चढ दौडे। आपकी सहायता से जयपुर की फौज ने मरहट्टों की फौज को मार भगाया। उस समय जयपुर दरबार ने जोधपुर को पत्र लिखते हुए लिखा था कि "भींवराजजी और राठौड वीरदा और हमारी आबरू रही।"

जब बादशाह फौज लेकर रेवाड़ी आया तब जयपुर महाराज प्रतापसिंहजी ने दुबारा, सब

गेरी इन्हीं के नाम पर रही और इनके कामदार मेहता कालूरामजी काम देखते रहे। फिर १९१९ में इनके पुत्र देवराजजी फौजबख्शी बनाए गये। इसके पहले आप शिव के हाकिम थे। भी पैरों में सोना, हाथी और सिरोपाव का सम्मान मिला था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६७ मे आपके नाम पर सिंघवी मोहनराजजी दत्तक आये। परबतसर परगने का रघुनाथपुरा गाँव आपके पट्टे मोहनराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७५ में हुआ। इनके पुत्र तखतराजजी अभी विद्यमान है। पूर्वजों की सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको रियासत से १००) मासिक मिलता है।

सिंघवी रायमलोत परिवार, जोधपुर

हम ऊपर बतला चुके हैं कि सिंघी शोभाचन्दजी के सुखमलजी, रायमलजी, रिढमलजी और मलजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें दूसरे पुत्र रायमलजी से रायमलोत नामक खांप है। यहाँ इसी रायमलोत शाखा का सक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

सिंघी रायमलजी—आप बडे प्रतापशाली पुरुष हुए। सम्वत् १६६४ में आपको राज्य की सेवाओं के उपलक्ष्य में २०,०००) की रेख के १६ गांव जागीर में मिले। सम्वत् १६८१ में आपने र में बिहारी मुसलमानों से युद्ध किया और उन्हें परास्त कर ज़ालोर को जोधपुर राज्य के आधीन । सिंघी रायमलजी महाराजा गजसिंहजी के समय में जोधपुर की दिवानगी के प्रतिष्ठित पद पर थे। के पुत्र सिंघवी जीतमलजी हुए।

सिंघवी जीतमलजी—आप बडे वीर प्रकृति के पुरुष थे। सम्वत् १६८१ में आप जोधपुर राज्य के न सेनापति बनाये गये और उसके दूसरे ही साल एक युद्ध में वीरता पूर्वक लडते हुए काम आये। के एक पुत्र थे, जिनका नाम आनन्दमलजी था। आनन्दमलजी के दो पुत्र थे, जिनका नाम पमलजी, और सरूपमलजी था।

सिंघवी सरूपमलजी - सम्वत् १७८१ में जब महाराजा बखतसिंहजी नागौर के राज्यसिंहासन पर और उन्होंने राजाधिराज की उपाधि धारण की, उस समय सिंघवी सरूपमलजी वहाँ के दीवान बनाये थे। आपके फतहमलजी, सावतमलजी तथा बुधमलजी नामक तीन पुत्र हुए।

सिंघवी फतहचन्दजी—आप भी अपने पिताजी के पश्चात् सम्वत् १७९२ से १८०७ तक नागौर के वान रहे। आपको तत्कालीन नागौर नरेश ने खुश होकर पालकी, सिरोपाव, कड़ा, मोतियों की कंठी दे प्रदान कर आपका सम्मान किया। आपके छोटे भाई सांवतरामजी भी नागौर के दिवान रहे थे।

१९२९ में जोधपुर के हाकिम बनाये गये। इनको दरबार से पैरों में सोना, हाथी और सिरो- गरा था। इनके पुत्र प्रयागराजजी को भी पेरों में सोना बख्शा हुआ है।

सिंघवी इन्द्रराजजी

सिंघवी इन्द्रराजजी उन महापुरुषों में से थे, जो अपने अद्भुत और आश्चर्यजनक सारे खानदान के नाम को चमका देते हैं, और इतिहास के अमर पृष्ठों पर बगत् अमर कर लेते हैं।

शुरू-शुरू में सिंघवी इन्द्रराजजी पचभद्रा और फलौदी के हाकिम रहे। संवत् १८५२ कई सरदारों ने मिलकर दीवान जोधराजजी का सिर काट लिया, तब महाराजा भीमसिंहजी ने इन को फौज देकर उन सरदारों से बदला लेने को भेजा। उन्होंने जाकर उन सब सरदारों को दण्ड दिया और हजारों रुपये वसूल किये। संवत् १८६० की कार्तिक सुदी ४ को जब महाराजा भीमसिंहजी का स्वर्गवास हो गया और राज्य का अधिकारी महाराजा मानसिंहजी के सिवाय दूसरा कोई न रहा उस समय धाय भाई शम्भूदानजी, मुणोत ज्ञानमलजी तथा भण्डारी शिवचंदजी ने सिंघवी इन्द्रराजजी और भण्डारी गंगारामजी को लिखा कि "महाराजा भीमसिंहजी परम धाम पधार गये हैं और ठाकुर सवाई पोकरन हैं उनके आने पर तुम्हें लिखेंगे तुम अभी घेरा बनाए रखना," पर सब परिस्थितियों पर करके इन्होंने महाराज मानसिंहजी को जोधपुर लेजाना उचित समझा और इसी अभिप्राय से कलवानी को मानसिंहजी के पास गढ़ में भेजा और स्वयं भी जाकर निछरावल की और संवत् १८६० की मगसर वदी ७ को आपने जोधपुरवालों को लिखा कि राज्य के अधिकारी मानसिंहजी हैं। ये बड़े महाराज की तरह सब पर दया रक्खेंगे। मै इनका रुक्का सबके नाम पर भेजता हूँ। जब मानसिंहजी जोधपुर के गढ़ में दाखिल हो गये तब उन्होंने प्रसन्न होकर भण्डारी गंगारामजी और सिंघवी इन्द्रराजजी को मुसाहिबी इनायत की। इसके सिवाय मेघराजजी को बख्शीगिरी और राजजी को सोजत की हाकिमी दी। इसी समय महाराजा ने सिंघवी इन्द्रराजजी को एक प्रशंसा पूर्ण रुक्का इनायत किया जो इस ग्रन्थ के राजनैतिक महत्व नामक अध्याय में हम प्रकाशित कर रहे हैं।

संवत् १८६३ में किसी कारणवश महाराजा मानसिंहजी सिंघवी इन्द्रराजजी और गंगारामजी से नाराज हो गये और इन दोनों को इनके भाई बेटों सहित कैद कर दिया।

संवत् १८६३ के फाल्गुन में जोधपुर के कई सरदार धौंकलसिंहजी को* गद्दी दिलाने के

---

* जब महाराणा भीमसिंहजी स्वर्गवासी हुए तब उनकी रानी गर्भवती थी, महाराज का मृत्यु के बाद पुत्र हुआ जिसका नाम धौंकलसिंह रक्खा गया था।

१९२९ में जोधपुर के हाकिम बनाये गये। इनको दरबार से पैरों में सोना, हाथी और सिरो- गाव था। इनके पुत्र प्रयागराजजी को भी पैरों में सोना बख्शा हुआ है।

सिंघवी इन्द्रराजजी

सिंघवी इन्द्रराजजी उन महापुरुषों में से थे, जो अपने अद्भुत और आश्चर्यजनक सारे खानदान के नाम को चमका देते हैं, और इतिहास के अमर पृष्ठों पर बगत् अपना कर लेते हैं।

शुरू-शुरू में सिंघवी इन्द्रराजजी पचभद्रा और फलौदी के हाकिम रहे। संवत् १८... कई सरदारों ने मिलकर दीवान जोधराजजी का सिर काट लिया, तब महाराजा भीमसिंहजी ने इन को फौज देकर उन सरदारों से बदला लेने को भेजा। उन्होंने जाकर उन सब सरदारों को दण्ड दिया और हजारों रुपये वसूल किये। संवत् १८६० की कार्तिक सुदी ४ को जब महाराज भीमसिंहजी का ... हो गया और राज्य का अधिकारी महाराजा मानसिंहजी के सिवाय दूसरा कोई न रहा उस समय ... धाय भाई शम्भूदानजी, मुणोत ज्ञानमलजी तथा भण्डारी शिवचदजी ने सिंघवी इन्द्रराजजी और उनके भण्डारी गंगारामजी को लिखा कि "महाराजा भीमसिंहजी परम धाम पधार गये हैं और ठाकुर सवाई... पोकरन हैं उनके आने पर तुम्हें लिखेंगे तुम अभी घेरा बनाए रखना," पर सब परिस्थितियों ... करके इन्होंने महाराज मानसिंहजी को जोधपुर लेजाना उचित समझा और इसी अभिप्राय से ... छलवानी को मानसिंहजी के पास गढ़ में भेजा और स्वयं भी जाकर निछरावल की और ... संवत् १८६० की मगसर वदी ७ को आपने जोधपुरवालों को लिखा कि राज्य के अधिकारी मानसिंहजी हैं। ये बड़े महाराज की तरह सब पर दया रक्खेंगे। मैं इनका रुक्का सबके नाम पर भेजता हूँ। ... मानसिंहजी जोधपुर के गढ़ में दाखिल हो गये तब उन्होंने प्रसन्न होकर भण्डारी गंगारामजी ... और सिंघवी इन्द्रराजजी को मुसाहिबी इनायत की। इसके सिवाय मेघराजजी को बख्शीगिरी और ... राजजी को सोजत की हाकिमी दी। इसी समय महाराजा ने सिंघवी इन्द्रराजजी को एक ... पूर्ण रुक्का इनायत किया जो इस ग्रन्थ के राजनैतिक महत्व नामक अध्याय में हम प्रकाशित कर रहे हैं।

संवत् १८६२ में किसी कारणवश महाराजा मानसिंहजी सिंघवी इन्द्रराजजी और गंगारामजी से नाराज हो गये और इन दोनों को इनके भाई बेटों सहित कैद कर दिया।

संवत् १८६२ के फाल्गुन में जोधपुर के कई सरदार धौंकलसिंहजी को * गद्दी दिलाने ...

---

* जब महाराणा भीमसिंहजी स्वर्गवासी हुए तब उनकी रानी गर्भवती थी, महाराज के ... पुत्र हुआ जिसका नाम धौंकलसिंह रक्खा गया था।

त हुआ। सरदार हाईस्कूल में आपके नाम से "ऋद्धि-प्याऊ" बनाई है। इस समय आपके पुत्र मलजी मेडिकल डिपार्टमेंट में एवं रगरूपमलजी जोधपुर रेल्वे विभाग मे सर्विस करते है।

पृथ्वीराजजी के पुत्र सजनराजजी एवं सुकनराजजी हुए। सजनराजजी का स्वर्गवास हो गया उनके पुत्र हनुतराजजी हैं। सुकनराजजी मेडिकल विभाग में तथा हनुतराजजी रेलवे विभाग में रते है।

ी सावन्तमलजी का परिवार

सिंघवी सावंतमलजी जोधपुर के तन दीवान रहे थे। इनके तीन पुत्र हुए—सगतमलजी, मलजी और बहादुरमलजी। जीवनमलजी के कार्यों से प्रसन्न होकर इन्हे जोधपुर दरबार ने सं० की वैशाख वदी २ को एक हवेली प्रदान की थी। बहादुरमलजी महाराजा मानसिंह के समय में ऊ तथा जोधपुर के हाकिम थे। जीवनमलजी के जीतमलजी और शम्भूमलजी नामक २ पुत्र । जीतमलजी महाराज मानसिंहजी के समय में थावले के हाकिम थे। उनके पुत्र सूरजमलजी म सवत् १८७९ की मगसर सुदी २ को हुआ।

सिंघवी सूरजमलजी—आप कई स्थानों पर हाकिम रहे। इसके अतिरिक्त आप कस्टम डिपार्टमेंट गॅनाइजर हुए। इसके पूर्व आप एक्साइज सुपरिन्टेन्डेन्ट भी रहे थे। आपकी मृत्यु पर सवत १९५२ रवाड़ गजट ने बड़ा शोक प्रकट किया था। कई अंग्रेज अफसरों से आपको अच्छे २ सर्टीफिकेट मिले थे। ो सूरजमलजी के सोभागमलजी, सुमेरमलजी, रघुनाथमलजी, कस्तूरमलजी, दूलहमलजी तथा मूलचंदजी ६ पुत्र हुए। सोभागमलजी सीवाणा और दौलतपुरे के हाकिम थे।

सिंघवी कस्तूरमलजी—सिंघवी कस्तूरमलजी का जन्म सवत १९१४ की आसोज वदी १४ को । सवत् १९२९ से ६ सालों तक आप सायर दारोगा जोधपुर रहे। इसके बाद आप सन् १८८९ साल तक विभिन्न स्थानों में हाकिम रहे। आपके समय में स्टेट की आमदनी में विशेष उन्नति हुई। मार्च सन् १९२३ को आपका अंतकाल हुआ। आपके अच्छे कार्यों से प्रसन्न होकर महाराजा सर- सहजी बहादुर जोधपुर, सर सुखदेवप्रसादजी मारवाड, रेजिडेन्ट कर्नलविडहम इत्यादि कई सज्जनों ने फिकेट दिये है। आप बड़े प्रबन्ध-कुशल सज्जन थे। आपके पुत्र किशोरमलजी एव कानमलजी हुए। ी किशोरमलजी ने अपने बैंकिंग व्यापार को अच्छी तरक्की दी। आपका अंतकाल ता० ३० जून सन् ० को २४ साल की अल्पवय में हो गया। इस समय आपके पुत्र सिंघवी माणिकमलजी हैं। आप

जब बीकानेर से विजय प्राप्त करके उक्त फौज वापस लौटी तब महाराज मानसिंहजी ने प्रसन्न होकर कहा कि जैसी बात बीकानेर में रही ऐसी ही जयपुर में रह जाय तो बड़ा अच्छा है। इस पर इन्द्रराजजी के पुत्र फतेराजजी ने मुहणोत सूरजमलजी और आउवे के ठाकुर के साथ जयपुर पर चढ़ाई की और अपना लूटा हुआ सामान वापस ले आये।

संवत् १८७२ की आसौज सुदी ८ के दिन जब सिंघवी इन्द्रराजजी और महाराज गुरु आयस देवनाथजी खावकों के महल में बैठे हुए थे, उसी समय मीरखा के सिपाही आये और उन्होंने सिंघवी इन्द्रराजजी से महाराज मानसिंहजी द्वारा दिये हुए चार परगने और निश्चित् रकम माँगी। इस सम्बन्ध में सिंघवी इन्द्रराजजी और उनके बीच बहुत कहा सुनी हो गई, फलस्वरूप उन सिपाहियों ने सिंघवी इन्द्रराजजी को कत्ल कर डाला। इस घटना से महाराज मानसिंहजी को बहुत भारी रंज हुआ। उन्होंने उनके शव को वही इज्जत बक्षी जो राजघराने के पुरुषों के शवों को दी जाती है। अर्थात् उनकी रथी गढ़ पर से निकाला और "रोसालई" पर उनका दाहसंस्कार हुआ। वहाँ पर अभी भी उनकी छतरी बनी हुई है। इनकी मृत्यु के रंज पर महाराज ने इनके पुत्र फतहराजजी को एक खास रुक्का इनायत किया जो "राजनैतिक महत्व" नामक अध्याय में दिया जा चुका है।

सिंघवी फतेराजजी—सिंघवी इंद्रराजजी के दो पुत्र थे, सिंघवी फतेराजजी और सिंघवी उम्मेदराजजी। सिंघवी इन्द्रराजजी के मारे जाने पर दीवानगी का पद और पच्चीस हजार की जागीर भी सिंघवी फतेराजजी को मिला। संवत् १८७२ से १८९५ तक आप सात बार दीवान हुए। संवत् १८७३ में मुत्सुद्दियों के षडयंत्र से गुलराजजी का चूक (कत्ल) हुआ तब सिंघवी फतेराजजी भी कुटुम्ब सहित कुचामन चले गये, पर वहाँ के ठाकुर शिवनाथसिंहजी के कहने से वे संवत् १८७४ में फिर जोधपुर आये, वहाँ महाराज मानसिंहजी ने उनका बड़ा सत्कार किया। संवत् १८७७ में महाराज ने आपको फिर दीवानगी बख्शी और साथ ही कड़े, कंठी, पालकी और सिरोपाव की इज्जत भी बख्शी तथा सुरायता गाँव जागीर में दिया। संवत् १८८१ में एक षड्यन्त्र के कारण इनको महाराज ने नजरबन्द कर दिया और दस लाख रुपये जुर्माना किये। मगर जब इस षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ हुआ तब महाराज मानसिंहजी ने संवत् १८८५ में इन्हें फिर दीवान बनाया। इसके पश्चात् फिर संवत् १८९० १८९२ और १८९४ में ये पुनः २ दीवान बनाये गये।

सिंघवी इन्द्रराजजी के छोटे पुत्र सिंघवी उम्मैदराजजी अपने पिता की आकस्मिक मृत्यु के समय केवल चार साल के थे। ये अपने जीवन में हुकुमत का काम करते रहे। संवत् १९२१ में इनका स्वर्गवास

स्व० सिंघवी जोधराजजी दीवान, जोधपुर.

स्व० सिंघवी प्रयागराजजी (भाणराजत

स्व ोतीचन्दजी (गनराज धनराज) सोजत.

सिंघवी बलवन्तराजजी (ं त्राज न

अपनी मातेश्वरी का स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् श्रीयुत गणेशमलजी ने दुकान के काम को
ला। आप बड़े उदार हृदय, दयालु तथा लोकप्रिय पुरुष थे। आपने अपने हाथों से "जीवरक्षा-
प्रचारक मण्डल, स्थापित कर उसके ऑनरेरी सेक्रेटरी का काम बडी योग्यता से किया। तदनन्तर
ने "Society for prevention of cruelty to the animals' नामक संस्था स्थापित कर उसे
मेंट के सुपुर्द कर दिया तथा आप उसके ऑनरेरी सेक्रेटरी का काम सुचारु रूप से संपादित करते रहे।
निजाम सरकार ने इस संस्था को बहुत बड़ी सहायताएँ प्रदान कर उत्साहित किया जिससे यह संस्था
भी चल रही है। आपने अछूतों के लिये भी 'आदि हिन्दू सोशल सर्विस लीग' में भाग लेकर बहुत
किया। जब आप सोजत गये उस समय भंगियों को पानी की सख्त तकलीफ में देखकर आपने उन
के लिए सोजत के बाहर एक कुआ खुदवाया और उसे उन लोगों के सुपुर्द कर दिया यह कुँआ आज तक
मान है। इसके साथ ही साथ आपने सोजत में एक प्याऊ भी स्थापित की जो आज तक चल रही है।
को गुप्त दान से भी विशेष प्रेम था। आपसे कई विधवाएँ, अनाथ और गरीब विद्यार्थी गुप्त रूप से
यता पाते थे। इसके अतिरिक्त आपका हृदय अपने भाइयों एवं परिवार के लोगों की तरफ बहुत उदार
। आप हैदराबाद के जिस मुहल्ले मे रहते थे उसके "मीर मोहल्ला" भी थे। मतलब यह कि आपका
र सभी दृष्टियों से अत्यन्त उच्च और उदार था। यही कारण था कि हैदराबाद और सोजत की जनता—
हिन्दू और क्या मुसलमान—सभी आपको हृदय से चाहती थी। जिस समय संवत् १९८८ की
गुन सुदी ४ को आपका स्वर्गवास हुआ, उस समय हैदराबाद की करीब २००० जनता आपके शव
र्शन के लिये उपस्थित हुई थी। उसी समय आपके शव का फिल्म भी लिया गया था। हैदराबाद की
ता ने आपकी शोक-स्मृति में पुलिस कमिश्नर के सभापतित्व में एक विशाल सभा भी की थी।

आपके श्रीयुत रघुनाथमलजी नामक एक पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९४५ में
।। था। आपने अपने पूज्य पिताजी साहब के संरक्षण में उनके सभी गुणों को प्राप्त किया। आप बड़े
य मनस्वी तथा होनहार सज्जन हैं। आपका हृदय जैसा उदार है वैसी ही आपकी व्यापारिक दूरदर्शिता
बढ़ी चढ़ी है। आपने हैदराबाद के अन्तर्गत इंगलिश पद्धति से एक बैङ्क स्थापित किया है।
रतवर्ष में शायद यह पहला या दूसरा ही बैङ्क है कि जिसके सोल प्रोप्राइटर एक मारवाडी सज्जन हैं।
र बैङ्क के अन्दर इंगलिश पद्धति के सब तरह के अकाउण्टस्, जैसे दूसरे बडे बैङ्कों में होते हैं, खुले हुए हैं।
राबाद-स्टेट में इस बैंक की बहुत बडी प्रतिष्ठा है। तमाम बड़े २ आदमियों, जागीरदारों तथा रॉयल
मिली के अकाउण्ट भी यहीं पर रहते हैं। प्रति वर्ष दीपमालिका के अवसर पर स्वयं निजाम महोदय इस
पधार कर इस बैंक को सम्मानित करते हैं।

देहान्त हुआ। इनके पुत्र तखतराजजी ने संवत् १९३३ मे इण्टर मीडिएट की परीक्षा दी। इनके [illegible]
की सेवाओं के उपलक्ष्य में रियासत से तनख्वाह मिलती है।

सिंघवी वनराजजी

सिंघवी वनराजजी सिंघवी भीवराजजी के चौथे पुत्र थे। ये भी बड़े साहसी और [illegible]
जब महाराज भीमसिंहजी महाराज विजयसिंहजी के परलोकवासी होने के समाचार सुनकर [illegible]
लौटे उस समय मानसिंहजी की पार्टी वाले लोढ़ा शाहमलजी आदि सरदारों ने आसपास के [illegible]
विद्रोह मचाना शुरू किया। इनको दवाने के लिए महाराज भीमसिंहजी ने सिंघवी वनराजजी [illegible]
भेजा। उस समय ये मेड़ते के हाकिम थे। जालौर के पास माण्डोली नामक गाँव के सर्दार, [illegible]
के पक्षपाती सिंघवी शम्भूमलजी और सिंघवी वनराजजी की फौज का मुकाबला हुआ। घोर युद्ध [illegible]
वनराजजी की फौज विजयी हुई। मगर सिंघवी शम्भूमलजी ने तत्काल फिर फौज को इकट्ठा [illegible]
लड़ाई की। इस लडाई मे वनराजजी के भाला लगा था। संवत् १८५९ में महाराज भीमसिंहजी ने [illegible]
फौज देकर आपको जालौर पर घेरा डालने के लिए भेजा। पीछे से भण्डारी गंगारामजी और सिंघवी [illegible]
भी इस घेरे मे सम्मिलित हुए। संवत् १८६० की सावण सुदी ६ को भयङ्कर लडाई हुई, इसमें [illegible]
तो फतह हो गया मगर वनराजजी गोली लगने से मारे गये। जालौर के दरवाजे के पास उनका [illegible]
हुआ जहाँ उनकी छतरी बनी हुई है। इनकी मृत्यु के समाचार से महाराजा को बड़ा दुख हुआ, [illegible]
मातमपुर्सी के लिए उनकी हवेली गये और उनके पुत्र कुशलराजजी को जालौर की हुकूमत और [illegible]
गाव पट्टे दिया। सिंघवी वनराजजी के पुत्र मेघराजजी, कुशलराजजी एवं सुखराजजी हुए। इनमें [illegible]
मेघराजजी सिंघवी अखैराजजी के नाम पर दत्तक गये।

सिंघवी कुशलराजजी को दरबार की ओर से कड़े, मोती की कंठी और पालकी तथा सिरोपाव [illegible]
सम्मान मिला। संवत् १८९० मे सिंघवी कुशलराजजी और रायपुर ठाकुर ने फौज लेकर [illegible]
वूड़सूँ के बागी आदमियो को परास्त किया, इसके नवाजिश मे आपको कोसाणां गाव जागीर में दिया। [illegible]
१९१३ मे इन्होंने गूलर ठिकाने पर दरबार का अधिकार कराया। सवत् १९१४ में गदर के [illegible]
आपने ब्रिटिश सेना को बहुत सहायता दी। इसके लिए सी० एम० वाल्टर और एडमण्ड [illegible]
आदि अंग्रेज अफसरों ने उन्हे कई अच्छे २ सार्टिफिकेट दिये। संवत् १९२० में इनका स्वर्गवास [illegible]
इनकी मातमपुर्सी के लिए दरबार इनकी हवेली पधारे।

सिंघवी सुखराजजी वनराजजी के छोटे पुत्र थे। ये सोजत, जोधपुर इत्यादि स्थानों [illegible]

श्री शिवराजजी का जन्म संवत् १९४० का है। सबसे पहिले आप कालू से संवत् १९५९ में
आये और वहाँ आकर आपने अपनी एक फर्म स्थापित की। इसके दो वर्ष बाद कोलार गोल्ड
में आपने अपनी बेंकिंग व लेन देन की एक फर्म स्थापित की जो इस समय तक बड़ी सफलता के
ल रही है। आपने अपने भतीजे समरथमलजी सिंघवी के पुत्र अमोलकचन्दजी को अपने नाम पर
लिया है। श्री अमोलकचन्दजी का जन्म संवत् १९७० का है। आप भी इस समय फर्म के
ाय में सहयोग देते हैं। श्री शिवराजजी बड़े सज्जन पुरुष हैं। आपने अपने व्यापार को
ही हाथों से बढ़ाया। आप धार्मिक और परोपकारी कामों में बहुत सहायता देते रहते हैं।

सेठ सुखराजजी जेठमलजी सिंघवी (रायमलोत), दारवा (बरार)

सिंघवी खुशालचन्दजी के पुत्र ताराचन्दजी जोधपुर स्टेट में सर्विस करते थे। आपको
र में गाँव और जमीन मिली थी। आप जोधपुर से पीपाड़ चले आये। इनके पुत्र अमी-
ी तथा प्रेमचन्दजी और अमीचन्दजी के पुत्र कस्तूरचन्दजी, पीरचन्दजी, मलूकचन्दजी एवं बख्तावरमलजी
थे।

सिंघवी पीरचन्दजी के पुत्र सुखराजजी और जुहारमलजी हुए और बख्तावरमलजी के लालचंदजी,
ालजी और चपालालजी हुए। इन बंधुओं में सिंघवी जुहारमलजी संवत् १८९०—९५ में पीपाड़
ापार के निमित्त दारवा (बरार) गये, और आपने वहाँ अपना कारोबार स्थापित किया। सिंघवी
मलजी के नाम पर चम्पालालजी, एवं सुखराजजी के नाम पर जेठमलजी (हीरालालजी के पुत्र)
ड़ से दारवा दत्तक आये।

सिंघवी हीरालालजी, सिंघवी हिन्दूमलजी के नाम पर सारथल (झालावाड़ स्टेट) में दत्तक गये
हिन्दूमलजी और हीरालालजी सारथल ठिकाने के कामदार रहे। हीरालालजी का शरीरान्त
४० में हुआ। इनके पुत्र जेठमलजी दारवा में दत्तक गये। इस समय जेठमलजी के यहाँ कृषि तथा
पार कार्य्य होता है। आपके पुत्र दुलीचन्दजी तथा सुगनचन्दजी हैं।

इसी तरह इस परिवार में प्रेमचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी इन्द्रराजजी तथा अभयराजजी हुए
ाबचन्दजी के पुत्र केसरीमलजी थे तथा केसरीचन्दजी के फूलचन्दजी तथा मुकुन्दचन्दजी नामक
हुए। इनमें मुकुन्दचन्दजी विद्यमान हैं।

स्व० श्री सिंघी सुखराजजी (भींवराजोत) जोधपुर

स्व० श्री सिंघी बच्छराजजी फोजबख्शी राज मारवाड़ जोधपुर

श्री सिंघी हमराजजी (भींवराज... हाकिम, जोधपुर

स्व० सिंघी जगमलजी दीवान राज मारवाड़, जोधपुर ।

स्व० सिंघी फतेमलजी दीवान राज मारवाड़, जोधपुर ।

सिंघी जसवन्तमलजी (जोरावरमलोत) जोधपुर ।

स्व० सिंघी मुकनमलजी (जोरावर-मलोत) जोधपुर ।

सिंघवी बछराजजी—सिंघवी बछराजजी का जन्म संवत् १९०५ में हुआ। आप मुत्सद्दी इस पतनकाल में भी जोधपुर के अन्तर्गत एक तेजपूर्ण नक्षत्र की तरह चमके, आप बड़े चतुर, बहादुर और दिलेर तबियत के मुत्सुद्दी थे। आप जोधपुर में, फौजबख्शी और स्टेट कौंसिल के मेम्बर थे। आपका परिचय इस ग्रन्थ के राजनैतिक महत्व नामक अध्याय में पृष्ठ ९६ पर दिया गया है। आपका स्वर्गवास संवत् १९७४ की माघ वदी ११ को हुआ।

सिंघवी हंसराजजी—सिंघवी बछराजजी के पुत्र सिंघवी हंसराजजी का जन्म संवत् १९३१ में हुआ। शुरू में आप मारोठ और सोजत में हाकिम रहे। फिर जोधपुर के सिटी मजिस्ट्रेट रहे। उसके पश्चात् आप संवत् १९८२ में साम्भर के और संवत् १९८६ में जोधपुर के हाकिम हुए। इस समय आप इसी पद पर काम कर रहे हैं। आपको भी स्टेट से हाथी और सिरोपाव प्राप्त हुआ। आप जोधपुर के मुत्सुद्दियों में अच्छे प्रभावशाली व्यक्ति हैं आपके पुत्र मैट्रिक में हैं।

सिंघवी सुखराजजी के छोटे पुत्र छगनराजजी थे। इनके पुत्र गणेशराजजी १९२२ में हुए। गणेशराजजी के पुत्र दौलतराजजी हुए।

सिंघवी गुलराजजी

ये सिंघवी भींवराजजी के पाचवें पुत्र थे। महाराजा भीमसिंहजी के समय में ये हुकूमत का काम करते रहे। महाराजा मानसिंहजी ने गद्दी नशीन होने पर इन्हें फौजबन्दी का सिरोपाव दिया। इसी साल चैत महिने में जब होलकर ने मारवाड पर चढाई की, तब ये और भण्डारी धीरजमलजी फौज लेकर भेजे गये। इन्होंने तथा शाह कल्याणमलजी लोढा ने होलकर को समझा बुझाकर वापिस भेजा। संवत् १८७२ में इन्द्रराजजी के मारे जाने पर इन्हें बख्शीगिरी इनायत हुई। जब कई सरदार और मुत्सुद्दियों ने मिलकर महाराज मानसिंहजी के नाबालिग युवराज छत्रसिंह को गद्दी दिलाई उस समय गुलराजजी बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। महाराजा मानसिंहजी के हित की दृष्टि से ये गद्दी दिलाने के पक्ष में न थे। इसका परिणाम यह हुआ कि कई वजनदार सरदार इनके विरुद्ध हो गये और संवत् १८७४ वैशाख सुदी ३ को इन्हें किले में चूक (कत्ल) करवा दिया गया। इनके पुत्र फौजराजजी उस समय बालक थे।

गुलराजजी के पुत्र फौजराजजी को संवत् १८८१ में खास रुक्का भेज कर दरबार ने जोधपुर बुलाया। यहाँ आने पर दरबार ने इन्हें खालसे की दीवानगी का काम सौंपा। उसके पश्चात संवत् से लेकर १९१२ तक ये फौजबख्शी का काम करते रहे। जब १९१२ में इनका स्वर्गवास हुआ

तरी वनी हुई है, जहाँ झुन्झारजी की पूजन होती है और प्रत्येक श्रावण सुदी ५ को वहां उत्सव
। जेठमलजी के हिन्दूमलजी, जोरावरमलजी, धनरूपमलजी और मानमलजी नामक ४ पुत्र हुए।
वी हिन्दूमलजी, सिंघवी अनोपचन्दजी के नाम पर दत्तक आये। इन्होंने बख्शीगिरी की।

सिंघवी जोरावरमलजी—इनके पिता की मृत्यु पर दरबार ने एक दिलासा का पत्र दिया
"तू किणी वातसूँ उदास हुयजे मती ... जेठमल दरवार रे अरथ आयो चाकरी रो
रछे।"

सवत् १८१९ में सिंघवी जोरावरमलजी ने पाली नगरी आवाद की। इसी से उस समय
जोरा की" इस नाम से सम्बोधित की जाती थी। सवत् १८१९ में जीतमलजी के हाथ से बचे हुए
सरदारों को दवाने के लिए ये सोजत के हाकिम बनाकर भेजे गये। वहाँ इन्होंने पाँचों को
या। १८२१ में इनको १२०५) की रेख के दो गाँव इनायत हुए। सम्वत् १८२४ में इन्होंने
जगतसिंह को सर किया। १८२८ में देसूरी के सोलंकी वीरमदे आदि जागीरदारों को दबाकर
अपने चचेरे भाई खूबचन्दजी, मानमलजी, शिवचंदजी, बनेचन्दजी और हिन्दूमलजी की मदद से
का परगना जमाया। १८२९ में घाणेराव चाणोद के मेड़तियों को आधीन किया। इसी साल
व मोकमपुर इनायत हुआ। दरवार की ओर से इन्हें १८४७ में बैठने का कुरुब और १८४८ में
लकी, और सिरोपाव इनायत हुआ। इसी वर्ष फागुन सुदी १२ को आप स्वर्गवासी हुए। आपकी
जोरावरमलोत कहलाती है।

सिंघवी खूबचन्दजी—सिंघवी जोरावरमलजी के बड़े भाई विरदभानजी के शिवचन्दजी, बनेचंदजी
खूबचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। सिंघवी खूबचन्दजी ने बीकानेर के २०० सिपाहियों को बड़ी वीरता
तत्परता के साथ केवल १० घोडों से भगा दिया। इसका वर्णन कर्नल टॉड साहब ने अपने इतिहास
। है। इसके बाद इन्होंने उमरकोट के दुर्ग को शांत किया तथा उसपर मारवाड़ का झण्डा फहराया।
ान के हाकिम इनके भानेज लोढ़ा शाहमलजी वनाये गये।

सिंघवी खूबचन्दजी बड़े मानी थे। ये मारवाड़ दरवार के सिवाय और किसी को प्रणाम नहीं
। जब माधोजी सिन्धिया ने जयपुर पर चढाई की और जयपुर के महाराजा प्रतापसिंहजी ने जोधपुर
द मांगी, उसमें खूबचन्दजी इसीलिए नहीं गये कि जयपुर दरवार को सिर नवाँना पड़ेगा। इसी
कारण पोकरन ठाकुर सवाईसिंहजी ने विजयसिंहजी के पददायत गुलाबरायजी को इनके खिलाफ़
ा और सवत १८४८ की श्रावण वदी अमावस्या को इनको षडयन्त्र से मरवा दिया। इसी तरह

सम्वत् १८०६ में जब महाराजा मानसिंहजी ने मेडते पर अपना अधिकार कर लिया। [illegible] सिंघवी फतहचन्दजी ने राठौड सरदारों पर पेश कशी" लगाई। आप संवत् १८०७ में [illegible] हुए जख्मी हुए। जब संवत् १८०८ में आषाढ़ सुदी २ को महाराजाधिराज [illegible] स्वामी हुए, उस समय सिंघवी फतेचन्दजी ने राजतिलक किया और महाराजा साहब ने [illegible] दीवानगिरी का दुपट्टा, सिरोपाव, पालकी आदि सम्मान प्रदान किये। इतना ही नहीं [illegible] की ओर से आपको कई गांव जागीरी में मिले। जिनकी वार्षिक आय हजारों रुपयों की था। [illegible] तक आप इस पद पर रहे। संवत् १८१३ में फतहचन्दजी ने महाराज रामसिंहजी से [illegible] और मेडता ले लिये और उन पर जोधपुर राज्य का अधिकार स्थापित कर दिया। [illegible] महाराज विजयसिंहजी के द्वारा मेडते की लडाई में भेजे गये। इस लडाई में विजय प्राप्त [illegible] अपनी वीरता का परिचय दिया। संवत् १८१४ में आपने मेडतियों को पूर्णरीति से [illegible] जेतारण, सोजत और मेडता आदि परगने जीते और उन्हें जोधपुर राज्य में मिला लिये। संवत् [illegible] आसोज सुदी ५ को सिंघवी फतहचन्दजी पुन इस राज्य के दीवान बनाये गये, इन्होंने अपना [illegible] युद्ध कौशल से मेडतियों को परास्त कर मारवाड से भगा दिया। संवत् १८२३ में फतहचन्दजी [illegible] ज्ञानमलजी को जोधपुर की हुकूमत दी गई। संवत १८२३ की चैत्र सुदी ५ को दरबार [illegible] फतेचन्दजी को जीवन पर्यंत के लिये दीवान का पद दिया तथा मोतियों का कंठा, सिरोपाव [illegible] पालकी तथा १४०००) वार्षिक की जागीरी प्रदान कर इनकी सेवाओं का सत्कार किया। [illegible] संवत् १८३७ की आसोज सुदी १० को स्वर्गवासी हुए।

सिंघवी ज्ञानमलजी—फतेहचन्दजी के स्वर्गवासी हो जाने के बाद भी संवत् [illegible] पुत्र ज्ञानमलजी इस राज्य के दीवान का काम करते रहे। ज्ञानमलजी तक इस घराने [illegible] प्रतिवर्ष आय की जागीर थी, जिसकी सनदें आज तक विद्यमान है। ज्ञानमलजी के पुत्र [illegible] को चैत्र सुदी ११ संवत् १८६६ में खानसमाई का पद मिला, जिसके साथ-साथ एक सिरोपाव [illegible] गया। आपके पुत्र कानमलजी हुए। मेडता परगने का गोठ नामक गांव आपको जागीर [illegible] गया था। आपने जेतारण और नाँवाँ की हुकूमत भी की।

सिंघवी ऋद्धमलजी—सिंघवी कानमलजी के सरदारमलजी तथा शिवरामदासजी नामक [illegible] थे। सरदारमलजी के पुत्र पृथ्वीराजजी तथा ऋद्धमलजी थे। इनमें श्री ऋद्धमलजी [illegible] में क्लर्क थे। आपको अपने उत्तम कार्यों के लिये कई प्रमाण-पत्र मिले हैं। आपका [illegible]

-- इसी प्रकार दूसरा परवाना इसी आशय का दिया कि—

श्रीरामजी

मिंघवी जीतमल सूँ म्हारो जुहार वाचजो तथा मा दीसा यूँ किणी बात रो विसवास मती राखजे था सूँ म कोई बात छानी राखसा के मरजी सिवाय जाब करसा तो रमेश्वर सूँ वे मुख हुसा जोधपुर सूँ उणजला माय सूँ यूँ लेने आया नहीं तो काका बाबा म ई सूँ मा सूद्दी होती सूँ था सूँ कीणी वातरो अतर असल हुसी तो ना राखसी मासूँ थारा मा अवसान हैं यूँ आदी रोटी खावण नु देवे तोही थासूँ और तरे न जाणू सूँ अठे तो सारी ान मानूद है काले ही आथोडीसी बेमरजादिक बात हुवण में आयगई सूँ रात की इसी दासी लाग रही है सूँ परमेश्वर जाणे छे एकर सूँ अठे आयने मिल जावे तो ठीक है संवत् १८५८ रा जेठ वद २ वार वुध

सिंघवी शिंभूमलजी—ये अपने अन्य बन्धुओं के साथ विखे विपत्ति के समय महाराजा मानसिंहजी की न मन धन से लगे थे। महाराजा मानसिंहजी इन पर बहुत विश्वास करते थे तथा उनसे इनका व्यवहार होता था। मानसिंहजी ने एक वार इनके लिये कहा है "जोरावर सुत पाँच शंभू तामे त।" जब जालोर घेरे में अन्नधन की कमी हुई उस समय शम्भूमलजी खुफिया तौर से जालोर के रसद व समाचार भेजते रहे थे। संवत् १८५८ में शम्भूमलजी के भाई जीतमलजी ने हिन्दूमलजी ख्तावरमलजी को जालोरगढ़ में रखा। साथ ही उन्होंने महाराजा भीमसिंहजी की ओर से घेरा सरदार मुत्सुद्दियों को समझाने की कोशिश की।

जब सवत् १८६० में मानसिहजी जोधपुरकी गद्दी पर बैठे तब जीतमलजी को पाली और नागोर मी और फतेहमलजी को घाणेराव देसूरी और सोजत का हाकिम बनाया। इसी तरह सवत् १८६३ जोधपुर पर बडी भारी फौज चढ़ आई थी उस समय भी इन बन्धुओं ने दरबार की अच्छी सेवा ी जिसके लिये दरबार ने इन्हें रुक्के आदि देकर सम्मानित किया था।

सिंघवी गम्भीरमली और इन्द्रमलजी—सिंघवी फतेहमलजी के पुत्र गम्भीरमलजी और जीतमलजी इन्द्रमलजी और नीबमलजी हुए। सवत् १८८८ में सिंघवी गम्भीरमलजी को और १८८२ में जी को जोधपुर राज्य के दीवान का सम्माननीय पद दिया गया। इस समय भी इन बन्धुओं ने की काफी सेवाए कीं। सवत् १८९२, १८९५ और १९१० में सिंघवी गम्भीरमलजी पुन २ दीवान गये जो सवत् १९०३ तक रहे। सवत् १८९७ में इन्द्रमलजी को भी पुन. दीवान का सम्मान प्राप्त इन बन्धुओं को महाराजा मानसिहजी ने ताजीम कुरब कायदा और जागीर देकर सम्मानित किया।

स्व० श्री सूरजमलजी सिंघी कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट
राज मारवाड, जोधपुर

स्व० श्री किस्तूरमलजी सिंघी हाकिम, जोधपुर

किशोरमलजी सिंघी (रायमलोत) जोधपुर

श्री रगरूपमलजी सिंघी
असिस्टेंट कस्टम सुपरिण्टेण्डेण्ट [illegible]

श्री सुगराज रूपराज सिघवी (धनराजोत) जालना

यह परिवार जोधपुर के सिघवी भींवराजजी के छोटे भाई धनराजजो का है। सिंघवी लखमीचन्दजी ावर्तसिहजी, जीवराजजी, भींवराजजी तथा धनराजजी नामक ४ पुत्र हुए इनमे भीवँराजजी के परिवार वेस्तृत परिचय ऊपर दिया जा चुका है।

सिंघवी धनराजजी—सवत् १८४३ (सन् १७८७) में जोधपुर महाराजा विजयसिहजी ने मर- के हमले से अजमेर को मुक्त किया, तथा यहाँ के शासक सिंघवी धनराजजी को बनाकर भेजा, लेकिन माल बाद ही मरहठों ने फिर मारवाड़ पर चढ़ाई की और मेड़ता तया पाटन की लड़ाइयों मे उनकी -य हुई। उस समय मरहठा सेनापति ने फिर अजमेर पर धावा किया। वीरवर सिंघवी धनराजजी ने मुट्ठी भर वीरों के साथ किले की रक्षा करते रहे और मरहठों को केवल किले पर घेरा डाले रह कर न्तोष करना पड़ा।

पाटन की पराजय के बाद महाराजा विजयसिंहजी ने धनराजजी को आज्ञा दी कि 'किला, ओं के सिपुर्द करके जोधपुर लौट आओ, लेकिन इस प्रकार किला छोड कर सिंघवी धनराजजी ने आना त नहीं समझा, अतएव स्वामी की आज्ञा पालन करने के लिए इन्होंने हीरे की कणी खाली, उनके तम शब्द ये थे कि "जाकर महाराज से कहो कि उनकी आज्ञा पालन का मेरे लिए केवल यही एक था। मेरे मृत शरीर के ऊपर से ही मरहठे अजमेर में प्रवेश कर सकते हैं" अस्तु।

सिंघवी जोधराजजी—सिंघवी धनराजजी के हसराजजी, जोधराजजी तथा सावन्तराजजी नामक ३ पुत्र। इनमें सिंघवी जोधराजजी के जिम्मे सवत् १८५८ की आसोज सुदी ३ को जोधपुर महाराजा दीवानगी का ओहदा किया, लेकिन कई कारणों से वहाँ के कई सरदार आपके खिलाफ हो गये, अतएव होंने सगठित रूप से आपकी हवेली पर चढ़ाई करके भादवा वदी २ सवत् १८५९ को आपका सिर काट ा, इससे महाराजा भीवसिहजी को वड़ा दुःख हुआ और इसका वदला लेने के लिये इनके चचेरे भ्राता घवी इन्द्रराजजी को भेजा। इन्द्रराजजी ने ठाकुरों को दण्ड दिया, तथा उनसे हजारों रुपये वसूल किये।

सिंघवी नवलराजजी—सिंघवी जोधराजजी के नवलराजजी विजैराजजी तथा शिवराजजी नामक ३ हुए। इनमे सिंघवी नवलराजजी ने भी जोधपुर में दीवानगी के ओहदे पर कार्य्य किया, आपका त छोटी अवस्था मे स्वर्गवास हो गया था। सिंघवी विजैराजजी पर किसी कारणवश जोधपुर दरबार की ाराजी हो गई अतः इस खानदान के लोग चण्डावल, वगडी, खेरवा, पाली आदि स्थानों में जावसे।

सिंघवी विजैराजजी के पुत्र जेतराजजी तथा अमृतराजजी थे इनमें जेतराजजी के खानदान के ग इस समय परभणी मे रहते है। सिंघवी अमृतराजजी के पुत्र जसराजजी जालना गये तथा सवत्

होनहार नवयुवक हैं। इस समय आप एफ० ए० में अध्ययन कर रहे हैं। आप अपने बैंकिंग का संचालन करते हैं। सिंघवी कानमलजी भी बैंकिंग का कारोबार करते हैं।

सिंघवी कस्तूरमलजी के बड़े भ्राता सिंघवी सोभागमलजी के पुत्र सिंघवी गणपत सिंघवी जसवंतमलजी हैं। सिंघवी रगरूपमलजी इस समय असिस्टेन्ट कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। आप ४२ साल की है। कई अच्छे २ आफिसरों से आपको सार्टीफिकेट मिले हैं। इनके पुत्र दशरथमलजी लखनऊ में एल० एल० बी० की शिक्षा पा रहे हैं।

सिंघवी सूरजमलजी जब कस्टम सुपरिन्टेंडेन्ट थे तब उनके पुत्र सुमेरमलजी असिस्टेन्ट सुप० थे। जब सूरजमलजी गुजर गये तब सुमेरमलजी कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट हुए।

सिंघवी बहादुरमलजी (सावतमलजी के पुत्र) के पश्चात् धनेमलजी, इन्द्रचन्दजी ना मलजी हुए। वर्तमान में सिंघवी सुमेरमलजी के पुत्र केवलमलजी ऑडिट ऑफिस में तथा ... नागौर में सर्विस करते हैं।

श्री जी० रघुनाथमल बैंकर्स हैदराबाद (दक्षिण)

इस खानदान का मूल निवास स्थान सोजत (जोधपुर स्टेट) है। आप श्वेताम्बर समाज के सिंघवी गौत्रीय सज्जन हैं। जोधपुर के सुप्रसिद्ध सिंघवी रायमलजी के वंश से आपका खानदान "रायमलोत सिंघवी" के नाम से प्रसिद्ध है। इस खानदान में सिंघवी ... बहुत प्रतापी हुए। इनके लड़के कनीरामजी और पोते सदारामजी हुए। आप दोनों सज्जनों की मारवाड़ में हुकूमतें रही। श्रीयुत सदारामजी ने दो विवाह किये। प्रथम विवाह आलमचन्दजी ... के यहाँ तथा द्वितीय सरूपचन्दजी कोठारी विराठियाँ वालों के यहाँ हुआ। आपके प्रथम विवाह से ... रामजी तथा द्वितीय से रूपचन्दजी, पूनमचन्दजी, जवाहरमलजी तथा जवानमलजी नामक पुत्र, इनमें से श्रीयुत पूनमचंदजी के पुत्र श्रीयुत गणेशमलजी हुए। आपका जन्म सम्वत् १९३० में ...

श्रीयुत पूनमचन्दजी सोजत से हैदराबाद गये और वहाँ जाकर आपने सबसे पहले नौकरी ... आपने थोड़े ही समय के पश्चात् 'पूनमचन्द गणेशमल' के नाम से दुकान खोली तथा इसके कुछ ही बाद गणेशमलजी को ढाई वर्ष की निपट नाबालिग अवस्था में छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए। ... मलजी की नाबालिगी में आपकी मातेश्वरीजी ने बहुत होशियारी के साथ दुकान के काम ... व्यवसाय को पूर्ववत तरक्की पर रक्खा। मगर दुर्दैव से आपका भी संवत् १९५३ में स्वर्गवास हो ...

स्व० सेठ गणेशमलजी सिंघवी (रायमलोत), हैदराबाद
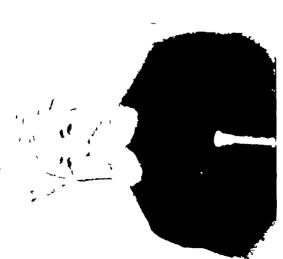
श्री रघुनाथमलजी सिंघवी (रायमलोत), हैदराबाद

श्री मोनालालजी कोठारी (जोरावरमल मोतीलाल)
सिकन्दराबाद

सिंघवी अनराजजी का शिक्षण केम्ब्रिज सीनियर तक हुआ। अंग्रेजी का आपको अच्छा अभ्यास आपने १२ साल पहले सोजत में श्री महावीर वाचनालय की स्थापना की। आपने सर प्रताप हाई जोधपुर में शिक्षक तथा जैन श्वेताम्बर विद्यालय मे प्रधानाध्यापकी का काम किया। १९३३ में मारवाडी विद्यालय बम्बई के मंत्री रहे थे। आप शिक्षा प्रेमी तथा उन्नत विचारों के सज्जन है। इस का इस समय बम्बई बम्बादेवी में अनराज सम्पतराज के नाम से आढ़त का तथा गुलबर्गा में म जीवराज, आदि भिन्न २ नामों से कपडे का व्यापार होता है।

सिंघवी दीपराजजी, सोजत

ऊपर के परिचय में बतलाया गया है कि सिंघवी मोतीरामजी के छोटे भ्राता सिंघवी माणकचंदजी। इसके बाद क्रमश छोगमलजी और कस्तूरमलजी हुए। सिंघवी कस्तूरमलजी के फूलचंदजी, हमीर ी तथा गभीरमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बंधुओं में से सिंघवी फूलचन्दजी ने मारवाड स्टेट में र दरोगाई का काम बड़ी मुस्तेदी से किया। आपकी होशियारी से प्रसन्न होकर सिरोही दरबार ने अपनी में सायरात का प्रबन्ध करने के लिये जोधपुर स्टेट से आपको मांगा। सिरोही में कस्टम का इन्होंने । इंतजाम किया। इसके लिये सिरोही दरबार ने इन्हें सार्टिफिकेट प्रदान किया। संवत् १९५५ की गुन सुदी १२ को नागोर में इनका शरीरान्त हुआ।

फूलचंदजी के कार्य्यों से प्रसन्न होकर इनके छोटे भाई हमीरमलजी को भी सिरोही स्टेट ने अपने स्थान दिया। आपके पुत्र सिंघवी दीपराजजी इस समय सिरोही स्टेट के आबू रोड नामक स्थान पर तहसीलदार हैं। आपके पुत्र देवराजजी तथा जसवतराजजी हैं। सिंघवी देवराजजी, Mutual ...jputana d Co Limited Beawar के मेनेजिंग एजंट हैं और इंटर में पढ़ते है। इनके पुत्र सिंह है।

सिंघवी सुकनमलजी (गाढमलोत) जोधपुर

सिंघवी सोनपालजी के पौत्र चापसीजी से भींवराजोत, धनराजोत, गढ़मलोत आदि शाखाएं हुई। गाढमलोत परिवार के कई व्यक्तियों ने राज्य के काम और हुकूमतें कीं। इनके अच्छे कामों के बदले में जोधपुर दरबारने इन्हें डीडवाना तथा परबतसर परगने में जागीर प्रदान की, जो अभी सिंघवी सुकनमलजी के परिवार के ताबे में है।

व्यापारिक दूरदर्शिता की ही तरह आपकी धार्मिक और परोपकारक वृत्ति भी बहुत बढ़ी हुई है। आपने हैदराबाद तथा सोजत की दादावाड़ियों में बहुतसी बातों की सुविधाएँ करवाई। आपके द्वारा बहुतसे विद्यार्थियों को गुप्त रूप से छात्रवृत्ति दी जाती है। आप शिवपुरी बोर्डिङ्ग हाउस को भी गुप्त रूप से बहुत सहायता प्रदान करते रहते हैं। हैदराबाद के मारवाड़ी सार्वजनिक जीवन में आप बहुत बड़ा हिस्सा रखते हैं। आपकी पुरानी फर्म पर "मेसर्स पूनमचन्द गणेशमल" के नाम से गल्ले का व्यापार होता है। आपकी हैदराबाद में बहुत बड़ी २ इमारतें हैं जिनसे काफी आमदनी होती है। आपका हैदराबाद में फर्म मेसर्स जी० रघुनाथमल बैङ्कर्स रेसिडेन्सी बाजार हैदराबाद है।

सिंघवी कस्तूरमलजी का परिवार, मेड़ता

यह परिवार भी रायमलोत सिंघवियों की एक शाखा से निकला हुआ है। यद्यपि इस परिवार वालों का सिलसिलेवार इतिहास उपलब्ध नहीं होता है फिर भी पुराने कागज पत्रों से यह बात मालूम होती है कि पहले इस परिवार के लोग राज्य और समाज मे बडे प्रतिष्ठित माने जाते थे। कुछ कागजों से ऐसा भी मालूम होता है कि किसी समय में इस परिवार वालों के लिये मारवाड़ राज्य से अथवा (?) सूल की माफ़ी के आर्डर मिले थे। इस परिवार मे बहादरमलजी, नाहरमलजी, कल्याणमलजी और कस्तूरमलजी हुए। श्री कस्तूरमलजी छबडे (टोंक) में लोढ़ों के यहाँ हेड मुनीमी का काम करते थे। आप मेड़ता और छबड़ा में बड़ी प्रतिष्ठा की निगाह से देखे जाते थे। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर कालू से सिंघवी गोवर्द्धनमलजी के पुत्र सिंघवी मिश्रीमलजी दत्तक लिये गये। वर्तमान में आप ही इस परिवार में बड़े व्यक्ति हैं। आप मिलनसार, सज्जन और योग्य पुरुष हैं। आपके श्री आनन्दमलजी और [illegible] लालजी नामक दो पुत्र हुए थे, मगर खेद है कि आप दोनों का कम उम्र में ही स्वर्गवास होगया।

शिवराजजी सिंघवी कोलार गोल्डफील्ड

इस परिवार के मालिकों का मूलनिवास स्थान अनन्तपुर कालू (मारवाड़) है। आप ओस-वाल समाज के सिंघवी गौत्रीय जैन श्वेताम्बर समाज के मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में श्री बुधमलजी हुए जिनके चार पुत्र हुए। इनमे से सबसे छोटे पुत्र अनोपचन्दजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम श्री गम्भीरमलजी तथा श्री सुखराजजी था। श्री सुखराजजी सिंघवी के श्री शिवराज नामक पुत्र हुए।

सिंघवी समरथमलजी की चतुरता से प्रसन्न होकर सन् १९०४ मे दरबार इनकी हवेली पर और एक परवाना दिया कि—' थे रियासतरा शुभचिन्तक पणा में रया जणी सु थाने सोना रो कुरब इनायत करवा म आयो है सो थारी हयाती तक पाल्या जावसी।"

संवत् १९४३ को चेत वदी ३ को दरबार ने इन्हें कुँए के लिये जमीन बख्शी इस प्रकार प्रतिष्ठा जीवन विताते हुए संवत् १९६२ की चेत सुदी ११ को इनका स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र माणकचंदजी चंदनमलजी विद्यमान हैं। सिंघवी माणकचंदजी का जन्म संवत् १९३३ में हुआ। अपने जी के गुजरने पर ८ सालों तक आप जेबखास के आफिसर रहे आपके पुत्र सरदारमलजी तथा मलजी है।

सिंघवी सुखमलोत परिवार, जोधपुर

सिंघवी सोनपालजी तथा उनके पुत्र सिंहाजी और पौत्र पारसजी का परिचय ऊपर सिंघवी की उत्पत्ति में दिया जा चुका है। पारसजी के पुत्र पदमाजी और उनके पुत्र शोभाचन्दजी हुये।

सिंघवी शोभाचन्दजी—इनको सम्वत् १६४७ में महाराजा उदयसिंहजी के समय में दीवानगी सम्मान मिला। १६६८ में जब मारवाड़ का परगने वार का काम बाँटा गया तब उसमें जोधपुर पर सिंघवी शोभाचन्दजी मुकर्रर किये गये। इन्होंने अपने भाइयों के साथ सिंदियों के मुहल्ले में गोड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर बनवाया। ये सम्वत् १६७० में मांडल (मेवाड) के झगडे में महा- सूरसिंहजी की बख्शीगिरी में उनके साथ गये। तथा वहाँ मारे गये। आपके सुखमलजी, रायमलजी, जी तथा परतापमलजी नामक ४ पुत्र हुए।

सिंघवी सुखमलजी—जब सम्वत् १६७८ में जोधपुर पर शाहजादा खुर्रम चढ़कर आया और शहर में गड़बड़ी मची। उस समय दरबार ने राठौड खाना खींवावत और सुखमलजी को जोधपुर की रक्षा पर रक्खा और भण्डारी लूणाजी को फौज के सामने भेजा। सम्वत् १६९० में महाराजा गजसिंहजी ने दीवानगी का सम्मान बख्शा। इस ओहदे पर आपने सम्वत् १६९७ की पौष वदी ५ तक बड़ी ता से कार्य्य किया, आपको दरबार ने बैठने का कुरब और हाँसल की माफी दी इन्होंने सम्वत् १६९१ में के फलोदी पार्श्वनाथजी के मन्दिर की मरम्मत कराई। तथा कोट, बाग और कुँआ ठीक करवाया। पुत्र सिंघवी पृथ्वीमलजी हुए।

सिंघवी पृथ्वीमलजी को अपने पिताजी के सब कुरब प्राप्त थे, महाराजा जसवंतसिंहजी के समय में

सिंघवी जोरावरमलोत

सिंघवी सोनपालजी का परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इनके ६ पुत्र हुए सिंघाजी थे। सिघाजी के चापसीजी, पारसजी गोपीनाथजी आदि ५ पुत्र हुए। इनमें राणोजी हंसराजजी हरचन्दजी दुरजानजी तथा सुन्दरदासजी नामक पुत्र हुए। इन भ्राताओं जी के ७ पुत्र हुए जिनमें छठे मूलचन्दजी थे। मूलचन्दजी के परिवार वाले मूलचंदोत सिंघवी मूलचदजी के अनोपचंदजी खुशालचंदजी वर्द्धमानजी तथा जेठमलजी नामक ४ पुत्र हुए। जेठमलजी के पुत्र हिन्दूमलजी जोरावरमलजी धनरूपमलजी तथा मानमलजी हुए। जोरावरमलजी परिवार जोरावरमलोत सिंघवी कहलाया। मूलचदोत, जेठमलोत और जोरावरमलोत सिंघवी परिवार की शाखाएँ हैं।

सिंघवी मूलचन्दजी—ये सिंघवी सुन्दरदासजी के पुत्र थे। आप संवत् १७७२ में तोपखाने के अफसर होकर लडाई में गये और वहीं कातिक सुदी ११ को काम आये। आपकी तक अहमदाबाद में मौजूद है।

सिंघवी जेठमलजी—सिंघवी मूलचन्दजी के अनोपचन्दजी, कुशलचन्दजी, जेठमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें अनोपचन्दजी दौलतपुर के हाकिम थे। महाराजा ये कृपा पात्र थे। सवत् १८११ में इन्होंने मेडते की लडाई मे मदद की, फिर इन्होंने नाहड़ा का मोरचा तोड़ा, इस प्रकार अनेकों लड़ाइयों में आप सम्मिलित हुए। सवत् १८११ की चैत सुदी महाराजा विजयसिंहजी ने एक रुक्का दिया उसमें लिखा था कि "तथा गढ़ ऊपर तुरकिशो मिल चैतवद १ ने वारला हाको कियो सूँ निपट मजबूती राखने मार हटाय दिया, सूँ चाकरी री तारीफ फरमावां" इत्यादि इस तरह के कई रुक्के मिले। इन्होंने दक्षिणियों से जालोर का किला वापिस विलाड़ा तथा भावी के आप हाकिम बनाये गये।

चापावत सबलसिंहजी महाराजा विजयसिंहजी से बागी* हो गये थे। उन्हें दबाने के संवत् १८१७ में २७ सरदारों और ४०० घोड़ों के साथ सिंघवी जेठमलजी विलाड़े पर चढ़ आए। सुदी ५ को जेठमलजी शत्रु पर टूट पडे। विरोधियों की तादाद ज्यादा थी फिर भी सबलसिंहजी और २२ सरदार मारे गये, और जेठमलजी का सिर भी काट डाला गया। कहा जाता है कि सिर धड़ लड़ता रहा। इस प्रकार ये वीर झुंझार हुए। इनके झुंझार होने के स्थान याने बिलाड़े में

* सरदार लोग महाराजा विजयसिंहजी से नाराज इसलिये होगये थे कि दरबार ने शराब का बेचना बंद करवा दिया था।

सिंघवी धीरजमलजी—आप दीवान सिंघवी तखतमलजी के पुत्र थे। इनको बैठने का कुरुब, ल की माफी और सेर की चौहट नामक सम्मान प्राप्त हुए। जेतारण मे आपको कुछ जागीर मिली जो तक आपके वंशवालों के अधिकार मे है। इन्होंने वहाँ धीरजमल की बावड़ी नामक बावड़ी तैयार करवाई। इनके पास खातासणी गाँव पट्टे था। उदयपुर दरबार ने भी समय २ नको खास रुक्के दिये थे। इनके तेजमलजी तथा तिलोकचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सिंघवी तेजमलजी तिलोकचन्दजी—तेजमलजी साँचोर नावाँ परवतसर के हाकिम तथा जोध- किले पर मुसरफ रहे। आपके खारी (जोधपुर) और डूँगरवास (मेडता) नामक गाँव जागीरी में रहे। त्री तिलोकचन्दजी भी १९४० मे पाली तथा १९५२ में फलोदी की हुकूमत करते रहे। सिंघवी ोकमलजी के सुमेरमलजी, हरखमलजी तथा गिरिधारीमलजी नामक ३ पुत्र हुये। इनमे से सिंघवी मलजी महाराज मानसिंहजी के दफ्तर दरोगा और हाकिम रहे। सिंघवी सुमेरमलजी के पुत्र ीरमलजी और उनके पुत्र नथमलजी हुए। नथमलजी के पुत्र भेरूमलजी दौलतपुरे में हाकिम रहे। के पुत्र रघुनाथमलजी जोधपुर स्टेट में सर्विस करते हैं। आपके पुत्र अचलमलजी और मोतीमलजी है। प्रकार इस खानदान में सिंघवी बखतमलजी के परिवार में छोटमलजी, और गोविंदमलजी है, सिंघवी राजजी के परिवार में बहादुरमलजी वगैरा है और सिंघवी उम्मेदमलजी के कुटुम्ब में कल्याणमलजी जसवन्तमलजी हैं।

सिंघवी कल्याणमलजी (सुखमलोत) मेड़ता

सिंघवी सुखमलजी तथा उनके पौत्र बख्तावरमलजी जोधपुर के दीवान रहे, उस समय इस वार ने अनेकों बहादुरी के कार्य्य किये, उनके पश्चात् सिंघी सवाईरामजी तक इस परिवार के पास कोई हास उपलब्ध नहीं है।

सिंघवी सामजीदासजी के बाद क्रमश भगोतीदासजी, मयाचदजी और सवाईरामजी हुए। वाईरामजी को जोधपुर दरबार महाराजा विजयसिंहजी ने संवत् १८२३ की आसोज सुदी ८ के दिन वणज पार करने के लिये सायर के आधे महसूल की माफी के हुक्म दिये। सवाईरामजी के हुकुमचन्दजी, लमचन्दजी, तथा अमरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें आलमचन्दजी के सूरजमलजी और णचदजी नामक दो पुत्र थे। सिंघी करणमलजी के पुत्र हजारीमलजी, चांदमलजी तथा चंदनमलजी ए। इनके समय में संवत् १८९९ की मगसर सुदी ७ को पुन. इस परिवार को आधे महसूल की

सिंघवी—बलदौटा

मुर्शिदाबाद का सिंघवी परिवार

मुर्शिदाबाद के ओसवाल परिवारों में यहाँ का सिंघवी परिवार बहुत अग्रगण्य और प्रसिद्ध है। ह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि भारतवर्ष के चुने हुए ओसवाल परिवारों में यह भी एक है। की जानकारी के लिये अब हम इस परिवार का संक्षिप्त विवरण नीचे लिख रहे हैं—

ऐसी किम्वदन्ति है कि संवत् ७०९ में रामसीण नामक नगर में श्री प्रद्योतनसूरि महाराज ने व को जैन धर्म का उपदेश देकर श्रावक बनाया। चाहड़देव के पुत्र बालतदेव से बलदोटा गौत्र पना हुई। इन्होंने अपने नाम से बलदोटा नामक एक गाँव आबाद किया। इनके पुत्र भीमदेव के ह, और अरिसिंह के पुत्र जयसिंह और विमलसिंह हुए। जयसिंह के पुत्र राणासगता इनके पुत्र इनके महिधर और महीधर के उदयचन्द नामक पुत्र हुए।

उदयचंद के तीन पुत्र हुए। श्रीखेताजी, नरसिंहजी और महीधरजी। इनमें से प्रथम पुत्र ने संवत् १२५१ के साल ५१ मोहता ऊपर प्रधाना किया। दूसरे पुत्र नरसिंहजी बलदौटा ने इसी चित्तौड़गढ़ पर एक जैन मन्दिर बनवाया। इसकी प्रतिष्ठा श्री मानसिंहसूरि द्वारा करवाई गई। पुत्र महीधरजी के ६ पुत्रों में से चापडदेव एक थे। चापड़देव के पश्चात् इनके वंश में क्रमश: सरस भीमसिंह, जगसिंह, विनयसिंह बालदेव, विशालदेव, संसारदेव, देवराज और आसकरण आसकरण के पाँच पुत्रों में से भीलोजी एक थे। इनके बाद क्रमश: करमा, वरसिंह, नरा, देवसिंह अरिसिंह हुए।

अरिसिंह के कोई पुत्र न था। अतएव इन्होंने प्रतिज्ञा की कि यदि मेरे पुत्र हो जाय तो यात्रा संघ निकालूं और उसमें एक लाख बत्तीस हजार रुपया खर्च करूँ। इससे इनके वर्द्धमान नामक पुत्र हुआ। प्रतिज्ञानुसार यात्रा की। साथ ही बावनी भी की। इसमें एक पिरोजी (मुहर) एक तथा एक लड्डू लहान स्वरूप बाँटा। बलदौटा सिंघवी देवसिंह के पुत्र काला और गोरा दोनों दुधड़ छोड़कर विशनगढ़ आये। सहा गोराजी के पुत्र दीताजी और दीताजी के रूपाजी हुए।

साहा रूपाजी ने शत्रुंजय का एक बहुत बड़ा संघ संवत् १५०९ की वैशाख सुदी ३ को निकाला। यह संघ यात्रा करता हुआ दान चौकी के पास पहुँचा तो हाजीखाँन के आदमियों ने इसे रोका। यह

इनके वडे भाई वनेचन्दजी और वडे पुत्र हरकचन्दजी भी मरवा दिए गये। बाद भेद खुलने पर महाराजा साहब भी बहुत पछताई।

सिंघवी जीतमलजी और उनके बन्धु—सिंघवी जोरावरमलजी के फतेमलजी, सूरजमलजी, मलजी, जीतमलजी, शम्भूमलजी और अणंदमलजी नामक ६ पुत्र हुए। जब कुँवर भींवसिंहजी ने अपने पिता महाराज विजयसिंहजी के जीतेजी ही जोधपुर पर अपना आधिपत्य जमाया, उस समय राज्य के अधिकांश सरदार उमराव, कुँवर भींवसिंहजी की मदद पर थे। जब भींवसिंहजी अपने चाचाओं और भतीजों को मरवाने की कोशिश कर रहे थे, उस समय पासवानजी ने कुँवर शेरसिंहजी और महाराज मानसिंहजी को जालोर लेजाने के लिए सिंघवी जीतमलजी और उनके बन्धुओं से कहा। इसपर जीतमल जी, फतेमलजी, शिम्भूमलजी और सूरजमलजी कुँवरों को लेकर जालोर दुर्ग चले गये। इसके पीछे ही भींवसिंहजी ने पासवानजी को मरवा डाला और सिंघवी जीतमलजी की हवेली लुटवा दी। विजयसिंहजी के विजयी हो जाने पर शेरसिंहजी जलौर से वापस चले आये और मानसिंहजी रहने लगे। फिर जब महाराजा विजयसिंहजी भी स्वर्गवासी हो गये और भींवसिंहजी ने जोधपुर पर अपना अधिकार जमा लिया, उस समय मानसिंहजी का अधिकार केवल जालोर और उसके समीपवर्ती परगनों तक रह गया था। इस समय इनके दीवान सिंघवी जीतमलजी बनाये गये थे। ऐसी स्थिति में भींवसिंहजी ने जालोर के चारों ओर घेरा डलवा दिया जिससे मानसिंहजी बडी कठिनाई में पड़ गये। मानसिंहजी की इस विकट स्थिति में सिंघवी शम्भूमलजी इधर उधर से लूट खसोट कर रसद आदि सामान जालोर पहुँचाते रहे। इतना ही नहीं, इधर-उधर से सेना इकट्ठी करने और भींवसिंहजी की फौजों में का काम भी ये ही सिंघवी बन्धु करते थे। ऐसी विपत्ति के समय में मदद पहुँचानेवाले सिंघवी बन्धुओं को मानसिंहजी ने अनेक रुक्के आदि देकर इनकी स्वामि भक्ति की बडी प्रशंसा की थी, इन में से कुछ हम नीचे उद्धृत करते है।

श्री रामजी

सिंघवी जीतमल सुँ म्हारो जुहार बाचने थूं मारेघणी बात छे फौजरा ... री ने काम काजरी मोकली थारा जीवने अदाछे पिण करा कऊँ अठे खजानों होवे तो ... पड़न देवा नहीं जोधपुर सूँ ही थूं लेने आयो छे ने सारो ही कामकाज था सूँ ... मेटी सारो कामकाज थारे भरोसे छे थारी चाकरी थने भरेदसा ने था सूँ कद उसरावण ... नहीं श्री जालधरनाथ सारी बात आछी करसी। फतेमल अणदमल मारी मरजी माफक ... करे छे। सम्वत १८५० रा जेठ वदी ३

लगभग १० हजार की आय की जागीर आपके पास रही, जिनमें जालौर परगने का साँथू गा[illegible]
अब भी इस परिवार के एक सज्जन के अधिकार में है। सिंघवी गम्भीरमलजी ने गुलाब सा[illegible]
रघुनाथजी का मन्दिर व महामन्दिर में एक रामद्वारा बनाया।

गम्भीरमलजी के पुत्र हमीरमलजी तथा पौत्र सिरेमलजी हुए। सिरेमलजी के [illegible]
भागासणी व साथू नामक ग्राम थे। इन्होंने राज्य का कोई ओहदा स्वीकार नहीं किया। इन[illegible]
मलजी व सुकनमलजी नामक २ पुत्र हुए। सिंघवी सुकनमलजी वीर प्रकृति के पुरुष थे। [illegible]
१९७० में अपनी जागिरी के गाँव साथू के अधिकारों की रक्षा के लिये राजपूत भोमियों से लड़ [illegible]
आये। इनके साथ ही इनके कामदार मेड़तिया लखसिंहजी भी अपनी स्वामिभक्ति का परिचय [illegible]
काम आये। इस समय सुकनमलजी के पुत्र मानमलजी सवाईमलजी तथा अचलमलजी मौजूद
मानमलजी अपनी जागीरी के गाँव साथू की देखरेख व महकमे खास में सर्विस करते हैं। आप[illegible]
पढ़ते हैं।

सिंघवी हिन्दूमलजी के पुत्र बख्तावरमलजी हवाला सुपरेन्टेण्डेण्ट थे। इस समय उन[illegible]
किशनमलजी जेतारण में रहते हैं।

दीवान सिंघवी इन्द्रमलजी के बाद क्रमशः दूलहमलजी तथा जगरूपमलजी हुए। इ[illegible]
जगरूपमलजी के पुत्र सिवदानमलजी तथा शिवसोभागमलजी महकमे खास में सर्विस करते हैं।

सिंघवी नींबमलजी उमरकोट के हाकिम थे। इनके समरथमलजी तथा दूलहमलजी नाम[illegible]
पुत्र हुए, जिनमें दूलहमलजी, सिंघवी इन्द्रमलजी के नाम पर दत्तक गये। सिंघवी सम[illegible]
हाकिम रहे। सिंघवी समरथमलजी के जसवन्तमलजी कानमलजी तथा केवलमलजी नामक ३ पु[illegible]
इनमें केवलमलजी मौजूद हैं। जसवन्तमलजी संवत् १९४४ से १९७० तक हाकिम रहे। इ[illegible]
गणेशमलजी भी हाकिम थे। गणेशमलजी के पुत्र शिवनाथमलजी तथा कल्याणमलजी हैं।

सिंघवी कानमलजी के नथमलजी, बुधमलजी और बीसनमलजी नामक पुत्र हुए।
सिंघवी नथमलजी समझदार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र रणजीतमलजी एवं सरदारमलजी राज्य कर्मचारी
गजमलजी बी० कॉम में अध्ययन कर रहे हैं। बुधमलजी के पुत्र गुलाबमलजी, मोतीमलजी, [illegible]
तथा चाँदमलजी राज्य कर्मचारी हैं। श्रीयुत चाँदमलजी बी० ए० जोधपुर के सिंघवी परिवारों में
ग्रेज्युएट हैं। आप प्राइवेट सेक्रेटरी आफिस में सर्विस करते हैं।

इसी तरह सिंघवी शंभूमलजी के परिवार में इस समय माधोमलजी तथा सरदारमलजी [illegible]
में भेरूमलजी तथा रामरूपमलजी हैं।

एक पन्ने की अगूठी भी प्रदान की थी। इस अगूठी पर आपका खिताब सहित नाम एवम् संवत् है। वह अगूठी अभी भी आपके वंशजों के पास विद्यमान है। आपने पैदल रास्तों से सब की यात्रा की और इसके स्मारक स्वरूप आपने एक डायरी भी लिखी जो हाल में मौजूद है। र्गवास सवत् १९४७ मे हुआ। आपके कोई पुत्र न होने की वजह से आपके नाम पर सरदारशहर धा गौत्र के बाबू निहालचन्दजी दत्तक आये।

बाबू निहालचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९०१ में हुआ। आप संवत् १९०५ में अजीमगंज आये। आपका विवाह मुर्शिदाबाद के सेठ मगनीरामजी टांक की पुत्री से संवत् १९१३ में हुआ। सी भाषा के विद्वान और शायर थे। संस्कृत का भी आपको अच्छा ज्ञान था। प्राय. अस्वस्थ कारण आपका समय अधिकतर धर्मध्यान ही में बीता। आपका स्वर्गवास सवत् १९५८ आपके बाबू डालचन्दजी नामक पुत्र हुए।

बाबू डालचन्दजी—आपका जन्म सवत् १९२७ में हुआ तथा आपका विवाह संवत् १९३५ में ाद निवासी बा० जयचन्दजी वेद की पुत्री से हुआ। आप जैन समाज में बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न गये हैं। प्राचीन जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार में, तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार में आपने बहुत धन ा। आप बड़े स्पष्ट वक्ता और अपने सिद्धान्तों पर अटल रहने वाले सज्जन थे। जिस समय में जूट बेलर्स असोसिएशन की स्थापना हुई, उस समय सर्व प्रथम आपही उसके सभापति थे। चित्तरजन सेवासदन कलकत्ता में भी आपने बहुत सहायता पहुँचाई। आपके द्वारा दस्तेदारों को भी बहुत सहायताएँ मिलती थीं। मृत्यु के समय आप कई लाख रुपये अपने ों को वितरण कर गये। आप बडे दूरदर्शी और व्यापार कुशल पुरुष थे। मेसर्स हरिसिंह निहाल मक फर्म को आपने बहुत उन्नति पर पहुँचाया। धार्मिक विषयों के भी आप अच्छे जानकार थे। स्वर्गवास सवत् १९८४ मे होगया। आपके एक पुत्र है जिनका नाम बाबू बहादुरसिंहजी है।

बाबू बहादुरसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९४२ के असाढ़ वदी १ को हुआ। आपका विवाह ९५४ मे मुर्शिदाबाद के सुप्रसिद्ध राय लखमीपतसिंह बहादुर की पौत्री से हुआ। मगर हालही ९८७ के भाद्रपद मे आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया। आपने हिन्दी, अंग्रेजी, बगला आदि ने उच्च श्रेणी की शिक्षा प्राप्त की है। आपका स्वभाव बडा सरल और मिलनसार है। आपको कारीगरी का बेहद शौक है। पुरानी कारीगरी की कई ऐतिहासिक वस्तुओं का आपने अपने यहाँ संग्रह कर रखा है। महाराज छत्रपति शिवाजी जिन राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, महादेव मूर्तियों की पूजा करते थे, तथा जो बहुमूल्य पन्ने की बनी हुई है। उनका आपने अपने यहाँ

१९७४ में स्वर्गवासी हुए। इस समय आपके पुत्र सुखराजजी विद्यमान हैं सिंघवी मुनराजजी का [illegible] संवत् १९२९ में हुआ, आपके पुत्र रूपराजजी है। इनके यहाँ रुई, गल्ला व आढ़त का काम होता है।

सिंघवी जेतराजजी के चिमनीरामजी तथा जसराजजी नामक पुत्र थे इनमें जसराजजी, [illegible] अमृतराजजी के नाम पर दत्तक गये। चिमनीरामजी के पुत्र सोहनराजजी हुए।

सिंघवी गजराजजी अनराजजी सोजत

संघपति सोनपालजी के चौथे पुत्र सिहाजी थे। उनके बाद क्रमश चापसीजी, [illegible] और गणपतजी हुए। सिंघवी गणपतजी के गाढ़मलजी तथा मेसदासजी नामक दो पुत्र थे। [illegible] मेसदासजी तक यह खानदान सिरोही मे रहा। वहाँ से सिंघवी मेसदासजी जब सोजत आये तब अपने साथ सरगरा, बांभी, नाई, सुतार आदि कई जातियों को लाये। इन जातियों के लिये आज भी [illegible] माफ़ है। सिंघवी मेसदासजी के लूणाजी, लालाजी तथा पीथाजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से [illegible] प्रपौत्र सिंघवी भीमराजजी और उनके पुत्रों ने जोधपुर राज्य में बहुत महत्वपूर्ण कार्य्य किये।

सिंघवी लूणाजी के पश्चात् क्रमश खेतसीजी, सामीदासजी, दयालदासजी दुरगदासजी और संतोषचन्दजी हुए। सिंघवी संतोषचन्दजी के मोतीचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक २ पुत्र हुए।

सिंघवी मोतीचंदजी बहुत बहादुर तबियत के व्यक्ति थे। छोटी उमर में ही इनको [illegible] जोधपुर दरबार भीमसिंहजी ने इन्हें एक बड़ी फौज देकर जालोर घेरे में भेजा। साथ ही [illegible] रुतबा भी बख्शा, जालोर घेरे में इन्होंने बहादुरी के साथ लड़ाई की। इसके अलावा सिंघवी मोतीचन्दजी के नाम पर कई हुकूमतें भी रहीं। सिंघवी मोतीचन्दजी (मोतीरामजी) के बाद क्रमश [illegible] और कालूरामजी हुए।

सिंघवी कालूरामजी व्यापार के निमित्त सोलापुर (दक्षिण) गये और वहाँ सन् [illegible] दुकान खोली। इनके जीवराजजी माधोराजजी और हरकराजजी नामक ३ पुत्र हुए। संवत् [illegible] लगभग जीवराजजी ने गुलबर्गा में (निजाम स्टेट) कपड़े का कारबार शुरू किया। संवत् १९५७ में [illegible] जी का, संवत् १९५८ में जीवराजजी का, संवत् १९६० मे माधोराजजी का तथा संवत् १९७५ में [illegible] जी का अंतकाल हुआ। इस समय कालूरामजी के तीनों पुत्रों की गुलबर्गा में अलग २ दुकानें हैं।

वर्तमान में जीवराजजी के पुत्र गजराजजी तथा हरखराजजी के पुत्र अनराजजी तथा [illegible] जी विद्यमान है। माधोराजजी के पुत्र किशनराजजी का संवत् १९८३ में स्वर्गवास हो गया है।

बाबू राजेन्द्रसिंहजी सिंघी, कलकत्ता.

बाबू नरेन्द्रसिंहजी सिंघी, कलकत्ता.

[illegible]कुमारसिंह सिंघी पु० बाबू राजेन्द्रसिंहजी, कलकत्ता.

बाबू देवकुमारसिंह सिंघी पु० बाबू राजेन्द्रसिंहजी, कलकत्ता.

सिंघी दीपराजजी, सोजत

सिंघी ताराचन्दजी कोठारी ग्र...

...दर्जी सिंघी (चुन्नीलाल श्रीचंद) लोनार

सेठ शिवराजजी सिंघी, कानार...

बाबू वीरेन्द्रसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९७१ में हुआ। आप इस समय बी० एस• सी०
ध्ययन कर रहे हैं।

इस समय इस परिवार की जमींदारी चौबीस परगना, पूर्णियां, मालदह, मुर्शिदाबाद इत्यादि
में फैली हुई है। इसके अतिरिक्त मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द के नाम से कलकत्ता, सिराजगंज,
गंज, फारबीसगंज, सिरसाबाड़ी, भड़गामारी इत्यादि स्थानों पर आपका जूट का व्यापार होता है।
हेड आफिस कलकत्ता है।

सिंघवी--डीडू

सिंघवी खेमचन्दजी का खानदान, सिरोही

कहा जाता है कि उज्जैन जिले के ढोडर नामक स्थान में परमार वंशीय राजा सोम राज करते
उनकी बीसवीं पुश्त में माधवजी नामक व्यक्ति हुए, जिन्होंने जैनाचार्य्य श्री जिनप्रसन्नसूरिजी से
प्राप्ति की इच्छा से जैन धर्म अङ्गीकार किया। उस समय से इनका गौत्र डीडू और इनकी कुल
केश्वरी मानी गई। माधवजी की पांचवी पुश्त में समधरजी हुए इनके पुत्र नानकजी ने शत्रुंजय
। निकाला तब से ये सिंघवी कहलाये। * इस खानदान में आगे चलकर सिंघवी श्रीवन्तजी हुए
ने सिरोही स्टेट में दीवानगी की। राजपूताने की सभी रियासतों पर आपका बड़ा व्यापक प्रभाव
श्रीवन्तजी के पुत्रों में रेखाजी और सोमजी का परिवार चला।

सिंघवी रेखाजी का परिवार—रेखाजी के पौत्र सिंघवी लखमीचन्दजी हुए। इनके तीन पुत्र हुए,
नाम खूबचन्दजी, हुकुमाजी और हीरानन्दजी थे। सिंघवी हीरानन्दजी के चार पुत्र हुए।
नाम अदजी, चैनजी, जोरजी और गुलाबचन्दजी था। इनमें इस समय अदजी के परिवार में
अनराजजी, सिंघवी मिलापचन्दजी और सिंघवी टेकचन्दजी हैं। सिंघवी अनराजजी के पुत्र
दजी सिरोही में वकील है, सिंघवी मिलापचन्दजी जोधपुर ऑडिट ऑफिस में सेक्शन हेड हैं और
टेकचन्दजी बी० ए० फेनिक्स मिल बम्बई में सेक्रेटरी है। सिंघवी चैनजी के वंश में
पौत्र सिंघवी समरथमलजी इस समय सिरोही हिज हाइनेस के असिस्टेण्ट प्रायव्हेट सेक्रेटरी हैं।

* यहाँ पर यह बात खयाल में रखना चाहिए कि जोधपुर के नाग पूजक सिंघवियों से ये सिंघवी बिलकुल
हैं। उनकी उत्पत्ति ननवाणा बोहरो से है और इनकी परमार राजपूत से। —लेखक

सिंघवी गुलराजजी के रूपराजजी एवं रूपराजजी के हरखमलजी तथा [illegible]
२ पुत्र हुए। हरखमलजी के पुत्र सिंघवी गणेशमलजी संवत् १९७६ में गुजरे, इसी तरह [illegible]
के पुत्र भेरूमलजी १९७४ में गुजरे।

सिंघवी गणेशमलजी के पुत्र सुकनमलजी का जन्म संवत् १९५९ की [illegible]
है। आप राज मारवाड़ में पोतदार हैं और इस समय हुकूमत बाड़मेर में काम करते हैं। [illegible]
भेरूमलजी के पुत्र मुकनमलजी और मोहनलालजी जोधपुर में व्यापार करते हैं।

सिंघवी समरथमलजी का खानदान सिरोही

संवत् १६५३ में इस परिवार के पुरुषों ने भाउवा (जालोर) में महावीर स्वामी का [illegible]
मन्दिर बनवाया तथा गिरनार और शत्रुंजय के संघ निकाल कर रूपा का कलश और थाल [illegible]
इसलिये यह परिवार सिंघवी कहलाया। बहुत समय बाद रतनसिंहजी के पुत्र नारायणसिंहजी [illegible]
(भीनमाल) से सिरोही आये। इनके बाद क्रमशः खेतसीजी पन्नाजी और रूपाजी हुए। [illegible]
कपड़े का व्यापार करते थे। इनके पुत्र कपूरचंदजी, धन्नाजी, केसोंगजी, लूणाजी, कलुवाजी, [illegible]
सिंघवी धन्नाजी भी कपड़े का व्यापार करते रहे। इनके समरथमलजी तथा रतनचन्दजी नामक दो पुत्र [illegible]

सिंघवी समरथमलजी ने सिरोही में अच्छा सम्मान पाया। इनका जन्म संवत् १९१२ [illegible]
वदी ८ को हुआ। स्वर्गवासी होने से पहिले १५ साल तक ये जेवखास के आफीसर रहे इसके साथ [illegible]
सालों तक रेवेन्यू कमिश्नर का कार्य्य भी इनके जिम्मे रहा। आपका प्रभाव दीवान से भी अधिक था। [illegible]
१८९२ की ५ मार्च को सिरोही दरबार महाराव केशरीसिंहजी ने इनको लिखा —'राज सरूपगढ़ [illegible]
जी का रियासत के साथ तनाजा था उसे निपटाने तथा मटाना, मगरीवाड़े के सरहदी तनाजे का [illegible]
तथा हन्टर साहब जोधपुर गये तब उनकी पेशवाई वगैरा के इन्तजाम में बहुत होशियारी से काम [illegible]

संवत १९४६—४७ की सिरोही स्टेट की एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट में एडमिनिस्ट्रेटर ने इनके [illegible]
लिखा है कि —राज के मुल्की मामलात को तय करने में इन्होंने बहुत मदद दी इसके लिए मैं इनका
आभारी हूं।

इसी तरह रेजिडेंट वेस्टर्न राजपूताना व सिरोही स्टेट के दीवानों ने भी सरहदी तनाजे [illegible]
बुद्धिमत्ता पूर्वक निपटाने के सम्बन्ध में आपको अनेकों सार्टिफिकेट देकर आपकी अक्लमन्दी, कारगुजारी, [illegible]
[illegible]दारी और तनदेही की तारीफ की।

इन्होंने बडे बड़े ओहदों पर काम किया, पृथ्वीमलजी के विजेमलजी तथा दीपमलजी नामक २ पुत्र हुए। विजेमलजी के बख्तावरमलजी या बखतमलजी, तखतमलजी, जोधमलजी, तथा जीवणमलजी नामक ४ पुत्र हुए, और दीपचन्दजी के मनरूपमलजी, इन्द्रभाणजी, चन्द्रभाणजी, उदयभाणजी तथा राजभाणजी नामक ५ पुत्र हुए।

सिंघवी बख्तावरमलजी और तखतमलजी—विजेमलजी के ४ पुत्रों में से प्रथम २ पुत्र बड़े प्रतापी हुए, जब महाराजा अजितसिंहजी के जमाने में मारवाड पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। तब इन चारों भाइयों ने मुसलमानों के राज्य में रहना पसन्द नहीं किया और आप जोधपुर छोड़कर बीकानेर चले गये। बीकानेर महाराज श्री अनूपसिंहजी से गढ़ सगर में इनकी भेंट हुई, महाराज ने खास रुक्का देकर इन भाइयों को खातरी दिलाई। एक रुक्के में लिखा था कि—

> "सिंघवी बखतमल तखतमल बीकानेर छे सो इज्जत कायदो भली भाँति राखजो सीरोपाव दीजो सम्वत् १७५२ रा मिती भादवा बदी १२ मुकाम गढ़सगर।"

जब जोधपुर से मुसलमानों का कब्जा हटा, और महाराज अजितसिंहजी गद्दी पर बैठे, उस समय उनको योग्य दीवान की आवश्यकता हुई अतः सिंघवी बखतावरमलजी, तखतमलजी, जोधमलजी और जीवणमलजी को जोधपुर बुलाया और सम्वत् १७६३ में सिंघवी बख्तावरमलजी तथा तखतमलजी को दीवानगी के ओहदे का सम्मान दिया।

सिंघवी जोधमलजी ने भी कई बड़े-बड़े ओहदों पर काम किया जब सम्वत् १७८० में महाराजा श्रीअभयसिंहजी के पास गुजरात के सूबे का अधिकार हुआ, उस समय अहमदाबाद के सब से बड़े जिले पेटलाद में सिंघवी जोधमलजी को सूबेदार बनाकर भेजा। आपने उस जिले की तीन साल की आमदनी १६०५०००) एकत्रित किए।

सिंघवी हिन्दूमलजी—सिंघवी चन्द्रभानजी के पुत्र हिन्दूमलजी थे। आपने सम्वत् १८१० से ३२ तक मारवाड़ राज्य की फौजबख्शी (कमांडर-इन-चीफ) का काम किया आपके पुत्र उम्मेदमलजी नागौर व फलोदी के हाकिम रहे। आप बहुत अच्छे फौजी आफिसर थे। सम्वत् १८११ में आपने सिरोही की लड़ाई में बहुत बहादुरी दिखाई और सिरोही फतहकर वहाँ पर जोधपुर दरबार का शासन कायम किया। इससे महाराजा मानसिंहजी ने आपको प्रसन्न होकर प्रशंसा का रुक्का तथा ३ गाँव जागीर में दिये। जिनमें से रेहतड़ी नामक एक गाँव अब भी इनके परिवार के ताबे में है। राज्य की सेवा करते हुए में ही इनका शरीरान्त हुआ।

सिंघवी दौलतसिंहजी के तीसरे पुत्र मालजी के परिवार मे सिंघवी कस्तूरचन्दजी ने संवत् १९१९, और १९३२ मे सिरोही स्टेट की दीवानगी का काम किया। इन्हीं मालजी के दूसरे पुत्र माणक- के परिवार मे राय बहादुर जवाहरचन्दजी बडे नामाङ्कित हुए। आप संवत् १९४८,५५ और ५९ दा तीनवार सिरोही स्टेट के दीवान रहे। संवत् १९५६ के अकाल मे आपने गरीबों की बहुत की, इसके उपलक्ष्य मे गवर्नमेण्ट की ओर से आपको "राय बहादुर" का सम्माननीय खिताब प्राप्त आपका स्वर्गवास संवत् १९६० मे हुआ। आपके छ पुत्र हुए जिनमे सिंघवी नरसिंहमलजी जारीमलजी विद्यमान है। शेष चार पुत्रों के वशज भी इस समय विद्यमान है।

सिंघवी दौलतसिंहजी के चौथे पुत्र फतेचन्दजी के परिवार मे सिंघवी पूनमचन्दजी हुए, आप यों तक सिरोही स्टेट में रेवेन्यू कमिश्नर रहे। गवर्नमेण्ट की ओर से आपको राय साहब का सम्मा- खिताब प्राप्त हुआ। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ। इनके समरथमलजी, भभूतमलजी दुलिचन्दजी नामक तीन पुत्र है। श्री भभूतमलजी (बी० पी० सिंघई) बडे उत्साही, धार्मिक, त और साहित्य प्रेमी सज्जन है। सार्वजनिक कार्य्यों मे आप बडी दिलचस्पी से भाग लेते है। छोटे भाई दुलिचन्दजी एग्रिकल्चर कॉलेज पूना में पढ़ते है।

सिंघवी सामजी के तीसरे पुत्र सिंघी विजयराजजी के नेमचन्दजी और केसरीमलजी नामक दो हुए। इनमे नेमचन्दजी का परिवार पाली और घाण में निवास करता है। केसरीमलजी के परिवार में क्रमशः न्दजी, किशनजी, जेठाजी और हिन्दूमलजी हुए। इनमें सिंघवी जेठाजी बडे धनाढ्य व्यक्ति थे। श्री हिन्दूमलजी के पुत्र रूपचन्दजी, हँसराजजी और ताराचन्दजी थे। सिंघवी रूपचन्दजी पोस्टल विभाग डेटर आफिस राजपूताना में मेनेजर रहे। सिंघवी हँसराजजी २५ सालों तक पोस्ट मास्टर रहे। श्री रूपचन्दजी के मूलचन्दजी, खेमचन्दजी और हिम्मतमलजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें सिंघवी चन्दजी हँसराजजी के नाम पर और हिम्मतमलजी ताराचन्दजी के नाम पर दत्तक गये।

सिंघवी खेमचन्दजी का जन्म १९४१ में हुआ और सन् १९०८ में आपने एम० ए० की डिग्री हासिल की। सिरोही स्टेट मे आप सब से पहले एम० ए० है। प्रारम्भ में आप सिरोही सेटलमेण्ट आफिसर बान के परसनल असिस्टेण्ट रहे व उसके पश्चात् असिस्टेण्ट सेटलमेण्ट ऑफिसर होकर रेवेन्यू कमि- हुए। आपको महाराव केसरीसिंहजी व कई अंग्रेज अफसरों ने अच्छे २ सार्टीफिकेट दिये। वाइस- के आर्डर से तत्कालीन ए० जी० जी० आरमी डिपार्टमेन्ट ने आपके कार्य्यों की गजट ऑफ् इण्डिया मे प्रशंसा की। सन् १९२४ से १९२९ तक आप जोधपुर स्टेट में लेण्ड और रेव्हेन्यू सुपरिटेण्डेण्ट रहे। इस समय आप देलवाड़ा जैन टेम्पल और बामनवाड़जी जैन टेम्पल की मैनेजिंग कमेटी के प्रेसिडेण्ट है। आपके छोटे

माफ़ी के हुकुम मिले ! इससे ज्ञात होता है कि संवत् १८०० मे १९०० तक इस परिवार [illegible]
उन्नति पथ पर था तथा मेडते के अच्छे समृद्धिशाली कुटुम्बों मे इस परिवार की गणना था।

सिघवी चादमलजी के पुत्र धनरूपमलजी और चंदनमलजी के रिक्वगासजी थे। [illegible]
अजमेर वाले भडगातिया कुटुम्ब के यहाँ मुनीम रहे तथा सवत् १९५९ में गुजरे। इनके मनसुख[illegible]
कल्याणमलजी नामक दो पुत्र हुए। सिघवी मनसुखदासजी, जोधपुर मे लोढ़ों के यहाँ [illegible]
समय इनके पुत्र शिखरचंदजी उम्मेदपुर मे अध्यापक हैं। सिघवी कल्याणमलजी का [illegible]
हुआ, आपके यहाँ इस समय लेन-देन का व्यवसाय होता है।

सिघवी हीराचन्दजी अनोपचन्दजी (रायमलोत) नागोर

सिंघवी रायमलोत खानदान मे सिघवी साहमलजी हुए, इनको जोधपुर दरबार [illegible]
भीमसिंहजी ने चेनार में २ कुवे और १ बावडी की आमद बतौर जागीरी के इनायत की। [illegible]
शिवदासजी आगरा फौज की ओल में दिये गये और वहीं काम आये। आगरे में काम आने [illegible]
जोधपुर दरबार ने इनको ९ खेत जागीरी में दिये, जो अभी तक इनके परिवार के पास है। [illegible]
साहमलजी के प्रपौत्र सिंघवी शिवदानमलजी नागोर के कोतवाल थे।

सिंघवी साहमलजी के बाद क्रमश· श्रीचन्दजी, पेमराजजी, कपूरचंदजी, साहबचन्दजी, [illegible]
तथा मेहतावचन्दजी हुए। सिंघवी मेहतावचन्दजी के हीराचन्दजी अनोपचन्दजी केसरीचन्दजी तथा [illegible]
नामक ४ पुत्र हुए। हीराचन्दजी १५ सालों तक नागोर म्यु० के मेम्बर रहे। आप [illegible]
करते हैं। सिघवी अनोपचन्दजी वकालत करते हैं। सिंघवी केसरीचन्दजी बी० ए०, जोधपुर [illegible]
ए० जी० जी० के यहाँ वकील थे। आप फलोदी, मेडता पाली और बाली के हाकिम भी रहे थे। [illegible]
आपकी विधवा पत्नी को आप के नाम की पेंशन मिलती है। सिघवी अनोपचन्दजी के पुत्र [illegible]
बी० ए० एल० एल० बी० जोधपुर मे वकालत करते हैं।

[डीवाड़ा (मद्रास) ले आये। गुडीवाडा आने के बाद इस दुकान पर तातेड ताराचन्दजी के पुत्र
ी का भाग सम्मिलित हुआ, आप सिरोही के पाडीव नामक ग्राम के निवासी हैं। गुडीवाड़ा
द इस दुकान ने अच्छी तरक्की व इज्जत पाई। सेठ मछालालजी तातेड ने गुड़ीवाड़ा में जैन
नवाने में और अमीजरा पार्श्वनाथजी की प्रतिमा के उद्धार और प्रतिष्ठा में आस पास के जैन
हायता से बहुत परिश्रम उठाया। मछालालजी विचारवान व्यक्ति हैं।

सेठ छोगमलजी तथा वरदीचदजी मौजूद हैं। छोगमलजी के पुत्र जेठमलजी, तथा वरदीचन्दजी
लजी वस्तीमलजी, जीवराजजी तथा शांतिलालजी हैं। आप लोगों के यहाँ कपड़े तथा ब्याज का
है। इस दुकान के भागीदार सेठ प्रागचंद कपूरजी तथा भूरमल केसरजी हैं।

सेठ मानकचन्द गुलजारीमल सिंघवी देहली

यह खानदान जैन स्थानकवासी आम्नाय का माननेवाला है, और लगभग १०० सालों से देहली
र कर रहा है। इस खानदान में लाला बख्तावरमलजी सिंघवी हुए, आपके लाला शादीरामजी,
निकचन्दजी, लाला मानिकचन्दजी, लाला गुलाबसिंहजी, लाला मुन्नीलालजी और लाला छुट्टनलालजी
हुए। इनमें इस खानदान में अच्छे प्रतिष्ठित पुरुष हुए। आपका नामक
त् १९०३ में तथा स्वर्गवास संवत् १९७३ में हुआ। आपके पुत्र लाला गुलजारीमलजी का जन्म
९४१ में तथा स्वर्गवास संवत् १९८३ में हुआ। लाला गुलजारीमलजी भी बड़े योग्य पुरुष थे।
मनोहरलालजी तथा मदनलालजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें मनोहरलालजी का जन्म संवत् १९७२
। आप दोनों भ्राता सज्जन व्यक्ति हैं, तथा व्यापार का संचालन करते हैं।

सेठ चुन्नीलाल श्रीचन्द सिंघवी, लोनार (बरार)

इस परिवार का मूल निवास बोरावड (मारवाड़) है। वहाँ से लगभग ६० साल पहिले
दरामजी सिरोया सिंघवी व्यापार के लिए लोनार आये और यहाँ आकर इन्होंने व्यापार आरम्भ किया,
१९३५ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके रतनचन्दजी तथा चुन्नीलालजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ
लजी सिंघवी का जन्म सं० १९०५ में हुआ था, आपके हाथों से दुकान को तरक्की मिली। संवत्
में इनका शरीरावसान हुआ।

देखकर संघ के गण्यमान्य व्यक्ति हाजीखाँन के पास गये। यहाँ हाजीखाँन ने रूपाजी ...
लिया। इसका कारण यह था कि एक बार इन्होंने अजमेर में हाजीखाँन को एक बहुत बड़ी विपत्ति ...
था। हाजीखाँन ने इन्हें देखते ही पूछा "कहाँ जा रहे हो।" इसके प्रत्युत्तर में रूपाजी ने ...
तीर्थ यात्रा को जारहा हूँ। हाजीखाँ ने बदले का ठीक उपयुक्त समय समझ कर उनसे ...
मैं अपनी तरफ से करवाऊँगा। इसमें जितने भी रुपये मोहरें खर्च होंगी, सब मैं खर्च करूँगा ...
कुछ इनकार करने पर भी रूपाजी को हाजीखाँन की बात मानना पड़ी। हाजीखाँ संघ के साथ ...
बड़ी धूमधाम से श्री शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा की। एक स्वामी वात्सल्य किया गया। साथ ...
तथा एक २ लड्डू लहान स्वरूप बाँटा गया। इस संघ में ९९०००) खर्च हुए। इसी ...
लोगों ने आपको संघवी की पदवी प्रदान की।

सङ्घ रूपाजी के पश्चात् क्रमश भदाजी, इसरजी, कुँवरोंजी, विरधोजी, लखाजी, ...
राजजी, उत्तमाजी, जीवराजजी, लूणाजी, वेनोजी, किसनोजी, कालूजी, हेमराजजी, रायसिंहजी, ...
(दत्तक), बोरडियाजी और दयालदासजी हुए। दयालदासजी के दो पुत्र हुए। ...
सवाईसिंहजी।

इस परिवार के पुरुष बाबू सवाईसिंहजी बाबू रायसिंहजी (हरिसिंहजी) और बा० ...
नामक अपने दो पुत्रों को लेकर सम्वत् १८४९ के माघ सुदी ५ को अजीमगंज मुर्शिदाबाद में ...
आपने अपना व्यापार आसाम प्रांत के अंतर्गत ग्वालपाड़ा नामक स्थान में प्रारंभ किया। ...
वास संवत् १८८३ में हो गया।

बाबू रायसिंहजी—आपका जन्म संवत् १८२९ के चैत्र माह में हुआ। अपने पिताजी ...
के पश्चात् आपने अपने कारोबार का सचालन किया। आपकी पुत्री श्रीमती गुलाबकुँवरी का विवाह ...
के प्रसिद्ध जगत सेठ इन्द्रचन्दजी के साथ हुआ। आपका दूसरा नाम हरिसिंहजी भी था। ...
नाम से कलकत्ते की मशहूर फर्म मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द की स्थापना हुई। आपका स्वर्गवास ...
१९०० में हुआ। आपके हुलासचन्दजी नामक पुत्र हुए।

बाबू हुलासचन्दजी—आपका जन्म सवत् १८५४ के करीब हुआ। मेसर्स हरिसिंह ...
नामक फर्म को आप ही ने स्थापित किया। आप बड़े बुद्धिमान, दूरदर्शी, व्यापारकुशल ...
प्रकृति के पुरुष थे। श्रावक के १२ व्रतों का आप पूर्ण रूप से पालन करते थे। दिल्ली के ...
मुगल सम्राट् बहादुरशाह के दरबार में भी आपने कुछ समय तक कार्य्य किया था। आपके ...
हो कर बादशाह ने आपको खिल्लत तथा राय की पदवी प्रदान की थी। इस खिल्लत के साथ ...

भण्डारी

मारवाड़ के इतिहास के पृष्ठ भण्डारियों के गौरवान्वित कार्यों से प्रकाशमान हो रहे हैं। …ो कार्य्यावली का विवरण राजस्थान के इतिहास में एक अभिमान की वस्तु है। मारवाड़ के भण्डारियों का एक विशेष युग रहा है और उन्होंने अपने समय में न केवल मारवाड़ की राज… सञ्चालित किया वरन् उन्होंने तत्कालीन मुगलसाम्राज्य की नीति पर भी अपना विशेष … है। दुःख है कि इस गौरवशाली वंश का क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध नहीं है। मारवाड़ … ख्यातों, अंग्रेजी, संस्कृत और फारसी के प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थों में भण्डारियों के इतिहास … बिखरी हुई है, उसी के आधार से उनके इतिहास पर कुछ प्रकाश डाला जा रहा है।

भण्डारी वंश की उत्पत्ति—इस वंश की उत्पत्ति नाडोल के चौहान राजवंश से हुई है। विक्रम … ग्यारहवीं सदी में नाडौल में राव लाखणसी नामक एक प्रतापशाली राजा हुआ। यह शाकंभरी …) के चौहानवंशी राजा वाक्पतिराज का पुत्र था। इसका शुद्ध नाम लक्ष्मण था। अचलेश्वर …ें लगे हुए सम्वत् १३७७ के लेख से मालूम होता है कि लाखणसी ने अपने बाहुबल से नाडोल …र नवीन राज स्थापित किया। इसके समय के विक्रम सम्वत् १०२४ और १०३९ के दो … कर्नल टॉड साहब को मिले थे। कर्नल टॉड लिखते हैं.—

"चौहानों की एक बड़ी शाखा नाडोल में आई, जिसका पहिला राजा राव लाखण था। उसने …३९ में अणहिलवाड़े के राव से यह परगना छीन लिया। गजनी के बादशाह सुबुक्तगीन व … सुलतान महम्मद ने राव लाखण पर चढ़ाई करके नाडोल को लूटा और वहां के मन्दिर तोड़ … लेकिन चौहानों ने फिर वहाँ पर अपना दखल जमा लिया। यहाँ से कई शाखाएँ निकलीं, …का अन्त देहली के बादशाह अल्लाउद्दीनखिलजी के वक्त में हुआ। राव लाखण अनहिलवाड़े …ण (सायर का महसूल) लेता था और मेवाड़ का राजा भी उसे खिराज देता था" * राय …

* राव लाखण द्वारा मेवाड़ के राजा से खिराज लिये जाने की पुष्टि निम्न लिखित पुराने दोहे से भी …

समय दस स उँचालिश वार एक ता पाटणा पोला पेप
दाण चौहाण उगालामेवाड़ धणि दण्ड नरा
निसवार राव लाखण थपां, जो आरम्भा सो करि

स्व० बाबू डालचदजी सिंघी, मुर्शिदाबाद

बाबू बहादुरसिहजी सिंघी, कलकत्ता

कुँवर वीरेन्द्रसिहजी सिंघी, कलकत्ता

दीपावत भण्डारी

नराजी भण्डारी के राजसीजी, जसाजी, सिहोजी, खरतोजी, तिलोजी, निम्बोजी और नाथोजी सात पुत्र थे। इनमें भण्डारी नराजी के दूसरे पुत्र जसाजी के जयमलजी नामक पुत्र हुए। भण्डारी जी के पुत्र राजसिंहजी और पौत्र दीपाजी हुए। इन्हीं दीपाजी की सन्तान दीपावत भण्डारी के मशहूर हुई। भण्डारी दीपाजी के भोजराजजी, खेतसीजी, रामचन्दजी, रायचन्दजी तथा रासाजी पाँच पुत्र हुए।

दीपाजी के सम्बन्ध मे बहुत खोज करने पर भी हमें विशेष वृतान्त ज्ञात नहीं हुआ। उनका प्राय अन्धकाराच्छन्न है। राज्य की ओर से अरठिया नामक गाँव में भण्डारी दीपाजी को जोधपुर की ओर मे पाँच खेत जागीर में मिले थे, वे ही खेत पीछे जाकर उनके पौत्र भोजराजजी को सम्वत् के प्रथम अषाढ सुदी १४ को महाराजा अजितसिंहजी ने बक्षे। इसके लिए जो परवाना दिया उसमें लिखा था— × × × "तथा गाव अरठिया वडा मे भण्डारी दीपाजी रा खेत छे सो भण्डारी (भोजराजोत) ने हुजुर मु इनायत हुआ छे सो ए सदाबन्द पाया जावसी।" * उक्त लेख से यह पाया जाता है कि भण्डारी दीपाजी ने जोधपुर राज्य की कुछ न कुछ सेवाएँ अवश्य की होंगी और लिए उन्हें कुछ जागीरी मिली थी। अब हम दीपाजी के बेटे पोतों का परिचय देते हैं।

भण्डारी भोजराजजी—आप दीपाजी के सबसे बड़े पुत्र थे। आपके पुत्र मेघराजजी हुए। के खानदान मे पाटवी होने से महाराजा अजितसिंहजी ने दीपाजी की जागीरी के खेत इन्हें इनायत

भण्डारी मेघराजजी भण्डारी रघुनाथसिंहजी की दीवानगी के समय सम्वत् १७७६ में के हाकिम रहे। भण्डारी मेघराजजी के आईदानजी, गोवर्द्धनदासजी, कन्हीरामजी तथा न्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें गोवर्द्धनदासजी विशेष प्रतापी हुए। जोधपुर की में आपके वीरोचित कार्यों के प्रशसनीय उल्लेख है। आप भण्डारी रघुनाथसिंहजी के समकालीन यह बात भण्डारी रघुनाथजी के द्वारा आपके नामपर भेजे हुए एक पत्र से प्रकट होती है। भण्डारी गोवर्द्धन-जी के दुर्गादासजी, मोहकमदासजी तथा मुकुन्ददासजी नामक तीन पुत्र हुए। इन बन्धुओं में दुर्गादास-पुत्र भगवानदासजी तथा गुलाबचन्दजी थे। भण्डारी गुलाबचन्दजी का परिवार इस समय उज्जैन ता है। भण्डारी भगवानदासजी के मानमलजी, जीतमलजी तथा बख्तावरमलजी नामक तीन पुत्र हुए। भण्डारी मानमलजी सम्वत् १८५० में जैतारण के हाकिम रहे। आपने सम्वत् १८६१ में बांकड़िया

* यह मूल परवाना जैतारण मे भण्डारी अभयराजजी के पास है। इस परिवार में इस वक्त भण्डारी मलजी, उगमराजजी आदि हैं।

संग्रह कर रखा है। अरेबियन और परसियन हस्त लिखित पुस्तकों का भी आपके यहाँ [illegible] है। ये ग्रन्थ पहले देहली के बादशाहों के पास थे। इनमें से कई एक पर तो उनके [illegible] हैं। इसके अतिरिक्त प्राचीन हिन्दू, कुशान और गुप्त काल के राजाओं के तथा मुसलमान [illegible] बहुत से सिक्कों का आपके यहाँ संग्रह है।

आपको प्राचीन ऐतिहासिक पुरातत्व ही की तरह सार्वजनिक जीवन में भी बहुत [illegible] सन् १९८६ में बम्बई में होने वाली जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स के विशेष अधिवेशन के आप [illegible] पंजाब के गुजरान वाला गुरुकुल के छटवें वार्षिक अधिवेशन के भी आप सभापति रहे। यहाँ [illegible] महत्वपूर्ण भाषण भी हुआ था।

इसके अतिरिक्त आपने एक और महत्वपूर्ण कार्य किया। कवि सम्राट रवीन्द्रनाथ [illegible] निकेतन बोलपुर में आपने सिंघवी जैन विद्यापीठ की स्थापना की। इस विद्यापीठ में जैन धर्म [illegible] विद्वान और पुरातत्वज्ञ श्री जिनविजयजी आचार्य्य का काम कर रहे हैं। जिससे इस विद्यापीठ में [illegible] साथ सुगन्ध की कहावत चरितार्थ हो रही है। इस विद्यापीठ में जैन आगम ग्रंथ, जैन प्रकरण [illegible] कथा साहित्य, देशी भाषा साहित्य, लिपि विज्ञान, ऐतिहासिक संशोधन पद्धति, स्थापत्य विज्ञान, विज्ञान, धर्म विज्ञान, प्रकीर्ण जैन वाङ्मय इत्यादि जैन संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाले सभा [illegible] शिक्षा देने का प्रबंध किया जा रहा है।

इसी विद्यापीठ के साथ एक विशाल ग्रंथ भण्डार और जैन ग्रन्थों का संग्रह भी [illegible] है। तथा सिंघवी जैन ग्रन्थमाला के नाम से एक ग्रंथमाला भी निकलती है। जिसमें [illegible] प्रकाशित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त और भी प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यों में आप [illegible] भाग लेते रहते हैं।

आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बा० राजेन्द्रसिंहजी, बा० नरेन्द्रसिंहजी और बीरेन्द्रसिंहजी है।

बाबू राजेन्द्रसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आपका अध्ययन बी० [illegible] हुआ। आप बड़े योग्य, बुद्धिमान और मिलनसार सज्जन है। आप के इस समय दो पुत्र हैं [illegible] नाम बा० राजकुमारसिंहजी और बाबू देवकुमारसिंहजी हैं।

बाबू नरेन्द्रसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९६७ में हुआ। आप कलकत्ता विश्व विद्यालय [illegible] बी० एस० सी० की परीक्षा में सन् १९३१ में सर्व प्रथम स्थान में उत्तीर्ण हुए। इस समय [illegible] एस० सी० पास कर लॉ में पढ़ रहे हैं।

तिवारी जैतारण में बर्ती है। इनके पुत्र राजमलजी हुए। आप पर्वतसर और मारोठ के हाकिम सम्वत् १९२८ में इनका स्वर्गवास हुआ। आपके दानमलजी, जीवनमलजी तथा सांवतरामजी तीन पुत्र हुए। इस समय दानमलजी के पुत्र पृथ्वीराजजी और सुकनराजजी मौजूद हैं। भण्डारी रामजी के अभयराजजी और बच्छराजजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं, इनमें अभयराजजी जीवनमलजी पर दत्तक गये हैं। बच्छराजजी जैतारण में वकालत और अभयराजजी जीनिंग फैक्टरी का करते हैं।

रासाजी का परिवार

दीपाजी के सबसे छोटे पुत्र का नाम रासाजी था। आप बड़े वीर थे। आपने छोटी मोटी लड़ाइयों में हिस्सा लिया था। सम्वत १७३९ के भादवा बदी ९ को गुजरात का मुसलमान शासक मुहम्मद राणपुर में चढ़ कर आया। इस समय जोधपुर नरेश महाराजा अजितसिंहजी सिरोही के कालेन्द्री नामक गाँव में थे। महाराजा की ओर से उनके मुकाबले के लिये जो सेना गई थी उसके प्रधान सेनापति भण्डारी दीपाजी के चौथे पुत्र भण्डारी रायचंद्रजी थे। रायचंद्रजी के बड़े भाई रासाजी फौज के एक अफसर थे। आप दोनों भाई बड़ी वीरता से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

भण्डारी खींवसीजी

जिन महान् पुरुषों ने मारवाड़ के इतिहास को उज्ज्वल किया है उनमें भण्डारी खींवसीजी का स्थान बहुत ऊंचा है। जिस समय इस महान् राजनीतिज्ञ का उदय हो रहा था, वह समय भारत के इतिहास में भयंकर अशान्ति का था। सम्राट औरंगजेब मर चुका था और उसके वंशजों के निर्बल हाथ मुगलों की शासन नीति को सञ्चालित करने में असमर्थ सिद्ध हो रहे थे। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी और चारों ओर नयी नयी शक्तियों का उदय हो रहा था। जबर्दस्त सरदार अपने मजबूत हाथों से बादशाहों को बनाते और बिगाड़ते थे। ऐसे नाजुक समय में तत्कालीन भारतीय राजनीति को डगमगाने वाले महाराजा अजितसिंहजी की प्रधानगी के पद को भण्डारी खींवसीजी सुशोभित कर रहे थे।

भण्डारी खींवसीजी का उदय क्रमशः हुआ। पहले सम्वत् १७६५ में वे हाकिम के साधारण पद पर नियुक्त हुए। इसके बाद सम्वत १७६६ में आप दीवान के उच्च पद पर प्रतिष्ठित किये गये तथा

। फिर ये सब लोग शामिल होकर बादशाह के हुजूर में लाल किले गये । बाशाह फर्रुखशियर में इन्हें आते हुए देखकर जनानखाने में चला गया। सुप्रख्यात् इतिहास वेत्ता विलियम इर्वीन ,ater Moghuls नामक ग्रन्थ के प्रथम भाग के पृष्ठ ३८२ में इस वृतान्त को इस लिखता है —"फर्रुखशियर अपने जनानखाने मे चला गया वहाँ बेगमों और रखेलियों ने उसे । तुर्की युवतियों को महलों की रक्षा का भार दिया गया। सारी रात महलों मे करुणा होता रहा। कुतुलउलमुल्क ने जाफरखां को महलों से निकाल दिया और दीवानखाने के पहरे पर निक रखे। इसी समय फर्रुखशियर ने अजितसिंहजी को अपनी ओर मिलाने का विफल प्रयत्न एक खोजे ने पहरेदारों की आखों से बचकर फर्रुखशियर का पत्र अजितसिंहजी के जेब में डाल उसमें लिखा था—"राजमहल के पूर्वीय भाग पर सख्त पहरा नहीं है । अगर तुम अपने कुछ वहाँ भेज दो तो मैं निकल जाऊँ। इस पर अजितसिंहजी ने जवाब दिया कि 'अब वक्त चला गया क्या कर सकता हूँ। कुछ इतिहासकारों का यह भी मत है कि अजितसिंहजी ने यह पत्र फर्रुख- के पास भेज दिया मारवाड की ख्यात में इस घटना को इस तरह लिखा है—"फर्रुखशियर ने जनान- महाराजा अजितसिंहजी के पास एक पत्र भेजा जिसमे लिखा था—"तुम लोगों के दिल मे मेरे ा वहम पैदा कर दिया गया है। मेरी बादशाहत मे जो कुछ आप करोगे वही होगा। मैं आप र कोई फर्क नहीं समझूगा। मेरे आपके बीच में कुरान है। यह पत्र पढ़ कर महाराजा अजितसिंह वसीजी को लेकर एकान्त मे चले गये और उन्होंने वह पत्र भण्डारी खींवसी को दिया। पत्र पढ़ वसीजी का हृदय करुणा से पसीज गया। उन्होंने बादशाह की जान बचाने के लिये महाराजा से र किया और कहा कि इस मुसीबत में अगर हमने बादशाह की सहायता की तो वह बड़ा कृतज्ञ और साम्राज्य नीति पर अपना जबर्दस्त वर्चस्व हो जायगा इस पर महाराजा अजितसिंहजी ने कहा कि शियर पहले भी मुझ से तीन दफा धोखा कर चुका है। उस वक्त सैय्यद बन्धुओं ने मुझे मदद दी। य सैयदों ही का साथ देने का मेरा विचार है।' यह सलाह मशविरा हो ही रहा था कि सैयदों के जनानखाने मे गये और उन्होंने फर्रुखशियर को पकडा। सारे रनवास में भयङ्कर चीत्कार हुई। बगमो ने बादशाह को पकड़ लिया। पर ये बेचारी अबलाएँ कर ही क्या सकती थीं। सैयदों समा बादशाह को पकड़ लाये और उसे कैद कर लिया। इसके थोड़े दिनों बाद अत्यन्त क्रूरता के यह अभागा बादशाह मार डाला गया।।

खींवसीजी द्वारा नये बादशाह का चुनाव—हमने ऊपर दिखलाया है कि खींवसीजी भण्डारी का का साम्राज्य नीति पर भी बड़ा प्रभाव था। वे एक महान् राजनीतिज्ञ और मुत्सद्दी समझे जाते थे।

इनके पुत्र श्री देवीचन्दजी जो इनके भाई खेमचन्दजी के नाम पर दत्तक गये हैं इस समय ... में पढ़ते हैं। सिंघवी जोरजी सिरोही स्टेट में नामाङ्कित व्यक्ति हुए, आपने सरहदी झगड़ों ... में बड़ा परिश्रम किया। आप संवत् १९१६ में सिरोही स्टेट के दीवान हुए। इनके ... समय नैनमलजी, वानमलजी और केसरीमलजी विद्यमान हैं।

सिंघवी सोमजी का परिवार—सिंघवी सोमजी के पुत्र अनोपचन्दजी, सुन्दरसी, और ... जी हुए। इनमें से सिंघवी सुन्दरसीजी ने सिरोही राज्य की दीवानगी की। इनके चौथे पुत्र अमरसिंहजी के चार पुत्र हुए जिनमें सिंघवी दौलतसिंहजी का वंश आगे चला। श्री ... दो पुत्र हुए, जिनके नाम नेमचन्दजी और केसरीमलजी था। सिंघवी दौलतसिंहजी के ..., मालजी व फतेचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इस सारे परिवार को सिरोही दरबार ने ... निम्नलिखित परवाना दिया।

श्री सारणेश्वरजी

महारावजी श्री परतापसिंहजी व कुँवरजी श्री तखतसिंहजी वचनायता—

सिंघवी दौलतसिंह वीरचन्द फतेचन्द माला लाला अमरसिंह सुप्रसाद ... अप्रंच थारे परदादा श्रीवतजी श्यामजी व दादा सुन्दरजी अमरसिंहजी वगैरा ने रियासत रा काम में बड़ी मदद व इमानदारी से काम बडा महाराजाजी श्री सुलतानसिंहजी व अखैराजजी वेरीसालजी दरजनसिंहजी मानसिंहजी रीवार काम दीवाण गीरी रो कियो व जोधपुर सुं ... फौज आवती उण में मदद की फौज पाछी वाली व मुलक आवाद राखियो जिण सुं ... प्रसन्न वे खुशनुदी रो परवाणो कर दियो है और आगाने थे इण माफक चालसा ... मने उमेद है सो थे भी थारा दादा परदादा माफक चालजो।

सम्वत् १८२५ रा चैत सुद १२ वार सूरज—

सिंघवी लालजी ने ईडर के राज्य में दीवानगी की। इनके तीन पुत्र थे—... तथा पोमाजी। इन तीनों ने सिरोही राज्य में दीवानगी की। कानजी तो तीन वार दीवान हुए ... ने सिरोही राज्य की बहुत सेवाएँ की। जब मीना भीलों के हमले के कारण व जोधपुर ... के कारण मुल्क वीरान हो रहा था उस समय पोमाजी ने पोलिटिकल एजण्ट तथा सरदारों में ... स्थापित करने में बड़ी योग्यता से परिश्रम किया। पोमाजी के परिवार में इस समय ... चुन्नीलालजी और सोहनमलजी हैं।

संवत् १७७९ में महाराजा ने भण्डारी खींवसीजी को इसलिये दिल्ली भेजा कि वह बादशाह को [illegible] कर नवाब हसनअलीखाँ को कैद से छुड़वा देवे। यह हसनअलीखाँ सैयद बन्धुओं में से था [illegible] फर्रुखसियर को बादशाह बनाया था और बाद में उसे मरवा भी दिया था। महाराजा अजित- [illegible] इसे अपना मित्र मानते थे। भण्डारी खींवसीजी दिल्ली पहुँचे। वहाँ पहले पहल जयपुर नरेश [illegible] से आपकी मुलाकात हुई। जयसिंहजी ने आपसे कहा कि हसनअलीखाँ का छूटना सब दृष्टियों [illegible] कारक है। फिर भण्डारी खींवसीजी नाहरखाँ से मिले और उन्होंने उसके द्वारा महाराजा का संदेश [illegible] के पास पहुँचाया। नाहरखाँ ने बादशाह से जा कर उलटी बात कह दी कि जबतक हसनअलीखाँ [illegible] तबतक महाराजा अजितसिंहजी दिल्ली नहीं आवेंगे। इस पर हसनअलीखाँ मरवा दिया गया [illegible] बाद भण्डारी खींवसीजी और नाहरखाँ साम्भर आये जहाँ महाराजा का मुकाम था। महाराजा [illegible] जी पर बहुत नाराज हुए और कहा कि हमने तो तुम्हे हसनअलीखाँ को बचाने के लिये भेजा था, [illegible] उसे मरवा दिया। इस पर खींवसीजी ने कहा कि मैंने तो आप का सन्देश नाहरखाँ [illegible] बादशाह के पास भेजा था पर नाहरखाँ ने बादशाह से उलटी बात कह दी। इसपर महाराजा ने [illegible] को मरवाने का हुक्म दे दिया। यह बात भण्डारी खींवसीजी को अच्छी न लगी। वे बहाना बना [illegible] पुर चले गये और महाराजा के आदमियों ने नाहरखाँ के डेरे पर हमला कर उसे मारडाला।

जब यह खबर बादशाह महम्मदशाह के पास पहुँची तो वह बड़ा क्रोधित हुआ। उसने गुजरात [illegible] महाराजा से छीन कर हैदरअलीखाँ को और अजमेर का सूबा मुजफ्फरअलीखाँ को दे दिया। [illegible] राजा अजितसिंहजी का बड़ा दबदबा था, अतएव मुजफ्फरअलीखाँ की हिम्मत अजमेर आने की न हुई। [illegible] बादशाह ने हैदरअलीखाँ को अजमेर पर जाने की आज्ञा दी और तदनुसार वह अजमेर पर चढ़ आया [illegible] बाद भण्डारी खींवसी और भण्डारी रघुनाथ के प्रयत्नों से आपस में सन्धि हो गई। कुछ सम[illegible] भण्डारी खींवसीजी विद्रोही सरदारों को मनाने के लिये मेड़ते भेजे गये। वहीं सम्वत् १७ [illegible] २ के जे[illegible] [illegible] भण्डारी खींवसीजी का स्वर्गवास हुआ।

जब भण्डारी खींवसीजी का देहान्त हुआ तब तत्कालीन जोधपुर नरेश महाराजा [illegible] सिंहजी * दिल्ली में थे। आप भण्डारी खींवसीजी की मृत्यु का समाचार सुनकर बड़े दुखित हुए। आप [illegible] से भण्डारी खींवसीजी के छोटे पुत्र भण्डारी अमरसीजी के डेरे पर मातमपुरसी के लिये पधारे और

* संवत् १७८० की अषाढ़ सुदी १३ को महाराजा अजितसिंहजी का स्वर्गवास हो गया था। आपके [illegible] अभयसिंहजी जोधपुर के राजसिंहासन पर बैठ थे।
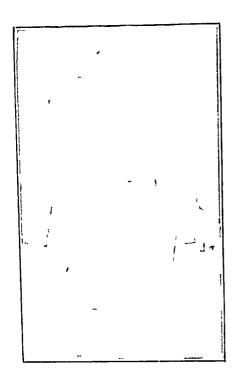
स्व० सिंघी जवाहरचंदजी दीवान, सिरोही

स्व० सिंघी कस्तूरचन्दजी दीवान, सिरोही

सिंघी खेमचन्दजी एम ए , सिरोही

सिंघी हिम्मतमलजी बी. ए , सिर

घेरा डाला तब पोमसी अपनी सेना लेकर किले पर पहुँचे और उस पर अपना अधिकार कर सम्वत् १७६९ में आप मेड़ते के हाकिम हुए। सम्वत् १७७२ की जेठ सुदी १३ को भण्डारी और भण्डारी अनोपसिंहजी सेना लेकर नागोर पहुँचे। नागोराधिपति इन्द्रसिंहजी से तीन प्रहर तक री लड़ाई हुई। आखिर इन्द्रसिंह हार गये और नागोर पर इन भण्डारी बन्धुओं ने अधिकार कर जब यह खबर दरबार के पास अहमदाबाद पहुँची तो उन्होंने पोमसीजी को सोने के मूठ की भेजी और उन्हें नागौर का हाकिम बनाया और उनके नाम की मेढता की हुकूमत भण्डारी खेतसीजो गेरधरदासजी को दी।

भण्डारी मनरूपजी—आप भण्डारी पोमसीजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। सम्वत् १७८२ में आप हाकिम नियुक्त हुए। सम्वत् १७८२ में जब मराठों ने ५०,००० फौज से मेड़ते पर हमला किया, तब भण्डारी मनरूपजी और भण्डारी विजयराजजी ने मेडता, मारोठ और पर्वतसर की फ़ौजों को इता के मालकोट नामक किले की किलेबन्दी कर मराठों की फौजों से मुक़ाबला किया। बडा र युद्ध हुआ। आखिर दरबार ने कई लाख रुपये देकर सन्धि करली।

जब भण्डारी अमरसिंहजी दीवान हुए तब भण्डारी मनरूपजी को एक सूबे का शासक बनाया है पालकी, सिरोपाव, कड़ा, मोती और सरपेंच भेंट किये। सम्वत् १८०४ के भाद्रपद मास में वानगी के पद पर प्रतिष्ठित किये गये और इसी समय आपको दरबार से बैठने का कुरब और रोपाव इनायत हुआ। आप इस पद पर सम्वत् १८०६ के मार्गशीर्ष मास तक रहे।

सम्वत् १८०५ की अषाढ़ सुदी १५ को महाराजा अभयसिंहजी का स्वर्गवास हो गया और ा रामसिंहजी जोधपुर के राज्यसिंहासन पर बैठे। इस समय महाराजा रामसिंहजी ने मनरूपजी पुत्र सूरतरामजी को दीवानगी का उच्चपद प्रदान किया और आपने मनरूपजी तथा पुरोहित जगुजी मर भेजा। इसके बाद महाराजाधिराज बख्तसिंहजी और रामसिंहजी में बड़ा वैमनस्य हो गया। बीच लड़ाइयाँ हुई। यद्यपि इस परिस्थिति में मनरूपजी ने बड़ी कुशलता से कार्य किया, पर हजी यह बात भली प्रकार जान गये कि मनरूप भण्डारी हर तरह से रामसिंहजी की सहायता कर। अतएव उन्होंने इन्हें मरवाने का निश्चय किया।

जब भण्डारी मनरूपजी सम्वत् १८०७ की कार्तिक सुद २ को महाराज रामसिंहजी के मुजरे र पालकी से उतर रहे थे, उस समय बख्तसिंहजी के भेजे हुए पातावत ने उन पर तलवार से किया। मनरूपजी बुरी तरह घायल हुए और उनके १३ टाँके लगे। जब यह समाचार जी रामसिंहजी को मिला तो वे बड़े दुःखित हुए और वे तुरन्त मनरूपजी के डेरेपर कुशल समाचार

भाई सिंघवी हिम्मतमलजी का जन्म १९४४ में हुआ। सन् १९१३ में आपने एल० एल० [illegible]
प्राप्त की। शुरू २ में आप मारवाड़ के इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स रहे और इस समय आप [illegible]
खास में ऑफिस सुपरिटेण्डेण्ट के पद पर काम करते हैं। आपके पुत्र रतनमलजी, [illegible]
खुशालचन्दजी हैं।

यह सिंघवी परिवार सिरोही स्टेट में अग्रगण्य और शिक्षित माना जाता है।

सिंघवी कुशलराजजी, मेडता

महाराजा तखतसिंहजी के राज्यकाल में इस खानदान को नागोर के [illegible] नामक [illegible]
३०० बीघा जमीन मिली जो संवत् १९०४ तक इस कुटुम्ब के अधिकार में रही। सिंघवी [illegible]
और उनके पुत्र गादमलजी तथा पौत्र फौजमलजी नागोर में निवास करते रहे। सिंघवी फौजमलजी के [illegible]
समीरमलजी तथा घेवरचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें सिंघवी चन्दनमलजी संवत् [illegible]
नागोर के हाकिम थे, आप नागौर से मेड़ता आये। आपके फतेराजजी तथा जसराजजी नामक [illegible]
हुए, इनमें जसराजजी, सिंघवी समीरमलजी के नाम पर दत्तक गये। फतेराजजी का स्वर्गवास [illegible]
में तथा जसराजजी का संवत् १९६० में हुआ। सिंघवी फतेराजजी के धनराजजी तथा कुशलराजजी [illegible]
२ पुत्र हुए। धनराजजी गूलर ठिकाने में काम करते थे तथा जबलपुर में रीयाँवाले [illegible]
मुनीमात करते थे, इनका शरीरावसान संवत् १९८५ में हुआ, इनके पुत्र गणेशराजजी [illegible]

सिंघवी कुशलराजजी का जन्म संवत् १९२८ की आसोज सुदी में हुआ, आप [illegible]
और ठिकानों की सर्विस के बाद संवत् १९६५ से मेड़ते में वकालात करते हैं, तथा यहाँ के [illegible]
सज्जन माने जाते हैं। आपके पुत्र नथराजजी तथा मदनराजजी हैं। नथराजजी की वय [illegible]
और आप एफ० ए० में पढ़ते हैं।

सेठ छोगमल वरदीचन्द संघी, गुड़ीवाड़ा (मद्रास)

इस परिवार का मूल निवास आहोर है। वहाँ से व्यापार के निमित्त संवत् [illegible]
संघी ऊमाजी के बड़े पुत्र जसराजजी, मछली पट्टम आये, पीछे से जसराजजी के छोटे भ्राता [illegible]
वरदीचन्दजी भी वहाँ आ गये। आप लोग १९७० तक मछली पट्टम में कपड़े का धंधा करते रहे, [illegible]

भण्डारी थानसिंहजी के वंश में इस समय भण्डारी किशोरमलजी, भण्डारी जीवनमलजी, लाभमलजी, भण्डारी मोतीचन्दजी आदि सज्जन हैं। भण्डारी किशोरमलजी कलकत्ते में व्यापार । भण्डारी जीवनमलजी कई वर्ष तक रीया ठिकाने के कामदार रहे और इस वक्त शायद वकालात । भण्डारी लाभचन्दजी महाराजा फतहसिंहजी के पास कामदार हैं। भण्डारी मोतीचन्दजी सोजत में र्कल इन्सपेक्टर हैं। इस महकमे में आप अच्छे लोकप्रिय रहे। भण्डारी जीवनमलजी के पुत्र लजी ने गतसाल बी० ए० पास किया है। ये होनहार युवक मालूम होते हैं।

भण्डारी अमरसिंहजी का वंश—भण्डारी अमरसिंहजी के जोधसिंहजी और सावंतसिंहजी नामक हुए। जोधसिंहजी मेड़ता अजमेर आदि कई स्थानों के हाकिम रहे। आप बड़े पहलवान थे। क नामी पहलवान को पछाड़ा था। आपका मेड़ते में स्वर्गवास हुआ, जहाँ अभी आपके स्मारक न बना हुआ है। इनके छोटे भ्राता सावन्तसिंहजी भी हाकिम रहे। जोधसिंहजी के पाँच पुत्र हुए, कल्याणदास और अचलदासजी का परिवार मौजूद है।

भण्डारी हरिदासजी—आप कल्याणदासजी के पौत्र थे। आप नामाङ्कित हुए। आप साम्भर वा के हाकिम रहे और सम्वत् १९४३ से १९६० तक जोधपुर के खजांची रहे। आपका स्वर्गवास की आयु में सम्वत् १९६० की माघ सुदी २ को हुआ। आपके दो पुत्र भण्डारी किशनदासजी डारी विशनदासजी अभी विद्यमान हैं। भंडारी हरिदासजी के गुजरने के बाद किशनदासजी ने १९६० से सम्वत् १९७८ तक खजांची (पोतदारी) का काम किया। भंडारी विशनदासजी ने ाने में सर्विस की। आप सुधारक विचारों के सज्जन हैं। कला से आपको प्रेम है। भंडारी दासजी के दो पुत्र हुए जिनमें माणकराजजी सम्वत् १९७५ में स्वर्गवासी हुए। दूसरे पुत्र मदन- परू कारोबार करते हैं। माणिकराजजी के पुत्र मोहनराजजी ट्रिब्युट में सर्विस करते हैं। भंडारी दासजी के पुत्र इन्द्रसिंहजी पुलिस विभाग में सर्विस करते हैं और अमरसिंहजी पढ़ते हैं।

भण्डारी करणीदानजी—आप अचलदासजी के पुत्र थे आप मेड़ते के हाकिम रहे। सम्वत् १९२६ भादवा वदी ७ को आपका देहावसान हुआ। आपके महादानजी, सतीदानजी, आईदानजी, जगजोत- आदि आठ पुत्र हुए। इनमें जगजोतदानजी इस समय विद्यमान हैं। दीपावत भंडारियों में वृद्ध बुजुर्ग सज्जन हैं। आपको अपने पूर्वजों के पर्वानों पर जोधपुर दरबार से गतसाल ४००) का र मिला है। भंडारी खानदान के कई रुक्के आपके पास हैं। आपके पुत्र भगवतीदानजी कलकत्ते में गत का काम करते हैं और फतहदानजी के पुत्र अम्बादानजी जवाहरात की दलाली करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजी सिंघवी के बाद उनके पुत्र श्रीचन्दजी सिंघवी ने इस दुकान [illegible] विशेष बढ़ाया। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आपके यहाँ रुई के व्यापार का [illegible] का व्यापार होता है, तथा इस समय आप लोनार के प्रमुख सम्पत्तिशाली समझे जाते हैं। [illegible] सुगनचन्द व मदनलाल हैं।

सिंघवी पातावत

सिंघवी ताराचन्दजी कोठारी, आहोर (मारवाड़)

पातावत सिंघवी खानदान का निवास भी बनवाणा बोहरा जाति से बतलाया [illegible] कहा जाता है कि डीसा से १२ कोस ढीलड़ी गाँव में टेलडिया बोहरा आसधवलजी रहते थे। [illegible] चार्य्य श्रीचन्द्र प्रभू सूरिजी ने जैन धर्म अंगीकार कराया। आसधवलजी की पीढ़ी में [illegible] निकाला, अतएव इनका कुटुम्ब सिंघवी कहलाया। इनकी कई पीढ़ियों बाद पाताजी हुए, जिन[illegible] पातावत सिंघवी कहलाई। ये भी नागपूजक सिंघवी हैं

पाताजी की कई पीढ़ियों में सिंघवी दीपराजजी हुए थे और इनके पुत्र कल्याणजी [illegible] ठिकाने में काम करते रहे, ठिकाने का काम करने से ये कोठारी कहलाये। कल्याणजी के डूँगर[illegible] लखमीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। लखमीचन्दजी संवत् १८७० में ठाकुर अनाड़सिंहजी के साथ [illegible] ओर गये। इस समय लखमीचन्दजी का कुटुम्ब सारथल (कोटा के पास) रहता है। लखमीचन्दजी [illegible] भाई डूँगरमलजी, ठाकुर अनाड़सिंहजी के बड़े पुत्र शक्तिसिंहजी के यहाँ कार्य्य करने लगे। [illegible] के पुत्र हरखचन्दजी १९५० में गुजरे इनके पुत्र अखेचन्दजी, रतनचन्दजी तथा ताराचन्दजी [illegible] सिंघवी ताराचन्दजी विद्यमान हैं। सिंघवी ताराचान्दजी का जन्म संवत् १९३५ में हुआ। [illegible] समय तक आहोर ठिकाने का काम किया। आप समझदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। [illegible] ने ठाकुर रावतसिंहजी की नाबालगी के समय ठिकाने का कार्य्य सम्भाला था, अभी इनके नाम [illegible] के पुत्र नेनचन्दजी दत्तक हैं।

सम्वत् १७७१ में बादशाह फर्रुखसियर किसी कारणवश महाराजा अजितसिंहजी से नाराज और उसने अपने सेनापति सैयद हुसेनअली बखशी को बड़ी सेना देकर मारवाड़ पर भेजा। इस हाराजा ने अपने राज्य के हित की दृष्टि से बादशाही फौज से लडना ठीक नहीं समझा। उन्होंने सेनअली से सन्धि करली। इतना ही नहीं उन्होंने बादशाही दरबार में अपने अनुकूल परिस्थिति पैदा लिए महाराजकुमार अभयसिंहजी और भंडारी रघुनाथसिंहजी को भेजा। बादशाह ने आप लोगों आदर किया। भंडारी रघुनाथसिंहजी ने बादशाह को बडी ही कुशलता के साथ समझाया और अजितसिंहजी के लिए उसके मनमें सद्भाव उत्पन्न कर दिये। भंडारी रघुनाथसिंहजी ने बादशाह ा खुश कर दिया कि उसने महाराजा का मन्सब छ हजारी जात छ हजार सवारों का कर उन्हें की सूबेदारी पर नियुक्त किया। सम्वत् १७७२ में जब भंडारी रघुनाथसिंहजी महाराजा कुमार हजी के साथ जोधपुर लौटे तब वहां उनका राज्य की ओर से बड़ा आदरातिथ्य किया गया। दरबार इन महान् सेवाओं की बडी प्रशंसा की।

सम्वत् १७७२ के चैत्र में भंडारी खींवसीजी कैद से मुक्त हुए और दरबार ने आसोप के डेरे में ानगी का सर्वोच्च पद प्रदान किया गया। इस समय भंडारी रघुनाथ भंडारी खींवसीजी के साथ का काम करने लगे। कुछ वर्षों तक आप लोगों ने साथ-साथ काम किया। महाराजा आपके बड़े प्रसन्न हुए और आप दोनों बन्धुओं को हाथी, पालकी, सिरोपाव, जड़ाऊ कडा, मोतियों की लगार और कटारी देकर सम्मानित किया।

सम्वत् १७७९ में महाराजा अजितसिंहजी ने फिर महाराजकुमार अभयसिंहजी के साथ भंडारी सिंहजी को बादशाह के हुजूर में दिल्ली भेजा। इस समय आप कई मास तक दिल्ली रहे। आपकी ह से बड़ी घनिष्टता हो गई। बादशाह आपकी सलाह को बहुत मान देने लगा। इसके बाद प दिल्ली में थे तब सवत् १७८१ की असाढ़ सुदी १३ को महाराजा अजितसिंहजी उनके पुत्र हजी द्वारा मार डाले गये।

सरदारों की नाराजी—भंडारी रघुनाथ और भंडारी खींवसी का अपूर्व प्रताप मारवाड़ के ों से देखा न गया। वे उनसे बड़ा विद्वेष करने लगे और किसी न किसी प्रकार उन्हें गौरव से गिराने का यत्न करने लगे। बहुत से सरदारों ने विद्रोह कर दिया। मथुरा पर ५३ सरदारों ने तत्कालीन महाराज से कहा कि सब सरदार भंडारियों से नाराज है और जब री कैद न किये जावेंगे वे सन्तुष्ट न होंगे। महाराजा ने अपनी इच्छा के विरुद्ध सरदारों की बात करली। उन्होंने भंडारियों को कैद करने का हुक्म दे दिया। इस समय भंडारी खींवसी के पुत्र

बहादुर महामहोपाध्याय पं० गोरीशंकरजी ओझा अपने सिरोही के इतिहास के पृष्ठ १६९ में लिख
"राव लाखणसी बड़ा बहादुर हुआ वर्तमान जोधपुर राज्य का कितना ही हिस्सा इसने अ
कर लिया था।"

भण्डारियों की ख्यात मे राव लाखणजी के बारहवें पुत्र राव दुदाजी से भण्डारियों
बतलाई है। उसमें लिखा है कि—"नाडोल के राव लाखणसी के चौबीस रानियाँ थीं, प
किसी के सन्तान नहीं हुई। प्रसगवश जैनाचार्य्य श्री यशोभद्रसूरि नाडौल पहुँचे। राव
आपका बड़ा सत्कार किया। राव लाखणजी ने नि सन्तान होने के कारण आपके आगे दुःख प्रगट कि
आचार्य्यवर्य्य को इस सम्बन्ध में शुभाशीष देने के लिये निवेदन किया। इस पर आचार्य्य श्री
दिया कि तुम्हारी प्रत्येक रानी के एक एक पुत्र होगा। तुम अपने चौबीस पुत्रों में से एक पुत्र
हवाले करना। राव लाखणसी ने यह बात स्वीकार करली। सौभाग्य से रावजी की प्रत्येक रानी
एक पुत्र हुआ। इनमें बारहवें पुत्र का नाम दूदाराव था। इन्हें आचार्य्य श्री ने जैनी बनाया।
के खजाने का काम दूदारावजी के सिपुर्द था, इससे ये भण्डारी कहलाये। यह घटना
१०३९ की है।

उपरोक्त वर्णन में अतिशयोक्ति हो सकती है, पर यह निश्चय है कि भण्डारियों
नाडौल के चौहानों से हुई। इसके लिए कई प्रबल प्रमाण हैं। पहले तो यह कि भण्डारि
चौहानों की कुलदेवी आसापुरीजी है। आसापुरी माता का मन्दिर नाडौल में है, जहाँ भण्डारि
बच्चों का झडुला उतारा जाता है।

अब हम भण्डारियों के उपलब्ध इतिहास के सम्बन्ध में जो कुछ ऐतिहासिक सामग्री
हुई है, उसी के आधार पर नीचे कुछ प्रकाश डालते है।

समराजी—भण्डारियों के वशवृक्ष में सबसे पहला नाम राव समराजी भण्डारी का है।
और आपके पुत्र राव नरोजी ने जोधपुर के सस्थापक राव जोधाजी को उनकी अत्यन्त संकटावस्था
प्रकार सहायता की और किस प्रकार राव समराजी राव जोधाजी की रक्षा के लिए मेवाड़ में
कर काम आये और उनके पुत्र नरोजी ने अन्त तक अनेक विपत्तियों को सहकर किस प्रकार
जोधाजी का साथ दिया इसका वर्णन हम "ओसवालों के राजनैतिक महत्व" नामक अध्याय में
इससे अधिक आपके सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक तथ्य खोजने पर भी नहीं मिला है। इसलिए
भण्डारियों की जुदी-जुदी खापों (शाखाओं) का परिचय देते हैं।

ल थे। आप जोधपुर के हाकिम थे। आपने नागोर पर चढ़ाई कर वहाँ किस प्रकार अपना अधि-
या इसका वर्णन हम "ओसवालों के राजनैतिक महत्व" नामक अध्याय में कर चुके हैं।

सम्वत १७१७ में महाराजा अजितसिंहजी ने आपको फौज देकर अहमदाबाद भेजा। वहाँ
आपने उक्त नगर पर अधिकार कर लिया। फिर भंडारी रत्नसिंहजी को वहाँ का शासन भार सौंप
र लौट आये।

सम्वत १७८२ के माघ मास में जब महाराजा अभयसिंहजी दिल्ली पधारे तब मारवाड़ का
भार राजाधिराज बख्तसिंहजी पर रखा गया और भंडारी अनोपसिंहजी उनके सहायक बनाये गये।

सम्वत १७८५ में आनन्दसिंह रायसिंह ने जालौर के गाँवों पर हमला किया, तब उनके मुका-
भंडारी अनोपसिंह ससैन्य भेजे गये। आपके पहुँचते ही दोनों बागी सरदार भाग खड़े हुए।
के हुक्म से आपने पोकरण पर चढ़ाई कर उस पर अधिकार कर लिया।

भण्डारी केसरीसिंहजी—आप भंडारी अनोपसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। जान पड़ता है कि भंडारी
सिंहजी के और भी पुत्र थे, जिनमें माणिकचन्द्रजी का नाम हमने पुष्कर के पँडे की बही में देखा।
के अन्य पुत्रों का हाल उपलब्ध नहीं है।

भंडारी केसरीसिंहजी का समय दीपावत भंडारियों की अवनति का था। इस समय अर्थात्
१७८० के लगभग भंडारी खींवसीजी के वंशज और केसरीसिंहजी कैद किये हुये थे। भंडारियों की
में केसरीसिंहजी के कैद होने और उन्हें सरदारों के सिपुर्द होने मात्र का उल्लेख है। जान पड़ता
उनके समय में राज्य द्वारा भंडारी रघुनाथजी की हवेली और जायदाद जप्त करली गई और ये बड़ी
री की हालत में जैतारण चले गये। इनके दो पुत्र थे, जिनमें पहले पुत्र अखेचन्दजी जैतारण रहे
सर मदते तथा बीलाडे रहे। भंडारी केसरीसिंहजी का सम्वत १८५५ के लगभग जैतारण में
हुआ। उनकी पत्नी उनके साथ सती हुई जिसका चौतरा बना हुआ है। भंडारी अखेचन्दजी
राजजी और जवाहरमलजी नामक दो पुत्र हुए। फौजराजजी के मुलतानमलजी और गम्भीरमलजी
दो पुत्र थे। मुलतानमलजी बड़ी वीर प्रकृति के थे। सम्वत १९१४ के विद्रोह में आप अंग्रेजी
में भर्ती हुए और थोड़े ही दिनों में अंग्रेजी भारतीय फौज में अफसर हो गये। आपको अंग्रेजी
सरों से अच्छे अच्छे प्रशंसापत्र मिले थे। मुलतानमलजी और गम्भीरमलजी नि सन्तान गुजरे।

जवाहरमलजी के शिवनाथचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप व्यापार करने के लिए केतुली
(धा) गये थे। वहीं सम्वत १९२५ में पच्चीस वर्ष की अवस्था में आपका देहान्त हुआ। आपके
भंडारी जसराजजी हुए।

बड़गांव पर फौजी चढ़ाई की और वहां अपना अधिकार किया। इसके लिए महाराजा मानसिंह आपको जो पत्र दिया था उसमें लिखा था—"× × × श्री जीरा माया प्रताप सु बडागाव कब्जे हु खुशी हुई निवाजस होसी। अब थाणो बडागाव में मजबूत राख कूच आगे करजो। अगाऊ तसली आच्छी रीत करजो। समाचार इन्द्रराज सूरजमलरा कागद सु जाणजो सम्वत १८६५ रा असुज।"

जिस समय मानमलजी जैतारण के हाकिम थे उस समय सारे मारवाड़ में अशान्ति घिर रहे थे। चारों ओर की आपत्तियां उसपर आ रही थीं। उस समय में हाकिमी का काम आज जैसा सरल नहीं था। उन्हें राज्य-रक्षा के लिए फौजी नाकेबन्दियां करनी पड़ती थीं। सम्वत् १८.. भादवा सुदी ३ को जैपुरवाली फौज की नाकाबन्दी करने के लिए सिंघवी इन्द्रराजजी ने इन्हें लिखा "× × × घाटारा जावता कराय दीजो सो फौज चढ़ सके नहीं। फिर देवगढ तथा सालोकिया सु न... को बन्दोबस्त कर घाटे नहीं चढे सो करजो।" इसी तरह भादवा सुदी १३ को आपके नाम आया जो रुक्का आया उसमें लिखा था—"जयपुरवाला घाटे हुय उदयपुर जाय सके नहीं। इसा बन्दोबस्त करणो।"

भण्डारी मानमलजी का सम्वत् १८८४ की पौष सुदी १२ को जैतारण में देहान्त हुआ। द्वितीय धर्मपत्नी आपके साथ सती हुई। आपके पुत्र प्रतापमलजी मेड़ता और दौलतपुरा के हाकिम आपने जयपुरी फौज पर गिगौली की घाटी पर हमला किया था। सम्वत् १८७१ की पौष सुदी हरिद्वार में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके साथ भी आपकी धर्मपत्नी सती हुई जिनकी छत्री बनी इनके पश्चात् भण्डारी मानमलजी के कोई सन्तान नहीं रही। अतएव उन्होंने अपने तीसरे भाई ... मलजी के मझले पुत्र कस्तूरमलजी को दत्तक लिया। कस्तूरमलजी के पुत्र भण्डारी रवमलजी ने ... में हुकूमत की। आपके पुत्र भण्डारी देवराजजी इस समय उदयपुर में विद्यमान हैं और ... महकमें में काम करते हैं। आपके पुत्र उदयराजजी और तेजराजजी हैं, जिनमें उदयराजजी उदयपुर में पुलिस सब इन्सपेक्टर हैं।

भण्डारी मानमलजी के छोटे भाई जीतमलजी थे। इनके पश्चात् क्रमशः मुल्तानमलजी, अमृतमलजी, धनरूपमलजी और रंगराजजी हुए। इस समय इनके परिवार में कोई नहीं है।

भण्डारी मानमलजी के सबसे छोटे भाई बख्तावरमलजी के बदनमलजी, कस्तूरमलजी, ... नामक तीन पुत्र हुए। भण्डारी बदनमलजी कोलिया, जैतारण तथा देसूरी के हाकिम रहे। आपको ... से सिरोपाव मिला था। भण्डारी चन्दनमलजी सम्वत् १८९०–९१ में नागौर तथा मेड़ता के हाकिम ... सम्वत् १९०२ की श्रावण सुदी १४ को इनका शरीरान्त हुआ। इनके साथ इनकी धर्मपत्नी ...

[illegible]तिराजजी भण्डारी एम. आर. ए. एस. इन्दौर

श्री चन्दराजजी भण्डारी 'विशारद', भानपुरा (इन्दौर

[illegible] भण्डारी एल. एल. एम. एम., इन्दौर.

श्री प्रेमराजजी भण्डारी बी. ए. सपत्नीक, इन्दौर.

इसी समय आप राय की पदवी तथा हाथी पालकी और मोती के सम्मान से विभूषित किये गये। बाद आप प्रधान के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित किये गये। कहने का अर्थ यह है कि आप अपनी योग्यता और कार्य कुशलता से मारवाड़ राज्य के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित किये गये। सर्वोच्च पदों पर रहते हुए आपने मारवाड़ राज्य की जो महान् सेवाएं की हैं, उनका थोड़ा सा यहां किया जाता है।

सम्वत् १७६७ में बादशाह बहादुरशाह दक्षिण से अजमेर आया। इस समय महत्वपूर्ण कार्य्य के लिये महाराजा ने भण्डारी खींवसीजी को भेजा। वे बादशाह से ... के मार्फत मिले बादशाह भण्डारीजी से बड़ा प्रसन्न हुआ और वह उन्हें अपने साथ लाहौर ले गया। ... की आवश्यकता नहीं उन्होंने महाराजा के मिशन को सफल किया।

सम्वत १७७१ में भण्डारी खींवसीजी के प्रयत्न से महाराजा को फिर से गुजरात ... मिला। इसके लिये तुलराम नामक एक बादशाही अधिकारी के साथ बादशाही फर्मान भी ... पास भेज दिया गया। इसके बाद महाराजा ने भण्डारी विजयराज को अहमदाबाद भेजा, और उन्होंने अपना अधिकार कर लिया। पश्चात् अषाढ़ मास में कुँवर अभयसिंहजी और भण्डारी ... बादशाही दरबार से लौटकर जोधपुर आये और उन्होंने महाराजा से मुजरा किया और गुजरात ... प्राप्त करने के सारे समाचार कहे। इस पर महाराजा अजितसिंहजी बड़े प्रसन्न हुए। सम्वत् ... में भण्डारी खींवसीजी प्रधानगी के सर्वोच्च पद पर फिर से प्रतिष्ठित किये गये।

इसके एकाध वर्ष बाद गुजरात की सूबायत महाराजा से वापस ले ली गई। इस पर ... राजा ने भण्डारी खींवसीजी को दिल्ली में लिखा कि हम तो द्वारका की यात्रा के लिये जा रहे हैं, ... जैसे वैसे गुजरात का सूबा वापस प्राप्त करना। खींवसीजी ने इसके लिये जोरों से प्रयत्न करना शुरू ... और आपको सफलता होगई। गुजरात का सूबा फिर से महाराजा के नाम पर लिख दिया गया। ... कार्य्य कर खींवसीजी जोधपुर आये, जहां महाराज ने आपका बड़ा आदरातिथ्य किया।

सम्वत् १७७५ को फागुन सुदी १० को सुप्रसिद्ध नवाब अब्दुल्लाखां और असनअली ... अजितसिंहजी से बादशाह फर्रुखशियर को तख्त से हटाने के काम में सहयोग देने के लिये ... सलाह मशविरे में कोटा के तत्कालीन राजा दुर्जनसिंहजी तथा रूपनगर के राजा राजसिंहजी ...

ये दोनों भाई सैयद बन्धुओं के नाम से मशहूर थे। समय पाकर इन्होंने बड़ा ... इतिहास में ये बादशाह को बनाने वाले तथा बिगाड़ने वाले कहे गये हैं। बादशाह फर्रुखशियर ... बैठाया और बाद में इन्होंने ही उसे तख्त से उतार कर कत्ल करवा दिया।

लगभग बीस हजार पृष्ठों का एक विशाल अंग्रेजी हिन्दी कोष लिखा है। डॉक्टर गंगानाथ झा, ० सी० रॉय, डाक्टर राधाकुमुद मुकर्जी, डॉक्टर वुलनर आदि कई अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति के विद्वानों ने न्थ को भारतीय साहित्य का अटल स्मारक कहा है। इसके अतिरिक्त बॉम्बे क्रॉनिकल, पायोनियर, आदि प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिकों ने इसे भारतीय साहित्य का सबसे बड़ा प्रयत्न कहा है। "प्रताप" " "स्वतन्त्र" 'भारतमित्र' 'अभ्युदय' आदि बीसों पत्रों ने इस ग्रन्थ के महत्व और उपयोगिता पर म्न सम्पादकीय लेख लिखे हैं। इस कोष के काम को श्रीमान् वाइसराय महोदय ने "महान् प्रयत्न" ' और उसके लिये हर प्रकार की सहायता का ऑफर दिया है।

ईसवी सन् १९२०–२१ के राजनैतिक आन्दोलन में भी इन्होंने भाग लिया था। इसी साल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य चुने गये। यहाँ यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि देशी म सबसे पहले ईसवी सन् १९२० में इन्दौर में इन्होंने कांग्रेस कमेटी की स्थापना की और इसका इनके मकान ही पर रहा। इन्दौर में प्रजा परिषद होने के लिये इन्होंने "मल्हारि मार्तण्ड विजय" ों का आन्दोलन उठाया और वहाँ धूमधाम से परिषद हुई। नागपुर कांग्रेस के समय देशी राज्यों ।। के उत्थान के लिये राजपूताना मध्य भारत सभा की स्थापना हुई जिसके सभापति श्रीयुत राजा [illegible]जी पीर्ता, प्रधान मन्त्री श्रीयुत कुँवर चादकरणजी शारदा तथा संयुक्त मन्त्री श्रीसुखसम्पतिरायजी थ। इस समय आपका विशेष समय साहित्य सेवा ही में जा रहा है।

[illegible]मराजजी के दूसरे पुत्र श्री चन्द्रराजजी का जन्म सम्वत १९५९ के कार्तिक सुद १२ को सम्वत १९७६ में इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा पास की। इसके बाद [illegible] सेवा में लगे। इन्होंने करीब १५ महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं जिनमें भगवान् महावीर और समाज [illegible] का बड़ा आदर हुआ यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा के पाठ्य क्रम में नियत है स पर इन्दौर की होल्कर हिन्दी कमेटी ने स्वर्ण पदक प्रदान किया है भगवान महावीर की पं० लालन [illegible] हरदयाल सरीखे प्रतिष्ठित विद्वानों ने बड़ी प्रशंसा की। समाज विज्ञान को डा० गंगानाथ झा इत्यादि के कई प्रख्यात विद्वानों ने अपने विषय का अपूर्व ग्रन्थ कहा और हिन्दी के प्राय सब समाचार पत्रों [illegible] बड़ी ही अच्छी समालोचना की। कुछ पत्रों में तो इस ग्रन्थ के महत्व पर स्वतन्त्र लेख प्रकाशित 'विशाल भारत' 'माधुरी' 'सुधा' 'चाँद' और "वीणा" नामक मासिक पत्रों में इनके कई विचारपूर्ण प्रकाशित होते रहते हैं। इन्होंने अपने कुछ मित्रों के सहयोग से भारतीय व्यापारियों का [illegible] नामक महाविशाल ग्रन्थ प्रकाशित किया, जो तीन बड़ी-बड़ी जिल्दों में है हाल में इन्होंने [illegible] की [illegible] संस्कृति" नामक ग्रन्थ लिखा है जो शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

सम्वत् १७७५ के आसोज मास में भण्डारी खींवसीजी और सैयदों के वजीर राजा रतनचन्द शाहजादा
बादशाह को चुनने के लिए दिल्ली भेजे गये । २२ वर्ष के सुन्दर नवयुवक शाहजादे महम्मदशाह ने इन
को विशेषरूप से अपनी ओर आकर्षित किया । कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्होंने महम्मदशाह
कर लिया पर महम्मदशाह की माता मंजूर नहीं हुई । उसने समझा कि बादशाह बनने से जो गत
दो तीन बादशाहों की हुई वही महम्मदशाह की भी होगी । इस पर खींवसीजी ने महम्मदशाह
बहुत समझाया और उसे हर तरह की तसल्ली दी । इतना ही नहीं उन्होंने इष्टदेव की सौगन
महम्मदशाह के जीवन रक्षा की सारी जिम्मेदारी अपने सिर पर ली । इस पर महम्मदशाह
हो गई । कहने की आवश्यकता नहीं कि खींवसीजी महम्मदशाह को ले आये और जब वह दिल्ली
बैठा तब उसका एक हाथ महाराजा अजितसिंहजी के हाथ में और दूसरा हाथ नवाब अब्दुल्ला
में था । सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता विलियम इर्विन ने भी भण्डारियों द्वारा बादशाह के चुने जाने
उल्लेख किया है । इस समय महाराजा अजितसिंहजी का बादशाह पर जो अपूर्व प्रभाव था
अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है ।

इसके बाद खींवसीजी ने प्रयत्न कर अपने स्वामी जोधपुर नरेश के लिए बादशाह से राज
की पदवी प्राप्त की । इसी समय महाराजा ने भण्डारी खींवसीजी को दिल्ली लिखा कि "हिन्दुस
हिन्दू प्रजा पर जिजीया कर लगता है । किसी तरह यत्न कर उसे माफ करवाना । भण्डारी खींवसी
महाराजा की यह इच्छा बादशाह पर प्रकट की । उन्होंने बादशाह को जिजिया कर के भयङ्कर
लाये । बादशाह को भण्डारी खींवसीजी की युक्ति जच गई और उन्होंने जिजिया कर माफ कर दिया
प्रकार भण्डारी खींवसीजी-ने अपनी कुशल नीति से सारे भारतवर्ष की हिन्दू प्रजा का असीम
किया ।

इन दिनों भण्डारी खींवसी को बादशाह के पास कुछ अधिक दिनों तक रहने का अव
बादशाह इनकी राजनीतिज्ञता और कार्य्यकुशलता से बड़ा प्रभावित हुआ । बादशाह महम्मदशाह
से जोधपुर नरेश की तरफ का सिरोपाव भण्डारी खींवसीजी को हुआ । यह बात जयपुर नरेश
को अच्छी न लगी । इसके बाद जब भण्डारी खींवसीजी ने सीख ली तब फिर उन्हें तथा उनके सा
१९ उमरावों को बादशाह की ओर से कीमती पोशाकें मिलीं । इसके बाद खींवसीजी ने आगरे
महाराजा अजितसिंहजी से मुजरा किया । महाराजा ने आपका बड़ा सत्कार किया और कहा कि "तु
तो ऐसा हो जिसने मेरी ऐवजी का काम बादशाह से करवा लिया ।

Later Moghuls Vol. 1 Page 388

सम्वत् १७७१ मे भंडारी खीवसीजी ने आपको मारोठ, परवतसर, केकड़ी आदि परगनों पर
करने के लिये भेजे।

सम्वत् १७६९ मे आपने जोधपुर राज्य की ओर से डीडवाणा मुकाम पर मुगलसेना से सामना
उसमें विजय प्राप्त की। सम्वत १७७१ के मिगसर मास मे आप गुजरात के सूबे पर अमल
के भेजे गये और उसमें आपको सफलता मिली। सम्वत १७७१ मे महाराजा ने बादशाही
नाहरखा को मरवा दिया। इससे बादशाह बड़ा क्रोधित हुआ और उसने हुसेनअलीखाँ के
एक बड़ी सेना भेजी। सवाई जयसिहजी भी अपने बहुत से उमरावों के साथ शाही सेना मे
। भंडारी विजयसिंहजी शाही सेना से मुकाबला करने के लिए प्रस्तुत हो गये। अन्त मे सन्धि
र शाही सेना वापस लौट गई।

सम्वत १७८५ में जोधपुर महाराजा को बादशाह से अहमदाबाद का सूबा मिला, लेकिन वहाँ
ने इनसे कहा कि "सूबा कागजों से नहीं, तलवारों से मिलता है" इस समय महाराजा बहुतसी
र अहमदाबाद पर चढ़ दौड़े, उस समय लड़ाई मे एक मोर्चे का मुखिया भंडारी विजेराजजी को
मोर्चों का मुखिया इनके भतीजे भंडारी गिरधरदासजी तथा भंडारी रत्नसिंहजी को बनाया। सवत
की आसोज सुदी १० को भारी लड़ाई हुई और इसमे दरबार की विजय हुई और इन्होंने शत्रु की
था हाथी छीन लिये। संवत् १७८१ में भंडारी विजयराजजी को मारोठ तथा परवतसर का
बनाया और सिरोपाव प्रदान किया।

सवत् १७८७ के अषाढ़ मास मे मराठे २० हजार फौज लेकर चौथ लेने के लिए मारवाड़ पर
, तब मारोठ की फौज लेकर भंडारी विजेराजजी ने उनका सामना किया। इसी प्रकार संवत १७८९
न मे मराठों ने ७० हजार फौज से पुन चढ़ाई की, उस समय भंडारी विजयराजजी तथा रत्नसिंहजी ने
और परवतसर की सेना से तथा मनरूपजी ने और मूलाजीवराज ने सोजत की सेना से मुकाबिला
थोड़ी लड़ाई के बाद चौथ के २ लाख रुपये लेकर मराठे वापस हो गये। संवत् १७८७ के माघ
बाजाराव फौज लेकर अहमदाबाद पर चढ़ आये। उस समय भंडारी विजेराज उनके सामने भेजे
सम्वत १७९२ मे भंडारी विजेराजजी सरसा भाटनेर की ओर फौज लेकर गये। इस प्रकार
अनेक फौजों तथा लड़ाइयों मे योग दिया। आपके बड़े भ्राता उदयकरणजी के गिरधरदासजी, रतन-
तथा भीमसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए।

भंडारी गिरधरदासजी—आप १७८२ मे मेड़ते के हाकिम थे। आप गुजरात और मारवाड़ की
लड़ाइयों मे अपने छोटे बन्धु भंडारी रतनसिंहजी और काका विजेराजजी के साथ युद्धों में भाग लेते

उन्हें बड़ी तसल्ली दी। इतना ही नहीं खींवसीजी के शोक में एक दिन तक नौबत बन्द रखी। बादशाह ने भी बड़ा दुःख प्रकट किया।

भण्डारी अमरसिंह—भण्डारी खींवसीजी के स्वर्गवास होने के बाद महाराजा ने उनके पुत्र भण्डारी अमरसिंहजी को दीवानगी का सिरोपाव, बैठने का कुरब, पालकी, हाथी, मोती की कण्ठी और जड़ाऊ कड़ा आदि देकर उन्हें सम्मानित किया। इसी समय महाराजा ने दूसरे भण्डारियों को भी विविध पदों से विभूषित किया।

सम्वत् १७८६ के कार्तिक मास में महाराजा जोधपुर गढ़ में दाखिल हुए, उस समय अमरसिंह देहली में थे। इन्होंने वहाँ से १५ लाख रुपया निकलवा कर भेजे, जिससे महाराजा ने आगे कूच करने की तैयारी की। अहमदाबाद फतह होने के बाद भण्डारी अमरसिंह सम्वत् से १७८९ तक गुजरात के नडियाद प्रान्त के शासक रहे।

सं० १७९२ में सूरत का सूबा दस हजार फौज लेकर अहमदाबाद पर चढ़ आया। अमरसिंह और रत्नसिंहजी ने उसका मुकाबला किया। सूबा सरायतखाँ इस युद्ध में मारा गया और उसकी फौज भाग गई इस लड़ाई में रत्नसिंहजी के चार घाव लगे।

सम्वत् १७९२ में भण्डारी अमरसिंहजी जब दिल्ली गये तब बादशाह ने आपका बड़ा सम्मान किया और आपको सिरोपाव प्रदान किया। सम्वत् १७९३ में महाराजा ने आपको रायांराव की सम्मानित पदवी से विभूषित किया। सम्वत् १८०१ तक आप दीवान के उच्च पद पर अधिष्ठित रहे। सम्वत् १८०१ में अमरसिंहजी का मारोठ में स्वर्गवास हुआ। इस समय महाराज नागोर में बिराजते थे। उन्हें अमरसिहजी की मृत्यु से बड़ा दुःख हुआ। उनके शोक में एक वक्त के लिये नौबत का बजना बन्द रखा गया इतना ही नहीं आप अमरसिंहजी के भतीजे दौलतरामजी और चचेरे भाई मनरूपजी के यहाँ मातमपुर्सी के लिये भी पधारे।

थानसिंहजी—आप भण्डारी अमरसिंहजी के भाई थे। आपने भी जोधपुर राज्य में कई विशिष्ट काम किया। आपने महाराजा अजितसिंहजी के हुक्म से साभर में नाहरखाँ के ऊपर हमला कर उसे मौत के घाट उतारा था। आप अपनी हवेली में एक राजपूत सरदार के द्वारा मारे गये। आपके दौलतरामजी और हिम्मतरामजी नामक दो पुत्र थे।

पोमसिंहजी—आप भण्डारी खींवसीजी के बड़े भ्राता थे। सम्वत् १७६५ में आप जालोर के हाकिम बनाये गये। सम्वत् १७६६ में भण्डारी पोमसिंह ने देवगाँव पर फौजी चढ़ाई की और रुपये पेशकशी के लेकर वापस लौट आये। जब मराठों ने मारवाड़ पर चढ़ाई की और उन्होंने

सम्वत् १७७१ मे भंडारी खींवसीजी ने आपको मारोठ, परवतसर, केकड़ी आदि परगनो पर अधिकार करने के लिये भेजे।

सम्वत् १७६९ मे आपने जोधपुर राज्य की ओर से डीडवाणा मुकाम पर मुगलसेना से सामना किया और उसमें विजय प्राप्त की। सम्वत १७७१ के मिगसर मास में आप गुजरात के सूबे पर अमल करने के लिये भेजे गये और उसमें आपको सफलता मिली। सम्वत १७७१ मे महाराजा ने बादशाही मुसाहिब नाहरखा को मरवा दिया। इससे बादशाह बड़ा क्रोधित हुआ और उसने हुसेनअलीखां के मातहत में एक बड़ी सेना भेजी। सवाई जयसिंहजी भी अपने बहुत से उमरावों के साथ शाही सेना मे मिल गये। भंडारी विजयसिंहजी शाही सेना से मुकाबला करने के लिए प्रस्तुत हो गये। अन्त मे सन्धि हो गई और शाही सेना वापस लौट गई।

सम्वत १७८५ में जोधपुर महाराजा को बादशाह से अहमदाबाद का सूबा मिला, लेकिन वहाँ के नवाब ने इनसे कहा कि "सूबा कागजों से नहीं, तलवारों से मिलता है" इस समय महाराजा बहुतसी सेना लेकर अहमदाबाद पर चढ़ दौड़े, उस समय लड़ाई मे एक मोर्चे का मुखिया भंडारी विजेराजजी को तथा २ मोर्चों का मुखिया इनके भतीजे भंडारी गिरधरदासजी तथा भंडारी रत्नसिंहजी को बनाया। संवत १७८७ की आसोज सुदी १० को भारी लड़ाई हुई और इसमें दरबार की विजय हुई और इन्होंने शत्रु की बन्दूकें तथा हाथी छीन लिये। संवत् १७८१ में भंडारी विजयराजजी को मारोठ तथा परबतसर का हाकिम बनाया और सिरोपाव प्रदान किया।

संवत् १७८७ के अषाढ़ मास में मराठे २० हजार फौज लेकर चौथ लेने के लिए मारवाड़ पर चढ़ आये, तब मारोठ की फौज लेकर भंडारी विजेराजजी ने उनका सामना किया। इसी प्रकार संवत १७८० के फाल्गुन में मराठों ने ७० हजार फौज से पुन चढ़ाई की, उस समय भंडारी विजयराजजी तथा रत्नसिंहजी ने मारोठ और परवतसर की सेना से तथा मनरूपजी ने और मूलाजीवराज ने सोजत की सेना से मुकाबिला किया। थोड़ी लड़ाई के बाद चौथ के २ लाख रुपये लेकर मराठे वापस हो गये। संवत् १७८७ के माघ मास में बाजीराव फौज लेकर अहमदाबाद पर चढ़ आये। उस समय भंडारी विजेराज उनके सामने भेजे गये। सम्वत १७९२ मे भंडारी विजेराजजी सरसा भाटनेर की ओर फौज लेकर गये। इस प्रकार आपने अनेकों फौजों तथा लड़ाइयों में योग दिया। आपके बड़े भ्राता उदयकरणजी के गिरधरदासजी, रतनसिंहजी तथा भीमसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए।

भंडारी गिरधरदासजी—आप १७८२ में मेड़ते के हाकिम थे। आप गुजरात और मारवाड़ की कई लड़ाइयों में अपने छोटे बन्धु भंडारी रतनसिंहजी और काका विजेराजजी के साथ युद्धों में भाग लेते

पूछने के लिये गये और उन्होंने इनके पुण्य के लिये ४०००) धर्मार्थ में बाँटे। पौष सम्वत् १८
कार्तिक सुद १४ को मनरूपजी दीपावड़ी नामक गाव में स्वर्गवासी हुए।

भण्डारी सूरतरामजी—आप भण्डारी मनरूपजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। सम्वत् १८
मास में दरबार ने इन्हें फौज देकर अजमेर की ओर भेजा। आपने अजमेर, राजगढ़, भिनाय, रा
स्थानों पर अधिकार किया। इन स्थानों पर जयसिंहजी के जो हाकिम थे, वे भाग गये।
पर जोधपुर के हाकिम रखे गये। इसके बाद सम्वत् १८०४ में भण्डारी सूरतरामजी जोधपुर के
बनाये गये। महाराजा रामसिंहजी सम्वत् १८०६ की श्रावण सुदी १० को जोधपुर के राजसिं
विराजे और उसी दिन आपने भण्डारी सूरतरामजी को दीवानगी के पद पर नियुक्त किया।
कार्य संचालन में भण्डारी थानसिंहजी के पुत्र (खींवसीजी के पौत्र) भण्डारी दौलतरामजी भी
थे। इस पद पर आप लोग सम्वत् १८०७ की आसोज सुदी १० तक रहे। इसी साल के
में सूरतरामजी और दौलतरामजी आदि को कैद हुई और सवा लाख रुपये की कबुलियत पर
छोड़े गये। जब १८०७ में राजाधिराज बख्तसिंहजी ने जोधपुर पर अधिकार किया उस समय
दौलतरामजी उनके खास मुसाहिबों में से थे।

मनरूपजी के दूसरे पुत्र मलुकचन्दजी के खींवसीजी की हवेली में मारे जाने का हाल
चुके हैं। मनरूपजी के वंश में इस वक्त भण्डारी मकतूलचन्दजी हैं, जो इस वक्त जोधपुर में
भण्डारी दौलतरामजी—आप भण्डारी थानसिंहजी के पुत्र थे। जब महा
बख्तसिंहजी सम्वत् १७९० में अहमदाबाद से जोधपुर लौटे तब दरबार ने आपको अपने हाथी
बैठाया और रुपयों की उछाल करवाई। सम्वत् १७९९ मे आप जोधपुर के हाकिम हुए।
के भादवा में मनरूपजी के दीवान होने पर आपको सूबेदारी, बैठने का कुरब और पालकी,
इनायत हुआ। सम्वत् १८०७ की वैशाख बदी ९ के दिन एक लड़ाई में भण्डारी दौलतरामजी
पर तीर लगा और उनका घोड़ा मारा गया। सम्वत् १८१२ की ज्येष्ठ सुदी १५ को भण्डारी
तथा उनके छोटे भ्राता हिम्मतरामजी, भण्डारी अमरसिंहजी के पुत्र भण्डारी जोधसिंहजी और
सूरतरामजी को कैद से मुक्त किया गया। सम्वत् १८१७ की वैशाख सुदी १२ को भण्डारी
का स्वर्गवास हुआ। उनकी धर्मपत्नी उनके साथ सती हुई।

भण्डारी भवानीरामजी—आप भण्डारी दौलतरामजी के पुत्र थे। सम्वत् १८१२
बदी १२ को आप जोधपुर राज्य के फौजबख्शी (प्रधान सेनापति) के उच्चपद पर अधिष्ठित
आपने कई वीरोचित कार्य्य किये।

भंडारी जोरावरमलजी—आप भंडारी रत्नसिंहजी के द्वितीय पुत्र थे। सम्वत् १७९६ में जोधपुर और जयपुर में जो युद्ध हुआ था उस समय आप जोधपुर दरबार की ओर से कई बड़े-बड़े मुत्सद्दियों के साथ ओल में दिये गये थे। तब से आप वहीं बस गये। संवत् १७२९ की चैत वदी १४ को तत्कालीन जोधपुर नरेश विजयसिंहजी ने जयपुर नरेश महाराजा पृथ्वीराजजी को चिट्ठी लिखकर आपको बुलाया। पर महाराजा पृथ्वीसिंहजी ने आपको भेजना स्वीकार नहीं किया। आप जयपुर द्वारा बक्शी गई हवेली ही में निवास करते थे।

सम्वत् १८५० के लगभग इनको २ हजार रुपया प्रतिवर्ष खजाने से मिलता रहा। २२००) की जागीरी का गाँव भीनापुरा इनके पास रहा। इनके गणेशमलजी शिवदासजी, भवानीदासजी तथा धीरजमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनको संवत् १९१० की अषाढ़ सुदी १५ के दिन २ हजार की जागीरी के बजाय ५००) की रेख का गाँव मोजा राधाकिशन मिला। तब से यह जागीर इन बंधुओं के परिवार में चली आती है।

भंडारी गणेशदासजी के बाद क्रमश हरकचन्दजी अर्जुनसिंहजी तथा रणजीतसिंहजी हुए। रणजीतसिंहजी ने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है। भंडारी शिवदासजी के परिवार मे कल्याणमलजी तथा भवानी दासजी के परिवार में पूनमचन्दजी गुलाबचंदजी ताराचंदजी और फतेचंदजी हैं। इनकी रंगून में पूनमचंद ताराचंद के नाम से फर्म है। भंडारी धीरजमलजी के पुत्र रिधकरणजी हुए। इनके पुत्र भंडारी जुग्रमलजी की वय ६८ साल की है, आपने अपने पुत्रों को शिक्षित करने की ओर उत्तम लक्ष दिया है। आपने १९४० में जमारिया में दुकान की, आप वहाँ के प्रतिष्ठित सज्जन समझे जाते हैं। वहाँ के आप सरपंच (ऑनरेरी मजिस्ट्रेट) रहे थे। आपके बड़े पुत्र धनरूपमलजी भण्डारी खड्गपुर (बंगाल) मे धनरूपमल भंडारी एण्ड सन्स के नाम से बेंकिंग व मोटर का बिजिनेस करते हैं। दूसरे पुत्र भंडारी दौलतमलजी ने लखनऊ से १९३० में एल० एल० बी० तथा १९३१ में एम० ए० पास किया है और इधर १९३० से आप चीफ कोर्ट जयपुर में प्रेक्टिस करते है। आपके छोटे भाई प्रेमचन्दजी एफ़० ए० फाइनल में पढ़ते है भंडारी धनरूपमलजी के ज्ञानचंद गुमानचंद आदि ५ पुत्र है। यह परिवार जयपुर में निवास करता है। तथा यहाँ के ओसवाल समाज म प्रतिष्ठित माना जाता है।

जेठमल लाडमल भंडारी, मद्रास

भंडारी जेठमलजी खींवसीजी के परिवार में हैं। आपका कुटुम्ब साचोर में रहता है।
जेठमलजी का स्वर्गवास संवत् १९७४ में हुआ। आपके प्रतापमलजी, लाडमलजी तथा हीरालालजी [illegible]
पुत्र हुए इनमें प्रतापमल जी तथा हीरालालजी साचोर में ही निवास करते हैं।

भंडारी लादमलजी का जन्म संवत् १९६५ में हुआ। आपने एफ० ए० तक शिक्षा पाई। [illegible]
विवाह जोधपुर में गणेशमलजी सराफ के यहाँ हुआ है। इस समय आप उनके पुत्र सरदारमलजी के
साथ सरदारमल लाडमल के नाम से मद्रास में कारबार करते हैं।

भण्डारी रायचन्दजी का परिवार

भंडारी रायचन्दजी, भंडारी दीपाजी के चतुर्थ पुत्र थे। आप बड़े वीर और [illegible]
आप जोधपुर राज्य की सेना के प्रधान सेनापति थे और आपने कई छोटी बड़ी लड़ाइयों में भाग लिया।
सम्वत् १७३९ की भादवा वदी ९ को राणापुर में गुजरात के शासक महम्मद के साथ जोधपुरी सेना [illegible]
हुआ था, उसमें भंडारी रायचन्दजी बड़ी वीरता के साथ युद्ध करते हुए काम आये।

भण्डारी रघुनाथसिंहजी — जिन महान् राजनीतिज्ञों एवं वीरों ने राजस्थान के इतिहास [illegible]
को उज्ज्वल किया है, उनमें भंडारी रघुनाथसिंहजी का आसन बहुत ऊँचा है। ये अपने समय के [illegible]
थे और मारवाड की राजनीति के मैदान में इन्होंने बडे बड़े खेल खेले। आज भी मारवाड़ [illegible]
गौरव के साथ इनका नाम लेती है। "अजे दिलीरो पातशाह और राजा तू रघुनाथ" की [illegible]
के बच्चे बच्चे के मुँह पर है। यह बात निःसन्देह रूप से कही जा सकती है कि मारवाड़ में
प्रकाश इनकी कीर्ति का फैला उतना दो एक मुत्सद्दियों ही का फैला होगा। खींवसीजी [illegible]
प्रभाव भी केवल राजस्थान की सीमा तक ही परिमित नहीं था, वरन उत्तर में ठेठ दिल्ली और
पश्चिम में गुजरात तक की राजनीति पर इनका बड़ा प्रभाव था। महाराजा अजितसिंहजी [illegible]
मुत्सद्दियों में दो सबसे अधिक प्रकाशमान तारे थे—एक खींवसीजी और दूसरे रघुनाथसिंहजी। [illegible]
है कि इनका पूरा इतिहास उपलब्ध नहीं है।

सम्वत् १७६६ में भंडारी रघुनाथजी दीवानगी की प्रतिष्ठित पद पर अधिष्ठित [illegible]
इस दीवानगी के काम को आपने बड़ी ही उत्तमता के साथ किया और इसके उपलक्ष में [illegible]
अजितसिंहजी ने सम्वत् १७६७ में आपको रायरायां की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। [illegible]
महाराजा ने आपको हाथी, पालकी, सिरोपाव, मोतियों की कंठी आदि देकर सम्मानित किया।

साथ जालोर में रहे। जब संवत् १७६३ मे महाराजा अजितसिंहजी के हाथ में जोधपुर के शासन की बागडोर आई तब उन्होंने भंडारी विट्ठलदासजी को दीवान बनाया और उन्हें २४९२५) की जागीरी के १५ गाँव इनायत किये।

सम्वत् १७६५ की फाल्गुन सुदी १० के दिन महाराजा अजितसिंहजी भंडारी विट्ठलदासजी के घर आरोगने (भोजन के लिये) पधारें उस समय दरबार को विट्ठलदासजी ने ४६ हजार रुपये नजर किये। दरबार ने प्रसन्न होकर इन्हें हाथी सिरोपाव भेंट किया। इसी साल सावण सुदी १२ को आप को फिर से दीवानगी का पद मिला। सम्वत १७६६ की आषाढ़ बदी ६ को आपको प्रधानगी का सम्मान, खासा सिरोपाव और जड़ाऊ कटारी भेंट मिली। आपके भ्राता भंडारी नारायणदासजी सम्वत १७६५ में मेड़ता के हाकिम थे। इसी परिवार में भंडारी माईदास जी हुए।

भंडारी माईदासजी—आप भंडारी देवराजजी के पुत्र थे। सम्वत १७६५—६६ में जब भंडारी खींवसीजी देश दीवान थे उस समय उनके तन दीवान भंडारी माईदासजी बनाये गये। सम्वत् १७६७ में आपको कैद हुई और थोड़े ही समय में आप मुक्त हो गये। इसी समय बणाड नाम का गाँव आपको जागीरी में दिया गया। सम्वत १८६९ के फाल्गुन में भंडारी माईदासजी, समदड़िया मूथा—गोकुलदास जी के साथ दीवान बनाये गये।

भंडारी विट्ठलदासजी के पश्चात् इस परिवार का सिलसिलेवार कुर्सीनामा नहीं प्राप्त होता। सम्भव है भंडारी विट्ठलदासजी के पुत्र या पौत्र भंडारी जसराजजी हों, । इन्हीं जसराजजी भंडारी के पुत्र भंडारी गंगारामजी हुए, जो उन्नीसवी शताब्दि के मध्य में जोधपुर के राजनैतिक गगन में तेजपुन्ज नक्षत्र की तरह प्रकाशमान हुए।

भंडारी गंगारामजी

आप जोधपुर के इतिहास में अपने समय में बड़े प्रतापी पुरुष हुए। जोधपुर महाराजा विजयसिंहजी ने फोज देकर आपको किशनगढ़ तथा उमरकोट की लडाइयों में भेजा। सम्वत १८३३ में महाराजा विजयसिंहजी ने आपके वीरोचित कार्यों से प्रसन्न होकर आपको ६ हजार की जागीरी देकर सम्मानित किया। जब सवत् १८४९ में महाराजा विजेसिंहजी का स्वर्गवास हुआ और उनकी गद्दी पर महाराजा भीवसिंहजी बैठे उस समय भंडारी गंगारामजी और उनके भाणेज सिंघवी इन्द्रराजजी उनके मुसाहब थे। इन्होंने बड़ी बड़ी फोजें लेकर जालोर पर घेरा डाला जहाँ महाराजा मानसिंहजी अपनी थोड़ी सी सेना के साथ किले में घिर कर अपनी रक्षा कर रहे थे। लगातार कई वर्षों तक दोनों पार्टियों

भंडारी थानसिंह और पोमसिंह भंडारी के पुत्र मलूकचंद को देवडा रावा नामक राजपूत ... डाला। यहाँ यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि महाराजा की आज्ञा उन्हें ... कैद करने की थी। भंडारी खींवसी और भंडारी रघुनाथ भी कैद कर लिये गये। ... के सब नामी भंडारी जेल में डाल दिये गये। कई भंडारी पीछे रुपये देकर छूटे। राजनैतिक ... महाराजा को भंडारी रघुनाथ को छोड़ने के लिये मजबूर किया। फिर भंडारी रघुनाथ को ... सौंपा गया।

इसके बाद सम्वत १७८५ में फिर अन्य भंडारियों के साथ राय रघुनाथसिंहजी ... हुई। पर थोड़े ही दिनों के बाद जयपुर नरेश ने जोधपुर पर चढ़ाई की। जयसिंहजी के साथ भारी फौज थी और जोधपुर राज्य का अस्तित्व तक खतरे में पड गया था। ऐसी कठिन परिस्थिति ... निरुपाय होकर दरबार ने फिर भंडारी रघुनाथ को कैद से मुक्त किया और उन्हें बुलाकर कहा कि ... बड़ी नाजुक है। जयसिंहजी फौज लेकर चढ़ आये हैं और घर का भेद फूटा हुआ है। तुम ... तोड़ करने वाले आदमी हो। अब ऐसा उपाय करो जिससे जयसिंहजी वापस लौट जावें। ... यह काम कर सको तो तुम्हारी बडी भारी बंदगी समझी जायगी। इस पर भंडारी रघुनाथसिंहजी ... अर्ज की कि खाविंदो की कृपा से सब ठीक हो जायगा। इसके बाद भंडारी रघुनाथजी जयसिंहजी के पास ... यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि जयसिंहजी पर भंडारी रघुनाथजी का बडा भारी प्रभाव था। ... राजस्थान के बड़े मुत्सुद्दी मानते थे। ज्योंही भंडारीजी जयसिंहजी के पास पहुँचे त्योंही महाराजा ... सिंहजी ने खड़े होकर आप का स्वागत किया और पीछे मारवाड़ी भाषा में कहा—"भंडारी आप ... आवणो हुवो जद थाँको छुटको हुवो।"

इसके बाद भंडारी रघुनाथजी ने जयसिंहजी को फौज खर्च के लिये दस लाख रुपये ... वायदा कर उन्हें वापस लौटा दिया। रुपयों की जमानत के लिये खुद भंडारी रघुनाथ, भंडारी ... भंडारी अमरदास, भंडारी रतनसिंह और भंडारी मेघराज आदि मुत्सुद्दियों को ओल में दे दिये गये। ... कह चुके हैं कि भंडारी रघुनाथजी का जयपुर नरेश महाराजा जयसिंहजी पर बडा प्रभाव था। ... ही छूट कर जोधपुर आगये और उन्होंने महाराजा से मुजरा किया।

इस प्रकार जोधपुर राज्य की कई महत्वपूर्ण सेवाएं करने के बाद भंडारी रघुनाथ सम्वत ... में मेड़ता मुकाम पर स्वर्गवासी हुए।

भण्डारी अनोपसिंहजी—आप भंडारी रघुनाथसिंहजी के पुत्र थे। आप बड़े ...

बड़ा रंज हुआ। लेकिन उस समय उनके सामने प्रधान लक्ष्य राज्य की रक्षा करना था, अत वे कैद से रिहा होते ही समझौते के प्रयत्न में लग गये, जिसका विवरण पहले दिया जा चुका है।

इसके थोड़े ही दिनों बाद भण्डारी गगारामजी ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ भारी फौज लेकर बीकानेर पर चढ़ाई की। वहाँ के महाराजा सूरतसिंहजी ने इन्हें साढ़े तीन लाख रुपये देने का वादा किया, तब ये वहाँ से वापस लौट आये। इसी तरह आपने नवाब मीरखा तथा लोढ़ा शाह कल्याणमलजी के साथ पोकरण पर चढ़ाई की। वहाँ के ठाकुर से एक लाख रुपयों की आपने कबूलियत लिखवाई।

भंडारी गगारामजी तथा सिंघवी इन्द्रराजजी का प्रेम—ये दोनों मुत्सुद्दी मामा तथा भानेज थे। भण्डारी गगारामजी मेधावी, दूरदर्शी और बहादुर प्रकृति के नरवीर थे। इनके विषय में यह कहना अत्युक्ति न होगी कि भण्डारी गंगारामजी का मस्तिष्क और सिंघवी इन्द्रराजजी का साहस इनके कार्यों को सफल करने में सार्थक हुआ। इनके विषय में इस प्रकार का पद्य प्रचलित है कि—

इंद[1] को फंद गंग[2] जाणे, ने गंग को गोविंद[3] जाणे।

जयपुर, बीकानेर आदि की विजय के पश्चात् सिंघवी इन्द्रराजजी रियासत के दीवान बनाये गये। इनके सम्मान और अधिकार में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। ऐसे समय में उनको भण्डारी गंगारामजी की जुदाई बहुत ही ज्यादा अखरी। कहा जाता है कि भण्डारी गंगारामजी को तत्कालीन राजनीति पर बड़ा असंतोष हुआ। अपने बदले में अपने पुत्र को क़ैद में रखे जाने का उन्हें बड़ा सदमा हुआ, और वे अपना अन्तिम समय हरिद्वार में बिताने के लिए रवाना हो गये। इस प्रकार महाराजा विजैसिंहजी, महाराजा भीमसिंहजी तथा महाराजा मानसिंहजी इन तीन नरेशों के राजत्व काल में रियासत की तन मन से सहायता करते हुए इस वीर पुङ्गव ने अपने जीवन के अन्तिम दिन हरिद्वार में ही बिताये तथा धार्मिक जीवन बिताते हुए वहीं आपका स्वर्गवास हुआ।

भंडारी भवानीरामजी—आप भण्डारी गङ्गारामजी के पुत्र थे। संवत् १८६३ में आपको अपने पिताजी के साथ कैद हुई तथा जोधपुर के रक्षार्थ उनके छोड़े जाने पर आपको उनके एवज में कैद रखा। जयपुर विजय के बाद आप छोड़े गये तथा उस समय भण्डारी गंगारामजी को जोधपुर परगने का बगाड नामक गाव जागीर में दिया गया। यह गाव इनके अधिकार में संवत् १८७९ तक रहा। पीछे उनको बलूनसर परगने का बेसरोली गाँव जागीरी में मिला, जो इनके पास सवत् १८८५ तक रहा। ये भी जोधपुर राज्य की सेवाएँ करते रहे।

(१) सिंघवी इन्द्रराजजी। (२) भण्डारी गङ्गारामजी। (३) भगवान् ईश्वर।

भण्डारी जसराजजी—आपका जन्म सम्वत १९११ में हुआ। अपने पिताजी [illegible] समय इनकी अवस्था केवल ९ वर्ष की थी। दस वर्ष की अवस्था में आप कच्ची सड़क [illegible] पर जैतारण (मारवाड) से भानपुर (इन्दौर राज्य) में आये और अपने नाना [illegible] निरीक्षण में दूकान का काम करने लगे। थोड़े ही दिनों में आपने व्यापार में अच्छी [illegible] करली। सम्वत १९४८ में आप वहाँ की सुप्रसिद्ध श्रीकिशन शिवनारायण नामक फर्म पर [illegible] स्थान पर मुनीम हो गये। उक्त फर्म के मालिक इन्दौर के सुप्रसिद्ध जागीरदार श्रीमान् [illegible] थे। भण्डारीजी ने उक्त फर्म का कार्य्य सुचारू रूप से सञ्चालित किया। इसके बाद सम्वत [illegible] जसराज सुखसम्पतराज नामक स्वतन्त्र फर्म खोली। भानपुर में इस फर्म की अच्छी प्रतिष्ठा [illegible] जसराजजी भानपुर परगने में अच्छे लोकप्रिय और प्रतिष्ठित साहूकार समझे जाते थे। [illegible] सम्वत १९८१ में हुआ। आपके सुखसम्पतराज, चन्द्रराज, मोतीलाल और प्रेमराज नामक [illegible]

भण्डारी बन्धु—जसराजजी के बड़े पुत्र सुखसम्पतिराजजी का जन्म सम्वत १९४० [illegible] सुदी १४ को हुआ। ईसवी सन् १९१२ में आप श्री वेङ्कटेश्वर समाचार और सन् १९१[illegible] प्रचारक के संयुक्त सम्पादक हुए। ईसवी सन् १९१५ में इन्होंने पाटलिपुत्र के संयुक्त [illegible] कार्य्य किया। इस समय इस पत्र के प्रधान सम्पादक सुप्रख्यात इतिहास वेत्ता श्रीमान् [illegible] जायसवाल बैरिस्टर थे। इसके दूसरे ही साल ये इन्दौर राज्य के "मल्हारि मार्तण्ड" नामक पत्र के हिन्दी सम्पादक हुए। ईसवी सन् १९२३ में इन्होंने अजमेर से "नवीन भारत" नामक पत्र को सञ्चालित किया। ईसवी सन् १९२६ से आपने इन्दौर दरबार की सहायता से [illegible] नामक मासिक पत्र निकाला जो चार वर्ष तक चलता रहा। इस पत्र की स्वर्गीय लाला लाज[illegible] अपने (People) नामक सुप्रख्यात पत्र में बड़ी प्रशंसा की और भारतवर्ष के घर घर में इसकी [illegible] आवश्यकता बतलाई और भी कई देशमान्य नेताओं ने, कृषि विद्या विशारदों ने तथा हिन्दी [illegible] सब समाचार पत्रों ने "किसान" की बड़ी सराहना की।

कई प्रसिद्ध पत्रों के सम्पादन करने के अतिरिक्त भण्डारी सुखसम्पतिरायजी ने हिन्दी [illegible] बावीस ग्रन्थ लिखे। इनमें "भारतदर्शन" पर स्वर्गीय लाला लाजपतरायजी ने और "तिलक [illegible] माननीय पण्डित मदन मोहन मालवीयजी ने भूमिका लिखी। इनका राजनीति विज्ञान [illegible] सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में राजनीति विषय की पाठ्य पुस्तक मुकर्रर की गई है। "[illegible] नामक ग्रन्थ पर इन्हें इन्दौर दरबार से १५०००) का वृहत पुरस्कार मिला। राजपूताना [illegible] एज्युकेशन बोर्ड ने इस ग्रन्थ को एफ० ए० के लिये रेपिड रीडिंग ग्रन्थ के बतौर [illegible]

भंडारी फौजमलजी—आप संवत् १८७७ मे जालौर के हाकिम हुए। पिताजी के गुजरने पर के नाम की जागीरी के गाव खारिया, नीवरा तथा चवण्डिया इनके नाम पर हुए। संवत् १८८३ मे का स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र सुलहराजजी के पास अपने पितामह के नामकी जागीरी के दो गाव रहे। का कड़ा, मोती, दुशाला आदि जोधपुर दरबार से इनायत हुआ इनका स्वर्गवास संवत् १८९० के ।मग छोटी वय में हा हो गया। भण्डारी सलहराजजी के पुत्र जसराजजी ने कोई कार्य्य नहीं किया तथा न स अपने पूर्वजों की सम्पत्ति उड़ाई। इनके पुत्र अमृतराजजी ५० सालों तक जोधपुर स्टेट मे थानेदार । सवत् १९४८ मे इनका शरीरान्त हुआ। आपके रूपराजजी, सोहनराजजी तथा चैनराजजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें बड़े दो भाई निसतान गुजरे। इस समय भंडारी चैनराजजी की अवस्था ४८ साल है तथा ये मेसर्स जी रघुनाथमल बैंकर्स हैदराबाद (दक्षिण) की दुकान पर रहते है। इनके भी कोई ।नहा है।

भण्डारी सम्पतराजजी करणराजजी, सोजत

ऊपर भण्डारी लूणाजी का परिचय दे चुके है। इनके परिवार मे भंडारी धनराजजी हुए जिनकी मे धनराजोत भडारी कहलाती है।

भंडारी धनराजजी महाराजा सूरसिंहजी के समय में राज्य के उच्च पद पर कार्य्य करते थे। ये सोजत कर रहने लगे। इनकी सातवी पीढ़ी में दयालदासजी के पुत्र विट्ठलदासजी प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। भंडारी दासजी ने तोपखाने के प्रमुख नियुक्त होकर गोडवाड़ प्रान्त के घाणेराव नामक नगर को फतह किया मारवाड़ राज्य मे मिलाया। मेड़ते के पास गींगोली की घाटी की लड़ाई मे भी इन्होंने बहादुरी के किये। इससे प्रसन्न होकर दरबार ने सवत् १९५२ की वैसाख वदी २ को इ हें वाली और सोजत मे का खेत इनायत किये, ये वेरे ओर खेत अभी भी इनकी संतानों के कबजे मे है। जिस समय जोधपुर का सट राजारामजी गदिया ने श्री शत्रुजयजी का संघ निकाला था, उसमें राज की तरफ से इतजाम म भण्डारी विट्ठलदासजी भेजे गये थे। उस समय शत्रुजय तीर्थ पर इन्होंने कोशिश कर एक कायम करवाई जो दूसरे नाम से इस समय मौजूद है। सम्वत् १८८२ मे आप गुजरे।

भण्डारी विट्ठलदासजी के गोविन्ददासजी और गिरधरदासजी नामक २ पुत्र हुए। गोविन्ददासजी मम के अफसर थे, आपके अमीदासजी और देवीदासजी नामक २ पुत्र हुए। भण्डारी गिरधरदासजी हा के हाकिम थे। भण्डारी देवीदासजी का छोटी उम्र में ही अन्तकाल हो गया था। इनके बड़े भ्राता भण्डारी

जसराजजी के तीसरे पुत्र का नाम श्री मोतीलालजी भंडारी हैं। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर इन्होंने वैद्यक और होमियोपैथी का अध्ययन किया। इन्होंने पटना के होमियोपैथिक कॉलेज से डिग्री प्राप्त की और इस वक्त ये इन्दौर में सफलता पूर्वक होमियोपैथी की प्रेक्टिस करते हैं।

जसराजजी के चौथे पुत्र का नाम प्रेमराजजी भण्डारी है। इन्होंने इसी साल बी० ए० पास किया। ये नवीन विचारों के और समाज सुधारक हैं। इन्होंने पर्दा की हानिकारक प्रथा को अपने घर से उठा दिया। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती सी० नजरकला सुशिक्षित महिला है।

भंडारी सुखसम्पतिरायजी के पुत्र प्रसन्नकुमार, वसंतकुमार, चन्द्रराजजी के पुत्र प्रकाश और विजय कुमार तथा भंडारी मोतीलालजी के पुत्र नरेन्द्रकुमार हैं। प्रेमराजजी की कन्या शारदा देवी है। भंडारी सुखसम्पतीरायजी की बड़ी कन्या स्नेहलता कुमारी की वय १४ साल की है। विद्याविनोदिनी की प्रथमा परीक्षा पास कर चुकी है। गृह कार्य्य व सीनेपिरोने की कला में भी दक्ष तथा सुधारक विचारों की बालिका है।

भण्डारी खेतसीजी का परिवार

भण्डारी खेतसीजी—आप भंडारी दीपाजी के द्वितीय पुत्र थे। आपने जोधपुर राज्य की प्रशंसनीय सेवाएँ कीं। जब महाराजा जसवन्तसिंहजी का सम्वत् १७३५ में पेशावर मुकाम पर स्वर्गवास हो गया, तब वहां से महाराजा की फौज को वापस लानेवाले व्यक्तियों में भंडारी भगवानदासजी, खेतसीजी और भंडारी लालचन्दजी आदि थे। आपके उदयकरणजी, विजयराजजी, गडूमलजी और लक्ष्मीचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

भण्डारी विजयराजजी—जिन ओसवाल मुत्सद्दियों ने जोधपुर राज्य के इतिहास में नाम अमर किया है उनमें भण्डारी विजयराजजी अपना विशेष स्थान रखते हैं। पहले पहल सम्वत् १७६५ में आप मेड़ते के हाकिम बनाये गये। जब सम्वत् १७६८ में शाहजादा फर्रुखसियर ने ८०००० फौज लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की उस समय जोधपुर दरबार की ओर से भण्डारी विजयराजजी तत्कालीन मुगल बादशाह की सहायता के लिये ससैन्य भेजे गये। उस समय महाराजा अजितसिंहजी ने आपको यह सूचना दी थी कि दो दलों में जिस दल की विजय हो उसी ओर तुम मिल जाना। भंडारी विजयराजजी ने महाराजा की इस सूचना का भली प्रकार पालन किया। शाहजादा फर्रुखसियर ने विजयी होकर जब दिल्ली तख्त की ओर प्रयाण किया तो भंडारी विजयराजजी उसकी ओर मिल गये।

ानने ही गुजर गये। भण्डारी जसराजजी के पुत्र दुलीचन्दजी तथा चन्दनमलजी और सरदारमलजी के पुत्र तजमलजी हुए। इनमें चन्दनमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

भण्डारी दुलीचन्दजी का जन्म संवत् १९२८ में हुआ। आप गोड़वाड़ के ओसवाल समाज मे तिष्ठित व्यक्ति है। सादड़ी की पंचायती मे आप आगेवान व्यक्ति है। भण्डारी तेजमलजी तथा चंदनमलजी के पुत्र केसरीमलजी और पुखराजजी संवत् १९७८ मे कोयम्बटूर गये, और वहाँ भागीदारी मे जरी का व्यापार शुरू किया। इधर ६ सालों से आप लोग तेजपाल पुखराज भण्डारी के नाम से कोयम्बटूर मे अपना घरू काम करते है। दुलीचन्दजी के पुत्र घीसूलालजी हैं।

सेठ गुलाबचन्द मुकनमल भंडारी, चांदूर बाजार

लूणावत भण्डारी तेजमलजी लगभग १०० साल पहिले जोधपुर से चांदूर बाजार (सी० पी०) आये तथा यहाँ व्यापार शुरू किया। इनके पुत्र तखतमलजी का परिवार कलकत्ते में, बख्तावरमलजी का ...बाद में तथा गुलाबचन्दजी का यहाँ चान्दूर में है। भण्डारी गुलाबचन्दजी ९५ साल की लम्बी उमर पाकर संवत् १९८० मे गुजरे। आप यहाँ के ओसवाल समाज में अच्छे इज्जतदार व्यक्ति थे। इनके सोनमलजी, ...नमलजी, जवाहरमलजी, मुकनमलजी, लखमीचन्दजी तथा पूरनमलजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें मुकनमलजी मौजूद है। आप सेठ रामलाल मूलचन्द के यहाँ मुनीमात करते है। आपके पुत्र मेघराजजी ... केसरीमलजी है। इनमें केसरीमलजी, जवाहरमलजी के नाम पर दत्तक गये है। सोनमलजी के पुत्र ...तीमलजी तथा चाँदमलजी बदनूर मे सेठ प्रतापमल लखमीचन्द गोठी के यहाँ सर्विस करते है तथा ...नमलजी के पुत्र छोगामलजी मुगलचावडी में रहते हैं।

भंडारी अनोपसिंहोत, मेसदासोत, परतापमलोत और कुशलचंदोत

हम ऊपर लिख चुके है कि भण्डारी नराजी की पांचवी पीढ़ी में भण्डारी गोराजी हुए। इनके ...जी सादूलजी, सुलतानजी और जेवतजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें लूणाजी की सतानें लूणावत कहलाई। जिनका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। लूणाजी के छोटे भ्राता सादूलजी के ... पुत्र भैरवराजजी थे। इनके ७ पुत्र हुए जिनमें चौथे पुत्र कल्याणदासजी थे।

भण्डारी कल्याणदासजी के अनोपसीजी, मेसदासजी, सिरदारमलजी, परतापचंदजी तथा कुशलचंदजी हुए। इन बन्धुओं ने भी मारवाड़ राज्य की बहुत सी सेवाएँ कीं। इनकी सतानें क्रमशः अनोपसिंहोत, मेसदासोत, परतापमलोत और कुशलचंदोत कहलाई, जिनका परिचय नीचे दिया जा रहा है।

जसराजजी के तीसरे पुत्र का नाम श्री मोतीलालजी भंडारी है। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर इन्होंने वैद्यक और होमियोपैथी का अध्ययन किया। इन्होंने पटना के होमियोपैथिक कॉलेज से डिग्री प्राप्त की और इस वक्त ये इन्दौर में सफलता पूर्वक होमियोपैथी की प्रेक्टिस करते हैं।

जसराजजी के चौथे पुत्र का नाम प्रेमराजजी भण्डारी है। इन्होंने इसी साल बी० ए० पास किया। ये नवीन विचारों के और समाज सुधारक हैं। इन्होंने पर्दा की हानिकरक प्रथा को अपने घर से उठा दिया। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती सी० नजरकला सुशिक्षित महिला है।

भंडारी सुखसम्पतिरायजी के पुत्र प्रसन्नकुमार, वसंतकुमार, चन्द्रराजजी के प्रभात कुमार, और विजय कुमार तथा भंडारी मोतीलालजी के पुत्र नरेन्द्रकुमार हैं। प्रेमराजजी की कन्या का नाम शारदा देवी है। भंडारी सुखसम्पतीरायजी की बड़ी कन्या स्नेहलता कुमारी की वय १४ साल की है। ये विद्याविनोदिनी की प्रथमा परीक्षा पास कर चुकी है। गृह कार्य्य व सीनेपिरोने की कला में दक्ष है तथा सुधारक विचारों की बालिका है।

भण्डारी खेतसीजी का परिवार

भण्डारी खेतसीजी—आप भंडारी दीपाजी के द्वितीय पुत्र थे। आपने जोधपुर राज्य की प्रशंसनीय सेवाएँ कीं। जब महाराजा जसवन्तसिंहजी का सम्वत् १७३५ में पेशावर मुकाम पर स्वर्गवास हो गया, तब वहा से महाराजा की फौज को वापस लानेवाले व्यक्तियों में भंडारी भगवानदासजी, नाथा खेतसीजी और भंडारी लालचन्दजी आदि थे। आपके उदयकरणजी, विजयराजजी, ठाकुरदासजी और लक्ष्मीचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

भण्डारी विजयराजजी—जिन ओसवाल मुत्सद्दियों ने जोधपुर राज्य के इतिहास को गौरवान्वित किया है उनमे भण्डारी विजयराजजी अपना विशेष स्थान रखते हैं। पहले पहल सम्वत् १७६३ में आप मेड़ते के हाकिम बनाये गये। जब सम्वत् १७६८ में शाहजादा फर्रुखसियर ने ८०००० फौज लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की उस समय जोधपुर दरबार की ओर से भण्डारी विजयराजजी तत्कालीन मुगल बादशाह की सहायता के लिये ससैन्य भेजे गये। उस समय महाराजा अजितसिंहजी ने आपको यह संकेत कर दिया था कि दो दलों में जिस दल की विजय हो उसी ओर तुम मिल जाना। भंडारी विजयराजजी ने महाराजा की इस सूचना का भली प्रकार पालन किया। शाहजादा फर्रुखसियर ने विजयी होकर जब दिल्ली के तख्त की ओर प्रयाण किया तो भंडारी विजयराजजी उसकी ओर मिल गये।

सामने ही गुजर गये। भण्डारी जसराजजी के पुत्र दुलीचन्दजी तथा चन्दनमलजी और सरदारमलजी के पुत्र तेजमलजी हुए। इनमें चन्दनमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

भण्डारी दुलीचन्दजी का जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आप गोढ़वाड़ के ओसवाल समाज मे प्रतिष्ठित व्यक्ति है। सादड़ी की पंचायती में आप आगेवान व्यक्ति है। भण्डारी तेजमलजी तथा चंदनमलजी के पुत्र केसरीमलजी और पुखराजजी संवत् १९७८ मे कोयम्बटूर गये, और वहाँ भागीदारी में जरी का व्यापार शुरू किया। इधर ६ सालों से आप लोग तेजपाल पुखराज भण्डारी के नाम से कोयम्बटूर में अपना यह काम करते हैं। दुलीचन्दजी के पुत्र घीसूलालजी हैं।

सेठ गुलाबचन्द मुकनमल भंडारी, चांदूर बाजार

लूणावत भण्डारी तेजमलजी लगभग १०० साल पहिले जोधपुर से चांदूर बाजार (सी० पी०) आए तथा यहाँ व्यापार शुरू किया। इनके पुत्र तखतमलजी का परिवार कलकत्ते में, बख्तावरमलजी का हैदराबाद में तथा गुलाबचन्दजी का यहाँ चान्दूर में है। भण्डारी गुलाबचन्दजी ९५ साल की लम्बी उमर पाकर संवत् १९८० में गुजरे। आप यहाँ के ओसवाल समाज में अच्छे इज्जतदार व्यक्ति थे। इनके सोनमलजी, केसरीमलजी, जवाहरमलजी, मुकनमलजी, लखमीचन्दजी तथा पूरनमलजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें मुकनमलजी मौजूद है। आप सेठ रामलाल मूलचन्द के यहाँ मुनीमात करते हैं। आपके पुत्र मेघराजजी व केसरीमलजी हैं। इनमें केसरीमलजी, जवाहरमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। सोनमलजी के पुत्र [illegible]मलजी तथा चौदमलजी बदनूर में सेठ प्रतापमल लखमीचन्द गोठी के यहाँ सर्विस करते हैं तथा पूरनमलजी के पुत्र छोगामलजी मुगलचावड़ी में रहते हैं।

भंडारी अनोपसिंहोत, मेसदासोत, परतापमलोत और कुशलचंदोत

हम ऊपर लिख चुके हैं कि भण्डारी नराजी की पांचवी पीढ़ी में भण्डारी गोराजी हुए। इनके लूणाजी, सादूलजी, सुलतानजी और जेवतजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें लूणाजी की संतानें लूणावत कहलाई। जिनका परिचय ऊपर दिया जा चुका है। लूणाजी के छोटे भ्राता सादूलजी के पुत्र [illegible]राजजी थे। इनके ७ पुत्र हुए जिनमें चौथे पुत्र कल्याणदासजी थे।

भण्डारी कल्याणदासजी के अनोपसीजी, मेसदासजी, सिरदारमलजी, परतापचंदजी तथा कुशल[illegible] पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने भी मारवाड़ राज्य की बहुत सी सेवाएँ कीं। इनकी संतानें क्रमशः अनोपसिंहोत, मेसदासोत, परतापमलोत और कुशलचंदोत कहलाई, जिनका परिचय नीचे दिया जा रहा है।

रहे। संवत् १७८२ में आपको जोधपुर की सूबेदारी इनायत हुई। जब रायरायां भंडारी खींवसीजी के पुत्र भंडारी अमरसिंहजी दीवान हुए तब गिरधरदासजी को सिरोपाव, बैठने का कुरब, पालकी, मोतियों की कंठी और सरपेंच मिला था। सम्वत् १८०१ में आप दीवान के पद से सुशोभित किये गये। इस पद पर आप १८०४ तक रहे।

भंडारी रत्नसिंहजी—भंडारी खींवसीजी और भंडारी रघुनाथजी की तरह भंडारी रत्नसिंहजी भी महान प्रतापी हुए। ये बड़े मुत्सद्दी, शासन कुशल और वीर थे। सम्वत् १७८७ में आपने जोधपुर की ओर से गुजरात पर सैनिक चढ़ाई की और उसमें आपको बड़ी सफलता मिली। इसके बाद गुजरात के सूबे पर महाराजा अभयसिंहजी का अधिकार हो गया और भंडारी रत्नसिंहजी वहाँ के नायब सूबा बनाये गये। वहाँ कुछ वर्षों तक आपने इस प्रतिष्ठित पद पर बड़ी ही सफलता के साथ काम किया। इस वक्त एक प्रकार से आप गुजरात के कर्ता धर्ता थे। गुजरात के इतिहास में भी आपके गौरव का प्रशंसनीय उल्लेख है। सम्वत् १७७२ में सूरत के सूबा सरबखां ने १० हजार फौज से अहमदाबाद पर आक्रमण किया। भंडारी रत्नसिंहजी ने बड़ी ही वीरता के साथ इससे लोहा लेकर इसे पूर्ण रूप से पराजित किया। इतना ही नहीं रत्नसिंहजी ने ४० मील तक इसका पीछा किया। इस लड़ाई में सरबखां मारा गया और रत्नसिंहजी के चार घाव लगे।

इसके बाद सम्वत् १७९० में आप अजमेर के गवर्नर बनाये गये। चार वर्ष तक आप इस पद पर रहे। इस समय आपको कितने ही युद्ध करने पड़े। सम्वत् १८०३ में आपने बीकानेर पर चढ़ाई की जहाँ बड़ी वीरता से युद्ध करते हुए आप काम आये। जब आपकी मृत्यु का समाचार महाराजा अभयसिंहजी ने पुष्कर में सुना तब आपको हार्दिक दुःख हुआ और आपके शोक में एक वक्त नौबत बन्द रक्खी गई।

भंडारी रत्नसिंहजी के सवाईरामजी तथा जोरावरमलजी नामक दो पुत्र थे। इनमें जोरावरमलजी भंडारी विजयराजजी के नाम पर दत्तक गये। भंडारी सवाईरामजी के बाद क्रमशः तख्तमलजी, सुखमलजी, चांदमलजी, नथमलजी और अभयराजजी हुए। इस समय भंडारी अभयराजजी के पुत्र भंडारी सम्पतराजजी विद्यमान हैं। आपने अजमेर के रायबहादुर सेठ नेमीचन्दजी की ओर से भरतपुर, करौली आदि कई रियासतों में खजांची काम किया। इस समय आप कोटे के सेठ दीवानबहादुर केसरीसिंहजी की ओर से आबू में खजांची का काम करते हैं। आपका कई बड़े-बड़े पोलिटिकल ऑफिसरों से बड़ा अच्छा सम्बन्ध रहता है और उनकी ओर से आपको कई अच्छे २ प्रशंसा-पत्र मिले हैं। मेड़ता में आपके पूर्वजों की बनाई हुई हवेली है।

भंडारी बहादुरमलजी—आप भण्डारी प्रतापमलजी की पाचवी पीढ़ी में हुए, अपका जन्म १८७३ में हुआ महाराजा तखतसिहजी के समय मे इनका बडा प्रभाव और जोर था, इनके सम्बन्ध मे उस समय कहावत थी कि... . "बारे नाचे बादरियो–मा, नाचे नाजरियो"। ये सम्वत् १८९६ से १९४२ तक जोधपुर में हाकिम सायर, खासा खजाना, हुजूर दफ्तर, अन्न कोठार के दारोगा और साल्ट विभाग के सुपरिटेण्डेण्ट पद पर रहे। सवत् १९३२ में साल्ट सुपरिटेन्डेण्ट पद पर सर्विस करते समय ३ हजार की रकम का हरढाणी नामक गाँव आपको जागीरी में मिला। आपको महाराजा तखतसिह ने प्रसन्नता के कई रुक्के दिये थे। आप कट्टर तेरापथी आम्नाय के मानने वाले महानुभाव थे। आपको १८८३ मे नागोर का गाँव सिलारिया जागीरी में मिला। आपका सवत् १९४२ मे स्वर्गवास हुआ।

भंडारी किशनमलजी—आप भण्डारी बादरमलजी के पुत्र थे। आप खजाने वाले भण्डारीजी के नाम से मशहूर थे। आप पहले हाकिम, एन कोठार, और बागर आफ़िसर रहे। पश्चात् सवत् १९४२ से १५ वर्षों तक खासा खजाना के आफिसर रहे। आप से जोधपुर दरबार तथा महाराज प्रतापसिंहजी बहुत खुश रहे। इनकी जमाखर्च की जानकारी प्रशसनीय थी। कविता करने का आपको बड़ा प्रेम था, आपने बहुत रुपया खर्च कर मारवाड़ की पुरानी तवारीख का संग्रह किया तथा गद्य और पद्य मे मारवाड़ के नामी सरदारों की तवारीख लिखी। आपको पालकी और सिरोपाव प्राप्त हुआ था। आपका स्वर्गवास सवत् १९६२ में हुआ। आपके पुत्र माधोमलजी का छत से गिर जाने से अन्तकाल हो गया। आपके नाम पर आपके छोटे भ्राता मानमलजी दत्तक लिये गये, इनका भी स्वर्गवास हो गया अतएव इनके नाम पर भंडारी आसावरमलजी के पुत्र जवरमलजी दत्तक लिये गये। इस समय भण्डारी जवरमलजी विद्यमान हैं। आपके नाम पर अपने पूर्वजों के गाँव सिलारिया की जागीरी बहाल रही। भण्डारी जवरमलजी ने हाल में बी० ए० एल एल० बी की डिग्री हासिल की। आपको जोधपुर दरबार से "कैफियत और जी कारा" प्राप्त है।

भण्डारी अखेराजजी प्रयागराजजी (मेसदासोत) जोधपुर

मेसदासोत भंडारी भी भंडारियों की एक शाखा है जिसकी उत्पत्ति कल्याणदासजी के दूसरे पुत्र भंडारी रायचंदजी के बड़े भ्राता मेसदासजी से हुई है। जब महाराजा अभयसिंहजी ने इनके बड़े भ्राता अनाड़सिंहजी को चूक करवाया उस समय ये अपने भाइयों के पुत्रों को लेकर देहली चले गये। बादशाह ने इन्हें खानसामाई का काम दिया। कुछ समय पश्चात् नागोर के राजा रामसिंहजी ने इन्हें अपने पास बुलवा लिया एवम् सवत् १७७२ में अपना दीवान नियुक्त किया। जब सवत् १८०८ में

लूणावत भंडारी

हम ऊपर बतला चुके हैं कि नाडोल के चौहान अधिपति राव लाखनसी की १८ वीं पीढ़ी में समराजी हुए, और इनके पुत्र भंडारी नराजी संवत् १४९३ में राव जोधाजी के साथ मारवाड़ (नाडोल में) आये। इन भंडारी नराजी तक उनका परिवार जैनी चौहान राजपूत रहा। संवत् १५१२ में भंडारी नराजी का विवाह मुहणोतों के यहाँ हुआ, तब से ये जैन ओसवाल हुए। कहा जाता है कि भंडारी नराजी की राजपूत पत्नी से राजसीजी, जसाजी, सीहोजी और खरतोजी नामक ४ पुत्र हुए, और मुहणोत पत्नी से तीलोजी नीवोजी और नाथोजी नामक ३ पुत्र हुए।

भंडारी ऊदाजी—भंडारी नराजी के सबसे छोटे पुत्र नाथोजी के चौथे पुत्र भंडारी ऊदोजी थे। भंडारी ऊदाजी को संवत् १५४८ में जोधपुर के तत्कालीन महाराजा ने प्रधानगी का और रावतकी का सम्मान बख्शा। आपके पुत्र भंडारी वागोजी और पौत्र गोरोजी हुए।

भंडारी गोरोजी—आपने जोधपुर महाराजा राव गागोजी के समय में प्रधानगी का काम किया। इनके लूणाजी, सादूलजी, सुलतानजी और जेवतजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बंधुओं में लूणाजी की संतानें लूणावत भंडारी कहलाईं।

भंडारी लूणाजी—आप लूणावतों में बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपकी बहादुरी तथा कार्यदक्षता से तत्कालीन जोधपुर दरबार बहुत प्रसन्न थे आप को महाराजा उदयसिंहजी, सूरसिंहजी तथा गजसिंहजी ने ३ वार प्रधानगी का सम्मान दिया। संवत् १६५१ से १६८१ तक आप १५ सालों तक प्रधान रहे। संवत् १६७६ में जब आपको प्रधानगी का सम्मान दिया, उस समय दरबार सूरसिंहजी ने दक्षिण में रवाना होते समय आपको ८० हजार की जागीर के गाँव इनायत किये। जब संवत् १६८० में महाराजा गजसिंहजी को मेड़ता पुनः प्राप्त हुआ तब भंडारी लूणाजी ने मेडते जाकर वहाँ दरबार का अधिकार स्थापित किया। इस प्रकार अनेकों कार्य्य आपके हाथों से हुए। संवत् १६८१ के कार्तिक में आप स्वर्गवासी हुए।

भंडारी रायमलजी—आप भंडारी लूणाजी के पुत्र थे। पिताजी के स्वर्गवासी हो जाने पर उनकी जागीरी के गाँव आपको इनायत हुए। संवत् १६९४ में आपको जोधपुर दरबार ने दीवानगी का अोहदा बख्शा, तथा इस पद पर आपने १६९७ की पौष वदी ५ तक कार्य्य किया।

भंडारी भगवानदासजी—आप भंडारी रायमलजी के पुत्र थे। महाराजा जसवंतसिंहजी के साथ आप पेशावर में विद्यमान थे। संवत् १७३६ की सावण वदी ३ को जो फौज जोधपुर से देहली गई उसमें आप गये थे।

भंडारी विठ्ठलदासजी—आप भंडारी भगवानदासजी के पुत्र थे। आप महाराजा अजितसिंहजी के

भण्डारी गणेशदासजी के पुत्र जसवंतराजजी स्टेट सर्विस में रहे। इसी प्रकार इनके भाई फौजराजजी भी कस्टम दरोगा रहे। आप दोनों का स्वर्गवास होगया है। जसवंतरायजी के फतेचदजी नामक एक पुत्र हुए। ये हवाले में काम करते रहे। इनके पुत्र हंसराजजी का स्वर्गवास नि.सतानावस्था ही में हो गया।

भंडारी ईसरदासजी का परिवार—भण्डारी ईसरदासजी के बडे पुत्र रामदासजी थे। ये मेवाड़ के परगनों के हाकिम थे। इनके दौलतरामजी, मुकुन्दरामजी और अभयराजजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोग उदयपुर स्टेट में सर्विस करते रहे। भण्डारी मुकुन्दरामजी वहाँ के कुँभलगढ़, राजनगर, खमनोर, उरडा, सागार आदि जिलों के हाकिम रहे। आप तीनों भाइयों का स्वर्गवास हो गया है। तीसरे भाई अभयराजजी के पुत्र चन्दनमलजी इस समय उदयपुर में सर्विस करते हैं।

रामदासजी के भाई सिरेराजजी भी उदयपुर में हाकिम रहे। इनका स्वर्गवास केसरियाजी में हुआ। आपके अखेराजजी, छगनराजजी और प्रयागराजजी नामक तीन पुत्र हुए। भण्डारी अखेराजजी जोधपुर स्टेट के बालार नामक स्थान में सायर दरोगा रहे। इस समय आपके कोई सतान नहीं है। आप बड़े सज्जन एव इतिहास प्रेमी महानुभाव हैं। आपके छोटे भ्राता छगनलालजी पहले पुलिस में रहे। पश्चात् आप क्रमशः पर्वतसर, जोधपुर जसवतपुरा, और बाडमेर के हाकिम रहे। इसके बाद आप ज्यूडिशियल सुपरिंटेंडन्ट भी रहे। आपका नि.सतनावस्था ही में स्वर्गवास हो गया है। आपके छोटे भ्राता भण्डारी प्रयागराजजी जोधपुर चीफ़-कोर्ट में वकालात कर रहे हैं। आप जोधपुर के प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं। आपके केशराजजी और कृष्णराजजी नामक दो पुत्र हैं।

भण्डारी हणवंतचंदजी फौजचंदजी का परिवार, जोधपुर

यह परिवार कुशलचन्दोत परिवार की एक शाखा है। कुशलचन्दजी के सात पुत्रों में से बडे [illegible]चन्दजी थे। इनके रतनचदजी और रूपचंदजी नामक दो पुत्र हुए। भण्डारी रतनचदजी का जन्म संवत् १७९६ के लगभग हुआ था। ये बडे बहादुर और रण-कुशल थे। सवत् १८५० में महाराजा [illegible]सिंहजी की ओर से डीडवाने पर चढ़ाई कर उस पर अधिकार करने के उपलक्ष्य में इन्हें ५६ [illegible] एवम् दौलतपुरे में २०० बीघा ज़मीन मय कुँए के जागीर में मिली थी। इनका स्वर्गवास सवत् १८६१ में हुआ। आपके लालचदजी, हीराचदजी और श्रीचदजी नामक तीन पुत्र हुए।

[illegible] लालचदजी—आप वीर प्रकृति के पुरुष थे। महाराजा मानसिंहजी के राजत्वकाल में आपको [illegible] से लेकर आबू तक के डाकुओं को सर करने का कार्य मिला। इसे आपने बड़ी उत्तमता से किया।

में मोर्चा बंदियाँ और लड़ाइयाँ होती रहीं। जब संवत् १८६० की काती सुदी ४ को जोधपुर में महाराजा भीमसिंहजी का स्वर्गवास हो गया और राज्य का अधिकारी कोई न रहा, ऐसे समय में जोधपुर स्थित प्रधान ओहदेदारों ने भंडारी गंगारामजी तथा सिंघवी इन्द्रराजजी को घेरा बनाये रहने का आदेश किया। लेकिन इन वीरों ने तमाम परिस्थिति को सोचकर और राज्य का हकदार एक मात्र महाराजा मानसिंहजी को ही मानकर मोरचाबन्दी तथा घेरा उठा दिया और स्वयं गढ़ में जाकर मानसिंहजी की निछरावलकी, तथा जोधपुर चलकर राज्यासन पर विराजने के लिये अरज की। इसी तरह जोधपुर के अधिकारियों तथा सरदारों को भी महाराजा मानसिंहजी को ही राज्यासन पर बैठाये जाने की सूचना भेजी और उन्होंने उन्हे विश्वास दिलाया कि मानसिंहजी तुम्हारे पर किसी प्रकार की सख्ती नहीं करेंगे। इस प्रकार आप लोगों ने मानसिंहजी को सम्वत १८६० के मगसर मास में राज्यासन पर अधिष्ठित कराया। इनकी इन बहुमूल्य सेवाओं से प्रसन्न होकर दरबार मानसिंहजी ने इन्हें दीवानगी का सम्मान, सिरोपाव, कुरुब और बणाड़ नामक गाँव तथा खास रुक्का इनायत किया, जिसमें महाराजा ने अपने राज्यासीन होने के कार्य्य में भंडारी गंगारामजी ने जो बहुमूल्य सेवाएं की थी उनका कृतज्ञता पूर्ण उल्लेख किया।

सम्वत १८६३ के फाल्गुन मास में जोधपुर के इतिहास में एक नवीन घटना घटी। महाराजा मानसिंहजी को राज्यासन पर बैठे थोडा ही समय हुआ था, और वे अपने सरदार मुत्सुद्दियों के बीच का मनोमालिन्य दूर भी नहीं कर पाये थे, कि इसी बीच इन्होंने अपने दीवान भंडारी गंगारामजी और फौज के प्रधान सिंघवी इन्द्रराजजी को उनके पुत्रों सहित गिरफ्तार कर लिया। इस प्रकार के अनेक कारणों से राज्य में बडी गडबडी मची हुई थी। इसका परिणाम यह हुआ कि मारवाड के सरदारों ने धौंकलसिंहजी को राज्य का स्वामी मान कर उपद्रव उठाया। वे जयपुर और बीकानेर की लगभग १ लाख फोज को जोधपुर पर चढा लाये। जब इस विशाल सेना ने जोधपुर पर घेरा डाला, और राज्य के बचने की किसी तरह उम्मीद न रही, तब ऐसे कठिन समय में महाराजा मानसिंहजी उक्त आपत्ति से अपनी रक्षा करने की चिन्ता में पड़े। ऐसी स्थिति में इन्हे सिवाय भण्डारी गंगारामजी और सिंघवी इन्द्रराजजी के दूसरा अपना कोई सहायक न दिखा। फलत महाराजा मानसिंहजी ने उनके पुत्रों को कैद में रखकर इन दोनों वीरों को बुलाया तथा इस आपत्ति से अपने राज्य की रक्षा करने की अभिलाषा दर्शाई। इस पर इन दोनों मुत्सद्दियों ने दरबार को सब प्रकार से परिस्थिति ठीक कर देने का विश्वास दिलाया तथा उसी समय वे इस प्रयत्न में लग गये। इस जगह इस बात का उल्लेख करना आवश्यकीय होगा कि भंडारी गंगारामजी को अपने एवज में अपने पुत्र को गिरफ्तार रखने की महाराज मानसिंहजी की नीति से

स्व० हणुवतचन्दजी भंडारी, जोधपुर.

स्व० रिधेचन्दजी भंडारी, जोधपुर

स्व० रा० सा० फौजचन्दजी भंडारी, जोधपुर

भण्डारी भवानीरामजी के पश्चात् उनके परिवार के व्यक्तियों का सिलसिलेवार कुर्सी नामा नहीं प्राप्त होता, पुष्कर में भण्डारियों के पण्डे की वही में देखने से हमें भण्डारी भवानीरामजी के पुत्र भण्डारी आसारामजी के होने का पता चलता है। अस्तु। अनुमान किया जाता है कि सोजत के भण्डारी पृथ्वीराजजी, भण्डारी गंगारामजी के भतीजे थे।

भंडारी पृथ्वीराजजी—भण्डारी अभेमलजी के तीसरे पुत्र भण्डारी पृथ्वीराजजी थे इन्होंने भी जोधपुर राज्य के लिये कई बहादुरी के कार्य्य किये। इनका निवास सोजत में था। संवत् १८६४ में इनको सोजत का सरवादारा नामक गांव जागीर में मिला। जब जोधपुर पर जयपुर और बीकानेर की फौजों ने संवत् १८६४ में चढ़ाई की। उस समय मीरखां को मिलाकर सिंघवी इन्द्रराजजी, कुचामन ठाकुर शिवनाथसिंहजी तथा भण्डारी पृथ्वीराजजी ने जयपुर पर चढ़ाई की थी। जब जयपुर विजय के समाचार जोधपुर पहुँचे थे, उस समय महाराजा मानसिंहजी ने भण्डारी पृथ्वीराजजी के नाम एक रुक्का भेजा था कि -

> भंडारी पृथ्वीराज दिसे सुप्रसाद बाचजो, तथा श्रीजीरा इकबाल सु बदगी तू आछी पोंहतो जस बदगीरो आयो. हाल सुदी जेपुर वाला अठा सुं कूच मोरचा उठाय कियो. अबे थारी मारग में हलकारा री सावधानी राख आछी रीत समाधानरी तजवीज करे
>
> संवत् १८६४ रा भादवा सुदी १४

संवत् १८६५ के फाल्गुन में भण्डारी पृथ्वीराजजी फलोदी खाली कराने के लिये भेजे गये उमरकोट के युद्ध में सिंघवी गुलराजजी के साथ आप भी भेजे गये थे। संवत् १८७१ में आपको तख्त (भाद्राजण) नामक गांव जागीरी में मिला। कहा जाता है कि एक समय मीरखां ने सोजत को लूटने के इरादे से हमला कर दिया। कारण कि उस समय सोजत भींवराजोत आदि सिंघवियों का निवास स्थान था। ऐसे समय मीरखां के पगड़ीबंद भाई भण्डारी पृथ्वीराजजी ने मीरखां से कहा कि "यह क्या की बात है कि आज तुम सोजत लूटने आये हो। पहिले अपने दलबल समेत चलकर अपने भाई का घर लूटलो तथा फिर सारी सोजत का माल लूटना" मीरखां ने अपने पगड़ी बन्द भाई का घर लूटना उचित न समझा तथा वहाँ से कूँच किया। इस प्रकार सोजत लूटी जाने से बची। सोजत से आगे जाकर उसने सिरिमारी पर धावा मारा, जहाँ मुत्सुद्दियों की बहुत-सी छिपी हुई सम्पत्ति उसके हाथ लगी। संवत् १८८० की जेठ सुदी ९ के दिन भण्डारी पृथ्वीराजजी जालोर के समीप युद्ध करते हुए मारे गये। इनकी धर्मपत्नी इनके साथ सती हुईं। जालोर के हरजी नामक स्थान में और सोजत में इनकी छत्रियां बनी हुई है। इनके पुत्र फौजमलजी हुए।

रियासतों सम्बन्धी पुरानी जानकारी भी आपको अच्छी थी। आप करीब १२ वर्ष तक ओसवाल का संघ सभा के प्रेसीडेण्ट रहे। आपने अपने जीवन में अपने पुत्रों के पौत्रों तक को गोद खिलाया आपका स्वर्गवास संवत् १९७१ में हो गया। आपके फौजचंदजी, जोधचंदजी, केवलचंदजी, करन [illegible] और गंगारामजी नामक पाँच पुत्र थे।

भण्डारी फौजचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९१२ का था। आप जब २२ साल के थे तब आप [illegible] के हाकिम बनाये गये। इसके बाद आपने क्रमशः अदालत अपील के जज, आबू वकील, [illegible] जज आदि कई ऊँचे २ पदों पर कार्य्य किया। वृद्धावस्था हो जाने के कारण आपने स्टेट सर्विस से [illegible] ग्रहण कर लिया था। दरबार साहब ने आपको भी पालकी, सिरोपाव तथा मोहर बक्श कर सम्मा[illegible] किया था। आपका स्थानीय ओसवाल समाज में अच्छा प्रभाव था। आप ओसवाल संघ सभा [illegible] प्रेसीडेण्ट थे। सरदार स्कूल के खुलवाने में आपने बहुत परिश्रम किया। आप कई वर्ष तक उसकी [illegible] कमेटी के प्रेसीडेण्ट रहे। आपका स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् आपके स्मारक स्वरूप सरदार [illegible] के सेंटर हाल में आपका चित्र लगाया गया है। आपके खेमचंदजी और बजरंगचंदजी नामक दो [illegible] हैं। खेमचंदजी को दरबार की ओर से पालकी, सिरोपाव, तथा मोहर का सम्मान प्राप्त है। आपके [illegible] गोवर्द्धनचंदजी जोधपुर के नायब हाकिम हैं।

भण्डारी केवलचंदजी अपनी २२ वर्ष की उम्र में बतौर हाकिम के पचपदरा भेजे [illegible]। इसके बाद आप नावा के हाकिम रहे। करीब १६ वर्ष तक आपने अपने पिताजी के स्थान पर [illegible] अदालत का काम किया। आप म्युनिसिपॉलेटी के मेम्बर भी रहे। आपका जाति में अच्छा [illegible] है। आपके भाई करनचंदजी इस समय जवाहरातखाने की कमेटी के मेम्बर हैं।

भण्डारी बलवन्तचंदजी—आप पहले पहल एरिनपुर के वकील बनाकर भेजे गये। इसके बाद आप [illegible] मारोठ के [illegible] हो गये। संवत् १९४५ में आप रेसिडेन्सी वकील बनाए गये। महाराना जसवंतसिंहजी [illegible] जवाबी से खुश थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके सालमचंदजी, जसरूपजी, और [illegible] नामक तीन पुत्र हुए। भण्डारी सालमचंदजी ने मारोठ, परबतसर, डीडवाना, जालोर आदि २ [illegible] हुकूमतें की। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ में हो गया।

भण्डारी लक्ष्मीचंदजी और केशरीचन्दजी का परिवार (कुशलचन्दोत)

भण्डारी कुशलचन्दजी के तीसरे पुत्र भण्डारी साहबचन्दजी के पौत्र (भण्डारी [illegible]चन्दजी के [illegible] लक्ष्मीचन्दजी और केशरीचन्दजी हुए। भण्डारी लक्ष्मीचन्दजी ने जोधपुर दरबार में अच्छा

अमीदासजी ९ साल की उम्र से ही अंधे थे। अंधे होते हुए भी आपकी पहिचान शक्ति तीव्र थी। सब प्रकार के सिक्कों की परीक्षा आप कर लेते थे आपके और आपके पुत्रों के नाम हुकूमतें रहीं। आपका अन्त काल संवत् १९३९ में हुआ। भंण्डारी अमीदासजी के शंकरदासजी मिश्रीदासजी हरिदासजी और गणेशदासजी नामक ४ पुत्र हुए, इनमें से शंकरदासजी, भण्डारी देवीदासजी के नाम पर दत्तक दिये गये। भण्डारी शंकरदासजी बाली के हाकिम थे। इनके समय तक इस परिवार के पास तोपखाने की आफिसरी का काम रहा। आपकी याददाश्त तेज थी। इनका अंतकाल संवत् १९८३ में हुआ आपके छोटे भाइयों ने राज की नौकरियाँ की। आपके पुत्र भण्डारी जोरावरमलजी का अन्तकाल सवत् १९९० में हुआ। इनके पुत्र सम्पत राजजी का जन्म संवत् १९४५ में हुआ।

भण्डारी सम्पतराजजी आरम्भ में सिरोही स्टेट के फोरस्ट मे असिस्टण्ट इन्सपक्टर थे। बाद आपने जोधपुर में वकीली परीक्षा पास कर सोजत मे प्रेक्टिस शुरू की तथा इस धन्धे में हजारों रुपये आपने पैदा किये। आपने अपने पिताजी के नाम से जैनशंकर बाग नामक बगीचा बनाया। आपके हंसराजजी और धनपतराजजी नामक २ पुत्र हैं। भण्डारी हंसराजजी ने इन्दौर में बी० ए० तक का अध्ययन किया है तथा इस समय एल० एल० बी का अध्ययन कर रहे हैं।

भंडारी करणराजजी—इसी परिवार मे भण्डारी करणराजजी हैं। आपने बहुत छोटी उमर में ही सोजत कोर्ट के वकीलों में अच्छी तरक्की की। सोजत के ओसवाल समाज में जो ९ सालों से धड़े बन्दियाँ थीं, उसे कोशिश करके करणराजजी ने एक करवा दिया। इस सफलता के उपलक्ष्य में ज्युडिशियल सुपरिण्टेण्डेण्ट सोजत ने इन्हें सार्टिफिकेट दिया।

फरवरी १९३० में सोजत के अस्पताल में बहुत बीमार एकत्रित हो गये, तब भण्डारी करण राजजी ने उदारता पूर्वक बर्तन आदि के द्वारा उनकी सहायता की। इसके उपलक्ष्य में प्रिन्सीपल मेडिकल ऑफिसर ने खुद भी धन्यवाद दिया तथा जोधपुर दरबार को लिखा, जिससे वाइस प्रेसीडेण्ट कौंसिल ने १४-३-३० के दिन सार्टिफिकेट भेज कर करणराजजी का उत्साह बढ़ाया। आप बड़े मिलनसार तथा उत्साही सज्जन हैं। इस समय आप सोजत कोर्ट में वकील का कार्य्य करते हैं।

श्री दुलीचन्दजी भंडारी, सादड़ी (गोडवाड)

यह लूणावत भण्डारी परिवार सादड़ी (गोडवाड़) निवासी श्वे० जैन मन्दिरमार्गीय आम्नाय का मानने वाला है। भण्डारी फूलचन्दजी ने सादड़ी में ४० अठाई राणकपुरजी का मेला आदि कई कार्य कर धर्मध्यान में नाम पाया। १९६० में आप गुजरे। आपके पुत्र जसराजजी तथा सरदारमलजी हुए

भण्डारी अम्बाचन्दजी का जन्म संवत् १९४३ मे हुआ। आप सन् १९०६ मे पचपदरा के हाकिम बनाये गये। इसके पश्चात् आप शेरगढ़, साचोर, बाली, जेतारण आदि स्थानों पर हाकिम रहे। सन् १९३० में बागोराव के नाबालिगी ठिकाने के जुडिशियल ऑफिसर और गार्जियन मुकर्रर हुए। सन् १९३२ म आप आफिशिएटेड जूडिशियल सुपरिटेण्डेण्ट, और जोधपुर के सिटी कोतवाल बनाए गये। इस समय आप साम्भर में जुडिशियल सुपरिटेण्डेण्ट का काम कर रहे हैं। आपके पुत्र नारायणचन्दजी और प्रभुचन्दजी पढ़ते हैं।

भण्डारी हेमचन्दजी—भण्डारी केशरीसिंहजी के सबसे छोटे पुत्र हेमचन्दजी थे। स्टेट की ओर से आप १९१३—१४ में उदयपुर में और सन् १९२७ से ३२ तक ए०जी० जी के आफिस मे वकील रहे। आपके नाम पर भण्डारी कानचन्दजी के पुत्र मानचन्दजी दत्तक आये। भण्डारी मानचन्दजी रियासत मे भिन्न भिन्न स्थानों पर काम करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ। आपके नाम पर आपके छोटे भाई बलदेवचन्दजी दत्तक आये। भण्डारी बलदेवचंदजी उदयपुर के वकील और राजपूत हितकारिणी सभा के सेक्रेटरी रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९७९ में हुआ। आपके नाम पर भण्डारी रंगराजचन्दजी दत्तक आये। आपका जन्म १९४९ में हुआ। आप सन् १९२१ में मारवाड़ सोलजर्स बोर्ड के अ० सेक्रेटरी हुए तथा १९२३ से राजपूत हितकारिणी सभा के सेक्रेटरी है। आपके रामनाथचन्दजी और नगनाथचन्दजी नामक दो पुत्र है।

भंडारी मनमोहनचन्दजी मगरूपचन्दजी (कुशलचन्दोत) जोधपुर

भण्डारी कुशलचन्दजी के पाँचवे पुत्र खूबचन्दजी थे। इनके पुत्र नेनचन्दजी व्यवसाय करते थे। इनके भागचदजी, दईचदजी और उम्मेदचदजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमे दईचदजी संवत् १९४४ म तथा शेष दो भाई १९४३ मे स्वर्गवासी हुए। भंडारी भागचन्दजी के पुत्र सबलचदजी और किशनचदजी जोधपुर स्टेट में हाकिम रहे। भण्डारी दईचन्दजी के पुत्र बादलचदजी थे। इनका संवत् १९२७ म स्वर्गवास हुआ। आपके मेघचन्दजी, रणजीतचदजी, शुभचदजी, बुधचन्दजी और पदमचदजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमे सबलचंदजी के नाम पर रणजीतचंदजी और किशनचदजी के नाम पर पदमचन्दजी दत्तक गये। इन भाइयों मे शुभचंदजी सायर थानेदार, बुधचन्दजी हवाला इन्स्पेक्टर और पदमचन्दजी पोलिस इन्सपेक्टर थे।

इस समय इस परिवार में भण्डारी शुभचन्दजी के पुत्र मनमोहनचन्दजी, भण्डारी बुधचन्दजी के पुत्र ठाकुरचन्दजी, भण्डारी पदमचन्दजी के पुत्र मगरूपचन्दजी और रणजीतमलजी के पुत्र दिलमोहनचन्दजी

श्री सम्पतराजजी भण्डारी वकील, सोजत.

श्री रूपराजजी भण्डारी वकील, जालोर.

सेठ संतोषचन्दजी भण्डारी, कानपुर

श्री प्रेमराजजी भण्डारी (मूथा) अहमदनगर

श्री सम्पतराजजी भण्डारी वकील, सोजत.

श्री रूपराजजी भण्डारी वकील, जालोर.

सेठ सतोषचन्दजी भण्डारी, कानपुर

श्री प्रेमराजजी भण्डारी (मूथा) अहमदनगर

रामपुरा की जनता भी आपका बहुत आदर करती थी। आप बड़े सज्जन, मिलनसार, दानी तथा परोपकारी सज्जन थे। आपके धार्मिक विचार भी बड़े चढ़े बढ़े थे। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम श्री कन्हैयालालजी, सुगनमलजी एवं मोतीलालजी हैं। इस प्रकार यशस्वी जीवन बिताते हुए अपने पुत्रों के लिए धन-जन सम्पन्न घर को छोड कर आप परलोक सिधारे।

श्री० कन्हैयालालजी भण्डारी

श्री कन्हैयालालजी भण्डारी उन व्यक्तियों में से एक हैं जिन्होंने अपनी बुद्धिमानी, व्यापार-कुशलता और तीव्र व्यवस्थापिका—शक्ति से अपने व्यवसाय को तरक्की पर पहुँचाया। जिन लोगों को आपके संसर्ग में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है वे आपकी जबरदस्त व्यवस्थापिका—शक्ति से भली भाँति परिचित हैं। इन्दौर का भण्डारी मिल आपकी इस शक्ति का बडा ही ज्वलन्त उदाहरण है। यह मिल जिस समय स्थापित हुआ था उस समय सभी दूर की व्यापारिक स्थिति बडी डावाडोल हो रही थी और लोगों को बिल्कुल आशा न थी कि यह इतनी सफलता से आगे जाकर चल निकलेगा। मगर भण्डारी कन्हैयालालजी की कार्य्य-शीलता तथा व्यापारिक विवेक ने इस मिल को इतनी उन्नति पर पहुँचाया कि आज व्यवस्था और सफलता की दृष्टि से यह मिल इन्दौर की सर्वप्रधान मिलों में से एक गिना जाता है और भण्डारी कन्हैयालालजी सारे भारतवर्ष के ओसवाल समाज में पहले या दूसरे नम्बर के इण्डस्ट्रियालिस्ट (Industrialist) माने जाते हैं।

श्री कन्हैयालालजी का जन्म सम्वत् १९४५ में हुआ। आप प्रारम्भ से ही व्यापारिक लाइन में बड़े प्रतिभाशाली रहे। आपने सन् १९१९ में 'स्टेट मिल्स लिमिटेड इन्दौर' को २० वर्ष के ठेके पर लिया। आपने इस मिल की कम-से कम खर्चे में अच्छी-से-अच्छी व्यवस्था की। साथ ही इस मिल के कपडे को दूर २ के प्रान्तों में खपाने के लिये कानपुर व अमृतसर में कपडे की दुकानें भी स्थापित की। [illegible] ८ लाख रुपये की नई मशीनरी खरीद कर इसमें रङ्गाई वगैरह का काम भी शुरू कर एक नया [illegible] दिया। इस समय भी आप इस मिल की व्यवस्था कर रहे हैं।

सन् १९२२ में आपने अपने पिताजी के नाम से इन्दौर में ही तीस लाख की पूँजी से "[illegible] भण्डारी मिल्स लिमिटेड" नामक एक और मिल खोला। जिस समय यह मिल खोला गया [illegible] समय की भारत की व्यापारिक स्थिति पर हम लोग प्रथम ही लिख चुके हैं। मगर [illegible] [illegible] के सम्बन्ध में आपकी विशेष योग्यता, व्यवस्थापिका शक्ति और बुद्धिमानी के परिणाम स्वरूप [illegible] सफलता प्राप्त हुई। फलतः वर्तमान में यह मिल बहुत ही सफलता [illegible]

भंडारी उमरावचन्दजी माणकचन्दजी (अनोपसिंहोत) जोधपुर

यह हम पहले लिख ही चुके हैं कि भण्डारी कल्याणदासजी के सब पुत्रों से अलग २ शाखाएं निकली। यह शाखा भी उनके प्रथम पुत्र अनोपसिहजी से निकली है। अनोपसिंहजी बड़े वीर पुरुष थे। आपको पैरों मे सोना प्राप्त था। आपके पुत्र सरूपचन्दजी मेड़ता के पास होने वाली लड़ाई में काम आये। इनके पुत्र हरकचन्दजी हुकुमत तथा कोतवाली में सर्विस करते रहे। हरकचन्दजी के पश्चात् आपके पुत्र करमचन्दजी और करमचन्दजी के पुत्र धरमचन्दजी हुए आप राणी देवडीजी के कामदार रहे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके रूपचन्दजी, लालचन्दजी, मानचन्दजी और माणकचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनसे से माणकचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है।

भंडारी रूपचन्दजी—आप करीव ४० वर्ष तक महकमा हवाले मे इन्स्पेक्टर रहे। इस समय आप रिटायर हैं। आपके उमरावचन्दजी, सरदारचन्दजी और सुमेरचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। बड़े पुत्र उमरावचन्दजी ने अपनी कार्य्य तत्परता से अच्छी उन्नति की। आप मेड़ता, जोधपुर, फलोदी, बाड़मेर तथा बिलाड़े के हाकिम रहे। इसके पश्चात् आप सिटी कोतवाल और मालानी डिस्ट्रिक्ट के ज्युडिशियल सुपरिटेण्डेण्ट वनाए गए। इस पद पर आप वर्तमान मे भी कार्य करते है। आपको कई प्रशंसा पत्र भी मिले हैं। आपके भाई सरदारचन्दजी बी० ए० है। आप प्रारम्भ मे रेल्वे मे नौकर हुए। पश्चात् पुलिस इंस्पेक्टर बने। फिर कई स्थानों पर हाकिम रहे और आजकल जालौर मे हाकिम है। आपके भाई सुमेरचन्दजी बी० ए० एल० एल० बी० आजकल जोधपुर में प्रेक्टिस करते है।

भंडारी लालचन्दजी – आप करीव ३० तक हवाले मे नौकरी करते रहे। आजकल आप रिटायर है। आपके भाई मानचन्दजी हवाले में इन्स्पेक्टर रहे। आप दोनों भाइयों के कोई संतान नहीं है।

भंडारी माणकचन्दजी—करीव ३२ साल से जोधपुर मे वकालत कर रहे है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित और फर्स्टक्लास वकील माने जाते है। आपके चार पुत्र है। बड़े मुकुनचन्दजी सोजत में हवाला दारोगा है शेष प्रतापचन्दजी, किशोरचन्दजी और भोपालचन्दजी अभी पढ़ रहे हैं।

भंडारी बादरमलजी किशनमलजी (परतापमलोत) जोधपुर

भण्डारी कल्याणदासजी के चौथे पुत्र परतापमलजी हुए, इनके वंशज प्रतापमलोत भण्डारी कहलाते है। इस परिवार में भण्डारी रूघलालजी, सम्वत् १८९२ में फतेपोल के चौकी नवीस थे। सम्वत् १८९३ में इनको गॉव नीबाड़ी कलां जागीरी में मिली जो १९०० में जप्त हो गई, ये इस्तेमाल के बड़े जानकार थे।

और वाम डाक्टर रक्खे गये हैं। यह गृह बहुत विशाल है तथा अत्यन्त सुव्यवस्थित ढंग से चलाया जा रहा है। इसका वार्षिक खर्च १८०००) के करीब पडता है जो सब आप ही की तरफ से दिया जाता है।

इसी प्रकार आपकी जन्मभूमि रामपुरा में भी श्री नन्दलाल भण्डारी बोर्डिंग हाउस नामक बोर्डिंग भी आप ही के द्वारा खोला गया जिसमें बहुत से विद्यार्थी रहते तथा विद्याध्ययन करते हैं। इस बोर्डिंग की व्यवस्था के लिये आपकी ओर से ११०) प्रति मास वर्तमान में दिया जा रहा है। आप उक्त बोर्डिंग हाउस के लिये रामपुरा नगर के बडे बाजार में एक बहुत बडा २५०००) की लागत का स्वतन्त्र मकान भी बना रहे हैं जिसका काम बहुत तेजी के साथ चल रहा है। इसके अतिरिक्त महाराजा तुकोजी राव हॉस्पिटल में अपने पूज्य पिताजी के नाम पर नन्दलाल भण्डारी फेमिली वार्ड, रामपुरा में श्मशान-विश्रान्तिगृह, ओसवाल भवन रामपुरा में एक अखाडा आदि २ कई सार्वजनिक भवन व संस्थाएँ आपकी ओर से चल रही हैं। कहने का मतलब यह है कि आपने क्या व्यापार, क्या परोपकार, क्या जाति सेवा तथा क्या समाज सुधार सब में अपनी प्रतिभा का पूर्ण परिचय दिया है। आपकी ओर से कई गरीब विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप आदि भी दी जाती है। प्राय सभी सार्वजनिक और परोपकार के कार्यों में हजारों रुपये आपकी ओर से सहायतार्थ दिये जाते हैं।

आपका जाति प्रेम भी अत्यन्त सराहनीय है। ओसवाल जाति के नवयुवकों के प्रति आपके हृदय में बहुत गहरा स्थान है। सैकडों ओसवाल नवयुवक आपकी वजह से जीविका उपार्जित कर रहे हैं। समाज सुधार के सम्बन्ध में भी आपके विचार बडे मँजे हुए हैं। आप सामाजिक सुधारों को व्यवहारिक रूप देने के बहुत जबरदस्त हामी हैं। विवाह, शादी, ओसर मोसर इत्यादि सामाजिक कुरीतियों की वेदी पर जो हजारों लाखों रुपया खर्च होता है उसको तोड कर आपने उस पैसे को विद्या प्रचार, समाज सुधार इत्यादि उपयोगी कार्यों के अन्दर खुले दिल से खर्च किया है। आप कई समाज संस्थाओंके प्रेसिडेण्ट तथा संरक्षक रह हैं। आपके द्वारा स्थापित की हुई सार्वजनिक संस्थाएँ ओसवाल जाति के अन्दर खास तौर से प्रभावशाली हैं।

आपका ओसवाल जाति के अंतर्गत भी काफी सम्मान है। आप सन् १९२३ के नासिक जिला ओसवाल सम्मेलन के सभापति भी चुने गये थे। इस पद को आपने बडी योग्यता से सम्पादित किया।

श्री कन्हैयालालजी भण्डारी इन्दौर नगर के एक अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपका यहाँ की जनता में और इन्दौर दरबार में भी काफी सम्मान है। इन्दौर राज्य के शिक्षित प्रमुख धनिक नागरिकों में आपका स्थान ऊँचा है। आपको सन् १९२८ में होलकर सरकार की ओर से इन्दौर म्युनिसिपल कॉरपोरेटर का पद दिया गया जिसके तीन वर्ष तक आप कार्पोरेटर रहे। इन तीन वर्षों में आपने अपना ...

महाराजा बखतसिंहजी नागोर से जोधपुर के महाराजा होकर आये तब आप भी साथ थे। यहाँ आप महाराजा के तन दीवान रहे। आपका सवत् १८२६ में स्वर्गवास हो गया। आपके नरसिंहदासजी, मनोहरदासजी, और माधोसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

भंडारी नरसिंहदासजी—बडे वीर पुरुप थे। आपको सवत् १८०८ में डीडवाना की लड़ाई में जाना पड़ा। वहाँ जाकर आपने सफलता पूर्वक डीडवाना पर अधिकार कर लिया। इसके बाद आप जसवतपुरा के हाकिम रहे। इस समय भी यहाँ बहुत सी लडाइयाँ हुई। इन्हीं में से एक लड़ाई में इनके छोटे भ्राता मनोहरदासजी काम आये। आगर के पास अभी भी इनकी छत्री बनी हुई है। नरसिंह दासजी के कामों से प्रसन्न होकर महाराजा साहब ने आपको नागोर परगने का सिगरावत तथा डीडवाने परगने का अमरपुरा नामक गाँव जागीर में बख्शा। आपसवत् १८१९ में जोधपुर के दीवान रहे। आपने डीडवाने में कालीजी का मन्दिर तथा कुँआ बनवाया। आपके गोकुलदासजी एवम् शिवदासजी नामक दो पुत्र हुए। नरसिंहदासजी के दूसरे भाई माधौसिंहजी अजमेर के सूबे रहे। सवत १८२५ में ये महाराजा की ओर से उदयपुर के तत्कालीन महाराणा अरसीजी की सहायतार्थ और २ मुसुद्दियों के साथ सेना लेकर गये थे। इसी सहायता के उपलक्ष्य में महाराणा ने गौड़वाड का परगना महाराजा ने जोधपुर को दिया था। संवत् १८३९ में ये मेडता के पास मराठों के साथ होनेवाले युद्ध में झुंझार हुए। मालकोट के पास इनकी छत्री बनी हुई है।

भण्डारी गोकुलदासजी नागोर, मेडता और डीडवाना के हाकिम रहे। आपके कोई सतान न हुई। भण्डारी शिवदासजी बहुत समय तक डीडवाना, सांभर और पचपदरा के हाकिम रहे। नमक के पांच दरीबे आपके आधीन थे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके अचलदासजी तथा इसरदासजी नामक दो पुत्र थे। अचलदासजी अपने पिताजो के पश्चात् नमक दरीबों के हाकिम रहे। इसके पश्चात् ये साभर, नागोर, मेड़ता, पाली और फलोदी की हुकूमत पर भी रहे। आपका स्वर्गवास सवत् १९२८ में हुआ। आपके गणेशदासजी, सामदासजी और सावतराजजी नामक तीन पुत्र हुए। अचलदासजी के भाई भण्डारी इसरदासजी भी साभर पचपदरा, डीडवाना इत्यादि स्थानों पर नमक के दरीबा के हाकिम रहे। आपका स्वर्गवास सवत् १९२९ में हुआ। आपके रामदासजी तथा सिरेराजजी नामक दो पुत्र हुए।

भंडारी अचलदासजी का परिवार—भण्डारी गणेशदासजी जोधपुर से उदयपुर चले गये एवम् वहाँ भीलवाड़ा के गिरोही आफीसर रहे। इसके बाद आप कई स्थानों पर हाकिम रहे। संवत् १९५९ में जाजपुर में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके जसवतरायजी और फौजराजी नामक दो पुत्र हुए। भण्डारी गणेशदास जी के दोनों भाइयों का नि सतान ही स्वर्गवास हो गया उनमें से सांवतरामजी फलोदी के हाकिम रहे थे।

सतारा म्युनिसिपलेटी के मेम्बर और महाराष्ट्र प्रान्तीय जैन कान्फ्रेंस के सभापति निर्वाचित हुए थे। भारत के स्थानकवासी जैन समाज ने अखिल भारतीय स्था० जैन कान्फ्रेंस के अजमेर वाले तीसरे अधिवेशन का सभापति चुनकर आपको सम्मानित किया था। कहने का तात्पर्य यह कि आप महाराष्ट्र प्रान्त की जनता में तथा भारत के जैन जगत में प्रतिभावान पुरुष थे। छत्रपति शिवाजी के वंशज सतारा महाराज एवं अन्य बड़े २ रईस जागीरदारों से आप मनी लेण्डिङ्ग बिजिनेस करते थे। संवत् १९७६ की [illegible] बदी ११ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके सम्मान स्वरूप सतारा के बाजार बंद रखे गये थे।

सेठ चन्दनमलजी मूथा—आपका जन्म संवत् १९२१ की सावण सुदी ५ को हुआ। आप धर्म का काम बड़ी तत्परता से संचालित करते हैं। आप सतारा के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति माने जाते हैं। सन् १९१४ के दुष्काल में सस्ता अनाज वितरित करके आपने गरीब जनता की इमदाद की थी। पूना के स्थानक वासी बोर्डिंग के स्थापन में आपने १० हजार रुपयों की सहायता दी थी। धार्मिक कामों की ओर आपका अच्छा लक्ष्य है। इस समय आपके कोई पुत्र नहीं है।

राय साहिब सेठ मोतीलालजी मूथा—आपका जन्म संवत् १९४७ के दूसरे भादवा [illegible] २ को हुआ। महाराष्ट्र प्रान्त के प्रधान धनिक व्यापारियों में आपकी फर्म की गणना तो थी ही, पर उस समय [illegible] सेठ मोतीलालजी मूथा के सार्वजनिक कामों में सहयोग लेने से अत्यधिक वृद्धि हुई। सन् १९१४ में [illegible] मोतीलालजी मूथा म्युनिसिपल कौंसिलर चुने गये और लगातार ३ चुनाव तक मेम्बर रहे। सन् १९१[illegible] से १९२२ तक आप सतारा एडवर्ड पांजरापोल के प्रेसिडेंट और चैयरमैन चुने गये। इस समय १[illegible] सालों से सतारा तालुका लोकल बोर्ड के वाइस प्रेसिडेंट रहे एवं वर्त्तमान में प्रेसिडेंट हैं। ३ सालों से आप डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड के मेम्बर हैं। इसी तरह जेल कमेटी डिस्पेंसरी आदि संस्थाओं में भी आप सहयोग देते हैं।

राय साहब सेठ मोतीलालजी मूथा अपने पिताजी की तरह ही धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में [illegible] प्रधान व्यक्ति हैं। आप की गणना सतारा जिले के प्रधान व्यक्तियों में है। जैन जगत में आप [illegible] [illegible] हैं। आप महाराष्ट्र ओसवाल कान्फ्रेंस के अहमदनगर वाले अधिवेशन के सभापति रहे थे। १२ [illegible] से १९१० से कान्फ्रेंस का अधिवेशन बन्द हो गया था, उसे कई सज्जनों के साथ परिश्रम करके आपने पुन [illegible] पूना में कराया। उक्त अधिवेशन में आप स्वयंसेवक दल के सेनापति थे। इस अधिवेशन के समय से [illegible] [illegible] जैन कान्फ्रेंस के रेसिडेंटल जनरल सेक्रेटरी हैं। आपके गुणों एवं कार्यों से प्रसन्न होकर [illegible] सरकार ने सन् १९२१ में आपको रायसाहिब की पदवी से सम्मानित किया है। आप कई सालों [illegible] [illegible] आनररी मजिस्ट्रेट रहे। हर एक सार्वजनिक व धार्मिक कामों में आप उदारता पूर्वक

यहाँ तक कि डाकू लोग आपके नाम से कापने लगे। आपने पाली, जालोर, भीनमाल आदि परगनों की हुकूमत की। सम्वत् १९०९ में आपका हणेन्द्र (आबू) नामक स्थान पर स्वर्गवास हो गया। आपके और भाई नि सन्तान स्वर्गवासी हुए।

भंडारी श्रीचंदजी—आप राजनीतिज्ञ और कार्य्य-कुशल व्यक्ति थे। महाराजा मानसिंहजी ने पहले आपको नागोर की हुकूमत पर भेजा। इसके पश्चात् आपने क्रमश: आबू वकीली, दीवानी और फौजदारी अदालत की जजी, फौज मुसाहबी आदि कई बड़े पदों पर सफलता पूर्वक कार्य किया। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर महाराजा साहब ने आपको हजार रुपये सालाना की जागीर के गाव, तथा खास रुक्के इनायत किये। इसके अतिरिक्त आपको पालकी, छड़ी और मोहर की इज्जत भी प्राप्त थी। आप मूर्ति पूजक सज्जन थे। आपने जोधपुर से तीन चार मील की दूरी पर अपनी कुलदेवी आसापुरी का, तथा मंडोवर में हनुमानजी का मन्दिर बनवाया था। आपका स्वर्गवास संवत् १९१५ मे हो गया। आपके बख्तावरमलजी, सुमेरचन्दजी, हणवंतचंदजी और बलवंतचंदजी नामक चार पुत्र हुए।

भण्डारी बख्तावरमलजी ने अदालत दीवानी का काम किया। आप साधु प्रकृति के सज्जन थे। आपको पालकी, सिरोपाव का सम्मान प्राप्त हुआ था। आपका स्वर्गवास संवत् १९५३ में हो गया। आपके दौलतचदजी मंगलचंदजी और विरदीचंदजी नामक तीन पुत्र थे। पहले दौलतचदजी मारवाड़ के कई जिलों में सायर दरोगा रहे। दूसरे मंगलचंदजी सोजत, परबतसर आदि परगनों पर हाकिम रहे। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया।

भण्डारी सुमेरचंदजी गदर के समय में दरबार की ओर से आऊवे ठिकाने पर फौज लेकर गये थे। ये कई स्थानों के हाकिम रहे। आपके पुत्र सरूपचंदजी नावा और पाली के हाकिम रहे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र गौरीचदजी इस समय घरू व्यापार करते हैं। इनके पुत्र शमशेरचंदजी बी० ए० पास हैं।

भंडारी हणवंतचदजी—आपका जन्म संवत् १८९२ में हुआ। महाराजा तख्तसिंहजी की आज्ञानुसार आपकी फारसी की पढ़ाई महाराज कुँमार जसवंतसिंहजी के साथ हुई। सर्व प्रथम संवत् १९११ में आप पाली की हुकूमत पर भेजे गये। गदर के समय में आपने कई युरोपियनों की जानें बचाई। इसके बाद आपने क्रमश: अदालत दीवानी, नागौर और मारोठ की हुकूमत वकालात रेसीडेंसी वकालात आबू, अदालत अपील आदि स्थानों पर कार्य किया,। आप बड़े प्रतिभाशील व्यक्ति थे। आप मेम्बर कौंसिल भी रहे। उस समय आपको ४००) मासिक वेतन मिलता था। आपको महाराजा साहब ने पालखी, सिरोपाव, छडी और मोहर प्रदान कर सम्मानित किया था। आप निर्भयचित्त और सब्बे मार्ग

भीनमाल का भण्डारी खानदान (निम्बावत)

भण्डारी दुरगादासजी के पुत्र भण्डारी जेठमलजी, मानमलजी और सरदारमलजी का परिचय हम ... चुके हैं। भण्डारी सरदारमलजी १८८३ में भीनमाल के हाकिम हुए और ४ साल बाद तीनों ... मारोर, जालोर, तथा भीनमाल के हाकिम हुए तथा बहुत वर्षों तक इस पद पर काम करते रहे। इन ... १८९० में दरबारने सिरोपाव मोतियों की कण्ठी, कड़ा, दुशाला, खासा घोड़ा आदि के सन्मान बख्शे। ...मलजी ने सिरोही इलाके के बागी देवड़ा को परास्त कर गिरफ्तार किया। मानमलजी के पुत्र सुल्तानमलजी ... के कोतवाल थे। इन्होंने २२ परगनों से रेख की रकम वसूल करने का काम किया। सं० १९१८ में ... नागोर की तरफ के परगनों के बागी आदमियों को दबाने के लिये गये। इस तरह कई ओहदों पर ... परिवार के व्यक्तियों ने काम किया। इस कुटुम्ब में इस समय भण्डारी सलहराजजी, जसवन्तराजजी, ...मलजी तथा दानमलजी विद्यमान हैं। सलहराजजी के पुत्र मनोहरमलजी किशोरमलजी तथा नथमलजी के ...मलजी मुकनमलजी जोधपुर तथा सिरोही स्टेट के कस्टम विभाग में सर्विस करते हैं। दानमलजी ... पुत्र मुन्नीलालजी सावतमलजी तथा पृथ्वीराजजी हैं। सांवतमलजी मिलनसार और सज्जन युवक हैं।

सेठ लालचन्द प्रेमराज (भंडारी) मूथा, अहमदनगर

लगभग ७५ साल पहिले भण्डारी मूथा पूनमचन्दजी पीपाड़ से अहमदनगर आये। आपने ... नौकरी की। आपके पुत्र धनराजजी ने पूनमचन्द धनराज के नाम से कारबार शुरू किया। तथा ... आषाढ़ सम्वत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लालचन्दजी और ...चन्दजी ... भण्डारी लालचन्दजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को अच्छी उन्नति मिली। आप ... और ... के कामों में आगेवान रहते थे और जाति के सर पंच थे आपका अंत सं० १९६७ में हुआ। आपके ... बाद धारचन्दजी और आपके पुत्र प्रेमराजजी अलग २ हो गये। भण्डारी मूथा प्रेमराजजी सार्वजनिक ... में अच्छा सहयोग लेते हैं। आपके यहाँ लालचन्द प्रेमराज के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। ... स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले हैं।

भीनमाल का भण्डारी खानदान (निम्बावत)

भण्डारी दुरगादासजी के पुत्र भण्डारी जेठमलजी, मानमलजी और सरदारमलजी का परिचय हम दे चुके हैं। भण्डारी सरदारमलजी १८८३ मे भीनमाल के हाकिम हुए और ४ साल बाद तीनों साचोर, जालोर, तथा भीनमाल के हाकिम हुए तथा बहुत वर्षों तक इस पद पर काम करते रहे। इन तों को १८९० में दरबारने सिरोपाव मोतियों की कण्ठी, कड़ा, दुशाला, खासा घोड़ा आदि के सन्मान बख्शे। लजी ने सिरोही इलाके के बागी देवड़ा को परास्त कर गिरफ्तार किया। मानमलजी के पुत्र सुल्तानमलजी र के कोतवाल थे। इन्होंने २२ परगनों से रेख की रकम वसूल करने का काम किया। स० १९१८ में नागोर की तरफ के परगनों के बागी आदमियों को दबाने के लिये गये। इस तरह कई ओहदों पर परिवार के व्यक्तियों ने काम किया। इस कुटुम्ब में इस समय भण्डारी सलहराजजी, जसवन्तराजजी, लजी तथा दानमलजी विद्यमान हैं। सलहराजजी के पुत्र मनोहरमलजी किशोरमलजी तथा नथमलजी के लामलजी सुकनमलजी जोधपुर तथा सिरोही स्टेट के कस्टम विभाग में सर्विस करते हैं। दानमलजी त्र मुन्नीलालजी सावतमलजी तथा पृथ्वीराजजी हैं। सांवतमलजी मिलनसार और सज्जन युवक हैं।

सेठ लालचन्द प्रेमराज (भंडारी) मूथा, अहमदनगर

लगभग ७५ साल पहिले भण्डारी मूथा पूनमचन्दजी पीपाड़ से अहमदनगर आये। आपने नौकरी की। आपके पुत्र धनराजजी ने पूनमचन्द धनराज के नाम से कारबार शुरू किया। तथा राय जमाकर सम्वत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लालचन्दजी और आलमचन्दजी भण्डारी लालचन्दजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को अच्छी उन्नति मिली। आप कान्फ्रेंस और क कामों में आगेवान रहते थे और जाति के सर पंच थे आपका अंत स० १९६४ में हुआ। आपके बाद लालचन्दजी और आपके पुत्र प्रेमराजजी अलग २ हो गये। भण्डारी मूथा प्रेमराजजी सार्वजनिक में अच्छा सहयोग लेते हैं। आपके यहाँ लालचन्द प्रेमराज के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले हैं।

सम्मान पाया। महाराजा मानसिंहजी ने आपको पहले फौजबख्शी तथा पीछे दीवानगी के महत्व पूर्ण पद पर प्रतिष्ठित किया। आपकी सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको दो हजार रुपयों की जागीरी भी प्राप्त हुई। संवत् १८९८ तक आप दीवानगी के पद पर रहे, वहाँ से रिटायर होकर आपने अपना शेष जीवन अजमेर में बिताया। वहीं आपका देहान्त हुआ। आपके भण्डारी शिवचन्दजी, कानचन्दजी और धरमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। भण्डारी शिवचन्दजी महाराजा मानसिंहजी के समय में कई महकमों के अफसर रहे। मानसिंहजी के पश्चात् महाराजा तखतसिंहजी ने संवत् १९०२ में आपको दीवानगी का पद और पाँच हजार की जागीर बख्शी। सवत् १९०५ में आपका स्वर्गवास हो गया। इनके दीपचन्दजी और मोकमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। भण्डारी दीपचन्दजी ने महाराज जसवन्तसिंहजी के समय में कई स्थानों पर हुकूमतें कीं। आप स्टेट की ओर से ए० जी० जी० के आफिस में वकील भी रहे थे। सवत् १९३२ में दरबार ने आपको पैरों में सोना और २५००) की आय का एक गाँव भी जागीर में बख्शा था। सवत् १९३५ में सरदारों के विद्रोह के समय आप महाराजा जसवन्तसिंहजी के साथ थे। आपको कई अंग्रेज अफसरों से अच्छे सर्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९५० मे हुआ। आपके भण्डारी जीतचन्दजी कल्याणचन्दजी, शिवदानचन्दजी और वल्लभचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। भण्डारी शिवदानचन्दजी का जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आप पहले प्रोबेशनरी हाकिम और उसके पश्चात् महकमा खास के कान्फेडेन्शियल महकमें में रहे। उसके पश्चात् आप कई स्थानों पर हाकिम रहे। सन् १९३१ में आप रिटायर कर दिये गये। आपके छोटे भाई वल्लभचन्दजी पाली, साचोर आदि स्थानों पर हाकिम रहे। सन् १९३० में इनका स्वर्गवास हो गया। शिवदानचन्दजी के पुत्र श्यामचन्दजी और वल्लभचन्दजी के पुत्र सोनचन्दजी इस समय विद्याध्ययन कर रहे हैं।

भण्डारी केशरीचन्दजी का परिवार—दीवान भण्डारी लक्ष्मीचन्दजी के छोटे भाई केशरीचन्दजी के मालमचन्दजी, मिलापचन्दजी नामक पुत्र हुए। मालमचन्दजी जोधपुर स्टेट मे हाकिम रहे। इनके परिवार में इस समय इनके पौत्र भण्डारी जगदेवचन्दजी, शिवदेवचन्दजी तथा प्रपौत्र धनरूपचन्दजी विद्यमान हैं।

भण्डारी मिलापचन्दजी तामील व पट्टदर्शन के महकमे में काम करते थे। आपके पुत्र भण्डारी रिधैचन्दजी का जन्म संवत् १८८६ में हुआ। आप स्टेट की ओर से संवत् १९१३ में एरनपुरा के और १९१४ में उदयपुर वकील बनाकर भेजे गये। आपके कामों की तत्कालीन पोलीटिकल एजण्टों ने बहुत प्रशंसा की। इसके पश्चात् आप मारोठ और पचपदरा के हाकिम नियुक्त हुए। सवत् १९६२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके दो पुत्र हुए। भण्डारी रघुनाथचन्दजी और भण्डारी अम्बाचन्दजी—भण्डारी रघुनाथचन्दजी १९४५ के फागुन में उदयपुर रेसिडेन्सी के वकील बनाकर भेजे गये। सवत् १९५७ में आपके शरीर का अन्त हुआ।

संवत् १५१५ में जब कि राव जोधाजी ने अपने नाम से जोधपुर शहर बसाया था, उस समय इस खानदान वाले सज्जनों ने रियासत मे दीवानगी जैसी ऊची २ जगहों पर काम कर अपनी र्मगुजारी का परिचय दिया था। इसके पश्चात् एक समय का प्रसंग है कि किसी कारणवश राव जोधाजी बड़े राजकुमार बीकाजी अपने उत्तराधिकार के सारे स्वत्वों को छोड़ कर कतिपय स्नेही जनों को साथ ले, धपुर को छोड़कर एक नवीन राज्य की स्थापना करने के उद्देश से चल पड़े। इन स्नेही व्यक्तियों म लोगों के साथ इस परिवार के लाला लाखणसी (लालसीजी, लालोजी) भी थे। लाखनसीजी के थ आपके दो भाई लोणाजी और जैतसीजी भी साथ आये थे, जिनका परिवार इस समय क्रमशः गेमी और मारवाड़ के अन्य स्थानों में निवास कर रहा है।

वच्छलाला लाखनसी—आप दीवान खींवसीजी की पाचवीं पुश्त में हुए। आपने राव धाजी को नवीन राज्य स्थापित करने में जो वहुमूल्य मदद पहुँचाई उसका जिक्र कानेर के इतिहास में भलीभाति किया गया है। जिस समय बीकानेर वसाया गया उस समय आपने इसके बसाने में पूरी २ कोशिश की थी। प्रथम २७ मोहल्लों में से १४ मोहल्ले आपके द्वारा बसाए ए। शेष वच्छराजजी मेहता के द्वारा वसे। उस समय बीकानेर राज्य में आप या मेहता वच्छराजजी दोनों हा व्यक्ति ऐसे थे जो राजा और प्रजा दोनों में वड़े सम्मानित समझे जाते थे। आप दोनों ही के द्वारा एन २ बसाए ए मुहल्लों में कई नियम प्रचारित किये गये थे, जिनमें से कुछ आज भी सुचारुरूप से रहे हैं। मेहता लाखनसीजी के श्रीवन्तजी और श्रीवन्तजी के अमराजी एवम् सूरजमलजी नामक दो पुत्र ए। अमराजी के पुत्र जीवनदासजी ने बीकानेर स्टेट में जीवनदेसर नामक एक गाँव आवाद किया। सूरजमलजी के पुत्र का नाम मेहता ठाकुरसीजी था।

मेहता ठाकुरसीजी—आप राजा रायसिंहजी के राजत्वकाल में रियासत वीकानेर के दीवान रहे। इस समय में बहुत सी लड़ाइयाँ हुई। जिस समय राजा रायसिंहजी ने दक्षिण विजय किया उस समय मेहता ठाकुरसीजी उनके साथ थे। इस युद्ध में विजय प्राप्त करने के कारण बादशाह अकबर राजा रायसिंहजी पर प्रसन्न हुए। उन्होंने इन्हें ५२ परगने का एक पट्टा इनायत किया। इसी समय आपने मेहताजी की सेवाओं पर खातिरी फरमा कर एक त वार और भटनेर नामक एक गाँव जागीर स्वरूप प्रदान किया, जिसे आजकल हनुमानगढ़ कहते हैं। साथ ही इस परगने का काम भी आपके सुपुर्द हुआ। आपके नारायणदासजी एवम् राजसीजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोगों ने भी राज्य में ऊँचे पदों पर कार्य्य किया। उस समय म ८, ९ गाँव की जागीर आपके अधिकार में थी।

तथा वदनमलजी है। भण्डारी मनमोहनचन्द्रजी का जन्म १९४३ में हुआ आप २८ सालों से जोधपुर रेलवे में सर्विस करते हैं और इस समय बाडमेर के स्टेशन मास्टर हैं। इनके पुत्र सुजानचन्द्जी देहली में डेरी फॉर्मिंग का काम सीखते हैं। भण्डारी उगमचन्द्जी २० सालों तक रेलवे में असिस्टेंट केशियर रहे। भण्डारी मगरूपचन्द्जी का जन्म १९५७ में हुआ, इन्होंने १९७८ में एल० एल० वी की डिगरी हासिल की। १९८२ आप हाकिम हुए। तथा सोजत विलाडा जोधपुर रहते हुए इस समय मेड़ते में हैं। भण्डारी दिलमोहनचन्द्जी इस समय पोलिस अकाउटेंट है, तथा वदनचन्द्जी बी० ए० जोधपुर म्युनिसिपल इंस्पेक्टर ऑफ सेनिटेशन है।

सेठ नंदलालजी भण्डारी का परिवार इन्दौर

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान नाडोल (मारवाड) का है। सब से प्रथम चौहान वंशीय राजपूत यहीं से जैन बनकर ओसवाल भण्डारी के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। आपके पूर्व पुरुष करीव २६० वर्ष पूर्व व्यापार के निमित्त सीतामऊ गये, जहाँ पर यह खान दान करीव ६० वर्ष तक रहे। इसके पश्चात् आप लोग सीतामऊ से होलकर राज्यान्तर्गत रामपुरा नामक नगर में आकर बसे, जहाँ पर आज भी आपकी हवेलियाँ बनी हुई है। इस परिवार में सेठ चरणजी बडे नामाङ्कित हुए। सेठ चरणजी भण्डारी रामपुरा के प्रमुख व्यापारियों में से थे। उस समय आपका व्यापार खूब चमका हुआ था। परोपकार की तरफ भी आपकी काफ़ी दृष्टि थी। आपने जनता की सुविधा के लिये एक धर्मशाला तथा श्मशान में एक विश्राम गृह भी बनाया था जो आज भी अच्छी स्थिति में विद्यमान है। आपने केदारेश्वर में एक चौतरा भी बनवाया था। इस प्रकार के कई सार्वजनिक कार्यों में आपने हाथ बटाया। आपके पश्चात् सेठ पन्नालालजी तक के वंशजों की स्थिति साधारण रही। सेठ पन्नालालजी ७५ वर्ष पूर्व रामपुरा से इन्दौर आ बसे। आप लोगों का परिवार तभी से इन्दौर में ही निवास कर रहा है।

सेठ पन्नालालजी ने इन्दौर में जाकर अफीम और कपड़े का व्यापार करना आरम्भ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता प्राप्त हुई। आपके नंदलालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ नंदलालजी हाथों से इस फर्म की बहुत ही उन्नति हुई। आपने अपने जीवन में काफी सम्पत्ति, सम्मान तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त किया। आप धीरे २ इन्दौर के धनिक व्यापारियों में गिने जाने लगे। इतना ही नहीं इन्दौर दरबार में भी आपका समुचित सम्मान था। आप कई वर्षों तक इन्दौर-म्युनिसिपैलिटी के कार्पोरेटर तथा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से भी सम्मानित किये गये थे। सारे मध्यभारत के ओसवाल समाज में आपकी बहुत प्रतिष्ठा थी।

ार्य आपके सुपुर्द हो गया। संवत् १८८८ में मेहता हिन्दूमलजी बादशाह के पास देहली गये। वहाँ ादशाह को अपने कार्यों से खुश कर अपने स्वामी महाराजा रतनसिंहजी के लिये आप नरेन्द्र शिरोमणि ा सम्मानीय खिताब लाये। इससे खुश होकर महाराजा ने आपको 'महाराव' का खिताब प्रदान किया। ाया घर पधार कर मोतियों का हार इनायत किया।

जिस समय वहाँ के रेसिडेण्ट मि० सदरलैण्ड थे, उस समय काबुल और जोधपुर के हमले में ाहाराव हिन्दूमलजी ने कासीद व रसद भेजने का बहुत अच्छा इन्तजाम किया था। भारत सरकार भी आपका बहुत विश्वास करती थी। यहाँ तक कि जयपुर के तत्कालीन एजेण्ट जब स्वर्गवासी हो गये तब वहाँ का ासन भी आपकी राय से किया गया था। रियासत बीकानेर की ओर से सालाना २२ हजार रुपया भारत रकार को फौज खर्च के लिये देना पड़ते थे। आपने सरकार से कह सुन कर इस कर को माफ करवाया। आपके उचित प्रबन्ध के कारण सरकार ने बीकानेर में एजेण्ट रखना भी उचित नहीं समझा।

एक बार हनुमानगढ़ और भावलपुर की सरहद का मामला बढ़ गया यहाँ तक कि काफी तनाजा ा गया, उस समय आपने बड़ी बुद्धिमानी, खूबी एवम् मेहनत से इस मामले को निपटा दिया और जमीन ा बटवारा कर दिया। मौके की जमीन होने से इसमें बहुत से गाँव आबाद हो गये। ऐसा करने से ाज्य की आमदनी में बहुत वृद्धि हो गई।

मि० कनिंघम आपके कार्यों से बड़े खुश रहा करते थे। एक बार वे आपको शिमला ले गये। वहाँ तत्कालीन वाइसराय मि० हार्डिंज से आपकी मुलाकात करवाई। इस बार शिमला दरबार में भारत सरकार ने आपको खिल्लत प्रदान की। इस समय के पत्र का सारांश नीचे दिया जा रहा है —

"सन् १८४६ की ३ री मई को राईट आनरेबल गवरनर जनरल लार्ड हार्डिंज शिमला दरबार के वक्त मेहता महाराव हिन्दूमल दीवान बीकानेर से मिले और खिल्लत बख्शी। श्रीमान् ने उनके ओहदे और सचरित्र के मुताबिक इज्जत के साथ बर्ताव किया"।

संवत् १८९७ में जब कि महाराजा रतनसिंहजी और उदयपुर के तत्कालीन महाराणा सरदार सिंहजी श्री लक्ष्मीनाथजी के मन्दिर से दर्शन कर वापस आये तब गोठ अरोगने आपकी हवेली पर पधारे। इस समय दोनों दरबार ने एक २ कण्ठा महाराव हिन्दूमलजी को, मेहता मूलचन्दजी को और मेहता [illegible]जी को पहना कर सम्मानित किया। इसी अवसर पर महाराणा ने महाराजा से कहा कि हमारा उदयपुर रियासत की भी भोलावण महारावजी को दी जावे। यह सुन कर महाराना साहब ने महाराव हिन्दूमलजी से कहा 'हिन्दूमल सुणे है। इसके उत्तर में महारावजी ने हाथ जोड कर निवेदन किया

६२

अंग्रेज का मदद देने के लिये भेजे गये थे। वहाँ आपने बड़ा अच्छा काम किया। संवत् १९२९ में महाराजा सरदारसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। इस अवसर पर राज्य गद्दी की मालिकी के सम्बन्ध में बड़ा विवाद हो गया। इस अवसर पर भी आपने महाराजा डूँगरसिंहजी को हर तरह की कोशिश करके गद्दी पर बिठाने म सहायता पहुँचाई। इस सहायता के उपलक्ष्य मे महाराजा साहब ने आपके लिये एक खरीता जनरल जे० सी० ब्रुक एजन्ट टू दी गवरनर जनरल आबू के नाम भेजा था।

संवत् १९३२ में जब कि तत्कालीन प्रिंस ऑफ वेल्स भारत में आये थे उस समय तथा संवत् १९३४ में देहली दरबार के समय आप महाराजा की आज्ञा से देहली गये थे। वहाँ आपको खिलत देकर आपका सम्मान बढ़ाया था।

संवत् १९३५ में बेरी और रामपुरे के झगड़ों को निपटाने के लिये आप जयपुर भेजे गये। वहाँ आपने अपने कागजों से सबूत देकर मामले को तय करवा दिया। इसकी तारीफ मे कर्नल बेनन साहब ने, जोकि उस समय जयपुर के पोलिटिकल एजण्ट थे, आपके कार्यों से खुश होकर एक बहुत अच्छा सार्टिफिकेट प्रदान किया था, तथा दरबार को भी आपके कार्यों से वाकिफ किया था।

मेहताजी संवत् १८८८ से संवत् १९१४ तक कई बार वकीली की जगह पर भेजे गये। संवत् १९२६ से संवत् १९४० तक आप आबू वकील रहे। इसके अतिरिक्त भी आपने कई बड़े बड़े ओहदा पर काम किया। आप मुसाहिब और मेम्बर कौंसिल रहे। आपको तनख्वाह के अतिरिक्त सारा खर्च राज्य की ओर से मिलता था। यही नहीं बल्कि शादी और गमी के समय भी रियासत ही सारा खर्च उठाती थी। संवत् १९०२ में महाराजा रतनसिंहजी ने डूँगराणा तथा संवत् १९३९ में महाराजा डूँगरसिंहजी ने रुरूपदेसर नामक एक २ गाव जागीर में प्रदान किये। संवत् १९४८ में आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय महाराजा गंगासिंहजी मातम-पुरसी के लिये आपके घर पर पधारे और आपका सम्मान बढ़ाया। आपके केसरीसिंहजी और विशनसिंहजी नामक दो पुत्र थे। इनमें से मेहता केसरीसिंहजी अपने चाचा मेहता अनारसिंहजी के यहाँ दत्तक रहे।

मेहता अनारसिंहजी ने राज्य में कोई काम नहीं किया। उनका ध्यान व्यापार की ओर रहा। जवाहरात का व्यापार करने के लिये वे जयपुर गये वहीं संवत् १९०२ में आपका स्वर्गवास हो गया।

महाराव हरिसिंहजी—आप महाराव हिन्दूमलजी के प्रथम पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १८८३ में हुआ था। आप अपने समय के मुत्सुद्दियों में होशियार व्यक्ति माने जाते थे। राज्य में आपका बहुत रुतबा था। संवत् १९१४ में जब कि भारतवर्ष के रणांगण में चारों ओर गदर मचा हुआ था, तब आप महाराजा की ओर से ब्रिटिश सरकार को मदद पहुँचाने के उद्देश्य से भेजे गये थे। वहाँ और २

चल रहा है। इस मिल के खुलने के ६ वर्ष बाद अर्थात् सन् १६२८ में आपने मूलजी हरिदास मिल्स कल्याण को ७२५०००) में खरीदकर उसकी सारी मशीनरी इस मिल में सम्मिलित कर दी जिससे इस मिल में एक नया जीवन आ गया और तेजी के साथ इस मिल में बहुत अधिक मात्रा में माल निकलने लगा। इस समय यह मिल रात और दिन चौबीसों घंटा चलता रहता है।

इसी प्रकार आपने सन् १९२८ में इन्दौर में, एक बहुत बड़े स्केल पर पीतल का कारखाना भी स्थापित किया। यह कारखाना सन् १९३१ से बिजली द्वारा चलाया जाने लगा। वर्तमान में इस पीतल के कारखाने से दूर २ के प्रान्तों में पीतल आदि के वर्तन भेजे जाते हैं। इसी कारखाने में मशीनरी के बहुत से पुरजे भी ढाले जाते है।

श्री कन्हैयालालजी की सार्वजनिक सेवा

श्री कन्हैयालालजी एक बडे योग्य व्यापारी तथा कुशल व्यवस्थापक होने के साथ ही साथ बड़े सुधरे हुए नवीन विचारों के शिक्षित सज्जन है। आपने मिलों में काम करने वाले व्यक्तियों तथा साधारण जनता की सुविधा के लिये अनेक उपयोगी संस्थाएँ खोल कर अपनी उदारता का परिचय दिया है। पाठकों की जानकारी के लिये आपकी ओर के बनाई गई कुछ सस्थाओं का हम नीचे उल्लेख करते हैं।

सन् १९२२ में आपने अपने पिताजी के नाम से एक विद्यालय स्थापित किया। इस विद्यालय के लिये आपने २१०००) की लागत का एक मकान बनवा कर इसके सुपुर्द किया। सन् १९३० से आपने खजूरी बाजार में ६००००) की लागत से मकान तैयार करवा कर उसमें नन्दलाल भण्डारी हाईस्कूल की स्थापना की जो आज भी बहुत सफलता पूर्वक चल रहा है। यहाँ पर प्रति वर्ष सैकड़ों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते है। इस हॉयस्कूल को चलाने में आपकी ओर से करीब १८०००) प्रति वर्ष खर्च किया जाता है।

इसी प्रकार मिल में काम करने वालों की सुविधा के लिये आपकी ओर से एक दवाखाना, शुद्धपानी का एक कुआ, भोजन करने का हाल आदि २ कई मकान बनाये गये है जिनसे प्रतिदिन सैकड़ों स्त्री पुरुष लाभ उठाते है।

इसके अतिरिक्त स्नेहलतागंज इन्दौर के अन्तर्गत आपकी ओर से एक विशाल प्रसूतिगृह इसी वर्ष स्थापित किया गया है जिसके भवन २२५००) में मोल लिये गये हैं। इस प्रसूतिगृह के अन्तर्गत मजदूर और सर्व साधारण जनता के लिये सब प्रकार की सुविधाओं की व्यवस्था रक्खी गई है। मई सन् १९३४ से यह प्रसुतिगृह सर्व साधारण की सेवा करने के लिये खुल गया है। इसमें सभी प्रकार के अनुभवी

महाराव हरिसिंहजी का परिवार

मेहता किशनसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९१२ मे हुआ। आप महाराव हरिसिंहजी के प्रथम पुत्र थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में केवल २४ वर्ष की आयु में ही हो गया। इसके एक माह पूर्व आप रियासत के दीवान वनाये गये थे। आपके तीन पुत्र मेहता शेरसिंहजी, मेहता लछमन सिंहजी और मेहता पन्नेसिंहजी थे।

मेहता शेरसिंहजी ने राज्य में कई स्थानों पर कार्य किया। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर महाराना साहब ने आपको राव की उपाधि प्रदान कर आपका सम्मान वढ़ाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९८६ मे हो गया। इस समय आपके रघुरावसिंहजी, कल्याणसिंहजी और आनन्दसिंहजी नामक तीन पुत्र है। श्री० आनन्दसिंहजी स्टेट बैंक में काम करते हैं। आपके किशोरसिंहजी नामक एक पुत्र है। मेहता लछमनसिंहजी और मेहता पन्नेसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। लछमनसिंहजी के गुलाबसिंहजी नामक एक पुत्र हैं।

महाराव सवाईसिंहजी—आप महाराव हरिसिंहजी के दूसरे पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १९१४ का था। प्रारम्भ में आप राजगढ़ की हवलदारी पर भेजे गये। इसके वाद आप वर्तमान महाराजा गंगासिंहजी के मिनिस्टर और वेटिंग रहे। इसके पश्चात् आप क्रमश वढ़ते ही गये और अंत मे मेम्बर कौंसिल नियुक्त हुए। आपने महाराजा डूँगरसिंहजी के समय में फौजदारी दीवानी वगैरह की कुल मुत्फ़री का काम किया था। इन्ही सव कार्यों से प्रसन्न हो कर महाराजा साहव ने आपको पन्ने का कंठा और पेरों में सोने की साट वक्शी। इसके अतिरिक्त आपको अपनी पुश्तैनी ताजीम वगैरह पहलेही से थी। आपका सम्वत् १९७९ में स्वर्गवास हो गया। आपके रामसिंहजी और गोविंदसिंहजी नामक दो पुत्र थे। प्रथम रामसिंहजी मेहता जवानसिंहजी के यहाँ दत्तक चले गये। दूसरे गोविंदसिंहजी का स्वर्गवास सम्वत् १९६९ में ही हो चुका था। मेहता गोविंदसिंहजी के खुमानसिंहजी और मोहनसिंहजी नामक दो पुत्र हैं। महाराव खुमानसिंहजी को अपने पुश्तैनी सव सम्मान प्राप्त है। आप शिक्षित और मिलनसार सज्जन हैं। आपके सुमेरसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। श्रीमोहनसिंहजी अपने चाचा मेहता वल्लभसिंहजी के यहाँ दत्तक चले गये। वल्लभसिंहजी स्टेट में हकिम रहे थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। मोहनसिंहजी के एक पुत्र सोहनसिंहजी है।

काम को बड़ी योग्यता से सम्हाला। आप इन तीन वर्षों में म्युनिसीपैलिटी की ओर से इन्दौर म्युनिसिपल इम्प्रूव्हमेंट ट्रस्ट बोर्ड के ट्रस्टी भी चुने गये थे। आप सरकार की ओर से सन् १९२८ में तीसरे दर्जे के आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाये गये। आपने इस पद पर लगातार चार वर्षों तक काम किया। आपकी कार्य्य कुशलता और योग्यता से प्रसन्न होकर होलकर गवर्नमेंट ने आपको सन् १९३२ में द्वितीय दर्जे के आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्माननीय पद से विभूषित किया। आज भी आप इस पद पर हैं और बड़ी योग्यता से सब कार्य्य सञ्चालित करते हैं। आप सन् १९३३ में "इन्दौर स्टेट मिनरल सरव्हे" के मेम्बर बनाये गये तथा आज तक उसके मेम्बर हैं।

इसके अतिरिक्त आप कोआपरेटिव्ह सोसाइटी के प्रेसिडेण्ट, राऊ गुरुकुल की गव्हर्निंग बॉडी के मेम्बर, तथा इसी प्रकार की कई सभाओं के व संस्थाओं के आप सभापति वगैरह हैं। तात्पर्य्य यह है कि आप बहुत बड़े बुद्धिमान, व्यापार कुशल, सुधारक और ओसवाल समाज के चमकते हुए व्यक्ति हैं।

आपके छोटे भ्राता श्री मोतीलालजी एवं सुगनमलजी भी आपके साथ व्यापार, मिल की व्यवस्था तथा अन्य कार्य्यों में सहायता देते हैं। आप दोनों भ्राता भी बड़े मिलनसार सज्जन हैं।

यह परिवार रामपुरा तथा इन्दौर ही नहीं वरन् सारे मध्यभारत की ओसवाल समाज में अग्रगण्य तथा ओसवाल समाज में दिखता हुआ परिवार है।

सेठ बालमुकुन्द चन्दनमल (भंडारी) मूथा, सतारा

इस प्रतिष्ठित परिवार का मूल निवास स्थान पीपाड है। जोधपुर स्टेट में ऊँचे ओहदों पर कार्य्य करने से इस कुटुम्ब को मूथा पदवी का सम्मान मिला। पीपाड से मूथा गुमानचन्दजी के दूसरे पुत्र मोखमदासजी लगभग १०० साल पूर्व अहमदनगर होते हुए सतारा आए तथा आपने कपड़े का व्यवसाय आरम्भ किया।

सेठ हजारीमलजी मूथा—आप मूथा मोखमदासजी के पुत्र थे। आपका जन्म सम्वत् १८७४ में हुआ। आपने कपड़ा, सूत और व्याज के व्यवसाय में अच्छी सम्पत्ति कमाई। धार्मिक कामों में भी आपकी रुचि थी। सम्वत् १९४७ की प्रथम भादवा वदी १२ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके बालमुकुन्दजी और चन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ बालमुकुन्दजी मूथा—आपका जन्म संवत् १९१५ की फाल्गुन वदी में हुआ। जैन शास्त्रों में आपकी समझ ऊँची थी। केवल ३० साल की अल्पायु में आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हुआ। ऐसी स्थिति में भी आपने द्वितीय विवाह करना अस्वीकार कर अपने दृढ़ मनोबल और उच्च आदर्श का परिचय दिया। आप

आफिसरों से सर्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हो गया। आपके पाँच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः फतहसिंहजी, बहादुरसिंहजी, उमरावसिंहजी, अनोपसिंहजी और अर्जुनसिंहजी हैं।

इनमें से मेहता फतेहसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र हुए जिनका नाम क्रमशः गोपालसिंहजी, मुकुनसिंहजी और ज्ञानसिंहजी हैं। इनमें से गोपालसिंहजी दत्तक गये हैं। मेहता बहादुरसिंहजी राज्य में जोधपुर वकालात का काम करते रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। मेहता उमराव सिंहजी का ध्यान व्यापार की ओर रहा। आप मिलनसार सज्जन हैं। मेहता अनूपसिंहजी के ५ पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः भगवतसिंहजी, मोहब्बतसिंहजी, जुगलसिंहजी, मोतीसिंहजी और प्रतापसिंहजी हैं। मेहता अर्जुनसिंजी के मेघसिंह नामक एक पुत्र हैं।

मेहता विशनसिंहजी—आप मेहता छोगमलजी के पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १९१८ का था। आप संवत् १९३८ में महकमा माल के काम पर नियुक्त हुए। संवत् १९३६ में दिवाली के अवसर पर घर में आग लग जाने से आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र मेहता बुधसिंहजी इस समय विद्यमान हैं। आप पहले जयपुर वकील और फिर आबू वकील रहे। अब आप हाकिम देवस्थान हैं।

इस परिवार में छोटे से छोटे बच्चे तक को पैरों में सोना बक्षा हुआ है। इस समय इस परिवारवालों की जागीर में सात गाँव हैं।

वेद परिवार, रतनगढ़

इस परिवार का इतिहास बड़ा गौरव मय रहा है। बीकानेर के वेद सज्जन इसी वेद गौत्र के हैं। इस परिवार के पुर्व पुरुष गोपाल पुरा नामक स्थान पर वास करते थे। वहाँ से थानसिंहजी लालसर नामक स्थान पर आकर रहने लगे। थानसिंहजी के ५ पुत्रों में से हिम्मतसिंहजी नामक पुत्र रतनगढ़ से ... माइल की दूरी पर पापली नामक स्थान में आकर रहे। आपके ६ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः जेटमलजी मयाचंदजी, पृथ्वीराजजी, मोकमसिंहजी, मदनसिंहजी, और हरिसिंहजी था। मयाचन्दजी के चार पुत्रों में ...मलजी, भगवानदासजी, और गम्भीराजजी निःसंतान स्वर्गवासी हो गये। चौथे पुत्र भीमसिंहजी के ... पुत्र मानसिंहजी, गंगारामजी, केसरीसिंहजी गुमानसिंहजी और सरदारमलजी थे। सेठ भीमसिंहजी का स्वर्गवास हो जाने पर इनकी धर्मपत्नी अपने पुत्रों को लेकर रतनगढ़ चली आई। इनमें से गुमानसिंहजी और सरदारमलजी निःसंतान स्वर्गवासी हो गये। शेष तीनों में से यह परिवार मानसिंहजी से सम्बन्ध रखता है।

सहायताएं देते हैं। आपकी फर्म बम्बई में बालमुकुन्द चन्दनमल मूथा के नाम से आढ़त का और सोला पुरमें चन्दनमल मोतीलाल मूथा के नाम से कपड़े का व्यापार करती है। सतारा में मोत्यमगास इगारीमल के नाम से इस फर्म पर बैंकिंग एवं मनीलेंडिंग व्यापार होता है। रायसाहेब सेठ मोतीलालजी के पुत्र झूकारमलजी की उम्र ५ साल की है।

भण्डारी रूपराजजी, (निम्बावत) जालोर

भण्डारी नराजी के छठे पुत्र निम्बाजी हुए। इनके वंश में आगे चल कर नथमलजी हुए। इनके पुत्र ईसरदासजी और करमसीजी संवत् १७७४ में जालोर आये। भण्डारी करमसीजी के पुत्र सरदारमलजी (सदाणजी) और जोगीदासजी हुए। भण्डारी जोगीदासजी थिराद (पालनपुर) के पास युद्ध करते हुए झुंझार हुए। इनके पुत्र दुरगदासजी के साथ इनकी धर्मपत्नी १७०६ की चेत वदी ९ के दिन सती हुई, तब से इस परिवार में चेत वदी ९ की पूजा होती है। दुरगादासजी के पुत्र मानमलजी की पत्नी भी उनके साथ सती हुई।

भण्डारी सरदारमलजी के पौत्र प्रेमचन्दजी संवत् १८६४ में भीनमाल की लड़ाई में झुंझार हुए। वहाँ तालाब पर उनका चौतरा बना है। झुंझार होने से इनके पुत्रों को संवत् १९४० तक ३००) सालियाना मिलते रहे। भण्डारी प्रेमचन्दजी के किशनचन्दजी, मयाचन्दजी और जालमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। उनमें किशनचंदजी के परिवार में इस समय चम्पालालजी विजयराजजी और सजनराजजी हैं। भण्डारी जालम चन्दजी के पुत्र ज्ञानमलजी और भभूतमलजी हुए। ये दोनों भ्राता जालोर किले और कोतवाली में मुला जिम थे। ज्ञानमलजी के पौत्र छगनराजजी हैं। इनके पुत्र सम्पतराजजी ने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है। भण्डारी भभूतमलजी संवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए।

भण्डारी भभूतमलजी के पुत्र दौलतमलजी, मुकुन्दचन्दजी तथा रूपचन्दजी विद्यमान हैं। दौलत मलजी ने बहुत समय तक जोधपुर में सर्विस की। भण्डारी रूपराजजी का जन्म संवत् १९५४ में हुआ। आपने सन् १९१९ में वकालात पास की तथा तब से ये जालोर में प्रेक्टिस करते हैं। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने रादेलाल तालाब में दुरुस्ती कराई, बड़ी पोल के दरवाजे में बारिश में मवेशियों के लिए राह ठीक कराई तथा सरदार हाई स्कूल में कमरा बनवाया। दौलतमलजी के पुत्र निहालचन्दजी जोधपुर में सर्विस करते हैं। निहालचन्दजी ने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है और किशोरचन्दजी पढ़ते हैं।

सहायताएं देते हैं। आपकी फर्म बम्बई में बालमुकुन्द चन्दनमल मूथा के नाम से आढ़त का और सोला पुरमें चन्दनमल मोतीलाल मूथा के नाम से कपड़े का व्यापार करती है। सतारा में मोखमदास हजारीमल के नाम से इस फर्म पर बैंकिंग एवं मनीलेंडिङ्ग व्यापार होता है। रायसाहेब सेठ मोतीलालजी के पुत्र ॐकारमलजी की उम्र ५ साल की है।

भण्डारी रूपराजजी, (निम्बावत) जालोर

भण्डारी नराजी के छठे पुत्र निम्बाजी हुए। इनके वंश में आगे चल कर नथमलजी हुए। इनके पुत्र ईसरदासजी और करमसीजी संवत् १७७४ में जालोर आये। भण्डारी करमसीजी के पुत्र सरदारमलजी (सदाणजी) और जोगीदासजी हुए। भण्डारी जोगीदासजी थिरात (पालनपुर) के पास युद्ध करते हुए झुंझार हुए। इनके पुत्र दुरगदासजी के साथ इनकी धर्मपत्नी १८०६ की चेत वदी ९ के दिन सती हुई, तब से इस परिवार में चेत वदी ९ की पूजा होती है। दुरगादासजी के पुत्र मानमलजी की पत्नी भी उनके साथ सती हुई।

भण्डारी सरदारमलजी के पौत्र प्रेमचन्दजी संवत् १८६४ में भीनमाल की लड़ाई में झुंझार हुए। वहाँ तालाब पर उनका चौंतरा बना है। झुंझार होने से इनके पुत्रों को संवत् १९४० तक ३००) सालियाना मिलते रहे। भण्डारी प्रेमचन्दजी के किशनचन्दजी, मयाचन्दजी और जालमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। उनमें किशनचंदजी के परिवार में इस समय चम्पालालजी विजयराजजी और सजनराजजी हैं। भण्डारी जालम चन्दजी के पुत्र ज्ञानमलजी और भभूतमलजी हुए। ये दोनों भ्राता जालोर किले और कोतवाली में मुला जिम थे। ज्ञानमलजी के पौत्र छगनराजजी हैं। इनके पुत्र सम्पतराजजी ने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है। भण्डारी भभूतमलजी संवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए।

भण्डारी भभूतमलजी के पुत्र दौलतमलजी, मुकुन्दचन्दजी तथा रूपचन्दजी विद्यमान हैं। दौलत मलजी ने बहुत समय तक जोधपुर में सर्विस की। भण्डारी रूपराजजी का जन्म संवत् १९५४ में हुआ। आपने सन् १९१९ में वकालात पास की तथा तब से ये जालोर में प्रेक्टिस करते हैं। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने रादेलाल तालाब में दुरुस्ती कराई, बड़ी पोल के दरवाजे में बारिश में मवेशियों के लिये राह ठीक कराई तथा सरदार हाई स्कूल में कमरा बनवाया। दौलतमलजी के पुत्र निहालचन्दजी जोधपुर में सर्विस करते हैं। निहालचन्दजी ने मेट्रिक तक शिक्षा पाई है और किशोरचन्दजी पढ़ते हैं।

सेठ मेघराजजी—आप भी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र बा० सूरजमलजी विद्यमान है। आप बड़े मिलनसार, शिक्षित और सज्जन पुरुष हैं। आपका व्यापार मेसर्स ताराचन्द मेघराज के नाम से नं० ४ नारायणप्रसाद लेन में होता है। आपके रतनचन्दजी नामक एक पुत्र है।

सेठ बींजराजजी का परिवार

यह हम उपर लिख ही चुके हैं कि सेठ बींजराजजी पहले अपने भाई के साथ रहे। पश्चात् संवत् १९१४ में अलग हुए। अलग होने पर आपने मेसर्स बींजराज हुकुमचन्द के नाम से कारोबार प्रारंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। आपके हुकमचंदजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ हुकुमचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आपने अपनी व्यापार चातुरी, दिमागी और होशियारी से फर्म की बहुत तरक्की की। साथ ही आपने फर्म से लाखों रुपया पैदा किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हो गया। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ जसकरनजी सेठ मालचन्दजी, और सेठ दीपचन्दजी था। इनमें से द्वितीय और तृतीय पुत्र का स्वर्गवास होगया। मालचन्दजी के सोहनलालजी नामक एक पुत्र हैं। आप नवयुवक और मिलनसार हैं। आपके भी रतनचन्द नामक एक पुत्र है।

सेठ जसकरनजी—आपका जन्म संवत् १९३३ का है। आप बड़े विद्या-प्रेमी सज्जन हैं। आपको जैन धर्म की अच्छी जानकारी है। आपका जीवन बड़ा सादा और मिलनसार है। आप हमेशा सार्वजनिक और सामाजिक कार्यों में अपने समय को व्यय करते रहते हैं। आपने रतनगढ़ में एक वणिक पाठशाला स्थापित कर रखी है। इसमें करीब १७५ विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। इसके अतिरिक्त आपने वहीं एक बाल वाचनालय भी स्थापित कर रखा है। आपके इस समय पाच पुत्र हैं। जिनके नाम बा० डूंगरमलजी, मोतीलालजी, गुलाबचन्दजी, मोहनलालजी और लाभचंदजी हैं। आप सब भाई मिलनसार और व्यापार चतुर हैं। सोहनलालजी बी० ए० में पढ़ रहे हैं।

बाबू डूँगरमलजी के नूरामलजी और नेमचन्दजी, बाबू मोतीलालजी के सुमेरमलजी, दुलिचन्दजी रतनचन्दजी, बाबू सोहनलालजी के जतनमलजी और लाभचंदजी के तेजकरनजी नामक पुत्र हैं।

कलकत्ता, नाटोर, खानसामा (रंगपुर) माथा भाँगा (कूँच बिहार), डरवानी (रंगपुर) इत्यादि स्थानों पर आपका जूट, जमींदारी और हुँडी चिट्ठी का व्यापार होता है। यह फर्म तमाखू का काम भी करती है।

वेद मेहता

वेद मेहता गौत्र की उत्पत्ति

कहा जाता है कि जब अट्ठारह जाति के राजपूत लोग आचार्य्य श्री रत्नप्रभसूरिजी के उपदेश से प्रभावित होकर ओसवाल हुए, उस समय उनमें राजा उपलदेव भी एक थे। ये पंवार जाति के राजपूत राजा थे। इन्हीं उपलदेव की संतान आचार्य्य श्री के द्वारा श्रेष्ठी गौत्र में दीक्षित हुई। इनकी कई पुश्तों के पश्चात् इसी वंश में संवत् १२०० के करीब दुल्हा नामक एक प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। इनके पितामह वैद्य का काम करते थे। ऐसी किम्वदन्ती है कि एक बार चित्तौड़ के तत्कालीन महाराणा की रानी की आँखें खराब हो गईं। उस समय बहुत से व्यक्ति इलाज करने के लिये आये, मगर सब निष्फल हुए। इसी समय दुल्हाजी भी मुनि श्री जिनदत्तसूरिजी के द्वारा प्राप्त दवाई को लेकर राज महल में गये और अपनी दवाई से महारानी के चक्षु ठीक कर दिये। यह देख महाराणा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने दुल्हा को वैद की पदवी प्रदान की। इसी समय से इनका श्रेष्ठी गौत्र बदल कर वेद गौत्र हुआ। इसके पश्चात् इस परिवार के लोगों का राज्य में विशेष काम काज रहा। इसीसे इन्हें मेहता पदवी मिली। तभी से ये वेद मेहता कहलाते चले आ रहे हैं।*

वेद मेहता परिवार बीकानेर

कहना न होगा कि इस परिवार का इतिहास बड़ा गौरवमय और कीर्ति शाली रहा है। इस परिवार के महापुरुषों ने क्या राजनीति क्या समाजनीति और क्या युद्धनीति, सभी क्षेत्रों में ऐसे २ आश्चर्य जनक कार्य्य कर दिखाये हैं, जिससे किसी भी जाति का इतिहास उज्वल हो सकता है। इन सब बातों का परिचय पाठकों को समय २ और स्थान २ पर मिलने वाले परिचयों से प्राप्त हो जायगा।

संवत् १४५० के करीब की बात है मंडोवर नगर में राठोड़ वंशीय राव चूंडाजी राज्य करते थे। उस समय इस परिवार के पुरुष मेहता खींवसीजी राव चूंडाजी के दीवान थे। करीब २ इसी समय का जिक्र है कि राव चूंडाजी को मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा कुम्भाजी ने आक्रमण करके मण्डोवर से बेदखली कर दिया था। इसी समय मेहता खींवसीजी ने बड़ी बहादुरी और बुद्धिमानी से युद्ध कर अपनी कारगुजारी एवम् होशियारी के द्वारा फिर से मंडोवर नगर पर अपने स्वामी का अधिकार करवाया था।

* ऐसा भी कहा जाता है कि उपलदेव के पुत्र वेदाजी से वेद गौत्र की उत्पत्ति हुई।

ी अच्छा २ हो गये ह और डायरेक्ट कपड़े का इम्पोर्ट करते है। आप लोगों की फर्मे क्रमश
जगन स्ट्रीट और सूतापट्टी में है। सेठ सागरमलजी चूरू ही मे शान्तिलाभ करते है।

सेठ जवरीमलजी भी मिलनसार व्यक्ति हैं। बीकानेर स्टेट मे आपका अच्छा सम्मान है। आपके
गरामलजी, रावतमलजी, मोहनलालजी और रामचन्दजी नामक चार पुत्र है। सब लोग व्यापार मे भाग
ते है। इस फर्म का कलकत्ता आफिस ६२ क्रासस्ट्रीट मे उदयचन्द पन्नालाल के नाम से है। उस फर्म
र डायरेक्ट कपड़े का इम्पोर्ट होता है।

इस परिवार की चूरू और कलकत्ता मे बडी २ हवेलियाँ बनी हुई है। आप लोग श्वेताम्बर
न तेरापथी सम्प्रदाय के मानने वाले हैं।

वेद परिवार राजलदेसर

इस परिवार का प्राचीन इतिहास बड़ा गौरव पूर्ण एवम् कीर्तिशाली रहा है। जिसका जिक्र
म इसी ग्रन्थ में बीकानेर के प्रसिद्ध महाराव वेद परिवार के साथ कर चुके है। करीब ५००, ६०० सो
पूर्व की बात है—जब कि बीकानेर नहीं बसा था—इस परिवार के प्रथम पुरुष दसूजी जोधपुर छोड़
र यहाँ राजलदेसर से तीन मील की दूरी पर आये। यहाँ आकर आपने अपने नाम से दसूसर नामक
क गाँव बसाया जो आज भी विद्यमान है। यह गाँव चारणों को दान स्वरूप देदिया गया। इसी
दसूसर में आपने यहाँ के निवासियों के आराम के लिये एक कुवा बनवाया था जिस पर आज भी उनका
नाम लेख लगा हुआ है। यहाँ से आप राजलदेसर आ गये और वहीं रहने लगे।

आपकी कुछ पीढ़ियों के पश्चात् इस खानदान में मेहता हरिसिंहजी बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। आप
तत्कालीन राजलदेसर के राजा रायसिंहजी के दीवान थे। कहा जाता है कि आपके समय में एक बार किसी शत्रु ने
राजलदेसर पर चढ़ाई की थी। इस युद्ध में आप राजा रायसिंहजी के पुत्र कुँवर जयमलजी के साथ जूँझार
हुए थे। याने अपना सिर कट जाने के पश्चात् भी आप दोनों ही सज्जन तलवार हाथ में लेकर कुछ
समय तक शत्रु सेना का मुकाबला करते रहे थे। जिस स्थान पर आपका सिर गिरा था वह स्थान आज भी
"झूँझारजी" के नाम से प्रसिद्ध है तथा वहाँ इस वश वाले अपने यहाँ होने वाले किसी भी शुभ कार्य्य
में इष्टदेव स्वरूप पूजा करते हैं, जिस स्थान पर आपका शव गिरा वह स्थान आज भी मुधायल के
नाम से पुकारा जाता है। इसके अतिरिक्त इस खानदान में मेहता सवाईसिहजी भी जूँझार हुए। जिस स्थान
पर आप जूँझार हुए वह स्थान आजकल बीदासर और राजलदेसर के बीच में है और वहाँ आज भी निशान
स्वरूप एक लिखा हुआ चबूतरा बना हुआ है।

मेहता सावलदासजी के पश्चात् क्रमशः आसकरणजी, रामचन्द्रजी, दौलतरामजी, मागकचन्दजी और घमडसीजी हुए।

मेहता घमडसीजी—आप महाराजा सूरतसिहजी के राजत्व-काल में हुए। आप बड़े कारखाने एवम् श्रीजी के निज के खर्च के बन्दोबस्त के काम पर नियुक्त किये गये। इस कार्य्य को आपने बड़ी होशियारी और बुद्धिमानी के साथ किया। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम मेहता मूलचन्दजी और मेहता अबीरचन्दजी था।

मेहता मूलचन्दजी—आप मेहता घमडसीजी के बडे पुत्र थे। अपने पिताजी के स्वर्गवासी हो जाने पर आप उनके रिक्त स्थान पर नियुक्त हुए। सम्वत् १८७० में आप चूरू के सरदार के साथ होने वाले युद्ध में महाराजा के साथ गये थे। इस युद्ध में आपने अपनी बहादुरी एवम् वीरत्व का खासा परिचय दिया था। यहीं आप बरछी के द्वारा घायल हुए थे। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर तत्कालीन महाराजा साहब ने आपको बडे कारखाने का काम भी सौंपा। इसी समय नौरङ्गदेसर नामक एक गाँव भी आपको गुजरान के लिये बक्षा गया। आपके स्वर्गवासी हो जाने पर तत्कालीन महाराजा रतनसिंहजी सम्वत् १८९५ में आपके मकान पर पधारे और मातम पुरसी की। आपके चार पुत्र थे, जिनके नाम क्रमशः मेहता अमोलकचन्दजी, मेहता हिन्दूमलजी, मेहता छोगमलजी और मेहता अनारसिंहजी थे।

मेहता अबीरचन्दजी—आप मेहता घमंडसीजी के दूसरे पुत्र थे। आप राज्य में होने वाली डकैतियों की देखभाल के काम पर नियुक्त हुए थे। यह काम उस समय बहुत ज्यादा खतरनाक था। आजकल की भाति व्यवस्था न होने पर भी आपने यह कार्य्य बहुत बुद्धिमानी एवम् होशियारी तथा वीरता से सम्पादित किया। इस काम को करते समय आपको कई बार डाकुओं का सामना करना पड़ा और उनसे युद्ध करना पड़े। इन युद्धों में आपको कई घाव भी लगे। कुछ समय के पश्चात् महाराजा ने आपको इस काम से हटाकर रियासत बीकानेर की ओर से देहली में वकील के स्थान पर भेजे। इस उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य्य को भी आपने बड़ी होशियारी और बुद्धिमानी से संचालित किया। आपके कार्य्यों से महाराजा एवम् रेसिडेण्ट दोनों ही सज्जन बडे प्रसन्न रहे। संवत् १८८४ मे देहली ही में डाकुओं के साथ होनेवाली लड़ाइयों में जो घाव लगे थे, उनके खुल जाने से आपका स्वर्गवास हो गया।

मेहता हिन्दूमलजी—आप मेहता मूलचन्द्रजी के द्वितीय पुत्र थे। इस परिवार में आप बड़े बुद्धिमान प्रतिभा सम्पन्न और मेधावी व्यक्ति हुए। आप सम्वत् १८८४ में रियासत की ओर से देहली वकालत पर भेजे गये। इसके पश्चात् आपके बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्यों से प्रसन्न हो कर महाराजा साहब ने आपको अपना दीवान बनाया। धीरे २ आपको सिक्केदारी की मुहर भी प्रदान करदी गई याने राज्य का सारा

इसके पश्चात् आपने अपना व्यवसाय अलग कर अपनी फर्म का नाम मेसर्स जैसराज जैचन्दलाल रखा। इसके पश्चात् नाटोर, राजशाही, दिनाजपुर, और कामागढी नामक स्थानों पर भी आपने अपनी शाखाएं खोली।

कलकत्ता फर्म पर भी संवत् १९६५ मे आपने जूट की पक्की गाठों के बेलिंग का काम प्रारंभ किया। इस पर आपका मार्का "जयचन्द एम ग्रुप" हुआ। संवत् १९६७ मे आपने जयपुरहाट एवं कमालगञ्ज (बोगड़ा) नामक स्थानों पर भी मेसर्स हीरालाल चादमल के नाम से जूट एव धान चावल का व्यवसाय करने के लिये दो शाखाएं खोली।

उपरोक्त प्राय सभी स्थानों पर आपके बहुत मकान एव गोदाम वगैरह बने हुए हैं। सोनातोला (बोगड़ा) के पास लाट काबुलपुर के पाच गाव की जमींदारी भी आपकी है। यह सब आप ही के द्वारा बनाई गई। आप बड़े व्यापार कुशल एव मेधावी व्यक्ति थे। आपने राजलदेसर से २ मील की दूरी पर रामाणा नामक स्थान पर एक धर्मशाला तथा कुण्ड बनवाया है। राजलदेसर एव सारे आसपास के ग्रामों के ओसवाल समाज में आपका बहुत बड़ा प्रभाव एव सम्मान था। बीकानेर दरबार भी आपका अच्छा सत्कार करते थे। आपको आपके दोनों चाचा सेठ लच्छीरामजी एवं सेठ मेघराजजी के साथ सवत् १९२३ का असाढ़ सुदी ● को दरबार की ओर से साहूकारी का पट्टा इनायत किया गया था। इसके अतिरिक्त सवत् १९५६ में बीकानेर दरबार ने आपको आपके कार्यों से प्रसन्न होकर छड़ी चपरास का सम्मान बख्शा। आपका स्वर्गवास संवत् १९६९ में हो गया। आपके दाह संस्कार के स्थान पर आपके स्मारक स्वरूप एक ग्राउण्ड घेर कर सुन्दर छतरी भी बनवाई गई। जिस पर एक मार्बल का शिलालेख स्थापित किया गया। वर्तमान मे इस फर्म के संचालक आपके सातों पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमश सेठ बीजराजजी सेठ सोचियालालजी, हीरालालजी, चादमलजी, नगराजजी, इन्द्रराजमलजी तथा चम्पालालजी हैं। आप सभी का परिवार श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय का अनुयायी है।

इस फर्म का अग्रेजी फर्मों के साथ विशेष सम्बन्ध है। इस फर्म में सवत् १९७३ से कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया तथा सवत् १९८३ से यह फर्म मेसर्स Kettle weel bullen and Co Ltd के पास गुड्स डि की सोल बेनियन हुई। इसके पश्चात् संवत् १९८६ से मेसर्स बावरिया कॉटन मिल्स क० लि, दी इनवार मिल्स लि, और दी न्यू रिंग मिल्स क. लि नामक तीनों कॉटन मिलों की सोल बेनियन हुई। इस फर्म के वर्तमान सचालकों का परिचय इस प्रकार है।

सेठ बीजराजजी—आपका जन्म सवत् १९२६ में हुआ। आप बड़े योग्य तथा इस फर्म के प्रधान संचालक हैं। आपका राजलदेसर के नागरिकों में अच्छा सम्मान है। आप वहा की म्युनिसिपाल्टी

कि "तावेदार जैसो बीकानेर की गद्दी को चाकर है वैसो ही उदयपुर की गद्दी को भी चाकर है। नावन्द आ बात कांई फुरमाइजे है"।

महाराव हिन्दूमलजी का स्वर्गवास संवत् १९०४ में ४२ वर्ष की अवस्था में हो गया। आपके स्वर्गवास पर महाराजा साहब ने एक खास रुक्का भेज कर आपकी मृत्यु पर अफसोस जाहिर किया। साथ ही आपके पुत्रों के प्रति सद्भावना प्रदर्शित की। आपके स्वर्गवास के एक साल के पश्चात् आपके पिता मेहता मूलचन्दजी का भी स्वर्गवास हो गया। महारावजी के स्वर्गवास के पश्चात् उनके क्रियाकर्म एवम् ब्राह्मण भोजन का सारा खर्च महाराजा साहब ने अपने पास से किया। आपके तीन पुत्र थे। जिनके नाम क्रमशः महाराव हरिसिंहजी, राव गुमानसिंहजी और राव जसवन्तसिंहजी थे। महारावजी को सं० १९०२ में नेठराणा नामक एक गाँव जागीर में मिला था। आपको समय २ पर यों तो बहुत से सम्मान मिले ही थे मगर ताजीम का सम्मान विशेष रूप से था।

सन् १९२८ में महाराजा गंगासिंहजी बहादुर ने महाराव हिन्दूमलजी के सरहद्दी मामले में विशेष दिलचस्पी लेने एवम् उसका निपटारा करने के उपलक्ष्य में उनके नाम को चिरस्थाई करने के हेतु हिन्दूमल कोट नामक एक कोट स्थापित किया।

मेहता छोगमलजी

आप महाराव हिन्दूमलजी के छोटे भाई थे। आपका जन्म संवत् १८६९ में हुआ था। आप बड़े बुद्धिमान और अध्यवसायी व्यक्ति थे। आप महाराजा सूरतसिंह जी के समय में कई बरसों तक हाजिर बस्ती रहे। महाराजा सूरतसिंहजी के पश्चात् महाराजा रतनसिंहजी बीकानेर की गद्दी पर बैठे। आपकी भी आप पर बड़ी कृपा रही। मेहता जी ने इसी समय कर्नल सदरलैंड, सर हेनरी लॉरेंस, सर जार्ज लारेंस आदि कई अंग्रेज रेसिडेण्टों की मातहती में रेसिडेंसी वकालात का काम किया। इन लोगों ने आपके कार्यों से प्रसन्न होकर कई सार्टिफिकेट प्रदान किये थे।

सवत् १९०९ में जब कि सरहद बंदी का काम हुआ उस समय आपने इस काम को बड़ी मिहनत और खूबी के साथ करवाया। साथ ही सरहद पर होने वाले बहुत से झगड़ों का निपटारा करवाया। इससे कई आबाद शुदा गाँव रियासत बीकानेर में मिला लिये गये। इस काम में आपके बड़े भ्राता महारावजी का भी पूरा २ हाथ था। आपके इस कार्य्य से प्रसन्न होकर महाराजा सरदारसिंहजी ने अपने गले में से कंठा निकाल कर आपको इनायत किया।

सवत् १९१४ में जब कि गदर हुआ था उस समय आप बीकानेर की ओर से गदर में सरकार

आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश बा० ऋधकरणजी, सागरमलजी, एवं मांगीलालजी है। ऋधकरणजी व्यापार में भाग लेते है तथा शेष पढ़ते है।

बा० चम्पालालजी -आपका जन्म सवत् १९६१ में हुआ। आप बड़े योग्य, व्यापार कुशल तथा मिलनसार सज्जन हैं। आप ही इस फर्म के कार-भार को बडी योग्यता से सचालित कर रहे है। आप ही के द्वारा इस फर्म का बहुत सी अंग्रेजी फर्मों के साथ कारबार होता है। आपका बहुत से बडे २ अंग्रेजों से परिचय है। आप ही के द्वारा इस फर्म के साथ अंग्रेजों का सम्बन्ध स्थापित हुआ है। आपकी बड़े २ गवर्नमेंट अफसरों, गवर्नरों तथा उच्चपदाधिकारियों से पर्सनल मैत्री है।

इस परिवार की ओर से श्वे० जैन श्वेताम्बर तेरा पंथी सभा तथा स्कूल और वि० ह० विद्यालय और औषधालय आदि संस्थाओं को भी काफी सहायता प्रदान की गई है। हाल ही में राजलदसर गांव में वेद परिवार का अगुना कुआ नामक एक जीर्ण शीर्ण कुए का आप लोगों ने जीर्णोद्धार कराया जिसमें आपने हजारों रुपये लगाये।

यह परिवार इस समय सारा समिलित रूप से रहता तथा सम्मिलित रूप से ही व्यवसाय करता है। एसे बडे परिवार वालों का बडे स्नेह से सम्मिलित रूप से रहना प्रशसनीय है। इस परिवार का राजलदसर में बहुत सुन्दर हवेलिया बनी हुई हैं। इसी प्रकार लाडनू नामक स्थान में भी आपकी एक बहुत बड़ी हवेली बनी हुई है।

सेठ मेघराजजी का परिवार

इस परिवार का पूर्व परिचय हम ऊपर लिख ही चुके है। सेठ मेघराजजी सेठ उम्मेदमलजी के तीसरे पुत्र थे। आप भी बड़े प्रतिभा सम्पन्न पुरुष थे। आपने हजारों लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र हुए। इनके नाम क्रमश. सेठ छोगमलजी, सेठ उमचन्दजी और सेठ तनसुखरायजी थे। आप तीनों ही भ्राता अलग २ हो गये। इस समय आप तीनों का परिवार अलग २ रूप से व्यापार कर रहा है। जिनका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

सेठ छोगमलजी—आपने अपने भाईयों से अलग होकर फर्म की अच्छी उन्नति की। आपने [illegible]गर (मुर्शिदाबाद) में अपनी फर्म स्थापित की जो आज करीब १०० वर्षों से चल रही है। इस समय वहां पर दुकानदारी और जमींदारी का काम हो रहा है। इसके पश्चात् ही आपने कलकत्ता १५ नारमल [illegible] लेन में अपनी फर्म खोली। इस पर इस समय जूट, कमीशन एजेन्सी और बैंकिंग का व्यापार होता है। आपका स्वर्गवास सवत् १९७३ में हो गया। आपके इस समय सेठ मन्नालालजी एवं [illegible]

लोगों के साथ आपने भी पूर्ण रूप से उसकी सहायता की। इससे प्रसन्न होकर सरकार ने टीबे के परगने महाराजा साहब को दिये। इसके पश्चात् संवत् १९२० में आप मुसाहब आला बनाये गये। इसी अवसर पर आपको मोहर का अधिकार भी बक्षा गया। संवत् १९२९ में गद्दी नशीनी के अवसर पर आपने भी अपने चाचा मेहता छोगमलजी के साथ पूरी २ मदद की। इससे प्रसन्न होकर महाराजा डूँगरसिंहजी ने आपको अमरसर और पलाणा नामक दो गांव जागीर में प्रदान किये। जिस समय आप आबू वकील रहे थे उस समय आपको हाथी, सिरोपाव और चवर का सम्मान प्रदान किया था। आपको पुश्तैनी सारे अधिकारों का उपयोग करने का अधिकार भी मिला था। महाराव की पदवी आप लोगों को पुश्तैनी रूप से मिली हुई है। आपका संवत् १९३९ में स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र थे, जिनके नाम क्रमशः मेहता किशनसिंहजी, महाराव सवाईसिंहजी और मेहता वल्लभसिंहजी थे।

राव गुमानसिंहजी—आप महाराव हरिसिंहजी के छोटे भाई थे। आपका जन्म संवत् १८८८ का था। आपको संवत् १९१० में मुसाहिबी का सम्माननीय ओहदा दिया गया। संवत् १९१४ में आप भी गदर के इन्तिजाम के लिये भेजे गये। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर दरबार ने भिन्न भिन्न समय में आपको कड़ा, मोतियों की कंठी एवम् सिरोपाव प्रदान किये। एक बार महाराजा साहब आपकी हवेली पर गोठ अरोगने पधारे। इस अवसर पर आपको हमेशा के लिये पैरों में सोना पहनने का अधिकार बक्षा। आपका संवत् १९२५ में स्वर्गवास हो गया। आपके जवानसिंहजी और दलपतसिंहजी नामक दो पुत्र थे।

राव जसवंतसिंहजी—आप भी महाराव हरिसिंहजी के छोटे भाई थे। संवत् १८९८ में आपका जन्म हुआ। आप बीकानेर स्टेट की कौंसिल के मेम्बर रहे। संवत् १९१४ में गदर के समय तथा संवत् १९२९ में महाराजा को गद्दी पर बिठलाते समय आपने बहुत परिश्रम और बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्य किये। संवत् १९३० में आप आबू वकील रहे। संवत् १९३३ में महाराजा डूँगरसिंहजी आपकी हवेली पर गोठ अरोगने पधारे। इस अवसर पर आपके द्वारा की गई सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको बरसनसर नामक एक गांव जागीर में प्रदान किया गया। साथ ही राव की उपाधि और ताजिम प्रदान कर आपका सम्मान बढ़ाया। आपको हाथी और खिल्लत का भी सम्मान प्राप्त हुआ। आप भी इस परिवार में नामांकित व्यक्ति हुए। आपका स्वर्गवास संवत् १९४० हो गया। आपके छत्रसिंहजी और अभयसिंहजी नामक २ पुत्र थे।

राव गुमानसिंहजी का परिवार

राव जवानसिंहजी—आप राव गुमानसिंहजी के प्रथम पुत्र थे। आपका जन्म सम्वत् १९११ का था। आप पहले हाकिम नियुक्त हुए। पश्चात् अफसर दिवानी रहे। सम्वत् १९३९ तक फिर आप अफसर फौजदारी रहे। इसके पश्चात् आप अफसर खरीद महकमा रहे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९४८ में हो गया। आपके कोई पुत्र न होनेसे आपने रामसिंहजी को दत्तक लिया। आपका भी स्वर्गवास हो गया। आपके मेहता धनपतसिंहजी और मेहता दौलतसिंहजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें से दौलतसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। मेहता धनपतसिंहजी इस समय नायब तहसीलदार हैं। आपके तेजसिंह, अमरसिंह और जोरावरसिंह नामक तीन पुत्र हैं।

राव जसवन्तसिंहजी का परिवार

राव छत्रसिंहजी—आप जसवन्तसिंहजी के प्रथम पुत्र थे। आपका जन्म सम्वत् १९०८ का था। आप पहले पहल अफसर फौजदारी नियुक्त हुए। सम्वत् १९३९ मे आप हनुमानगढ़ के हाकिम हुए। इसके एक साल के पश्चात् ही आप मेम्बर कौंसिल नियुक्त हुए। इसी प्रकार सुजानगढ़, रिणी आदि कई स्थानों पर आप नाजिम रहे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६९ में हो गया। आपके भाई मेहता अभयसिंहजी का जन्म सम्वत् १९१० में हुआ था। आप नौहर और हनुमानगढ़ नामक स्थान पर हाकिम रहे। जयपुर और जोधपुर के आप वकील रहे। इसके पश्चात् आप बीकानेर के हाकिम बनाए गए। आप चीफ कोर्ट के थर्ड जज भी रहे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८२ में हो गया। आप दोनों ही भाइयों के कोई पुत्र न था अतएव आपके यहाँ मेहता गोपालसिंहजी गोद आये। आपको राव का खिताब तथा ताजिम बख्शी हुई है। इस समय आप आबू में वकील हैं। आपके इस समय गोर्धनसिंह, नारायणसिंह, सम्पतसिंह, रूपसिंह, नरपतसिंह और सूरतसिंह नामक छ पुत्र हैं।

मेहता छोगमलजी का परिवार

मेहता केसरीसिंहजी—आप मेहता छोगमलजी के प्रथम पुत्र थे। आपका जन्म सवत् १९०१ में हुआ। आप पहले तो अपने पिताजी के साथ काम करते रहे। पश्चात् आप स्वयं आबू वकील हो गये। इस समय आपको सब खर्च के अतिरिक्त एक हजार रुपया मासिक वेतन मिलता था। वकालत के काम को आपने बड़ी सफलता और होशियारी से सम्पन्न किया। आपको इस विषय में कई बड़े २ अंग्रे

कलकत्ते में चल रही थीं। आपकी फर्म पर चलानी का काम बहुत बड़े परिमाण में होता था। कुछ समय पश्चात् सब भाई अलग हो गये। सेठ लच्छीरामजी के आसकरनजी नामक एक पुत्र हुए। सेठ आसकरनजी ने भी अपनी फर्म की बहुत उन्नति की। आपने गया जिले में बहुत बड़ी जमींदारी खरीद की तथा वहाँ अपनी एक फर्म स्थापित की। आपका धार्मिकता की ओर भी बहुत ध्यान रहा। आपने अपने पिताजी ही की भांति हजारों लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आपका बीकानेर दरबार अच्छा सम्मान करते थे। आपको राज्य की ओर से छड़ी चपरास का सम्मान प्रदान किया हुआ था। जिस प्रकार आपको सम्मान प्राप्त था, उसी प्रकार आपके पिताजी को भी था। दरबार की ओर से आपके पिता सेठ लच्छीरामजी को उनके भ्राता सहित साहुकारी का पट्टा इनायत हुआ था। साथ ही एक पट्टा और संवत् १९२१ आसाढ़ सुदी ७ को मिला था। जिसमें इनके सम्मान को बढ़ाने वाली बहुतसी बातें थीं। स्थानाभाव से वह यहा उधृत नहीं किया जा सका। सेठ आसकरनजी का स्वर्गवास हो गया। आपके ६ पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश सेठ मोतीलालजी, भीमराजजी धनराजजी, बुधमलजी, गिरधारीमलजी, और सिवचन्दलालजी हैं। इनमें से प्रथम दो का स्वर्गवास हो गया उनके पुत्र अपना स्वतन्त्र काम करते हैं।

सेठ धनराजजी का जन्म संवत् १९४३ का है। आप बड़े उत्साही, मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपका व्यापार कलकत्ता में मेसर्स लच्छीराम प्रेमराज के नाम से ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीट में जूट और बैंकिंग का होता है। साथ ही आपकी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति भी बनी हुई है। आपके मोहनलालजी और बच्छराजजी नामक दो पुत्र हैं।

चौथे पुत्र बुधमलजी बंगाल के चगड़ा बाना (कुचविहार) नामक स्थान पर रहते हैं और वहां व्यापार करते हैं। पांचवे गिरधारीमलजी राजलदेसर ही रहते हैं तथा बैंकिंग का व्यापार करते हैं। छठें पुत्र सिवचन्दलालजी अभी नाबालिग हैं। आपकी फर्म कलकत्ता में खड़गसिंह लच्छीराम के नाम से ४ दर्माहट्टा में है। जहां कमीशन का काम होता है। तथा गया वाली फर्म पर कपड़ा, ब्याज और जमींदारी का काम होता है। आपके यहाँ मुनीम लोग फर्म का संचालन कर रहे हैं।

सेठ आसकरन मुल्तानमल वेद, लाडनूं

कुछ वर्ष पूर्व इस परिवार की फर्म मेसर्स अमरचन्द आसकरन मुल्तानमल के नाम से थी। अब संवत् १९९१ में यह नाम बदल कर आसकरन मुल्तानमल कर दिया गया। इसका आफिस ५ आर्मेनियन स्ट्रीट कलकत्ता में है। तार का पता Mulchouth है। यहा जूट का व्यापार तथा आढ़त का

मानसिहजी के ६ पुत्र थे जिनका नाम हरनाथसिंहजी, धनराजजी, नवलसिंहजी, लच्छीरामजी रतनचन्दजी और चैनरूपजी था। इनमें से हरनाथसिहजी के दो पुत्र हुए। इनका नाम माणकचन्दजी और बींजराजजी था। सेठ बींजराजजी अपने चाचा सेठ नवलसिंहजी के नाम पर दत्तक गये।

सेठ माणकचन्दजी और सेठ बींजराजजी दोनों भाइयों ने मिलकर पहले पहल कलकत्ता में मेसर्स माणकचंद हुकुमचद के नाम से फर्म स्थापित की। इनके पूर्व आप लोग राजलदेसर की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स खडगसिंह लच्छीराम वेद के यहाँ साझीदारी में काम करते थे।

सेठ माणकचन्दजी का परिवार

सेठ माणकचन्दजी इस परिवार में प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश सेठ ताराचन्दजी (सोमजी) और सेठ कालूरामजी था। सेठ माणकचन्दजी का स्वर्गवास संवत १९२९ में हो गया।

सेठ ताराचन्दजी—आपका जन्म सवत १८९८ का था आप अपने पिताजी के समय में व्यापार करने लग गये थे। सवत् १९२४ में आपकी फर्म मेसर्स खडगसिंह लच्छीराम से अलग हुई। सवत् १९३१ में आपने हुकमचन्दजी के साथ से भी अपना साझा अलग कर लिया। इस समय से आपकी फर्म का नाम मेसर्स माणकचन्दजी ताराचन्द पड़ने लगा। इस पर प्रारंभ से ही आढ़त और कमीशन का काम होता चला आ रहा है। सेठ ताराचन्दजी इस परिवार में बड़े योग्य, व्यापार चतुर और कुशल व्यवसायी व्यक्ति हुए। आपने अपनी फर्म पर डायरेक्ट कपडे का इम्पोर्ट करना प्रारम्भ किया तथा लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आपके पास उस समय २० हजार गाठ कपडे की हर साल आया करती थी। आपका स्वर्गवास संवत् १९१७ में हो गया। आपके दो पुत्र सेठ जयचन्दलालजी और मेघराजजी थे।

सेठ कालूरामजी—आप बड़े धर्म प्रेमी सज्जन थे। आपको जैनधर्म के सूत्रों की अच्छी जानकारी थी। आपके इस समय मोहनलालजी नामक एक पुत्र है। आपके कोई सतान न होने से अपने भतीजे पूनमचन्दजी के पुत्र सोभागमलजी को दत्तक लिया। सवत् १९६२ तक आप दोनों भाइयों का कारोबार शामलात में होता रहा। इसके पश्चात् अलग रूप से व्यवसाय हो रहा है।

सेठ जयचन्दलालजी—आपका जन्म सवत् १९१६ में हुआ। तथा स्वर्गवास सवत् १९१२ में आपके पिताजी के सामने ही हो गया था। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश सेठ पूनमचन्दजी, रिखबचन्दजी दौलतरामजी, और सिंचियालालजी है। आप सब लोग मिलनसार सज्जन है। आप लोगों का व्यापार कलकत्ता में १६ कैनिंग स्ट्रीट में बैंकिंग और कपडे का होता है।

गए है को नियुक्त किये गये थे। इसके अतिरिक्त जोधपुर दरबार ने आपको हाथी सिरोपाव प्रदान किया था। आपकी कलकत्ता, हैदराबाद, पूना, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, इन्दौर, टोंक, उज्जैन वगैरा स्थानों में दुकानें थीं। आपका शाही ठाटबाट था। आपने अपने भाइयों के साथ सम्वत् १९०५ में गोड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर व धर्मशाला बनवाई। आप सम्वत् १९२६ में स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आपके छोटे भ्राता ... जी के पुत्र कानमलजी दत्तक लिये गये। आप भी अल्पायु में ही स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर मेहता सोभागमलजी बीकानेर से दत्तक लिये गये।

मेहता सोभागमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९२६ में हुआ। ८ साल की वय में आप बीकानेर से दत्तक आये। उस समय बीकानेर दरबार की ओर से आपको सोना और ताजिम बख्शा गया था। इसके अतिरिक्त जोधपुर दरबार की ओर से आपको तीन बार पालकी सिरोपाव प्राप्त हुए। इतना ही नहीं जोधपुर नरेश सरदारसिंहजी के विवाह के समय महाराजा सर प्रतापसिंहजी ने आपको विवाह में सम्मिलित होने के लिये पत्र व तार द्वारा निमन्त्रित किया था। अजमेर में आपकी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति है। आपके पास प्राचीन तस्वीरें, जेवर, हथियार, चीनी का सामान और शाही जमाने की लिखित वस्तुओं का संग्रह है, जिन्हें देखने के लिये कई पुरातत्व वेत्ता व गण्य मान्य अंग्रेज आपकी हवेली पर आते रहते हैं। आपकी तस्वीरें विलायत के एक्सीबीजन में भी गई थीं। गोडी पार्श्वनाथजी के मंदिर की व्यवस्था आपके जिम्मे है। आपके जीतमलजी, हमीरमलजी और समरथमलजी नामक तीन पुत्र हैं। जीतमलजी ने बी० ए० तक अध्ययन किया है।

इस परिवार में मेहता चन्द्रभानजी के चौथे पुत्र मोतीरामजी की संतानों में इस समय मेहता समरथमलजी तथा जेठमलजी अजमेर में, बख्तावरमलजी ब्यावर में तथा भगोतीलालजी और ... ब्यावर में निवास करते हैं। मेहता बख्तावरमलजी पहले झालावाड स्टेट में कस्टम सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। आपको कई अंग्रेजों से अच्छे सार्टिफिकेट मिले हैं वहाँ से रिटायर होकर वर्तमान में आप रतनचन्द ... ब्यावर के मेनेजर हैं। आपके पुत्र अभयमलजी आगरे में व्यापार करते हैं।

वेद मेहता बुधकरणजी का खानदान, अजमेर

है। कलकत्ता फर्म पर एक्सपोर्ट इम्पोर्ट व्यापार किया जाता है। यहाँ तार का "Zephyr" है। आफ़िस का पता ३० काटन स्ट्रीट है।

यह परिवार रतनगढ़ ही में नहीं प्रत्युत सारी बीकानेर स्टेट में प्रतिष्ठित माना जाता है। इस परिवार के लोग श्री जैन श्वेताम्बर तेरा पंथी संप्रदाय के मानने वाले हैं।

वेद परिवार, चूरू

कहा जाता है कि इस परिवार के पूर्व पुरुष जब कि बीकाजी ने बीकानेर बसाया था, उनके साथ थे। यहाँ से वे फतेहपुर के नवाब के यहाँ चले गये। जब वहाँ नवाब से अनबन हो गई तब फतेहपुर को छोड़ कर गोपालपुरा नामक स्थान पर आकर बस गये। उस समय गोपालपुरा पर इनका और वहाँ के ठाकुर का आधा २ कब्जा था। महसूल की रकम आप दोनों ही व्यक्तियों की ओर से इकट्ठी की जाती थी। ऐसा भी कहा जाता है कि आप दोनों ही की ओर से एक २ आदमी बीकानेर दरबार की चाकरी में रहता था। इन्हीं के वंशमें मेहता तेजसिंहजी हुए। ये बड़े पराक्रमी पुरुष थे। इन्होंने अपने जीवन में बहुत सी लडाइयाँ लड़ीं और उनमें सफलता प्राप्त की। इनकी बहादुरी के लिये थली प्रांत में निम्न कहावत प्रचलित है।

"तपियो मुहतो तेजसिंह और मारिया सत्तरखान"

मेहता तेजसिंहजी के पश्चात् कीरतमलजी हुए। आपने राज्य में काम करना बन्द कर दिया और महाजनी का काम प्रारम्भ किया। इनके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश लखमीचन्दजी, जोधराजजी और उदयचन्दजी था। आप तीनों ही भाइयों ने संवत् १९१४ में कलकत्ते में उदयचन्द पन्नालाल के नाम से अपनी फर्म स्थापित की। इसमें आप लोगों को अच्छी सफलता मिली। सेठ पन्नालालजी जोधराजजी के पुत्र थे। आप लोग गोपालपुरा से रामगढ़ आ गये। उदयचन्दजी के पुत्र हजारीमलजी हुए। आप रामगढ़ रहे और पन्नालालजी चुरू चले गये। जिस समय आप चुरू गये उस समय दरबार ने आपको जगात के महसूल की माफी का परवाना इनायत किया।

उदयचन्दजी के पुत्र हजारीमलजी इस समय विद्यमान हैं। आपके दुलिचन्दजी नामक एक पुत्र है। पन्नालालजी के सागरमलजी और जवरीमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई अलग २ हो गये एवम् स्वतन्त्ररूप से व्यापार करते हैं।

सेठ सागरमलजी के धनराजजी और हनुतमलजी नामक दो पुत्र हैं। आजकल आप दोनों भाई

मेहता मनोहरलालजी वेद का खानदान, उदयपुर

इस प्राचीन खानदान के प्रारम्भिक परिचय को हम इसके पूर्व मे प्रकाशित कर चुके है। [illegible] इतिहास मेहता थिरपालजी के पौत्र तथा चन्द्रभानजी के तृतीय पुत्र सूरतरामजी से प्रारम्भ होता है। [illegible] हम प्रथम ही लिख आये हैं कि आप अपने भाइयों के साथ अजमेर आये और यहाँ से आप उदयपुर [illegible] गये। उसी समय से आपका परिवार उदयपुर मे निवास कर रहा है।

मेहता सूरतरामजी के रायभानजी तथा बदनमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोगों का व्यव[साय] उस समय खूब चमका हुआ था। मेहता बदनमलजी संवत् १८९८ के लगभग उदयपुर आये। [illegible] आकर अपने व्यवसाय को और भी चमकाया तथा बम्बई, रंगून, हाङ्गकाग, कलकत्ता आदि सुदूर के [स्था]नों में भी अपनी फर्मे स्थापित कीं। उस समय आप राजपूताने के प्रसिद्ध धनिकों में गिने जाते थे। [आप]की धार्मिक भावना भी बढ़ी चढ़ी थी। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती चाँदबाई ने उदयपुर मे एक धर्मशाला [त]था एक मन्दिर भी बनवाया जो आज भी आपके नाम से विख्यात है। आपने मेवाड के कई जैन मन्दिरों [क]े जीर्णोद्धार भी करवाये। मेहता बदनमलजी के नि:संतान स्वर्गवासी हो जाने पर आपके यहाँ आप[के] [illegible] मेहता कनकमलजी दत्तक आये।

मेहता कनकमलजी का राज दरबार में खूब सम्मान था। आपको उदयपुर के महाराणा सरूप[सिंह]जी ने संवत् १९१४ में सरूपसागर नामक तालाब के पास की २९ बीघा जमीन की एक बाड़ी बख्शी थी। [ज]िसका परवाना आज भी आपके वंशजों के पास मौजूद है। इसके अतिरिक्त आपको राज्य की ओर से बैठक, [illegible] बैठक, दरबार में कुर्सी की बैठक, सवारी में घोडे को आगे रखने की इज्जत, बलेणा घोडा आदि २ कई [स]म्मान प्राप्त थे। आपने सबसे पहले उदयपुर महाराणाजी को बग्घी नजर की थी। आपके नवानमलजी [त]था उदयमलजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों का आपकी विद्यमानता में ही स्वर्गवास हो गया। अत [illegible] अपने यहाँ बीकानेर से पन्नालालजी को दत्तक लाये। मेहता पन्नालालजी के मनोहरलालजी तथा [illegible] नामक दो पुत्र हुए।

मेहता मनोहरलालजी का जन्म संवत् १९४८ की भादवा वदी अमावस्या को हुआ। आपने [illegible] की परीक्षा पास कर एक वर्ष तक लॉ में अध्ययन किया। आप नरसिंहगढ़ मे सिटी मजिस्ट्रेट, [illegible] तथा कस्टम्स और एक्साइज ऑफीसर रहे। इसके साथ ही आप वहाँ की म्युनिसिपेलिटी [illegible] प्रेसिडेण्ट तथा वहाँ की सुप्रसिद्ध फर्म मगनीराम गणेशीलाल के रिसीव्हर भी रहे। आपके [कार्यों] से प्रसन्न होकर रीजेंसी कौंसिल के प्रेसीडेण्ट कर्नल लुआर्ड, नरसिंहगढ तथा भोपाल के

आपके कुछ वर्षों के पश्चात् जोधपुर राजवंश के कुमार बीकाजी ने अपने शौर्य्य एवम् पराक्रम से बीकानेर राज्य की नींव डाली तथा बीकानेर शहर बसाया। कहना न होगा कि इस समय राजलदेसर भी बीकानेर स्टेट में आ गया। जब यह बीकानेर में आगया तब भी इस वंश वाले सज्जन स्टेट की ओर से कामदार वगैरह २ स्थानों पर काम करते रहे। इन्हीं में मेहता मनोहरदासजी बड़े प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप ही के नाम से आपके वंशज आज भी मनोहरदासोत कहलाते हैं। आपके पश्चात् क्रमशः दीपचन्दजी, अचलदासजी एवम् सांवतसिंहजी हुए।

सेठ सावतसिंहजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः उम्मेदमलजी एवम् दानसिंहजी था। उम्मेदमलजी वहीं राजलदेसर तथा आसपास के ग्रामों में अपना लेनदेन का व्यवसाय करते रहे। तथा दानसिंहजी वहाँ से चल कर मुर्शिदाबाद नामक स्थान पर आकर बस गये। तब से आपके वंशज यहीं निवास कर रहे हैं।

सेठ उम्मेदमलजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश सेठ लच्छीरामजी, सेठ जैसराजजी एवम् सेठ मेघराजजी था। सेठ लच्छीरामजी वहाँ राजलदेसर निवासी सेठ खड्गसिंहजी के यहाँ दत्तक चले गये तथा मेघराजजी के परिवार वाले अलग हो गये। अतएव दोनों भाइयों का इतिहास नीचे अलग दिया जा रहा है। वर्तमान इतिहास सेठ जैसराजजी के परिवार का है।

सेठ जेसराजजी का परिवार

सेठ जेसराजजी—आपका जन्म संवत् १८८४ में हुआ। आपने अपने चाचा दानसिंहजी के साथ रह कर मुर्शिदाबाद में प्रारम्भिक विद्याध्ययन किया। आपको विद्या से बड़ा प्रेम था। आपने उर्दू, संस्कृत और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। पढ़ाई खतम करते ही आपने अपने नाम से कलकत्ता में कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। इन्हीं दिनों आपके भ्राता सेठ लच्छीरामजी भी कलकत्ता आये। संवत् १९०५ में आप तीनों भाइयों के साझे में मेसर्स खड्गसिंह लच्छीराम के नाम से चलानी का काम करने के लिये फर्म स्थापित की। आप तीनों ही भाई बड़े प्रतिभा सम्पन्न एवम् व्यापार चतुर पुरुष थे। आप लोगों ने अपनी व्यापार चातुरी से फर्म की बहुत उन्नति की। यही नहीं बल्कि आपने गया, नाटोर, अड़गाबाद चौंपाई, नवाबगंज आदि स्थानों पर अपनी शाखाएँ स्थापित कीं। सेठ जैसराजजी का स्वर्गवास संवत् १९१७ में गया। आपके जयचन्दलालजी नामक पुत्र हुए।

सेठ जयचन्दलालजी—आपका जन्म संवत् १९१२ में हुआ। छोटी वय से ही आप दुकान का काम करने लग गये थे। संवत् १९२९ तक इस फर्म पर खड्गसिंह लच्छीराम के नाम से व्यापार होता रहा।
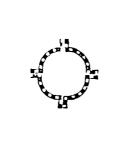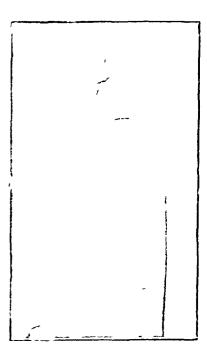
के प्रारम्भ से ही व्हाइस चेअरमैन हैं। बीकानेर हाई कोर्ट के आप जूरी भी हैं। आपको सन् १९२१ का सेन्सस के समय मदद करने के उपलक्ष मे बंगाल सरकार ने एक सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया था। आप कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के कई साल तक उप सभापति तथा जैन श्वेताम्बर त स्कूल के सभापति का आसन ग्रहण कर चुके हैं। आपके छ पुत्र हुए जिन के नाम क्रमश मालचन्दजी, लखमीचंदजी अमोलकचन्दजी, श्रीचन्दजी, फतेहचन्दजी और पूनमचन्दजी हैं। इनमें से लखमीचन्दजी जिन्होंने I A. की परीक्षा की तयारी की थी परन्तु परीक्षा के पूर्व ही स्वर्गवासी हुए। आपके किशनलालजी नामक एक पुत्र हैं। बाबू अमोलकचन्दजी ने सपत्नीक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी सम्प्रदाय में संवत् १९८८ के ज्येठ शुक्ला १२ को दीक्षा ग्रहण करली। आपके शेष चार पुत्रों में से तीन व्यापार मे सहयोग लेते हैं और एक पढ़ते है।

बा० सिंचियालालजी—आपका जन्म संवत् १९४२ का है। आप धार्मिक विचारों के पुरुष हैं। आपके चार पुत्र हुए थे जो छोटी वय में ही स्वर्गवासी हो गये। तथा सवत् १९७१ में जब कि आपकी अवस्था केवल ३२ वर्ष की थी, आपकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया। इसके बाद आपने विवाह नहीं किया। आपने आपके छोटे भाई सेठ चांदमलजी के पुत्र बा० बच्छराजजी को दत्तक लिया है। आप I A. तक विद्याध्ययन कर फर्म के काम में सहयोग लेते हैं।

बा० हीरालालजी—आपका जन्म संवत् १९४६ मे हुआ। आप दयालु तथा मिलनसार प्रकृति के पुरुष हैं। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम पन्नालालजी है। आप भी व्यापार में भाग लेते हैं।

बा० चान्दमलजी—आपका जन्म सवत् १९४७ का है। आप कुशल व्यापारी हैं। जैन धर्म की आपको विशेष जानकारी है। आप बड़े सरल एव योग्य सज्जन हैं। आपके पांच पुत्र हैं जिनके नाम बच्छराजजी जो सींचियालालजी के यहा पर दत्तक गये हैं, खेमकरणजी, लंकापतसिंहजी, शेषकरणजी और अनोपचन्दजी हैं। बा० खेमकरणजी व्यापार में सहयोग लेते हैं। शेष पढते हैं।

बा० नगराजजी—आपका जन्म सवत् १९४८ का है। आप भी इस फर्म के संचालन में भाग लेते हैं। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम बा० कन्हैयालालजी, नेमचन्दजी तथा नन्दलालजी हैं। बा० कन्हैयालालजी और नेमचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं। बा० कन्हैयालालजी के २ पुत्र हैं जिनमें बड़े का नाम भँवरलालजी हैं।

बा० हंसराजजी—आपका जन्म सवत् १९५१ में हुआ। तथा आपका स्वर्गवास सवत् १९८२ की महा सुदी में हो गया। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश बा० माणकचन्दजी जो मेट्रिक में पढ़ते हैं, रतनलालजी और गोपीलालजी हैं। आप लोग भी पढ़ते हैं।

बा० इन्द्राजमलजी—आपका जन्म सवत् १९५२ का है। आप भी व्यापार में भाग लेते हैं।

सेठ माणिकचंद गेंदमल वेद, मद्रास

इस परिवार का मूल निवास स्थान फलौदी (मारवाड) का है। आप श्री श्वेताम्बर जैन सम्प्र[illegible] मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में सेठ मोतीलालजी हुए। आपके मेघ[illegible] नामक एक पुत्र हुए। आप ही ने सबसे पहले करीब साठ वर्ष पूर्व मद्रास आकर [illegible] में बैंकिंग की फर्म स्थापित की। आपके माणकचंदजी, शिवराजजी तथा जोगराजजी नामक [illegible] पुत्र हुए।

सेठ माणकचदजी बडे ही व्यापार-कुशल और समझदार सज्जन थे। आपके द्वारा फर्म के व्यापार [illegible] तरक्की हुई। आपका संवत् १९८० में स्वर्गवास होगया। आपने अपने भाई के पुत्रों के साथ भी [illegible] का व्यवहार किया। आपके भनराजजी नामक एक पुत्र हुए। आपका सं० १९७० में जन्म हुआ। आप वर्तमान में बैंकिंग का स्वतन्त्र व्यापार करते है।

सेठ शिवराजजी भी बडे व्यापार में होशियार थे। मगर आपका स्वर्गवास संवत् १९६२ मे [illegible] उम्र म ही हो गया। आपके गेंदमलजी नामक एक पुत्र हुए। आपका सं० १९५७ मे जन्म हुआ [illegible] ही साहसी और व्यापारी व्यक्ति हैं। व्यापार में हजारों लाखों की जोखिम में पड़जाना आपका [illegible] का काम है। इस समय आप सोने और गिन्नी का अलग व्यापार करते है। मद्रास में सोने के [illegible] म आपका प्रथम नम्बर है।

सेठ जोगराजजी छोटी उम्र में ही स्वर्गवासी हुए। आपके गुलाबचन्दजी नामक पुत्र हुए। [illegible] जन्म संवत् १९६५ में हुआ। आप भी स्वतन्त्ररूप से बैंकिंग का व्यापार करते है। आपके [illegible] नामक एक पुत्र है।

इस खानदान की दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्यों की तरफ रुचि रही है। सम्वत् १९८५ में [illegible] के सज्जनों ने ओशियाँ के मन्दिर पर सोने का कलश चढ़ाया तथा मद्रास की दादावाड़ी की [illegible] आसपास एक बराण्डा और हॉल तय्यार करवाया। इस कार्य में आपके करीब ५०००) लगे होंगे। [illegible] आपने अपनी कुलदेवी के मन्दिर का जीर्णोद्धार भी करवाया। वहाँ आप लोगों की ओर से [illegible] भी बनवाई गई है।

सेठ रावतमल सूरजमल वेद, मेहता मद्रास

इस परिवार का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड़) का है। आप लोग श्री जैन श्वेताम्बर [illegible] आम्नाय को मानने वाले सज्जन है। इस परिवार में सेठ तुलसीरामजी हुए। आपके रावत-

जी नामक दो पुत्र हैं। आप लोग भी फर्म के कार्य का उत्तमता से सचालन कर रहे हैं। मन्नालालजी के भँवरलालजी एवं पूनमचन्दजी और कालूरामजी के चन्दनमलजी और जँवरीमलजी नामक पुत्र हैं। चन्दनमलजी उत्साही युवक हैं। आप भी फर्म का सचालन करते हैं।

सेठ उमचन्दजी—आपने भी अपनी फर्म की अच्छी उन्नति की। तथा मेघराज उमचन्द के नाम से व्यापार करना प्रारम्भ किया। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके सात पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश मालचन्दजी, शोभाचन्दजी, हीरालालजी, संतोषचन्दजी, चम्पालालजी, सोहनलालजी और श्रीचन्दजी हैं। आप सब लोग मिलनसार व्यक्ति हैं। आप लोगों का व्यापार शामलात ही में हो रहा है। आपकी फर्म कलकत्ता में २६।१ आर्मिनियन स्ट्रीट में है यहां जूट का काम होता है। इसका तार का पता Sohanmor है। इसके अतिरिक्त भिन्न २ नामों से राजशाही, जमालगज, और चरकाई (बोगडा) नामक स्थानों पर जूट तथा, जमींदारी और गल्ले का व्यापार होता है।

सेठ तनसुखरायजी—आपका जन्म सवत् १९२२ मे हुआ। आप बचपन से ही बडे चचल और प्रतिभा वाले थे। आपने पहले तो अपने भाई छोगमलजी के साथ व्यापार किया। मगर फिर किसी कारण से आप अलग हो गये। अलग होते ही आपने अपनी बुद्धिमानी एव होशियारी का परिचय दिया और फर्म की बहुत उन्नति की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके भूरामलजी नामक एक पुत्र थे। आपने भी योग्यतापूर्वक फर्म का सचालन किया। मगर कम वय में ही आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमश बाबू संतोषचन्दजी, धर्मचन्दजी और इन्द्रचन्दजी है। बाबू संतोषचन्दजी बड़े मिलनसार, शिक्षित और सज्जन प्रकृति के पुरुष हैं। आपके भाई अभी विद्याध्ययन कर रहे हैं। आपकी फर्म इस समय कलकत्ता में मेघराज तनसुखदास के नाम से १९ सैनागो स्ट्रीट में है। जहाँ बैंकिंग जूट एवं कमीशन का काम होता है। इसके अतिरिक्त चपाई (नवाबगज) मे भी आपकी एक फर्म है। वहाँ जूट का व्यापार होता है। यहाँ आपकी बहुत सी स्थायी सम्पति भी बनी हुई है।

इस परिवार के लोग श्री तेरापथी सम्प्रदाय के मानने वाले है। आप लोगों की ओर से राजलदेसर स्टेशन पर एक धर्मशाला बनी हुई है। जिसमें यात्रियों के ठहरने की अच्छी व्यवस्था है।

सेठ लच्छीरामजी का परिवार :—

हम यह ऊपर लिख ही चुके हैं कि सेठ लच्छीरामजी सेठ उम्मेदमलजी के पुत्र थे। ये राजलदेसर के प्रसिद्ध सेठ खड्गसेनजी के यहाँ दत्तक आये। ये बडे प्रतिभा सम्पन्न एव व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने उस समय में अपनी फर्म कलकत्ता में स्थापित की थी जब कि मारवाड़ियों की इनी गिनी फर्में

वेद मेहता रामराजजी, मेड़ता

वेद मेहता रामराजजी के पूर्वज मेहता दीपचन्दजी महाराजा बखतसिंहजी की हाजिरी में नागौर में रहे थे। जब महाराजा बखतसिंहजी और उनके भतीजे रामसिंहजी के बीच सोजत के पास लूंडावास नामक स्थान में झगड़ा हुआ, उस लड़ाई में महाराजा बखतसिंहजी की ओर से लड़ते हुए मेहता दीपचन्दजी काम आये थे। अतएव उनके पुत्र भागचन्दजी को सम्वत् १८०८ में मेडते परगने का चोलियास नामक ५००) रुपये का गाँव जागीरी में मिला।

सम्वत् १८११ में महाराजा विजयसिंहजी का मेडते के पास युद्ध हुआ, उसमें मेहता भागचंदजी दरबार की ओर से लड़ते हुए काम आये। जब सम्वत् १८४७ में मराठों की फौज ने मारवाड पर हमला किया, उस समय भागचन्दजी के पौत्र सवाईसिंहजी जोधपुर दरबार की ओर से युद्ध में हाजिर थे। इसी तरह इस परिवार के व्यक्ति महाराजा मानसिंहजी की भी सेवाएँ करते रहे।

मेहता सवाईसिंहजी के बाद क्रमश हिन्दूसिंहजी, शिवराजजी तथा सुखराजजी हुए। सुखराजजी के धनराजजी, अनराजजी और दीपराजजी नामक ३ पुत्र थे। इनमें दीपराजजी के पुत्र रामराजजी मौजूद हैं। आप धनराजजी के नाम पर दत्तक आये हैं। आपके पुत्र मोहनराजजी तथा सोहनराजजी हैं।

वेद मेहता हेमराजजी चौधरी, मेड़ता

इस परिवार के पूर्वज मेहता साईंदासजी के पुत्र किशनदासजी और मोहकमदासजी को बादशाह जहांगीर के जमाने में कई परवाने मिले। उनसे मालूम होता है कि इनको शाही जमाने से चौधरी का पद था। ओसवाल समाज में धड़े बन्दी होने से बहुत से लोग जब मोहकमसिंहजी के पुत्र विजयचन्दजी को चौधरी नहीं मानने लगे, तब सम्वत् १८२६ की पौष सुदी ५ को जोधपुर दरबार ने एक परवाना देकर इन्हें चौधरायत का पुन अधिकार दिया। चौधरी विजयचन्दजी के बाद क्रमश मूलचन्दजी, रूपचन्दजी, नगराजजी और धनराजजी हुए। ये सब सज्जन व्यापार के साथ चौधरायत का कार्य भी करते रहे। धनराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९४७ में हुआ। इस समय इनके पुत्र हेमराजजी चौधरी विद्यमान हैं। आप भी मेडता के ओसवाल न्यात के चौधरी हैं।

सेठ गुलाबचन्द मुलतानचन्द वेद मेहता, चांदोरी

इस परिवार का मूल निवासस्थान पी (पुष्कर के समीप) है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के [illegible] आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में सेठ भींवराजजी हुए। आप ८० साल

स्व० सेठ तनसुखदासजी वैद (वैद-परिवार) राजलदेसर.

बाबू धनराजजी वैद (वैद-परिवार) राजलदेसर

स्व० सेठ भैरामलजी वैद (वैद-परिवार) राजलदेसर.

कुवर मोहनलालजी S/o धनराजजी वैद, राजलदेसर

काम किया जाता है। इस फर्म के मालिक वर्तमान में सेठ आसकरनजी के पुत्र मुल्तानमलजी, तनसुखलाल जी, जोधराजजी और चौथमलजी हैं। सेठ मुल्तानमलजी का स्वर्गवास हो गया। आप लोगों की ओर से लाडनू में एक पाठशाला चल रही है। आप लोग जैन श्वेताम्बर तेरापथी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं।

मेहता सौभागमलजी वेद का खानदान, अजमेर

इस प्राचीन परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मेडता (मारवाड़) का है। वहाँ से आप लोग किशनगढ़, बीकानेर तथा कुचामण होते हुए अजमेर में आकर बसे और तभी से यह खानदान अजमेर में निवास करता है।

इस परिवार में मेहता खेतसीजी मेडते में बड़े नामांकित साहूकार हो गये हैं। आपके पुत्र चूड़मलजी के थिरपालजी तथा बखतावरमलजी नामक दो पुत्र हुए। मेहता थिरपालजी के पुत्र चन्द्रभानजी के हिम्मतराजी, दौलतरामजी, सूरतरामजी तथा मोतीरामजी नामक चार पुत्र हुए। आप चारों भाई सब से प्रथम करीब १२५ वर्ष पूर्व अजमेर आए। फिर मेहता सूरतरामजी का परिवार तो उदयपुर जा बसा, जिनका परिचय मेहता मनोहरमलजी वेद के शीर्षक में दिया गया है। शेष तीनों भाई अजमेर में ही बस गये। आप लोग बड़े ही व्यापार कुशल तथा धार्मिक सज्जन थे। आपने हजारों लाखों रुपये कमा कर अनेक हवेलियाँ बनवाईं, सिद्धाचल और मेड़ते में सदाव्रत खोले तथा कई धार्मिक कार्य्य किये। मेहता दौलतरामजी के गम्भीरमलजी नामक एक पुत्र हुए।

मेहता गम्भीरमलजी—आप यहाँ के एक प्रसिद्ध बैंकर हो गये हैं। आपके लिए 'गम्भीरमल मेहता का तोल, और हुंडी सब की लेवे|मोल" नामक कहावत प्रचलित थी। आपने ८०००) की लागत से पुष्कर का घाट, बनाया। इसके अलावा पुष्कर के नाना के मन्दिर का बाहरी हिस्सा, गौघाट पर महादेव का मन्दिर, खोबरिया भेरू की घाटी और अजमेर में डिग्गी का तालाब आदि स्थान बनवाये इसी प्रकार और भी धार्मिक कार्य्यों में सहायता दी। आपके इन कार्य्यों से प्रसन्न होकर लार्ड विलियम बैंटिंग ने आपको एक प्रशंसा पत्र लिखा था। आपके प्रतापमलजी एवं इन्द्रमलजी नामक दो पुत्र हुए।

मेहता प्रतापमलजी—आपभी बड़े नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आप बड़े रईस, व्यापार कुशल तथा बुद्धिमान सज्जन थे। आपका व्यापार बहुत बढ़ा-चढ़ा था। कलकत्ता, हैदराबाद, पूना, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, इन्दौर, टोंक, उज्जैन आदि स्थानों पर आपकी फ़र्में थीं। राजपूताने की रियासतों में भी आपका बहुत सम्मान था। जोधपुर-राज्य की ओर से आप ऑनरेरी दीवान के पदपर संवत् १९२३ की कार्तिक

[illegible] का परिवार चला तथा शेष ठाकुरमलजी और जेठमलजी निसंतान गुजरे। सेठ बहादुरमलजी [illegible] १९८७ में स्वर्गवास हुआ। आपके नथमलजी, बुधमलजी, गुलाबचन्दजी, चांदमलजी, केशरी-[illegible], मोतीलालजी और माणकचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए, इनमें बुधमलजी, गुलाबचन्दजी, केशरीचन्दजी [illegible]मोतीलालजी विद्यमान है तथा शेष ३ भ्राता स्वर्गवासी होगये। आप सब भाइयों का व्यापार [illegible] १९८७ से अलग अलग होगया है।

वेद मेहता बुधमलजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया है, आपने कपडे व सराफी के व्यापार मे [illegible] उन्नति की। आपके छोटे भाई गुलाबचन्दजी ने सन् १९१९ में बी० ए०, बी० कॉम की परीक्षा [illegible]। कुछ समय तक हाई स्कूल में सर्विस करने के बाद अब आप कपडे का व्यापार करते है। आपको [illegible] कवि सम्मेलन में तुकबदी के लिये पुरस्कार मिला था। सन् १९१९ से २४ तक आप मारवाडी [illegible] सभापति रहे। सी० पी० बरार की ओसवाल सभा के स्थापकों मे भी आपका नाम है। [illegible] पुस्तिकाएं लिखने की ओर भी आपकी रुचि है।

महता समीरमलजी विद्यमान है। आपके पुत्र इन्द्रचन्दजी, ताराचन्दजी, चैनकरणजी, प्रेमकरणजी, [illegible]दजी और सूरजमलजी हैं। इनके यहाँ इन्द्रचन्दजी ताराचन्द तथा प्रेमकरण चैनकरण के [illegible] कपड़ा, होयजरी और किरानें का काम होता है। इन्द्रचन्दजी तथा ताराचन्दजी नवीन विचारों [illegible] है।

लाला कल्याणदास कपूरचन्द वेद मेहता, आगरा

यह परिवार लगभग १५० साल पूर्व आगरा में आया। इस कुटुम्ब मे लाला बसन्तरायजी [illegible] पुत्र कल्याणदासजी ने लगभग १०० साल पहिले आगरे में उपरोक्त नाम से फर्म स्थापित की, [illegible] स अब तक यह परिवार सम्मिलित रूप से व्यवसाय कर रहा है। लाला कल्याणदासजी के [illegible], कुन्दनमलजी और गदोमलजी नामक पुत्र हुए।

लाला कपूरचन्दजी इस परिवार में नामी व्यक्ति हुए, आपने बहुत सी रियासतों से जवाहरात [illegible] व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया। आपके पुत्र मोतीलालजी ने व्यवसाय की अच्छी उन्नति की। [illegible] १९७९ म आप स्वर्गवासी हुए। आपने अपने भतीजे पदमचन्दजी को दत्तक लिया, आप [illegible] है।

लाला कुन्दनमलजी धर्मात्मा व्यक्ति थे, सम्वत् १९८० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र [illegible] का ४६ साल की आयु में सम्वत १९६७ में स्वर्गवास हुआ। ये दृढ़ चरित्र के व्यक्ति

स्वर्गीय बुधकरणजी मेहता, अजमेर.

श्री गुलाबचन्दजी ढड्ढा एम ए, जयपुर (परिचय ३३ [illegible]

श्री देवकरणजी मेहता, अजमेर

श्री रूपकरणजी मेहता बी ए, अजमेर

अमरसागर—बाफणा हिम्मतरामजी के मंदिर की प्रशस्ति जैसलमेर (श्री बा॰ पूरणचन्दजी, नाहर के सौजन्य से)

में मेड़ते में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्रीचन्दजी तथा उदयचन्दजी किशनगढ मे निसतान स्वर्गवासी हुए अत श्रीचन्दजी के नाम पर मेहता सिद्धकरणजी दत्तक आये। किशनगढ़ में आपका सदाव्रत जारी था। मेहता लालचन्दजी के पुत्र लूनकरणजी ने व्यापार की बडी तरक्की की। आपने रतलाम, जावरा, आसा उदयपुर, अजमेर, चदेरी, भिंड, अटेर टोंक, कोटा आदि स्थानों में दुकानें खोली। आप अपने पुत्र रिधकरणजी तथा सिद्धकरणजी सहित सवत् १८८५ के करीब किशनगढ़ से अजमेर आये। और 'लूनकरण रिद्धकरण" के नाम से अपना कारवार चलाया। आपने दूर २ स्थानों पर करीब २५-३० दुकानें खोलीं जिन पर सराफी तथा जमींदारी का धन्धा होता था। आपका देहान्त अजमेर में सम्वत् १८८९ में हुआ। जहाँ लूँया के खेतरों में आपकी बडी बारादरी बनी है।

मेहता रिधकरणजी—आप धर्मनिष्ट व्यक्ति थे। आपने श्री शत्रुंजय, गिरनार का एक सघ निकाला था। आपका किशनगढ, जावरा आदि रियासतों से लेन देन का सम्बन्ध था। इन रियासतों से १८९३ और १९०३ में आपको खास रुक्के भी दिये थे। किशनगढ के मोखम विलास नामक महल म आपकी तिबारी बनी हुई है। स० १८९५ मे जोधपुर नरेश की ओर से आपको बैठने का कुरब प्रदान किया गया था। आपके सहस्रकरणजी, तेजकरणजी, सूरजकरणजी, जेतकरणजी तथा जोधकरणजी नामक पाच पुत्र हुए। मेहता सिद्धकरणजी ने १८९० से उम्मेदचन्द श्रीचन्द के नाम से अलग व्यापार करना शुरू कर दिया। आपकी मृत्यु के पश्चात् आपके नाम पर आपके भतीजे सहस्रकरणजी गोद आये। मेहता सहस्रकरणजी बड़े भाग्यशाली पुरुष थे। आपको स० १८९५ में जोधपुर राज्य से हाथी पालकी और कडी का कुरब प्राप्त हुआ था। अजमेरके अंग्रेज आफिसरों में आपका बडा सम्मान था। आपके मुनीम जोशी रघुनाथदासजी तक अजमेर के आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आपने अपने भाइयों के साथ अजमेर मे गोडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर बनवाया। आनासागर पर सम्वत् १९०५ में बाग और घाट बनवाया। आप पाँचों भाइयों का कम उम्र मे ही स्वर्गवास हो गया था। आप पाँचों भाइयो के बीच मेहता तेजकरणजी के पुत्र बुधकरणजी ही थे।

मेहता बुधकरणजी—आप लालचन्दजी और उम्मेदमलजी दोनों भ्राताओं के उत्तराधिकारी हुए। आपने बहुत पहले एफ० ए० की परीक्षा पास की थी। आप बडे गम्भीर और बुद्धिमान थे। समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आप संस्कृत और जैन शास्त्रों के अच्छे ज्ञाता तथा कानून की उत्तम जानकारी रखने वाले पुरुष थे। आपके देवकरणजी तथा रूपकरजी नामक दो पुत्र हुए।

मेहता देवकरणजी तथा रूपकरणजी—आपका जन्म क्रमश १९२५ के भाद्रपद में तथा १९३ के श्रावण में हुआ। आप दोनों सज्जन अजमेर की ओसवाल समाज में वजनदार तथा समझदार पुरुष हैं। आप लोग बडे विद्या-प्रेमी भी हैं। मेहता देवकरणजी ओसवाल हाई स्कूल के व्हाइस प्रेसिडेण्ट तथा रूप करणजी बी ए० उसके मत्री हैं। रूपकरणजी के पुत्र अभयकरणजी सज्जन व्यक्ति हैं।

यह खानदान अजमेर मे एक प्राचीन तथा प्रतिष्ठित खानदान माना जाता है। आपके पास कई पुरानी वस्तुओं, हस्तलिखित पुस्तकों तथा चित्रों का अच्छा सग्रह है। आपके गृह देरासर में कई प्रतिमाएं। सम्वत् १५२७ की श्री पार्श्वनाथ की मूर्ति एव सम्वत् १६७७ की एक चन्द्रप्रभु स्वामी की मूर्ति है।

बापना

<u>बापनावंश की उत्पत्ति</u>

जैन सम्प्रदाय शिक्षा नामक ग्रन्थ में बापनावंश की उत्पत्ति का विवेचन करते हुए लिखा है कि "धारा नगरी का राजा पृथ्वीधर पँवार राजपूत था। उनकी सोलहवीं पीढ़ी में जोबन और सच्चू नामक दो पुत्र हुए। ये दोनों भाई किसी कारणवश धारा नगरी से निकल गये और उन्होंने जागलू पर विजय प्राप्तकर अपना राज्य स्थापित किया। विक्रम सम्वत् ११७७ में तत्कालीन जैनाचार्य्य श्री जिनदत्तसूरिजी ने इन दोनों भाइयों को जैन धर्म का प्रतिबोध देकर महाजन वंश और बहुफणा गोत्र की स्थापना की।"

उपरोक्त कथन को ऐतिहासिक महत्व किन अंशों में प्राप्त है यह यद्यपि निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता तथापि इसमें सन्देह नहीं कि उक्त प्रान्त में बापना वंश वाले बड़े प्रतापी और प्रसिद्ध रहे हैं। हम इसी वंश का उपलब्ध क्रमबद्ध इतिहास देने का प्रयत्न करते हैं—

जैसलमेर का बापना (पटवा) खानदान

ओसवाल जाति के जिन गौरवशाली वंशों ने राजस्थान के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है जिन्होंने राजनैतिक, व्यापारिक और धार्मिक जगत में अपने गौरव और प्रताप का अपूर्व प्रकाश डाला है, उनमें जैसलमेर के बापनावंश का आसन बहुत ऊँचा है। इस वंश में कुछ विभूतियां ऐसी हो गई हैं जिनके द्वारा निर्माण की हुई निर्मल स्मृतियां आज भी उनके गौरव का गान कर रही हैं।

<u>बापना परिवार का व्यापारिक विकास</u>

इस खानदान का प्राचीन इतिहास यद्यपि इस समय उपलब्ध नहीं है, फिर भी बापना हिम्मतरामजी द्वारा बनाए हुए अमरसागर की प्रशस्ति में बापना देवराजजी से लेकर आगे की पुश्तों का सिलसिलेवार वर्णन पाया जाता है। उससे मालूम होता है कि सेठ देवराजजी बापना के पुत्र सेठ गुमानचन्दजी हुए। सेठ गुमानचन्दजी के पाँच पुत्र थे (१) सेठ बहादुरमलजी (२) सेठ सवाईरामजी (३) सेठ मगनीरामजी (४) सेठ जोरावरमलजी और (५) सेठ प्रतापचन्दजी। इनमें से सेठ बहादुरमलजी ने कोटा में, सेठ सवाईरामजी ने झालरापाटन में, सेठ मगनीरामजी ने रतलाम में, सेठ जोरावरमलजी ने

तत्कालीन पोलिटिकल एजण्ट खानबहादुर इनायत हुसैन, व्हाइस प्रेसिडेण्ट तथा दीवान आदि सज्जनों ने आपको कई प्रशंसापत्र दिये।

जिस समय आप नरसिंहगढ़ में थे उस समय आपको गवालियर महाराज ने कस्टम सुपरिण्टेण्डेण्ट की जगह के लिये बुलाया था। मगर उदयपुर के महाराणाजी ने आपको उदयपुर बुलाकर १ दिसम्बर सन् १९२३ में असिस्टेण्ट एक्साइज कमिश्नर के पद पर नियुक्त किया। इसके पश्चात् आप सन् १९२५ में असिस्टेण्ट कस्टम सुपरिन्टेंडेण्ट बनाये गये। तदनंतर आप कस्टम सुपरिंटेन्डेण्ट और फिर सन् १९२५ में एक्साइज कमिश्नर बनाये गये। आप आज कल छोटी सादड़ी के हाकिम हैं इसी प्रकार आप [illegible] उटट जनरल, तीन साल तक म्यु० मेम्बर और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे। आपके कार्यों से रियासत और [illegible] दोनों बहुत प्रसन्न रहे।

मेहता सुगनलालजी का संवत् १९५० की फागुन वदी ९ को जन्म हुआ। आप बी० ए० एल० एल० बी० पास हैं। वर्तमान में आप रासमी में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट हैं। आपके दिलीपसिंहजी तथा रणजीतसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

मेहता रामसिंहजी वेद का घराना, उदयपुर

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मेड़ता (मारवाड) का है। आप श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। मेड़ता से इस परिवार के पूर्व पुरुष मेहता आलमचन्दजी उदयपुर आकर बस गये थे। तभी से यह खानदान यहीं पर निवास करता है। इनके पुत्र उम्मेदमलजी के रिखबदासजी तथा राजमलजी नाम के दो पुत्र हुए।

मेहता राजमलजी के अम्बालालजी और रामसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। मेहता अम्बालालजी एक अच्छे मशहूर व्यक्ति हो गये हैं। आप मेवाड़ के नामी वकीलों में गिने जाते थे। मेहता रामसिंहजी का जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आप इस समय मेवाड़ राज्य के महकमा खास में हेड क्लर्क हैं। आपने जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक बोर्डिङ्ग हाउस को स्थापित करने में बड़ी कोशिश की। इसी प्रकार आपने एक चाँदी का हाथी भी बनवाया जो समय २ पर भगवान की रथयात्रा के काम में आता है।

आपके हिम्मतसिंहजी तथा सुमानसिंहजी नामक दो पुत्र हैं। हिम्मतसिंहजी एग्रीकल्चर की तालीम पाकर इस समय असिस्टेंट सेटलमेंट आफीसर के पद पर काम कर रहे हैं। सुमानसिंहजी इस समय पढ़ रहे हैं।

इस विशाल संघ ने मार्ग में स्थान २ पर कई क्षेत्रों में बहुत सा धन लगाया, तथा कई स्थानों पर [illegible] के महोत्सव करवाये। बडे बड़े तीर्थों पर मुकुट, कुण्डल, हार, कंठी, भुजबन्द इत्यादि आभूषण [illegible] रुपये चढ़ाये। कई स्थानों पर बड़े बडे भोज किये और लहाणें बाटो। कई पुराने मन्दिरों के [illegible]द्धार करवाये। उसके पश्चात् जब वापिस आये तब जैसलमेर के रावलजी जनाने समेत आपकी हवेली पर [illegible]। वहा पर आपने रुपयों का-चौतरा ❀ किया। और सिरपेच, मोतियों की कण्ठी, कड़े, दुशाले, हाथी, [illegible] पालकी रावलजी के नजर किये। प्रशस्ति में यह भी उल्लेख है कि आपकी हवेलियों पर [illegible] के महाराणाजी, कोटा के महारावजी तथा बीकानेर, किशनगढ़, बून्दी और इन्दौर के महा-[illegible] भी पधारे थे।

इसके अतिरिक्त इस प्रशस्ति से यह भी मालूम होता है कि इस परिवार ने भी धूलेवाजी के [illegible]र पर नौबतखाना किया और गहना चढाया, जिसमें करीब एक लाख रुपया लगा। मक्षीजी के [illegible]र का जीर्णोद्धार करवाया, उदयपुर और कोटा में मन्दिर, छत्री और धर्मशाला बनवाई। तथा जैसल[illegible] में अमरसागर का सुरम्य उद्यान बनवाया।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट मालूम होता है कि धार्मिक, व्यापारिक और राजनैतिक क्षेत्रों में इस [illegible] के महान् व्यक्तियों ने कितनी महान् कार्य्यशीलता दिखलाई।

सेठ बहादुरमलजी और मगनीरामजी का परिवार

हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ गुमानमलजी बापना के पाँच पुत्रों में सबसे बड़े सेठ बहादुरमलजी [illegible]। इन्होंने अपने व्यापार की प्रधान कोठी कोटा में स्थापित की थी। सेठ बहादुरमलजी बड़े बुद्धिमान और [illegible] व्यक्ति थे। इन्होंने शुरू शुरू में कुनाडी ठिकाना, बूंदी राज्य और कोटा में छोटे स्केल पर व्यापार [illegible] कर [illegible] लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित की, और धीरे धीरे आपने तथा आपके भाइयों ने [illegible] भारत में करीब चारसौ दुकानें स्थापित कीं, जिनका उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं। सेठ बहादुरमल[illegible] [illegible] कोटा रियासत के राजकीय वातावरण में बहुत अच्छा प्रभाव था। रियासत से आपको काफी [illegible] हासिल थी और लेनदेन का व्यापार भी चालू हो गया था। कई बार तो रियासत की तरफ़ आपके

❀ उस समय में राजस्थानी रियासतों में चौतरे का बहुत रिवाज था। भेंट करने वाले को जितना [illegible] [illegible] रुपयों का चौतरा बनवा कर वह महाराजा को इस पर बिठाता और फिर वे रुपये नजर कर [illegible]।

श्री गेदमलजी वेद (माणकचन्द गेदमल), मद्रास
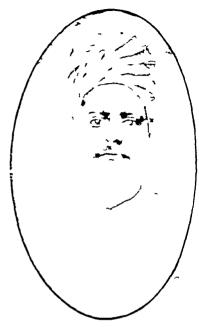
श्री गुलाबचन्दजी वेद (माणकचन्द गेदमल), मद्रास

श्री रनरानजी वेद (माणकचन्द गेदमल), मद्रास

कुँ० देवाचन्दजी S/o गुलाबचन्दजी वेद, मद्रास

स्व० सेठ बहादुरमलजी बापना, कोटा।

स्व० सेठ मगनीरामजी बापना, कोटा।

[illegible] बापना, रतलाम।

स्व० सेठ दानमलजी बापना, कोटा।

मलजी, जेठमलजी तथा अमानमलजी नामक तीन पुत्र हुए। करीब साठ पैंसठ वर्ष पूर्व सेठ रावतमलजी नागौर से पैदल रास्ते द्वारा मद्रास आये और सेंट थामस माउण्ट में अपनी दुकान स्थापित की। आप बड़े धार्मिक और साहसी व्यक्ति थे। आपके हाथों से फर्म की तरक्की हुई। आप संवत् १९७१ में अस्सी वर्ष की आयु में गुजरे। आपके सूरजमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ सूरजमलजी का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप भी व्यापार में बड़े होशियार थे। आपने अपनी फर्म की खूब वृद्धि की। आप संवत् १९७१ में स्वर्गवासी हुए। आपके निःसंतान गुजरने पर आपके नाम पर सेठ अमानमलजी के तीसरे पुत्र सेठ शम्भूमलजी गोद आये।

सेठ शम्भूमलजी का जन्म सम्वत् १९४९ में हुआ। आप शांत प्रकृति के धार्मिक पुरुष हैं। आपकी ओर से गरीबों को सदाव्रत दिया जाता है। आपके मांगीलालजी नामक एक पुत्र है।

सेठ गुलाबचन्दजी वेद, जौहरी जयपुर

उदयपुर स्टेट के खंडेला नामक स्थान से सेठ खुशीलालजी वेद जयपुर आये। आपके पुत्र गुलाबचन्दजी कलकत्ता गये। आप विलायत से पन्ना मंगाकर भारत में बेचते तथा यहाँ से विलायत के लिये जवाहरात भेजते थे। इस व्यापार में आपने अच्छी इज्जत और सम्पत्ति उपार्जित की। तदनन्तर आपने कलकत्ते में दो विशाल कोठियाँ खरीदीं। संवत् १९५८ में आप स्वर्गवासी हुए। वेद गुलाबचन्दजी के मिलापचन्दजी तथा पूनमचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। जौहरी पूनमचन्दजी ने जयपुर में जौहरी बाजार में दुकानें तथा हवेलियाँ खरीद कर अपने कुटुम्ब की स्थाई सम्पत्ति को बढ़ाया। जयपुर महाराजा माधोसिंहजी की इन पर कृपा थी। इन्हें राज्य की ओर से लवाजमा और राज दरबार में जाने के लिये चोबदारों का सम्मान प्राप्त था। मिलापचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९५८ में तथा पूनमचन्दजी का संवत् १९८० में हुआ।

जौहरी पूनमचन्दजी के पुत्र चम्पालालजी का जन्म सम्वत् १९६२ में हुआ। आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार और स्थाई सम्पत्ति के किराये का कार्य्य होता है। कलकत्ते में आपकी फर्म पर बैंकिंग तथा किराये का काम होता है। यह परिवार जयपुर की जौहरी समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है।

पहले मारवाड़ से अंकाई (नाशिक) और फिर वहा से चादोरी गये। यहाँ पर आपने अपनी एक दुकान स्थापित की। आपके हरकचंदजी तथा नारायणदासजी नामक दो पुत्र हुए। आपने बहुत साधारण हालत से अपनी प्रशंसनीय उन्नति की। आप दोनों भाई अपनी मौजूदगी ही में अलग २ होगये थे। सेठ हरकचदजी के प्रेमराजजी तथा नारायणदासजी के रतनचंदजी व मुलतानचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ प्रेमराजजी के पुत्र खुशालचन्दजी वर्त्तमान में विद्यमान है और खुशालचन्द प्रेमराज के नाम से व्यापार करते हैं। सेठ रतनचन्दजी सवत् १९७० में गुजरे। आपके भीकचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से गुलाबचंदजी सेठ मुलतानचदजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ मुलतानचंदजी सम्वत् १९४० मे स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में सेठ भीकचदजी तथा गुलाबचन्दजी विद्यमान हैं। आप लोगों का जन्म क्रमश सम्वत् १९५६ और १९४८ में हुआ। आप दोनों धार्मिक तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

सेठ गुलाबचन्दजी के मिश्रीमलजी, दीपचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। दीपचन्दजी भीकचन्दजी के नाम पर दत्तक गये है। सेठ भीकचन्दजी 'भीकचन्द रतनचन्द' के नाम से तथा गुलाबचन्दजी 'गुलाबचन्द मुलतानचन्द' के नाम से व्यापार करते है।

सेठ पृथ्वीराज रतनलाल वेद मेहता, आकोला

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवासस्थान जोधपुर (मारवाड़) का है। वहाँ से यह कुटुम्ब गोविन्दगढ़ (अजमेर जिला) में आकर वसा। तभी से यह परिवार वहीं पर निवास करता है। इस परिवार वाले श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन है। इस परिवार में सेठ पृथ्वीराजजी हुए। आपका जन्म सम्वत १९२१ में हुआ। सबसे प्रथम आप ही ने आकोला आकर सोना चादी व आढ़त का काम प्रारंभ किया। इस समय आप विद्यमान है और अकोला की ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माने जाते हैं। आपके नाम पर रासा से रतनलालजी दत्तक आये है।

वेद मेहता जीवनमल बहादुरमल का परिवार, छिंदवाड़ा

सम्वत् १९२८ में वेद मेहता जीवनमलजी और उनके पुत्र बहादुरमलजी नागोर से कामठी गये और वहाँ से आप दोनों पिता पुत्र छिंदवाड़ा आये। यहाँ आकर आप लोगों ने कुछ मास तक सेठ रतनचन्द केशरीचन्द छल्लानी के यहाँ सर्विस की और पीछे कपड़ा सोना चांदी आदि का घरू रोजगार शुरू किया। सेठ जीवनमलजी का सम्वत् १९९१ में स्वर्गवास हुआ। आपके ४ पुत्र हुए जिनमें बहादुरमलजी तथा

सौ सवार, ९ हाथी, चार तोपें और नगारा निशान) कोटा की इस विशाल सेना के आमदोरफ्त का एक लाख रुपये के खर्च हुआ, जो सेठ दानमलजी के आग्रह करने पर भी कोटा नरेश ने लिया। इस संघ में खरतर गच्छ के जैनाचार्य श्री जिन महेन्द्रसूरिजी के साथ और भी साधु साध्वियाँ भी थे जिनकी सख्या कुल मिलाकर करीब १५०० थी। इसके अतिरिक्त कई अन्य गच्छ के आचार्य्य थे। इस सघने आबू, गिरनार, तारंगा, श्री गोडवाड़ की पंच तीर्थी कई एक यात्रायें की। रास्ते में स्थानों पर जीर्णोद्धार कराये, कई स्थानों में दादा वाड़ियाँ बनवाईं और बड़े बड़े स्वामी वत्सल किये। इस सब में लगभग २३ लाख रुपया खर्च हुआ। इस महान् कार्य के लिए श्री सघ ने जैसलमेर दरबार ने सेठ दानमलजी को संघवी की पदवी प्रदान की। इसके अलावा आपने दो मन्दिर—एक बूँदी रियासत में और दूसरा कोटा राज्यान्तर्गत ठिकाना कुनाड़ी में—बनवाये। कोटा में एक दानबाड़ी बनवाई जिसका दृश्य देखने दो योग्य है। इसमें श्री पार्श्वनाथजी की मूर्ति विराजित है। इस प्रकार आप धर्म-कार्य करते हुये सम्वत् १९२५ में स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र न होने के कारण आपने अपने भ्राता रतलाम वाले सेठ भभूतसिंहजी के तृतीय पुत्र हमीरमलजी को गोद लिया।

सेठ हमीरमलजी का वृतान्त लिखने के पूर्व हम यहाँ संक्षेप में रतलाम वाले बापनाओं का वृतान्त दे देना आवश्यक समझते हैं।

सेठ हमीरमलजी के दोनों भाई सेठ पूनमचन्दजी और दीपचन्दजी रतलाम में ही रहे और वहीं पर अपना कारोबार करते रहे। आप रियासत जावरा और अँग्रेज सरकार की नीमच छावनी के खजांची भी थे। इस तरह से आपने भी लाखों रुपये उपार्जन किये। धर्म में भी आपका अत्यन्त प्रेम था। दीपचन्दजी ने रतलाम में अपनी हवेली के सामने एक बगीचा बनवाकर उसमें एक विशाल जैन मन्दिर बनवाया। लेकिन इसकी प्रतिष्ठा आपके हाथ से न हो सकी। सेठ पूनमचन्दजी के कोई पुत्र न था। सेठ दीपचन्दजी के दो पुत्र थे, सेठ चाँदमलजी और सेठ सोभागमलजी। सेठ सोभागमलजी को सेठ पूनमचन्दजी के यहाँ दत्तक लाये, मगर आपका भी युवावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् सेठ चाँदमलजी ने ही सब कारोबार करना आरम्भ किया। आपने भी अपने पिता की भाँति अनुसार व्यापार द्वारा लाखों रुपये पैदा किये और अपने पिता के सङ्कल्प यानी मन्दिर की प्रतिष्ठा को पूरा किया। इस प्रतिष्ठा के उत्सव में आपने करीब २ लाख रुपये व्यय किए। इसके अतिरिक्त आपने और भी कई धर्म कार्य में बहुतसा रुपया खर्च किया। आपके कोई पुत्र न होने के कारण केसरीसिंहजी को ही अपना मालिक बनाकर रतलाम और कोटे को एक कर दिया। अस्तु

११

सेठ मिश्रीलालजी वेद, फलोदी

सेठ पूनमचंदजी वेद, रतनगढ़

थे। आपके लखमीचन्दजी, फूलचन्दजी, बाबूलालजी, और पदमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए, इनमें से पदम चन्दजी, लाला मोतीलालजी के नाम पर दत्तक गये। लाला बाबूलालजी विद्यमान हैं। आपके ५ पुत्र तथा पदमचन्दजी के १ पुत्र है। आपके यहाँ आरम्भ से ही बैंकिंग, गोटा तथा जवाहरात का व्यापार होता है।

सेठ दीपचन्द पाँचूलाल वेद, फलोदी

वेद मुकुन्दसिंहजी के पुत्र रासाजी सम्वत् १६८१ में फलोदी आये, इनकी ८ वीं पीढ़ी में सेठ पूनमचन्दजी हुए। आपके रेखचन्दजी, जुहारमलजी और दीपचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ जुहारमलजी ने सम्वत् १९४३ में धमतरी में रेखचन्द जुहारमल के नाम से दुकान की, तथा सब ने मिलकर व्यापार की तरक्की की। रेखचन्दजी के पुत्र लाभचन्दजी विद्यमान हैं। वेद जुहारमलजी के पुत्र सुगनचन्दजी तथा पौत्र राजमलजी चम्पालालजी और पाँचूलालजी हुए। इनमें पाँचूलालजी, दीपचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। सम्वत् १९८८ में दीपचन्दजी का स्वर्गवास हुआ। इनकी धर्मपत्नी श्री ने अपने स्वर्गवासी होने के समय एक संघ निकालने की थी इच्छा प्रगट की अतएव इनके पुत्र ने संवत् १९८९ की माघसुदी ९ को फलोदी से जेसलमेर के लिये एक संघ निकाला। इस संघ में १ यात्री २१ साधू और ६८ साध्वियां थीं। इसमे सवारी के लिये ५३४ गाड़ियाँ तथा १७७ ऊँट थे। इस संघ में लगभग ५० हजार रुपये व्यय हुए।

सेठ सुगनचन्द रतनचन्द वेद, बरोरा

इस परिवार के सेठ पोमचन्दजी वेद सम्वत् १९३५ के पूर्व अपने निवास बीकानेर से आये, तथा यहाँ से नागपुर जाकर सेठ अमरचन्द गेंदचन्द गोलेछा के यहाँ मुनीम रहे। इनके पुत्र चन्दजी वेद सम्वत् १९४४ में बरोरा गये तथा वहाँ सेठ अमरचन्द सिरकरण गोलेछा की भागीदारी कारबार शुरू किया। सम्वत् १२७९ तक सम्मिलित कारबार रहा, इस व्यापार को सुगनचन्दजी हाथों से अच्छी उन्नति मिली। पश्चात् उपरोक्त नाम से आपने अपनी स्वतन्त्र दुकान की। तथा भादकजी के तीर्थों के कार्यों में भी आप सहयोग लिया करते थे। सम्वत् १९८९ की कार्ती ११ को आपका स्वर्गवास हुआ।

इस समय सुगनचन्दजी वेद के पुत्र रतनचन्दजी, सागरमलजी तथा फूलचन्दजी मेसर्स रतनचन्द के नाम से गल्ला तथा कमीशन का काम करते हैं। आप मन्दिर मार्गीय आमनाय के मानने वाले

रत है। रतलाम दरबार से भी आपकी बड़ी घनिष्टता है। वहाँ से भी आपको सोना और ताजीम के अतिरिक्त राज्यभूषण की सम्माननीय उपाधि प्राप्त है। इस रियासत के खजाची भी आप ही है। इन स्थानों पर आपकी बड़ी २ हवेलियाँ बनी हुई है। आपको समय समय पर गवर्नमेंट से कई सर्टिफिकेट भी प्राप्त हुए हैं जिनमें से एक दो की कॉपी हम नीचे दे रहे है।

Diwan Bahadur Seth Kesri Singh has been connected with this Agency in his Capacity as Rajputana Agency Treasurer for over 5 years During this period the work has been performed quite smoothly and to the great satisfaction of all concerned He is one of the premier Seth of Rajputana and belongs to a very old and highly respectable family, distinguished for its loyal and meritorious services to Governments, the reputation of which the Seth continues to maintain admirably, I am very sorry to bid good bye to him

Camp Ajmer
The 9th March 1927

Sd /- S B Patterson
Agent, Governor General in Rajputana

Rai Bahadur Seth Kesri Singh who is a well known Banker of Rajputana belongs to an old respectable family, members of which have rendered loyal service to Government As Rajputana Agency Treasurer the Seth has been in touch with this Agency during the past three years and the work has been carried on to my entire satisfaction

Dated, Camp Ajmer,
10th March 1927

Sd /- R G Holland,
Agent to the Governor General
Rajputana

चाहा। उनकी यह इच्छा देखकर सन् १८४६ की २८ वीं मार्च को सेठ जोरावरमलजी ने महाराणा को अपनी हवेली पर निमन्त्रित किया, और जिस प्रकार महाराणा ने चाहा, उसी प्रकार आपने कर्ज का फैसला कर लिया। इस पर प्रसन्न होकर महाराणा ने आपको कुण्डल गाँव, आपके पुत्र चान्दणमलजी को पालकी और आपके पौत्र गंभीरमलजी और इन्द्रमलजी को भूषण और सिरोपाव दिये। इन्हीं के अनुकरण पर दूसरे लेनदारों ने भी महाराणा की इच्छानुसार अपने कर्जे का फैसला कर दिया। इस प्रकार रियासत का सारा कर्ज सहज ही में अदा हो गया और इसका बुद्धिमानी पूर्ण फैसला कर देने मे सेठ जोरावरमलजी की बहुत प्रशंसा हुई।

इस प्रकार अपनी बुद्धिमानी, राजनीतिज्ञता और व्यापार-दूरदर्शिता से सारे राजस्थान में लोकप्रियता और नेकनामी प्राप्त कर सन् १८५३ की २६ फरवरी को इन्दौर मे सेठ जोरावरमलजी का स्वर्गवास हो गया। यहाँ के तत्कालीन महाराजा ने बड़े समारोह के साथ छत्रीबाग में आपकी दाह क्रिया करवाई।

उपरोक्त अवतरणों से यह बात सहज ही मालूम हो जाती है कि सम्पत्तिशाली होने के साथ ही साथ सेठ जोरावरमलजी बहुत गहरे अग्रसोची, राजनीतिज्ञ और प्रबन्ध कुशल सज्जन थे। यही कारण है कि उदयपुर, जोधपुर, इन्दौर, कोटा, बूँदी, टोंक और जैसलमेर में आपका अत्यंत सम्मान रहा। गंभीर से गंभीर मामलों में भी अंग्रेज सरकार तथा उपरोक्त राणा, महाराजा आपसे सलाह लिया करते थे।

केवल राजनैतिक मामलों में ही सेठ जोरावरमलजी ने कीर्ति प्राप्त की हो, सो बात नहीं है। धार्मिक और परोपकार वृत्ति की ओर भी आपका बहुत बड़ा लक्ष्य था। सन् १८३२ की २ दिसम्बर को आपने सुप्रसिद्ध ऋषभदेवजी के मंदिर पर ध्वजा दंड चढ़ाया और वहाँ पर नक्कारखाने की स्थापना की।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट मालूम हो जाता है कि सेठ जोरावरमलजी जितने राजनैतिक और व्यापारिक जगत में अग्रगण्य थे, उतने ही वे धार्मिकता और दानवीरता में भी प्रसिद्ध थे। आपके दो पुत्र हुए पहिले सुलतानमलजी और दूसरे चान्दणमलजी। सिपाही-विद्रोह के समय सेठ चान्दणमलजी ने नीमच में अंग्रेज सरकार के पास खजाना पहुँचा कर उसकी अच्छी सेवा की, जिससे सरकार उनसे प्रसन्न हुई।

सेठ सुलतानमलजी के दो पुत्र हुए जिनका नाम क्रमशः सेठ गंभीरमलजी और सेठ इन्द्रमलजी था। सेठ गंभीरमलजी के सरदारमलजी नामक पुत्र हुए। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर सेठ समीरमलजी दत्तक लिये गये। इसी प्रकार सेठ इन्द्रमलजी के भी कोई पुत्र न हुआ। अतएव आपके नाम पर भी सेठ कुन्दनमलजी दत्तक लिये गये। इनके भी जब कोई संतान नहीं हुई तब आपके यहाँ सेठ सवाईसिंहजी को दत्तक लिया गया।

उदयपुर में और सेठ प्रतापचन्दजी ने जैसलमेर और इन्दौर में अपनी अपनी कोठियाँ स्थापित कीं। उस समय इस परिवार वालों के हाथ में बहुत सी रियासतों का सरकारी खजाना भी था। इसके अतिरिक्त राजस्थान के पचासों व्यापारिक केन्द्रों में इनकी कुल मिलाकर करीब चार सौ दुकानें थीं। इनमें से एक दुकान सुदूरवर्ती चायना देश में भी खोली गई थी। इनमें से कई केन्द्रों में आपने कई बहुमूल्य इमारतें भी बनवाई। जो अब भी पटवों की हवेलियों के नाम से स्थान २ पर प्रसिद्ध है।

बापना परिवार के धार्मिक कार्य्य

कहना न होगा कि बापना परिवार ने राजनैतिक और व्यापारिक क्षेत्र में अपनी महान् प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उसी प्रकार बल्कि उससे भी किसी अंश में एक पैर आगे उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में अपनी महान् कीर्ति स्थापित की। जैसलमेर का सुप्रसिद्ध अमर सागर नामक बाग जो क्या प्राकृतिक सौन्दर्य्य की दृष्टि से, क्या स्थापत्यकला की दृष्टि से, सभी दृष्टियों से अत्यन्त सुन्दर है, इसी बापनावंश के महान् पुरुषों के द्वारा बनाया गया है। इस बाग में दो मन्दिर हैं, जिनमें से एक छोटा सम्वत् १८९१ में सेठ सवाईरामजी ने और दूसरा बड़ा सम्वत् १९२८ में सेठ प्रतापचन्दजी के पुत्र सेठ हिम्मतरामजी ने बनाया। इनमें से बड़ा मन्दिर बहुत ही सुन्दर, दुमंजिला और विशाल बना हुआ है। मन्दिर के सामने ही सुरम्य उद्यान है। इस मन्दिर में संगमरमर की कोराई और शिल्प-कार्य्य का सौन्दर्य्य बहुत ही अच्छा प्रस्फुटित हुआ है। सुदूर मरुभूमि में ऐसा विशाल मूल्यवान भारतीय शिल्पकला का नमूना अवश्य ही दर्शनीय है।

इस अमरसागर में एक विशाल प्रशस्ति * लगी हुई है। इस प्रशस्ति से मालूम होता है कि संवत् १८९१ में इन पाचों भाइयों ने मिलकर आबू, तारङ्गा, गिरनार और शत्रुंजय की यात्रा के लिए एक बड़ा भारी संघ निकाला था। इस संघ को निकालने में आप सब भाइयों ने करीब २३ लाख रुपया खर्च किया। इस संघ की रक्षा के लिए उदयपुर, कोटा, बून्दी, जैसलमेर, टोंक, इन्दौर तथा अंग्रेजी सरकार ने सेनाएं भेजीं, जिनमें ४००० पैदल १५०० सवार और चार तोपें थीं। इस संघ के उपलक्ष में ओसवाल जाति ने आपको संघाधिपति की पदवी और जैसलमेर के महारावल ने संघवी-सेठ की पदवी और लौद्रवा नामक ग्राम जागीर में बख्शा, तथा हाथी की बैठक का सम्मान भी दिया।

---

* इस प्रशस्ति का तथा अमर सागर के मन्दिरों का चित्र इसी ग्रन्थ में "धार्मिक महत्व" नामक प्रकरण में दिया गया है।

श्रीमान् एतमाद-वजीर-उद्दौला रायबहादुर सिरेमलजी बापना
सी आई ई, बी एस सी एल एल बी
प्राइम मिनिस्टर, इंदौर स्टेट
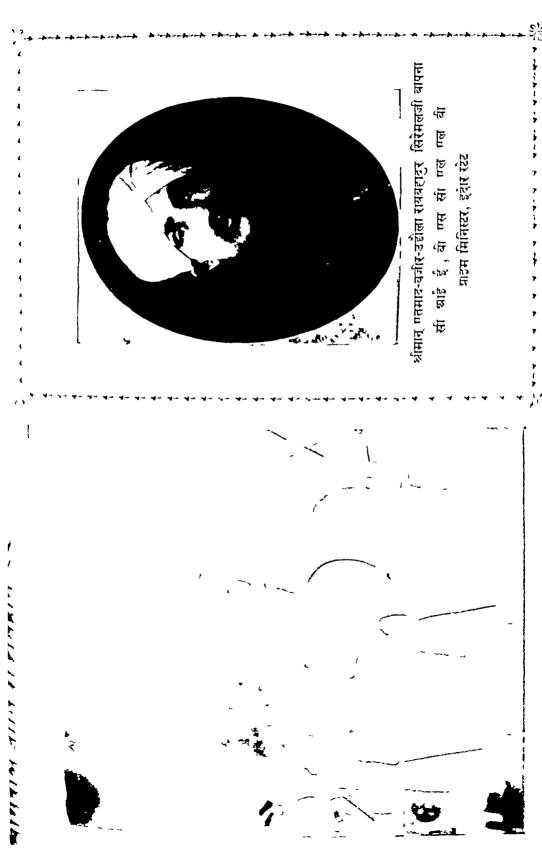
दस दस लाख रुपया बाकी रहते थे। इसके सिवाय बून्दी और टोंक से भी आपका व्यवहार बहुत था जिसके परिणाम स्वरूप बून्दी से आपको रायथल और टोंक से खुरी गाव जागीर में मिला।

सेठ बहादुरमलजी के समय में अंग्रेज गवर्नमेण्ट और देशी रियासतों के बीच अहदनामे होने बडी झंझटें हो रही थीं। कहना न होगा कि इन समस्याओं को सुलझाने मे सेठ बहादुरमलजी और छोटे भाई जोरावरमलजी ने बड़ी सहायता पहुँचाई। इनके इस कार्य्य मे प्रसन्न होकर गवर्नमेण्ट ने बहादुरमलजी को देवली एजेन्सी का खजानची मुकर्रर किया। तथा कोटा रियासत से भी आपको की छडी, अडानी, छत्ते, मियाना, पालकी, ताम जाम, हाथी, घोडा मय सोने के साज के और तथा कई पट्टे परवाने भी मिले।

सेठ बहादुरमलजी की धार्मिक प्रवृत्ति भी बहुत बढ़ा चढ़ी थी। ऊपर आपना परिवार के धार्मिक कार्य्यों का उल्लेख किया गया है, उनमें तो सेठ बहादुरमलजी सम्मिलित थे ही, उनके भी इन्होंने व्यक्तिगत रूप से कई कार्य्य किये, और अन्त में शत्रुंजय का एक बडा संघ निकालने का विचार किया, मगर उस विचार के पूर्ण होने के पूर्व ही वि० स० १८८२ में आपका स्वर्गवास होगया।

सेठ दानमलजी—सेठ बहादुरमलजी के कोई पुत्र न होने से आप अपने भ्राता सेठ के पुत्र सेठ दानमलजी को अपना उत्तराधिकारी बना गये और उनको अपने धर्म संकल्प अर्थात् शत्रुंजय का संघ निकालने का आदेश कर गये। सेठ दानमलजी भी बड़े धर्मनिष्ठ और प्रतापी पुरुष हुए। आपने सेठ बहादुरमलजी के कार्य को बडी योग्यता से संचालित किया। इन्हीं के समय में सवत् १९०९ में भाइयों का यह सम्मिलित परिवार अलग २ हुआ, जिसके अनुसार कोटे का कारबार सेठ दानमलजी झालावाड़ का सेठ सवाईरामजी के, रतलाम का सेठ मगनीरामजी के, उदयपुर का सेठ जोरावरमलजी के इन्दौर का सेठ परतापचंदजी के जिम्मे हुआ। इस प्रकार कारोबार विभक्त हो जाने पर सेठ दान स्वतन्त्र रूप से कोटे में अपना व्यापार करने लगे। आपने भी कोटा रियासत में कई प्रकार के सम्मान जागीरी प्राप्त की। जिसके परवाने अभी भी आपके वंशजों के पास विद्यमान हैं।

सेठ दानमलजी की धर्म पर भी अधिक रुचि थी। उधर आपको अपने पिता की आज्ञा करने का भी पूरा ख्याल था। इसीसे आपने शत्रुञ्जय यात्रा का सघ निकालने का निश्चय करके अपने चारों काकाओं को उदयपुर, झालरापाटन, इन्दौर और रतलाम से बुलवाये और सघ निकालने की पूरी तैयारी की। सघ के कर्ता धर्ता आप ही थे अतएव सघपति की माला आपको ही पहिनाई गई। इस संघ की हिफाजत के लिए अग्रेज सरकार, उदयपुर, इन्दौर, टोंक, बूँदी, जैसलमेर और कोटा ने अपने अपने खर्चे से फौजें भेजी। इसमें सबसे ज्यादा फौज कोटा राज्य की थी १००० पैदल की

र व होल्कर की नाबालिगी के समय में आपने अत्यन्त सफलता पूर्वक शासन किया, इससे प्रसन्न होकर गवर्नमेण्ट न सन् १९३१ की जनवरी मे आपको सी० आई० ई० की सम्मानीय पदवी प्रदान की।

बापना साहब के शासन की विशेषताएँ

श्री बापना साहब के शासन की तारीफ करते हुए ता० १२ मार्च सन् १९२९ के दिन मध्य भारत के भूतपूर्व ए० जी० जी० सर रेजिनॉल्ड ग्लेन्सी महोदय ने मानिकबाग पैलेस मे एक व्याख्यान में निम्नलिखित उद्गार कहे थे —

"But I can say you have in Indore an efficient administrative machine, second to none amongst the states, I have seen You have a Prime Minister and a cabinet genuinely devoted to the good of the states and you have also a number of conscientious officers I rank the Holkar administration very high amongst the States of India"

अर्थात्—"मैं कह सकता हूँ कि आपकी इन्दौर का शासन यन्त्र बहुत ही सांगोपांग है। जितने राज्य मैंने देखे हैं, उनमें इस राज्य की गणना प्रथम श्रेणी में हो सकती है। आपके प्राइम मिनिस्टर और आपकी कॅबिनेट ने राज्य की भलाई के लिए अपने आपको अर्पण कर रखा है। साथ ही आपके यहाँ बहुत से विवेकी आफिसर भी हैं। मैं भारतवर्ष के देशी राज्यों में होल्कर राज्य के शासन की गणना बहुत ही उच्च श्रेणी मे करता हूँ।"

श्रीमान बापना साहब का शासन कई विशेषताओं से परिपूर्ण रहा है। आपके समय मे शिक्षा की अच्छी उन्नति हुई। जहाँ पहले प्रति वर्ष शिक्षा विभाग में ५ लाख रुपये खर्च होते थे, वहाँ अब सात आठ लाख रुपये खर्च होते है। आपके समय में एम० ए० और एल० एल० बी० की नवीन कक्षाएं खोली गईं। रामपुरा और खरगोन मे दो हॉय स्कूल खोले गये जो बहुत अच्छी तरह चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपके समय मे एक ऐसी घटना हुई जिसका इन्दौर राज्य के आधुनिक इतिहास में बड़ा महत्व है वह यह कि इन्दौर की छावनी जो कि ब्रिटिश अधिकार में थी, इन्दौर राज्य में वापिस आ गई और पलासिया एवं सदानन्दपुर भी स्टेट मे आया। इतना ही नही श्रीमान वायसराय महोदय के पास इन्दौर राज्य का प्रतिनिधि भी रहने लगा। यह अधिकार इन्दौर राज्य को छोडकर और किसी स्टेट को नहीं है।

इन्दौर शहर में ड्रेनेज सिस्टिम न होने से शहर के बीच में बहनेवाली नदी में शहर के कुड़

जातियों के लिये आप के हृदय में बराबर स्थान हैं। आपकी सहानुभूति, आपका प्रेम किसी जाति तक सीमित नहीं है। आपकी यह बात आपके जीवन क्रम मे हमें प्रति दिन दिखलाई पड़ती है।

श्रीयुत बापना साहब एक अच्छे राजनीतिज्ञ हैं। आपकी राजनीति शुद्ध और सात्विक है। राज्य में होने वाले षड्यन्त्रों और राजनैतिक [illegible] म (Diplomacy) आप दूर रहते हैं। आप इतने चतुर अवश्य हैं कि दूसरे के षड्यन्त्रों से अपने [illegible] प्रपंचा से आपको बड़ी घृणा है। आप कभी अपनी आत्मा को षड्यन्त्रों [illegible] को तथा अपने शासन को बाल बाल बचा लेते हैं। आप [illegible] कर गंदा नहीं करते। राजनीति में जो गंदगी रहती है, उससे ये अपने आप को बचाने की पूरी [illegible] करते हैं। पार्टी बन्दी से इन्हें बड़ी नफरत है। ये बातें आपकी स्वाभाविक प्रकृति के खिलाफ हैं। [illegible] नैतिक प्रभाव राज्य के वातावरण पर बहुत अच्छा पड़ता है।

संसार में जितने बड़े २ राजनीतिज्ञ हुए हैं उनके स्वभाव में, गंभीरता और प्रकृति में शांति [illegible] है। जिन लोगों को बापना साहब के सानिध्य में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे आपकी गंभीरता और शान्त स्वभाव से भली भांति परिचित होंगे। कठिन से कठिन अवसरों पर भी आप उत्तेजित होना [illegible] हो नहीं। हमने देखा है कि जब आप प्रातःकाल बक्षीबाग में घूमने आते हैं, तब कभी २ कुछ लोग [illegible] इतना तंग करते हैं कि साधारण मनुष्य वैसी अवस्था में उत्तेजित हुए बिना नहीं रह सकता। पर [illegible] शांति रत्ती भर भी चल विचल नहीं होती। इसके कई उदाहरण हमारे सामने हैं।

इन्हीं सब मानसिक विशेषताओं का प्रताप है कि आप क्रमशः विकास करते २ इन्दौर राज्य [illegible] महत्वपूर्ण राज्य के प्रधान सचिव के पद पर पहुँच गये तथा वर्तमान में आप बड़ी योग्यता और [illegible] के साथ सचालन कर रहे हैं। आपने इन्हीं विशेषताओं से न केवल भारतीय राजनीति में वरन् [illegible] राजनीति में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। आज सारे ओसवाल समाज को [illegible] बहुत बड़ा गर्व है। आपका विवाह सम्बन्ध सम्वत् १९५२ में उदयपुर के सुप्रसिद्ध मेहता [illegible] जी की कन्या से हुआ। मेहता भूपालसिंहजी उदयपुर राज्य के दीवान थे तथा आपके पुत्र मेहता [illegible]सिंहजी भी उदयपुर के दीवान रहे।

श्रीमान बापना साहब के इस समय दो पुत्र और दो पुत्रियां हैं। बड़े पुत्र का नाम श्री [illegible] जी हैं। आप बी० ए० एल० एल० बी० हैं। इस समय आप इन्दौर राज्य के डिप्टी [illegible] हैं। आपके इस समय तीन पुत्र और एक पुत्री है। दो बड़े पुत्रों के नाम क्रमशः कुंवर [illegible] और कुंवर [illegible]सिंहजी हैं। श्रीमान बापना साहब के छोटे पुत्र श्री प्रतापसिंहजी हैं। [illegible] बी० ए० एल० एल० बी० हैं।

स्व० सेठ पूनमचंदजी बापना, कोटा.

स्व० सेठ दीपचंदजी बापना, रतलाम

स्व० सेठ हमीरमलजी बापना, रतलाम

स्व० कुँवर राजमलजी बापना, कोटा

कोटे में सेठ हमीरमलजी बडी चतुरता से अपना कार्य करते रहे। आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास ३५ वर्ष की युवावस्था में ही हो गया। उस समय आपके एक पुत्र सेठ राजमलजी थे। पत्नी का देहान्त हो जाने के पश्चात् आपने अपने कुटुम्बियों के आग्रह करने पर भी दूसरा व्याह न कर अन्तिम समय तक ब्रह्मचर्य का पालन किया। दुर्भाग्य से आपके पुत्र राजमलजी का देहान्त आपकी मौजूदगी ही में केवल ३५ वर्ष की अल्पायु में हो गया। उस समय राजमलजी के पुत्र सेठ केशरीसिंहजी की उम्र बहुत ही कम थी।

तत्पश्चात् सेठ हमीरमलजी अपने पौत्र सेठ केशरीसिंहजी को धार्मिक और व्यापारिक शिक्षा देते हुए कार्य को सुचारु रूप से चलाते रहे। इनके काल में भी ब्रिटिश गवर्नमेंट तथा देशी राज्यों से घरोपा रहा। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५९ में हुआ।

दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी

आपके पश्चात् आपके पौत्र दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजी ने इस खानदान के व्यापार का सूत्र अपने हाथ में लिया। आप भी बडे व्यापार कुशल और धार्मिक वृत्ति के पुरुष हैं। आपके कुल तीन विवाह हुए, जिसमें आपकी द्वितोय धर्म-पत्नी से आपको कुँवर बुद्धसिंहजी नामक एक पुत्र और एक कन्या हैं। कुँवर बुद्धसिंहजी बडे होनहार और कुशाग्र बुद्धि के है। आपकी तीनों धर्म-पत्नियाँ धार्मिक वृत्ति की महिलाये थीं। इन्होंने वृत उद्यापन इत्यादि धार्मिक कार्य्यों में विपुल द्रव्य खर्च किया। सेठ साहब ने करीब चार पाँच दफे सिद्धाचल आदि तीर्थों की यात्रा की जिसमें हजारों रुपये खर्च किये।

दीवान बहादुर केशरीसिंहजी की ब्रिटिश गवर्नमेंट तथा देशी रियासतों में बहुत इज्जत है। सन् १९१२ के देहली दरबार में गवर्नमेण्ट की तरफ से आपको भी निमन्त्रण मिला था, उस समय आपने राजपूताना ब्लॉक में साठ हजार की लागत का अपना निजी कैम्प स्थापित किया था। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने आपको सन् १९१२ में रायसाहब, १९१६ में रायबहादुर और १९२५ में दीवान बहादुर की सम्माननीय उपाधियों से विभूपित किया। इसके अतिरिक्त देवली और नीमच के सिवाय आबू, मेवाड़ एजन्सी और मानपुर के खजाने भी आपके सुपुर्द किये। आपको कोटा, बून्दी, जयपुर, रतलाम, टोंक इत्यादि रियासतों से पैरों में सोना, जागीर व ताजीम मिली हुई है। आपकी मौजूदा सेठानीजी को भी जोधपुर व बून्दी से पैरों में सोना और ताजीम बख्शी हुई है। केवल इतना ही नहीं प्रत्युत आपके पुत्र, पुत्री, भानेज, श्वसुर, फूफा और दो मुनीमों को भी टोंक रियासत ने सोना बख्शा है। जब आप टोंक जाते हैं तो वहाँ के एक उच्चाधिकारी आपकी अगवानी के लिये बहुत दूर तक सामने

मेहता कानूरामजी बापना संवत् १९१९ की सावण बदी १ तक उपरोक्त कार्य्य सम्हालते रहे। संवत् १९११ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके रामलालजी, मुकुन्दलालजी और लक्ष्मणजी नामक ३ पुत्र हुए।

महता रामलालजी बापना—आप जोधपुर महाराजा मानसिंहजी और महाराजा तखतसिंहजी के समय में जालोर, साचोर आदि परगनों के हाकिम रहे। आप भी मुत्सुद्दी समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

मेहता मुकुन्दलालजी बापना—आप पारसी के विद्वान् और कारिंदा पुरुष थे। आप महाराजा किशोरसिंहजी के नायब पद पर कार्य्य करते थे। महाराजा प्रतापसिंहजी आप पर अच्छा स्नेह रखते थे। मारवाड़ के सरहद्दी झगड़ों को निपटाने में कर्नल वॉयली साहब के साथ आपने सहयोग दिया था।

महता लक्ष्मणजी बापना—आपभी अपने समय में जोधपुर के प्रतिष्ठित पुरुष थे। जब संवत् १९२९ में सिंघवी देवराजजी के नाम का फौज बख्शी का पद खालसे हो गया। उस समय आप* इस पद की देख रेख करते थे। संवत् १९४० में आपका स्वर्गवास हुआ।

राय साहब बापना कृष्णलालजी बी० ए०—आप मेहता लक्ष्मणलालजी बापना के पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आप जोधपुर राज्य में हाकिम, राज एडवोकेट, और इन्सपेक्टर जनरल पोलीस आदि कई सम्माननीय पदों पर काम कर चुके हैं। आपके सार्वजनिक कामों की एक लम्बी सूची है। सन् १९१४ मे जोधपुर से "ओसवाल" नामक जो मासिक पत्र निकलता था, उसके सम्पादक आप थे। जोधपुर की मारवाड़ हितकारिणी सभा के स्थापन में भी आपने प्रधान हाथ बटाया था।

राजपूताने की प्रजा परिषद् और अजमेर के आदर्श नगर के स्थापन में भी आपने प्रधान सहयोग दिया है। आपही के परिश्रम और उद्योग से अजमेर में ओसवाल सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हुआ था। सामाजिक विषय पर आपने कई पुस्तिकाएँ और लेख लिखे हैं। आप वेदान्त मत के अनुयायी और स्वतन्त्र विचारों के पुरुष हैं। अभी आप अजमेर में ही निवास करते हैं। आपके मन में नवयुवकों जैसा उत्साह और जोश है। आपका सम्पर्क कई अंग्रेज आफिसरों से रहा है और समय २ पर उनकी ओर से आपको कई प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं। औद्योगिक विषय में आपकी बड़ी अभिरुचि है। आपकी कास्टिक सोडा बनाने की स्कीम को गवर्नमेण्ट ने पसन्द किया है। इसी तरह बेर के झाड़ पर लाख लगाने की आपकी योजना को भी गवर्नमेण्ट कॉलेज पूसा ने स्वीकार किया है। आपने जोधपुर के ओसवाल [illegible] विवाह सहायक फण्ड को २ हजार रुपये प्रदान किये। आपके जीवन का प्रधान लक्ष्य नवीन [illegible] का प्रकाश करना और नवीन संस्कारों की लहर पैदा करना है। सन १९१० में गवर्नमेण्ट ने

* [illegible] में इस पद पर इनके बड़े भ्राता मेहता रामलालजी ने काम किया था, [illegible] है। [illegible]

पुत्र हुए, इनमें जालिमचन्दजी विद्यमान हैं। आप जोधपुर के फर्स्ट क्लास वकील हैं, तथा वहाँ के शिक्षित समाज में प्रतिष्ठित माने जाते हैं।

बापना चैनकरणजी—बापना सूराजी के पुत्र फूलचन्दजी और वनेचन्दजी हुए। फूलचन्दजी ने सूराजी फूलचन्द के नाम से दुकान स्थापित की। इनके पुत्र चैनकरणजी सम्वत् १९१७ मे सवा साल तक स्टेट के दीवान रहे और इसी वर्ष ४० साल की वय मे आप स्वर्गवासी हुए। चैनकरणजी के पुत्र मिलापचन्दजी जेबखास महकमे में सर्विस करते थे।

बापना चन्द्रभानजी (नेनमलजी)—आप बापना मिलापचन्दजी के पुत्र थे। अपने पिताजी के स्थान पर सवत् १९५४ में आप जेबखास महकमें में नौकर हुए। इसके बाद तहसीलदार, दीवान के सरिश्तेदार और अकाउण्टन्ट आफीसर रहे। ये तहरीरी काम मे बड़े होशियार थे। सवत् १९७४ की काती सुदी १५ को आप स्वर्गवासी हुए। सर्विस के साथ २ आप अपनी सूराजी फूलचन्द नामक फर्म का सचालन करते थे। यह फर्म कस्टम तथा परगनों के इजारे का काम और जागीरदारों को रकमें देने का व्यापार करती थी। आपके हुकमीचन्दजी तथा अमरचन्दजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं। बापना हुकमीचन्दजी का जन्म सवत् १९६० मे हुआ। आप इस समय सिरोही में वकालत करते हैं और साथ ही अपनी "सूराजी फूलचन्द" नामक फर्म का बैंकिग बिजिनेस सम्हालते हैं। सन् १९२६ से आप सदर्न राजपूताना और मेवाड़ के कई हिस्सों के लिए एच० सी० दयानीवाला के नाम से पेट्रोल के एजण्ट हैं। बापना हुकमीचन्दजी प्रतिष्ठित और सभ्य युवक हैं। आपके छोटे भ्राता अमरचन्दजी ने पूना कॉलेज से १९३२ में एल० एल० बी० पास किया है, तथा इस समय बंगलोर में प्रेक्टिस करते हैं।

इसी तरह इस परिवार में बापना पनेचन्दजी के पौत्र रतनचन्दजी सिरोही के शहर कोतवाल रहे। इस समय इनके पुत्र सुशील लजी तहसीलदार हैं। बापना फत्ताजी के वश में बापना मुल्तानमलजी विद्यमान हैं।

नगर सेठ प्रेमचन्द धरमचन्द बापना, उदयपुर

इस परिवार का निवास उदयपुर ही है। आप स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में सेठ प्रेमचन्दजी बड़े विख्यात और नामी पुरुष हुए।

सेठ प्रेमचन्दजी बापना—आपको सवत् १९०८ में तत्कालीन महाराणा श्री स्वरूपसिंहजी ने नगर सेठ का सम्माननीय खिताब दिया। जब आपके नगरसेठाई का तिलक किया गया था तब

सेठ जोरावरमलजी का परिवार

सेठ जोरावरमलजी ऐसे समय मे अवतीर्ण हुए थे, जब कि भारतवर्ष की राजनैतिक स्थिति ब, तरह डांवाडोल हो रही थी। एक ओर औरंगजेब की मृत्यु हो जाने से दिल्ली का सिंहासन क्रमशः श्रीण बल होता चला जा रहा था। दूसरी ओर मुसलमानी शासन की इस कमजोरी से लाभ उठा कर महा राष्ट्रीय लोग भारत के भिन्न २ प्रांतो में लूट मार और खून खराबी मचा रहे थे, और तीसरी ओर अंग्रेज शक्ति धीरे २ अपना विकास करती जा रही थी। जिस समय अंग्रेज लोग राजस्थान में राजपूत राजाओं के साथ मैत्री स्थापित कर उनके पारस्परिक वैमनस्य को कम करने का प्रयत्न कर रहे थे, उस समय सेठ जोरावरमलजी का बीकानेर, मारवाड़, जैसलमेर, उदयपुर, इन्दौर इत्यादि रियासतो में अच्छा प्रभाव था। इसलिये ब्रिटिश सरकार के साथ इन रजवाड़ों का मेल कराने में इन्होंने बहुत सहायता की। खास कर इन्दौर राज्य के कई महत्वपूर्ण कार्यों में सेठ जोरावरमलजी का बहुत हाथ रहा। सन् १८१८ में ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के बीच अहदनामे करवाये। ब्रिटिश गवर्नमेंट और रियासतों के बीच जो अहदनामें हुए, उनमें कई मुश्किल बातों को हल करने में आपने अपने प्रभाव से बहुत सहायताएँ कीं। आपकी इन सेवाओं से प्रसन्न होकर ब्रिटिश गवर्नमेंट तथा होल्कर गवर्नमेंट ने आपको परवाने देकर सम्मानित किया।

ईसवी सन् १८१८ में कर्नल टॉड मेवाड़ के पोलिटिकल एजंट होकर उदयपुर गये। उस समय मेवाड़ की आर्थिक दशा बहुत बिगड़ गई थी। ऐसी विकट स्थिति में कर्नल टॉड ने महाराणा भीमसिंहजी को सलाह दी कि सेठ जोरावरमलजी ने इन्दौर की हालत सुधारने में रियासत को बहुत मदद दी है, इसलिये यहाँ पर भी उनको बुलवाया जाये। इस पर महाराणा ने सेठ जोरावरमलजी को इन्दौर से अपने यहाँ निमंत्रित किया, और उन्हें वहाँ बहुत सम्मान पूर्वक रखकर उनसे कहा कि "आप यहाँ पर अपनी कोठी स्थापित करें, और राज्य के कामों में जो खर्च हो वह दें, और उसकी आमदनी को अपने यहाँ जमा करें। महाराणा की इस आज्ञा को मानकर सेठ जोरावरमलजी ने उदयपुर में अपनी कोठी स्थापित की। नये गाँव बसाये, किसानों को सहायताएँ और लुटेरों को दंड दिलवाकर राज्य में शांति स्थापित करवाई। इनकी इन बहु मूल्य सेवाओं से प्रसन्न होकर २६ मई सन् १८२७ को महाराणा ने इन्हें पालकी और छड़ी का सम्मान और "सेठ" की सम्माननीय उपाधि प्रदान की तथा बदनोर परगने का पारसोली गाँव वंश परंपरा के लिये जागीरी में दिया। पोलिटिकल एजंट ने भी आपको अत्यन्त प्रबंध कुशल देख कर अंग्रेजी राज्य के खजाने का प्रबंध भी आपके सुपुर्द कर दिया।

महाराणा सरूपसिंहजी के समय में राज्य पर २०००००० बीस लाख रुपयों का कर्ज हो गया था, जिसमें अधिकांश सेठ जोरावरमलजी बापना का था। महाराणा ने आपके कर्ज का निपटारा करना

आ० आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। हरदा की जनता व आफीसरों में आप सम्माननीय व्यक्ति हैं। आपके छोटे आता माणकचन्दजी का जन्म संवत् १९५१ की बैशाख सुदी ७ को हुआ। इस परिवार के पास इस समय गाँवों का जमींदारी है। हरदा तथा आसपास के नामांकित कुटुम्बों में इस परिवार की गणना है। जैन मन्दिर की व्यवस्था भी आप लोगों के जिम्मे है। माणिकचन्दजी के पुत्र पूर्णचन्द्रजी बापना होते हैं।

सेठ हीरालाल रिखबचन्द बापना, कोलारगोल्डफील्ड

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान महत्पुर (होलकर स्टेट) का है। आप श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में जीवराजजी हुए। आप बड़े धार्मिक थे। आपके राजमलजी एवं हीरालालजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से सेठ राजमलजी ने संवत् १९४६ के लगभग पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज के सदुपदेश से दीक्षा ग्रहण की थी। आप बड़े धार्मिक तथा धर्मप्रेमी सज्जन थे।

सेठ हीरालालजी का जन्म संवत् १९१९ में हुआ। आप बड़े योग्य, समझदार तथा धर्म प्रेमी थे। आपका पंच पंचायती में काफी सम्मान था। आपने संवत् १९२० में बगलोर में फर्म स्थापित की थी जिसकी आपके हाथों से बहुत उन्नति हुई। आपके रिखबचंदजी एवं हरकचंदजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ रिखबचंदजी का जन्म सं० १९४० में हुआ। आप भी बड़े समझदार धार्मिक तथा व्यापार कुशल सज्जन हैं। आपने संवत् १९५७ में कोलार गोल्ड फील्ड में अपनी एक स्वतन्त्र फर्म स्थापित की। इस पर बैंकिंग तथा शेअर्स का व्यापार होता है। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम जयचंदजी, पारसमलजी, [illegible] तथा नेमीचंदजी हैं। सेठ हरकचन्दजी का जन्म संवत् १९६० का है। आप इस समय कोलार गोल्ड फील्ड में जनरल मर्चेन्टाईज की अलग दुकान करते हैं।

इस परिवार की ओर से वर्तमान में कोलार गोल्ड फील्ड में एक मंदिर बनवाया जा रहा है। कोलार गोल्ड फील्ड का ओसवाल समाज में यह परिवार प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ चांदणमलजी के दो पुत्र हुए—सेठ जुहारमलजी और सेठ जोगमलजी। सेठ जोगमलजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः श्री छगनमलजी, श्री सिरेमलजी, श्री देवीलालजी और श्री सम्राट सिंहजी हैं। श्री छगनमलजी के धनरूपमलजी और सावतमलजी नामक दो पुत्र हैं।

श्रीमान रायबहादुर सिरेमलजी बापना सी० आई० ई०

आप उन प्रसिद्ध पुरुषों में से हैं, जिन्होंने अपनी अखण्ड प्रतिभा, बुद्धिमत्ता, योग्यता और चतुराई से क्रमशः उन्नति करते हुए इन्दौर स्टेट के समान महत्वपूर्ण रियासत की प्राइम मिनिस्टरी को प्राप्त किया और उसका इतनी योग्यता से सचालन कर रहे हैं कि जिससे राज्य की प्रजा, महाराज और गवर्नमेण्ट तीनों ही अत्यन्त सन्तुष्ट हैं।

आपका जन्म सन् १८८२ की २४ अप्रैल को हुआ। सन् १९०२ में आपने बी ए और बी. एस सी की परीक्षाओं में एक साथ सफलता प्राप्त की। इनमे आप विज्ञान विषय में सारी युनिवर्सिटी में सर्व प्रथम आये, जिस पर प्रयाग विश्वविद्यालय ने आपको इलियट छात्रवृत्ति और जुबीली पदक प्रदान किया। सन् १९०४ में एल० एल० बी० की परीक्षा में आप सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुए। उसके पश्चात आपने अजमेर में वकालात आरम्भ की। तत्पश्चात आप इन्दौर राज्य की सेवा में प्रविष्ट हुए। सन् १९०७ में आप महिदपुर में डिस्ट्रिक्ट जज नियुक्त हुए, और दूसरे ही साल आप श्रीमत एक्स महाराजा तुकोजीराव के कानूनी अध्यापक बनाये गये। सन् १९१० में आप महाराजा के साथ यूरोप भी गये। उसके पश्चात् महाराजा के राज्याधिकार प्राप्त कर लेने पर आप द्वितीय प्राइवेट सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त हुए। इसके पश्चात् आप सन् १९१५ मे होम मिनिस्टर बने और १९२१ तक इस पद पर रहे। इसी साल जब आपने इस सर्विस का त्याग पत्र दिया, तब राज्य ने आपको खास तौर पर पेंशन दी। इसके बाद आप पटियाला के एक मिनिस्टर हुए। वहाँ आप बहुत लोक-प्रिय रहे। सन् १९२३ में महाराजा होलकर ने आपको पुन इन्दौर बुलाया और डेप्यूटी प्राइम मिनिस्टर के पद पर नियुक्त किया। सन् १९२६ फरवरी मास में आप एक्स महाराजा तुकोजीराव के द्वारा प्राइम मिनिस्टर के पद पर नियुक्त किये गये और उनके सिंहासन त्याग करने के बाद भी सरकार हिन्द ने आपको उसी पद पर कायम रूप से नियुक्त किया। उसके पश्चात महाराजा श्री यशवतराव बहादुर ने अधिकार प्राप्ति के पश्चात भी आप को इसी पद पर रक्खा। आपको सन् १९१४ में गवर्नमेण्ट ने "राय बहादुर" की पदवी से विभूषित किया। सन् १९२० में महाराजा तुकोजीराव बहादुर ने एतमाद-वजीर-उद्दौला के पद का सम्मान दिया। सन् १९३० में महाराज यशवन्तराव बहादुर ने वजीर-उद्दौला के पद से विभूषित किया। महाराजा यशवन्त

१९६० में हुआ है। इन तीनों बन्धुओं ने सम्वत् १९८३ से अमलनेर में कपड़ा, गिरवी और अनाज का शुरू किया। आप लोग यहां के व्यापारिक समाज मे अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं, तथा बड़े मिलनसार व स्वभाव के व्यक्ति हैं।

सेठ चुन्नीलाल हीरालाल बापना, भिनासर

इस परिवार वालों का मूल निवास स्थान जैसलमेर था। वहां से वे लोग कोटा होते हुए मालासर (बीकानेर) नामक स्थान पर आकर बसे। यहाँ आनेवाले सेठ ज्ञानमलजी थे। आपके पुत्र दुर्जनदासजी हुए। आप यहां खेती बाड़ी का काम करते थे। आपके गंगारामजी, छोगमलजी, लच्छीरामजी, चेतरूपजी और अमीचन्दजी नामक पांच पुत्र थे। आप सब लोग मालासर को छोड़कर भीनासर नामक स्थान में बस गये। इनमें से सेठ गंगारामजी बंगाल प्रान्त में आये। आपने कलकत्ता और गदगाँव (आसाम) में फर्म स्थापित की। कुछ समय पश्चात् उपरोक्त फर्म बन्द कर श्रीमंगल में छोगमल मूलचन्द के नाम से खोली। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके धनराजजी, चुन्नीलालजी और बख्तावरमलजी नामक पुत्र हैं। आप तीनों भाइयों का परिवार इस समय स्वतन्त्र व्यापार करता है।

सेठ धनराजजी आजकल धनराज जुहारमल के नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं। आपके जुहारमलजी, सुगनमलजी, दीपचन्दजी, मगनमलजी और छगनमलजी नामक पुत्र हैं। जुहारमलजी अलग व्यवसाय करते हैं। फर्म का सचालन सुगनमलजी करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजी व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आपने कलकत्ता, शाईस्तागंज और होबीगंज नामक स्थानों पर अपनी फर्म खोली। इनपर कपड़े, गल्ले, आढ़त और दुकानदारी का काम हो रहा है। शाईस्तागंज में इस परिवार की दो और फर्में हैं। सेठ चुन्नीलालजी के हमीरमलजी, हीरालालजी, सोहनलालजी और मोहनलालजी नामक पुत्र है। हमीरमलजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। शेष तीनों भाई शामिल हैं। आप लोग बाईस सम्प्रदाय को मानने वाले हैं।

सेठ छगनमल साहबराम बापना, धूलिया

इस परिवार का मूल निवास स्थान हरसोलाव (मारवाड़) का है। इस परिवार ने सेठ सवाईरामजी के पुत्र अडमलजी करीब ७५ वर्ष पूर्व देश से व्यापार के निमित्त फागणा (धूलिया के समीप) १,

कोठारी-चौपड़ा

...ठारी (चौपडा) गोत्र की उत्पत्ति

इस गोत्र की उत्पत्ति मण्डोवर के पडिहार राजपूतों से है। ऐसी किम्वदन्ती है कि संवत् ११५२ ... के तत्कालीन पडिहार राजा नाहड्राव ने तत्कालीन जैनाचार्य्य श्री जिन वल्लभसूरि की बहुत ... की और प्रार्थना की कि गुरुदेव मेरे कोई संतान नहीं है और नि सन्तान का जीवन इस ... व्यर्थ है, इस पर गुरुदेव ने अपना वासचूर्ण उन दोनों पति पत्नी के सिर पर डाल कर चार पुत्र ... का आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् संवत् ११६९ में आचार्य्य जिनदत्तसूरि ने उन सब को जैन ... में दीक्षित कर चौपडा कूकड चौपडा, गणधर चौपडा, चापडगाधी, वेडर साड आदि गोत्रों की स्थापना ...। इसी वंश में आगे चलकर सोनपालजी हुए इनके पौत्र ठाकुरसीजी बड़े प्रतापी और बुद्धिमान हुए। ... राजा राव चूडाजी के यहाँ कोठार का काम करते थे इससे कोठारी कहलाये। इसी खानदान में से ... कुछ लोग बीकानेर तक चले गये और कुछ नागौर में बसे। नागौर वाले खानदान में क्रम से ... और गंगारामजी नामक दो भाई हुए। इनमें कोठारी सांवतरामजी तो अजमेर में रह कर ... करते थे और कोठारी गंगारामजी युवावस्था ही से सैनिक का काम करते थे। अवसर पाकर यहाँ ... गंगारामजी स्वर्गीय महाराजा प्रथम तुकोजीराव के जमाने में, होलकरों की सेना में भर्ती हुए। तभी ... खानदान का पाया इन्दौर स्टेट में जमा।

रामपुरा भानपुरा का कोठारी खानदान

... श्री ...रामजी का परिवार

हिस्से की गटरें गिरती हैं, जिससे नदी का पानी बहुत गंदा हो जाता है और शहर की तन्दुरुस्ती में बहुत नुकसान होता है। अब ड्रेनेज सिस्टिम के हो जाने से नदी का पानी बहुत साफ रहेगा।

बापना साहब और वॉटर सप्लाय वर्क्स—पाठक जानते हैं कि गर्मी के दिनों में इन्दौर में पानी की कमी से बहुत बड़ा कष्ट हो जाया करता है। इस कष्ट से लोगों को जो असुविधाएँ होती हैं, उन पर यहाँ प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं। जनता की इस असुविधा को सदा के लिए मिटाने के हेतु स्टेट की ओर से बापना साहिब ने बड़े २ दिग्गज इंजीनियरों की सलाह से गंभीर नदी को रोककर एक बड़ा विशाल जलाशय जिसकी लम्बाई १२ मील और चौड़ाई २ मील होगी, बनवाया है, इस जलाशय का नाम यशवंत सागर रक्खा गया है। इसके द्वारा इन्दौर में जलपूर्ति की व्यवस्था की जावेगी। इस आयोजन के सफलता पूर्वक बन जाने पर यह न केवल इन्दौर की डेढ़ लाख जनता को ही पानी दे सकेगा, वरन् दो लाख जनता हो जाने पर भी यह सफलतापूर्वक सबको पानी सप्लाय करसकेगा। इस जलाशय से सब पानी बिजली के द्वारा लाया जायगा। इस विशाल कार्य में सारा खर्च करीब ७१॥ लाख रुपया होगा। यह एक ऐसा कार्य है, जिसने इन्दौर के इतिहास में बापना साहब का नाम अमर कर दिया है। कहा जाता है कि इसकी पाइप "साइफन स्पिल वे" जो होगा वह दुनियाँ में सबसे बड़ा है।

भारतीय रियासतों के प्रधान सचिवों में श्रीमान बापना साहब का बहुत ऊँचा आसन है। कई प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ आपके बुद्धि कौशल, आपके विशाल राजनैतिक ज्ञान और उलझनों को सुलझाने वाली आपकी सूक्ष्म दृष्टि की बड़ी प्रशंसा करते हैं। कई बड़े २ ब्रिटिश अधिकारी भी आपकी योग्यता के कायल हैं। इसी से गत राउण्डटेबिल कान्फ्रेन्स के लिये आप महाराजा की जगह चुने गये थे। वहाँ पर आपने बड़ी योग्यता के साथ कार्य किया।

यह कहने में तनिक भी अत्युक्ति न होगी कि बापना साहब सौजन्य की साक्षात् मूर्ति हैं। दया, सहानुभूति, उदारता आदि समुज्ज्वल गुण उनमें कूट २ कर भरे हुए हैं। हमने प्रत्यक्ष देखा है कि किसी दुखी को देख कर उनका अंतःकरण द्रवीभूत हो जाता है। खुद तकलीफ उठाकर भी वे मनुष्य की सहायता करने में तत्पर होजाते हैं। आज पचासों विद्यार्थी आपके गुप्तदान से विद्यालाभ कर रहे हैं। कई विधवाएँ आपके आश्रय पर रहती हैं। आपकी दानधारा भागीरथी गंगा की तरह सब को एकसा फायदा पहुँचाती है। आपको जाति पाँति का पक्षपात नहीं है। जो दीन दुखी और दरिद्री हैं सब जो सहायता के अधिकारी हैं आपके यहाँ से विमुख नहीं आते।

श्रीमान बापना साहब एक महान् कुल में जन्मे हैं। जैसा उनका घराना है वैसी ही उनके हृदय की विशालता है। संकीर्णता तथा जातीय विद्वेश के क्षुद्रभाव आप तक फटकने तक नहीं पाते। आप
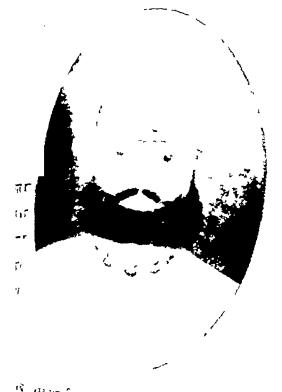
बापना परतापचन्दजी का खानदान

सेठ गुमानचन्दजी के पाँचवे पुत्र सेठ परतापचन्दजी बापना थे। आपके परिवार वाले इस समय रामपुरा और सन्धारा में रहते हैं। आपके परिचय और रुक्के परवानों के लिए हम आपके वंशजों के पास रामपुरा गये थे मगर दैवयोग से उस समय उनका मिलना न हो सका। इसलिए इस शाखा का पूरा इतिहास हमें प्राप्त न हो सका।

बापना परतापचन्दजी के पुत्र बापना हिम्मतरामजी बड़े वैभवशाली और प्रतापी पुरुष हुए। जैसलमेर रियासत में आपका बड़ा प्रभाव था। आपके द्वारा किये हुए धार्मिक कार्य्य आज भी आपकी अमर कीर्तिको घोषित कर रहे हैं। आपके द्वारा बनाए हुए अमर सागर वाले मन्दिर का परिचय हम ऊपर दे चुके हैं। आपको जैसलमेर रियासत से जरुवा नामक गाव जागीर में मिला था। जैसलमेर दरबार की आपने अपने यहाँ पधरावणी की थी। सेठ हिम्मतरामजी के जीवनमलजी, अखयदासजी, चितामण दासजी, और भगवानदासजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ चितामणदासजी के पुत्र कन्हैयालालजी और धनपतलालजी इस समय सन्धारा में निवास करते हैं।

बापना हिम्मतरामजी के अतिरिक्त सेठ परतापचन्दजी के जेठमलजी, नथमलजी सागरमलजी और उम्मेदमलजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें से सेठ नथमलजी के पुत्र सेठ केशरीमलजी हुए। आप रामपुरा में निवास करते थे। आपके लूणकरणजी और खेमकरणजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से खेमकरणजी इस समय विद्यमान हैं। रामपुरे में आपकी हवेली बनी हुई है। सेठ सागरमलजी के बोधमलजी और संगीदासजी नामक दो पुत्र हुए।

राय साहब कृष्णलालजी बापना, बी० ए०-जोधपुर

इस खानदान के पूर्वज लगभग १५० । २०० वर्ष पूर्व बडलू से जोधपुर आकर आबाद हुए। इस परिवार में मेहता कालूरामजी बापना बड़े प्रतापी व्यक्ति हुए।

मेहता कालूरामजी बापना—आप जोधपुर की जनता में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। जोधपुर शहर की जनता आपको काका साहब के नाम से व्यवहृत करती थी। जब जोधपुर के फौज बख्शी (कमांडर इन चीफ) सिंघवी फोजराजजी का सम्वत १९१२ की आषाढ़ बदी २ को स्वर्गवास होगया, और उनका पद उनके पुत्र सिंघवी देवराजजी के नाम पर हुआ, उस समय सिंघवीजी की ओर से मेहता विजयमलजी मुहणोत तथा

है। उन्होंने एक ओर तो बागी लोगों के पैरों को वहाँ नहीं जमने दिया, दूसरी ओर बागियों का पीछा करने वाली बृटिश फौज को रसद और दूसरा सामान पहुँचाने की उत्तम व्यवस्था की और तीसरी ओर भिन्न भिन्न स्थानों पर पड़ी हुई बृटिश सेना को, बागी लोगों की गति विधि और उनके मुकामों का संवाद पहुँचाने की व्यवस्था भी आपने की। ये सब काम आपने अत्यन्त फुर्ती और सावधानी से किये। इसके उपलक्ष में आपको कमांडिंग आफीसर के द्वारा लिखे हुए कई सार्टिफिकेट् भी प्राप्त हुए। इसी सम्बन्ध में नीमच के ... साहब ने कमिश्नर अजमेर के जरिये सन् १८५८ में जो रिपोर्ट की, उसका मतलब इस प्रकार है—

इन्दौर के वकील ने बागी लोगों के पाटन पहुँचते समय प्रगट किया था कि कोठारी शिवचन्दजी ... आदमियों के साथ सधारे पर।डेरा किया है। और वहाँ बहुत अच्छा इन्तजाम कर रक्खा है। कोठारी ... इन्दौर रियासत में बहुत मर्द होशियार और कारगुजार व्यक्ति है। सर हेमिल्टन भी आपके कामों से बहुत खुश हैं। जिस समय हम मरहद के फैसले में गये थे उस समय कोठारीजी से मिलकर हमारी तबियत बहुत प्रसन्न हुई। गदर के समय में इन्दौर, रियासत का अच्छा बंदोबस्त रखते हुए हमको आगे ... में बागियों की खबर देकर बहुत खुश रक्खा। वास्तव में चन्द्रावतों ने रामपुरे में बड़ा सिर उठाया था, मगर कोठारीजी ने अपनी प्रबन्ध कुशलता से रामपुरा को इन्दौर रियासत में बनाए रक्खा। हमने ... महाराजा व बृटिश गवर्नमेण्ट का खैरख्वाह समझ कर यह रिपोर्ट किया है।
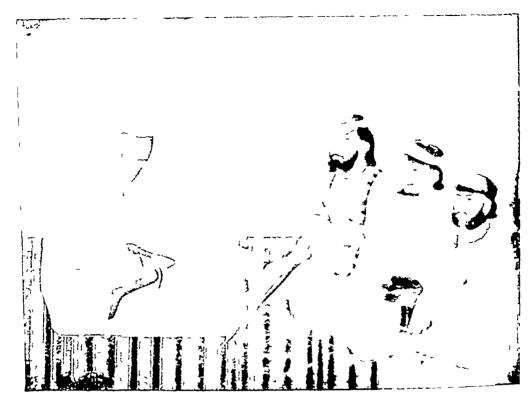
स्वर्गीय महता कालूरामजी बापना, जोधपुर
(अपने पुत्र मेहता रामलालजी, मेहता मुकुन्दलालजी तथा मेहता लछमणलालजी सहित)

आपको राय साहब की पदवी से सम्मानित किया है। आपके विष्णुलालजी, अमृतलालजी और कँवरलालजी नामक ३ पुत्र हैं।

विष्णुलालजी बापना जयपुर स्टेट के स्टेशनरी डिपार्टमेण्ट के इंचार्ज हैं। इनके श्यामसुन्दरलालजी, जगदीशलालजी, दामोदरलालजी और त्रिभुवनलालजी नामक ४ पुत्र हैं। अमृतलालजी बापना बम्बई से एम० बी० बी० एस० की परीक्षा पास करते ही जोधपुर राज्य में असिस्टेंट सर्जन हुए। इसके बाद आपने बासवाड़े में चीफ मेडिकल ऑफिसर के पद पर कार्य्य किया। इस समय आप किशनगढ़ स्टेट में चीफ मेडिकल ऑफिसर तथा सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल के पद पर हैं। आप मिलनसार और लोकप्रिय सज्जन हैं। आपके पुत्र चांदबिहारीलालजी और बृजबिहारीलाल हैं। कँवरलालजी बापना बी० ए० ने सन् १९२१ में एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की। बाद आप अजमेर में वकालत करने लगे। इसके बाद आप जयपुर में मुंसिफी तथा जजी के पद पर कार्य्य करते रहे और इस समय सन १९२७ से जयपुर में पब्लिक प्रासिक्यूटर हैं। आप अनाथालय, आर्य्य समाज, विधवा विवाह सहायक सभा, बाय स्काउट समिति आदि संस्थाओं में भाग लेते रहते हैं। आप शेखावाटी बोर्डिंग के सुपरिटेन्डेण्ट भी रहे थे। आपके सामाजिक विचार प्रगति शील हैं। आपके पुत्र श्यामबिहारीलाल हैं।

बापना हुकमीचन्दजी का खानदान, सिरोही

इस परिवार के पूर्वज बापना कलाजी सिरोही के पास दवानी में रहते थे। वहाँ के तत्कालीन जागीरदार से आपकी अनबन हो गई, अतएव आप अपने पुत्र हीराजी, अजबाजी, फत्ताजी, चताजी और सूराजी को लेकर सिरोही चले आये। तबसे आपका परिवार सिरोही में निवास करता है, तथा दवानी वालों के नाम से मशहूर है।

बापना चिमनमलजी—बापना हीराजी के भूताजी, ऊमाजी, हेमराजजी और खूबाजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें हेमराजजी के पुत्र चिमनमलजी, सिरोही स्टेट में दीवान रहे। इसके सम्मान स्वरूप उनका हाउस टैक्स माफ हुआ। वर्तमान में इस परिवार में ऊमाजी के पौत्र कुन्दनमलजी और मिश्रीमलजी, चिमनमलजी के पुत्र ताराचन्दजी और खूबाजी के पुत्र लखमीचन्दजी विद्यमान हैं। बापना कुन्दनमलजी जोधपुर ऑडिट आफिस में सर्विस करते हैं।

बापना जालिमचन्दजी—बापना अजबाजी के पश्चात क्रमश जोरजी, जेताजी और मूलचन्दजी हुए। बापना मूलचन्दजी के जुहारमलजी, लालचन्दजी, जालिमचन्दजी, नेनमलजी और चन्दनमलजी नामक

अक्षत के स्थान में मोती चेपे गये थे। इतना बड़ा सम्मान रियासत में केवल दीवान को ही मिलता है। साथही आपको हाथी और लवाजमा भी बख्शा गया। संवत् १९१७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चम्पालालजी बापना भी प्रतिष्ठित महानुभाव थे। आपका संवत् १९४७ में स्वर्गवास हुआ। आपके फर्म के कारवार को आपके ज्येष्ठ पुत्र सेठ कन्हैयालालजी ने सम्हाला। आप संवत् १९६१ में स्वर्गवासी हुए।

नगरसेठ नन्दलालजी बापना—वर्तमान में नगरसेठ कन्हैयालालजी के पुत्र नगरसेठ नन्दलालजी बापना विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३० के अषाढ़ मास में हुआ। उदयपुर की पंचायत में आपका पहला स्थान है। महाराणा की ओर से आपको पूर्ववत् सम्मान प्राप्त है। आपके पुत्र कुँवर गणेश लालजी बी० ए० एल० एल० बी० मेवाड़ में हाकिम हैं, तथा छोटे पुत्र कुँवर मनोहरलालजी तथा गणेश लालजी भी उच्चशिक्षा प्राप्त सज्जन हैं। इस समय आपके यहाँ जमींदारी गहनावट और जागीरदारों से लेनदेन का काम होता है।

सेठ छोगमल प्रतापचन्द बापना, हरदा

इस परिवार के पूर्वज सेठ अचलदासजी बापना लगभग १०० साल पूर्व अपने निवास स्थान मेड़ता से व्यवसाय के निमित्त हरदा आये। आप बड़े कार्य चतुर और बुद्धिमान पुरुष थे। आपने जंगल में दो-तीन गाँव आबाद किये और वहाँ लोगों को बसाया।

सेठ शोभाचन्दजी बापना—आप अचलदासजी बापना के पुत्र थे। आपने अपने खानदान की जमींदारी सम्पत्ति को बढ़ाने की ओर काफी लक्ष दिया और १५-१६ गाँवों में अपनी मालगुजारी तथा लेनदेन का कारबार बढ़ाया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के महानुभाव थे। संवत् १९५२ में आपने हरदा में एक जैन मन्दिर बनवाना आरम्भ किया था। आप हरदा की जनता में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। सर्व साधारण के लाभार्थ आपने यहाँ एक भारी कुआँ खुदवाया था। संवत् १९६२ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ छोगमलजी बापना—आप सेठ शोभाचन्दजी बापना के पुत्र थे। आपका जन्म संवत् १९१८ में हुआ। आपने अपने पिताजी द्वारा बनवाये हुए जैन मन्दिर की संवत् १९६७ में प्रतिष्ठा कराई। पिताजी के बाद आपने मालगुजारी के गाँवों में भी उन्नति की, हरदा की जनता में आप सम्माननीय व्यक्ति माने जाते थे। संवत् १९७३ की काती वदी ३ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र प्रतापचन्दजी तथा माणकचन्दजी विद्यमान हैं।

बापना प्रतापचन्दजी का जन्म सवत् १९५२ की भादवा सुदी ४ को हुआ। आप सन् १९११

गैर राज्य की ओर से आपकी धर्मपत्नी को ५०) मासिक का आजीवन के लिये अलाउन्स भी कर दिया ,जा इस समय आपकी पुत्र वधु को मिल रहा है। आपने इन्दौर नरेश यशवतराव होल्कर के विवाहो- त्सव पर अत्यन्त सुचारु रूप से व्यवस्था की, जिससे प्रसन्न होकर होल्कर नरेश ने आपको ७०००) इनाम में प्रदान किये थे। आपके संतोषचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। आप भी कई स्थानों पर अमीन रहे थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

कोठारी हीराचन्दजी के भाई दीपचन्दजी भी कई स्थानों पर अमीन रहे। इस समय आप बड़वाह (...) में अमीन है। आपके एक पुत्र है। इसी प्रकार कोठारी देवीचन्दजी भी सरकारी सर्विस करते हैं। ... भी एक पुत्र है।

सेठ रामचन्द्र फूलचन्द कोठारी, भोपाल

इस कोठारी परिवार का मूल निवासस्थान बीकानेर है। वहाँ से १०० साल पूर्व कोठारी ...चन्दजी धार गये और वहां उन्होंने व्यापार की अच्छी उन्नति कर धार, बदनावर, आगरा, ... आदि स्थानों में १५ दुकानें खोलीं। धार से कोठारी करमचन्दजी के पुत्र रामचन्द्रजी भानपुरा (... १८८८) गये। इनके कनकमलजी, हेमचन्दजी (उर्फ सावंतरामजी), नेमीचन्दजी व किशनचन्दजी ... ४ पुत्र हुए। इनमें से कोठारी नेमीचन्दजी सम्वत् १९३४-३५ में भानपुरा से भोपाल आये तथा ... सावंतमलजी और उनके भ्राता वहां रहते रहे। कोठारी सावंतरामजी का विस्तृत परिचय हम ... दे चुके है। कोठारी कनकमलजी के पुत्र कानमलजी और पौत्र जवानमलजी व पानमलजी हुए। इनमें से ... भोपाल में नेमीचन्दजी के पुत्र मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक आये तथा पानमलजी जोधपुर में ... सांभियों की दुकान पर काम करते हैं।

सेठ तेजमल हीराचन्द बापना, सादड़ी

इस खानदान के पूर्वज बापना फत्ताजी के पुत्र गंगारामजी ने सवत् १८५० के लगभग अ दुकानें रतलाम और इन्दौर मे खोलीं। इनपर अफीम का व्यापार होता था। इस व्यापार में आपने अ सम्पत्ति कमाई थी। आपका स्वर्गवास सम्वत् १८८५ में हुआ। उस समय आपके पुत्र बापना आलमचं नाबालिग थे, अतएव सब दुकानें उठा दी गई। आलमचदजी के हसराजजी, पूनमचन्दजी, हुकमीचन्द निहालचन्दजी, हजारीमलजी तथा तेजमलजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें हंसराजजी के पुत्र बालचन्द बालचंद बख्तावरमल के नाम से मुजफ्फरपुर में व्यापार करते है। हुकमीचन्दजी के पुत्र सागरम कलकत्ते में व्यापार करते है, इनके पुत्र फूलचन्दजी सादडी के पहिले ओसवाल मेट्रिक्यूलेट है।

बापना आलमचन्दजी के सबसे छोटे पुत्र तेजमलजी ने सवत् १९३० में मयदर (बर्मा) दुकान खोली। आप विद्यमान है। आपके हीराचदजी, चुन्नीलालजी तथा फूटरमलजी नामक तीन पुत्र है। बापना हीराचन्दजी का जन्म १९४९ में हुआ। आपने १९६४ में कोयम्बटूर में 'हीराचंद चुन्नीलाल' नाम से जरी काठी का व्यापार शुरू किया। संवत् १९८० में बापना हीराचदजी ने सादडी में सर्व प्र "वर्द्धमान तप की ओली" की। इसमें आपने लगभग ५० हजार रुपये लगाये। सादडी की तमाम आ संस्थाओं में आपका सहयोग रहता है। आप "धर्मचद दयाचद" फर्म, और श्री आत्मानन्द जैन विद्या कमेटी के मेम्बर हैं। इसी प्रकार न्यात का नोहरा और पांजरापोल के सेक्रेटरी है। आपके छोटे भ्र चुन्नीलालजी व्यापार में सहयोग लेते हैं और फूटरमलजी, बापना हिम्मतमलजी के यहाँ दत्तक गये हैं।

सेठ लालचंद जेठमल बापना, अमलनेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान खिचंद (मारवाड) है। आप स्थानकवासी आम्नाय माननेवाले है। इस परिवार के पूर्वज सेठ मगनीरामजी के हीरचदजी, सुजानमलजी, चादमलजी, अगरचन्द तथा माणकचंदजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में से सेठ सुजानमलजी, चादमलजी अगरचन्दजी त माणकचन्दजी सवत् १९२५ मे व्यापार के लिये मद्रास गये, तथा वहा गिरवी का व्यापार किया। सेठ चांदमलजी छोटी वय में ही स्वर्गवासी हो गये। सवत् १९५७ तक इन बन्धुओं का अ मद्रास में रहा।

सेठ सुजानमलजी विद्यमान हैं। आपकी वय ७१ साल की है। आपके पुत्र लालचन्द जेठमलजी तथा जसराजजी हैं। इनमें लालचन्दजी, चादमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। आपका ज

दौर राज्य की ओर से आपकी धर्मपत्नी को ५०) मासिक का आजीवन के लिये अलाउन्स भी कर दिया |, जो इस समय आपकी पुत्र वधु को मिल रहा है। आपने इन्दौर नरेश यशवतराव होल्कर के विवाहो-त्व पर अत्यन्त सुचारु रूप से व्यवस्था की, जिससे प्रसन्न होकर होल्कर नरेश ने आपको ७०००) निम में प्रदान किये थे। आपके संतोषचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। आप भी कई स्थानों पर अमीन रह चुके थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

कोठारी हीराचन्दजी के भाई दीपचन्दजी भी कई स्थानों पर अमीन रहे। इस समय आप बड़वाह (...ार) में अमीन हैं। आपके एक पुत्र है। इसी प्रकार कोठारी देवीचन्दजी भी सरकारी सर्विस करते हैं। ... भी एक पुत्र हैं।

सेठ रामचन्द्र फूलचन्द कोठारी, भोपाल

इस कोठारी परिवार का मूल निवासस्थान बीकानेर है। वहाँ से १०० साल पूर्व कोठारी ...चन्दजी धार गये और वहाँ उन्होंने व्यापार की अच्छी उन्नति कर धार, बदनावर, आष्टा, ...ता आदि स्थानों में १५ दुकानें खोलीं। धार से कोठारी करमचन्दजी के पुत्र रामचन्द्रजी भानपुरा (...ौर स्टेट) गये। इनके कनकमलजी, हेमचन्दजी (उर्फ सावंतरामजी), नेमीचन्दजी व किशनचन्दजी ... ४ पुत्र हुए। इनमें से कोठारी नेमीचन्दजी सम्वत् १९३४-३५ में भानपुरा से भोपाल आये तथा ...ारी सावंतमलजी और उनके भ्राता वहा रहते रहे। कोठारी सावंतरामजी का विस्तृत परिचय हम ...द चुके हैं। कोठारी कनकमलजी के पुत्र कानमलजी और पौत्र जवानमलजी व पानमलजी हुए। इनमें से ...मलजी भोपाल में नेमीचन्दजी के पुत्र मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक आये तथा पानमलजी जोधपुर में ...र वाले सोनियों की दुकान पर काम करते हैं।

कोठारी नेमीचन्दजी का शरीरान्त संवत् १९४६ में हुआ। आपके पुत्र मूलचन्दजी का जन्म ...् १९१६ में हुआ। इस समय आप बीकानेर में ही निवास करते हैं। कोठारी जवानमलजी का ...् १९५७ में हुआ। आपका कुटुम्ब यहा की ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित समझा जाता है। ... यहाँ रामचन्द्र फूलचंद के नाम से सराफी का व्यापार होता है।

आये और वहाँ पर अपनी साधारण दुकान स्थापित की। आपका संवत् १९१० में स्वर्गवास हो गया। आपके साहबरामजी, धीरजमलजी, बख्तावरमलजी तथा बनेचन्द्जी नामक चार पुत्र हुए। आप सब भाइ के हाथों से फर्म की विशेष उन्नति हुई।

सेठ साहबरामजी ने फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति पर पहुँचाया। आपका गवर्नमेंट में काफी सम्मान था। आप संवत् १९७५ मे स्वर्गवासी हुए। आपके स्वर्गवासी होने के बाद आपके भाई अलग २ व्यापार करने लगे। सेठ साहबरामजी के छगनमलजी, मूलचंदजी एवं मानकचंदजी ना तीन पुत्र विद्यमान है।

सेठ छगनमलजी का जन्म संवत् १९४६ मे हुआ। आपने संवत १९७७ में धूलिया में स्वतन्त्र फर्म छगनमल साहबराम के नाम से अलग स्थापित की। आप बडे योग्य, व्यापार कुशल समझदार सज्जन हैं। आपके धार्मिक विचार उदार है। आप श्री धूलिया पांजरापोल के तथा प्राणी औषधालय के पाँच सालों तक सभापति रहे है। आपकी फर्म पर रुई तथा आढ़त का व्यवसाय है। आपके उत्तमचन्दजी, सींचियालालजी, मिश्रीलालजी तथा सुवालालजी नामक चार पुत्र हैं। से उत्तमचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं। सेठ माणकचन्दजी के मोहनलालजी आदि पाँच पुत्र है।

सेठ कुन्दनजी कालूराम बापना, मंदसौर

यह परिवार लगभग २०० वर्ष पूर्व पाली से इधर आया और डेढ़सौ वर्षों से मन्दसौर निवास कर रहा है। संवत् १९०३-४ में सेठ कुन्दनजी बापना ने इस दुकान का स्थापन किया। बाद कालूरामजी ने कार्य सम्भाला। वर्तमान में सेठ कालूरामजी के पौत्र सेठ ओंकारलालजी बापना फर्म के संचालक हैं। आप शिक्षित एवं उन्नत विचारों के सज्जन हैं। आपकी बम्बई मे ओंकरलाल मिश्री के नाम से आढ़त की दुकान है। आपके पुत्र मिश्रीलालजी हैं। यह परिवार मन्दसोर में अच्छा प्रतिष्ठि आपके यहाँ हुडी, चिट्ठी, सराफी और रुई का व्यापार होता है।

चिन्तामणिजी के मंदिर को भेंट किया। आपने बीकानेर की श्री जैन पाठशाला को ५१००), कलकत्ता मित्र मंडल को ३१००), पूना भंडारकर पुस्तकालय को १०००), इसी प्रकार और भी कई कार्यों को सहायता पहुँचाई है। आपका विद्या की ओर भी अच्छा ध्यान है। आपने जैन साहित्य के प्रचारार्थ प० काशीप्रसादजी जैन को ५ हजार रुपया प्रदान किया है। इसी प्रकार आप समय २ परगुप्तदान करते रहते हैं। आपके यहाँ से बहुतसी अनाथ विधवाओं को सहायता पहुँचाई जाती है। लिखने का मतलब यह है कि आप उदार और दानी सज्जन हैं। आपका स्वभाव मिलनसार है। आपको देशी कारीगरी का बड़ा शौक है। आपने अपने यहाँ कई चाँदी सोने की कलमय वस्तुओं का बहुमूल्य संग्रह कर रक्खा है। आपका मकान एक दर्शनीय मकान है। आपके यहाँ एक देशी किंवाड़ जोड़ी को करीब २ साल से कारीगर बना रहे हैं। इस किंवाड़ जोडी की कारीगरी देखते ही बनती है। इसी प्रकार आपके मकान के छतों एवं दीवालों पर का सुनहरी काम तथा चित्रकारी दर्शनीय है। आपका व्यापार कलकत्ता में १०० क्रास स्ट्रीट में होता है।

सेठ जतनमल मानमल कोठारी (शाह) बीकानेर

यह हम ऊपर लिख चुके हैं कि सूरजमलजी कोठारी के ७ पुत्र थे। जिनमें से पृथ्वीराजजी के वंशज कोठारी कहलाते हैं और शेष भ्राताओं का परिवार शाह कोठारी कहलाता है। यह परिवार भी कोठारी है। इस परिवार का पुराना इतिहास बड़ा गौरव-पूर्ण है। इस परिवार में ऐसे २ व्यापार कुशल व्यक्ति हो गये हैं, जिन्होंने अपनी अपूर्व व्यापार-चातुरी और अद्भुत प्रतिभा के बलपर तत्कालीन व्यापारिक फर्मों में अपनी फर्म का एक खास स्थान बना रक्खा था। इस परिवार के पुरुषों की फर्मों का हेड आफिस बीकानेर ही था। करीब ३०० वर्ष पूर्व इस परिवार की फर्म आमेर में थी। वहाँ उस समय इसका नाम ...सिंह दानसिंह नाम पड़ता था। इसके बाद जबकि जयपुर बसा तब यह फर्म भी वहाँ से जयपुर आ गई। इसी प्रकार इस परिवार की उस समय इन्दौर, पूना, ग्वालियर, उदयपुर, अमरावती आदि बड़े २ व्यापारिक केन्द्रों में फर्में खुली हुई थीं। जब बम्बई पोर्ट कायम हुआ तब इस परिवार की पूना की फर्म बम्बई लाई गई। इन्दौर वाली फर्म से स्टेट को काफी आर्थिक सहायता दी गई थी। इसके फल स्वरूप इस परिवार वालों के पास खास रुक्के मौजूद हैं। बीकानेर दरबार ने भी समय २ पर इस परिवार वालों को साहुकारी के खास रुक्के प्रदान कर सम्मानित किया है। उदयपुर और ग्वालियर दरबार से भी कई रुक्के प्राप्त हुए हैं। लिखने का मतलब यह है कि इस परिवार का व्यापारिक इतिहास बहुत गौरव मय स्थिति में रहा है।

आपको एक पालकी और लवाजमा बख्शा गया, जिसके खर्च के लिये रामपुरा जिले की आमदनी से ११०) की वार्षिक नेमणूक दी गई। उसके पश्चात् १५००) वार्षिक की एक और नेमणूक आपको प्रदान की गई। आपके पास रामपुरा जिले के कई गाँव इजारे में थे और उनकी आमदनी से ये सिपाहियों का एक मजबूत दल रखते थे, जो कि उस कठिन जमाने में शान्ति बनाये रखने के लिये आवश्यक था। सन् १८३१ में आपका स्वर्गवास हुआ।

कोठारी शिवचन्दजी—कोठारी भवानीरामजी के पुत्र कोठारी शिवचन्दजी का जन्म संवत् १८१९ में हुआ। आपने अपने पिताजी के नाम को केवल कायम ही न रक्खा, बल्कि अपनी बहादुरी, और प्रबन्ध कुशलता से बहुत अधिक चमका दिया। आपने रामपुरा भानपुरा जिले की प्रजा में चैन और शांति स्थापित की। ईस्वी सन् १८३५ से १८४३ तक इस जिले का इन्तजाम शिवचन्दजी के पास रहा। इस समय मे उस जिले की आमदनी में भी बहुत तरक्की हुई। सरकार ने आपकी इस खिदमत की बहुत कदर की और इसके उपलक्ष में तत्कालीन रेजिडेंट सर रावर्ट हेमिल्टन की शिफारिश पर आपको मोजा सगोरिया और खजूरी रूँडा पुश्तेनी इस्तमुरारी पट्टे पर बख्शा।

ईसवी सन् १८४४ में रामपुरा डिस्ट्रिक्ट इंतजामी सुभीते के लिहाज से २ हिस्सों में बाट दिया गया। कोठारी शिवचन्दजी को उत्तरीय हिस्से का अर्थात् भानपुरा डिस्ट्रिक्ट का काम सौंपा गया और वे जीवन पर्यंत इसी जिले के इंतजाम में रहे। भानपुरे की प्रजा उन्हें अत्यन्त प्रेमकी दृष्टि से देखती था। आज भी भानपुरे जिले के घर घर २ में उनकी गुण गाथाएँ बड़े आदर और प्रेम से गायी जाती हैं।

ऐसा मालूम होता है कि सन् १८४८ मे आप इन्दौर रेसिडेंसी मे दरबार की तरफ से वकील मुकर्रर किये गये। कहना न होगा कि इस नाजुक और जिम्मेदारी पूर्ण पद पर आपने बहुत संतोषजनक रूप से काम किया और अच्छी कीर्ति सम्पादन की। आपके कामों से सर हेमिल्टन बड़े प्रसन्न रहते थे। इसी समय में आपने एक प्रख्यात डाकू फकीर महम्मद मकरानी को गिरफ्तार किया, जिसके उपलक्ष में बम्बई गवर्नमेन्ट ने आपको एक बहुमूल्य खिल्लत बख्शी। इस विषय में सर हेमिल्टन ने ता० ११ मई सन् १८४९ को एक धन्यवाद पत्र लिखा। इसके सिवाय और भी कई अगरेज अफसरों से आप को अच्छे सर्टिफिकेट मिले हैं।

कुछ समय के पश्चात् गदर के इतिहास प्रसिद्ध दिन आये। उस समय में भानपुरा डिस्ट्रिक्ट, अराजक एवं असंतोषी लोगों का खास निवास स्थान था। बागियों की फोज से सारा जिला बड़े संकट में आ गया था। इस समय कोठारी शिवचन्दजी ने जिस बुद्धिमानी, चतुराई और राजनीतिज्ञता से वहाँ का इन्तजाम किया उससे इनकी योग्यता और प्रबन्ध कुशलता का पता बहुत आसानी से लग जाता

…मलजी कोठारी (जतनमल मानमल) बीकानेर

जालिमसिंहजी कोठारी अजमेर

…मलजी कोठारी

सेठ …मलजी कोठारी …

कोठारी रणधीरोत

कोठारी रणधीरोत गौत्र की उत्पत्ति

कोठारी रणधीरोत गौत्र की उत्पत्ति के विषय में यह दन्त कथा प्रचलित है कि मथुरा के राजा ...सन-अखेपुरा राठोड मेड्या—को संवत् १००१ में भट्टारक श्री धनेश्वरसूरिजी ने नेणखेड़ा नामक ...में प्रतिबोध देकर जैनी बनाया और ओसवाल जाति मे सम्मिलित किया। इसी नेणखेडा गाँव मे ...ऋषभदेवजी का विशाल मन्दिर बनवाने के कारण इनका "ऋषभ" गौत्र हुआ। साथ ही स्थान २ ...श्री ऋषभनाथजी के निमित्त कोठार शुरू करवाने से कोठारी कहलाये। राजा पाडूसेन की चौबीसवीं, ...सवी पुश्त म रणधीरजी नामक एक प्रतापी पुरुष हुए। इन्हीं रणधीरजी के वशज रणधीरोत कोठारी ...गोत चल आ रहे हैं।

उदयपुर का कोठारी खानदान

कोठारी रणधीरजी की तेरहवीं पुश्त में कोठारी चोलाजी हुए। इनके पुत्र माडणजी संवत् १... म राठोड कूपाजी की बेटी के साथ, जो महाराणा उदयसिंहजी के साथ ब्याही गई थी, दहेज मे ...। संवत् १६२७ मे महाराणा ने इन्हें डहलाणा नामक एक गाँव जागीर स्वरूप प्रदान किया। संवत् ... म महाराणा अमरसिंहजी ने इसे वापस ले लिया, मगर महाराणा जगतसिंहजी ने सिंहासनारूढ़ होते ... गाँव के अतिरिक्त आसाहोली नामक एक और गाँव जागीर में प्रदान किया। कोठारी माडणजी की ... पुश्त म कोठारी खेमराजजी और हेमराजजी हुए। महाराणा ने इन्हें संवत् १७८१ में हाथी का ...न प्रदान किया।

बच्चे २ के मुँह पर है। इतना होते हुए भी उनकी उदारता तथा दया पूर्ण व्यवहार जिले की अराजकता को दवाने में बाधारूप नहीं हुआ। अराजकों, धाड़ेतियों और लुटेरों को वे कठोर दंड देते थे, जिनकी कहानियाँ भानपुरा के पुराने लोग आजभी बड़ी दिलचस्पी के साथ कहा करते हैं।

इन्दौर दरबार ने आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर मौजे सगोरिया को इस्तमुरारी पट्टे से बतौर जागीर में बख्शा जो आज भी उनके वंशजों के पास है।

कोठारी सावंतरामजी ने सन् १८३९ में अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में उनके दाह संस्कार की जगह गरोठ में एक सुंदर छत्री बनवाई जिसके खरच के लिये सरकार की ओर से २५ बीघा इनामी जमीन और १००) सालियाना बख्शा गया। इस रकम के कम पड़ने की वजह से ६ बीघा जमीन और बख्शी गई। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहिले आप स्टेट कौंसिल के मेम्बर भी बनाये गये। आपका स्वर्गवास सन् १९०० में हुआ। कोठारीजी की भानपुरा में भी एक सुन्दर छत्री बनी हुई है जिसके साथ एक बगीचा भी है।

कोठारी सावंतरामजी के कोई संतान नहीं हुई अत आपके नाम पर कोठारी शिवचन्दजी को दत्तक लिये गये। आप इस समय विद्यमान हैं। आप इस खानदान की पुश्तैनी जायदाद और आमदनी के मालिक हैं। आप इन्दौर में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और जवाहरखाना कमेटी के मेम्बर हैं। आपको स्टेट से "सरदार राव' का सम्माननीय खिताब भी प्राप्त है। दरबार में भी आपको बैठक प्राप्त है। आपके इस समय २ पुत्र हैं।

कोठारी गंगारामजी का खानदान

महाराजा होलकर की सेना में दाखिल होने के पश्चात् आपने कई लड़ाइयों में बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया और अपनी योग्यता से बढ़ते २ जावरे के गवर्नर के पद तक को आपने प्राप्त किया। महाराजा यशवतराव होल्कर ने अधिकारारूढ़ होने पर आपको रामपुरा भानपुरा आदि कई स्थानों का गवर्नर नियुक्त किया। * उस समय में आपकी अधीनता में दस हजार सेना और दस तोपें रहती थीं तथा रेव्हेन्यु, दीवानी, फौजदारी इत्यादि सब प्रकार के अधिकार भी आपको दिये गये थे। इन परगनों में आपने शान्ति स्थापन का बहुत प्रयत्न किया और समय २ पर कई लड़ाइयाँ लड़कर अपनी बहादुरी और राजनीतिकुशलता का परिचय दिया। आपकी वीरता और कारगुजारियों का वर्णन इन्दौर राज्य के हुजूर कार्यालय के रिकार्डों में, सरजान मालकम के मध्य भारत के इतिहास में तथा और भी कई ग्रन्थों में मिलता है।

* देखिये मि० एम्बरे मेक का चीफस आफ सेण्ट्रल इण्डिया पृष्ठ ३०।

कोठारी केशरीसिंहजी का खानदान

कोठारी केशरीसिंहजी—आप बड़े स्पष्ट वक्ता, निर्भीक, इमानदार, अनुभवी, स्वामि-भक्त और रम कुशल व्यक्ति थे। आपने अपने जीवन-काल में अनेक राजनैतिक खेल खेले। आप अपनी चतुराई बुद्धिमानी से क्रमशः बढ़ते २ दीवान के पद तक पहुँचे। आपका विशेष इतिहास इसी ग्रन्थ के नैतिक और सैनिक महत्व' नामक अध्याय में भलिभाँति दिया जा चुका है। आपके कोई पुत्र न होने कारण कोठारी बलवन्तसिंहजी को दत्तक लिया।

कोठारी बलवंतसिंहजी—महाराणा सज्जनसिंहजी ने संवत् १९२८ में आपको महकमा देवस्थान हाकिम नियुक्त किया। इसके पश्चात् जब महाराणा फतेसिंहजी सिंहासनारूढ़ हुए तब आपने महाराणा को महद्राज सभा का मेम्बर बनाया। इसी समय महाराणा ने आपको सोने का लंगर प्रदान सम्मानित किया। इसके बाद आपको स्टेट बैंक का काम दिया गया। राय मेहता पन्नालालजी के सभा खास के पद से इस्तीफा देने पर वह काम आपके तथा सही वाले अर्जुनसिंहजी के सिपुर्द हुआ। इसके बाद संवत् १९६२ में आप दोनों सज्जनों का इस्तीफा पेश होने पर इस काम को मेहता भोपालसिंह और महासानी हीरालालजी पचोली के जिम्मे किया गया। इसके बाद फिर ३ वर्ष तक आपने महकमा खास का काम किया। देवस्थान के काम के अलावा टकसाल का काम भी आपके जिम्मे रहा। इस प्रकार कई वर्ष तक इतनी बड़ी सेवा करते हुए भी आपने राज्य से तनखा के स्वरूप कुछ नहीं लिया। आपके गिरधारीसिंहजी नामक एक पुत्र है।

गिरधारीसिंहजी सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं। आप मेवाड़ में सहाड़ा, भीलवाड़ा, गिर्वा, आदि कई स्थानों में हाकिम रहे। इसके बाद आप महकमा देवस्थान के हाकिम रहे। आजकल [illegible] में हाकिम है। आपके भँवर तेजसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। आप ग्रेज्यूएट हैं।

मसूदे का कोठारी परिवार

मूलचन्दजी कारखानेदार, मनासा के अमीन आदि २ कार्यों पर नियुक्त किये गये। आप दोनों बन्धुओं ने प्रयत्न करके अपने पूर्वजों के जप्त किये हुए जागीरी के गावों को पुन प्राप्त करने के लिये प्रयत्न किया। इसके फलस्वरूप उन दोनों गाँवों के बदले में मौजा वासन्दा तथा कुछ जमीन बगीचे के लिये आप लोगों को इनायत की गई। इस प्रकार आप दोनों बन्धु होल्कर सरकार की सेवा करते हुए स्वर्गवासी हुए। इनमें से कोठारी मूलचन्दजी के हीराचन्दजी, दीपचन्दजी और देवीचन्दजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

कोठारी हीराचन्दजी बड़े सुबुद्धी, कार्य्यकुशल तथा योग्य सज्जन हैं। आपने अपनी योग्यता एवं कार्य्य कुशलता से एक साधारण पद से एक बहुत बडे सम्माननीय पद को प्राप्त किया है। आपने प्रारम्भ में इन्दौर के मुनाफा कारखाना, फड्नीसी दफ्तर, पोलिस विभाग तथा सायर के महकमें में काम कर अपने आपको वृद्धि की ओर अग्रसर किया। आप इसके पश्चात् कोठी कारखानदार और फिर मनासा के अमीन बना कर भेजे गये। उस समय मनासा परगने के आस पास बड़ी दुर्व्यवस्था और गड़बड़ हो रही थी। इसे आपने मिटा कर वहाँ शांति स्थापित की तथा बड़ी योग्यता और बुद्धिमानी से कई उजड़े हुए गाँवों को बसाया। आपकी इस सुव्यवस्था तथा नवीन बसाहत से राज्य के तात्कालीन उच्च पदाधिकारी बडे सतुष्ट रहे और उन्होंने समय समय पर आपके कार्य्यों की खूब प्रशसा की। आपके इन कार्यों के उपलक्ष्य में आपको रामपुरा के नायब सूबा और फिर महत्पुर का सूबा बनाया। तदनन्तर रामपुरा और भानपुरा इन दोनों परगनों को सम्मिलित कर आप उसके सूबा बनाये गये। इसी समय इन्दौर नरेश महाराजा तुकोजीराव होल्कर ने इस जिलेका दौरा करते समय आपके कार्यों से बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और वहाँ के जागीरदारों और सरदारों से भरे दरबार में आपको १००) नगद तथा फर्स्ट क्लास सिरोपाव देकर सम्मानित किया।

तदनंतर क्रमश आप रेव्हेन्यू कमिश्नर, कस्टम कमिश्नर, एक्साइज मिनिस्टर, रेवन्यू मिनिस्टर, नायब दीवान खासगी आदि २ उच्च पदों पर नियुक्त किये गये और फिर कौन्सिल के मेम्बर भी बनाये गये। इसके पश्चात् आप दीवान खासगी मुकर्रर किये गये तथा यहाँ से पेंशन प्राप्त होने पर आप फिर से कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। कहने का तात्पर्य यह है कि आपने इस राज्य में बड़े २ उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर रहकर बड़ी योग्यता से व्यवस्था की। जिस समय महाराजा होलकर विलायत गये हुए थे उस समय आप कौंसिल के सभापति भी बनाये गये थे।

आपका इन्दौर राज्य में बहुत सम्मान है। आपको सन् १९१४ में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने "राव बहादुर" के सम्माननीय खिताब से विभूषित किया। इसी प्रकार होलकर सरकार ने आपको "मुस्तकिम ए-ख.स" की पदवी तथा हुजूर प्रिवी कौंसिल के कौंसिलर बना कर सम्मानित किया। इतना ही नहीं

कोठारी केशरीसिंहजी का खानदान

कोठारी केशरीसिंहजी—आप बड़े स्पष्ट वक्ता, निर्भीक, इमानदार, अनुभवी, स्वामि-भक्त और कुशल व्यक्ति थे। आपने अपने जीवन-काल में अनेक राजनैतिक खेल खेले। आप अपनी चतुराई बुद्धिमानी से क्रमशः बढ़ते २ दीवान के पद तक पहुँचे। आपका विशेष इतिहास इसी ग्रन्थ के "...और नैतिक महत्व' नामक अध्याय में भलिभाँति दिया जा चुका है। आपके कोई पुत्र न होने ...न कोठारी बलवन्तसिंहजी को दत्तक लिया।

कोठारी बलवंतसिंहजी—महाराणा सज्जनसिंहजी ने संवत् १९२८ में आपको महकमा देवस्थान हाकिम नियुक्त किया। इसके पश्चात् जब महाराणा फतेसिंहजी सिंहासनारूढ़ हुए तब आपने ...को महद्राज सभा का मेम्बर बनाया। इसी समय महाराणा ने आपको सोने का लगर प्रदान सम्मानित किया। इसके बाद आपको स्टेट बेंक का काम दिया गया। राय मेहता पन्नालालजी के ...साब के पद में इस्तीफा देने पर वह काम आपके तथा सही वाले अर्जुनसिंहजी के सिपुर्द हुआ। ...बाद संवत् १९६२ में आप दोनों सज्जनों का इस्तीफा पेश होने पर इस काम को मेहता भोपालसिंह ...र महासानी हीरालालजी पचोली के जिम्मे किया गया। इसके बाद फिर ३ वर्ष तक आपने मह... ...साब का काम किया। देवस्थान के काम के अलावा टकसाल का काम भी आपके जिम्मे रहा। ...कई वर्ष तक इतनी बड़ी सेवा करते हुए भी आपने राज्य से तनखा के स्वरूप कुछ नहीं लिया। ...गिरधारीसिंहजी नामक एक पुत्र हैं।

गिरधारीसिंहजी सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं। आप मेवाड़ में सहाड़ा, भीलवाड़ा, गिर्वा, ... आदि कई स्थानों में हाकिम रहे। इसके बाद आप महकमा देवस्थान के हाकिम रहे। आजकल ...शासन में हाकिम हैं। आपके भँवर तेजसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। आप ग्रेज्युएट हैं।

मसूदे का कोठारी परिवार

मूलचन्दजी कारखानेदार, मनासा के अमीन आदि २ कार्यों पर नियुक्त किये गये। आप दोनों बन्धुओं ने प्रयत्न करके अपने पूर्वजों के जप्त किये हुए जागीरी के गावों को पुनः प्राप्त करने के लिये प्रयत्न किया। इसके फलस्वरूप उन दोनों गाँवों के बदले में मौजा वासन्दा तथा कुछ जमीन बगीचे के लिये आप लोगों को इनायत की गई। इस प्रकार आप दोनों बन्धु होल्कर सरकार की सेवा करते हुए स्वर्गवासी हुए। इनमें से कोठारी मूलचन्दजी के हीराचन्दजी, दीपचन्दजी और देवीचन्दजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

कोठारी हीराचन्दजी बड़े मुसुद्दी, कार्य्यकुशल तथा योग्य सज्जन हैं। आपने अपनी योग्यता एवं कार्य्य कुशलता से एक साधारण पद से एक बहुत बड़े सम्माननीय पद को प्राप्त किया। आपने प्रारम्भ में इन्दौर के मुनाफा कारखाना, फड़नीसी दफ्तर, पोलिस विभाग तथा सायर के महकमे में काम कर अपने आपको वृद्धि की ओर अग्रसर किया। आप इसके पश्चात् कोठी कारखानदार और फिर मनासा के अमीन बना कर भेजे गये। उस समय मनासा परगने के आस पास बड़ी दुर्व्यवस्था और गड़बड़ हो रही थी। इसे आपने मिटा कर वहाँ शांति स्थापित की तथा बड़ी योग्यता और बुद्धिमानी से उजड़े हुए गाँवों को बसाया। आपकी इस सुव्यवस्था तथा नवीन बसाहत से राज्य के तत्कालीन उच्च पदाधिकारी बड़े संतुष्ट रहे और उन्होंने समय समय पर आपके कार्य्यों की खूब प्रशंसा की। आपके इन कार्य्यों के उपलक्ष्य में आपको रामपुरा के नायब सूबा और फिर महीदपुर का सूबा बनाया। तदनन्तर रामपुरा और भानपुरा इन दोनों परगनों को सम्मिलित कर आप उसके सूबा बनाये गये। इसी समय इन्दौर नरेश महाराजा तुकोजीराव होल्कर ने इस जिले का दौरा करते समय आपके कार्य्यों से बड़ी प्रसन्नता प्रगट की और वहाँ के जागीरदारों और सरदारों से भरे दरबार में आपको १०००) नगद तथा फर्स्ट क्लास सिरोपाव देकर सम्मानित किया।

तदनंतर क्रमशः आप रेव्हेन्यू कमिश्नर, कस्टम कमिश्नर, एक्साइज मिनिस्टर, रेल्वे मिनिस्टर, नायब दीवान खासगी आदि २ उच्च पदों पर नियुक्त किये गये और फिर कौन्सिल के मेम्बर बनाये गये। इसके पश्चात् आप दीवान खासगी मुकर्रर किये गये तथा यहाँ से पेंशन प्राप्त होने पर आप फिर से कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। कहने का तात्पर्य यह है कि आपने इस राज्य में बड़े २ उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर रहकर बड़ी योग्यता से व्यवस्था की। जिस समय महाराजा होल्कर विलायत गये हुए थे उस समय आप कौंसिल के सभापति भी बनाये गये थे।

आपका इन्दौर राज्य में बहुत सम्मान है। आपको सन् १९१४ में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने "राय बहादुर" के सम्माननीय खिताब से विभूषित किया। इसी प्रकार होल्कर सरकार ने आपको "मुन्तजिम ए-खास" की पदवी तथा हुजूर प्रिवी कौंसिल के कौंसिलर बना कर सम्मानित किया। इतना ही नहीं

समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्दजी के साथ रहकर उनकी बहुत सेवा की थी। अजमेर की आर्य्य समाज के प्रथम प्रवर्तकों में आप हैं।

कोठारी मोतीसिंहजी—आप कोठारी सुजानसिंहजी के पुत्र हैं। संवत् १९३१ में आपका जन्म हुआ। आप फूलिया के तहसीलदार, शाहपुरा के मजिस्ट्रेट और कन्नौद तथा महतपुर में ए० व्ही० स्कूलों के मास्टर रहे हैं। इस समय आप अजमेर में निवास करते हैं। आपके यहाँ पर कई मकानात हैं जिनसे अच्छी आमदनी होती है। आप होमियोपैथिक डाक्टर और आयुर्वेद विशारद हैं।

कोठारी सोभागसिंहजी का जन्म सम्वत १९१२ में हुआ। आप मेवाड के नायब हाकिम और कोठारिया, तथा भैंसरोड़ ठिकानों के कामदार रहे। आपके जालिमसिंहजी और सुगनसिंहजी नामक पुत्र हैं। इनमें सुगनसिंहजी, कोठारी समीरसिंहजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

कोठारी जालिमसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९२९ में हुआ। आप बड़े बुद्धिमान, योग्य व्यापक तथा शिक्षित सज्जन हैं। आपने अपनी योग्यता तथा कार्यकुशलता से कई रियासतों में बड़े २ पदों पर काम किया। सबसे पहले आपने सन् १९०० में बी० ए० पास किया तथा उसके बाद इलाहाबाद हॉयकोर्ट की कानूनी परीक्षा का इम्तहान दिया। तदनंतर आप सर्विस करने लगे। प्रारम्भ में बहुत से छोटे २ पदों पर नियुक्त हुए, परन्तु आप अपनी बुद्धिमानी और व्यवस्थापिका शक्ति द्वारा ऊंचे पदों पर पहुँच गये। आप नागोदा रियासत के कुमार भागवेन्द्रसिंहजी के ट्यूटर रहे। इसके बाद इन्दौर रियासत ने ब्रिटिश गवर्नमेंट से आपकी सर्विस को मांगा। वहाँ पर आप हुजूर आफिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट नियुक्त हुए। उसके बाद क्रमशः स्टेट कौंसिल के सेक्रेटरी तथा कस्टम एण्ड एक्साइज कमिश्नर रहे। तदनंतर आप वहाँ से जोधपुर चले गये और जोधपुर राज्य की ओर से साल्ट और आबकारी के सुपरिन्टन्डेण्ट बनाये गये। वहाँ से आप उदयपुर गये तथा महद्राज सभा के सेक्रेटरी नियुक्त हुए। इसके बाद आपने एक्साइज कमिश्नर के पद पर काम किया। सन् १९२७ में आप ब्रिटिश सरकार से पेंशन रिटायर हुए। तदनंतर आप बांसवाड़ा स्टेट के दीवान पद पर अधिष्ठित किये गये। इस समय आप अजमेर में शांति लाभ कर रहे हैं। आप यहाँ की आर्य समाज के प्रेसिडेण्ट तथा राजस्थान प्रान्तीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। आपके हरदयालसिंहजी, लक्ष्मणसिंहजी, संग्रामसिंहजी तथा [illegible] नामक चार पुत्र हैं। इनमें से लक्ष्मणसिंहजी, कोठारी मोतीसिंहजी के नाम पर दत्तक गये हैं। कुंवर हरदयालसिंहजी एल० ए० जी० इम्पीरियल गवर्नमेंट के शुगर ब्यूरो के १२ वर्षों तक असिस्टेंट रहे हैं। शेष दोनों भाई पढ़ते हैं।

कोठारी बहादुरसिंहजी तथा समीरसिंहजी का देहान्त क्रमशः संवत १९५८ में तथा १९८० में [illegible]

कोठारी हाकिम और शाह

कोठारी चौपडा गौत्र की उत्पत्ति का वर्णन करते समय हम ऊपर लिख आये हैं कि ठाकुरसीजी के पश्चात् इस खानदान के कुछ लोग बीकानेर की ओर चले गये। उनमें कोठारी चौथमलजी भी थे। आप राव बीकाजी के, जब कि वे नवीन राज्य की स्थापना के लिए जागलू प्रान्त में गये थे, साथ थे। इनके सूरजमलजी नामक पुत्र हुए। सूरजमलजी के सात पुत्र हुए। जिनमें से पृथ्वीराजजी को तत्कालीन बीकानेर नरेश ने अपने राज्य में हाकिमी का पद प्रदान किया। तबही से पृथ्वीराजजी के वंशज हाकिम कोठारी कहलाते हैं। शेष छहों भाइयों की सतानें साहुकारी का काम करने के कारण शाह कहलाती हैं।

सेठ रावतमल भैरोंदान कोठारी (हाकिम) बीकानेर

हाकिम कोठारी पृथ्वीराजजी के जीवनदासजी और जगजीवनदासजी नामक दो पुत्र हुए। ये लोग आजन्म रियासत बीकानेर में हाकिमी का काम करते रहे। इनमें जगजीवनदासजी के करमसीजी और खींवसीजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई भी हाकिमी का काम करते रहे। यह परिवार करमसीजी का है। करमसीजी के पश्चात् उनके पुत्र सुल्तानसिंहजी और सुल्तानसिंहजी के पुत्र मदनसिंहजी हाकिम रहे। मदनसिंहजी के पुत्र रेखचंदजी को सरकारी नौकरी से अरुचि होगई। अतएव आपने सरकारी नौकरी करना छोड़ दिया और सरकार से साहुकारी का पट्टा हासिल किया। इनके अमोलकचन्दजी और रावतमलजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ रावतमलजी ने दोहद नामक स्थान पर साधारण कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया था। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके भैरोंदानजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ भैरोंदानजी का जन्म संवत् १९३८ में दोहद नामक स्थान में हुआ। संवत् १९५५ में आप कलकत्ता गये और वहाँ १०) मासिक पर नौकरी की। आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न, और व्यापार चतुर थे। आपने शीघ्र ही नौकरी को छोड़ दिया और वहीं विलायती कपड़े को बेचने के लिये मेसर्स रावतमल भैरोंदान के नाम से फर्म स्थापित की। जब इसमें आप असफल रहे तब आपने अपनी फर्म पर स्वदेशी कपडे का व्यापार करना प्रारम्भ किया। इसमें आपके योग्य संचालन से आशातीत सफलता हुई। आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। इतना ही नहीं वरन् उसका सदुपयोग भी किया। आपका ध्यान हमेशा धार्मिक एव सामाजिक बातों की ओर भी रहता है। आपकी धर्मपत्नी के नवपद ओली के तप उद्यापन में आपने करीब ५० हजार रुपया खर्च किया। एक सुन्दर चाँदी और सोने का सिंहासन बनवा

व्यापार शुरू किया। इन बन्धुओं का परिवार घाणेराव में "नगरसेठ" के नाम से बोला जाता है। सेठ [illegible] के केसरीमलजी और चुन्नीलालजी सेठ, निहालचन्दजी के नथमलजी, हमीरमलजी, और राजमल तथा सेठ सूरजमलजी के मूलचन्दजी, जावतराजजी, मुलतानमलजी और जेठमलजी नामक पुत्र हुए। इनमे [illegible], हमीरमलजी तथा मूलचन्दजी विद्यमान नहीं है। इस परिवार का कारबार संवत् १९५५ में अलग हुआ।

सेठ चुन्नीलालजी घाणेराव के जैन मन्दिरों के प्रबंध में बहुत दिलचस्पी से भाग लेते है। आप [illegible] के प्रतिष्ठित सज्जन हैं तथा श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाण की प्रबंध कमेटी के मेम्बर है। [illegible] पुत्र मोतीलालजी २२ साल के हैं।

सेठ सूरजमलजी कोठारी की धर्मध्यान के कामों में बड़ी रुचि थी। आपने पाली में अठाई [illegible] किया, कापरडातीर्थ के जीर्णोद्धार में मदद दी। आपने संवत् १९५८ में बम्बई के दागीना बाजार [illegible], तथा १९६० मे मंगलदास मारकीट में कपड़े का व्यापार शुरू किया। आपका संवत् १९६५ [illegible]वास हुआ। आपके बड़े पुत्र मूलचन्दजी संवत् १९८५ में स्वर्गवासी हुए। अभी इनके पुत्र [illegible]जी मौजूद है।

सेठ जावतराजजी का जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप अपने बन्धुओं के साथ मूलचन्द [illegible] के नाम से व्यापार करते है। घाणेराव तथा गोडवाड़ प्रान्त में आप अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। [illegible] १९८७ में आप लोगों ने श्री आदिश्वरजी के मन्दिर घाणेराव में एक देवली बनाई। इसी तरह [illegible] कामों में यह कुटुम्ब सहयोग लेता है। आपके यहाँ मूलचन्द जावतराज के नाम से मंगल [illegible] मारकीट बम्बई में सोलापुरी साड़ी का थोक व्यापार होता है।

सेठ अनोपचन्द हरखचन्द खींचिया, कोठारी (रणधीरोत) शिवगञ्ज

हम ऊपर लिख चुके है कि कोठारी [illegible]चन्दजी के सबसे छोटे पुत्र करमचन्दजी थे। आप [illegible] में रहते थे। इनके अनोपचन्दजी, पूनमचन्दजी, फूलचंदजी, हरकचंदजी, मगनीरामजी, उम्मेदमल [illegible] और केसरीमलजी नामक ८ पुत्र हुए। इनमें सेठ अनोपचन्दजी तथा हरखचन्दजी संवत् [illegible] में शिवगञ्ज आये और अनोपचन्द हरकचंद के नाम से दुकान की। आपके शेष भ्राता घाणेराव में [illegible] रहे। यह कुटुम्ब घाणेराव तथा शिवगञ्ज में खींचिया—कोठारी के नाम से बोला जाता [illegible] ने शिवगञ्ज की पंचपंचायती और व्यापारियों में अच्छी इज्जत पाई। सिरोही दर[illegible] [illegible], कोठारी अनोपचन्दजी का अच्छा सम्मान करते थे। संवत् १९२२ की भादवा

सेठ सुजानमलजी इस परिवार में वडे प्रालब्धी व्यक्ति माने जाते हैं। उनके समय तक फर्म बहुत अच्छी अवस्था में संचालित होती रही। सेठ सुजानमलजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ वाघमलजी, हजारीमलजी, मोतीलालजी और केसरीचन्दजी था। उपरोक्त फर्म सेठ हजारीमलजी के परिवार की है।

सेठ हजारीमलजी के उदयमलजी नामक एक पुत्र थे। आपके इस समय जतनमलजी नामक एक पुत्र है। सेठ जतनमलजी, बडे होशियार सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल आपका व्यापार विहार प्रान्त में होता है। आपकी फर्म का हेड आफिस खगडिया (मुगेर) में है तथा शाखाएँ मोकामा (पटना) और फूलवारिया (मु गेर) में है। सब फर्मों पर मेसर्स जतनमल मानमल कोठारी के नाम से गल्ला, तिलहन और बैंकिंग का व्यापार होता है। आपका मूल निवास स्थान बीकानेर ही है। आप मंदिर मार्गी सम्प्रदाय के सज्जन हैं। आपका बीकानेर के स्व० सेठ चाँदमलजी ढड्ढा पर पूरा २ विश्वास था। आपका उनका पूरा २ दोस्ताना था। इसके पूर्व भी आपके पूर्वजों और उनके पूर्वजों का काफी मेल था। एक बार जब आप पर आर्थिक सकट आया था और आपकी फर्म खतरे मे पड गई थी, उस समय सेठ चाँदमलजी ने सहायता कर आपकी फर्म की रक्षा की थी। इसके बदले में आपने भी उनकी वृद्धावस्था मे काफी सेवा की, जिसके लिये सेठ चाँदमलजी आपको सुन्दर सार्टीफिकेट प्रदान कर गये हैं। आपके जतनमलजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी उत्साही नवयुवक है।

कमरा (सेठ मालचन्दजी कोठारी) चूरू

बगीचे का पिछला हिस्सा (मालचन्दजी कोठारी) चूरू
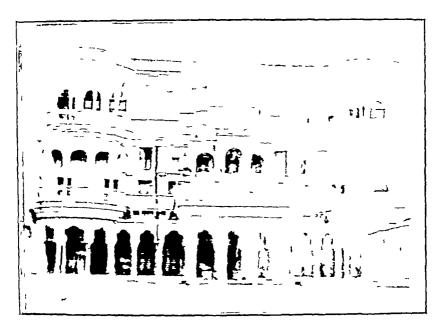
[illegible] १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर सेठ हजारीमलजी के पौत्र फूलमलजी खर वडी से [illegible] आये। इनका संवत् १९७० मे शरीरान्त हुआ। आपने दारह्वा में संवत् १९६० मे जीनिग [illegible] खोली। इस समय आपके पुत्र कुंदनमलजी विद्यमान है, और भी यहाँ के प्रतिष्ठित सज्जन है। [illegible] यहाँ बखतावरमल फूलमल के नाम से जमीदारी और जिनिग फेक्टरी का कार्य्य होता है।

कोठारी जवाहरमलजी का परिवार—कोठारी जवाहरमलजी के जीतमलजी, चादमलजी तथा सागर [illegible] नामक ३ पुत्र हुए। सन् १८५७ के बलवे के समय कोठारी जीतमलजी और सागरमलजी मारवाड़ [illegible] में फौज लेकर बागियों को दवाने भेजे गये थे। तत्पश्चात् कोठारी जीतमलजी बहुत समय तक [illegible] (इन्दौर स्टेट) मे व्यापार करते रहे, वहाँ से बीमार होकर आप कुचेरा चले गये। जहाँ संवत् [illegible] में स्वर्गवासी होगये। इनके पुत्र नथमलजी निसंतान स्वर्गवासी हुए।

कोठारी चादमलजी के राजमलजी तथा दानमलजी नामक २ पुत्र थे। कोठारी राजमलजी [illegible] १९४० में अपने चाचा बख्तावरमलजी के बुलाने से कलकत्ता होते हुए दारह्वा आये। संवत् १९८५ [illegible] में आप स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में आपके पुत्र तेजराजजी, धनराजजी और देवराजजी [illegible] राजमल तेजराज के नाम से जमीदारी और लेने देन का काम काज करते हैं। दानमलजी के पुत्र [illegible] तथा घासीमलजी हैं। इनमें घासीमलजी दत्तक गये हैं।

इसी तरह इस परिवार में शिवदानमलजी के पुत्र भागचन्दजी खरवडी मे और हीराचन्दजी के [illegible]चन्दजी, घासीमलजी, नेमीचन्दजी दारह्वा में रहते हैं। नेमीचन्दजी मेट्रिक में पढ़ते हैं।

सेठ अगरचन्द जीवराज कोठारी (रणधीरोत) डिगरस (यवतमाल)

इस परिवार का मूल निवास स्थान समेल (जोधपुर स्टेट) है। वहाँ से लगभग १५० साल [illegible] परिवार व्यापार के निमित्त यवतमाल डिस्ट्रिक्ट के डिगरस नामक स्थान में आया। सेठ अगर[illegible] का लगभग ६० साल पूर्व स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र कोठारी जीवराजजी ने इस दुकान के [illegible] और सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत् १९८० के माघ मास में आप स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में सेठ जीवराजजी कोठारी के पुत्र शिवचन्दजी और लेमचन्दजी कोठारी विद्यमान हैं, [illegible] फर्म डिगरस के व्यापारिक समाज में नामांकित मानी जाती है। शिवचन्दजी कोठारी समझदार [illegible] सज्जन है। आपके छोटे भाई लेमचदजी नागपूर में इंटर में अध्ययन करते हैं। आपकी [illegible] पर कपड़ा सोना तथा कृषि का काम काज होता है।

कोठारी छगनलालजी का परिवार

कोठारी छगनलालजी—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न और होशियार व्यक्ति थे। प्रारम्भ में आप खजाने के अफसर नियुक्त हुए। इसके बाद आपको फौजबशी का सम्मान मिला। आप जिला सायरा, कणेरा, कुम्भलगढ़, मगरा, खेरवाडा, राजनगर इत्यादि कितने ही स्थानों में हाकिम रहे। आपको हाकिम देवस्थान और हाकिम महकमें माल का काम भी मिला था। यही नहीं बल्कि आपने कुछ समय तक महकमा खास का काम भी किया। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर तत्कालीन महाराणा साहब ने आपको मोरजाई नामक एक गाँव जागीर स्वरूप प्रदान किया था। इस गाँव को बदल कर सवत् १९११ में महारानी की ओर से सेमूड़ नामक गाँव प्रदान किया गया। संवत् १९३२ में भारत सरकार ने आपको 'राय' की सम्मान सूचक उपाधि प्रधान की थी। महाराणा उदयपुर ने समय २ पर आपको सिरोपाव, सोना और बगीचे के लिये आदि प्रदान कर आपका सम्मान बढ़ाया था। आपका विशेष परिचय "राजनैतिक और सैनिक महत्व" नामक शीर्षक में पृष्ठ ९३ में दिया गया है। आपके कोई पुत्र न था। अतएव बनेड़ा से कोठारी मोतीसिंहजी दत्तक आये।

कोठारी मोतीसिंहजी—आपको महाराणा सज्जनसिंहजी ने प्रारम्भ में अफसर खजाना, टकसाल और स्टाम्प मुकर्रर किया। कुछ समय तक आप महकमा देवस्थान और जिला गिरवा के हाकिम रहे। आपके कामों से प्रसन्न होकर महाराणा साहब ने आपको कण्ठी, सिरोपाव, बैठक आदि का सम्मान प्रदान किया। आपके दलपतसिंहजी नामक एक दत्तक पुत्र है। आप सिरोही स्टेट में, मजिस्ट्रेट, वकील, असिस्टेंट चीफ मिनिस्टर और कुछ समय के लिए चीफ मिनिस्टर भी रहे। आपको भारत सरकार की ओर से गवर्नमेण्ट फौज में, लेफ्टिनेण्ट का कामीशन इनायत हुआ है। आपके कार्य्यों से प्रसन्न होकर कई अगरेज हाय अफसरों ने बहुत अच्छे २ सार्टिफिकेट दिये हैं। आपको शिकारखेलने का खूब शौक है। आपने कई बड़े २ शेरों का शिकार किया है। आपके भँवर गणपतसिंह नामक एक पुत्र हैं। आप अभी बालक है, मगर अभी से प्रतिभावान हैं। आपको मिलिटरी कवायद करने का अनहद शौक है।

कोठारी मोतीसिंहजी का ध्यान धार्मिकता की ओर भी अच्छा है। आपने स्थानीय नाथजी के मन्दिर को कुछ कोठरियाँ बनवा कर भेंट की हैं। आपकी ओर से थोबकी बाड़ी नामक स्थान पर एक धर्मशाला बनी हुई है। इसी प्रकार और भी मन्दिरों वगैरह मे आप खर्च करते रहते हैं।

सेठ केशरीचन्दजी कोठारा, चूरू

कोठारी जोरावरमल मोतीलाल का खानदान सिकंदराबाद (दक्षिण)

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवास स्थान बगडी (मारवाड़) का है। बगड़ी से इस [illegible] के पूर्व पुरुष सेठ थानमलजी ने व्यापार निमित्त दूर २ के प्रदेशों का भ्रमण कर सबसे पहले [illegible] एक फर्म बोलारम में स्थापित की। आपके हाथों से इस फर्म की काफी उन्नति हुई। आपके [illegible]वरमलजी नामक एक पुत्र हुए। आप बडे धार्मिक विचारों के सज्जन हैं। आपके मोतीलालजी [illegible] एक पुत्र हैं।

श्री मोतीलालजी कोठारी — आप शिक्षित तथा उन्नत विचारों के सज्जन हैं। आप बड़े व्यापार कुशल, [illegible] तथा वर्तमान उन्नतिशील युग के सिनेमा व्यवसाय में निपुण हैं। आपने अपनी व्यापार चातुरी [illegible] दूरदर्शिता से अपनी फर्म की काफी उन्नति की है। तिरमिलगिरी, सिकन्दराबाद तथा हैदराबाद में [illegible] आपके आठ सिनेमा बने हुये हैं। इधर कुछ वर्ष पूर्व ही हैदराबाद के कुछ शिक्षित एवं [illegible] सज्जनों ने दस लाख की पूंजी से 'दी महावीर फोटो प्लेज एण्ड थिएट्रिकल कम्पनी लि०' की [illegible] की है। इस संस्था का उद्देश भारतीय शिक्षाप्रद ड्रामा एवं फिल्म तयार करवाकर सदुपदेशों [illegible] प्रचार करते हुए द्रव्योपार्जन करना है। श्री मोतीलालजी की बुद्धिमानी तथा योग्य व्यवस्था से इस [illegible] को काफी सफलता प्राप्त हुई है। आप ही वर्तमान में इसके मेनेजिंग एजण्ट हैं।

इसके अतिरिक्त आपके यहाँ से "हैदराबाद बुलेटिन" नामक एक अंग्रेजी दैनिक पत्र भी निक[illegible] है। आपका यहाँ की शिक्षित समाज में बहुत सम्मान है। आपके बुलेटिन [illegible] [illegible] प्रतिष्ठा है।

इसके साथ ही साथ आपका स्वभाव बड़ा सरल, मिलनसार तथा नम्र है। आप बड़े सुधा[illegible] विचारों के सज्जन हैं। ओसवाल जाति की उन्नति करने की इच्छा आपको सदैव लगी रहती है। [illegible] के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित सज्जन हैं।

सेठ बरदीचन्दजी कोठारी का खानदान, जयपुर

कोठारी धणमालजी

आप मेडता कुँवर भोपतसिंहजी के साथ यूसुफ जाई के साथ वाली लडाई में देहली बादशाह अकबर की मदद के लिये गये थे। जब बादशाह ने कुँवर भोपतसिंहजी को पेशावर के ३ पर और अजमेर के समीप मसूदे का दो लाख की आय का प्रसिद्ध ठिकाना जागीरी में दिया, उस समय माल ने बड़ी बुद्धिमत्ता पूर्वक इन परगनों का प्रबंध किया। आपके बाद, क्रमश सकटदासजी, केशवदास वनराजजी और नथमलजी भी मसूदे का काम करते रहे।

कोठारी नथमलजी—आप बडे वीर और व्यवहार कुशल सज्जन थे। जिस समय मसूदे नाबालिग अधिकारी जैतसिंहजी को इनके काका शेरसिंहजी ने जोधपुर की मदद से निकाल दिया था, समय आपने अपनी बुद्धिमानी और चतुराई द्वारा बादशाह फर्रुखशियर की शाही सेना की मदद प्राप्त कुँवर जैतसिंहजी को पुन अपना राज्य दिलवाया। आपके सूरजमलजी और जयकरणजी नामक पुत्र कोठारी सूरजमलजी मरहठों के साथ की गढ़बीटली की लडाई में वीरता से लड़कर मारे गये। जयकरणजी के पुत्र बहादुरमलजी हुए।

कोठारी बहादुरमलजी—आप वीर, समझदार तथा इतिहासज्ञ सज्जन थे। आपने जोधपुर ईडर पर हक साबित करने के लिये एक ख्यात तय्यार की थी। सन १८१७ में कर्नल हॉल के साथ की बगावत शान्त करने में आपने भी सहयोग लिया था। इसी तरह रायपुर और मगेर के समय आपको गवर्नमेंट ने पंच मुकर्रर किया था। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर अजमेर मेरवाड़ा अफसर कर्नल डिक्सन ने आपको इस्तमुरारी हकूक पर १ हजार बीघा जमीन मय तालाब और इनायत की। सवत् १९१७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके अमानसिंहजी, छतरसिंहजी, सावतसिंह बलवतसिंहजी, सालमसिंहजी, छोटूलालजी और समरथसिंहजी नामक सात पुत्र हुए।

कोठारी अमानसिंहजी—कोठारी अमानसिंहजी ने मसूदे की कामदारी का काम बड़े सुव्यवस्थित ढग से किया। आपका संवत् १९२६ में स्वर्गवास हुआ। आपके सुजानसिंहजी, सौभागसिंहजी, सिंहजी तथा समीरसिंहजी नामक चार पुत्र हुए।

कोठारी सुजानसिंहजी—आपका जन्म सं० १९१० में हुआ। आप बड़े योग्य तथा विचारों के सज्जन थे। आप मसूदे से अजमेर आकर रहने लगे। उस समय आपकी साधारण स्थिति लेकिन अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता द्वारा आपने अपनी स्थाई सम्पत्ति को खूब बढ़ाया। आपने

हुआ। कोठारी समीरसिंहजी के दत्तक पुत्र सुगनचन्दजी का जन्म संवत १९३१ में हुआ। आप आगर, (गवालियर) आदि जगहों के तहसीलदार रहे। इस समय आप भेंसरोड के कामदार हैं। आपके शिवसिंहजी और सरदारसिंहजी नामक दो पुत्र है। श्री शिवसिंहजी बी० कॉम० बिडला शुगर फेक्टरी सिहोरा (बिजनौर) के मैनेजर तथा सरदारसिंहजी बी० कॉम० इसी फेक्टरी के केमिस्ट हैं। कोठारी वल्लभसिंहजी के पुत्र दल सिंहजी इस समय रेल्वे में सर्विस करते हैं।

कोठारी छतरसिंहजी के पाँच पुत्र हुए। इनमें से बड़े पुत्र कल्याणसिंहजी मसूदा और ताल (मारवाड़) के कामदार रहे। छतरसिंहजी के परिवार में इस समय किशोरसिंहजी गंगापुर में, माणकचन्द और सुलतानचन्दजी मसूदे में और भोपालसिंहजी जयपुर में निवास करते हैं। इसी प्रकार कोठारी सा सिंहजी के पौत्र लक्ष्मीसिंहजी लादुवास (मेवाड़) में कामदार है।

कोठारी बलवन्तसिंहजी भी मसूदे के कामदार रहे। आपके किशनसिंहजी, बिशनसिंहजी व माधौसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें माधौसिंहजी विद्यमान हैं। किशनसिंहजी के पुत्र शक्तिसिंह और नाहरसिंहजी रेलवे में सर्विस करते हैं। कोठारी माधौसिंहजी के दलपतसिंहजी, दरयावसिंह गुलाबसिंहजी तथा केशरीसिंहजी नामक चार पुत्र हैं। इनमें से दलपतसिंहजी उदयपुर में कोठारी मो सिंहजी के नाम पर दत्तक गये हैं। दरयावसिंहजी देवगढ़ तथा भींडर में मजिस्ट्रेट तथा शेष पोलिस सर्विस करते हैं। इसी तरह कोठारी सालमसिंहजी के पौत्र नरपतसिंहजी तथा दौलतसिंहजी अजमेर में निवास करते हैं कोठारी भगवंतसिंहजीके पुत्र मोहकमसिंहजी, अभयसिंहजी तथा उगमसिंहजी और पौत्र सिंहजी, उमरावसिंहजो, भेरुसिंहजी, धनपतिसिंहजी और मोहनसिंहजी विद्यमान हैं। इसी प्रकार समरथसिंहजी के पौत्र अनराजजी भीलवाड़े में रहते हैं।

सेठ मूलचन्द जावंतराज खीचिया (कोठरी)

इस रणधीरोत कोठारी परिवार के पूवज उदयपुर में निवास करते थे। यह परिवार उदयपुर से मेड़ता कुंभलगढ़, होता हुआ घाणेराव आया। कोठारी देवीचन्दजी घाणेराव में निवास करते थे, आपके नरसिंहदासजी, अमरदासजी और करमचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए, इनमें करमचन्दजी के परिवार में इस समय सेठ नेनमलजी कोठारी, शिवगज में रहते हैं।

कोठारी नरसिंहजी के समय में इस खानदान का व्यापार पाली में होता था। आप घाणेराव के ओसवाल समाज मे मुख्य व्यक्ति थे। इनके सागरमलजी, निहालचन्दजी तथा सूरजमलजी नामक पुत्र हुए। ये तीनों भ्राता व्यापार के लिये सवत् १९३४ में बम्बई गये, और सागरमल निहालचन्द के नाम

नाम क्रमश जीतमलजी और मगनीरामजी था। आप दोनों ही भाइयों ने कलकत्ता जाकर ... गुलाबचन्द के साथ व्यापार प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् आपने सरदारशहर निवासी ...नीराम पींचा की फर्म के साझे मे काम किया। सचालकों की बुद्धिमानी एवम् होशियारी ...चला। इसके पश्चात् सेठ जीतमलजी का स० १९३८ मे स्वर्गवास होगया। आपके ... एवम् मोतीलालजी नामक दो पुत्र हुए। मगनीरामजी के पुत्र का नाम दुर्गाप्रसादजी है। ...नों भाइयों का परिवार स्वतत्ररूप से व्यापार कर रहा है। दुर्गाप्रसादजी के पुत्र पूनराजजी ...ही पिता पुत्र सर्विस करते हैं। मोतीलालजी का स्वर्गवास होगया है। इनके पुत्र धनराजजी, सूरजमलजी और सोहनलालजी कलकत्ते मे अपना स्वतत्र व्यापार करते है।

...ठ हजारीमलजी ने साझे की फर्म से अलग होकर स्वतत्र फर्म मेसर्स हजारीमल हुलासचन्द ...कत्ता ही मे खोली। इस समय इस पर चलानी का काम हो रहा है। आपने इस व्यवसाय ...लता प्राप्त की और अपनी एक ब्राच बोगडा में भी पाट का व्यवसाय करने के हेतु ...। आपका ध्यान सार्वजनिक कार्यों की ओर भी बहुत रहा। आप तेरापथी सम्प्रदाय ... सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सवत् १९८८ मे ७४ वर्ष की आयु मे होगया। आप... ...दजी इस समय फर्म के काम का सचालन करते हैं। आपका यहाँ कलकत्ता की ... ...का प्रभाव है। आप उसके प्रेसिडेण्ट हैं। बाजार में व्यापारियों के आपसी कई झगडे आप... ...तय जाते है। आप से दोनों पार्टियां खुश रहती है। परोपकार और सेवा की तरफ भी ... ध्यान है। आपके भँवरलालजी नामक एक पुत्र हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। आपका ...समाज मे अच्छा सम्मान है। आपके मोहनलालजी नामक एक पुत्र है। कलकत्ता ... सूतापट्टी है।

सुदी २ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके रूपचन्दजी खींवराजजी और बभूतमलजी नामक ३ पुत्र हुए, इनमें खींवराजजी, हरकचन्दजी के नाम पर दत्तक गये।

संवत् १९३७ मे कोठारी हरकचन्दजी तथा रूपचन्दजी मद्रास गये और वहाँ इन्होंने अपने नाम से किराना तथा मनीहारी का थोक व्यवसाय आरंभ किया। हरकचन्दजी सवत् १९३७ में स्वर्गवासी हुए।

कोठारी रूपचंदजी को सिरोही दरबार महाराव स्वरूपसिंहजी ने संवत् १९८१ में २१ बीघा ६ विस्वा का बगीचा मय कुएं के इनायत किया, तथा 'सेठ" की पदवी दी। और दो घोड़ों की बग्घी और मोटर रखने की इज्जत बख्शी। संवत् १९८४ के वैशाख मे आप बीमार हुए, तब दरबार इनकी तबियत पूछने इनकी हवेली पर पधारे। इसी मास की वैशाख वदी ७ को इनका स्वर्गवास हुआ। आपके पुखराजजी, नेनमलजी, जुहारमलजी, और मोतीलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमे पुखराजजी का स्वर्गवास हो गया है और शेष विद्यमान हैं। कोठारी खींवराजजी के पुत्र कुदनमलजी मौजूद हैं।

कोठारी नेनमलजी खीचिया का जन्म संवत १९४९ में हुआ। आप शिवगंज और सिरोही के प्रसिद्ध धनिक साहुकार हैं। स्टेट से आपको "सेठ" की पदवी प्राप्त है। सवत् १९४९ में आपने बम्बई में जवाहरमल मोतीलाल के नाम से दुकान की है। मद्रास के गोडवाड़ समाज में आपकी फर्म प्रधान है। शिवगंज, बम्बई, मद्रास आदि में आपकी स्थाई सम्पत्ति है। आपके पुत्र जीवराजजी और भेरूमलजी हैं। इनमें भेरूमलजी, पुखराजजी के नाम पर दत्तक गये हैं। सुकनराजजी के पुत्र अमृतलाल जी और बाबूलालजी हैं।

सेठ कुन्दनमलजी और तेजराजजी कोठारी (रणधीरोत) दारव्हा (यवतमाल)

इस परिवार के पूर्वज कोठारी हरीसिंहजी, शेरसिंहजी की रीयाँ (मेड़ते के पास) रहते थे। इन के पुत्र कोठारी निहालचन्दजी संवत् १८९५ के लगभग बराड़ में आये। और इस प्रान्त के सूबेदार बनाये गये। आपका खास निवास अमरावती में रहता था। आपके छोटे भ्राता बहादुरमलजी के गादमलजी, जवाहरमलजी, हिन्दूमलजी तथा सरदारमलजी नामक ४ पुत्र हुए। आप लोग देश ही रहते थे।

कोठारी सरदारमलजी का परिवार—मारवाड़ से सेठ गादमलजी के पुत्र हजारीमलजी बारामती (अहमद नगर) गये और सरदारमलजी के पुत्र बख्तावरमलजी दारव्हा (बरार) आये। यहाँ आकर बख्तावरमलजी ने महुवे के बड़े २ कण्ट्राक्ट लिये, और इस धन्धे में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। दारव्हा तालुके के आप प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपको घोड़े, ऊँट, सिपाही, आदि रखने का बहुत शौक था।

रावराजा रिधमलजी—आप बड़े बहादुर और वीर प्रकृति के पुरुष थे। संवत् १८८९ में १५०० सैनिक लेकर आप और मुणोत रामदासजी ब्रिटिश सेना की सहायतार्थ अजमेर गये थे। संवत् १८९२ महाराजा मानसिंहजी ने आपको ए० जी० जी० के यहाँ अपनी स्टेट का वकील बनाकर भेजा। संवत् तक आप इस पद पर रहे। संवत् १८९८ में आपको १६ हजार की जागीर बख्शी गई। थोड़े बाद महाराजा मानसिंहजी ने आपको अपना मुसाहिब बनाया। दरबार आपका बड़ा सम्मान करते थे। महाराजा से प्रार्थना कर ओसवाल समाज पर लगनेवाले कर को माफ कराया, तथा पुष्कर के [illegible] को बन्द कराया। आपने संवत् १८९६ में दरबार और जागीरदारों के बीच सम्बन्ध की शर्तें [illegible], जो अब भी स्टेट में १८९६ की कलम के नाम से जोधपुर में व्यवहार की जाती है। पुष्कर के [illegible] को बन्द करवाने के सम्बन्ध में तत्कालीन कवि ने आपके लिए निम्नलिखित पद्य कहा था कि—

भला भुलाया भोपती, नवकोटीरे नेत।
रावमिटायो रिधमल, पुष्कर रो प्रायश्चित॥

आपके कार्यों से प्रसन्न होकर आपको महाराजा मानसिंहजी ने दरबार में प्रथम दर्जे की बैठक, ताजीम, [illegible] और हाथी सिरोपाव इनायत किया था। महाराजा तखतसिंहजी को जोधपुर की गद्दी पर दत्तक लाने [illegible] विशेष परिश्रम किया था। अतः महाराजा तखतसिंहजी ने आपको कई खास रुक्के प्रदान [illegible] प्रदान की थी। इन महाराजा के राजत्वकाल में आपने फौज लेकर लाडनूं ठाकुर साहिब के [illegible] पर चढ़ाई की थी। संवत् १९०८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके रावराजा राजमलजी तथा राव [illegible] नामक दो पुत्र हुए। आपके छोटे भ्राता राव कल्याणमलजी ने भी रियासत की बहुत [illegible]। जालोर घेरे के समय आप महाराजा मानसिंहजी की ओर से आरबों की फौज लेने गये थे। [illegible] १८६ से ६५ तक आप मुसाहिब रहे। जोधपुर घेरे के समय आपने दौलतराव सिंधिया को [illegible] मिलाने की कोशिश की थी।

स्व० सेठ सरदारमलजी कोठारी, चूरू.

सेठ तोलारामजी कोठारी, चूरू.

सेठ मूलचंदजी कोठारी, चूरू

सेठ मदनचंदजी कोठारी, चूरू

मान तक आप पाली, जोधपुर और जालोर के हाकिम रहे और इधर सन् १९१७ से जनानी ड्योढ़ी के सुपरिन्टेण्डेण्ट के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप बडे मिलनसार, सरल चित्त और निराभिमानी सज्जन हैं। जोधपुर के ओसवाल समाज में आपकी बडी प्रतिष्ठा है। राज्य के सरदारों में भी आपका उच्च सम्मान है। दरबार ने दोवड़ी ताजीम और पैरों में सोना पहिनने का अधिकार प्राप्त है। आप जोधपुर ओसवाल सभा के प्रेसिडेण्ट हैं। आपके सवाईसिंहजी, वल्लभसिंहजी तथा किशोरसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं। सवाईसिंहजी इस समय सांचोरे के हाकिम हैं और आपको पैरों में सोना पहिनने का अधिकार प्राप्त है। द्वितीय पुत्र कुँवर वल्लभसिंहजी ने हाल ही में बी० ए० की परीक्षा पास की है। कुँवर सवाईसिंहजी व किशोरसिंहजी इन्दौर में एल० एल० बी० के द्वितीय वर्ष में पढ रहे हैं। इनसे छोटे भाई जसवंत-सिंहजी मैट्रिक में शिक्षा पा रहे हैं।

राव अमरसिंहजी—आप रावराजा बहादुर माधोसिंहजी के छोटे भ्राता हैं। जोधपुर दरबार से आपको हाथी, सिरोपाव, सोना और ताजीम प्राप्त है। इसी प्रकार जयपुर दरबार ने भी आपको हाथी, सिरोपाव देकर सम्मानित किया है। आप रीवाँ महारानी (जोधपुर की महाराज कुमारी) के कामदार हैं। दरबार ने भी आपको सोना पहिनने का अधिकार बख्शा है। आपके पुत्र सूरतसिंहजी पढते हैं।

इस परिवार को जोधपुर दरबार की ओर से गेगोली और परासली नामक दो गाँव जागीर में मिले थे। वे इस समय इस कुटुम्ब के अधिकार में हैं।

सेठ कमलनयन हमीरसिंह लोढ़ा का खानदान अजमेर

कोठारी परिवार चूरू (बीकानेर स्टेट)

इस परिवार के लोग कई वर्षों से यहीं निवास कर रहे हैं। इस खानदान में सेठ हजारीम बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपनी व्यापार कुशलता से बहुत उन्नति की। आपके सेठ गुरु रायजी, सेठ सागरमलजी और सेठ सरदारमलजी नामक तोन पुत्र हुए। सेठ हजारीमलजी स्वर्गवास संमत १९३५ में होगया। आजकल आपके तीनों पुत्रों का परिवार स्वतन्त्र रूप से म कर रहा है।

सेठ गुरुमुखरायजी का परिवार—सेठ गुरुमुखरायजी का जन्म सवत् १८९३ म हुआ सक्त में जबकि आप तीनों भाई अलग २ होगये तबसे आपने अपनी फर्म का नाम मेसर्स हजारीमल गुरुमु रक्खा। इस फर्म में आपने बहुत उन्नति की। आपका ध्यान धार्मिक कार्यों की ओर भी अच्छा आपका स्वर्गवास संवत् १९५८ में हो गया। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ रामजी, शोभाचन्दजी और जवरीमलजी थे। इनमें से दूसरे एवम् तीसरे पुत्र सेठ सागरमलजी दत्तक गये।

सेठ तोलारामजी का जन्म संवत् १९२५ का है। आप शुरू से ही बड़े मिलनसार, और धार्मिक वृत्ति के सज्जन हैं। आपका विशेष समय धर्म ध्यान ही मे व्यतीत होता है। आप ते संप्रदाय के अच्छे जानकार हैं। आपका यहाँ की समाज में बहुत नाम एवम् प्रतिष्ठा है। चिरजीलालजी, सोहनलालजी, माणकचन्दजी, श्रीचन्दजी और हुलासचंदजी नामक पाँच पुत्र हैं। इ बड़े पुत्र चिरजीलालजी बहुत समय से अलग हो गये हैं। शेष सब लोग शामिल ही व्यापार कर आपका व्यापार केवल हुंडी, चिट्ठी और व्याज का है।

सेठ सागरमलजी का परिवार—सेठ सागरमलजी का जन्म सवत् १८९८ म हुआ। धार्मिक प्रकृति के महानुभाव थे। आप जैन शास्त्रों के अच्छे जानकार कहे जाते थे। आपका १९६० में स्वर्गवास होगया। आपके कोई पुत्र न होने से सेठ जवरीमलजी दत्तक लिये गये। अल्प अवस्था में ही आपका स्वर्गवास होगया। आपके भी कोई पुत्र न होने के कारण आपके छोटे भाई चन्दजी दत्तक आये। आप बुद्धिमान और होशियार व्यक्ति थे। आपका भी संवत् १९८२ में स्व हो गया। आपके दो पुत्र सेठ सूरजमलजी और सेठ मालचन्दजी हुए। इनमें से सूरजमलजी अपने पि के एक साल पश्चात् ही स्वर्गवासी हो गये। वर्तमान में इस परिवार मे सेठ मालचन्दजी हैं।

सेठ मालचन्दजी बड़े सरल, और उदार प्रकृति के व्यक्ति हैं। आपको विद्या से बड़ा प्रे आप बीकानेर स्टेट की असेम्बली के मेम्बर हैं। आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर बीकानेर दरबार ने

सिंहजी के चारों पुत्रों में से बड़े पुत्र करणमलजी तो अल्पायु में ही स्वर्गवासी हो चुके थे जैसा कि न हो चुका है। शेष तीन भ्राताओं के पुत्र तथा पुत्रियां हुईं। सेठ सुजानमलजी के दो पुत्र थे, मलजी तथा सेठ चन्दनमलजी। इन दोनों का स्वर्गवास दीवान बहादुर सेठ उम्मेदमलजी की में ही हो गया। सेठ राजमलजी के एक पुत्र सेठ गुमानमलजी हुए। जो मृत्युपर्यन्त अजमेर ल कमेटी के मेम्बर और एडवर्ड मिल ब्यावर के चैयरमेन रहे, ये जहाँ रहे वहाँ इन्होंने कई कार्य्य किये। इनके पुत्र सेठ जीतमलजी थे। वे भी चन्द वर्ष तक मेम्बर म्युनिसिपल कमेटी तु उनका अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया। सेठ चन्दामलजी के पुत्र कानमलजी तथा पौत्र पानमलजी

ठ उम्मेदसिंहजी के तीसरे पुत्र राय बहादुर सेठ समीरमलजी के चार पुत्र हुए, सेठ सिरहमलजी, मलजी, सेठ विरधमलजी तथा सेठ गाढ़मलजी। इनमें से सेठ सिरहमलजी आजीवन म्युनि कमेटी के मेम्बर रहे परन्तु इनकी आयु बलवान नहीं हुई और यह २९ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्ग गये। जोधपुर राज्य ने इनको भी सोना तथा ताजीम प्रदान की थी। सेठ गाढ़मलजी इस (Joint Hindu Family) रीति के अनुसार इनके गोद हैं। रायबहादुर सेठ समीरमलजी के पुत्र अभयमलजी भी मृत्यु तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे थे। ये बड़े लोकप्रिय तथा कार्यदक्ष थे। की बात है कि इनका अल्पायु में ही स्वर्गवास होगया। इनके पुत्र सेठ सोभागमलजी हैं।

इन दिनों में इस घराने का सब कार्य्य भार रायबहादुर सेठ विरधमलजी के हाथ में है। आप सेठ समीरमलजी के तीसरे पुत्र हैं। इनकी अध्यक्षता में इनके छोटे भ्राता सेठ गाढ़मलजी तथा सेठ कानमलजी सब कार्य बड़े प्रेम और मनोयोग से करते हैं। सेठ गाढ़मलजी कुछ समय तक कमेटी के मेम्बर रहे तथा इस समय एडवर्ड मिल ब्यावर के चेयरमैन हैं। इनके पांच पुत्र में से बड़े कुंवर उमरावमलजी तो दुकान के काम में सहायता देते हैं और शेष चार पढ़ते हैं।

विजयचन्दजी, जयरूपजी, शंकरदासजी, नोवतरायजी आदि २ सज्जन हुए। आप लोगों ने अपनी फर्म की अच्छी उन्नति की। ऐसा कहा जाता है कि यह पहली फर्म बीकानेर स्टेट में ऐसी थी, जिसने सर्व प्रथम ब्रिटिश राज्य में अपनी बैंकिंग फर्म स्थापित की थी। इसका उस समय ईस्ट इंडिया कम्पनी से व्यापारिक सम्बन्ध था। इस विषय में इस परिवार वालों को कई महत्वपूर्ण तसल्लीनामा और परवाने मिले हुए हैं। जो इस समय इस परिवार के पास हैं। आगे चलकर सेठ लाभचन्दजी इस परिवार में प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए आपने गदर के समय कई अंग्रेजों की जान बचाई थी। इसके उपलक्ष में आपको ब्रिटिश सरकार ने एक प्रशंसा सूचक सार्टीफिकेट दिया है। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके केशरीचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ केसरीचंदजी का जन्म संवत् १९२६ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल, समाजसेवी और उत्साही सज्जन हैं। आपने अपने प्रभाव से लाखों रुपये एकत्रित कर वारलोन फंड में दिलवाये हैं। इससे प्रसन्न होकर भारत सरकार ने आपको सर्टिफिकेट आफ ऑनर प्रदान किया है। आपका ध्यान सार्वजनिक सेवा की ओर बहुत रहता है। आपने सन् १९१३ में अखिल भारतवर्षीय तेरा पंथी सभा नामक एक संगठित सभा स्थापित करवाने में बहुत कोशिश की है। आप करीब ११ साल तक उसके आनरेरी सेक्रेटरी रहे। आपका तेरा पंथी संप्रदाय में बहुत सम्मान और प्रतिष्ठा है। सन् १९२१ की सेन्सेस के समय आपने बहुत कार्य किया। आपने तेरापंथी संप्रदाय के व्यक्तियों की अलग सेन्सस की जाय इसकी बहुत कोशिश की। और सारे भारतवर्ष में गणना करने के लिये पृथक प्रबन्ध करवाया। आपने संयुक्त प्रांतीय कौंसिल में पास होने वाले माइनर साधु बिलका घोर विरोध किया और प्रजा को अपने पक्ष में करके उसे पास होने से रोक दिया। लिखने का मतलब यह है कि आप प्रतिभा सम्पन्न और कुशल कार्य्यकर्ता हैं। झिंद स्टेट में आपका अच्छा सम्मान है। चरखी दादरी नामक स्थान में आपकी पुरानी जायदाद थी वह नजुल की हुई थी। आपके प्रयत्न से महाराजा साहब ने उसे वापस आपके सुपुर्द कर दिया। आपको स्टेट से कुर्सी का सम्मान तथा सिरोपाव प्रदान किया हुआ है। इसी प्रकार बीकानेर, सिरोही और उदयपुर दरबारों की ओर से आपको समय समय सिरोपाव मिलते रहे हैं। इस समय आपकी वय ६४ वर्ष की है। अतएव आजकल आप चुरू ही में शांति लाभ कर रहे हैं। आपके चार पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश घेवरचन्दजी, मालचन्दजी, गुलाबचन्दजी और डूंगरमलजी हैं। इनमें से प्रथम दो चरखादादरी में स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। शेष दो कलकत्ता में नं० १५ आरमेनियन वैशाख स्ट्रीट में बैंकिंग का व्यापार करते हैं। बाबू गुलाबचन्दजी मिलनसार और उत्साही सज्जन हैं। आपका बैंकिंग व्यापार केवल अंग्रेजों से होता है।

सम्वत् १९४६ में आप मेट्रिक पास हुए। बाद आपने खास फार्म महक्मा तथा कोठार म
। सम्वत् १९५६ में आप स्टेट जवाहरखाने के मेम्बर हुए। सम्वत् १९५८ में आप नौकरी मे
। सन् १९११ में आप जोधपुर राज्य की ओर से किंग जॉर्ज प्रेजेंट शो मे प्रतिनिधि होकर
ए थे। आपने बम्बई में व्यापार भी अच्छी सफलता के साथ किया था। आप जोधपुर के
समाज के विशेष व्यक्तियों में से है। आप बड़े मिलनसार और योग्य सज्जन है। आपके
द्जी और गणेशचन्दजी नामक दो पुत्र है। लोढ़ा भोपालचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५५ मे
आपने जोधपुर मे एफ० ए० तथा बम्बई से बी कॉम की परीक्षा पास की। इसके बाद आप
ट ऑफिस मे इन्सपेक्टर ऑफ् अकाउण्टस् मुकर्रर हुए। और इस पद पर आप इस समय काम
ढ़ा भोपालचन्दजी बड़े योग्य और प्रतिभासम्पन्न सज्जन है, जोधपुर सरदार हाईस्कूल के बनवाने
दिन रात परिश्रम कर देख रेख रक्खी और बड़ी ही किफायतशारी से एक भव्य और सुन्दर इमारत
शुभ प्रयास किया। समाजहित के कार्य्यों में आप दिलचस्पी रखते है। आपके छोटे भाई
दजी ऑडिट ऑफिस में नौकरी करते है।

लोढ़ा सावंतमलजी का खानदान, जोधपुर

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मेड़ता है। वहाँ से पहाड़मलजी के पुत्र
जसा जोधपुर आये, तब से यह परिवार जोधपुर में निवास करता है। जसवंतमलजी का स्वर्गवास
५४२ में हुआ। इनके कुन्दनमलजी, जीवनमलजी और पारसमलजी नामक तीन पुत्र हुए।
जी जोधपुर रियासत की ओर से एजण्ट के यहाँ वकील थे। संवत् १९३६ में वकालत छोड़कर
अदालत का काम करने लगे, तथा संवत् १९६५ मे स्वर्गवासी हुए। जीवनमलजी भी कुन्दनमलजी के
बाद यहाँ वकील रहे। इनके छोटे भ्राता पारसमलजी फौजदारी कोर्ट में काम करते रहे।

लोढ़ा कुन्दनमलजी के सावंतमलजी, चंदनमलजी और बुधमलजी नामक तीन पुत्र विद्यमान है।
। सन् १९०५ से जोधपुर स्टेट के पुलिस विभाग में सर्विस करते है और इस समय बाड़मेर म
पुलिस है। आपके छोटे भ्राता चंदनमलजी कोर्ट ऑफ वार्डस् के मैनेजर और बुधमलजी
है। इसी तरह जीवनमलजी के पौत्र हरखमलजी इनवेटिंग ऑफिस में सर्विस करते है
जी के पुत्र हिम्मतमलजी, डीडवाणा में वकालात करते है।

।। सम्वत् १९४६ में आप मैट्रिक पास हुए। बाद आपने ग्रास फार्म महकमा तथा कोठार में की। सम्वत् १९५६ मे आप स्टेट जवाहरखाने के मेम्बर हुए। सम्वत् १९५८ मे आप नौकरी से हुए। सन् १९११ में आप जोधपुर राज्य की ओर से किंग जॉर्ज प्रेजेंट शो में प्रतिनिधि होकर गये थे। आपने बम्बई में व्यापार भी अच्छी सफलता के साथ किया था। आप जोधपुर के ल समाज के विशेष व्यक्तियों में से है। आप बडे मिलनसार और योग्य सज्जन है। आपके न्दजी और गणेशचन्दजी नामक दो पुत्र है। लोढ़ा भोपालचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५५ में आपने जोधपुर से एफ० ए० तथा बम्बई से बी कॉम की परीक्षा पास की। इसके बाद आप डिट ऑफिस में इन्सपेक्टर ऑफ् अकाउण्टस् मुकर्रर हुए। और इस पद पर आप इस समय काम । लोढ़ा भोपालचन्दजी बड़े योग्य और प्रतिभासम्पन्न सज्जन है, जोधपुर सरदार हाईस्कूल के बनवाने ने दिन रात परिश्रम कर देख रेख रक्खी और बडी ही किफायतशारी से एक भव्य और सुन्दर इमारत में शुभ प्रयास किया। समाजहित के कार्य्यों में आप दिलचस्पी रखते हैं। आपके छोटे भाई न्दजी ऑडिट ऑफिस में नौकरी करते हैं।

लोढ़ा सावंतमलजी का खानदान, जोधपुर

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मेड़ता है। वहाँ से पहाड़मलजी के पुत्र मलजी जोधपुर आये, तब से यह परिवार जोधपुर में निवास करता है। जसवंतमलजी का स्वर्गवास १९४२ में हुआ। इनके कुन्दनमलजी, जीवनमलजी और पारसमलजी नामक तीन पुत्र हुए। मलजी जोधपुर रियासत की ओर से एजण्ट के यहाँ वकील थे। संवत् १९३६ में वकालत छोडकर होहरागत का काम करने लगे, तथा सवत् १९६५ में स्वर्गवासी हुए। जीवनमलजी भी कुन्दनमलजी के जण्ट के यहाँ वकील रहे। इनके छोटे भ्राता पारसमलजी फौजदारी कोर्ट में काम करते रहे।

लोढ़ा कुन्दनमलजी के सावतमलजी, चंदनमलजी और बुधमलजी नामक तीन पुत्र विद्यमान है। मलजी सन् १९०५ से जोधपुर स्टेट के पुलिस विभाग में सर्विस करते है और इस समय बाड़मेर में इन्सपेक्टर पोलिस है। आपके छोटे भ्राता चंदनमलजी कोर्ट ऑफ वार्डस् के मैनेजर और बुधमलजी शेशन में पोतदार है। इसी तरह जीवनमलजी के पौत्र हरखमलजी इनवेटिंग ऑफिस में सर्विस करते हैं पारसमलजी के पुत्र हिम्मतमलजी, डीडवाणा में वकालात करते हैं।

शाह लच्मीमल प्रसन्नमल लोढ़ा, नागौर

यह परिवार मूल निवासी नागौर का ही है। इस परिवार में छजमलजी बडे नामांकित तथा र प्रकृति के पुरुष हुए। आपकी संताने छजमलोत लोढ़ा कहलाई। आपके नामका छजमहल आज

कोठारी रूपचन्दजी--आप जयपुर के प्रसिद्ध साहुकार थे। आप स्टेट को लाखों रुपया उधार दिया करते थे। आपको जयपुर स्टेट ने 'सेठ" का पद और नाम के बाद "जी" लिखने का मुल्लाव बख्शा। संवत् १९०४ मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके नाम पर आपके छोटे भ्राता तिलोकचन्दजी के पौत्र वरदीचन्दजी दत्तक आये।

कोठारी वरदीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १८९३ में हुआ। आप साहुकारी व्यापार के अलावा स्टेट द्वारा सौंपे हुए फौज के काम को भी देखते थे। आगरे में २४ सालों तक आप बंगाल बैंक के खजानची रहे। इससे बैंक ने आपको एक उत्तम सार्टिफिकेट दिया। संवत् १९५६ के अकाल के समय, आप स्टेट द्वारा बनाई गई सहायता कमेटी के मेम्बर और खजाची थे। आपने अपनी बुद्धिमानी और शौकीनी से जनता, राज्य और ओसवाल जाति में अच्छी इज्जत पाई थी। संवत् १९६९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके केवलचन्दजी, हुकुमचन्दजी और चांदमल नामक ३ पुत्र हुए।

कोठारी चांदमलजी—आपका जन्म १९२० मे हुआ। आपने सन् १८९२ में अजमेर में आइस फेक्टरी खोली, जो सन् १९१५ तक काम करती रही। सन् १९०१ में अजमेर मे आयरन एण्ड ब्रास फाउण्डरी, सन् १९१२ में मंडावर में एक जिनिंग फेक्टरी और सन् १९२१ में जयपुर में एक आइस फेक्टरी खोली। ये सब फेक्टरियां इस समय काम कर रही है। आपके सुमेरचन्दजी और समीरचन्दजी और आपके बडे भ्राता हुकुमचन्दजी के उत्तमचन्दजी और संतोषचन्दजी नामक पुत्र हुए। उत्तमचन्दजी शांत स्वभाव के समझदार सज्जन है, तथा फर्म और कारखानों का तमाम काम योग्यता से चलाते है। कोठारी संतोषचन्दजी केवलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये है। आप साहुकारी व्यापार में भाग लेते है। यह परिवार जयपुर की ओसवाल समाज में प्राचीन तथा प्रतिष्ठित माना जाता है।

इसी प्रकार इस खानदान में कोठारी मूलचन्दजी के परिवार में रिखबचन्दजी, सलबचन्दजी, रूपचन्दजी और केशरीचन्दजी विद्यमान है। केशरीचन्दजी जवाहरात का व्यापार करते है। तिलोकचन्दजी के पौत्र पेमचन्दजी जयपुर स्टेट के नायब दीवान के पद पर कार्य्य कर चुके है। अभी इनके नाती भागचंदजी मौजूद है। रायचंदजी के परिवार में गोकुलचंदजी और उनके पुत्र जवाहरात का व्यापार करते है तथा कोठारी सर्वसुखजी के पौत्र अगरचंदजी, मिलापचंदजी और हीराचंदजी साहुकारी का कार्य्य करते है। हीराचंदजी को दरबार मे कुर्सी प्राप्त है। आप एफ० ए० में पढ़ रहे है।

सेठ हजारीमल हुलासचन्द कोठारी सुजानगढ़

करीब ७० वर्ष पूर्व सेठ धरमचन्दजी सुजानगढ़ आकर बसे। यहाँ आपके गुलाबचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप लोग यहीं साधारण देन लेन का व्यापार करते रहे। सेठ गुलाबचन्दजी के ३ पुत्र

बतमलजी और मोहनसिंहजी हैं। सेठ प्रसन्नमलजी के पुत्र प्रकाशमलजी, दिलखुशहालजी, गंगामलजी और प्रेमसिंहजी हैं। प्रकाशमलजी ने बी० काम की परीक्षा पास की है। और गंगामलजी सुपारसमलजी नाम पर दत्तक गये हैं। सेठ भँवरमलजी के पुत्र मनोहरमलजी व भीमसिंहजी तथा कुन्दनमलजी के पुत्र उगममलजी व हणुतमलजी हैं।

नागोर के ओसवाल समाज मे यह परिवार अच्छी इज्जत रखता है। जब कभी जोधपुर दरबार नागोर आते हैं, तो अणबीधे मोतियों से तिलक करने का अधिकार लोढ़ा (छजमलोत) परिवार को ही प्राप्त है।

सेठ मूलचन्द मिलापचन्द लोढ़ा, नागोर

यह खानदान नागोर मे ही निवास करता है। इस खानदान के पूर्वज शाह टोडरमलजी लोढ़ा की सातवीं पीढ़ी में सेठ मेहताबचन्दजी लोढ़ा हुए। इनके मूलचन्दजी और मिलापचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ मूलचन्दजी लोढ़ा का जन्म संवत् १९२१ में हुआ। आप व्यापार के निमित्त संवत् १९४५ में बम्बई गये, और वहाँ के व्यापारिक समाज में आपने अच्छी इज्जत पाई। संवत् १९९५ मे नागोर में आपका स्वर्गवास हुआ।

सेठ मूलचन्दजी के बाद फर्म का व्यापार उनके छोटे भाई मिलापचन्दजी ने सम्हाला, आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आपने इस फर्म के व्यापार को बहुत उन्नति पर पहुँचाया और इसकी शाखाएं बम्बई के अलावा कलकत्ता, अहमदाबाद तथा सोलापुर में खोलीं। नागोर के ओसवाल समाज में आप अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। तथा बम्बई वालों के नाम से बोले जाते हैं।

सेठ मूलचन्दजी के पुत्र केवलचन्दजी होशियार व्यक्ति थे। संवत् १९८७ मे इनका शरीरान्त हुआ। इनके बड़े पुत्र माधोसिंहजी स्वर्गवासी हो गये हैं और प्रसन्नचन्दजी सुमेरचन्दजी तथा हुकुमचन्दजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। प्रसन्नचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं और छोटे भ्राता कालेज मे पढते हैं।

सेठ मिलापचन्दजी के पुत्र कानचन्दजी नेमीचन्दजी और मंगलचन्दजी व्यापारिक कारबार में व्यस्त हैं। कानचन्दजी के पुत्र सूरजचन्दजी और सरूपचन्दजी हैं। इसी तरह नेमीचन्दजी के पुत्र [illegible]चन्द, मंगलचन्दजी के पुत्र भँवरचन्द और प्रसन्नचन्दजी के मनोहरचन्द और अमरचन्द हैं।

नगर सेठ कालूरामजी लोढ़ा का खानदान, शिवगंज

इस परिवार के पूर्वज (टोडरमलोत) लोढ़ा रायचन्दजी के पौत्र लोढ़ा कचरदासजी स० १८५० में [illegible] से पाली आये। यहाँ अफीम के धन्धे में इन्होंने अच्छी तरक्की पाई। इनके चौथमलजी और [illegible]रामजी नामक २ पुत्र हुए।

स्व० सेठ हजारीमलजी कोठारी, सुजानगढ़
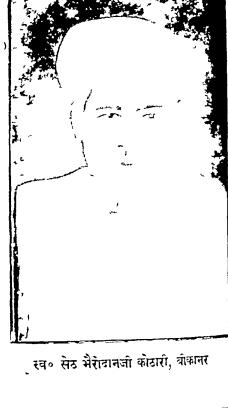
स्व० सेठ भैरोंदानजी कोठारी, बीकानेर

सेठ तुलासचन्दजी कोठारी, सुजानगढ़

कु० भँवरलालजी s/o तुलासचन्दजी कोठारी, सुजानगढ़

नगरसेठ तखतराजजी लोढ़ा, शिवगंज.

सेठ केवलचन्दजी लोढ़ा, नागौर.

... लोढ़ा (मानमल किशनमल) सुजानगढ़

श्री० जसवंतसिंहजी लोढ़ा री० काम० बनेड़ा.

लोढ़ा

लोढा गौत्र की उत्पत्ति

लोढ़ा, गौत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में महाजनवंशमुक्तावली में इस प्रकार की किंवदंति लिखी हुई है कि पृथ्वीराज चौहान के सूबेदार देवड़ा चौहान वंशीय लाखनसिंह के कोई संतान न होती थी इससे दुखित होकर उसने जैनाचार्य श्री रत्नप्रभुसूरि से संतान के लिये प्रार्थना की, और जैनधर्म अंगीकार किया। इनकी संतानें लोढ़ा कहलाईं। इसी वंश की आगे चलकर ४ शाखायें हो गईं जिनमें टोडरमलजी के वंशज टोडरमलोत छजमलजी के छजमलोत, रतनपालजी के रतनपालोत और भावसिंहजी के भावसिंहोत कहलाये।*

रावरजा बहादुरशाह माधौसिंहजी लोढ़ा का खानदान, जोधपुर

इस परिवार के पूर्वज शाह सुल्तानमलजी लोढ़ा (टोडरमलोत) नागौर में रहते थे और वहां जोधपुर राज्य की सेवा करते थे। इनके पुत्र शाहमलजी हुए।

रावरजा शमशेरबहादुर शाहमलजी लोढ़ा—आप इस खानदान में बहुत प्रतापी पुरुष हुए। संवत् १८४० के लगभग महाराजा विजयसिंहजी के कार्य काल में आप जोधपुर आये। जिस समय आप यहाँ आये थे, उस समय जोधपुर की राजनैतिक स्थिति बड़ी डाँवाडोल हो रही थी। आपको योग्य अनुभवी और बहादुर पुरुष समझकर दरबार ने फौज मुसाहिब का पद दिया। तदनंतर आपने कई युद्धों में सम्मिलित होकर बहादुरी के काम किये। संवत् १८४९ में आप गोडवाड़ प्रान्त के युद्ध में गये और उसी साल महाराजा विजयसिंहजी ने प्रसन्न होकर जेठ सुदी १२ के दिन आपके बड़े भाई के लिए "रावरजा शमशेर बहादुर" की और छोटे भाई के लिए "राव" की पुश्तैनी पदवी प्रदान की। साथ ही दरबार ने आपको २९ हजार की जागीरी और पैरों में सोना पहिनने का अधिकार बख्शा। इसके अलावा आपको पालकी और हाथी सिरोपाव भी इनायत किया गया। इस प्रकार विविध उच्च सम्मानों से विभूषित होकर संवत् १८५४ में आप स्वर्गवासी हुये। आपके छोटे भ्राता राव मेहकरणजी जालौर के घेरे के समय किले में केसरिया करके काम आये। आपके रिधमलजी एवं कल्याणमलजी नामक दो पुत्र हुए।

---

* लोढ़ा गौत्र एक और है। ऐसा कहा जाता है कि चावा नामक एक माहेश्वरी गृहस्थ श्री वर्द्धमानसूरिजी के उपदेश से जैन हुआ। इनकी संतानें लोढ़ा कहलाई।

में स्वर्गवासी हुए। आपके हीराचन्दजी और जसराजजी नामक दो पुत्र हुए। इन बन्धुओं मे सेठ हीराचंदजी लोढ़ा सवत् १९६३ में स्वर्गवासी हुए। सेठ जसराजजी लोढ़ा का कारबार बंगलोर में था, आपके पुत्र मनराजजी और पौत्र अबीरचंदजी का २ साल पूर्व छोटी वय में शरीरान्त हो गया।

सेठ हीराचन्दजी लोढ़ा के पुत्र सोभागमलजी और अमोलकचन्दजी विद्यमान है। आप बन्धुओं का जन्म क्रमशः संवत् १९५० और १९५८ में हुआ। आपने लगभग २० साल पूर्व मद्रास प्रान्त के मदुरान्त-कम् नामक स्थान में बेङ्किग व्यापार आरम्भ किया, और इस दुकान से अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। व्यापारिक कार्मो के अलावा आप बन्धु सार्वजनिक शिक्षा प्रचार के कामों में प्रशंसनीय भाग लेते रहते हैं। आप जैन गुरुकुल ब्यावर के ट्रस्टी हैं और उसमें १ हजार रुपया प्रतिवर्ष सहायता देते हैं।

सेठ अमोलकचन्दजी लोढ़ा स्था० जैन कान्फ्रेंस की जनरल कमेटी के मेम्बर और बगडी की श्री महावीर जैन पाठशाला के सेक्रेटरी हैं। इसी तरह के धार्मिक, व विद्योन्नति के कामों में आप सहयोग देते रहते हैं। बगडी के ओसवाल समाज में आपका परिवार बडे सम्मान की निगाहों से देखा जाता है।

सेठ सोभागमलजी के पुत्र मिश्रीलालजी, धरमीचन्दजी तथा माणकचन्दजी हैं। मिश्रीलालजी सुशील तथा समझदार युवक हैं। तथा फर्म के व्यवसाय में भाग लेते है।

सेठ इन्द्रमलजी लोढ़ा का परिवार, सुजानगढ़

इस परिवार के पूर्वज सेठ बागमलजी लोढ़ा अपने मूल निवास स्थान नागौर में व्यापार करते थे। इनके पुत्र सूरजमलजी तथा चाँदमलजी ने संवत् १९०० में सुजानगढ़ में सूरजमल इन्द्रमल के नाम से दुकान की। सेठ सूरजमलजी ने अपने नाम पर अपने भतीजे इन्द्रमलजी को दत्तक लिया। सेठ इन्द्रमलजी के जीवनमलजी, आनदमलजी, दौलतमलजी और कानमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भ्राताओं ने सवत् १९५१ में कलकत्ते में आनदमल कानमल के नाम से जूट का व्यापार शुरू किया। सवत् १९६० में रंगपुर की ब्राच कानमल किशनमल के नाम से और खोली गई। इन चारो भाइयों ने कठिन परिश्रम कर अपने व्यवसाय को उन्नति पर पहुँचाया। सवत् १९७५ में आप लोगों का कारबार अलग २ हुआ।

सेठ जीवनमलजी—आप सुजानगढ़ में ही कारबार करते रहे इनके पुत्र गणेशमलजी ने अपने नाम पर भमरमलजी को दत्तक लिया। भमरमलजी के पुत्र जीतमलजी इस समय सुजानगढ़ में ही रहते हैं।

सेठ आनन्दमलजी—आपने पीरगाछा (बगाल) और रगपूर में अपनी ब्राच आनन्दमल किशन-मल के नाम से खोली। इस पर जूट का व्यापार आरम्भ किया। आपके हाथों से व्यवसाय को उन्नति

समय तक इस परिवार के पास १० हजार रुपयों की जागीर थी। आपके रावरजा सरदारमलजी और जोरावरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें सरदारमलजी, राव फौजमलजी के नाम पर दत्तक गये।

राव फौजमलजी—आप मारवाड राज्य में हाकिम और सुपरिंटेन्डेण्ट के पद पर कार्य करते रहे। दरबार ने आपको सोना और पालकी सिरोपाव इनायत किया था। सम्वत् १९०३ में आप स्वर्गवासी हुए।

रावरजा सरदारमलजी—आप सम्वत् १९०५ में फौजमलजी के नाम पर दत्तक गये। दरबार ने आपको बैठने का कुरब और ताजीम इनायत की। आपने अपने पिता राजमलजी के ओसर के उपलक्ष में १२॥ न्यात और राज्य के रिसाले को निमन्त्रित किया। उस समय दरबार ने आपको मोतियों की कंठी, कडा, सिरपेंच, हाथी सिरोपाव, पालकी और पैर में पहिनने के लिए सांटे इनायत की। सम्वत् [illegible] आप दीवानी अदालत तथा हुजूरी दफ्तर की दरोगाई (मजिस्ट्रेट शिप) और हाकिमी का कार्य करते रहे। इसके बाद आप पोलिटिकल एजेण्ट के वकील और दफ्तर के सुपरिन्टेन्डेन्ट रहे। संवत् १९३३ की भादवा सुदी ८ के दिन महाराजा जसवंतसिंहजी ने आपको दीवानगी का सम्मान बख्शा। संवत् १९४१ में [illegible] ए० जी० जी० के यहाँ मारवाड़ राज्य की तरफ से वकील बनाये गये और मृत्यु समय तक आप [illegible] कार्य करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९४५ की काती वदी ८ को हुआ। आपकी हवेली पर महाराजा जसवंतसिंहजी मातमपुर्सी के लिए पधारे। आपके रावरजा माधौसिंहजी और अमरसिंहजी नामक २ पुत्र हुए।

राव जोरावरमलजी—आपका जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप साचोर और जोधपुर हाकिम रहे तथा संवत् १९४९ में ए० जी० जी० के यहाँ वकील बनाये गये। संवत् १९५२ की माघ सुदी ३ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके राव बहादुरमलजी तथा राव दानमलजी नामक २ पुत्र हुए।

राव बहादुरमलजी—आप जेतारण और पचपदरा के हाकिम रहे और संवत् [illegible] ए. जी. जी के वकील बनाये गये। आपको पैरों में सोना पहिनने का अधिकार प्राप्त था। संवत् [illegible] में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सोभागमलजी म्युनिसिपैलिटी में सर्विस करते हैं।

राव बहादुरमलजी के छोटे भ्राता राव दानमलजी दौलतपुरा तथा पचपदरा के हाकिम [illegible] संवत् १९६५ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र राव बदनमलजी का जन्म संवत् १९[illegible] आसोज सुदी ७ को हुआ। आप थोड़े समय के लिये एरनपुरा की छावनी के वकील रहे और [illegible] सन् १९२३ से देवस्थान धर्मपुरा के सुपरिण्टेण्डेण्ट हैं। आपके मोहवतसिंहजी, फतेसिंहजी तथा उम्मेदसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं।

रावराजा माधोसिंहजी—आपका जन्म संवत् १९२४ की पोप वदी ८ को हुआ। आरम्भ में

डिगरी हासिल की और उसके दो साल बाद से आप भुसावल में प्रेक्टिस करते हैं। आप शुद्ध खद्दर [illegible]ण करते हैं तथा भुसावल के प्रतिष्ठित वकील हैं।

श्री नन्दूबाई ओसवाल—आप श्री नैनसुखजी ओसवाल की धर्मपत्नी एवं सेठ धोंडीरामजी [illegible]सरा की कन्या रत्न हैं। ओसवाल समाज की इनीगिनी शिक्षित रमणियों में आपका नाम अग्रगण्य है। [illegible]से तो आपका शिक्षण मराठी चौथी कक्षा तक ही हुआ है, पर आपके पिताजी की स्त्री-शिक्षा की ओर [illegible] अभिरुचि होने से आपने पठन पाठन द्वारा अपने अध्ययन को अच्छा बढ़ाया है। आप महाराष्ट्र [illegible] जैन स्त्री परिषद् के मालेगाँव अधिवेशन की सभानेत्री थीं। आपने ओसवाल नवयुवक के मारवाड़ी [illegible]क का सम्पादन किया था। आप शुद्ध खद्दर धारण करती हैं तथा परदा के समान जघन्य प्रथा [illegible] विरोधी हैं। आपके धार्मिक तथा सामाजिक सुधार विषयक लेख हिन्दी और मराठी के पत्रों में [illegible]शित होते रहते हैं।

सेठ आलमचंद शोभाचंद लोढ़ा, हिंगनघाट

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवास स्थान नागोर (मारवाड़) का है। सब से प्रथम इस [illegible]दान के पूर्व पुरुष सेठ आलमचन्दजी ने ८० वर्ष पूर्व हिंगनघाट में आकर अपनी फर्म स्थापित की थी। [illegible]के पुत्र शोभाचन्दजी के हाथों से इस फर्म की उन्नति हुई। इनके जेठमलजी तथा हरकचन्दजी नामक [illegible]त्र हुए। इनमें से सेठ जेठमलजी का सं १९८५ में स्वर्गवास हो गया है। आप बड़े धार्मिक पुरुष थे। [illegible]वासी रत्न चिंतामणि सभा के आप संचालक थे। आपके रिखबदासजी नामक एक पुत्र हैं।

इस समय इस फर्म के संचालक सेठ हरकचन्दजी तथा रखबदासजी हैं। आपकी फर्म पर [illegible] का व्यापार होता है। आप लोगों ने हिंगनघाट के स्थानक में ३०००) तथा पाथरड़ी जैन पाठ-[illegible]ला में ५००) की सहायता प्रदान की है। इसी प्रकार और भी सार्वजनिक कार्यों में देते रहते हैं।

सेठ चुन्नीलाल लूणकरण लोढ़ा चांदा

इस परिवार का निवास तीवरी (जोधपुर स्टेट) है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने [illegible] सज्जन हैं। चाँदा में सेठ लूणकरणजी लोढ़ा ने लगभग ५० साल पहिले इस दुकान का स्थापन [illegible], आप बात के बड़े पक्के पुरुष थे और यहा के व्यापारिक समाज में अच्छी इज्जत रखते थे। आपका [illegible]वसान ता० २० मार्च सन् १९३३ को हुआ। आपके पुत्र लोढ़ा सौभागमलजी तथा मोतीलालजी फर्म [illegible] व्यापार को भली प्रकार संचालित कर रहे हैं। सौभागमलजी का जन्म संवत् १९५९ में हुआ।

बाल्यावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। दूसरे पुत्र सेठ सुजानमलजी ने सन् १८५७ के विद्रोह के समय अंग्रेज सरकार को बहुत सहायता दी। इन्होंने रियासत शाहपुरा में रायबहादुर सेठ मूलचंदजी सोनी के साझे में दूकान खोली, और वहाँ के राज्य से लेन देन किया। इनके समय साम्भर की हुकूमत इनके घराने में आई और वहाँ का कार्य्य आप अपने प्रतिनिधियों द्वारा करते रहे। इनके स्वर्गवास के पश्चात् इस घराने की बागडोर तीसरे पुत्र रायबहादुर सेठ समीरमलजी के हाथ में आई। अजमेर नगर की म्युनिसिपल कमेटी के आप बहुत वर्षों तक मेम्बर रहे और बहुत समय तक आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे थे। आप म्यु० कमेटी के ३१ वर्ष तक वाइस चेयरमैन बने रहे। इस पद पर और मजिस्ट्रेटी पर ये मृत्यु दिवस तक अरूढ़ रहे थे। इनकी वाइस चेयरमैनी में अजमेर में सुप्रसिद्ध जल की सुविधा के लिये "फाईसागर" बना, जिससे आज सारे नगर और रेलवे को पानी पहुँचाया जाता है। इनके समय में कलकत्ता, बम्बई, कोटा, अलवर, टोंक, पड़ावा, सिरोंज, छबड़ा, और निम्बाहेड़ा में नयी दूकानें खुलीं। ये अलवर, कोटा और जोधपुर की रेजीडेन्सी के कोषाध्यक्ष नियत हुऐ। देवली और एरनपुरा की पल्टनों के भी कोषाध्यक्ष का कार्य इन्हें मिला। रायबहादुर सेठ समीरमलजी को सार्वजनिक कार्य्यों में प्रसन्नता होती थी। संवत् १९५६ के अकाल में अजमेर में आपने एक धान की दुकान खोली। इस दूकान से गरीब मनुष्यों को सस्ते भाव से उदर पूर्ति के हित अनाज मिलता था। इस दुकान का घाटा सब आपने दान किया। इनके समय में यह घराना भारतवर्ष भर में विख्यात हो गया तथा देशी रजवाड़ों से इन्होंने घनिष्ठ मित्रता स्थापित की। उदयपुर, जयपुर, जोधपुर से इनको सोना और ताजिम थी। बृटिश गवर्नमेंट में भी इनका मान बहुत बढ़ा। इनमें यह योग्यता थी कि जिन अफसरों से ये एकबार मिल लेते थे वे सदा इनको आदर की दृष्टि से देखते थे। इनके कार्य्यों से प्रसन्न होकर सरकार ने इनको सन् १८७७ में रायसाहब की पदवी और तत्पश्चात् सन् १८९० में रायबहादुर की पदवी दी। इनकी मृत्यु के पश्चात् सेठ हमीरसिंहजी के पुत्र दीवान बहादुर सेठ उम्मेदमलजी ने इस घराने के कार्य्य को सचालन किया। वे व्यापार में बड़े दक्ष थे। इनके Entreprise से इस घराने की सम्पत्ति बहुत बढ़ी। सरकार ने इनको सन् १९११ में रायबहादुर की और सन् १९१५ में दीवान बहादुर की पदवी दी। ये भी मृत्यु दिवस तक अजमेर नगर के प्रसिद्ध आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे थे। रियासतों से इनको भी सोना और ताजिम थी। इन्होंने उद्योग धंधों को उद्यम से लगाने के हेतु ब्यावर में एडवर्ड मिल खोली, जिसमें बहुत अच्छा कपड़ा बनता है और जो इस समय भारतवर्ष की विख्यात मिलों में एक है। इन्होंने बी० बी० सी० आई० रेलवे के मीटर गेज भाग के धन कोषों का तथा कुल वेतन बाँटने का ठेका लिया और इसका काम भी उत्तमता से चलाया। उम्मेदमलजी के कोई संतान नहीं हुई। इनके नाम पर सेठ समीरमलजी के दूसरे पुत्र अभयमलजी गोद आये।

सेठ रतनचन्दजी का जन्म संवत् १९४० में हुआ। आपके बड़े भ्राता मुलतानमलजी ने इस दुकान के व्यापार और सम्मान को विशेष बढ़ाया। आप आस पास की ओसवाल समाज में सम्माननीय व्यक्ति थे। आप सवत् १९८७ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मोतीलालजी और गणेशमलजी हैं। ताराचन्दजी के नाम पर ताराचन्दजी दत्तक लिये गये है। सेठ रतनचन्दजी आस पास की ओसवाल समाज में अच्छी इज्जत रखते हैं। आपके यहाँ मुलतानचन्द अमोलकचन्द के नाम से लेन देन और कृषि कार्य होता है। आप तेरापथी आम्नाय के मानने वाले सज्जन है। आपके पुत्र दीपचन्दजी, मोहनलालजी और ...लालजी हैं।

इसी तरह चादमलजी के यहाँ चादमल रामसुख के नाम से व्यापार होता है। आपके पुत्र ...चन्दजी, लक्ष्मीचन्दजी, किशनदासजी, चम्पालालजी तथा दुलीचन्दजी है।

सेठ जेठमल जोगराज लोढ़ा, त्रिचनापल्ली

इस परिवार का मूल निवास फलोदी (जोधपुर स्टेट) में है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ अखेचन्दजी के पुत्र प्रेमराजजी थे। इनके मोतीलालजी और देवीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ देवीचन्दजी लोढ़ा फलोदी में रहते थे। वहीं से कलकत्ते के साथ अफीम की पेटियों के वायदे का धंधा करते थे। सवत् १९६४ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके जेठमलजी, अगरचदजी और जोगराजजी नामक तीन पुत्र हुए। जेठमलजी का सवत् १९५८ में स्वर्गवास हुआ। आपकी धर्मपत्नी ने दीक्षा ग्रहण की।

देश से व्यापार के लिये सेठ जोगराजजी लोढ़ा सम्वत् १९८० में त्रिचनापल्ली आये और आपने ...चन्द साहूकार के नाम से गिरवी का व्यापार आरम्भ किया। आप बड़े मिलनसार और सरल स्वभाव के सज्जन है। आपकी बड़ी बहन श्री सोनीबाई ने सम्वत् १९५५ में मुनि सुखसागरजी महाराज के सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की। इनका नाम सौभाग्यश्रीजी था। सम्वत् १९७५ में इनका स्वर्गवास हो गया।

सम्वत् १९८३ में सेठ अगरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। अतः जोगराजजी ने उनका भाग ...कर अपने नाम से धन्धा चालू किया। जेठमलजी के कोई सन्तान नहीं थी, अतएव उनके उत्तराधिकारी आप ही हुए। आप इस समय त्रिचनापल्ली पाजरापोल के प्रेसिडेण्ट हैं। सेठ अगरचन्दजी के पुत्र ...मलजी और बालचन्दजी फलोदी में पढ़ते हैं। आपके यहाँ फलोदी में हुंडी चिट्ठी का काम होता है।

राय साहब लाला टेकचंदजी का खानदान, जंडियाला गुरु

इस खानदान के लोग श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय के हैं। आप लोग मूल निवासी ...के हैं। वहाँ से आप लोग पजाब के कसेल नामक गाव में आकर बस गये। वहाँ पर इस

चांदी, ताम्बा, पीतल, जस्ता, चीनी, कपड़े आदि का व्यापार सीधा विलायत से होता है। रानगंज (कलकत्ता) में आपका चांवल का बड़ा भारी व्यापार होताहै। कई स्थानों पर यह फर्म स्टेट बैंकर है।

लोढ़ा हणुतचंदजी का परिवार, जोधपुर

रावरजा माधोसिंहजी के पूर्वज लोढा सुलतानमलजी से इस खानदान की शाखा अलग हुई। सुलतानमलजी की कुछ पुश्तों के बाद लोढ़ा रामचन्द्जी हुए।

रामचन्दजी लोढा—आप फलौदी के हाकम के पद पर नियुक्त किये गये थे। पर किसी कारणवश आप राज्य द्वारा कैद कर लिए गये। कैद से मुक्त होने पर आपने राज्य की नोकरी न करने का निश्चय किया। इसके बाद आप अजमेर की ओर आ गये। और अपनी कार्य्य कुशलता से अच्छा द्रव्य उपाजन कर लिया। आपकी पीसागन की हवेलियाँ अब भी लोढ़ों की हवेलियों के नाम से मशहूर हैं। लोढ़ा रामचन्दजी के साहिबचन्दजी, शिवचन्दजी और शोभाचन्दजी नामक ती न पुत्र हुए। इनमें से प्रत्येक को अपने पिताजी की सम्पत्ति से लगभग तीन-तीन लाख रुपये मिले थे। पर इन्होंने इस सम्पत्ति को वर्बाद कर डाला और अपने पुत्रों के लिये कुछ नहीं छोड़ा। इससे लोढ़ा शोभाचन्दजी के पुत्र रूपचन्दजी की आर्थिक दृष्टि से बड़ी शोचनीय स्थिति हो गई।

रूपचदजी लोढ़ा—आप बड़े साहसी थे। आप पीसागन से अजमेर चले आये और सिपाहीगिरी की नौकरी करली। इसी समय आपने फारसी भाषा का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। वहाँ से आप जोधपुर आये, और ३०) मासिक पर ब्रिटिश रेजिमेण्ट में वकील हो गये। बढ़ते बढ़ते आप १५०) मासिक तक पहुँच गये। इसी समय मारवाड के गोडवाड़ प्रात में मीणों ने विद्रोह मचा दिया। इस विद्रोह का दमन करने के लिये जोधपुर राज्य की ओर से रूपचन्दजी भेजे गये। इन्होंने इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त की। इसके बाद आप नागोर के कोतवाल तथा सिवाने के हाकिम बनाये गये। फिर वहाँ से आप सांचोर के हाकिम होकर गये। यहाँ से अवसर ग्रहण कर आप जोधपुर रहने लगे। यहाँ आपको ६०) मासिक पेन्शन मिलती रही। सम्वत् १९५५ में आपका स्वर्गवास हुआ।

वभूतचन्दजी लोढ़ा—रूपचन्दजी के बडे पुत्र वभूतचन्दजी सांचोर, शेरगढ़, फलोदी और ... आदि अनेक स्थानों पर हाकिम रहे। फलोदी में आपने बडी बहादुरी से डाकुओं का उपद्रव शांत किया और उनके नेता को गिरफ्तार किया, इससे राज्य की ओर से आपको पुरस्कार मिला। इसी सन् १९.. में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लोढ़ा किशनचन्दजी सेशन कोर्ट में सरिश्तेदार हैं।

हणवतचदजी लोढ़ा—रूपचन्दजी के दूसरे पुत्र लोढ़ा हणवन्तचन्दजी का जन्म सम्वत् १९..

१९३१ तक उसके प्रेसिडेण्ट भी रहे। इसके अतिरिक्त आप अमृतसर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के पहले भी तीन साल तक मेम्बर रहे और अब भी मेम्बर हैं। आप बड़े उत्साही और सार्वजनिक कार्यों मे बड़ी दिलचस्पी से भाग लेने वाले सज्जन हैं। स्थानीय म्युनिसीपालिटी में आपकी सेवाएँ बड़ी बहुमूल्य समझी गई। यहाँ तक कि हिज एक्सलेंसी गवर्नर सर जाफरे डि० माउण्ट मौरोसी ने सन् १९२९ मे जण्डियाले मे दरबार करके अपने भाषण में पजाब को म्युनिसीपालिटियों को राय साहब टेकचन्दजी की सेवाओं का अनुकरण करने की सलाह दी थी। इसी सम्बन्ध में आपको दो तीन खिलअतें भी प्राप्त हुईं। सन् १९२७ मे गवर्नमेंट ने आपको "राय साहिब" की उपाधि से विभूषित किया।

सन् १९२९ तक आप पंजाब सभा के जनरल सेक्रेटरी रहे और उसके बाद आप उसके सभापति हुए, जो अब तक हैं। इसके अलावा आप अखिल भारतवर्षीय जैन स्थानकवासी सम्मेलन के प्रातिक मेम्बरी एव उसकी स्टेंडिंग कमेटी में पजाब प्रात की ओर से प्रतिनिधि हैं। आप ही ने पंजाब के स्थानकवासियों के झगडों को निपटाने में मुख्य भाग लिया था। साधु-सम्मेलन अजमेर की कार्य्यवाही में भी आपका मुख्य भाग था। आप बड़े समाज सुधारक और साहसी व्यक्ति हैं। आपने अनेक विरोधों का सामना करते हुए भी पजाब प्रान्त में दस्सा और बीसा फिरकों में बेटी व्यवहार चालू होने का रास्ता खुला किया। इधर पजाब के जैन समाज में आप प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपके इस समय लाला जगन्नाथजी और लाला अमृतलालजी नामक २ पुत्र हैं। लाला अमृतलालजी ने बी० ए० एल० एल० बी० की सनद हासिल की है। बी० ए० में आपका ब्रिलियंट केरेक्टर रहा। आप लाहौर के अमर जैन होस्टल में असिस्टेंट सुपरिण्टेण्डेण्ट और महावीर जैन एसोशिएसन के वाइस प्रेसिडेण्ट रहे। इसी तरह के सार्वजनिक कामों में भाग हिस्सा लेते रहते हैं। आपके पुत्र नरेन्द्रकुमार तथा जैनेन्द्रकुमार हैं। लाला अमृतलालजी के छोटे भ्राता जगन्नाथजी अपनी फर्म का चाँदी सोने का व्यापार सम्हालते हैं।

लाला नेतरामजी का जन्म १९४५ में हुआ। आप योग्य पुरुष और डिस्ट्रिक्ट दरबारी हैं। आपके बड़े पुत्र लाला मदनलालजी बड़े उत्साही व्यक्ति हैं। तथा तमाम दुकानों का काम बड़ी होशियारी से चलाते हैं। इनके भाई मूलचन्दजी तथा प्रकाशचन्दजी भी व्यापार में भाग लेते हैं। लाला नन्दलालजी का जन्म स० १९५२ में हुआ। आप जडियाला जैन मित्र मडल के सेक्रेटरी, गौशाला और मर्चेण्ट एसोशियेसन के वाइस प्रेसिडेण्ट हैं। आप चाँदी सोने का व्यापार करते हैं। आपके कपूरचन्दजी सरदारीलालजी और सत्यकुमारजी नामक ३ पुत्र हैं। लाला कपूरचन्दजी ने वीविंग इन्स्टीट्यूट अमृतसर से डिप्लोमा प्राप्त किया है। आपको वीविंग सम्बन्ध में लण्दन से २ सार्टिफिकेट मिले हैं।

इस समय इस परिवार की जण्डियाले में ५ दुकानें हैं, जिन पर कपड़ा चाँदी सोना मनी लेंडिंग

चादी, ताबा, पीतल, जस्ता, चीनी, कपड़े आदि का व्यापार सीधा विलायत से होता है। रामपुर (कलकत्ता) में आपका चांवल का बड़ा भारी व्यापार होताहै। कई स्थानों पर यह फर्म स्ट ...।

लोढ़ा हणुतचंदजी का परिवार, जोधपुर

रावरजा माधोसिंहजी के पूर्वज लोढा सुलतानमलजी से इस खानदान की शाखा अलग ... सुलतानमलजी की कुछ पुश्तों के बाद लोढ़ा रामचन्द्जी हुए।

रामचन्दजी लोढ़ा—आप फलौदी के हाकिम के पद पर नियुक्त किये गये थे। पर ... कारणवश आप राज्य द्वारा कैद कर लिए गये। कैद से मुक्त होने पर आपने राज्य की नौकरी न ... निश्चय किया। इसके बाद आप अजमेर की ओर आ गये। और अपनी कार्य्य कुशलता से अच्छा ... उपाजन कर लिया। आपकी पीसांगन की हवेलियाँ अब भी लोढ़ों की हवेलियों के नाम से मशहूर है। लोढ़ा रामचन्द्जी के साहिबचन्दजी, शिवचन्दजी और शोभाचन्द्जी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें प्रत्येक को अपने पिताजी की सम्पत्ति से लगभग तीन-तीन लाख रुपये मिले थे। पर इन्होंने इस ... को बर्बाद कर डाला और अपने पुत्रों के लिये कुछ नहीं छोड़ा। इससे लोढ़ा शोभाचन्दजी के पुत्र रूपचन्द की आर्थिक दृष्टि से बड़ी शोचनीय स्थिति हो गई।

रूपचदजी लोढ़ा—आप बडे साहसी थे। आप पीसागन से अजमेर चले आये और सिपाही की नौकरी करली। इसी समय आपने फारसी भाषा का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। वहाँ से ... जोधपुर आये, और ३०) मासिक पर ब्रिटिश रेजिमेण्ट में वकील हो गये। बढ़ते बढ़ते आप १५०) ... तक पहुँच गये। इसी समय मारवाड़ के गोड़वाड़ प्रात में मीणों ने विद्रोह मचा दिया। इस ... का दमन करने के लिये जोधपुर ;राज्य की ओर से रूपचन्दजी भेजे गये। इन्होंने इस काम में ... सफलता प्राप्त की। इसके बाद आप नागोर के कोतवाल तथा सिवाने के हाकिम बनाये गये। ... से आप सांचोर के हाकिम होकर गये। यहाँ से अवसर ग्रहण कर आप जोधपुर रहने लगे। जहाँ ... आपको ६०) मासिक पेन्शन मिलती रही। सम्वत् १९५५ में आपका स्वर्गवास हुआ।

बभूतचन्दजी लोढ़ा—रूपचन्दजी के बडे पुत्र बभूतचन्दजी सांचोर, शेरगढ़, फलोदी और ... आदि अनेक स्थानों पर हाकिम रहे। फलोदी में आपने बड़ी बहादुरी से डाकुओं का उपद्रव शान्त ... और उनके नेता को गिरफ्तार किया, इससे राज्य की ओर से आपको पुरस्कार मिला। इसी सद् १९... में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लोढ़ा किशनचन्दजी सेशन कोर्ट में सरिश्तेदार हैं।

हणवतचदजी लोढ़ा—रूपचन्दजी के दूसरे पुत्र लोढ़ा हणवन्तचन्दजी का जन्म सम्वत् १...

पास एक धर्मशाला बनवाई गई तथा आपकी धर्मपत्नी की स्मृति मे आत्मानद जैन कन्या पाठशाला क मकान दिया गया। आपके उत्तमचंदजी, चदनमलजी तथा रतनचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला उत्तमचदजी और चंदनमलजी योग्य तथा धार्मिक व्यक्ति हैं।

लाला रतनचंदजी बडे समझदार सज्जन है। इस समय आप श्री आत्मानद जैन हॉईस्कूल कमेटी के प्रेसिडेंट, कन्या पाठशाला के प्रेसिडेंट, आत्मानंद जैन महासभा के कोषाध्यक्ष, हस्तिनापुर तीर्थ कमेटी के कोषाध्यक्ष तथा अम्बाला प्रिजनर्स सोसायटी के डायरेक्टर हैं। राज्य में भी आपका काफी सम्मान है। आप यहाँ के डिस्ट्रिक्ट दरबारी है। आप प्राय. सभी धार्मिक सस्थाओं में दान देते रहते हैं। आप के यहाँ चादी, सोना व कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यहाँ पर आपकी काफी जायदाद है।

राजसिंहजी लोढ़ा का परिवार, बनेड़ा

इस परिवार का मूल निवास स्थान मॉडलगढ़ है। वहाँ यह परिवार बड़ा सम्माननीय समझा जाता है। माडलगढ़ से राजसिंहजी लोढ़ा बनेड़ा आये। यहाँ के अधिपति ने आपको रेवेन्यू डिपार्टमेण्ट की व्यवस्था का कार्य्य सौंपा। आपके पुत्र उम्मेदसिंहजी भी बनेड़ा में सर्विस करते रहे। उदयपुर महाराणा की ओर से इस परिवार को 'नगर सेठ" की पदवी प्राप्त है तथा यह कुटुम्ब बनेड़ा की जनता और वहाँ की ओसवाल जाति में आदरणीय माना जाता है।

उम्मेदसिंहजी लोढ़ा के पुत्र जसवन्तसिंहजी लोढ़ा की आयु इस समय २१ साल की है। आपने उदयपुर हॉई स्कूल से मेट्रिक, सनातन धर्म कॉलेज कानपुर से कामर्स की इन्टरमीजिएट और कलकत्ता यूनिवर्सिटी से बी कॉम की परीक्षाएँ पास कीं। इस वर्ष आप आगरा यूनिवर्सिटी के प्रीवियस एल० एल० बी और बम्बई के जी० डी० ए० इम्तहान में बैठे हैं। आपने अपने पैरों पर खडे रह कर उच्च शिक्षा प्राप्त की है। इस समय आप भण्डारी विद्यालय इन्दौर में कामर्स के अध्यापक है।

भी नागौर मे विद्यमान है। आपके पूर्वज सारंगशाहजी को देहली-बादशाह ने शाह की पदवी इ की थी। सं० १७५६ मे महाराजा अजीतसिंहजी ने आपको आधे महसुल की माफी का परवाना सम्मानित किया। आपके सुजानसिंहजी, सबलसिंहजी, भावसिंहजी तथा भगवतसिंहजी नामक चार पुत्र हु

भावसिंहजी लोढ़ा—आप बड़े प्रभावशाली साहुकार थे। एक समय आपके नेतृत्व में नागौ साहूकारोंने राज्य से अप्रन्न होकर नागौर छोड दी तब संवत् १७७४ मे जोधपुर नरेश अजितसिंहजी ने नाम पर दिलासा का पत्र भेज कर सब को पुन वापस बुलाया था। नागौर वापस आने पर आ जोधपुर दरबार में बैठने का कुरुब इनायत किया था। आपका बीकानेर स्टेट में भी अच्छा सम्मा आपके हठीमलजी, अभयमलजी तथा हिम्मतमलजी नामक तीन पुत्र हुए। आप सब भाइयों को जो दरबार की ओर से कई रुक्के परवाने, दुशाले तथा सिरोपाव बक्षे गये थे।

सेठ हठीसिंहजी के पुत्र हिन्दूमलजी को स० १८३३ में जोधपुर दरबार की आ सिरोपाव इनायत किया गया। आपके परथीमलजी, गढ़मलजी, भारमलजी तथा फौजमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें गढमलजी के गम्भीरमलजी, सिरेमलजी तथा मगनमलजी नामक तीन पुत्र हुए। लोगों ने सवत् १९६४ मे जोधपुर के घेरे के समय महाराजा मानसिंहजी को अर्थिक मदद दी थी, प्रसन्न होकर मानसिंहजी ने आपको एक रुक्का इनायत किया था।

लोढ़ा मगनमलजी के सौभागमलजी, छगनमलजी, मनरूपमलजी, अनोपचन्दजी तथा ब मलजी नामक पाँच पुत्र हुए। आप लोगों को भी जोधपुर स्टेट की ओर से दुशाले, सिरोपाव व खास इनायत किये गये थे। इनमें से सेठ सौभागमलजी के जावन्तमलजी, मनरूपमलजी के मनोहरमल कस्तूरचन्दजी तथा जीतमलजी और बहादुरमलजी के जसरूपमलजी नामक पुत्र हुए। इनम से कस्तूरच अनोपचन्दजी के नाम पर, जसरूपमलजी के ज्येष्ठ पुत्र सुपारसमलजी जावतमलजी के नाम पर जीतमलजी के पुत्र घासीलालजी मनोहरमलजी के यहाँ पर दत्तक गये। सेठ फूलमलजी नगरूपम तथा घासीमलजी को जोधपुर स्टेट की ओर से दुशाले इनायत हुए। सेठ घासीमलजी ने १९५६ के अ में गरीबों तथा पर्दानशीन औरतों की बडी इम्दाद की थी। आपके इस समय लक्ष्मीमलजी, प्रसन्न तथा भंवरलालजी नामक पुत्र विद्यमान है। इनमें से लक्ष्मीमलजी, कस्तूरमलजी के नाम पर त प्रसन्नमलजी,जीतमलजी के नाम पर दत्तक गये है।

वर्तमान में इस परिवार के मुख्य व्यक्ति सेट लक्ष्मीमलजी, प्रसन्नमलजी, भंवरमल कुदनमलजी (जसरूपमलजी के पुत्र) और गंगामलजी (सुपारसमलजी के पुत्र) विद्यमान है।

इस समय सेठ लक्ष्मीमलजी के पुत्र चचलमलजी, विरदमलजी गुलाबमलजी, बहादुरमल

इन्हीं सारंगदासजी के रघुनाथदासजी और नेतसीजी नामक दो पुत्र हुए। रघुनाथदासजी के परिवार वालों ने फलौदी को ही अपना निवासस्थान कायम रक्खा। नेतसीजी के परिवार वाले कुछ बीकानेर, कुछ जयपुर, कुछ जोधपुर और कुछ अजमेर चले गये। तथा कुछ फलौदी ही में रहकर व्यापार करने लगे। कहना न होगा कि डड्ढा परिवार ने जहाँ २ अपने व्यापारिक केन्द्र स्थापित किये, उन सब स्थानों पर उनकी पोजिशन बहुत ऊँचे दरजे की रही। इन लोगों ने अपनी व्यापारिक प्रतिभा से द्रव्य और राज्य सम्मान दोनों चीजों को प्राप्त किया। इन लोगों के पास तत्कालीन समय के जोधपुर, जैसलमेर तथा बीकानेर के महाराजाओं के दिये हुए ऐसे रुक्के मिलते हैं, जिनसे मालूम होता है कि उस समय के राजकीय वातावरण में इनकी बहुत अच्छी व्यापारिक प्रतिष्ठा जमी हुई थी। जोधपुर और जैसलमेर राज्य की ओर से इस लोगों को चौथाई महसूल की माफी दी गई थी। अस्तु, अब हम नीचे रघुनाथसिहजी और नेतसीजी के परिवार का वर्णन करते हैं।

डड्ढा रघुनाथदासजी का खानदान

(सेठ सुगनमलजी लालचन्दजी डड्ढा, फलौदी)

डड्ढा रघुनाथदासजी के तीन पुत्र हुए जिनमें से तीसरे पुत्र अनोपचन्दजी के वंश में आगे चलकर क्रमश जीवराजजी, पीरचन्दजी, कपूरचन्दजी, किशनचन्दजी और माणिकचन्दजी हुए। इनमें माणिकचन्दजी के शाह सुगनमलजी, मगनचन्दजी और अगरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। संवत् १६९५ में इस खानदान वाले जैसलमेर से चलकर फलौदी (मारवाड) में जा बसे और तभी से इस परिवार वाले फलौदी में ही निवास करते हैं।

शाह सुगनमलजी डड्ढा—आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। संवत् १९५७ में आपने व्यापार के निमित्त मद्रास प्रान्त की ओर प्रस्थान किया तथा इसी वर्ष मद्रास में बैंकिङ्ग कारबार की फर्म स्थापित की। आपके लक्ष्मीचन्दजी, सौभागमलजी तथा लालचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

लक्ष्मीचन्दजी डड्ढा—डड्ढा लक्ष्मीचन्दजी का जन्म संवत् १९३९ में हुआ था। आप बड़े व्यापार कुशल, अनुभवी, योग्य तथा समझदार सज्जन थे। सर्व प्रथम आपने संवत् १९७० में अपने भाइयों के साथ मद्रास में 'केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट' की एक फर्म स्थापित की। इस फर्म के व्यवसाय को आपने अपना व्यापार चातुरी तथा बुद्धिमानी से बहुत चमकाया। इस फर्म पर आपकी कार्य कुशलता तथा प्रबन्ध संचालन से दवाइयों का काम बड़ी तीव्र गति से बढ़ने लगा और कुछ ही वर्षों बाद यह फर्म इस व्यापार को बहुत बड़े स्केल पर करने लगी। इस समय यह फर्म सारे मद्रास में सबसे बड़ी तथा मशहूर

नगर सेठ कालूरामजी लोढ़ा—आप पाली की पंचपंचायतों में प्रधान व्यक्ति थे। आपको जोधपुर महाराजा मानसिंहजी ने और तखतसिंहजी ने सिरोपाव इनायत कर सम्मानित किया। संवत् १९११ में पाली पर टैक्स बढ़ाये जाने के कारण आप अपने साथ कई लखपतियों को लेकर सिरोही स्टेट में चले आये, और वहाँ के महाराव शिवसिंहजी के नाम से एरनपुरा के पास शिवगंज बस्ती आबाद की। इसके उपलक्ष में सिरोही दरबार ने आपको "नगर सेठ" की पदवी प्रदान की। आपकी दुकानें उदयपुर, गुजरात और बम्बई में थीं। संवत् १९१६ में आपने ऋषभदेवजी का संघ निकाला। इसी साल भादवा बदी ७ को भोजन में किसी दुश्मन द्वारा जहर दिये जाने के कारण आप उसी दिन स्वर्गवासी हुए। सन् १९५४ के गदर में आपने अंग्रेजों की बहुत मदद की थी।

सेठ जुहारमलजी लोढ़ा—आप सेठ कालूरामजी लोढ़ा के पुत्र थे। उदयपुर दरबार ने आपको अपने राज्य में आधे महसूल माफ रहने का परवाना दिया था। आपको जोधपुर दरबार के हाकिम शिवगंज से २ बार पाली ले गये। संवत् १९२४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर सेठ चौथमलजी के प्रपौत्र बरदीचन्दजी दत्तक आये।

सेठ चौथमलजी लोढ़ा—आपकी दुकान संवत् १९२७ में एरनपुरा कन्टून्मेंट की ट्रेजरर थी, वहाँ से पुनः शिवगंज आने पर सिरोही दरबार ने आपको २ कुएं तथा कस्टम की आय से ५) सेकड़ा देने का हुकुम दिया। आपकी दरबार और गवर्नमेंट में अच्छी इज्जत थी। संवत् १९६५ में आप स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में आपके पुत्र सेठ तखतराजजी विद्यमान हैं।

सेठ तखतराजजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आपको शिवगंज की कस्टम की आय से ५) सैकड़ा मिलता है। यहाँ की जनता में आप लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप यहाँ की गौशाला और वर्द्धमान विद्यापीठ के प्रेसिडेण्ट हैं। आपने परिश्रम करके शिवगंज में पैदा हुई आपसी समाज की तड़ को ४ साल पहिले मिटाया है। आपके पुत्र प्रकाशराजजी और बलवन्तसिंहजी हैं।

इसी तरह इस परिवार में सेठ कालूरामजी के बड़े भ्राता चौथमलजी के कुटुम्ब में सेठ उम्मेदमल, चुन्नीलालजी और बलवन्तसिंहजी हैं।

सेठ नवलमल हीराचन्द लोढ़ा, बगड़ी

इस परिवार का तीन चार सौ वर्ष पूर्व नागौर से बगड़ी में आगमन हुआ। इस परिवार के पूर्वज सेठ दौलतरामजी और उनके पुत्र नवलमलजी ४०-५० साल पहिले व्यापार के लिए बगड़ी से कामठी गये और वहाँ आपने दुकान की। कामठी से आपने रायपुर में दुकान की। सेठ नवलमलजी संवत् १
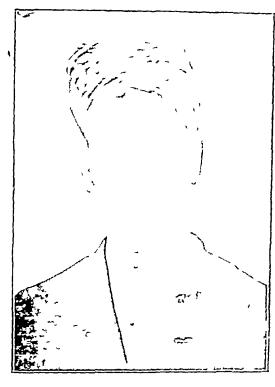
बड़ी कृपा थी। ऐसा कहा जाता है कि आप उनके राखीबन्द भाई थे। उस समय इस फर्म का इन्दौर में बड़ा प्रभाव था। आपका स्वर्गवास संवत् १८७१ में हुआ। आपके शवदाह घाट दरवाजा स्थान पर जयपुर में हुआ वहा आपकी छत्री बनी हुई है।

आपके राजसीजी, प्रतापसीजी और तेजसीजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमे सेठ राजसीजी—जिनका दूसरा नाम जेठमलजी भी था—का देहान्त संवत् १८६१ में आपने पिताजी की मौजूदगी मे ही हो गया था। आपके दाह स्थान पर भी घाट दरवाजे पर एक चबूतरा बना हुआ है। आपके छोटे भाई तेजसीजी हुए।

सेठ तेजसीजी ने बीकानेर के गोगा दरवाजे के मन्दिर के निकट एक विश्रान्ति गृह बनाया तथा इस मन्दिर पर कलश चढ़या। आपने जयपुर के सागानेर दरवाजे के पास एक पार्क की नींव डाली जिसमें आगे जाकर आपके पुत्र सदासुखजी ने एक विष्णु का मन्दिर बनवाया। इस पार्क और मन्दिर के बनवाने मे करीब ७५०००) खर्च हुआ होगा। आपके नैनसुखजी नामक एक पुत्र हुए।

ड्ढा नेनसीजी एक नामांकित पुरुष हुए। उस समय इस परिवार की "पदमसी नैनसी" के नाम से बडी प्रसिद्ध फर्म थी। इस फर्म की कई स्थानों पर शाखाएँ खुली हुई थी। इस फर्म का व्यापार उस समय बहुत चमका हुआ था और कई रियासतों से इसका लेन देन भी होता था। इस फर्म के नाम से कई रियासतों ने रुक्के प्रदान किये है जिनसे मालूम होता है कि यह फर्म उस समय बडी प्रतिष्ठित तथा बहुत ऊँची समझी जाती थी। इन्दौर नगर में उस फर्म का बहुत प्रभाव था। यह फर्म यहां के ११ पंचों में सर्वोपरि तथा अत्यन्त प्रतिष्ठित मानी जाता था। इन्दौर—स्टेट में भी इसका अच्छा सम्मान था। महाराजा काशीराव तथा तुकोजीराव होल्कर बहादुर के समय तक इस फर्म का व्यवसाय बहुत चमका हुआ था। इस फर्म के नाम पर उक्त नरेशों ने कई रुक्के प्रदान किये है जिनमें व्यवसायिक बातों के अतिरिक्त इस फर्म के साथ अपना प्रेमपूर्ण सम्बन्ध होने का जिक्र भी किया है। इस फर्म को उक्त परिवार के सज्जनों ने बड़ी योग्यता एवं व्यापार चातुरी से संचालित किया था।

नैनसीजी के पश्चात् उनके पुत्र उदयमलजी हुए इनके समय में संवत् १९१६ मे यह परिवार जयपुर से अजमेर चला आया और तभी से इस परिवार के सज्जन अजमेर में ही निवास करते है।

सेठ उदयमलजी के कोई सन्तान न होने से संवत् १९२७ में फलौदी से सेठ चंदनमलजी ड्ढा के पुत्र सौभाग्यमलजी आपके नाम पर दत्तक आये। बीकानेर नरेश को आपने एक कंठी भेंट की। इस दरबार ने प्रसन्न होकर आपको व्यापार की चीजों पर सायर का आधा महसूल तथा घरू खर्च की

प्राप्त हुई। सुजानगढ़ की पचपंचायती में व राज में आपका अच्छा सम्मान था। आपका संवत् १९८७ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र छगनमलजी, किशनमलजी एवं मानकमलजी इस समय तमाम व्यापार को सम्हालते हैं। सेठ छगनमलजी के पुत्र भँवरमलजी और कुन्दनमलजी व्यापार में भाग लेते हैं तथा रतनमलजी, जसवंतमलजी और अमृतमलजी पढ़ते हैं। इसी तरह किशनमलजी के मानमलजी, रतन-मलजी तथा प्रसन्नमलजी और माणकमलजी के पुत्र मनोहरमलजी हैं। इनमें मानमलजी कारबार में भाग लेते हैं। भँवरमलजी के पुत्र सम्पतलाल और मानमलजी के पुत्र चंचलमल हैं।

सेठ दौलतमलजी—आपके यहाँ जूट और कपड़े का व्यापार होता है। आप संवत् १९८१ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ जवरीमलजी, मोहनमलजी, मोतीमलजी एवं सोहनमलजी हैं आप सब सज्जन व्यापार में सहयोग लेते हैं। जवरीमलजी के पुत्र झूमरमलजी, भँवरमलजी, सुपार्श्वमलजी एवं हाथीमलजी हैं। मोहनमलजी के पुत्र शृंगारमलजी, मोतीमलजी के रेवतीमलजी और सोहनमलजी के पुत्र उम्मेदमलजी हैं।

सेठ कानमलजी—आपका व्यापार केसरीमल झूमरमल के नाम से कलकत्ते में था, लेकिन संवत् १९७४ में आपके स्वर्गवासी होने के समय आपके पुत्र छोटे थे, अतः वहाँ से व्यापार उठा दिया गया। इस समय आपके पुत्र भोपालमलजी, केसरीमलजी और बहादुरमलजी सुजानगढ़ में रहते हैं।

इस परिवार की ओर से सुजानगढ़ स्टेशन पर एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है तथा श्मशान भूमि में चारों भाइयों की स्मृति में १ छत्री और मकान बना है।

श्री नैनसुख रामचन्द्र ओसवाल (लोढ़ा) भुसावल

इस परिवार के पूर्वज सेठ दौलतरामजी लोढ़ा, घोड़नदी (पूना) में गल्ले का व्यापार करते थे। इनके पुत्र रामचन्दजी का जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आप भी गल्ले की आढ़त का व्यापार और आब-कारी तथा सिविल कंट्राक्टिंग का कार्य करते रहे। बहुत पहिले आपने मेट्रिक का इम्तहान पास किया। संवत् १९७० से आप रामचन्द्र दौलतराम के नाम से पूना में व्यापार करते हैं। आपके चुन्नीलालजी, हंसराजजी और नैनसुखजी नामक ३ पुत्र हैं।

श्री चुन्नीलालजी लोढ़ा २२ सालों तक बम्बई प्रेसीडेन्सी में सब रजिस्ट्रार रहे। इधर २ मास से रिटायर्ड हो कर पूना में रहते हैं। आपके छोटे भाई हंसराजजी ने २॥ सालों तक फ्रांस और मेसोपोटा-मियाँ में मिलटरी अकाउन्ट डि० में सर्विस की। वहाँ से आप पूना आये और इस समय अपने पिताजी के साथ व्यापार में सहयोग लेते हैं। इनसे छोटे भाई नैनसुखजी ओसवाल ने सन् १९२६ में एम० ए० की

ति की कई बड़ी २ सभाओं के सभापति के आसनों पर प्रतिष्ठित रह चुके है। इस वृद्धावस्था मे भी
प सामाजिक कार्य्यों में बड़े उत्साह से भाग लेते है।

श्री सिद्धराजजी डड्ढा—आप ओसवाल समाज के अत्यन्त उत्साहित विचारों के नवयुवकों म से
है। आपने बी० ए० एल० एल० बी० तक अध्ययन किया है। जाति सेवा के लिए आपके हृदय म
बड़ा लगन है। आपके विचार समाज सुधार के सम्बन्ध मे बहुत गर्म और छलकते हुए है। सामाजिक
न कासागटियों में आप भी बहुत उत्साह से भाग लेते है।

सेठ अमरसी सुजानमल का खानदान, बीकानेर

(सेठ चांदमलजी डड्ढा सी० आई० ई०)

सेठ अमरसीजी तिलोकसीजी के तीसरे पुत्र थे। आपभी अपने पिता की ही तरह बुद्धिमान
व्यवहार कुशल पुरुप थे। आपने अपने व्यापार की वृद्धि के लिए सुदूर निजाम-हैदराबाद मे मेसर्स
रसी सुजानमल के नाम से अपनी फर्म खोली। यहाँ पर आपकी फर्म क्रमसे बहुत तरक्की को प्राप्त हुई।
का जनता और राज्य में इनका अच्छा सम्मान था।* हैदराबाद रियासत से आपका लेन देन का
ी व्यवहार था। एक वार एक कीमती हीरा आपके यहाँ रहा था, जिसकी रक्षा के लिए स्टेट की
म सौ जवान आपके यहाँ तैनात रहते थे। आपके दावों मुकद्दमों के लिए निजाम सरकार ने एक
र कोर्ट नियत कर रक्खी थी जिसका नाम "मजलिसे साहुवान" रक्खा गया था। इस कोर्ट म
के सब दावे विना स्टाम्प फीस के लिये जाते थे तथा विना मियाद के सुनवाई होती थी।

शाह अमरसीजी के कोई सन्तान न होने से आपने अपने छोटे भाई टीकमसीजी के पुत्र नथमलजी
गोद लिया। सेठ नथमलजी के सेठ जीतमलजी और सुजानमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ सुजानमलजी—आप भी बडे व्यापार कुशल और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने अपने
पार को बड़ी तरक्की दी। आप ही ने मेवाड स्टेट में अपनी फर्म को स्थापित कर सुजानमल सिरेमल के
म से अपना कारवार प्रारम्भ किया। इतना ही नहीं आपने अपने व्यापार को पजाव तक फैलाया और
हौर, अमृतसर इत्यादि स्थानों पर भी अपनी शाखाए स्थापित कीं। आपके पाँच पुत्र हुए जोरावरमलजी,
मलजी, सिरेमलजी, समीरमलजी और उदयमलजी। इनमें से पहले तीन भाई तो नि सन्तान स्वर्गवासी

* आपकी व्यापारिक ताकत के सम्बन्ध मे यह बात प्रसिद्ध है कि एक बार बैंक आफ बङ्गाल की
... किसी विषय पर आपकी तनातनी हो गई थी, इससे उत्तेजित हो आपने बैंक पर इतनी हुण्डियां एक साथ
... की जिनका भुगतान से इन्कार कर देना पड़ा, इसमें आपको बहुत रुपया खर्च करना पड़ा।

आपके यहाँ चांदा में चुन्नीलाल लूणकरण के नाम से आढ़त, रूई तथा सूती कपड़े का व्यापार होता है तथा वणी, आसिफाबाद (मुगलाई) और कुत्रा पेठ (निजाम) में सौभागमल मोतीलाल के नामसे कपड़ा चाँदी सोना और किराने का काम काज होता है। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में उत्तम प्रतिष्ठा रखती है।

सेठ मोतीलाल रतनचंद, लोढ़ा, मनमाड

इस परिवार के पूर्वज लोढ़ा छजमलजी लगभग १०० । १२५ वर्ष पूर्व अपने मूल निवास स्थान बड़ी पादू (जोधपुर स्टेट) से व्यापार के निमित्त मनमाड आये। तथा छजमल सखाराम के नाम से दुकान स्थापित की। आपके मगनीरामजी, हीराचन्दजी, भींवराजजी तथा सखारामजी नामक ४ पुत्र हुए। इन वंधुओं का व्यापार लगभग संवत् १९२० मे अलग अलग हुआ।

सेठ सखारामजी लोढ़ा ने इस दुकान के व्यापार को बहुत तरक्की दी। आप आस पास के ओसवाल समाज में नामांकित व्यक्ति थे। संवत् १९४७ में सेठ नेनसुखदासजी नीमाणी के प्रयास से जो नाशिक में "ओसवाल हितकारिणी सभा" भरी थी, उसमें आप एक दिन के सभापति बनाये गये थे। आपकी दुकान मनमाड के ओसवाल समाज में नामांकित दुकान थी। संवत् १९५० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रतनचंदजी संवत् १९६० में स्वर्गवासी हुए। इस समय इनके पुत्र मोतीरामजी विद्यमान हैं। लोढ़ा मोतीरामजी का जन्म संवत् १९५५ में हुआ। आप भी मनमाड में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं तथा जातीय सुधार के कामों में भाग लेते रहते हैं। आपके यहां आसामी लेनदेन का काम होता है।

इसी तरह इस परिवार में इस समय मगनीरामजी के पौत्र (मुलतानमलजी के पुत्र) धनराज जी और हीराचन्दजी के पौत्र (बनेचन्दजी के पुत्र) फूलचन्दजी किराने का व्यापार करते हैं।

सेठ मुलतानमल अमोलकचन्द लोढ़ा, कातर्णी (येवला)

इस परिवार का मूल निवास बडी पादू (जोधपुर स्टेट) है। देश से सेठ रामसुखजी और अमोलकचन्दजी दोनों भ्राता लगभग ९० साल पूर्व नासिक जिले के कातर्णी नामक स्थान में आये। देश से सम्वत् १९३५ में इनके तीसरे भ्राता अमोलकचन्दजी भी कातर्णी आ गये। सेठ अमोलकचन्दजी के चांदमलजी, मुलतानमलजी, हीराचन्दजी तथा रतनचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें चांदमलजी और रतनचन्दजी विद्यमान है। सेठ चादमलजी रामसुखजी के नाम पर दत्तक गये हैं। आपका कारबार सम्वत् १९७८ में अलग हुआ।

श्रीमान् स्व० सेठ चांदमलजी डड्ढा सी० आई० ई०, बीकानेर
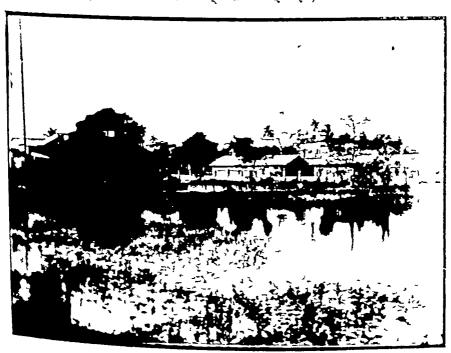
कलकत्ता सोप वर्क्स (मगलचन्द आनन्दमल डड्ढा), बीकानेर

खानदान की बहुतसी जमीन जायदाद थी और अब भी इस खानदान के पूर्वजों की "बाबा बैरागी" न
समाधी बनी हुई है, जहाँ पर आज इस खानदान के बालकों का मुण्डन संस्कार होता है। इस खा
का कसेल में भावडयानी नामक विशाल मकान बना हुआ है।

कसेल से करीब १५० वर्ष पहले इस खानदान के पूर्वज लाला नन्हूमलजी जण्डियालागु
आकर बसे और तभी से आपका परिवार यहीं पर निवास कर रहा है। यहाँ के गुरुओं ने आदर
आपको अपना साहूकार बनाया और बहुत सी जमीन व जायदाद प्रदान की।

लाला नन्हूमलजी के लाला देवीसहायजी नामक एक पुत्र हुए। लाला देवीसहायजी के
भवानीदासजी, गुलाबरायजी तथा महताबरायजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से यह परिवार
गुलाबरायजी का है। आप बडे धार्मिक और शांतिप्रिय सज्जन थे। आपके लाला परमानन्दजी
पुत्र हुए। आप बड़े धार्मिक सज्जन थे। आपके समय में इस खानदान के सब भाई अलग अ
गये। अत आपको सब कारबार अकेले ही करना पड़ता था। आपका सवत् १९१५ में स्वर्गवा
गया है। आपके लाला मेहरचन्दजी नामक पुत्र हुए।

लाला मेहरचन्दजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप भी धर्मध्यानी व साधु संतों
सेवा मे लगे रहते थे। आपका संवत् १९८५ में स्वर्गवास हुआ। आपके दौगरमलजी, राय साहब
टेकचन्दजी, नेतरामजी एवं नन्दलालजी नामक चार पुत्र हुए।

लाला दौगरमलजी का जन्म संवत् १९३० में हुआ। आपने अल्पायु से ही व्यापार म
डाल दिया था। आप बड़े व्यापार कुशल और मशहूर व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सवत् १९
घोड़े से गिरने के कारण हो गया। आपके छ पुत्र हैं जिनके नाम मुलखराजजी, हँसराजजी, दशरा
बंसीलालजी, रोशनलालजी और माणकचन्दजी हैं।

राय साहब लाला टेकचन्दजी का जन्म सवत् १९३८ मे हुआ। आप इस खानदा
बड़े नामी और प्रसिद्ध व्यक्ति है। आपकी समाज सेवा सारे पजाब मे प्रसिद्ध है। आपने २१ फरवरी
१९०९ में पजाब की सुप्रसिद्ध स्थानकवासी जैन सभा की स्थापना की और आप ही उसके जनरल से
हुए। इसका प्रथम अधिवेशन भी जण्डियाले में हुआ। उसी साल जण्डियाले में एक गौशाल
स्थापना हुई, जिसके प्रधान आप ही बनाये गये और करीब २४ वर्ष तक यह सस्था आपके नेतृत्व में
रही। सन् १९१० में आप जण्डियाले की म्युनिसीपालिटी के कमिश्नर चुने गये और अभी तक
स्थान पर कायम है। सन् १९१० में मेम्बर होने के कुछ ही दिनों पश्चात् आप म्यु० पें० क
प्रेसिडेण्ट चुने गये। उसके बाद बहुत समय तक आप उसके ऑनरेरी सेक्रेटरी और सन् १९२

आपको अपने परसनल स्टॉफ का मेम्बर बनाया। साहूकारों में यह सम्मान सब से पहले आप ही को था। इसके अतिरिक्त और भी कई देशी राज्यों से आपके ताल्लुकात बहुत अच्छे थे। बीकानेर और पुर से आपको कई खास रुक्के भी मिले थे जिनमे एक दो नीचे दिये जाते है।

श्री लक्ष्मीनारायणजी सहाय भक्त महाराजाधिराज राज राजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री डूगरसिंहजी बहादुर कस्य मुद्रिका

श्रीरामजी

रुक्को खास सेठ चादमल दिसी सुप्रसाद बचै उपरन्च सेठ उदयमल को समा हुआ पछ थारो अठ आव वो हुवो नहीं सो हमें थू जमा खातर राख अठे आय हाजर होवजा थारो मुलायजो श्री बावेजी साहवा राखा जे मुजब रेसी काई तरह री हरकत न रेसी दिल जमा राख सताब हाजर होइज जिसु म्हें घणा खुश हुसा थारे कायु मुलाहिजा म फरक न पडसी म्हा। वचन छै थारे आवणे में दस पाच दिनरी देरी हवे तो मगनमल ने पेला मेल दीजे सवत् १९३१ मिती असाढ वदी १४

इसी प्रकार के आपको और भी पचीसों रुक्के रियसतों से प्राप्त हुए थे। इनको भी ताजीम, सिरोपाव, सिरपेंच, मोती की कण्ठी, बैठक, और किले में सिहपोल दरवाजे तक चढकर आने के न प्राप्त थे।

कहना न होगा कि सेठ चाँदमलजी अपने उन्नत काल में सारे ओसवाल समाज मे प्रथम श्रेणी के और उदार व्यक्ति थे। इनकी तबियत महान् थी और यह महानता उस स्थिति में भी वैसी ही बनी रही जब अपने अन्तिम कुछ वर्षों में आर्थिक दशा से कमजोर हो गये थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९९० हुआ।

सेठ टीकमसीजी का परिवार बीकानेर

(सेठ गुनचंद मंगलचंद)

सेठ टीकमसीजी—आप भी अपने बन्धुओं की तरह बहादुर प्रकृति के बुद्धिमान पुरुष थे। ने भी बीकानेर मे अपना कारबार स्थापित किया था। आपका स्वर्गवास फलौदी में ही हुआ, आपके दाह स्थान पर आपके पुत्र लालचन्दजी ने एक देवालय बनाया। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम सेठ मलजी, माणकचन्दजी और लालचन्दजी थे। इनमें से नथमलजी सेठ अमरसीजी के यहाँ दत्तक चले । दूसरे पुत्र माणकचन्दजी का परिचय अन्यत्र दिया जावेगा।

वर्तन आदि का व्यापार होता है। यहाँ आप लोगों का जैन वीविंग वर्कस नामक कारखाना है। जिस सिल्की कपड़ा तैयार होता है। गर्मियों में आपकी ब्रांच मसूरी में भी रहती है। साधु मुनिराजों। सेवा सत्कार मे यह परिवार काफी सहयोग लेता है।

लाला नराताराम हंसराज लोढ़ा, रायकोट (पंजाब)

यह परिवार कई पुश्तों से रायकोट में निवास करता है। इस खानदान के बुजुर्ग लाला मुसीराम साहूकारे का काम करते थे। सवत् १९६० में इनका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लाला काशीरामजी अपनी तिजारत और इज्जत को काफी बढ़ाया। आप २० सालों तक रायकोट म्युनिसिपैलेटी के मे रहे। स० १९७९ में ६२ साल की उमर में आप सर्गवासी हुए। आपके तुलसीरामजी, नराताराम पूरनमलजी और किशोरीलालजी नामक ४ पुत्र विद्यमान है। पाचवें पुत्र सोहनलालजी स्वर्गवासी गये हैं। संवत् १९६५ में इन सब भाइयों का कारवार अलग २ हुआ।

लाला नराताराजी के यहाँ नराताराम हँसराज के नाम से बैङ्किंग व साहुकारी व्यापार होता। आप रायकोट की जैन बिरादरी के चौधरी है और यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी इज्जत रखते। आपने जैन गुरुकुल पंचकूला में एक कमरा बनवाया है और आप उसकी मैनेजिग कमेटी के मेम्बर। आप गुरुकुल के कामों में इमदाद पहुँचाते रहते है। आपके छोटे भ्राता पूरनचन्दजी, राय म्युनिसिपेल्टिी के वाइस प्रेसिडेण्ट है। लाला नराताराजी के पुत्र हसराजजी और चिरंजीलालजी। हंसराजजी उत्साही युवक है, इनके हेमचन्दजी, चिमनलालजी और बलवन्तरायजी नामक ३ पुत्र है।

लाला तुलसीरामजी के यहाँ तुलसीराम चुन्नीलाल के नाम से कारबार होता है। इनके चुन्नीलालजी, मुन्नीलालजी, अमरनाथजी और शातिनाथजी तथा पूरनचन्दजी के पुत्र रामलालजी, बचनलाल और किशोरीलालजी के टेकचन्दजी है।

लाला चंदनमल रतनचंद का खानदान अम्बाला

इस खानदान के पूर्वज पहले सुनाम (पटियाला) मे रहते थे। वहाँ से आप लोग अम्बाला मे आये और तभी से वहाँ पर निवास कर रहे है। आप लोग श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गीय है। खानदान में ला० गुलाबरायजी हुए। इनके पुत्र जमनादासजी के पुन्नोमलजी, कन्हैयालालजी, मलजी तथा गौनमलजी नामक चार पुत्र हुए। इनमे से यह खानदान लाला कन्हैयालालजी का है।

लाला कन्हैयालालजी के बसतामलजी नामक एक पुत्र हुए। आपकी स्मृति में ग्रन

शाह सादूलसिंहजी का परिवार, जोधपुर

(मनोहरमलजी सिरेमलजी, जोधपुर)

शाह खेतसीजी के चौथे पुत्र करमसीजी के सादूलसिंहजी, सावतसीजी, रायसिंहजी, हीरासिंहजी न्दजी और मुल्तानचन्दजी नामक छः पुत्र हुए। इनमें शाह सादूलसिंहजी के कमलसीजी और जी नामक दो पुत्र हुए। उस समय इस परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। राज्य से ाफी लेन-देन रहता था। जोधपुर और जैसलमेर रियासतों में आपका बड़ा सम्मान था।

शाह कमलसीजी—शाह कमलसीजी के नैनसीजी और ठाकुरसीजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें के कोई सन्तान न होने से इनके नाम पर ढड्ढा जालिमसिंहजी के छोटे पुत्र हरकमलजी दत्तक आये। कमलजी ओसवाल समाज में सर्व प्रथम अंग्रेजी के ज्ञाता थे। आप जोधपुर स्टेट में भिन्न २ सफलता पूर्वक कार्य्य करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९४२ में हुआ। आपके मनोहरमलजी, ी और लाभमलजी नामक तीन पुत्र हुए।

ढड्ढा मनोहरमलजी—आपका जन्म संवत् १९२४ में हुआ। आपका शिक्षण मैट्रिक तक आपने मेड़ते में सायर दरोगाई और महकमाखास के हिन्दी विभाग के सुपरिण्टेण्डेण्ट का काम ग्यता से किया। सन् १९२७ में आप सर्विस से रिटायर हो गये। इस समय आप जोधपुर में मजिस्ट्रेट हैं। जातीय सेवा से प्रेरित होकर आपने सन् १९३० में ओसवाल कुटुम्ब सहायक धि का स्थापन किया। सन् १८९८ में आप श्रीसंघ सभा के सेक्रेटरी बनाए गये। इस सभा के ापने काफी समाज सेवा की। जोधपुर की इन्श्युरेन्स कम्पनियों के स्थापन में भी आपका बड़ा । आपकी सार्वजनिक स्पिरीट बहुत प्रशंसनीय है। आपके पुत्र माधोसिंहजी इस समय पोलिस में स्पेक्टर हैं। आपके भ्राता ढड्ढा जसराजजी का जन्म सवत् १९३३ में हुआ। आप ठाकुरसीजी के ावनसीजी के नाम पर दत्तक गये।

शाह सालमसीजी—शाह सालमसीजी के चार पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से जालिमसिंहजी, लना, मुरलीधरजी और कानमलजी थे। संवत्१९०० के करीब शाह जालिमसिंहजी जोधपुर आये। बड़ा तीव्र बुद्धि के व्यक्ति थे। सवत् १९१२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके रतनमलजी और मलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से हरकमलजी, नैनसीजी के नाम पर दत्तक चले गये। शाह मलजी का सवत् १८९२ में जन्म हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल, प्रवीण और साहित्य प्रेमी व्यक्ति थे। ेट के दीवान, मुत्सुद्दी भी कई गम्भीर मामलों में आपकी सलाह लिया करते थे। सवत् १९३२ में का स्वर्गवास हुआ। आपके सिरेमलजी नामक एक पुत्र हुए।

डड्ढा

डड्ढा गौत्र की उत्पत्ति

दसवीं शताब्दी में सोलकी वश में सिद्धराज जयसिंह नामक एक नामी व्यक्ति हुए, जिन्होंने पालनपुर से १९ मील की दूरी पर गुजरात में सिद्धपुरपाटन नामक नगर बसाया था। इनके पुत्र कुमारपाल ने सन् ११६० में जैन धर्म अंगीकार किया। इसके अनतर इनके पौत्र राजा नरवाण ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से श्री भट्टारक धनेश्वरसूरिजी की खूब आवभगत की तथा अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर जैन धर्म स्वीकार करने का वचन दिया। श्री धनेश्वरसूरिजी महाराज ने अम्बादेवी का स्मरण किया और आशीर्वाद देकर आश्वासन दिया। ठीक समय मे इनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ और इन्होंने भी जैन धर्म दीक्षा ली। तभी से इनकी कुलदेवी अम्बादेवी हुई जो आज तक इस खानदान में मानी जाती हैं। उस समय राजा नरवाण तथा इनके वंशज "श्रीपति" इस गौत्र से पुकारे जाते थे।

इनके बाद तेलपादजी नामक एक राजा हुए, जिन्होंने सोलह गावों में भगवान महावीर तथा भगवान ऋषभदेव के मन्दिर बनवाये। ऐसा कहा जाता है कि एक समय जब ये मंदिर तयार कराये जा रहे थे, इन्होंने इनकी नीमों में तेल और घी के सैकड़ों डब्बे कुदवाये जिससे इस खानदान का गौत्र "तिलेरा" प्रसिद्ध हुआ। इनकी २९वीं पीढ़ी में सारंगदासजी हुए, जिन्होंने जैसलमेर छोड़कर जोधपुर से ८० कोस उत्तर की ओर बसे हुए फलौदी को अपना निवासस्थान बनाया। ये बडे बहादुर और साहसी थे। इन्होंने भारत के कई स्थानों में व्यापार के लिए यात्रा की तथा इसी सिलसिले में सिंध की ओर भी गये। वहाँ सिंध के अमीर ने इनकी कार्य कुशलता तथा बहादुरी से प्रसन्न होकर इनका बहुत सन्मान किया। इनका शरीर बहुत गठीला और मजबूत था। इनकी इस लोहे के समान शरीर की मजबूती को देखकर सिंध के अमीर ने इन्हे "ढढ्"* इस नाम से पुकारा था। इस शब्द का सिंधी भाषा में बहादुर यह अर्थ निकलता है। धीरे २ "ढढ्" यह शब्द अपभ्रंश होते २ डड्ढा इस रूप में परिणत हो गया और इस वंश वाले इस नाम से पुकारे जाने लगे। कालातर से यह नाम गौत्र के रूप में परिणत हो गया। सारंगदासजी ने श्री भागचन्दजी महाराज के उपदेश से संवत् १७१७ में लुँकागच्छ अंगीकार किया था कि जिसे इस वंश वाले आज तक मानते चले आ रहे हैं।

* "ढढ" यह शब्द दृढ इस शब्द का अपभ्रंश रूप प्रतीत होता है।

सिरमलजी ढड्ढा, भूतपूर्व रेव सुपरिण्टेण्डेण्ट जोधपुर

श्री मनोहरलालजी ढड्ढा, ऑनररी मजिस्ट्रेट जोधपुर

श्री सज्जनसिंहजी ढड्ढा, एडीशनल डि० मजिस्ट्रेट, इन्दौर।

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट है और सारे भारत के दवाई के व्यवसाइयों मे दूसरा स्थान रखती है। इस फर्म के द्वारा न केवल मद्रास प्रान्त में ही वरन् दूर २ के प्रदेशों में तथा मैसूर, ट्रावनकोर, कोचीन, पदुकोटा आदि देशी रियासतों मे भी बहुत बडे स्केल पर औषधियाँ सप्लाय की जाती हैं। इस प्रकार व्यापार में अत्यन्त सफलता प्राप्त कर आपका संवत् १९८३ की श्रावण सुदी ४ को स्वर्गवास हुआ।

डड्ढा सौभागमलजी का सम्वत् १९४५ में जन्म हुआ था। आपने अपने ज्येष्ठ भ्राता लक्ष्मीचन्दजी के साथ व्यापार में सहयोग दिया। आप संवत् १९८६ मे स्वर्गवासी हुए।

श्री लालचन्दजी डढ्ढा— आपका जन्म सम्वत् १९५५ के चैत वदी १ को हुआ। आप बड़े सरल स्वभाव और उदार हृदय के सज्जन है तथा इस समय फर्म के तमाम कारबार को बडी बुद्धिमानी के साथ संचालित कर रहे हैं। आपके द्वारा हजारों रुपयों की सहायता चन्दे के रूप में कई अच्छी २ संस्थाओं और जैन मन्दिरों आदि को दी गई हैं। आप बड़े कर्मवीर और उद्योगी पुरुष हैं आपके पुत्र मिलापचन्दजी हैं।

यह परिवार फलौदी व जोधपुर स्टेट के प्रधान २ धनिक कुटुम्बों में माना जाता है। फलौदी में इसकी बहुतसी स्थाई सम्पत्ति है।

शाह सुगनमलजी डड्ढा के छोटे भ्राता शाह अगरचन्दजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः श्री अमरचन्दजी, गोपीचन्दजी और कल्याणचन्दजी हैं। आप अपना स्वतंत्र व्यवसाय करते हैं।

रघुनाथसिंहजी के छोटे भाई नेतसीजी के छ: पुत्र हुए जिनके नाम खेतसीजी, वर्द्धमानजी, अभयराजजी, हेमराजजी, खींवराजजी और बच्छराजजी था। इनमें खेतसीजी के रतनसीजी, तिलोकसीजी, विमलसीजी और करमसीजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ तिलोकसीजी बड़े बहादुर और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। रियासत से अनबन हो जाने के कारण आप संवत् १७२४ में फलौदी से बीकानेर चले गये। बीकानेर के तत्कालीन महाराजा ने आपका बड़ा सत्कार किया। बीकानेर में आपने अपने व्यापार को खूब चमकाया, और यातायात के साधनों से रहित उस युग में भी सुदूरवर्त्ती बनारस शहर में तिलोकसी अमरसी नथमल के नाम से अपनी फर्म स्थापित की। आपके चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमसे पदमसीजी, धरमसीजी, अमरसीजी और टीकमसीजी था।

सेठ पदमसीजी नेनसीजी का खानदान

(सेठ सौभागमल जी डड्ढा अजमेर,)

सेठ तिलोकसीजी के पश्चात् सेठ पदमसीजी ने स्वतन्त्ररूप से अपने कारबार का संचालन किया। आपने इन्दौर में अपनी शाखा स्थापित की। इन्दौर की राज माता अहिल्याबाई की आप पर

डड्ढा सुलतानमलजी का परिवार

(सेठ वख्तावरचंदजी फलौदी)

डड्ढा सादूलसिंहजी के छोटे भाई सुलतानचन्दजी थे। उस समय में इस परिवार की दुकान जयपुर, फलौदी, पाली, हैदराबाद, जयपुर, बम्बई, शाहजहापुर इत्यादि स्थानों पर थी। संवत् १८०० से १९२९ तक इस परिवार की व्यापारिक स्थिति बहुत अच्छी रही। इनकी सबसे बड़ी दुकान हैदराबाद दक्षिण में सुलतानचन्द बहादुरचन्द के नाम से काम करती थी। डड्ढा सुलतानचन्दजी के स्मारक में फलौदी में छत्री बनी हुई है।

सुलतानचन्दजी के पश्चात् क्रमश बहादुरचन्दजी, रेखचन्दजी और शिवचदजी काम देखते रहे। शिवचन्दजी के पुत्र वख्तावरचन्दजी और लालचन्दजी इस समय विद्यमान हैं। इनमें से लालचन्दजी मनासजी के नाम पर दत्तक गये हैं। डड्ढा वख्तावरचन्दजी का जन्म संवत १९२४ में हुआ। संवत् १९६४ तक आपकी दुकान मद्रास में रही। आपने सुलतानचन्दजी के कुटुम्ब की ओर से एक रामद्वारा ... समाज को और दो उपाश्रय सम्यगी और बाइस सम्प्रदाय के साधुओं के ठहराने के लिये भेट ... । आप फलौदी म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर रह चुके हैं। आप का परिवार फलौदी में बहुत प्राचीन और प्रतिष्ठित माना जाता है।

डड्ढा अभयमलजी का खानदान

(हेमचंदजी डड्ढा सोलापुर)

डड्ढा सारंगदासजी के पुत्र नेतसीजी के ६ पुत्र हुए, उनमें तीसरे पुत्र अभयमलजी थे। इनके शिवजीरामजी मूलचन्दजी आदि ४ पुत्र हुए। इनमें शिवजीरामजी संवत् १८७० । ७५ में जैसलमेर के दीवान हुए। वहाँ से रियासत की नाराजी होजाने से आप फलौदी आगये तथा वहीं आपने अपना स्थाई निवास बनाया। आपके पुत्र अमीचन्दजी ने जावद (मालवा) में बैङ्किंग व्यापार चालू किया। आपने गवालियर स्टेट की कौंसिल में भी अच्छा सम्मान पाया था। आपकी दूकान जावद की सरनाम दुकान थी। आपके पुत्र रावतमलजी भी प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हुए। इनके पुत्र केसरीचन्दजी का अल्पवय में स्वर्गवास होगया था। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती जुहारबाई ने फलौदी के धार्मिक क्षेत्र में अच्छा नाम पाया। आपने तीर्थयात्रा, स्वामि वत्सल आदि कामों में लगभग १॥ लाख रुपया व्यय किया। आपके पुत्र पूनमचन्दजी अल्पायु में संवत् १९४१ में स्वर्गवासी होगये। आपके पुत्र नेमीचन्दजी का जन्म संवत् १९३८ में हुआ।

चीजों पर सायर का पूरा महसूल माफ कर सम्मानित किया। इतना ही नहीं आपको अपने नौकरों के लिये दीवानी तथा फौजदारी के अधिकार भी दिये। आप इस परिवार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आपने पुष्कर में एक हवेली तथा पुष्कर के रास्ते में एक सुन्दर बगीचा बनवाया जो आज भी आपकी अमरकीर्ति का द्योतक है आपने इसी प्रकार कई सार्वजनिक कार्यों तथा परोपकारी संस्थाओं को खुले हृदय से दान दिया। यहा के विक्टोरिया हॉस्पिटल को भी आपने अच्छी सहायता प्रदान की। आपके इन कार्य्यों से प्रसन्न होकर ब्रिटिश गवर्नमेंट ने आप को सन् १८९१ में "रायबहादुर" के सम्माननीय खिताब से विभूषित किया। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट और देशी रियासतों पर आपका बहुत अच्छा प्रभाव रहा। आपको गवर्नमेण्ट की ओर से सैकड़ों सार्टीफिकेट प्राप्त हुए, जिनमें आपकी व्यापारिक प्रतिभा और आपके सुन्दर व्यवहार की बहुत प्रशंसा की गई है। उस समय आप कई रियासतों और रेसिडेन्सियों के बैङ्कर थे और कई स्थानों पर आपके शाखाएँ थी। आपके वृद्धावस्था में अधिक बीमार रहने से आपकी फर्म का काम कच्चा रह गया। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० में हुआ।

आपके भी कोई सतान न होने से आपने अपने नाम पर कल्याणमलजी ढड्ढा को दत्तक लिया। इस समय इनके खानदान में आप विद्यमान है। आपके पुत्र बन्सीलालजी बी० ए० एल० एल० बी० हैं।

सेठ धरमसीजी का खानदान जयपुर *

(सेठ गुलाबचन्दजी ढड्ढा जयपुर)

सेठ पदमसीजी के छोटे भाई सेठ धरमसीजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमसे कस्तूरचन्दजी, कपूरचन्दजी, किशनचन्दजी और रामचन्दजी था। इनमें से रामचन्दजी के क्रमश रतनचन्दजी, पूतमचन्दजी और सागरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए शाह सागरचन्दजी के लखमीचन्दजी और गुलाबचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ गुलाबचन्दजी

आप ओसवाल समाज के अत्यन्त प्रतिष्ठित समाज सेवकों में माने जाते हैं। आपने उस समय में एम० ए० पास किया था जिस समय ओसवाल समाज में कोई भी दूसरा एम० ए० नहीं था। सामाजिक गति विधि के सम्बन्ध में आपके विचार बहुत मंजे हुए और अनुभव युक्त हैं। आप आत्मबल

* आपका कौटुम्बिक परिचय बहुत प्रयत्न करने पर भी हम लोगों को प्राप्त न हो सका। इसलिए जितना हमारी स्मृति में था उतना ही प्रकाशित कर सन्तुष्ट होना पड़ा—लेखक।

के पश्चात् अत में विजयश्री सूरजी को ही मिली। यवन लोग पराजित होकर भाग खड़े हुए। जब सूरजी विजयी होकर दरबार में पहुँचे तब महाराज ने आपके कार्यों की बड़ी प्रशसा की। और कहा, वास्तव में आप "सूरराणा" हो। तबसे उनके वंशज सूरराणा से सुराणा कहलाने लगे। इसी प्रकार और २ भाइयों से और २ गोत्रों की उत्पत्ति हुई। जैसे सखजी के साँखला, सावलजी से सियाल इत्यादि। सावलजी के बड़े पुत्र साड थे अतएव लोग उन्हे संड मुसंड कहा करते थे अतएव इनकी संताने साड कहलाई। सावलजी के दूसरे पुत्र मुखा से मुखाणी, तीसरे सालदे से सालेचा और चौथे पुत्र पूनमदे से पूनमिया शाखा प्रकट हुई।

इसी सुराणा परिवार मे आगे चलकर कई प्रसिद्ध २ व्यक्ति हुए। उनमे मेहता अमरचन्दजी सुराणा भी एक थे। आप तत्कालीन बीकानेर दरबार के दीवान थे। आपने बीकानेर राज्य की ओर से कई युद्ध किए एवम् उनमें सफलता प्राप्त की। आप बड़े राजनीतिज्ञ, वीर और बहादुर व्यक्ति थे। आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रथ के राजनैतिक और सैनिक महत्व नामक शीर्षक में दिया गया है।

चूरू का सुराणा परिवार

चूरू बीकानेर राज्य में एक छोटासा किन्तु सम्पन्न नगर है। यहाँ सुराणाओं का एक प्रतिष्ठित घराना है। यह वश अति प्राचीनकाल से सम्पन्न तथा राज्य में बहुत गण्यमान्य रहा है। यह वश लगभग विक्रमी सवत् १८०० में नागौर से चुरू आकर बसा था। इस वश वाले श्री श्वेताम्बर तेरापंथी हैं। इस घराने में बडे-बड़े वीर हो गये हैं। जिनमें सेठ जीवनदासजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रसिद्ध है कि उन्होंने सिर कट जाने पर भी चिरकाल तक तलवार चलाई थी जिसमे वे जुझार नाम से प्रसिद्ध हुए। आज तक स्त्रियाँ उनकी वीरता के गीत गाती हैं। जीवनदासजी के चार पुत्र थे, जिनमें सबसे बड़े पुत्र सेठ सुखमलजी चूरू आकर बसे।

कलकत्ते की मेसर्स "तेजपाल वृद्धिचन्द" नाम की प्रसिद्ध फर्म इसी परिवार की है। इस फर्म में हुण्डी और बैंकिंग का काम होता है। इसका एक छाते का भी कारखाना है, जिसमें प्रतिदिन ५०० दर्जन छाते तैयार होते हैं। यह कारखाना भारत भर में सबसे बडा है। श्री रूकमानंदजी ने विक्रमी सवत १८९२ में इस फर्म को स्थापित किया था। उस समय कलकत्ता में मारवाड़ियों की सिर्फ पॉच दस दूकाने थीं। उन्होंने इसका "रूकमानन्द वृद्धिचद" नाम रखा। पीछे सवत् १९६२ में जब रूकमाजी के वशज दो विभागों मे बट गये तब से इस फर्म पर "तेजपाल वृद्धिचन्द" नाम पड़ने लगा।

सेठ सुखमलजी के वशजों ने उस जमाने मे जब भारतवर्ष में सर्वत्र रेल्वे लाइनें नहीं थीं चूरू वा

हो गये चौथे सेठ समीरमलजी के भी कोई सन्तान न होने से उन्होंने अपने छोटे भाई उदयमलजी को दत्तक लिया।

सेठ उदयमलजी—आपका जन्म संवत् १८८६ मे हुआ। आपने भी अपने पूर्वजों के आन और कीर्ति को अक्षुण्ण रक्खा। राज्य और प्रजा दोनों ही क्षेत्रों में आपका काफी सम्मान था। आपको राज्य की ओर से संवत् १९१६ मे एक खास रुक्का इनायत हुआ जो इस प्रकार था—

श्रीरामजी

(सही)

रुक्को खास मेहता उदयमल दिसी सुप्रसाद वचे उपरंच तनै वा थारे भाई ने पहल सु हाथी वा पालकी वा छड़ी वा चपरास वा गुजरा वा छुट को गुजरा वा सिरे दरबार में बैठक वा पग में सोनो, वा सेठ पदवी रो खिताब वगैरह कुरब इनायत हुवेडो छे तेमे वा थाहारी इज्जत आवरू में म्हें वा म्हारो पूत पोतो तेसु वा थाहरे पूत पोतो सु कोई बात रो फरक न घालसी श्री लक्ष्मीनारायणजी वीच में छे म्हारो वचन छे और म्हारे पधारने में किताइक दिनरी देरी हुई तेसु रंज दिल माहे मती राखजे तू म्हारे घणी बात छे और कितराइक समाचार रामेंने फरमाया छे सु तने मुख जबानी केसी। संवत् १९१६ मिती पोह वदी ८

इससे पता चलता है कि राज्य में आपका कितना सम्मान था। आपके एक पुत्र चाँदमलजी हुए।

सेठ चान्दमलजी सी० आई० ई०

आपका जन्म संवत् १९२६ मे हुआ। आप भी इस खानदान मे बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने प्रारम्भ में अपने व्यापार का विस्तार करने के उद्देश्य से मद्रास, कलकत्ता, सिलहट, मौर, पूना इत्यादि स्थानों पर अपनी फर्मे स्थापित कीं। इसके अतिरिक्त जावरा स्टेट के आप स्टेट बैंकर भी थे। देशी राजाओं और ब्रिटिश गवर्नमेंट में भी आपकी बड़ी इज्जत थी। भारत सरकार ने आपको सी० आई० ई० की सम्माननीय उपाधि से विभूषित किया था। निजाम स्टेट में भी आपका अच्छा सम्मान था। वहाँ पर आपको दरबार में कुरसी और चार घोड़ों की बग्गी में बैठने का सम्मान प्राप्त था। बीकानेर के देशनोक नामक स्थान पर आपने करणी माता के मन्दिर का प्रथम द्वार बनवाया। इस द्वार की कारीगरी कोराई दर्शनीय है। इसके बनवाने में करीब ३॥ लाख रुपया खर्च हुआ। लार्ड मिण्टो तथा और अंग्रेज इस द्वार को देखने के लिए आये थे। संवत् १९५९ में एक दिन दरबार बीकानेर ने आपके यहाँ सम

सेठ उदयचंदजी सुराणा, चूरू

सेठ मोतीलालजी सुराणा चूरू

सेठ तोलारामजी सुराणा, चूरू.

सेठ रायचन्दजी सुराणा चूरू

सेठ लालचंदजी—आप बीकानेर में बैङ्किङ्ग का व्यापार करते थे। आपका लेन-देन अक्सर राजा, महाराजा और जागीरदारों के साथ रहता था। ज्योतिष विषय के आप अच्छे जानकार थे। दरबार की तरफ से आपको छडी तथा चपरास का सम्मान प्राप्त था। आपको समय २ पर कई रुक्के परवाने भी मिले थे। आपके वालचन्दजी और गुनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। वालचन्दजी के कोई सन्तान न होने से गुनचन्दजी उनके नाम पर दत्तक लिये गये। सेठ गुनचन्दजी भी बड़ी सरल प्रकृति के सज्जन थे। दरबार से आपको भी बहुत सम्मान प्राप्त था। आपका स्वर्गवास संवत् १९३२ में हो गया। आपके मंगलचन्दजी और आनन्दमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ मंगलचन्दजी—आप इस परिवार में नामांकित व्यक्ति हुए। जब आप केवल १३ साल के थे तभी से आप व्यापार करने लगे। आपने अपने जीवन में भिन्न भिन्न प्रकार के व्यवसायों का संचालन किया। इनमें कपड़ा, मूंगा और साबुन विशेष हैं। आप कपड़े एवम् मूंगे के लिये कलकत्ते की फर्म मेसर्स "जूलियस कारपल्स" के बेनियन थे। व्यापार को विशेष उत्तेजन प्रदान करने के लिये आपने मद्रास वगैरह स्थानों पर अपनी फर्में स्थापित की थीं। रङ्गपुर में जूट और बैंकिंग का काम करने के लिये भी आपने फर्म स्थापित की थी। इसके अतिरिक्त कलकत्ते के मशहूर साबुन के कारखाने अम्बिका सोप वर्क्स को आपने खरीद किया। इस समय इस कारखाने में वैज्ञानिक ढंग से साबुन बनाया जाता है। इस कारखाने की स्थापना आचार्य्य पी० सी० राय के द्वारा हुई थी। यह कारखाना भारतवर्ष में सब से बडा माना जाता है। इसका क्षेत्र फल करीब २० बीघा है। सेठ मंगलचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९८९ में हुआ। इसके पूर्व आपके भाई आनन्दमलजी स्वर्गवासी हो चुके थे। आनन्दमलजी के दो पुत्र हुए। बा० बहादुरसिंहजी और बाबू प्रतापसिंहजी। इनमें से प्रतापसिंहजी सेठ मंगलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये।

इस समय इस परिवार में आप दोनों ही भाई विद्यमान हैं। आप लोग मिलनसार और नम्र व्यक्ति हैं। सेठ बहादुरसिंहजी बीकानेर स्टेट में आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। साथ ही आप म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर भी हैं। प्रतापचन्दजी सुधरे हुए विचारों के देशभक्त सज्जन हैं। आपके नरपतसिंहजी, [illegible] सिंहजी और इन्द्रसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं। कलकत्ता १० क्लाईव स्ट्रीट में आपका बैंकिंग, जूट, और साबुन का व्यापार होता है।

स्वर्गीय सेठ जुहारमलजी व गुलाबचन्दजी—आप सेठ रुक्मानन्दजी के तीनों पुत्रों में प्रथम व [illegible] पुत्र थे। आपका जन्म क्रमश संवत् १९०६ और १२०९ मे हुआ था। आप बड़े वीर और [illegible] हो गये हैं। आपका स्वर्गवास क्रमश संवत् १९३२ और १९६२ मे हुआ।

सेठ उदयचन्दजी—आप श्री रुक्मानन्दजी के सब से छोटे पुत्र हैं। आप बहुत सरल चित्त [illegible]मिलनसार हैं। आपका जन्म संवत् १९११ में हुआ। आपके तीन पुत्र और चार पुत्रिया हुईं, [illegible] म २ पुत्र और १ पुत्री अभी वर्तमान हैं। इस समय आपकी करीब ८० वर्ष की अवस्था है।

स्वर्गीय तोलारामजी—आप सेठ तेजपालजी के एकमात्र पुत्र थे। आप बड़े तेजस्वी, विद्याव्यसनी [illegible] वीर पुरुष थे। आपका ध्यान पुरातत्व सम्बन्धी खोजों की ओर विशेष रहता था। आपने अपने "सुराणा पुस्तकालय" स्थापित किया, जिसमें इस समय संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी इत्यादि [illegible] की हजारों छपी हुई पुस्तकों के अलावा करीब २५०० हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथ (पुस्तकें) मौजूद [illegible] आपका राज दरबार में भी अच्छा सम्मान था। आप चुरू म्युनिसिपल बोर्ड के आजीवन मेम्बर और सन् १९१३ ई० में जब बीकानेर राज्य में लेजिस्लेटिव एसेम्बली स्थापित हुई तब से आप इसके सदस्य रहे। श्री बीकानेर दरबार आपको बहुत मानते थे। एक बार आप ने अपना एसेम्बली का [illegible] अन्य सज्जन के लिए खाली कर दिया, तब श्री दरबार ने अपनी ओर से आपको मनोनीत [illegible] बना लिया। इस प्रकार आप लगातार १५ वर्ष तक एसेम्बली के सदस्य रहकर राजा और प्रजा [illegible] करते रहे। अन्त में जब लकवे से विवश होकर आपने अपने पद त्याग-पत्र दिया, तब [illegible] ने आपके पुत्र श्री शुभकरणजी को उम्मेदवार होने का विशेषाधिकार दिया (क्योंकि यहाँ [illegible] की मौजूदगी में पुत्र को मेम्बर बनने का अधिकार नहीं है) आपका जन्म संवत् १९१९ में हुआ था। [illegible] चार पुत्रियें हुईं, पुत्र एक भी नहीं हुआ। तब आपने श्रीऋद्धकरणजी के द्वितीय पुत्र श्री शुभकरणजी को [illegible] लिया। संवत् १९८५ में आप अपने पुत्र श्री शुभकरणजी और पौत्र श्री हरिसिंहजी को छोड़कर [illegible] हो गये। आपका उपनाम चतुर्भुजजी था।

स्वर्गीय सेठ ऋद्धकरणजी—सेठ वृद्धिचन्दजी के तीन पुत्रों में आप सब से प्रथम थे। आप बड़े [illegible] हुए। आपका नाम कलकत्ता की मारवाडी समाज में बहुत अग्रगण्य है। "तेजपाल वृद्धिचन्द" [illegible] उन्नति आप ही के जमाने में हुई। आप कुशल व्यापारी थे। आपने ही कलकत्ता [illegible] चेम्बर आफ कामर्स की स्थापना की और आजन्म उसके सभापति बने रहे। अखिल भारत [illegible] श्वेताम्बर जैन तेरापंथी सम्प्रदाय की सभा की स्थापना भी आपने ही की और आजीवन उसके आ[illegible] रहे। आप चिरकाल तक हवड़ा के आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। सं० १९७५ में जब कपड़ा बहुत महँगा

डड्ढा सिरेमलजी

आपका जन्म संवत् १९२४ में हुआ। संवत् १९३९ में आप नागौर के हाकिम हुए। इसके पश्चात् सन् १८८९ से ९२ तक आप कृष्णा मिल ब्यावर के ऑडिटर रहे। इसके पश्चात् आप एक साल तक चुरू के हाकिम रहे। संवत् १९५६ में आप कस्टम सुपरिण्टेण्डेण्ट हुए। महाराजा साहिब आपके कार्यों से बड़े खुश थे। आप दरबार के कुछ समय तक प्राइवेट कामदार रहे थे। इसके पश्चात् कई अच्छे २ स्थानों पर काम करते हुए सन् १९१३ में रेख सुपरिण्टेण्डेण्ट के पद पर नियुक्त हुए तथा सन् १९२६ में इस पद से ग्रेच्यूटी लेकर रिटायर होगये। आपको अपने उत्तम कार्यों के उपलक्ष कई अच्छे अच्छे सार्टीफिकेट मिले हैं। रिटायर होने के बाद भी आप रीयां के नाबालिगी ठिकाने की व्यवस्था करने के लिए भेजे गये थे। आप बड़े स्पष्ट वक्ता हैं। इस समय आप सिंहसभा 'छात्र सहायक फण्ड' की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर तथा इन्स्युरेन्स कार्पोरेशन के डायरेक्टर और ओसवाल पाठशाला के सुपरवाइजर हैं। आपके मदनसिंहजी, सुजानसिंहजी और सज्जनसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं। मदनसिंहजी का जन्म संवत् १९४४ में हुआ। एफ० ए० तक पढ़ाई करके आप फलौदी के हाकिम नियुक्त हुए। आपका कम उम्र में ही स्वर्गवास होगया। दूसरे पुत्र सुजानसिंहजी का जन्म सन् १८९१ में हुआ। आपने मैट्रिक तक अध्ययन किया।

सज्जनसिंहजी डड्ढा—आप डड्ढा सिरेमलजी के तीसरे पुत्र हैं। आपने बी० ए० एल० एल० बी० तक विद्याध्ययन किया। आपका विवाह इन्दौर के प्राइम मिनिस्टर रायबहादुर सिरेमलजी बापना सी० आई० ई० की पुत्री से हुआ। आप सन् १९१८ में इन्दौर में फर्स्ट क्लॉस मजिस्ट्रेट नियुक्त हुए। इस कार्य्य को आप अभी बडी योग्यता से संचालित कर रहे हैं। आप बड़े सज्जन और इतिहास प्रेमी व्यक्ति हैं।

डड्ढा सालमसिंहजी के छोटे पुत्र बदनमलजी संवत् १९४५ में स्वर्गवासी हुए। इनके कुन्दनमलजी और सोभागमलजी नामक २ पुत्र हुए। डड्ढा कुन्दनमलजी हैदराबाद में कपड़े का व्यापार करते हैं। संवत् १९६१ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके दत्तक पुत्र उम्मेदमलजी अजमेर में कपड़े का धन्धा करते हैं।

श्री छोटूलालजी सुराणा, चूरू.

श्री जीतमलजी सुराणा, चूरू.

श्री माणिकचन्दजी सुराणा चूरू

श्री लूनकरणजी सुराणा चूरू
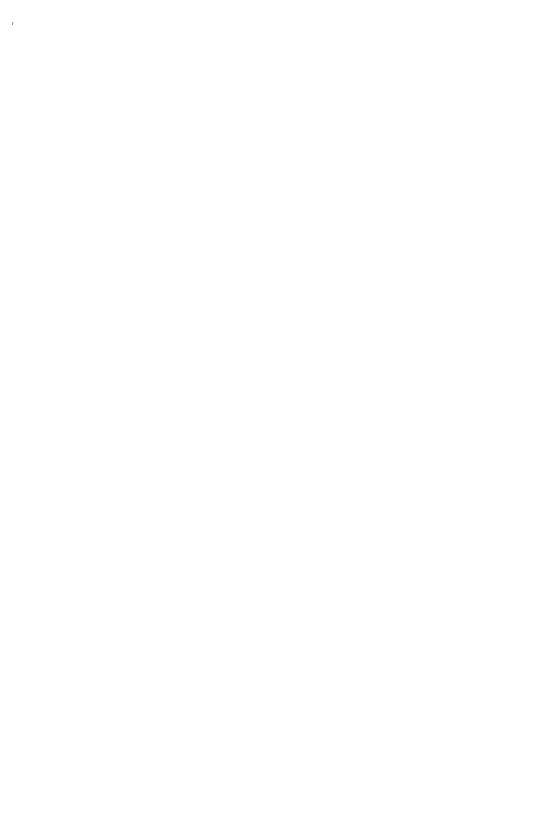
कुंवर कर्मचन्दजी का संवत् १९७५ में स्वर्गवास होगया। आपकी एक पुत्री विवाह होने से कुछ समय बाद ही इस संसार को अनित्य जानकर वैराग्य भाव उत्पन्न होने पर अपने पति और परिवारवालों को छोड़कर साध्वी होगई हैं।

सेठ श्रीचन्दजी—आप सेठ ऋद्धकरणजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आप चुरू म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर हैं। आप बहुत मिलनसार और उदार हैं। आपके एक पुत्र और एक पुत्री है। आजकल आप "तेजपाल वृद्धिचंद" फर्म के संचालकों मे अग्रगण्य हैं।

सेठ शुभकरणजी—आप सेठ तोलारामजी के दत्तक पुत्र हैं। आप शिक्षित एवं सरलचित हैं। आजकल "सुराना पुस्तकालय" का संचालन आप ही करते हैं। आपने इस पुस्तकालय की और भी उन्नति की है। इस पुस्तकालय की बिल्डिङ्ग बहुत सुन्दर बनी हुई है। जिसका चित्र इस ग्रंथ में दिया गया है। आपका राज्य में और यहाँ के समाज में अच्छा सम्मान है। कई वर्षों तक आप म्युनिसिपल बोर्ड चुरू के मेम्बर, अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की प्रबन्ध कारिणी स्कूल कमेटी के मेम्बर, मजहबी खेराती और [illegible] के पूवट की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के मेम्बर, हाई कोर्ट बीकानेर के जूरर और चुरू के आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम चुरू के प्रधान मन्त्री और श्री सर्व हितकारिणी सभा चुरू के सभापति भी रहे। श्री जैनश्वेताम्बर तेरापंथी सभा कलकत्ता के आप सहकारी मंत्री हैं। और कलकत्ता यूनिवर्सिटी इन्स्टीट्यूट के आप सीनियर मेम्बर हैं। सन् १९२८—२९ ई० में आप बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बली के मेम्बर रहे। आपका जन्म विक्रमी संवत् १९५३ मिती श्रावण शुक्ला ५ [illegible] को चुरू नगर में हुआ। आपका प्रथम विवाह संवत् १९६७ मिती वैशाख शुक्ला ३ को सरदार शहर निवासी सेठ पूर्णचन्दजी भणसाली की पुत्री से हुआ था। आपका विवाह होने से १४ वर्ष बाद आपके भँवर हरिसिंह नामक एक पुत्र हुए।

स्व० भँवर हरिसिंहजी—भँवर हरिसिंह सेठ शुभकरणजी सुराणा के इकलौते पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १९८१ की कार्तिक कृष्ण ९ को हुआ था। चूँकि इस सम्पन्न घर में ६२ वर्ष के पीछे पुत्रोत्पत्ति हुई था इसलिए इनके जन्मोत्सव के समय बहुत उत्सव किया गया था। बालक हरिसिंह बहुत होनहार और [illegible] बालक थे। लक्षणों से ऐसा मालूम होता था कि अगर यह बालक पूरी आयु को पाता तो इस कुल [illegible] होता। मगर दुर्भाग्यवश माता का दूध न मिलने से या और कारणों से यह आनन्द [illegible] [illegible]। ऐसी स्थिति में भी इस प्रतिभापूर्ण बालक में अपने खानदान की वीरता, उदारता और [illegible] बातें पाई जाती थीं जो इसके उज्ज्वल भविष्य की ओर स्पष्ट रूप से इशारा कर रही थीं। [illegible] अवस्था में ही शस्त्रास्त्रों के संग्रह की बहुत बड़ी अभिरुचि पाई जाती थी। हाथी, घोड़ा,

७९

ढड्ढा नेमीचन्दजी विशेषकर ग्वालियर रहे, तथा वहाँ सेठ नथमलजी गोलेछा की दुकानों का काम देखते रहे। आपने फलौदी में म्युनिसिपैलिटी कायम करने में अधिक परिश्रम किया, तथा आप उसके सेक्रेटरी रहे। संवत् १९७५ में आप स्वर्गवासी हुए। आपने संवत् १९६५ में मद्रास में दुकान खोली थी। वह आपके स्वर्गवासी होने के बाद आपके पुत्रों ने उठा दी। सेठ नेमीचंदजी के प्रेमचन्दजी, हेमसिंहजी और ज्ञानचन्दजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं। प्रेमचन्दजी का जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आप अपनी जावद दुकान की जमींदारी का काम देखते हैं। लगभग ५ हजार बीघा जमीन आपकी जमींदारी की है। आप जावद में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे थे। इनके पुत्र मदनसिंहजी तथा बभूतसिंहजी हैं।

ढड्ढा हेमसिंहजी का जन्म १९५८ में हुआ। आपने जोधपुर से मेट्रिक पास किया। आरम्भ में आप १९८० तक मद्रास ड्रगिस्ट स्टोअर के नाम से दवाइयों का व्यापार करते थे। वहाँ से आपको आपके श्वसुर फलौदी निवासी सेठ नेमीचंदजी गोलेछा ने अपनी सोलापुर दुकान का काम सम्हालने को बुलाया। इसलिए इस समय आप इस फर्म के भागीदार हैं। आप विचारवान तथा उन्नतिशील युवक सदस्य हैं। आपके पुत्र महावीरसिंहजी हैं। हेमसिंहजी के छोटे भ्राता ज्ञानसिंहजी, ढड्ढा एण्ड कम्पनी मद्रास नामक फर्म पर कार्य करते हैं।

सुराणा

सुराणा गौत्र की उत्पत्ति

सुराना गौत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में यह किम्वदन्ति है कि इस गौत्र की उत्पत्ति जगदेव नामक एक सामंत से हुई है। ये तत्कालीन सिद्धपुर पाटन के राजा सिद्धराज जयसिंह के प्रतिहारी थे। ये बड़े वीर और पराक्रमी थे। इनके सात पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश सूरजी, सांवलजी, सामदेवजी, रानदेवजी, छारदजी वगैरह थे। ये लोग भी अपने पिता की भांति बड़े वीर और साहसी व्यक्ति थे। यह वह समय था जब महम्मूद गजनवी का कातिल हमला भारत पर होरहा था। वह घूमता हुआ गुजरात की ओर भी आया और उसने सिद्धपुर पाटन पर चढ़ाई की। इस समय जगदेव के प्रथम पुत्र सूरजी सेनापति के पद पर थे। उन्हें राज्य की रक्षा की चिन्ता हुई। इसी समय हेमसूरिजी महाराज वहां पधारे। सूरजी ने महाराज से युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की। महाराज ने जैन धर्म स्वीकार करने की प्रतिज्ञा कराकर विजय पताका यन्त्र सूरजी को दिया। भुजा पर यन्त्र को बांधकर सूरजी युद्ध क्षेत्र में गये। घमासान युद्ध

दिवंगत् श्रीमान कुंवर हरिसिंहजी सुराणा।

जन्म संवत् १९८१
मिति कार्तिक कृष्णा ९]   चुरू।   [स्वर्गवास संवत् १९८९
मिति श्रावण शुक्ला १२
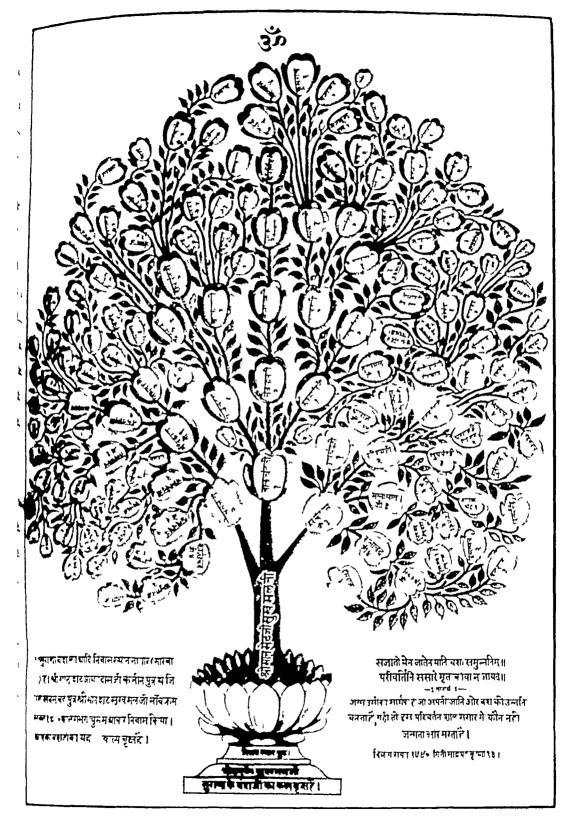
सुराणा परिवार, चुरू।

संवत् १९६१ मे हुआ था। आप बहुत होनहार और सुशील थे। आपकी धार्मिक विषय मे अच्छी रुचि थी। दुर्भाग्य वश विवाह होने के ठीक १५ दिन बाद संवत् १९७४ मे आपका स्वर्गवास हो गया।

सेठ माणकचन्दजी—आप सेठ रायचन्दजी के वर्तमान पुत्रों मे द्वितीय है। आपका जन्म सम्वत् १९६६ में हुआ था। आप मोटर ड्राइविंग मे निपुण है। आप मिलनसार और उदार भी है। आपके एक पुत्र और दो कन्यायें है।

सेठ ताराचन्दजी—आप सेठ रायचन्दजी के तृतीय पुत्र है। आपका जन्म सवत् १९६९ में हुआ था। आप शिक्षित और होनहार युवक है। अंग्रेजी मे आप मैट्रिक पास है। आजकल व्यापारिक शिक्षा ग्रहण करते है। आप अच्छे लेखक है। मासिक पत्रिकाओं मे आपके लेख अक्सर निकलते रहते है। आप से एक छोटे भाई और हैं जिनका नाम श्री भीमचन्दजी है। ताराचन्दजी के पुत्र का नाम कुँवर नेमकरणजी हैं।

कुंवर जीतमलजी—आप श्रीचंदजी के इकलौते पुत्र है। आपका जन्म सवत् १९६० मे हुआ। आप बहुत हृष्ट पुष्ट नवयुवक है।

कुंवर लूणकरणजी—आप सेठ हुकमचंजी के पुत्र है। आपका जन्म संवत् १९८० मे हुआ। आप बहुत सुशील और होनहार हैं अभी आप अंग्रेजी और हिन्दी की शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

इस परिवार के लोगों पर ब्रिटिश गवर्नमेंट और बीकानेर राज्य की सदैव कृपा रही है और समय समय पर खास रुक्के और सारटिफिकेट मिले हैं।

शाह रतनसिंहजी सुराणा का खानदान, उदयपुर

यह प्राचीन गौरवशाली परिवार बहुत वर्षों से उदयपुर में ही निवास करता है। इस खान दान के बड़े सज्जनों ने समय २ पर कई महत्व के काम किये जिनका उल्लेख हम यथा स्थान करेंगे। इस परिवार म पहले पहल सुराणा व्रजलालजी बडे नामाङ्कित व्यक्ति हुए।

सुराणा व्रजलालजी—आप वडे वीर, कार्य्यकुशल तथा साहसी व्यक्ति थे। वीरता और योग्य प्रबन्धिका शक्ति का आप में बड़ा मधुर सम्मेलन हुआ था। आपने उदयपुर राज्य में कई ऊँचे २ पदों पर काम किया तथा कई ठिकानों की योग्य व्यवस्था की। एक समय आप एक बड़ी सेना के साथ दरबार की ओर से धांगडमऊ के बागी राजपूत जागीरदार को गिरफ्तार करने के हेतु से भेजे गये थे। वहां पर बहुत देर तक घमासान लड़ाई होती रही जिसमें आप विजयी हुए और उक्त जागीरदार उमराव सिंह युद्ध में मारे गये। उस प्रांत की आपने बड़ी बुद्धिमानी से सुव्यवस्था भी की थी। आपकी

अत्यन्त साहस पूर्वक जल और स्थल मार्गों से दूर २ देशों में जाकर अपना व्यापार फैलाया कलकत्ता प्रभृति नगरों मे कई फर्मे स्थापित कीं जिनमे विशेष उल्लेखनीय यह हैं —

कलकत्ता में—(१) रुक्मानन्द वृद्धिचन्द, |(अब) तेजपाल वृद्धिचन्द (२) रुद्रकरण सुजान (३) रायचन्द शुभकरण (४) श्रीचन्द सोहनलाल (५) मुन्नालाल शोभाचन्द (६) सुजानमल अभय (७) चम्पालाल जीवनमल (८) लाभचन्द मालचन्द (९) तिलोकचन्द जयचन्दलाल (१०) तनसुख दुलीचन्द (११) हरचंदराय मुन्नालाल (१२) हरचंदराय सोभाचद (१३) सुराना ब्रादर्स और (१४) सुराना एण्ड कम्पनी इत्यादि।

बम्बई में—वृद्धिचन्द शुभकरण, रगून मे—तेजपाल वृद्धिचंद, भिवानी मे—रुद्रकरण सुजान फर्रुखाबाद में—कालूराम जुहारमल, अहमदाबाद मे—थानमल मानमल इत्यादि।

इनमें से कलकत्ता की बहुतसी फर्मे अभीतक सुचारु रूप से चलती हैं। अन्य स्थानों में आज की असुविधा के कारण बन्द करदी गई हैं।

स्वर्गीय सेठ रुकमानन्दजी, तेजपालजी और वृद्धिचन्दजी—आप तीनों भाई सेठ बालचन्दजी पुत्र थे। आप बडे होशियार व्यापार कुशल और वीर व्यक्ति थे। इन फर्मों की विशेष तरक्की का श्रेय आप ही लोगों को है। आपका राजदरबार मे अच्छा सम्मान था। आपके समय मे सवत् १९२२ एक बार जगात का झगड़ा चला था। उसमें आप नाराज होकर बीकानेर स्टेट को छोडकर सपरिवार राम (जयपुर स्टेट) मे चले गये थे। फिर महाराजा सरदारसिंहजी ने आपको अपने खास व्यक्ति मेहता मानमल रावतमलजी कोचर के साथ जगात महसूल की माफी का परवाना भेजकर आपको सम्मान सहित वापिस बुलाया था। सं० १९२५ में तहसीलदार अबदुलहुसेन के जमाने मे चुरू मे जब धुवा वगैर लागें लगाई गई तब आप लोग फिर रुष्ट होकर मेहउसर (जयपुर स्टेट) में चले गये। फिर महाराजा ने मोहम्मद अली खों को खास रुक्के देकर भेजा और बीकानेर बुला कर आप लोगों को पैरों मे पहनने के सोने के कड़े, नग छड़ी चपड़ास वगैरह बख्शी। आपके द्वितीय भ्राता सेठ तेजपालजी का स्वर्गवास सवत् १९२४ में हुआ से आप लोग बहुत खिन्न हो गये थे। इसलिये ये सब इज्जतें लेने से अस्वीकार किया। श्रीमान् महाराजा ने प्रसन्न होकर सिरोपाव, मोतियों के कंठे, और चढ़ने को रथ वगैरह देकर आप लोगों को सम्मानित कर वापस चुरू भेजा। तब से आपके परिवार वालों का राज दरबार में विशेषमान है, और वर्तमान महाराजा भी आपके वंशजों पर विशेष कृपा रखते हैं। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः सवत् १८७६, १८८५ और १८९१ मे, और देहावसान क्रमश विक्रम सवत् १९४२ सवत् १९२४ और सवत् १९५९ को हो गया, सेठ वृद्धिचन्दजी को लोग कालुरामजी भी कहते थे।

शाह नाहरसिंहजी सुराणा, उदयपुर

सेठ चन्दूलालजी सुराणा, बागलकोट

सेठ खींवकरणजी सुराणा, रीणी.

सेठ कन्हैयालालजी सुराणा, बागलकोट.

का जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आप आज भी उदयपुर में सम्मानित किये जाते हैं। आपके भ्राता जसवन्तसिंहजी का संवत् १९४६ में जन्म हुआ। आप बहुत समय तक उदयपुर के महाराणा फतेसिंहजी के पेशी क्लार्क रहे। वर्त्तमान में आप विद्यमान हैं। आपको उदयपुर दरबार की ओर से कई बार रुपये इनायत किये गये हैं। सुराणा जीवनसिंहजी का संवत् १९६१ में जन्म हुआ। आप बड़े उत्साही तथा मैट्रिक तक पढ़े हुए सज्जन हैं। वर्तमान में आप इन्दौर-स्टेट के काटन कण्ट्रास्ट आफिस में काम कर रहे हैं। आप सब भाई बड़े मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं।

सुराना नरसिंहदासजी का खानदान, झालरापाटन

इस खानदान का मूल निवास स्थान नागोर का है। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं।

सेठ कनीरामजी सुराना—सेठ उत्तमचन्दजी के पुत्र सेठ कनीरामजी इस खानदान में बड़े प्रसिद्ध और प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए। आप नागोर से कोटा आये और वहाँ के दीवान मदनसिंहजी झाला के पास प्रधान कामदार हो गये। जब संवत् १८९४ में कोटा से झालावाड़ रियासत अलग हुई, उस समय मदनसिंहजी के साथ आप भी झालावाड़ आगये। झालावाड़ का राज्य स्थापित करने में आपका बड़ा हाथ था। आप बड़े बुद्धिमान और राजनीति निपुण पुरुष थे। आपके कार्यों से प्रसन्न हो कर महाराज राणा मदनसिंहजी ने आपको रूपपुरा नामक गाँव जागीर में बख्शा और सियाने की इज्जत बख्शी। तथा जीकारा और "नगर" सेठ का खिताब प्रदान किया। उसके बाद सम्वत् १९१५ के वैशाख सुदी १० को महाराज राणा पृथ्वीसिंहजी ने १५००१) की आमदनी के आमेठा वगैरह गाँव जागीर में बख्शे। आपका स्वर्गवास संवत् १९२० के कार्तिक बदी ६ को हुआ।

सेठ कनीरामजी के नाम पर सेठ गंगाप्रसादजी दत्तक आये। आपको महाराज राणा पृथ्वीसिंहजी ने दो हजार की जागीरी बख्शी। तथा फौज की बख्शीगिरी का काम सिपुर्द किया। आपका स्वर्गवास सं० १९२३ में हुआ।

सेठ नरसिंहदासजी सुराणा—सेठ गंगाप्रसादजी के स्वर्गवास के समय आपके पुत्र सेठ नरसिंहजी की उम्र केवल चार वर्ष की थी। उस समय जागीर आपके नाम पर कर दी गई और बख्शीगिरी का काम भी आपके नाम पर हुआ जिसका संचालन आपके बालिग होने तक नायब लोग करते रहे। आप बड़े प्रतिभाशाली और नामांकित व्यक्ति हैं। सन् १९१९ में महाराज राणा भवानीसिंहजी ने पुनः आपको जीकारे का सम्मान बख्शा। उसके पश्चात् सन् १९२६ में उक्त महाराजा ने आपको पैरों में सोना बख्शा। इसके पश्चात् सन् १९३० में वर्तमान महाराज ने आपको ताजीम दी।
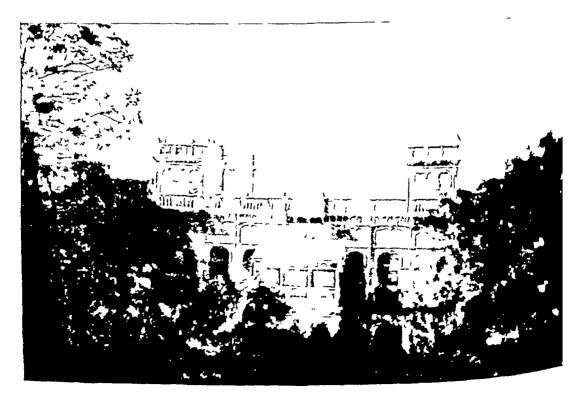
सेठ रिधकरणजी सुराना, चूरू

कु० कन्हैयालालजी सुराना, चूरू

सुराना पुस्तकालय, चूरू.

सेठ पनराजजी सुराणा, सिरोही

श्री [illegible]नराजजी सुराणा S/o सेठ पनराजजी, सुमेरपुर

प्रद्युम्नराजजी सुराणा, S/o सेठ पनराजजी, सिरोही.
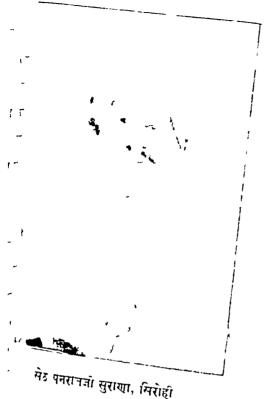
सेठ हीरालालजी बापना, भीनासर

(परिचय पृ० नं० २१७ में देखिये)

हो गया था तब गवर्नमेंट ने कपड़े के व्यवसाय का कंट्रोल करने के लिये एक काटन अडवाईजरी कमेटी (Cotton Advisory Committee) बनाई थी। जिसमें सात मेम्बर थे उनमें आप भी एक थे। आपका जन्म संवत् १९२१ को हुआ था। आपने दो विवाह किये। प्रथम गृहणी से आपको सिर्फ एक पुत्र हुआ और दूसरी से चार पुत्र और एक कन्या। आपके सिर्फ तीन पुत्र अभी वर्तमान में हैं। आपके कनिष्ट पुत्र कु० फूलचन्दजी की मृत्यु का आपके जीवन पर बहुत असर पड़ा। इसीसे सम्वत् १९५५ में आपका स्वर्गवास हो गया।

स्व० सेठ रायचंदजी—आप सेठ वृद्धिचन्दजी के द्वितीय पुत्र थे। आपका स्वभाव मिलनसार और सीधा सादा था। आपकी रुचि धार्मिक विषयों में अधिक थी। आप ही के अथक परिश्रम से कलकत्ता में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय की स्थापना हुई और उसके स्थाई कोष के लिये आपने बहुत धन संग्रह किया। आप उसकी कार्यकारिणी समिति के सभापति भी रहे। आपका जन्म संवत् १९२८ को हुआ था। आपने भी दो विवाह किये। आपको पहली पत्नी से एक पुत्र दो कन्या हुई और दूसरी से ७ पुत्र और एक कन्या, जिनमें से ७ पुत्र और एक कन्या, जिनमें से ४ पुत्र और एक पुत्र अब भी वर्तमान है। आपका स्वर्गवास संवत् १९८९ को हुआ। सेठ तोलारामजी, ऋद्धकरणजी और रायचन्दजी तीनों भाई बड़े उदार हो गये हैं जिन्होंने श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय कलकत्ता को २०००१), श्री मारवाड़ी होस्पिटल कलकत्ता को ५००१), श्री चुरू पींजरा पोल को ५००१) और श्री हिन्दू विश्वविद्यालय काशी को २५०१) इत्यादि अनेक सस्थाओं को हजारों रुपये दान दिये थे।

सेठ छोटुलालजी—आप सेठ वृद्धिचंदजी के कनिष्ट पुत्र हैं। आपका जन्म सम्वत् १९३१ को हुआ। आप हाथ के बड़े दक्ष हैं। बहुतसी चीजें अपने हाथ से ही बना डालते हैं। जो कारीगरों से भी बनना मुश्किल है। आपके तीन पुत्र और दो पुत्री अभी वर्तमान हैं।

सेठ मोतीलालजी—आप सेठ गुलाबचन्दजी के एकमात्र पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९३२ को हुआ। आप बड़े साहसी और व्यापार कुशल हैं। सेठ जुहारमलजी के इकलौते पुत्र सरदारमलजी के स्वर्गवासी होने के बाद सेठ मोतीलालजी, जुहारमलजी के नाम पर दत्तक लिये गये। आपके पाँच पुत्र हैं। जिनमें से चौथे पुत्र श्री कुँवर जीवनमलजी को सेठ गुलाबचंदजी के और कोई पुत्र न होने से गोद दे दिया है, और कनिष्ट पुत्र कुँवर छत्रमलजी ने इस ससार को असार जान गृह त्याग दिया है, और श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी सम्प्रदाय में साधु हो गये हैं।

कुवर सुजानमलजी—आप सेठ उदयचन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप बड़े उद्योगी और व्यापार कुशल हैं। आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ था। आपके ६ पुत्र और एक कन्या हुई। जिनमें से ४ पुत्र

एरनपुरा, आबू और अजमेर के खजाने पर मुकर्रर होते गये। इसके बाद आपने १२ साल तक साहुकारी नौकरी की ओर अंत में धार्मिक जीवन बिताते हुए स्वर्गवासी हुए।

सुराना पनराजजी—आप छोगमलजी के पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। १५ साल की वय में आपने कपड़े का व्यापार शुरू किया। यहाँ आपको चौधरी का भी सम्मान मिला। इसके बाद आपके जीवन का विशाल क्रान्ति युग आरम्भ हुआ। आपको अपनी कर्तव्य शक्ति के दिखलाने का पूरा अवसर मिला। सम्वत् १९५६ में सिरोही स्टेट ने अपनी प्रजा पर ३१ भारी टेक्स लगाये, संवत् १९६० में उसका विरोध जनता ने आपके नेतृत्व में उठाया। आपने कई गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ सिरोही जाकर टेक्स माफ करवाने की कोशिश की। लेकिन रियासत ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया, तब आपने गुप्त रूप से जोधपुर दरबार से उनकी हद में शिवगंज के समीप एक बस्ती आबाद करने का परवाना हासिल किया और वहाँ शिवगंज के सैकड़ों कुटुम्बों को लेजाकर आबाद किया। जोधपुर स्टेट ने आपका सम्मान कर आपको "नगर सेठ" की पदवी, सिरोपाव, कड़ा, कन्ठी, दुशाला और मदिल इनायत किया। साथ ही आबाद होने वाली जनता को ३२ कलमों की छूट दी। जब यह समाचार सिरोही दरबार ने सुना तो अपनी प्रजाके सब टेक्स माफ कर दिये। जिससे बहुत से कुटुम्ब वापस शिवगंज चले गये। आपने सुमेरपुर में सर्वहित कारिणी सभा स्थापित की। जैन मन्दिर, गणेश व महादेव का मन्दिर, धर्मशाला, मस्जिद, प्रतापसागर नामक कूप आदि स्थान बनवाये। इसी बीच सन् १९१४ में यूरोपियन वार छिड़ा, उस समय इस स्थान की आब हवा उत्तम समझ कर ए० जी० जी० अजमेर ने जोधपुर दरबार से सुमेरपुर नामक बस्ती, तुर्की कैदियों को रखने के लिए माँगी। तथा जोधपुर के मुसाहिब, ए० जी० जी०, आदि ने यहाँ के निवासियों को समझाया और यह बस्ती खाली कराई। तथा यहाँ तुर्की कैदी आबाद किये गये।

सुमेरपुर खाली करते ही पनराजजी सुराणा ने उसके समीप ही ऊंदरी नामक गाँव आबाद किया, और वहाँ अपनी एक जीनिंग फेक्टरी खोली। सम्वत् १९७२ में आपके मझले पुत्र धनराजजी को उनके विवाह के समय जोधपुर स्टेट से पालकी सिरोपाव इनायत हुआ। युद्ध शांत होने के बाद ऊंदरी तथा सुमेरपुर के राज्य कर्मचारियों से आपकी अनबन हो गई। उसी समय सिरोही दरबार ने आपको सिरोही स्टेट में बुलवाया। अत आपने सम्वत् १९८३ में सिरोही के समीप "नया बाजार" नामक बस्ती आबाद की। आपकी तर्क शक्ति और याददाश्त अच्छी है। सोजत में "शुभखाता दुकान और भगवानजी पुरुषोत्तम" नामक फर्म के स्थापन में आपने प्रधान योग दिया था। इसी प्रकार उम्मेद कन्याशाला के स्थापन में और सम्वत् १९७६ में मुसलमानों के झगड़े को निपटाने में भी आपने काफी परिश्रम उठाया था।

सेठ पनराजी सुराणा के लालचन्दजी, धनराजजी तथा सुकनराजजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें

सेठ श्रीचंदजी सुराणा, चूरू.

सेठ शुभकरणजी सुराणा, चूरू

सेठ हुकमचन्दजी सुराणा, चूरू.

स्व० कुंवर फूलचंदजी सुराणा, चूरू

सेठ माणकचन्द शेरमल सुराणा, नागपुर

इस परिवार का मूल निवास अलाय (नागोर) नामक ग्राम है। वहाँ से सेठ माणकचन्दजी सुराणा लगभग १०० साल पहिले व्यापार के निमित्त नागपुर आये, और यहाँ आकर सदर (छावनी) में सराफी और गल्ले का धधा प्रारम्भ किया आपके पुत्र सुराणा शेरमलजी थे।

शेरमलजी सुराणा—आपने इस फर्म की विशेष तरक्की की। आप बडे बुद्धिमान और दूरदर्शी पुरुष थे। आपका नाम सी० पी० तथा बरार के लोकप्रिय और सार्वजनिक कामों में भाग लेने वाले सज्जनों में गिना जाता था। आपका सम्वत् १९६१ में स्वर्गवास हुआ। आपके रामचन्दजी, रतनचन्दजी, लखमीचन्दजी, मोतीलालजी, सूरजमलजी चांदमलजी और ताराचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में इस समय सुराणा मोतीलालजी, सूरजमलजी तथा ताराचन्दजी विद्यमान हैं।

ताराचन्दजी सुराणा—आपका जन्म सम्वत १९५४ में हुआ। आप धार्मिक और सुधरे विचारों के समाज सेवी सज्जन हैं। सन् १९२७ में सी० पी० बरार ओसवाल सम्मेलन के समय आप स्वागताध्यक्ष थे। आप श्वेताम्बर जैन समाज के तीनों आम्नाय के शास्त्रों की अच्छी जानकारी रखते हैं।

इस समय आप मृतक भोज प्रतिबन्धक सस्था के प्रेसिडेण्ट हैं। आपके बडे भ्राता सेठ मोतीलालजी तथा सूरजमलजी सज्जन व्यक्ति हैं। तथा फर्म का व्यवसाय सचालित करते हैं। नागपुर तथा यवतमाल जिले के ओसवाल समाज में आपके परिवार का अच्छा सम्मान है।

सेठ मोतीलालजी सुराणा के दो पुत्र हुए। पन्नालालजी और सिद्धकरणजी। पन्नालालजी का १५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो चुका है। सूरजमलजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमश शेशकरणजी, शुभकरणजी प्रेमकरणजी हैं। शेसकरणजी बडे उत्साही और समाज सेवी सज्जन हैं। ओसवाल समाज की उन्नति के लिए आपके हृदय में बडी आकाक्षा रहती है। नागपुर के सभी ओसवाल सभा सोसाइटियों में आप बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। शुभकरणजी यवतमाल दुकान पर काम करते हैं, आप बडे उत्साही युवक हैं। तीसरे प्रेमकरणजी इण्टर में पढ़ रहे हैं। ताराचन्दजी के दो पुत्र हैं—हेमकरणजी तथा चेनकरणजी। इनमें हेमकरणजी नागपुर दुकान पर काम करते हैं। इस फर्म की एक शाखा शेरमल सूरजमल के नाम से यवतमाल में भी है। इन दोनों स्थानों पर यह दुकान बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। इन दोनों फर्मों पर सोना चादी और बैंकिग का व्यवसाय होता है।

रिणी का सुराणा परिवार

इस परिवार के लोग सांतू नामक स्थान पर रहते थे। वहा से १०० वर्ष पूर्व रिणी में आकर बसे। आप जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। इस खानदान में नथमलजी हुए।

९१

मोटर इत्यादि कई प्रकार की सवारियों मे बैठने का इन्हे बडा शौक था। केवल इतना ही नहीं ७ सात वर्ष की इस छोटी उम्र में ही इस बालक ने वायुयान के समान कठिन आरोहण पर बड़ी खुशी से सवारी की थी।

इतनी छोटी अवस्था में इतना रुग्ग रहने पर भी इस बालक ने बिना किसी खास परिश्रम के हिन्दी लिखने पढ़ने की भी अच्छी योग्यता प्राप्त करली थी। इनके आसपास रहनेवाले लोगों का कथन है कि कभी २ तो यह छोटा बालक ऐसी बुद्धिमानी और गम्भीरतापूर्ण सलाह देता था जिसे सुनकर आसपास के लोग आश्चर्यचकित रह जाते थे। गायन वगैरह का भी इन्हे काफी शौक था। हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने इनकी रुग्णावस्था में इलाज किया था, उस समय वे इनके गुणों पर इतने मुग्ध होगये कि उनकी मृत्यु के उपरान्त उन्होंने इनके जीवन चरित्र पर "पुत्र" नामक एक स्वतन्त्र पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में इस बालक की आश्चर्यपूर्ण बातों का उल्लेख किया है।

दुर्दैव से आठ वर्ष की अल्पायु में ही विक्रम सम्वत् १९८९ की श्रावण शुक्ला १२ को यह प्रतिभाशाली बालक अपने स्वजनों को शोकसागर में डुबाकर इस ससार से चल बसा। इनके इलाज में इनके पिता श्री शुभकरणजी सुराणा ने कुछ भी उठा न रखा, पानी की तरह रुपया बहाया, मगर काल की गति पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकी। उसकी मृत्यु से उनके पिता शुभकरणजी को इतना रंज हुआ कि उन्होंने अपने बड़े २ जिम्मेदारी के पदों से इस्तीफा दे दिया। बीकानेर स्टेट ने इनके कौंसिल की मेम्बरी के पद का इस्तीफा खेद के साथ स्वीकार किया।

सेठ हुकमचन्दजी—आप सेठ ऋद्धकरनजी के तृतीय पुत्र है। आप बहुत सयमी सरल चित्त और सुशील है। आपकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण है। व्यापारिक बही खातों के काम में आप बहुत निपुण हैं। आपका जन्म सवत् १९५८ में हुआ। आपके तीन पुत्र और तीन पुत्रियें हुई जिनमें स एक पुत्र और दो कन्यायें वर्तमान है। आपके दो बडे पुत्रो के स्वर्गवास हो जाने के बाद आप ससार से उदासीन भाव में रहते है। आपका समय प्राय. धर्म ध्यान में ही व्यतीत होता है।

सेठ कन्हैयालालजी—आप सेठ रायचन्दजी के प्रथम पुत्र हैं। आपका जन्म सवत् १९५[illegible] हुआ था। आप बड़े कसरती और पहलवान है। तपस्या करने में चुरू भर मे अद्वितीय है। आप सिर्फ जल पीकर ३१ दिन २१ दिन १५ दिन ११ दिन और १० दिन इत्यादि अनेक तपस्या की है। आप कोई सन्तान नहीं हैं।

स्वर्गीय कुवर फूलचन्दजी—आप सेठ ऋद्धकरणजी के सब से छोटे पुत्र थे। आपका ज[illegible]

ा नानूरामजी सुराणा, कलकत्ता

सेठ शोभाचन्दजी सुराणा (गुलाबचंद शोभाचन्द) कलकत्त

ः बालचन्दजी सुराणा (भोपतराम बालचन्द), कलकत्ता.
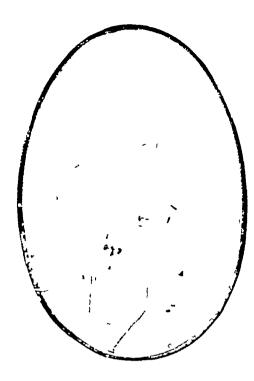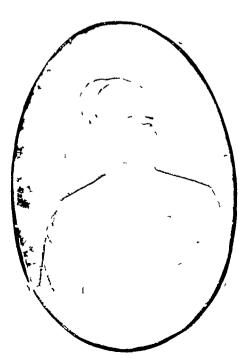
सेठ बन्सीलालजी सुराणा (गुलाबचन्द शोभाचंद), कलक

जी तथा सुराणा कुशलचन्दजी के परिवार में दीपचन्दजी, हीरालालजी, रिधकरणजी, रावतमलजी, बहादुरमल-
जी एवम् जीतमलजी नामक पुत्र हैं।

सेठ शेरमलजी सुराणा का खानदान, राजगढ़

इस परिवार वाले राजगढ़ (बीकानेर-स्टेट) के निवासी श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में सेठ शेरमलजी हुए। आपके ख्यालीरामजी तथा भगवानदासजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें से सेठ भगवानदासजी सबसे पहले राजगढ़ से कलकत्ता गये और वहाँ पर आपने कपडे की दलाली प्रारम्भ की। आपके सुखचन्दजी तथा ख्यालीरामजी के लाभचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सुखचन्दजी भी इसी प्रकार देश से बंगाल प्रान्त में बोगरा नामक स्थान में गये और काम सीखने लगे। तदनन्तर आपने कई फर्मों पर नौकरियाँ की। आपकी होशियारी से मालिक लोग खुश रहे। इसके पश्चात् संवत् १९६२ में सुखचन्द खींवकरण के नाम से आपने कलकत्ते में कपड़े की फर्म स्थापित की। इसमें आपको काफी सफलता रही। आपके खींवकरणजी तथा मालचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ खींवकरणजी ने प्रथम तो अपनी कपडे की फर्म के काम में सहयोग लिया। और फिर कई स्थानों की दलाली की। इसके पश्चात् आपने जुहारमल सोहनलाल के नाम से जापानी तथा विला-यती कपडे का डायरेक्ट इम्पोर्ट शुरू किया जिसमें आपको काफी सफलता रही। आपके सोहनलालजी भँवरलालजी व शुभकरणजी नामके तीन पुत्र हैं। इस समय सोहनलालजी दलाली करते तथा भँवरलालजी सोहनलालजी सुराणा ११ क्रास स्ट्रीट की कपड़े की दुकान का काम देखते हैं। बाबू मालचन्दजी भी इस समय स्वतन्त्र दलाली करते हैं।

सेठ भूरामल राजमल सुराणा, जयपुर

यह सुराणा खानदान बादशाही जमाने से देहली में जवाहरात का कामकाज करता था। इस वंश में सुराणा मोतीलालजी के पूर्वज १५० वर्ष पूर्व जयपुर आये। सुराणा मोतीलालजी के रंगलालजी, जवाहरलालजी, बख्तावरमलजी तथा हीरालालजी नामक ४ पुत्र हुए।

इन चारों भाइयों में से रंगलालजी के पुत्र ताराचन्दजी व हरकचन्दजी हुए, जवाहरलालजी के भूरामलजी, चौथमलजी तथा बख्तावरमलजी के पुत्र लालचन्दजी हुए। इनमें हरकचन्दजी के नाम पर भूरामलजी दत्तक दिये गये।

सुराणा हरकचंदजी के समय से इस खानदान में पुनः जवाहरात के व्यापार में उन्नति हुई।

इन सेवाओं से प्रसन्न होकर महाराणाजी ने आपको बलेणा घोड़े का सम्मान तथा भीलखेड़ा और कुछ गाव जागीरी मे इनायत किये थे। आपके जोरावरसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

सुराणा जोरावरसिंहजी—आप भी बड़े समझदार, बुद्धिमान तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति थे। आप के द्वारा उदयपुर राज्य के कई महत्वपूर्ण कार्य्य हुए है। आपने सरदारों और उमरावों को समझाने तथा महाराणाजी और उमरावों के बीच की सधि के आशय को कर्नल रोबिन को समझाने में अग्र भाग लिया था। इसी प्रकार आप सरूपशाही रुपये के सिक्के के समय नीमच के रेसिडेण्ट को समझाने के लिये भी भेजे गये थे। आपने सं० १९१५ में डाकू मीणों का दमन भी किया था।

आप राजकीय कामों मे चतुर होने के साथ ही साथ बड़े प्रबन्ध कुशल सज्जन भी थे। आपने चित्तौड़गढ़ की हाकिमी के पद पर रह कर इसकी इतनी सुन्दर व्यवस्था की कि जिससे उसकी वार्षिक आय ५७०००) से बढ़ कर एक लाख होगई। कहने का तात्पर्य्य यह है कि आप बड़े ही बुद्धिमान, राज नीतिज्ञ प्रबन्ध कुशल तथा कार्य्यकुशल सज्जन थे। आपने उदयपुर राज्य की कई अमूल्य सेवायें कीं। प्रसन्न होकर महाराणाजी ने छड़ी रखने का हुक्म, बलेणा घोड़ा, दरबार मे बैठक की इज्जत, पोशाक, जींकारे का सम्मान, नाव की बैठक आदि आदि सम्मान प्रदान किये थे। इतना ही आपकी सेवाओं के उपलक्ष्य में बांसणी गाव जागीरी में बक्षा जो आज तक इस खानदान के पास है। इसके अतिरिक्त आपको कई रुक्के तथा कई बार इनाम भी बक्षे गये थे।

उदयपुर दरबार के अतिरिक्त आपका इस राज्य के बड़े २ जागीरदारों में भी अच्छा सम्मान था। आपके दौलतसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

सुराणा दौलतसिंहजी—आप भी अपने पिताजी की तरह होशियार तथा प्रबन्ध कुशल सज्जन थे। आप संवत् १९४४ में भींडर के मौत मिन्द मुकर्रर किये गये। इस पद पर आपने बड़ी योग्यता से काम किया। इसी प्रकार कई ठिकानों के मौत मिन्द भी मुकर्रर किये गये। तदनन्तर आपकी कार्य्य कुशलता से प्रसन्न होकर आपको अकाउटंट जनरल मेवाड़ का पद को प्रदान किया गया। इन सब पदों पर जवाबदारी के साथ काम करते हुए आप स्वर्गवासी हुए। आपकी कारगुजारी के उपलक्ष्य में आपके पूर्वजों के सम्मान आपको पुन इनायत हुए तथा कई खास रुक्के भेजकर आपकी सेवाओं का समुचित आदर किया। आपके रतनसिंहजी जसवन्तसिंहजी तथा जीवनसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

सुराणा रतनसिंहजी कानोड़ ठिकाने के मोतमिंद, टकसाल के दरोगा आदि स्थानों पर मुकर्रर किये गये। इस परिवार के विवाहोत्सव तथा अन्य इसी प्रकार के उत्सवा पर उदयपुर के महाराणाजी ने कई बार बहुत सी रकमें प्रदान कर इस खानदान के सम्मान में वृद्धि की थी। सुराणा रतनसिंहजी

के निमित्त ६० साल पहिले मादेरी (सी० पी०) आये, और वहाँ कपड़ा किराने का व्यापार चालू किया। सवत् १९६८ में आपने पॉढर कवड़ा मे दुकान की। सेठ चन्दनमलजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८ मे हुआ। आपके बडे पुत्र बहादुरमलजी का स० १९८९ मे स्वर्गवास होगया, और शेष मिश्रीलालजी, मोहनलालजी और मोतीलालजी नामक तीन पुत्र विद्यमान है। सवत १९८२ मे इन सब भाइयों का कारबार अलग २ हुआ। सेठ बहादुरमलजी के पुत्र सुगनमलजी तथा मोतीलालजी मादेरी मे व्यापार करते है। मोतीलालजी के पुत्र कँवरीलालजी तथा कानमलजी है।

सेठ मिश्रीलालजी सुराणा का जन्म सम्वत १९४४ मे हुआ। आप पाढर कवडा के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते है। आपके यहाँ चन्दनमल मिश्रीलाल के नाम से जमींदारी, साहुकारी, सराफी तथा कपडे का व्यापार होता है। आपने पाथरडी गुरुकुल, आगरा विद्यालय आदि सस्थाओं को सहायताएँ दी है। आपके पुत्र रतनलालजी उत्साही युवक है तथा फर्म के व्यापार को तत्परता से सभालते है। इनके पुत्र पन्नालाल है।

सुराणा मोहनलालजी का कारबार चन्दनमल मोहनलाल के नाम से होता है। इसी तरह उत्तमचन्दजी के पौत्र हीरालालजी, उत्तमचन्द सूरजमल के नाम से मादेरी मे व्यापार करते है।

सेठ दीपचन्द जीतरमल सुराणा, भुसावल

यह कुटुम्ब थावला (अजमेर से १० मील की दूरी पर) का निवासी है। वहाँ से सेठ जीतरमलजी सुराणा लगभग ५०-६० साल पहिले भुसावल आये, तथा लेनदेन का व्यापार जीतरमल मोतीराम के नाम से आरम्भ किया। इस प्रकार व्यापार की उन्नति कर आप सवत् १९७२ मे स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र भैरोंलालजी और दीपचन्दजी विद्यमान है। आप दोनों सज्जन व्यक्ति हैं।

सुराणा भैरोंलालजी का जन्म सवत १९५७ में हुआ। आपकी दुकान यहाँ के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपके छोटे भाई दीपचन्दजी २६ साल के है।

आनंदराजजी सुराणा, जोधपुर

आनंदराजजी सुराणा न केवल ओसवाल समाज ही में वरन् राजस्थान के देश सेवकों में अपना अच्छा स्थान रखते है। आपने राजस्थान मे जागृति करने के लिये बड़े २ कष्ट उठाये, तथा कई साल तक आपने जेल की कठोर यातनाएँ भोगीं। स्थानकवासी समाजके आप प्रधान नेताओं में से है। इस संप्रदाय की का कोई उल्लेखनीय सस्था ऐसी नहीं होगी, जिससे आपका सम्बन्ध न हो।

और इनके भाइयों से तकाजा किया, जिससे सुराणा बन्धु बड़ी तकलीफ में आ गये, और किशनगढ़ आकर किसी प्रकार राज्य से समझौता किया। इसके पश्चात् इधर-उधर यह परिवार व्यवसाय की तलाश में गया। संवत् १९४८ में विजयसिंहजी स्वर्गवासी हुए।

सुराणा बलदेवसिंहजी के पुत्र सोभागसिंहजी, बीमलपुर दत्तक गये। विजयसिंहजी के पुत्र -गुलाबजी बम्बई गये। हरनाथसिंहजी के पुत्र चौथमलजी ठानड (मेवाड) में अपने नाना के यहाँ चले गये। और अनारसिंहजी के पुत्र उगरसिंहजी संवत् १९५२ में निसतान गुजर गये।

सुराणा कस्तूरमलजी के राजमलजी और रतनमलजी नामक २ पुत्र हुए। कस्तूरमलजी का संवत् १९६३ में और उनके पुत्र राजमलजी का इनके सम्मुख संवत् १९५६ में स्वर्गवास हो गया। अतएव रतनमलजी अमृतसर आ गये और शिवचंद सोहनलाल कोचर बीकानेर वालों की दुकान पर संवत् १९५७ में नौकर हो गये। इधर १९७७ से आप अमोलकचन्दजी श्रीश्रीमाल की भागीदारी में अमोलकचन्द रतनचन्द के नाम से कटरा अहलू वालियाँ में शाल तथा कमीशन का व्यापार करते हैं।

सुराणा दीपचन्दजी, अजमेर

सुराणा दीपचन्दजी के पूर्वज सुराणा रायचन्दजी नागौर से रतलाम होकर अजमेर आये। इनके पुत्र चन्दनमलजी व दानमलजी हुए, इनके समय तक आपके लेनदेन का व्यापार रहा। दानमलजी के पुत्र ...मलजी भोले व्यक्ति थे इनके समय में कारबार उठ गया। इनका अंतकाल सम्वत १९८७ में होगया। इनके पुत्र सुराणा दीपचन्दजी का जन्म संवत् १९३९ को हुआ, आप बालपन से ही अजमेर की लोढ़ा फर्म में सीख पढ़कर होशियार हुए, इधर १० सालों से लोढ़ा फर्म पर मुनीमात करते हैं। आपकी याददास्त बहुत ऊँची है। अजमेर के ओसवाल खानदानों के सम्बन्ध में आप बहुत जानकारी रखते हैं। आपके पुत्र सुराणा हरखचन्दजी हैं।

डाक्टर एन० एम० सुराणा, हिंगनघाट

इस परिवार के पूर्वज सौभागमलजी सुराणा मैनपुर राज्य में दीवान के पद पर काम करते थे। वहाँ से राजकीय अनबन हो जाने के कारण उक्त सर्विस छोड़कर हिंगनघाट की तरफ चले आये। इनके पुत्र ...करणजी थे, आप संवत् १९७२ में स्वर्गवासी होगये। तब आपके पुत्र नथमलजी सुराणा की आयु केवल ... साल की थी। इन्होंने अपनी माता की देखरेख में नागपुर से मेट्रिक पास किया। इसके बाद आपने एम० डी० की डिगरी हासिल की। सार्वजनिक कामों में भाग लेने की स्प्रिट भी आप में अच्छी है।

सेठ नरसिंहदासजी के यहाँ मगनमलजी दत्तक आये । आपका जन्म सम्वत् १९२० में हुआ। शुरु मे सन् १९१३ में आपने रियासत के सेटलमेंट में काम किया। इस काम को आपने बहुत सफलता पूर्वक किया जिसमे खुश हो कर महाराजा साहब ने आपको सिरोपाव बख्शा। उसके बाद आप पाटन में तहसीलदार बनाये गये वहाँ से आप पचपहाड के तहसीलदार बनाये गये। इस काम को आपने बड़ी होशियारी और लोक प्रियता के साथ सम्पन्न किया। कुछ समय तक आपने झालरापाटन में इन्चार्ज रेवेन्यू आफिसर का काम भी किया। उसके पश्चात् सन् १९३० में आपकी पेन्शन हो गई। आपके तीन पुत्र है। जिनके नाम सौभागमलजी, समरथमलजी, और प्रतापसिंहजी है।

सौभागमलजी—आपका जन्म संवत् १९५१ मे हुआ। आपने बी॰ ए॰ पास करके एम॰ ए॰ प्रीव्हियस पास किया। वहाँ से आप हाऊस मास्टर होकर राजकुमार कॉलेज रायपुर (सी॰ पी॰) में गये। वहाँ से फिर आप अपने पिताजी के स्थान पर पचपहाड़ के तहसीलदार बनाये गये। उसके पश्चात् आप महाराजा के साथ अक्टूबर सन् १९३० में विलायत चले गये। फरवरी १९३१ में वापस आकर रियासत में हाउस कण्ट्रोलर नियुक्त हुए। उसके पश्चात् आप मिलीटरी सेक्रेटरी बनाये गए। कुछ समय तक आप महाराजा के प्रायवेट सेक्रेटरी भी रहे। इस समय आप महाराजा के खास कर्मचारियों में है।

समरथसिंहजी—आपका जन्म सम्वत् १९७१ मे हुआ। आपने पूना मे सन् १९३१ मे बी॰ एस॰ सी॰ पास किया और इस समय सिविल इंजिनियरिंग की ट्रेनिंग के लिए विलायत गये हैं। इनसे छोटे भाई प्रतापसिंहजी मेट्रिक में पढ़ते है।

सुराणा पनराजजी का परिवार, सिरोही

इस परिवार के पूर्वज सुराणा सतीदासजी सोजत मे निवास करते थे। आपके सम्बन्ध में सोजत में सुराणों के वास मे एक शिलालेख खुदा हुआ है। उस से ज्ञात होता है कि "ये सम्वत् १७७२ के बैशाख मास में अचानक १० १५ चोरों के हमले से मारे गये और उनकी धर्म पत्नी उनके साथ सती हुई।" इनके बाद क्रमश. मलूकचन्दजी तथा भानीदासजी हुए। सुराणा भानीदासजी के निहालचन्दजी भाके रामजी तथा खींवराजजी नामक ३ पुत्र हुए। सुराणा मलूकचदजी सोजत के कोतवाल थे। और निहालचंदजी बोहरगत का व्यापार करते थे। निहालचन्दजी के धीरजमलजी आदि ५ पुत्र हुए। सुराणा धीरजमलजी की राज्य के अधिकारियों से अनबन हो गई, इसलिये इनकी सब सम्पत्ति लुटवा दी। सवत् १९१६ में आप स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र नथमलजी, जसराजजी, जोगमलजी और नवलमलजी छोटे थे।

सुराणा जोगमलजी—आरम्भ मे आप एरनपुरा छावनी मे क्लर्क हुए तथा शीघ्रातिशीघ्र उन्नति कर

नाहर

नाहरवश की उत्पत्ति

अजीमगज के नाहरवंशवालों के पुराने इतिहास पर दृष्टि पात करने से यह ज्ञात होता है कि इस वंश की उत्पत्ति पँवार (परमार) राजपूतों मे है। इस वंश के मूल पुरुष प्रतापी राजा पँवार थे। पँवार राजा की ३५ वीं पीढ़ी में आसधर जी हुए, जिनके समय से यह वंश नाहरवश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके सम्बन्ध में यह किम्वदन्ति प्रचलित है कि भगवती देवी ने बाघनी का रूप धारण कर बालक आसधर को उनकी माता की गोद मे चुरा कर जगल में अपने दूध से पाला। जब ये बड़े हुए और मानवी दुनिया में आये तब इन्होंने अपने आप को नाहर के नाम से प्रसिद्ध किया। इन्हीं आसधरजी ने स० ४१७ में जैनाचार्य्य श्री मानदेव सूरिजी के उपदेश से महानगर में जैन धर्म ग्रहण किया। और तब से ये महानगर में ही रहने लगे। इनकी ४७ वीं पीढ़ी में अजयसिंहजी हुए। इन्होंने महानगर को छोड़कर मारवाड में अपना निवास स्थान किया। वहाँ से कुछ समय के पश्चात् इनके वशज शेषमलजी भीनमाल आये। इसके पश्चात् इनके वशज कमरमलजी राधरिया डेलाना चले गये। और इनके पुत्र तेजकरणजी वहाँ से उठकर बीकानेर स्टेट के डेगाँ नामक स्थान में जा बसे।

नाहर खड्गसिंहजी का परिवार

राजा पँवार की ७३ वीं पीढी में बाबू खड्गसिंहजी का जन्म डेगाँ में ही हुआ था। उस समय बीकानेर राज्य में यह परिवार बहुत धनवान एव प्रभावशाली था। नाहर खड्गसिंहजी का विवाह भी इसी ग्राम की एक कन्या से हुआ था। विवाह में घोडे पर चढ़ कर तोरन मारा। इस प्रथा-विरुद्ध कार्य पर गाँव के ठाकुर साहब इनके विरुद्ध हो गये। यहाँ तक कि इनका सिर काट कर ठाकुर साहब के पास लानेवाले को पुरस्कार की घोषणा कर दी गई। फल-स्वरूप खड्गसिंहजी को उसी रात नववधू सहित राज्य छोड़ देना पड़ा। वे वहाँ से आगरे चले आये। आगरे आकर इन्होंने थोड़े ही समय में अपनी बुद्धिमानी और दूरदर्शिता से अच्छी ख्याति प्राप्त करली। उन दिनों मुर्शिदाबाद निवासी जगत सेठ धन-दौलत, मान सत्कार में सब से आगे बढ़े हुए थे। एक बार जब वे किसी राजकीय कार्य से देहली जा रहे थे,

लालचन्दजी का अन्तकाल हो गया है। तथा सुराणा धनराजजी इस समय सुमेरपुर जोनिंग फेक्टरी का काम देखते हैं। आपकी वय ३१ साल की है।

सुराणा सुकनराजजी का जन्म संवत् १९६१ में हुआ सन् १९२४ में आपने सोजत में प्रेक्टिस शुरु की। सन् १९२७ में आप सिरोही आ गये। यहाँ सरूप नगर के लिये आप आनररी मजिस्ट्रेट बनाये गये। इधर ४ सालों से आप सिरोही में वकालात करते हैं। आप सिरोही के वकीलों में अच्छा स्थान रखते हैं और आप कानून की अच्छी जानकारी रखते हैं और उग्र बुद्धि के युवक हैं।

सुराणा हीरालालजी, सोजत

हम ऊपर लिख आये हैं कि सुराणा निहालचन्दजी के छोटे भ्राता सांवतराजजी और मोतीरामजी थे, उन्हीं से इस परिवार का सम्बन्ध है। सुराणा मोतीरामजी ने जोधपुर दरबार से जीव हिंसा के कई परवाने हासिल किये। आप बड़े वीर और बहादुर प्रकृति के पुरुष थे। इनके पुत्र साहबचन्दजी संवत् १८६७ में सोजत के कोतवाल थे। इनके बाद तेजराजजी और जसवन्तराजजी हुए। जसवन्तराजजी के चार पुत्र हुए। इनमें पन्नालालजी गुजर गये हैं, बलवन्तराजजी कलकत्ते में जवाहरात का तथा सुम्मेरराजजी दारव्हा में रुई का व्यापार करते हैं। सब से बड़े सुराना हीरालालजी सोजत में रहते हैं।

सुराणा हीरालालजी बड़े हिम्मतवर, समाज सेवी और ठोस काम करने वाले व्यक्ति हैं। संवत् १९३० में आपका जन्म हुआ। १४ साल तक आपने जोधपुर में वकालात की। इसके बाद आपने मारवाड़ की जैन डायरेक्टरी तयार करने में बहुत परिश्रम किया। फिर श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेन्स की ओर से मारवाड़ के जैन मंदिरों की जांच व दुरुस्ती का कार्य्य उठाया। जब जोधपुर महाराजा उमेदसिंहजी सन् १९२५ में विलायत से वापस आये, उस समय आपने मारवाड़ की जनता की ओर से [illegible] रुपया खरच कर दरबार को एक किताब नुमा मानपत्र भेंट किया, जिसमें चांदी के ११०० अक्षर थे। जब पालीताना दरबार से शत्रुंजय का झगड़ा हुआ, उसका भारत भर में प्रोपेगण्डा करने का भार [illegible] को दिया, उसमें १ आप भी थे। मारवाड़ से गाय, फी मेल शिप्स तथा सी० गुड्स बाहर न जाने के लिये आपने जबर्दस्त प्रयत्न उठाया, लेकिन जब जोधपुर दरबार ने सुनवाई नहीं की, तो सुराणा [illegible] ने दरबार के बंगले पर ४ दिन तक अनशन सत्याग्रह किया। इस समय आपके पास हर समय [illegible] आदमी बने रहते थे। अन्तत दरबार से उपरोक्त पशु बाहर न जाने देने की परवानगी हासिल हुई। इसी तरह सिरोही स्टेट से भी पर्य्यूषण पर्व में जीवहिंसा न होने का हुकुम प्राप्त किया। [illegible] तात्पर्य्य यह कि सुराणा हीरालालजी की पब्लिक स्पिरट प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

बाबू गुलालचन्दजी हृष्ट पुष्ट तथा बडे निर्भीक थे। इन्होंने कई बार साहस के साथ भयानक बतों का मुकाबिला किया। एक समय इन्होंने सारी रात अपनी पत्नी बीबी प्राणकुमारी के साथ डाकुओं के एक दल का सामना किया और उन्हें खदेड दिया। स० १९०७ मे आपका स्वर्गवास हो गया।

आपके पश्चात् आपकी विधवा पत्नी श्रीमती प्राणकुमारी ने बाबू सितावचन्दजी को तीन वर्ष की अवस्था में दत्तक लिया और जब तक वे होशियार न हो गये तब तक जायदाद की व्यवस्था और देख भाल स्वय करती रहीं। इनका स्वर्गवास १९४६ मे हुआ।

रायबहादुर सितावचन्दजी नाहर

राय बहादुर सितावचन्दजी का जन्म स० १९०४ मे हुआ। आप पटावरी गोत्र मे उत्पन्न हुए थे। तीन वर्ष की उम्र मे आप बाबू गुलालचन्दजी के नाम पर दत्तक लिये गये। आपका विवाह अजीम गंज निवासी बाबू जयचन्दजी वेद की पुत्री श्री गुलाब कुमारीजी से हुआ। आप हिन्दी और बगला के अतिरिक्त सस्कृत और फारसी के अच्छे विद्वान् थे। सगीत और गायन कला मे भी आपका अच्छा प्रवेश था। आपका विद्या प्रेम अतीव सराहनीय था। सबसे पहिले आपने ही अजीमगज मे "विश्वविनोद" नामक प्रेस की स्थापना की और कई अच्छी २ धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित कीं। इन्होंने जायदाद की व्यवस्था बडी योग्यता से की। इनके शिक्षा सम्बन्धी विचार भी बहुत उच्च थे। बंगाल के जैनियों मे आपका परिवार आज भी विद्या और सस्कृति का उच्च आदर्श माना जाता है।

समाज तथा गवर्नमेण्ट मे आपकी बडी प्रतिष्ठा थी। स० १९३०-३१ मे जब बगाल मे बहुत बड़ा दुर्भिक्ष पडा था, उस समय आपने अकाल पीडितों को बहुत सहायता पहुँचाई थी। स० १९३२ में भारत सरकार ने आपको 'राय बहादुर' की पदवी से सम्मानित किया। महारानी विक्टोरिया की जुबली के अवसर पर अपने ग्रामवासी भाइयों की उच्च शिक्षा के लिये अपनी मातेश्वरीजी से अनुमति लेकर आपने "रानी प्राणकुमारी जुबली हाई स्कूल" नामक एक अवैतनिक उच्च विद्यालय खोला, किन्तु छात्रों की कमी के कारण यह सस्था आगे चलकर बद हो गई। सम्राट् एडवर्ड के राज्यारोहण के समय भी आप को कई सार्टिफिकेट और सम्मान प्राप्त हुए।

गवर्नमेंट की तरह समाज तथा जनता मे भी आपका सम्मान कम न था। जैनियों के प्रसिद्ध केन्द्र अहमदाबाद में पाँचवी जैन कानफरेंस के अवसर पर आपने सभापति का आसन सुशोभित किया था। इसके अतिरिक्त अनेक सस्थाओं ने आपको मानपत्र दे देकर सम्मानित किया था।

बीबी मायाकुमारीजी का बनाया हुआ मन्दिर गगास्रोत में नष्ट हो जाने पर आपने अजीमगज में

इनके प्रपौत्र मोहनलालजी के रामसिंहजी, लूनकरणजी, डूंगरसीदासजी, जालिमसिंहजी तथा खुशालचन्दजी नामक पांच पुत्र हुए।

सुराणा लूनकरणजी का परिवार—आप के उदयचन्दजी तथा हसराजजी नामक दो पुत्र हुए। इन में से उदयचंदजी के बागमलजी तथा बागमलजी के इन्द्रचन्दजी, नानूरामजी तथा सागरमलजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ इन्द्राजजी तक की पीढ़ी के सब लोग रिणी में ही रहे। सुराणा इन्द्राजजी समय रिणी में वकालत करते हैं। आपके सोहनलालजी, माणकचन्दजी तथा मोतीलालजी नामक तीन हैं। सोहनलालजी के दो पुत्र हैं।

सबसे पहले सुराणा नानूरामजी देश से कलकत्ता आये और यहाँ चाँदी की दलाली करना आ. किया जो आज भी आप कर रहे हैं। आपका रिणी में अच्छा सम्मान है। आपके जवरीमलजी, . मलजी तथा ताराचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। जवरीमलजी के झूमरमलजी तथा रतनलालजी नामक दो पुत्र हैं। सागरमलजी भी इस समय दलाली करते हैं। आपके छोटूलालजी एवम् भिखनचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

सुराणा डूंगरदासजी का खानदान—आपके मिर्जामलजी, कालूरामजी, मोहवतसिंहजी ठाकुरदासजी पृथ्वीराजजी तथा किशनचन्दजी नामक छः पुत्र हुए। इनमें से मिर्जामलजी के परिवार म मालचन्दजी दलाली करते हैं तथा बालचन्दजी मनोहरदास के कटले में भोपतराम बालचन्द के नाम से कपड़े का व्यापार करते हैं। कालूरामजी के परिवार में सुजानमलजी एवम् रुक्मानन्दजी मैमनसिंह में व्यापार करते हैं।

सुराणा पृथ्वीराजजी सबसे पहले कलकत्ते आये और यहाँ दलाली करने लगे। तदनन्तर आपने अपनी चलनी की एक दुकान कलकत्ते में गुलाबचन्द शोभाचन्द के नाम से स्थापित की। आपके स्वर्ग-वासी होने के पश्चात् आपकी धर्मपत्नी चांदाजी ने तेरापन्थी सम्प्रदाय में महासती के रूप में दीक्षा ग्रहण करली। सेठ पृथ्वीराजजी के गुलाबचदजी एवम् शोभाचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ शोभा-चन्दजी के वसीलालजी नामक पुत्र है। आप बड़े मिलनसार नवयुवक हैं। इस समय फर्म के काम को आप दोनों पिता पुत्र देखते हैं। वसीलालजी के भीखमलालजी नामक पुत्र हैं।

इसके अतिरिक्त सुराणा रामसिंहजी के परिवार में सुगनचन्दजी, मेघराजजी, तोतारामजी, ... मलजी तथा सुखराजजी करसियाग में व्यापार करते हैं तथा धर्मचन्दजी, नेमीचन्दजी दलाली करते हैं। धर्मचन्दजी के पुत्र लखमीचन्दजी, भँवरलालजी एवम् डायमलजी विद्यमान हैं। नेमीचन्दजी के पुत्र ... चन्दजी बी० ए० तथा बच्छराजजी हैं। सुराणा जालमचन्दजी के परिवार में रायचन्दजी और ...

प्रदर्शित होता है। सन् १९२७ में आपका अकस्मात् हार्ट फेल होने से स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र और एक कन्या हुए। पुत्रों के नाम क्रम से बाबू भँवरसिंहजी, बाबू बहादुरसिंहजी तथा बाबू जोहारसिंहजी थे। खेद है, कि रायबहादुरजी के स्वर्गवास के पश्चात् इन तीनों पुत्रों का भी असमय में ही देहान्त होगया।

बाबू भँवरसिंहजी—आपका जन्म सं० १९४० में हुआ था। आप बड़े बुद्धिमान थे। कलकत्ते के सियालदह पुलिस कोर्ट में आनरेरी मजिस्ट्रेट की हैसियत से आपने कई वर्ष तक कार्य किया था। आपका देहान्त सं० १९८९ में हुआ। आपके सजनसिंहजी और भजनसिंहजी दो पुत्र हैं।

बाबू बहादुरसिंहजी—आपका जन्म सं० १९५२ में हुआ। आप सदा प्रसन्नचित्त रहते थे। बी० ए० तक आपने अध्ययन किया था। आपको पोस्टेज स्टाम्प के संग्रह का अच्छा शौक था। आपका देहान्त सं० १९८६ में हुआ। आपके जयसिंहजी और अजयसिंहजी दो पुत्र हैं।

बाबू जोहारसिंहजी—आपका जन्म सम्वत् १९५६ में हुआ। आप बड़े सरल प्रकृति के थे। आपने भी अंग्रेजी में उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। आप बी० ए० परीक्षा पास करके सालिसीटरी का काम सीखते थे। कुछ समय तक रोगग्रस्त रहने पर आपका देहान्त सम्वत् १९८७ में हुआ। आपके किरणसिंहजी दीपसिंहजी, ललितसिंहजी और तरुणसिंहजी ये चार पुत्र हैं।

बाबू पूरणचन्दजी नाहर

आपका जन्म सं० १९३२ की वैशाख शुक्ल दशमी को हुआ था। ओसवाल समाज में जितने गण्यमान्य विद्वान हैं, उनमें आपका स्थान बहुत ऊँचा है। आपका इतिहास और पुरातत्व सम्बन्धी शौक बहुत बढ़ा-चढ़ा है। आपका ऐतिहासिक संग्रह और पुस्तकालय कलकत्ते की एक दर्शनीय वस्तु है। इनमें जो आपने अतुल परिश्रम, आजीवन अध्यवसाय और अर्थ व्यय किया है, वह प्रत्येक दर्शक अनुभव करेंगे। प्राचीन जैन इतिहास की खोज में आपने बहुत कष्ट सह कर और धन खर्च कर सुदूर आसाम प्रान्त से लेकर उत्तर पश्चिम प्रदेश, राजपूताना, गुजरात, काठियावाड आदि स्थानों तक भ्रमण किया है। फलस्वरूप आपने जो "जैन लेख संग्रह" नामक पुस्तक "तीन भाग" "पावापुरी तीर्थ का प्राचीन इतिहास" "एपिटोम आफ जैनिज़म" आदि ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं, वे ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण और नवीन अनुसन्धानों से परिपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त आपने समय २ पर जो निबन्ध लिखे हैं, उनका विद्वद्-समाज में बड़ा आदर हुआ है। 'आल इण्डिया ओरियंटल कानफरेंस' के द्वितीय अधिवेशन के अवसर पर जिसमें फ्रेंच विद्वान् म० सिलभेन लेभी सभापति थे, आपने "प्राचीन जैन संस्कृत साहित्य" पर एक अँग्रेजी में प्रबन्ध पढ़ा था, वह अपने ढङ्ग का अद्वितीय था। ११ वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में आपने "प्राचीन जैन भाषा साहित्य" पर जो लेख पढ़ा था वह भी गवेषणपूर्ण था। २० वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर

आपके पुत्र भूरामलजी ने इसे विशेष चमकाया। भूरामलजी का जन्म लगभग संवत् १९२२ में हुआ। ये जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि राजाओं, रईसों तथा जागीरदारों के यहाँ जवाहरात के तयारीमाल को विक्री करने में विशेष जुटे रहे। इसमे इन्होंने लाखों रुपये कमाये और कई मकानात, इमारतें बनवाई तथा खरीद कीं। जौहरीबाजार का लाल कटला भी आपने सम्वत् १९५२ मे खरीदा। आप यहाँ की ओसवाल समाज में बडे प्रतिष्ठित पुरुष माने जाते थे। सवत् १९७७ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ भूरामलजी के पुत्र सेठ राजमलजी सुराणा का जन्म सवत् १९६४ मे हुआ। आप विवेकशील तथा शान्त स्वभाव के सज्जन हैं। इस समय आप जयपुर की ओसवाल समाज मे धनिक व्यक्ति माने जाते हैं। इस समय आपके यहाँ बैंकिंग, जवाहरात तथा मकानों के किराये का काम होता है। आपकी जयपुर में बहुतसी इमारतें बनी हुई है।

लाला गुलाबचन्द धन्नालाल सुराणा, आगरा

आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान का मूल निवास स्थान नागौर का है मगर करीब दो तीन सौ वर्षों से यह खानदान आगरे मे निवास करता है। इस खानदान में लाला बुद्धाशाहजो हुए आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से लाला चुन्नीलालजी और लाला मुन्नालालजी था। जिनमें यह खानदान लाला चुन्नीलालजी का है। लाला चुन्नीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९१८ में हो गया। लाला चुन्नीलालजी के लाला गुलाबचन्दजी नामक पुत्र हुए, आपने इस खानदान के व्यवसाय, सम्पत्ति और इज्जत की खूब तरक्की दी। आप बड़े व्यापार कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८८ में हो गया। आपके दो पुत्र हुए। लाला धन्नालालजी और लाला बाबूलालजी। इनमें से लाला धन्नालालजी का स्वर्गवास सवत् १९८५ में हो गया। लाला बाबूलालजी का जन्म संवत् १९३९ का है। आपही इस समय इस खानदान के संचालक हैं। आप बडे सज्जन और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। इस समय आपही इस फर्म के व्यवसाय का सचालित करते है। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम निर्मलचन्दजी और उदयचन्दजी है।

आगरे के ओसवाल समाज में यह खानदान बहुत प्रतिष्ठित और अगण्य है। इस फर्म पर गोटा किनारी का पुश्तैनी व्यवसाय होता है। जिसके लिए फर्म को लार्ड चेम्सफोर्ड, लार्डरीडिंग, लार्ड इर्विन, बगाल गवर्नर, लार्ड लिटन आदि कई महानुभावों से प्रशसापत्र मिले हैं। इस फर्म ने अपने यहाँ मशीनों से सोने चादी की जजीरों को बनाने का काम प्रारम्भ किया है। यह काम बहुत बड़े स्केल पर होता है।

सेठ चन्दनमल मिश्रीमल सुराणा, पांढर कवड़ा (यवतमाल)

जोधपुर स्टेट के कुचेरा नामक स्थान से सेठ उत्तमचन्दजी और उनके छोटे भाई चदनमलजी आकर

बाबू पूरणचन्दजी नाहर एम ए बी एल., कलकत्ता

बाबू फतेसिंहजी नाहर, कलकत्ता

स्व० बाबू कुमरसिंहजी नाहर बी ए, कलकत्ता.
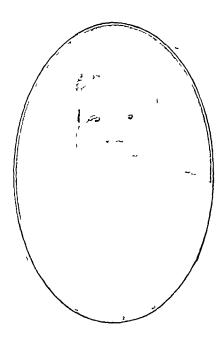
बाबू अजयसिंहजी नाहर, कलकत्ता.

आप ओसवाल समाज के विशेष व्यक्तियों में हैं, तथा इस समय दिल्ली में प्रेस मशीनरी का व्यापार करते हैं।*

किशोरमलजी सुराणा, जोधपुर

आपके पूर्वज नागोर में रहते थे। कोई तीन चार पुश्त से यह परिवार जोधपुर आया। किशोरमलजी सुराणा नथमलजी सुराणा के पुत्र हैं। आप ट्रिब्यूट विभाग में कार्य करते हैं। आप ओसवाल समाज के हित के मामलों में दिलचस्पी रखते हैं। आप ओसवाल कुटुम्ब सहायक द्रव्यनिधि नामक संस्था के स्थापकों में से एक हैं। आप स्थानकवासी जैन आम्नाय के अनुयायी हैं। तथा जीवदया के कामों में अपनी सामर्थ्य के अनुसार अच्छा द्रव्य खर्च करते हैं। आपके चचेरे भाई फतेराजजी सुराणा सायर विभाग में नौकरी करते हैं। रियासत की उन्हे बहुत वकफियत है। आप हिसाब के बहुत उत्तम जानकार हैं। इनके पुत्र किशनराजजी ने मेट्रिक पास किया है।

सुराणा कनकमलजी, अमृतसर

सुराणा कनकमलजी के पूर्वज शिवलालजी और बच्छराजजी मशहूर धनिक थे। आप सरवाड़ (किशनगढ़ स्टेट) में बोहरगत का व्यापार करते थे। सेठ बच्छराजजी के बलदेवसिंहजी, विजयसिंहजी, हरनाथसिंहजी, अनारसिंहजी और कस्तूरमलजी नामक पाच पुत्र हुए। सम्वत् १९२५ के अकाल के समय सेठ बलदेवसिंहजी ने गरीबों को कई खाई अनाज बाँटकर, मदद पहुँचाई। कई महीनों तक जनता इन्हीं के अनाज पर गुजारा करती रही। किशनगढ़ दरबार ने आपकी उदारता की बहुत तारीफ की साथ ही इनसे यह भी कहा कि अगर गरीब जनता के ३ मास आप निकलवादें तो उत्तम हो, अनाज न होने से बलदेवसिंहजी ने असमर्थता प्रकट की। यह सुनकर महाराजा, अपनी सरकारी खाइयां जो सरवाड़ किले में भरी थीं वह बलदेवसिंहजी के जिम्मे कर, किशनगढ़ चले गये। इस प्रकार सुराणा बलदेवसिंहजी ने वह अनाज गरीबों और जमीदारों को बाट दिया। सवत् १९२६ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् परिवार में कोई होशियार आदमी काम सम्हालने वाला नहीं रहा। सवत् १९४० में किशनगढ़ स्टेट ने अकाल के समय दी हुई अनाज की खाइयों का बकाया वसूल करने के लिये सुराणा, विजयसिंह

---

* खेद है कि आप का परिचय कोशिश करने पर भी नहीं प्राप्त हो सका, अतएव जितना [illegible] था—उतना ही परिचय छापा जा रहा है।

समाज सेवा— तीर्थ-सेवा के साथ २ आपने अपने जीवनकाल मे समाज सेवा और जन-सेवा के भी कई प्रशंसनीय कार्य किये है । कलकत्ते की समस्त ओसवाल जाति मे स०१९८० मे जो देशी और विदेशी समस्या पर द्वन्द्व चल गया था और जिस कारण वहाँ के समाज मे घृणात्मक वातावरण पैदा हो गया था, उसको मिटाने के लिये आपने - सी सूक्ष्म दृष्टि और बुद्धिमत्ता से कार्य किया वह बडा ही आश्चर्य जनक था। वह कलह यहाँ के ओसवाल समाज की नस नस मे फैल गया था और विशेषकर थलीधडे के बड़ २ लोग इसमें बुरी तरह फँस गये थे। आप ही की बहुदर्शिता से यह क्लेश बडी कुशलता से निपट गया। आप अखिल भारतवर्षीय ओसवाल महासम्मेलन के प्रथम अधिवेशन अजमेर के सभापति चुने गये थे। इस अधिवेशन की बैठक स० १९८९ मे अजमेर मे हुई थी।

साग्रहिक प्रवृत्ति—आप की खास विशेषता यह है कि आप प्राय सभी वस्तुओं का सग्रह भली प्रकार करते रहे है। 'कुमारसिह हाल' में 'नाहर म्युजियम' नाम से आपका जो सग्रह है, उसमे पाषाण और धातु की मूर्त्तियाँ, नाना प्रकार के चित्र, सिक्के आदि भारत के प्राचीन समय की कारीगरी के आपने अच्छे अच्छे नमूने एकत्रित कर रखे है। आपका पूरा सग्रह देखने से ही आपकी सग्रह प्रियता का पता चल सकता है। कई वर्षों की कुँकुम पत्रिकाएँ, इनविटेशन कार्ड और हिन्दी, बगला आदि भाषाओं के साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं के मुख पृष्टों का अच्छा सग्रह है। इसी प्रकार कई विषयों पर भिन्न २ समय में प्रकाशित सूचना, हैंडबिल, निमन्त्रण पत्रादि का भी अच्छा सग्रह है। इस प्रकार जब छोटी २ वस्तुओं के सग्रह में आप इतने तल्लीन रहते है। तब दूसरी २ वस्तुओं का आपके पास सुन्दर सग्रह होना स्वाभाविक ही है।

सासारिक-जीवन—आपके सासारिक जीवन की कुछ घटनाएँ ऐसी महत्वपूर्ण हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये वे अनुकरणीय और सामाजिक जीवन की शान्ति के लिये बहुत आवश्यक हैं। प्रथम बात यह है कि आपने अपने सब पुत्रों को उच्च शिक्षा से शिक्षित किया। पश्चात् उन लोगों के सब प्रकार से योग्य होने पर आपने अपनी विद्यमानता में सबको अलग करके उनकी साम्पत्तिक व्यवस्था भी अलग २ कर दी। समाज के अन्तर्गत माता पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर भाई भाई के झगडे सब जगह देखे जाते हैं और जिस कारण समाज के बड़े बडे घर नष्ट हो जाते है। इन बातों को देखते हुए आपका यह कार्य बहुत प्रशसनीय है। साराश यह कि आपका जीवन क्या धार्मिक, क्या सामाजिक, क्या साहित्यिक सभी दृष्टियों से आदर्श है। आपके चार पुत्र है जिनके नाम क्रम से केशरीसिंहजी, पृथ्वीसिंहजी, विजयसिंहजी, और विक्रमसिंहजी है।

बाबू केशरीसिंहजी—आपका जन्म स० १९५२ में हुआ। आपका पठन-पाठन कालेज में इंटर

भांदकजी गुरुकुल में छात्रों को एकत्रित करने एवं उसकी व्यवस्था जमाने में आपने अकथ परिश्रम किया। इस कार्य के लिए कई मास तक आप वहाँ ठहरे । आप शिक्षाप्रेमी तथा सुधरे विचारों के सज्जन हैं। आप होमियोपैथिक चारिटेबल डिस्पेंसरी तथा महाराष्ट्र एस० स्वस्तिक स्टोर्स का सचालन करते हैं। आप हिंगनघाट की जैन युवक पार्टी के शिक्षित और उत्साही मेम्बर हैं ।

सौभागमल गुलजारीमल सुराणा, बुरहानपुर

इस परिवार के व्यक्ति सेठ सौभागमलजी सुराणा नागौर से लगभग ७० साल पहिले बुरहानपुर आये, आरम्भ में आपने नौकरी की और बाद में अपनी दुकान खोली, आपके पुत्र गुलजारीमलजी और गुमानीमलजी के हाथों से धंधे को उन्नति मिली । गुलजारीमलजी संवत् १९९० के भादवा मास में स्वर्गवासी हुए । गुमानीमलजी मौजूद हैं । गुलजारीमलजी के पुत्र जोरावरमलजी तथा गुमानीमलजी के पुत्र रतनमलजी हैं । सेठ जोरावरमलजी व्यापार संचालन में सहयोग लेते हैं । इस दुकान पर बुरहानपुर (सी० पी०) में आढ़त गल्ला तथा लेनदेन का व्यापार होता है तथा यहाँ के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित मानी जाती है ।

कन्हैयालालजी सोहनलालजी सुराणा, उदयपुर

आप दोनों भ्राता उदयपुर के निवासी हैं तथा दोनों ही बी० एस० सी० एल० एल० बी० की परीक्षा में सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हुए हैं । आप बड़े समाज सुधारक युवक हैं । आप दोनों भाइयों ने पड़दे की कुप्रथा को तोड़ कर ओसवाल नवयुवकों के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित किया है। सुराणा सोहनलालजी उदयपुर में नायब हाकिम हैं ।

खींवसरा सरदारचंदजी उम्मेदचंदजी का खानदान, जोधपुर

इस परिवार के पूर्वज खींवसरा राणाजी संवत् १६६० में जोधपुर आये तथा यहां अपना [illegible] बनाया। इनकी छठी पीढ़ी में खींवसरा भींवराजजी हुए। आपने जोधपुर स्टेट में कई काम [illegible]। आपके पुत्र दौलतरामजी तथा पौत्र मुकुन्दचन्दजी हुए। खींवसरा मुकुन्दचन्दजी स्टेट सर्विस [illegible] वोहरगत का व्यापार भी करते थे। आपकी आर्थिक स्थिति बड़ी उन्नति पर थी। कागे में [illegible] श्री मुकुन्द बिहारीजी का मन्दिर बनवाया। इनको स्टेट से कैफियत और मुहर प्राप्त थी। संवत् [illegible] में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र खींवसरा सरदारचंदजी तथा उम्मेदचंदजी नामांकित [illegible] हुए।

खींवसरा सरदारचन्दजी जेतारण आदि के हाकिम थे। संवत् १९६९ में आपका स्वर्गवास [illegible]। आपके छोटे भ्राता उम्मेदचंदजी जोधपुर स्टेट की जांच पड़ताल कमेटी के मेम्बर थे। संवत् [illegible] में आपका स्वर्गवास हुआ। आप दोनों बंधु सरकारी नौकरी के अलावा अपने वोहरगत के [illegible] चलाते रहे। सरदारचन्दजी के पुत्र सज्जनचन्दजी एवम् वल्लभचन्दजी तथा उम्मेदचन्दजी के [illegible] किशनचन्दजी तथा बलवन्तचन्दजी हैं। इनके किशनचन्दजी का स्वर्गवास होगया है। इनके पुत्र [illegible] हैं। इन बंधुओं में इस समय बलवन्तचन्दजी तथा मेघचन्दजी महकमा खास जोधपुर में [illegible] हैं। तथा सज्जनचन्दजी वोहरगत का व्यापार करते हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आप [illegible] स्टेट से मुहर छाप प्राप्त है। आप लोग जोधपुर के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माने जाते हैं।

सेठ दोंड़ीराम दलीचन्द खींवसरा, पूना

इस परिवार का मूल निवास नाटसर (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ से सेठ जोधराजजी [illegible] पुत्र मूलचन्दजी मूथा लगभग ८० साल पूर्व पूना जिला के मुखई नामक गांव में आये। आप [illegible] १९०६ के लगभग स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र गुलाबचन्दजी का संवत् १९६१ में तथा शिवराजजी [illegible] १९५९ में स्वर्गवास हुआ। सेठ गुलाबचन्दजी परिंचे (पूना) में व्यापार करते थे। आपके [illegible], हीराचन्दजी, दलीचन्दजी तथा शिवराजजी के शंकरलालजी नामक पुत्र हुए।

[illegible] दोंड़ीरामजी खींवसरा—आपका जन्म शके १८११ में हुआ। आपके हाथों से व्यापार की [illegible] हुई। आरम्भ से ही समाज सुधार की भावनाएं आपके मन में बलवती थीं। आपने सन् [illegible] जैनोन्नति नामक पत्र निकला। सन् १९११ में पूना में एक जैन बोर्डिंग स्थापित करवाया। [illegible] इस समय १५१० जैन बोर्डिंग है। ज्ञान मण्डल स्थापित कर छात्रों को स्कालरशिप दिल- [illegible]। औसर मौसर आदि के विरुद्ध आवाज उठाई। संवत् १९७४ में परिंचे नामक [illegible] अनुकूल न समझ कर आप अपने बन्धुओं के साथ पूना चले आये। तथा यहाँ जरी [illegible] का व्यापार स्थापित कर अपने दोनों छोटे बन्धुओं के सहयोग से इसमें बहुत सफलता [illegible] श्री नदूबाई ओसवाल का विवाह, आपने समाज की कुछ भी परवाह न कर बहुत [illegible] आपके आचरणों का अनुकरण पूना के जैन युवकों में नवजीवन का संचार करता है।

इधर २ साल पूर्व आपने हीराचन्द दलीचन्द के नाम से बम्बई में आढ़त का व्यापार शुरू किया है। दोंगीरामजी के पुत्र माणिकलालजी, मोतीलालजी व्यापार में भाग लेते हैं। तथा हीराचन्दजी के पुत्र बदरीलालजी, कांतिलालजी तथा दलीचन्दजी के पुत्र यशीलालजी, कन्हैयालालजी और चन्द्रकांतजी पढ़ते हैं। सेठ शिवराजजी के पुत्र शंकरलालजी इनकमटेक्स का कार्य करते हैं।

सेठ हंसराज दीपचंद खींवसरा, मद्रास

इस परिवार का निवास डे (नागौर के पास) है। इस परिवार में सेठ नगराजजी के पुत्र हंसराजजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप उद्योगी व धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष थे। आप संवत् १९२९ में मद्रास आये। तथा सेठ अगरचन्द मानचन्द के यहाँ सर्विस की। और फिर मारवाड़ चले गये। तथा वहाँ संवत् १९७२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र भीमराजजी तथा दीपचंदजी हुए। इनमें भीमराजजी २८ साल की उम्र में १९५६ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ दीपचन्दजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। संवत् १९५१ में आपने मद्रास के बैङ्किग तथा ज्वेलरी का व्यापार स्थापित किया। तथा अपनी होशियारी और बुद्धिमानी से इस व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की है। इस समय मद्रास में आपकी दुकान बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। दीपचन्दजी खींवसरा का समाज की उन्नति की ओर अच्छा लक्ष्य है। आपने मद्रास स्थानक बनवाने में मदद दी है। तथा इस समय आप मद्रास स्थानकवासी स्कूल के सेक्रेटरी हैं। आपके नाम पर हुक्मीचन्दजी दत्तक आये हैं।

सेठ कनीराम गुलाबचन्द खींवसरा, धूलिया

इस परिवार के पूर्वज जेठमलजी और उनके भाई वेणीदासजी नारसर ठाकुर के कामदार थे। वहाँ से यह परिवार बदलू (मारवाड़) आया। तहाँ वहाँ से लगभग १५० साल पूर्व जेठमलजी के पुत्र कनीरामजी और तिलोकचदजी नालोद (धूलिया के पास) आये। और वेणीदासजी का परिवार साईं खेड़ा (नाशिक) गया। सेठ कनीरामजी के पुत्र गुलाबचदजी तथा प्रतापमलजी और तिलोकचन्दजी के हुकमीचंदजी हुए। इनमें सेठ गुलाबचदजी और प्रतापचन्दजी का व्यापार धूलिया में स्थापित हुआ। इन दोनों भाइयों का व्यापार संवत् १९३१ में अलग २ हुआ। तथा सेठ हुकमीचन्दजी के पुत्र कस्तूरचन्दजी फकीरचन्दजी और चौथमलजी नालोद में व्यापार करते रहे। फकीरचंदजी प्रतिष्ठित पुरुष हुए। इनका तथा गुलाबचन्दजी का संवत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। खींवसरा गुलाबचन्दजी के नाम पर जोगीलालजी बाबरे से तथा प्रतापमलजी के नाम पर तुलसीरामजी नालोद से दत्तक आये।

खींवसरा जोगीलालजी का जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप सेठ वेणीदासजी के प्रपौत्र हैं। धूलिया में आपकी दुकान सब से प्राचीन मानी जाती है। आप प्रतिष्ठित तथा समझदार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र टीकमचन्दजी, जवरीमलजी तथा सोभागमलजी हैं। आपके यहाँ सराफी व्यापार होता है। खींवसरा तुलसीरामजी के पुत्र रूपचन्दजी, तुलसीराम रूपचन्द के नाम से धूलिया में व्यापार करते हैं। तथा शेष भ्राता छोटे हैं। यह परिवार मंदिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ नेमीचन्द हेमराज खींवसरा, लोनार (बरार)

इस परिवार का मूल निवास बडी पादू (मेड़ते के पास) है। वहाँ से सेठ गंभीरमलजी के पुत्र ... संवत् १९४० में लोनार आये तथा देवकरण चादमल बोहरा की दुकान पर सर्विस की। पीछे से ... भ्राता पेमराजजी आनदरूपजी, नदलालजी, देवीचन्दजी तथा चदूलालजी लोनार आये तथा इन ... सम्मिलित रूप में व्यापार आरंभ किया। सेठ पेमराजजी तथा देवीचन्दजी विद्यमान हैं। इनके ... "... पेमराज" के नाम से व्यापार होता है। देवीचन्दजी के पुत्र उत्तमचदजी हैं।

सेठ अनदरूपजी का स्वर्गवास सवत् १९७५ में हुआ। आपके पुत्र हेमराजजी का जन्म संवत् ... में हुआ। आपने स्वर्गीय सेठ मोतीलालजी सचेती की निगरानी मे हिन्दू मुस्लिम दगे को व दंगाइयों ... को शात करने में बहुत परिश्रम किया। आप जातीय कुरीतियों को मिटाने में तथा शुद्धि ... में प्रयत्नशील रहते हैं। आपके यहाँ "नेमीचन्द हेमराज" के नाम से कपडे का व्यापार होता है।

नौलखा

नौलखा परिवार अजीमगंज

सबसे प्रथम सन् १७५० ई० में इस परिवार के पूर्व पुरुष बाबू गोपालचन्दजी नोलखा अजीमगंज ... आप बड़ व्यापार दक्ष थे। अत. थोड़े ही समय में अच्छी उन्नति करली आपने अपने भतीजे बाबू ...स्वरूपचन्दजी को दत्तक लिया और बाबू जय स्वरूपचन्दजी ने बाबू हरकचन्दजी को दत्तक लिया।

हरकचन्दजी नोलखा—आप सन् १८५७ में अपने पिता से अलग हो गये और अपने नाम से ... व्यवसाय आरम्भ किया तथा अल्पकाल ही में इसमें अच्छी उन्नति करली। आपने कलकत्ता लुधियाना ...ज, पुर्णिया, मुर्शीगज, महाराजगज और नवाबगंज में अपनी फर्मे खोली। बैंकिंग व्यवसाय के ... जमीदारी खरीदने में भी आपने पूजी लगाई। फलत. आपकी जमीदारी मुर्शिदाबाद, वीरभूमि ... जिले में हो गई। आपका स्वर्गवास सन् १८७४ ई० में हुआ। आपके तीन पुत्र हुए ... हरकचन्दजी नोलखा और दानचन्दजी नोलखा का स्वर्गवास सन् १८४७ में हुआ। आपके तीसरे ... गुलाबचन्दजी नोलखा थे।

...चन्दजी नोलखा—आपने व्यवसाय और स्टेट को अधिक बढ़ाया। आप मुर्शिदाबाद ... बेंच के १० वर्ष तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपने सन् १८८५ के अकाल ... का कर माफ कर दिया और तीन महीने तक दो हजार अपीड़ितों को भोजन देते रहे। ... का मंसद "राजे विला" नामक उद्यान बनवाया। आप बहुत ही लोक प्रिय सहृदय ... आपका स्वर्गवास सन् १८९६ ई० के जून मास में हुआ। आपके पुत्र बाबू धनपतसिंह ... सहृदय सज्जन थे।

...सिंहजी नोलखा—आपने बगाल सरकार को १५ हजार की रकम अजीमगंज में गुलाब

चन्द नौलखा अस्पताल भवन के लिये दिये। इसी प्रकार २५ हजार की रकम आपने कलकत्ते के शम्भूनाथ हास्पिटल में सर्जिकल वार्ड बनाने के लिये दिये। सरकार ने आपके कार्यों के सम्मान स्वरूप आपको सन् १९१० में "राय बहादुर" की पदवी प्रदान की। इतना ही नहीं सरकार ने आपको कलगी के रूप में खिल्लत दे आपका आदर किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७० में हुआ। आपके दो पुत्र थे जिनके नाम बाबू आनन्दसिंह नौलखा और बाबू इन्द्रचन्द्रजी नौलखा थे। आप दोनों ही क्रमशः सन् १९०४ और सन् १९०८ में निसन्तान स्वर्गवासी हुए। अतएव आपके नाम पर बाबू निर्मलकुमारसिंहजी नौलखा सुजानगढ़ से दत्तक आये।

निर्मलकुमारसिंहजी नौलखा—आपने १९७६ में स्टेट का कार भार सम्हाला। आप बहुत होनहार राष्ट्रीय विचारों के शिक्षित नवयुवक हैं। आपको शुद्ध खद्दर से बड़ा स्नेह है। आप जैन श्वेताम्बर सभा अजीमगंज, जियागंज एडवर्ड कोरोनेशन स्कूल के व्हाइस प्रेसिडेण्ट और अजीमगंज के म्युनिसिपल कमीश्नर हैं। १९१६ में आपकी ओर से यहां एक बालिका विद्यालय खोला गया है। इसके अलावा आप बंगाल लैंड होल्डर्स एसोसियेशन, कलकत्ता क्लब, ब्रिटिश इण्डिया असोसिएशन आदि संस्थाओं के भी मेम्बर हैं। हाल ही में आपने जैन श्वेताम्बर अधिवेशन अहमदाबाद के सभापति का स्थान आपने सुशोभित किया था। शिक्षा एवम् सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ धार्मिक कामों की ओर भी आपका अच्छा लक्ष्य है। संवत् १९८२ में महात्मा गांधीजी अजीमगंज आये थे उस समय आपने १० हजार रुपया उनकी सेवा में भेंट किया था उसी साल जैनाचार्य्य ज्ञानसागरजी महाराज को भी ज्ञान भंडार में १० हजार रुपया दिया था। श्री पावापुरीजी में गांव के जैन श्वेताम्बर मन्दिर के जीर्णोद्वार में २० हजार रुपया लगाया। आपको पुरातत्व विषयों से भी बहुत स्नेह है। आपने अपने बगीचे में पुरानी वस्तुओं का एक संग्रह कर रखा है। इस समय आपके चरित्रकुमार सिंहजी नामक एक पुत्र हैं। आपकी बहुत से स्थानों पर जमींदारी है। तथा कलकत्ता अजीमगंज, और बड़िया, अकबरपुर, फवाड़ गोला इत्यादि स्थानों पर बैंकिंग, पाट और गल्ले का व्यापार होता है।

नौलखा परिवार, सीतामऊ

कहा जाता है कि जब महाराजा रतनसिंहजी इधर मालवे में आये तब इस खानदान वाले भी साथ थे। उनकी पत्नी यहां रतलाम में सती हुई, जिनके स्मारक रूप में आज भी चबूतरा बना हुआ है। और आज भी इस परिवार के लोग अपने यहां होने वाले शुभ कार्यों पर पूजा करने के लिये वहां जाया करते हैं। यहीं से करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ धन्नाजी के पुत्र हरीरामजी सीतामऊ आये। यहां आकर आपने स्टेट के खजाने का काम किया। आपके बड़े पुत्र हरलालजी आजीवन स्टेट के हाउस होल्ड आफिसर तथा छोटे पुत्र पन्नालालजी हाकिम रहे। स्टेट में आपका अच्छा सम्मान था।

सेठ हरलालजी के जैतसिंहजी और रामलालजी नामक दो पुत्र हुए। आप लोग भी स्टेट में सर्विस करते रहे। जैतसिंहजी के नन्दलालजी, खुमानसिंहजी और लालसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें लालसिंहजी, रामलालजी के नाम पर दत्तक रहे। प्रथम दो भाइयों का स्वर्गवास होगया। इस समय नंदलालजी के बख्तावरसिंहजी और किशोरसिंहजी नामक पुत्र विद्यमान हैं।

लाडसिंहजी ने पहले पहल दरबार पेशी का काम किया। पश्चात् तहसीलदार रहे। ...स्टर के रेव्हेन्यू आफिसर हैं। आप मिलनसार शिक्षित एवम् सज्जन व्यक्ति हैं। आपके ...सिंह हिम्मतसिंहजी, प्रहलादसिंहजी, गिरिशकुमारजी और सुमतिकुमारजी नामक ६ ...प्रतापसिंहजी एम० ए० एल० एल० बी० और बाबू कुबेरसिंहजी बी० ए० हैं। आप ...न और नवीन विचारों के हैं। आप मन्दिर संप्रदाय के मानने वाले हैं। सेठ मन्नालालजी ...हजी नाहरगढ़ नामक परगने के इजारे का काम करते रहे। इनके ४ पुत्रों में से दो का ...था। आप में एक लखपतसिंहजी आगरे में तहसीलदार हैं। तथा दूसरे विशनसिंहजी ...में सर्विस करते हैं।

धाड़ीवाल

...गौत्र की उत्पत्ति

महाजन वंश मुक्तावली में लिखा है कि विभंम पाटन नगर में ढेढूजी नामक एक उरभी वंशीय ...थ। ये इधर उधर धाडे मारकर अपनी आजीविका चलाते थे। एक बार का प्रसंग है कि उहड ...न अपनी लड़की का डोला लेकर शिसोदिया राणा रणधीर के पास जा रहा था। रास्ते में ढेढूजी ...लिया और इसकी लड़की बदन कुँवर को अपने साथ ले आया। इस बदन कुँवर से सोहड़ ...पुत्र हुआ। इसे संवत् ११६९ में श्री जिनदत्त सूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिबोध देकर जैन धर्मा...नाया। इसकी माँ धाडे से लाई गई थी, अतएव इसका धाड़ेवा गौत्र स्थापित हुआ। कालान्तर में ...वाल के नाम से पुकारा जाने लगा।

सेठ मुल्तानचंद हीरचंद धाड़ीवाल, रायपुर

यह परिवार बगड़ी (मारवाड़) का निवासी है। वहाँ से सेठ सरदारमलजी के बड़े पुत्र मुल...ने संवत् १९२४ में औरंगाबाद गये। वहाँ से आप संवत् १९२८ में अमरावती होते हुए जबलपुर ...आये ...के साथ कपड़े का व्यापार शुरू किया। जबलपुर से आप अपने छोटे भ्राता हीरचंद ...जी के साथ संवत् १९३५ में रायपुर (सी० पी०) आये। इन दोनों भ्राताओं ने कपड़ा ...में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ मुलतानमलजी का संवत् १९७६ में ...। तथा सेठ हीरचंदजी मौजूद हैं। आपका जन्म संवत् १९१९ में हुआ।

...में मुलतानचंदजी के पुत्र लखमीचन्दजी तथा हीरचंदजी के पुत्र नथमलजी तथा उत्तमचंद ...हैं। आपका जन्म क्रमशः संवत् १९५४ सं० १९५३ तथा १९६० में हुआ। आपकी ...फर्म है। आपके यहाँ सराफी, बेङ्किग व पुलगाव मिल की एजंसी का काम ...इस परिवार ने एक जैन महावीर पाठशाला खोल रक्खी है। इसमें १२५ छात्र पढ़ते

हैं। इस पाठशाला को आपने १५ हजार की लागत की एक बिल्डिंग भी दी है। यह परिवार यहां अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। नथमलजी के पुत्र सम्पतराजजी तथा केसरीचंदजी और हुकमचन्दजी के पुत्र सुगनचन्दजी हैं।

सेठ फतेमल अजितसिंह धाड़ीवाल, भीलवाड़ा

सोहडजी की ३५ वीं पुश्त में मेघोजी नामक व्यक्ति हुए। इनके देवराजजी और हसराजजी नामक दो पुत्र थे। इनमें से सेठ हसराजजी गुजरात प्रांत छोड़कर सांगानेर नामक स्थान पर आये। यहाँ आपके दौलतरामजी और सूरजमलजी नामक दो पुत्र हुए। अपने पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर ये दोनों भाई अलग हो गये। इनमें दौलतरामजी भीलवाड़ा तथा सूरजमलजी सरवाड नामक स्थान पर गये। सेठ दौलतरामजी के गंभीरमलजी और नथमलजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ गंभीरमलजी बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने व्यापार में लाखों रुपये पैदा किये। आपकी उस समय जावद, शाहपुरा, आदि कई स्थानों पर शाखाएँ थीं। सेठ नथमलजी भीलवाड़ा जिले के हाकिम हो गये थे। आपकी बहुत प्रतिष्ठा थी। आपके नाम पर तिंवरी से नवलमलजी दत्तक आये। सेठ गंभीरमलजी के भी कोई न था, अतएव आपके नामपर सरवाड से कल्याणमलजी दत्तक आये। आप लोगों ने भी अपने व्यवसाय में अच्छी तरक्की की। संवत् १९२२ में फिर आप लोग अलग २ हो गये।

सेठ कल्याणमलजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः फतेमलजी, जवानमलजी और इन्द्रमलजी हैं। इनमें से फतेमलजी अपने चाचा नवलमलजी के नाम पर दत्तक रहे। जवानमलजी का स्वर्गवास हो गया। इन्द्रमलजी अपने पुराने आसामी लेनदेन के व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। आपके रिषभचन्दजी और पार्श्वचन्दजी नामक २ पुत्र हैं। प्रथम बी० ए० में पढ़ रहे हैं। सेठ फतेमलजी इस समय अपने पुराने व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। यहाँ की ओसवाल पचायती में आपका बहुत सम्मान है। आपके द्वारा कई फैसले किये जाते हैं। आपके अजीतमलजी नामक एक पुत्र है। आप अभी विद्याध्ययन कर रहे हैं। अजीतमलजी के भँवरलालजी नामक एक पुत्र है।

श्री शिवचंदजी धाड़ीवाल, अजमेर

शिवचन्दजी धाडीवाल—आपका जन्म सम्वत् १९२३ में अजमेर में हुआ। सम्वत् १९४३ से २८ सालों तक बीकानेर स्टेट में डिप्टी सुपरिन्टेन्डेण्ट बन्दोबस्त, अफसर कहतसाली, रेलवे इन्सपेक्टर, कई जिलों के हाकिम रहे। आपको उर्दू और फारसी का अच्छा ज्ञान है। आपके गोपीचन्दजी तथा ... चन्दजी नामक २ पुत्र हुए। शिवचन्दजी के छोटे भ्राता हरकचन्दजी एल० एम० एस० कई स्थानों पर मेडिकल आफीसर रहे। सम्वत् १९७२ में उनका स्वर्गवास हुआ। उनके नाम पर हरि... दत्तक गये।

गोपीचन्दजी धाडीवाल—आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आपने इलाहाबाद युनिवर्सिटी से बी० एस० सी० एल० एल० बी० की डिगरी हासिल की। फिर २ साल अजमेर में वकालत करने के बाद आप मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड के जूट डि० में नियुक्त हुए। और इस समय आप इस फर्म के ...

[...]हैं। आप बड़े शान्त, अनुभवी तथा मिलनसार सज्जन है। सन् १९३० में आप बिड़ला ब्रदर्स की [...] इण्डिया प्रोव्हिन्स के डायरेक्टर होकर विलायत गये थे। आपके पुत्र फतहचन्दजी पढ़ते हैं तथा [...] अजमेर में रहते है। धाड़ीवाल हरीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५६ में हुआ। आपने [...] तक अध्ययन किया। कुछ दिन जयाजीराव मिल में सर्विस की, तथा इस समय अजमेर में रहते [...] परिवार अजमेर के ओसवाल समाज में उत्तम प्रतिष्ठा रखता है। इस परिवार में धाड़ीवाल दीप- [...] पुत्र लक्ष्मीचन्दजी धाडीवाल एम० ए० एल० एल० बी० प्रोफेसर होल्कर कॉलेज इन्दौर हैं।

[...] मुलतानमल शेपमल धाड़ीवाल का परिवार, कोलार गोल्ड फील्ड

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान बगड़ी (जोधपुर-स्टेट) का है। आप ओसवाल [...] समाज के बाइस सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार में [...] मुलतानमलजी सवत् १९४६ में बंगलोर आये और यहाँ आकर आपने मेसर्स आईदान [...] यहाँ दो साल तक सर्विस की। इसके दो वर्ष बाद आपने बंगलोर में लेन देन की दुकान [...]। सम्वत १९५७ के लगभग श्री मुलतानमलजी ने कोलार गोल्ड फील्ड के अण्डरसन पेठ में एक [...] धर्म स्थापित की जो आज तक बड़ी अच्छी तरह से चल रही है। आपका सम्वत् १९३० में [...] हुआ है। आप बड़े साहसी तथा व्यापारकुशल सज्जन हैं। आपका धर्म ध्यान में अच्छा लक्ष्य है। [...] सालों से इस फर्म में से मेसर्स आईदान रामचन्द्र का भाग निकल गया है। आपके इस समय [...] हैं जिनके नाम श्रीशेपमलजी, अमोलकचन्दजी तथा केवलचन्दजी हैं। आप तीनों भाइयों का जन्म [...] सम्वत् १९६५, १९७१ तथा १९७३ का है। आप तीनों ही बड़े योग्य और नवीन विचारों के [...] हैं। श्री केवलचन्दजी इस समय मेट्रिक में पढ़ रहे हैं।

इस परिवार का मुलतानमल शेपमल के नाम से अण्डरसनपेठ में तथा मुलतानमल मिश्रीलाल [...] के नाम से रोबर्टसनपेट में बैंकिंग का व्यवसाय होता है। यह फर्म यहाँ मातबर मानी जाती है।

हरखावत

[...] की उत्पत्ति

[...] ५१२ में पँवार राजा माधवदेव को भट्टारक भावदेवसूरिजी ने प्रतिबोध देकर जैन धर्म [...]। सवत् १२४० में इस परिवार के पामेचा सा रतनजी ने शाही फौज के साथ कुवा- [...] इसलिए इनकी गौत्र "कुवाड़" हुई। सवत् १६४४ में इस परिवार में हरखाजी हुए। [...] "हरखावत" कहलाई। इन्होंने सिरोही, जोधपुर तथा जालोर में मंदिर बनवाये, शत्रुंजय का [...] पुत्र विमलशाहजी मेड़ते के सम्पत्तिशाली साहुकार थे। आपको बादशाह ने "शाह" [...] कुशलसिंहजी तथा सगतसिंहजी नामक २ पुत्र हुए।

हरखावत कुशलसिंहजी का परिवार, इन्दौर

हरखावत कुशलसिंहजी अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपके परतापसिंहजी, कल्याणसिंहजी परथीसिंहजी, विनयसिंहजी, बहादुरसिंहजी तथा केसरीसिंहजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमें सम्वत् १८.. में बहादुरमलजी की धर्मपत्नी उनके साथ सती हुई। सम्वत् १८२३ में इस परिवार को १ गाँव जागीरी में मिला। उस सम्बन्ध में इनको निम्न परवाना मिला था।

> सिंघवी फतेचन्द लिखावत प्रगणे मेडतारा गावरा माचारणरी वीसणी तर्क हवेली रा चोधरिया लोकादिसे—तथा गाव सा परतापमल, कल्याणमल कुशलमल विनलदान रे पट्टे हुआ छे सु सवत १८२४ रा साख सावण था अमलदीजो दाण जमा खदी वेगेरा तव दरबाँररा छे रेख १००१ इनायत खालसा री संवत १८२३ आषाढ़ वदी ७

उपरोक्त ग्राम अभी तक इस परिवार के अधिकार में चला आता है। हरखावत प्रतापमलजी के उम्मेदमलजी, बख्तावरमलजी, हिन्दूमलजी, ईसरीदासजी तथा जगरूपमलजी हुए। इनमें ईसरदासजी के नाम पर जगरूपमलजी के छोटे पुत्र मगनमलजी दत्तक आये। मगनमलजी के पुत्र सरदारमलजी भानपुरा (इन्दौर-स्टेट) में रहते थे। तथा भानपुरा आदि की सायरों के इजारे का काम करते थे। तथा मालदार साहूकार थे। इनके पुत्र सिरेमलजी भी भानपुरा में एक प्रतिष्ठित पुरुष हो गये हैं। यहाँ की जनता आपका बड़ा सम्मान करती थी। आप आजन्म कस्टम इन्सपेक्टर रहे। वर्तमान में आपके पुत्र शिवराजमलजी इन्दौर स्टेट के गरोठ परगने में सब इक्साइज इन्सपेक्टर हैं। आप बड़े मिलनसार तथा समझदार युवक हैं।

हरखावत सगतसिंहजी का परिवार, अजमेर

शाह सगतसिंहजी के पश्चात् क्रमशः शिवदासजी, निहालचन्दजी, बरदीचदजी तथा प्रभुदान हुए। संवत् १९११ में शाह प्रभूदानजी जोधपुर दरबार की ओर से अजमेर दरबार में वकील थे। संवत् १९१४ के गदर में आप रावजी राजमलजी लोढ़ा के साथ फौज लेकर आउवा तथा आसोप बागी फौजों को दबाने के लिये गये थे। जब राजमलजी वहाँ काम आगये तब आप फौज को वापस जोधपुर आये। तथा वहीं आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पूनमलजी सवत् १९२७ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र शाह हमीरमलजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आपने ३० सालों तक अजमेर रेल्वे के ऑडिट ऑफिस में सर्विस की। सन् १९१६ में आप रिटायर्ड हुए। आपके पुत्र धनरूपमलजी का जन्म १९४२ में हुआ। आपने सवत् १९६१ में कपड़े तथा गोटे का व्यापार किया तथा इस समय जवाहरात का व्यापार करते हैं। आप अजमेर के प्रतिष्ठित जौहरी माने जाते हैं। आपके पास क्यूरियो तथा जवाहरातका अच्छा सग्रह है।

सेठ मनीरामजी देवीचन्दजी हरखावत, सीतामऊ

करीब १२५ वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ कपूरचन्दजी रतलाम से सीतामऊ आये। यहाँ आकर आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके मनीरामजी नामक एक पुत्र हुए।

...के पुत्र देवचन्दजी बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हुए। यहा की जनता मे आपका बहुत सम्मान ... बार आपने जनता पर लगाये गये इनकमटेक्स को सरकार से माफ करवाया था। राज्य दरबार ... आपका अच्छा सम्मान था। आपने यहा मन्दिर में एक रिषभदेव स्वामी की छत्री बनवाई। आपके ... नामक पुत्र हुए। इनके नाम पर सेठ जवाहरलालजी दत्तक आये। वर्तमान में आप ही इस ... व्यवसाय के सचालक है। आप सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके नानालालजी भगवती- ... और मनोहरलालजी नामक तीन पुत्र है। यह परिवार सीतामऊ मे बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

पावेचा

बडनगर का चौधरी परिवार

इस परिवार वालों का गौत्र पावेचा है। आप लोगों का मूल निवास स्थान सोजत का है। ...१०० वर्षों स इस परिवार के लोग इधर मालवा प्रात में आकर बस रहे हैं। कहा जाता है कि जब ... राठौड़ लोग इधर मालवे में आये तब उनके साथ आपके पूर्वज भी थे। रतलाम, झाबुआ, बदनावर ... पर जब कि राठौडों का अधिकार होगया तब इस परिवार वाले झाबुआ में रहे। वहाँ से फिर कुछ ... चले गये और कुछ बदनावर चले आये। उपरोक्त परिवार बदनावर वालों का है। रूनिजा ... के लोग कामदार वगैरह ऊँची २ जगहों पर रहे। बदनावर में भी आप लोगों ... सम्मान रहा। किसी कारणवश इस परिवार के लोग फिर बदनावर को छोड़कर नौलाई— ... समय बडनगर कहलाता है—नामक स्थान पर आये। इसके पूर्व जब कि आप बदनावर में थे ... वहाँ ... का बहुत बडा व्यापार होता था। अतएव यहां आपकी अनाज की बहुत सी खत्तियां ... थी। इस समय नौलाई के स्वतन्त्र राजा थे। इसी समय यहा बडा भारी दुष्काल पड़ा। ... के समय म सेठ साहब ने मुफ्त में धान वितरण कर जनता की सहायता की। इससे प्रसन्न होकर ... नौलाई—नरेश ने आपको 'चौधरी' का पद प्रदान किया। तब से आजकल आप के वशज ... चले आ रहे है और चोधरायत कर रहे हैं।

... चल कर इस परिवार में सेठ माणकचन्दजी हुए। माणकचन्दजी के भैरोंदानजी और ... नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। यहा की जनता ... बहुत बड़ा सम्मान था। सारी जनता एक स्वर में आपकी आज्ञा मानने को हमेशा तैय्यार ... दरबार म भी आपको बहुत सम्मान प्राप्त था। आप लोगों को कई प्रकार के टैक्स माफ ... के द्वारा इस शहर की बसावट में वृद्दि हुई तथा कई ओसवाल परिवार यहा आये। ... स्वर्गवास होगया। सेठ भैरोंदानजी के धीचन्दजी और सेठ लखमीचदजी के दुलिचन्दजी ... नामक पुत्र हुए। सेठ दुलिचन्दजी के पौत्र ठाकचन्दजी के पुत्र गेंदालालजी इस समय ... सेठ ...चन्दजी के कोई सतान नहीं हुई। आप यहा के नामाकित व्यक्ति थे। ... चन्दजी के चार पुत्र हुए। जिनके नाम फतेचन्दजी, बापूलालजी, कस्तूरचन्दजी और

हजारीमलजी था। फतेचन्दजी का कम वय में ही स्वर्गवास होगया। शेप तीनों भाइयों के हाथों से इस की अच्छी तरक्की हुई। मगर संवत् १९४२ के बाद ही आप लोग अलग २ होगये और स्वतन्त्र से अपना २ व्यापार करने लगे।

सेठ वापूलालजी वडी सरल प्रकृति के पुरुष थे। यहा की जनता में आपका अच्छा था। आप का स्वर्गवास संवत् १९८४ मे होगया। आपके छगनलालजी, सौभागमलजी, कनकमल चादमलजी और लालचंदजी नामक पांच पुत्र हैं। इनमें से सेठ कनकमलजी अपने चाचा सेठ हजारीमल जी के यहा दत्तक गये हैं। शेप चारों भाई शामलात में श्रीचन्द बापूलाल के नाम से व्यापार कर रहे हैं। आप लोग मिलनसार सज्जन हैं। आज भी गाव की चौधरायत आप ही के पास है।

सेठ कस्तूरचन्दजी भी योग्य सज्जन थे। आप आजीवन व्याज का काम करते रहे। कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर सूरजमलजी दत्तक लिये गये हैं। वर्त्तमान में आप श्रीचंद कस्तूरचन्द नाम से व्यापार करते हैं। आपके इन्दौरीलालजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ हजारीमलजी ने अपने भाइयों से अलग होकर व्यापार में बहुत तरक्की की। आप व्यापारी थे। आपने अफीम के वायदे के व्यवसाय में लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित की। आ स्वभाव वड़ा आनन्दमय और मिलनसार था। आपके यहां सेठ कनकमलजी दत्तक आये। वर्तमान आप श्रीचंद हजारीमलजी के नाम से व्याज का काम करते हैं। आप परोपकारी, शिक्षित और व्यक्ति हैं। आपने हजारों लाखों रुपया सार्वजनिक कार्यों में खर्च किया है। आपकी ओर से कन्या पाठशाला, प्रसूतिगृह, पब्लिक लायब्रेरी इत्यादि संस्थाएँ चल रही हैं। इन सबका खर्च ही उठाते हैं। इसके अतिरिक्त आपने लोगों की सुविधा के लिये स्थानीय स्मशानघाट को पक्का दिया है। मन्दिर में आपने ७०००) की एक चादी की वेदी भेंट की है। आपके पिताजी के नाम आपने नगर चौरासी की उसमें डेढ़ लाख रुपया खर्च किया। इसी प्रकार आपके पुत्र जन्म पर ५० रुपया खर्च हुआ। लिखने का मतलब यह है कि आपने अपने हाथों से लाखों रुपया खर्च किया। इस समय अभयकुमारजी नामक एक पुत्र है। वड़नगर में यह परिवार बहुत प्रति माना जाता है।

सेठ उँकारजी लालचन्दजी नांदेचा (खेत पालिया), मुल्थान (मालवा)

इस परिवार वालों का वास्तविक गौत्र नांदेचा है, मगर बहुत वर्ष पूर्व इस खानदान के खेताजी पर एक वार क्षेत्रपालजी बहुत प्रसन्न हुए थे अतएव तब ही से ये लोग खेतपालिया लगे। इसके वाद करीब २५० वर्ष पूर्व इस परिवार के लोग मालवा प्रात में आकर बसे। सेठ गुमा के पिताजी ने मुलथान में अफीम का व्यापार करना प्रारम्भ किया। इसमें उन्हें अच्छी सफलता मि आपके वाद सेठ गुमानजी ने फर्म का संचालन किया। आप दबंग व्यक्ति थे। आपका मोधिये लोगों से होता था, अतएव यह परिवार मोधिया वाले के नाम से प्रसिद्ध है। आपके ओं नामक एक पुत्र हुए।

... रमरता चावरा, बड़नगर

मेहता लालसिंहजी नौलखा, सीतामऊ

... मेहता
...)

मेहता नाथूलालजी रतनपुरा कटारिया, सीतामऊ
(परिचय पेज न० ३३८ में)

सेठ सरूपचदजी नादेचा, खाचरोद.

सेठ प्रतापचन्दजी नादेचा, खाचरोद

सेठ हीरालालजी नादेचा, खाचरोद.

सेठ औंकारजी ने इस फर्म के व्यवसाय में बहुत उन्नति की। आपके पुत्र लालचन्दजी भी [illegible] पुत्र थे। आपने भी काफी उन्नति कर फर्म की वृद्धि की। आप दोनों का स्वर्गवास होगया। [illegible] सेठ लालचन्दजी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र स्वरूपचन्दजी नाबालिग थे। अत- [illegible] का सुचालन रामाजी बोरा नामक एक व्यक्ति ने किया। आप भी आपके एक रिश्तेदार थे।

सेठ स्वरूपचन्दजी इस परिवार में खास व्यक्ति हुए। आपने मुल्थान स्टेट के खजांची का [illegible] किया। आपके समय में ही इस फर्म पर काछी बड़ौदा, रुनिजा, पचलाना, बावनगढ़, दौतरिया [illegible], [illegible] इत्यादि ठिकानों का काम शुरू हुआ। प्राय इन सभी ठिकानों में आपका [illegible] सम्मान था। इनके द्वारा आपको समय २ पर कई प्रशंसा सूचक रुक्के भी प्राप्त हुए थे। धार [illegible] आपको 'सेठ' की पदवी मिलीथी। मुल्थान ठिकाने से आपको जागीर और बैठक का [illegible] मिला हुआ था। जो इस समय भी इस परिवार वालों के पास है। मुल्थान के अलावा [illegible] बाद में भी अपनी एक फर्म स्थापित की, जो इस समय सुचारु रूप से चल रही है। लिखने [illegible] यह है कि आप इस खानदान में बड़े प्रभाविक और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपका स्वर्गवास हो [illegible]। आपके चार पुत्र हुए, जिनके नाम पन्नालालजी, प्रतापमलजी, गेंदालालजी और कन्हैयालालजी [illegible]। इनमें से अंतिम तीनों का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में होगया था। आपके स्वर्गवास होने [illegible] पश्चात् ही आपके चौथे पुत्र का भी स्वर्गवास होगया। इनमें से केवल सेठ प्रतापमलजी के हीरालालजी [illegible] एक पुत्र हुए। जिस समय आप लोगों का स्वर्गवास हुआ उस समय हीरालालजी नाबालिग थे। [illegible] फर्म का सुचालन स्वरूपचन्दजी के भानजे सेठ इन्द्रमलजी ने देखा। जो इस समय भी बराबर [illegible] हैं। आप भी बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके द्वारा इस फर्म की बहुत [illegible] हुई है।

सेठ हीरालालजी संवत् १९७८ से व्यापार में लगे। आपके सामाजिक विचार बड़े ऊँचे हैं। [illegible] सार्वजनिक कार्यों की ओर भी आपका बहुत ध्यान है। आपने अपने दादाजी के स्मारक [illegible] निकाले हुए दान से एक जैन स्वरूप पाठशाला स्थापित कर रखी है। जिसमें इस समय [illegible] विद्याध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपने यहां एक प्राइवेट लायब्रेरी भी स्थापित [illegible] जिससे यहां की जनता लाभ उठा सकती है। स्थानीय श्री० श्वेताम्बर साधुमार्गीय जैन [illegible] की ओर से यहाँ एक विद्यालय स्थापित है उसमें भी आप २००) माहवार खर्च के लिये प्रदान [illegible] इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्यों में आपकी ओर से सहायता प्रदान की [illegible] मिलनसार, सज्जन और उत्साही व्यक्ति हैं। आपको साहुकारों की दरबारी [illegible] मिला हुआ है आप परगना बोर्ड के भी मेम्बर हैं। आपका व्यापार इस समय [illegible] बदनोर में बैंकिंग और आसामी लेन देन का हो रहा है।

छाजेड़

छाजेड गौत्र की उत्पत्ति—ऐसी किम्वदन्ति है कि सवीयाणगढ़ नामक स्थान में राठोड राजप धांधल रामदेव के पुत्र काजल निवास करते थे। इन्हें चमत्कारों पर विश्वास नहीं था। अतएव हमेशा इसी खोज में रहते थे एक बार उन्हें श्री जिनचन्द्रसूरि ने इन्हें चमत्कार बतलाया क जाता है कि उन्होंने इन्हें ऐसा वासक्षेप चूर्ण दिया कि जो दीपमालिका की रात्रि में जहाँ डाला जाय स्थान सोने का होजाय। इन्होंने चूर्ण प्राप्त कर मन्दिर उपाश्रय और अपने घर के छज्जों डाल कर सूरिजी की परीक्षा करनी चाही। कहना न होगा कि सुबह सब छज्जे सोने के हो गये यह चमत्कार देखकर काजल ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। तब ही से इनके वंशज छज्जे छजेहड कहलाये। आगे चल कर यही नाम छाजेड रूप मे वदल गया।

रायबहादुर सेठ लखमीचन्दजी छाजेड़ का खानदान, किशनगढ़

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ कल्याणमलजी छाजेड सन् १८४८ में व्यापार के लिए अ निवासस्थान किशनगढ़ से झासी गये और जाकर दमोह तहसील के खजाची हुए। वहाँ के कम डी० रास आपको अपने साथ पंजाब ले गये तथा सन् १८४९ में लय्या कमिश्नरी का खजाची बनाय आप वहाँ के दरवारी तथा म्यु० मेम्बर थे। लय्या कमिश्नरी के टूट जाने पर आप सन् १८६० में दे इस्माइलखाँ के खजाची हुए। सन् १८७७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लखमीचन्दजी त रामचन्दजी हुए।

रा० ब० सेठ लखमीचन्दजी छाजेड—अप देहरागाजीखाँ के म्यु० मेम्बर थे। पिताजी के गुज पर आप देहराइस्माईलखाँ कमिश्नरी के खजाची बनाये गये साथ ही सब जिलों के म्युनिसिपल ट्रेझरर आप निर्वाचित हुए। आप इक्कीस सालों तक वहाँ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। किशनगढ़ स्टेट ने आपको वारी बैठक और "शाह" की पदवी दी। किशनगढ़ स्टेट ने आपको सन् १९०२ मे देहलीदरबार में भेज १९०१ में फ्रांटियर में मासूद ब्लाकेट शुरू हुई, उसमें आपने बहुत इमदाद दी। १९०६ में आपको "र साहिब' का खिताब मिला तथा सन १९११ में देहलीदरबार के समय आप "रायबहादुर" के सम्मान विभूषित किये गये। सन १९१२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके छोटे भ्राता रामचन्द्रजी गा गाजीखाँ के ट्रेझरर रहे। अभी उनके पुत्र हीराचन्दजी इस खजाने का काम देखते हैं। सेठ लखमीचन्द किशनगढ़ स्टेशन पर एक धर्मशाला वनवाई। आपके गोपीचन्दजी तथा अमरचन्दजी नामक दो पुत्र हैं

रायसाहब गोपीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप अपने पिताजी के स्‍ पर देराइस्माईलखाँ, गाजीखाँ, बन्नू और मियांवाली के खजाची हुए। वहाँ के आप दरबारी, १५ सालों तक देहरा इस्माईलखाँ में आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। वायसराय ने आपको सन् १९१ सेंट जॉनएम्बुलेंस का ऑनरेरी कौंसिलर बनाया। सन् १९२१ में आप शाही दरबारी बनाये गये। इसके २ साल बाद आपको रायसाहिब का खिताब इनायत हुआ। इसी तरह आप वहाँ की कई सर

...दुर सेठ लक्ष्मीचन्दजी छाजेड़, किशनगढ़

सेठ कस्तूरचन्दजी छाजेड़, मद्रास

सभा सोसायटियों व डिपार्टमेंटों के मेम्बर रहे। आपको किशनगढ़ स्टेट ने भी शाह की पदवी तथा दरबारी बैठक दी थी। आपके छोटे भ्राता अमरचन्दजी तमाम कामों मे आपका साथ देते रहे। आप दोनों बन्धु इस समय किशनगढ़ में रहते हैं। गोपीचदजी के पुत्र बालचन्दजी, सुगनचन्दजी, पेमचन्दजो तथा गुलाब चन्दजी हैं। अमरचन्दजी के पुत्र घेवरचन्दजी मेट्रिक पास हैं।

श्री प्रतापमलजी छाजेड़, जोधपुर

प्रतापमलजी छाजेड उन व्यक्तियों मे हैं, जो अपनी बुद्धिमत्ता एव परिश्रम के बलपर साधारण स्थिति से उन्नति कर समाज में एक वजनदार स्थान प्राप्त करने है। आपके पिताजी पचपदरा मे नमक का व्यापार करते थे उनका सवत् १९७२ में स्वर्गवास हुआ। इनके प्रतापमलजी, मीठालालजी तथा मिश्रीमलजी नामक ३ पुत्र हुए।

प्रतापमलजी छाजेड—आपका जन्म संवत् १९४४ मे हुआ। आप सन् १९०२ मे पचपदरा साल्ट डि० की हुकूमत में अहलकार हुए। वहाँ से १९१३ में जोधपुर आये तथा इसके एक साल बाद मारवाड़ की वकीली परीक्षा में प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए। तबसे आप जोधपुर में प्रेक्टिस करते हैं, तथा यहाँ के प्रसिद्ध वकील माने जाते हैं। आपको स्थानीय बार एसोसिएशन ने अपना प्रधान चुनकर सम्मानित किया है। जोधपुर के हिन्दू मुसलमानों के वकरों के सम्बन्ध के झगडे मे तथा दोनों कौमों के तालाब के झगडों में स्टेट कौंसिल ने इन्हें झगडा निपटाने वाले सदस्यों में निर्वाचित किया था। हाई कोर्ट की वकालत के सिवाय आप कई प्रसिद्ध ठिकानों के वकील भी है। आप जोधपुर राजकुमारी (बाईजीलाल) के विवाह के समय कोटा दरबार के कैम्प के प्रबन्धक मुकर्रर हुए थे। हरएक अच्छे कामों में आप सहायताएँ करते रहते है। जोधपुर के ओसवाल समाज में तथा शिक्षित समाज में आपकी उत्तम प्रतिष्ठा है। आपके पुत्र सोहनलालजी पढ़ते हैं। आपके भाई मीठालालजी "हजारीमल प्रतापमल" के नाम से भारत का व्यापार करते हैं तथा उनसे छोटे मिश्रीलालजी छाजेड जोधपुर के सेकड क्लास वकील है।

श्री सरदारमलजी छाजेड़, शाहपुरा

इस परिवार का मूल निवासस्थान जयपुर स्टेट के मालपुरा नामक स्थान में है। वहाँ से छाजेड [illegible]चदजी तथा उनके पुत्र कल्याणमलजी व्यापार के लिये मालवे की ओर जा रहे थे तब उन्हे तत्कालीन शाहपुराधीश महाराजा उम्मेदसिंहजी ने अपने यहाँ रोक लिया। तबसे यह परिवार शाहपुरा ही में निवास करता है। कल्याणमलजी के पुत्र वखतमलजी तथा पौत्र जोरावरमलजी शाहपुरा के ऑनरेरी कामदार थे। [illegible]मलजी को राजाधिराज अमरसिंहजी ने देनेपेटे उदयपुर दरबार के यहाँ ओल में रक्खा था। शाहपुरा दरबार की नाराजी हो जाने से आप अपनी जागीर तथा जायदाद छोड़कर सरवाड चले गये थे, वहाँ से पुन [illegible] दिया पर आप बुलवाये गये। इनके पुत्र नथमलजी तथा पौत्र चांदमलजी हुए। छाजेड़ [illegible] ने महाराजा लछमणसिंहजी तथा नाहरसिंहजी के समय में ७ वर्षों तक कामदारी की। [illegible] उदयपुर स्टेट से कोशिश करके तलवार बधाई की रकम वापस ली। आपके तेजमलजी, सुगतमलजी

तथा राजमलजी नामक ३ पुत्र हुए। तेजमलजी ५० सालों तक मेवाड़ में हाकिम तथा मुंसरीम रहे। संवत् १९७२ में इनका शरीरान्त हुआ। इसी तरह सगतमलजी तथा राजमलजी भी शाहपुरा स्टेट में तहसीलदारी आदि सर्विस करते हुए क्रमशः संवत् १९५७ तथा १९८९ में गुजरे। सगतमलजी के पुत्र सरदारमलजी विद्यमान हैं। आपका जन्म १९४३ में हुआ। आप अठारह सालों तक दीवानी हाकिम तथा बाउंडरी आफीसर और सुपरिटेन्डेन्ट जेल रहे। वर्तमान में आप बाउंडरी अफीसर हैं। आपके खानदान को "जीकारा" प्राप्त हैं आपके पुत्र मानमलजी मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स की अपरगंज स्यूगर मिल सिहोरा में स्यूगर केमिस्ट हैं। शाहपुरा में यह परिवार बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ बालचन्दजी छाजेड़, इन्दौर

सेठ बालचन्दजी छाजेड़ इन्दौर में बड़े प्रतिष्ठित और नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आपके पिता सेठ मोतीचन्दजी जावरा में रहते थे। वहीं आपका जन्म हुआ। आपके २ भाई और थे जिनका नाम गम्भीरमलजी और जीतमलजी है। इनमें से सेठ गम्भीरमलजी इन्दौर के सेठ नथमलजी के यहाँ दत्तक आये। आपके साथ २ आपके भाई भी इन्दौर आगये। सेठ गम्भीरमलजी का युवावस्था ही में देहान्त होजाने से कारण मेसर्स नथमल गम्भीरमल फर्म का सचालन आपने ही किया। आपने हजारों लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। इतना ही नहीं बल्कि उसका सदुपयोग भी किया। आपने तिलक स्वराज्य फण्ड, पिंजरापोल सोसायटी इत्यादि संस्थाओं को बहुत द्रव्य प्रदान किया। करीब २००००) हजार रुपया लगाकर इन्दौर में भी आपने श्री आदिनाथजी का एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। जबकि इन्दौर में जोरों का इन्फ्लूएन्जा चला था उस समय आपने ८, १० प्राइवेट औषधालय खोलकर जनता की सेवा की थी। इसमें आपने करीब १०००० रुपया खर्च किया। इसी प्रकार आपने करीब १०००००) से यहाँ एक "सुन्दरबाई ओसवाल महिलाश्रम" के नाम से एक संस्था स्थापित की। इसमें इस समय १२५ लड़कियाँ तथा स्त्रियाँ धार्मिक और व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। आपका स्वर्गवास हो गया है। इस समय आपके भाई जीतमलजी विद्यमान हैं। इनके चार पुत्र हैं। बड़े पुत्र श्री सिरेमलजी छाजेड़ बी० ए० एल० एल० बी० हैं और इन्दौर में वकालत करते हैं। आप उत्साही और मिलनसार नवयुवक हैं।

डागा

डागा गौत्र की उत्पत्ति

कहा जाता है कि कि संवत् १३८१ में गोड़वाड़ प्रांत के नागेल नामक स्थान में डूँगरसिंह नामक एक पराक्रमी और वीर राजपूत रहता था। यह चौहान वंशीय था। किसी कारण वश इसने श्री जिन कुशल सूरि द्वारा जैन धर्म का प्रतिबोध पाया। डूँगरसीजी के नाम से इसके वंशज डागा कहलाये। आगे चलकर इसी वंश में राजाजी और पूजाजी नामक व्यक्ति हुए। उनके नाम से इस गौत्र में राजाणी और पूँजाणी नामक शाखाएं हुई इनके वंशज जेसलमेर जाकर रहने लगे। इससे ये लोग जेसलमेरी डागा कहलाये

सेठ हस्तमल लखमीचंद डागा बीकानेर

कई वर्ष पूर्व इस परिवार के व्यक्ति जेसलमेर से बीकानेर मे आकर बस गये । आगे चलकर
इस खानदान में क्रमश सुजानपालजी एवम् अमरचन्दजी हुए । अमरचदजी के दो पुत्र हुए जिनके
नाम सेठ रूपचन्दजी एवम् सेठ खूबचन्दजी था । सेठ खूबचन्दजी के परिवार के लोग आज कल अपना
स्वतंत्र व्यापार करते है । उपरोक्त वर्तमान फर्म सेठ रूपचन्दजी के वंश की है । सेठ रूपचदजी अपना
व्यवसाय बीकानेर ही में करते रहे । आपके चन्दनमलजी नामक पुत्र हुए । आप बडे होशियार व्यक्ति
थे। आपने अमृतसर में शाल दुशाले के व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की । आपका स्वर्गवास
हो गया। आपके हस्तमलजी नामक एक पुत्र हुए ।

सेठ हस्तमलजी—आप सवत् १९२५ के करीब पहले पहल व्यापार के निमित्त कलकत्ता गये ।
संवत् १९३२ में आपने सेठ अमोलकचन्दजी पारख के साझे में फर्म स्थापित कर उस पर रेशमी कपड़े
का व्यापार प्रारभ किया । यह फर्म सवत् १९५० तक अमोलकचंद लखमीचंद के नाम से चलती रही ।
इस वर्षों के पश्चात् पारखों से आपका साझा अलग हो गया । इसी समय से आपकी फर्म पर
हस्तमल लखमीचन्द नाम पड़ने लगा । सेठ हस्तमलजी वड़े बुद्धिमान्, मेधावी एवम् व्यापार चतुर
पुरुष थे। आपके ही कठिन परिश्रम का कारण है कि आज यह फर्म बहुत उन्नतावस्था में चल रही है।
संवत् १९७२ के मिगसर में आपका बीकानेर में स्वर्गवास हो गया। आपके लखमीचंदजी नामक पुत्र थे ।

सेठ लखमीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९३७ का था । आप भी अपने पिताजी की तरह बड़े बुद्धि-
मान एवम व्यापार चतुर पुरुष थे । अपने पिताजी की मौजूदगी ही में आप फर्म का संचालन कार्य करने
लग गए थे । इस फर्म में बीकानेर निवासी सेठ भैरोंदानजी चोपड़ा कोठारी का संवत् १९६७ से ही साझा
हो गया था जो अभी एक साल से अलग हो गया है । इस समय सेठ भैरोंदानजी के पुत्र अपना
स्वतंत्र व्यापार करते हैं । सेठ लखमीचन्दजी बडे कर्मण्य व्यक्ति थे । आपने संवत् १९६९ में अपनी फर्म
पर जापान, जर्मनी आदि विदेशी स्थानों के रेशमी तथा सिल्की कपड़े का डायरेक्ट इम्पोर्ट करना प्रारभ
किया। सवत् १९७५ में आपने जसकरनजी सिद्धकरनजी के साझे में यहीं मनोहरदास स्ट्रीट न० ३ में
एक और फर्म खोली तथा इस पर भी वही सिल्क तथा रेशम का व्यापार प्रारंभ किया । सवत् १९७९
में नं० ... मसजिद के पास आपने मेसर्स हस्तमल लखमीचंद के नाम से यही उपरोक्त व्यापार
... फर्म खोली । इसके २ वर्ष पश्चात् अर्थात् संवत् के १९८१ मिगसर में आपने देहली में केसरीचद
... के नाम से अपनी एक और ब्रान्च खोली । इस पर रेशमी कपडे का व्यापार प्रारंभ हुआ ।
यह फर्म आपके जीवन काल तक चलती रही । सवत् १९८२ के चैत्र में आपका स्वर्गवास हो गया ।
... उपरोक्त देहली एवम बम्बई वाली फर्म उठाली गई । सेठ लखमीचदजी बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे ।
... की पचायती में आपका खास स्थान था । आपके केसरीचन्दजी एवम माणकचन्दजी नामक दो
पुत्र हुए । खेद है कि बा० केसरीचन्दजी का युवावस्था ही में स्वर्गवास हो गया । आप एक होनहार
... थे ।

वर्तमान में इस फर्म के सचालक सेठ लखमीचन्दजी के द्वितीय पुत्र बा० माणकचन्दजी हैं ।

आपका जन्म संवत् १९७१ के कार्तिक में हुआ। आप बड़ी योग्यता एवम बुद्धिमानी से फर्म के सारे का संचालन कर रहे हैं। आप नवीन विचारों के शिक्षित सज्जन हैं। यह परिवार बाईस सम्प्रदाय अनुयायी है।

सेठ हरकचदजी मंगलचंदजी डागा सरदार शहर

सेठ सावतरामजी के पुत्र पनेचन्दजी घड़सीसर नामक स्थान से चल कर सरदार शहर में आ बसे। आप डागा गौत्र के सज्जन हैं। यहाँ से फिर आप कलकत्ता गये एवम वहा दलाली का काम प्रा किया। इसके पश्चात् आपने कपड़े की दुकान खोली। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके तीन उदयचन्दजी, छोगमलजी और चौथमलजी हुए।

उदयचन्दजी के पुत्र का दूरामजी हुए। आपका भी स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र बुधमल यहीं रहते हैं। चौथमलजी के पुत्र हनुमानमलजी पहले कलकत्ते में कपडे का व्यापार करते रहे। आज किशनागंज (पूर्णियाँ) में पाटका व्यापार करते है। आपके पुत्र बिरदीचन्दजी और रामलाल दलाली करते हैं।

सेठ छोगमलजी के जुहारमलजी, उमचन्दजी और हरकचन्दजी तीन पुत्र हुए। जिनमें से प्र दो निःसन्तान स्वर्गवासी हो गये। सेठ छोगमलजी की मृत्यु के समय उनके पुत्र हरकचन्दजी की केवल १४ वर्ष की थी इस छोटी उम्र में ही आपने बडी होशियारी से कटपीस का व्यापार आरम कि इसमें आपको बहुत लाभ हुआ। आपने अपने हाथों से लाखों रुपये कमाये। इसके पश्चात् विशेष रूप आप देश ही में रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आप भी जैन श्वेताम्बर तेरापथी सम्प्रदाय के अनुया थे। आपके मंगलचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ मंगलचन्दजी समझदार, शिक्षित और मिलन सार व्यक्ति हैं। आपके धार्मिक विचार हैं। आजकल आप नं० २ राजा उडमड स्ट्रीट कलकत्ता में जूट, कटपीस तथा बैंकिंग का काम कर रहे तथा मंगलचंद डागा के नाम से फारबिसगंज (पूर्णिमा) में जूट का व्यापार करते है। आपके नथमल चम्पालालजी, सुमेरमलजी, और चम्पालालजी नामक पुत्र है। नथमलजी व्यापार में सहयोग देते हैं।

सेठ रतनचन्दजी हरकचंदजी डागा का परिवार, सरदार शहर

करीब ९० वर्ष पूर्व जब कि सरदार शहर बसा इस परिवार के पुरुष सेठ लछमनसिंहजी के दानमलजी, कनीरामजी और जीतमलजी तीनों ही भाई घड़सीसर नामक स्थान से चल कर सरदार में आकर बसे। आप तीनों ही भाई सवत् १९०० के करीब नौगाँव (आसाम) नामक स्थान पर और फर्म स्थापित कर जूट एवम् दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। इस समय इस फर्म का दानमल कनीराम रक्खा था जो आगे चलकर कनीराम हरकचन्द हो गया। इस फर्म में आप अच्छी सफलता रही। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। सेठ कनीरामजी के हरकचन्दजी, और दानमल के रतनचन्दजी नामक पुत्र हुए। जीतमलजी के कोई पुत्र न होने से उनके नाम पर हरकचन्दजी दत्तक

सेठ हरकचन्दजी और रतनचन्दजी भी योग्य निकले। आपने भी फर्म की बहुत उन्नति की ... अपनी एक शाखा मेसर्स हरकचन्द नथमल के नाम से कलकत्ता में खोली। जिसका नाम आजकल ...चन्द रावतमल पडता है। इस पर जूट कपडा तथा चलानी का काम होता है। आप दोनों भाई ... हो गये तथा आप लोगों का स्वर्गवास भी हो गया।

सेठ रतनचन्दजी के नथमलजी नामक पुत्र हुए। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके चम्पा...लालजी, और दीपचन्दजी दो पुत्र हैं। सेठ हरकचन्दजी के रावतमलजी एवम् पूनमचन्दजी नामक पुत्र है। आज... उपरोक्त फर्म के मालिक आप ही हैं। आप दोनों भाई मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। आप लोगों ... कलकत्ता के अलावा सालडागा नामक स्थान पर भी रावतमल मोतीलाल के नाम से जूट का व्यापार ...ता है। आप तेरापंथी जैन श्वेताम्बर संप्रदाय के है।

रावतमलजी के बुधमलजी, मन्नालालजी और माणकचन्दजी तथा पूनमचन्दजी के मोतीलालजी ... पुत्र हैं।

सेठ शेरसिंह माणकचन्द डागा, बेतूल

इस परिवार का मूल निवास बीकानेर है। देश से सेठ शेरसिंहजी डागा संवत् १८९६ में बदनूर ...आए, तथा हुकुमराज मगनराज नामक दुकान पर मुनीम हुए। मुनीमात करते हुए सेठ शेरसिंहजी ने माल ...गुजारा जमाई और अपना घरू व्यापार भी चालू किया। दरबार में इनको कुर्सी प्राप्त थी संवत् १९३९ में ...सेठ शेरसिंहजी का स्वर्गवास हुआ, आपके पुत्र माणकचन्दजी डागा का जन्म संवत् १९१० मे हुआ। ...आपने १०।४० गाव जमीदारी के खरीद किये, आप भी यहाँ के राजदरबार व जनता में अच्छी इज्जत रखते ...। आपने अपनी मृत्यु के समय अपनी कन्या सौ० भीखीबाई को लगभग १ लाख रुपयों की सम्पत्ति प्रदान ...की। इनके स्वर्गवासी होने के बाद इनकी धर्म पत्नी ने ५ हजार की लागत से मेन डिस्पेंसरी में अपने पति ...की स्मृति में उनके नाम से १ वार्ड बनवाया, सवत् १९७० में डागा माणकचंदजी का स्वर्गवास हुआ, ...आपके नाम पर कस्तूरचन्दजी डागा बीकानेर से दत्तक लाये गये।

डागा कस्तूरचन्दजी का जन्म सवत् १९५५ में हुआ आपका कुटुम्ब भी बेतूल जिले का प्रतिष्ठित ... नामदार कुटुम्ब है, आपके यहाँ बेतूल में शेरसिंह माणकचद डागा के नाम से जमीदारी तथा सराफी ...व्यापार होता है डागा कस्तूरचन्दजी के पुत्र हरकचंदजी १० साल के हैं।

सेठ भवानीदास अर्जुनदास, डागा रायपुर

लगभग १०० साल पूर्व बीकानेर से डागा भेरोंदानजी के पुत्र भवानीदासजी रायपुर आये और ...कपडा तमाखू व घी का व्यापार शुरू किया। डागा भवानीदासजी के जावंतमलजी तथा अर्जुनदास ... नामक पुत्र हुए।

लगभग सवत् १९०० से भवानीदासजी के पुत्र भवानीदास अर्जुनदास तथा भवानीदास जाव... नाम से व्यवसाय करते है। सेठ अर्जुनदासजी डागा रायपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे आपका

संवत् १९४२।४३ में शरीरान्त हुआ, आपके नाम पर आपके चचेरे भ्राता हमीरमलजी के पुत्र गंभीरमलजी दत्तक आये। डागा गंभीरमलजी धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे संवत् १९५८ की कुँवार सुदी ४ को आपका शरीरान्त हुआ।

डागा गभीरमलजी के यहाँ सरदार शहर से संवत् १९६२ की वैशाख सुदी २ को डागा जसकरण जी दत्तक लाये गये। डागा जसकरणजी का जन्म संवत् १९५५ की मगसर सुदी ५ को हुआ। डागा जसकरणजी के ख्यालीरामजी, छगनमलजी व कुशलचन्दजी नामक ३ भ्राता विद्यमान हैं जो कलकत्ते में ख्यालीराम डागा व कुशलचन्द माणिकचन्द के नाम से अपना स्वतन्त्र कारबार करते हैं।

डागा जसकरणजी ने एफ० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। सामाजिक तथा देश सेवा के कार्यों की ओर आपकी खास रुचि है स्थानीय दादावाडी को नवीन बनाने में व उसकी प्रतिष्ठा में आपने बहुत परिश्रम उठाया इसके उपलक्ष में यहाँ के ओसवाल समाज ने अभिनंदन पत्र देकर आपका स्वागत किया। आपने मारवाड़ी छात्र सहायक समिति नामक सस्था को १ हजार रुपयों की सहायता दी है तथा इस समय आप उसके मंत्री हैं, इसी तरह और भी सामाजिक और सार्वजनिक कामों में आप दिलचस्पी लेते रहते हैं। आपके पुत्र सम्पतलालजी पढ़ते हैं। आपके यहाँ भवानीदास अर्जुनदास के नाम से रायपुर में बैङ्किंग तथा बर्तनों का थोक व्यापार और अर्जुनदास गभीरमल के नाम से राजिम मे बर्तन तयार कराने का काम होता है। रायपुर की प्रतिष्ठित फर्मों में आपकी दुकान मानी जाती है।

सेठ भीकमचन्द डागा, अमरावती

इस परिवार का मूल निवास स्थान बीकानेर हैं। वहाँ से लगभग १२५ साल पूर्व सेठ हमीरमल जी डागा अमरावती आये तथा यहाँ नौकरी की। इसके बाद आपने किराने का व्यापार किया। आपके पुत्र लखमीचन्दजी, हैदराबाद वाले सेठ पूरनमल प्रेमसुखदास गनेड़ीवाला के यहाँ मुनीम रहे। सवत् १९२८ में आपका स्वर्गवास हुआ। उस समय आपके पुत्र भीकमचन्दजी चार वर्ष के थे आपने होशियार होकर जवाहरात का व्यापार आरम्भ किया तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। आप अमरावती के ओसवाल समाज में समझदार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं तथा यहाँ की पचपंचायती व धार्मिक कामों में प्रधान भाग लेते हैं। आपके पुत्र रतनचन्दजी की वय १९ साल की है। इस समय आपके यहाँ जवाहरात, कृषि तथा सराफी का व्यापार होता है।

सेठ तेजमल टकिमचन्द डागा, रायपुर

इस परिवार के पूर्वज डागा तखतमलजी अपने मूल निवास बीकानेर से लगभग ८० साल पहिले रायपुर आये और कपड़े का व्यवसाय शुरू किया, आपके पुत्र चन्दनमलजी ने व्यवसाय को उन्नति दी। सेठ चन्दनमलजी के पुत्र तेजमलजी सवत् १९६२ की कातिक वदी ११ को ३९ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ तेजमलजी डागा के पुत्र टीकमचन्दजी डागा है। आपका जन्म संवत् १९५४ में हुआ है। आप रायपुर के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते है, तथा चादी सोना और सराफी का व्यापार करते हैं।

पारख

पारख गौत्र की उत्पत्ति—बारहवीं शताब्दी के अंतिम समय में चंदेरी नगरी में राठौर खरहत्थ• ...राज्य करते थे। इनके चार पुत्र अम्बदेव, निम्बदेव, भैंसासाह और आसपाल हुए। इन चारों पुत्रों के ...नाम से बहुत से गौत्रों की स्थापना हुई, जिसका अलग २ परिचय स्थान २ पर दिया गया है। ...आहडनगर में एक प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। इन्होंने शत्रुंजय का एक बहुत बडा संघ निकाला था, ...वहाँ का जीर्णोद्धार करवाया था। इनके चौथे पुत्र पासूजी को आहडनगर के राजा चन्द्रसेन ने अपना ...नियुक्त किया था। वहीं एक बार हीरे की सच्ची परीक्षा करने के कारण राजा द्वारा पारखी की पदवी ...। आगे चलकर यही पदवी पारख गौत्र के रूप में परिणत हो गई।

लाला दिलेरामजी जौहरी (लाहौरी) का खानदान, देहली

इस खानदान के मूल पुरुष लाला दिलेरामजी हैं। आप देहली के ही निवासी है। आपका ...आप यहाँ लाहौरी के नाम से मशहूर हैं। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले है।

लाला दिलेरामजी—आप पजाब के सुप्रसिद्ध महाराजा रणजीतसिंहजी के खास जौहरी थे। ...में आप बड़े नामांकित पुरुष हो गये हैं। आपके पुत्र लाला दुलीचन्दजी तथा लाला सरूपचन्दजी ...। लाला दुलीचन्दजी बादशाह अकबर (द्वितीय) के खास जौहरी थे। आपके हुलासरायजी, गुलाब ...जी, मानसिंहजी तथा थानसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला हुलासरायजी जौहरी का परिवार—आपके लाला ईसरचंदजी नामक पुत्र हुए। ईसरचंदजी ...लाला जगन्नाथजी, लाला प्यारेलालजी तथा लाला रोशनलालजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला जगन्नाथजी ...व्यक्ति हुए। आप राय बद्रीदासजी जौहरी के शागिर्द थे। आपने कलकत्ते में भी अपनी एक ...थी। आपका स्वर्गवास ५० सालकी आयु में संवत् १९५१ में हुआ। आपके पुत्र लाला ...चन्दजी का जन्म संवत १९२७ में हुआ। आपने उस समय बी० ए० परीक्षा पास की थी, जिस समय ...ओसवाल समाज में एक दो ही ग्रेजुएट होंगे। आप भी जवाहरात का व्यापार करते रहे। आपका स्वर्ग... संवत् १९५२ में हुआ। आपके नाम पर लाला रतनलालजी जोधपुर से सवत् १९५६ में दत्तक लाये ...। आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आपकी नाबालगी में आपकी दादीजी तथा लाला प्यारेलालजी ...लालजी काम देखते रहे। इन दोनों सज्जनों का स्वर्गवास क्रमश• १९५६ तथा सवत् १९६४ में ...है। अब इनकी कोई सतान विद्यमान नहीं है।

लाला रतनलालजी बडे योग्य तथा मिलनसार व्यक्ति है। आपके इस समय इन्द्रचन्द्रजी, ...जी, ताराचन्दजी तथा कुशलचदजी नामक ४ पुत्र हैं। आपका परिवार देहली के ओसवाल समाज ...प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके यहाँ "लाला पूरनचन्द रतनलाल" के नाम से गली हीरानंद ...में जवाहरात का व्यापार होता है।

लाला मानसिंहजी मोतीलालजी जौहरी का परिवार—लाला मानसिंहजी के पुत्र लाला मोतीरामजी ...। आपका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में संवत् १९६०.में हुआ। आप भी देहली के अच्छे जौहरी थे।

आपके लाला शादीरामजी, मुन्नालालजी तथा उमरावसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला शादीरामजी ब योग्य तथा समझदार पुरुष थे। जाति बिरादरी मे आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास ४२ सा की आयु में संवत् १९६४ मे हुआ। आपके पुत्र लाला पन्नालाल जी का जन्म १९४७ में कुन्दनमलजी १९५१ में तथा कुञ्जूमलजी का १९५७ में हुआ तीनों भ्राता जवाहरात का व्यापार करते हैं। ला मोतीरामजी के तृतीय पुत्र मुन्नालालजी छोटी वय में स्वर्गवासी हुए तथा इनके छोटे भाई लाला उमरावसिं जी संवत् १०८४ में स्वर्गवासी हुए। इनके जंगलीमलजी का जन्म संवत् १९२९ का है। आपके ए फतेसिंहजी तथा कुन्दनमलजी के पुत्र कांतिकुमारजी है। देहली के ओसवाल समाज मे यह खानदान पुरा तथा प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ फौजमल आनन्दराम पारख, त्रिचनापल्ली

इस परिवार का मूल निवास पाचला (तींवरी के पास) मारवाड है। इस परिवार के पू सेठ भेरूदानजी पारख के फौजमलजी तथा जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ फौजमलजी के आन रामजी और मगनीरामजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ आनन्दरामजी पारख का जन्म संवत् १९२५ में हुआ। सत्रह वर्ष की आयु में आप पल्टन साथ रेजिमेंटल बैंकिंग का व्यापार करते हुए त्रिचनापल्ली आये। यहाँ आकर आपने थोड़े समय तक सेठ रा मलजी पारख के यहाँ सर्विस की। पश्चात् आपने सुजानमल कोचर की भागीदारी में "आनन्दमल सुजानम के नाम से बैंकिंग व्यापार चालू किया। एक साल बाद इस फर्म में अखेचन्दजी पारख भी सम्मिलित हुए, ए इन तीनों सज्जनों ने अंग्रेजी फौजों के साथ जोरों से ५ दुकानों पर मनी लेंडिंग बिजिनेस चालू किया। अ पल्टन के खजाने के बेंकिंग बिजिनेस को सम्हालते थे। इसलिए रेजिमेंटल बैंकर्स के नाम से बोले जाते थे इन सज्जनों ने अच्छी सम्पत्ति कमाई और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई। संवत् १९८० मे सुजानमलजी के पु मे तथा १९८५ में अखेचन्दजी के पुत्रों ने अपना भाग अलग कर लिया। सन् १९२६ में सेठ आनन्दराम पारख स्वर्गवासी हुए। आपने त्रिचनापल्ली पांजरापोल को ५०००) की सहायता दी है। इस स आपके पुत्र मूलचन्दजी ११ साल के तथा खेतमलजी ९ साल के है। इनकी नाबालगी में फर्म का प्र ५ मेम्बरों की कमेटी के जिम्मे है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय मानता है तथा लगभग २० सा से फलोदी मे निवास करता है। यहाँ भी फौजमल आनन्दराम के नाम से आपके यहाँ बेंकिंग व्या होता है। यह फर्म त्रिचनापल्ली के मारवाड़ी समाज में सबसे ज्यादा धनिक फर्म है।

सेठ जेठमल अखेचंद पारख, त्रिचनापल्ली

ऊपर सेठ आनन्दरामजी के परिचय में लिखा जा चुका है कि पाचला (मारवाड) निवा सेठ भेरुदानजी के फोजमलजी तथा जेठमलजी नामक २ पुत्र थे। इनमें सेठ जेठमलजी के अखेचन्द धूलमलजी, अचलदासजी तथा रावतमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ धूलचन्दजी तथा अचलदास विद्यमान है। सेठ अखेचन्दजी सेठ आनन्दरामजी के साथ व्यापार करते रहे। संवत् १९७४ म स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र फूलचन्दजी ने संवत् १९८५ में सेठ आनन्दरामजी पारख से अपना भ

...ब्ध किया। आपका जन्म संवत् १९७१ में हुआ। इस समय आप अपने काका अचलदास ...पुत्र रूपचन्दजी उदयराजजी तथा जुगराजजी, के साथ त्रिचनापल्ली में "अचलदास फूलचन्द" के नाम ...पार करते हैं। सेठ अचलदासजी का वय ४५ साल की है।

सेठ धूलमलजी का जन्म १९४२ में हुआ। आपके लालचन्दजी, मोतीलालजी, कंवरीलालजी, ...चन्दजी, राजमल, मोहनलाल आदि ८ पुत्र हैं। आप के यहां सेठ "धूलचन्द लालचन्द" के नाम से ...व्यापार होता है। सेठ रावतमलजी का स्वर्गवास २५ साल की अल्पायु में होगया। आपके ...सन्तान नहीं है। यह परिवार त्रिचनापल्ली तथा फलोदी में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। संवत् १९७८ ...ने फलोदी में अपना निवास बना लिया है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय को ...वाला है।

सेठ हजारीमल भीकचंद पारख, त्रिचनापल्ली

यह कुटुम्ब लोहावट (मारवाड़) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज पारख फतेचन्दजी ...चन्दजी, रिदमलजी, जयसिंहदासजी, शिवजीरामजी, वख्तावरमलजी, मुकुन्दचन्दजी तथा ...रामजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें सेठ शिवजीरामजी लगभग सौ साल पूर्व देश से आकर बलारी, ...बाद, कामठी आदि स्थानों में रेजिमेंटल बैंकर्स का काम करते रहे, यहाँ से लगभग ७५ साल पहिले ...त्रिचनापल्ली आये। इन्होंने अपनी उमर में लगभग ५० सालों तक रेजिमेंटल बैंकर्स का काम किया। ...साथ व्यापार में रिदमलजी के पुत्र रावतमलजी और रतनलालजी, जयसिंहदासजी के पुत्र चुन्नीलाल ...तथा आपके पुत्र चांदनमलजी और हजारीमलजी भी सम्मिलित रूप में "शिवजीराम चंदनमल" के ...से व्यापार करते थे। सेठ शिवजीरामजी पारख के स्वर्गवासी होजाने के बाद उनके पुत्र ...जी तथा हजारीमलजी ने बेलगाँव (महाराष्ट्र) में दुकान खोली, तथा संवत् १९६१ तक दोनों ...का सम्मिलित व्यापार होता रहा। सेठ चांदनमलजी की आयु ८० साल की है, और आप लोहा... ...रहते हैं। आपके पुत्र सुगनचन्दजी का संवत् १९६८ में स्वर्गवास होगया है।

सेठ हजारीमलजी पारख अपने जीवन के अंतिम पन्द्रह साल देश में धार्मिक जीवन बिताते हुए ...१९८६ में स्वर्गवासी हुए। आपके भीकमचन्दजी तथा खेतमलजी नामक २ पुत्र हुए। आप ...दोनों ने सन् १९१६ में त्रिचनापल्ली में दुकान खोली। इस समय आपके यहां २ दुकानों पर ...का व्यापार होता है। सेठ भीकमचन्दजी का जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आपके पुत्र ...भी व्यापार में भाग लेते हैं। खेतमलजी के पुत्र राणूलाल तथा शांतिलाल बालक हैं। ...का धार्मिक कामों की ओर ज्यादा लक्ष है। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का है।

सेठ रावतमल जोगराज पारख, त्रिचनापल्ली

इस परिवार का मूल निवास लोहावट (मारवाड़) है। हम ऊपर लिख चुके हैं कि सेठ ...के ७ पुत्र थे। इनमें द्वितीय तथा तृतीय पुत्र रिदमल और जयसिंहदासजी से इस

परिवार का सम्बन्ध है। सेठ रिड्मलजी के पुत्र रावतमलजी तथा रतनलालजी और जयसिंहदासजी पुत्र चुन्नीलालजी हुए सेठ चुन्नीलालजी सवत् १९४५ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रावतमलजी बड़े साह पुरुष थे। देश से आप मद्रास आये, और वहाँ रेजिमेंटस् बैंकर्स का काम करते रहे। वहाँ से फोजों के साथ बैंकिंग व्यापार करते हुए बलारी, कामठी आदि स्थानों में होते हुए लगभग सवत् १९ में त्रिचनापल्ली आये। और यहीं अपनी स्थाई दुकान स्थापित करली। आपने इस कुटुम्ब की प्रतिष्ठा बढ़ाई। सवत् १९७३ मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके दो साल बाद आपके छोटे रतनलालजी गुजरे। सेठ रावतमलजी के इन्द्रचन्दजी, जोगराजजी तथा कँवरलालजी नामक ३ पुत्र इनमें जोगराजजी सेठ चुन्नीलालजी के नाम पर दत्तक गये। आपका जन्म सवत् १९४८ में हुआ। 'रावतमल जोगराज" के नाम से येडतरू बाजार त्रिचनापल्ली मे बैंकिंग व्यापार करते ह। तथा के ओसवाल समाज में अच्छे प्रतिष्ठित माने जाते है। धार्मिक कामों की ओर भी आपका अच्छा लक्ष आपके पुत्र चम्पालालजी २० साल के है। तथा व्यापार मे भाग लेते है।

सेट इन्द्रचन्दजी के यहा "इन्द्रचन्द सम्पतलाल" के नाम से त्रिचनापल्ली मे व्यापार होता इन्द्रचन्दजी धर्म के जानकार व्यक्ति हैं। आपका जन्म सवत् १९३२ में हुआ। आपके पुत्र सम्पत जो ३० साल के हैं। कँवरलालजी बहुत समय तक जोगराजजी के साथ व्यापार करते रहे। आप समय लोहावट में रहते हैं। रतनलालजी के पुत्र मिश्रीलालजी है। यह परिवार मंदिर आम्नाय का

सेठ हजारीमल कँवरीलाल पाराख, लोहावट (मारवाड़)

यह परिवार लगभग दो शताब्दि से लोहावट में निवास करता है। इस परिवार के मुलतानचन्दजी पारख के हजारीमलजी तथा रतनलालजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों जन्म क्रमश: संवत् १९१४ तथा सवत् १९२१ मे हुआ। सवत् १९३२ मे इन बंधुओं ने धमत दुकान की। संवत् १९६२ में सेठ हजारीमलजी ने बम्बई में दुकान की। इसके १० साल बाद दोनों भाइयों का कारबार अलग २ होगया।

सेठ हजारीमलजी का परिवार—सेठ हजारीमलजी ने इन दुकान के व्यापार तथा सम्मान विशेष बढ़ाया। सवत् १९८४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके शिवराजजी, कँवरलालजी, रेखचन्द मसुखदासजी, तथा विजयलालजी नामक ५ हुए। इनमें सेठ शिवराजजी का स्वर्गवास सवत् १९६ तथा कँवरलालजी का संवत् १९७: में हुआ। शेष बंधु विद्यमान हैं। इन बंधुओं के यहाँ "हजार कँवरलाल" के नाम से विट्ठलवाड़ी बम्बई में आढ़त का व्यापार होता है। इस दुकान के व्यापा सेठ शिवराजजी ने उन्नति की। उनके पश्चात् पारख रेखचन्दजी ने कारोबार बढ़ाया। वह प लोहावट में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। सेठ शिवराजजी के पुत्र दूडमलजी कन्हैयालालजी, सेठ रेखच के पाबूदानजी, सोहनराजजी, सेठ मसुखदासजी के नेमीचन्दजी तथा राणूलालजी और विजयलाल जमनालालजी तथा पुखराजजी है। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय मानता है।

सेठ रतनलालजीका परिवार—सेठ रतनलालजी के पेमराजजी, कुन्दनलालजी, सतीदा

सेठ अमरचन्दजी पारख (अमरचन्द रतनचन्द) किशनगढ़

सेठ चांदमलजी बरमेचा (साहनाम

सेठ मोहनलालजी गोठी (बालचन्द गंभीरमल) परभणी

सेठ माणिकचन्दजी बरमेचा (सुगन
किशनगढ़.

[illegible] मुराजजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें पेमराजजी १९६२ मे तथा कुन्दनमलजी १९६३ [illegible] हो गये है। शेप विद्यमान है। इस परिवार की धमतरी, तथा जगदलपुर में दुकाने है।

सेठ मोतीलाल हीरालाल पारख, सिंगरनी कालरी (निजाम)

इस परिवार का मूल निवास लोहावट (मारवाड है। इस परिवार के पूर्वज सेठ रामचन्द्रजी के महासिंहदासजी, सालमचन्दजी तथा मुलतानचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ महा- [illegible] के पूनमचन्दजी, मोतीलालजी मोहनलालजी व करनीदानजी नामक ४ पुत्र हुए। [illegible] मोतीलालजी अपने पुत्र हीरालालजी को साथ लेकर सवत् १९५५ में सिंगरनी कॉलेरी आये, और आढ़त का कार्य चालू किया। सेठ मोतीलालजी ने इस दुकान के व्यापार को बढ़ाया। [illegible] सम्वत् १९७६ में हुआ। आपके हीरालालजी, चादमलजी, रेखचन्दजी, कुन्दनमलजी [illegible] नामक ५ पुत्र हुए। जिनमें चादमलजी सवत् १९७८ मे स्वर्गवासी हो गये। यह परिवार [illegible] आम्नाय का मानने वाला है।

[illegible] हीरालालजी का जन्म सवत् १९४० में हुआ। आप सयाने तथा समझदार व्यक्ति हैं। [illegible] चांदमलजी स्वर्गवासी हो गये है। सेठ रेखचन्दजी का जन्म सवत् १९५० में हुआ। आपके [illegible] २२ साल के है। आप व्यापार में भाग लेते है। इनके पुन अनोपचन्दजी हैं। सेठ [illegible] का जन्म १९५६ में हुआ। आपके कँवरलालजी, चम्पालालजी तथा खेतमलजी नामक ३ पुत्र [illegible] मुलतानचन्दजी के पुत्र भेरोंलालजी है। यह परिवार लोहावट के ओसवाल समाज में नामाकित [illegible] जाता है। आपके यहाँ सिंगरनी कॉलेरी तथा वेलमपल्ली (निजाम) में वेंकिंग व्यापार

सेठ अमरचन्द रतनचंद पारख, किशनगढ़

इस परिवार के पूर्वज सेठ माणकचन्दजी के पुत्र कुशालचन्दजी लगभग एक सौ वर्ष पूर्व बीकानेर [illegible] आये। आपको दरबार ने इज्जत के साथ किशनगढ़ में बसाया, तथा व्यापार के लिए रियायतें [illegible] पुत्र पूनमचन्दजी पारख हुए।

[illegible] पूनमचन्दजी पारख—आप बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। आपने व्यवसाय की बहुत उन्नति [illegible] कई दुकानें खोलीं। आप गरीबों की अन्न वस्त्र से विशेष सहायता करते थे। आप गुप्तदानी [illegible] इन विशेषताओं के कारण आप राज्य, जनता एव अपने समाज में सम्माननीय व्यक्ति हुए। [illegible] अमरचन्दजी विद्यमान है।

[illegible] अमरचन्दजी पारख किशनगढ़ के ओसवाल समाज में तथा व्यापारिक समाज में अच्छी [illegible] है। राज्य में आपको दरबार के समय कुर्सी प्राप्त है। आपके यहाँ वैंकिंग व्यापार होता है। [illegible] लखमीचंदजी तथा उमरावचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। इन सज्जनों में श्री रतनचन्दजी [illegible] ने बी० ए० पास किया है, तथा इस समय आप इलाहाबाद में एल० एल० बी० का [illegible] रहे हैं। आप बड़े सज्जन व समझदार व्यक्ति हैं। आपके छोटे भ्राता लखमीचन्दजी मेट्रिक में [illegible] क्लास में पढ़ते हैं।

इस परिवार में सेठ माणकचन्दजी के छोटे भ्राता जसरूपजी के पुत्र हरखचन्दजी व्यक्ति हुए, तथा इस समय उनके पुत्र सेठ अगरचन्दजी विद्यमान हैं। आप भी किशनगढ़ के समाज में वजनदार व्यक्ति हैं।

सेठ जेठमल रतनचन्द पारख, रायपुर

इस परिवार के पूर्वज सेठ रावतमलजी पारख एक शताब्दि पूर्व अपने मूल नि बीकानेर से रायपुर आये। यह परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है। सेठ राव बड़े पुत्र आसकरणजी निसतान स्वर्गवासी हुए, तथा छोटे भ्राता जेठमलजी ने अपने परिवार की तथा कृषि के काम को विशेष बढ़ाया, और समाज में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। संवत् आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र रतनचन्दजी हुए।

सेठ रतनचन्दजी पारख—आपका जन्म सम्वत् १९३६ में हुआ। धार्मिक कामें आपकी अच्छी रुचि है। अपने पिताजी के बाद आपने जमींदारी तथा कृषि के कार्य को बढ़ाया है के ओसवाल समाज के आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके धर्मचन्दजी, कर्मचन्दजी, कस्तूरच प्रेमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। धर्मचन्दजी का जन्म संवत् १९६४ में हुआ। इन भाइयों में का सवत् १९८७ में १९ साल की वय में स्वर्गवास हो गया। आप बड़े होनहार थे। आप सेकंड ईयर में पढ़ते थे। छात्रों को मदद देने की ओर आपकी विशेष रुचि थी। आपने अप लायब्रेरी में डेढ़ हजार ग्रंथों का सग्रह किया था। आपके स्मारक में आपके पिताजी भी छात्रों क देते रहते हैं। सेठ रतनचन्दजी के शेष पुत्र धर्मचन्दजी, कस्तूरचदजी तथा प्रेमचदजी पढ़ते हैं।

सेठ भीकमचन्द रामचन्द पारख, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (जोधपुर स्टेट) है। इस परिवार के पूर्वज सेठ पारख लगभग १५० साल पहिले देश से नाशिक के समीप मखमलाबाद नामक स्थान पर आये पुत्र पारख किशनीरामजी और पौत्र पारख रामचन्द्रजी हुए। आप लोग मखमलाबाद में ही र रहे। सेठ रामचन्द्रजी पारख का स्वर्गवास संवत् १९५२ में हुआ। आपके पुत्र सेठ भीकम छगनमलजी पारख हुए।

सेठ भीकमचन्दजी पारख—आपका जन्म सवत् १९४३ में हुआ। आपने नाशिक में व्यापार चालू किया। जातीय सुधार तथा धर्म ध्यान के कार्यों की ओर आपका अच्छा लक्ष्य नाशिक जिला ओसवाल परिषद् के सेक्रेटरी थे तथा उसके स्थाई सेक्रेटरी भी आप हैं। ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र लक्ष्मीचन्दजी अपनी "पारख ब्रद कपड़े की दुकान का सचालन करते हैं तथा दूसरे पढ़ते हैं। यह परिवार स्थानकवासी मानने वाला है।

पारख छगनमलजी का जन्म १९४८ में हुआ। आप नदलाल भण्डारी मिल कायथा पर कार्य करते हैं। आपके पुत्र देवीचन्दजी व्यवसाय करते हैं तथा हस्तीमलजी छोटे हैं।

...रतनचन्दजी पारख, रायपुर (सी पी)

स्व० सेठ आनंदरामजी पारख, त्रिचनापल्ली

...जी पारख (नारमचन्द रामचन्द) नासिक.

स्व० सेठ अखैचंदजी पारख, त्रिचनापल्ली.

सेठ जुगराज केसरीमल पारख, येवला (नाशिक)

इस परिवार का मूल निवास तींवरी (जोधपुर स्टेट) है इस परिवार के पूर्वज पारख लूमचंद ... मानराजजी तथा देईचदजी दोनों भाइयों ने मिलकर संवत् १९६० मे येवले में कपडे की दुकान ... इसके बाद समय के बाद दुकान की शाखा नांदगाव में खोली गई। आप दोनों भाइयों ने दुकान ... तथा सम्मान को तरक्की दी। तथा अपनी दुकान की शाखा बम्बई में भी खोली। आप दोनों ... का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस परिवार में सेठ भीमराजजी के पौत्र (कानमलजी के पुत्र) उदयचदजी तथा ... और देईचदजी के पुत्र जुगराजजी विद्यमान हैं। सेठ भींवराजजी के पुत्र कानमलजी का स्वर्गवास ... १९७५ में हो गया है। इस समय सेठ जुगराजजी इस परिवार में बड़े हैं। आपका जन्म संवत् ... में हुआ। इस समय आपके यहाँ भीजराज देवीचद के नाम से बम्बई में, भींमराज कानमल के ... नांदगाव में तथा जुगराज केशरीमल के नाम से येवला में कपडे की आढ़त आदि का व्यापार होता ... यह परिवार तींवरी, बम्बई, येवला आदि स्थानों में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। तथा मंदिर ... आम्नाय का मानने वाला है।

मुनीम फतेचंदजी पारख, उज्जैन

संवत् १८९२ में इस परिवार के प्रथम पुरुष सेठ फूलचन्दजी बीकानेर से बजरंगगढ़ नामक ... में आये। यहाँ आकर आपने देनलेन का व्यापार शुरू किया। आपके पुत्र पूनमचन्दजी बड़े व्यापार ... और सज्जन व्यक्ति थे। आपने अपने व्यवसाय की उन्नति के साथ २ जमींदारी की खरीद की। ... धार्मिकता की ओर भी अच्छा ध्यान था। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र सेठ ... इन्दौर के प्रसिद्ध सेठ सर स्वरूपचन्द हुकमचन्द की उज्जैन दुकान पर मुनीम हैं। आपका ... मिलनसार है। यहाँ आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने भी बहुत सी जमींदारी खरीद की हैं। ... पंचायती बोर्ड के आप सरपंच रहे थे। उज्जैन की मंडी कमेटी के आप चौधरी रहे। इस ... के तीन पुत्र हैं, जिनके नाम हीराचन्दजी, रतनचन्दजी और इन्द्रचन्दजी हैं। आपकी पुत्री श्री ... ने आचार्या प्रमोद श्री जी के उपदेश से जैन धर्म में साध्वीपन ले लिया है। इस समय उनका ... श्री जी है।

सेठ अजीतमल माणकचन्द पारख, बीकानेर

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ सुल्तानमलजी करीब १५० वर्ष पूर्व बीकानेर आकर बसे थे। ... अभयचन्दजी ने आगरे में सेठियों की फर्म पर सर्विस की। आपके हमीरमलजी, सुगनमलजी ... और चन्दनमलजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ सुगनमलजी ने कलकत्ता आकर सेठ रिखलाल ... के यहाँ नौकरी की। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके फतेचन्दजी और नेमीचन्दजी नामक ... सेठ फतेचदजी कुछ महाजनी का हिसाब किताब सीखकर बरोरा नामक स्थान पर चले आये। ...

यहाँ आपने कपड़े और गल्ले का काम करने के लिये फर्म स्थापित की। आपकी बुद्धिमानी से फर्म की तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। इसी प्रकार आपके भाई नेमीचन्दजी का भी स्वर्गवास हो ग आपके पुत्र डालचन्दजी, बीजराजजी और बिरदीचदजी स्वतत्र रूप से भोपाल में व्यापार करते हैं।

सेठ फतेचदजी के आनंदचन्दजी, अजीतमलजी, लालजी तथा मालचन्दजी नामक चार पुत्र आजकल आप सब लोग स्वतत्र रूप से व्यापार करते हैं। सेठ अजीतमलजी बीकानेर के खजाची प्रेमच माणकचंदजी के साझे मे कलकत्ता मे दुकान कर रहे हैं। आपकी फर्म पर कपडे का थोक व्यापार हो है। आप मिलसार और उत्साही व्यक्ति है आपके पीरूदानजी नामक एक पुत्र है।

सेठ पन्नालाल सुगनचन्द पारख, चुरू

सेठ लालचन्दजी पारख के पूर्वजों का मूल निवास स्थान बीकानेर था। वहाँ से रिणी होते चुरू नामक स्थान पर आकर बसे। चुरू में सेठ जोधमलजी हुए। जोधमलजी के चार पुत्रों से में मु दासजी और अनेचन्दजी के परिवार वाले शामलात में व्यापार करते हैं। मुकन्ददासजी के पश्चात् उनके पुत्र गजराजजी, नवलचन्दजी, पन्नालालजी और सुगनचन्दजी हुए। सेठ अनेचंदजी के बाद घमण्डीरामजी जवाहरमलजी और लालचन्दजी हुए। सेठ लालचन्दजी बडे व्यापार कुशल और सज्जन है। सेठ सुगनचन्दजी भी मिलनसार और योग्य सज्जन है। आजकल आप दोनों सज्जन मेसर्स प सुगनचन्द के नाम से क्रास स्ट्रीट कलकत्ता में थोक धोती जोड़ों का व्यापार करते हैं। यह फर्म १८९२ में स्थापित हुई थी। सेठ लालचन्दजी के जयचन्दलालजी नामी एक पुत्र है।

बरमेचा

बरमेचा गौत्र की उत्पत्ति—महाजन वंश मुक्तावली मे लिखा है कि सवत् ११६७ में रण के राजा लालसिंह को अपने सातों पुत्रों सहित मुनि श्री जिनवल्लभ सूरिजी ने जैनधर्म का प्रतिबोध श्रावक बनाया। इन्ही सातों पुत्रों के नाम से सात गौत्र की उत्पत्ति हुई। इनमें से बड़े पुत्र ब्रह्म बरमेचा गौत्र की स्थापना हुई।

सेठ साहबराम बरदीचंद बरमेचा, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास जोधपुर के समीप दहीजर नामक स्थान है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। देश से व्यापार के निमित्त सेठ साहबरामजी बरमेचा सवत् १९०५ में नाशिक आये, तथा व्यापार आरम्भ किया। आपके मगनमलजी, उगनमलजी, बरदीचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयों में से सेठ बरदीचन्दजी बरमेचा ने सेठ चुन्नी नवलमलजी कूमठ के साथ साहबराम बरदीचन्द के नाम से किराने का व्यापार किया तथा इस दु व्यापार तथा सम्मान को ज्यादा बढ़ाया। आप अपनी जाति के बड़े शुभचिंतक व्यक्ति थे। आप

..मे ओसवाल हितकारिणी सभा नाशिक के मंत्री थे। संवत् १९५८ मे आपका स्वर्गवास हुआ। ...रामदासजी तथा चादमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ शिवरामदासजी संवत् १९५४ ...वासी हुए।

सेठ चादमलजी—आपका जन्म सवत् १९४५ मे हुआ। आप नाशिक के ओसवाल समाज में ...व्यक्ति हैं। धार्मिक कामों में आप विशेष भाग लेते हैं। आप ओसवाल वोर्डिङ्ग तथा नाशिक ...ओसवाल सभा के सजाची है। तथा जातीय सुधार के कामों मे भाग लेते रहते हैं। आप नाशिक ...ओसवाल अधिवेशन की स्वागत कारिणी समिति के सभापति थे। इस समय आपके यहाँ "साहबराम ..." के नाम से बकिंग, हुडीचिट्ठी तथा किराने का व्यापार होता है।

सेठ सुगनचन्द माणिकचद वरमेचा, किशनगढ़

यह परिवार मूल निवासी मेडते का है। वहाँ से यह परिवार किशनगढ़ आया। यहाँ इस परि... ...के पूर्वज सेठ कजोडीमलजी साधारण लेन देन करते थे। इनके पुत्र कस्तूरचन्दजी का जन्म सवत् १९०३ ...हुआ। आप संवत् १९३० में व्यापार के लिये दिनजापुर (वंगाल) गये, तथा वहाँ "कस्तूरचन्द फतेचन्द" ...नाम से कपड़े का व्यापार चालू किया। आपने इस धंधे में काफी तरक्की और इज्जत पाई। धार्मिक कामों ...आपकी अच्छी रुचि थी सवत् १९५६ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके फतेचन्दजी, सुगनचन्दजी, माणक... ...चन्दजी, किशनचन्दजी तथा विशनचन्दजी नामक पाँच पुत्र हुए। इन भाइयों में सेठ फतेचन्दजी १९८५ मे ...चन्दजी १९६६ में तथा विशनचंदजी १९८४ में स्वर्गवासी हुए। वरमेचा फतेचंदजी ने व्यापार में अच्छी ...सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ सुगनचन्दजी का जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपके पुत्र दीपचन्दजी पढ़ते है।

सेठ माणकचन्दजी वरमेचा—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप किशनगढ़ के प्रतिष्ठित ...हैं। धार्मिक कामों में आप अच्छा सहयोग लेते हैं। स्थानीय ज्ञानसागर पाठशाला के आप प्रारम्भ ...कर्ता हैं। आप साधु सम्मेलन अजमेर के समय अथितियों की भोजन व्यवस्था कमेटी के मेम्बर थे। ...के यहाँ दिनाजपुर (बगाल) में "कस्तूरचन्द फतेचन्द" के नाम से पाट, कपडा तथा ब्याज का काम होता ...। आपके पुत्र अमरचन्दजी ने इण्टर तक अध्ययन किया है, इनसे छोटे भँवरलालजी हैं। इसी तरह ...चन्दजी के पुत्र हुलाशचन्दजी तथा श्रीचन्दजी पढ़ते है।

गोठी

गोठी गोत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ११५२ में मेघा नामक एक व्यक्ति ने ...पुर पट्टन के यवन राजा से पाच सौ मुहर देकर एक जैन प्रतिमा खरीदी, तथा गोडवाड़ प्रदेश में ...मंदिर निर्माण करवाकर दादा जिनदत्तसूरिजी से उसकी प्रतिष्ठा कराई। और श्रावक व्रत धारण ...। इनके गोडी नामक एक पुत्र हुए। गुजरात के श्रावकों ने गोडी को पार्श्वनाथ-प्रतिमा पूजक "...ी" कहना शुरू किया। यह शब्द गोष्टी का अपभ्रंश है। आज भी गुजरात देश में देव ...को कही २ "गोठी" कहते है। आगे चल कर गौड़ीजी की सतानें गोठी नाम से सम्बोधित हुई।

सेठ प्रतापमल लखमीचन्द गोठी, बतूलवालों का खानदान

इस परिवार का मूल निवास स्थान बावरा (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ लगभग एक श पूर्व सेठ शेरसिंहजी गोठी के पुत्र सेठ प्रतापमलजी तथा साईंदासजी बदनूर आये, तथा यहा से लेनदे व्यापार चालू किया।

सेठ प्रतापमलजी गोठी—आप बडे व्यवसाय कुशल तथा दूरदर्शी पुरुष थे आपने व्यापार उपार्जित की हुई सम्पत्ति से बेतूल जिले मे सवत् १९३१ मे साकादही तथा जामझिरी और १९ बोयगाँव तथा डोलन नामक ४ गाँव खरीद किये। आपको दरबार आदि सरकारी जलसों में कुर्सी होती थी। आप बेतूल के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। सवत् १९४६ मे ६५ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भ्राता साईंदासजी भी सवत् १९३० मे स्वर्गवासी हुए। सेठ प्रत जी के तिलोकचन्दजी तथा लखमीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें तिलोकचन्दजी का स्वर्गवास १९३१ में २९ साल की अल्पायु मे होगया, अत इनके उत्तराधिकारी सेठ लखमीचन्दजी के ज्ये मिश्रीलालजी बनाये गये।

सेठ लखमीचन्दजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। आप इस परिवार में प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने अपनी जमीदारी के बढ़ाने की ओर बहुत लक्ष दिया, तथा अपने हा बेतूल तथा होशगाबाद जिले में करीब १०० गाव जमीदारी के खरीद किये। सरकार ने आपको अ मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके लिये बृटिश इडिया में आर्मस लाइसेंस माफ था। अपने स्वर्गवासी होने के १० साल पूर्व अपने सातों पुत्रों के विभाग अलग अलग कर दिये थे। त गाँव पुण्यार्थ खाते निकाले। जिनकी आय इस समय सदाव्रत आदि धार्मिक कामों में लगाई जा इसके अलावा प्रधान दुकान और ग्राहस्थ जीवन सम्मिलित चालू रहने की व्यवस्था करदी। इच्छानुसार आपके पुत्रों ने साठ सत्तर हजार रुपयों की लागत से इटारसी स्टेशन पर एक सुदर धर्म बनवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सवत् १९८१ की काती वदी १० को आप वासी हुए। आपके मिश्रीलालजी, मेघराजजी, धनराजजी, पनराजजी, केशरीचन्दजी, दीपचन्दजी तथा फूलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें धनराजजी स्वर्गवासी होगये।

सेठ मिश्रीलालजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आपही इस समय परिवार मे सबसे बड़े है। आप बडे शात तथा समझदार सज्जन हैं। तथा तमाम जमींदारी, और कुटुम्ब की सम्भाल बड़ी तत्परता से करते हैं। आपके पुत्र बदरीचन्दजी १६ साल के हैं, शुद्ध खादी धारण करते है। आप होनहार युवक है। तथा मेट्रिक में अध्ययन करते हैं। से राजजी गोठी का जन्म १९४३ में हुआ। यूरोपीय युद्ध के बाद आपने छिंदवाड़ा डिस्ट्रिक्ट मे दो रुपयों की लागत से कोयले की तीन खानें खरीदीं, तथा इस समय उनका सचालन करते है। आप अमरचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी है। सेठ धनराजजी गोठी का जन्म सवत् १९४८ में तथा स्वर्गवास में हुआ। आपके पुत्र गोकुलचन्दजी, नेमीचन्दजी, उत्तमचन्दजी तथा समीरमलजी है। सेठ पन का जन्म १९४८ में हुआ। आप सराफी दुकान का काम देखते है। आपके मूलचन्दजी तथा मो

...रामचन्द्रजी गोठी बेतूल (प्रतापमल लखमीचन्द)

सेठ मिश्रीमलजी गोठी (प्रतापमल लखमीचन्द) बेतूल

धर्मशाला इटारसी (प्रतापमल लखमीचन्द बेतूल)

सेठ प्रतापमल लखमीचन्द गोठी, बतूलवालों का खानदान

इस परिवार का मूल निवास स्थान बावरा (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ लगभग एक शताब्दि पूर्व सेठ शेरसिंहजी गोठी के पुत्र सेठ प्रतापमलजी तथा साईंदासजी बदनूर आये, तथा यहा से लेनदेन का व्यापार चालू किया।

सेठ प्रतापमलजी गोठी—आप बडे व्यवसाय कुशल तथा दूरदर्शी पुरुष थे आपने व्यापार द्वारा उपार्जित की हुई सम्पत्ति से बेतूल जिले मे सवत् १९३१ में साकादही तथा जामझिरी और १९४० वोयगाँव तथा डोलन नामक ४ गाँव खरीद किये। आपको दरबार आदि सरकारी जलसों में कुर्सी प्राप्त होती थी। आप बेतूल के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। सवत् १९४६ मे ६५ साल की आयु मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भ्राता साईंदासजी भी सवत् १९४० में स्वर्गवासी हुए। सेठ प्रतापमलजी के तिलोकचन्दजी तथा लखमीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें तिलोकचन्दजी का स्वर्गवास सवत् १९३१ मे २९ साल की अल्पायु मे होगया, अत इनके उत्तराधिकारी सेठ लखमीचन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र मिश्रीलालजी बनाये गये।

सेठ लखमीचन्दजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। आप इस परिवार में बहुत प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने अपनी जमीदारी के बढ़ाने की ओर बहुत लक्ष दिया, तथा अपने हाथों बेतूल तथा होशंगाबाद जिले में करीब १०० गाव जमीदारी के खरीद किये। सरकार ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके लिये बृटिश इंडिया में आर्मस लाइसेंस माफ था। आप अपने स्वर्गवासी होने के १० साल पूर्व अपने सातों पुत्रों के विभाग अलग अलग कर दिये थे। तथा गाँव पुण्यार्थ खाते निकाले। जिनकी आय इस समय सदाव्रत आदि धार्मिक कामों में लगाई जाती है इसके अलावा प्रधान दुकान और ग्राहस्थ जीवन सम्मिलित चालू रहने की व्यवस्था करदी। आपकी इच्छानुसार आपके पुत्रों ने साठ सत्तर हजार रुपयों की लागत से इटारसी स्टेशन पर एक सुदर धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सवत् १९८१ की काती वदी १० को आप स्वर्गवासी हुए। आपके मिश्रीलालजी, मेघराजजी, धनराजजी, पनराजजी, केशरीचन्दजी, दीपचन्दजी तथा फूलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें धनराजजी स्वर्गवासी होगये।

सेठ मिश्रीलालजी गोठी—आपका जन्म सम्वत् १९२९ में हुआ। आपही इस समय इस परिवार में सबसे बड़े है। आप बडे शात तथा समझदार सज्जन है। तथा तमाम जमींदारी, व्यापार और कुटुम्ब की सम्भाल बड़ी तत्परता से करते हैं। आपके पुत्र बदरीचन्दजी १६ साल के हैं, आप शुद्ध खादी धारण करते है। आप होनहार युवक है। तथा मेट्रिक में अध्ययन करते है। सेठ मेघराजजी गोठी का जन्म १९४३ में हुआ। यूरोपीय युद्ध के बाद आपने छिंदवाड़ा डिस्ट्रिक्ट मे दो लाख रुपयों की लागत से कोयले की तीन खानें खरीदीं, तथा इस समय उनका सचालन करते है। आपके पुत्र अमरचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी है। सेठ धनराजजी गोठी का जन्म सवत् १९४८ में तथा स्वर्गवास १९८ में हुआ। आपके पुत्र गोकुलचन्दजी, नेमीचन्दजी, उत्तमचन्दजी तथा समीरमलजी हैं। सेठ पनराजजी का जन्म १९४८ में हुआ। आप सराफी दुकान का काम देखते है। आपके मूलचन्दजी तथा मोतीला

[illegible] गोठी बेतूल (प्रतापमल लखमीचंद)

सेठ मिश्रीमलजी गोठी (प्रतापमल लखमीचंद) बेतूल

धर्मशाला इटारसी (प्रतापमल लखमीचंद बेतूल)

... पुत्र हैं। सेठ केशरीचन्दजी गोठी का जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आपने मेट्रिक तक ... हैं, तथा जमींदारी और दुकानों का कार्य्य देखते हैं।

श्री ...चन्दजी गोठी—आप सेठ लखमीचन्दजी गोठी के छठे पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् ... रामनवमी के दिन हुआ। नागपुर कांग्रेस से आपने राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग देना आरंभ ... आपके दयालु व अभिमान रहित स्वभाव के कारण बेतूल जिले की जनता आपसे दिनों दिन ... स्नेह करने लगी। आप जनता में सेवा समिति आदि का संगठन करते रहे। सन् १९२८ ... "गोंड" नामक जंगली जातियों से शराब मांस आदि छुडवाने का ठोस कार्य्य आरंभ किया। ... में आपको डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की मेम्बरशिप व एम० एल० सी० का सम्मान प्राप्त हुआ। ... बाद आप कौंसिल से इस्तीफा देकर सत्याग्रह संग्राम में प्रविष्ठ हुए। सन् १९२९ में जंगल ... के उपलक्ष में आपको एक साल का कारावास तथा ५०) जुर्माने की सजा हुई। आप ... के समय आपके प्रेम के वशीभूत होकर २५। ३० हजार गौंड जनता उपस्थिति थी। आपके पीछे ... परिवार से गवर्नमेंट ने सत्याग्रह शांत करने के लिये भेजी गई पुलिस के खर्चे के ३४००) ... लिये। आप गांधी इरविन समझौता के अनुसार ७ मास ४ दिन की सजा भुगत कर ... मार्च १९३१ के दिन नागपूर जेल से छूटे। आपकी प्रथम पत्नी श्रीमती सुगनदेवीजी आपके ... के पश्चात् अत्यन्त त्यागमय जीवन विताने लगीं। जिससे उनका शरीर क्षीण होगया ... के कारण उनका शरीरान्त ५ सितम्बर १९३१ में होगया इधर ३ सालों से ... डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सेक्रेटरी तथा स्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। आपका प्रेमालु स्वभाव ... है। इतनी बड़ी सम्पत्ति तथा सम्मान के स्वामी होते हुए भी आपको अभिमान छू तक नहीं ... है। आपके छोटे भ्राता फूलचन्दजी अपनी मालगुजारी का काम देखते हैं।

यह परिवार सी० पी० के ओसवाल समाज में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखता है। इस समय ... गावों की जमींदारी इस कुटुम्ब के पास है। इस परिवार की मुख्य दुकान "सेठ प्रतापमल ..." के नाम से बेतूल में है। जिस पर जमींदारी, बैंकिंग तथा चांदी सोने का व्यापार होता ... अलावा इस परिवार की भिन्न २ नामों से बेतूल इटारसी तथा जुनरदेव में दुकाने हैं।

सेठ वालचन्द गंभीरमल गोठी, परभणी (निजाम)

इस खानदान के मालिक मूल निवासी विलाडा (जोधपुर-स्टेट) के हैं। आप मंदिर आम्नाय के ... हैं। ... से पहले विलाडा से सेठ वालचन्दजी गोठी करीब १२५ वरस पहले परभणी में आये। ... आकर के अपनी फर्म स्थापित की। आपको स्वर्गवासी हुए करीब ५० वर्ष हो गये होंगे। आपके ... पुत्र सेठ गम्भीरमलजी गोठी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपके समय में भी फर्म ... होती रही आपका संवत् १९५६ में स्वर्गवास हुआ।

... पश्चात् आपके पुत्र सेठ मोहनलालजी गोठी ने इस फर्म के काम की बहुत तरक्की दी। ... सन् १९२५ में हुआ। आपने मकान, वगीचे वगैरा बहुत सी स्थावर संपत्ति बढ़ाई। पर-

भणी में आपकी देख रेख मे एक श्री पार्श्वनाथजी का बहुत विशाल और भव्य मंदिर बना है। इस आपकी दुकान पर बैङ्किग सोना चाँदी, कपडा खेतीवडी आदि व्यापार होता है। परभणी में य बहुत प्रतिष्ठित हैं। सेठ मोहनलालजी बडे उत्साही है। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नेमीचंदजी है। आपका संवत् १९६५ का जन्म है।

श्री मनोहरमलजी गोठी, नाशिक

आपका परिवार महामन्दिर (जोधपुर) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज दे व्यापार के लिये नाशिक जिले के घोटी नामक स्थान मे आये। वहाँ सेठ मनीरामजी तथा उन लखमीचन्दजी आसामी लेन देन का काम करते रहे। सेठ लखमीचन्दजी संवत् १९७७ मे स्व हुए। आपके पुत्र मनोहरमलजी हुए।

मनोहरमलजी गोठी—आपका जन्म संवत् १९५९ में हुआ। अपने पिताजी के स्वर्गवासी वाद आप ११ सालों तक बम्बई में सर्विस करते रहे। जाति हित के कामों में आपकी बहुत रुचि आप बम्बई की ओसवाल मित्र मण्डल, नामक संस्था के सेक्रेटरी रहे। सवत् १९३२ से आपने में 'गोठी ब्रादर्स" के नाम से कपडे का व्यापार स्थापित किया। आप इस समय नाशिक जिला वाल सभा और जैन बोर्डिंग के सेक्रेटरी है। नाशिक जिले के उत्साही कार्य्य कर्त्ताओं तथा हितैषी व्यक्तियों में आपका नाम अग्र गण्य है।

पूंगलिया

पूंगलिया गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि लोद्रपुर (जेसलमेर के भाटी राजा रावल के ९ वर्षीय पुत्र केलणदे को गलित कुष्ट की बिमारी हो गई थी। उस समय राजा के आग्रह से दादा सूरिजी लोद्रपुर आये। तथा राजपुत्र को स्वस्थ्य किया। कुमार केलणदे ने साधुवृत्ति धारण करने की की। तब गुरु ने उसका मुण्डन कराकर सम्यक्त युक्त बारह व्रत उच्चराये। दर्शन और दीक्षा की चा के कारण इनकी गौत्र राखेचाह (राखेचा) हुई। ये अपने निवास पूंगल से उठकर दूसरे स्थल पर इसलिये पूंगलिया राखेचा कहलाये। इस प्रकार पूङ्गलिया गौत्र की उत्पत्ति हुई।

सेठ ताराचन्दजी बीजराजजी पूगलिया, डूगरगढ़

इस परिवार के लोग पूगल से समदसर नामक स्थान पर आये। वहाँ से फिर सवत् १९ सेठ रावतमलजी श्री डूंगरगढ़ आये आप बड़े मेधावी और अनुभवी सज्जन थे। डूगरगढ़ आने के पूर्व ही पूरणी (भागलपुर) नामक स्थान पर अपनी फर्म पर गल्ले का व्यापार प्रारम्भ किया। इस सफलता मिलने पर क्रमश साहबगज और छत्तापुर में अपनी शाखाएँ खोलीं। सवत् १९५७ मे स्वर्गवास हो गया। आपके ताराचन्दजी और बीजराजजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ तीजराजजी पगलिया डूंगरगढ़

सेठ जयचन्दलालजी पगलिया डूंगरगढ़

बाबू तोलारामजी पगलिया, डूंगरगढ़

श्री मनोहरमलजी गादी, नासिक

सेठ ताराचन्दजी और बींजराजजी—आप दोनों भाइयों ने भी व्यापार में बहुत तरक्की की। एवम् व्यापार को विस्तृत रूप से बढ़ाने के लिये फारबिसगंज, डोमार, मुरलीगंज और कलकत्ता आदि स्थानों में शाखाएँ स्थापित कर जूट का व्यापार शुरू किया। इसमें आप लोगों को बहुत सफलता मिली। आप लोगों का यहाँ की जनता एवम् बीकानेर स्टेट मे अच्छा सम्मान है। संवत् १९८५ में सेठ ताराचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। आपके शेरमलजी, जयचन्दलालजी, विरदीचन्दजी और जीवराजजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें से शेरमलजी का स्वर्गवास हो गया। शेष बंधु व्यापार सचालन करते हैं। जयचन्दलालजी मिलनसार और उत्साही व्यक्ति हैं।

सेठ बींजराजजी के सात पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमश: नेमीचन्दजी, मेघराजजी, धरमचन्दजी, [illegible], तिलकरनजी, शुभकरनजी और पूनमचन्दजी हैं। इनमें से प्रथम तीन व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। शेष पढ़ते हैं। इस परिवार की डूंगरगढ़ में बहुत सी हवेलियां बनी हुई हैं। यह परिवार तेरापंथी सम्प्रदाय का अनुयायी है।

सेठ गोकुलचंद कस्तूरचंद पूंगलिया, डूंगरगढ़

इस परिवार के लोगों का मूल निवास स्थान समंदसर ही था। वहाँ से सवत् १९४२ में सेठ [illegible] के पुत्र सेठ अर्जुनदासजी, शेरमलजी, गोकुलचन्दजी, दुलीचन्दजी और कालूरामजी श्रीडूंगरगढ़ आये। कुछ समय के पश्चात् ये सब भाई अलग २ हो गये। वर्तमान इतिहास सेठ गोकुलचन्दजी के वंश का है। सेठ गोकुलचन्दजी ही ने पहले पहल आसाम प्रान्त के गोलकगंज नामक स्थान पर जाकर जूट का व्यापार प्रारम्भ किया। आप बड़े प्रतिभावान् व्यक्ति थे। आपने फर्म की बहुत तरक्की की। [illegible] में भी आपने हस्तमल कस्तूरचन्द के नाम से फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। [illegible] १९०१ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके हस्तमलजी, कस्तूरचन्दजी और बेगराजजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोग भी मिलनसार और व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ कस्तूरचन्दजी के पुत्र बा० तोलारामजी हैं। आप उत्साही नवयुवक हैं। आपने गौरीपुर में अपनी एक ब्रांच खोलकर उसपर जूट का काम प्रारम्भ किया है। आपकी फर्म का [illegible] में अच्छा सम्मान है।

सेठ नेमीचंदजी सरदारमल पूंगलिया, नागपुर

इस परिवार का मूल निवास बीकानेर है। इस परिवार के पूर्वज सेठ दौलतरामजी पूङ्गलिया के भेरोंदानजी, [illegible], सुगनचन्दजी तथा जवाहरमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से सेठ भेरोंदानजी [illegible] से लगभग १०० वर्ष पूर्व नागपूर आये। थोडे समय बाद आपके छोटे भाई जवाहरमलजी भी आ गये। आपके मझले भ्राता सुगनचन्दजी पूङ्गलिया अमरावती में सेठ मोजीराम बलदेव की फर्म पर प्रधान मुनीम थे। तथा वहाँ वजनदार पुरुष माने जाते थे। सेठ भेरोंदानजी संवत् १९६० में

स्वर्गवासी हो गये। आपके हाथों से व्यापार को तरक्की मिली। आपके बड़े भ्राता सेठ कनीरामजी के चन्दजी नामक पुत्र हुए। इनका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। लाभचन्दजी पुङ्गलि नेमीचन्दजी तथा सरदारमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें नेमीचन्दजी (सेठ जवाहरमलजी के छोगमलजी के नाम पर दत्तक गये। इनका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया।

सेठ सरदारमलजी पूगलिया—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आपका धार्मिक का ओर बहुत बड़ा लक्ष है। आपने नागपुर स्थानक की बिल्डिंग बनवाने में सहायता दी, तथा बहुत प उठाया। यहाँ आपने कई साधुओं के चातुर्मास कराये। केसरबाई के ४७ दिनों के संथारे का व्यय वृद्धि ऋषिजी की दीक्षा का खरच उठाया, नामली में स्थानक बनवाया। स्थानीय मदिर के कलश वाने में ५ हजार रुपये दिये, इत्यादि कई धार्मिक काम किये। आप नागपुर के जैन समाज में नाम गृहस्थ हैं। आपके यहाँ नेमीचद सरदारमल के नाम से सोना चादी तथा सराफी व्यापार होता है।

सेठ केसरीमल पीरूदान पुंगलिया, चांदा

इस परिवार का मूल निवास स्थान खारा (बीकानेर स्टेट) है। वहाँ से संवत् १९२५ के लगभग यह कुटुम्ब भिनासर (बीकानेर स्टेट) गया, तथा भिनासर से सेठ शिवजीरामजी के लखमीचन्दजी पुङ्गलिया २० साल की उमर में चादा आये, तथा उन्होंने अमरचन्दजी अगरचन्दजी ग की दुकान पर १९१४ तक मुनीमात की, आपके ६ छोटे भ्राता रावतमलजी, भेरूदानजी, मगलच केशरीमलजी, पूनमचन्दजी तथा पीरूदानजी नाम के और थे, इन भाइयों में से भेरोंदानजी केश जी तथा पूनमचन्दजी के कोई संतान नहीं है। सेठ लखमीचन्दजी पुङ्गलिया मुनीमी करते रहे, भेरूदानजी ने व्यापार शुरू किया। आपके बाद केसरीमलजी तथा पीरूमलजी काम काज चलाते सवत् १९६४ में लखमीचन्दजी ने अपना घरू चादी सोने का व्यवसाय शुरू किया। संवत् १९ इनका शरीरावसान हुआ।

सेठ रावतमलजी पुङ्गलिया के हमीरमलजी तथा राजमलजी नामक २ पुत्र हुए तथा हमीरम के केवलचन्दजी तथा खेमचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनमें सेठ राजमलजी, पीरूदानजी के नाम पर केवलचंदजी, लखमीचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। पुङ्गलिया मगलचदजी का शरीरान्त सवत् १ में हुआ। इनके ३ पुत्र हुए दीपचन्दजी मूलचन्दजी तथा नेमीचन्दजी। इन भ्राताओं के यहाँ दीप पुङ्गलिया के नाम से चांदा में चादी सोना व सराफी व्यापार होता है।

सेठ राजमलजी पूँगलिया—अपका जन्म संवत् १९४९ के में हुआ, आपने अपने व्यापार की के साथ २ कृषि तथा मालगुजारी के काम को बढ़ाया आपके पास इस समय ४ गाँवों की जमींदारी आप चादा के व्यापारिक समाज में अच्छी इज्जत रखते हैं संवत् १९३० से आप चादा म्युनिसिपैलिटी मेम्बर निर्वाचित हुए हैं, सार्वजनिक और लोकहित के कामों में आप सहायता देते रहते हैं। आ मन्नालालजी, चुन्नीलालजी, उत्तमचन्दजी, रेखचन्दजी तथा गुलाबचन्द नामक ५ पुत्र हैं जिनमें मन्नाला की वय २१ साल की है।

वैगानी

वैगानी परिवार की उत्पत्ति—कहा जाता है कि जैतपुर के चौहान राजा जैतसिंहजी के पुत्र वंगदेव [illegible] थे। इनको जैनाचार्य्य से स्वास्थ लाभ हुआ। इससे उन्होंने श्रावक व्रत धारण कर जैन [illegible] कर दिया। इन्हीं वंगदेव की सतानें वैगानी कहलाईं।

वैगानी परिवार लाड़नूं

इस परिवार वाले सज्जनों का पूर्व निवास स्थान बीदासर था वहाँ से सेठ जीतमलजी किसी [illegible] नामक स्थान पर आकर बसे। जिस समय आप यहाँ आये थे आपकी बहुत साधारण स्थिति [illegible] कपूरचन्दजी और कस्तूरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ केसरीचन्दजी के तीन पुत्र हुए [illegible] जीवनमलजी, इन्द्रचन्दजी और बालचन्दजी हैं। सेठ बालचन्दजी सुजानगढ़वासी सेठ [illegible] के पुत्र सेठ छोगमलजी के यहाँ दत्तक चले गये। सुजानगढ़ में आपका अच्छा सम्मान है [illegible] नामक एक पुत्र है।

सेठ जीवनमलजी—सेठ जीवनमलजी ने सम्वत् १९५७ में कलकत्ता जाकर अपनी फर्म सेठ जीवन॰ [illegible] के नाम से स्थापित की और इस पर जूट का काम प्रारंभ किया गया। आपकी बुद्धिमानी [illegible] से इस व्यापार में सफलता मिली यहाँ तक कि आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित [illegible] के व्यवसाइयों में आपका आसन बहुत ऊँचा था। वहाँ के व्यापारी लोग कहा करते [illegible] भाव है और कल का भाव जीवनमल के हाथ है" व्यापार के अतिरिक्त आपका ध्यान [illegible] की ओर भी बहुत रहा। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर जोधपुर नरेश महाराजा सुमेरसिंहजी [illegible] आल औलाद पैरों में सोना पहिनने का अधिकार बख्शा। इसके अतिरिक्त आपको और आपके [illegible] पुर का कस्टम की माफी का परवाना भी मिला। इतना ही नहीं दरबार की ओर से पालकी, छड़ी [illegible] में हाजिर न होने का सम्मान भी आपको मिला था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ में जयपुर [illegible] जिस दिन आपका स्वर्गवास हुआ उस दिन कलकत्ते के जूट के बाजार में आपके प्रति शोक प्रकट [illegible] हड़ताल मनाई गई थी। आपके पुत्र चन्दनमलजी, जवरीमलजी, हाथीमलजी, मोतीलालजी [illegible] हुए। सेठ मोतीलालजी का स्वर्गवास हो गया उनके पुत्र हनुमानमलजी विद्यमान हैं।

[illegible] चन्दनमलजी—आपका जन्म संवत् १९३३ में हुआ आप व्यापार कुशल पुरुष हैं आपके छः [illegible] नाम आसकरणजी, नवरतनमलजी, चम्पालालजी, पूनमचन्दजी, कानमलजी और गुलाबचन्दजी [illegible] में आसकरणजी सुजानगढ़ निवासी सेठ बालचन्दजी के यहा दत्तक गये हैं।

[illegible] जवरीमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९३६ में हुआ। आपका ध्यान विशेष कर धार्मि[illegible] रहा आपका स्वर्गवास सम्वत् १९९० में हो गया। आपके सागरमलजी नामक एक पुत्र [illegible] हैं।

[illegible] —आप बचपन से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि के सज्जन रहे। इस फर्म के व्यापार

में आपका बहुत बड़ा हाथ है। आपका हृदय वायदे के व्यापार के लिये बहुत खुला हुआ है। लाखों रुपयों की हार जीत करना आपके लिये बांयें हाथ का खेल है। जिस समय आपकी खरीदी बिकवाली शुरू होती है उस समय प्राय सारे बाजार की निगाहें आपकी ओर रहती हैं, यहा तक कि कारण बाजार में कई बार बड़ी २ घटा बढ़ी हो जाती है आपके इस समय जसकरणजी नामक एक पुत्र

सेठ सूरजमलजी—आप मिलनसार और खुशमिजाज सज्जन हैं। आपको मकान बना बहुत शौक है। आपने अपने डिजाइन द्वारा एक सुन्दर हवेली का निर्माण करवाया है। यह डि अच्छे २ इञ्जीनियरों के डिजाइन का मुकाबला करने में समर्थ हो सकता है। आपके रणजीत धनपतसिंह और मोहनसिंह नामक तीन पुत्र हैं।

चंडालिया

जयकरणदासजी चण्डालिया का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार वालों का पहले निवास स्थान सवाई (सरदार शहर से ३ मील) नामक था। मगर जब से सरदार शहर बसा उसी समय से इस परिवार के प्रथम व्यक्ति सेठ जयकरनद यहां आये। इनके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से सेठ उम्मेदमलजी सेठ जीतमलजी और सेठ इ जी थे। इनमें से पथम एवम् तृतीय दोनों सज्जनों ने मिलकर कलकत्ता में अपनी फर्म स्थापित तथा कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप लोगों को इसमे अच्छी सफलता प्राप्त हुई। सेठ उम्मे जी धार्मिक व्यक्ति थे। आपका प्राय. सारा समय धार्मिक कार्य्यों ही में खर्च होता था। सेठ इन्द्र जी इस खानदान में बड़े प्रतिभा सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने यहा की पंच पंचायती में नये कानून बनाये जो अभी भी सुचारू रूप से चल रहे हैं। आपने एक शनीश्चरजी का मन्दिर कुवा भी बनवाया। सरदारशहर के बसाने में आपने बहुत कोशिश की। लिखना यह कि है आप समय के नामाकित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९४२ में होगया।

सेठ उम्मेदमलजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम सेठ कोड़ामलजी सेठ छोगमलजी और पोकरमलजी हैं। तथा सेठ इन्द्रचन्दजी के पुत्र सेठ शोभाचन्दजी चडालिया थे। इस समय लोगों का व्यापार कलकत्ता में मेसर्स शोभाचन्द कोडामल के नाम से होता था। संवत् १९७२ में भाई २ अलग होगये। और अपना अपना व्यापार स्वतंत्र रूप से करने लगे। सेठ कोड़ामलजी छोगमलजी यहां के प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप लोगों ने व्यापार में भी अच्छी सफलता प्राप्त की। शोभाचंदजी भी अपने पिताजी की भांति बडे नामाकित व्यक्ति हुए। आपका यहा की पच पचायत बहुत भाग रहा। आपका सारा जीवन एक प्रकार से पब्लिक सेवाओं ही में व्यतीत हुआ। तीनों भाइयों का स्वर्गवास होगया। सेठ पोकरमलजी इस समय विद्यमान हैं आपकी अवस्था समय ७७ वर्ष के करीब है। अपने भाइयों से अलग होते ही आपने कलकत्ता में अपने पुत्रों के ना फर्म स्थापित करदी थी। जिस पर आज कपड़े का व्यापार हो रहा है।

सेठ पोकरमलजी चण्डालिया (बैठे हुए), सरदारशहर.
बाबू गणपतरायजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० १)
बाबू रामलालजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० २).
जौहरीमलजी चण्डालिया, (खड़े हुए नं० ३)

श्री जसकरणजी चण्डालिया, सरदारशहर

सेठ खूबचंदजी चण्डालिया, सरदारशहर.

कुँ० भँवरलालजी चण्डालिया, सरदारशहर

कुं० पूनमचंदजी चण्डालिया, सरदारशहर.

कुं० ऋद्धकरणजी चण्डालिया, सरदारशहर

... छोगमलजी के मूलचन्दजी नामक पुत्र हुए। मगर उनका स्वर्गवास होगया। वर्तमान में ... के पुत्र मिलापचन्दजी, धनराजजी और मंगलचन्दजी है। सेठ छोगमलजी के पुत्र सेढ़मल ... , हुलासमलजी और जयचन्दलालजी हैं। सेठ पोकरमलजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम ... गणपतरायजी, जवरीमलजी और रामलालजी है। आप तीनों ही भाई सज्जन एवं मिलनसार ... और आजकल आप ही लोग अपनी फर्म का सचालन करते है। आपकी फर्म कलकत्ता के ... में कपड़े का व्यापार करती है। सेठ शोभाचन्दजी के पुत्र सेठ कालूरामजी है। ... आप समझदार एव बुद्धिमान व्यक्ति है। आप यहाँ ... की पंच पंचायती में बहुत हाथ है। आपके चार पुत्र है जिनका नाम क्रम से सुमेरमलजी, मोतीलालजी, पूनमचंद ... मसार हैं। ... तारचन्दजी है।

सेठ शिवजीराम खूबचंद चंडालिया, सरदारशहर

यों तो इस परिवार वालों का मूल निवास स्थान किशनगढ़ नामक स्थान है मगर कई वर्ष पूर्व ... कर सवाई होते हुए यहाँ आये अतएव यहाँ सवाई वालों के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ आये ... करीब ९५ वर्ष हुए। यहाँ आने वाले सज्जन सेठ गंगारामजी चण्डालिया थे। आपके चार पुत्र ... दासजी, सेठ गुलाबचन्दजी, सेठ आसकरनजी और सेठ कालूरामजी। आप चारों ही भाई ... अलग २ व्यापार करने लगे। वर्तमान इतिहास सेठ कालूरामजी के वंश का है।

... कालूरामजी ने कलकत्ता जाकर नौकरी की। आपके संवत् १९१२ में शिवजीरामजी तथा ... १९११ में गजराजजी नामक दो पुत्र हुए। दोनों ही भाइयों ने मिलकर संवत् १९४२ में कलकत्ते ... फर्म स्थापित की। तथा कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। इस व्यापार में आप लोगों के ... में अच्छा लाभ रहा। सेठ शिवजीरामजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न और व्यापार चतुर थे। आपकी ... वजनदार मानी जाती थी। आप साधु प्रकृति के महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास संवत् ... में होगया। आपके स्वर्गवास होने के कुछ ही दिन पश्चात् इसी साल सेठ गजराजजी का भी ... गया। आप दोनों भाई अपनी मौजूदावस्था ही में अलग २ होगये थे। सेठ शिवजीरामजी ... पुत्र न था। अतएव पाली के पास हिमावस नामक स्थान से बा० खूबचन्दजी को ... लिया।

बा० खूबचन्दजी बड़े मिलनसार, उदार एवम् सहृदय व्यक्ति हैं। व्यापार में भी आपका ... है। आजकल आपका व्यापार संवत् १९७८ से ही बीकानेर के प्रसिद्ध सेठ भैरोंदानजी ... में हो रहा है। जिस फर्म का नाम मेसर्स खूबचन्द जुगराज पड़ता है इस नाम से ... कपड़े का व्यापार होता है। तथा मेसर्स जुगराज रिधकरण के नाम से ३९ आर्मेनियम ... का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त खूबचन्द पूनमचन्द के नाम से बीकानेर में ऊन का ... है। सेठ भैरोंदानजी सेठिया के नाम से ऊन के प्रेस में आपका साझा है। जो ... है।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः भंवरलालजी, पूनमचन्दजी और सिरका है। इनमें से भँवरलालजी व्यापार कार्य्य करते हैं। शेष दोनों पढ़ते हैं।

सेठ जसकरन सुजानमल चण्डालिया, सरदारशहर

इस परिवार के प्रथम व्यक्ति सेठ रायसिंहजी सवाई से यहाँ आकर बसे तथा सा दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम उदयचन्दजी और जैतरूपजी। वर्तमान इतिहास जैतरूपजी के वंशजों का है। जैतरूपजी के चार पुत्र सेठ कस्तूरचन्दजी, तार जी, छतमलजी और सूरजमलजी हुए। आप सब भाई अलग २ होगये एवम् अपना अपना व्य करने लगे। सेठ कस्तुरचन्दजी के मुकनचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सरदार शहर तथा कत्ता में व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० में होगया। आपके जुहारमलजी जसकरनजी नामक दो पुत्र हुए। जुहारमलजी का केवल १५ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास होगया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ जसकरनजी तथा आपके पुत्र कुं० सुजानमलजी हैं। फर्म की सारी उन्नति जसकरनजी ही के द्वारा हुई। आप पहले पहल संवत् १९६३ में कलकत्ता आ यहां आकर आपने पहले रावतमल पन्नालाल बोरड के यहां सर्विस की। इसके पश्चात् आपका साझा होगया। फिर संवत् १९७७ की साल से आपने अपनी स्वतंत्र फर्म उपरोक्त नाम से शुरू और स्वदेशी कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। पश्चात् संवत् १९८८ से आप सुजानमल चण्डालिया नाम से व्यापार कर रहे हैं। आपकी गिद्दी कलकत्ता में ३७।३८ आर्मेनियम स्ट्रीट में है। तथा शे शाप नार्मल लोहिया लेन में है। आपके सुजानमलजी नामक एक पुत्र है आप भी व्यापार में लेते हैं। आप लोग प्रारम्भ से ही श्री जैन तेरा पन्थी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं।

सेठ आनंदरूप कस्तूरचंद चंडालिया, जालना

इस खानदान के मालिक मूल निवासी गँठिया (जोधपुर स्टेट) के हैं। आप मन्दिर आम्नाय मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान वाले करीब १५० वर्ष पहिले मारवाड से दक्षिण में आये। आसाई खेडा नामक गाँव में रहे। इन आने वालों में सेठ श्यामदासजी, दुरगदासजी तथा उदयच ये तीनों भाई मुख्य थे। कुछ समय पश्चात् श्यामदासजी के परिवारवालों ने औरंगाबाद में और दुरग जी के परिवार वालों ने जालना में अपनी दुकानें खोली।

दुरगदासजी के पुत्र सेठ आनन्दरूपजी हुए। आप बडे विद्वान और धर्मप्रेमी पुरुष थे। आ अपने यहाँ सैकड़ों शास्त्रों का संग्रह किया जो अभी भी विद्यमान है। मुगलाई स्टेट में आप बड़े नामी सेठ आनन्दरूपजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ के करीब हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र कस्तूरच बहुत प्रख्यात हुए। निजाम स्टेट के अन्दर आपकी बहुत बड़ी इज्जत थी यहाँ तक कि बहुत दिनों केंटुन्मेंट की तरफ से आपके यहाँ सम्मान के लिये १२ जवान और एक हवलदार हमेशा २४ घंटा पहरा थे। आपकी तरफ से दान धर्म और परोपकार भी बहुत होता था। सेठ कस्तूरचन्दजी का संवत् १९३ स्वर्गवास हुआ। आपके कोई पुत्र न होने से केसरीचन्दजी ब्यावर से दत्तक लाये गये। इनका स्वर्गवास सन् १९१९ में हुआ। इस समय आपके पुत्र केवलचन्दजी विद्यमान हैं।

श्री जसराजजी कठौतिया, सुजानगढ़,

स्व० सेठ चादमलजी भूतोड़ि

स्व० सेठ बालचन्दजी कठौतिया, सुजानगढ़.

सोलामलजी S/o चादमलजी भूतो़ि

कठोतिया

[illegible] गोत्र की उत्पत्ति—कठोतिया गोत्र का मूल गौत्र सोनी है। जिसका विवरण हम पहले [illegible] परिवार के सज्जन कठोति नामक ग्राम में वास करते थे और फिर वहीं से दूसरे गाँवों में [illegible] से कठोतिया कहलाने लगे।

कठोतिया परिवार, सुजानगढ़

[illegible] परसरामजी के पुत्र सेवारामजी, ताराचन्दजी और रतनचन्दजी संवत् १८७९ में लाडनू से [illegible]। जिस समय सुजानगढ़ वसा उस समय बीकानेर के तत्कालीन महाराजा रतनसिंहजी ने [illegible] बसाने वालों में आगेवान् समझकर बहुतसी जमीन मकानात एवम् दुकानें बनवाने के लिये [illegible]। साथ ही कस्टम के आधे महसूल की माफी का परवाना मय खासरुक्के के प्रदान किया। [illegible] परिवार वापस लाडनू चला गया। ताराचन्दजी के कोई सन्तान न थी। वर्तमान परिवार [illegible] के दूसरे पुत्र पदमचन्दजी का है। सेठ पदमचन्दजी के बींजराजजी और पूसामलजी नामक [illegible] हुए।

[illegible] बींजराजजी और पूसामलजी दोनों भाई बडे व्यापारी होशियार तथा कष्ट सहन करने [illegible] थे। आपने संवत् १९०८ में बंगाल प्रान्त में जाकर बोडागाडी नामक स्थान पर [illegible] स्थापित की। इसके बाद आपने घोडामारा, डोमार और कलकत्ता में भी अपनी फर्में खोलीं। [illegible] स्वर्गवास हो गया।

[illegible] पश्चात् फर्म का कार्य सेठ बींजराज के पुत्र जेसराजजी और सेठ पूसालालजी के पुत्र [illegible] सम्हाला। आप दोनों भाइयों के परिश्रम से भी फर्म की उन्नति हुई। सेठ बालचदजी की [illegible] प्रतिष्ठा थी। आप प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके [illegible]चन्दजी, मोहनलालजी और नथमलजी नामक चार पुत्र हैं। जेसराजजी के पुत्र का नाम [illegible]। आप सब लोग मिलनसार और उत्साही सज्जन हैं। आप लोग भी व्यापार का संचालन [illegible] लोग श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। आपको बीकानेर दरबार की ओर से [illegible] कैफियत की इज्जत प्राप्त है। सेठ जेसराजजी स्थानीय म्युनिसिपेलटी के वायस प्रेसिडेण्ट [illegible]जी आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। वर्तमान में आपका व्यापार, डोमार, हल्दीबाडी, सिराजगंज और कलकत्ता में जूट, बैंकिंग और कमीशन का होता है। प्राय. सभी स्थानों पर [illegible] बनी हुई है।

भूतेड़िया

[illegible] गोत्र की उत्पत्ति—ऐसा कहा जाता है कि संवत् १०७९ में जांगलदेश के सरसापट्टन [illegible] नामक एक राजा राज्य करता था। इसको भूतों के डर से मुक्त कर आचार्य श्री [illegible] ने जैन धर्मावलम्बी बनाया। इन्हीं भूत ताडिया से भूतेड़िया गौत्र की उत्पत्ति हुई।

सेठ गंगारामजी भूतोड़िया का परिवार, लाडनूं

इस परिवार के लोग बहुत समय से लाडनूं मे ही रहते है। इस परिवार में सेठ गंगारामज मशहूर व्यक्ति हुए। इन्होंने वर्द्धमान (बङ्गाल) में जाकर अपनी फर्म स्थापित की थी। इनके ति चन्दजी, छोटूलालजी और वीजराजजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगों ने व्यापार में बहुत तरक्की आप तीनों पीछे जाकर अलग २ हो गये, एवम् स्वतन्त्र व्यापार करने लगे।

सेठ तिलोकचन्दजी का परिवार—सेठ तिलोकचन्दजी के दूसरे पुत्र सेठ हजारीमलजी बड़े व कुशल व्यक्ति थे। आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आप लाडनूं की पंच पंचायती में वान थे। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके जयकरनजी और मालचन्दजी नामक दो पु दोनों ही गूगे और बहरे हैं। आपका वर्द्धमान में गंगाराम तिलोकचन्द के नाम से व्यापार होता

सेठ हजारीमलजी के भाई सेठ मोहनलालजी के परिवार के लोग इस समय वर्द्धम तिलोकचन्द मोहनलाल और राजशाही में मोहनलाल जयचन्द के नाम से व्यापार कर रहे हैं।

सेठ छोटूलालजी का परिवार—आपके चार पुत्र सेठ हरकचन्दजी, जुहारमलजी, चांदमलजी शोभाचंदजी हुए। सेठ जुहारमलजी बडे व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने कलकत्ता में मेसर्स छोटूलाल मल के नाम से फर्म स्थापित की। आपका संवत् १९८८ में स्वर्गवास हो गया। आपके सूरजमलजी कुन्दनमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई अलग अलग रूप से व्यापार करने लगे। सेठ सूरज उपरोक्त फर्म के नाम से व्यापार करते हैं। आप धार्मिक व्यक्ति है। आपके इस समय पूनमचन्दजी मलजी और लालचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों भाई मिलनसार है। प्रथम दो व्यापार स करते है। तीसरे पढ़ते है। इस फर्म का आफिस ३९ क्लाईव स्ट्रीट में है। इस पर व्याज बैंकिंग और बेलिंग का व्यापार होता है।

सेठ चांदमलजी ने मेसर्स छोटूलाल चांदमल के नाम से कलकत्ता मे फर्म स्थापित की। आपने अच्छा लाभ उठाया। आपका स्वास्थ्य खराब रहने से यह फर्म उठा दी गई। आप बडे च चतुर और बुद्धिमान सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो गया। शेष जीवनमलजी और धनराजी इस विद्यमान हैं। आप दोनों भाई उत्साही और मिलनसार व्यक्ति है। इस समय आपकी फर्म गंगाराम छोटूलाल के नाम से वर्द्धमान में व्याज, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम कर रही है। आ ओर से लाडनूं की गौशाला में ४१००) प्रदान किये गये है। तथा एक धर्मशाला बनी हु वर्द्धमान में २०० वर्षों से आपकी फर्म स्थापित है।

कांसटिया

सेठ संतोषचंद रिखबदास कांसटिया, भोपाल

इस खानदान के पूर्वज सेठ ऋषभदासजी कांसटिया मेडते में निवास करते थे। आप होते हुए आस्टा (भोपाल स्टेट) आये और यहाँ १०-१५ साल रहकर फिर भोपाल में आपने अपना

...पा। आपका संवत् १९१६ में शरीरावसान हुआ, इसी साल मार्गशीर्ष बदी २ को आपके पुत्र ...जी का जन्म हुआ।

...दासजी कासटिया—आपकी दिन चर्य्या का विशेषभाग धार्मिक विषय की चर्चा, प्रति... सामायिक करने में व्यतीत होता था। सम्पत्तिशाली होते हुए भी प्रतिदिन अपनी बिरादरी के ... धार्मिक शिक्षा देते थे, नियम पूर्वक प्रतिवर्ष आप जैन तीर्थों की यात्रा करने जाते थे। ...९ में आपने एक उपाश्रय की लागत के २२०१) देकर उसे श्रीसंघ के अर्पण किया। सं० १९८२ ... धर्मपत्नी श्रीमती मिश्रीबाई के स्वर्गवास के समय आपने ५ हजार रु० शुभ कार्य्यों में लगाने के ...। आप मक्षी तीर्थ के सभासद् और श्वेताम्बर जैन पाठशाला के प्रेसिडेण्ट थे, आपकी धार्मि... ...परायणता और प्रामाणिकता के कारण ओसवाल समाज व अन्य समाजों में आपका अच्छा ...था। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताते हुए आप संवत् १९८६ की वैशाख सुदी ५ को ...हुए। आपकी मोजूदगी में आपके पुत्र अमीचन्दजी कासटिया ने १० हजार रुपयों का दान ...ों के लिये किया।

...अमीचन्दजी कासटिया—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपका बाल्य और यौवन ...पिता की देखरेख में गुजरा, अतः आपकी भी धार्मिक कामों की अच्छी रुचि है स्थानीय श्वेताम्बर ...शाला में आपकी ओर से एक धर्माध्यापक रहते हैं। आप ओसवाल समाज के सम्मानीय गृहस्थ ... प्रतिष्ठित व्यापारी हैं, आपकी फर्म पर "संतोषचन्द रिखबदास कांसटिया" के नाम से ...लेन देन, हुंडी चिट्ठी, रहन व सराफी व्यापार होता है।

समदड़िया

समदड़िया गौत्र की उत्पत्ति—समदड़िया गौत्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में महाजन वंश मुक्तवली ... है कि पद्मावती नगर के समीप सोढ़ा राजपूत समंदसी अपने आठ पुत्रों सहित बड़ी गरीबी ...रहता था। जैनाचार्य्य श्रीजिनवल्लभ सूरिजी के उपदेश से वह धार्मिक जीवन बिताने लगा। ... पासा पोरवाल ने अपना सहधर्मी समझकर व्यापार में अपना भागीदार बनाया, तथा ...पुत्रों को व्यापार के लिए समुद्र पार भेजा। इन्होंने मौक्तिक, विद्रुम, अम्बर आदि के व्यापार ...न द्रव्य उपार्जित किया। समंदसी की संतान होने और समुद्र यात्रा करने से इनके वंशज ...ये। इस प्रकार समदड़िया गौत्र प्रसिद्ध हुआ।

समदड़िया मेहता सुकनमलजी मोहनमलजी का खानदान, जोधपुर

इस परिवार के पूर्वज समदोजी के पौत्र कोजूरामजी, जब राव जोधाजी ने जोधपुर बसाया, तब ...ये। इनको होशियार समझकर राव जोधाजी ने अपना दीवान बनाया। इनके प्रपौत्र मेहता ... मालदेवजी अपने साथ गुजरात ले गये थे। इनका पुत्र अकबर के साथ वाली लड़ाई में मारा

गया। इनके पौत्र भगवानदासजी, महाराजा जसवंतसिंहजी के साथ काबुल गये थे। भगवानदास पौत्र गोकुलदासजी ने महाराजा अजीतसिंहजी की विखे के समय बहुत सेवा की। अत इनको सागासनी ग्राम जागीरी मे मिला। संवत् १७६९ में इनको महाराजा अजीतसिंहजी से दीवानगी का सम्मान हु हुआ। पुन: इन्होंने महाराजा अभयसिंहजी के समय मे संवत् १७८१ में दीवानगी का कार्य किया। प्रपौत्र खेमकरणजी मेडते के कोतवाल थे और महाराजा विजयसिंहजी के साथ नागोर के घेरे में सम्मि थे। इनके पुत्र मेहता मूलचंदजी तथा मीठालालजी महाराजा भीवसिंहजी तथा मानसिंहजी के सा मारवाड़ में लम्बे समय तक कई परगनों के हाकिम तथा कोतवाल रहे। आप दोनों बन्धुओं को द ने बरसोंद देकर सम्मानित किया था।

मेहता मूलचन्दजी के पुत्र मोतीचन्दजी तथा पौत्र रामकरणजी हुए। मेहता रामकरण हुकूमातें करते रहे। इनके कानमलजी तथा चादमलजी नामक २ पुत्र हुए। कानमलजी को एक रुपया साल वरसोंद मिलती थी। मेहता चादमलजी के बडे पुत्र मानमलजी संवत् १९०२ में मे कोतवाल हुए। इनके छोटे भ्राता जवाहरमलजी थे। मेहता जवाहरमलजी के सुकनमलजी तथा मोहनमलजी ‍ २ पुत्र हैं। इनमें मेहता सुकनमलजी, मेहता मानमलजी के नाम पर दत्तक गये है। मेहता सुकन के पुत्र सोहनमलजी बी० ए० एल० एल० बी० में पढ़ रहे हैं।

सेठ भेरुवक्षजी समदरिया का परिवार, मद्रास

(सुखलालजी, वहादुरमलजी कानमलजी समदरिया)

इस खानदान के मालिक ओसवाल जाति के समन्दरिया गौत्रीय श्वेताम्बर जैन समाज के आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार का मूल निवासस्थान नागौर का है। इस खान भेरूवक्षजी समन्दरिया हुए। आप अपने जीवनकाल में नागौर में ही रहे, आप नागौर मे बड़े धर्म पुरुष हो गये हैं। आपका जन्म संवत् १८९२ का था तथा स्वर्गवास संवत् १९४३ में हुआ।

आपके तीन हुए जिनके नाम क्रम से श्री सुखलालजी, बहादुरमलजी तथा कानमलजी हैं युत सुखलालजी का जन्म सम्वत् १९३३ में हुआ। आप बड़े प्रतिभाशाली और बुद्धिमान पुरुष हैं। संवत् १९४८ में मद्रास आये और यहाँ आकर आपने अपनी बेङ्किग की एक फर्म स्थापित की। बुद्धिमानी और दूरदर्शिता से आपकी फर्म खूब तरक्की करती गई यहाँ तक कि इस समय यहाँ की फर्मों में से यह एक है। श्री सुखलालजी समन्दरिया अपनी जाति की विधवाओं को प्र बहुत सा रुपया सहायतार्थ देते हैं। मद्रास साहुकार पेठ के मन्दिर की प्रतिष्ठा आपने बहुत उद्योग से एकत्रित कर करवाई। एव आपने भी उसमें काफी द्रव्य प्रदान किया है। मद्रास की दादावाड़ी जो एक जङ्गल के रूप में थी, आपके ही प्रयत्न से वह अब बहुत ही रमणीक हो गई है। आपने अपने से तथा लोगों से इकट्ठा करके करीब साठ सत्तर हजार रुपया इसमें लगाया। सार्वजनिक तथा कामों में आप बहुत दिलचस्पी से भाग लेते हैं। पचायती तथा जैन भाइयों के झगड़ों को निपटा आप अपने समय का बहुत सा भाग देते है। आपके इस समय नौ पुत्र है जिनके नाम क्रमश डूंगर

——, मदनचन्दजी, केवलचन्दजी, सखरूपचन्दजी, लालचन्दजी, मोतीचन्दजी, पदमचन्दजी
— — नाम हैं।

बाबु बहादुरमलजी का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप संवत् १९५१ में मद्रास आये और
— — मुन्नालालजी के साथ २ व्यवसाय करने लगे आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम
—— तथा समरथमलजी हैं।

श्री ज्ञानमलजी का जन्म संवत् १९४१ में हुआ। आप संवत् १९५५ में मद्रास आये।
इस समय चार पुत्र हैं जिनके नाम सरदारमलजी, लक्ष्मीमलजी, कृपाचन्दजी और प्रकाशमलजी हैं।

इस समय आप तीनों भाइयों की स्वतंत्र तीन दुकाने मद्रास में हैं। आप तीनों भाइयों की तरफ
— स्थान पर एक धर्मशाला बनी है। इसी के अन्दर एक मंदिर भी बनवाया गया है।

मुनीम भंवरलालजी समदरिया मेहता, उज्जैन

इस परिवार के सज्जनों का मूल निवासस्थान मेडता (जोधपुर) का था। वहीं से सेठ मेहकरन
— पुत्र शिवकरनजी और पूसकरनजी के साथ उज्जैन आये। यहाँ आपने दस्तकारी का काम प्रारंभ
। शिवकरनजी के कोई संतान नहीं हुई। पूसकरनजी के कस्तूरचन्दजी और उनके सीतारामजी
— —रमलजी और रतनलालजी नामक चार पुत्र हुए।

सीतारामजी बड़े समझदार वयोवृद्ध पुरुष हैं। आजकल आप मन्नालाल भागीरथ की उज्जैन
— — हैं आप तीनों भाई इन्दौर ही में व्यापार करते हैं। सीतारामजी के पाँच पुत्र हैं जिनके
— भंवरलालजी, पन्नालालजी, हीरालालजी, माणकलालजी और चांदमलजी हैं। भँवरलालजी,
— — निगमचन्द कल्याणमल की उज्जैन वाली फर्म पर मुनीम हैं आपके नरेन्द्रकुमारसिंहजी नामक
है।

खांटेड

श्री कनीरामजी खांटेड़ का परिवार बगड़ी

(सेठ सागरमल चुन्नीलाल ट्रिवल्लूर)

इस परिवार के मालिकों का मूल निवासस्थान बगडी (मारवाड) का है। आप श्वेताम्बर जैन
— — सम्प्रदाय को मानने वाले खांटेड गौत्रीय सज्जन हैं। इस परिवार में श्री कनीरामजी हुए
— —रामजी तथा माणिकचन्दजी हुए। सेठ मगनीरामजी के दो पुत्र हुए जिनके नाम
— — और सुल्तानमलजी था।

सेठ हसराजजी खाटेड़—आपका जन्म सवत् १९१० में हुआ । आप बड़े बुद्धिमान तथा कुशल पुरुष थे । आप मारवाड से जालना (निजाम) गये । इस मुसाफिरी मे आपको बगडी से तक पैदल रास्ते से आना पड़ा था । थोड़े दिन जालने मे रहकर आप मद्रास आये । और यहाँ आकर घरम् मे बैंकिंग की दुकान स्थापित की । तदनन्तर आपने पूनवल्ली में अपनी फर्म स्थापित की। १९४० में आपने अपने छोटे भ्राता मुल्तानमलजी को भी बुला लिया । आपकी बुद्धिमानी और दूर से आपकी फर्मों को बहुत शीघ्रता से तरक्की मिलती गई । कुछ समय पश्चात् आप अपने भाई मुल्त जी और बड़े पुत्र सागरमलजी के जिम्मे व्यापार का काम छोडकर देश चले गये और धर्म ध्यान में समय व्यतीत करते हुए आप सवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए । आपके छोटे भाई मुल्तानमलजी का वास संवत् १९६५ में हुआ । दोनों भाइयों की मृत्यु हो जाने पर आपकी फर्म अलग २ हो गई । हसराजजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश सागरमलजी, गुलाबचन्दजी, गणेशमलजी चुन्नीलालजी हैं ।

सेठ सागरमलजी खाटेड—आपका जन्म संवत् १९३२ मे हुआ । आप बड़े योग्य, व्यापारकुशल तथा उदार पुरुष हैं । आपके हाथों से इस फर्म को बहुत तरक्की मिली सवत् १९५९ में और मुल्तानमलजी ने ट्रिवल्लूर में अपनी फर्म का स्थापन किया । जिसमें आपको खूब सफलता मिली सागरमलजी का भी राज्य दरबार में बहुत अच्छा मान है । आप ट्रिवल्लूर लोकल बोर्ड के पाँच सा मेम्बर रहे । इसी प्रकार चिंगनपेठ सेशनकोर्ट के आप जूरी भी रहे । सवत् १९६९ से संवत् १९८ आपके भाई आपसे अलग २ हुए । सेठ सागरमलजी के कोई सन्तान न होने से आपने अपने छो चुन्नीलालजी को अपने नाम पर दत्तक ले लिया । श्री चुन्नीलालजी का जन्म सवत् १९६१ की फाल्गु तृतीया को हुआ । आप बड़े सज्जन, उदार, व्यापारकुशल तथा सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं । ट्रिव पब्लिक और राजदरबार में आपको बहुत अच्छा सम्मान प्राप्त है । आप यहाँ पर ऑनरेरी मजिस्ट्रेट आपको फर्स्ट क्लास के अधिकार प्राप्त है। इसी प्रकार यहाँ के क्लबों, सभाओं और सोसायटियों में बड़ी दिलचस्पी से भाग लेते है । आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री नवरतनमलजी है ।

इस परिवार की दान धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि रही है । प्रथम सवत् १९६१ में श्री हसराजजी के हाथों से बगडी के मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई और आपकी त उस पर ध्वजादण्ड चढ़ाया गया । संवत् १९६५ में सुप्रसिद्ध मुरडावा के प्राचीन मन्दिर के जीर्णोद्धार ने में भी बहुत सहायता दी, और उस पर ध्वजादण्ड चढ़ाया गया । इसी प्रकार करमावस और वा मन्दिरों की प्रतिष्ठा भी आपके द्वारा हुई । इसी खानदान की तरफ से चण्डावल स्टेशन पर एक धर्म भी बनाई गई है । श्री सागरमलजी अपने पिता की तरह ही दानशूर और उदार व्यक्ति हैं । मद्र श्वेताम्बर जैन मदिर की प्रतिष्ठा में आपने बहुत बडी रकम दान दी और उसपर ध्वजादण्ड भी आप तरफ से चढ़ाया गया । इसी प्रकार बिलावस (मारवाड़) के मन्दिर की प्रतिष्ठा मे भी आपने बहुत सहायता दी और ध्वजा दण्ड चढ़ाया । बगडी के जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार में भी आपने दस हजार प्रदान किये और आपने करीब तीन वर्षों तक परिश्रम करके इस काम को पूरा किया । सवत् १९८

(हसरान सागरमल) ट्रिवल्लूर,

सेठ चुन्नीलालजी खांटेड़ (हसराज सागरमल) ट्रिवल्लूर

सेठ पूनमचन्दजी तथा लक्ष्मीचन्दजी—आपने संवत् १९५२ में केसरियाजी का एक बड़ा निकाला, इसमें आपने ६० हजार रुपये व्यय किये। सवत् १९५४ में मारवाड़ में अनाज महगा हुआ, इन भाइयों ने अनाज खरीद कर पौने मूल्य में गरीब जनता को विक्री किया, इस सेवा के उपलक्ष्य जोधपुर दरबार महाराजा सरदारसिंहजी ने सिरोपाव, कडा, दुशाला आदि इनायत किया। इन ब ने बहुत से कुए खुदवाये, आप बन्धु बाली के नामांकित व्यक्ति हुए। आपका खानदान यहाँ "सेठ नाम से पुकारा जाता है। आप दोनों बन्धु क्रमश सवत् १९७३ तथा १९७६ मे स्वर्गवासी हुए। पूनमचन्दजी के पुखराजजी, भागचन्दजी, रतनचन्दजी तथा सन्तोषचन्दजी नामक चार पुत्र हुए तथा लखमीचन्दजी के कपूरचन्दजी, केसरीचन्दजी तथा बख्तावरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें के चन्दजी तथा भागन्दचजी स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष सब विद्यमान हैं। आप बन्धुओं का "लखमी पूनमचन्द" के नाम से मोरा बन्दर में जमींदारी तथा बैंकिंग का कारबार होता है। पुखराजजी बन्दर की म्युनिसिपल कमेटी के मेम्बर हैं तथा सन्तोषचन्दजी ने गत वर्ष बी० एस० सी० का इम्ति दिया है। आप गोडवाड़ के प्रथम बी० एस० सी० हैं। यह परिवार गोडवाड के ओसवाल समा नामांकित माना जाता है।

मम्बइया

मम्बइया परिवार, अजमेर

हालांकि मम्बइया परिवार का आज अजमेर शहर मे कुछ भी कारबार नहीं है, लेकिन द्वारा बनाई हुई लाखों रुपयों की लागत की हवेलिया, नोहरे, हजारों रुपयों की बनी हुई दादाबा छतरियां इनके गत गौरव का पता दे रही है। संवत् १९३९ मे लगभग उनका काम कमजोर हुआ, पूर्व १२०–१२५ वर्षों से वे अजमेर शहर के नामी गरामी करोड़पति श्रीमन्त माने जाते थे। उनका व्यवहार अजमेर में मूलचन्द धनरूपमल के नाम से और बाहर अनोपचन्द मूलचन्द के नाम से चलता अजमेर, रतलाम, बदनोर, उज्जैन, छबड़ा, बम्बई कलकत्ता, टोंक, झालरापाटन, जयपुर, कोटा वगैरह में आपकी दुकानें थीं। इस परिवार के आगमन, व्यवसाय के आरम्भ, उन्नति व सार्वजनिक कामों सिलसिलेवार कुछ भी वृत्त मालूम नही होता है। कहा जाता है कि सवत् १८९५ मे इनका आ अजमेर हुआ और मरहठा सरदारों व फौजों के साथ सम्बन्ध रखने से इनका अभ्युदय हु मम्बइया अनोपचन्दजी के पुत्र मूलचन्दजी के समय में व्यवसाय का आरम्भ होना माना जाता मूलचन्दजी के पुत्र धनरूपमलजी के समय में इनके व्यापार और जाहोजलाली की बहुत उन्नति अजमेर में पूज्य दादा जिनदत्तसूरिजी की समाधि दादाबाडी में इस परिवार की छतरियाँ बनी हुई अजमेर की धर्म सस्थाओं के प्रबन्ध का भार भी आप ही के जिम्मे था।

मम्बइया धनरूपमलजी के पुत्र बाघमलजी हुए और बाघमलजी के नाम पर राजमलजी द आये। राजमलजी और उनके पुत्र हिम्मतमलजी के समय में इनका काम कमजोर हुआ। हिम्मतम

बाबू गोविन्दचदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.

बाबू धन्नूलालजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ

रायसाहब लक्ष्मीचदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.

बाबू केशरीचदजी सुचिन्ती, बिहारशरीफ.

... हुई इ लोढ़ा परिवार में हुआ था। राजमलजी तक कोटा अथवा पाटन में उनकी १५.०)
... का आगार थी। मम्बइया राजमलजी सवत् १९६० तक अजमेर रहे यहाँ से किशनगढ़ गये।
... का लगभग १० साल पूर्व शरीरावसान हुआ! हिम्मतमलजी के नाम पर प्रतापमलजी दत्तक
... इस समय इस परिवार के कोई व्यक्ति छीपा बढौद में निवास करते है, इनका वहाँ जागीरी का
... था, वह राजमलजी तक रहा। जब उनकी हवेलियां बिकीं तब जबलपुर वालों ने व लोढ़ों ने
... भिन्न २ व्यक्तियों के तावे मे उनकी इमारतें व नोहरे उनके नामकी याद दिला रही हैं।

सचेती, सुचिन्ती

सुचिन्ती गोत्र की उत्पत्ति—कहते हैं कि देहली के सोनीगरा चौहान राजा के पुत्र वोहित्थ कुमार ... डस लिया, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। जब उसके शव को दाह संस्कार के लिये ले गये, तो ... आचार्य श्री वर्द्धमान सूरिजी अपने पाचसौ शिष्यों के साथ तपस्या कर रहे थे। आचार्य्य ने ... उसके कुमार को सचेत किया, इससे राजा ने जैन धर्म स्वीकार किया। इनके पुत्र को ... में जैनाचार्य ने सचेत किया, इसलिये आगे चलकर उनके वंशज वाले सचेती या सुचिंती नाम ... हुए।

विहार का सुचिन्ती परिवार

इस परिवार के लोगों का मूल निवासस्थान बीकानेर का है आप मन्दिर आम्नाय के ... हैं। इस परिवार में बाबू महतावचदजी हुए, आपके कोई सन्तान न होने से आपके नाम पर मनेर ... गोत्रीय बाबू रतनचन्दजी को दत्तक लिया गया। बाबू रतनचंदजी के हीरानन्दजी और ... नामक दो पुत्र हुए। इनमें बाबू गोविन्दचन्दजी बड़े नामाङ्कित और प्रतापी व्यक्ति हुए। ... के इस खानदान के व्यापार और जमीदारी की बहुत तरक्की हुई, आपका धर्म प्रेम भी बहुत बढ़ा ... संवत् १९६५ की अगहन सुदी १४ को अपने मकान पर राज गिरी के केस के सम्बन्ध में गवाह ... हार्टफेल से आपका देहान्त हो गया। आपके बाबू धन्नूलालजी, रा० सा० बाबू लक्ष्मीचंदजी ... चन्दजी नामक तीनपुत्र हुए।

बा० धन्नूलालजी—आपका जन्म सवत् १९४० में हुआ। आप श्री पावापुरी, कुण्डलपुर, गुणावा ... स्थानों के श्वे० जैन मन्दिरों के मैनेजर हैं। पावापुरी के जल मन्दिर का जीर्णोद्धार और वहाँ के ... भी आप ही के समय में हुआ। इसके सिवाय पावापुरी के गाँव मन्दिर का विस्तार ... धर्मशालाओं का निर्माण आप ही के समय में हुआ। आपके मैनेजर शिप में इस तीर्थ की ... तरक्की हुई। आपके बाबू जवाहरलालजी और ज्ञानचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू जवाहर- ... लालजी के ... चन्दजी और शान्तिचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

रा० सा० बाबू लक्ष्मीचन्दजी—आपका जन्म सवत् १९४४ में हुआ। आप विहार के ऑनरेरी

मजिस्ट्रेट, लोकलबोर्ड के चेअरमेन और डिस्ट्रीक्टबोर्ड के मेम्बर हैं। गवर्नमेण्ट से १९३० में आपको राय की उपाधि प्राप्त हुई। आपके इस समय छ पुत्र हैं। आपके प्रथम पुत्र बाबू इन्द्रचन्दजी बी० ए० एल० हैं। आप यहा पर वकालात करते हे। इनसे छोटे बाबू विजयचन्दजी, श्रीचन्दजी प्रेमचन्दजी और चन्दजी है। बाबू इन्द्रचन्दजी के दो पुत्र हैं। जिनमें बडे का नाम रिखबचन्दजी हैं।

बाबू केशरीचन्दजी—आपका जन्म सवत १९४६ में हुआ। आपके इस समय दो पुत्र हैं। नाम क्रम से बाबू सौभाग्यचन्दजी और कपूरचन्दजी हैं। बिहार शरीफ में यह परिवार बहुत प्रसिद्ध प्रतिष्ठित है। यहाँ पर आपकी बहुत बड़ी जमींदारी है।

सेठ गुलाबचन्द हीराचन्द सचेती, अजमेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान मेडता (जोधपुर स्टेट) में है। इस परिवार के सेठ जयचंदजी तथा उनके पुत्र अभयराजजी और पौत्र लक्ष्मीचदजी वही निवास करते रहे। सेठ लक्ष्म जी के रूपचंदजी तथा वृद्धिचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। वहाँ से सेठ रूपचन्दजी व्यापार के लिये अ तथा वृद्धिचन्द गवालियर गये।

सेठ वृद्धिचन्दजी सचेती—आपकी योग्यता से प्रसन्न होकर गवालियर स्टेट ने आपको ट्रेझरी का खजाची बनाया। सन् १८५७ के गदर में आपने खजाने की ईमानदारी पूर्वक रक्षा की। १९१५ में आपने गवालियर से श्री सिद्धाचलजी का सघ निकाला। संवत् १९२४ मे आपने खजाची के इस्तीफा दिया। इस कार्य्य के साथ २ आप अपना साहुकारी व्यापार भी करते थे। आपकी दरबार तथा व्यापारिक वर्ग में अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपने गवालियर मदिर मे संगमरमर के अष्टाप व नदेश्वरजी बनवाये, आपने फलोदी पार्श्वनाथ नामक प्रसिद्ध तीर्थ में मंदिर के चारों ओर विशाल पर बनवाया। आपके नाम पर गुलाबचन्दजी सचेती उदयपुर से दत्तक लाये गये।

सेठ गुलाबचन्दजी सचेती—आप अपने पिताजी के साथ तमाम धार्मिक कामों मे सहयोग रहे। संवत् १९४३ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सेठ हीराचन्दजी सचेती हुए।

सेठ हीराचन्दजी सचेती—आपके पिताजी ने संभवनाथजी व आदीश्वर के मदिर का व दादा वगेरा का प्रवंध भार अपने ऊपर लिया। तब से आप लोग इन सस्थाओं के कार्य्य को भली प्रकार संचा कर रहे हैं। आप इस समय ओसवाल हाई स्कूल के प्रेसिडेंट है। इसके स्थापन मे आपका उत्तम योग रहा है। स्थानीय ओसवाल औषधालय के भी आप प्रेसिडेंट हैं। इसके अलावा आप श्वे० कान्फ्रेंस के अजमेर मेरवाड़ा प्रान्त के सेक्रेटरी तथा स्टेंडिग कमेटी के मेम्बर हैं। सवत् १९९४ मे अ अजमेर स्टेशन के सम्मुख एक सराय बनवाई है, इस समय आपके ५ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू रतनच जतनचन्दजी, दौलतचन्दजी, कुशलचन्दजी, और इन्द्रचन्दजी हैं। आप सब बधु सुशील, विनम्र तथा पिता के पूर्ण आज्ञाधारक हैं। सचेती रतनचन्दजी का जन्म सवत् १९६५ में हुआ। आप फर्म के व्यापार को सह्मालते हैं। आपसे छोटे जतनचन्दजी का जन्म १९६९ में हुआ। आपने गत वर्ष अ से बी० कॉम की परीक्षा पास की है। बाबू रतनचन्दजी के नजरचन्द्र तथा इन्द्रचन्द्र नामक २ पुत्र हैं।

स्व० सेठ बिरधीचन्दजी सचेती, अजमेर

स्व० सेठ गुलाबचन्दजी सचेती, अजमेर

सेठ हीराचन्दजी सचेती, अजमेर.

सेठ केवलचन्दजी सचेती, मोमासर.

सेट हणुतमल मोतीलाल संचेती, लोणार

यह परिवार बवायचा (किशनगढ़ के समीप) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज सेठ [illegible] लगभग संवत् १९०५ में व्यापार के लिये लोनार आये। आपके हणुतमलजी, हीरालालजी [illegible] नामक ३ पुत्र हुए। संवत् १९५२ के करीब इन तीनों भाइयों का व्यापार अलग [illegible] हुआ।

[illegible] हणुतमलजी का परिवार—आपका स्वर्गवास संवत् १९३७ में होगया। आपके मोतीलाल [illegible] नामक दो पुत्र हुए, इनमें पूनमचन्दजी, हीरालालजी के नाम पर दत्तक गये।

[illegible] मोतीलालजी सचेती—आप इस परिवार में बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपका जन्म [illegible] में हुआ। आप आस पास की पंचायती में नामांकित पुरुष तथा लोनार की जनता [illegible]। संवत् १९८७ में बुलढाना डिस्ट्रिक्ट के कुलमी मुसलमान तथा मरहठा लोगों ने मिल [illegible] के विरुद्ध विद्रोह उठाया। तथा उन्होंने २७ गांवों में मारवाड़ियों के घर लूटे, बहियें [illegible] घरों में आग लगा दी। इस प्रकार उनका दल उत्तरोत्तर बढ़ता गया। जब इस दल ने [illegible] मारवाड़ियों की सबसे बड़ी और धनिक बस्ती लोनार को लूटने का नोटिस निकाला। तब लोनार [illegible] जनता ने बुलढाना डिस्ट्रिक्ट के कमिश्नर व आफीसरों से अपने बचाव की प्रार्थना की। [illegible] और न जल्दी कोई उचित प्रबन्ध न होते देख सेठ मोतीलालजी संचेती ने सब लोगों को [illegible] के लिये उत्साहित किया, आपने ३०० सशस्त्र व्यक्ति अपने मोहल्लों की रक्षार्थ तयार [illegible] तमाम पुरुष एवं स्त्रियों को हिम्मत पूर्वक हमले का मुस्तैदी से सामना करने के लिये ढाडस [illegible] ता० २३।१२।२८ को लूटने वाली जनता का दल लोनार के समीप पहुँचा, तो उन्हें [illegible] लोगों ने पक्का जाप्ता कर रक्खा है, जिससे वे लोग वापस होगये, पीछे से सरकार की [illegible] जिससे यह बढ़ती हुई अग्नि, जो सारे बरार में फैलने वाली थी, यहीं शांत होगई। [illegible] "धारा" नामक अविराम जलप्रपात पर हिन्दू स्त्रियों तथा पुरुषों के स्नानादि धार्मिक [illegible] मुस्लिम जनता अनुचित हस्तक्षेप करने लगी, उस समय आपने ३ वर्षों तक अपने व्यय से [illegible] पर वाजिब अधिकार पाने के लिए लड़ाई लड़ी। इसी बीच बाजे का मामला खड़ा [illegible] तमाम धारा से चन्द मुसलमानों ने आप पर हमला किया, जिससे आपके सिरमें २१ घाव [illegible] हजारों आदमी आपके प्रति हमदर्दी तथा प्रेम प्रदर्शित करने के लिये अस्पताल में [illegible] तथा उन्होंने दंगा करने की ठानली। लेकिन आपने उन्हें सांत्वना देकर रोका। इस [illegible] मुसलमानों की यह आपसी रंजिश बहुत बढ़ गई, तब सरकार ने बीच में पड कर 'धारा' [illegible] को सुलझाया। दंगे के बाद सवा साल तक सेठ मोतीलालजी बीमार रहे। और [illegible] संवत् १९८९ को इस नरवीर का स्वर्गवास हुआ। आपके सम्मान स्वरूप लोनार [illegible] रक्खा गया था। महाराष्ट्र, प्रजापत्र व केशरी नामक पत्रों ने आपके स्वर्गवास के समा[illegible] प्रकाशित किये थे। सेठ मोतीलालजी लोनार के तमाम सार्वजनिक कामों में उदा[illegible] [illegible]। आपने 'धार' के समीप एक धर्मशाला बनवाई। स्थानीय अठवाड़े बाजार में

ही तीन हजार रुपये खर्च कर पानी के पम्प लगाये, राममन्दिर तथा धारातीर्थ में बहुतसी सहायता दी। आप शिवपुर जैनतीर्थ की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर थे। इसी तरह के प्रतिष्ठापूर्ण का आजीवन करते रहे। आपने ही लोनार में सर्व प्रथम जिनिंग फेक्टरी खोली आपके अखेचन्दजी, उत्तमचन्दजी, लखमीचन्दजी, तथा गेंदचन्दजी नामक ४ पुत्र विद्यमान हैं। इस समय आप चारों ही फर्म के व्यापार का उत्तमता से सचालन कर रहे हैं। आपका परिवार लोनार तथा आस पास के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है।

सेठ अखेचदजी—आपका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आपके यहाँ "हणुतमल मोतीलाल" नाम से बैङ्किंग, सराफी, कपडा का व्यापार तथा जिनिंग फेक्टरी का कार्य्य होता है। लोनार में आप दुकान मातबर है। सेठ उत्तमचन्दजी का जन्म सवत् १९६१ में लखमीचन्दजी का जन्म संवत् १९६५ तथा गेंदचन्दजी का जन्म सवत् १९६८ में हुआ। गेंदचन्दजी ने एफ० ए० तक शिक्षा पाई। आ हनुमान व्यायाम शाला का स्थापन किया। आप उत्साही युवक हैं। सेठ अखेचन्दजी के पुत्र नथमलजी तथा रतनचन्दजी पढते हैं। और उत्तमचन्दजी के पुत्र मदनचन्दजी बालक हैं।

सेठ पूनमचन्दजी सचेती का स्वर्गवास अपने बडे भ्राता मोतीलालजी के ८ मास बाद हुआ। आपके पुत्र माणकचन्दजी का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप 'हीरालाल पूनमचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। आपके कपूरचन्दजी, तेजमल तथा पारसमल नामक ३ पुत्र हैं। सेठ चुन्नीलालजी के त्र्यंबकलालजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र खुशालचन्दजी ने दगे के समय ठगाइयों को पकड़ाने में पुलिस को बहुत इमदाद दी थी। आपके छोटे भाई गणेशलालजी, मिश्रीलालजी तथा चम्पालालजी हैं।

सेठ थानमल चंदनमल संचेती, चिगंनपेठ (मद्रास)

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान डूडला (मारवाड) का है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के बाइस सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। सबसे पहिले इस परिवार के सेठ शेषमल "मेसर्स पूनमचन्द श्रीचन्द" के साझे में पूना में व्यापार करते थे। आप संवत् १९७६ की जेठ को स्वर्गवासी हुए। आपके चार भाई और थे जिनके नाम भीकमचन्दजी, प्रतापमलजी, थानमल तथा जेवंतराजजी थे। सेठ शेषमलजी के स्वर्गवास होजाने के बाद सवत् १९६० में थानमलजी ने चिगंनपेठ में "शेषमल थानमल" के नाम से दुकान स्थापित की। श्री शेषमलजी के पन्नालालजी, घेवरचन्द तथा मिश्रीमलजी नामक तीन पुत्र हुए जिसमें से मिश्रीमलजी, भीकमचन्दजी के यहाँ दत्तक रख दिये ग प्रतापमलजी के हीराचन्दजी तथा हस्तीमलजी नामक दो पुत्र हुए। हीराचन्दजी के भवरीलालजी त लेखचन्द्रजी नामक दो पुत्र हुए। संवत् १९६८ में शेषमलजी तथा थानमलजी दोनों भाई अलग २ हो गये। शेषमलजी के पुत्र पन्नालालजी "मेसर्स शेषमल पन्नालाल" के नाम से अलग स्वतत्र दु कांजीवरम् में करते हैं।

सेठ थानमलजी की फर्म इस समय चिगनपेठ में है। आप बडे सज्जन हैं। तथा अ जाति भाइयों का अच्छा सत्कार करते रहते हैं। आपकी यहा की पंच पंचापतियों की अच्छी प्रतिष्ठा है।

... जी सचना, लाखार (वरार)

मेहता विजयसिंहजी खजाची, अमीन भानपुरा (पेज नं० ४६

म मानत्र और प्रतिष्ठित मानी जाती है । आपके पुत्र चन्दनमलजी बाल्यका में ही । इस फर्म की ओर से दान धर्म और सार्वजनिक कामों में सहायताएँ दी जाती है ।

सेठ बालचन्दजी संचेती का परिवार, मोमासर

...वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्व पुरुष ढिंगरस नामक स्थान से चलकर मोमासर नामक ...। आगे चलकर इनके वंश में कुंभराजजी हुए। कुंभराजजी के रघुनाथजी, ताजसिंहजी, ... और सतीदासजी नामक पाँच पुत्र हुए। आप भाइयों ने सम्वत् १९०८ में मेसर्स ... के नाम से कलकत्ते में फर्म स्थापित किया। आप लोगों की व्यापार कुशलता से फर्म ... पूर्णिया, इस्लामपुर, पटनागोला आदि स्थानों पर आपकी शाखाएँ कायम हो गई। संवत् ... सब भाई अलग २ हो गये।

... के पुत्र बालचन्दजी ने अलग होते ही बालचन्द्र इन्द्रचन्द्र के नाम से व्यापार ... किया। इसमें आपको बहुत सफलता हुई। आपका मोमासर की पंच पंचायती में अच्छा ... इन्द्रचन्दजी, डायमलजी, सुगनमलजी और हीरालालजी नामक चार पुत्र हैं। आजकल ... हो गये हैं।

... "बालचन्द इन्द्रचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। आप बुद्धिमान् एवम् समझ- ...। आपके हाथों से इस फर्म की और भी तरक्की हुई है। आप धर्म में बड़े पक्के हैं। आपके ... और पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ डायमलजी और सुगनमलजी दोनों भाई ... मगर आपका थोड़ी ही उम्र में स्वर्गवास हो गया। डायमलजी के कोई पुत्र न था और ... गोविन्दरामजी एवं केवलचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। गोविन्दरामजी सेठ डायमलजी के यहाँ ...। वर्तमान में आप दोनों ही भाई सुगनमल गोविन्दराम के नाम से चलानी, जूट और ... करते हैं। आपकी दुकान का पता ४२ आर्मीनियन स्ट्रीट है। आप लोगों ने मोमासर में ... मकान बनवाकर सरकार को दिया है। यह परिवार जैन तेरापंथी सम्प्रदाय का ...

सेठ रूपचन्द छगनीराम संचेती, वैजापुर (निजाम)

... परिवार का मूल निवास टावरा (जोधपुर स्टेट) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन ... १८५ वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्वज व्यापार के लिये निजाम स्टेट के वैजापुर नामक ... के बाद तीसरी पीढ़ी में सेठ जयरामजी सचेती हुए। आपके हाथों से इस परि- ... को बहुत तरक्की मिली। आपने आसपास के ओसवाल समाज में अच्छा

... के धनीरामजी, बच्छराजजी तथा किशनदासजी नामक ३ पुत्र हुए। इन ... १८९९ में अलग २ हुआ। सेठ छगनीरामजी ने अपने पिताजी के बाद

व्यापार को जादा बढ़ाया। आपका शके १८१७ मे ७२ साल की आयु में स्वर्गवास हु
आपके पुत्र रूपचन्दजी संचेती का जन्म शके १८१२ मे हुआ। आपने अपनी फर्म पर बागायत के
को बहुत बढ़ाया है। इस समय आपके बगीचे में २ हजार झाड मोसुमी के और २ हजार झाड सतरे
इसके अलावा १ हजार झाड नीबू, अंजीर और अनार के हैं। इस प्रकार आपने नवीन कार्य का साह
स्थापन कर अपने समाज के सम्मुख नूतन आदर्श रक्खा है। आपके बगीचे के फल हैदराबाद तथा
भेजे जाते हैं। आपके यहाँ ३ हजार एकड भूमि में कृषि होती है। आप बडे मिलनसार तथा सरल
के व्यक्ति हैं। औरंगाबाद जिले में आप सबसे बडे कृषि तथा बागायात का काम करने वाले सज्जन

सेठ बच्छराजजी का स्वर्गवास शके १८१० में हुआ। आपके भीकचन्दजी तथा जेठमलजी
पुत्र हुए। आप दोनों बन्धुओं के क्रमश फकीरचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक पुत्र है। इनके या
तथा बागायात का व्यापार होता है। इसी प्रकार सेठ किशनदासजी शके १८२९ में स्वर्गवास
आपके पुत्र पूनमचन्दजी तथा दलीपचन्दजी हुए। इनके यहाँ कृषि का कार्य होता है। सेठ पूनमच
पुत्र उत्तमचन्दजी, लखीचन्दजी तथा पेमराजजी हैं।

सेठ भागचन्द जोगजी संचेती, लोनार

यह परिवार बबायचा (मारवाड़) का निवासी है। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज सेठ
८०।९० साल पूर्व लोनार आये। आप श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले स
आपका संवत् १९४८ में स्वर्गवास हुआ। आपके भागचन्दजी, रतनचन्दजी तथा खुशालचन्दजी
३ पुत्र हुए। इनमें सेठ भागचन्दजी विद्यमान हैं।

सेठ भागचन्दजी सचेती का जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप लोनार के ओसवाल स
प्रतिष्ठित व हिम्मत बहादुर सज्जन हैं। आपने रुई के व्यापार में बहुत सम्पत्ति कमाई तथा य
आपके पुत्र पुखराजजी तथा भीकमचन्दजी हैं। पुखराजजी की वय १९ साल की है। आपके यहाँ
चन्द रतनचन्द" के नाम से साहुकारी, रुई तथा कृषि का काम होता है। सेठ रतनचन्दजी के पुत्र
जी १२ साल के हैं। यह परिवार लोनार तथा आसपास के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित समझा ज

भंसाली

भसाली गौत्र की उत्पत्ति—संवत् ११९६ में लोद्रपुर पट्टन मे यादव कुल भाटी सगर
राजा राज करते थे। उनके कुलधर, श्रीधर तथा राजधर नामक ३ पुत्र थे। राजा सगर ने जै
जिनदत्तसूरिजी के उपदेश से अपने बडे पुत्र कुलधर को तो राज्य का स्वामी बनाया, तथा शे
जैन धर्म अंगीकार कराया। इन बन्धुओं ने चिंतामणि पार्श्वनाथजी का एक मंदिर बनवा कर जैना
से उसकी प्रतिष्ठा करवाई। भंडार की साळ में रहने के कारण इनकी गौत्र "भंडसाली" हुई। आगे
इन्हीं श्रीधरजी की अठारवीं पीढी में भसाली थाहरूशाह नामक एक बहुत प्रतापी पुरुष हुए।

...शाह—लोद्रवा मंदिर के "शतदल पद्मयन्त्र" नामक शिला लेख से, तथा भारत ... एपी ग्राफिया इण्डिका नामक ग्रंथ से थाहरूशाह के सम्बन्ध का निम्न वृत्त ज्ञात है—

"... काल में राजा सगर के पुत्र श्रीधर तथा राजधर ने जैन धर्म से दीक्षित होकर लोद्रपुर ... पार्श्वनाथजी का मंदिर बनवाया। राजा श्रीधर ने जो जैन मंदिर बनवाया था, वह ... के हमले के कारण लोद्रवा के साथ नष्ट हो गया। अतः संवत् १६७५ में जेसलमेर ... गोत्रीय सेठ थाहरूशाह ने उसका जीर्णोद्धार कराया और अपने वास स्थान में भी देरासर ... संग्रह किया। सेठ थाहरूशाह ने लोद्रवे के मंदिर की प्रतिष्ठा के थोडे समय बाद एक ... शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करके सिद्धाचलजी में खरतराचार्य श्री जिनराज सूरिजी से संवत् ... तीर्थंकरों के १४५२ गणधरों की पादुका वहाँ की खरतर वशी में प्रतिष्ठित कराई थी।"

...शाह के सम्पत्ति शाली होने के सम्बन्ध में निम्न लोकोक्ति मशहूर है कि थाहरूशाह ... का व्यापार करते थे। एक दिन रूपासिया ग्राम की रहने वाली एक स्त्री चित्रावेल की एंडुर ... में घी बेचने आई। थाहरूशाह ने उसका घी खरीदा और तोलने के लिये उसकी मटकी ..., जब घी निकालते २ उन्हें देर हो गई और मटकी खाली नहीं हुई तो उन्हें बडा ... और उन्होंने यह सब करामात एंडुरी की समझ इसे ले लिया। उस एंडुरी के प्रभाव से ... पास असंख्यात द्रव्य हो गया। जिससे उन्होंने अनेकों धार्मिक काम किये। इस समय इनके ... विद्यमान नहीं है।

भंसाली मेहता किशनराजजी (उर्फ मिनखराजजी) का खानदान, जोधपुर

... खानदान के पूर्वज भंसाली वीसाजी जेसलमेर के दीवान थे। ये राव चूंडाजी के समय में ... आये इन्होंने वीसेलाव तालाब बनवाया। इसके बाद नाडोजी, अखेमलजी तथा वेरी-सालजी ... पर युद्ध करते हुए मारे गये। इनकी धर्मपत्नी इनके साथ सती हुईं। ... भंसाली अपने बच्चों का वहाँ मुंडन कराते हैं। इन वेरीसालजी की चौथी पीढ़ी में ... इनके २ पुत्र हुए जिनके नाम भंसाली मेहता तेजसी, रायसी, तथा श्रीचंदजी थे। इनमें ... पीढ़ी में बोहरीदासजी हुए। इनके सादूलमलजी, मुलतानमलजी तथा सुलतान-... पुत्र हुए।

... सुलतानमलजी लेनदेन का काम करते थे। इनके सावंतमलजी, सुखराजजी, कुशलराज ... नामक ४ पुत्र हुए। भंसाली कुशलराजजी संवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके ... कपूरराजजी, सम्पतराजजी, सुकनराजजी, विशनराजजी तथा किशनराजजी ... नामक ६ पुत्र हुए। इनमें से भंसाली छगनमलजी सावंतमलजी के नाम पर दत्तक ... तथा पौत्र मगराजजी भंसाली हैं। भंसाली कपूरराजजी कलकत्ते में दलाली ... पुत्र ... आबकारी विभाग में हैं। सम्पतराजजी के पुत्र कनकराजजी कलकत्ते

मे सर्विस करते हैं। भसाली सुकनराजजी सबइन्स्पेक्टर पोलिस थे, इनका स्वर्गवास हो गया है भसाली विशनदासजी पोलीस विभाग में थे। अभी आप रिटायर हैं।

भसाली किशनराजजी (उर्फ मिनखराजजी)—आपका जन्म सवत् १९३६ में हुआ। सन् १८९७ से मारवाड राज की सर्विस में प्रविष्ट हुए। तथा महाराजा सरदारसिंहजी के समय प्रा सेक्रेटरी आफिस में क्लार्क हुए। पश्चात् आप सवत् १९६२ मे पोलिस कान्स्टेवल हुए, एव इस विभा अपनी होशियारी से बराबर तरक्की प ते गये सन् १९१२ से १४ सालों तक आप पब्लिक प्रासी क्यूटर तथा सन् १९२६ से आप सुपरिन्टेन्डेन्ट पोलीस के पद पर कार्य्य करते हैं। आपके होशियारी पूर्ण व की एवज में जोधपुर दरबार तथा कई उच्च पदाधिकारियों ने आपको सर्टिफिकेट दिये हैं। आपके ४ पु जिनमें बड़े जवरराजजी बी० ए० एल० एल० बी जोधपुर में वकालात करते है, कुदनराजजी ने बी० ए० शिक्षा,पाई है। इनसे छोटे रतनराजजी व चंदनराजजी हैं।

भंसाली रतनराजजी कुशलराजजी का खानदान, जोधपुर

ऊपर लिख आये हैं कि इस परिवार के पूर्वज भंसाली जगन्नाथजी के तीसरे पुत्र श्रीचंदजी इनके ५ पाँच पुत्र हुए, जिनमें मझले पुत्र माणकचदजी थे। इनके नाम पर मूलचन्दजी तथा उनके पर वच्छराजजी दत्तक आये। इनका स्वर्गवास संवत् १९०५ मे हुआ। वच्छराजजी के पुत्र फतहराजजी इस परिवार के पास सोजत परगने का खांभल गांव पट्टे था। फतहराजजी ने अपने पूर्वजों की एकत्रि हुई सम्पति को खूब खर्च किया। सवत् १९५२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके उदयराजी उम्मेदरा तथा पेमराजजी नामक ३ पुत्र हुए।

भंसाली उदयराजजी नागोर के मुसरफ तथा महाराणीजी (चव्हाणजी) जोधपुर के काम थे। संवत् १९६४ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र फौजराजजी के पुत्र किशनराजजी, मोहनरा सोहनराजजी तथा उगमराजजी हैं।

भंसाली उम्मेदराजजी भी राज्य की नौकरी करते रहे, इनका स्वर्गवास सवत् १९६९ में गया। इनके जोधराजजी, रतनराजजी, देवराजजी, रूपराजजी तथा करणराजजी नामक पाँच पुत्र हु इनमें रूपराजजी के पुत्र कुशलराजजी, रतनराजजी के नाम पर दत्तक आये है। भसाली रतनराजजी जन्म सवत् १९२० हुआ था। आप लगभग १२ साल तक खजाने के नायब दरोगा, बारह साल सब इन्स्पेक्टर पोलिस तथा दस साल तक कोर्ट आफ वार्डस् के अकाउण्टेण्ट रहे। सन् १९२८ में रिट हुए तथा फिर बिलाडा तथा भँवराणी ठिकाने में २ साल तक मैनेजर रहे। इधर कुछ मास पूर्व आ स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र कुशलराजजी आडिट आफिस जोधपुर में सर्विस है। इन्ही करणराजजी के पुन मुकुन्दराजजी भी आडिट आफिस में सर्विस करते है।

भंसाली पेमराजजी का स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पौत्र भेरूराजजी डाक तथा सुकनराजजी ट्रिव्यूट इन्स्पेक्टर है।

सेठ प्रतापमलजी भनसाली, डूँगरगढ

सेठ गोविन्दरामजी भनसाली, बीकानेर

कुँ॰ हीरालालजी भनसाली, डूँगरगढ़.

कुँ॰ मिखनचन्दजी भनसाली, बीकानेर.

भंसाली मेहता अर्जुनराजजी का खानदान, जोधपुर

इस परिवार के पूर्वज भंसाली बोहरीदासजी, जोधपुर में लेन देन का व्यापार करते थे। [illegible], मुल्तानमलजी तथा सुल्तानमलजी नामक तीन पुत्र हुए, भंसाली मेहता मुल्तान- [illegible] साहूकार थे, तथा महाराजा मानसिंहजी के समय में सायरात के इजारे का काम [illegible] भी आपके द्वारा रकमें उधार दी जाया करती थी। सेठ मुल्तानमलजी के गजराजजी, [illegible] नामक तीन पुत्र हुए। नगराजजी भी सायरातों के इजारे का काम करते रहे। [illegible] आपका स्वर्गवास हुआ। गजराजजी के पुत्र दौलतराजजी तथा सज्जनराजजी ज्युडिशियल [illegible] रहे। इस समय इनके पुत्र कानराजजी व मानराजजी हैं।

[illegible] नगराजजी के पुत्र खींवराजजी तथा भींवराजजी हुए। खींवराजजी २८ साल से ज्युडि- [illegible]। भींवराजजी हैदराबाद में व्यापार करते थे। आप संवत् १९६० में स्वर्गवासी हुए। [illegible] पुत्र अर्जुनराजजी व किशोरमलजी हैं। मेहता अर्जुनराजजी का जन्म संवत् १९६१ में [illegible] सन् १९२५ में बी० ए० पास किया। सन् १९२६ से आप रेलवे आडिट आफिस में [illegible] इस समय इन्स्पेक्टर आप अकाउण्टेण्ट हैं। भंसाली किशोरमलजी की वय २५ साल [illegible] सन् १९३० में बा० एस० सी० एल० एल० बी० की परीक्षा पास की है। सन् १९३१ से [illegible] " के नाम से जोधपुर में इञ्जनियरिंग तथा कंट्राक्टिंग का काम करते हैं।

सेठ प्रतापमल गोविन्दराम भंसाली, कलकत्ता

इस परिवार वाले सज्जन मारवाड़ से बीकानेर राज्य के रायसर नामक स्थान पर आये। [illegible] निवास कर यहाँ से रानीसर नामक स्थान में जाकर रहने लगे। इस परिवार में सेठ [illegible]। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः सेठ रतनचन्दजी एवम् सेठ पूर्णचन्दजी था। [illegible] के तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ पदमचन्दजी, सेठ देवचंदजी एवम् [illegible]। सेठ पूरणचन्दजी के प्रतापमलजी एवम् मूलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ [illegible] देहान्त हो से स्वर्गवास हो गया।

[illegible]—प्रारम्भ में आप देश से सिराजगंज के पास 'एलंगी' नामक स्थान पर गये। [illegible] का व्यवसाय शुरू किया। इस फर्म में आपने अपनी होशियारी एवम् बुद्धिमानी [illegible]। मगर दैव दुर्योग से इस फर्म में आग लग गई और आपकी की हुई सारी [illegible] गया। इसके पश्चात् आप अपने सारे जीवन भर नौकरी - ही करते रहे। आपका [illegible] में हो गया। आपके गोविन्दरामजी नामक एक पुत्र हुए।

[illegible]—आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आजकल आपका परिवार बीकानेर [illegible] बारह सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। प्रारम्भ में आपने सर्विस की। आप बड़े व्यापार [illegible] में आपकी तबियत उकता गई एवम् आपके दिल में स्वतन्त्र व्यवसाय करने की [illegible] संवत् १९५६ में यह सर्विस छोड़ दी तथा हनुमतराम तुलसीराम के साझे में

फर्म स्थापित की। यह साझा सवत् १९६३ तक चलता रहा। इसके बाद इसी साल आपने अ निज की फर्म मेसर्स प्रतापमल गोविन्दराम के नाम से की। तब से आप इसी नाम से अपना व्यव कर रहे हैं। आपका जीवन, बड़ा सादा जीवन है। विद्या से आपको बड़ा प्रेम है। करीब तीन र पूर्व आपने बीकानेर में गोलछों की गवाड़ मे श्री गोविन्द सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की। सब प्रबन्ध आपकी ओर से हो रहा है। आपके बा० भीखनचन्दजी नामक एक पुत्र है। आप उत नवयुवक हैं आजकल आप फर्म के कार्य्य में सहयोग दे रहे हैं।

सेठ प्रतापमलजी—आप इस फर्म के भागीदार हैं। आप श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्र के मानने वाले हैं। प्रारम्भ में आपने भी नेलफामारी में केसरीचन्द मोतीचन्द के यहाँ सर्विस कुछ वर्षों बाद उनकी नौकरी छोड़ दी एवम् अपने भतीजे सेठ गोविन्दरामजी के साथ प्रतापमल गोविन्द के फर्म में साझा कर लिया। जो इस समय भी है। आपके चार पुत्र है जिनके नाम क्रमश हीरालाल आसकरनजी, सुगनचन्दजी एवम् जैसराजजी है। आप लोगो का आजकल देश मे निवास र श्री डूंगरगढ़ है।

हीरालालजी मैट्रिक पास है तथा जैसराजजो इण्टर मिजियेट कामर्स की स्टेडी कर रहे है। सब भाई फर्म के कार्य में सहयोग देते हैं। सेठ प्रतापमलजी के भाई मूलचन्दजी का स्वर्गवास हो गया आपके जेठमलजी एवम् सुमेरमलजी नामक दो पुत्र हैं। जेठमलजी एफ० ए० पास करके डाक्टरी पढ़ रहे दूसरे दुकान का कार्य्य करते हैं। इस समय इस परिवार की कलकत्ता में भिन्न २ नामों से भिन्न व्यवसाय करने वाली ३ दुकानें चल रही हैं।

सेठ हनुतमल हरकचन्द भंसाली, छापर

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ खेतसीजी ने करीब १०० वर्ष पूर्व छापर मे आकर नि किया। आपके हनुतमलजी, उमचन्दजी और हरकचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमे से हनुतम एवम् हरकचन्दजी का परिवार शामिल में व्यवसाय कर रहा है। सेठ हनुतमलजी करीब ६० वर्ष घोड़ामारा गये एवम् वहाँ अपनी फर्म स्थापित की। आप दोनों भाई बडे प्रतिभा सम्पन्न एवम् व्याप व्यक्ति थे। आपके व्यापार सचालन की योग्यता से फर्म के काम में बहुत सफलता रही। आपने र व्यवसाय को विशेष रूप से बढ़ाने के लिये डोमार, कलकत्ता, इसरगज, अनंतपुर उल्लीपुर, (रगपुर) इत स्थानों पर भिन्न २ नामों से फर्में स्थापित की। सेठ हनुतमलजी का स्वर्गवास हो गया। आप के समय बुधमलजी दत्तक पुत्र हैं। आप ही फर्म का सचालन करते हैं। आपके भंवरलालजी नामक एक पुत्र

सेठ हरकचन्दजी इस समय विद्यमान है। आपके हाथों से भी फर्म की बहुत उन्नति इस समय आपने अवसर ग्रहण कर लिया है। आपका छापर की पच पंचायती मे अच्छा मान सम है। आपके बुधमलजी, मालचन्दजी, डालचन्दजी, थानमलजी और माणकचन्दजी नामक पाँच पुत्र बड़े पुत्र आपके बड़े भाई हनुतमलजी के नामपर दत्तक गये। शेष अपने व्यापार का सचालन करते आप सब सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं।

बम्ब

सेठ पन्नालाल नारमल बंब, भुसावल

इस कुटुम्ब के मालिकों का मूल निवास स्थान पीही (जोधपुर स्टेट) में है। लगभग १०० ... नारमलजी बम्ब ने मारवाड़ से आकर इस दुकान का स्थापन किया। आपके पुत्र सेठ ... व पन्नालालजी बम्ब हुए।

... गुलाबचन्दजी बम्ब—आपके हाथों से व्यापार को विशेष उन्नति प्राप्त हुई। आप अपने स्वर्ग- ... समय १५। २० हजार रुपयों का दान कर गये थे। इस रकम में से ५। ६ हजार की ... में एक धर्मशाला बनवाई गई है। आपका स्वर्गवास सन् १९२४ में हुआ। आपके ... तथा ... चन्दजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

... पन्नालालजी बम्ब—आप सेठ नारमलजी के छोटे पुत्र हैं। तथा इस परिवार में बड़े हैं। आप ... खानदेश, तथा बराड़ के नामी ओसवाल कुटुम्बों में है। इस परिवार ने श्री भूरा- ... तथा पदमाबाई कन्या पाठशाला को सहायताएं दी हैं। यह परिवार स्थानकवासी ... मानता है।

... लालजी बम्ब—आप सेठ गुलाबचन्दजी के बड़े पुत्र हैं। आप शिक्षित तथा समझदार ... तथा एवं व्यापार को बड़ी सफता से संचालित करते हैं। आप भुसावल म्युनिसिपेलिटी ... मेम्बर रहे हैं। शिक्षा के कार्यों में दिलचस्पी से हिस्सा लेते हैं। आपके छोटे भ्राता ... आपके साथ व्यापार में भाग लेते हैं। आपके यहां गुलाबचन्द नारमल बम्ब के नाम से ... तथा कृषि का और पन्नालाल नारमल बम्ब के नाम से सराफी व्यापार होता है।

सेठ सरूपचंद भूरजी बम्ब, कोपरगांव (नाशिक)

इस परिवार का मूल निवास स्थान कुरडाया (अजमेर के पास) है। यह परिवार स्थानक ... है। मारवाड़ से सो वर्ष पूर्व सेठ दलीपचन्दजी के पुत्र नन्दरामजी पैदलरास्ते से ... नामक स्थान में आये। इनके पुत्र भूरजी भी यहीं व्यापार करते रहे। संवत् ... स्वर्गवास हुआ। आपके रामचन्दजी तथा सरूपचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें ... गांव (नासिक) गये। संवत् १९७७ में आपका स्वर्गवास हुआ। इस समय ... तथा ... चन्दजी वरण गाव में व्यापार करते हैं।

... —आपका जन्म १९२८ में हुआ। आप संवत १९४० में कोपरगाव ... से चतुराई तथा हिम्मत पूर्वक द्रव्य उपार्जित कर अपने समाज में अच्छी ... आपके यहां "सरूपचन्द भूरजी बम्ब" के नाम से आढ़त, साहुकारी तथा कृषि

का काम होता है। आपके पुत्र मोतीलालजी, हीरालालजी, पन्नालालजी तथा भ्रमरलालजी व्यापार भाग लेते हैं, तथा फूलचन्दजी और मसुखलालजी छोटे हैं। यह परिवार नासिक जिले के ओस समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। मोतीलालजी बम्ब के ४ पुत्र हैं।

लाला निहालचन्द नन्दलाल बम्ब, लुधियाना

यह खानदान लगभग पांच सौ वर्षों से यहां निवास कर रहा है। इस परिवार के लाला सुक्खामलजी के लाला गुलाबामलजी बूंटामलजी, तथा भवानीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। लाला गुलाबामलजी, के लाला निहालमलजी, नरायणमलजी, सावनमलजी तथा पंजाबरायजी नामक ४ हुए। लाला निहालमलजी बडे धर्मात्मा व्यक्ति थे। आप यहां की ओसवाल समाज में नामां व्यक्ति थे। संवत् १९४९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र नन्दलालजी तथा चन्दूलालजी थे

लाला नन्दलालजी लुधियाना के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, आपका संवत् १ में स्वर्गवास हुआ। आपके लाला जगन्नाथजी, अमरनाथजी, मोहनलालजी तथा पन्नालालजी नाम पुत्र हुए। इनमें लाला अमरनाथजी मौजूद हैं। इस समय आप अपनी "निहालचन्द नन्दलाल" न फर्म का संचालन करते हैं। आपका परिवार पुश्तहानपुश्त से चोधरायत का काम करता आ रहा आपके पुत्र मदनलालजी हैं।

लाला गुलबामलजी के द्वितीय पुत्र लाला नारायणलालजी के पुत्र लाला खुशीरामजी बडे हूर तथा धर्मात्मा व्यक्ति हुए। आपने यहां एक उपाश्रय भी बनवाया था।

लाला कालूमल शादीराम बम्ब, पटियाला

यह परिवार सौ वर्ष पूर्व दिल्ली से पटियाला आकर आबाद हुआ। इस परिवार में कालूरामजी तथा कन्हैयालालजी नामक २ बंधु हुए। इनमें कन्हैयालालजी के शादीरामजी, गोंदीरा तथा राजारामजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला शादीरामजी के लाला पानामलजी, सुचनरामजी दौलतरामजी नामक पुत्र हुए। इस समय सुचनरामजी के पुत्र मगतरामजी तथा तरसेपचन्दजी दौलतरामजी के पुत्र संतलालजी विद्यमान हैं।

लाला गोंदीमलजी का जन्म संवत् १९१५ में हुआ था। आप पटियाला के ओसवाल स में प्रसिद्ध व्यक्ति थे। आप चौधरी भी रहे थे। संवत् १९७० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके चांदनरामजी, धर्मचन्दजी तथा मातूरामजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें लाला चांदनरामजी का १९७८ में स्वर्गवास हुआ। लाला धर्मचन्दजीका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप पटियाल मशहूर चौधरी हैं, पटियाला दरबार ने आपको दुशाला इनायत किया। आपके यहां जनरल ठेकेदार काम होता है। आपके पुत्र कश्मीरीलाल तथा वीरूरामजी बालक हैं। लाला मातूरामजी वय ३४ साल की है। आप जनरल मरचेंटाइज का व्यापार करते हैं। यह परिवार स्थानक आम्नाय का मानने वालाहै।

... (पन्नालाल नारमल), भुसावल

श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया बी ए एल,एल. बी, अहमदनगर

फिरोदिया

श्री उम्मेदमलजी फिरोदिया का खानदान, अहमदनगर

[illegible] का मूल निवास स्थान पीपाड (मारवाड) का है । आपकी आम्नाय श्वेता-[illegible] है । इस खानदान में श्री उम्मेदमलजी फिरोदिया सबसे पहले अहमदनगर जिले में आये । [illegible] और बुद्धिमानी बहुत बढ़ी चढी थी । यहां आकर आपने साहसपूर्वक पैसा प्राप्त किया और [illegible] की, वहाँ से फिर अहमदनगर आये और कपडे की दुकान स्थापित की । आपके [illegible] नाम खूबचन्दजी और किशनदासजी थे । अपने पिताजी के पश्चात् आप दोनों भाई [illegible] का व्यापार करते रहे । इनमें से फिरोदिया खूबचन्दजी का स्वर्गवास सन् १९०१ में और [illegible] का सन् १८९७ में होगया ।

[illegible] किशनदासजी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः शोभाचन्दजी, माणिकचन्दजी [illegible] थे । आप तीनों भाई भी कपडे और मनीलेण्डिङ्ग का व्यापार करते रहे । इनमें से [illegible] का स्वर्गवास सन १९११ में हुआ । आप बडे धार्मिक, शांत प्रकृति वाले और मिलनसार [illegible] पुत्र कुन्दनमलजी फिरोदिया हुए ।

[illegible] फिरोदिया—आपका जन्म सन् १८९५ में हुआ । आपने सन् १९०७ में बी० [illegible] १९१० में एल० एल० बी० की डिग्रियाँ प्राप्त कीं । आप सन् १९०८ में फर्ग्यूसन कालेज [illegible] । उस समय भारत में ओसवालों के इने गिने शिक्षित युवकों में से आप एक थे । [illegible], उदार, और समाज सुधारक पुरुष हैं । जैन जाति के सुधार और अभ्युदय [illegible] हैं । अहमदनगर की पांजरापोल के आप सत्रह वर्षों से सेक्रेटरी हैं । आप यहा के [illegible] चेयरमेन, अहमदनगर के आयुर्वेद विद्यालय, अनाथ विद्यार्थी गृह और हाईस्कूल [illegible] मेम्बर हैं । सन् १९२६ में आप बम्बई की लेजिस्लेटिव कौंसिल में [illegible] पार्टी की ओर से प्रतिनिधि चुने गये थे । इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षण संस्था के चेअर-[illegible] नगर कांग्रेस कमेटी के भी आप बहुत समय तक सेक्रेटरी रहे हैं । अहमदनगर के [illegible] हैं । इसी प्रकार जैन कान्फ्रेंस, जैन बोर्डिंग पूना इत्यादि सार्वजनिक [illegible] घनिष्ट सम्बन्ध है । कहने का तात्पर्य्य यह है कि आप भारत के जैन समाज [illegible] हैं । आपके तीन पुत्र हैं । जिनके नाम श्री नवलमलजी मोतीलालजी और [illegible] हैं ।

[illegible]—आपका जन्म सन् १९१० में हुआ । आपने सन् १९३३ में बी० [illegible] । आप बडे देश भक्त और राष्ट्रीय विचारों के सज्जन हैं । सन् १९३० [illegible] में आपने कालेज छोड दिया । तथा आन्दोलन में भाग लेते हुए ९ मास

की जेल में गये। राष्ट्रीय की तरह सामाजिक स्प्रिट भी आपमें कूट २ कर भरी है। आपने अपने
परदा प्रथा का वहिष्कार कर दिया है। अहमदनगर के ओसवाल युवकों में आपका सार्वजनिक
बहुत ही अग्रगण्य है। आपके छोटे भाई मोतीलालजी फिरोदिया का जन्म सन् १९१२ में हुआ।
इस समय बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आप बड़े योग्य और सज्जन हैं। आपसे छोटे भाई हस्ती
हैं। इनकी वय १३ साल की है।

बोरदिया

सेठ अनोपचन्द गंभीरमल, बोरदिया उदयपुर।

इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ रखबदासजी नाथद्वारा से उदयपुर आये। आपने यहाँ मह
भीमसिंहजी के राजत्व काल में सम्वत् १८८० से १९०७ तक राज्य में सर्विस की। आपके जिम्मे
का काम था। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर महाराणा ने आपको परवाने भी बख्शे थे। आपके अ
अनोपचन्दजी, रूपचन्दजी और स्वरूपचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। आप लोग अलग अलग हो गये
स्वतन्त्र रूप से व्यापार करना प्रारम्भ किया। सेठ अनोपचन्दजी व्यापारिक दिमाग के सज्जन
आपने अपनी फर्म की अच्छी उन्नति की। आपके गोकलचन्दजी और गम्भीरमलजी नामक दो पुत्र
यह फर्म सेठ गम्भीरमलजी की है।

सेठ गम्भीरमलजी शांत स्वभाव के व्यापार चतुर पुरुष थे। आपके समय में भी फर्म की
उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र सेठ फोजमलजी और सेठ जुहार
दोनों भाई फर्म का संचालन करते हैं। आप लोग मिलनसार हैं। सेठ फौजमलजी के सुल्तान
और जीवनसिंहजी नामक पुत्र हैं। सुल्तानसिंहजी योग्य और मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल अ
फर्म का संचालन भी करते हैं। सेठ जुहारमलजी के मालचन्दजी, छोगालालजी, नेमीचन्दजी, चाँद
और सूरजमलजी नामक पाँच पुत्र हैं। प्रथम दो व्यापार में योग देते हैं। तीसरे बी० ए० में पढ़ र
इस समय आप लोग उपरोक्त नाम से बैंकिंग हुंडी चिट्ठी कपास वगैरह का अच्छा व्यापार करते हैं।

डाक्टर कुशलसिंहजी चौधरी, कोठियां (शाहपुरा) का खानदान

इस परिवार के पूर्वज मेवाड़ के हुरड़ा नामक ग्राम में रहते थे। वहाँ से महाराजा उम्मेदसिं
शाहपुराधिपति के राजत्वकाल में यह परिवार कोठियाँ आया। उस समय महाराजा के पौत्र कुँवर रणसिं
की सेवा चौधरी गजसिंहजी ने विशेष की। इससे प्रसन्न होकर राज्यासीन होने पर रणसिंहजी ने
कोठियाँ में कई सम्मान बख्शे। उसके अनुसार बसंत, होली, शीतलाअष्टमी, रक्षाबन्धन, दशहरा, व ग
के त्यौहारों पर गाव के पटेल पंच 'चौधरीजी' के मकान पर आते हैं, तथा सदा से बंधे हुए दस्तूरों का
करते हैं। होली के एहदे में दमामी लोग किले में दरबार की पीढ़ियों के साथ चौधरीजी की पीढ़ियां

[illegible] विवाह में चौधरीजी की हवेली पर "राम राम" करने जाता है। इत्यादि सम्मान [illegible] प्राप्त हुए, इतना ही नहीं, इनके वंशजों को गजसिंहपुरा, जयसिंहपुरा, गणपतियापुरा, [illegible] जागीरी में मिल थे। चौधरी गजसिंहजी को शाहपुरा दरबार ने बहुत से रुक्के बख्शे [illegible], अभयराजजी तथा उम्मेदराजजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें चौधरी बच्छराजजी [illegible] का कार्य किया। इनके तीसरे भाई चौधरी उम्मेदराजजी को उदयपुर दरबार [illegible] तथा हुरढा में जागीर इनायत की। चौधरी अभयराजजी के पौत्र अर्जुनसिंहजी [illegible] में बहुत वरगशाही के काम किये। आप कुंभलगढ़ की हुकूमत पर भी रहे। इनके [illegible] में कामदार कोछोला तथा कौंसिल के मेम्बर रहे। आपको अपनी जाति की पचायती [illegible] सम्मान दिया था।

[illegible] राजजी के पुत्र फतहराजजी हुए। इनके पुत्र स्योलालसिंहजी को भी शाहपुरा दरबार [illegible] दिये थे। इनके कल्याणसिंहजी, जालमसिंहजी तथा रघुनाथसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए। [illegible] मारवाड़ परगने में हुकूमतें करते रहे। आपको शाहपुरा दरबार महाराजा माधोसिंहजी [illegible] थी। आपके नाम पर रघुनाथसिंहजी दत्तक आये। चौधरी रघुनाथसिंहजी ने [illegible] समय कोटडी कोठियाँ की सरहद के फैसले में इमदाद दी इसलिये प्रसन्न होकर [illegible]। इनके गम्भीरसिंहजी, किशोरसिंहजी, सगतसिंहजी तथा सवाईसिंहजी नामक ४ पुत्र [illegible] सगतसिंहजी कोठियाँ में निवास करते हैं। आपने महकमे कारखानेजात तथा [illegible]। आपको ओकारे का सम्मान प्राप्त है। आपने नौरतनसिंहजी, लछमणसिंहजी [illegible] नामक ३ पुत्र हुए। इनमें कुशलसिंहजी विद्यमान हैं।

[illegible] कुशलसिंहजी का जन्म सम्वत् १९५९ में हुआ। अजमेर से इंटरमिजिएट की परीक्षा [illegible] का अध्ययन किया सन् १९२९ में एल० एम० ओ० की डिगरी प्राप्त की। इसके [illegible] डिप्लोमा भी प्राप्त किया। सन् १९३० से शाहपुरा स्टेट में स्टेट मेडिकल ओफीसर [illegible] महाराजा ने प्रसन्न होकर जागीरी बख्शी है, आपके कार्यों से पब्लिक बहुत खुश [illegible] नामक एक पुत्र है। इस परिवार में चौधरी जालिमसिंहजी के पौत्र समर्थसिंहजी [illegible] रहते हैं। इनके पुत्र इन्द्रसिंहजी हैं।

[illegible] इस कुटुम्ब में समर्थसिंहजी, जोधसिंहजी, वल्लभसिंहजी, सुगनसिंहजी, चाँदसिंहजी, [illegible] नामक व्यक्ति विद्यमान हैं। इनमें चौधरी वल्लभसिंहजी ने शाहपुरा स्टेट [illegible] व हाकिमी की। आपको शाहपुरा पचायती ने "श्री" का सम्मान दिया है।

कीमती

सेठ [illegible]नालाल रामलाल कीमती, हैदराबाद (दक्षिण)

[illegible] का मूल निवास रामपुरा (इन्दौर स्टेट) है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय [illegible] इस परिवार में सेठ रायसिंहजी धूपिया रामपुरे में प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं, यह

खानदान पहले धूपिया परिवार के नाम से पहचाना जाता था। आगे चलकर इस परिवार में सेठ लालजी तथा पन्नालालजी कीमती हुए। इन भाइयों में सेठ पन्नालालजी का जन्म सम्वत् १९०१ में रामपुरे से यह खानदान इंदौर तथा मंदसोर गया। तथा यहाँ से सेठ पन्नालालजी सम्वत् १९ हैदराबाद आये। आप बडे धर्मप्रेमी तथा साधुभक्त पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७३ में आपके जमनालालजी तथा रामलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ जमनालालजी रामलालजी कीमती—सेठ जमनालालजी का जन्म सम्वत् १९३५ में आप दोनों भाइयों ने अपने पिताजी की मौजूदगी में ही हैदराबाद में जवाहरात आदि का व्यापार कर दिया था, तथा इस व्यापार में आप बन्धुओं ने अच्छी सम्पत्ति उपर्जित की। हैदराबाद में का जमने पर आपने इंदोर में भी अपनी एक शाखा खोली। सेठ जमनालालजी कीमती के एक पुत्र सुखल हुए थे, आप बडे होनहार प्रतीत होते थे, लेकिन ३-४ साल की अल्पायु में इनका स्वर्गवास हो ग इनके नाम पर मदनलालजी दत्तक लिये गये। रामलालजी कीमती ने रोशनलालजी कीमती को दत्तक था, लेकिन इनका भी शरीरान्त हो गया। सेठ जमनालालजी कीमती ने अपना उत्तराधिकारी अप भाई रामलालजी को बनाया है, तथा रामलालजी ने सम्पतलालजी को अपना दत्तक प्रगट किया है। जमनालालजी तथा रामलालजी ने सुखलालजी के स्मरणार्थ पचास हजार रुपया, तथा रामलालजी की के स्वर्गवासी हो जाने पर १ लाख रुपया धार्मिक कामों के लिये निकाले जाने की घोषणा की है।

इस परिवार ने सेठ पन्नालालजी तथा सुखलालजी के स्मर्णार्थ रामपुरा में "जमनालाल रा कीमती लायब्रेरी" का उदघाटन किया है। आपने हैदराबाद में एक धर्मशाला बनवाई। हैदराबा मारवाडी लायब्रेरी के लिये एक "कीमती भवन" बनवाया, इसी प्रकार यहाँ स्थानक के लिये एक दिया। आप एक जैन ग्रन्थमाला प्रकाशित कर मुफ्त वितरित करते हैं। इन्दोर में आपकी ओर जैन कन्या पाठशाला चल रही है, तथा यहाँ भी शुभ कामों के लिये एक बिल्डिंग दी है। आपकी जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला में एक जैन बोर्डिंग हाउस बनवाया गया है, इसी तरह मदसौर में इन बन्धु एक प्रसूति गृह बनवाया है। इसी तरह के धार्मिक तथा लोकोपकारी कार्यों में आप लोग लेते रहते हैं। इस समय इन कीमती बन्धुओं के यहाँ सुलतान बाजार रेसिडेंसी हैदराबाद में जमन रामलाल कीमती के नाम से बेंकिंग जवाहरात का व्यापार होता है। तथा यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों फर्म मानी जाती है। हैदराबाद सिकराबाद, इन्दौर आदि में आपके कई मकानात हैं। आपके यहां खजूरीबाजार में भी बेंकिंग व्यापार होता है।

पीतलिया

सेठ बदीचन्द वर्द्धमान पीतलिया, रतलाम

इस परिवार के बुजुर्गों का मूल निवास स्थान कुम्भलगढ़ (मेवाड) है। वहाँ इस परिवा राज्य की अच्छी २ सेवाएँ की थीं। वहीं से इस परिवार के सज्जन सेठ वीराजी ताल (जावरा स्टेट) ने

... पातल्या, रतलाम

सेठ जमनालालजी कीमती, हैदराबाद

... साधारण दुकानदारी का काम प्रारम्भ किया। सेठ वीराजी के पश्चात् सेठ माणकचंद ... ने क्रमश इस फर्म के कार्य का संचालन किया। आपका ताल की जनता में ...। सेठ गिरधीचंदजी के अमरचंदजी, बच्छराजजी और सौभागमलजी नामक तीन पुत्र ... आप तीनों ही भ्राताओं के वंशज क्रमशः रतलाम, जावरा और ताल में अलग २ अपना ... हैं।

...—आपने संवत् १९११ में रतलाम में उपरोक्त नाम से फर्म खोली। साथ ही आपने ..., मिलनसारी और कठिन परिश्रम से फर्म के व्यवसाय में अच्छी तरक्की प्राप्त की। आप ... प्रम सराहनीय था। आपके द्वारा इन दोनो लाईनों में बहुत काम हुआ। स्थ.नक- ... म आपका अपने समय में प्रधान हाथ रहता था। राज्य में भी आपका बहुत सम्मान ... स आपको 'सेठ' की उपाधिप्राप्त हुई थी। आप बडे प्रतिभा सम्पन्न, कार्य्य कुशल और ...। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके वर्द्धमानजी नामक एक पुत्र हैं।

...—आप बडे मिलनसार एवम जाति सेवक सज्जन हैं। आपने भी जाति की सेवा ...। आप अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी रहे। ... के भी आप सेक्रेटरी थे। आपका स्थानकवासी समाज में अच्छा प्रभाव एवम ...। आपका व्यापार इस समय रतलाम एवम इन्दौर में हो रहा है।

सेठ भगवानदास चन्दनमल पीतलिया, अहमदनगर

... वालों का खास निवासस्थान रीया (मारवाड) में हैं। आप श्वेताम्बर जैन ... को माननेवाले है। रींया (मावाड़) से करीब १५० बरस पहले सेठ भगवान- ... से चलकर अहमदनगर आये और यहाँ पर आकर अपनी फर्म स्थापित की। ... हुए। आपका स्वर्गवास केवल २५ वर्ष की उम्र में ही हो गया। आपके पश्चात ... रंभाबाई ने इस फर्म के काम को संचालित किया। इन्होंने साधु साध्वियों के ... बनवाया। भगवानदासजी के कोई सन्तान न होने से आपके यहाँ चन्दनमलजी ...। चन्दनमलजी का जन्म सं० १९२९ में हुआ। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। ... १९८८ में हो गया। आप बडे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपके स्वर्गवास के ... का दान दिये गये। आपके पुत्र मोतीलालजी और भ्रमरलालजी हैं।

... का जन्म संवत् १९६२ में हुआ। तथा भ्रमरलालजी का जन्म संवत् १९७१ में ... और योग्य व्यक्ति है। भ्रमरलालजी इस समय मैट्रिक में पढ़ रहे है। इस ... और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी बडी रुचि रही है।

सेठ खेतसीदासजी जम्मड़ का परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के लोग जम्मड़ गौत्र के सज्जन हैं। बहुत वर्षों से ये लोग तोल्यासर (बीकाने नामक स्थान पर रहते आ रहे थे। इस परिवार में सेठ उम्मेदमलजी हुए। आप तोल्यासर ही में रहे साधारण लेन तथा खेती बाडी का काम करते रहे। आपके खेतसीदासजी नामक एक पुत्र हुए। तोल्यासर को छोडकर, जब कि सरदार शहर बसा, व्यापार के निमित्त यहाँ आकर बस गये। यहाँ के १२ वर्ष पश्चात् याने संवत् १९०८ में यहीं के सेठ बींजराजजी दूगड, सेठ गुलाबचन्दजी आजेड और चौथमलजी आचलिया के साथ २ कलकत्ता गये। तथा सब ने मिलकर वहाँ सेठ मौजीराम खेतसीदास नाम से सामलात में अपनी एक फर्म स्थापित की। मालिकों की बुद्धिमानी एवम् व्यापार चातुरी से फर्म की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी। इसके पश्चात् सवत् १९२८ में सेठ बींजराजजी ए सेठ खेतसीदासजी ने उपरोक्त फर्म से अलग होकर अपनी नई फर्म मेसर्स खेतसीदास तनसुखदास के से खोली। यह फर्म भी ४० वर्ष तक चलती रही। इस परिवार की सारी उन्नति इसी फर्म से हुई। खेतसीदासजी का स्वर्गवास सवत् १९३६ में ही हो गया था। आपके २ पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमश कालूरामजी एवम् सेठ अनोपचंदजी (दूसरा नाम नानूरामजो) है।

सेठ कालूरामजी का जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आपके छोटे भाई सेठ अनोपचंदजी थे। द भाई बडे प्रतिमा सम्पन्न और होशियार व्यक्ति थे। आप लोगों ने व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित सामाजिक बातों पर भी आपका बहुत ध्यान था। पंच पंचायती के प्राय सभी कार्यों में आप लोग सह प्रदान किया करते थे। सेठ कालूरामजी बडे स्पष्ट वक्ता और निर्भीक समाज सेवी थे। सेठ अनोपचन्दजी अपने भाई को सहयोग प्रदान करते रहते थे सेठ कालूरामजी का स्वर्गवास संवत् १९६८ में तथा सेठ अन चन्दजी का स्वर्गवास सवत् १९८२ में होगया। आप लोगों का स्वर्गवास होने के पूर्व ही सेठ बींजराज अलग हो चुके थे। सेठ कालूरामजी के तीन पुत्र हुए जिनने नाम क्रमश सेठ मंगलचदजी सेठ बिरदीचन्द और सेठ शुभ करणजी हैं। सेठ अनोपचंदजी के कोई संतान न होने से सेठ बिरदीचंदजी दत्तक गये। आप तीनों भाइयों का इस समय स्वतंत्र रूप से व्यापार हो रहा है। संवत् १९८६ तक आप लोग शा लात में व्यापार करते रहे।

सेठ मंगलचन्दजी की फर्म मेसर्स खेतसीदास मगलचन्दजी के नाम से कलकत्ता के मनोहरद कटला में चल रही है जहाँ कपड़ा एवम बैंकिंग का व्यापार होता है। सेठ मगलचन्दजी मिलनस एवम समझदार व्यक्ति हैं। आपके रिधकरनजी और चन्दनमलजी नामक २ पुत्र हैं।

सेठ बिरदीचन्दजी का जन्म संवत् १९४८ का है। आप मिलनसार एवम उत्साही सज्जन हैं आपका ध्यान भी व्यापार की ओर अच्छा है। आपने अपने हाथ से ही कलकत्ता में एक कोठी खरीद है। सरदार शहर में आपकी आलीशान हवेली बनी हुई है। आपकी फर्म कलकत्ता में ११३ क्रासस्ट्रीट। मेसर्स खेतसीदास मिलापचन्द के नाम से चल रही है। आपके मिलापचन्दजी नामक एक पुत्र है।

शुभकरणजी जम्मड की हवेली, सरदारशहर

... कुमारजी का जन्म संवत् १९६५ का है। आप भी आजकल अपना स्वतंत्र व्यापार ... नाम कटरा में मेसर्स खेतसीदास शुभकरन जम्मड़ के नाम से कर रहे हैं। आप भी ... व्यक्ति हैं। आपकी भी सरदार शहर में एक सुन्दर हवेली बनी हुई है। यह ... तेरापंथी संप्रदाय का मानने वाला है।

नखत

मुकीम फूलचन्दजी नखत, कलकत्ता

... परिवार के पूर्व व्यक्ति जैसलमेर रहते थे। वहाँ से सेठ जोरावरमलजी बंगाल बस्ती ... पृ० पा०) में आये। आपके पुत्र बख्तावरमलजी ने यहाँ कपड़े का व्यापार प्रारम्भ ... व्यापारिक प्रतिभा से इसमें अच्छी उन्नति की। धार्मिक क्षेत्र में भी आप ... यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया और श्री जिनकुशल सूरि महाराज की चरण पादुका ... कन्हैयालालजी, मुकुन्दीलालजी और किशनलालजी नामक तीन पुत्र हुए। आप ... गया। सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू फूलचन्दजी हुए।

... नखत—आप बड़े प्रतिभा सम्पन्न और तेज नजर के व्यक्ति थे। आप १४ वर्ष ... आये। यहाँ आपने जवाहरात का व्यापार शुरू किया। इसमें आपको आशातीत ... आपको संवत् १८८० में लार्ड रिपन ने कोर्ट ज्वेलर नियुक्त किया था। आप आजीवन ... सिखाये हुए बहुत से व्यक्ति नामी जौहरी कहलाये। आपका स्वर्गवास संवत् १९४१ ... बड़ा सरल प्रकृति के पुरुष थे। आपका स्थानीय पंच पंचायती में बहुत नाम था। ... नामी जौहरी और प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपके कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर ... ब्यावर से दत्तक आये।

... नखत—आपने सर्व प्रथम सेठ लाभचन्दजी के साझे में "लाभचन्द मोतीचन्द" ... का व्यापार किया। आपकी इस व्यापार में अच्छी निगाह है अतएव आपने ... प्राप्त की। इस फर्म के द्वारा "लाभचन्द मोतीलाल फ्री जैन लिटररी और टेकनिकल ... जिसमें आज केवल लिटररी की पढ़ाई होती है। आपने अपने पिताजी की इच्छानुसार ... लेन में फूलचन्द मुकीम जैन धर्मशाला के नाम से एक बहुत सुन्दर धर्मशाला ... । इस धर्मशाला में बहुत अच्छा इन्तजाम है। आपने सम्मेद शिखरजी के मामले में ... बहुत मदद की है। जाति हित की ओर आपका अच्छा ध्यान रहता है। ... खरीदने में जो रुपया आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी से आया था उसे वापस ... किया गया है। उसमें आपने १५०००) का कम्पनी का कागज उदारता पूर्वक ... । आप मिलनसार, समझदार और सज्जन व्यक्ति हैं। आपके इस समय फतेचंदजी

नामक एक पुत्र हैं। आपके बड़े पुत्र इन्द्रचन्दजी का स्वर्गवास हो गया, उनके सुरेन्द्रचन्दजी नामक पुत्र आप मन्दिरमार्गीय सज्जन हैं। आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार होता है।

श्री आसकरणजी नखत, राजनांद गाँव

लगभग ७० साल पूर्व मारवाड के भियासर नामक स्थान से आसकरणजी नखत राजनांद आये। तथा व्यापार शुरू किया। धीरे २ आपकी राज्य में प्रतिष्ठा बढी। राजनांदगाँव के र घासीदासजी, सेठ आसकरणजी नखत से बहुत प्रसन्न थे। तथा राज्य के महत्व के मामलों में स लिया करते थे। नखतजीने राजनांदगांव के आदितवारी, बुधवारी, कामठीबाजार, बोहरा लेन आदि बा बसवाये। ओसवाल जाति को राजनांदगाँव में बसाने तथा उसे हर तरह से इमदाद देने में आ पूर्ण लक्ष्य था। राजनांदगांव का व्यापारिक समाज आपके उपकारों का प्रेम पूर्वक स्मरण करता है। रिया में आपकी बहुत बडी प्रतिष्ठा थी। तथा राजा साहिब आपकी सलाहों की बहुत इज्जत करते संवत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके दत्तक पुत्र लखमीचन्दजी भी सवत् १९७८ में गुजर ग अब इस समय लखमीचन्दजी के पुत्र सूरजमलजी मौजूद हैं। इनकी वय १३ साल की है।

सेठ मयकरण मगनीराम नखत, (कुचेरिया) जालना

इस खानदान के लोगों का मूल निवासस्थान बडू (जोधपुर स्टेट) का है। आप श्वेता मन्दिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। कुचेरे से उठने के कारण आपको कुचेरिया नाम से वि पुकारते हैं। इस खानदान के रघुनाथमलजी करीब सवा सौ वर्ष पहले मारवाड से दक्षिण में आये। अ यहाँ आकर खेडे में अपना व्यापार चलाया, तदन्तर इनके पुत्र मयकरणजी ने जालना में उक्त नाम अपनी फर्म स्थापित की। आपका स्वर्गवास सवत् १९३५ में हो गया। आपके मगनीराजी और ध नामक दो भाई और थे। इनमें मगनीरामजी का स्वर्गवास संवत् १९१५ और धनजी का स्वर्ग संवत् १९२२ में हो गया था। सेठ मयकरणजी और मगनीरामजी के निसतान गुजरने पर सेठ मगनीरा के नामपर सूरजमलजी को दत्तक लिया। सेठ मयकरणजी के स्वर्गवासी होजाने पर सेठ सूरजमलजी फर्म के काम को सम्हाला। आपने इस फर्म की बहुत तरक्की की। आपका स्वर्गवास संवत् १९५६ में हु

इस समय इस फर्म के मालिक श्री सेठ सूरजमलजी के पुत्र मोहनलालजी कुचेरिया हैं। आ संवत् १९३६ में जन्म हुआ। आपके पुत्र न होने से आपनेकिशनलालजी को दत्तक लिया। इस खान की दानधर्म की ओर भी अच्छी रुचि रही है। यहाँ के मन्दिर की प्रतिष्ठा में आपने ५०००) सहायत रूप में प्रदान किये थे। आपकी दुकान पर आढत, रूई, वगैरह का धधा होता है।

सेठ रेखचंदजी लूकड़, आगरा.

स्व० सेठ आसकरणजी नवत, राजनादगा.

श्री मगनमलजी कोचेटा, मदुरांतकम् (मद्रास).

कु० माणकचन्दजी खजाची (प्रेमचन्द माणकचन्

लूंकड़

सेठ रेखचन्दजी लूंकड़, आगरा

[illegible] का मूल निवास फलोदी (मारवाड) है। सवत् १९०५ में फलोदी से सेठ [illegible] व्यापार के लिये आगरा आये, तथा सेठ लक्ष्मीचन्द गणेशदास के यहाँ मुनीमात का [illegible] १९११ में सेठ सुल्तानचन्दजी के पुत्र रेखचन्दजी आगरा आये तथा अपने नाम से [illegible]। और इसकी विशेष उन्नति भी आपके ही हाथों से हुई। आप बड़े व्यापार कुशल सज्जन [illegible] १९८६ में स्वर्गवासी हुए। इस समय आपके पुत्र नेमीचंदजी तथा फतहचन्दजी [illegible] करते हैं। आप की फर्म "रेखचन्द लूंकड़" के नाम से बेलनगंज आगरा में व्यापार करती [illegible] कई मिलों की सूत तथा कपड़े की एजन्सियां हैं। तथा इस व्यापार में आगरे में [illegible] मानी जाती है। फलोदी में भी आपका परिवार प्रतिष्ठा सम्पन्न है।

सेठ सागरमल नथमल लूंकड़, जलगांव

[illegible] परिवार का मूल निवास खेजड़ली (जोधपुर स्टेट) में है। यह परिवार स्थानकवासी [illegible]। [illegible] से सेठ सागरमलजी लूंकड जलगांव आये, तथा सेठ जीतमल तिलोकचन्द [illegible] व्यापार आरम्भ किया है। आपने अपनी बुद्धिमत्ता एवं होशियारी से व्यापार में सम्पत्ति [illegible] परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाया है। सेठ सागरमलजी ने जलगांव ओसवाल जैन बोर्डिंग [illegible] की सहायता दी है। इस संस्था के तथा स्थानीय पाँजरापोल के आप सेक्रेटरी हैं। [illegible] समाज में आप प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं। आपका हैड आफिस "सागरमल [illegible] जलगांव में है। आपने अपनी दुकान की शाखाएँ इन्दोर, खंडवा, तथा बुरहानपुर में [illegible]। इन सब दुकानों पर कपडे तथा सूत का थोक व्यापार होता है। बुरहानपुर के ताप्ती [illegible] इस फर्म के पास है। इस समय सेठ सागरमलजी के पुत्र नथमलजी, पुखराजजी, [illegible] मलजी हैं। ये चारों बंधु पढ़ते हैं।

सेठ प्रतापमल बुधमल लूंकड, जलगांव

[illegible] के पूर्वज मूल निवासी फलोदी के हैं। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज सेठ महराजजी [illegible] (पापाट से ५ मील) आये। इनकी छठी पीढ़ी में लूंकड गुमानजी हुए। इनके [illegible] नामक दो पुत्र थे। सम्वत् १८६९ में सेठ सरदारमलजी पैदल मार्गद्वारा [illegible]। पीछे से आपके छोटे भ्राता मूलचन्दजी के पुत्र मोहकमदासजी भी सम्वत् [illegible] सेठ सरदारमलजी के पुत्र सेठ बुधमलजी लूंकड हुए। सेठ बुधमलजी के फौज- [illegible] चन्दजी तथा प्रतापमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से वाँकोदी से सेठ

सतोषचन्दजी सम्वत् १९३४ में तथा सेठ प्रतापमलजी १९४० में जलगांव आये, और यहाँ कपडे व्यापार आरम्भ किया। सम्वत् १९६२ में सेठ फौजमलजी स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे भाई बहादुरम के शिवराजजी तथा जुगराजजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें जुगराजजी सेठ प्रतापमलजी लूकड़ के पर दत्तक गये।

सेठ शिवराजजी का जन्म सम्वत् १९४९ तथा जुगराजजी का १९५२ में हुआ। आप सज्जन "प्रतापमल बुधमल" के नाम से कपडे का थोक व्यापार करते हैं, तथा जलगाँव के व्यापारिक में प्रतिष्ठित व्यवसायी समझे जाते हैं। इन्दौर मे भी आपने एक शाखा खोली है।

इसी तरह इस परिवार में सन्तोषचन्दजी के पौत्र (रिखबदासजी के पुत्र) भंवरीलालजी बशीलालजी हैं। तथा मोहकमदासजी के पौत्र कन्हैयालालजी आदि वाकोडी में व्यापार करते हैं।

सेठ रेखचन्द शिवराज लूंकड़ का खानदान, फलोदी

इस परिवार का मूल निवास फलोदी है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के माननेवाले हैं। परिवार में सेठ आलमचन्दजी के पुत्र गुलाबचन्दजी लूंकड फलोदी से पैदल चलकर व्यापार के लिये गये तथा वहाँ फर्म स्थापित की। आपके पुत्र खुशीलालजी का जन्म सम्वत् १८९५ में हुआ। आपने परिवार की प्रतिष्ठा को विशेष बढ़ाया। आप धार्मिक प्रवृति के पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् में हुआ। आपके अनराजजी, चाँदमलजी, रेखचन्दजी, भोमराजजी तथा सुगनमलजी नामक ५ पुत्र इनमें सेठ अनराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में तथा चाँदमलजी का सम्वत् १९६५ में हुआ। चाँदमलजी के पुत्र माणकलालजी पनरोटी में अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं।

सेठ रेखचन्दजी लूकड का जन्म सम्वत् १९२८ में हुआ। आप फलोदी के ओसवाल सम प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं। वृद्ध होते हुए भी आप ओसर मोसर आदि कुरीतियों के खिलाफ हैं। आपने १९५९ में बम्बई में "मूलचन्द सोभागमल" की भागीदारी में व्यापार शुरू किया तथा सवत् १९ स्वतत्र दुकान की। संवत् १९७२ में आपने पनरोटी (मद्रास) में अपनी दुकान स्थापित की। बदनमलजी, जोगराजजी, शिवराजजी, सोहनराजजी तथा चम्पालालजी नामक पाच पुत्र हुए। बदनमलजी का स्वर्गवास अल्पवय में संवत् १९६४ में हो गया, और इनकी धर्मपत्नी ने दीक्षाग्रहण व लूकड़ जोगराजजी ने पनरोटी में अपनी स्वतंत्र दुकान करली है तथा शेष तीन भाई अपने पिताजी के व्यापार करते है। इस दुकान पर पनरोटी तथा मायावरम् में व्याज का काम होता है। लूंकड जोग के पुत्र मांगीलालजी, शिवराजजी के गजराजजी तथा पारसमलजी और सोहनराजजी, के केशरीमल हैं।

सेठ भोमराजजी के पुत्र फकीरचन्दजी है। आप पनरोटी तथा राजमनारकोडी में बैंकिंग करते हैं, आपके पुत्र देवराजजी तथा जसराजजी हैं। सुगनमलजी के पुत्र नथमल तथा ताराचंद हैं।

इस परिवार का व्रत उपवास व धार्मिक कार्यों की ओर बहुत बडा लक्ष है।

सेठ चन्नाजी डूंगरचंद, लूंकड़, बलारी

यह परिवार राखी (सीवाणा-मारवाड) का रहनेवाला है। इस परिवार के पूर्वज सेठ

...पुरा म गाद (परिचय पेज ५४१ में)

बा० जोगराजजी S/o सेठ रेखचन्दजी लूँकड़, फलौदी

... लूकड़, फलौदी

[illegible] फलौदी

... गनचूर आये, तथा वहाँ से बलारी आये और कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप ... चतुर व्यक्ति थे। आपने अपने हाथों से ८-१० लाख रुपयों की सम्पत्ति कमाई। ... स्वर्गवासी हुए। आपके भतीजे सेठ डूंगरचन्दजी भी आपके साथ व्यापार में मदद ... १९६५ के करीब स्वर्गवास हुआ। डूंगरचन्दजी के हजारीमलजी, वस्तीमलजी ... इनमें हजारीलालजी, सेठ चत्राजी के नाम पर दत्तक गये। इनका संवत् १९६५ में ... इनके पुत्र रुच्छीरामजी सम्वत् १९८४ में स्वर्गवासी हो गये। सेठ वस्तीरामजी ने ... प्रतिष्ठा कराई है। आप सम्वत् १९७५ में स्वर्गवासी हो गये।

... समय में इस कुटुम्ब में वस्तीरामजी के पुत्र आईदानजी तथा रुच्छीरामजी के पुत्र ... आपकी दुकान चत्राजी डूंगरचन्द के नाम से ब्याज का काम करती है। यह दुकान ... फर्मों की मुकादम है। तथा बहुत मातवर मानी जाती है। इस दुकान के ... धागरेचा सिवाणा निवासी हैं। आपके परिवार में सेठ भोजाजी सीवाणे के ... पौत्र परशुरामजी संवत् १९४४ में बलारी आये, तथा कपड़े का व्यापार शुरू ... में आप स्वर्गवासी हुए। आसूरामजी "आसूराम" बहादुरमल के नाम से कपडे का ... । आप समझदार तथा होशियार पुरुष हैं। आपके पुत्र बहादुरमलजी १५ साल के हैं।

सेठ मालचन्द पूनमचन्द लूँकड़, चिंचवड़ (पूना)

... मारवाड़ (पीपाड के पास) के निवासी हैं।। वहा से सेठ वरदीचन्दजी ... (चिचवड के पास) आये और यहाँ दूकान की। इनके मालचन्दजी ... पुत्र हुए। मालचन्दजी सवत् १९५० में चिंचवड़ आये। सवत् १९६३ में ... सेठ मालचन्दजी के पूनमचन्दजी और भीकमचन्दजी तथा मगनीरामजी के ... नामक पुत्र हुए। भीकमचन्दजी जातिउन्नति व धार्मिक कार्मों में सहयोग ... में आपका स्वर्गवास हुआ। इस समय इस परिवार में सेठ गुलाबचन्दजी लूँकड़ ... के पुत्र रामचन्द्रजी, रघुनाथजी, गणेशमलजी तथा सूरजमलजी एव कालूरामजी के पुत्र ... हैं।

... शिक्षाप्रेमी सज्जन हैं। आप श्री फतेचन्द जैन विद्यालय चिंचवड के ... । आपके छोटे भ्राता व्यापार में भाग लेते हैं। आप चिंचवड़ के प्रतिष्ठित व्यापारी ... आम्नाय का मानने वाला है।

खजांची

सेठ प्रेमचन्द माणकचन्द खजांची, बीकानेर

... राजपूत पहले देवी कोट नामक स्थान में रहते थे वहीं ये जैनी बने ... । ऐसा करने के कारण इनके वंशज कारल वोहरा कहलाये। आगे

चलकर इसी परिवार के पुरुष जांजणजी जैसलमेर की राजकुमारी गंगा महाराणी के साथ करीब ३५० पूर्व बीकानेर आये। आपके पुत्र रामसिंहजी को तत्कालीन बीकानेर महाराजा ने खजाने का इनायत किया। इसी समय से इस परिवारवाले खजांची कहलाते चले आ रहे हैं।

रामसिंहजी के पुत्र वेणीदासजी का परिवार ही इस समय बीकानेर में निवास कर रह इसी परिवार में आगे चलकर सेठ उदयभानजी हुए। इनके कुशलसिंहजी और किशोरसिंहजी नाम पुत्र हुए। किशोरसिंहजी का परिवार नागोर चला गया। वेणीदासजी के बाद क्रमशः पीरराजजी, दासजी, तखतमलजी, मैनरूपजी, गेंदमलजी, हुए। गेंदमलजी के तीन पुत्र हुए आसकरनजी, धनसुख और मैनचंदजी। इनमें से धनसुखदासजी के बाद क्रमश कस्तूरचंदजी, और हरकचन्दजी हुए। ह जी के चार पुत्र भमरचदजी, आबडदानजी, तेजकरनजी और सूरजमलजी हुए। वर्तमान फर्म सेठ तेज के पुत्र सेठ प्रेमचदजी की है।

सेठ प्रेमचदजी यहाँ के स्टेट जौहरी हैं। आप मिलनसार व्यापार चतुर और पुरुष हैं। आपने अपकी एक ब्राच कलकत्ता में भी जवाहरात का व्यापार करने में लिये खोली। अतिरिक्त अजीतमल माणकचद के नाम में साझे में भी एक कपडे की फर्म खोल कर व्यापार की उन्नति आपने धार्मिक कार्यों में बहुत खर्च किया। आप कई जगह कई सभा सोसाइटियों के सभापति और रहे। आपको बीकानेर श्री संघ ने एक बहुत ही सुन्दर मानपत्र भेंट किया है। जिसमें आपकी उ सहृदयता और धार्मिकता की तारीफ की गई है। आपके इस समय माणकचंदजी, मोतीचन्दज हीराचंदजी नामक तीन पुत्र हैं। माणकचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं।

खजांची विजयसिंहजी का खानदान, भानपुरा

इस खानदान वाले सज्जनों का पहले निवास स्थान मारवाड था। इनकी उत्पत्ति चौहान पूतों से हुई। ऐसा कहा जाता है कि इस परिवार के पूर्व पुरुषों ने सम्राट अकबर के प्रातिय का काम किया था। अतएव खजांची कहलाये। पश्चात् बादशाहत् की हेराफेरी से इस परिवार के पुरु हुए महाराजा यशवतराव प्रथम के राजत्व काल में रामपुरा भानपुरा चले आये।

इस परिवार में आगे चलकर तनसुखदासजी नामक एक बड़े वीर और प्रतिभासपन्न व्यक्ति कहा जाता है कि महाराजा होल्कर की ओर से होने वाली गरासियों की लडाई में वे मारे गये। मुँडकटाई में महाराजा ने प्रसन्न होकर उनके वंशज के लिए रामपुरा भानपुरा जिले के झारडा, और जमूणियां के कुल ग्रामों पर जमींदारी हक्क इनायत फरमाये। इसका मतलब इन स्थानों की सरकारी आमदनी पर २) सैकडा दामी के बतौर आपको मिलने लगा। इसके बाद १९०६ में १००० बीघा जमीन भी आपको जागीर स्वरूप प्रदान की। इसके अतिरिक्त भी आप प्रकार के हक्क प्रदान किये। वर्तमान में आपके वशजों को सरकार से इस जागीर के एवज में नगद मिलते हैं। इस समय इस परिवार में खजाँची विजयसिंहजी हैं। आप इन्दौर स्टेट के निसरपुर स्थान पर अमीन हैं। आप मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं। जहां २ आप अमी वहां २ आप बड़े लोकप्रिय रहे। इस समय आपके अजीतसिंह और बलवन्तसिंह नामक दो पु

कोचेटा

[illegible] कुन्दनमल मगनमल कोचेटा, अचरापाकम् (मद्रास)

[illegible] परिवार का मूल निवास जसवन्तावाद (मेडते के पास) है। वहा से इस परिवार के [illegible] कोचेटा लगभग ७० साल पूर्व मुरार (ग्वालियर) गये, तथा व्यवहार स्थापित [illegible] नामी पुरुष थे। आपने ही व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। आपके चन्दनमल [illegible] नामक २ पुत्र हुए। कोचेटा चन्दनमलजी का जन्म संवत् १९१२ में हुआ। आप [illegible] व्यापार करते थे, तथा फिर शिवपुरी में कपडे का व्यापार चालू किया। आप [illegible] में तथा आपके पुत्र फतेमलजी संवत् १९८९ में स्वर्गवासी हुए। सेठ कुन्दनमलजी कोचेटा [illegible] में हुआ। आप शिवपुरी में कपड़े का व्यापार करते रहे। आप धार्मिक प्रवृति [illegible] १९५८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मगनमलजी कोचेटा हुऐ।

[illegible] कोचेटा—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप मेट्रिक तक शिक्षण [illegible] सार्वजनिक कामों में योग देने लगे। आप यहा के सरस्वती भवन के संचालक, [illegible] सभा समिति के सेक्रेटरी थे। वहां की जनता में आप प्रिय व्यक्ति थे। शिवपुरी [illegible] में मद्रास आये, तथा यहां आपने जैन सुधार लेखमाला प्रकाशित कर जैन [illegible] प्रचार किया, इसी तरह एक जैन पाठशाला स्थापित करवाई। यहा से २ साल बाद [illegible] (चिंगलपेठ) आये तथा यहां वैङ्किग व्यापार चालू किया। इस समय आपने [illegible]) में लोंकाशाह जैन विद्यालय का स्थापन किया है। आप जैन गुरुकुल ब्यावर के [illegible] जागृति कार्य्यालय के सेक्रेटरी हैं। तथा मूथा जैन विद्यालय बलूंदा के सेक्रेटरी है। [illegible] समाज व गण्य मान्य व्यक्तियों में हैं। और शिक्षा तथा समाजोन्नति के हरएक कार्य [illegible] रहते हैं। आपके पुत्र आनन्दमलजी बालक है।

[illegible] लालचंद कोचेटा, चोदवड़ (भुसावल)

[illegible] का स्थापन सेठ रघुनाथदासजी ने अपने निवासस्थान पीपलाद (जोधपुर) से [illegible] चोदवड में किया। आपका परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। [illegible] संवत १८९० में हुआ। आपके लालचन्दजी तथा ताराचन्दजी नामक २ पुत्र [illegible] का जन्म क्रमश संवत् १९२० तथा २५ में हुआ।

[illegible] कोचेटा—आप बुद्धिमान तथा व्यापार चतुर पुरुप थे, आपने अपनी दुकान [illegible], जामगाव तथा अकोला में खोलीं और इन सब स्थानों पर जोरों [illegible] की इज्जत व प्रतिष्ठा को बढ़ाया। संवत् १९८२ में आपका स्व[illegible] [illegible] भाई ताराचन्दजी निसंतान स्वर्गवासी हुए। सेठ [illegible], भागकचन्दजी तथा सोभागचन्दजी नामक पाँ

कोचेटा मोतीलालजी—आपका जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। आपने कई वर्षों तक मलकापुर गोरक्षण संस्था का काम देखा। आप ही के परिश्रम से सवत् १९ में मलकापुर में स्थानकवासी सभा का अधिवेशन हुआ, इसकी स्वागत कारिणी के सभापति आप आपने सवत् १९८९ में तमाम सासारिक कार्यों से निवृत होकर दीक्षा गृहण की।

आप के शेष चारों भ्राता अपनी बोदवड, खामगाँव, अकोला, अमलनेर तथा मलकापुर दु का संचालन करते हैं। बरार व खानदेश में यह परिवार अच्छी प्रतिष्ठा रखता है। सेठ मूलचन्दज पुत्र रतनचन्दजी, भागचन्दजी, भाऊलालजी तथा चम्पालालजी व्यापार में सहयोग लेते है। मोतीला के रामलालजी, रिखबदासजी तथा भीमलालजी और हीरालालजी के कान्तिलालजी, मगनमलजी, अजितना व धरमचन्दजी नामक चार पुत्र हैं। कान्तिलालजी ने कांग्रेस आन्दोलन में सहयोग लेने के उपलक्ष्य तीन मास के लिये कारावास प्राप्त किया है।

सेठ मानमल चांदमल कोचेटा, भुसावल

यह परिवार पर्वतसर (मारवाड) का निवासी है। इस परिवार के पूर्वज सेठ मानमर चाँदमलजी तथा बृजलालजी नामक तीन भ्राता व्यापार के लिये भुसावल आये तथा लेनदेन का व्य शुरू किया। इन्हीं भाइयों के हाथों से व्यापार को तरक्की मिली। इन तीनों सज्जनों का स्वर्ग क्रमश' १९८२, ७७ तथा सं० १९७४ में हुआ। कोचेटा ब्रजलालजी के पन्नालालजी व केसरीचन्दजी न २ पुत्र हुए। इनमें केसरीचन्दजी, मानमलजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ पन्नालालजी का स्वर्ग सं० १९७१ में हो गया। इनके पुत्र कन्हैयालालजी, चाँदमलजी के नाम पर दत्तक गये। सेठ पन्नाला के बाद इस दुकान के व्यापार को केसरीचन्दजी तथा कन्हैयालालजी ने ज्यादा बढ़ाया। आपके बोदवड़, फैजपुर, व भुसावल के खेती, आढ़त व लेन-देन का व्यापार होता है। तथा आस पास ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। सेठ चाँदमलजी ने बोदवड़ में एक उपाश्रय बनवाया इसी तरह अमलनेर के स्थानक में भी आपने सहायता दी। अमलनेर में आपके कई मकानात हैं।

श्री कन्हैयालालजी कोचेटा, वणी (बरार)

यह परिवार बड्डू (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहाँ से इस परिवार के पूर्वज हजारीमलजी कोटेचा लगभ ५० वर्ष पूर्व वणी के पास नादेपेरा नामक स्थान में आये। आपका स्वर्ग संवत् १९८० में हुआ। आपने संवत् १९५० के लगभग वणी में सेठ रायमल मगनमल की भागीदार हीरालाल हजारीमल के नाम से व्यापार शुरू किया तथा इस व्यापार में अच्छी सम्पति तथा प्रतिष्ठा प आपके पुत्र कन्हैयालालजी विद्यमान हैं।

सेठ कन्हैयालालजी कोचेटा की उम्र ४० साल की है। आप इधर दो सालों से "हीरा हजारीमल" नामक फर्म से अलग हो कर "मूलचन्द लोनकरण" के नाम से कपड़ा तथा सराफी का अ स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। आप तेरा पथी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं, तथा शास्त्रों की अच्छी ज

[illegible] ओसवाल समाज में आपका परिवार नामाङ्कित समझा जाता है। आपके पुत्र [illegible] मूलचन्दजी हैं।

सेठ पन्नालाल ताराचंद कोटेचा, वर्धा (वरार)

इस परिवार का निवास वडू (मारवाड) है। देश से सेठ ताराचन्दजी कोटेचा लगभग ३० [illegible] आये, तथा वहाँ से वर्धा आकर सेठ "हीरालाल हजारीमल" फर्म पर कार्य किया। इधर [illegible] कपड़ा तथा सराफी का अपना घरू व्यापार करते हैं। आपका जन्म संवत् १९३५ में [illegible] ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित सज्जन हैं। तथा मिलनसार एवं समझदार व्यक्ति हैं। [illegible] कोटेचा का जन्म सं० १९५९ में हुआ। आप भी तत्परता से व्यापार में भाग [illegible] युवक हैं।

[illegible] ताराचन्दजी के भतीजे कालूरामजी कोटेचा सेठ "हीरालाल हजारीमल" नामक फर्म के १० [illegible] हैं। आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ है। आप होशियार तथा सज्जन व्यक्ति हैं।

सांढ

[illegible] की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ११७५ में सिद्धपुर पाटण में जगदेव नामक [illegible] निवास करता था। इसके सूरजी, संखजी, साँवलजी, सामदेवजी आदि ७ पुत्र हुए। [illegible] सूरिजी ने जैन धर्म का प्रतिबोध दिया। सांवलजी का बड़ा पुत्र बड़ा मोटा ताजा था अतः [illegible] राजा सिद्धराज ने "सढ मुसंड" कहा। फिर इन्होंने राजा के मस्त सांढ को पछाड़ा, इससे [illegible] हो गये और आगे चलकर यह सांढ गौत्र हो गई। इसी तरह जगदेव के अन्य पुत्रों से [illegible], पुनमियाँ आदि शाखाएँ हुईं।

सांढ तेजराजजी का खानदान, जोधपुर

[illegible] परिवार के पूर्वज सांढ भगोतीदासजी मेड़ते में रहते थे। इनके पौत्र शोभाचन्दजी [illegible] पुत्र) ने जोधपुर में आकर अपना निवास बनाया। इनके पुत्र खींवराजजी हुए। [illegible] शताब्दि के मध्य काल में इस परिवार का व्यापार बहुत उन्नति पर था। महाराजा [illegible] जोधपुर राज्य से इस खानदान का लेन-देन का बहुत सम्बन्ध था। स्टेट के बाहरों [illegible] दुकाने थी। इन दुकानों के लिये जोधपुर महाराज बख्तसिंहजी विजयसिंजी तथा [illegible] परिवार को कस्टम की माफी के परवाने बख्शे, तथा अनेकों रुक्के देकर इस खानदान [illegible]।

[illegible] सिंघवी इन्द्रराजजी के साथ एक युद्ध में गये थे। इसी तरह डीड़वाने की

फौज में भण्डारी प्रतापमलजी के साथ और बल्लूंदे के पास झगडे में सिंघी गुलराजजी के साथ साँड सीं
राजजी गये थे । इन युद्धों में सम्मिलित होने के लिए इनको रतनपुरा का ढीवड़ा और एक बावडी इनाय
हुई थी। संवत् १८९७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र शिवराजजी तथा पौत्र तेजराजजी भी रियास
के साथ लाखों रुपयों का लेन देन करते रहे। आप लोग जोधपुर के प्रधान सम्पतिशाली साहुकार थे। सं
तेजराजजी जोधपुर में दानी तथा प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास १९४८ में हुआ। आ
पुत्र रङ्गराजजी तथा मोहनराजजी हुए। सेठ रङ्गराजजी १९५८ में स्वर्गवासी हुए। तथा सेठ मोहनराज
विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आपके समय में इस फर्म का व्यापार फैल हो गया
तथा इस समय आप जोधपुर में निवास करते हैं। रंगराजजी के नाम पर अमृतराजजी दत्तक हैं।

सेठ केवलचन्द मानमल सांढ, बीकानेर

अठारहवीं शताब्दी में इस परिवार के पूर्व पुरुष सेठ सतीदानजी मेड़ता से बीकानेर आये
आपके हुकुमचन्दजी और हुकुमचन्दजी के केवलचन्दजी नामक पुत्र हुए। आपने सम्वत् १८९० में उपरो
नाम से गोटाकिनारी की फर्म स्थापित को।। इसमें आपको बहुत सफलता रही। आप मन्दिर संप्र
के सज्जन थे। आपके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम सदासुखजी, मानमलजी, इन्द्रचन्दजी, सूरजमलजी अ
प्रेमसुखजी था। आप सब लोगों का परिवार स्वतन्त्र रूप से व्यापार कर रहा है। सेठ मानमलजी
प्रतिभावान व्यक्ति थे। आपने दिल्ली में अपनी एक फर्म स्थापित की थी और आप ऊँटों द्वारा वहाँ म
भेजते थे। इसमें आपको अच्छी सफलता रही। आपके धार्मिक विचार अच्छे थे। आपका स्वर्गवास
गया। आपके केसरीचन्दजी नामक पुत्र हुए।

वर्तमान में सेठ केशरीचन्दजी ही व्यापार का सचालन कर रहे हैं। आपके हाथों से इस फर्
व्यापार की ओर भी तरक्की हुई। आपने दिल्ली के अलावा कलकत्ता में भी यही काम करने के f
फर्म खोली। इस प्रकार इस समय आपकी तीन फर्में चल रही हैं। आप मन्दिर मार्गीय व्यक्ति
आपका स्वभाव मिलनसार और उदार है। आपने स्थायी सम्पत्ति बढ़ाने की ओर भी काफी ध
रखा। बीकानेर में कोट दरवाजे के पास वाला कटला आपही का है। इसमें करीब १॥ लाख रु
खर्च हुआ। इस समय आपके कोई पुत्र नहीं है।

भाभू

भाभू गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि रतनपुर के राजा ने माहेश्वरी वैश्य समाज के १
गौत्रीय भाभूजी नामक पुरुष को अपना खजांची मुकर्रर किया। जब राजा रतनसिंहजी को सांप ने ा
और जैनाचार्य्य जिनदत्तसूरि ने उन्हे जीवनदान दिया। तब राजा अपने मन्त्री, खजाची आदि सहित
धर्म अंगीकार किया। इस प्रकार खजाची भाभूजी की संताने "भाभू" नाम से सम्बोधित हुई।

लाला जगतूमलजी भाभू का खानदान, अम्बाला

[illegible] परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का मानने वाला है। आप मूल निवासी धनोर के हैं, अत [illegible] में मशहूर हुए। इस खानदान में लाला सुचनमलजी के लाला जेठूमलजी, लाला [illegible], लाला जगतूमलजी तथा लाला रलियारामजी नामक ४ पुत्र हुए।

[illegible]—आपका जन्म सन् १८७६ मे हुआ था। अम्बाला की "आत्मानन्द जैनगज" नामक [illegible] के सतत परिश्रम से बनकर तयार हुई। आप यहाँ की स्कूल कमेटी के प्रधान थे। [illegible] सस्थाओं तथा पजाब की जैन संस्थाओं को काफी इमदाद दी। अपनी मृत्यु [illegible] तरह हजार रुपयों का दान किया। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिता कर [illegible] स्वर्गवासी हुए। आपके स्मारक में यहाँ एक "जगतूमल जैन औषधालय" स्थापित [illegible] रोगी लाभ उठाते हैं। आपके ४ पुत्र हैं जिनमें लाला सदासुखरायजी, लाला मुन्नीलालजी [illegible] बी० ए०, लाला रतनचंदजी के साथ व्यापार करते हैं।

[illegible]—आपका जन्म सवत् १९६१ में हुआ। आपने सन् १९२६ में बी० ए० [illegible] आत्मानन्द जैन सभा पजाब के ऑनरेरी सेक्रेटरी व जैन हाई स्कूल अम्बाला की कमेटी [illegible]। इसके अलावा आप गुजरानवाला गुरुकुल की कमेटी के मेम्बर, अम्बाला चेम्बर ऑफ कामर्स [illegible] कम्पनी के डायरेक्टर, जैन रीडिंग रूम अम्बाला के प्रेसिडेण्ट, जगतूमल [illegible] तथा हस्तिनापुर तीर्थ कमेटी के मेम्बर हैं। कहने का तात्पर्य यह कि आप प्रतिभाशाली [illegible] हैं। लाला सदासुखरायजी के पुत्र केसरदासजी, मुन्नीलालजी के पुत्र ओमप्रकाशजी, विमल· [illegible] तथा धर्मचन्दजी और रतनचन्दजी के पुत्र फीरोजचन्दजी है।

लाला दौलतरामजी भाभू का खानदान, अम्बाला

[illegible] मन्दिर आम्नाय का उपासक है। इस खानदान में लाला फग्गूमलजी के लाला [illegible], बुलाकामलजी तथा शादीरामजी नामक ४ पुत्र हुए।

[illegible]—आपका जन्म सवत् १९१५ में हुआ था। आप बडे नामी और प्रसिद्ध [illegible] आत्मारामजी महाराज के उपदेश को स्वीकार किया था। आपने अपने जीवन [illegible] हस्तिनापुर तीर्थ की सेवा में लगाये, तथा उसकी बहुत उन्नति की। इस काम में [illegible] पास से लगाये। सवत् १९८१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके गोपीचंदजी, [illegible], इन्द्रसेनजी नामक ५ पुत्र हुए।

[illegible]—आपका जन्म सवत् १९४२ में हुआ। आपने गवर्नमेंट की सर्विस व संवई [illegible] की। आपने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाने का काफी लक्ष दिया है। [illegible] हाई स्कूल की मेनेजिंग कमेटी के सदस्य तथा आत्मानद जैन सभा के मन्त्री हैं। [illegible] रिखबदासजी, ज्ञानदासजी, सागरचन्दजी, सुमेरचन्द तथा राजकुमार [illegible] ने सन् १९२४ में बी० ए० तथा १९२६ में एल० एल० बी० की डिग

हासिल की। आप प्रतिभाशाली युवक हैं तथा आत्मानन्द जैन हाई स्कूल कमेटी के मेम्बर हैं। आप
बन्धु बाबू ज्ञानदासजी ने सन् १९२८ मे बी० ए० सन् १९३० में एम० एस० सी० तथा १९
एल० एल० बो० की डिगरी प्राप्त की। आपका स्कूली जीवन बहुत प्रतिभापूर्ण रहा है। आप ए
तथा एल० एल० बी की परीक्षाओं में सारी पंजाब युनिवर्सिटी मे प्रथम आये। इसके लिये
गोल्ड तथा सिलवर मेडल भी मिले। आप आत्मानन्द जैन हाई स्कूल के ओल्ड बॉयज ऐसोसिए
प्रेसिडेंट हैं। और भी आपका जीवन बहुत अनुकरणीय है। आपके छोटे बन्धु बाबू सागरचन्द
ए० के अंतिम वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। आपका भी स्कूली जीवन बहुत उज्वल है। कई
आप युनिवर्सिटी में प्रथम रहे हैं। आपकी योग्यताओं का सम्मान गवर्नमेंट ने सर्टिफिकेट दे
था। इनसे छोटे सुमेरचन्दजी, गुजरानवाला गुरुकुल में पढते हैं।

लाला हरिचन्दजी यहाँ के पंच हैं। आपके टेकचन्दजी तथा दीवानचन्दजी नामक २
इसी प्रकार लाला मुकुन्दीलालजी के पुत्र वीरचन्दजी तथा इन्द्रसेनजी के पुत्र प्रेमचन्दजी है।

लाला मसानियामल आलूमल भाभू, अम्बाला

इस खानदान का मूल निवास स्थान थनौर है। इस खानदान में लाला बहादुरमलजी
मसानियामलजी हुए। इनका संवत् १९४० में स्वगवास हुआ। आपके पुत्र आलूमलजी संवत्
में स्वर्गवासी हुए। ओलूमलजी के लाला छज्जूमलजी लाला धर्मचन्दजी तथा लाला संतलालजी
तीन पुत्र हुए।

लाला छज्जूमलजी भाभू—आपका जन्म संवत् १९१४ में हुआ। आप अम
प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। तथा अम्बाला स्थानकवासी समाज के चौधरी हैं। गवर्नमेंट
से भी आप बाजार चौधरी रहे हैं। इसी प्रकार स्थानीय गौशाला के भी आनरेरी सुपरिण्टेण्डेण्ट
आपने अपने नाम पर अपने भतीजे लक्ष्मीचन्दजी को दत्तक लिया। बाबू लक्ष्मीचन्दजी स्था
समाज के मुख्य व्यक्ति हैं। आपकी वय ५० साल की है। आपके पुत्र रामलालजी, चिरंजी
जयगोपालजी, विमलप्रसादजी तथा जुगलकिशोरजी हैं। इनमें लाला रामलालजी तथा चिरं
उत्साही युवक हैं, तथा स्थानकवासी सभा और जैन युवक मंडल के कामों में अग्रगण्य रहते हैं।
यहाँ "मसानियामल आलूमल" के नाम से बैंकिंग, बजाजी, ज्वेलरी तथा सराफी व्यापार होता है।

लाला संतलालजी—आप बडे धर्मात्मा तथा समाज सेवी पुरुष थे। संवत् १९६३ में ४०
उम्र में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके बाबूरामजी तथा प्यारेलालजी नामक २ पुत्र हुए। लाला
जी का जन्म संवत् १९४८ में हुआ। आप अम्बाला स्थानकवासी पंचायत के सेक्रेटरी तथा
की ओर से असेसर हैं। पंजाब स्था० जैन कान्फ्रेंस के सेक्रेटरी भी आप रहे थे। इस समय उसकी
कमेटी के मेम्बर हैं। आपके पुत्र टेकचन्दजी तथा पारसदासजी हैं। आपके यहाँ सूत दा
बेङ्किग व्यापार होता है। लाला प्यारेलालजी भी यही व्यापार करते है। इनके पुत्र रोशन
अमरकुमारजी तथा श्यामसुन्दरजी हैं।

लाला बाबूलाल बंसीलाल भाभू का खानदान, होशियारपुर

इस खानदान के लोग श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान ... (पंजाब) में रहते थे। वहाँ से लाला किशनचंदजी होशियारपुर आये। आपके ... फोगूमलजी तथा गनपतरायजी नामक तीन पुत्र हुए। इस खानदान में लाला फोगूमल ... और बैंकिंग का काम शुरू किया। तथा इसकी खास तरक्की लाला फोगूमलजी के पुत्र लाला ... । उस समय यह खानदान होशियारपुर में बिजिनेस की दृष्टि से पहला माना जाता था ... प्रतिष्ठा है। लाला फोगूमलजी के तीन पुत्र हुए लाला पिण्डीमलजी, चूकामलजी ... । इनमें से यह परिवार लाला चूकामलजी का है।

... चूकामलजी के दो पुत्र हुए लाला कन्हैयालालजी और लाला रत्तूमलजी। लाला कन्हैया ... बाबूमलजी एवं लाला बंशीलालजी नामक दो पुत्र हैं। लाला बाबूमलजी के बनारसीदासजी ... नामक तीन पुत्र हैं। लाला बनारसीदासजी के हित कुमारजी नामक एक

... बंशीलालजी—आप होशियारपुर की ओसवाल समाज में बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। ... म्युनिसिपालिटी के कमिश्नर भी रहे हैं आप होशियारपुर की स्थानकवासी सभा के प्रेसिडेंट ... बैंकिंग का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मदनलालजी ने एफ० ए० तक शिक्षा पाई है ... एफ० ए० का अध्ययन करते हैं। तीसरे महेन्द्रकुमारजी हैं।

लाला शिभूमल वजीरामल का खानदान, मलेर कोटला (पंजाब)

यह खानदान के लोग जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस ... हुकमसेनजी हुए। आपके पोलूमलजी, रोडामलजी, सौदागरमलजी एवं हीरामलजी ... । इनमें से यह खानदान लाला रोडामलजी का है। लाला रोडामलजी का स्वर्गवास ... । आपके लाला शिभूमलजी एवं लाला ज्योतिमलजी नामक दो पुत्र हुए। लाला ... संवत् १९०१ में हुआ। ये इस खानदान में बडे नामी व्यक्ति हुए हैं। आपका संवत् ... हुआ। आपके लाला वजीरामलजी नामक एक पुत्र हुए। लाला ज्योतिमलजी का ... स्वर्गवास संवत् १९७६ में हुआ।

... वजीरामलजी का जन्म संवत् १९२३ में हुआ। आपके अमरचन्दजी एवं करमचंदजी ... अमरचंदजी का जन्म संवत् १९६० तथा करमचंदजी का संवत् १९६२ में हुआ। ... अपनी फर्म का कारबार देखते हैं। आपदोनों बडे सज्जन हैं। लाला अमरचंद ... नामक दो पुत्र हैं। इस परिवार के लोग मलेर कोटला की ओसवाल ... और आप यहाँ की बिरादरी के चौधरी हैं। लाला ज्योतिमलजी के पुत्र ... व्यापार करते हैं। इनके चंदनदासजी, बनारसीदासजी एवं रतनचंदजी ...

लिंगे

लाला जयदयाल शाह गुराताशाह लिगे, सियालकोट

यह खानदान स्थानकवासी आम्नाय का है। तथा कई पीढ़ियों से स्यालकोट में नि
करता है। इस खानदान के बुजुर्ग लाला गण्डामलजी के पुत्र दीवानचंदजी और पौत्र अमीचन्दजी हु
लाला अमीरचंदशाहजी के गोविंदरामशाहजी, गंगारामशाहजी तथा मुकन्दाशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। इ
यह परिवार लाला गंगाराम शाहजी का है।

लाला गंगाराम शाहजी—आपका जन्म संवत् १८९० में हुआ। आपने सियाल कोट मे
कागज का कारखाना तथा सूर्सी का कारखाना खोला था। आपका अपने समाज में बड़ा सम्मान
संवत् १९५४ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके जयदयाल शाहजी, गुराताशाहजी, चूनीशा
देवीदयालशाहजी तथा हरदयालशाहजी नामक ५ पुत्र हुए। आप सब बधुजन सम्मिलित रूप में व्या
करते थे। तथा सियालकोट के प्रसिद्ध बैंकर माने जाते थे। इन भाइयों में लाला देवीदयाल शा
मौजूद हैं। लाला जयदयालशाहजी के पुत्र खजांचीशाहजी तथा गुराताशाहजी के पुत्र शादीलालजी मौजूद

लाला खजान्चीशाहजी—आपका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आप सियाल कोट के जैन समा
प्रतिष्ठित सज्जन हैं। तथा डिस्ट्रिक्ट दरबारी हैं। यहाँ के सैंट्रल बैंक के डायरेक्टर तथा कोर्ट के असेसर रहे
आप पंजाब जैन संघ के खजान्ची भी रहे थे। कहने का मतलब यह है कि आप यहाँ के मशहूर आ
है। आपके पुत्र नगीनालालजी सराफी व्यापार करते हैं तथा शेष मदनलालजी, सिकन्दरपालजी, १
गोपालजी, तथा सुदर्शनजी हैं। लाला शादीलालजी अपने चचा खजान्ची शाहजी के साथ "जयदयाल
गुराता शाह" के नाम से बैंकिंग तथा मनीलेंडिंग का व्यापार करते हैं। आपके जुगेन्द्रपाल तथा मन
पाल नामक २ पुत्र हैं।

लाला काकूशाह जीवाशाह लिगे का खानदान, रावलपिंडी

इस खानदान के बुजुर्ग लाला हरकरणशाहजी के रामसिंहजी, लालूशाहजी, मन्नाशाह
भोलाशाहजी तथा ठाकरशाहजी नामक ५ पुत्र हुए। उनमें लाला मन्नाशाहजी के काकूशाह
डोड्डेशाहजी तथा प्रेमाशाहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें प्रेमाशाहजी मोजूद है।

लाला काकूशाहजी का खानदान—आपका जन्म संवत् १९१२ में हुआ था। आप बड़े सादे है
पुराने खयालों के सज्जन थे। आपने करीब ६० साल पहिले कपड़े का रोजगार शुरू किया। संवत् १९
में आप तीनों भाइयों का रोजगार अलग २ हुआ। संवत् १९७६ में आपका स्वर्गवास हुआ। आ
लाला अमीचंदजी, लाला रादूशाहजी, लाला उत्तमचन्दजी तथा लाला फकीरचन्दजी नामक ४ पुत्र हु
लाला अमीचंदजी की याद दाश्त बहुत ऊँची है। आपका जन्म संवत् १९३२ में हुआ। इस दुका

...पूर्वक भाग लेते है। आपके पुत्र अमरनाथजी नेमनाथजी तथा गोरखनाथजी है। ...र में भाग लेते है। लाला रादूशाहजी संवत् १९८८ में गुजरे। आपके पुत्र ... तथा शोरीलालजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते है।

...—आपका जन्म संवत् १९२८ में हुआ। आप रावलपिंडी के जैन समाज ...। आपने सन् १९२० में कन्याशाला को एक साल का खरच दिया। तथा इस पाठशाला ... हजार रुपये दिये। इस समय आप जैन सुमति मित्र मंडल के सभापति, बजाजा ... प्रेसिडेंट तथा जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला की प्रबंधक कमेटी के मेम्बर हैं। आप बड़े ... प्रतिष्ठित सज्जन है। आपके छोटे भाई फकीरचंदजी आपके साथ व्यापार में भाग ... के लालचन्दजी, चिमनलालजी तथा रोशनलालजी नामक ३ पुत्र है। इनमें ... में पढ़ते है। शेष व्यापार में भाग लेते हैं। फकीरचंदजी के पुत्र वकीलचंदजी ...। इस कुटुम्ब की २ कपड़े की दुकानें मन्नाशाह काकूशाह के नाम से रावलपिंडी ... दुकान अमृतसर में भी है। पंजाब प्रान्त के मशहूर खानदानों मे इस परिवार ...।

...का खानदान—आप बिरादरी के मुखिया तथा बहादुर तबियत के पुरुष थे। ... स्वर्गवास हुआ आपके पुत्र लाला जीवाशाहजी हैं।

...—आपका जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आपका स्वभाव बड़ा मिलनसार है। ... और गुप्तदानी सज्जन हैं। रावलपिंडी के जैन समाज में आप मशहूर व्यक्ति है। ...शाह के नाम से कपड़े का व्यापार होता है। आपके पुत्र लालचन्दजी का संवत् ... गया। आपने जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला को १ हजार तथा जैन सुमति मित्र मंडल ... दिये है।

लाला तोतेशाह काशीशाह लिगे, जम्मू (काश्मीर)

... के पूर्वज लाला दयानतशाहजी को काश्मीर महाराजा गुलाबसिंहजी ने तिजारत ... में बुलाया। तथा मकान और दुकान की जगह दी। आपने सराफी ... पुत्र लाला बूँटाशाहजी भी सराफी व्यापार करते रहे। इनके लाला निहाला ... नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों ने व्यापार में तरक्की प्राप्त कर रियासत तथा ... दोनों का कारबार ४० साल पहिले अलग २ हुआ। लाला तोतेसाहजी ... हुआ। आप उम्र भर म्युनिसिपेलेटी के मेम्बर रहे। आपके पुत्र लाला ...।

...—आपका जन्म संवत् १९२९ में हुआ। आपका बिरादरी तथा राज ...। आप २० सालों से जम्मू म्युनिसिसिपेलेटी के मेम्बर है। आपके ... से बैंकिंग व्यापार होता है, तथा यहाँ के व्यापारिक समाज में आपकी

नामी समझी जाती है। आपके पुत्र प्यारेलालजी B A में पढ़ते हैं तथा दूसरे हीरालालजी तिज
में हिस्सा लेते हैं। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का है।

लाला निहालशाहजी के हजारीशाहजी, करमचंदजी तथा धनपतचंदजी नामक ३ पुत्र
इनमें करमचन्दशाहजी मौजूद हैं। आप सराफी तथा साहुकारे का काम करते हैं। आपके पुत्र बन
दासजी तथा कस्तूरीलालजी हैं। लाला हजारीशाहजी के पुत्र नानकचंदजी तथा धनपतचंदजी के
कपूरचंदजी तिजारत करते हैं। नानकचन्दजी के पुत्र किशोरीलालजी तथा शादीलालजी हैं।

लाला मय्यालाल काशीशाह लिगे, रावलपिंडी

इस खानदान के बुजुर्ग लाला जीवाशाहजी ने ६० साल पहिले कपड़े का रोजगार शुरू कि
आप जैन बिरादरी के चौधरी थे। इनके मय्याशाहजी तथा गोविन्दशाहजी नामक दो पुत्र हुए।
शाहजी संवत् १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लाला काशीशाहजी मौजूद हैं। आप
सेवा के कामों में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। जैन यंगमैन एसोसिएशन, वालंटियर कोर और जैन
सभा में आप प्रधान हैं। अजमेर साधु सम्मेलन के समय आपने सत्याग्रह किया था। आप राव
गौशाला की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। आपके यहाँ कपड़े का व्यापार होता है।

मनिहानी

लाला सावनशाह मोतीशाह मनिहानी का खानदान, (सियालकोट)

यह खानदान स्थानकवासी सम्प्रदाय का मानने वाला है। इस परिवार का खास
स्थान सियालकोट का ही है। इस परिवार के वंज लाला रामजीदासजी के पुत्र लाला मंगल
और पौत्र बहादुरशाहजी हुए। लाला बहादुरशाहजी के रुल्दूशाहजी, मुश्ताकशाहजी और गुलाब
नामक पुत्र हुए। लाला रुल्दूशाह के परिवार में लाला खुशीरामजी प्रसिद्ध धर्म भक्त थे।
मशहूर व्यक्ति थे। संवत् १९७० में आपका स्वर्गवास हुआ। लाला मुश्ताकशाहजी के लाला
शाहजी तथा रामचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला सावनशाहजी—आपका जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप इस समय इस
में वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपने व्यवसाय में हजारों लाखों रुपये उपार्जित किये। आपकी जवा
के व्यापार में बड़ी बारीक दृष्टि है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके इस समय ७
जिनके नाम क्रमश दीपचन्दजी, मोतीलालजी, पन्नालालजी, मुशीरामजी, हीरालालजी, हंसराज
रोशनलालजी हैं। लाला दीपचन्दजी संवत् १९५८ से अपने पिताजी से अलग व्यापार क
आपके इस समय मुन्नीलालजी और सुदर्शनकुमारजी नामक दो पुत्र हैं।

को छोड कर शेष सब भाई सम्मिलित काम काज करते है। मोतीलालजी के संरक्षक (Patıon) तथा इसकी कार्य-कारिणी समिति के सदस्य हैं। सभी सार्वजनिक कामों में भाग लेते रहते हैं। आप वर्तमान में महावीर जैन के मेम्बर, डिस्ट्रिक्ट दरबारी तथा Lıfe Associate of red cross मोतीलालजी के जगीलालजी, मनोहरलालजी, शादीलालजी, कपूरचन्दजी एवम् पुत्र हैं, लाला पन्नालालजी के शांतिलालजी चेनलालजी, देवराजजी एवम् विमलकुमार लाला मुन्शीरामजी के कुनणराजजी एवम् परतमनलालजी नामक दो पुत्र हैं। लाला तथा सुदीगकुमार जी और लाला हसराजजी के बच्छराजजी, जगमोहनजी नामक पुत्र हैं।

सियालकोट की ओसवाल समाज में बड़ा प्रतिष्ठित माना जाता है। इस परिवार मेसर्स सावनशाह मोतीशाह के नाम से प्रधान फर्म तथा इसी की यहीं पर दो शाखाएँ पर सराफी तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

श्री हंसराजजी मनिहानी का खानदान सिढ़ोरा (पंजाब)

का मूल निवासस्थान सिरसा (हिसार) का है। वहाँ से उठ कर यह खानदान करीब सात आठ पुश्त पहले आबाद हुआ। यह परिवार जैन श्वेताम्बर का मानने वाला है। इस परिवार में लाला जौंकीमलजी, दयारामजी और भाई थे। लाला मौजीरामजी बड़े बहादुर, दिलेरजंग और पराक्रमी थे। आपने लाला जौंकीमलजी के लाला श्यामलालजी नामक एक पुत्र हुए। आपने इस खानदान को बढ़ाया। आपके लाला नेमदासजी और लाला नेमदासजी के हीरालालजी, चढ़ती- नामक पुत्र हुए। इस खानदान में लाला चढ़तीमलजी और हाकमरायजी बड़े हुए हैं। आपने अपनी जमींदारी और इज्जत को बढ़ाया। लाला हाकमरायजी करीब कमिश्नर रहे। चढ़तीमलजी के बसंतामलजी और मित्रसेनजी नामक दो पुत्र हुए। मुकुन्दीलालजी नामक पुत्र हुए।

—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आपने जैन हाई स्कूल अम्बाला की धर्मशाला में एक एक कमरा बनवाया। आपके हंसराजजी, लाला सूरजमलजी पुत्र हुए। लाला मुकुन्दीलालजी का स्वर्गवास सन् १९२९ में हो

—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप सिढ़ौरा के प्रतिष्ठित रईस हैं। म्युनिसिपलिटी के व्हाइस चेअरमेन, यहाँ के हिंदी हॉई स्कूल तथा हि रहे हैं। आप यहाँ की गवर्नमेंट में डिस्ट्रिक्ट दरबारी

इन्श्यूरंस कम्पनी लि० के डायरेक्टर हैं। आप अछूतोद्धार और विद्या प्रचार के कामों में बहुत भाग ले
आपके छोटे भाई सूरतरामजी कॉलेज में तथा दीपचन्दजी हाई स्कूल में पढ़ते हैं।

लाला मित्रसनजी के बड़े पुत्र अमीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४२ का है। आप पहले म्युनिसीपल कमिश्नर रह चुके हैं। आपकी यहाँ पर बहुत बड़ी जमीदारी है। आपके रिखबदासजी, रोशन अमरनाथजी नामक तीन पुत्र हैं। लाला वसंतालालजी ने अपने भाई लाला पन्नालालजी की सिढौरामें एक विशाल जैन मन्दिर बनवाया है। यह खानदान यहाँ बड़ा प्रतिष्ठित और रईस माना ज

लाला चेतराम नरातराम मुनिहानी, जुगरावाँ (पंजाब)

यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस खानदान के पुरुष लाला जी के यहाँ लम्बे समय से पसारी का होता आया है। आपका स्वर्गवास हो गया है। आप नरातमरामजी तथा मुनीलालजी नामक २ पुत्र विद्यमान हैं। आप दोनों भाई अच्छे कामों में देते रहते हैं। लाला नरातारामजी के यहाँ चेतराम नरातमराम के नाम से पसारी का व्यापार ह लाला मुनीलालजी जैन प्रचारक सभा के खजाञ्ची हैं। आप गुरुकुल में बारी देते हैं। आपके यहाँ ज वालकराम के नाम से बिसाती का व्यापार होता है।

तातेड़

लाला मुन्नीलाल मोतीलाल ताँतेड़, अमृतसर

इस परिवार का खास निवास लाहौर है। वहाँ से ७५ साल पहिले लाला मेलूमलजी आये। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। लाला मेलूमलजी ने जनरल मर्चें व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पुत्र लाला माहताब शाहजी का जन्म करीब संवत् १' हुआ। अमृतसर के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित सज्जन थे। जाति बिरादरी के कामों में सलाह वजनदार मानी जाती थी। आपने अपने व्यापार को बहुत उन्नति पर पहुँचाया। संवत् आप स्वर्गवासी हुए। आपके लाला मुन्नीलालजी, लाला मोतीलालजी लाला भीमसेनजी त हंसराजजी नामक ४ पुत्र हुए।

लाला मुनीलालजी, मोतीलालजी—आपका जन्म क्रमश संवत् १९४७ तथा संवत् हुआ। आपने अपने व्यापार को काफी तरक्की पर पहुँचाया है। आपके दोनों छोटे भाई भी में आपके साथ भाग लेते हैं। आपने अमृतसर में अपनी ३ ब्रांचें फैंसी कपड़ा, होयजरी तथा के थोक व्यवसाय के लिए खोली हैं। आप विलायत से डायरेक्टर कपडे का इम्पोर्ट लाला रतनचन्द हरजसराय की गोल्डशाखा में आप भागीदार हैं। लाला मुन्नीलालजी श्री सोहन अनाथालय के कोषाध्यक्ष हैं। तथा धार्मिक और जातीय कामों में दिलचस्पी लेते रहते हैं। आप

... कमेटी के मेम्बर हैं। अमृतसर के ओसवाल समाज में आपका खानदान नामी ... लालजी, रोशनलालजी, तिलकचन्दजी तथा धर्मपालजी हैं। इनमें लाला मनोहरलाल ... किया है। शेष सब पढ़ते हैं। लाला मोतीलालजी के पुत्र शादीलालजी इंटर ... मनोहरलालजी नथा जितेन्द्रनाथजी हैं। इसी तरह लाला भीमसेनजी के पुत्र ... रामजी के पुत्र राजपालजी तथा सतपालजी हैं।

लाला मस्तरामजी एम० ए० एल० एल० बी० तांतेड़ अमृतसर

... के पूर्वज लाला शिवदयालजी अपने खास निवास लाहौर से कांगड़ा, होशियारपुर ... आप एक्साइज के कंट्राक्ट का काम करते थे। आप लगभग ५० साल पूर्व स्वर्ग- ... लाला मिल्खीमलजी, लाला लछमणदासजी, तथा लाला नन्दलालजी नामक पुत्र ... लछमणदासजी को उनके चाचा लाला महताबसाहजी ७ वर्ष की आयु में लाहोर ले ... भाई भी अमृतसर आ गये। लाला लछमणदासजी इस समय आढ़त का काम ... मिडिल तक शिक्षा पाई है। आपके पुत्र लाला मस्तरामजी हैं।

...—आपका जन्म संमत् १९५८ में हुआ। आप सन् १९२१ में बी० ए० ... में एम० ए० तथा १९२६ में एल० एल० बी० पास हुए। सन् १९२९ में आप ... प्रोफेसर हुए। इसके अलावा आप यहाँ वकालत भी करते हैं। आपने ... मर्जी तथा मोतीशाहजी के सहयोग से लाहौर में जैन एसोशिएसन नामक ... की। इसके अलावा आप अमर जैन होस्टल के सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा "आफताब जैन" ... । इस समय आप स्थानकवासी जैन सभा पंजाब, ऑल इण्डिया स्थानकवासी सभा, ... तथा अमृतसर की लोकल स्था० सभा की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के मेम्बर और ... की मैनेजिंग कौंसिल तथा बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज के मेम्बर हैं। तथा पब्लिक ... प्रेसिडेण्ट हैं। कहने का मतलब यह कि आप यहा के जैन समाज में अग्रगण्य ... मिल्खीमलजी के बड़े पुत्र हंसराजजी आढ़त का काम करते हैं। तथा छोटे लाला देसराज ... स्वर्गवासी हो गये हैं।

लाला दुनीचंद प्यारेलाल जैन-तांतेड़, अमृतसर

... सवासौ वर्ष पूर्व लाहोर से अमृतसर आया यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय ... इस परिवार के पूर्वज लाला कन्हैयालालजी के लाला कसूरियामलजी, छज्जूमलजी ... कसूरियामलजी नामी जौहरी थे। लाला छज्जूमलजी धार्मिक प्रवृत्ति के ... १९४९ में स्वर्गवास हुआ। आपके लाला चुन्नीलालजी, दुनीचन्दजी ... हुए। लाला चुन्नीलालजी के पुत्र देवीचंदजी, नगीनालालजी तथा ... करते हैं।

लाला दुनीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४० हुआ। आप आरम्भ में जवाहरात का करते थे। बाद आपने बसाती का व्यापार शुरू किया। इस व्यवसाय में आपको अच्छी सफ मिली। धार्मिक कार्मों में आपकी अच्छी रुचि है। आपके प्यारेलालजी, प्रेमनाथजी, विलायतीरा रतनचंदजी तथा रोशनलालजी नामक ५ पुत्र हैं। लाला प्यारेलालजी का जन्म संवत् १९६० में हु आप अपने व्यापार का उत्तमता से सचालन कर रहे हैं। आप हाजरी तथा मनीहारी का थोक म और इस माल का जापान आदि देशों से डायरेक्ट इम्पोर्ट करते हैं। आपके छोटे भ्राता प्रेमनाथजी विलायतीरामजी व्यापार में भाग लेते हैं। अमृतसर में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता प्यारेलालजी के पुत्र तिलकराज तथा जतनराज हैं।

लाला मुंशीरामजी जैन तॉतड़, लाहोर

इस खानदान के पुरुष स्थानकवासी सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इस परिवार का निवास जयपुर है। वहा से यह परिवार लाहोर आया। इस परिवार में लाला नदलालजी आपके पुत्र लाला शिब्बूमलजी और लाला पन्नालालजी हुए। लाला शिब्बूमलजी ने लगभग ५५ पूर्व क्राकरी मरचेंट्स का व्यापार शुरू किया। आप दोनों बंधु बड़े सज्जन व्यक्ति थे। लाला प जी संवत् १९८२ के स्वर्गवासी हुए। आपके लाला मुंशीरामजी, गंडामलजी तथा कपूरचन्दजी ३ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें गंडामलजी लाला शिब्बूमलजी के नाम पर तथा कपूरचन्दजी मोघा में मामा के नाम पर दत्तक गये हैं।

लाला मुंशीरामजी—आपका जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आपने मेट्रिक तक शिक्षण सन् १९२१ से आपने देशकी सेवाओं में योग देना आरम्भ किया, तथा उस समय से आप लाहोर के तमाम कार्मों में दिलेरी से हिस्सा लेते हैं। आप कई सालों तक लाहोर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष कांग्रेस के मेम्बर रहे हैं। सन् १९३० में सरकार ने बगावत फैलाने के आरोप पर दफा १२४ में आ साल की सख्त सजा दी, तथा बी क्लास रिकमेंड की। सत्याग्रह के समय आपने १ हजार बा दिये थे। और २ सालों तक वर्द्धमान नामक पेपर भी चालू किया था। आप कई सालों तक मरचेंट एसोशिएसन के मेम्बर रहे। इस समय आप लाहोर ग्राम वेअर एसोशिएसन के अछूतोद्धार कमेटी, स्वराज सभा तथा एस० एस० जैन सभा, की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर हैं। तरह श्री अमर जैन होस्टल लाहोर की लोकल कमेटी के मेम्बर हैं। आप विधवा विवाह के बड़े हा आपने बीसियों विधवाओं का सम्बन्ध जैनियों से करा दिया है। आपके यहा लाला शिब्बूम अनारकली के नाम से क्राकरी बिजिनेस होता है। लाला गंडामलजी भी "शिब्बूमल गंडामल" के न क्राकरी बिजिनेस करते हैं।

लाला काशीरामजी जैन, जम्मू (काश्मीर)
(पेज नं० ६०५)

लाला मोहनलालजी पाटनी बी ए एल एल बी
अमृतसर

लाला मस्तरामजी जैन एम ए एल एल बी,
अमृतसर.

लाला नेमदासजी जैन, बी ए अंबाला सि
(पेज नं० ६०१)

लाला मोहनलालजी जैन एडवोकेट, अमृतसर

[illegible] लुधियाना (पंजाब) का निवासी है। वहाँ इस खानदान के पूर्वज [illegible] करते थे। आपके पंजाबरायजी तथा खुशीरामजी नामक २ पुत्र हुए। आप भी [illegible] रहे। लाला पंजाबरायजी के पुत्र लाला मोहनलालजी हैं।

[illegible]—आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आपको होनहार समझकर २।३ [illegible] आपके मामा अमृतसर के मशहूर जौहरी लाला पन्नालालजी दूगड अमृतसर [illegible] निवास करते हैं। आपने सन् १९२३ में एल० एल० बी० की डिगरी हासिल [illegible] अमृतसर में प्रेक्टिस कर रहे हैं। आप श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर मार्गीय [illegible] हैं। आप पंजाब प्रान्त की ओर से "आनन्दजी कल्याणजी" की पेढ़ी के मेम्बर हैं। [illegible] मार्गीय समाज में आप गण्य मान्य व्यक्ति हैं। आपने सन् १९२७ में श्री आत्मानंद जैन [illegible] अधिवेशन के समय तथा १९२३ में होशियारपुर अधिवेशन के समय सभापति का [illegible] लिया था। अमृतसर जैन मंदिर की व्यवस्था आपके जिम्मे है। तथा आप जैन वाचनालय [illegible] मोहनलालजी एडवोकेट बड़े समझदार तथा विचारवान सज्जन हैं। आपके छोटे भाई [illegible] लुधियाने में अपना घरू व्यापार करते हैं।

लाला चीनूमलजी का खानदान, लुधियाना

[illegible] मंदिर आम्नाय को मानने वाले हैं। इस खानदान का मूलनिवास स्थान [illegible] था। वहाँ से उठकर करीब १०० वर्ष पहले यह खानदान लुधियाने में आकर [illegible] यहाँ निवास करता है। और इस खानदान वाले पाटन से आने के कारण [illegible] मशहूर हैं।

[illegible] सबसे पहले लाला चीनूमलजी हुए। लाला चीनूमलजी के लाला फतेचंदजी [illegible] पुत्र हुए। लाला फतेचन्दजी के लाला लाजपतरायजी कुन्दनरायजी एवं लाला [illegible] पुत्र हुए। इनमें से लाला लाजपतराय जी और कुन्दनरायजी का स्वर्गवास हो [illegible] के मगतरायजी और मगतरायजी के हितकरणदासजी नामक पुत्र हैं। [illegible] पर अलग स्वतंत्र व्यवसाय करते हैं।

[illegible] के कस्तूरीलालजी और कस्तूरीलालजी के लालचन्दजी नामक पुत्र हैं जो [illegible] के साथ व्यापार करते हैं। लाला हुकुमचन्दजी का जन्म संवत् १९१५ में [illegible] ज्ञानचन्दजी एवं केशरदासजी नामक चार पुत्र हैं। आपकी [illegible] थोक और खुदरा व्यापार होता है।

लाला उत्तमचंद बाबूराम पाटनी, जुगरावाँ

[illegible] पीढ़ियों से जुगरावाँ में पसारी का व्यापार करता आ रहा है [illegible] और आदरू को ज्यादा बढाया। आप जैन प्रचारक ..

को सहायता देते रहते हैं। इसी तरह जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला को वारी देने की ओर अनुरा रखते हैं। यहाँ के जैन समाज में आप सयाने व्यक्ति हैं। आपने रूपचन्दजी महाराज की समाधि शादीरामजी महाराज की एक समाधि बनवाई है। आपने बाबूरामजी तथा झडूरामजी नामक दो सज्जनों को दत्तक लिया है। आप दोनों बंधु अपनी दुकानों का व्यापार संचालन बड़ी तत्परता से करते हैं। के यहा "उत्तमचन्द बाबूराम" के नाम से शहर में तथा झण्डूमल प्यारेलाल के नाम से मण्डी में पसारी बसाती का व्यापार होता है। लाला बाबूरामजी उत्साही तथा समाज सेवी सज्जन हैं। आप श्री प्रचारक सभा के प्रेसिडेंट हैं।

मालकस

लाला गण्डामलजी का खानदान, जण्डियाला गुरू (पंजाब)

यह खानदान श्री जैनश्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को मानने वाला है। यह खानदान सबसे पहले पटियाला में रहता था। फिर वहाँ से महाराजा रणजीतसिंहजी के समय में लाहौर आकर जवाहरात का व्यापार करने लगा इस खानदान में लाला जेठमलजी के पुत्र हरगोपालजी और अनोखामलजी हुए। अनोखामलजी के पुत्र हरभजमलजी और जयगोपाल जी लाहौर में गदर हो जाने के कारण अपने ननिहाल जण्डियाला गुरू चले आये। आप लोगों के समय में जण्डियाला गुरू की दुकान पर जमीदारी और साहुकारा तथा अमृतसर की दुकान पर जवाहरात का व्यापार होता था। लाला हरभजमल जी के रामसिंहजी, ज्वालामलजी तथा कर्मचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला रामसिंहजी के मेलामल, मीतामलजी, कालामलजी और दितमलजी नामक चार पुत्र हुए। लाला मेलामलजी बड़े दयालु तथा व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका संवत् १९५९ में ८३ साल की वय में स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम लाला आत्मारामजी, कोटूमलजी तथा सिब्बूमलजी थे। लाला आत्मारामजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ था। आप धर्मात्मा पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया। आपके गण्डामलजी, गोपीमलजी, तथा खजांचीमलजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला गण्डामलजी—आपका जन्म सवत् १९३६ का है। आप इस परिवार में बड़े नामी प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने प्रयत्न करके सन् १९०९ में पंजाब स्थानकवासी जैन सभा की स्थापना करवाई। और आप इसके १८ सालों तक ऑनरेरी सेक्रेटरी रहे। लाहोर के अमर जैन होस्टल के स्थापन करवाने में भी आपका बहुत बड़ा प्रयत्न रहा है। आप इस समय जण्डियाला गौशाला के प्रेसिडेंट, व म्युनिसिपल कमिश्नर, डिस्ट्रिक्ट हिन्दू सभा अमृतसर के तथा जैन विधवा सहायक सभा पजाब के ऑ० सेक्रेटरी हैं। सारे पंजाब के जैन समाज में आपका नाम प्रसिद्ध है। आपके पुत्र लाला मुन्नीलालजी पढ़ते

लाला गण्डामलजी के छोटे भाई लाला गोपीमलजी का जन्म १९३९ में हुआ। आप इस खानदान का तमाम व्यापार देखते हैं। तथा इस समय सराफा कमेटी के प्रेसिडेंट हैं। आपके पुत्र चन्दजी तथा मदनलालजी व्यापार सम्हालते हैं, तथा रोशनलालजी और मनोहरलालजी पढ़ते हैं।

सेठ गुलाबचंदजी गूगलिया (गुलाबचंद हीराचंद) मद्रास.

सेठ ज्ञानमलजी नागोरी भीलवाड़ा (मे

श्री हीराचंदजी गूगलिया (गुलाबचंद हीराचंद) मद्रास

श्री मगनमलजी भीलवाड़ा (मेवाड़)

तथा समझदार सज्जन हैं। आप जैन मित्र मंडल के प्रेसीडेंट हैं आपके पुत्र
... पढ़ते हैं। शेष विद्याप्रकाशजी और विद्याभूषणजी भी पढ़ते हैं।

नागोरी

सेठ ज्ञानमलजी नागोरी का परिवार, भीलवाड़ा

... परिवार के पूर्व पुरुष पंवार राजपूत सोभाजी को जैनाचार्य्य ने जैनी बनाया। इन्होंने ... निर्माण करवाया। इनके वंशज संवत् १६१५ में नागोर आये। यहां से संवत् ... परिवार के प्रसिद्ध व्यक्ति कमलसिंहजी महाराणा जगतसिंहजी के समय में पुर (मेवाड़) ...। नागोर से आने के कारण ये लोग नागोरी कहलाये। कनमलसिंहजी के पश्चात् क्रमशः ..., और अंबराजजी हुए। ये भीलवाड़ा आकर बसे। इनके बाद क्रमशः ... दयारामजी और खूबचन्दजी हुए। आप सब लोग व्यापार कुशल थे। आप ... तरक्की की। यहाँ तक कि खूबचन्दजी के समय में इस फर्म की १८ शाखाएं हो ... से जवानमलजी को दत्तक लिया। आपकी नाबालिगी में भीलवाड़ा एवम् ... शेष सब बन्द करदी गई। सेठ जवानमलजी को महाराणाजी की ओर से खातरी ... हुए थे। कहा जाता है कि आपका विवाह रीया के सेठों के यहां हुआ, उस समय ... विवाह में खर्च हुआ था। बरात में कई मेवाड़ के प्रसिद्ध २ जागीरदार भी आये थे। ... की ओर से पहरा चौकी का पूरा २ प्रबन्ध था। आपका स्वर्गवास होगया। आपके ... नामक दो पुत्र हुए।

... धार्मिक व्यक्ति थे। आपका राज्य में भी अच्छा सम्मान था। यहाँ की पंच ... में आपका अच्छा मान था। आपके समय में भी फर्म उन्नति पर पहुँची। ... गया। इस समय इस परिवार में सेठ नथमलजी ही बड़े व्यक्ति हैं। आप ... का संचालन कर रहे हैं। आप मिलनसार हैं। आपके पुत्र न होने से चंदनमल ... दत्तक आये हैं। इस समय आप लोग जुमजी केशोराम के नाम से ... भीलवाड़ा में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

... के दौहित्र कु० मगनमलजी कदकुदाल एम० आई० सी० एस० बचपन से ही ... हैं। आप मिलनसार और उत्साही नवयुवक हैं। आजकल आप यहाँ काटन ... दिनाजी वगैरह सब लोग जनकुपुरा मंदसोर में रहते हैं। वहीं आपका निवास ... दशरथलालजी मंदसोर में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपने हजारों लाखों ... की थी।

गुगलिया

सेठ गुलाबचन्द हीराचन्द गुगलिया, मद्रास

इस परिवार के पुरुष श्वेताम्बर जैन मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले हैं। इस खान के पूर्व पुरुष सेठ जयसिंहजी देवाली (मारवाड) में रहते थे। वहाँ से इनके पुत्र खूमाजी, चा (मारवाड़) आये। इनके वीरचन्दजी और भूरमलजी नामक २ पुत्र हुए।

सेठ वीरचन्दजी भूरमलजी गुगलिया—आप दोनों भाइयों में पहले सेठ वीरचन्दजी सन् १८ में व्यवसाय के लिये अहमदाबाद गये। वहाँ से आप कर्नाटक की ओर गये। उधर २ साल रा आपने मद्रास में आकर पैरम्बूर बैरक्स में दुकान की। यहाँ आने पर आपने अपने छोटे भाई भूरमलर्ज भी बुलालिया, तथा अपनी दुकान की एक ब्राच और खोली। इन दोनों बंधुओं ने साहस पूर्वक व्यापा सम्पत्ति उपार्जित कर अपने सम्मान को बढ़ाया। आपने अपने कई जाति भाइयों को सहायता देकर दु करवाई। सेठ वीरचन्दजी सन् १९०५ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र माणकचन्दजी का चाणोद में वय में स्वर्गवास हो गया। सेठ वीरचन्दजी के पश्चात् सेठ भूरमलजी व्यापार सम्हालते रहे। सन् १९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके धनरूपमलजी, हीराचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। गुलाबचंदजी सेठ विरदीचंदजी के यहा दत्तक गये। तथा धनरूपमलजी का स्वर्गवास छोटी वय मे हो ग

इस समय इस परिवार में हीराचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी गुगलिया विद्यमान हैं। आ जन्म क्रमशः सन् १९०८ तथा १९१३ में हुआ। सन् १९२९ में इन दोनों भाइयों ने अपना कार्य्य पूर्वक अलग २ कर लिया है। आप अपने पिताजी के स्वर्गवासी होने के समय बालक थे। अत फर्म काम वीरचन्दजी की धर्म पत्नी श्री मती जड़ाव बाई ने बड़ी दक्षता के साथ सम्हाला। आपका धर्म में बड़ा लक्ष्य हैं। आपने शत्रुंजय तीर्थ में एक टोंक पर छोटा मन्दिर बनवाया। गुदौल गाँव में द वाडी का कलश, चढ़ाया। इसी प्रकार जीव दया, स्वामी वात्सल्य पाठशाला आदि शुभ कार्य्यों में सम लगाई। इस समय गुलाबचन्दजी, "वीरचन्द गुलाबचन्द" के नाम के तथा हीराचन्दजी, "भूर हीराचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। मद्रास के ओसवाल समाज में यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती

सेठ गम्भीरमल बख्तावरमल गुगलिया, धामक

इस परिवार का मूल निवास स्थान बलूँदा (जोधपुर) है। आप स्थानकवासी आम्ना माननेवाले सज्जन हैं। जब सेठ बुधमलजी लूणावत ने धामक आकर अपनी स्थित को ठीक किया, उन्होंने अपने जीजा (बहिन के पति) सेठ गम्भीरमलजी को भी व्यापार के लिए धामक बुलाया। गम्भीरमलजी के साथ उनके पुत्र बख्तावरमलजी भी धामक आये थे। इन दोनों पिता पुत्रों ने व्या में सम्पत्ति पैदा कर अपने सम्मान तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि की। सेठ बख्तावरमलजी बड़े उदार पुरु बरार प्रान्त के गण्य मान्य ओसवाल सज्जनों में आपकी गणना थी। आपकी धर्म पत्नी ने बलदे में

... का उसकी व्यवस्था वहाँ के जैन समाज के जिम्मे की। आपके नाम पर ... (अजमेर) से दत्तक आये। इनका भी अल्प वय में स्वर्गवास हो गया, अतः ... में अमरचंदजी गुगलिया दत्तक लिये गये।

..., गुगलिया—आपका जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप उदार प्रकृति के राजसी ठाट ... । आपने अपने दादीजी के ओसर के समय ३१ हजार रुपया जैन बोर्डिंग हाउस फंड ... हजारों रुपये की सहायता आपने शुभ कार्यों में की। ओसवाल बोर्डिंग में भी आपने ... । बाबू सुगनचन्दजी लूणावत द्वारा स्थापित महावीर मंडल नामक संस्था से आप दिल ... । आप सन् १९२१ तक धामन गाँव में आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपको पहलवान ... का शौक है। आपके बड़े पुत्र खेमचन्दजी का ९ साल की वय में स्वर्गवास हो गया। ... लालजी तथा कुंजीलालजी नामक २ पुत्र हैं जो बालक हैं। आपके यहाँ कृषि ... होता है। बरार प्रान्त के प्रतिष्ठित कुटुम्बों में इस परिवार की गणना है।

संखलेचा

काशीनाथजी वाले जौहरियों का खानदान, जयपुर

इस परिवार के पूर्वज श्री जौहरीमलजी संखलेचा जयपुर में जवाहरात तथा जागीरदारों के साथ ... करते थे। आपके नाम पर देहली से जौहरी दयाचन्दजी दत्तक आये। आपके समय ... व्यवसाय की उन्नति आरम्भ हुई। आपके काशीनाथजी, मूलचन्दजी, जमनालालजी ... नामक ४ पुत्र हुए।

... जौहरी—आपने इस खान के जवाहरात के व्यापार को बहुत चमकाया। आप पर ... माधोसिंहजी बहुत प्रसन्न थे। जवाहरात में आपकी दृष्टि बड़ी सूक्ष्म थी। आप ..., तथा अन्य उच्च पदाधिकारियों से जवाहरात का व्यवसाय किया करते थे। इसके ... रईस तथा जागीरदारों में आप जवाहरात बिक्री किया करते थे। इस समय आप "... वाले जौहरी" के नाम मशहूर हैं। आपके भैरोंलालजी, बेजूलालजी तथा फूल... हुए। इन तीनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। इस समय बेजूलालजी के ... हैं।

...—आपके नाम पर आपके सब से छोटे भ्राता छोटीलालजी के तीसरे पुत्र ...। ...लालजी का स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र माणकचन्दजी स्था० नवयुवक ... हैं।

...—आप अपने बड़े भ्राता काशीनाथजी के पश्चात् उसी प्रकार फर्म का ... रहे। संवत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र महादेवलालजी तथा

चम्पालालजी जौहरी विद्यमान हैं। वर्तमान में जौहरी महादेवलालजी ही इस परिवार में सब से ब आपको दरबार में कुर्सी प्राप्त है। जौहरी चम्पालालजी के पुत्र उमरावमलजी तथा गुलाबचन्दज इनमें गुलाबचन्दजी महादेवलालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। श्री उमरावमलजी, समझदार तथा ि सार नवयुवक हैं। आप शांति जैन लायब्रेरी के मन्त्री हैं। आपके पुत्र मिलापचन्दजी हैं।

छोटीलालजी जौहरी—आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र मुन्नीलालजी तथा लालजी हुए। इनमें मुन्नीलालजी जौहरी मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। जौहरी मुन्नील स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर, स्थानकवासी जैन सुबोध पाठशाला के ट्रेझरर तथा जैन कन्या शा प्रेसिडेंट तथा ट्रेझरर हैं। आपके पुत्र रतनलालजी व्यवसाय में भाग लेते हैं।

यह खानदान जयपुर के प्रधान जौहरियों में माना जाता है। इस खानदान की फर्म को वायसरायों ने सार्टिफिकेट दिये है। कई भारतीय राजा रईसों के यहाँ आपका जवाहरात जाता है। लंदन आदि स्थानों पर भी आप जवाहरात भेजते हैं। इस फर्म को लन्दन, कलकत्ता जयपुर आदि नियों से गोल्ड सिलवर मेडल तथा सार्टिफिकेट मिले हैं। जयपुर के ओसवाल समाज में यह प नामी माना जाता है। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का अनुयायी है। वर्तमान में इस परिव "जौहरीमल दयाचन्द" के नाम से व्यापार होता है। आपकी एक जीनिंग फेक्टरी, कसरावद (इन्दौर) मे

सेठ रिखबदास सवाईराम संखलेचा, खामगांव

सेठ रिखबदासजी संखलेचा—इस परिवार के पूर्वज रिखबदासजी संखलेचा अपने मूल नि जोधपुर से व्यापार के लिये संवत् १९२१ में खामगांव आये। तथा आपने सेठ "श्रीराम शालिगराम यहाँ २५ सालों तक मुनीमात की। आपका जन्म संवत् १९०२ में हुआ था। इस दुकान पर न करते हुए आप वूल कम्पनी की रुई की आढत तथा अपनी घरू आढ़त का व्यापार भी करते थे। आपने २।३ लाख रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। साथ ही आपने राठीजी के व्यापार को भी काफी की। इस समय उनकी ३० दुकानों की देखरेख व व्यवस्था आपके जिम्मे थी। आप बड़े रतवेदार वजनदार पुरुष माने जाते थे। संवत् १९१३ में राठी फर्म की ५२ दुकानों का बँटवारा आपही के हाथ हुआ था। संवत् १९४० में मस्जिद के सामने बाजा बजने के सम्बन्ध में बखेड़ा खड़ा हुआ, उसमें आ हिन्दू समाज का नेतृत्व किया, तथा उस समय की निश्चित हुई शर्तें इस समय तक पाली जाती। संवत् १९३६ में पानी के बंदोबस्त के लिये तालाब बनवाने में तथा नल का कनेक्शन ठीक करवाने में आ इमदाद दी। खामगाँव के काटन मार्केट, म्युनिसिपेलेटी आदि के स्थापनकर्ताओं में आपका नाम अग्रगण्य कहने का तात्पर्य्य यह कि आप खामगाव के नामीगरामी व्यक्ति हो गये हैं।

सेठ रिखबदासजी के शांतिदासजी तथा गोडीदासजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों स का जन्म क्रमशः १९४९ तथा संवत् १९५७ में हुआ। सेठ शांतिदासजी खामगाँव सेवा समाज के ये। इसी प्रकार माहेश्वरी महासभा के चतुर्थ सेशन अकोले के समय आप असिस्टेंट हेड केप्टन थे। मध्य प्रांत तथा बरार की ओसवाल सभा के हर कार्यों में उत्साह से भाग लेते है। आप बुलढाणा प्रा

— — ई। आपके यहाँ रुई, आढ़त का कार्य्य होता है। आपके छोटे बंधु गोडीदासजी आपके — — कारबार करते हैं।

सेठ रामचन्द्र चुन्नीलाल संखलेचा आर्वी (बरार)

इस परिवार का आगमन लगभग १५० साल पहिले जेसलमेर से आर्वी हुआ, पहिले इस — — रामचन्द्र" के नाम से काम होता था, संखलेचा हुकुमचंदजी के पुत्र रामचंदजी तथा — — चुन्नीलालजी हुए। संखलेचा चुन्नीलालजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए, आपके ३ — — , राजमलजी तथा गोकुलदासजी हुए, इ में से भगवानदासजी २५।३० साल पहिले — — संखलेचा अमोलकचदजी के नाम पर दत्तक गये।

— गोकुलदासजी का जन्म सवत १९५६ में हुआ। भगवानदासजी के पुत्र सोभागमलजी — १९५४ में तथा चिमनदासजी का १९५८ में हुआ। आपके हाथों से दुकान के व्यवसाय को — । — ५० जैन मंदिर की व्यवस्था आप लोगों के जिम्मे है, आपकी फर्म "रामचन्द्र — " चांदी सोना तथा लेनदेन का काम काज करती है तथा आर्वी के व्यापारिक समाज — है। संखलेचा राजमलजी, "अमोलचन्द हीरालाल" के नाम से कार बार करते हैं।

केसरीमलजी संखलेचा, येवला

— निवास सांवरी (जोधपुर) है। देश से सेठ हरकचंदजी संखलेचा व्यापार के — तथा सेठ भीमराजजी दईचन्दजी की भागीदारी में कपड़े का व्यापार आरंभ किया। — । — में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र केसरीमलजी तथा पूनमचंदजी विद्यमान हैं। — दईचन्दजी की बम्बई और येवला दुकान के भागीदार हैं। केसरीमलजी का — । आप सज्जन व्यक्ति हैं। तथा येवले के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित हैं।

श्री लक्ष्मीलालजी संखलेचा, जावद

— (मालवा) के एक प्रतिष्ठित परिवार के हैं। आपके पिताजी वहाँ के लक्षाधीश — । — लालजी ज्योतिष शास्त्र के अच्छे ज्ञाता हैं। और आपके सामाजिक विचार भी — सम्बन्ध में आपने कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं। इस समय आप बम्बई — कार्य्य करते हैं। आपके चादमलजी तथा सोभागमलजी नामक २ पुत्र — भागीदारी का काम सम्हालते हैं। और सोभाग्यमलजी एफ० ए० में पढ़ते — होनहार युवक हैं।

बरड़िया

— — —पवार राजवंशीय राजपूतों से बरडिया ओसवालों की उत्पत्ति का — है कि — लाखनसी के पुत्र बेरसी को श्री उद्योतन सूरिजी ने उपदेश कर जैन

धर्म का ज्ञान कराया। बड़ के नीचे उपदेश देने से "वरदिया" नाम सम्बोधित हुआ। यही ना चल कर वरडिया गौत्र में परिवर्तित हुआ।

श्री राजमलजी बरड़िया का खानदान, जेसलमेर

इस परिवार का मूल निवास स्थान जेसलमेर ही है। हम ऊपर बरडिया वेरसी का कर चुके हैं। इनके कई पीढ़ियों बाद समराशाहजी हुए। ये जेसलमेर के दीवान थे। इन मूलराजजी ने भी रियासत के दीवान पद पर कार्य्य किया। मूलराजजी की ११ वीं पीढ़ी में भोज हुए, इनसे यह परिवार "भोजा मेहता" कहलाया। इनकी छठी पीढ़ी में मेहता सरूपसिंहजी इनके सरदारमलजी, जोरावरसिंहजी तथा उत्तमसिंहजी नामक ३ पुत्र हुए।

धनराजजी बरडिया—बरडिया सरदारमलजी के नाम पर बभूतसिंहजी दत्तक आये, तथा पुत्र धनराजजी थे। धनराजजी जेसलमेर स्टेट के प्रतिभा सम्पन्न पुरुष हो गये हैं। आपके ना आपके चाचा विशनसिंहजी के पुत्र केवलचन्दजी दत्तक आये। इनके सोभागमलजी तथा तेजमलजी पुत्र हुए। बरडिया तेजमलजी भी जेसलमेर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप इस समय स्टेट ट्रेझरा

बरड़िया जोरावरसिंहजी का परिवार—आपके बभूतसिंहजी, सगतसिंहजी, विशनसिं जवरचन्दजी, तथा नथमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें बभूतसिंहजी सरदारमलजी के नाम पर गये। सगतसिंहजी के हिम्मतरामजी, ज्ञानचन्दजी, हमीरमलजी, इन्द्रराजजी, बलराजजी नामक ५ हुए। इनमें हिम्मतरामजी का स्वर्गवास हो गया। शेष बन्धु विद्यमान हैं। बरड़िया हमीर उत्तमसिंहजी के पुत्र चन्दनमलजी के नाम पर दत्तक गये हैं। इसी तरह जवरचन्दजी के प्रपौत्र कुम्भ भी विद्यमान हैं। बरड़िया जोरावरसिंहजी के सबसे छोटे पुत्र नथमलजी थे। इनके पूनमचन्दजी रतनलालजी नामक पुत्र हुए। इस समय पूनमचन्दजी के पुत्र राजमलजी तथा रतनलालजी के रामसिंहजी विद्यमान हैं।

राजमलजी बरडिया—आपका जन्म संवत् १९३७ में हुआ। आप जेसलमेर के ओ समाज में समझदार तथा वजनदार पुरुष हैं। यहाँ के करोड़ों रुपयों की लागत के जैन मन्दिरं व्यवस्था का भार श्री संघ ने आपके जिम्मे कर रक्खा है। आप श्वेताम्बर सव कार्य्यालय के प्रेसिडें इस समय आप जेसलमेर स्टेट में कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। इसके अलावा आप अपना घरु व्यापार भी हैं। आपके पुत्र फतेसिंहजी हैं।

यह परिवार ५६ पीढ़ियों से जेसलमेर स्टेट की सेवा करता आ रहा है। रियासत को से दी गई जागीरी का पट्टा इस परिवार वालों के हाथ से लिखा जाता है। रियासत के कस्टम, बख्शी, खजाना, भंडार आदि मुख्य सीगे हमेशा से इस परिवार के जिम्मे रहते आये हैं। तथा जेस महारावलजी से इस परिवार को समय २ पर रुक्के तथा पर वाने मिलते रहे हैं।

बरड़िया गनेशजी का परिवार उदयपुर

करीब १०० वर्ष पूर्व बरडिया गनेशजी करेडा पार्श्वनाथ से उदयपुर आये। उनके मग जी, जालमचंदजी. साहबलालजी और फूलचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें मगनमलजी बड़े प्र

ा ारिया, जसलमर

श्री माणकलालजी बरडिया बी ए एलएल बी , उदयपुर.

... वालों भाइयों का परिवार अलग २ होगया। सेठ मगनमलजी के पुत्र सेठ ...जी इस समय अलीगढ़ में अपना २ व्यापार करते हैं।
...जी हिसाब के अच्छे जानकार थे। आपके चम्पालालजी और कन्हैयालालजी ...लालजी करीब ३५ वर्षों से उदयपुर स्टेट में रेसिडेन्सी सर्जन की आफिस ...यहां आने वाले कई अंग्रेज सर्जनों से अच्छे २ सर्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं। आपके ...इस परिवार में सर्व प्रथम ग्रेज्युएट हुए हैं। आप मिलनसार और योग्य सज्जन ... मनासा, खरगोन, सनावद, जीरापुर, सेंधवा, इतोद आदि कई स्थानों पर ...। इस समय आप गरोठ मे फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट है। आप फुटबाल, क्रिकेट वगैरह ...। आपके हीरालालजी और जवाहरलालजी नामक दो पुत्र हैं। सेठ कन्हैयालाल ...व्यापार करते हैं। आपके रतनलालजी, परमेश्वरीलालजी और मनोहरलालजी नामक ...। ...लालजी शिक्षित और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपका अध्ययन बी० ए० ... उदयपुर की मशहूर संस्था विद्याभवन में मास्टर हैं।
...लालजी के पुत्र कालूलालजी तथा फूलचन्दजी के पुत्र मोतीलालजी इस समय उदयपुर ...वहां अपना व्यापार करते हैं।

सेठ जुहारमल मूलचंद बरड़िया, सरदारशहर

... बहुत समय पहले सिरसा होते हुए अबोहर आये। सिरसा में सेठ ...। आप सिरसा ही मे रहकर व्यापार करते रहे। आपके पुत्र छोगमलजी और ... एवम् यहां कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। तथा इसमें अच्छी उन्नति की ...मलजी एवम् सेठ जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। प्रथम जुहारमलजी वहाँ से ... और जेठमलजी वहीं रहकर अपना व्यवसाय करने लगे। आपके सुगनचंदजी, ...चन्दजी नामक पुत्र हैं।
... अबोहर रहते थे, उसी समय कलकत्ता व्यापार के लिये चले गये थे। ... मेघराजजी चुन्नीलालजी सरदारशहर वालों के यहां काम करना आरम्भ किया। ... से इस फर्म में सामीदार हो गये। कुछ वर्षों बाद आपने इस फर्म से भी ...दिया। एवम् रघुनाथदास शिवलाल के यहां ५ हजार रुपया सालाना पर ... किया। इस समय आप वयोवृद्ध होने से सरदारशहर में शांतिलाभ कर ..., सोहनलालजी एवम् सूरजमलजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।
... मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल १५ वर्षों से आप जूट का वायदे का सौदा ... गति है। आपकी गद्दी १६ नोना फिटड लेन में है। सूरजमलजी ...। सोहनलालजी अपने चाचा हीरालालजी के साझे में "छोटूलाल सोहन- ...कपड़े तथा गणेश भगत के कटले में धोती का व्यापार करते हैं।

बा० मूलचन्दजी के श्रीचन्दजी, सुमेरमलजी, चन्दनमलजी, कन्हैयालालजी एवम् मंगल और बा० सोहनलालजी के माणकचन्दजी और रतनलालजी नामक पुत्र हैं। आप तेरापन्थी संप्रदाय

श्री भैरोंलालजी बरड़िया बी० ए० एल० एल० बी० नरसिंहपुर (सी० पी०

इस परिवार के पूर्वज बरडिया परभचन्दजी आपने मूल निवासस्थान फलौदी (जोधपुर से व्यापार के लिये नरसिंहपुर आये। यहाँ आकर आप रीयाँवाले सेठों की दुकान पर मुनीम हुए। संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र दमरूलालजी करीब १५ सालों तक रीयाँवाले दुकान पर प्रधान मुनीम रहे। आपने गोटे गाँव में मानमल मिलापचन्द तथा परमचन्द नंदराम के दुकान खोली। सन् १९२७ में आप स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र भैरोंलालजी तथा मिश्रीलालजी

भैरोंलालजी बरडिया—आपका जन्म संवत् १९५४ में हुआ। आपने सन् १९२३ में तथा १९२६ में एल० एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। सन् १९२७ से आप नरसिंहपुर से प्रेक्टि हैं। यवतमाल के ओसवाल सम्मेलन में आप मध्यप्रान्तीय ओसवाल महा सभा के सेक्रेटरी नि थे। आपको लिखने तथा भाषण देने का अच्छा अभ्यास है। आपने एक "हिन्दी ग्रन्थ माला" भी की थी। आपके छोटे भाई मिश्रीलालजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया है। श्री भैरोंलालजी बरड़िय पूनमचन्दजी तथा हुकुमचन्दजी पढ़ते हैं तथा लक्ष्मीचन्दजी और कुशलचन्दजी छोटे हैं।

बनवट

सेठ प्रतापमल फूलचन्द बनवट, आस्टा (भोपाल)

यह कुटुम्ब जोधपुर स्टेट के रास ठिकाना का निवासी है, आप श्वेताम्बर जैन समाज मार्गीय आम्नाय के माननेवाले हैं। देश से लगभग संवत् १८५१ में सेठ विनेचन्दजी बनवट के पुत्र ना यणदासजी, चन्द्रभानजी तथा नंदरामजी तीन भ्राता भोपाल स्टेट के मगरदा नामक स्थान में आ वहाँ संवत् १८८१ में "नारायणदास नंदराम" के नाम से दुकान स्थापित की गई। सेठ नारायणदा पुत्र चुन्नीलालजी तथा नंदरामजी के पुत्र छोगमलजी हुए। इन भ्राताओं में सेठ चुन्नीलालजी ने तथा लेन-देन के व्यापार में इस दुकान के व्यापार तथा कुटुम्ब के सम्मान को विशेष बढ़ाया। इ सज्जनों का स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९४६ तथा संवत् १९५८ में हुआ। सेठ चुन्नीलालजी के पुत्र मलजी उनकी मौजूदगी में ही स्वर्गवासी हो गये थे। सेठ प्रतापमलजी बनवट के नाम पर बोरा फूलचन्दजी बनवट दत्तक आये तथा छोगमलजी के यहाँ सिरेमलजी, बड्डू (खानदेश) से दत्तक आप दोनों भाई संवत् १९६२ में अलग २ हो गये।

सेठ फूलचन्दजी बनवट—आपका जन्म संवत् १९४६ में हुआ। आप संवत् १९६६ में मग आस्टा आये। आप ही की हिम्मत के बल पर दिगम्बर जैन प्रतिमा का जुलूस आस्ते में निकालना

... में आष्टे के दिगम्बर जैन समाज ने चाँदी की डिब्बी, सिरोपाव तथा मान ... किया। आपका आष्टे की जनता में तथा भोपाल राज्य मे अच्छा सम्मान है, आपको ... मे मिलने की इजाजत प्राप्त है। तथा आप आष्टे के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। वर्तमान ... "... फूलचन्द" बनवट के नाम से साहुकारी तथा आसामी लेन देन होता है।

वढ़ेर

सेठ कन्हैयालाल चुन्नीलाल वढ़ेर, देहली

... करीब सात आठ पुश्त से देहली में ही रहता है। आप ओसवाल जाति ... हैं। और स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के मानने वाले हैं। इस खानदान में ... के पुत्र लाला छजमलजी और छजमलजी के हीरालालजी नामक पुत्र हुए। ... १८८० के करीब हुआ। और संवत् १९५० के ज्येष्ठ मास मे आपका स्वर्ग ... धार्मिक और परोपकारी पुरुष थे सामायिक और प्रतिक्रमण का आपको बडा ...। आपके पुत्र लाला कन्हैयालालजी इस खानदान में बडे नामी और प्रतापी पुरुष हुए। ... सम्पत्ति और इज्जत को बहुत बढ़ाया। आप खास कर नीलाम का व्यापार करते थे। ... १९१० में हुआ। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से लाला मांगीलालजी और ...। लाला मांगीलालजी का जन्म संवत् १९३७ का है। आपके तीन पुत्र हुए ...लालजी, मुन्नालालजी और ऋषभचन्दजी हैं। इनमें से चम्पालालजी का केवल २२ ... में देहान्त होगया। लाला चुन्नीलालजी का जन्म संवत् १९४६ का है। आप ... पुरुष हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम जवाहरलालजी और मिलापचंद ... ओसवाल समाज में यह खानदान बडा धार्मिक और प्रतिष्ठित माना जाता है।

भड़गातिया

भडगातिया खानदान, अजमेर

... का मूल निवास स्थान मेड़ता है। इस खानदान के पूर्वज भडगातिया सूरजमलजी ... मेड़ते के समृद्धि शाली साहुकार माने जाते थे। आपके यहाँ "सूरजमल ... ...दा होता था। सेठ बाघमलजी के पुत्र फतेमलजी हुए।

... भडगातिया—आप संवत् १८६५-७० के मध्य में अजमेर आये। आप बडे ... ठाट-बाट वाले पुरुष थे। आपने अजमेर में बैंकिंग व्यापार चालू किया। ... मलजी तथा द्वितीय पत्नी से सुगनमलजी भडगातियाका जन्म हुआ।

संवत् १९२८ में आप अजमेर से वापस मेडते चले गये। आपके बडे पुत्र कल्याणमलजी का प अजमेर में तथा सुगनमलजी का परिवार मेडते में निवास करता है।

भडगतिया कल्याणमलजी—आपने अपने व्यापार और मकान, जायदाद आदि स्थाई स को बहुत बढ़ाया। संवत् १९५७ मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके कस्तूरमलजी तथा जावंतराजजी दो पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने अपने पितामह सेठ फतेमलजी द्वारा बनाई गई दादाजीको छत्री में एक रुपये व्यय करके १९७१ मे प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई। आप दोनों बन्धुओं का लाखों रुपयों का लेनदेन मा के जागीरदारों में रहा करता था। आप अजमेर के प्रधान, प्रतिभाशाली साहुकारो में माने जा संवत् १९७३ में दोनों भाइयों का व्यापार अलग अलग हुआ। भडगतिया कस्तूरमलजी विद्यमान आपने लाखों रुपयों की सम्पत्ति मौज, शौक और आनन्द उल्लास में खरच की। आपके कोई स नहीं है। सेठ जावन्तराजजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७६ में हुआ। आपके पुत्र उदयमलजी का सन् १९०१ में हुआ। आप प्रसन्नचित्त युवक हैं आपके यहाँ कल्याणमल जावतराज के नाम से जो ग तथा "बागमल उदयमल" के नाम से अजमेर में बैंकिंग तथा जायदाद के किराये का काम होता है।

भडगतिया सुगनमलजी—आपका परिवार मेडते में निवास करता है। तथा वहाँ के ओर समाज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके तीन पुत्र हैं। धनपतमलजी तथा आनन्दमलजी बिड़ला मिल ग्वालियर में सर्विस करते है तथा चन्दनमलजी मेड निवास करते हैं।

सांखला

साखला गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि सिद्धपुर पाटन के राजा सिद्धराज जयसि विश्वास पात्र सेवक जगदेवजी के सूरजी, सखजी, सांवलजी, तथा सामदेवजी आदि ७ पुत्र थे। ज जी, बडे बहादुर पुरुष हुए। इनको श्री हेमसूरिजी ने संवत् ११७५ में जैन धर्म की दीक्षा दी। प्रकार सखजी जैन धर्म से दीक्षित हुए। इनकी सन्ताने सांखला कहलाई।

सेठ सागरमल गिरधारीलाल सांखला, बंगलोर

इस परिवार का मूल निवासस्थान मोहर्रा (जोधपुरस्टेट) है वहाँ से लगभग ६५ साल पहले गिरधारीलालजी साखला व्यापार के लिये बंगलोर आये। आरम्भ में आपने १० सालों तक मुनीमात पश्चात् मिलटरी को नाणा, सप्लाय करने के लिये बैंकिंग व्यापार आरम्भ किया। तथा 'साग गिरधारीलाल" के नाम से फर्म स्थापित की। इसके १० साल पश्चात् आपने सिकराबाद (दक्षिण) तथा इसके भी साल पश्चात् आपने नीलगिरी में अपनी दुकानें खोलीं। इन सब स्थानों पर यह ब्रिटिश-छावनी के साथ बैंकिंग बिजिनेस करती है। आपके पुत्र श्रीयुत अनराजजी सांखला बडे बुद्धि उदार तथा व्यापार कुशल सज्जन है।

की ओर से ब्यावर में श्री गिरधारीलाल सांखला बोर्डिंग हाउस स्थापित है। — निवास करते हैं। मोहरों में संवत् १९४६ से आपकी ओर से चिड़ी चुगा का सदाव्रत ... के पुत्र केशरीमलजी, लालचन्दजी तथा रतनलालजी हैं। इनमें केशरीमलजी फर्म के ... हैं। यह फर्म सिकंदराबाद, बंगलोर तथा नीलगिरी के व्यापारिक समाज में बहुत ... है। इस खानदान के मेम्बर धार्मिक तथा परोपकार के कार्यों में अच्छी सम्पत्ति व्यय ... में यह खानदान नामी माना जाता है। यह परिवार श्वेताम्बर जैन स्थानक- ... वाला है।

सेठ लछमणदास शिवलाल, परभणी

इस खानदान के मालिकों का मूल निवास स्थान ताजौली (जोधपुर-स्टेट) का है। आप जैन ... मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान में सौ वर्ष पहले सेठ लक्ष्मणदासजी सांकला ... आये। यहाँ आकर आपने लेन देन और खेती बाड़ी का काम आरम्भ किया। ... और फर्म परभणी में स्थापित की, जिस पर बैङ्किङ्ग तथा कपास वगैरह का ... सेठ लक्ष्मणदासजी का संवत् १९२७ में स्वर्गवास हुआ। आपके पश्चात् ... ने फर्म के काम को सम्हाला। आपके हाथ से इस फर्म के काम को बहुत ... परभणी में प्रतिष्ठित सम्पन्न व्यक्ति माने जाते थे। आपका संवत् १९७६ में स्वर्गवास ... सांकला दत्तक आये।

...—आप बड़े योग्य और सज्जन पुरुष हैं। आपका जन्म संवत् १९५१ ... मन्दिरों, तीर्थ यात्राओं तथा परोपकार में बहुत सा धन खर्च होता ... एक पुत्र हैं जिनका नाम कुंदनमलजी है। आपने परभणी के पार्श्वनाथ जी ... सहायतार्थ प्रदान की थी। आपकी फर्म परभणी के व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित ...

हिंगड़

सेठ केशरीमल कुन्दनमल हिंगड़, कलकत्ता

... मालिकों का मूल निवास स्थान घाणेराव (गोड़वाड़) का है। वहाँ से करीब ... सेठ चन्द्रभानजी नाडोल (गोड़वाड़) में आकर बसे। तभी से यह परिवार ... है। आप श्वेताम्बर जैन मंदिर आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। सेठ चन्द्- ... क्रमशः सेठ रखनीचंदजी, रिखबदासजी, गुलाबचंदजी, सिरदारमलजी ... हुए।

सेठ लखमीचंदजी नाडोल में ही राज का काम करते हैं। आप इस ठिकाने के कामद
सेठ गुलाबचंदजी और सिरदारमलजी का स्वर्गवास हो गया है। आप लोग भी जब त
तब तक बड़ी बुद्धिमानी से फर्म का कारबार चलाते थे। सेठ रिखबदासजी बड़े प्रतिभाशाली व्यां
रानी स्टेशन पर आपके यहाँ रिखबदास सिरदरमलजी के नाम से अनाज, किराना, कमीशन आ
व्यवसाय होता है। इसके पश्चात आपने तथा आपके परिवार वालों ने मिलकर कलकत्ता में भी एक
खोली जिसपर भी उपरोक्त नाम पड़ता है। इस फर्म पर विदेश से कपड़े का डायरेक्टर इम्पोर्ट ति
होता है। इसके बाद आपने एक स्वदेशी जूट मिल नामक एक जूट खोला तथा एक छाते की फेक्टरी
वर्त्तमान में आपके कलकत्ता आफिस से मद्रास, कोलम्बो, कोचीन, सीलोन, बम्बई वगैरह स्थानों पर
स्केल में किराने का एक्सपोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त गव्हर्नमेंट फारेस्ट डिपार्टमेंट तथा रक्षित रा
आप हाथीदांत तथा गेंडे के सींगों को कन्ट्राक्ट से खरीदते हैं। तथा बाहर पंजाब, मुलतान, राजपूतान
स्थानों पर अपना माल भेजते हैं। इस फर्म की एक शाखा नाडोल में सिरदारमल फौजमल के नाम

इस फर्म के कार्य्य को संचलित करने में सेठ रिखबदासजी, पृथ्वीराजजी, राजमलजी, कु
जी, दानमलजी, फतेराजजी, अमरचंदजी, भागचंदजी, सिरेमलजी, अजयराजजी, केशरीमलजी और
जी का बहुत हाथ है। आप सब लोग व्यापार कुशल सज्जन हैं। वर्तमान में कलकत्ता दुकान क
प्रधान तौर से बाबू केशरीमलजी और पुखराजजी देखते हैं। आप दोनों भाइयों को मशीनरी विभ
अच्छा ज्ञान है। इस परिवार के व्यक्तियों का सार्वजनिक कामों की ओर भी बहुत ध्यान है
रखबदासजी ने बरकाणा पार्श्वनाथ बोर्डिंग के लिये लगभग २ लाख रुपये एकत्रित करवाये।

पटावरी

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी का परिवार, भादरा

इस परिवार के लोग भादरा के निवासी हैं। इस परिवार में सेठ भैंरूदानजी बड़े बुद्धिमान
प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप तत्कालीन समय में ठाकुर साहब भादरा के कामदार रहे। इसके बाद ऐसा
जाता है कि जब भादरा खालसे हो गया तब आप बीकानेर दरबार की ओर से वहाँ का काम काज
लगे। आपके पुत्र जीतमलजी तथा पौत्र हीरालालजी भी वहीं राज में काम करते रहे। सेठ हीरालाल
शोभाचन्दजी, चतुरभुजजी, लूनकरनजी प्रतापमलजी और छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हैं।

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी अपने जीवन में बड़े क्रान्तिकारी व्यापारी रहे। प्रारम्भ में
कई स्थानों पर गुमस्तागिरी की, फिर पाट की दलाली का काम किया। इसके बाद जब कि कल
पाट का बाड़ा कायम हुआ उस समय आपभी इसमें शामिल हो गये। आप में उत्साह है, साहस है
व्यापार करने की पूरी २ क्षमता भी है। अतएव आप शीघ्र ही इस व्यापार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो
आपने अपने हाथों से वायदे के सौदों में लाखों रुपये कमाये और खोये। आपने अपने हाथों से पा

आपस में व्यापारियों की तनातनी में आप साहसपूर्वक खडे रहे एवम बडी ... था। वायदे के व्यापार में आपका अनुभव बहुत बढ़ा चढ़ा है। इस समय ... एसोसिएशन के डायरेक्टर हैं। जूट के वायदे के व्यवसाय में आप इस समय प्रधान ... भाइ भी आपको इस व्यवसाय में सहयोग प्रदान करते हैं। आप श्वेताम्बर ... मानने वाले हैं। आपका आफिस नं० ४ सैनागो स्ट्रीट कलकत्ता में है।

बम्बोली

सेठ सोभाचन्द माणकचन्द बम्बोली, सादड़ी

... प्रथम उदयपुर में रहते थे। इस वंश में पीथाजी हुए जो सादडी मे ... सवजी नामक पुत्र हुए। सवजी के सोभाचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक ... संवत १९३८ में स्वर्गवासी हुए। सोभाचन्दजी के पुत्र नवलचन्दजी हुए। ..., सांकलचन्दजी संतोषचन्दजी रूपचन्दजी तथा मेघराजजी नामक ५ ... को माणकचन्दजी के नाम पर दत्तक दिया गया। इस समय इन ... बैंकिंग, तथा सराफी काम करती है। सांकलचन्दजी तथा संतोषचन्दजी ... ५। संवत् १९६७ में संतोषचन्दजी का स्वर्गवास हुआ।

... के पुत्र गुलाबचन्दजी थे। इनके जसराजजी, तेजमलजी, चन्दनमलजी, ... नामक पाँच पुत्र विद्यमान हैं। इनमें से तेजमलजी को सांकलचन्दजी के पुत्र ... लिया है। बम्बोली संतोषचन्दजी के मयाचन्दजी, चुन्नीलालजी तथा बालचन्द ... हैं। जिनमें चुन्नीलालजी, रूपचन्दजी के नाम पर तथा बालचन्दजी, मेघराजजी ... हैं।

... का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप स्थानीय शुभ चिंतक जैन समाज ... तथा पारखाणा विद्यालय की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर हैं। सादडी के विद्यालय ... हजार रुपये दिये हैं। इसी प्रकार सार्वजनिक व धार्मिक कार्यों में आप ...

श्री श्रीमाल

सेठ ...चन्दजी हिम्मतमलजी श्रीश्रीमाल, सिरोही

... सिरोही के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। इनके हिम्मतमलजी, फौजमलजी और जवान ... इन्हें प्रतिष्ठित व्यापारी समझकर महाराव केसरीसिंहजी ने संवत् १९४० की ... ट्रेझरर बनाया। इस स्टेट बैंकर शिप का काम ५० सालों तक

सेठ लखमीचदजी नाडोल में ही राज का काम करते हैं। आप इस ठिकाने के कामद सेठ गुलाबचंदजी और सिरदारमलजी का स्वर्गवास हो गया है। आप लोग भी जब त तब तक बड़ी बुद्धिमानी से फर्म का कारबार चलाते थे। सेठ रिखबदासजी बड़े प्रतिभाशाली व्य रानी स्टेशन पर आपके यहाँ रिखबदास सिरदरमलजी के नाम से अनाज, किराना, कमीशन आ व्यवसाय होता है। इसके पश्चात आपने तथा आपके परिवार वालों ने मिलकर कलकत्ता में भी एक खोली जिसपर भी उपरोक्त नाम पडता है। इस फर्म पर विदेश से कपड़े का डायरेक्टर इम्पोर्ट होता है। इसके बाद आपने एक स्वदेशी जूट मिल नामक एक जूट खोला तथा एक छाते की फेक्टरी वर्त्तमान में आपके कलकत्ता आफिस से मद्रास, कोलम्बो, कोचीन, सीलोन, बम्बई वगैरह स्थानों पर स्केल में किराने का एक्सपोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त गव्हर्नमेंट फारेस्ट डिपार्टमेंट तथा रक्षित रा आप हाथीदांत तथा गेंडे के सींगों को कन्ट्राक्ट से खरीदते हैं। तथा बाहर पंजाब, मुलतान, राजपूतान स्थानों पर अपना माल भेजते हैं। इस फर्म की एक शाखा नाडोल में सिरदारमल फौजमल के नाम

इस फर्म के कार्य्य को संचलित करने में सेठ रिखबदासजी, पृथ्वीराजजी, राजमलजी, कु जी, दांनमलजी, फतेराजजी, अमरचंदजी, भागचंदजी, सिरेमलजी, अजयराजजी, केशरीमलजी और जी का बहुत हाथ है। आप सब लोग व्यापार कुशल सज्जन हैं। वर्तमान में कलकत्ता दुकान क प्रधान तौर से बाबू केशरीमलजी और पुखराजजी देखते हैं। आप दोनों भाइयों को मशीनरी विष अच्छा ज्ञान है। इस परिवार के व्यक्तियों का सार्वजनिक कामों की ओर भी बहुत ध्यान है रखबदासजी ने बरकाणा पार्श्वनाथ बोर्डिंग के लिये लगभग २ लाख रुपये एकत्रित करवाये।

पटावरी

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी का परिवार, भादरा

इस परिवार के लोग भादरा के निवासी हैं। इस परिवार में सेठ चैनरूपजी बड़े बुद्धिमान प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। आप तत्कालीन समय में ठाकुर साहब भादरा के कामदार रहे। इसके बाद ऐसा जाता है कि जब भादरा खालसे हो गया तब आप बीकानेर दरबार की ओर से वहाँ का काम काज लगे। आपके पुत्र जीतमलजी तथा पौत्र हीरालालजी भी वहीं राज में काम करते रहे। सेठ हीरालाल शोभाचन्दजी, चतुरभुजजी, लूनकरनजी प्रतापमलजी और छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हैं।

सेठ शोभाचन्दजी पटावरी अपने जीवन में बड़े क्रान्तिकारी व्यापारी रहे। प्रारम्भ में कई स्थानों पर गुमस्तागिरी की, फिर पाट की दलाली का काम किया। इसके बाद जब कि कल पाट का बाडा कायम हुआ उस समय आपभी इसमें शामिल हो गये। आप में उत्साह है, साहस है व्यापार करने की पूरी २ क्षमता भी है। अतएव आप शीघ्र ही इस व्यापार में बड़े नामांकित व्यक्ति हो आपने अपने हाथों से वायदे के सौदों में लाखों रुपये कमाये और खोये। आपने अपने हाथों से पा

...किया कई बार आपस में व्यापारियों की तनातनी में आप साहसपूर्वक खडे रहे एवम बडी ... विजय पाई। वायदे के व्यापार में आपका अनुभव बहुत बढ़ा चढ़ा है। इस समय ... एसोसिएशन के डायरेक्टर हैं। जूट के वायदे के व्यवसाय में आप इस समय प्रधान ... हैं। आपके भाई भी आपको इस व्यवसाय में सहयोग प्रदान करते हैं। आप श्वेताम्बर ... को मानने वाले हैं। आपका आफिस नं० ४ सैनागो स्ट्रीट कलकत्ता में है।

बम्बोली

सेठ सोभाचन्द माणकचन्द बम्बोली, सादड़ी

इस खानदान वाले प्रथम उदयपुर में रहते थे। इस वंश में पीथाजी हुए जो सादडी में ... पीथाजी के सवजी नामक पुत्र हुए। सवजी के सोभाचन्दजी तथा माणकचन्दजी नामक ... सोभाचन्दजी संवत् १९३८ में स्वर्गवासी हुए। सोभाचन्दजी के पुत्र नवलचन्दजी हुए। ... केसूरामजी, सांकलचन्दजी संतोपचन्दजी रूपचन्दजी तथा मेघराजजी नामक ५ ... में से सांकलचन्दजी को माणकचन्दजी के नाम पर दत्तक दिया गया। इस समय इन ... पूना में बैङ्किग, तथा सराफी काम करती है। सांकलचन्दजी तथा संतोपचन्दजी ... व्यक्ति थे। संवत् १९६७ में संतोपचन्दजी का स्वर्गवास हुआ।

... केसुरामजी के पुत्र गुलाबचन्दजी थे। इनके जसराजजी, तेजमलजी, चन्दनमलजी, ... तथा ...राजजी नामक पाँच पुत्र विद्यमान हैं। इनमें से तेजमलजी को सांकलचन्दजी के पुत्र ... के नाम पर दत्तक दिया है। बम्बोली संतोपचन्दजी के मयाचन्दजी, चुन्नीलालजी तथा बालचन्द ... पुत्र विद्यमान हैं। जिनमें चुन्नीलालजी, रूपचन्दजी के नाम पर तथा बालचन्दजी, मेघराजजी ... गये हैं।

... मयाचन्दजी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप स्थानीय शुभ चिंतक जैन समाज ... के प्रेसिडण्ट तथा वरकाणा विद्यालय की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर हैं। सादडी के विद्यालय ... (६०००) छ हजार रुपये दिये हैं। इसी प्रकार सार्वजनिक व धार्मिक कार्यों में आप ... रहते हैं।

श्री श्रीमाल

सेठ जवनदजी हिम्मतमलजी श्रीश्रीमाल, सिरोही

... सिरोही के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। इनके हिम्मतमलजी, फौजमलजी और जवान ... हुए। इनको प्रतिष्ठित व्यापारी समझकर महाराव केसरीसिंहजी ने संवत् १९४० की ... स्टेट ट्रेझरी का ट्रेझरर बनाया। इस स्टेट बैंकर शिप का काम ५० सालों तक

यह परिवार करता रहा। ता० ११११०।३२ से स्टेट ने अपनी ट्रेझरी खोल कर यह काम इनकी फर्म से लिया। इन पचास सालों में स्टेट का तमाम खजाना इनकी फर्म पर आता रहा, तथा इनके द्वारा सुवि नुसार हर एक डिपार्टमेंट में पहुँचाया जाता रहा। स्टेट की मीटिंगों में दीवान और रेवन्यू कमिश्नर पश्चात् तीसरी चेयर इनकी लगती रही। सेठ हिम्मतमलजी प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यापारी हैं, तथा स्थानीय पंचायती में अग्रगण्य व्यक्ति माने जाते हैं। धार्मिक और सामाजिक कामों में भी आपने अच्छा व्यय कि है। सिरोही स्टेट में आपकी बड़ी इज्जत है। आपकी वफादारी और ईमानदारी की कद्र कर स्टेट हर विवाह शादी आदि उत्सवों पर सिरोपाव प्रदान करती है। आपके छोटे भ्राता जवानमलजी विद्यमान हैं। फोजमलजी का अंतकाल १९७६ में हो गया है। सेठ हिम्मतमलजी के पुत्र इन्द्रचन्द्रजी हैं। श्रीश्रीमाल-सेठिया बोहरा गौत्र के सज्जन हैं।

सबदरा

सेठ चुन्नीलाल रामचन्द्र सबदरा, मांजरोद (खानदेश)

इस परिवार का निवास आसरडाई (जेतारण के पास) मारवाड़ है। आप लोग स्थानक आम्नाय के मानेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ रायमलजी के पुत्र जीताजी तथा सरदारम हुए। इन बंधुओं में देश से व्यापार के लिये लगभग ८० साल पहिले सेठ सरदारमलजी, खानदे मांजरोद नामक स्थान में आये। तथा मामूली हालत में यहाँ धंधा रू किया। आपके बड़े भ्राता स जीताजी के पुत्र रामचन्द्रजी हुए, आपने आसामी लेनदेन शुरू करके अपने व्यापार की नींव जमाई। ह १९५३ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आसरडाई से सेठ चुन्नीलालजी दत्तक आये।

चुन्नीलालजी सबदरा—आपका जन्म संवत् १९३२ में हुआ। १२ साल की वय में आप रामचन्द्रजी के नाम पर आये। आपने इस खानदान के व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। खानदे ओसवाल समाज में आप का परिवार प्रतिष्ठित माना जाता है। आप सरल स्वभाव के, गंभीर सुखी गृहस्थ हैं। आपके पुत्र पन्नालालजी, मोहनलालजी, चम्पालालजी, दीपचन्दजी तथा बंशीलालजी श्री पन्नालालजी का जन्म सं० १९५५ में मोहनलालजी का १९५८ में तथा चम्पालालजी का १' में हुआ। आप तीनों भाई फर्म में व्यापार में सहयोग लेते हैं। तथा इनसे छोटे दीपचन्दजी स पूना कॉलेज में बी० ए० के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं। आपका विवाह खानदेश के प्रसिद्ध श्री श्रीमान् सेठ राजमलजी ललवानी की कन्या से हुआ है। इनसे छोटे बंशीलालजी जलगाँव हाई में पढ़ते हैं। पन्नालालजी के पुत्र शिवलालजी तथा नेमीचन्दजी और मोहनलालजी के पुत्र मानमलज सूरजमलजी तथा चम्पालालजी के पुत्र भँवरलालजी हैं।

जालोरी

श्री तखतमलजी जालोरी, भेलसा (ग्वालियर)

इस परिवार के पूर्वज जालोरी खुशालचन्दजी तथा उनके पुत्र संतोपचन्दजी अरटिया (री में रहते थे। वहाँ से आपने अपना निवास रूठों की रीयां में बनाया। सेठ संतोपचन्दजी के पुत्र त

आप रांगा से व्यवसाय के लिये भेलसा आये, और यहाँ सर्विस की। संवत् १९२१ में [illegible] हुए। आपके गुलाबचन्दजी पूनमचन्दजी तथा नथमलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ पूनमचन्दजी ने बांसोदा (भेलसा के पास) में अपना व्यापार शुरू किया, तथा १० [illegible] जमीदारी की। आप तीनों भ्राता क्रमशः संवत् १९४१ संवत् १९२८ तथा संवत् [illegible] स्वर्गवासी हुए। सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र रिखवदासजी संवत् १९८१ में स्वर्गवासी होगये [illegible] पुत्र सिंगारमलजी तथा सागरमलजी बासोदा में व्यापार करते हैं।

जालोरी पूनमचन्दजी के अमीरचंदजी तथा लूणकरणजी नामक २ पुत्र हुए। जालोरी लूणकरण [illegible] १९८१ में भेलसा आये तथा यहाँ ३ गांवों की जमीदारी करके मकानात दुकानें आदि बन[illegible] १९८० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र जालोरी तखतमलजी हैं।

[illegible] तखतमलजी जालोरी—आपका जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आप १८ साल की आयु से [illegible] में प्रेक्टिस करते हैं। तथा भेलसा और गवालियर स्टेट के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। तीन [illegible] गवालियर स्टेट प्रीवियस कान्फ्रेंस के सेक्रेटरी थे, तथा इधर २ वर्षों से उसके प्रेसिडेंट [illegible] गवालियर स्टेट लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर हैं। इसके अलावा अछूतोद्धारक संघ भेलसा [illegible] संघ खादी भण्डार के संचालक तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट ओकॉफ कमेटी के [illegible] भेलसा म्यु० के प्रेसिडेण्ट भी आप रह चुके हैं। इसी तरह के हरएक सार्वजनिक [illegible] हैं। आपके पुत्र राजमलजी इलाहबाद में थर्ड ईयर में पढ़ते हैं।

[illegible] अमीरचन्दजी के पुत्र मिलापचन्दजी तथा अमोलकचन्दजी स्वर्गवासी होगये हैं। इस [illegible] के पुत्र सोभागमलजी भेलसा में खजांची हैं। तथा सूरजमलजी उदयपुर में पढ़ते [illegible] के पुत्र सरदारमलजी हैं।

सेठ नथमल दलीचंद जालोरी बोहरा का खानदान, अहमदनगर

[illegible] खानदान का मूल निवास पीपाड (मारवाड) है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय के [illegible] हैं। इस खानदान के पूर्वज सेठ बक्षूरामजी तथा उनके पुत्र मोतीरामजी थे। सेठ [illegible] पुत्र हुए। इनमें बड़े दो सेठ तेजमलजी तथा सूरजमलजी लगभग १५० वर्ष पूर्व पैदल [illegible] आये, तथा यहाँ सराफी और कपड़े का व्यापार चालू किया। आपके छोटे भाई [illegible] रहते रहे।

[illegible] के पुत्र गणेशदासजी तथा भगवानदासजी थे। इनमें गणेशदासजी के लक्ष्मण[illegible] तथा [illegible]दासजी नामक ३ पुत्र हुए। और भगवानदासजी के पुत्र पेमराजजी हुए। [illegible] का स्वर्गवास हो गया है। इस समय लछमणदासजी के पुत्र सुशीलालजी तथा पेम[illegible] विद्यमान हैं।

[illegible] के पुत्र नथमलजी तथा पौत्र दलीचन्दजी हुए। जालोरी बोहरा दलीचन्दजी [illegible] व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आपने पीपाड में एक उपाश्रय तथा भांदकजी में

एक धर्मशाला बनवाई। अहमदनगर में आपकी फर्म सबसे पुरानी मानी जाती है। आप ६५ स
आयु में, सम्वत् १९७८ में स्वर्गवासी हुए। आपके समरथमलजी, कनकमलजी, सिरेमलजी, हस्ती
तथा अमोलकचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। आप सब भाइयों का भी धरम ध्यान की ओर अच्छा लक्ष्य
इनमें सेठ हस्तीमलजी को छोडकर शेष चार भ्राता निःसतान स्वर्गवासी हो गये हैं। हस्तीमलजी क
सम्वत् १९४८ में हुआ। आप अहमदनगर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबूलाल ४ साल के

फलोदिया

सेठ फतेचन्द मांगीलाल फलोदिया, अहमदनगर

इस परिवार का मूल निवास सेठों की रींया (मारवाड़) है। वहाँ से सेठ खुशाल
फलोदिया अपने पुत्र गुमानचन्दजी तथा मोहकमदासजी के साथ लगभग २०० साल पूर्व अहमदनगर
के साकूर नामक गाँव में गये। और वहाँ अपनी दुकान खोली। सेठ गुमानचन्दजी के इन्द्रभानजी,
मुलतानमलजी नामक २ पुत्र हुए।

इन्द्रभानजी फलोदिया का परिवार—सेठ इन्द्रभानजी का सम्वत् १९२७ में स्वर्गवास
आपके हजारीमलजी, भवानीदासजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। फलोदिया भवानीदासज
नवलमलजी तथा हरकचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें हरकचन्दजी, सेठ गुलाबचन्दजी के नाम पर
गये। इस समय इस परिवार में हजारीमलजी के पुत्र किशनदासजी तथा सूरजमलजी साकूर में
करते हैं। और हरकचन्दजी के पुत्र चुन्नीलालजी वरोरा (सी०पी०) में सूत का व्यापार करते हैं।

मुलतानमलजी फलोदिया का परिवार—आपका सम्वत् १९४२ में स्वर्गवास हुआ। आप
पूनमचन्दजी लगभग ७० साल पहले साकूर से अमरावती आये। तथा "मानमल गुलाबचन्द" के स
कपडे का व्यापार शुरू किया। आप सम्वत् १९५० में स्वर्गवासी हुए। आपके शोभचन्दज, फतेच
तथा माँगीलालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें शोभाचन्दजी सम्वत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

फतेचन्दजी फलोदिया—आपका जन्म सम्वत् १९३७ में हुआ। आप अमरावती के
समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्मो में आप अच्छा सहयोग लेते हैं।
लगभग ५० हजार की लागत से अमरावती के एक जैन मन्दिर बनवाकर सम्वत् १९८० में उसकी प्र
कराई। आपके यहाँ "फतेचन्द माँगीलाल" के नाम से कपडे का व्यापार होता है। आपके
मोहनलालजी २८ साल के हैं।

धूपिया

सेठ हजारीमल विशनदास (धूपिया) का खानदान, अहमदनगर

इस खानदान का मूल निवास स्थान रणसी गाँव (पीपाड) का है। आप श्वेताम्बर
स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्वज सेठ पन्नालालजी के पौत्र श्रीयुत हजारीम

... वर्ष पूर्व अहमद नगर में आये। शुरू में आपने थोडे समय सर्विस की और पश्चात् ... "हजारीमल अगरचन्द" के नाम से भागीदारी में दुकान स्थापित की। संवत् ९४१ में ... हुआ। आपके धीरजमलजी, अगरचन्दजी, नेमीदासजी और विशनदासजी नामक ४ भाई ... अगरचन्दजी, नेमीदासजी और विशनदासजी भी मारवाड से अहमदनगर आ गये। आप ... हाथों से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। आपका धार्मिक कार्यों की ओर बहुत लक्ष्य था। सम्वत् ... भाइयों का व्यापार अलग २ हो गया। मूथा विशनदासजी ने शास्त्रों का पठन पाठन और ... किया था। अगरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५५ में, नेमीदासजी का सम्वत् १९६९ में ... का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में हुआ।

... हजारीमलजी के पुत्र मोतीलालजी का जन्म सम्वत् १९३३ में हुआ है। आपके यहाँ ... " के नाम से व्यापार होता है। आप सज्जन व्यक्ति हैं। आपके पुत्र चुन्नीलालजी हैं।

... विशनदासजी के माणकचन्दजी और प्रेमराजजी नामक २ पुत्र हैं। आपका जन्म सम्वत् ... में हुआ। आप दोनों भाई सज्जन पुरुष हैं। अहमदनगर के ओसवाल नवयुवकों में आप बडे ... है। आपने अपने पिताजी के स्वर्गवास के समय २१००) का दान किया था। ... "विशनदास माणकचन्द" के नाम से व्यापार होता है।

सेठ पूनमचंद मुकुन्ददास मूथा (धूपिया), अहमदनगर

... खानदान श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस खानदान का ... स्थान ... गाव (जोधपुर) का है। इस खानदान में मूथा जेठमलजी देश से अहमद नगर ... पर अपनी दुकान स्थापित की। आपके नवलमलजी और मुल्तानमलजी नामक दो पुत्र ... बडे बुद्धिमान और व्यापार दक्ष पुरुष थे। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत ... । आपका स्वर्गवास संवत् १९२९ में हुआ। आपके छः पुत्र हुए जिनके नाम क्रम से गंभीर- ..., विशनदासजी, मुकुन्ददासजी, रतनचंदजी और पूनमचंदजी थे। इनमें से केवल ... इस समय विद्यमान हैं। विशनदासजी का स्वर्गवास संवत् १९४७ में तथा ... संवत् १९५७ में हुआ। इस समय मुकुन्ददासजी के पुत्र प्रेमराजजी तथा मोतीलालजी ... के पुत्र पन्नालालजी, धनराजजी तथा वंशीलालजी विद्यमान हैं। इस समय इस फर्म के ... सेठ पूनमचंदजी और मूथा प्रेमराजजी करते हैं। आप दोनों बडे सज्जन और व्यापार ... धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर आपका अच्छा लक्ष्य है। इस समय यह फर्म ... का व्यापार करती है। मूथा पूनमचन्दजी अहमद नगर जिला ओसवाल पंचायत ... सभापति थे।

सेठ छोगमल हीरालाल भलगट, गुलबर्गा

इस परिवार का मूल निवास सेठजी की रीयाँ (मारवाड) में है। वहाँ भलगट अनोपचंदजी

निवास करते थे। आपके कस्तूरमलजी, हजारीमलजी व जीरामलजी तथा वख्तावरमलजी नामक ४ पुत्र हुए। हजारीमलजी रीयाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके गाढ़मलजी तथा छोगमलजी नामक २ पुत्र हुए। देश से व्यापार के लिए सेठ छोगमलजी संवत् १९३८ में गुलवर्गा आये। आपके आने के बाद दो दो साल के अन्तर से आपके पुत्र चुन्नीलालजी तथा हीरालालजी भी यहाँ आगये, तथा छोगमल चुन्नीलाल के नाम से व्यापार शुरू किया। संवत् १९६८ में इन दोनों भाइयों का व्यापार अलग २ हो गया। संवत् १९७७ में सेठ छोगमलजी तथा संवत् १९८४ में सेठ चुन्नीलालजी स्वर्गवासी हुए। इनके नाम पर मारवाड़ से गुलाब चन्दजी दत्तक आये हैं। इनके यहाँ "चुन्नीलाल गुलाबचन्द" के नाम से सराफी व्यापार होता है।

सेठ हीरालालजी भलगट—आपका संवत् १९३१ में जन्म हुआ। आपने कपड़े के व्यापार में अच्छी सम्पत्ति पैदा की। तथा गुलवर्गा के व्यापारिक समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाया। आपकी यहाँ दुकानें सफलता के साथ कपड़े का व्यापार कर रही हैं। तथा गुलवर्गा की दुकानों में मातवर मानी जाती हैं। गुलवर्गा स्टेशन रोड पर आपका महावीर भवन नामक सुन्दर बंगला बना हुआ है। इसी तरह आपके और भी कई मकानात बगले आदि हैं। सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्यों में भी आप अच्छी सम्पत्ति व्यय करते हैं। आपके नाम पर मोतीलालजी बूसी (जोधपुर स्टेट) से दत्तक आये हैं। इनकी वय ३० साल की है। आपभी तत्परता से अपने कपड़े के व्यापार को सम्हालते हैं। इनके पुत्र शांतिलालजी २ साल के हैं।

इसी तरह इस खानदान में सेठ वजीरामलजी के छोटे पुत्र किशनराजजी तथा उन के भतीजे पेमराजजी और धनराजजी कान गाँव (वर्द्धा) में व्यापार करते हैं।

मुदरेचा (वोहरा)

सेठ सूरजमल दूलहराज मुदरेचा (वोहरा), कोलार गोल्ड फील्ड

इस परिवार की उत्पत्ति चौहान राजपूतों से हुई। इस कुटुम्ब का मूल निवास स्थान ब्यावर राजपूताना है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। सेठ छोगमलजी मुदरेचा अपने बड़े पुत्र सूरजमलजी के साथ सम्वत् १९५२ में बूंटी से बगलोर आए, तथा यहाँ सेठ "बख्तावरमल रूपराज" मूथा के यहाँ ६ सालों तक सर्विस की। इसके बाद सम्वत् १९५९ में सेठ "हजारीमल बनराज मूथा की भागीदारी में बंगलोर में एक दुकान की। इसके २ वर्ष बाद कोलार गोल्ड फील्ड में आपने अपनी स्वतंत्र दुकान खोली। मुदरेचा सूरजमलजी का जन्म सम्वत् १९४६ में हुआ। आप सज्जन तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आप कोलार गोल्ड फील्ड में "सूरजमल दूलहराज" के नाम से बैंकिंग व्यापार करते हैं। आपके छोटे भाई श्रीयुत दुलहराजजी का जन्म सम्वत् १९४६ में तथा श्री हरकचन्दजी का स० १९४' हुआ। इन बन्धुओं का व्यापार बंगलोर हलसूर बाजार में "सूरजमल दूलहराज" तथा "छोगमल सूरजमल" के नाम से होता है। आप दोनों बन्धु सज्जन व्यक्ति हैं।

मुदरेचा सूरजमलजी के पुत्र रतनलालजी २० साल के है, तथा व्यापार में भाग लेते हैं। इनसे छोटे हीरालालजी तथा पन्नालालजी बालक हैं। इसी तरह हरकचन्दजी के पुत्र मोहनलालजी १४ साल के हैं।

... छगनलालजी और माणकलालजी बालक हैं। इस परिवार की ओर से बूंटा में गायों की सुविधा के ... कोठा बनवाया गया है। आप शिक्षा के लिये ५००) सालियाना स्कूलों को ... गोल्ड फील्ड तथा बंगलोर के ओसवाल सभाज में इस परिवार की अच्छी प्रतिष्ठा है।

बैताला

सेठ अमरचन्द माणकचन्द बैताला, मद्रास

यह खानदान मूल निवासी डे (मारवाड) का है। मगर इस समय यह खानदान नागौर में ... मन्दिर आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदान में सेठ बालचन्दजी हुए। आपने ... में ... अपनी फर्म स्थापित की। आपके पुत्र अमरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९७४ में हुआ।

बैताला अमरचन्दजी के कोई पुत्र न होने से आपके नाम पर माणिकचन्दजी बैताला सम्वत् ... में दत्तक लिये गये। आपका जन्म सम्वत् १९६५ का है। आप सम्वत् १९८० में मद्रास आये ... सीखने के लिये सेठ बहादुरमलजी समदरिया के पास रहे। उसके पश्चात् आपने अमरचन्दजी ... नाम से मनी लेण्डिग और ज्वैलरी का व्यापार शुरू किया। उसके बाद सम्वत् १९८८ से ... स्वतन्त्र व्यापार शुरू कर दिया। इस समय आप मद्रास में डायमण्ड और ज्वैलरी का ... करते हैं। आपने अपनी बुद्धिमानी से व्यापार में अच्छी तरक्की की है।

सेठ घासीराम बच्छराज बैताला, बागलकोट

इस परिवार का मूल निवास स्थान सोवणा (नागोर) है। यह परिवार स्थानकवासी आम्नाय ... मानता है। इस परिवार के पूर्वज सेठ जेठमलजी बैताला मारवाड में रहते थे। इनके बख्तावर-मलजी, ...चन्दजी तथा छोगमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बंधुओं में सेठ बख्तावरमलजी बैताला ... १०० साल पूर्व पैदल रास्ते से महाड बन्दर होते हुए बागलकोट आये। तथा "जेठमल बख्तावर-मल" नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। आपने पीछे से अपने भाइयों को भी बागलकोट बुला ... छोटे भाई छोगमलजी का सम्वत् १९८३ में स्वर्गवास हुआ। आपके घासीमलजी ... हीरालालजी तथा किशनलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें किशनलालजी संवत् १९८६ में ... हुए। तथा सेठ हीरालालजी, कस्तूरचन्दजी के नाम पर दत्तक गये।

... घासीलालजी का जन्म सम्वत् १९४२ में हुआ। आपने सेठ "गणेशदास गंगाविशन" की ... सम्वत् १९६० से बेजवाडा तथा बागलकोट में आढ़त की फर्म खोली है। तथा आप बागल... समाज में प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते हैं। आपके पुत्र बच्छराजजी तथा जसराजजी ... रहते हैं। तथा मूलचन्द, तेजमल और मेघराज छोटे हैं। इसी प्रकार से सेठ चंदूलालजी, "..." के नाम से कपड़े का व्यापार करते है। इनके पुत्र भीमराजजी हैं। हीरालालजी ... तथा किशनलालजी के पुत्र चम्पालालजी सराफी व्यापार करते हैं।

विनायक्या

सेठ जुहारमल शोभाचंद विनायक्या, राजलदेसर

इस परिवार के लोग बहुत वर्षों से राजलदेसर ही में निवास कर रहे हैं। इस परिवार किशोरसिंहजी के पुत्र उमचन्दजी हुए। इनके दो पुत्र किस्तूरचन्दजी और जुहारमलजी हुए। आप दो ही भाई बड़े प्रतिभा वाले और व्यापार कुशल थे। आप लोगों ने गोविन्दगंज (रंगपुर) में जा अपनी फर्म मेसर्स किस्तूरचन्द जुहारमल के नाम से खोली। इसमें आप लोगों को अच्छी सफलता रही

वर्तमान में इस फर्म के सचालक सेठ किस्तूरचन्दजी के पुत्र शोभाचन्दजी और सेठ जुहारमलज पुत्र मालचन्दजी, जयचन्दलालजी और घनराजजी हैं। आप सब सज्जन और मिलनसार व्यक्ति है आप लोगों ने आर्मेनियन स्ट्रीट कलकत्ता में भी चलानी का काम करने के लिये अपनी एक फर्म खोल इस समय आपकी कलकत्ता और गोविन्द गंज दोनों स्थानों पर फर्में चल रही है। आपके यहाँ कप चलानी तथा जूट का व्यापार होता है ।

सेठ शोभाचन्दजी के मोहनलालजी, पन्नालालजी और दीपचन्दजी, सेठ मालचन्दजी के र्ध करणजी, सेठ जैचन्दलालजी के मन्नालालजी और धनराजजी के हनुमानमलजी नामक पुत्र हैं।

लाला खेरातीराम पन्नालाल विनायक्या, लुधियाना

यह खानदान जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को माननेवाला है। यह खानदान क सौ सवा सौ वर्षों से यहीं निवास कर रहा है। इस खानदान में लाला जुहारमलजी और रनचन्द नामक दो भाई हो गये हैं। लाला जुहारमलजी के गुलाबमलजी नामक एक पुत्र हुए जो यहाँ के बड़े म हूर चौधरी हो गये हैं। आपका संवत् १९३० में स्वर्गवास हो गया। आपके लाला खैरातीमलजी फकीरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें लाला फकीरमलजी निसंतानावस्था में सवत् १९६७ स्वर्गवासी हुए।

लाला खेरातीमलजी का संवत् १९१९ में जन्म हुआ। आपने अपने भतीजे (लाला पूरनच के प्रपौत्र) लाला पन्नालालजी को गोद लिया है। आप इस समय अपने पिता लाला खैरातीमलजी साथ व्यापार करते है। आपके तिलकरामजी नामक एक पुत्र है। इस परिवार का यहाँ पर जन मर्चेंटाइज का व्यापार होता है। तथा यह कुटुम्ब यहाँ प्रतिष्ठित माना जाता है।

लाला रोशनलाल पन्नालाल जैन विनायक्या पटियाला

यह खानदान कई पुश्त पहिले समाना से आकर पटियाले में आबाद हुआ। यह परि स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। इस परिवार में लाला चैनामलजी तथा उनके पुत्र पूरनच हुए। लाला पूरनचन्दजी के कूडामलजी तथा नथुरामजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें से लाला कूडामल संवत् १९०२ में स्वर्गवासी हुए। आपके रामकरमदासजी तथा कन्हैयालालजी नामक दो पुत्र हुए।

...लाला रामसरनदासजी इस खानदान में नामी व्यक्ति हुए। आप संवत् १९४८ में ... हुए। आपके पुत्र लाला लछमणदासजी ३२ साल की आयु में संवत् १९६२ में तथा ... चार साल पहिले १९ साल की आयु में स्वर्गवासी हुए। इस समय बाबू रामजी ... हैं। इनके टेकचन्दजी तथा ओमप्रकाशजी नामक २ पुत्र हैं।

लाला कन्हैयालालजी—आपका स्वर्गवास ३० साल की आयु में संवत् १९२६ में हुआ। उस ... पुत्र लाला रोशनलालजी एक साल के थे। लाला रोशनलालजी बडे धर्मात्मा तथा ... हैं। तथा ४० सालों से पटियाला की जैन बिरादरी के चौधरी हैं। आपके पुत्र लाला ... १८ साल के हैं। इनके पुत्र श्यामलालजी हैं।

सेठ सवाईराम गुलाबचन्द विनायकया, जालना (निजाम)

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान रायपुर (जोधपुर स्टेट) का है। आप श्वेताम्बर ... आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। करीब ६४ वर्ष पहले श्री सवाईरामजी ने रायपुर से ... में अपनी दुकान की स्थापित की। आपका संवत् १९५५ में स्वर्गवास हुआ। आपके बाद ... काम को आप के तीनों पुत्रों ने सम्हाला जिनमें से इस समय केशरीमलजी विद्यमान हैं।

केशरीमलजी इस समय दुकान के मालिक हैं। आपकी ओर से दान धर्म तीर्थ यात्रा ... कार्यों में द्रव्य व्यय किया जाता है। आपके पुत्र उत्तमचन्दजी व्यापार में भाग लेते हैं। आपके ... "सवाईराम गुलाबचन्द" के नाम से कमीशन, तथा कृषि का काम होता है। उत्तमचंदजी के २ पुत्र हैं।

माल्लू

माल्लू गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि रतनपुर के राजा रतनसिंह के दीवान माहेश्वरी वैश्य ... गौत्रीय माल्हदेवजी नामक थे। इनके पुत्र को अधांग की बीमारी हो गई थी। अतएव दादा ... ने अपनी प्रतिभा के बल पर माल्हदेवजी के पुत्र को स्वास्थ्य लाभ कराया। इससे मंत्री ... सूरिजी से जैन धर्म का प्रति बोध लिया, इनकी संतानें "माल्लु" के नाम से मशहूर हुई।

सेठ गणेशदास केशरीचंद माल्लू, सिवनी छपारा (सी० पी०)

बीकानेर के समीप राजरूप देसर नामक स्थान से लगभग ७५ साल पूर्व इस परिवार के पूर्वज ... माल्लू सिवनी आये तथा यहां सराफी व्यवहार चालू किया। आपका संवत् १९४९ में ... आपके गणेशदासजी, केवलचन्दजी व रतनचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भ्राताओं का कार ... १९५८ में लगभग अलग २ होगया। सेठ गणेशचन्दजी माल्लू का जन्म संवत् १९१४ में हुआ। ... , माणिकचन्दजी, सुगनचन्दजी तथा दुलीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। माल्लू गणेशचन्दजी ... केशरीचन्दजी और माणिकचन्दजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को उन्नति मिली। माल्लू ... संवत् १९२७ में हुआ। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। सुगनचन्दजी माल्लू का ... १९८८ में हुआ।

वर्तमान में आप इस फर्म के मालिक सेठ माणिकचन्दजी, दुलीचन्दजी व केशरीचन्दजी के देवचन्दजी, नेमीचन्दजी, हरिश्चन्दजी तथा सुगनचन्दजी के पुत्र शिखरचन्दजी है। आप सब सज फर्म के व्यापार संचालन में भाग लेते हैं।

माणिकचन्दजी मालू—आपका जन्म संवत् १९४१ में हुआ। आप समझदार पुरुष हैं आप वर्तमान में सिवनी में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर तथा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के मेम्बर हैं आपके उद्योग से सन् १९३२ में 'श्री जैन ओसवाल परस्पर सहायक कोष मध्यदेश व बरार" नामक सं की स्थापना हुई है और आप उसके प्रेसिडेंट हैं। इधर दो सालों से आपकी फर्म के द्वारा एक जैन पाठशा चल रही है। तथा इस समय स्थानीय जैन मन्दिर की व्यवस्था आपके जिम्मे है। आपके छोटे भ्रा दुलीचन्दजी मालू चांदी सोने के जेवर बनाने के कारखाने का संचालन करते हैं। आपके पुत्र ईश्वरचन्द इन्द्रचन्द्रजी, घेवरचन्द्रजी, कोमलचन्दजी, यादवचन्द्रजी तथा निहालचन्दजी है। इसी तरह दुलीचन्द के पुत्र सोभागचन्द्र, ईश्वरचन्दजी के पुत्र खुशालचन्द उत्तमचन्द व नेमीचन्दजी के पुत्र लालचन्द्र प्रेमच हैं। इस परिवार का माणकचन्द्र दुलीचन्द्र के नाम से सराफी व्यवहार होता है। केवलचन्दजी मालू पुत्र भयालालजी अपना स्वतन्त्र कार्य्य करते हैं। यह खानदान सी० पी० के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित है

सेठ कालूराम रतनलाल मालू का परिवार, मद्रास

इस खानदान के मालिको का मूल निवास स्थान फलौधी (मारवाड) का है। इसके पह आप लोगों का निवासस्थान खिचंद और तिंवरी था। आप लोग स्था० आम्नाय के सज्जन हैं। इ खानदान में लालचन्दजी हुए, आपके देवीचन्दजी, शोभाचन्दजी तथा खुशालचन्दजी नामक तीन पु थे। देवीचन्दजी मालू के पुत्र कालूरामजी बडे प्रतापी तथा साहसी व्यक्ति हो गये हैं। आप अपनी हिम्म और बहादुरी के सहारे देश से पैदल मार्ग द्वारा नागपुर आये और अपने भाई खुशालचन्दजी की प पर काम करने लगे। वहाँ से आप सवत् १८९० में पैदल राम्ते चलकर मद्रास में आये। उस सम मारवाड़ियों की मद्रास में दो तीन दुकानें थीं। सेठ कालूरामजी बडे धर्मात्मा और जाति प्रेमी पुरुष थे आपने अपनी जाति के बहुत से पुरुषों को अपने यहाँ रखकर धधे से लगाया। आपने मद्रास के बेपा सूले में श्री चंद्राप्रभु जी का संवत् १९३० में एक बड़ा मन्दिर बनवाया। संवत् १९३७ में आपका स्वर्गवा हो गया। आपके कोई पुत्र न होने से आपने शुगलचन्दजी के पुत्र रतनलालजी को दत्तक लिया रतनलाल मालू का जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप अपने जाति भाइयों पर बडा प्रेम रखते थे। आपका संव १९६१ में स्वर्गवास हो गया। रतनलालजी के कोई सतान न होने से आपने अनोपचन्दजी को दत्तक लिया अनोपचन्दजी का जन्म संवत् १९५३ का है। आपके पुत्र मनोहरमलजी, पूनमचन्दजी तथा गेंदमलजी हैं

मरोठी

सेठ हीरचन्द पूनमचन्द मरोठी, दमोह,

इस परिवार के पूर्वज सेठ चैनसुखजी तथा उम्मेदचदजी नामक दो भ्राता अपने मूल निवा

—इनमें संवत् १९६०-६५ के लगभग व्यवसाय के लिये दमोह आये। तथा यहाँ इन्होंने कुछ मौजे ... मालगुजारी और साहुकारी व्यापार चालू किया। मरोठी उदयचन्द का स्वर्गवास ... हुआ। आपके पुत्र सुखलालजी भी जमींदारी का संचालन करते रहे। इनके वंशीधरजी, ... और गिरधीचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों बंधु अपनी फर्म का सचालन करते रहे। ... संतान नहीं हुई। शेष २ बंधुओं का परिवार विद्यमान है।

...मरोठी का परिवार—सेठ तखतमलजी ६५ वर्ष की आयु में सवत् १९६३ में स्वर्गवासी ... डालचन्दजी, रतनचंदजी, मूलचन्दजी, हीरचन्दजी तथा कस्तूरचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। ... सवत् १९७५ में, रतनचन्दजी सवत् १९६० में और हीरचंद का संवत् १९७२ में स्वर्गवासी ... इस परिवार में सेठ कस्तूरमलजी मरोठी, डालचन्दजी के पुत्र लखमीचन्दजी मरोठी तथा ... पुत्र पूनमचन्दजी मरोठी हैं।

... पूनमचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आप मिलनसार, शिक्षित तथा ... हैं। आप स्थानीय म्यु० के मेम्बर रह चुके हैं। तथा इस समय डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के ... हैं। आपके पुत्र पीतमचन्दजी तथा पदमचन्दजी पढते हैं। मरोठी लखमीचन्दजी के पुत्र हरखचंदजी ... हैं। इस परिवार में प्रधानतया जमीदारी का काम होता है।

...चन्दजी मरोठी का परिवार—आपका जन्म संवत् १९०५ में हुआ था। आप दमोह के ... थे। आप यहाँ के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। तथा दरबारी सम्मान भी आपको प्राप्त था। ... सार्वजनिक संस्थाओं के आप मेम्बर थे। आपके हजारीमलजी सूरजमलजी तथा नेमीचंदजी ... हुए। जिनमें हजारीमलजी का स्वर्गवास हो गया।

...मलजी मरोठी—आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ। आप अपने पिताजी के बाद तमाम ... और सार्वजनिक कामों में सहयोग देते हैं। इस समय आप दमोह के सेकंड क्लास ऑनरेरी मजि- ...संस्थाओं के मेम्बर हैं। सरकार में आपका अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र खुशालचन्दजी ... तथा गोकुलचन्दजी १५ साल के हैं। आपके यहाँ जमीदारी का काम होता है। सेठ ... भ्राता नेमीचंदजी का जन्म सवत् १९४८ में हुआ। आपके पुत्र तिलोकचन्दजी बालक हैं।

सावण सुखा

...सुखा गोत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि चंदेरी के राजा खरहत्थसिंह राठोड़ ने अपने ... दादा जिनदत्तसूरिजी से सवत् ११९२ में जैन धर्म की दीक्षा गृहण की। इनके तीसरे ... नामा प्रसिद्ध हुए। भैंसाशाह के ५ पुत्रों में से चौथे पुत्र कुँवरजी थे। इनको ज्योतिष का ... चित्तौड़ के राणोजी ने इनको पूछा कि कहो "कुँवरजी सावण भादवा कैसा होगा"। ... बतलाया कि "सावण सूखा और भादवा हरा होगा" जब यह बात सत्य निकली। तब ... इनके "सावण सुखा" के नाम से प्रसिद्ध हुई। और इस प्रकार यह गौत्र उत्पन्न हुई।

सेठ गणेशदास जुहारमल सावण सुखा, सरदार शहर

जब सरदारशहर बसा तब इस परिवार के सेठ टीकमचन्दजी, मेघराजजी और द्वेरामजी तीनों भाई सवाई से यहा आकर बसे। एवम् साधारण खेतीवाडी एवम देन लेन का व्यापार करते रहे। सेठ टीकमचन्दजी के सात पुत्र हुए मगर इस समय उनके परिवार में कोई नहीं है। सेठ द्वेरामजी के भैरोंदानजी नामक एक पुत्र हुआ जिसका स्वर्गवास होगया। वर्तमान में उनके पुत्र मूलचन्दजी और शोभारामजी रगपुर में अपना व्यापार करते हैं। मूलचन्दजी के भीखनचन्दजी और शोभाचन्दजी के फकीरचन्दजी नामक पुत्र हैं। सेठ मेघराजजी सरदारशहर ही में रहे। आप के सेढ़मलजी और गणेश दासजी नामक दो पुत्र थे। सेठ सेठमलजी के मूलचन्दजी, जुहारमलजी, नेमिचन्दजी, और हरकचंदज नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से सेठ जुहारमलजी का स्वर्गवास होगया है। मूलचन्दजी के द्वारा इस फर्म की बहुत तरक्की हुई। आज कल १५ वर्षों से आप सरदारशहर में ही रहते है। हरकचन्दजी दत्तक चले गये। एवम् आज कल फर्म का संचालन सेठ नेमीचन्दजी ही करते हैं। आप योग्य एवं समझदार सज्जन हैं। आपके बुधमलजी, सुमेरमलजी और चम्पालालजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ गणेशदासजी इस परिवार में नामांकित व्यक्ति हुए। आप ही ने सवत् १९६० में गणेश दास मिलापचन्द के नाम से साझे में फर्म स्थापित की। फिर "गणेशदास जुहारमल" के नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार कर लिया। इसके पूर्व आप नरसिंहदास तनसुखदास आचलिया की फर्म पर काम करते रहे। इसमें आपकी प्रतिभा से बहुत उन्नति हुई। आप व्यापार चतुर थे। आपके मिलापचन्दजी नामक पुत्र हुए। जिनका स्वर्गवास होगया। इनके यहाँ हरकचन्दजी दत्तक हैं। आपके इस समय मोतीलालजी और माणकचन्दजी पुत्र हैं। आपकी फर्म पर १२ नारमल लोहिया लेन में देशी कपड़े का थोक व्यापार होता है। आपका परिवार तेरा पन्थी संप्रदाय का अनुयायी है।

मेसर्स हजारीमल रूपचन्द सावण सुखा का परिवार, मद्रास

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान बीकानेर का है। आप श्वे० जैन समाज के मंदिर आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। सब से पहले इस परिवार में से हजारीमलजी सावणसुखा संवत् १९२१ में बीकानेर से मद्रास आये। आपने मद्रास में आकर व्याज की फर्म स्थापित की। आपके हाथों से इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका संवत् १९४९ में स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् आपके नाम पर आपके भाई के पुत्र रूपचन्दजी दत्तक लाये गये। इस परिवार के लोगों ने चन्द्राप्रभुजी के मन्दिर का काम अच्छी तरह से देखा। श्री रूपचन्दजी का संवत् १९५७ में स्वर्गवास हो गया आपके पुत्र चम्पालालजी हुए। इनका जन्म सवत् १९५० में हुआ। आप ही इस समय इस फर्म के कारबार को सम्हाल रहे हैं। आपके पुत्र रतनचन्दजी बालक हैं।

इस परिवार का दान धर्म की ओर विशेष लक्ष्य है। आप ही ने यहाँ की दादावाड़ी का उद्यापन करवाया। साथ ही दादावाडी के एक तरफ का पर कोटा भी इस परिवार की ओर से बनाया गया है। आप ही के द्वारा दादावाड़ी के मन्दिर में सगमरमर के पत्थरों की जुडाई हुई है। आपकी मद्रास

... 'फर्म हजारीमल रूपचन्द" के नाम से बैङ्किंग की दुकान है। इस फर्म पर डायमण्ड ... भी होता है।

सेठ भीमराज हुकुमचंद सावण सुखा, रतनगढ़

इस परिवार का मूल निवास रतनगढ है। यहाँ सेठ खेतसीदासजी तथा अक्षयसिंहजी नामक ... व्यापार करते थे। इनके कोई संतान नहीं हुई।, अत इनके यहाँ रूणियाँ (बीकानेर) ... आये। सेठ भीमराजजी का जन्म संवत् १९०७ में हुआ। आप यहाँ से कलकत्ता ... "माणकचन्द ताराचन्द" वेद के यहाँ सर्विस की। तथा पीछे "सेठ तेजरूप गुलाबचन्द" की ... का काम शुरू किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। आपके पुत्र ..., ...लालजी तथा जयचदलालजी हैं। शोभाचन्दजी रतनगढ़ में रहते हैं। तथा जयचन्दजी ... सर्विस करते हैं। इनके पुत्र मोहनलालजी है।

... भीमराजजी के मझले पुत्र रुघलालजी का जन्म सवत् १९४२ में हुआ। पिताजी के ... पर आप दलाली करने लगे, तथा इधर संवत् १९८३ से रोसडाघाट (दर्भंगा) में रुघलाल ... नाम से दलाली का व्यापार आरम्भ किया। इसके बाद आपने सिंधिया (दरभंगा) में ... तथा टोली (मुजफ्फरपुर) में भीमराज सावणसुखा के नाम से आढ़त का व्यापार शुरू ... पश्चात् सवत् १९८७ में नं० २ राजा उमंड स्ट्रीट में अपनी फर्म स्थापित की। सेठ ... भीमराजजी तथा इन्द्राजमलजी नामक पुत्र हैं। भीमराजजी ने अपने पिताजी के बाद ... में काफी परिश्रम किया है। आपके पुत्र हुकुमचन्दजी हैं।

रेदासनी

सेठ मोतीलाल रामचन्द्र रेदासनी, नसीराबाद (खानदेश)

यह परिवार पीह (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहाँ से लगभग १०० साल पूर्व सेठ शिव... अमरचन्दजी दो भ्राता व्यापार के लिये नसीराबाद (जलगांव के समीप) आये। सेठ शिवचन्द ... १९१५ में स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे बंधु अमरचन्दजी के पुत्र मानमलजी तथा पौत्र रामचन्द्रजी ... ने इस दुकान के व्यापार को बहुत उन्नति दी। आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी हुए। ... रेदासनी—आपका जन्म सम्वत् १९१६ में हुआ। आप खानदेश के ओसवाल ... तथा समझदार पुरुष थे। आप बडे सरल स्वभाव के धार्मिक प्रवृत्ति वाले पुरुष थे। ... सम्वत् १९९० में आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र रंगलालजी, वंशीलालजी, बाबू ... हैं। रंगलालजी का जन्म सन् १९०५ में तथा वंशीलालजी का सन् १९०९ में ... अपने व्यापार को सम्हालते हैं। आपके यहाँ आसामी लेन देन का व्यापार होता है।

नीमानी

सेठ खूबचंद केवलचंद नीमानी, नाशिक

इस परिवार का मूल निवास फलोधी (मारवाड़) है। आप श्वेताम्बर जैन समाज के म[illegible] मार्गीय आम्नाय को माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ रूपचन्दजी नीमानी (रतनपुरा-बोह[illegible] के पुत्र खूबचन्दजी नीमानी लगभग १०० वर्ष पूर्व मारवाड़ से मालेगाँव (नाशिक) आये। तथा वहाँ साधा[illegible] कपड़ा बिक्री का काम किया। पश्चात् आपने नाशिक आकर खुर्दा बेंचने का काम किया। इस प्रकार सा[illegible] पूर्वक सम्पत्ति उपार्जित कर साहुकारी धधा जमाया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९१८ में हुआ। आ[illegible] पुत्र केवलचन्दजी का जन्म सम्वत् १८८८ में हुआ। आपने इस फर्म के व्यवसाय तथा स्थिति को [illegible] बनाया। सम्वत् १९४८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके सेठ अमोलकचन्दजी, सेठ नैनसुखजी तथा [illegible] बुधमलजी नीमानी नामक ३ पुत्र हुए।

सेठ अमोलकचन्दजी नीमानी—आपने सराफी, कपड़ा किराना आदि का व्यापार कर [illegible] सम्पत्ति उपार्जित की। इसके साथ २ आपने अपने खानदान की जगह जमीन व लैंडेड प्रापर्टी के स[illegible] करने में भी विशेष लक्ष दिया। आपके २ पुत्र हुए, इनमें बड़े भोजराजजी सन् १९१७ में स्वर्गवासी [illegible] गये, तथा उनसे छोटे पृथ्वीराजजी विद्यमान हैं।

सेठ नैनसुखदासजी नीमानी—आपके हृदयों में जातीय संगठन की भावनाओं की बहुत [illegible] उमंग थी। आपने सम्वत् १९४७ में महाराष्ट्र प्रांत के तमाम ओसवाल गृहस्थों को एकत्रित कर ओसव[illegible] हितकारिणी सभा का अधिवेशन किया, तथा जातीय सुधार सम्बन्धी २१ नियम बनाये, जिनका पा[illegible] नाशिक जिले में आज भी कानून की भांति किया जाता है। आप महाराष्ट्र तथा खानदेश के नामीगरा[illegible] महानुभाव हो गये हैं। आपको सरकार ने आनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान दिया था। आपके पुत्र रा[illegible] चन्द्रजी छोटी वय में ही स्वर्गवासी हो गये थे।

सेठ बुधमलजी नीमानी—आपका जन्म सम्वत् १९३१ में हुआ था। आप नाशिक की जनता [illegible] बड़े विद्वान तथा रुआबदार पुरुष हो गये हैं। आपने अंग्रेजी की इंटर तक शिक्षण पाया था। संस्कृत के आप ऊँचे दर्जे के विद्वान थे। कानूनी ज्ञान आपका बहुत बढ़ा चढ़ा था। आप १६ सालों तक नाशिक फर्स्ट क्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताकर सं० १९८२ में आप स्वर्गवासी हु[illegible]

वर्तमान में इस परिवार में श्री पृथ्वीराजजी नीमानी विद्यमान हैं। आपका जन्म सन् १९[illegible] में हुआ है। आपका परिवार महाराष्ट्र तथा नाशिक में नामांकित माना जाता है। आप ३ सालों [illegible] म्यु० मेम्बर भी रहे थे। इस समय लोकल बोर्ड के मेम्बर हैं। आपके नाशिक तथा धूलिया में बहुत मकानात तथा स्थाई सम्पत्ति है। आपके यहाँ किराया, सराफी तथा टोल कंट्राक्टिंग का काम होता है।

...(... कवलचंद) नाशिक स्व० सेठ छजमलजी घेमावत (छजमलजी नथमलजी) सादड़ी

... (... ...मल) औरंगाबाद.

स्व० सेठ नथमलजी घेमावत

साद...

घेमावत

[illegible] गौत्र की उत्पत्ति—कहा जाता है कि संवत् ९७३ में वीजापुर (गोडवाड) के पास हस्ती [illegible] स्थान में राजा दिगवत् राज करते थे। इनको जैन मुनि श्री बलभद्राचार्य्य ने जैनधर्म [illegible]या। इनके कई पीढियों बाद भांडाजी हुए जिन्होंने गिरनार व शत्रुँजय के संघ निकाले। [illegible] पीढियों बाद संवत् १८०० के लगभग घेमाजी और ओटाजी हुए। इन्होंने वाली में मनमोहन [illegible] का मन्दिर बनवाया। इनका परिवार घेमावत, और ओटावत कहलाता है। यह कुटुम्ब [illegible], तथा शिवगंज, सिरोही और सादडी में रहते हैं।

सेठ छजमलजी घेमावत का परिवार, सादड़ी

इस खानदान के पूर्वज ढावाजी घेमावत के पुत्र कपूरचन्दजी घेमावत लगभग संवत १९०५ में [illegible] सूरत गये तथा सूरत से ३ मील की दूरी पर भाटे गाँव नामक स्थान में लेनदेन का व्यापार [illegible]। संवत १९३१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ छजमलजी हुए।

[illegible] छजमलजी घेमावत—आपका जन्म संवत् १८९१ में हुआ। आपने संवत् १९४८ में बम्बई [illegible] स्थान खोली। तथा आपही ने इस खानदान के जमीन जायदाद को विशेष बढ़ाया। आप बड़े [illegible] में श्रद्धा रखने वाले पुरुष थे। संवत् १९७० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नथमलजी, [illegible], [illegible]चन्दजी, जसराजजी तथा दीपचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बधुओं में से कस्तूरचन्दजी [illegible] में तथा नथमलजी संवत् १९८८ में स्वर्गवासी हुए। इन पांचों भाइयों ने इस कुटुम्ब के [illegible] तथा सम्पत्ति को बहुत बढ़ाया। इन बंधुओं का कारबार इधर २ साल पूर्व अलग २ हो [illegible] सब भाइयों का बम्बई में अलग २ कपड़े का व्यापार होता है। सादड़ी में आप लोगों [illegible] हवेलियाँ बनी हुई हैं। तथा गोडवाड प्रान्त के प्रतिष्ठित परिवारों में यह परिवार माना जाता [illegible] में सेठ नथमलजी गोडवाड के प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव थे। तथा इस समय सेठ [illegible] दीपचन्दजी गोडवाड प्रांत के वजनदार पुरुष माने जाते हैं। आप दोनों भाइयों का जन्म [illegible] १९[illegible] तथा १९४० में हुआ। इसी तरह आपके मझले बंधु सेठ जसराजजी का जन्म संवत् [illegible]।

[illegible] में इस कुटुम्ब में सेठ मूलचन्दजी, सेठ जसराजजी, सेठ दीपचन्दजी तथा सेठ नथमलजी [illegible] और सेठ कस्तूरचन्दजी के पुत्र चन्दनमलजी मुख्य हैं। सेठ मूलचन्दजी के पुत्र [illegible] जसराजजी के पुत्र ओटरमलजी, हमीरमलजी तथा जुगराजजी और दीपचन्दजी के पुत्र सहस [illegible]चन्दजी हैं। इसी प्रकार निहालचन्दजी के पुत्र कालूरामजी तथा सागरमलजी के पुत्र [illegible] हैं। और सहसमलजी के पुत्र हरखमलजी हैं।

इस खानदान की ओर से सार्वजनिक तथा धार्मिक कार्यों की ओर उदारता से सम्पत्ति लगाई [illegible] १९८१ में कन्या शाला का मकान बनाया तथा उसका व्यय आज तक आप ही दे

रहे हैं, आपने एक विद्यालय को २००००) का दान दिया था। संवत् १९७७ में १७ हजार की लागत गांव में एक उपाश्रय बनवाया। इसी प्रकार नथमलजी धर्मपत्नी हीराबाई के नाम से राणकपुरजी के रास्ते एक हीरा बावडी बनवाई। इस कुटुम्ब ने वरकाणा विद्यालय को १००००) एक बार तथा ४०० दूसरी बार प्रदान किये। इस विद्यालय की मेनेजिंग कमेटी के प्रेसिडेण्ट सेठ मूलचन्दजी हैं। इ अतिरिक्त पालीताना, भावनगर विद्यालय, बम्बई महावीर विद्यालय, आदि स्थानों पर आपकी ओर सहायताएं दी गई हैं। इस कुटुम्ब ने अभी तक लगभग एक लाख रुपयों का दान किया है।

घेमावत उदयभानुजी का परिवार, शिवगंज

हम ऊपर कह आये हैं कि घेमाजी की संतानें घेमावत नाम से मशहूर हुई। इनके देवी सुखजी, थानजी, तथा करमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। घेमावत करमचन्दजी को बाली से सांडेरा ठाकुर अपने यहाँ ले गये। इनका यहाँ जोरों से व्यापार चलता था। इनके पुत्र उदयभानजी भी स राव में व्यापार करते रहे। उदयभानजी के रतनचंदजी, जवानमलजी, हजारीमलजी, मानमलजी, हि मलजी तथा फतेमलजी नामक ६ पुत्र हुए।

घेमावत रतनचन्दजी का परिवार—रतनचन्दजी ने धार्मिक कार्य्यों में बहुत इज्जत पाई। आ सांडेराव से ऋषभदेवजी तथा आबूजी के संघ निकाले आप संवत् १९२३ में सांडेराव से शिवगज आ संवत् १९३२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चिमनमलजी आपके स्वर्गवासी होने के सम माह के थे। घेमावत चिमनमलजी का खानदान शिवगज में बहुत प्रतिष्ठित मान जाता आप आरंभ में सांडेराव में कामदार थे। आप समझदार पुरुष हैं। आपके पुत्र घेमावत धनरा तथा तखतराजजी हैं। घेमावत धनराजजी का जन्म संवत् १९५९ में हुआ। संवत् १९८३ आपने बी० ए० ऑनर्स तथा १९८५ में एल० एल० बी० की परीक्षा पास की। सवत् १९८३ में सिरोही में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट हुए, तथा संवत् १९८६ से आप चीफ मिनिस्टर के ऑफिस सुपरिंटेन्डेंट पर कार्य्य करते हैं। आपके छोटे भाई तखतराजजी का जन्म सवत् १९६५ में हुआ। आप इंटर शिक्षा प्राप्त कर मुरादाबाद पोलीस ट्रेनिंग में गये, तथा इस समय जोधपुर में सब इन्सपेक्टर पोलीस धनराजजी के पुत्र सम्पतराजजी तथा खुशवंतराजजी है।

घेमावत जवानमलजी का परिवार—आपके पुत्र हीराचन्दजी तथा तेजराजजी हुए। आ स्वर्गवास क्रमश: संवत् १९५४ तथा ५७ में हुआ घेमावत हीराचंदजी के पुत्र सुन्दरमलजी तथा तेजरा के पुत्र वरदीचदजी तथा कुशलराजजी हुए। घेमावत सुंदरमलजी का जन्म १९३५ में हुआ। आप शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक सज्जन हैं। आप शिवगंज की कन्या शाला को विशेष सहायता देते रहते आपके मेनेजमेंट तथा कोशिश से पाठशाला की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है। घेमावत हजारीम के पुत्र राजमलजी सांडेराव में कामदार थे। इनके पौत्र देवीचदजी तथा साहबचदजी सांडेराव में व्या करते हैं। तथा घेमावत मानमलजी के पौत्र चांदमलजी सिरोही में सर्विस करते हैं।

घेमावत फतेचन्दजी का परिवार—घेमावत फतेचन्दजी गोडवाड प्रान्त की पब्लिक त जागीरदारों में सम्माननीय व्यक्ति थे। संवत् १९५९ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पुखरा

... १९.. म हुआ आप आरंभ से सांडे राव ठिकाने में कामदार रहे। संवत् १९८३ में आप ... सुपरिटन्डेन्ट हुए। तथा इस पद के साथ इस समय आप कंट्रोल हाउस होल्ड और ... है। सिरोही दरबार की आप पर अच्छी मरजी है। तथा समय २ पर आपको ... को दरबार ने सिरोपाव देकर सम्मानित किया है।

देवड़ा

सेठ बुधमल जुहारमल देवड़ा, औरंगाबाद (दक्षिण)

सिरोही के देवड़ा राजवंश से इस परिवार का प्राचीन सम्बन्ध है। वहाँ से ३०० वर्ष पूर्व ... में आकर अपना निवास बनाया। यह कुटुम्ब स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला ... संवत् १८५५ में सेठ ओटाजी के पुत्र बुधमलजी पैदल रास्ते से औरंगाबाद आये। तथा ... के नाम से किराने की दुकान की। आपके पुत्र जुहारमलजी तथा पूनमचन्दजी ... सेठ जुहारमलजी ने सवत् १९३८ में "पूनमचन्द वख्तावरमल" के नाम से ... इन बंधुओं के बाद सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ वख्तावरमलजी ने तथा सेठ ... पुत्र सेठ जसराजजी ने इस दुकान के व्यापार तथा सम्मान को बहुत बढ़ाया। सवत् ... फर्म "औरंगाबाद मिल लिमिटेड" की बैंकर हुई। और इसके दूसरे ही साल मिल की ... इस फर्म पर आई। इसी साल फर्म की शाखाए वरंगल, नांदेड, परभणी, जालना, ... स्थानों में खोली गई। संवत् १९६८ में इस दुकान की एक शाखा "गणेशदास ... नाम से मूलजी जेठा मारकीट बम्बई में खोली गई। इन सब स्थानों पर इस समय ... व्यापार हो रहा है। तथा सब स्थानों पर यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

... वख्तावरमलजी देवड़ा का स्वर्गवास संवत् १९८७ में ६९ साल की आयु में हुआ। आप ... नामक गांव के १४ सालों तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। इसी प्रकार आपने ... सेठ जसराजजी संवत १९८९ में स्वर्गवासी हुए। इस परिवार ने औरंगाबाद ... रुपयों की लागत से एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई। बगडी में ४० सालों से एक ... चला रहे हैं। यहाँ एक समरथ सागर नामक सुंदर बावडी तथा १ धर्मशाला भी बन... औरंगाबाद में मन्दिरों तथा धर्मशालाओं में २० हजार रुपये खरच किये। इसी तरह ... इस परिवार ने किये।

... इस फर्म के मालिक सेठ वख्तावरमलजी के पुत्र शेषमलजी तथा जसराजजी के पुत्र ... तथा पृथ्वीचन्दजी हैं। सेठ मेवराजजी के पुत्र मोहनलालजी भी कारोबार में भाग ... निजाम स्टेट तथा बगडी में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है।

डाँगी

शाहपुरा का डॉगी खानदान

इस परिवार के पूर्वज मेवाड़ में उच्च श्रेणी के व्यापारी तथा बैंकर्स थे। जब महाराणा अमरसिंह

जी के तृतीय पुत्र सुजानसिंहजी ने शाहपुरा बसाया, उस समय वे इस परिवार के पूर्वज सेठ टेकच को अपने साथ शाहपुरा मे लाये थे। इनके पुत्र सरूपचन्दजी, अनोपचन्दजी तथा मंसारामजी हुए। सरूपचन्दजी तथा अनोपचन्दजी शाहपुरा रियासत के बैंकर थे। आवश्यकता पडने पर इन्होंने रियास आर्थिक सहायताएँ दी थीं। "न्याय" का कुल काम इनके घर पर होता था। बनेडा स्टेट में ४ परिवार बहुत समय तक बैंकर रहा। एक लडाई में मदद देने के उपलक्ष में शाहपुरा दरबार ने अनोपसिंहजी को कठी और मर्यादा की पदवियां देकर सम्मानित किया था। आपके जेष्ट पुत्र हमीरा को सम्वत् १८९३ में कर्नल डिक्सन ने ब्यावर में बसने के लिये इज्जत के साथ निमंत्रित किया था। छोटे भाई चतुरभुजजी, सेठ सरूपचन्दजी डाँगी के नाम पर दत्तक गये। उदयपुर के दीवान मेहता अ तथा मेहता शेरसिंहजी से इस परिवार की रिश्तेदारियाँ थीं। हमीरसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र चदनमल साथ उनकी धर्मपत्नी सम्वत् १९१४ में सती हुई। आगे चलकर डाँगी चतुर्भुजजी के पुत्र बाल और चनणमलजी के दत्तक पुत्र अजीतसिंहजी कमजोर स्थिति में आ गये। जब शाहपुरा दरबार नाह जी की दृष्टि में पुराने कागजात आये, तो उन्होंने इस परिवार की सेवाओं पर खयाल करके डाँगी अजी जी के पुत्र जीवनसिंहजी को "जींकारे" का सम्मान बख्शा। दरबार समय २ आपकी सलाह लेते थे। बडे विद्याप्रेमी तथा सज्जन पुरुष थे। आपके पुत्र अक्षयसिंहजी डाँगी हैं। डाँगी बालचन्दजी के सोभागसिंहजी बडे परोपकारी, हिम्मत बहादुर तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। सम्वत् १९५६ के अकाल में गरीब जनता की बहुत मदद की थी। सन् १९१२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके पुत्र हरकचन्दजी

श्री अक्षयसिंहजी डाँगी ने बनारस यूनिवर्सिटी से बी० ए० पास किया। थर्ड ईयर में इ मिक्स में प्रथम आने के कारण आपको स्कालरशिप मिली। इसी तरह आप हर एक क्लास में प्रथम रहते रहे। बी० ए० पास करने के बाद आप तीन सालों तक शाहपुरा में सिविल जज रहे। इसके आपने एम० ए० और एल एल० बी० की डिगरी प्राप्त की। इस समय आप अजमेर मे वकालत कर आपकी अंग्रेजी लेखन शैली ऊँचे दर्जे की है। ओसवाल कान्फ्रेंस के प्रथम अधिवेशन के आप मं सामाजिक सुधारों में आप अग्रगण्य रूप से भाग लेते हैं। आपके पुत्र सुभापदेव हैं।

आँचलिया

रामपुरा का आँचलिया परिवार

यह परिवार मूल निवासी मारवाड का है। वहाँ से कई पुश्त पूर्व यह कुटुम्ब राम आकर आबाद हुआ। इस परिवार में आँचलिया सूरजमलजी तथा उनके पुत्र चुन्नीलालजी कस्टम वि कार्य्य करते थे। कार्य्य दक्ष होने के कारण जनता ने आपको चौधरी बनाया। और तब से इनका प "चौधरी" कहलाने लगा। चौधरी चुन्नीलालजी के चम्पालालजी, रतनलालजी तथा किशनलालजी ३ पुत्र हुए। इनमें चौधरी चम्पालालजी सीधे सादे तथा धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आसामी लेन देन का काम करते थे। सवत् १९७६ में ५१ साल की आयु में आप स्वर्गवासी। आपके मोतीलालजी, बसंतीलालजी, बाबूलालजी, कन्हैयालालजी, बहुतलालजी, तथा मदनलालजी

नवरत्ना राय गाधा, जोधपुर (पेज नं० ६९०)

श्री बाबूलालजी चौधरी वकील, गरोठ

(पेज नं० ६३१)

श्री कचरमलजी श्रावड़, (छगनमल कपूरचंद)
जालना (पेज नं० ६४८)

—। मोतीलालजी रामपुरा में व्यापार करते हैं। इनके पुत्र नानालालजी, तेजमलजी तथा —। चौथे चमनीलालजी रामपुरे के सर्व प्रथम मेट्रिक्युलेट हैं। सन् १९१५ में मेट्रिक पास … हाईस्कूल के सेक्रेटरी नियुक्त हुए, और तब से इसी पद पर कार्य्य कर रहे हैं।

… चौधरी—आपने इस परिवार में अच्छी उन्नति की। आपका जन्म संवत् १९७९ … तक अध्ययन कर आपने इन्दौर स्टेट की वकीली परीक्षा पास की। आज कल आप गरोठ … हैं। तथा रामपुरा भानपुरा जिले के प्रसिद्ध वकील माने जाते हैं। इतनी छोटी वय में … लाइन में अच्छी दक्षता प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को उन्नत बनाया है। आपके … में क्लार्क हैं। तथा उनसे छोटे चौधरी बहुतलालजी इस समय एल० एल० बी … इन्दौर में पढ़ रहे हैं। इसी तरह इस परिवार में रतनलालजी के पुत्र गेंदालालजी तथा … में व्यापार करते हैं। यह परिवार श्वे० जैन स्थानकवासी आम्नाय को मानता है।

गोधावत

सेठ मेघजी गिरधरलाल गोधावत, छोटी सादड़ी

इस परिवार के पूर्वज सेठ मेघजी बड़े प्रतिभावान सज्जन थे। आपके पौत्र सेठ नाथूलालजी ने … मान मर्यादा तथा सम्पत्ति में बहुत उन्नति की। आप बड़े दानी तथा व्यापारदक्ष पुरुष … व्यापार में आपने सम्पत्ति उपार्जित की थी। आपने सवा लाख रुपयों के स्थाई फंड से … गोधावत जैन आश्रम" नामक एक आश्रम की स्थापना की थी। सम्वत् १९७६ की ज्येष्ठ … स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र हीरालालजी का आपकी विद्यमानता में ही स्वर्गवास हो गया … नाथूलालजी के पौत्र सेठ छगनलालजी विद्यमान हैं। आप सज्जन तथा प्रतिष्ठित … परिवार मालवा तथा मेवाड़ के ओसवाल समाज में प्रधान धनिक माना जाता है। आप … मानने वाले सज्जन हैं। आपके यहाँ सादड़ी में लेनदेन का व्यापार होता है, तथा … साहुकारी और आढ़त का व्यापार होता है।

दनेचा (बोहरा)

सेठ ओटदान गमचन्द दनेचा (बोहरा) बेंगलोर

… का मूल निवास मेसिया (मारवाड़) है। वहाँ से इस परिवार ने अपना … बसाया। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान … हुए हैं।

… —आप लगभग १०० वर्ष पूर्व मारवाड़ से पैदल राह चलकर सिकन्दराबाद आये … कार्य आरम्भ किया। वहाँ से संवत् १९१० में आप बेंगलोर आये। उस … एक भी दुकान नहीं थी। आपने कई मारवाड़ी कुटुम्बों का यहाँ आबाद … समय आपने अगरचन्दजी बोहरा की भागीदारी में "ओटदान अगरचन्द"

के नाम से फर्म स्थापित की। ४० साल सम्मिलित व्यापार करने के बाद संवत् १९५४ में "आ रामचन्द्र" के नाम से अपना घरू बैंकिंग व्यापार स्थापित किया। आपका राज दरबार और पंच पञ्च में अच्छा सम्मान था। संवत् १९५५ मे आप स्वर्गवासी हुए। आप के रामचन्द्रजी, हीराचन्दजी प्रेमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। अपने पिताजी के पश्चात् आप तीनों बंधुओं ने कार्य्य संचालित कि आप तीनों सज्जन स्वर्गवासी हो गये हैं। सेठ रामचन्दजी के पुत्र ताराचन्दजी छोटी व्यय में स्वर्गवासी वर्तमान में इस परिवार में सेठ हीराचन्दजी के पुत्र दुलहराजजी, मिश्रीलालजी तथा फूलचन्दजी व छावनी में सेठ "आईदान रामचन्द्र" के नाम से बैंकिंग व्यापार करते हैं। आप तीनों सज्जनों का क्रमशः १९४८, ५२ तथा संवत् १९५६ में हुआ। सेठ प्रेमचन्दजी के पुत्र मिट्ठूलालजी बगलोर सि कपडे का व्यापार करते हैं। सेठ मिश्रीलालजी वडे सज्जन तथा शिक्षित व्यक्ति हैं। आपकी दुकान बं में सबसे प्राचीन तथा प्रतिष्ठित है। आपके पुत्र भँवरलालजी की वय २० साल है।

बागचार

लाला दानमलजी बागचार, जेसलमेर

लाला अनोलकचन्दजी बागचार - आप जेसलमेर में प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभाव हुए। का परिवार मूल निवासी जेसलमेर का ही है। आप मीर मुन्शी थे। तथा जेसलमेर रियासत की से मोतमिद बनाकर ए० जी० जी० आदि गवर्नमेंट आफीसरों के पास तथा अन्य राजाओं के पास जाया करते थे। महारावल रणजीतसिंहजी आपसे वडे प्रसन्न थे। उन्होंने संवत् १९२० की वदी २ को एक परवाने में लिखा था कि "यूँ वहोत दानतदारी व सचाई के साथ सरकार की वद मुस्तेद व सावत कदम है "सरकार थारे ऊपर मेहरबान है"। इसी तरह पटियाला दरबारने भी सनद दी थी। आपकी मातमपुर्सी के लिये जेसलमेर दरबार आपकी हवेली पर पधारे थे। आप लाला माणकचन्दजी हुए।

लाला माणकचन्दजी बागचार—आप अपने पिताजी के बाद "बाप" परगने के हाकिम इसके अलावा आपने रेवेन्यू इन्स्पेक्टर, कस्टम आफीसर तथा बाउण्डरी सेटलमेंट मोतमिद आदि प भी काम किया। पश्चात् आप जीवन भर "जज" के पद पर कार्य्य करते रहे। रियासत में आने बृटिश आफीसरों का अरेंजमेंट भी आपके जिम्मे रहता था। आपकी योग्यता की तारीफ रेजिडेण्ट एवेट, कर्नल विंडहम तथा मि० हेमिल्टन आदि उच्च पदाधिकारियों ने सार्टिफिकेट देकर की। १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। जेसलमेर दरबार आपकी मातमपुर्सी के लिये आपकी हवेली पर पधारे आपके पुत्र लाला दानमलजी विद्यमान हैं।

लाला दानमलजी बागचार—आप अपने पिताजी के बाद "ज्वाइन्ट जज" के पद पर हुए। इसके पहिले आप "बाप तथा समलावा" परगनों के हाकिम तथा दीवान और दरबार की पर नियुक्त थे। आपको जेसलमेर दीवान श्रीयुत एम० आर० सपट, ए० जी० जी० आर० ई० हॉलेण्ड कई उच्च आफीसरों न सार्टिफिकेट देकर सम्मानित किया है। संवत् १९८० तक आप सर्विस रहे। आपका खानदान जेसलमेर में प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है।

सेठ गुलाबचंदजी सालेचा, पचपदरा.

सेठ किशनलालजी टाटिया (मिश्रीमल गुलाबचन्द)

श्री केशवलालजी श्रावद, चान्दवड़ (नाशिक)

बाबू मन्नालालजी रीगल सिनेमा, इन्दौर.

सालेचा
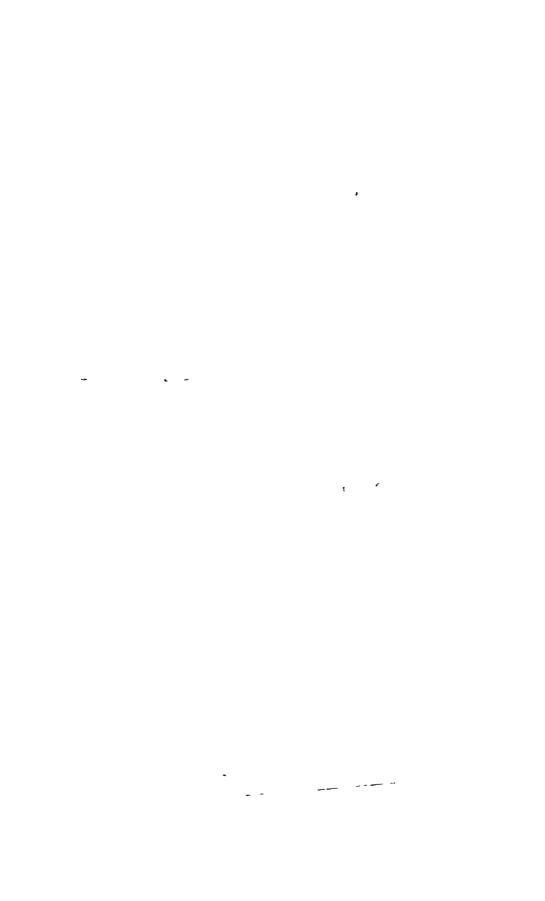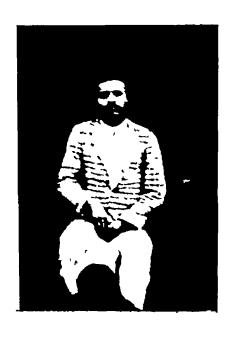
सेठ गुलाबचंदजी सालेचा, पचपदरा

इस परिवार के पूर्वज सालेचा वजरगजी गोपडी गांव से संवत् १७३५ में पचपदरा आये। तथा का व्यापार शुरू किया। इनकी नवीं पीढ़ी में सागरमलजी हुए। आप वंजारों के साथ तथा कोटे में अफीम की खरीदी फरोख्ती का व्यापार करते थे। इन व्यापारों में कर आपने अपने आस पास की जाति बिरादरी में बहुत बडी प्रतिष्ठा पाई। जोधपुर आपने ६० हजार रुपया कर्ज दिये थे, इसके बदले में पचपदारा हुकूमत की आय आपके यहां की। संवत १९३५ में आप स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र हजारीमलजी ४ साल के थे।

हजारीमलजी सालेचा—आप पचपदरा के नामी व्यापारी और रईस तबियत के ठाठबाट थे। जोधपुर स्टेट व साल्ट डिपार्टमेंट के तमाम ऑफीसरों से आपका अच्छा परिचय था। आप ... १ लाख मन नमक खरीदने का कंट्राक्ट कई सालों तक लेते रहे। संवत् १९७२ में ... हुए। आपके नाम पर सालेचा गुलाबचन्दजी भोपाल से दत्तक आये।

गुलाबचन्दजी सालेचा—आपका जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आप बड़े अनुभवी तथा ... हैं। आपने पचपदरा आने के पूर्व भोपाल, नागपूर आदि में स्कूल खुलवाये। पचपदरा में ... काम में मदद देते रहे। आपके पास भारत की नमक की झीलों का ६० सालों का कम्पलीट ... है। संवत् १९२९ में आपने विलायती नमक की काम्पीटीशन में पचपदरा साल्ट का एक जहाज ... कलकत्ता रवाना किया, लेकिन बृटिश कम्पनियों ने सम्मिलित होकर वहाँ भाव बहुत ... इसस आपको उसमें सफलता न रही। नमक के व्यापार में आपका गहरा अनुभव है। ... प्रधानपंच तथा नाकोडा पार्श्वनाथ के प्रबन्धक हैं। तथा जाति सुधारों में भाग लेते हैं। आपके पुत्र लक्ष्मीचन्दजी तथा अमीचन्दजी जोधपुर में और चम्पालालजी पचपदरा में पढ़ते हैं।

टाँटिया

सेठ भोमराज किशनलाल टाँटिया, खिचंद

यह परिवार खिचंद का रहने वाला है। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ हिम्मतमलजी टांटिया, मालेगांव (खानदेश) गये, तथा वहाँ सर्विस की। फिर आपने चौपड़ा (खानदेश) में दुकान की। अपने जीवन के अन्तिम २५ सालों तक आप धर्म ध्यान में लीन रहे। संवत् १९७२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके हस्तीमलजी, ... गम्भीरमलजी तथा भोमराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें हस्तीमलजी टांटिया ने संवत् ... में ... में दुकान खोली। संवत् १९६९ में आप स्वर्गवासी हुए। आप चारों भाइयों का ... १९७१ में अलग २ हुआ। सेठ हस्तीमलजी के किशनलालजी तथा राणूलालजी नामक दो ... हुए। राणूलालजी मद्रास दत्तक गये।

सेठ किशनलालजी ने अपने काका भोमराजजी के साथ बम्बई में भागीदारी में व्यापार आरंभ

किया। तथा इधर संवत् १९८१ से बम्बई कालबा देवी में आढ़त का व्यापार "मिश्रीमल गुमानचन्द के नाम से करते हैं। खिचन्द में आपका परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके पुत्र भेरुदानजी, गुमानचन्दजी, देवराजजी तथा समीरमलजी हैं। सेठ भीमराजजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र मिश्रीलालजी हैं। इसी प्रकार इस परिवार में सेठ सौभागमलजी और उनके पुत्र कन्हैयालालजी का व्यापार धरनगाँव में तथा गम्भीरमलजी और उनके पुत्र मेघराजजी का व्यापार सारंगपुर (मालवा) में होता है

आवड़

सेठ हरखचन्द रामचन्द आवड़, चांदवड़

यह परिवार पीसांगन (अजमेर के पास) का निवासी है। आप मन्दिर मार्गीय आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ हणुवतमलजी के बड़े पुत्र हरखचन्दजी व्यापार के लिये संवत् १९३० में चाँदवड़ के समीप पनाला नामक स्थान में आये, तथा किराने की दुकानदारी शुरू की। आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। पीछे से अपने छोटे भ्राता मूलचन्दजी को भी बुलालिया, तथा दोनों बंधुओं ने हिम्मत पूर्वक सम्पत्ति उपार्जित कर समाज में अपने परिवार की प्रतिष्ठा स्थापित की। सेठ मोतीलालजी का संवत् १९८४ में स्वर्गवास हो गया है, तथा सेठ हरकचन्दजी विद्यमान हैं। आपके पुत्र रामचन्दजी तथा केशवलालजी हैं। आप दोनों का जन्म क्रमश संवत् १९४६ तथा १९५३ मे हुआ। आप दोनों सज्जन अपनी कपड़ा व साहुकारी दुकान का संचालन करते हैं।

श्री केशवलालजी आवड़—आप बड़े शान्त, विचारक और आशावदी सज्जन हैं। चाँदवड़ गुरुकुल के स्थापन करने में, उसके लिए नवीन बिल्डिंग प्राप्त करने में आपने जो जो कठिनाइयाँ झेलीं, उनकी कहानी लम्बी है। केवल इतना ही कहना पर्य्याप्त होगा कि, आपने विद्यालय की जमावट में अनेकानेक रुकावटों व कठिनाइयों की परवाह न कर उसकी नींव को दृढ़ बनाने का सतत् प्रयत्न किया। इसके प्रतिफल में परम रमणीय एव मनोरम स्थान में आज विद्यालय अपनी उत्तरोत्तर उन्नति करने में सफल हो रहा है। तथा अब भी आप विद्यालय की उसी प्रकार सेवाएँ बजा रहे है। आप खानदेश तथा महाराष्ट्र में सुपरिचित व्यक्ति हैं। आपके बड़े भ्राता रामचन्द्रजी विद्यालय की प्रबंधक समिति के मेम्बर है। आपके पुत्र शाँतिलालजी ब्रह्मचर्य्याश्रम से शिक्षण प्राप्तकर कपडे का व्यापार सम्हालते है। इनसे छोटे लखीचंद तथा सरूपचन्द हैं। इसी प्रकार केशवलालजी के पुत्र सचियालाल तथा रतनलाल हैं।

सेठ धनरूपमल छगनमल आवड, जालना

इस खानदान का मूल निवास स्थान बीजाथल (मारवाड) है। आप मन्दिर आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदान में सेठ धनरूपमलजी मारवाड से जालना ८० वर्ष पूर्व आये। तथा यहाँ आकर व्यापार किया। आपका स्वर्गवास हुए करीब ४० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ छगनमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपके समय में फर्म की अधिक तरक्की हुई। संवत् १९६५ के करीब आपका स्वर्गवास हुआ। धार्मिक कार्यों की ओर आपकी अच्छी रुचि थी। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ कपूरचन्दजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। वर्त्तमान समय में आप ही इस फर्म के

...संवत् १९३५ में जन्म हुआ है। आप समझदार तथा सज्जन व्यक्ति हैं। आपके ...र्म की बहुत तरक्की हुई। आपने जालना के मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाने में दो तीन हजार ...सी तरह के धार्मिक कामों में आप सहयोग लेते रहते हैं। इस समय आपके यहाँ लेन-देन, ...का व्यापार होता है। आपके पुत्र कचरूलालजी व्यापार में भाग लेते हैं तथा उत्साही ...ना में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

ठाकुर

सेठ देवीचंद पन्नालाल ठाकुर, इन्दौर

इस परिवार के पूर्वज अपने मूल निवास ओशियाँ से कई स्थानों पर निवास करते हुए लगभग ... इन्दौर में आकर आबाद हुए। इन्दौर में इस परिवार के पूर्वज सेठ बिरदीचन्दजी अफीम ... थे। आपके पुत्र नाथूरामजी तथा नगजीरामजी "नाथूराम नगजीराम" के नाम से व्यापार ... आप दोनों भाइयों के क्रमश देवीचन्दजी, तथा शङ्करलालजी नामक एक एक पुत्र हुए। ये ... अलग २ व्यापार करने लगे।

...देवीचन्दजी का परिवार—आप इस परिवार में बड़े व्यवसाय चतुर तथा होशियार पुरुष ... पुत्र पन्नालालजी तथा मोतीलालजी ने अपनी फर्म पर चाँदी सोने का व्यवसाय आरम्भ किया। ... में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। सेठ पन्नालालजी का ९० साल की आयु में संवत् ... स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सरदारमलजी ६० साल के हैं। इनके पुत्र धन्नालालजी, मन्नालालजी ... हैं। इनमें अमोलकचन्दजी अपने पिताजी के साथ सराफी दुकान में सहयोग देते हैं।

...धन्नालालजी तथा मन्नालालजी ठाकुर—आप दोनों बन्धुओं ने इन्दौर की शौकीन जनता की ... सन् १९२३ में क्राउन सिनेमा तथा सन् १९३४ में रीगल थियेटर का उद्घाटन किया। ... में "हिन्दी टॉकी" तथा दूसरी में "अँग्रेजी टॉकी" मशीन का व्यवहार किया जाता ... लाइन में आप दोनों बन्धुओं का अच्छा अनुभव हैं। धन्नालालजी के पुत्र हस्तीमलजी ... करते हैं। मोतीलालजी ठाकुर के पुत्र इन्दौरीलालजी चाँदी सोने का व्यापार करते हैं ... व्यापार में भाग लेते हैं, तथा कादरामजी छोटे हैं। इसी प्रकार इस परिवार में ... भागवानदासजी, सूरजमलजी तथा हजारीमलजी हुए। इनमें हजारीमलजी मौजूद हैं। ... हीरालालजी अपने काका के साथ चाँदी सोने का व्यापार करते हैं। ... रतनलालजी हैं।

भादाणी

सेठ दौलतराम हरखचन्द भादाणी, कलकत्ता

... जैन तेरापन्थी आम्नाय को मानने वाला है। आपका मूल निवास स्थान ... है। इस खानदान के पूर्व पुरुष भादाणी आसकरणजी ने करीब सौ वर्ष पहले

कूच विहार में दुकान खोली। धीरे २ आपका काम बढ़ने लगा, और आपकी कूच विहार स्टेट में बहुत जमीदारी हो गई। आपके तनसुखदासजी और गुलाबचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयों के से इस फर्म की खूब उन्नति हुई। डूँगरगढ़ बसाने में भादाणी तनसुखदासजी ने बहुत मदद दी। भा हरखचन्दजी बीकानेर "राजसभा" के मेम्बर रहे थे। तनसुखदासजी के दौलतरामजी गुलाबचन्दजी के हरकचन्दजी नामक पुत्र हुए। इनमें से श्री दौलतरामजी का स्वर्गवास सवत् १' में हो गया आपके पुत्र मालचन्दजी विद्यमान हैं। हरखचन्दजी इस समय इस फर्म के खास प्रोप्राइटर आपके पाँचपुत्र हैं जिनके नाम श्री केशरीचन्दजी, पूनमचन्दजी, मोतीलालजी, इन्द्रराजमलजी और स रामजी हैं। करीब बीस वर्ष पूर्व इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता आर्मेनियन स्ट्रीट में खोली गई यहाँ "दौलतराम हरकचंद" के नाम से कमीशन एजंसी का काम होता है।

पगारिया

सेठ सरूपचन्द पूनमचन्द पगारिया, बेतूल

इस परिवार के पूर्वज सेठ छोटमलजी पगारिया, गूलर (जोधपुर स्टेट) से लगभग ७०। पहिले चांदूर बाजार आये, तथा वहाँ से उनके पुत्र सरूपचन्दजी सवत् १९२७ में बदनूर आये तथा प्रतापचन्दजी गोठी की भागीदारी में "तिलोकचन्द सरूपचन्द" के नाम से कपडे का कारबार चालू कि संवत् १९३९ में आपने अपना निज का कपडे का धंधा खोला, व्यापार के साथ २ सेठ सरूपचन पगारिया ने २ गाँव जमीदारी के भी खरीद किये, सवत् १९७४ में ६० साल की वय में आपका शरीर हुआ। आपके गणेशमलजी, सूरजमलजी, मूलचन्दजी, चांदमलजी तथा ताराचन्दजी नामक ५ पुत्र इन भाइयों में से गणेशमलजी १९७२ में तथा मूलचन्दजी १९८२ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ सूरजमलजी पगारिया—आपका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप सेठ 'शेरसिंह माणक' की दुकान पर पिताजी की मौजूदगी तक मुनीम रहे। बाद आपने अपनी जमीदारी के काम को बढ़ा इस समय आपके यहाँ १० गावों की जमीदारी है, इसके अलावा बेतूल में कपडा तथा मनीहारी काम। हैं। आपके छोटे बधु चांदमलजी का जन्म १९४२ में तथा ताराचन्दजी का जन्म १९४९ में हुआ। गणेशमलजी के पुत्र धरमचन्दजी, सूरजमलजी के पुत्र मोतीलालजी तथा चांदमलजी के पुत्र कन्हैयाला व्यापार में भाग लेते हैं। आप तीनों का जन्म क्रमश सम्वत् १९५४ संवत १९६१ तथा १९६० में हु मूलचन्दजी के पुत्र पुखराजजी, जसराजजी, हंसराजजी और ताराचन्दजी के बसतीलालजी हैं।

भटेवड़ा

सेठ मोतीचन्द निहालचन्द, भटेवडा, बेलूर (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज सेठ मनरूपचंदजी भटेवड़ा अपने मूल निवास स्थान पिपलिया (मार से व्यापार के लिये जालना आये, तथा वहाँ रेजिमेंटल बैङ्किग तथा सराफी व्यापार किया। आपका परि स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाला है। संवत् १९३४ में ६८ साल की वय में आप स्वर्गवासी हु

— ——, मानीचन्दजी, छोगमलजी तथा हजारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। भटेवड़ा जुहारमलजी ——सम्वत् १९५' मे ६४ साल की वय में हुआ। आपके नाम पर आपके भतीजे गुलाबचन्दजी — इस समय इनके पुत्र केवलचन्दजी तथा घेवरचन्दजी वेलूर में व्यापार करते हैं। केवलचंदजी के —— तथा सम्पतराजजी है।

—— मानीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९०० में हुआ था। आपने २६ साल की वय में जालना — दुकान खोली। आप सरल प्रकृति के सज्जन थे। सम्वत् १९३४ में आपका स्वर्गवास — पुत्र सेठ निहालचन्दजी विद्यमान हैं। आप वेलूर के प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। — "मानचन्द निहालचन्द" के नाम से फर्म स्थापित की। इस समय यह फर्म वेलूर में — बेंकिंग तथा सराफी का काम होता है। सेठ छोगमलजी के पुत्र सूरजमलजी व — । इनमें गुलाबचन्दजी, अपने काका सेठ जुहारमलजी के नाम पर दत्तक गये, तथा — पुत्र हीराचन्दजी और वनेचन्दजी वेलूर में अपना २ स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। हीराचन्दजी — तथा वनेचन्दजी के विजयराजजी तथा सम्पतराजजी हैं। सेठ हजारीमलजी भटेवड़ा के — विद्यमान हैं। इनके पुत्र चम्पालालजी हैं।

पूनमिया

सेठ ताराचन्द डाहजी पूनमियां, सादड़ी

— का मूल निवास सादड़ी है। यहाँ से सेठ इंदाजी लगभग ७५ साल पहले सादड़ी से — इन्होंने बम्बई में सराफी लेन देन शुरू किया। इनके डाहजी, तेजमलजी तथा गेंदमलजी — हुए। डाहजी का जन्म सम्वत् १९१९ तथा मृत्युकाल सम्वत् १९७८ में हुआ। ये अपना — ज्वेलरी का काम काज देखते रहे। आप धार्मिक वृत्ति के पुरुष थे। आपके पुत्र केसरीमलजी, — ताराचन्दजी विद्यमान हैं। इनमें केसरीमलजी, तेजमालजी के नाम पर दत्तक गये। इनकी — दोनों सोने की दुकान है। गेंदमलजी के पुत्र रिखबदासजी तथा बालचन्दजी हैं। इनका — " के नाम से मोती बाजार बम्बई में गिन्नी का बड़ा कारबार होता है।

— ताराचन्दजी—आप स्थानकवासी आम्नाय को मानने वाले हैं। आप सेठ नवलाजी दीपाजी — चूड़ियों का इम्पोर्टिंग तथा डीलिंग बिजिनेस करते हैं। आपने देशी चूड़ियों के कारबार — की है। ताराचन्दजी शिक्षित सज्जन हैं। आपने स्थानकवासी ज्ञानवर्द्धक सभा के — सुन्दर मकान बनवाया है। आप अन्य संस्थाओं को भी सहायताएं देते रहते हैं।

ललूंडिया राठोड़

सेठ पृथ्वीराज नवलाजी, ललूंडिया राठोड, सादड़ी

— पूर्वज जाकोड़ा (शिवगंज के पास) में रहते थे। वहाँ इन्होंने एक जैन मन्दिर भी — दौलजी के पुत्र राजाजी तथा पौत्र खाजूजी हुए। जाकोड़ा से मानजी और

उनके पुत्र दीपाजी सादडी आये। दीपाजी के पुत्र नवलाजी का जन्म १८९९ में तथा भागाजी का १ में हुआ। इन दोनों भाइयों का स्वर्गवास सम्वत् १९६१ में हुआ। नवलाजी के कस्तूरचन्दजी, सतो जी, पृथ्वीराजजी तथा दलीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयों ने सम्वत् १९४९ में बम्बई में का व्यापार शुरू किया, तथा इस व्यापार में इतनी उन्नति प्राप्त की, कि आज आप बम्बई में सब से बड़ा के व्यापार करते हैं। आपका आफिस "नवलाजी दीपाजी" के नाम से फोर्ट बम्बई में है, तथा आपके चूड़ी का विदेशों से इम्पोर्ट होता है। सेठ कस्तूरचन्दजी सम्वत् १९५१ में तथा दलीचन्दजी १९७ स्वर्गवासी हुए। इस समय सतोपचन्दजी तथा पृथ्वीराजजी विद्यमान हैं। सतोपचन्दजी के पुत्र पुखर व्यापार में भाग लेते हैं तथा दलीचन्दजी के पुत्र फूलचन्दजी पढ़ते हैं।

सेठ पृथ्वीराजजी—आप सादडी तथा गोडवाड के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। इस समय "दयाचन्द धर्मचन्द" की पेढ़ी व न्यात के नौहरे के मेम्बर हैं। आपके परिवार ने राणकपुरजी में ८ रुपये लगाये। पंच तीर्थी के संघ में १७ हजार रुपये व्यय किये। सादडी में उपासरा बनवाया। न तथा बाँदरा के मन्दिरों में कलश चढ़ाने में मदद दी। नाडलाई मन्दिर में चाँदी का पालना चढ़ाया। तरह के कई धार्मिक कार्यों में आप हिस्सा लेते रहते हैं।

छजलानी

सेठ कोजीराम घीसूलाल छजलानी, टिंडिवरम् (मद्रास)

इस खानदान के मालिकों का मूल-निवासस्थान जेतारण (मारवाड) का है। आप जैन श्वेत समाज में तेरा पंथी आम्नाय को मानने वाले हैं। इस परिवार के श्री घीसूलालजी सबसे पहले सम्वत् १' में टिण्डिवरम् आये और गिरवी के लेन देन की दुकान स्थापित की। घीसूलालजी बड़े साहसी और व्य कुशल पुरुष हैं। आपका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आपके पुत्र बिरदीचन्दजी इस समय दुकान के को संभालते हैं। इस फर्म की ओर से दान धर्म और सार्वजनिक कामों में यथाशक्ति सहायता दी जाती इस समय इस फर्म पर गिरवी और लेन देन का व्यवसाय होता है।

भूरा

सेठ चौथमल चाँदमल भूरा, जबलपूर

इस गौत्र की उत्पत्ति भणसाली गौत्र से हुई है। इस परिवार का मूल निवास देश (बीकानेर) है। वहाँ से सेठ परशुरामजी भूरा अपने पुत्र चौथमलजी तथा करनीदानजी को लेकर सौ वर्ष जबलपुर आये। यहाँ से करणीदानजी शिवनी चले गये, इस समय उनके परिवार वाले शिवनी में "बहादुर लखमीचन्द" के नाम से व्यापार करते हैं। सेठ चौथमलजी भूरा संवत् १९२३ में स्वर्गवासी हु आपके चाँदमलजी, मूलचन्दजी, मिलापचन्दजी तथा चुन्नीलालजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चांद जी ने १९ साल की आयु में अपने पिताजी के साथ सवत् १९२९ में सराफी की दुकान स्थापित साथ ही इस फर्म की स्थाई सम्पत्ति को भी आपने खूब बढ़ाया। स्थानीय जैन मन्दिर की व्यव

१९९० मे आपने लिया। तथा उसकी नई बिल्डिंग व प्रतिष्ठा कार्य्य आपही के समय में इसी तरह आपकी प्रेरणा से सिवनी, बालाघाट, कटंगी तथा सदर में जैन मन्दिरों का आप बड़े प्रभावशाली पुरुष थे। आपके छोटे भाई आपके साथ व्यापार में सहयोग देते १९८९ म आप स्वर्गवासी हुए। आपके नेमीचन्दजी, रिखवदासजी तथा मोतीलालजी इनमें नेमीचन्दजी, मूलचन्दजी के नाम पर दत्तक गये। मिलापचन्दजी के राजमलजी हीरालालजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी स्वर्गवासी होगये।

इस समय इस परिवार मे सेठ राजमलजी, रिखवदासजी, मोतीलालजी, हीरालालजी तथा हैं। सेठ मोतीलालजी शिक्षित तथा वजनदार सज्जन हैं। सन् १९२१ से आप हैं। जबलपुर की हरएक सार्वजनिक संस्थाओं में आप भाग लेते रहते हैं। सेठ पुत्र हुकुमचन्दजी व्यापार में भाग लेते है और रतनचन्दजी सेठ नेमीचन्दजी के नाम हैं, तथा हेमरचन्दजी व प्रेमचन्दजी छोटे है। राजमलजी के पुत्र मगनमलजी एवं हीरालालजी के पुत्र कन्हैयालालजी... हैं। यह परिवार जवलपुर में प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है।

गाँधी

गाँधी महता डाक्टर शिवनाथचंदजी, जोधपुर

ख्यातों से पता चलता है कि जालौर के चौहान वंशीय राजा लाखणसी से भण्डारी की उत्पत्ति हुई। लाखणसीजी के ११ पीढ़ी वाद पोपसीजी हुए जो अपने समय के विख्यात थे। कहा जाता है कि उन्होंने संवत् १३३८ में जालोर के रावल सांवन्तसिंह को व्याधि से आराम किया इससे उक्त रावलजी ने इन्हे "गान्धी" की उपाधि से विभूषित किया। पोपसीजी के १३ पुश्त बाद रामजी हुए जो वड़े वीर और दानी थे। रामजी की पांचवीं पीढ़ी में ... हुए जो बड़े वीर और नीतिज्ञ थे। आप पोकरण के एक युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ते हुए काम आये। इनके स्मारक में पोकरण ठाकुर साहब ने वहाँ देवालय बनवाया है, जहाँ लोग "जात" देते हैं। आपके पौत्रों में आलमचन्दजी बड़े वीर हुए। आप पोकरण ठाकुर सवाईसिंहजी के साथ ... मुकाम पर अमीरखाँ से युद्ध करते हुए धोके से मारे गये। आपके स्मारक में ... बना हुई है। शोभाचन्दजी के कनिष्ट भ्राता रूपचन्दजी मराठों के साथ युद्ध करते काम आये। आपके पश्चात् इसी वंश के रतनचन्दजी और अभयचन्दजी पोकरण ठाकुर ... युद्ध करते हुए काम आये। इस वंश में कई सतियाँ हुई।

डाक्टर शिवनाथचन्दजी इसी प्रतिष्ठित वंश में हैं। संवत् १९४८ में आपका जन्म हुआ। ... में आपके पिता देवराजजी का देहान्त होगया। आपने इन्दौर में स्टेट की ओर से ... पास की। जोधपुर राज्य के देशी आदमियों में आप सबसे पहले डॉक्टर हुए। इस ... सुपरिन्टेण्डेण्ट हैं। आप जोधपुर की ओसवाल यगमेन्स सोसायटी के कई वर्ष ... आप लोकप्रिय और निःस्वार्थ डाक्टर हैं, और सार्वजनिक कार्य्यों में उत्साह से ... आपके पुत्र मेहतापचन्दजी बी० कॉम बड़े उत्साही और देशभक्त युवक हैं।

राजवैद्य हीराचंद रतनचन्द रायगाँधी का खानदान, जोधपुर

रायगाँधी देपालजी के पूर्वज गुजरात में गाँधी (पसारी) का व्यापार तथा वैद्यकी का करते थे। इसलिये ये "रायगाँधी" कहलाये। गुजरात से देपालजी नागोर आये। इनके पौत्र राजजी ख्याति प्राप्त वैद्य थे। संवत् १५२५ में इन्होंने देहली के तत्कालीन लोदी बादशाह को अपने से आराम किया। कहा जाता है कि इनकी प्रार्थना से बादशाह ने शत्रुंजय के यात्रियों पर लगा कर माफ किया। इनकी १० वीं पीढ़ी में केसरीचन्द्रजी प्रतिष्ठित वैद्य हुए। इनको संवत् १८० महाराजा बखतसिंहजी नागोर से जोधपुर लाये, और जागीर के गाँव देकर बसाया, तब से यह खा जोधपुर में "राज्यवैद्य" के नाम से मशहूर हुआ। केशरीसिंहजी के बाद क्रमश बखतमलजी, वर्धम सरूपचन्दजी, पन्नालालजी, तथा मालचन्दजी हुए, उपरोक्त व्यक्तियों को समय २ पर १० गाँव जागी मिले थे। संवत् १८९३ में मालचन्दजी के गुजरने के समय उनके पुत्र इन्द्रचन्दजी किशनचन्दजी तथा मु चन्दजी नाबालिग थे, अत बागी सरदारों ने इनके गाँव दबालिये। इनके सयाने होनेपर दरबार ने की एवज में तनख्वाह करदी। समय २ पर इस खानदान को राज्य की ओर से सिरोपाव भी मिलते गाँधी बखतमलजी के पौत्र गढ़मलजी तथा मालचन्दजी के छोटे भ्राता प्रभूदानजी प्रसिद्ध वैद्य थे। कि चन्दजी तथा मुकुन्दचन्दजी को वैद्यक का अच्छा अनुभव था। आप क्रमश संवत् १९५१ तथा १ में स्वर्गवासी हुए। मुकुन्दचन्दजी के माणकचन्दजी, हीराचन्दजी तथा रतनचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए, संवत् १९७४ में माणकचन्दजी स्वर्गवासी हुए। हीराचन्दजी का जन्म सम्वत् १९२५ में हुआ, इनक चाँदमलजी हैं। रायगाँधी चाँदमलजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ इनको स्टेट की ओर से तनख्वाह मिलती है, आपको वैद्यक का अच्छा ज्ञान है। सनातन धर्म सभा ने आपको "वैद्य भूष पदवी" दी है। आपके पुत्र मानचन्दजी कलकत्ता में वैद्यक तथा डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

रायगाँधी रतनचंदजी का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपको भी स्टेट से जाती तनख्वाह मि है आपके पुत्र वैद्य पदमचन्दजी हैं। डाक्टर परमचंदजी वैद्य का जन्म संवत् १९६२ में हुआ, सन् १९२ आपने इन्दौर से डाक्टरी परीक्षा पास की, इस परीक्षा में आप प्रथम गेट में सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुए। आप इसी साल जोधपुर स्टेट में मेडिकल ऑफीसर मुकर्रर हुए इस समय आप बाड़मेर डिस्पेंसरी में असिस्टेंट सर्जन के पद पर हैं। सन् १९३० में आपने जोधपुर दरबार के साथ देहली में उनके पर फिजिशियन की हैसियत से कार्य्य किया। आप डाक्टरी में अच्छा अनुभव रखते हैं। डिपार्टमेंट से व उ से आपको कई अच्छे सार्टीफिकेट मिले हैं। नागोर की जनता ने आपको मानपत्र तथा केस्केट भेंट किया

सेठ ताराचन्द वख्तावरमल गांधी, हिंगनघाट

इस परिवार के पूर्वज गांधी ताराचन्दजी नागोर से पैदल मार्ग द्वारा लगभग १०० साल हिंगनघाट आये। तथा यहाँ लेनदेन का व्यापार शुरू किया। आपके वख्तावरमलजी, धनराजजी हजारीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। गांधी वख्तावरमलजी समझदार, तथा प्रतिष्ठित पुरुष थे। हिंगनघाट जनता में आप प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपने व्यापार की वृद्धि कर इस दुकान की शाखाएँ ना कामठी, तुमसर, वर्द्धा, भंडारा तथा चांदा आदि स्थानों में खोली। आपका संवत् १९४४ में स्वर्ग

... भीकमचन्दजी तथा हीरालालजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें हीरालालजी, सेठ हजारीमलजी ... गये। इन दोनों बधुओं का व्यापार सवत् १९६३ में अलग २ हुआ। सेठ हजारीमलजी ... में स्वर्गवासी हुए। तथा धनराजजी के कोई संतान नहीं हुई।

... हीरालालजी गांधी—आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ। आप समझदार तथा प्रतिष्ठित ... । आपके यहाँ "हजारीमल हीरालाल" के नाम से लेन देन तथा कृषि का कार्य्य होता है। आपके ... ३१ साल के तथा वच्छराजजी २१ साल के हैं। इसी प्रकार सेठ भीकमचन्दजी के हेम- ... जँवरीमलजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें गाँधी जँवरीमलजी, तथा हेमराजजी के पुत्र ... विद्यमान है। आप दोनों सज्जन भी व्यापार करते हैं। यह परिवार हिंगनघाट के व्यापा- ... में प्रतिष्ठित माना जाता है।

गाड़िया

मेसर्स पीरदान जुहारमल (गाड़िया) एण्ड संस, त्रिचनापल्ली

... परिवार अपने मूल निवास नागोर से फलोदी, जोधपुर, लोहावट आदि स्थानों में होता हुआ ... गाड़िया के समय में मथानियाँ (ओसियाँ के पास) आकर अबाद हुआ। कहा जाता है ... समय तक जोधपुर में दीवानगी के कार्य्य में मदद दी थी। ये अपने समय के समृद्धि ... थे। एकबार जोधपुर दरबार ने बारेट अमरसिंह को कुछ जागीर देना चाही, उस समय उसने ... मथानिया मांगा कि, खम्मा खम्मा कर ठठाणिया, देराजा गाव मथानियाँ। बहु१ साँवाँ घण पाणियाँ ... वाणिया। गडिया परिवार में सेठ राजारामजी गडिया जोधपुर में बहुत नामी साहुकारी ... संवत् १८७२ में मीरखा को चिट्ठा चुकाने के समय महाराजा मानसिंहजी को बहुत बड़ी ... दी थी। तथा आपने शत्रुंजयजी का विशाल संघ भी निकलवाया था।

गडिया ...मुरजी के वंश में आगे चलकर गजाजी हुए। इनके पुत्र देवराजजी तथा पौत्र पीरदान ... तथा जुहारजी थे। सेठ पीरदानजी संवत् १९४३ में सेठ रावलमलजी के पारख के साथ ... गए, और थोड़े समय में इनके यहाँ मुनीमात करके फिर उन्हींकी भागीदारी में दुकान की। ... व्यापार सवत् १९७९ तक करते रहे। इनके ३ वर्ष वाद आपने अपनी स्वतंत्र दुकान तिन्नर ...) में खोली। इधर १५ सालों से सब व्यापार अपने पुत्रों के जिम्मे कर आप देश में ही ... । इधर आपने सवत् १९८९ में "पीरदान जुहारमल बैंक लिमिटेड" की स्थापना की है। आपके ... , धनराजजी, रूपचन्दजी, पृथ्वीराजजी, तथा गणेशमलजी (उर्फ चम्पालालजी) तमाम ... उत्तमता से सचालित करते हैं। श्री घेवरलालजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप ... तथा जीवदया महलो के प्रधान हितचिंतक है। आप जीवदया सस्था के प्रेसिडेंट हैं। ... बैंक के मेनेजिंग डायरेक्टर तथा पाजरापोल के सेक्रेटरी हैं। आपके बैंक में अंग्रेजी ... होता है। इसके अलावा आपके यहाँ ४ दुकानों पर व्याज का काम होता है। ... तथा शिक्षित सज्जन हैं। घेवरचंदजी के पुत्र सिरेमलजी हैं।

रूणवाल

सेठ पन्नालाल शिवराज रूणवाल, बीजापुर

इस परिवार का मूल निवास स्थान खुडी बंडवारा (मेडते के पास) है। आप स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ किशनचन्दजी के चतुर्भुजजी, पन्नालालजी रिधकरणजी तथा इन्द्रभानजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चतुर्भुजजी खुडी ठाकुर के यहाँ कामदारी का काम करते थे। आपका सम्वत् १९६१ में तथा पन्नालालजी का सम्वत १९४४ में स्वर्गवास हुआ। सेठ चतुर्भुजजी के पूनालालजी तथा सुखदेवजी सेठ पन्नालालजी के शिवराजजी, अभयराजजी तथा चुन्नीलालजी और इन्द्रभानजी के कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें पूसालालजी तथा सुखदेवजी स्वर्गवासी हो गये हैं

सेठ पन्नालालजी रूणवाल का परिवार—सेठ पन्नालालजी के बड़े पुत्र शिवराजजी का जन्म सम्वत् १९२४ में हुआ। आप सम्वत् १९४० में बागलकोट आये। तथा सर्विस करने के बाद सम्वत् १९६५ में "प्रेमराज भागीरथ" के नाम से बीजापुर में दुकान की। आपके पुत्र प्रेमराजजी, भागीरथजी, जीतमलजी तथा मूलचन्दजी हैं। जिनमें बडे तीन पुत्र अपनी तीन दुकानों का संचालन करते है। श्री पेमराजजी के पुत्र भंवरूलालजी, हीरालालजी, अजराज, पारसमल तथा दलीचन्द हैं। इसी प्रकार भागीरथजी के पुत्र अमृतलालजी तथा मूलचन्दजी के जेठमलजी हैं। शिवराजजी की प्रधान दुकान पर "शिवराज जीतमल" के नाम से रूई तथा अनाज का बडे प्रमाण में व्यापार होता है। सेठ अभयराजजी का जन्म सम्वत् १९१३ में हुआ आपके पुत्र राजमलजी, सेठ चुन्नीलालजी के पुत्रों के साथ भागीदारी में व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजी रूणवाल—आप इस परिवार बड़े समझदार तथा प्रतिष्ठित महानुभाव हैं आप सम्वत् १९४४ में केवल ९ साल की वय में अपने बडे भ्राता के साथ जलगाँव आये। तथा वहाँ से आप बागलकोट आये। यहाँ आपने फूलचन्दजी भय्या की दुकान पर सर्विस की। तथा पीछे इस दुकान में भागीदार हो गये। सम्वत् १९६४ में आपने "चुन्नीलाल उत्तमचद" के नाम से रूई तथा आढ़त का व्यापार चालू किया। इस समय आपकी फर्म पर यूरोपियन तथा जापानी आफिसों की बहुत खरीदी रहा करती है। आप बीजापुर की जनता में बड़े लोकप्रिय व आदरणीय व्यक्ति हैं। सम्वत् १९६१ से लगातार १६ वर्षों तक आप जनता की ओर से म्यु० मेम्बर चुने गये। जब आपने म्यु० के लिये खड़ा होना छोड़ दिया, तब सरकार ने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से सम्मानित किया। और इस सम्मान पर आप अभीतक कार्य्य करते हैं। इसी तरह आप बीजापुर मर्चेंट एसोशिएसन के प्रेसिडेंट हैं। कहने का तात्पर्य यह कि आप बीजापुर के वजनदार व्यक्ति है। आपके उत्तमचन्दजी, दुर्गालालजी, देवीलालजी केशरीमलजी, पुखराजजी, माणकचन्दजी, मोतीलालजी और साकलचन्दजी नामक ८ पुत्र हैं। इनमें बडे ३ तीन पुत्र आपकी तीन दुकानों के व्यापार में सहयोग लेते है। उत्तमचन्दजी भी म्यु० मेम्बर रह चुके है।

इसी तरह इस परिवार में सेठ कुन्दनमलजी तथा उनके पुत्र भेरूलालजी और ताराचन्दजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सेठ पूसालालजी के ६ पुत्र हैं, जिनमें छोटमलजी तथा बरदीचन्दजी बागलकोट में सेठ बच्छराज कन्हैयालाल सुराणा के साथ तथा शेष ४ बीजापुर में व्यापार करते है।

सायाल

सेठ फतेमलजी सीयाल, ऊटकमंड

यह परिवार पाली निवासी मन्दिर आम्नाय का मानने वाला है। पाली से सेठ फतेमलजी ... सम्वत् १९६० में आकर नीलगिरी के वेलिंगटन नामक स्थान में व्याज का धंधा शुरू किया। ... तथा विद्यमान है। आपने तथा पुखराजजी ने इस दुकान के कारबार को ज्यादा ... यह परिवार पाली तथा नीलगिरी के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके ... फतमल के नाम से वेलिंगटन में तथा रिखबदास फतेमल के नाम से ऊटकमंड में भागीदारी ... व्यापार होता है। आपके नाम पर धरमचन्दजी सीयाल दत्तक आये हैं। आप १२ साल के हैं।

राय सोनी

सेठ सिरेमल पूनमचन्द मूथा (राय सोनी) वेलगांव

यह परिवार भाँवरी (पाली) का निवासी है। वहाँ मूथा डायाजी रहते थे। इनके माणकचन्दजी ... नामक २ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, भाँवरी ठिकाने के कामदार थे। इनके पुत्र पूनम-... जसराजजी हुए। मूथा पूनमचन्दजी के पुत्र सिरेमलजी २२ साल की आयु में सम्वत् १९५५ ... आए। तथा "दानाजी ऊमाजी" की भागीदारी में कपडे का व्यापार शुरू किया। इसके बाद आप ... (धारवार डिस्ट्रिक्ट) में लकड़ी का कंट्राक्टिंग विजिनेस करते रहे। इसमें सफलता प्राप्त कर सम्वत् ... कपड़ का व्यापार शुरू किया। तथा व्यापार में उन्नति प्राप्त कर सम्मान को बढ़ाया। ... १९८१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आपके चाचा मूथा जसराजजी के पौत्र जीवराजजी ... । इनका भी १७ साल की वय में सम्वत् १९८४ में शरीरान्त हो गया। अत इनके नाम पर ... प्रपौत्र जीवमचन्दजी दत्तक लिये गये। इनका जन्म सम्वत् १९७२ में हुआ। इस दुकान पर ... मोहर्रा माणिकराजजी १५ सालों से मुनीम हैं। आप समझदार व्यक्ति है। यह दुकान ... व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। यहाँ कपडे का थोक व्यापार होता है।

कातरेला

सेठ धोंकलचन्द चुन्नीलाल कातरेला, बेंगलोर

इस खानदान के मूल पुरुषों का खास निवास स्थान बगडी (मारवाड) है। आप श्वेताम्बर ... सम्प्रदाय को माननेवाले है। इस खानदान में सेठ मनरूपचन्दजी अपने जीवन भर ... । इनके पुत्र धोंकलचन्दजी का जन्म सवत् १९०१ में हुआ। आप भी बगडी में ही रहे। ... और सज्जन पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सवत १९९८ में हुआ। आपके पुत्र धनराजजी

रूणवाल

सेठ पन्नालाल शिवराज रूणवाल, बीजापुर

इस परिवार का मूल निवास स्थान खुडी बंडवारा (मेडते के पास) है। आप स्थानकवा आम्नाय के माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्वज सेठ किशनचन्दजी के चतुर्भुजजी, पन्नालाल रिधकरणजी तथा इन्द्रभानजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ चतुर्भुजजी खुडी ठाकुर के यहाँ कामदार काम करते थे। आपका सम्वत् १९६१ में तथा पन्नालालजी का सम्वत १९४४ में स्वर्गवास हुआ। चतुर्भुजजी के पूनालालजी तथा सुखदेवजी सेठ पन्नालालजी के शिवराजजी, अभयराजजी तथा चुन्नीलाल और इन्द्रभानजी के कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें पूसालालजी तथा सुखदेवजी स्वर्गवासी हो गये हैं

सेठ पन्नालालजी रूणवाल का परिवार—सेठ पन्नालालजी के बड़े पुत्र शिवराजजी का जन्म सम्‌ १९२४ में हुआ। आप सम्वत् १९४० में बागलकोट आये। तथा सर्विस करने के बाद सम्वत् १९६५ 'प्रेमराज भागीरथ" के नाम से बीजापुर में दुकान की। आपके पुत्र प्रेमराजजी, भागीरथजी, जीतमलजी त मूलचन्दजी हैं। जिनमें बड़े तीन पुत्र अपनी तीन दुकानों का संचालन करते है। श्री पेमराजजी के भंवरूलालजी, हीरालालजी, अजराज, पारसमल तथा दलीचन्द है। इसी प्रकार भागीरथजी के पुत्र अम लालजी तथा मूलचन्दजी के जेठमलजी हैं। शिवराजजी की प्रधान दुकान पर "शिवराज जीतमल" के ना से रूई तथा अनाज का बड़े प्रमाण में व्यापार होता है। सेठ अभयराजजी का जन्म सम्वत् १९१३ में हुआ आपके पुत्र राजमलजी, सेठ चुन्नीलालजी के पुत्रों के साथ भागीदारी में व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजी रूणवाल—आप इस परिवार बड़े समझदार तथा प्रतिष्ठित महानुभाव हैं आप सम्वत् १९४४ में केवल ९ साल की वय में अपने बडे भ्राता के साथ जलगाँव आये। तथा वहाँ आप बागलकोट आये। यहाँ आपने फूलचन्दजी भय्या की दुकान पर सर्विस की। तथा पीछे इस दुकान भागीदार हो गये। सम्वत् १९६४ में आपने "चुन्नीलाल उत्तमचद" के नाम से रूई तथा आढ़त व्यापार चालू किया। इस समय आपकी फर्म पर यूरोपियन तथा जापानी आफिसों की बहुत खरीदी रा करती है। आप बीजापुर की जनता में बड़े लोकप्रिय व आदरणीय व्यक्ति हैं। सम्वत् १९६१ से लगात १६ वर्षों तक आप जनता की ओर से म्यु० मेम्बर चुने गये। जब आपने म्यु० के लिये खड़ा होना छो दिया, तब सरकार ने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से सम्मानित किया। और इस सम्मान प आप अभीतक कार्य्य करते हैं। इसी तरह आप बीजापुर मर्चेंट एसोशिएसन के प्रेसिडेंट हैं। कहने व तात्पर्य यह कि आप बीजापुर के वजनदार व्यक्ति हैं। आपके उत्तमचन्दजी, दुर्गालालजी, देवीलालज केशरीमलजी, पुखराजजी, माणकचन्दजी, मोतीलालजी और साकलचन्दजी नामक ८ पुत्र हैं। इनमें बड़े तीन पुत्र आपकी तीन दुकानों के व्यापार में सहयोग लेते है। उत्तमचन्दजी भी म्यु० मेम्बर रह चुके है।

इसी तरह इस परिवार में सेठ कुन्दनमलजी तथा उनके पुत्र भेरूलालजी और ताराचन्दज अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। सेठ पुसालालजी के ६ पुत्र हैं, जिनमें छोटमलजी तथा बरदीचन्दज बागलकोट में सेठ बच्छराज कन्हैयालाल सुराणा के साथ तथा शेष ४ बीजापुर में व्यापार करते है।

सीयाल

सेठ फतेमलजी सीयाल, ऊटकमंड

यह परिवार पाली निवासी मन्दिर आम्नाय का मानने वाला है। पाली से सेठ फतेमलजी [illegible] सम्वत् १९६० में आकर नीलगिरी के वेलिंगटन नामक स्थान में व्याज का धधा शुरू किया। [illegible] व्यक्ति हैं तथा विद्यमान हैं। आपने तथा पुखराजजी ने इस दुकान के कारवार को ज्यादा [illegible]। इनका परिवार पाली तथा नीलगिरी के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके [illegible] फतमल के नाम से वेलिंगटन में तथा रिखवदास फतेमल के नाम से ऊटकमंड में भागीदारी [illegible] का व्यापार होता है। आपके नाम पर धरमचन्दजी सीयाल दत्तक आये हैं। आप १२ साल के हैं।

राय सोनी

सेठ सिरेमल पूनमचन्द मूथा (राय सोनी) वेलगांव

यह परिवार भाँवरी (पाली) का निवासी है। वहाँ मूथा डायाजी रहते थे। इनके माणकचन्दजी [illegible] नामक २ पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, भाँवरी ठिकाने के कामदार थे। इनके पुत्र पूनम-[illegible] तथा जसराजजी हुए। मूथा पूनमचन्दजी के पुत्र सिरेमलजी २२ साल की आयु में सम्वत् १९४५ [illegible] आये। तथा "दानाजी ऊमाजी" की भागीदारी में कपडे का व्यापार शुरू किया। इसके वाद आप [illegible] (कारवार डिस्ट्रिक्ट) में लकडी का कंट्राक्टिंग बिजिनेस करते रहे। इसमें सफलता प्राप्त कर सम्वत् [illegible] में आपने कपडे का व्यापार शुरू किया। तथा व्यापार में उन्नति प्राप्त कर सम्मान को बढ़ाया। [illegible] १९८० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर आपके चाचा मूथा जसराजजी के पौत्र जीवराजजी [illegible]। इनका भी १७ साल की वय में सम्वत् १९८४ में शरीरान्त हो गया। अत. इनके नाम पर [illegible] के प्रपौत्र भीकमचन्दजी दत्तक लिये गये। इनका जन्म सम्वत् १९७२ में हुआ। इस दुकान पर [illegible] निवासी भटारी माणिकराजजी १५ सालों से मुनीम हैं। आप समझदार व्यक्ति हैं। यह दुकान [illegible] व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। यहाँ कपडे का थोक व्यापार होता है।

कातरेला

सेठ धौंकलचन्द चुन्नीलाल कातरेला, बंगलोर

इस खानदान के मूल पुरुषों का खास निवास स्थान वगडी (मारवाड) है। आप श्वेताम्बर [illegible] वासी सम्प्रदाय को माननेवाले है। इस खानदान में सेठ मनरूपचन्दजी अपने जीवन भर [illegible]। आपके पुत्र धौंकलचन्दजी का जन्म सवत् १९०१ में हुआ। आप भी वगडी में ही रहे। [illegible] और सज्जन पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सवत् १९९८ में हुआ। आपके पुत्र धनराजजी

चुन्नीलालजी और सुखराजजी विद्यमान हैं। इनमें से धनराजजी ने अपनी फर्म अमरावती में "धोंकलचन्द धनराज" के नाम से खोली। सेठ चुन्नीलालजी ने संवत् १९५६ में अपना फर्म बंगलोर में "धोंकलचन्द चुन्नीलाल के नाम से कालीत्रप बाजार में खोली। तथा सेठ सुखराजजी ने संवत् १९७७ में अपनी दुकान मद्रास में खोली। आप तीनों भाई बड़े धार्मिक और व्यापार दक्ष पुरुष हैं। आप लोगों का जन्म क्रमश संवत् १९३१ संवत् १९३५ तथा १९३८ में हुआ। सेठ धनराजजी के पुत्र बन्शीलालजी हैं। सेठ सुखराजजी के पुत्र अमोलकचन्दजी और अमोलकचन्दजी के पुत्र भँवरीलालजी हैं। भँवरीलालजी को सेठ चुन्नीलालजी ने दत्तक लिया है।

मरलेचा

सेठ धूलचन्द दीपचन्द मरलेचा, चिंगनपेठ (मद्रास)

इस परिवार के पूर्वज सेठ बोरीदासजी मरलेचा कण्टालिया रहते थे। सम्वत् १९२३ में वहां के जागीदार से इनकी अनबन हो गई, और जिससे इनका घर लुटवा दिया गया। इससे आप कण्टालिया से मेलावास (सोजत) चले आये। तथा ४ साल बाद वहाँ स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र धूलचन्द व्यवसाय के लिये जालना आये, यहाँ थोड़े समय रह कर आप मारवाड गये, तथा वहाँ सम्वत् १९७६ स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र दीपचन्दजी का जन्म सम्वत् १९५६ में हुआ। दीपचन्दजी मरलेचा मारवाड़ से सम्वत् १९६६में अहमदनगर और उसके डेढ़ बरस बाद मद्रास आये। और वहाँ सर्विस की। सम्वत् १९७६ में आपने बगडी निवासी सेठ धनराजजी कातरेला की भागीदारी में चिंगनपेठ (मद्रास) में व्याज का धंधा "धनराज दीपचन्द" के नाम से शुरू किया आपके पुत्र पारसमलजी तथा चम्पालालजी हैं। आप स्थानकवासी आम्नाय के सज्जन हैं। श्री धनराजजी कातरेला के पुत्र वंशीलालजी इस फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। आप दोनों युवक सज्जन व्यक्ति हैं।

मडेचा

मेसर्स सागरमल जवाहरमल मडेचा,

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान सोजत (जोधपुर-स्टेट) का है। आप श्वे० जैन समाज के तेरह पंथी आम्नाय को मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ जमनालालजी मारवाड़ से जालना आये और यहाँ पर आकर लोहे और किराने की दुकान खोली। आपका स्वर्गवास हुए करीब ३ वर्ष हो गये। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई सेठ सागरमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। सागरमलजी सं० १९७० में स्वर्गवासी हुए। आपके चार पुत्र हुए। इनमें जवानमलजी, कुन्दनमलजी तथा समरथमलजी छोटी २ उमर में गुजर गये, तथा इस समय फर्म के मालिक आपके चतुर्थ पुत्र केशरीमलजी हैं। आपकी ओर से १००००) दस हजार की लागत से एक बङ्गला सामायिक तथा प्रति क्रमण के लिये दिया गया। आपके पुत्र चम्पालालजी तथा मदनलालजी बालक हैं।

बागमार

सेठ जगन्नाथ नथमल बागमार, बागलकोट

इस परिवार का मूल निवास कूणसरा (कुचेरा के पास) जोधपुर स्टेट है। इस परिवार के [illegible] बागमार के पुत्र सेठ थानमलजी बागमार संवत् १९३२ में बागलकोट आये, तथा, [illegible] सूत का व्यापार शुरू किया। आप संवत् १९७८ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र [illegible] बागमार का जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आपने तथा आपके पिताजी ने [illegible] व्यापार तथा सम्मान को बढ़ाया। आप कपड़ा एसोशिएसन के अध्यक्ष हैं। बागलकोट [illegible] समाज में आपकी दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती है। सेठ जगन्नाथजी के पुत्र नथमलजी का [illegible] १९[illegible] में हुआ। आप फर्म के व्यापार को तत्परता से सम्हालते हैं। आपके पुत्र हेमराजजी, [illegible], [illegible]मराजजी, तथा केवलचन्दजी हैं। आपके यहाँ बागलकोट में सूती कपड़े का व्यापार होता है।

कुचेरिया

सेठ खींवराज अभयराज कुचेरिया, धूलिया

यह परिवार बोरावड़ (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। देश से सेठ गोपालजी कुचेरिया संवत् [illegible] व्यापार के लिये धूलिया आये। आप संवत् १९५० में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र अभयराजजी [illegible] की उन्नति की। आप भी संवत् १९५८ में स्वर्गवासी हुए। आपके खींवराजजी तथा [illegible] नामक २ पुत्र हुए, इनमें खींवराजजी विद्यमान हैं। कुचेरिया खींवराजजी का जन्म संवत् [illegible] हुआ। आपने १९६० में रुई अनाज और किराने की दुकान की। तथा इस व्यापार में अच्छी [illegible] प्रतिष्ठा प्राप्त की। आप स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले हैं, तथा धार्मिक कामों [illegible] रहते हैं आपके पुत्र नेमीचन्दजी तथा वरदीचन्दजी व्यापार में सहयोग लेते हैं।

हड़िया

सेठ दलीचंद मूलचंद हड़िया, बलारी

यह परिवार सीवाणा (मारवाड़) का निवासी है। वहाँ से सेठ दलीचन्दजी अपने भ्राता झूठाजी [illegible] संवत् १९२० में बलारी आये। तथा मोती की फेरी लगाकर दस पन्द्रह हजार रुपयों [illegible] की, और संवत् १९४४ में "दलीचद झूठाजी" के नाम से कपड़े का कारबार शुरू [illegible] बधु क्रमशः संवत् १९६५ तथा १९६० में स्वर्गवासी हुए। आप दोनों बन्धुओं [illegible] ३ लाख रुपयों की सम्पत्ति इस व्यापार में कमाई। सेठ दलीचन्दजी के रघुनाथमलजी, [illegible] आसूरामजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ रघुनाथमलजी, १९७७ में गुजरे। इनके बाद [illegible] के नाम से व्यापार कर रही है। इन तीनों भाइयों के नाम पर श्री छोगालालजी दत्तक

हैं। आपके पुत्र सम्पतराजजी हैं। सीवाणची में यह परिवार वडा नामी माना जाता है। स्थानकवासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। इस फर्म मे सीवाणा निवासी कई सज्जनों के हैं। इसी तरह अन्य स्थानों के भी भागीदार है।

धोका

सेठ बहादुरमल सूरजमल, धोका यादगिरी (निजाम)

इस कुटुम्ब का मूल निवास स्थान साथीण (पीपाड के पास) है। आप श्वे० जैन स के स्थानक वासी आम्नाय के मानने वाले सज्जन हैं। सेठ जीतमलजी के पुत्र बालचन्दजी धोका दे सवत् १९४१ में यादगिरी आये तथा आपने कपडे का काम काज शुरू किया। आपका सवत् १९५ स्वर्गवास हुआ। आपके नवलमलजी, बहादुरमलजी तथा सूरज्मलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ नवलम धोका के हाथों से इस दुकान के रोजगार और इज्जत को बहुत तरक्की मिली। आपका स्वर्गवास र १९८५ में तथा बहादुरमलजी संवत् १९६१ में हुआ। इस समय इस परिवार में सेठ सूरजमलजी नवलमलजी के दत्तक पुत्र हीरालालजी, बहादुरमलजी के दत्तक पुत्र किशनलालजी तथा सूरजमलजी के द पुत्र लालचन्दजी मौजूद हैं। सेठ सूरजमलजी का जन्म सवत् १९३४ में हुआ। आप ही इस समय परिवार में बड़े हैं। तथा दान धर्म के कामों की ओर आपकी अच्छी रुचि है। आपकी दुकान यादगिरि मातवर दुकानों में है। आपके यहाँ "बहादुरमल सूरजमल" के नाम से आढत सराफी लेन-देन का काम होता है। हीरालालजी के पुत्र पूरनमलजी तथा मदनलालजी हैं।

परिशिष्ट ❀

सेठ हरचन्दरायजी सुराणा का खानदान, चुरू

इस खानदान का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड) का था। वहाँ से इस परिवार पूर्व पुरुष सेठ सुखमलजी चूरू आकर बस गये। तभी से आपके परिवार के सज्जन, चूरू में ही नि कर रहे हैं। आपके बालचन्दजी, चौथमलजी तथा हरचन्दरायजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें खानदान सेठ हरचन्दरायजी से सम्बन्ध रखता है।

सेठ हरचन्दरायजी—आप बड़े सीधे सादे, मिलनसार एवं धार्मिक वृत्ति के महानुभाव थे। अ देश में ही रह कर साधारण व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास होगया है। आपके उगरचन्द रतीरामजी मुन्नालालजी एवं शोभाचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

❀ जिन खानदानों का परिचय भूल से छपना रह गया, या जिनका परिचय पुस्तक छपने के पश्चात हुआ, उन परिवारों का परिचय "परिशिष्ट" में दिया जा रहा है।

स्व० सेठ गुन्नालालजी सुराना, चूरू.

सेठ तिलोकचंदजी सुराना, चूरू.

कु० हनुतमलजी सुराना, चूरू

कुँ० हिम्मतमलजी सुराना, चूरू.

-- उगरचन्दजी का परिवार—सेठ उगरचन्दजी सीधे सादे और धार्मिक प्रकृति के पुरुष थे। -- व्यापार के निमित्त कलकत्ता आये थे। मगर प्राय आप देश में ही रहा करते थे। आपका -- गया है। आपने रतीरामजी के पुत्र धनराजजी को अपने नाम पर दत्तक लिया। सेठ धन- -- साधारण स्थिति में व्यापार करते रहे। आपका भी स्वर्गवास होगया है। आपके स्वर्गवास -- आपकी धर्मपत्नी सिरेकुँवरजी तथा आपके पुत्र श्री सोहनलालजी ने जैन धर्म के तेरापन्थी -- दीक्षा ग्रहण करली। श्रीमती सिरेकुँवरजी का स्वर्गवास होगया है। श्री सोहनलालजी इस -- में संस्कृत के विद्वान तथा शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रखते हैं।

-- रतीरामजी का परिवार—आप भी देश से कलकत्ता व्यापार निमित्त आये थे। आपने सर्व -- का काम प्रारंभ किया था। कुछ समय पश्चात् आप अपने भाइयों से अलग होकर अपना -- व्यापार करने लगे थे। तभी से आपके परिवार के सज्जन अलग व्यवसाय करते है। आपके --, धनराजजी, खूबचन्दजी तथा हजारीमलजी नामक ४ पुत्र हुए। पहले पहल आपने मेसर्स -- हजारीमल के नाम से धोती जोड़ों का काम शुरू किया। इस फर्म का व्यवसाय सं० १९६० -- तक में चलता रहा। तदनन्तर आप सब लोग अलग २ व्यवसाय करने लग गये। इस समय -- देश में ही निवास करते हैं। आपके चम्पालालजी, प्रेमचन्दजी, नेमचन्दजी तथा भँवर- -- चार पुत्र हैं। सेठ धनराजजी सेठ ऊगरचन्दजी के नाम पर दत्तक चले गये। सेठ खूब- -- स्वर्गवास होगया है। आपके सुमेरमलजी नामक एक पुत्र हैं। आप इस समय अपने -- हजारीमलजी के साथ काम करते हैं। सेठ हजारीमलजी बड़े योग्य, मिलनसार तथा धार्मिक -- पुरुष हैं। आप आज कल मेसर्स हजारीमल माणकचन्द के नाम से सूता पट्टी में धोती जोड़ों -- करते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी लुक्सलेन में एक छातों के व्यवसाय की फर्म तथा छातों -- भी है। आपके पुत्र बा० माणकचन्दजी इस समय पढ़ रहे हैं।

-- मन्नालालजी का परिवार—इस परिवार में सेठ मुन्नालालजी बड़े नामांकित व्यक्ति हुए। -- उन्नति का सारा श्रेय आप को ही है। आप सबसे पहले संवत् १९२७ में देश से व्यापार -- कलकत्ता आये और दलाली का काम प्रारंभ किया। आप बड़े ही व्यापार कुशल, होनहार तथा -- सज्जन थे। आपने अपनी व्यवहार कुशलता, व्यापार चातुरी तथा होशियारी से दलाली में अच्छी -- की। आप बड़े परिश्रमी तथा अग्रसोची सज्जन थे। दलाली में धनोपार्जन कर आपने -- व्यापार के हेतु अपने छोटे भ्राता शोभाचन्दजी के साझे में 'मन्नालाल शोभाचन्द सुराणा' के -- १९४० में स्वतन्त्र फर्म स्थापित की और इस पर विलायत से धोती जोड़ों का कारवार चालू -- व्यवसाय में आपको बहुत काफी सफलता प्राप्त हुई। आपके व्यवसाय को ज्यों २ -- गई त्यों त्यों उसे बढाते गये और उसमें लाखों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित की। आप -- विलायत से धोती जोड़ों का डायरेक्ट इम्पोर्ट होता था। आप बड़े बुद्धिमान तथा अध्यवसायी -- आप वृद्धावस्था में चुरू में ही रहते रहे। आपको साधु सेवा की भी बड़ी लगन थी। -- जीवन साधु सेवा में ही व्यतीत हुआ। अभी आपका सं० १९९१ में स्वर्गवास हुआ है। आप

का कलकत्ता व चुरू की ओसवाल समाज में अच्छा सम्मान था। आप चुरु पिंजरापोल के सभापति रह चुके थे। आपके विचार बडे सुधरे हुए थे। आपने अपनी मृत्यु के समय ५००००) का एक दान निकाला है जिसका एक ट्रस्ट भी कायम कर गये हैं। इस दान की रकम का उपयोग विधवाओं सहायता पहुँचाने तथा जात्योन्नति के कार्य्यों मे किया जायगा। इस दान के अतिरिक्त आपने चुरु कलकत्ता की कई संस्थाओं को बहुत द्रव्य दान दिया है। आपके कोई पुत्र न होने से सेठ शोभाचं के पौत्र (सेठ तिलोकचन्दजी के पुत्र) बाबू हनुतमलजी आपके नाम पर दत्तक आये हैं। आप मिलनसार एवं उत्साही नवयुवक हैं। आप का इस समय मेसर्स "हरचन्दराय मुन्नालाल" और "मुन्न हनुतमल" के नाम से बैङ्किंग तथा किराया का स्वतन्त्र काम होता है। आप ओसवाल तेरापन्थी वि के सेक्रेटरी रह चुके हैं। वर्तमान में आप "ओसवाल नवयुवक समित" की ओर से व्यायामशाल खास कार्य्यकर्त्ता हैं।

सेठ शोभाचन्दजी का परिवार—सेठ शोभाचन्दजी भी मिलनसार, समझदार तथा व्य कुशल सज्जन थे। आप अपने भाई के साथ व्यापारिक कामों से बडी कुशलता और तत्परता के सहयोग प्रदान करते रहे। आपका धार्मिक कार्य्यों की ओर भी अच्छा लक्ष्य था। मगर कम में ही आपका स्वर्गवास होगया। आपके स्वर्गवास के पश्चात् आपकी धर्मपत्नी श्रीमती नौनाज तेरापन्थी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण करली। आप इस समय विद्यमान हैं। आपके पुत्र तिलोकचन्दज

सेठ तिलोकचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप प्रारंभ से ही व्यापार बुद्धिमान तथा समझदार सज्जन हैं। आप इस समय कलकत्ता व थली प्रांत की ओसवाल समाज प्रमुख कार्य्य कर्त्ताओं में से एक हैं। आप मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्स, मारवाडी एसोसिएशन, श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी विद्यालय, विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय व अस्प मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, मारवाडी ट्रेड एसोसिएशन, चुरू पींजरापोल, ओसवाल सभा, ओस नवयुवक समिति आदि कई संस्थाओं के सेक्रेटरी, उपसभापति व सभापति आदि पदों पर कई काम कर चुके हैं। प्राय: ओसवाल समाज की सभी सार्वजनिक सभाओं में आप पूर्ण रूप से सहायता तथा उसमें प्रमुख भाग लेते हैं। बिहार रिलीफ फण्ड में आपने आर्थिक सहायता पहुँचा कर बहुत ओसवाल नवयुवकों को सेवा कार्य्य के लिये बिहार भेजने में बहुत कोशिश की थी। इसी प्रकार की सार्वजनिक सेवाओं में आप भाग लेते रहते हैं। आपके हनुतमलजी, हिम्मतमलजी, बच्छराजजी तथा राजजी नामक चार पुत्र हैं। इनमें बाबू हनुतमलजी, सेठ मुन्नालालजी के नाम पर दत्तक गये हैं। सब भाई मिलनसार सज्जन हैं। बाबू हिम्मतमलजी एवं बच्छराजजी व्यापार में भाग लेते हैं हंसराजजी पढते हैं। आपका इस समय कलकत्ता में 'हरचन्दराय शोभाचन्द' 'सुराना ब्रदर्स,' 'तिलोक हिम्मतमल' के नामों से जमीदारी, बैङ्किंग, जूट बेलिंग व शिपिंग का काम होता है तथा जैपुरहाट (बोग में आपका एक राइस मिल चल रहा है। यह फर्म कलकत्ते की ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित समझी है। इस फर्म की यहां पर बड़ी २ इमारतें बनी हुई हैं।

कुं० बच्छराजजी सुराना, चूरू

स्व० सेठ भैरोदानजी सुराना, पड़िहारा

कुँ० हंसराजजी सुराना, चूरू

कुं० सुमेरमलजी बोथरा (रामलाल नथमल) सरदार

(परिचय परिशिष्ट मे)

सेठ रतनचंद जवरीमल सुराना, पड़िहारा

इस खानदान के लोगों का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड़) का था मगर बहुत वर्षों से ... सेठ मलूकचन्दजी पड़िहारा में आकर बस गये थे। तभी से आपके वंशज वहीं पर ... रहे हैं। आप खेती वगैरह का काम करते थे। आपके पुत्र रतनचन्दजी सबसे पहले देश से ... और माहीगंज में अपनी फर्म स्थापित की। आप बड़े सज्जन तथा कुशल व्यापारी थे। ... हरकचन्दजी तथा भेरोंदानजी नामक दो पुत्र हुए।

... दोनों भाई भी देश से व्यापार निमित्त कलकत्ता आये और सबसे प्रथम सदाराम पूरनचंद ... फर्म पर सर्विस की। इसके पश्चात् आपने सरदार शहर निवासी सेठ चुन्नीलाल ... में मेसर्स चुन्नीलाल भेरोंदान के नाम से फर्म खोली। इस फर्म को कुष्टे के व्यवसाय में ... रहा। संवत् १९७८ तक इस फर्म पर आपका साझा रहा। तदनन्तर आप लोगों का पार्ट अलग ... गया। जिस समय उक्त फर्म साझे में चल रही थी उस समय इस खानदान की सं० १९८१ में ... के नाम से कलकत्ता में एक स्वतन्त्र फर्म खोली गई थी। वर्त्तमान में आप लोग इसी ... व्यापार करते है। सेठ भेरोंदानजी बड़े नामी, मिलनसार तथा प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपका ... १९७७ में स्वर्गवास हुआ। सेठ हरकचन्दजी विद्यमान हैं। आपके धनराजजी नामक एक पुत्र हैं। ... भेरोंदानजी के भँवरलालजी, जवरीलालजी तथा पन्नालालजी नामक तीन पुत्र हैं। इनमें से ... प्रकार व्यापार सचालन करते हैं। तीसरे अभी पढ़ रहे हैं। आप लोग जैन तेरापन्थी ... मानने वाले सज्जन हैं। इस खानदान की कलकत्ता, आलमनगर (रंगपुर), रहिया, शिव ... बाजार आदि स्थानों पर फर्में हैं जिन पर जूट का काम होता है। पड़िहारे में यह खानदान ... माना जाता है।

सेठ वच्छराज कन्हैयालाल सुराणा, बागलकोट

यह परिवार पी (मारवाड़) का निवासी स्थानकवासी जैन समाज का मानने वाला है। इस ... सेठ नथमलजी सुराणा लगभग संवत् १९३० में स्वर्गवासी हुए।

... वच्छराजजी सुराणा—सेठ नथमलजी के पुत्र वच्छराजजी सुराणा का जन्म संवत् १९२९ में ... का वय में आप बागलकोट आये, तथा यहाँ सर्विस की। संवत् १९५५ में आपने ... का व्यापार आरम्भ किया। एवम् १९७० में आपने अपनी स्वतन्त्र दुकान की। ... व्यापार और सम्मान की उन्नति हुई। इस समय आप बागलकोट के ५ सालों से आनरेरी ... सालों से म्युनिसिपल कौंसिलर हैं तथा वहाँ के ओसवाल समाज में नामांकित व्यक्ति हैं। ... ओर आपकी अच्छी रुचि है। आपके पुत्र कन्हैयालालजी का जन्म सम्वत् १९७० में ... युवक हैं, तथा व्यापार में भाग लेते हैं। आपके यहाँ बागलकोट तथा गुलेजगुड में ... " के नाम से रेशमी सूत, खण तथा रेशमी वस्त्रों का व्यापार होता है। गुलेज गुड में ... सालों से है। इसी तरह बागलकोट और बीजापुर में "कन्हैयालाल सुराणा" के नाम ... का व्यापार होता है। इन सब स्थानों पर आपकी दुकान प्रतिष्ठा सम्पन्न मानी जाती है।

सेठ महासिंह राय मेघराज बहादुर (चोपड़ा कोठारी) का खानदान, मुर्शिदाब

इस परिवार के पूर्व पुरुषों ने जोधपुर और जेसलमेर राज्य मे अच्छे २ काम कर दि ऐसा कहा जाता है कि, ये लोग वहाँ के दीवानगी के पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। इन्हीं की किसी कारणवश गैर सर नामक स्थान पर आकर रहने लगे। कुछ वर्षों पश्चात् कुछ लोग तो बीका गये एवम् सेठ रतनचन्दजी, महासिंहजी और आसकरनजी तीनो बंधु मुर्शिदाबाद आकर बसे। यहां आप लोगों ने अपनी प्रतिभा के बल पर सम्वत् १८१८ में ग्वालपाडा मे अपनी फर्म स्थापित की। सफलता मिलने पर क्रमश गोहाटी और तेजपुर में भी अपनी शाखाएँ स्थापित की। उस समय इस ' बैंकिंग, रबर और चायबागान में रसद सप्लाय का काम होता था। सेठ महासिंहजी के पुत्र मेघराजज

राय मेघराजजी बहादुर—आपके समय में इस फर्म की बहुत तरक्की हुई और बीसियों ,थ इसकी शाखाएँ स्थापित की गई। आप बडे व्यापार चतुर पुरुष थे। भारत सरकार ने आपके व प्रसन्न होकर सन् १८६७ में आपको "राय बहादुर" के सम्मान से सम्मानित किया। आपका सन् १० स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र बाबू जालिमचन्दजी और प्रसन्नचन्दजी—सन् १९०७ म अलग २ हं

सेठ जालिमचन्दजी का परिवार—सेठ जालिमचन्दजी भी बडे धार्मिक और व्यवसाय कुशल थे। आपके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम क्रमश बा० धनपतसिंहजी, लक्ष्मीपतसिंहजी, खडगसिंहजी, बन्तसिंहजी और दिलीपसिंहजी हैं। आप सब लोग बडे मिलनसार और शिक्षित सज्जन है। वर्त आप लोग उपरोक्त नाम से व्यवसाय कर रहे हैं। आपकी फर्मे इस समय तेजपुर ग्वालवाडा, ग विश्वनाथ, बडगाँव, उरांग, माणक्याचर, मुर्शिदाबाद, धुलियान, गुटारोही, जीयागज, सिराजगंज, बार्ल पुरानाघाट, नयाघाट, आदमबाड़ी, बुढ़ागात्र, चुढैया, पामोई, टांगामारी, साकूमाथा, गभीरीघाट, कद जाजियां, फूलसुन्दरी, झडानी, बासवाडी, सूर्सिया, बडगाँव हा', पावरी पारा, लावकुवा, गोरोहित इ स्थानों पर हैं। इन सब पर जमींदारी, जूट और बैंकिंग का व्यापार होता है।

सेठ प्रसन्नचदजी का परिवार—सेठ प्रसन्नचन्दजी ने अलग होने के बाद "प्रसन्नचन्द फतेसिं नाम से व्यापार प्रारम्भ किया। आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके भवरसिंहजं फतेसिंहजी नामक दो पुत्र हैं, इनमें से भवरसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र कमलपतसिंह बाबू फतेसिंहजी मुर्शिदाबाद में व्यापार करते हैं। तथा कमलपतसिंहजी कलकत्ता में रहते है यह प मन्दिर सम्प्रदाय का अनुयायी है।

चौपड़ा राजरूपजी का खानदान, गंगाशहर

इस परिवार के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मण्डोवर का था। वहाँ से इस खानदान व पुरुष का कापटेद, कुचौर तथा देराजसर में आकर बसे थे। तदनंतर सम्वत् १९६७ में इस खानदा वर्तमान पुरुष श्री छौगमलजी चौपडा गगा शहर आकर बस गये तभी से आप लोग गंगाशहर में नि कर रहे हैं। इस खानदान में सेठ राजरूपजी हुए। आपके रतनचन्दजी दुर्गदासजी, करमचन्दजी, हरक सरदारमलजी तथा ताजमलजी नामक छ पुत्र हुए।

चोपडा करमचन्दजी का परिवार—चोपडा करमचन्दजी के पूसराजजी, लाभूरामजी तथा गुमानीरामजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों भाई देश से व्यापार निमित रंगपुर आये और माहीगंज (रंगपुर) में वहाँ की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मोजीराम इन्द्रचंद नाहटा के यहाँ सर्विस करते रहे। सेठ पूसराजजी बुद्धिमान तथा अच्छे व्यवस्थापक थे। आपको बंगला भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। आप रंगपुर जिले के प्रतिष्ठित हो गये हैं। आप रंगपुर जिले की म्यु० क० के मेम्बर भी थे। आपका स्वदेश प्रेम भी बढ़ा चढ़ा था। सन १९०५ की बंगाल स्वदेश मुव्हमेंट में आपने अग्र भाग लिया था तथा तभी से आप स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग किया करते थे। आप ही के समय में सम्वत् १९५० में छोगमल तिलोकचन्द के नाम से माहीगंज से सेठ हरकचन्दजी के पुत्र बीदामलजी के साझे में स्वतंत्र फर्म स्थापित की गई। सन् १९८१ में इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता में भी खोली गई थी। सम्वत् १९८७ के पश्चात् सेठ [illegible] व पूसराजजी के परिवार वाले अलग २ हो गये। सेठ पूसराजजी के छोगमलजी तथा रावतमल [illegible] पुत्र हुए।

श्री छोगमलजी चोपडा—आपका जन्म सम्वत् १९४० में हुआ। आपने सन् १९०५ में बी० ए० [illegible] १९०८ में एल० एल० बी० की परीक्षाएँ पास कीं। इस समय आप सारे परिवार में समझदार, [illegible] तथा बुद्धिमान सज्जन हैं। आप कलकत्ते की ओसवाल समाज के नामी वकीलों में से एक हैं। आप [illegible] आफ कामर्स, मारवाडी एसोसिएशन, ओसवाल सभा, ओसवाल नवयुवक समिति आदि [illegible] व सेक्रेटरी, मेम्बर तथा प्रधान कार्य्यकर्त्ता रहे हैं। आपके इस समय गोपीचन्दजी, भोजराज [illegible], अजीतमलजी तथा भूरामलजी नामक पाँच पुत्र हैं। इनमें गोपीचन्दजी ने सन् १९३३ में [illegible] बी० पास किया है। शेष सब व्यापार में भाग लेते हैं।

सेठ लाभूरामजी के पुत्र मंगलचन्दजी लाहौर की फर्म पर बलोइज फायर इंश्युरंस कं० स्विट्जरलैण्ड की जनरल एजन्सी का सब काम देखते हैं। चोपडा गुमानीरामजी के पुत्र इन्द्रचन्दजी, तिलोकचदजी [illegible] फर्म के काम में सहयोग लेते हैं। आप लोगों की एजंसी में उक्त इंश्युरंस कंपनी को [illegible] दी जाती है। आप लोगों की "छोगमल रावतमल" के नाम से कलकत्ता में भी एक फर्म है।

सेठ हरकचन्दजी का परिवार—सेठ हरकचन्दजी के दूदामलजी, रामसिंहजी, धनराजजी, बीदामल [illegible] तथा गुमानीरामजी नामक छ पुत्र हुए। सेठ रामसिंहजी व बीदामलजी देश से [illegible] दिनाजपुर आये तथा वहाँ मौजीराम इन्द्रचन्द नाहटा के यहाँ सर्विस करते रहे। आप लोग देश [illegible] में आते समय देहली तक का मार्ग पैदल तै करते हुए आये थे। आप यहाँ प्रतिष्ठित [illegible]। आपके पश्चात् सेठ बीदामलजी उसी फर्म पर सर्विस करते रहे। तदनतर आपने सवत् [illegible] माहीगंज में एक फर्म स्थापित की जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। इसी समय दिनाजपुर [illegible] चोपडा के नाम से एक स्वतंत्र फर्म भी स्थापित की थी जिस पर, बैङ्किंग वगैरह का [illegible] था। इस फर्म पर इस समय "तिलोकचंद सुगनमल" नाम पडता है। इसके अतिरिक्त [illegible] पृथ्वीराज के नाम से कलकत्ता में एक और फर्म है। सेठ बीदामलजी का संवत [illegible] स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र तिलोकचन्दजी, फतेचन्दजी तथा सुगनचन्दजी हैं।

श्री तिलोकचन्दजी बडे प्रतिष्ठित तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका जन्म संवत् १९४४ में हुआ था। आप दिनाजपुर के म्युनिसीपल कमिश्नर भी रह चुके हैं। दिनाजपुर फर्म का आपने बड़ी योग्यता से संचालन किया था। आपका संवत् १९८१ में स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लालचन्दजी हैं।

श्री फतेचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप चौपडा रामसिंहजी के नाम पर दत्तक गये थे लेकिन रामसिंहजी की धर्मपत्नी अत्यंत तपस्विनी थी अतः आप सब के शामिल ही रहते हैं। आप बड़े योग्य, समझदार तथा बुद्धिमान सज्जन हैं। इस समय आप इनकमटैक्स ऑफीसर हैं। आपके रतनचन्दजी, छगनमलजी तथा अमरचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। सुगनचन्दजी का जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा इस समय फर्म के सारे काम को सचालित कर रहे हैं। आपके पृथ्वीराजजी नामक एक पुत्र हैं।

गोठी परिवार, सरदारशहर

इस परिवार के लोग बहुत समय से सरदार शहर ही में निवास करते चले आ रहे हैं। इस परिवार में सबसे पहले सेठ चिमनीरामजी और आपके भाई चौथमलजी दिनाजपुर गये, एवम् वहाँ सर्विस की। पश्चात् वहाँ से आप लोग जलपाईगोडी चले गये। वहाँ जाकर आपने अपनी फर्म स्थापित की, एवम उसमें बहुत सफलता प्राप्त की। आप ही लोगों ने वहाँ बहुत सी जमींदारी भी खरीद की। सेठ टीकमचन्दजी के ६ पुत्रों में से चिमनीरामजी अविवाहित ही स्वर्गवासी हो गये। शेष के नाम क्रमश जीवनदासजी, चौथमलजी, पांचीरामजी, बख्तावरमलजी और हीरालालजी था। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। आप लोगों के पश्चात् इस फर्म का सचालन आपके पुत्रों ने किया। आप लोगों की जमींदारी बीकानेर-स्टेट, जलपाईगौड़ी, पवना एवम् रंगपुर जिले में हैं। यह जमींदारी अलग २ विभाजित है। संवत १९९१ से आप लोगों का व्यवसाय अलग २ हो गया। इस समय इस परिवार की चार शाखाएँ हो गई जो भिन्न २ नाम से अपना व्यवसाय करती है। जिसका परिचय इस प्रकार है।

चौथमल जैचन्दलाल—इस फर्म के मालिक सेठ बिरदीचन्दजी गोठी और आपके पुत्र मदनचन्दजी और जयचन्दलालजी हैं। सेठ बिरदीचन्दजी बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

गिरधारीमल रामलाल—इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ रामलालजी गोठी हैं। आपको जूट के व्यापार की अच्छी जानकारी है। अपनी कलकत्ते की सम्मिलित फर्म की सारी उन्नति का श्रेय आप ही को है। आपके चम्पालालजी, छगनलालजी, नेमीचन्दजी, हनुमानमलजी और रतनचन्दजी नामक पांच पुत्र हैं।

गिरधारीमल अभयचन्द—इस फर्म के मालिक सेठ गिरधारीमलजी के पुत्र अभयचन्दजी और सुमेरमलजी हैं। आप दोनों ही मिलनसार और उत्साही नवयुवक हैं।

सरदारमल शुभकरन—इस फर्म के मालिक सेठ सरदारमलजी के वंशज हैं।

जौहरी लाभचन्दजी सेठ (राकां) का खानदान, कलकत्ता

इस खानदान के पूर्वजों का मूल निवास स्थान जयपुर का है। यहाँ पर सेठ अमीचन्दजी बडे नामी व्यक्ति हो गये हैं। आपके कल्लूमलजी, धनसुखदासजी, हाबूलालजी तथा चन्द्रभानजी नामक चार

——। इनमें से प्रथम दो भाइयों ने संवत् १८०० के करीब मिर्जापुर जा कर अपनी व्यापार कुशलता —— में रुई तथा गल्ले के व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त की। आप लोगों का स्वर्गवास हो —ई। —कल्याणमलजी के नथमलजी नामक एक पुत्र हुए जिनका युवावस्था में ही देहावसान हो गया। — नाम पर अजमेर से सेठ लाभचन्दजी गेलडा दत्तक लिये गये।

—ठ लाभचन्दजी—आप इस परिवार में बडे नामांकित व्यक्ति हो गये है। आप बड़े बुद्धिमान —चतुर तथा प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपने करीब ८० वर्ष पूर्व कलकत्ते में जवाहरात का व्यापार किया —मोतीचन्दजी नवलखा के साझे में करीब ३५ वर्षों तक "लाभचन्द मोतीचंद" के नाम से जवाहरात का —पूर्वक व्यवसाय किया। यह फर्म बडी प्रतिष्ठित और कोर्ट जुएलर रही तथा वाइसराय आदि कई उच्च —कारियों से अपाइन्टमेंट भी मिले थे। सन् १९२६ में उक्त फर्म के दोनों पार्टनर अलग २ हो गये। —मोतीचन्दजी के पुत्र लाभचन्द सेठ के नाम से स्वतंत्र जवाहरात का व्यापार कर रहे हैं।

इस फर्मके वर्तमान संचालक लाभचन्दजी के पुत्र सौभागचंदजी, श्रीचन्दजी, अभयचन्दजी, लखमी-—, —चन्दजी, विनयचन्दजी एवं कीरतचन्दजी हैं। इनमें प्रथम चार व्यवसाय का संचालन करते —लोग मिलनसार तथा शिक्षित सज्जन हैं। शेष तीन भाई पढ़ते हैं। आप लोगों का आफीस —नम्बर ७ ए, लिन्डसे स्ट्रीट में है जहाँ पर जवाहरात का व्यवसाय होता है। आप लोगों की कलकत्ते में —स्थायी सम्पत्ति भी है। आपके पिताजी द्वारा स्थापित किया हुआ। श्री 'लाभचन्द मोतीचन्द' जैन —पाठशाला कलकत्ते में सुचारूरूप से चल रहा है। इसके लिये लाभचन्द मोतीचन्द नामक फर्म —एक ट्रस्ट भी कायम किया गया था।

बच्छावत मेहता माणकचन्द मिलापचन्द का खानदान, जयपुर

इस खानदान के पूर्वज मेहता भैरोंदासजी सं० १८२६ में जोधपुर से जयपुर आये। इनके —, सालिगरामजी तथा शेरकरणजी नामक तीन पुत्र हुए। इनको "मौजे मानपुर टीला" —नामक गाव जागीर में मिला जो इस समय तक सवाईरामजी की संतानों के पास मौजूद —रामजी के पुत्र उदयचन्दजी तथा साहिबचन्दजी हुए। उदयचन्दजी के विजयचन्दजी, माणक— तथा मिलापचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें माणिकचन्दजी, साहिबचन्दजी के नाम पर —गए। मेहता उदयचन्दजी राज का काम तथा साहिबचन्दजी गीजगढ ठिकाने के कामदार और — चम्पावतजी के कामदार रहे। इसी प्रकार माणकचंदजी और मिलापचदजी शिवगढ़ —कामदार रहे। मेहता मिलापचंदजी के पुत्र रामचन्द्रजी तथा माणकचंदजी के लक्ष्मीचदजी, —नेमीचदजी, गोपीचदजी तथा भागचंदजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें अखेचन्दजी विजय— नाम पर तथा गोपीचन्दजी अन्यत्र दत्तक गये। मेहता लक्ष्मीचन्दजी तथा अखेचंदजी ने —ठिकाने का काम किया। इन दोनों का संवत् १९७८ में स्वर्गवास हुआ।

वर्तमान में इस कुटुम्ब में मेहता नेमीचदजी, अखेचदजी के पुत्र मंगलचंदजी बी० ए०, मिलाप— —रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मीचन्दजी के पुत्र जोगीचंदजी, केवलचन्दजी, उमरावचन्दजी, टगमचंद —विद्यमान हैं। मेहता मंगलचन्दजी जयपुर में २७।२८ सालों तक सर्वे सुपरिन्टेन्डेन्ट

रहे। यहाँ से पेंशन होने के बाद आप वर्तमान में सीकर स्टेट में सेटलमेंट ऑफीसर हैं। आपके गोपालसिंहजी, हरकचंदजी तथा सुखचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। इनमें गोपालसिंहजी तो उदयपुर दत्तक गये हैं। शेष दोनों भ्राता घर का कारबार सम्हालते हैं। मेहता उमरावचन्दजी गिजगढ़ ठिकाने के कामदार हैं।

इसी प्रकार शालिगरामजी के प्रपौत्र रूपचन्दजी के पुत्र सरूपचंदजी बालक हैं। इनके कुटुम्ब में भी गीजगढ़ ठिकाने का काम रहा। मेहता शेरकरणजी के पुत्र चौथमलजी जनानी ड्योढ़ी के तहसीलदार रहे। इनके पुत्र गोपीचन्दजी विद्यमान हैं। मेहता भागचन्दजी के पुत्र कानचंदजी सेटलमेंट डिपार्टमेंट में तथा नेमीचंदजी के पुत्र प्रभूचन्दजी इम्पीरियल बेंक में खजाची हैं। मेहता जोगीचन्दजी के पौत्र (ज्ञानचन्दजी के पुत्र) गुमानचन्दजी एवं केवलचन्दजी के पौत्र (उत्तमचन्दजी के पुत्र) अमरचन्दजी हैं।

श्री लच्मीलालजी बोथरा, उटकमंड

लक्ष्मीलालजी बोथरा के दादा शिवलालजी तथा पिता केवलचंदजी खिचंद (मारवाड) में ही निवास करते रहे। केवलचन्दजी संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हुए। लक्ष्मीलालजी का जन्म संवत् १९५२ में हुआ। आप संवत् १९६५ में नीलगिरी आये, तथा मिश्रीमलजी वेद फलोदी वालों की भागीदारी में व्यापार आरम्भ किया। इस समय आप उटकमंड में "जेठमल मूलचंद एण्ड कम्पनी" नामक फर्म पर बैंकिंग फेंसी गुड्स एण्ड जनरल ड्रापर्स बिजिनेस करते हैं। एवम् यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। श्री लक्ष्मीलालजी सज्जन व्यक्ति हैं। आपके हाथों से व्यापार को तरक्की मिली है। आपके पुत्र भोमराजजी कामकाज में भाग लेते हैं, तथा रामलालजी और भँवरलालजी पढ़ते हैं।

कोठारी जवाहरचन्दजी दूगड़ का खानदान, नामली

इस परिवार के पूर्वज अमरसिंहजी दूगड ने नागोर से जालोर में अपना निवास बनाया। इनके पश्चात् महेशजी, जेवतजी, भेरूसिंहजी और पचाननजी हुए। पचाननजी ने अनेकों राज्यकीय कार्य्य किये। कहा जाता है कि इनको "रावराजा बहादुर की पदवी" तथा १२ गाँव जागीर में मिले थे और संवत् १७६५ में इन्हें सोने की सांट, हाथी, कड़ा मोती और पालकी सिरोपाव इनायत हुआ। सम्वत् १७७१ में बिठोर नामक गाँव की एक लड़ाई में आप काम आये। आपके पुत्र वल्लूजी, सोनगरा राजपूत नायक के साथ मालवा की ओर गये, और उनके साथ नामली में आबाद हुए। तथा वहाँ कोठार और कामदारी का काम करने के कारण "कोठारी" कहलाये। वल्लूजी के पश्चात् क्रमशः जीवराजजी और सूर्यमलजी हुए। सूर्य्यमलजी के स्वर्गवासी होने के समय उनके पुत्र गुलाबचन्दजी, जवाहरचन्दजी तथा हीराचन्दजी छोटे थे। कोठारी हीराचन्दजी ऊँचे दर्जे के कवि थे, कवित्व शक्ति के कारण कई दरबारों में आपको उच्च स्थान मिला था।

कोठारी जवाहरचन्दजी—आपका जन्म सम्वत् १८८१ में हुआ। आप बाल्य काल से ही होनहार व्यक्ति थे। नामली ठाकुर के छोटे भ्राता बख्तावरसिंहजी के साथ आप रतलाम दरबार बलवन्तसिंहजी के पास आया जाया करते थे। जब महाराजा बलवन्तसिंहजी के पुत्र भेरूसिंहजी राजगद्दी पर बैठे, तब उन्होंने कोठारी जवाहरचन्दजी को दीवान का सम्मान दिया। तथा इनको कुछ जागीर भी इनायत की। सम्वत् १९२१ में महाराजा के स्वर्गवासी हो जाने पर आप वापस नामली चले गये। सम्वत् १९७३ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नाम पर कोठारी हीराचन्दजी के बड़े पुत्र खुमानसिंहजी दत्तक आये। आपके

... तथा वेरीसालसिंहजी विद्यमान हैं। आप दोनों सज्जनों ने जोधपुर में ही शिक्षा पाई। इस ... दुर्जनसिंहजी जोधपुर सायर में कस्टम आफीसर हैं। और कोठारी वेरीसालसिंहजी जोधपुर ... असिस्टेंट स्टेट आडीटर हैं। आप जोधपुर के शिक्षित समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं। कोठारी ... के पुत्र कुँवर दौलतसिंहजी, देवीसिंहजी, सज्जनसिंहजी तथा रघुवीरसिंहजी हैं। इसी प्रकार ... के पुत्र कुवर कुशलसिंहजी, कोमलसिंहजी, केशवसिंहजी तथा कंचनसिंहजी हैं। ... के पुत्र भंवर स्वतत्र कुमार हैं।

इसी तरह इस परिवार में गुलाबचन्दजी कोठारी के पुत्र राजसिंहजी और पौत्र उम्मेदसिंहजी ... मनोहरसिंहजी हुए। मनोहरसिंहजी के पुत्र धर्मसिंहजी हैं। कोठारी हीराचन्दजी के खुमानसिंहजी, ..., शार्दूलसिहजी और दलेलसिंहजी हुए। तथा दलेलसिहजी के तजेराजसिंहजी, नगेन्द्रसिंहजी, ... और सूर्यवीरसिंहजी नामक पुत्र हुए।

सिंघी (बावेल) खानदान, शाहपुरा (मेवाड़)

इस परिवार के पूर्वज सेठ ... बावेल "पुर" में निवास करते थे। संवत् १५६५ में आपने ... निकाला, अत इनका परिवार सिंघी कहलाया। आपकी सोलहवीं पुश्त में देवकरणजी हुए। आप ... शाहपुरा आये। आपके साथ आपकी धर्मपत्नी लखमादेवीजी संवत् १७६९ में सती हुई। इनकी ... में नानगरामजी हुए। आप बडे वीर और पराक्रमी पुरुष हुए। कहाजाता है कि संवत् १८२५ ... की ओर से उज्जैन में सिंधिया फौज से युद्ध करते हुए आप काम आये थे। आपको शाहपुरा ... ताजीम दी थी। आपके पुत्र चतुरभुजजी, चन्द्रभानजी, इन्द्रभानजी और वर्द्धभानजी हुए।

सिंघी चतुरभुजजी का परिवार—आप भी अपने पिताजी की तरह प्रतिष्ठित हुए। आपको ... महाराणाजी ने शाहपुरा दरबार से १५०० बीघा जमीन जागीर में दिलाई। आपने अपनी ... में "आट" नामक गाँव बसाया, जो आज "सिंघीजी के खेडे" के नाम से बोला जाता है। आप ... कामदार थे। उस समय आपको मोतियों के आखे चढ़ाये थे। आपके गिरधारीलालजी, समर-..., सूरजमलजी, अरोमलजी, गाढमलजी और जीतमलजी नामक ६ पुत्र हुए। इनमे सिंघी समरथ-... साध व्यक्ति थे। स्थिति की कमजोरी के कारण आपने पुश्तैनी "ताजीम" विनय पूर्वक वापस ...। इनके पुत्र मुख्तारसिंहजी के सवाईसिंहजी और केसरीसिंहजी नामक २ पुत्र थे। सवाईसिंहजी ने ... तहसीलदारी का काम बडी होशियारी से किया। संवत् १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। ... के पुत्र इन्द्रसिंहजी, सोभागसिंहजी और सुजानसिंहजी हुए। इनमें इन्द्रसिंहजी, सवाईसिंहजी ... गये। आप स्टेट ट्रेझर और खासा खजाना के आफीसर थे। आपके नाम पर आपके ... सोभागसिंहजी) के पुत्र मदनसिंहजी दत्तक आये। इस समय आप शाहपुरा में सिविल जज हैं।

सिंघी सुजानसिंहजी का जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आप राजाधिराज उम्मेदसिंहजी के कुँवर ... आफीसर थे। इस समय आप स्टेट के रेवेन्यूमेम्बर हैं। आपके पास सिंघीजी का ... है। इनके अलावा दरबार ने आपको १ हजार की रेग की जागीर इनायत की है।

आपके पुत्र चन्दनसिहजी फौजदारी सरिश्तेदार हैं, एवं फतेसिहजी ने इजनियरिंग परीक्षा पास की है। आप दोनों सज्जन व्यक्ति हैं। चन्दनसिंहजी के पुत्र प्रतापसिहजी पढ़ते हैं।

सिंघी इन्द्रभानुजी का परिवार—आपके वदनमलजी तथा वाघमलजी नामक २ पुत्र हुए। सिंघी वाघमलजी इस परिवार मे बहुत प्रतापी पुरुष हुए। आपका जन्म सम्वत् १८४३ में हुआ था। आपने महाराजा जगतसिंहजी के वाल्यकाल मे सम्वत् १८९७ से १९०४ तक कामदारी का काम बडी होशियारी और ईमानदारी से किया। आपके लिये कर्नल डिक्सन ने लिखा था, जिसका आशय यह है कि सब रैयत राज के कामदारे से खुश और राजी है। इलाके का वन्दोवस्त दुरुस्त और आलमे के गाँव आबाद हैं।..... ता० १७ फरवरी सन् १८४६ ई०। आगरा के लेफ्टिनेट गवर्नर ने आपके लिये लिखा कि "सिंघी बागमल की कामदारी से राज्य बहुत आबाद हुआ" ता० १८ अगस्त सन् १८४५ ई०। उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंहजी ने सिंघी वाघमलजी को एक रुक्के में लिखा था कि राजाधिराज होश सभालें, जब तक इसी श्याम धर्मी से बन्दगी करना"... . संवत् १९०२ मगसर सुदी १५। आपने परिश्रम करके शाहपुरा स्टेट की खिराज १० हजार करवाई। आपको उदयपुर महाराणा तथा शाहपुरा दरबार ने खिल्लत भेंटे कर सम्मानित किया। आपने अपनी बहुत सी स्थाई सम्पत्ति ब्यावर में बनाई। पुष्कर की घाटी में भी आपने अच्छी इमदाद दी थी। आपने बूबल बाडी के मीणों पर राणाजी की ओर से फौज लेकर चढ़ाई की, और उनका उपद्रव शांत किया। आपको "बांगूदार" नामक एक गाँव भी जागीर में मिला था। आपने शाहपुरा में रिखबदेव स्वामी का मन्दिर बनवाया। इस प्रकार प्रतिष्ठा मय जीवन बिता कर सं० १९०५ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र केसरीसिहजी २२ साल उम्र मे सं० १९२१ में स्वर्गवासी हुए। इनके पुत्र सिंघी कृष्णसिंहजी हुए

सिंघी कृष्णसिंहजी का जन्म संवत् १९१६ में हुआ। आपको पठन पाठन का बहुत शौक था। संवत् १९५६ के अकाल में आपने शाहपुरा की गरीब जनता की अच्छी सहायता की थी। संवत् १९६० में आपने अपना निवास गोवर्द्धन में भी बनवाया। यहाँ आपने एक अच्छी धर्मशाला बनवाई। एव मथुरा जिले के २ ग्राम एवं १ लाख ४० हजार रुपयों के प्रामिजरी नोट धर्मार्थ दिये, इनकी आय से, औषधालय, अनाथालय, सदाव्रत, विधवाओं की सहायता और छात्रवृत्तियाँ दिये जाने की व्यवस्था की तथा इसका प्रवन्ध एक ट्रस्ट के जिम्मे कर उसकी सुपरवीज़न लोकल गवर्नमेंट के जिम्मे की। आपने शाहपुरा में रघुनाथजी का मन्दिर बनाया। सवत् १९७९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र फतेसिहजी बाल्यावस्था में ही गुजर गये थे। इनके नाम पर २० हजार की रकम का "साधु और जाति सेवा" के अर्थ प्राइवेट ट्रस्ट किया गया। कृष्णसिंहजी के यहाँ सज्जनसिंहजी बडी सादडी से दस साल की आयु में सवत् १९५८ में दत्तक आये।

सिंघी सज्जनसिंहजी शाहपुरा तथा गोवर्द्धन के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप गोवर्द्धन में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर, लोकल बोर्ड के चेयरमैन और डिस्ट्रीक्ट एडवायजरी एक्साइज कमेटी के मेम्बर हैं। आपने पिताजी द्वारा स्थापित धार्मिक व सहायता के कार्यों को आप भली प्रकार संचालित करते हैं। आप वैष्णव मतानुयायी हैं। शाहपुरा की गोशाला के स्थापन में आपने परिश्रम उठाया है। इसी साल आपने ओसवाल सम्मेलन अजमेर के सभापति का आसन सुशोभित किया था। आप गोवर्द्धन के आनरेरी

...न्यायप्रिय महानुभाव हैं। उदयपुर दरबार ने आपको "ताजीम" बख्शी है। आपके पुत्र कुँवर ... इण्टर में पढ़ रहे हैं। इनसे छोटे कुँवर मुकुन्दसिंहजी भी पढते हैं। आपका परिवार शाहपुरा ... में बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न माना जाता है। आपके यहाँ जमीदारी और बैंकिंग का काम होता है।

सुजानगढ़ का सिंघी परिवार

इस परिवार के पूर्व पुरुष जोधपुर से राव बीकाजी के साथ इधर आये थे। उन्हीं की सन्तानें ... ग्यारह स्थानों में वास करती रहीं। चुरू में राजरूपजी हुए। आपके ३ पुत्र हुए। इनमें प्रथम ... चुरू ही रहे। दूसरे कन्हीरामजी हरासर नाम के स्थान पर चले आये। तीसरे करनीदानजी ... स्वर्गवासी हो गये। कहा जाता है कि कन्हीरामजी तत्कालीन हरासर के ठाकुर हरोजी के कामदार ... किसी कारणवश अनबन हो जाने के कारण आप सम्वत् १८८९ के करीब सुजानगढ आकर बस ... आप हरासर में थे उस समय वहाँ आपने एक तालाब और कुवा बनवाया जो आज भी विद्यमान ... पाँच पुत्र हिम्मतसिंहजी, शेरमलजी, गोविन्दरामजी, पूर्णचन्दजी और अनोपचन्दजी थे। इन सब ... में पूर्णचन्दजी बडे प्रतिभावान व्यक्ति हुए। आपने मुर्शिदाबाद आकर वहाँ की तत्कालीन फर्म सेठ ... मिलापचन्द के यहाँ सर्विस की। पश्चात् आप अपनी होशियारी से उक्त फर्म के मुनीम हो गये। ... द्वारा जाति के कई व्यक्तियों का बहुत लाभ हुआ। आपने अपने देश के कई व्यक्तियों को रोजगार से ... था। हिम्मतमलजी भी बडे न्यायी और उदार सज्जन थे। सम्वत् १९०५ में आप लोग अलग २ ... हिम्मतमलजी के परिवार में चेतनदासजी हुए। आपके इस समय बींजराजजी और रावतमलजी ... पुत्र हैं। शेरमलजी के कुशलचन्दजी, ज्ञानमलजी और लालचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप सब ... हो गये और आपके परिवार वाले इस समय स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं।

सेठ कुशलचन्दजी का परिवार—सेठ कुशलचन्दजी के तीन पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमश जेस... , गिरधारीलालजी और पनेचदजी हैं। सेठ जेसराजजी शिक्षित और अंग्रेजी पढ़े लिखे सज्जन ... अपने भाइयों के शामलात में केरोसिन तेल का व्यापार किया। इसमें आपको अच्छी सफ... । इसके बाद आप लोग जूट बेलिंग का काम करने लगे। इसमें भी बहुत सफलता रही। ... सम्प्रदाय के अनुयायी थे। आपने अपने जीवन में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आपका ... हो गया। आपके पुत्र वछराजजी इस समय विद्यमान हैं। आप मिलनसार सज्जन हैं और ... १११ हरिसन रोड में जूट का व्यापार करते हैं। आपके हसराजजी, धनराजजी और ... नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ गिरधारीमलजी अपने चाचा सेठ लालचन्दजी के नाम पर दत्तक चले गये। आपके इन्द्रचन्द ... पुत्र हुए। इस समय आपके भँवरलालजी और नथमलजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ पनेचन्दजी भी अपने बडे भ्राता की भाँति कुशल व्यापारी हैं। आपने अपनी शामलात ... जूट के व्यापार में बडी उथल पथल पैदा कर लाखों रुपये अपने हाथों से कमाये थे। अपनी ... धर्मादे की रकम में से आप लोगों ने सुजानगढ़ में एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण ... इस समय बीकानेर स्टेट कौंसिल के मेम्बर हैं। आपको दरबार से कैफियत की इज्जत

प्रदान है। सुजानगढ़ की जनता में आपके प्रति आदर के भाव है। इस समय आप नं ३० काटन में जूट का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र चैनरूपजी और सोहनलालजी व्यापार में सहयोग देते हैं।

सेठ ज्ञानचन्दजी का परिवार—सेठ ज्ञानचन्दजी गोहाटी में तत्कालीन फर्म मेसर्स जोगराज जैसराज यहाँ मेनेजरी का काम देखते थे। आपके तीन पुत्र भैरोंदानजी, जीतमलजी और प्रेमचन्दजी हुए। भैरोंदा कम वय ही में स्वर्गवासी हो गये। शेष दोनों भाई और इनके पुत्र वगैरह संवत १९८७ तक जीत प्रेमचन्द के नाम से जूट का अच्छा व्यापार करते रहे। तथा आजकल अलग २ स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं

सेठ जीतमलजी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने अपने समय में व्यापार में बहुत उन्नति व आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र मालचन्दजी, अमीचन्दजी, हुलासचन्दजी और भिखमचन्द हैं। आप लोग सिरसाबाड़ी में "जीतमल जौहरीमल" के नाम से जूट का व्यापार करते हैं।

सेठ प्रेमचन्दजी का जन्म संवत् १९३९ है। आप को जूट के व्यापार का अच्छा अनुभव है आपने अपनी साझेवाली फर्म के काम को बहुत बढ़ाया था। साथ ही कई स्थानों पर उसकी शाख भी स्थापित की थी। इस समय आप प्रेमचन्द माणकचन्द के नाम से १०५ चीना बाजार में जूट अच्छा व्यापार करते हैं। आप मिलनसार संतोषी और समझदार सज्जन है। आपकी यहाँ और सुजानगढ अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके इस समय माणकचन्दजी, धनराजजी और अमोलकचन्दजी नामक तीन पु हैं। इनमें से बा० माणकचन्दजी फर्म के कार्य्य का संचालन करते है। बाबू धनराजजी बी० काम थर्ड ईय में पढ रहे है। आप लोगों का व्यापार कलकत्ता के अलावा ईसरगंज, जमालपुर (मैमनसिंह) में होता है। आपकी ओर से जमालपुर में जीतमल प्रेमचन्द रोड के नाम से एक पक्का रोड बनवाया हुआ तथा वहाँ के स्कूल के बोर्डिंग की इमारत भी आप ही ने बनवाई है। ओसवाल विद्यालय में भी आपक ओर से अच्छी सहायता प्रदान की गई है।

सेठ भिखनचन्दजी मालचन्दजी सिंघी, सरदारशहर

इस खानदान के लोग जोगड गौत्र के हैं। मगर संघ निकालने के कारण सिंघी कहलाते है। आप लोगों का पूर्व निवास स्थान नाथूसर नामक ग्राम था। मगर जब कि सरदारशहर बसने लगा आपके पूर्वज भी यहीं आ गये। वहाँ सेठ दुरगदास के गुलाबचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। सेठ गुलाबचन्दजी जब कि १५ वर्ष के थे सरदार शहर वाले सेठ चैनरूपजी के साथ कलकत्ता गये। पश्चात् धीरे २ अपनी बुद्धिमानी, इमादारी तथा होशियारी से आप इस फर्म के मुनीम हो गये। इस फर्म पर आपने करीब ५० वर्ष तक काम किया। इसके पश्चात् संवत् १९६६ में आपने नौकरी छोडदी एवम अपने पुत्र भीखनचन्द मालचन्द के नाम से स्वतंत्र फर्म खोली तथा कपडे का व्यापार प्रारभ किया। इस फर्म पर डायरेक्टर विलायत से इम्पोर्ट का काम भी प्रारभ किया गया। इस कार्य में आपको बहुत सफलता रही। आपका संवत् १९८३ में स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र है जिनके नाम करनीदानजी, भीखनचन्दजी एवम् मालचन्दजी हैं। आप तीनों सज्जन और मिलनसार है। करनीदानजी के भूरामलजी और रामलालजी नामक पुत्र हैं। आप लोग भी व्यापार संचालन करते है। भूरामलजी के बुधमलजी नामक

स्व० लाला फग्गूमलजी, अमृतसर

लाला भगवानदासजी, अमृतसर

श्रीयुत पन्नालालजी जैन, अमृतसर

श्रीयुत विजयकुमारजी जैन, अमृतसर

है। भीकनचन्दजी के पुत्र जयचन्दलालजी और चम्पालालजी है। तथा जयचन्दलालजी के और मालचन्दजी के पुत्र मदनचन्दजी है।

आप लोगों का व्यापार कलकत्ता में ३९ आर्मेनियनस्ट्रीट होता है। इसी स्थान पर ...के नाम से विलायत से तथा उपरोक्त नाम से जापान से डायरेक्ट कपडे का इम्पोर्ट व्यापार ...अतिरिक्त 'जयचन्दलाल रामलाल" के नाम से मनोहरदास कटला में स्वदेशी कपडे का है। आपका परिवार तेरापंथी संप्रदाय का अनुयायी है।

लाला फग्गूमल भगवानदास बावेल, अमृतसर

यह परिवार लगभग १५० वर्ष पूर्व मारवाड से आकर अमृतसर में आबाद हुआ। यह ...जैन स्थानकवासी सम्प्रदाय का मानने वाला है। इस परिवार के पूर्वज लाला धनपतराय ...मुकुन्दामलजी और नदामलजी हुए। लाला मुकुन्दामलजी बसाती का व्यापार करते थे, धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष थे। संवत् १९६१ में ७० साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके ...मलजी और लाला फग्गूमलजी नामक २ पुत्र हुए। लाला नंदामलजी भी प्रतिष्ठित ...थे। संवत् १९५९ में आप निसंतान स्वर्गवासी हुए। लाला कसूरियामलजी सन् १९१२ ...हुए। इनके पुत्र लाला दीनानाथजी तथा लाला अमरनाथजी का भी स्वर्गवास हो गया है।

लाला फग्गूमलजी—आपका जन्म संवत् १९१७ में हुआ। आप वयो वृद्ध और धार्मिक पुरुष ...उन भाग्यवानों में हैं, जो अपनी चौथी पीढ़ी को अपने सम्मुख देख रहे हैं। आप के पुत्र ...दासजी तथा लाला जगीमलजी हुए।

लाला भगवानदासजी—आपका जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप अमृतसर के ओसवाल समाज ...प्रतिष्ठित सज्जन हैं। दान धर्म के कामों में भी आप अच्छा सहयोग लेते हैं। इस समय आप ...जैन सभा अमृतसर के खजांची हैं। आपके पुत्र लाला पन्नालालजी, विलायतीरामजी तथा ...हैं। आपकी कन्या श्रीमती शांतिदेवी ने गत वर्ष "हिंदीरत्न" की परीक्षा पास की है। लाला ...का जन्म १९६१ में हुआ। आप व्यापारकुशल तथा उत्साही युवक हैं। आपके हाथों से व्यापार ...उन्नति हुई है। धार्मिक कामों मे आपकी अच्छी रुचि है। पूज्य सोहनलालजी महाराज के नाम से ...कन्या पाठशाला के आप सभापति हैं। आपके पुत्र श्री राजकुमारजी पढ़ते है। लाला ...जी व्यापार में भाग लेते हैं तथा इनसे छोटे विजयकुमारजी पढ रहे हैं।

इस परिवार का अमृतसर में ४ दुकानों पर वूलन्स, हॉयजरी, मनिहारी और जनरल मर्चेंटाइज ...व्यापार होता है। "बी० पी० बावेल एण्ड सस" के नाम से विलायती तथा जापानी माल का ...इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त हाल ही में इस परिवार ने "पी० विजय एण्ड कम्पनी" के नाम ...(जापान) में अपना एक ऑफिस कायम किया है, इस पर इम्पोर्ट तथा एक्सपोर्ट ...काम है। यह खानदान अमृतसर के ओसवाल समाज में नामांकित माना जाता है।

सिंघी (बावेल) हेमराजजी का खानदान, उत्तराण और खेडगांव (खानदेश)

इस परिवार का मूल निवासस्थान भगवानपुरा (मेवाड) है। वहाँ से सिंघी हेमराजजी के छोटे

पुत्र हजारीमलजी तथा जुहारमलजी संवत १९०१ में तथा बड़े पुत्र रूपचंदजी संवत् १९०६ में उत्त (खानदेश) आये। तथा यहाँ इन भाइयों ने व्यवसाय आरम्भ किया।

सिंघी रूपचन्दजी का खानदान—आप उत्तराण से संवत् १९०७ में खेडगाँव चले आये तथा आपने अपना कारबार जमाया। आपके मोतीरामजी, बच्छराजजी तथा गोविन्दरामजी नामक ३ पुत्र हु इन तीनों भाइयों के हाथों से इस परिवार के व्यापार तथा सम्मान की वृद्धि हुई। इन बन्धुओं का परि इस समय अलग २ व्यापार कर रहा है। सिंघी मोतीरामजी संवत् १९६० में स्वर्गवासी हुए। आ नाम पर सिंघी चुन्नीलालजी केरिया (मेवाड) से दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३३ में हुआ। खानदेश के ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। भुसावल, जलगाँव तथा पाचोरा की जैन शिक्ष संस्थाओं में आप सहायता देते रहते हैं। आपके पुत्र दीपचन्दजी तथा जीपरूलालजी हैं। आप दोनों जन्म क्रमशः संवत् १९५२ तथा ६२ में हुआ। दीपचंदजी सिंघी अपना व्यापारिक काम सम्हालते हैं, त जीपरूलालजी बी० ए०, पूना में एल० एल० बी० में अध्ययन कर रहे हैं। आप समझदार तथा विचारव युवक हैं। आपके यहाँ "मोतीराम रूपचंद" के नाम से कृषि, बैंकिंग तथा लनदेन का व्यापार होता है वरखेड़ी में आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। दीपचन्दजी के पुत्र राजमलजी, चांदमलजी तथा मानमलजी हैं

सिंघी बच्छराजजी—आप इस खानदान में बहुत नामी व्यक्ति हुए। आपने करीब २० हज रुपयों की लागत से पाचोरे में एक जैन पाठशाला स्थापित कर उसकी व्यवस्था ट्रस्ट के जिम्मे की। आप पाचोरे में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खोलकर अपने व्यापार और सम्मान को बहुत बढ़ाया। संवत् १९७७ आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र तोतारामजी, हीरालालजी स्वर्गवासी हो गये हैं। और कपूरचंदजी तथ लखीचंदजी विद्यमान हैं। इन भाइयों का व्यापार १९७७ में अलग २ हुआ। सिंघी कपूरचंदजी "कपूरचंद बच्छराज" के नाम से पाचोरे में रुई का व्यापार करते हैं तथा यहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारी माने जात हैं। आपके सुगनमलजी तथा पूरनमलजी नामक २ पुत्र हैं। इसी तरह तोतारामजी के पुत्र शंकर लालजी, गणेशमलजी, प्रतापमलजी तथा हीरालालजी के पुत्र मिश्रीलालजी, कनकमलजी, खुशालचंदजी और सुवालालजी और सिंघी गोविन्दरामजी के पुत्र छगनमलजी, ताराचंदजी, विरदीचंदजी तथा सरूपचन्दजी खेड़गाँव में व्यापार करते हैं।

सेठ हजारीमलजी तथा जुहारमलजी सिंघी का परिवार—इन बन्धुओं का परिवार उत्तराण में निवास करता है। आप दोनों बन्धुओं के हाथों से इस परिवार के व्यापार और सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ किशनदासजी और सेठ हजारीमलजी के सेठ ओंकारदासजी, चुन्नीलालजी तथा छोटमलजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ किशनदासजी ख्याति प्राप्त पुरुष हुए। आप बड़े कर्तव्यशील व समझदार सज्जन थे। सम्वत् १९५३ में आपका स्वर्गवास हुआ। सिंघी ओंकारदासजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पन्नालालजी, माणिकचन्दजी, पूनमचन्दजी, दलीचन्दजी, रतनचन्दजी तथा राम चन्दजी नामक ६ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें सेठ माणिकचन्दजी, किसनदासजी के नाम पर दत्तक गये हैं।

सेठ माणिकचन्दजी सिंघी—आपका जन्म सम्वत् १९४५ में हुआ। आपने सम्वत् १९७२ से साहुकारी व्यवसाय बन्द कर कृषि तथा बागायात की ओर बहुत बड़ा लक्ष दिया। आपका विस्तृत बगीचा

सेठ माणकचन्दजी सिंघी (माणकचन्द किशनदास) उत्तराण.

श्री राजमलजी बलदोटा बी. एस. सी., मर्चेंक

सेठ माणकचन्दजी सिंघी के पुत्र

श्री हरलालजी बलदोटा सपत्नीक, पूना.

... एकड़ भूमि में है। इनमें हजारों मोसम्मी के झाड हैं। इन झाडों से पैदा होने वाली मोसम्मी ...ओं ... बम्बई, गुजरात आदि प्रान्तों में भेजी जाती हैं। इधर आपने लेमनज्यूस तथा ओरेंजज्यूस ... बनाने का आयोजन किया है और इस कार्य के लिये ६५ एकड भूमि में नीबू के हजारों झाड ...। इन तमाम कार्यों में आपके साथ आपके बड़े पुत्र वंशीलालजी सिंघी परिश्रम पूर्वक सहयोग ...। आपका फलों का बगीचा बम्बई प्रांत में सबसे बडा माना जाता है। सेठ माणिकचन्दजी के इस ...लालजी, शिवलालजी तथा शांतिलालजी नामक ३ पुत्र हैं। सिंघी वंशीलालजी का जन्म संवत् ... में हुआ। आपने लेमन तथा ओरेंज ज्यूस के लिये पूना एग्रीकलचर कॉलेज से विशेष ज्ञान प्राप्त ...। आप बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपके छोटे भाई शिवलालजी पूना एग्रीकलचर कॉलेज में केमिस्ट ... प्राप्त कर रहे हैं।

मियाँ पन्नालालजी भी बरखेडी में बागायात का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मिश्रीलालजी, ...जी, इन्द्रचंदजी, हरकचंदजी तथा भागचंदजी हैं। इसी प्रकार पूनमचंदजी अमलनेर में व्यापार ... और दलीचंदजी बरखेड़ी में तथा रतनचंदजी और रामचंद्रजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं। ... प्रकार इस परिवार में सेठ चुन्नीलालजी सिंघी के पुत्र मोहनलालजी, वृजलालजी, भ्रमरलालजी तथा ... और छोटमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी और नंदलालजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं।

सेठ उम्मेदमल रूपचंद बलदोटा, दौंड (पूना)

इस परिवार का मूल निवास स्थान बारवा (आऊवा के पास) मारवाड़ में हैं। इस परिवार ... सेठ गंगारामजी बलदोटा, मारवाड से व्यापार के लिए लगभग ६० साल पूर्व नीमगाँव (...नगर) आये। तथा वहाँ किराना का धंधा शुरू किया। संवत् १९५० के लगभग आप स्वर्ग ... हुए। आपके चार पुत्र हुए, जिनमें उम्मेदमलजी का परिवार विद्यमान है। सेठ उम्मेदमलजी ने ... १९६० में अपनी दुकान दौंड में की और व्यापार की आपके हाथों से उन्नति हुई। संवत् १९७२ ... स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रूपचन्दजी (उर्फ फूलचन्दजी) का जन्म १९४२ में मोहनलालजी ... १९५७ में एवं राजमलजी का संवत् १९६६ में हुआ। इस समय बलदोटा रूपचन्दजी, अपनी ... रूपचन्द नामक दुकान का कार्य्य दौंड में संचालित करते हैं। आपके पुत्र श्री हरलालजी हैं।

श्री मोहनलालजी बलदोटा ने सन् १९२० में बी० ए० तथा १९२२ में एडवोकेट परीक्षा पास की। ... आप पूना में प्रेक्टिस करते हैं, एवं यहाँ के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आप ४ सालों तक ... बोर्डिंग के सेक्रेटरी रहे थे। आपके छोटे बन्धु राजमलजी बलदोटा ने सन् १९३२ में बी० ... परीक्षा पास की। तथा इस समय पूना लॉ कालेज में एल० एल० बी० में अध्ययन कर ...। ...लालजी बलदोटा का जन्म सन् १९११ में हुआ। आपने सन् १९२९ में मेट्रिक पास किया तथा ... पूना मेडिकल स्कूल के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं।

इस परिवार ने शिक्षा तथा सुधार के कार्य्यों में प्रशंसनीय पैर बढ़ाया है। श्रीयुत राजमलजी ... बलदोटा ने परदा प्रथा को त्याग कर महाराष्ट्र प्रदेश के ओसवाल समाज के सम्मुख एक ... उपस्थित किया है। आप दोनों युवक अपनी पत्नियों सहित शुद्ध खद्दर का व्यवहार करते

हैं। धार्मिक मामलों से भी आप लोगों के उदार विचार हैं। आपने दृढता पूर्वक परिश्रम कर चचव मे एक अबोध कन्या को दीक्षा दिये जाने के कार्य्य को रुकवाया था। श्री हरलालजी का विवाह सं १९३२ में अजमेर में वर्द्धमानजी बाठिया की पुत्री श्रीमती दीपकुमारी (उर्फ सरलादेवी) के साथ बहुत सादगी के साथ हुआ। इस विवाह में तमाम फुजूल खर्चिया रोककर लगभग ३००) रुपयों में सब वैवाहिक काम पूरा किया गया। तथा शुद्ध खद्दर का व्यवहार किया गया। श्री दीपकुमारी बलदोटा सन् १९३० मे विदेशी वस्त्रों की पिकेटिंग करने के लिये ३।४ वार जेल गई। लेकिन १५ वर्ष की अल्पायु होने के कारण आप दो चार दिनों में ही छोड दी गई।

लाला रणपतराय कस्तूरीलाल वम्मेल का खानदान, मलेर कोटला

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान सुनाम का है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी सम्प्रदाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में लाला कानारामजी के पश्चात् क्रमश छज्जूरामजी, मोतीरामजी तथा लाला रणपतरायजी हुए। लाला रणपतरायजी इस कुटुम्ब में बड़े योग्य व्यक्ति होगये है। आप सौ साल पूर्व मलेर कोटला में सुनाम से आये थे। आपने अपने परिवार की इज्जत व दौलत को बढ़ाया। आपके पुत्र लाला मुकुंदीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९५० में होगया। आपके लाला कस्तूरीलालजी, मिलखीराम जी एवं चिरंजीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला कस्तूरीलालजी का जन्म १९४६ का था। आप वडे सज्जन और धार्मिक पुरुष थे। आपका संवत १९७९ में स्वर्गवास होगया है। आपके लाला वचनाराम जी नामक एक पुत्र हैं। लाला मिलखीरामजी का जन्म संवत् १९४८ मे हुआ। आप यहां की बिरादरी के चौधरी हैं। आपका यहाँ के राज दरबार में अच्छा सम्मान है। आपके प्रेमचन्दजी नामक एक पुत्र है। लाला चिरंजीलालजी का जन्म सवत् १९५० में हुआ। आप भी मिलनसार सज्जन है। आपके मनोहरलालजी तथा शीतलदासजी नामक दो पुत्र हैं।

इस परिवार की इस समय दो शाखाएँ होगई है। एक फर्म पर मेसर्स कस्तूरीलाल मिलखी राम के नाम से तथा दूसरी फर्म पर चिरंजीलाल मनोहरलाल के नाम से व्यापार होता है।

सेठ फतहलाल मिश्रीलाल वेद, फलोदी

इस परिवार के पूर्वज सेठ परशुरामजी वेद ने फलोदी से ४४ मील दूर रोहिणा नामक स्थान से आकर सम्वत् १९२५ में अपना निवास फलोदी में बनाया। आपके पुत्र बहादुरचन्दजी तथा मुलतानचंदजी हुए। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का माननेवाला है। सेठ मुल्तानचन्दजी के चुन्नीलालजी, छोगमलजी, हजारीमलजी, आईदानजी तथा सूरजमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ सूरजमलजी तथा आईदानजी ने बम्बई तथा ऊटकमंड में दुकानें खोलीं। सेठ सूरजमलजी फलोदी के स्थानकवासी सम्प्रदाय में नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। सवत् १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। सेठ आईदानजी के जेठमलजी फतेलालजी, विजयलालजी, मिश्रीलालजी तथा कवरलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ मिश्रीलालजी, सूरजमलजी वेद के नाम पर दत्तक गये हैं।

वर्तमान में इन बंधुओं में जेठमलजी, विजयलालजी तथा मिश्रीलालजी विद्यमान है। सेठ जेठमलजी फलोदी में ही रहते हैं, तथा विजयलालजी और मिश्रीलालजी ने इस कुटुम्ब के व्यापार तथा सम्मान

... ... है। आपने वेलिंगटन, कुन्नूर और ऊटकमंड में दुकानें खोली। बम्बई में आपका "फतहलाल ..." के नाम से व्यापार होता है। तथा नीलगिरी में आपकी ५ दुकानें हैं। जिनमें लालचन्द शंकर- ... अंग्रेजी ढंग से बैंकिंग व्यापार करती है और नीलगिरी में बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। ... । ये शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक व्यक्ति हैं। आप अपनी फर्म की ओर से आठ साल से २ हजार ... ब्यावर के "जैन गुरुकुल" को सहायता दे रहे है। एवं आप उस गुरुकुल के प्रेसिडेण्ट भी हैं।

... नटमलजी के पुत्र नेमीचन्दजी व शंकरलालजी, सेठ फतेलालजी के पुत्र चम्पालालजी, सेठ ... के पुत्र कन्हैयालालजी और रामलालजी तथा कंवरलालजी के पुत्र फकीरचन्दजी तथा मूलचन्द ... दत्तकों में शंकरलालजी, चांदमलजी (बहादुरचंदजी के पुत्र) के नाम पर तथा मूलचन्दजी, ... के नाम पर दत्तक गये। एवं फकीरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में अल्पवय मे हो ... ... जी, चम्पालालजी तथा कन्हैयालालजो व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार फलोदी बम्बई ... के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

श्री बख्तावरमल नथमल वेद, ऊटकमंड

इस परिवार के पूर्वज दौलतरामजी वेद के पुत्र शिवलालजी, बींजराजजी तथा जोरावरमलजी वेद ... नामक स्थान से आकर अपना निवास स्थान फलोदी में बनाया। सेठ शिवलालजी संवत् ... में स्वर्गवासी हुए। तथा बींजराजजी व जोरावरमलजी का व्यापार अमलनेर के पास पीपला नामक ... था। सेठ शिवलालजी के वाघमलजी तथा बख्तावरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन बंधुओं ने ... (दार) में अपना व्यापार शुरू किया। सम्वत् १९५९ में सेठ बख्तावरमलजी ने सेठ सूरजमलजी ... की भागीदारी में "सूरजमल सुजानमल" के नाम से साहूकारी व्यापार चालू किया। संवत् ... तथा १९८७ में वाघमलजी का स्वर्गवास हुआ।

सेठ बख्तावरमलजी के पुत्र नथमलजी का जन्म सम्वत् १९५५ में हुआ। इस समय आप सेठ ... फलोदी वालों की भागीदारी में "शिवलाल नथमल" के नाम से ऊटकमंड में बैंकिंग ... है। यहां के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एवं समझदार व्यक्ति हैं। आपको पठन ... प्रेम है। इसी तरह इस परिवार में सेठ जोरावरमलजी के पौत्र भेरूदानजी, वेलिंगटन में ... की भागीदारी में तथा बींजराजजी के पुत्र मोतीलालजी वेद अमलनेर में व्यापार करते हैं

सेठ चुन्नीलाल छगनमल वेद, ऊटकमंड

इस परिवार के पूर्वज वेद गंभीरमलजी तथा उनके पुत्र बालचंदजी ठिकाना रास (मारवाड़) में ... बालचन्दजी सम्वत् १९६४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चुन्नीलालजी का जन्म सम्वत् ... छगनमलजी का १९६० में हुआ। इन बंधुओं ने सम्वत् १९८० में अपना निवास ब्यावर में ... ने सेठ 'रिखबदास फतेमल" की भागीदारी में सन् १९१८ में ऊटकमंड में सराफी ... किया। इस समय इस दुकान पर कपडे का व्यापार होता है। आप दोनों सज्जन ... स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले है। व्यापार को आपने तरक्की दी है।

लाला सुखरूपमल रघुनाथप्रसाद भण्डारी, कानपुर

इस परिवार में लाला सुखरूपमलजी के पुत्र लाला रघुनाथप्रसादजी बड़े धार्मिक व व्यक्ति हुए। आपने व्यापार मे लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित कर कानपुर, सम्मेदशिखरजं लखनऊ में ३ सुन्दर जैन मन्दिर बनवाकर उनकी प्रतिष्टा करवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन हुए सवत् १९४८ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर लाला लछमणदासजी चतुरमेहता मेहता सन्तोषचन्दजी दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप भी अपने पिता तरह ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपने कानपुर मदिर में कांच जड़वाये, और आसपास द लगवाया। यह मन्दिर भारत के जड़ाऊ मन्दिरों में उच्च श्रेणी का माना जाता है। मदिर के र आपने धर्मशाला के लिए एक मकान प्रदान किया। संवत् १९८९ के फाल्गुण मास में आप स्वर्ग हुए। आपके पुत्र बाबू दौलतचन्दजी भण्डारी का जन्म सवत् १९६४ में हुआ। आप भी सज्जन प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र विजयचंदजी हैं।

श्री हुलासमलजी मेहता का खानदान, रामपुरा

लगभग ३०० वर्षों से यह परिवार रामपुरा में निवास कर रहा है। राज्यकार्य्य कर कारण इस परिवार की उपाधि "मेहता" हुई। संवत् १८२५ से राज्य सम्बन्ध त्याग कर इस परिवा अफीम का व्यापार शुरू किया और मेहता गम्भीरमलजी तक यह व्यापार चलता रहा। आप बड़े ग तथा धर्मानुरागी थे। संवत् १९५२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चुन्नीलालजी मेहता व्यापार करते रहे। इनके भाइयों को मंदसोर में "धनराज किशनलाल" के नाम से सोने चाँदी का व्य होता है। मेहता चुन्नीलालजी के मोहनलालजी तथा हुलासमलजी नामक २ पुत्र हैं। मोहनला विद्याविभाग में लम्बे समय तक सर्विस करते रहे तथा इस समय पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।

मेहता हुलासमलजी—आप इन्दौर स्टेट में कई स्थानों के अमीन रहे। तथा इस स मनासामें अमीन हैं। आप बड़े सरल तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके ४ पुत्र है। जिनमें सज्जनसिंहजी मेहता इसी साल एल० एल० बी० की परीक्षा में बैठे थे। आप होनहार युवक हैं। उ से छोटे मनोहरसिंहजी बी० ए० में तथा आनंदसिंहजी मेट्रिक में पढ़ रहे। और ललितसिंह बालक है

मेहता किशनराजजी, मेड़ता

इस परिवार के पूर्वज मेहता जसरूपजी जोधपुर में राज्य की सर्विस करते थे। इनके मनर जी तथा पनराजजी नामक २ पुत्र हुए। पनराजजी जालोर के हाकिम थे। इनके रतनराजजी, कुशलरा जी, सोहनराजजी तथा शिवराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बधुओं में केवल शिवराजजी की सत्ता विद्यमान हैं। मेहता शिवराजजी जोधपुर में वकालात करते थे। इनका सवत् १९७४ में ५४ साल व वय में स्वर्गवास हुआ। आपके किशनराजजी तथा रंगराजजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता किशनरा जी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आपने सन् १९१३ में जोधपुर में वकालात पास की। तथा ७-८ साल तक वहीं प्रेक्टिस करते रहे। उसके बाद आप मेड़ते चले आये। तथा इस समय मेड़ते के प्रतिष्ठित वकील मा जाते हैं। आपके छोटे बंधु रंगराजजी हवाला विभाग में कार्य्य करते हैं।

ठ माणकचंदजी सिंघी (माणकचंद किशनदास) उत्तराण

श्री राजमलजी बलदोटा बी एस सी, सपत्नीक

सेठ माणकचन्दजी सिंघी के पुत्र

श्री हरलालजी बलदोटा सपत्नीक, पूना.

[illegible] ६५ एकड भूमि में है। इनमें हजारों मोसम्मी के झाड हैं। इन झाडों से पैदा होने वाली मोसम्मी [illegible] बम्बई, गुजरात आदि प्रान्तों में भेजी जाती हैं। इधर आपने लेमनज्यूस तथा अरेंजज्यूस [illegible] म बनाने का आयोजन किया है और इस कार्य के लिये ६५ एकड भूमि में नीबू के हजारों झाड [illegible] है। इन तमाम कार्यों में आपके साथ आपके बड़े पुत्र वंशीलालजी सिंघी परिश्रम पूर्वक सहयोग [illegible] है। आपका फलों का बगीचा बम्बई प्रांत में सबसे बड़ा माना जाता है। सेठ माणिकचन्दजी के इस [illegible] वंशीलालजी, शिवलालजी तथा शांतिलालजी नामक ३ पुत्र हैं। सिंघी वंशीलालजी का जन्म संवत् [illegible] में हुआ। आपने लेमन तथा अरेंज ज्यूस के लिये पूना एग्रीकलचर कॉलेज से विशेष ज्ञान प्राप्त [illegible] है। आप बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। आपके छोटे भाई शिवलालजी पूना एग्रीकलचर कॉलेज में केमिस्ट [illegible] ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

सिंघी पन्नालालजी भी बरखेड़ी में बागायात का व्यापार करते हैं। आपके पुत्र मिश्रीलालजी, [illegible], इन्द्रचंदजी, हरकचंदजी तथा भागचंदजी हैं। इसी प्रकार पूनमचंदजी अमलनेर में व्यापार [illegible] और दलीचंदजी बरखेडी में तथा रतनचंदजी और रामचंद्रजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं। [illegible] प्रकार इस परिवार में सेठ चुन्नीलालजी सिंघी के पुत्र मोहनलालजी, बृजलालजी, झूमरलालजी तथा [illegible] और छोटमलजी के पुत्र कन्हैयालालजी और नंदलालजी उत्तराण में कृषि कार्य करते हैं।

सेठ उम्मेदमल रूपचंद वलदोटा, दौंड (पूना)

इस परिवार का मूल निवास स्थान वारवा (आऊवा के पास) मारवाड़ में हैं। इस परिवार [illegible] सेठ गंगारामजी वलदोटा, मारवाड से व्यापार के लिए लगभग ६० साल पूर्व नीमगाँव [illegible]) आये। तथा वहाँ किराना का धंधा शुरू किया। संवत् १९५० के लगभग आप स्वर्ग[illegible] हुए। आपके चार पुत्र हुए, जिनमें उम्मेदमलजी का परिवार विद्यमान है। सेठ उम्मेदमलजी ने [illegible] १९६० में अपनी दुकान दौंड में की और व्यापार की आपके हाथों से उन्नति हुई। संवत् १९७२ [illegible] स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रूपचन्दजी (उर्फ फूलचन्दजी) का जन्म १९४२ में मोहनलालजी [illegible] १९५५ में एवं राजमलजी का संवत् १९६६ में हुआ। इस समय वलदोटा रूपचन्दजी, अपनी [illegible] रूपचन्द नामक दुकान का कार्य्य दौंड में संचालित करते हैं। आपके पुत्र श्री हरलालजी है।

श्री मोहनलालजी वलदोटा ने सन् १९२० में बी० ए० तथा १९२२ में एडवोकेट परीक्षा पास की। [illegible] से आप पूना में प्रेक्टिस करते हैं, एवं यहाँ के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आप ४ सालों तक [illegible] बोर्डिंग के सेक्रेटरी रहे थे। आपके छोटे बन्धु राजमलजी वलदोटा ने सन् १९३२ में बी० [illegible] की परीक्षा पास की। तथा इस समय पूना लॉ कालेज में एल० एल० बी० में अध्ययन कर [illegible] है। हरलालजी वलदोटा का जन्म सन् १९११ में हुआ। आपने सन् १९२९ में मेट्रिक पास किया तथा [illegible] पूना मेडिकल स्कूल के द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहे हैं।

इस परिवार ने शिक्षा तथा सुधार के कार्य्यों में प्रशंसनीय पैर बढ़ाया है। श्रीयुत राजमलजी [illegible] वलदोटा ने परदा प्रथा को त्याग कर महाराष्ट्र प्रदेश के ओसवाल समाज के सम्मुख एक [illegible] आदर्श उपस्थित किया है। आप दोनों युवक अपनी पत्नियों सहित शुद्ध खद्दर का व्यवहार करते

१२५

हैं। धार्मिक मामलों से भी आप लोगों के उदार विचार हैं। आपने दृढ़ता पूर्वक परिश्रम कर चचवड़ मे एक अबोध कन्या को दीक्षा दिये जाने के कार्य्य को रुकवाया था। श्री हरलालजी का विवाह सन् १९३२ में अजमेर में वर्द्धमानजी बाठिया की पुत्री श्रीमती दीपकुमारी (उर्फ सरलादेवी) के साथ बहुत सादगी के साथ हुआ। इस विवाह में तमाम फुजूल खर्चिया रोककर लगभग ३००) रुपयों में सब वैवाहिक काम पूरा किया गया। तथा शुद्ध खद्दर का व्यवहार किया गया। श्री दीपकुमारी बलदोटा सन् १९३० में विदेशी वस्त्रों की पिकेटिंग करने के लिये ३। ४ वार जेल गई। लेकिन १५ वर्ष की अल्पायु होने के कारण आप दो चार दिनों में ही छोड़ दी गई।

लाला रणपतराय कस्तूरीलाल बम्बेल का खानदान, मलेर कोटला

इस परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान सुनाम का है। आप जैन श्वेताम्बर स्थानक वासी सम्प्रदाय को मानने वाले हैं। इस खानदान में लाला कानारामजी के पश्चात् क्रमश छज्जूरामजी, मोतीरामजी तथा लाला रणपतरायजी हुए। लाला रणपतरायजी इस कुटुम्ब में बडे योग्य व्यक्ति होगये हैं। आप सौ साल पूर्व मलेर कोटला में सुनाम से आये थे। आपने अपने परिवार की इज्जत व दौलत को बढ़ाया। आपके पुत्र लाला मुकुंदीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९५० में होगया। आपके लाला कस्तूरीलालजी, मिलखीराम जी एव चिरंजीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला कस्तूरीलालजी का जन्म १९४६ का था। आप बडे सज्जन और धार्मिक पुरुष थे। आपका संवत १९७९ में स्वर्गवास होगया है। आपके लाला बचनाराम जी नामक एक पुत्र हैं। लाला मिलखीरामजी का जन्म सवत् १९४८ मे हुआ। आप यहां की बिरादरी के चौधरी हैं। आपका यहाँ के राज दरबार में अच्छा सम्मान है। आपके प्रेमचन्दजी नामक एक पुत्र है। लाला चिरंजीलालजी का जन्म सवत् १९५० में हुआ। आप भी मिलनसार सज्जन हैं। आपके मनोहरलालजी तथा शीतलदासजी नामक दो पुत्र हैं।

इस परिवार की इस समय दो शाखाएँ होगई हैं। एक फर्म पर मेसर्स कस्तूरीलाल मिलखी राम के नाम से तथा दूसरी फर्म पर चिरंजीलाल मनोहरलाल के नाम से व्यापार होता है।

सेठ फतहलाल मिश्रीलाल वेद, फलोदी

इस परिवार के पूर्वज सेठ परशुरामजी वेद ने फलोदी से ४४ मील दूर रोहिणा नामक स्थान से आकर सम्वत् १९२५ में अपना निवास फलोदी में बनाया। आपके पुत्र बहादुरचन्दजी तथा मुलतानचदजी हुए। यह परिवार स्थानकवासी सम्प्रदाय का माननेवाला है। सेठ मुल्तानचन्दजी के चुन्नीलालजी, छोगमलजी, हजारीमलजी, आईदानजी तथा सूरजमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ सूरजमलजी तथा आईदानजी ने बम्बई तथा ऊटकमंड में दुकानें खोलीं। सेठ सूरजमलजी फलोदी के स्थानकवासी सम्प्रदाय में नामाकित व्यक्ति हो गये हैं। सवत् १९७८ में आप स्वर्गवासी हुए। सेठ आईदानजी के जेठमलजी फतेलालजी, विजयलालजी, मिश्रीलालजी तथा कवरलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें सेठ मिश्रीलालजी, सूरजमलजी वेद के नाम पर दत्तक गये हैं।

वर्तमान में इन बंधुओं में जेठमलजी, विजयलालजी तथा मिश्रीलालजी विद्यमान हैं। सेठ जेठमलजी फलोदी में ही रहते हैं, तथा विजयलालजी और मिश्रीलालजी ने इस कुटुम्ब के व्यापार तथा सम्मान

...ता है। आपने वेलिंगटन, कुन्नूर और ऊटकमंड में दुकानें खोली। बम्बई में आपका "फतहलाल ... नाम से व्यापार होता है। तथा नीलगिरी में आपकी ५ दुकानें हैं। जिनमें लालचन्द शंकर- ... अंग्रेजी ढंग से बैंकिंग व्यापार करती है और नीलगिरी में बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। ... बड़े शिक्षा प्रेमी तथा धार्मिक व्यक्ति हैं। आप अपनी फर्म की ओर से आठ साल से २ हजार ... ब्यावर के "जैन गुरुकुल" को सहायता दे रहे हैं। एवं आप उस गुरुकुल के प्रेसिडेण्ट भी हैं।

... नथमलजी के पुत्र नेमीचन्दजी व शंकरलालजी, सेठ फतेलालजी के पुत्र चम्पालालजी, सेठ ... के पुत्र कन्हैयालालजी और रामलालजी तथा कंवरलालजी के पुत्र फकीरचन्दजी तथा मूलचन्द ... इन दत्तकों में शंकरलालजी, चाँदमलजी (बहादुरचंदजी के पुत्र) के नाम पर तथा मूलचन्दजी, ... के नाम पर दत्तक गये। एवं फकीरचन्दजी का स्वर्गवास सम्वत् १९८९ में अल्पवय में हो ...ना, चम्पालालजी तथा कन्हैयालालजी व्यापार में भाग लेते हैं। यह परिवार फलोदी बम्बई ...गिरी के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखता है।

श्री बख्तावरमल नथमल वेद, ऊटकमंड

इस परिवार के पूर्वज दौलतरामजी वेद के पुत्र शिवलालजी, बींजराजजी तथा जोरावरमलजी वेद ... नामक स्थान से आकर अपना निवास स्थान फलोदी में बनाया। सेठ शिवलालजी संवत् ... स्वर्गवासी हुए। तथा बींजराजजी व जोरावरमलजी का व्यापार अमलनेर के पास पीपला नामक ... था। सेठ शिवलालजी के बाघमलजी तथा बख्तावरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन बंधुओं ने ... (बरार) में अपना व्यापार शुरू किया। सम्वत् १९५९ में सेठ बख्तावरमलजी ने सेठ सूरजमलजी ...वालों की भागीदारी में "सूरजमल सुजानमल" के नाम से साहूकारी व्यापार चालू किया। संवत् ... बख्तावर तथा १९८७ में बाघमलजी का स्वर्गवास हुआ।

सेठ बख्तावरमलजी के पुत्र नथमलजी का जन्म सम्वत् १९५५ में हुआ। इस समय आप सेठ ... वेद फलोदी वालों की भागीदारी में "शिवलाल नथमल" के नाम से ऊटकमंड में बैंकिंग ... करते हैं। यहाँ के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एवं समझदार व्यक्ति हैं। आपको पठन ... का प्रेम है। इसी तरह इस परिवार में सेठ जोरावरमलजी के पौत्र भैरूदानजी, वेलिंगटन में ... वेद की भागीदारी में तथा बींजराजजी के पुत्र मोतीलालजी वेद अमलनेर में व्यापार करते हैं

सेठ चुन्नीलाल छगनमल वेद, ऊटकमंड

इस परिवार के पूर्वज वेद गम्भीरमलजी तथा उनके पुत्र बालचंदजी ठिकाना रास (मारवाड़) में ... बालचन्दजी सम्वत् १९६४ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चुन्नीलालजी का जन्म सम्वत् ... छगनमलजी का १९६० में हुआ। इन बंधुओं ने सम्वत् १९८० में अपना निवास ब्यावर में ... दोनों ने सेठ "रिखबदास फतेमल" की भागीदारी में सन् १९१८ में ऊटकमंड में सराफी ... किया। इस समय इस दुकान पर कपड़े का व्यापार होता है। आप दोनों सज्जन ... स्थानकवासी आम्नाय के माननेवाले हैं। व्यापार को आपने तरक्की दी है।

लाला सुखरूपमल रघुनाथप्रसाद भण्डारी, कानपुर

इस परिवार में लाला सुखरूपमलजी के पुत्र लाला रघुनाथप्रसादजी बड़े धार्मिक व प्रतापी व्यक्ति हुए। आपने व्यापार मे लाखो रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित कर कानपुर, सम्मेदशिखरजी तथा लखनऊ में ३ सुन्दर जैन मन्दिर बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा करवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए संवत् १९४८ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर लाला लछमणदासजी चतुरमेहता के पुत्र मेहता सन्तोषचन्दजी दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप भी अपने पिताजी की तरह ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपने कानपुर मदिर में कांच जडवाये, और आसपास बगीचा लगवाया। यह मन्दिर भारत के जड़ाऊ मन्दिरों में उच्च श्रेणी का माना जाता है। मंदिर के सामने आपने धर्मशाला के लिए एक मकान प्रदान किया। संवत् १९८९ के फाल्गुण मास में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र बाबू दौलतचन्दजी भण्डारी का जन्म सवत् १९६४ में हुआ। आप भी सज्जन एवम् प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र विजयचंदजी हैं।

श्री हुलासमलजी मेहता का खानदान, रामपुरा

लगभग ३०० वर्षों से यह परिवार रामपुरा में निवास कर रहा है। राज्यकार्य्य करने के कारण इस परिवार की उपाधि "मेहता" हुई। संवत् १८२५ से राज्य सम्बन्ध त्याग कर इस परिवार ने अफीम का व्यापार शुरू किया और मेहता गम्भीरमलजी तक यह व्यापार चलता रहा। आप बड़े गम्भीर तथा धर्मानुरागी थे। संवत् १९५२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चुन्नीलालजी मेहता भी व्यापार करते रहे। इनके भाइयों को मदसोर में "धनराज किशनलाल" के नाम से सोने चाँदी का व्यापार होता है। मेहता चुन्नीलालजी के मोहनलालजी तथा हुलासमलजी नामक २ पुत्र हैं। मोहनलालजी विद्याविभाग में लम्बे समय तक सर्विस करते रहे तथा इस समय पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।

मेहता हुलासमलजी—आप इन्दौर स्टेट में कई स्थानों के अमीन रहे। तथा इस समय मनासामें अमीन हैं। आप बड़े सरल तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके ४ पुत्र हैं। जिनमें बड़े सज्जनसिंहजी मेहता इसी साल एल० एल० बी० की परीक्षा में बैठे थे। आप होनहार युवक है। आप से छोटे मनोहरसिंहजी बी० ए० में तथा आनंदसिंहजी मेट्रिक में पढ़ रहे। और ललिजसिंह बालक हैं।

मेहता किशनराजजी, मेड़ता

इस परिवार के पूर्वज मेहता जसरूपजी जोधपुर में राज्य की सर्विस करते थे। इनके मनरूपजी तथा पनराजजी नामक २ पुत्र हुए। पनराजजी जालोर के हाकिम थे। इनके रतनराजजी, कुशलराजजी, सोहनराजजी तथा शिवराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बंधुओं में केवल शिवराजजी की सतानें विद्यमान है। मेहता शिवराजजी जोधपुर में वकालात करते थे। इनका सवत् १९७४ में ५४ साल की वय में स्वर्गवास हुआ। आपके किशनराजजी तथा रंगराजजी नामक २ पुत्र हुए। मेहता किशनराजजी का जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आपने सन् १९१३ में जोधपुर में वकालात पास की। तथा ७-८ सालों तक वहीं प्रेक्टिस करते रहे। उसके बाद आप मेड़ते चले आये। तथा इस समय मेड़ते के प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। आपके छोटे बंधु रंगराजजी हवाला विभाग में कार्य्य करते हैं।

सेठ घमडसी जुहारमल स्याम सुखा, बीकानेर

हम ऊपर लिख आये हैं कि चदेरी के खतरसिंह के पौत्र भैंसाशाहजी के ८ पुत्रों से अलग-अलग गौत्र उत्पन्न हुई। इनमें श्यामसीजी से श्यामसुखा हुए। इनकी नवी पीढ़ी में मेहता ... हुए। आप बीकानेर दरबार के बुलाने से संवत् १५७५ में पाटन से बीकानेर में आकर आबाद हुए। इनकी दसवीं पीढी मे श्यामसुखा साहबचन्दजी हुए आपके संतोषचदजी, सुल्तानचन्दजी, सुगालचन्दजी एवं घमडसीजी नामक ४ पुत्र हुए।

सेठ घमडसीजी श्यामसुखा जिस समय मरहठा सेना के अध्यक्ष महाराजा होलकर स्थान २ पर ... अपने राज्य स्थापन की व्यवस्था में व्यस्त थे, उस समय बीकानेर से सेठ घमडसीजी ... गए, एवं महाराजा होल्कर की फौजों को रसद सप्लाय करने का कार्य्य करने लगे। कहना न होगा कि ज्यों ज्यों होल्करों का सितारा उन्नति पर चढ़ता गया। त्यों त्यों सेठ घमडसीजी का व्यापार भी बढ़ता गया। आपने होल्कर एव सिंधिया के जीते हुए प्रदेशों में डाक की सुव्यवस्था की। होल्करी ... द्वारा वेतन दिया जाता था। तत्कालीन होल्कर नरेश ने आपके सम्मान स्वरूप इन्दौर में ... सायर म पाने महसूल की माफी के हुक्म बख्शे। एवं घोडा, छत्री, चपरास व छडी, आदि बख्शकर सम्मानित किया। इसी प्रकार ग्वालियर स्टेट की ओर से भी आपको कई सम्मान प्राप्त हुए। ... बाफना खानदान के प्रतापी पुरुष सेठ जोरावरमलजी बाफना का आप से सहयोग हुआ, एवं इन ... "घमडसी जोरावरमल" के नाम से अनेकों स्थानों में दुकानें स्थापित कर बहुत जोरों से अफीम का व्यापार बढ़ाया। तमाम मालवा प्रान्त की अफीम आपकी आढत में आती थी। जब सेठ ... का व्यापार पाँच भागों में विभक्त हो गया, उस समय सेठ घमडसीजी अपने पुत्र जुहारमलजी ... "घमडसी जुहारमल" के नाम से अपना स्वतन्त्र कारबार करने लगे। सेठ जुहारमलजी संवत् ... स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सूरजमलजी एवं समीरमलजी ने अफीम तथा सराफी व्यापार को ... किया। इन्दौर के ११ पचों में आप भी प्रभावशाली और प्रधान व्यक्ति थे। सेठ समीरमलजी स्यामसुखा बीकानेर के सम्माननीय पुरुष थे। बीकानेर दरबार ने आपको केफियत तथा चौकडी ... इसी तरह आपके पुत्र सहसकरणजी को सोने का कडा एव केफियत तथा उनकी धर्म पत्नी को ... पहनने का अधिकार बख्शा था। आपने सिद्धाचलजी आदि मे कई धार्मिक काम करवाये।

सेठ सूरजमलजी के सोभागमलजी एव पूनमचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें सेठ सोभागमलजी ... गुजर जाने से उनके नाम पर सेठ पूनमचन्दजी दत्तक गये। आपका जन्म संवत् ... आप बीकानेर के प्रतिष्टित एव वयोवृद्ध सज्जन हैं। बीकानेर से आपको इज्जत, ... सरताम चौकडी आदि का सम्मान प्राप्त हुआ है। देहली दरबार के समय बीकानेर दरबार ... आपको अपने साथ ले गये थे। आपके पुत्र कुँवर दीपचन्दजी का जन्म संवत ... आप अपनी दुकानों का कारोबार सम्हालते हैं। कुँवर दीपचन्दजी के पुत्र टीकमसिंहजी, ... एव तेजसिंहजी हैं। कुँवर टीकमसिंहजी का जन्म संवत १९६४ में हुआ।

आप मिलनसार युवक हैं। इस परिवार की इन्दौर एवं उज्जैन में दुकानें हैं। तथा इन्दौर, उज्जैन, सावे और बीकानेर में स्थाई जायदाद है। कुँवर टीकमसिंहजी के पुत्र भँवर दुलीचन्दजी हैं।

श्री राखेचा मानमलजी मंगलचन्दजी, बीकानेर

इस परिवार के पूर्वज लच्छीरामजी राखेचा बीकानेर में अपने समय में बड़े प्रतापी पुरुष हुए। आप सवत् १८५२-५३ में बीकानेर के दीवान रहे। आपने अपनी अन्तिम वय में सन्यास वृत्ति धारण की एव "अलख मठ" स्थापित कर "अलख सागर" नामक प्रसिद्ध विशाल कूप बनवाया। जो इस समय बीकानेर का बहुत बड़ा कूप माना जाता है। इनके पुत्र मानमलजी एवं गेंदमलजी माजी साहिबा पुङ्गलियाणीजी के कामदार रहे। मानमलजी के पुत्र राखेचा मगलचन्दजी बड़े प्रभावशाली व्यक्ति थे। आप श्री महाराजा गंगासिंहजी के बाल्यकाल में रिजेंसी कौंसिल के मेम्बर थे। इनके दत्तक पुत्र भेरूदानजी कारखाने का कार्य करते रहे। इस समय भेरूदानजी के पुत्र गभीरचन्दजी एवं शेपकरणजी विद्यमान हैं।

सेठ पूनमचन्दजी नेमीचन्दजी कोठारी (शाह) बीकानेर

यह परिवार सेठ सूरजमलजी कोठारी के पुत्रों का है। लगभग १५० साल पहिले सेठ "बालचन्द गुलाबचन्द" के नाम से इस परिवार का व्यापार बड़ी उन्नति पर था। एवं इनकी दुकानें जयपुर, पूना आदि स्थानों पर थीं। सेठ बालचन्दजी के पुत्र भीखनचन्दजी एव पौत्र हरकचन्दजी हुए। कोठारी हरकचन्दजी के पुत्र नेमीचन्दजी का जन्म सम्वत् १९०२ में हुआ। आपने जादातर बीकानेर में ही व्याज और जवाहरात का व्यापार किया। सम्वत् १९५२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके प्रेमसुखदास जी, पूनमचन्दजी तथा आनन्दमलजी नामक ३ पुत्र हुए। आप तीनों का जन्म क्रमश सम्वत् १९३० सम्वत् १९३८ एव सम्वत् १९४३ में हुआ। सेठ प्रेमसुखदासजी व्यापार के लिये सम्वत् १९४४ मे रगून गये, तथा "प्रेमसुखदास पूनमचन्द" के नाम से फर्म स्थापित की। सम्वत् १९५३ में आप स्वर्गवासी हो गये। आपके बाद आपके छोटे बंधु सेठ पूनमचन्दजी तथा आनन्दमलजी ने इस दुकान के व्यापार एव सम्मान में अच्छी वृद्धि की। सेठ पूनमचन्दजी कोठारी रंगून चेम्बर आफ कामर्स के पंच थे। एवं वहाँ के व्यापारिक समाज में गण्यमान्य सज्जन माने जाते थे। इधर सम्वत् १९८२ से व्यापार का बोझ अपने छोटे बंधु पर छोड़ कर आप बीकानेर में ही निवास करते हैं। इस समय आप बीकानेर के आनरेरी मजिस्ट्रेट एव म्युनिसिपल कमिश्नर है। यहाँ के ओसवाल समाज में आप प्रतिष्ठित एवं समझदार पुरुष हैं। स्थानीय जैन पाठशाला में आपने ७१००) की सहायता दी है। इस समय आपके यहाँ "प्रेमसुखदास पूनमचन्द" के नाम से रगून में बैंकिंग तथा जवाहरात का व्यापार होता है। आपका परिवार मन्दिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है। सेठ आनन्दमलजी के पुत्र लालचन्दजी एवं हीराचन्दजी हैं।

कोचर परिवार बीकानेर

सम्वत् १६७२ में महाराजा सूरसिंहजी के साथ कोचरजी के पुत्र उरझाजी अपने ४ पुत्र रामसिंहजी, भाखरसिंहजी, रतनसिंहजी तथा भींवसिंहजी को साथ लेकर बीकानेर आये। तथा उरझाजी के शेप ४ पुत्र फलोदी में ही निवास करते रहे। बीकानेर आने पर महाराजा ने इन भाइयों को अपनी रियासत में ऊँचे २ ओहदों पर मुकर्रर किया। इन बधुओं ने अपनी कारगुजारी से रियासत में अच्छा

[illegible] । इस समय इन चारों भाइयों की संतानों के लगभग १२५ घर बीकानेर में निवास कर रहे हैं। [illegible] कोचर परिवार अधिकतर बीकानेर स्टेट की सेवा ही करता चला आ रहा है राज्य कार्य्य करने से यह [illegible] "मेहता" के नाम से सम्मानित हुआ, आज भी इस परिवार के अनेकों व्यक्ति स्टेट सर्विस मे है। [illegible] का कोचर परिवार अधिकतर श्री जैन श्वे० मंदिर मार्गीय आम्नाय का माननेवाला है।

मेहता रामसिंहजी कोचर का परिवार

कोचर रामसिंहजी, डरसाजी के पाटवी पुत्र थे, बीकानेर दरबार महाराजा सूरसिंहजी [illegible] चाँदी की कलम एवं दवात बख्श कर लिखने का काम दिया, जिससे इनका परिवार [illegible]" कहलाने लगा। इस परिवार को स्टेट ने "वीमलू" नामक गाँव जागीर में दिया, जो [illegible] इस परिवार के पाटवी मेहता मंगलचन्दजी के अधिकार में है। मेहता रामसिंहजी के पश्चात् [illegible], भगौतीरामजी और माणकचन्दजी हुए। मेहता माणकचन्दजी के पुत्र दुलीचन्दजी तथा [illegible] थे। इनमें मेहता दुलीचन्दजी के परिवार में राय बहादुर मेहता मेहरचन्दजी एवं बख्तावरचन्दजी [illegible] स्वर्गीय मेहता बहादुरमलजी नामी व्यक्ति हुए।

[illegible] बहादुर मेहता मेहरचन्दजी का परिवार—ऊपर हम मेहता दुलीचन्दजी का नाम लिख आये [illegible] आपके पुत्र चौथमलजी एवं पौत्र सुल्तानचन्दजी हुए। मेहता सुल्तानचन्दजी के सूरजमलजी, [illegible], चुन्नीलालजी एवं हिम्मतमलजी नामक ४ पुत्र हुए, इनमें मेहता चुन्नीलालजी २२ सालो तक [illegible] में तहसीलदार रहे। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर दरबार ने आपको सूरतगढ़ में नाजिम का [illegible] दिया। आपके लखमीचन्दजी एवं मोतीचन्दजी नामक २ पुत्र हुए, इनमें मेहता मोतीचन्दजी, [illegible] के नाम पर दत्तक गये। मेहता लखमीचन्दजी बहुत समय तक बीकानेर एवं रिणी मे नाजिम [illegible] पर कार्य करते रहे। पश्चात् आप स्टेट की ओर से आबू, हिसार एवं जयपुर के वकील रहे। इसी [illegible] मेहता मोतीचन्दजी भी कई स्थानों पर तहसीलदारी एवं नाजिमी के पद पर कार्य्य करते रहे। [illegible] मेहरचन्दजी, मिलापचन्दजी, गुणचन्दजी तथा केसरीचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए, इन में मेहरचन्दजी, [illegible] के नाम पर दत्तक गये। मेहता मेहरचन्दजी का जन्म सम्वत् १९३२ में हुआ। [illegible] इस परिवार में विशेष प्रतिभावान पुरुष हुए। सम्वत् १९५४ में आप रियासत मे तहसीलदारी के [illegible] पर मुकर्रर हुए। एवं सन् १९१२ में स्टेट ने आपको सूरतगढ़ का नाजिम मुकर्रर किया। आपकी [illegible] होशियारी से दिनों दिन जिम्मेदारी के कार्यों का भार आप पर आता गया। सन् १९१३ में [illegible] जोधपुर, जयपुर एवं बीकानेर के सरहद्दी तनाजों को दूर करने के लिये आपको अपना प्रतिनिधि [illegible] भेजा। सन् १९१६ में महाराजा श्री गंगासिंहजी बहादुर ने आपको "शाह" का [illegible] इनायत किया। इसी तरह से वार आदि कार्यों में स्टेट की ओर से इमदाद में सहयोग लेने के [illegible] ब्रिटिश गवर्नमेंट ने सन् १९१८ में "रायबहादुर" का खिताब एवं मेडिल इनायत [illegible] बीकानेर दरबार ने भी आपको "रेवेन्यू कमिश्नर" का पद बख्श कर सम्मानित किया। [illegible] प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिता कर आप २९ दिसम्बर सन् १९१९ को स्वर्गवासी हुए। आप बड़े [illegible] थे। आपके अंतिम संस्कारों के लिये दरबार ने आर्थिक सहायता पहुँचाई थी। इतना

ही नहीं आपकी धर्मपत्नी एव २ नाबालिग पुत्रों के लिये खास तौर से पेंशन भी मुकर्रर कर दी। अ स्मारक में आपके पुत्रों ने बीकानेर में कोचरों की गवाड में एक जैन धर्मशाला बनवाई। आपके कृपाचन्द उत्तमचन्दजी एव मंगलचन्दजी नामक ३ पुत्र विद्यमान है। इन तीनों भाइयों का जन्म क्रम सम्वत् १९५१, ६५ तथा सम्वत् १९६७ मे हुआ। मेहता कृपाचन्दजी थोडे समय तक कलकत्ता व्यापार करते रहे, तथा इस समय नौहर मे नायब तहसीलदार है। आपके पुत्र धीरचन्दजी बालक है।

मेहता उत्तमचन्दजी बी० ए० एल एल० बी०—आपने बनारस युनिवर्सिटी से सन् १९२· बी० ए० तथा १९३० एल एल० बी० की परीक्षा पास की। इसके २ वर्ष बाद आपको स्टेट ने सुजान में मजिस्ट्रेट बनाया। इतनी अल्पवय होते हुए भी इस बजनदारी पूर्ण कार्य को आप बडी योग्यता से संचा कर रहे हैं। आप बडे सहृदय, मिलनसार एव लोकप्रिय युवक है। आपके पुत्र उपध्यानचन्द बालक आपके छोटे बंधु मेहता मंगलचन्दजी सुजानगढ़ में गिरदावर है।

इसी प्रकार इस परिवार में मेहता मिलापचन्दजी भी कई स्थानों पर तहसीलदार एव नाि के पद पर काम करते रहे सन १९२७ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र पीरचन्दजी भिनासर डाक्टरी करते हैं, मोहनलालजी एफ. ए मे तथा सम्पतलालजी मिडिल में पढते है। इसी तरह मे मेहरचन्दजी के सब से छोटे भाई मेहता केसरीचन्दजी के पुत्र माणिकचन्दजी बालक हैं।

मेहता बहादुरमलजी कोचर का परिवार—ऊपर हम लिख आये है कि मेहता दुलीचन्दजी छोटे भ्राता मेहता बक्तावरचन्दजी थे। इनके पश्चात् क्रमश मेहता तखतमलजी, मुकुन्ददासजी एव छो मलजी हुए। मेहता छोगमलजी बीकानेर स्टेट में सर्विस करते रहे। सवत् १९४२ मे आपका स्वर्गवास हुअ आपके मेहता छगनमलजी, बहादुरमलजी, एव हस्तीमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मेहता छगनमल भी स्टेट में सर्विस करते रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके सहसकरणजी एव अभयराजजी नाम २ पुत्र हुए। इनमें अभयराजजी, अपने काका मेहता बहादुरमलजी के नाम पर दत्तक गये।

मेहता बहादुरमलजी इस परिवार में नामी व्यक्ति हुए। आपने सवत् १९४० में सेठ मो रामपन्नालाल बाठिया भिनासर वालों की भागीदारी में कलकत्ते में छातों का व्यापार आरम्भ कि एव इस व्यापार को उन्नत रूप देने के लिये आपने वहाँ एक कारखाना भी खोला। इस व्यापार सम्पत्ति उपार्जित कर आपने अपने सम्मान मे अच्छी उन्नति की। आप बडे दयालु थे, तथा धर्म के काम में उदारता पूर्वक भाग लेते थे। एव अन्य कामों में भी उदारतापूर्वक सहायता देते थे। बीकानेर ओसवाल समाज में आप गण्यमान्य व्यक्ति माने जाते थे। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताकर सव १९९० की प्रथम वैसाख सुदी १४ को आपका स्वर्गवास हो गया। आपके दत्तक पुत्र मेहता अभयराज का जन्म संवत् १९४० में हुआ। इधर सवत् १९८६ से आपका सेठ मोजीराम पन्नालाल फर्म से भा अलग हो गया है। एव आप "बहादुरमल अभयराज" के नाम से बीकानेर में बैंकिंग व्यापार करते है आप बडे सरल एवं सज्जन व्यक्ति है। बीकानेर के कोचर परिवार में आप सधन व्यक्ति है। ए यहाँ के ओसवाल समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रखते है। आपके पुत्र भँवरलालजी, अनदमलजी एव दुली चन्दजी है।

स्वर्गीय मेहता नेमीचन्दजी कोचर, बीकानेर

मेहता मेघराजजी कोचर, बीकानेर

मेहता लूनकरणजी कोचर, बीकानेर.

कुँवर रावतमलजी कोचर, बीकानेर

मेहता बहादुरमलजी के छोटे भाई मेहता हस्तीमलजी भी राज्य मे सर्विस करते रहे। आपका [illegible] १९८१ म स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र मेहता शिवबख्शजी, सेठ मोजीराम पन्नालाल बांठिया की [illegible] उनों के कारखाने का संचालन एवं व्यापार करते हैं। तथा अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। [illegible] पुत्र मेघराजजी मेट्रिक मे पढते हैं। इनसे छोटे सम्पतलालजी एव जतनलालजी हैं।

मेहता भींवसिंहजी कोचर का परिवार

कोचर डरमाजी के तीसरे पुत्र भीवसिंहजी की सतानों में समय २ पर कई प्रतिष्ठित व्यक्ति [illegible] जिन्होंने बीकानेर रियासत की सेवाएं कर अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की। इस परिवार में मेहता शाहमलजी [illegible] व्यक्ति हुए। आपको बीकानेर दरबार महाराजा सरदारसिंहजी ने संवत् १८६७ में दीवानगी का [illegible] दिया था।

मेहता भीवसिंहजी के पुत्र पद्मराजजी थे। इनके चन्द्रसेनजी एवं इन्द्रसेनजी नामक २ पुत्र [illegible]। इनमे मेहता चन्द्रसेनजी के परिवार में मेहता मेघराजजी, लूणकरणजी, रावतमलजी एवं चम्पालालजी [illegible] [illegible]जी, आदि सज्जन हैं। एव चन्द्रसेनजी के परिवार में मेहता शिवबख्शजी हैं।

मेहता मघराजजी, लूणकरणजी कोचर का खानदान—हम ऊपर मेहता चन्द्रसेनजी का नाम लिख [illegible] हैं। आपके पुत्र अजबसिंहजी एव अनोपचन्दजी वडे वहादुर पुरुष थे। आप लोग रियासत की [illegible] [illegible]गढ आदि कई लडाइयों में शामिल हुए थे। मेहता अजबसिंहजी के पुत्र कीरतसिंहजी के [illegible], मानचन्दजी एव केसरीचदजी नामक ३ पुत्र हुए। आप वधु स्टेट के ऊँचे २ ओहदों पर कार्य [illegible]। स्टेट ने आप लोगों को कई खास रुक्के वख्शे थे। इन भाइयों में मेहता मदनचन्दजी के पुत्र [illegible] और पौत्र हरखचन्दजी हुए। मेहता हरकचन्दजी तहसीलदारी के पद पर कार्य करते थे। सवत् [illegible] आपका स्वर्गवास हुआ। आपको तथा आपके वडे पुत्र को राज्य ने "शाह" की पदवी इनायत [illegible]। आपके मेहता नेमीचन्दजी एवं मेघराजजी नामक २ पुत्र हुए। इन बन्धुओं मे मेहता मेघराजजी [illegible]। शाह नेमीचन्दजी आफीसर कोर्ट आफ वार्ड तथा आफीसर श्री वडा कारखाना थे। महाराजा [illegible]सिंहजी बहादुर आप पर वडे प्रसन्न थे। आप स्पष्ट वक्ता एव स्टेट के सच्चे खैरख्वाह व्यक्ति थे। [illegible] पास स्टेट के प्राइवेट जवाहरात कोप की चावियाँ अन्तिम समय तक रहीं। सवत् १९८९ में आप [illegible] हुए। आपके पुत्र मेहता लूणकरणजी एव विशनचन्दजी विद्यमान हैं। मेहता लूणकरणजी [illegible] सवत १९४५ में हुआ। आप ९ सालों तक महकमा हिसाब तथा १६ सालों तक कन्ट्रोलर आफ दि [illegible] रहे। तथा सवत् १९८९ से अपने पिताजी के स्थान पर आप आफीसर श्री वडा कारखाना [illegible] सरल एव समझदार पुरुष है। आपके छोटे बन्धु विशनचन्दजी खजाने में सर्विस करते हैं।

मेहता मेघराजजी कोचर का जन्म सवत् १९२९ में हुआ। आप वर्तमान महाराजा श्री [illegible] की बाल्य अवस्था में उनके प्राइवेट दफ्तर के खजाची रहे। पश्चात् संवत् १९१२ में तहसील [illegible] रहे। इसके बाद आप रामकुमार श्री सार्दूलसिंहजी की चीफ मिनिस्टरी के समय उनके [illegible]। इधर सवत् १९८१ से आप पेंशन प्राप्त कर शान्तिलाभ कर रहे हैं। आप वडे सरल एवं [illegible] हैं। आपके पुत्र श्री रावतमलजी कोचर का जन्म संवत् १९६१ में हुआ। आप इस समय

बीकानेर में प्रेक्टिस करते है, एव यहाँ के नामी वकील माने जाते है। आप बडे मिलनसार एवं समझ- युवक हैं। तथा स्थानीय ओसवाल जैन पाठशाला एव महावीर मंडल की व्यवस्थापक कमेटी के मेम्बर है आप शुद्ध खादी पहिनते हैं।

मेहता रतनलालजी, जतनलालजी कोचर का खानदान—हम ऊपर मेहता चन्द्रसेनजी तथा उन पुत्र अजबसिंहजी एव अनोपचन्दजी का परिचय दे चुके है। मेहता अनोपचन्दजी फरासखाने के मुसर थे। आपके आसकरणजी, माणकचन्दजी एवं हठीसिहजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मेहता हठीसिंहजी पुत्र रिखनाथजी हुए, जो आसकरणजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता रिखनाथजी राज्य में सर्विस क रहे। आप बड़ी धार्मिक वृति के पुरुष थे। आपके सुजानमलजी, चुन्नीलालजी एवं पन्नालालजी नामक पुत्र हुए। इन बन्धुओं ने भी स्टेट की अच्छी सेवकाई की। मेहता पन्नालालजी, राव छतरसिंहजी के वेड साथ महाजन, बीदासर तथा नौहर की लड़ाइयों में शामिल हुए थे। आपके अनाडमलजी तथा जसकरण नामक २ पुत्र हुए। मेहता अनाडमलजी ने बीकानेर स्टेट के कस्टम विभाग के स्थापन मे अच्छा सहयोग दि था। आप चतुर एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपके रतनलालजी, जतनलालजी एव राजमलजी नाम ३ पुत्र हुए, इनमें जतनलालजी मेहता जसकरणजी के नाम पर दत्तक गये। मेहता जसकरणजी का स्व वास संवत् १९७५ में हुआ। मेहता रतनलालजी इस परिवार में बहुत समझदार एव अपने समाज सम्माननीय व्यक्ति थे। सवत् १९८९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके छोटे बन्धु मेहता जतनलालजी जन्म संवत् १९४० में हुआ। आप लगभग ३५ सालों से बीकानेर रियासत में सर्विस करते है। ए इस समय कस्टम सुपरिटेन्डेन्ट के पद पर हैं। आपने अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलाने में अच्छा ल दिया है। आपके पुत्र चम्पालालजी, कन्हैयालालजी एवं शिखरचन्दजी है।

मेहता चम्पालालजी बी० ए० एल० एल० बी०—आपका जन्म संवत् १९६५ में हुआ। स १९२८ में आपने बनारस युनिवर्सिटी से बी० ए० एवं सन् १९३१ में एल० एल० बी० की डिग हासिल की। इसके पश्चात् आप बीकानेर स्टेट में नायब तहसीलदार, तहसीलदार एव इचार्ज नाजि के पद पर कार्य्य करते रहे, एव इस समय आप असिस्टेंट टू दि रेवेन्यू कमिश्नर बीकानेर है। आप ब सुशील, होनहार एवं उग्र बुद्धि के युवक हैं। इतनी अल्प वय में जिम्मेदारी पूर्ण ओहदों का कार्य्य ब तत्परता से करते हैं। आपके छोटे बधु कन्हैयालालजी बी० ए० की तयारी कर रहे है। तथा उनसे छो शिखरचन्दजी बनारस युनिवर्सिटी में बी० ए० में पढ़ रहे है। आपके काका मेहता राजमलजी व्यापार कर हैं। इनके बडे पुत्र सिरेमलजी मेट्रिक में पढ़ते हैं।

मेहता शिवबख्शजी कोचर का खानदान—हम ऊपर लिख आये है कि मेहता चन्द्रसेनजी छोटे भाई इन्द्रसेनजी थे। इनके पश्चात् क्रमश हरीसिंहजी, गाजीमलजी, प्रतापमलजी एव चुन्नीलाल हुए। मेहता चुन्नीलालजी के मलूकचन्दजी एव जेठमलजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों भाई स्टेट व सर्विस करते रहे। इनमें मेहता मलूकचन्दजी सवत् १९५७ में स्वर्गवासी हुए। आपके शिवबख्श तथा हीराचन्दजी नामक २ पुत्र विद्यमान हैं। इनमें हीराचन्दजी, जेठमलजी के नाम पर दत्तक गये है मेहता शिवबख्शजी का जन्म सवत् १९३९ में हुआ। मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर सन् १९०० में आ

"सिलवर मेडल घडी" देकर आपकी इज्जत की थी। आप के यहाँ "जेठमल लखमीचन्द" के नाम से बेंकिग व जमीदारी का कार्य्य होता है, एवं बीकानेर स्टेट के प्रतिष्ठा प्राप्त परिवारों में इस कुटुम्ब की गणना है। यह परिवार श्री श्वे० जैन तेरापंथी आम्नाय का मानने वाला है।

सेठ जेठमल लखमीचन्द फर्म के वर्तमान मुनीम चम्पालालजी चोरडिया हैं। आपके पितामह सेठ चिमनीरामजी चोरडिया रिणी से भादरा आये। इनके पुत्र सेठ बींजराजजी चोरडिया सेठ लखमीचंदजी के समय उनके यहाँ मुनीम हुए। तथा मालिकों के कारबार को आपने बहुत बढाया। भादरा की जनता में आप बडे आदरणीय सम्माननीय एव वजनदार पुरुष थे। संवत् १९७१ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र चम्पालालजी भी प्रतिष्ठित, मिलनसार एव सज्जन व्यक्ति है।

सेठ संतोपचन्दजी सदासुखजी सिंघी, नौहर

जोधपुर के सिंघी परिवार से इस कुटुम्ब का निकट सम्बन्ध था। वहाँ से १७५ वर्ष पूर्व यह परिवार "छापर" आया, एवं वहाँ से "सवाई" में आबाद हुआ। सवाई से सिंघी परिवार सरदारशाह, सुजानगढ़ नौहर आदि स्थानों में जा बसा। सवाई से लगभग १५० साल पूर्व इस परिवार के पूर्वज लाल चन्दजी के पिताजी नौहर आये। सिंघ लालचन्दजी के खेतसीदासजी, मेघराजजी तथा चौथमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें खेतसीदासजी सवा सौ साल पूर्व आसाम प्रान्त के जोरहाट नामक स्थान में गये। कहा जाता है कि आपकी होशियारी से खुश होकर जोरहाट के तत्कालीन अधिपति ने आपको अपनी रियासत का दीवान बनाया। १८ साल में कई लाख रुपयों का जवाहरात लेकर आप वापस नौहर आये। तथा आपने यहाँ सराफे का रोजगार शुरू किया। संवत् १९२५ आप स्वर्गवासी हुए। आपके पूरनमलजी तथा रिखबचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। सेठ पूरनमलजी नौहर के म्युनीसिपल मेम्बर व प्रतिष्ठित पुरुष थे। आप बडे दयालु स्वभाव के थे। संवत् १९५६ में आपने जनता की अच्छी सहायता की थी। संवत् १९८४ में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र सेठ संतोपचन्दजी का जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आप भी नौहर के अच्छे प्रतिष्ठित एव शिक्षा प्रेमी सज्जन हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपैलेटी तथा धर्मादा कमेटी के मेम्बर हैं। आपने अपने पुत्रों को शिक्षित करने की ओर काफी लक्ष दिया है। सेठ संतोपचन्दजी श्री जैन तेरापथी सम्प्रदाय का अच्छा ज्ञान रखते है। आपके इस समय सदासुखजी, हीरालालजी, रामचन्द्रजी, पांचीलालजी एवं इन्द्रचन्दजी नामक ५ पुत्र है। इन बन्धुओं में सिंघी रामचन्द्रजी बी० ए० पास करके दो साल पूर्व चार्टेड अकाउटेंसी का अध्ययन करने के लिये लदन गये हैं। सदासुखजी, हीरालालजी एव पाचीलालजी का भी शिक्षा की ओर अच्छा लक्ष है। आप तीनों भाई फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। इस समय आपके यहाँ "संतोपचन्द सदासुख" के नाम से ११ आर्मेनियन स्ट्रीट में पाट का व्यापार होता है। श्री सदासुखजी के पुत्र भँवरलाल, जसकरण, हीरालालजी के पुत्र रतनलाल एवं रामचन्द्रजी के पुत्र जयसिंह हैं। नौहर में यह परिवार अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। इसी तरह इस कुटुम्ब में सेठ, रिखबचन्दजी के पुत्र कालूरामजी नेपाल में व्यापार करते थे। संवत् १९८० में आपका स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके पुत्र वेगराजजी कलकत्ते में एफ० ए० में पढ़ रहे हैं।

सेठ थानमलजी मुहणोत, बीदासर (बीकानेर स्टेट)

इस परिवार का मूल निवास तोसीणा (जोधपुर) है। यहाँ से मुहणोत मंगलचंदजी ... १८९० में बीदासर आये। यहाँ से लगभग स० १९१० में आपके पुत्र कुन्दनमलजी व्यापार ... कलकत्ता गये। स० १९५७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मुहणोत थानमलजी का ... १९२१ मे हुआ। आप भी सं० १९४६ में कलकत्ता गये, तथा सेठ थानसिंह करमचन्द दूगड ... में कारबार करते रहे। सं० १९७२ में आपने तथा बीदासर निवासी सेठ दुलीचन्दजी ... और सुजानगढ़ के सेठ नेमीचन्दजी डागा ने मिल कर भागीदारी में कलकत्ते में जूट बेलर का व्यापार ... किया, तथा इस व्यापार में आप सज्जनों ने अपनी होशियारी, चतुराई और बुद्धिमानी से अच्छी ... व सम्मान उपार्जित किया। एव अपनी फर्म की शाखाए रंगपुर, भँगडिया, नागा आदि जगहों ... । इस समय आप तीनों सज्जनों का व्यापार "दुलीचन्द थानमल" के नाम से १०५ पुराना चीना ... होता है। सेठ थानमलजी, बिदासर के प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको सन् १९३२ मे बीकानेर ... पैरों में सोना पहिनने का अधिकार बख्शा है। आपके पुत्र कानमलजी एव मागीलालजी हैं।

श्री सेठ कस्तूरचन्द उत्तमचन्द छाजेड़, मद्रास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ उत्तमचन्दजी छाजेड हैं। आप सरल प्रकृति के सज्जन हैं। ... कस्तूरचन्दजी छाजेड के पुत्र हैं। आपका मूल निवास बीकानेर है। आप मद्रास के चान्दी ... व्यवसायी हैं। एव मन्दिर मार्गीय आम्नाय के मानने वाले सज्जन है। खेद है कि आपका ... न आने से विस्तृत नहीं छपा जा सका। आपके फोटो "छाजेड" गौत्र में छापे गये है।

श्री सुगनचन्दजी गोलेछा, अमरावती

आप शिक्षित सज्जन हैं। एव इस समय अमरावती (बरार) में इनकम टेक्स आफीसर के ... कार्य करते है। वहाँ के सरकारी आफीसरों में एव जनता में सम्माननीय व्यक्ति है। खेद है कि ... परिचय प्राप्त न होने से जितनी हमारी जानकारी थी, उतना ही लिखा जा रहा है।

श्रीयुत लच्मीलालजी बोरड़िया, इन्दौर

आपका मूल निवासस्थान उदयपुर है। आपने आरम्भ में बांसवाडा राज्य में सर्विस की। ... आपने इन्दौर में असिस्टेंट गेजेटियर आफिसर, असिस्टेंट प्रेस सुपरिटेन्डेन्ट आदि अनेक पदों पर ... । इस समय आप कॉटन ऑफिस में ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर अधिष्ठित है। आप ... सुधारक तथा उन्नत विचारों के सज्जन है। आपके ५ पुत्र हैं। सबसे बडे पुत्र केसरीमलजी इन्दौर ... में प्रोफेसर है। और दूसरे पुत्र नन्दलालजी बोरडिया इन्दौर के महाराजा तुकोजीराव अस्पताल ... है। तीसरे पुत्र नोरतनमलजी इलाहाबाद में बी० ए० में पढ़ते हैं। तथा चौथे पुत्र चन्द्रसिंहजी ... इन्दौर में शिक्षा पा रहे है। आप सभी सज्जन बडे उन्नत तथा समाज सुधारक विचारों के हैं। ... सुधारक विचारों वाला है और इन्दौर में इस परिवार ने परदा प्रथा को तिलाजलि देकर समाज के ... आदर्श रक्खा है। आपके प्रथम तीनों पुत्र देशभक्त भी है।

सेठ समीरमल भेरूदान फतेपुरिया, अमरावती

इस परिवार के पूर्वज सेठ भेरूदानजी दूगड ११ साल की आयु में सम्वत् १९११ में अमरावती आये। आपने यहाँ होशियार होकर "धर्मचंद केशरीचंद" भेरूदान जेठमल, तथा पूरनमल प्रेमसुखदास नामक दुकानों पर सर्विस की। सम्वत् १९४५ मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ समीरमलजी दूगड का जन्म संवत् १९२७ में हुआ। आप अपने पिताजी के स्थान पर संवत् १९८२ तक "सेठ पूरनमल प्रेमसुखदास" के यहाँ मुनीमात करते रहे। इस समय आपके यहाँ आढत, रुई, दलाली तथा किराये का व्यापार होता है। अमरावती के ओसवाल समाज में आप समझदार तथा प्रतिष्ठित सज्जन हैं।

सेठ रावतमल करनीदान गोलेछा, मद्रास

यह परिवार खिचद (मारवाड) का निवासी है, तथा श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नाय का मानने वाला है। सेठ शोभाचन्दजी गोलेछा के पुत्र करनीदानजी और रावतमलजी हुए। सेठ करनीदानजी ने संवत् १९३८ में मद्रास में दुकान खोली। इसके पूर्व इनका विजगापट्टम तथा बम्बई में व्यापार होता था। संवत् १९४८ में करनीदानजी का स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र जवानमलजी तथा सदासुखजी ने और सेठ रावतमलजी के पुत्र बख्तावरमलजी और अगरचंदजी ने व्यापार को विशेष बढ़ाया। सेठ बख्तावरमलजी ने अंग्रेजों के साथ व्यापार कर बहुत उन्नति प्राप्त की। आप खिचद व आसपास की पंचपचायती मे सम्माननीय व्यक्ति थे। संवत् १९७२ में ४५ साल की आयु में आप स्वर्गवासी हुए। आपके २ साल बाद आपके पुत्र किशनलालजी भी स्वर्गवासी होगये, अत उनके नाम पर विजयलालजी दत्तक आये हैं। आप विद्यमान हैं।

गोलेछा अगरचंदजी के कँवरलालजी, घेवरचंदजी, विजयलालजी, नेमीचन्दजी तथा लालचंदजी नामक पुत्र विद्यमान हैं। इसी प्रकार सेठ जवानमलजी के पुत्र राजमलजी, अमरचंदजी तथा भँवरलालजी और सदासुखजी के पुत्र जीवनलालजी, माणिकलालजी तथा सुखलालजी विद्यमान है। इनमें विजयलालजी, किशनलालजी गोलेछा के नाम पर दत्तक गये हैं। आप लोगों का मद्रास के "वेपेरी सुला" नामक स्थान में व्याज और बैंकिंग व्यापार होता है।

सेठ चौथमल दुलीचन्द दस्साणी, सरदारशहर

इस परिवार का मूल निवास स्थान अजमेर है। वहाँ से यह परिवार बीकानेर, डाडूसर आदि स्थानों में निवास करता हुआ सरदारशहर के बसने के समय यहाँ आकर आबाद हुआ। यहाँ दस्साणी हुकुमचन्दजी आये। आप के सालमचन्दजी, चोथमलजी एवं मुलतानचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। आप बंधु संवत् १८८० के लगभग लखनऊ गये। कहा जाता है कि लखनऊ के नवाब से इनका मैत्री का सम्बन्ध था। सन् १९१४ में गदर की लूट होने से आप लोग सरदारशहर चले आये। इन भाइयों में सालमचन्दजी तो बीकानेर दत्तक गये। और सेठ चौथमलजी एवं मुलतानचन्दजी संवत् १९१५ में कलकत्ता गये। एवं मुलतानचन्द दुलीचन्द के नाम से कपडे का व्यापार आरंभ किया। संवत् १९३५ में इस दुकान पर गरम और रेशमी कपडे का धन्धा शुरू हुआ। आप दोनों भाई क्रमश संवत् १९४९ में तथा १९३४ में स्वर्गवासी हुए। सेठ चौथमलजी के दुलीचन्दजी, केसरीचन्दजी, चुन्नीलालजी, मग

—— तथा कोडामलजी और मुलतानचन्दजी के भैरोंदानजी नामक पुत्र हुए। सेठ चौथमलजी १० साल ... संवत् १९२४ में कलकत्ता गये। आपने अपनी दुकान के व्यापार व सम्मान को बहुत बढ़ाया। ... १९६० में सेठ दुलीचन्दजी का भाग मुलतानचन्दजी से अलग हो गया, तब से दुलीचन्दजी अपने ... के साथ कारबार करने लगे। इसी साल आप अपनी दुकान का काम अपने भाइयों के जिम्मे ... सरदारशहर में आ गये एवं धार्मिक जीवन बिताते हुए संवत् १९८६ में स्वर्ग वासी हुए। आपने ... त्याग और तपस्या के बड़े २ कार्य्य किये। अपनी पत्नी के साथ ३१ दिनों के उपवास किये। ... जीवन के अन्तिम ५ सालों में आप केवल ८ वस्तुओं का उपयोग करते थे। संवत् १९७५ में सेठ ... के सब भ्राताओं का कारबार अलग २ हो गया। सेठ दुलीचन्दजी के सतोपचन्दजी, धन- ..., ...चन्दजी, नथमलजी, चन्दनमलजी, सदासुखजी एवं कुशलचन्दजी नामक ७ पुत्र हुए। इनमें ... सतोपचन्दजी को छोड़ कर शेष सब भाई मौजूद हैं। सेठ सतोपचन्दजी ने इस फर्म पर इम्पोर्ट व्यापार ... किया। आप बुद्धिमान् एवं व्यापार चतुर पुरुष थे। आप संवत् १९७४ में स्वर्ग वासी हुए। आपके ... मोतीलालजी एवं इन्द्रचन्दजी हैं। आपके छोटे भ्राता सेठ धनराजजी ने संवत् १९७५ में श्री जैन ... सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की है।

इस समय सेठ "चौथमल दुलीचन्द" फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी, ..., चन्दनमलजी, कुशलचन्दजी एवं सेठ कोडामलजी के पुत्र रिधकरणजी हैं। इन भाइयों ... मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी तथा रिधकरणजी फर्म के प्रधान संचालक हैं। आप सज्जनों के हाथों से व्यापार की ... है। आप बन्धुओं के साथ अन्य भाई भी व्यापार में सहयोग देते हैं। सेठ मोतीलालजी समस्त ... आप इस परिवार में सब से बड़े हैं। आपके पुत्र श्री शुभकरणजी को उनके मामा सुजान- ... निवासी सेठ हजारीमलजी रामपुरिया ने अपनी सम्पत्ति प्रदान की है। आप होनहार युवक हैं। ... समय आप लोगों के यहाँ कलकत्ते के मनोहरदास कटला और केशोराम कटला में देशी विलायती कपड़े ..., व देशी मिलों के कपड़े की कमीशन सेलिंग एवं बैंकिंग तथा जूट का व्यापार होता है। इसके अलावा ... (बंगाल) में जूट और जमींदारी का काम होता है। यह परिवार सरदारशहर के ओसवाल ... प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ रावतमल प्रेमसुख गुलगुलिया, देशनोक (बीकानेर)

इस परिवार का मूल निवासस्थान नाल (बीकानेर) था। वहाँ से गुलगुलिया रामसिंहजी के ... पीरदानजी तथा रावतमलजी संवत् १९२५ में देशनोक आये, तथा इन बन्धुओं ने यहाँ अपना स्थाई ... बनाया। संवत् १९३६ में सेठ पीरदानजी सिलहट गये और संवत् १९४२ में आपने मोल्वी ... (सिलहट) में दुकान खोली। २ साल बाद सेठ रावतमलजी भी मोल्वी बाजार आगये। सं० ... में इस फर्म की एक ब्रांच श्रीमङ्गल में भी खोली गई। इन दोनों दुकानों पर "पीरदान रावतमल" ... व्यापार होता था। संवत् १९६५ में दोनों बन्धुओं का कारबार अलग २ होगया। तब से ... बाजार की दुकान सेठ रावतमलजी के भाग में एवं श्रीमंगल की दुकान पीरदानजी के भाग में आई। ... दुकानों पर पुराने नाम से ही व्यापार चालू रहा। संवत् १९७८ में सेठ पीरदानजी स्वर्गवासी

सेठ मोतीलालजी हीरालालजी सिंघी, बीकानेर

यह परिवार मूल निवासी किशनगढ़ का है। वहाँ से सिंघी शेरसिंहजी, बीकानेर आये। आपके पुत्र सिंघी कुंदनमलजी व्यापार के लिए बीकानेर से बंगाल गये। तथा ढाका और पटना में गल्ला का व्यापार आरंभ किया। आपके सिंघी बख्तावरचन्दजी तथा सिंघी मोतीलालजी नामक २ पुत्र हुए। आप दोनों बंधु भी बंगाल प्रान्त में व्यापार करते रहे। सेठ मोतीलालजी सिंघी से पुत्र हीरालालजी का जन्म संवत् १९४३ में हुआ। आपने संवत् १९६९ में कलकत्ते में कपड़े की दुकान खोला। आप बीकानेर के ओसवाल समाज में अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। इस समय आप "मोतीलाल हीरालाल" के नाम से कलकत्ते में कपड़े का व्यापार करते हैं।

सेठ शालिगराम लूनकरण* दस्साणी का खानदान, बीकानेर

सेठ हीरालालजी दस्साणी—इस परिवार के पूर्वज सेठ हीरालालजी दस्साणी का जन्म सं० १८८१ में हुआ। आप बीकानेर में कपड़े का व्यापार करते थे। तथा वहाँ की जनता और अपने समाज में गण्य मान्य पुरुष माने जाते थे। बीकानेर दरबार श्री सरदारसिंहजी एवं श्री डूँगरसिंहजी के समय में आप राज्य को आवश्यक कपड़ा सप्लाय भी करते थे। आपके उदयचन्दजी तथा सालिगरामजी नाम के २ पुत्र हुए।

सेठ उदयचन्दजी दस्साणी—आपका जन्म सम्वत् १९१० में हुआ। आप बीकानेर के दस्साणी परिवार में सर्व प्रथम कलकत्ता जाने वाले व्यक्ति थे। बाल्यकाल ही में आपने पैदल राह से कलकत्ते की यात्रा की। एवं वहाँ १२ सालों तक व्यापार कर आप वापस बीकानेर आ गये। तथा यहाँ अल्पवय में सम्वत् १९३९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सुमेरचन्दजी दस्साणी हुए।

सेठ सालिगरामजी दस्साणी—आपका सम्वत् १९२२ में जन्म हुआ। आप बुद्धिमान, व्यापारदक्ष तथा प्रतिभाशाली सज्जन थे। आपने १३ साल की अल्पवय में पैदल राह द्वारा व्यवसायार्थ कलकत्ते की यात्रा की। एवं वहाँ कुछ समय व्यापार करने के अनतर बीकानेर के माहेश्वरी सज्जन सेठ शिवदासजी गंगादासजी मोहता की भागीदारी में कपड़े का व्यापार चालू किया। तथा बाद में शालिगराम सुमेरमल के नाम से अपनी २ स्वतन्त्र दुकानें भी खोलीं। जिनमें एक पर देशीधोती तथा दूसरी पर विलायती मारकीन का प्रधान व्यापार होता था। इन व्यापारों में आपने कई लाख रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की थी। आप कलकत्ता मर्चेंट कमेटी के सदस्य थे। एवं अपने समय के समाज में प्रभावशाली तथा समझदार व्यक्ति माने जाते थे। सम्वत् १९७४ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र लूनकरणजी, मगलचन्दजी, सम्पतलालजी तथा सुन्दरलालजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ सुमेरमलजी दस्साणी— आप भी कलकत्ते के मारवाड़ी व्यापारिक समाज में प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते थे। सम्वत् १९७६ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके स्वर्गवासी हो जाने के बाद असहयोग आन्दोलन के कारण उपरोक्त "सालिगराम सुमेरमल" फर्म का काम बंद कर दिया गया। साथ ही सेठ शिवदासजी गंगादासजी की फर्म से भागीदारी भी हटा ली गई। आपके पुत्र सतीदासजी तथा भँवरलालजी हैं।

---

* खेद है कि आपका परिचय समय पर न आने से यथा स्थान नहीं छापा जा सका।

...नकरणजी, मगनचन्दजी—आप लोग वर्तमान में अपनी "शालिगराम लूनकरण दस्साणी" ... प्रधान सचालक है। यह फर्म न० ४ राजा उडमंड स्ट्रीट कलकत्ता में व्यापार करती है। ... सभा एवं दरबार खास आदि अवसरों के समय आप लोग निमंत्रित किये जाते हैं। आपका ... कानेर के ओसवाल समाज में गण्य मान्य एवं प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके छोटे भाई ... जी एवं मदनलालजी पढ़ते हैं। आप लोग श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय आम्नाय को मानने वाले है।

श्री खुशालचंदजी खजांची (चांदा)

इस परिवार के पूर्वज सेठ हीरालालजी खजाची बीकानेर से लगभग ७० साल पहिले कामठी ... जेठमलजी रामकरणजी गोलेछा की दुकान पर मुनीम रहे। इनके दुलीचन्दजी तथा ... रामजी नामक २ पुत्र हुए। हीरालालजी संवत् १९५२ में गुजरे और इनके स्थान पर इनके पुत्र ... रामजी मुनीमात करने लगे। संवत् १९७६ में कामठी में घासीरामजी का शरीरान्त हुआ। आपके पुत्र ... जी, लूणकरणजी तथा ताराचंदजी हुए। श्री खुशालचंदजी खजाची १६ साल की वय में संवत् ... में चांदा आये। आपका शिक्षण मेट्रिक तक हुआ। सन् १९२२ से आपने सार्वजनिक तथा देश ... के कार्यों में सहयोग देना आरम्भ कर दिया। इसी साल आप जनता की ओर से म्यु० मेम्बर ... चुने गये। १९२७ में आप डिस्ट्रीक्ट कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। आपकी सेवाओं के कारण ... सन् १९२९ में प्रथम बार तथा १९३१ में दूसरी बार म्यु० के प्रेसिडेन्ट बनाये गये। इस पद पर ... अभी तक कार्य करते है। राजनैतिक कार्यों में भी आप काफी दिलचस्पी से भाग लेते है। ... में 'गदनाल डे" के उपलक्ष में प्रान्तिक डिक्टेक्टर की हैसियत से आप गये थे। इसलिए ... ता० ८८३१ को ७ मास की सख्त कैद तथा २००) जुर्माना हुआ। सन् १९३२ में ... कार्य के कारण चांदा में २००) जुर्माना तथा ४ मास की पुन सजा हुई, इस समय आप ... निवारक संघ के प्रेसिडेन्ट हैं। सन् १९३३ के फ्लड के समय आपने गरीब जनता की बहुत ... की। चांदा की जनता आपको आदर से देखती है आपके पुत्र छगनमलजी हैं। आपके यहाँ "लूणकरण ... " के नाम से कपड़े का व्यापार होता है इसका संचालन लूणकरणजी खजाची करते हैं। तथा तीसरे ... चंदजी खजाची नागपुर साइन्स कॉलेज में एफ० ए० में शिक्षण पाते हैं।

ओसवाल जाति की मर्दुमशुमारी के सम्बन्ध में कुछ जानने योग्य बातें

... सारादी १९३१ की गणना से	मर्द	स्त्रियां	कुल
... बीकानेर राज्य	११९४७	१५६११	२७५६८
... जोधपुर राज्य (मारवाड़)	[illegible]४३५	५,३६१	[illegible]६७०६
... मेवाड़ (उदयपुर)	२[illegible]२१८	२३०९७	४८३१५
[illegible]	३५१३	४६३०	८१६६

५—किशनगढ़ स्टेट	.	८५९	७५७	१
६—प्रतापगढ़	..	६६१	६८९	१
७—नाशिक जिला में	.	३२१८	२७५१	५
योग ७ प्रांतों का		९०८८१	९८८९६	१८९

१—पंजाब में* कुल २३२ गांवों में ३३६६ घर निवास करते हैं। उनमें आबादी संख्या १४२६७

इन प्रान्तों के अलावा ओसवाल जाति की आबादी सी० पी०, बरार, खानदेश, कर्नाटक, अहमदनगर, मद्रास प्रान्त, निजाम स्टेट, बिहार, यू० पी०, बंगाल आसाम आदि प्रान्तों जिनकी आबादी इनमें शुमार करने से इतनी या इससे अधिक संख्या हो जाना सम्भव है।

राजपूताना और अजमेर मेरवाड़ा में ओसवाल आबादी

नाम प्रान्त	सन् १९०१ में	सन् १९११ में	सन् १९२१ में	सन् १९३१
राजपूताना	२०९१८८	२०९९६५	१८०९५४	१९७४६
अजमेर मेरवाडा	९५४७	१४२२८	१२३९६	१३५३

सन् १९३१ की मृदुमशुमारी के अनुसार

नाम प्रान्त		क्वारे	व्याहे	विधुर और विधवाएँ	योग
जोधपुर में	मारवाड़ में मर्द	२४००१	१६९४९	४४४५	४५३९५
	„ औरतें	१६७९५	२१५०२	१३०६४	५१३६१
	योग	४०७९६	३८४५१	१७५०९	९६७५६
उदयपुर में	मेवाड में मर्द	१२४२०	१०१९४	२६ ४	२५२१८
	„ औरतें	७६६४	१०४१४	५०१९	२३०९७
	योग	२००८४	२०६०८	७६२३	४८३१५
जोधपुर तथा मेवाड का कुल योग		६०८८०	५९०५९	२५१२७	१४५०६६
नाशिक जिले में†	..	२६९०	२३४३	९३६	५९६९

नोट—यह अवतरण हमें जोधपुर के इतिहास वेत्ता श्री कुँवर जगदीशसिंहजी गहलोत द्वारा प्राप्त हुए। धन्यवाद

*यह संख्या केवल पंजाब के श्वे० स्था० आम्नाय माननेवाले कुटुम्बों की है। इनमें अग्रवाल कुटुम्ब जो स्था० सम्प्रदाय मानते हैं। उनकी गणना भी शामिल है। लेकिन तौभी इस संख्या में विशेष भाग ओसवाल जाति का है। अलावा मन्दिर सम्प्रदाय के भी पंजाब में सैंकडों घर हैं। यदि उपरोक्त संख्या में जैन श्वे० मन्दिर आम्नाय के भी जोड़ दें तो पंजाब के ओसवालों की गणना लगभग १० हजार की हो जायगी।

† यह गणना नाशिक जिला ओसवाल सभा के अधिवेशन के समय मई १९३३ में की गई थी।